उवंगसुत्ताणि

४

[खण्ड १]

ओवाइयं * रायपसेणियं * जीवाजीवाभिगमे

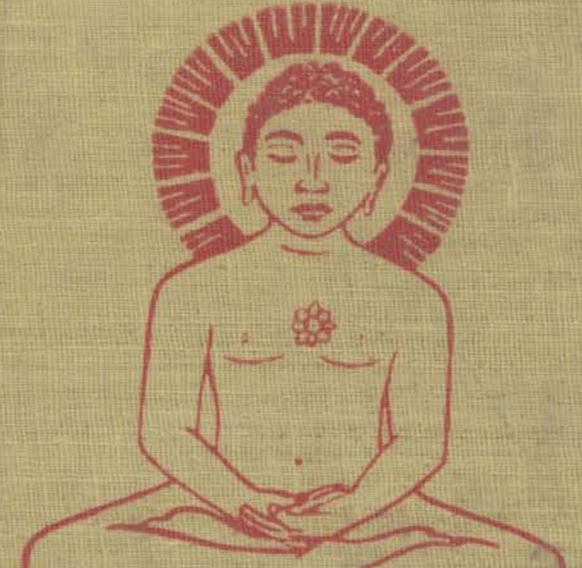

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में

निग्गंथं पावयणं

उवंगसुत्ताणि

४

(खण्ड १)

ओवाइयं • रायपसेणियं • जीवाजीवाभिगमे

वाचना प्रमुख :
आचार्य तुलसी

संपादक :
युवाचार्य महाप्रज्ञ

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती,
लाडनूं

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,

आर्थिक सहयोग :
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम सम्वत् २०४४ (दीपावली)
ई० १९८७

पृष्ठांक : ८००

मूल्य ४००/-

मुद्रक :
मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

On the occasion of Ācārya Tulsi Amrit Mahotsava Year

Nigganthaṁ Pāvayaṇam

UVAṄGA SUTTĀṆI

IV

(PART 1)

OVĀIYAM • RĀYAPASEṆIYAM • JĪVĀJĪVĀBHIGAME

(Original Text Critically Edited)

Vācanā-pramukha :
ĀCĀRYA TULSI

Editor :
YUVĀCĀRYA MAHĀPRAJÑA

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI
LADNUN (RAJASTHAN)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI
Ladnun—**341 306**

Managing Editor :
Shrichand Rampuria,

By Munificence :
Shri Ramlal Hansraj Golchha
Viratnagar (Nepal)

Year of Publication :
Vikraṁ Saṁvat 2044 (Dīpāvalī)
1987 A.D.

Pages : **800**

Price : 400/-

Printers :
JAIN VISHVA BHARATI PRESS,
[Established through the financial co-operation of
Mitra Parishad, Calcutta)
Ladnun (Rajasthan)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोधपूर्ण-सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है :

संपादक :	युवाचार्य महाप्रज्ञ
पाठ-संशोधन सहयोगी :	मुनि सुदर्शन
,,	मुनि मधुकर
,,	मुनि हीरालाल
शब्दकोश :	,,

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

विलोडियं आगममुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्झाय-सज्झाण-रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था ।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से ।

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से ।

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थानुक्रम

१. प्रकाशकीय
२. सम्पादकीय (हिन्दी)
३. भूमिका (हिन्दी)
४. सम्पादकीय (अंग्रेजी)
५. भूमिका (अंग्रेजी)
६. विषयानुक्रम
७. संकेत निर्देशिका
८. ओवाइयं
९. रायपसेणियं
१०. जीवाजीवाभिगमे

परिशिष्ट

१. संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल
२. तुलनात्मक
३. शब्द कोश
४. शुद्धिपत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

आगम संपादन एवं प्रकाशन की योजना इस प्रकार है—

१. आगम-सुत्त ग्रंथमाला—मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

२. आगम-अनुसंधान ग्रन्थमाला—मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला—आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।

४. आगम-कथा ग्रन्थमाला—आगमों से संबंधित कथाओं का संकलन और अनुवाद।

५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला—आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

६. आगमों के केवल हिंदी अनुवाद के संस्करण।

प्रथम आगम-सुत्त ग्रन्थमाला में निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—

(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि
(२) आयरो तह आयारचूला
(३) निसीहज्झयणं
(४) उववाइयं
(५) समवाओ
(६) अंगसुत्ताणि (खं० १)—इसमें आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग—ये चार अंग समाहित हैं।
(७) अंगसुत्ताणि (खं० २)—इसमें पंचम अंग भगवती प्रकाशित है।
(८) अंगसुत्ताणि (खं० ३)—इसमें ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अंतकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं।
(९) नवसुत्ताणि (खं० ५)—इसमें आवस्सयं, दसवेआलियं' उत्तरज्झयणाणि, नंदी, अणुओगदाराइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहज्झयणं—ये नौ आगम ग्रन्थ हैं।

उक्त में से प्रथम पांच ग्रन्थ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुए हैं एवं अंतिम चार ग्रन्थ जैन विश्व भारती, लाडनूं द्वारा प्रकाशित हुए हैं।

द्वितीय आगम अनुसंधान ग्रन्थमाला में निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—

(१) दसवेआलियं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और २)
(३) ठाणं
(४) समवाओ
(५) सूयगडो (भाग १ और भाग २)

उक्त में से प्रथम दो ग्रन्थ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुए हैं और अंतिम तीन ग्रन्थ जैन विश्व भारती, लाडनूं द्वारा प्रकाशित हुए हैं। दसवेआलियं का द्वितीय संस्करण भी जन विश्व भारती, लाडनूं द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तीसरी आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला में निम्न दो ग्रन्थ निकल चुके हैं—

(१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन।
(२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी आगम-कथा ग्रन्थमाला में अभी तक कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हो पाया है।

पांचवीं वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला में दो ग्रन्थ निकल चुके हैं—

(१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० १)
(२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० २)

छठी ग्रन्थमाला में केवल आगम हिंदी अनुवाद ग्रन्थमाला के संस्करण के रूप में एक 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है।

उक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन (मूल पाठ मात्र) गुटकों के रूप में प्रकाशित किए जा चुके हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन **उवंगसुत्ताणि, खंड १** में (१) ओवाइयं (२) रायपसेणियं और (३) जीवाजीवाभिगमे—इन तीन उपांग आगमों का पाठान्तर सहित मूलपाठ मुद्रित है। साथ ही साथ इन तीनों उपांगों की संयुक्त शब्दसूची भी अन्त में संलग्न कर दी गई है। भूमिका में इन ग्रन्थों का संक्षेप में परिचय प्राप्त है, अतः यहां इस विषय पर प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है।

आगम प्रकाशन कार्य की योजना में निम्न महानुभावों का सहयोग रहा—

(१) सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी)।
(२) रामलालजी हंसराजजी गोलछा, विराटनगर।
(३) स्व० जयचंदलालजी गोठी, सरदारशहर।
(४) रामपुरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, कलकत्ता।
(५) बेगराज भंवरलाल चोरडिया चेरिटेबल ट्रस्ट।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है। इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

यह ग्रन्थ जैन विश्व भारती के निजी मुद्रणालय में मुद्रित होकर प्रकाशित हो रहा है। मुद्रणालय के स्थापन में मित्र-परिषद्, कलकत्ता के आर्थिक-सहयोग का सौजन्य रहा, जिसके लिए उक्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संस्था को अनेक धन्यवाद हैं।

यह ग्रन्थ आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित हो रहा है।

आगम-संपादन के विविध आयामों के वाचना-प्रमुख हैं आचार्यश्री तुलसी और प्रधान संपादक तथा विवेचक हैं युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी। इस कार्य में अनेक साधु-साध्वी सहयोगी रहे हैं।

इस तरह अथक परिश्रम के द्वारा प्रस्तुत इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सुयोग पाकर जैन विश्व भारती अत्यंत कृतज्ञ है।

श्रीचंद रामपुरिया
कुलपति

जैन विश्व भारती
१६-११-८७
लाडनूं (राज०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

प्रस्तुत पुस्तक में तीन ग्रन्थ हैं—ओवाइयं, रायपसेणियं और जीवाजीवाभिगमे।

ओवाइयं

औपपातिक का पाठ आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत सूत्र में वाचनान्तरों की बहुलता है। यह सूत्र वर्णनकोश है। इसलिए अन्य आगमों में स्थान-स्थान पर 'जहा ओववाइए' इस प्रकार का समर्पण-वचन मिलता है। उन आगमों के व्याख्याकारों द्वारा अपने व्याख्या-ग्रन्थों में अवतरित पाठ तथा कहीं-कहीं समर्पण-सूत्रों के पाठ औपपातिक के स्वीकृत पाठ में नहीं मिलते हैं। वे पाठ वाचनान्तर में प्राप्त हैं। समर्पण-वचन पढ़ने वालों के लिए यह एक समस्या बन जाती है।

प्रस्तुत आगम का पाठ आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर ही नहीं, किन्तु अन्य आगमों व व्याख्या-ग्रन्थों में प्राप्त अवतरणों व समर्पणों के आधार पर भी निर्धारित होना चाहिए था। किन्तु समग्र अवतरणों व समर्पणों का संकलन हुए बिना वैसा करना संभव नहीं।

इस विषय में कुछ संकलन हमने किया है—

भगवई

७।१७५	एवं जहा ओववाइए जाव
७।१७६	एवं जहा उववाइए (दो बार)
७।१९६	जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते
९।१५७	"जहा ओववाइए जाव एगाभिमुहे।" "एवं जहा ओववाइए जाव तिविहाए"।
९।१५८	"जहा ओववाइए जाव सत्थवाह"। "जहा ओववाइए जाव खत्तियकुंडग्गामे"।
९।१६२	ओववाइए परिसा वण्णओ तहा भाणियव्वं।
९।२०४	"जहा ओववाइए जाव गगणतलमणुलिहंती"। "एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्वं"।
९।२०४	जहा ओववाइए जाव महापुरिस°
९।२०८	जहा ओववाइए जाव अभिनंदता
९।२०९	एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ
११।५९	जहा ओववाइए
११।६१	जहा ओववाइए कूणियस्स
११।८५	जहा ओववाइए जाव गहणयाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११।८८, १६८	एवं जहेव ओववाइए तहेव
११।१३८	जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे
११।१५४	एवं जहा दढपइण्णस्स
११।१५६	एवं जहा दढपइण्णे
११।१५६	जहा ओववाइए
११।१६६	जहा अम्मडो जाव बंभलोए
१२।३२	एवं जहा कूणिओ तहेव सव्व
१३।१०७	जहा कूणिओ ओववाइए जाव पज्जुवासइ
१४।१०७	एवं जहा ओववाइए जाव आराहगा
१४।११०	एवं जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया
१५।१८६	एवं जहा ओववाइए दढप्पइण्णवत्तव्वया
१५।१८६	एवं जहा ओववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंतं
२५।५६६	जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए
२५।५७०	जहा ओववाइए जाव लूहाहारे
२५।५७१	जहा ओववाइए जाव सव्वगाय°

भगवई वृत्ति

पत्र ७	औपपातिकात् सव्याख्यानोऽत्र दृश्यः
पत्र ११	औपपातिकवद्व्याख्या
पत्र ३१७	"एवं जहा उववाइए" त्ति तत्र चेदं सूत्रमेवम्
पत्र ३१८	"एवं जहा उववाइए जाव" इत्यनेनेदं सूचितम्
पत्र ३१६	"जहा चेव उववाइए" त्ति तत्र चैवमिदं सूत्रम्
पत्र ४६२	"जहा उववाइए" त्ति तत्र चेदं सूत्रमेवं लेशतः
पत्र ४६३	"जहा उववाइए" त्ति तदेव लेशतो दर्श्यते
पत्र ४६३	"एवं जहा उववाइए" तत्र चैतदेवं सूत्रम्
पत्र ४६३	"जहा उववाइए" त्ति चेदमेवं सूत्रम्
पत्र ४६३	"जहा उववाइए परिसावन्नओ" त्ति यथा कौणिकस्यौपपातिके
पत्र ४७६	"जहा उववाइए" त्ति एवं चैतत्तत्र
पत्र ४७६	"जहा उववाइए" त्ति अनेन यत्सूचितं तदिदम्
पत्र ४८१	"जहा उववाइए" त्ति करणादिदं दृश्यम्
पत्र ४८२	"एवं जहा उववाइए" त्ति अनेन यत्सूचितं तदिदम्
पत्र ५१६	"जहा उववाइए" इत्येतस्मादतिदेशादिदं दृश्यम्
पत्र ५२०	"एवं जहा उववाइए" इत्येतत्करणादिदं दृश्यम्
पत्र ५२१	"एवं जहेवे" त्यादि "एवम्" अनंतरदर्शितेनाभिलापेन यथौपपातिके सिद्धानधिकृत्य संहननाद्युक्तं तथैवेहापि
पत्र ५२१	वाक्यपद्धतिरौपपातिकप्रसिद्धाऽध्येता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्र ५४२	"जहा उववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे" त्ति यथौपपातिकेऽट्टणसाला व्यतिकरो········
पत्र ५४५	"जहा दढपइन्ने" त्ति यथौपपातिके दृढप्रतिज्ञोऽधीतस्तथाऽयं वक्तव्यः तच्चैवम्
पत्र ५४५	"एवं जहा दढपइन्नो" इत्यनेन यत्सूचितं तदेवं दृश्यम्
पत्र ५४८	"जहा उववाइए" इत्यनेनयत्सूचितम्
पत्र ५४६	"जहा अम्मडो" त्ति यथौपपातिके अम्मडोऽधीतस्तथाऽयमिह वाच्यः
पत्र ५६३	"एवं जहा उववाइए जाव आराहग" त्ति इह यावत्करणादिदमर्थतो लेशेन दृश्यम्—
पत्र ५६३	"एवं जहे" त्यादिना यत्सूचितम्
पत्र ६६६	"एवं जहा उववाइए" इत्यादि भावितमेवाम्मडपरिव्राजककथानक इति ।
पत्र ६२४	"जहा उववाइए" त्ति अनेनेदं सूचितम्
पत्र ६२४	"जहा उववाइए" त्ति अनेनेदं सूचितम्
पत्र ६२४	"जहा उववाइए" त्ति अनेनेदं सूचितम्

ज्ञातावृत्ति पत्र २ वर्णकग्रन्थोत्रावसरे वाच्यः—

विवागसुयं

१।१।७०	जहा दढपइण्णे
२।१।३६	जहा दढपइण्णे
२।१०।१	जहा दढपइण्णे

रायपसेणियं

सू० ३, ४	असोयवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया ओववाइयगमेणं नेया
सू० ६८८	एगदिसाए जहा उववाइए जाव अप्पेगतिया

रायपसेणिय वृत्ति

पृ० ३	सम्प्रत्यस्या नगर्या वर्णकमाह— (यहां औपपातिक का उल्लेख नहीं)
पृ० ८	यावच्छब्दकरणात् "सद्दिए कित्तिए नाए सच्छत्ते" इत्याद्यौपपातिकग्रन्थप्रसिद्ध-वर्णकपरिग्रहः
पृ० १०	अशोकवरपादपस्य पृथिवीशिलापट्टकस्य च वक्तव्यता औपपातिकग्रन्थानुसारेण ज्ञेया ।
पृ० २७	यावच्छब्दकरणाद्राजवर्णको देवीवर्णकः समवसरणं चौपपातिकानुसारेण ताव-द्वक्तव्यं यावत्समवसरणं समाप्तम्
पृ० ३०	यावच्छब्दकरणात् "आइकरे तित्थगरे" इत्यादिकः समस्तोपि औपपातिकग्रन्थ-प्रसिद्धो भगवतद्वर्णको वाच्यः, स चातिगरीयानिति न लिख्यते, केवलमौपपातिक-ग्रन्थादवसेयः
पृ० ३६	बहवे उग्गा भोगा इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तं सर्वमवसातव्यं यावत् समग्रापि राज-प्रभृतिका परिषत्पर्युपासीना अवतिष्ठते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृ० ११६	"एवं जहा उववाइए तहा भाणियव्वं" इति एवं यथा औपपातिके ग्रन्थे तथा वक्तव्यम् । तच्च एवं
पृ० २८८	इत्यादिरूपा धर्मकथाऔपपातिकग्रन्थादवसेया

जंबुद्दीवपण्णत्ती

२।६५	एवं जाव णिग्गच्छइ जहा ओववाइए जाव आउलबोलबहुलं
२।८३	एवं जहा ओववाइए तच्चेव अणगारवण्णओ जाव उड्ढं जाणू
३।१७८	एवं ओववाइयगमेणं जाव तस्स

जंबुद्दीवपण्णत्ती वृत्ति

शा० वृ० पत्र १४	"वण्णओ" त्ति ऋद्धस्तिमितसमृद्धा इत्यादि
,, ,,	औपपातिकोपाङ्गप्रसिद्धः समस्तोपि वर्णको द्रष्टव्यः
,, ,,	चिरातीतमित्यादिर्वर्णकस्तत्परिक्षेपि वनखण्डवर्णकसहितऔपपातिकतोऽवसेयः
,, ,,	"वण्णओ" त्ति अत्र राज्ञः "महयाहिमवन्तमहन्ते" त्यादिको राज्ञाश्च "सुकुमालपाणिपाये" त्यादिको वर्णकः प्रथमोपाङ्गप्रसिद्धोऽभिधातव्यः
,, ,,	यथा च समवसरणवर्णकं तथौपपातिकग्रन्थादवसेयं
,, ,,	"तए णं मिहिलाए णयरीए सिंघाडगे" त्यादिकं "जाव" पंजलिउडा पज्जुवासंती" ति पर्यन्तमौपपातिकगतमवगन्तव्यम् ……… ……… एवोपाङ्गादवगन्तव्यमिति
शा० वृ० पत्र १४३	"यथौपपातिके" एवं यथा प्रथमोपाङ्गे ………… निपातः, औपपातिकगमश्चायं
शा० वृ० पत्र १५४	यथौपपातिके सर्वोऽणगारवर्णकस्तथाऽत्रापि वाच्यः
शा० वृ० पत्र १५५	कियद्यावदित्याह—ऊर्ध्वजानुनी येषां ते ऊर्ध्वजानवः …………अत्र यावत्पदसंग्राह्यः "अप्पेगइया दोमासपरिआया" इत्यादिकः औपपातिकग्रन्थो विस्तरभयान्न लिखित इत्यवसेयम्
शा० वृ० पत्र २६४	एवमुक्तक्रमेण औपपातिकगमेन—प्रथमोपाङ्गगतपाठेन तावद् वक्तव्यं यावत्तस्य राज्ञः पुरतो महाश्वाः
शा० वृ० पत्र ३२५	वृक्षवर्णनं प्रथमोपाङ्गतो ऽवसेयम्

सूरपण्णत्ती वृत्ति

पत्र २	यावच्छब्देनौपपातिकग्रन्थप्रतिपादितः समस्तोपि वर्णकः आइन्नजणसमूहा" इत्यादिको द्रष्टव्यः
पत्र २	तस्यापि चैत्यस्य वर्णको वक्तव्यः स चौपपातिकग्रन्थादवसेयः
पत्र २	तस्य राज्ञः तस्याश्च देव्या औपपातिकग्रन्थोक्तो वर्णकोऽभिधातव्यः
पत्र २	समवसरणवर्णनं च भगवत औपपातिकग्रन्थादवसेयम्
पत्र ३	"बहवे उग्गा भोगा" इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तम्
पत्र ३	अत्र यावच्छब्दादिदमौपपातिकग्रन्थोक्तं द्रष्टव्यम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंद्रपण्णत्ती हस्तलिखित वृत्ति

पत्र ५ — औपपातिकग्रन्थप्रसिद्धः समस्तोपि वर्णको द्रष्टव्यः स च ग्रन्थगौरवभयान्नलिख्यते केवलं तत एवौपपातिकादवसेयः

पत्र ५ — औपपातिकग्रन्थोक्तो वेदितव्यः

पत्र ५ — तस्य राज्ञस्तस्याश्च देव्या औपपातिक ग्रन्थोक्तो वर्णकोऽभिधातव्यः

पत्र ५ — समवसरणवर्णनं च भगवत औपपातिकग्रन्थादवसेयम्

पत्र ६ — "बहवे उग्गा भोगा" इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तं सर्वमवसेयम्

उवंगा

१।१४१ — जहा दढपइण्णो

२।१३ — जहा दढपइण्णो

दसाओ

१०।२ — रायवण्णओ एवं जहा ओववातिए जाव चेल्लणाए—

१०।१४-१६ — सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उववाइयगमेणं नेयव्वं जाव पज्जुवासइ—

दसा. हस्त. वृत्ति

वृत्ति पत्र ११ — औपपातिकग्रन्थप्रतिपादितः समस्तोपि वर्णको वाच्यः स चेह ग्रंथगौरवभयान्न लिख्यते केवलं तत एवौपपातिकादवसेयः। दसा. ५।४

द० ५।५ ह०वृ० पत्र ११ चैत्यवर्णको भणितव्यः सोप्यौपपातिकग्रन्थादवसेयः

द० ५।६ वृ० पत्र ११ औपपातिकोक्तं पाठसिद्धं सर्वमवसेयं·······

द० १०।२ ह०वृ० पत्र २५ "तस्य वर्णको यथा औपपातिकनाम्नि ग्रन्थेऽभिहितस्तथा"

द० १०।२ ह०वृ० पत्र २५ विस्तरव्याख्या तूपपातिकानुसारेण वाच्या—

द० १०।३ ह०वृ० पत्र २५ आदिकरः यावत्करणात्·······समस्तो औपपातिकग्रन्थप्रसिद्धो·······केवलमौपपातिकग्रंथादवसेयः—

द० १०।६ ह०वृ० पत्र २६ जावत्ति यावत्करणात् जणवूहेइ वा·······उग्गा भोगा—इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तम्—

द० १०।१४-१६ ह०वृ०पत्र २८ उववातियगमेणीति औपपातिकग्रंथोक्तकौणिकवंदनगमनप्रकारेणायमपि निर्गतः

द० १०।२१ ह०वृ० पत्र २६ इहावसरे धर्म्मकथा औपपातिकोक्ता भणितव्या

अन्य आगमों में ओवाइयं के सूत्र :—

ओवाइयं	भगवई	राय०	जंबु०
सू० ३२	२५।५५६-५६३		
सू० ३३	२५।५६४-५६८		
सू० ३६	२५।५७६-५७६		
सू० ४०	२५।५८२-५६८		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओवाइयं	भगवई	राय०	जंबु०
सू० ४३	२५।६००-६१२		
सू० ४४	२५।६१३-६१८		
सू० ६४	६।२०४	सू० ४६-५५	३।१७८
सू० ६५			१।१८०
सू० ६६			३।१७६

समर्पण सूत्र

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार औपपातिक में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं :—

जाव—उदए जाव झीणे (११७)

एवं जाव—अपडिविरया एवं जाव (१६१)

सेसं तं चेव—परलोगस्स आराहगा सेसं तं चेव (१५७)

एवं—एवं उवज्झायाणं थेराणं (१६)

अभिलावेणं—एवं एएणं अभिलावेणं (७३)

एवं तं चेव—सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव णण्णत्थ गंगामट्टियाए (१२३)

भाणियव्वं—एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं (४०)

कंदमंतो एएसिं वण्णओ भाणियव्वो जाव सिविय (१०)

णेयव्वं—तं चेव पसत्थं णेयव्वं। एवं चेव वइविणओ वि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो (४०)

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

सूत्र	१	कुक्कुड	कुंकड	(ख)
,,	१	°मुसुंढि°	°मुसंढि°	(क, ख)
,,	१	°वंक	°वक्क	(ग)
,,	१	°भत्त°	°हृत्त°	(क)
,,	१	°कीला°	°खीला°	(क, ख)
,,	१	°तुरग°	°तुरंग°	(क)
,,	१	दरिसणिज्जा	दरिसणीया	(क, ख)
,,	२	कालागरु	कालागुरु°	(क)
,,	२	°कहग°	°कहक°	(क, ख, ग)
,,	४	°निकुरंबभूए	°णिउरंबभुए	(ख)
,,	५	दरिसणिज्जा	दरसणिज्जा	(क, ख)
,,	५	गुलइय	गुलुइय	(क)
सूत्र	६	अब्भितर°	अब्भंतर°	(क)
,,	६	बाहिर	बहिर	(ग)
,,	६	पीवेहिं	णितेहिं	(क)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

,,	१३	°हलधर°	°हलहर°	(वृ)
,,	१६	°हणुए	°हणूए	(क)
,,	१६	भुयगीसर°	भुयईसर°	(क, ख, ग)
,,	१६	अकरंडुय°	अकरंदुय°	(क, ख)
,,	१६	°च्छरु°	°थरु°	(वृ)
,,	१६	गुप्फे	°गोफे°	(ग)
,,	१६	°वीढेणं	°पीढेणं	(क, ख)
,,	२१	जया	जदा	(क)
,,	२६	आयावाया	आदावाया	(ग)
,,	२६	परवाया	परवादा	(ग)
,,	३१	ओमोयरिया	अवमोयरिया	(वृ)
,,	३२	बारसभत्ते	बारसमभत्ते	(क)
			बारसमेभत्ते	(ग)
,,	३२	चउद्दस°	चोद्दसम°	(क, ख)
			चोद्दसमे°	(ग)
,,	३२	सोलस°	सोलसम°	(क, ख)
			सोलसमे°	(ग)
,,	३२	चउमासिए	चउम्मासिए	(ख)
,,	३३	°भोइत्ति	°भोईत्ति	(ग)
,,	३४	दव्वाभि°	दव्वभि°	(क)
,,	४०	एंतस्स	इंतस्स	(ग)
,,	४३	°पउत्ते	°पजुत्ते	(ग)
,,	४३	उसण्ण°	ओसण्ण°	(क, ग)
,,	४३	°रूई	°रुयी	(ग)
,,	४४	दरिसणावरणिज्ज°	दंसणावरणीय	(ख)
,,	४६	°वीची°	°वीती°	(ग)
,,	४६	तोयपट्ठं	°तोयवट्ठं	(क)
,,	४६	°वण्णिय°	°पण्णिय°	(ग)
,,	५०	विहस्सती	वहस्सती	(ग)
,,	५१	°तिरीडधारी	°किरीडधारी	(ख)
सूत्र	५२	महप्फलं	महाफलं	(क, ख, ग)
,,	५२	गयगया	गतगता	(क)
,,	५२	पच्चोरुहंति	पच्चोरुभंति	(ग)
,,	५८	पाडियक्कपाडियक्काइं	पाडिएक्कपाडिएक्काइं	(ख)
,,	५६	पओय-लट्ठि	पतोद-लट्ठि	(क)
			पयोत्त-लट्ठि	(ग)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

,,	६३	अब्भिगेहिं	अब्भंगेहिं	(क)
,,	६३	°मिसिमिसंत°	°मिसमिसंत°	(ग)
,,	६३	°सुसिलिट्ठ°	°सुसलिट्ठ°	(क, ग)
,,	६३	°वीइयंगे	°वीजियंगे	(क)
,,	६४	कूवग्गाहा	कूतुयग्गाहा	(ग)
,,	६४	°तुरगाणं	°तुरंगाणं	(क)
,,	६४	सखिखिणी°	°सकिंकिणी°	(क)
,,	६७	°मुइंग°	°मुदंग°	(ग°)
,,	६८	भट्टित्तं	भट्टत्तं	(क)
,,	७१	°कोंच°	°कुंच°	(ग, वृ)
,,	८२	वइर°	वज्ज°	(ख)
,,	८२	°णिघस°	°निकस°	(ख)
,,	८६	वेयणिज्जं	वेदणिज्जं	(क, ग)
,,	९०	से जे	सेज्जे	(क, ख)
,,	९२	से जाओ	सेज्जाओ	(क, ख)
,,	९२	°उरियाओ	°पुरियाओ	(क, ग)
,,	९५	कुक्कुइया	कोकुइया	(ख, ग)
,,	९७	°अहव्वण	°अथव्वण°	(क, ख, ग)
,,	१०५	अलाउ°	लाउ°	(ग)
,,	११७	चरिमेहिं	चरमेहिं	(क)
,,	१५८	°वेंटिया	°वंटिया	(ख)
,,	१५९	भूइ°	भूई°	(क, ख, ग)
,,	१६४	अणगारा	अणकारा	(क, ग)
,,	१७०	तेल्ला°	तिल्ल° (क); तेल°	(ख)
,,	१७५	वय°	वइ°	(क, ख, ग)
,,	१९५	गा. १ पइट्ठिया	पत्तिट्ठिया	(क, ख)

प्रति-परिचय

(क) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय', सरदारशहर से श्री मदनचन्द जी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४० तथा पृष्ठ ८० है। प्रत्येक पत्र ११।।। इंच लम्बा तथा ४।। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में ४ से १३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४६ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर सूक्ष्माक्षरों में टीका लिखी हुई है। प्रति सुन्दर, कलात्मक तथा पठित मालूम होती है। प्रति के अंत में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है :—

इति श्री उववाईसूत्रं समाप्तं ।। ग्रन्थ ११६७ ।।छ।। संवत् १६२३ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ दिने। आगरा नगरे। पातिसाह श्री अकबर जलालदीन राज्य प्रवर्त्तमाने ।। श्री बृहत् खरतर गच्छालंकार श्री पूज्यराज श्री ६ जिनसिंघसूरिविजयराज्ये पंडित श्रीलब्धिवर्द्धन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनिभिरुपपातिका नाम उपांगं लिखापितं ।।छ।। वाच्यमानं चिरं नद्यात् ।। शुभं भवतु लेखकवाचकयोः ।।श्री।।

(ख) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ५९ तथा पृष्ठ ११८ है। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा ४।। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में पाठ की ७ से ९ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। पाठ के ऊपर-नीचे दोनों ओर राजस्थानी भाषा का अर्थ है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है :—

श्री उवाई उपांग पढमं समत्तं ।। ग्रंथाग्रं १२२५ ।। ।।छ।। ।।श्री।। ।। संवत् १६६५ वर्षे पोष मासे शुक्लपक्षे सप्तमी तिथौ श्री सोमवारे। श्री श्री विक्रम नगरे। महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी विजयराजे पं० कर्म्मसिंह लिपीकृता ।।छ।।

(ग) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं। प्रत्येक पत्र १०।। इंच लम्बा तथा ४।, इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में १५ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति में ४६ से ४८ तक अक्षर हैं। प्रति के अन्त में है— उवाईयं समत्तं ।। ग्रन्थाग्र १२०० शुभमस्तु ।।छ।। श्री ।। लिखा है किन्तु संवत नहीं दिया है। पर पत्र, अक्षर तथा चित्रों के आधार से यह प्रति १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

(वृ) हस्तलिखित वृत्ति की प्रतिः यह 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय', सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसकी पत्र संख्या ७५ तथा पृष्ठ १५० हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५५ से ६० तक अक्षर हैं। प्रति १०। इंच लम्बी तथा ४। इंच चौड़ी है। प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

शुभं भवतु ।। कल्याणमस्तु ।। लेखकपाठकयोश्च भद्रं भवतु ।।छ।।
संवत् १६६६ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि भोमे लिखितं ।।छ।। श्रीः ।।
यादृशं पुस्तके दृष्ट्वा ।। तादृशं लिखितं मया ।। यदि शुद्धमशुद्धं वा ।। मम दोषो न दीयते।। छ ।।छ।।

(वृ०पा०) वृत्ति-सम्मत पाठान्तर

कुछ विशेष-हस्तलिखित वृत्ति तथा मुद्रित वृत्ति में वाचनान्तर पाठ सदृश नहीं है। हमने मूल आधार हस्तलिखित वृत्ति को माना है।

रायपसेणियं

प्रस्तुत सूत्र का पाठ-निर्णय हस्तलिखित आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर किया गया है। सूर्याभ के प्रकरण में जीवाजीवाभिगम और दृढप्रतिज्ञ के प्रकरण में औपपातिक सूत्र का भी उपयोग किया है। वृत्तिकार ने स्थान-स्थान पर वाचनाभेद की प्रचुरता का उल्लेख किया है। वृत्तिकाल में पाठभेद की समस्या उग्र थी, उत्तरकाल में वह उग्रतर हो गई। फिर भी हमने उपलब्ध साधन-सामग्री का सूक्ष्मेक्षिकया प्रयोग कर पाठ निर्धारण किया है। अधिकार की भाषा मे कोई नहीं कह सकता कि यह पाठ-निर्धारण सर्वात्मना त्रुटि रहित है, किन्तु इतना कहा जा सकता है कि इस कार्य में तटस्थता और धृति का सर्वात्मना उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत सूत्र की पाठपूर्ति अत्यन्त श्रम साध्य हुई है। पाठपूर्ति से सूत्र का शरीर बृहत् हुआ है। साथ-ही-साथ पाठ-बोध की सुगमता और कथावस्तु की सरसता बढ़ी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दान्तर और रूपांतर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं; इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

सूत्र संख्या	८	मउड	मतुड	(क)
,,	८	°धेयं	°धेज्जं	(क)
,,	६	णाइ°	णादि°	(क,ख,ग,च)
,,	१०	उक्किट्ठाए	ओक्किट्ठाए	(छ)
,,	१२	घट्ठे	घट्ठे (ख,ग); मट्ठ	(च)
,,	१३	णाइय	णातिय	(क,ख,ग,घ,च,छ)
,,	१५	हंत	हंद	(च)
,,	१५	अभिवंदए	अभिवंदते	(छ)
,,	२४	आयंस°	आतंस°	(घ,च)
,,	३७	मिउ°	मउ°	(क,ख,ग)
,,	३७	पासाईए	पासातीए	(क,ख,ग,घ)
,,	४०	अतीव	अतीत	(च)
,,	४८	तिसोवाण°	तिसोमाण°	(क,ख,ग,च)
,,	५६	महालतेणं	महालएणं	(ख,ग,घ)
,,	५६	वेमाणिएहि	वेमाणितेहिं	(क,ख,ग,घ)
,,	६६	विरचिय	विरतिय	(क,ख,ग,च)
,,	७१	°वायाणं	वाइयाणं	(क,ख,ग,छ)
			वाययाणं	(घ)
,,	७५	ओणमंति	तोनमंति	(क,घ)
,,	७६	मउ	मिउ	(क्वचित्)
,,	७७	°टाणं	°ताणं	(क,च,छ)
,,	११८	मत्थए	मत्थते	(क,ख,ग,घ)
,,	११८	जएणं विजएणं	जतेणं विजतेणं	(क,ख,ग,घ)
,,	१२४	बहुईओ	बहुगीओ	(क,ख,ग,घ)
			बहुगीतो	(च,छ)
,,	१२६	दार°	वार°	(क,ख,ग,च,छ;)
			बार	(घ)
,,	१३०	°कवेल्लुयाओ	°कवेलुयातो	(क,ख,ग,घ)
,,	१३५	संकलाओ	संखलाओ	(क्वचित्)
,,	१३७	पगंठगा	पकंठगा	(घ,च)
,,	१५४	साए पहाए पएसे	साते पहाते पतेसे	(क,ख,ग,घ,च,छ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

,,	१५६	सव्वोउय°	सव्वोउत°	(क,ख,ग,घ)
,,	१७३	पिणद्ध	°विनद्ध°	(घ)
,,	१७३	तिठाण	तित्थाण°	(क,ख,ग,घ,च,छ)
,,	१८५	आईणग	आदीणग	(क,ख,ग,घ)
,,	१८६	उड्ढं	उद्धं	(क)
,,	१६७	°वेइया	°वेतिया	(क,ख,ग,घ,च,छ)
,,	१६७	फलएसु	°फलतेसु	(क,ख,ग,घ,च,छ)
,,	२१६	तओ	तगो (क); ततो	(छ)
,,	२२८	°बिंटा	°बेंटा क,ख,ग,छ; बेठा	(च)
,,	२४५	सुविरइ-रयत्ताणे	सुइरइ-रइत्ताणे	(क,ख,ग,घ,छ)
,,	२६२	कडुच्छुयं	कडुच्छयं	(क,ख,ग,घ)
,,	६५४	चरियासु	चलियासु	(क,ख,ग)
,,	६६४	पीय°	पील°	(क,ख,ग)
,,	६८३	°विंद°	°वंद°	(घ)
,,	६८७	°वूहे	°पूहे	(क,ख,ग)
,,	६६५	°परिभाइत्ता	परिभागेत्ता	(क,ख,ग,घ,च,छ)
,,	७०६	कोट्ठयाओ	कोट्ठाओ	(क,घ)
,,	७२०	अगिलाए	अइलाए	(क,च)
,,	७५४	अओ°	अयो° (क,ख,ग); अय°	(घ)
,,	७५५	भिच्चा	भेच्चा	(घ)
,,	७६०	किसिए	कसिए	(क,ख,ग,घ,छ)
,,	७७१	वाउकायस्स	वाउयागस्स	(क,ख,ग,घ,च,छ)
,,	७८७	भिक्खुयाणं	भिछुयाणं	(घ, च)
,,	७६१	°प्पओगेण	प्पयोगेण	(घ)

प्रति-परिचय

(क) यह प्रति सरदारशहर 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय' से प्राप्त है। इसके ४६ पत्र तथा ६८ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच तथा चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५० से ५५ तक अक्षर है यह प्रति वि० सं० १६७१ की लिखी हुई है। इसकी पुष्पिका निम्नोक्त है—

'नमो जिणाणं जियभयाणं णमोसुय देवयाए भगवईए णमो पण्णत्तीए भगवईए णमो भगवओ अरहओ पासस्स पस्से सुपस्से पस्सवणीणभंए। छ। रायपसेणइयं समत्तं। छ। ग्रंथाग्रं २०७६ समर्थित-मिदं सूत्रं छ संवत् १६७१ वर्षे भाद्रवा सुदि ११।

आगे भी पष्पिका है पर उस पर हड़ताल फेरी हुई है।

(ख), **(ग)** पत्र क्रमशः ५५, ६१। ये दोनों प्रति 'क' प्रति के सदृश ही हैं।

(घ) यह प्रति 'यति कनकचन्दजी' पाली (मारवाड़) की है। इसके पत्र ५४ व पृष्ठ १०८ हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच व चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४६-४८ अक्षर हैं। यह प्रति वि०सं० १५६६ की लिखी हुई है। प्रति के अन्त में निम्न पुष्पिका है—

॥छ॥ शुभं भवतु लेखकपाठकयोः श्री संघस्य च। सं० १५६६ वर्षे चैत्र सुदि २ तिथौ अद्येह श्रीमदणहिल्लपत्तने श्री बृहत्खरतरगच्छे श्रीवर्धमानसूरिसंताने श्री जिनभद्रसूरिपट्टानुक्रमेण श्री जिनहंससूरिराज्ये वाचनाचार्यजयाकारगणिशिष्य वा० धर्मविलासगणिवाचनार्थं भ० वस्तुपालभार्यया लीली श्रावकया। पुत्ररत्न भ० सालिगपुमुखपरिवार स श्रीकया सू श्रेयार्थं च लेखितं श्री राजप्रश्नीयोपांगं।

(च) यह प्रति पूनमचन्द बुद्धमल दुधोड़िया, छापर (राजस्थान) के संग्रह से प्राप्त है। इस प्रति के ४२ पत्र तथा ८४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १२ इंच तथा चौड़ाई ५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५४ तक अक्षर हैं। प्रथम दो पत्रों में २ चित्र हैं। लिपि सुन्दर पर अशुद्धि बहुल है। यह प्रति अनुमानित सोलहवीं शताब्दि की है।

(छ) यह प्रति भी उपरोक्त दुधोड़िया, छापर (राजस्थान) के संग्रह से प्राप्त है इस प्रति के पत्र ४१ व पृष्ठ ८२ हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५७ से ६० अक्षर हैं। लिपि साधारण पर शुद्ध है। अन्त में लिखा है—लिपि सं० १६६५ वर्षे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी शुक्रे बब्बेरकपुरे पं० लब्धि कल्लोलगणिनालेखि।

(वृ) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से प्राप्त है। इसके ५२ पत्र तथा १०४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच तथा चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र में १७ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६५ से ७० तक अक्षर हैं। यह प्रति वि० सं० १६०५ में लिखी हुई है। इसकी पुष्पिका निम्नोक्त हैं—

इति मलयगिरिविरचिता राजप्रश्नीयोपांगवृत्तिका समर्थिता ॥ समाप्तमिति। प्रत्यक्षरगणनया ग्रन्थाग्रं ॥छ॥ ॥छ॥ प्रत्यक्षर गणनातो ग्रन्थमानं विनिश्चितं। सप्तत्रिंशत्शतान्यत्र। श्लोकानां सर्व संख्यया: ॥छ॥ ग्रन्थाग्रं श्लोक ३७०० ॥छ॥ श्री ॥ संवत् १६०५ वर्षे श्रावण सुदि १३ भौमे पतन वास्तव्यं ॥ पं० रद्रासुत्जिगनाथ लिखितं ॥ शुभं भवतु ॥

जीवाजीवाभिगमे

प्रस्तुत सूत्र का पाठ निर्णय हस्तलिखित आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर किया गया है।

मलयगिरि की वृत्ति प्राचीन आदर्श के आधार पर निर्मित है इसीलिए ताडपत्रीय आदर्श और वृत्ति का पाठ समान चलता है। इस विषय में ३।२१८, ४५७, ५७८, ८२६ सूत्र तथा इनके पाद टिप्पण द्रष्टव्य है। अर्वाचीन आदर्शों में पाठ का इतना बड़ा अन्तर मिलता है यह बहुत ही विमर्शनीय और अन्वेषणीय है।

जीवाजीवाभिगम के आदर्शों में पाठ की एक समानता नहीं रही है इसकी सूचना जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के वृत्तिकार शान्तिचन्द्र ने भी दी है।[1]

---

१. जम्बुद्वीपप्रज्ञप्ति वृत्ति पत्र १०८—

अत्र चाधिकारे जीवाभिगमसूत्रादर्शे क्वचिदधिकपदम् अपि दृश्यते तत्तु वृत्तावव्याख्यातं स्वयं पर्यालोच्यमानमपि न नार्थप्रदमिति न लिखितं, तेन तत् सम्प्रदायादवगन्तव्यं, तमन्तरेण सम्यक् पाठशुद्धेरपि कर्तुमशक्यत्वादिति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपाध्याय शान्तिचन्द्र ने कल्पवृक्ष के विवरण का पाठ जीवाजीवाभिगम से उद्धृत किया है। चतुर्थ कल्पवृक्ष के स्वरूप वर्णन में उन्होंने 'कणग निगरण' पाठ उद्धृत किया है। उसका अर्थ किया है सुवर्ण राशि।[1] जीवाजीवाभिगम की वृत्ति में 'कणग निगरण' पाठ व्याख्यात है—"कनकस्य निगरणं कनकनिगरणं गालितं कनकमिति भावः।[2] लिपि-परिवर्तन के कारण पाठ परिवर्तन हुआ है। आदर्शों में 'कूडागारट्ठ' पाठ मिलता है। मुद्रित तथा हस्तलिखित वृत्ति में भी 'कूटागाराढ्यानि' पाठ उपलब्ध होता है।

जीवाजीवाभिगम की वृत्ति में यह व्याख्यात नहीं है। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति में इसकी व्याख्या मिलती है—"कूटाकारेण—शिखराकृत्याढ्यानि"[3]

आचार्य मलयगिरि ने आदर्शगत पाठभेद का स्वयं उल्लेख किया है।[4] वृत्तिकार ने जिन गाथाओं को अन्यत्र कहकर उद्धृत किया है। अर्वाचीन आदर्शों में वे गाथाएं मूल पाठ में समाविष्ट हो गई।[5]

वृत्ति में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की टीका का उल्लेख मिलता है। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के व्याख्याकार मलयगिरि के उत्तरवर्ती ही हैं। इसलिए यह उल्लेख प्रक्षिप्त है अथवा मलयगिरि के सामने उसकी कोई प्राचीन व्याख्या रही है यह अन्वेषण का विषय है।[6]

कहीं-कहीं वृत्ति में भी कुछ विमर्शनीय लगता है। 'सिरिवच्छ' पाठ की व्याख्या वृतिकार ने 'श्रीवृक्ष' की है। प्रकरण की दृष्टि से 'श्रीवत्स होना चाहिए।[7]

मूल टीकाकार और मलयगिरि के सामने पाठभेद तथा अर्थभेद की जटिलता रही है और व्याख्याकारों के समय में इस विषय में कुछ चर्चाएं भी होती रही हैं। इस विषय में वृत्ति का एक उल्लेख बहुत ही ऐतिहासिक महत्त्व का है। वृत्तिकार ने लिखा है कि यह सूत्र विचित्र अभिप्राय वाला होने के कारण दुर्लक्ष्य है। इसकी व्याख्या सम्यक् सम्प्रदाय के आधार पर ही ज्ञातव्य है। सूत्र

---

१. जम्बूद्वीप वृ० प० १०२—"कनकनिकरः सुवर्णराशिः।"

२. जीवाजीवाभिगम वृ० प० २६७।

३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वृ० प० १०७
देखें जीवाजीवाभिगम ३।५९४ का पादटिप्पण।

४. (क) जीवाजीवाभिगम वृ० प ३२१
"इह बहुधा सूत्रेषु पाठभेदाः परमेतावानेव सर्वत्राप्यर्थो नार्थभेदान्तरमित्येतद्व्याख्यानुसारेण सर्वेष्वनुगन्तव्या न मोग्धव्यमिति।"

(ख) जीवा० वृ० प० ३७६
इह भूयान् पुस्तकेषु वाचनाभेदो गलितानि च सूत्राणि बहुषु पुस्तकेषु ततो यथाऽवस्थितवाचनाभेदप्रतिपत्त्यर्थं गलितसूत्रोद्धरणार्थं चैवं सुगमान्यपि विव्रियन्ते।

५. जीवा वृ०प० ३३१, ३३३, ३३४ तथा ३।८२०, ८३०, ८३४, ८३७ के पादटिप्पण द्रष्टव्य हैं।

६. जीवाभिगम वृ०प० ३८२ क्वचित्सिंहादीनां वर्णनं दृश्यते तद् बहुषु पुस्तकेषु न दृष्टमित्युपेक्षितं अवश्यं चेत्तद्व्याख्यानेन प्रयोजनं तर्हि जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति टीका परिभावनीया, तत्र सविस्तरं तद् व्याख्यानस्य कृतत्वात्।

७. जीवा जीवाभिगम वृ०प० २७१—
"श्रीवृक्षेणांकितं—लाञ्छितम् वृक्षो येषां ते श्री वृक्षलाञ्छित वक्षसः"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के अभिप्राय को जाने बिना मनमाने ढंग से व्याख्या करना उनकी अवहेलना करना है।[1] सूत्र की आशातना या अवहेलना न हो इस दृष्टिकोण ने पाठ और अर्थ की परम्परा को सुरक्षित रखने में काफी योग दिया है फिर भी बुद्धि की तरतमता और लिपिप्रमाद के कारण पाठ और अर्थ में परिवर्तन हुआ है। पाठ की विविधता के कारण हमें भी पाठ के निर्धारण में काफी श्रम करना पड़ा है। पाठान्तर और उनके टिप्पणों से उसका अंकन किया जा सकता है।

'ता' संकेतित प्रति संक्षिप्त पाठप्रधान है, जैसे १:४१ सूत्र से —"ताइं भंते किं पुडाइं आहारेंति अपु गोयमा पुट्ठा णो अपु। ओगा णो अणोगा अणंतरा णवरं अणूइं पि आ बायराइं पिआ उड्ढं वि इ आदि पि इ सविसए णो अविसए आणुपुव्वि णो अणाणुपुव्वि अच्छदि वाघातं प सिय तिदिसि छक। नो वण्णतो काला नी गंधतो सु २ रसतो नो फासहो तेसिं पोराणं विपरिणामेत्ता अपुव्व वण्ण गुण छक उप्पाएत्ता आतसरीर खेत्तोगाढे पोग्गले सव्वप्पणताए आहारमाहारेंति"।

लिपि-दोष के कारण "किं तिदिसिं के स्थान में "कतिदिसि" (क)। 'ता' का अनेक जगह पाठान्तर नहीं लिया है, वहां पाठ बहुत संक्षिप्त है।

शब्दान्तर और रूपान्तर

१।१	जिणक्खायं	जिणखायं	(ख)	जिणखातं	(ता)
,,	अणुवीइ	अणुवीतियं			(क,ख)
,,	रोएमाणा	रोतमाणा			(ता)
१।१४	संघयण	संघतण			(ता)
,,	सण्णाओ	सण्णातो			(क)
,,	जोगुवओगे	जोगुवतोगे			(क)
१।१६	कोहकसाए	कोहकसाते			(क)
१।२१	कण्हलेस्सा	किण्हलेस्सा			(ग,ट)
१।२६	आणपाणु°	आणपाण°			(ट)
१।७२	छीरविरालिया	छिरविरालिया	(क)	छिरिविरालिया	(ख;)

१. जीवाजीवाभिगम वृ०प० ४५० —

"सूत्राणि ह्यमूनि विचित्राभिप्रायतया दुर्लक्ष्याणीति सम्यक्संप्रदायादवसातव्यानि, सम्प्रदायश्च यथोक्तस्वरूप इति न काचिदनुपपत्तिः, न च सूत्राभिप्रायमज्ञात्वा अनुपपत्तिरुद्भावनीया, महाशातनायोगतो महाऽनर्थप्रसक्तेः सूत्रकृतो हि भगवन्तो महीयांसः प्रमाणीकृताश्च महीयस्तरैस्तत्कालवर्त्तिभिरन्यैर्विद्वद्भिस्ततो न तत्सूत्रेषु मनागप्यनुपपत्तिः, केवलं सम्प्रदायावसाये यत्नो विधेयः ये तु सूत्राभिप्रायमज्ञात्वा यथा कथञ्चिदनुपपत्तिमुद्भावयन्ते ते महती महीयस आशातयन्तीति दीर्घतरसंसारभाजः, आह च टीकाकारः —"एवं विचित्राणि सूत्राणि सम्यक्संप्रदायादवसेयानीत्यविज्ञाय तदभिप्रायं नानुपपत्तिचोदना कार्या, महाशातनायोगतो महाऽनर्थप्रसंगादिति" एवं च ये सम्प्रति दुष्षमानुभावतः प्रवचनस्योपप्लवाय धूमकेतव इवोत्थिताः सकलकाल सुकराव्यवच्छिन्नसुविधिमार्गानुष्ठातृसुविहितसाधुषु मत्सरिणस्तेऽपि वृद्धपरम्परायातसम्प्रदायादवसेयं सूत्राभिप्रायमपास्योत्सूत्रं प्ररूपयन्तो महाशातनाभाज प्रतिपत्तव्या अपकर्णयितव्याश्च दूरतस्तत्त्ववेदिभिरिति कृतं प्रसङ्गेन"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		छिरियविरालिया (ग,ट); छीरवीराली	(ता)
१।७३	थीहू	थिभु	(क)
१।१००	तहप्पगारा	तहप्पकारा	(क,ख,ग,ट)
१।१०१	दुआगइया	दुयागतिया	(ग)
१।११६	आहारो	आधारो	(ता)
२।५६	पलिओवमाइं	पलितोवमाइं	(क,ख,ग,ट)
२।६०	अब्भहियाइं	अब्भधियाइं	(ग)
२।७४	फुंफुअग्गि	फुंफअग्गि (क); पुंफअग्गि	(ग)
२।६२	वासपुहुत्तं	वासपुधत्तं (क); वासपुहुत्तं	(ग,ट)
२।२४१	एतासि	एतेसि (क,ख,ग,ट); एगासि	(ता)
२।१४६	वणस्सति°	वणप्फइ°	(क,ख,ग)
३।५	जोयण	जोतण	(क)
३।६	आवबहुले	अवबहुले (क); आवबहुले	(ता)
३।३३	अबाधाए	आबाधाए	(क,ख,ट)
३।४८	जे णं इमं	जेणिमं	(ता)
३।७३	असीउत्तरं	आसीउत्तरे	(ता)
३।७७	अडहुत्तरे	अडसत्तरी (ग); अट्ठुत्तरे	(ता)
३।७७	किण्हपुड	किण्णपुड	(क,ग)
३।८०	बाहल्लेणं	पाहलेणं	(ता)
३।६४	केरिसगा	केरिसता	(क,ख,ग)
३।६६	फुडित°	फुडिग° (ता); स्फुटित°	(मवृ)
३।११८	उसिणवेदणिज्जेसु	उसुणवेदणिज्जेसु	(ता)
३।११८	विरचिय	विरइय	(क,ग,ट)
३।११६	एगाहं	एकाहं	(ख,ग,ट)
३।२३४	एत्थ	तत्थ (क,ख,ग,ट); यत्थ	(ता)
३।३२३	जंबूणदमया	जंबूणतमया (क); जंबूणतामया	(ग,ट,ता)
३।३७१	उवगारियालयणं	ओवारियलयणे	(क,ख,ग,ट,त्रि;)
		उवकारियलयणे	(ता)
३।३७२	खंभुग्गय	थंभुग्गय	(क,ग)
३।४१२	धूवघडियाओ	धूमघडियाओ	(क,ख)
३।५६३	ओविय°	उग्विविय (क,ख); उव्विद्दय	(ग)
३।७३३	बायालीसं	बादालीसं	(ता)
३।७५०	,	बातालीसं	(ता)
३।७४८	केलासे	केतिलासे (ख); कइलासे	(ग,ट,त्रि)
३।७६४	एगुणयालं	इऊयालं (क); ऊयालं	(ख,ता;)
		इगुयालं	(ग)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३।७६८	इगयालीसं	एयालीसं (क,ख,ट); एगयालीसं	(ग)
		इतालीसं	(ता)
३।८२६	तेणट्ठेणं	एएणट्ठेणं	(ग,त्रि)
३।८३८।१३	मणुस्साणं	मणूसाणं	(ता)
३।८४०	कयाइ	कदायी	(ता)
३।८४१	बलाहका	बलाहता	(ता)
३।८४१	बादरे विज्जुकारे	वातरे विज्जुतारे	(ता)
	बादरे थणियसद्दे	वातरे थणितसद्दे	(ता)
३।८४१	नदीओइ वा णिहीति वा	णंदीति वा णिधयोति वा	(ता)
३।८६०	सुपक्कखोयरसेइ	सुपिक्कखोतरसेति	(ता)
३।८७७	खोदवरण्णं	खोयवरण्णं	(क,ख,ग,ट,त्रि)
३।६४६	खोदसरिसं	खोतोदसरिसं	(ता)
३।६६८	हेट्ठिपि	हट्ठिपि (ग,ट,ता); हिट्ठुपि	(त्रि)
३।१००७	सव्वहेट्ठिल्लं	सव्वहेट्ठिमयं	(ता)
३।१००७	सव्वोवरिल्लं	सव्वुप्परिल्लं	(क,ख,ट)
३।१००७	सव्वब्भितरिल्लं	सव्वब्भंतरं	(ता)
५।३७	णिओदा	णिओता	(ता)
५।५४	°णिओदजीवा	°णिगोदजीवा	(क,ख,ग,ट,त्रि)
५।५८	°णिओदजीवा	°णिओयजीवावि	(क,ख,ग,ट,त्रि)
६।११	अणाइए	अणादीए	(ता)
६।२८	सकासाई	सकसादी	(ता)
६।१३१	ओहिदंसणी	अवधिदंसणी	(ग,त्रि)
		ओधिदंसणि	(ता)

प्रति परिचय

(क) (मूलपाठ) पत्र ६४ संवत् १५७५ (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ६४ व पृष्ठ १८८ हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ५३-५६ तक अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १३। इंच व चौड़ाई ५ इंच है। यह अति सुन्दर लिखी हुई है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

संवत् १५७५ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ भृगुवासरे पत्तननगरमध्ये मोढजातीय जोशी वीठुलसुत लटकणलिखितम् ।छ।

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥१॥ शुभं भवतु, लेखक-पाठकयोः कल्याणमस्तु छ। छ। श्री। श्री। छ। ग्रं० ५२००

(ख) (मूलपाठ) पत्र ८०

यह 'प्रति' पूर्वलिखित सरदारशहर की है। इसके पत्र ८० व पृष्ठ १६० हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ६१ करीब अक्षर है। इसकी लम्बाई १२ इंच व चौड़ाई ४। इंच है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'प्रति' प्राचीन है व बहुत जीर्ण है, अन्त में लिपि संवत् नहीं है परन्तु अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

(ग) (मूलपाठ) पत्र ९० सचित्र

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय की है। इसके पत्र ९० व पृष्ठ १८० हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां है और प्रत्येक पंक्ति में ६३ करीब अक्षर लिखे हुए हैं। इसकी लम्बाई ११।। इंच व चौड़ाई ४।। इंच है। प्रति के आदि पत्र में तीर्थंकर देव की प्रतिमा का सुनहरी स्याही में सुन्दर चित्र है। प्रति बहुत सुंदर लिखी हुई है। 'प्रति' के मध्य 'बावडी' व उसके मध्य लाल बिन्दु हैं।

इस प्रति के अन्त में पुष्पिका व लिपि संवत् नहीं है परन्तु अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।यह प्रति 'ताडपत्रीय प्रति' व टीका से प्रायः मेल खाती है।

'ता' ताडपत्रीय फोटो प्रिन्ट (जैसलमेर भण्डार)

यह प्रति टीका से प्रायः मिलती है। इसमें तीसरी 'प्रतिपत्ति' के १०५ सूत्र से ११५ सूत्र तक के पत्र नहीं हैं।

(ट) (टब्बा) लिपि संवत् १८०० यह प्रति संघीय ग्रन्थालय लाडनूं की है। यह प्रति कालूगणी द्वारा पठित (पारायणकृत) है व उनके द्वारा स्थान-स्थान पर पाठ संशोधन भी किया हुआ है।

जीवाजीवाभिगम टीका (हस्तलिखित)

यह प्रति 'श्रीचन्दजी गणेशदासजी गधैया' पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र २५० व पृष्ठ ५०० हैं। प्रत्येक पत्र में पंक्ति १५ अक्षर ६५ करीब है। लम्बाई १०×४$\frac{1}{2}$ लिपि सं० १७१७, प्रति की लिपि सुन्दर है।

सहयोगानुभूति

जैन-परंपरा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गये थे, वे इस लंबी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गये हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थदृष्टिसमन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारंभ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन हैं। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कार्य के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के ओवाइयं तथा रायपसेणियं के पाठ सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी तथा जीवाजीवाभिगमे के पाठ सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी और मुनि हीरा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है। जीवाजीवाभिगमे के पाठ सम्पादन में मुनि छत्रमल जी, मुनि बालचंदजी, मुनि हंसराजजी और मुनि मणिलाल जी का भी सहयोग रहा है।

ओवाइयं की शब्द सूची मुनि श्रीचन्दजी तथा रायपसेणियं और जीवाजीवाभिगमे की मुनि हीरालालजी ने तैयार की है। प्रूफ संशोधन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि हीरालालजी और साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी व समणी कुसुम प्रज्ञा का सहयोग रहा है।

ओवाइयं तथा रायपसेणियं का ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलालजी "आमेट" ने तैयार किया है। इस ग्रन्थ के प्रथम दो परिशिष्ट मुनि हीरालालजी ने तैयार किए है। पाठ के पुनर्निरीक्षण के समय भी मुनि हीरालालजी विशेषतः संलग्न रहे हैं।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए में इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

आगमविद् और आगम संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचंदजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया/कुलपति—जैन विश्व भारती/प्रारंभ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील है। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर वे अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। जैन विश्व भरती के अध्यक्ष खेमचन्दजी सेठिया और मंत्री श्रीचन्द बैंगाणी का भी योग रहा है। संपादकीय और भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद जैन विश्व भारती के अन्तर्गत 'अनेकान्त शोधपीठ के डायरेक्टर नथमल टांटिया ने तैयार किया है।

एक लक्ष्य के लिये समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

—युवाचार्य महाप्रज्ञ

अध्यात्म साधना केन्द्र, महरोली
अक्षय तृतीया
१ मई, १९८७
नई दिल्ली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक का नाम **उवंगसुत्ताणि** है। इसमें बारह उपांगों का पाठान्तर तथा संक्षिप्तपाठ सहित मूलपाठ है। इसके दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड मे तीन उपांग हैं:—

१. ओवाइयं २. रायपसेणियं ३. जीवाजीवाभिगमे।

द्वितीय खंड में नौ उपांग हैं—

१. पण्णवणा २. जंबुद्दीवपण्णत्ती ३. चंदपण्णत्ती ४. सूरपण्णत्ती

५. निरयावलियाओ [कप्पियाओ] ६. कप्पवडिसियाओ ७. पुप्फियाओ

८. पुप्फचूलियाओ ९. वण्हिदसाओ

प्राचीन व्यवस्था के अनुसार आगम के दो वर्गीकरण मिलते हैं।

१. अंगप्रविष्ट

२. अंगबाह्य

उपांग नाम का वर्गीकरण प्राचीनकाल में नहीं था। नन्दीसूत्र में उपांग का उल्लेख नहीं है। उससे पहले के किसी आगम में उपांग की कोई चर्चा नहीं है। तत्वार्थभाष्य में उपांग का प्रयोग मिलता है। उपलब्ध प्रयोगों में सम्भवत: यह सर्वाधिक प्राचीन है।[1]

अंग और उपांग की संबन्ध योजना

तत्वार्थभाष्य में उपांग शब्द का उल्लेख है, किन्तु उसमें अंगों और उपांगों का सम्बन्ध चर्चित नहीं है। इसकी चर्चा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति तथा निरयावलिका के वृत्तिकार श्रीचन्द्रसूरि द्वारा रचित सुखबोधा सामाचारी नामक ग्रन्थ में मिलती है।[2] जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति के अनुसार अंगों और उपांगों की सम्बन्ध-योजना इस प्रकार है:—

अंग	उपांग
आचारांग	औपपातिक
सूत्रकृतांग	राजप्रश्नीय
स्थानांग	जीवाजीवाभिगम
समवायांग	प्रज्ञापना
भगवती	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति

---

१. तत्त्वार्थभाष्य १/२० : तस्य च महाविषयत्वात्तांस्तानर्थानधिकृत्य प्रकरणसामप्त्यपेक्षमंगोपांगनानात्वम्।

२. सुखबोधा सामाचारी, पृष्ठ ३४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञाताधर्मकथा	चन्द्रप्रज्ञप्ति
उपासकदशा	सूर्यप्रज्ञप्ति
अन्तकृतदशा	निरयावलिका [कल्पिका]
अनुत्तरोपपातिकदशा	कल्पावतंसिका
प्रश्नव्याकरण	पुष्पिका
विपाकश्रुत	पुष्पचूलिका
दृष्टिवाद	वृष्णिदशा[1]

१. ओवाइयं

नाम बोध

प्रस्तुत आगम का नाम ओवाइयं [औपपातिक] है। इस का मुख्य प्रतिपाद्य उपपात है। समवसरण इसका प्रासंगिक विषय है। मुख्य प्रतिपाद्य के आधार पर प्रस्तुत सूत्र का नाम 'ओवाइयं' किया गया है। इसका संस्कृत रूप औपपातिक होता है। प्राकृत नियम के अनुसार पकार का लोप करने पर 'ओववाइय' का 'ओवाइय' रूप बन गया। नंदी सूत्र में यही नाम उपलब्ध होता है।[2]

विषय-वस्तु

औपपातिक का मुख्य विषय पुनर्जन्म है। उपपात के प्रकरण में अमुक प्रकार के आचरण से अमुक प्रकार का आगामी उपपात होता है, यही विषय चर्चित है।

उपोद्घात प्रकरण में अनेक वर्णक हैं—नगरी वर्णक, चैत्य वर्णक, उद्यान वर्णक, राज वर्णक आदि-आदि। इन वर्णकों से प्रस्तुत सूत्र वर्णक सूत्र बन गया। इन्हीं वर्णकों के कारण अनेक समर्पणों में इसका उपयोग हुआ है।

व्याख्या ग्रंथ

औपपातिक का प्रथम व्याख्या ग्रन्थ नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरिकृत वृत्ति है। उसके प्रारम्भिक श्लोक से यह ज्ञात होता है कि अभयदेवसूरि को इस वृत्ति से पूर्व कोई अन्य वृत्ति प्राप्त नहीं थी। उन्होंने अन्य ग्रन्थों का अवलोकन कर इसका निर्माण किया था। स्वयं उन्होंने लिखा है—

श्रीवर्द्धमानमानम्य, प्रायोऽन्यग्रन्थवीक्षिता।
औपपातिकशास्त्रस्य, व्याख्या काचिद्विधीयते॥

वृत्तिकार ने कुछ स्थलों पर पूर्वज आचार्यों के अभिमतों का उल्लेख भी किया है—

१. स्नानाद्वा पाण्डुरीभूतगात्रा इति वृद्धाः [वृत्ति, पृ० १७१]।

२. चूर्णिकारस्त्वाह [वृत्ति पृ० २२४]

३. अस्य च वृद्धोक्तस्याधिकृतगाथाविवरणस्यार्थं भावार्थः। [वृत्ति, पृ० २२५]

---

१. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, शान्तिचन्द्रीया वृत्ति, पत्र १,२।

२. नन्दी, सूत्र ७६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह वृत्ति न बहुत विस्तृत है और न अति संक्षिप्त। इसके मध्यम आकार में विवेचनीय स्थल अधिकांशतया व्याख्यात हैं।[1]

प्रस्तुत सूत्र में वाचनान्तरों की बहुलता है। वृत्तिकार ने प्रथम सूत्र की व्याख्या में लिखा है—इस सूत्र में बहुत वाचनाभेद है। जो बुद्धिगम्य होगा उसकी मैं व्याख्या करूंगा।[1] सम्भवतः इतने वाचनान्तर किसी अन्य सूत्र में प्राप्त नहीं हैं। यदि वृत्तिकार ने इनका संकलन नहीं किया होता तो ये लुप्त हो जाते।

वृत्ति के अन्त में त्रिश्लोकी प्रशस्ति है। उसमें वृत्तिकार ने अपने गुरु श्री जिनेश्वरसूरि, चन्द्रकुल तथा रचनास्थल—अणहिलपाटकनगर और वृत्ति के संशोधक द्रोणाचार्य का उल्लेख किया है—

> चन्द्रकुल-विपुल-भूतल-युगप्रवर-वर्धमानकल्पतरोः।
> कुसुमोपमस्य सूरेः, गुणसौरभ-भरित-भवनस्य ॥१॥
> निस्सम्बन्धविहारस्य सर्वदा श्रीजिनेश्वराह्वस्य।
> शिष्येणाभयदेवाख्यसूरिणेयं कृता वृत्तिः॥२॥
> अणहिलपाटकनगरे श्रीमद्द्रोणाख्यसूरिमुख्येन।
> पण्डितगुणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम् ॥३॥

इसका दूसरा व्याख्या-ग्रन्थ स्तबक है। यह विक्रम की अठारहवीं शती का है। इसके कर्ता संभवतः धर्मसी मुनि हैं।

२. रायपसेणियं

नाम बोध

प्रस्तुत सूत्र का नाम 'रायपसेणियं' है। पं० बेचरदास दोशी ने प्रस्तुत सूत्र का नाम 'रायपसेणइयं' रखा है। उन्होंने सिद्धसेनगणी द्वारा उल्लिखित 'राजप्रसेनकीय' और मुनि चन्द्रसूरि द्वारा उल्लिखित 'राजप्रसेनजित' को इसका आधार माना है।[2]

प्रस्तुत सूत्र का सर्वाधिक प्राचीन उल्लेख नंदी सूत्र में मिलता है। वहां इसका नाम 'रायपसेणिय' है।[3] नंदी की चूर्णि और उसकी हरिभद्रसूरि तथा आचार्य मलयगिरि कृत वृत्तियों में इसकी व्याख्या नहीं है। आचार्य मलयगिरि ने प्रस्तुत सूत्र के विवरण में 'राजप्रश्नीय' नाम का उल्लेख किया है। राजा प्रदेशी ने केशीस्वामी से प्रश्न पूछे थे। प्रस्तुत सूत्र में उनका वर्णन है। अतः इसका नाम 'राजप्रश्नीय' है।[4]

---

१. औपपातिक, वृत्ति, पृ० २ : इह च बहवो वाचनाभेदा दृश्यन्ते, तेषु च यमेवावभोत्स्यामहे तमेव व्याख्यास्यामः।

२. रायपसेणइयं, प्रवेशक, पृ० ६,७।

३. नंदी, सू० ७७।

४. (क) रायपसेणिय वृत्ति, पृ० १ :
अथ कस्माद् इदमुपाङ्गं राजप्रश्नीयाभिधानमिति ? उच्यते, इह प्रदेशिनामा राजा भगवतः केशिकुमारश्रमणस्य समीपे यान् जीवविषयान् प्रश्नानकार्षीत्, यानि च तस्मै केशिकुमारश्रमणो गणभृत् व्याकरणानि व्याकृतवान्।
(ख) रायपसेणिय वृत्ति, पृ० २ राजप्रश्नेषु भवं राजप्रश्नीयम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय-वर्णन की दृष्टि से मलयगिरि की व्याख्या उचित है और उसके आधार पर उनके द्वारा स्वीकृत नाम भी अनुचित प्रतीत नहीं होता, किन्तु शब्दशास्त्रीय दृष्टि से उनके द्वारा स्वीकृत नाम समालोच्य है। पं० बेचरदासजी ने उसकी समालोचना की है। उनका तर्क है—'प्रश्न शब्द का प्राकृत रूप 'पण्ह' और 'पसिण' होता है, किन्तु 'पसेण' नहीं होता। उच्चारण शास्त्र की वैज्ञानिक रीति से 'पसिण' तक का परिवर्तन ही उचित नहीं लगता है। प्राकृत व्याकरण की दृष्टि से भी 'पसेण' रूप घटित नहीं होता। इसे आर्ष रूप मान तो फिर शुद्धाशुद्ध प्रयोग की मर्यादा ही टूट जाएगी।'[1]

पण्डितजी का तर्क बलवान् है फिर भी अमीमांस्य नहीं है। हमारी दृष्टि के अनुसार—

[१] 'पसेणिय' का मूल रूप 'पसिणिय' [सं० प्रश्नित] है। इकार का एकार होना उच्चारण शास्त्र की दृष्टि से असंगत नहीं है। यह परिवर्तन अनेक स्थानों में मिलता है। उदाहरण के लिए कुछ शब्द यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं:—

पिहुणीणं	पेहुणेणं	[दे०]
णिव्वाणं	णेव्वाणं	[सं० निर्वाणम्]
णिव्वुती	णेव्वुती	[सं० निर्वृत्तिः]
तिगिच्छियं	तेगिच्छियं	[सं० चिकित्सितम्]
बिंटा	बेंटा	[सं० वृत्तम्]
बि	बे	[सं० द्वि]
तिकालं	तेकालं	[सं० त्रिकालम्]

[२] आगम-सूत्रों तथा प्राचीन ग्रन्थों में 'रायपसेणिय' पाठ उपलब्ध है। 'रायपसेणइय' पाठ कहीं भी उपलब्ध नहीं है। नंदी सूत्र में 'रायपसेणिय' नाम मिलता है। इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। पाक्षिक सूत्र में भी 'रायप्पसेणिय' पाठ मिलता है।[2] पाक्षिक सूत्र के अवचूरि-कार ने भी इसका संस्कृत रूप 'राजप्रश्नियं' किया है।[3]

[३] प्रसेनजित् का प्राकृत रूप 'पसेणइय' बनता है। स्थानांग में पांचवें कुलकर का नाम 'पसेणइय' है।[4] अन्यत्र भी अनेक स्थलों में यह मिलता है।

प्रस्तुत सूत्र का विषयवस्तु यदि राजा प्रसेनजित् से संबद्ध होता तो इसका नाम 'रायपसेणइयं' होता, किन्तु इसकी विषयवस्तु राजा पएसी से संबद्ध है। इस दृष्टि से भी 'रायपसेणइय' नाम संगत नहीं है। दीघनिकाय में पायासी राजा प्रसेनजित् के सामंत रूप में उल्लिखित है। किन्तु प्रस्तुत सूत्र में राजा प्रसेनजित् का कोई उल्लेख नहीं है। अतः 'रायपसेणइयं' नाम का कोई आधार प्राप्त नहीं होता।

---

१. रायपसेणइयं, प्रवेशक, पृ० ६

२. पाक्षिक सूत्रम्, पृ० ७६

३. पाक्षिक सूत्रम्, अवचूरि, पृ० ७७

राज्ञः प्रदेशि नाम्नः प्रश्नानि, तान्यधिकृत्य कृतमध्ययनम्—राजप्रश्नियम्।

४. ठाणं, ७।६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयवस्तु के आधारपर 'रायपएसियं' नाम की कल्पना की जा सकती है। किन्तु इसका कोई प्राचीन आधार प्राप्त नहीं है।

राजा प्रदेशी के प्रश्न प्रस्तुत सूत्र की रचना के आधार रहे हैं, इसलिए इसका नाम 'रायपसेणिय' ही होना चाहिए।

व्याख्या ग्रन्थ

प्रस्तुत सूत्र के व्याख्या-ग्रंथ दो हैं—[१] वृत्ति और [२] स्तबक [टब्बा, बालावबोध]। वृत्ति संस्कृत में लिखित है और स्तबक गुजराती मिश्रित राजस्थानी में। वृत्ति के लेखक सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य मलयगिरि हैं और स्तबककार हैं पार्श्वचन्द्रगणी [१६ वी शती] और मुनि धर्मसिंह [१८ वीं शती]। स्तबक संक्षिप्त अनुवाद ग्रन्थ है। प्रस्तुत सुत्र के रहस्यों को स्पष्ट करने वाला व्याख्या ग्रन्थ वास्तव में वृत्ति ही है। वृत्तिकार ने सूत्र के सब विषयों को स्पष्ट नहीं किया है, फिर भी उन्होंने अनेक स्थलों में अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएं दी हैं।

वृत्तिकार को वृत्ति-निर्माण में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके सामने सबसे बड़ी कठिनाई पाठ-भेद की थी। इसका उन्होंने स्थान-स्थान पर उल्लेख किया है।[1] वर्तमान कठिनाइयों के आधार पर वृत्ति दो भागों में विभक्त हो गई। पूर्वभाग में वृत्तिकार ने सुगमपदों की भी व्याख्या की है। उत्तरभाग में केवल विषमपदों की व्याख्या की है। अतएव पूर्वभाग की व्याख्या विस्तृत और उत्तरभाग की संक्षिप्त है। पूर्वभाग की विस्तृत व्याख्या के उन्होंने दो हेतु बतलाए हैं—

१. विषय की नवीनता

२. पाठ-भेद की प्रचुरता

उत्तरभाग की संक्षिप्त व्याख्या के भी तीन हेतु बतलाए हैं—

१. पाठ की सुगमता

२. पूर्व व्याख्यातपदों की पुनरावृत्ति

३. पाठ-भेद की अल्पता।[2]

वृत्तिकार ने लौकिक विषयों को लौकिक कला के निष्णात व्यक्तियों से जानने का अनुरोध किया है।[3] राजप्रश्नीय और जीवाभिगम में अनेक स्थलों पर प्रकरण की समानता है। दोनों के व्याख्याकार आचार्य मलयगिरि हैं। इसलिए उनके समप्रकरणों की वृत्ति में भी प्रचुर समानता है। वृत्तिकार को जीवाभिगम की मूल टीका प्राप्त थी। उसका वृत्तिकार ने प्रस्तुत वृत्ति में स्थान-स्थान

१. रायपसेणिय वृत्ति, पृ० २०४, २४१, २५६

२. रायपसेणिय वृत्ति, पृ० २३६ :

इह प्राक्तनो ग्रन्थः प्रायोऽपूर्वः भूयानपि च पुस्तकेषु वाचनाभेदस्ततो माऽभूत् शिष्याणां सम्मोह इति क्वापि सुगमोऽपि यथावस्थितवाचनाक्रमप्रदर्शनार्थं लिखित, इत ऊर्ध्वं तु प्रायः सुगमः प्राग्व्याख्यातस्वरूपश्च न च वाचना-भेदोऽप्यतिबादर इति स्वयं परिभावनोयः, विषमपदव्याख्या तु विधास्यते इति।

३. वही, पृ० १४५ :

एते नर्तनविधयः अभिनयविधयश्च नाट्यकुशलेभ्यो वेदितव्यः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर उल्लेख किया है।[1] एक स्थान पर जीवाभिगम-चूर्णि का भी उल्लेख किया है।

वृत्ति का ग्रन्थ परिमाण तीन हजार सात सौ श्लोक हैं:—

प्रत्यक्षरगणनातो ग्रन्थमानं विनिश्चितम्।
सप्तत्रिंशच्छतान्यत्र श्लोकानां सर्वसंख्यया॥

---

१. (क) रायपसेणियवृत्ति पृ० १००
आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्-विजयदूष्यं वस्त्रविशेषः इति।

(ख) वही, पृ० १५८
आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः अर्गलाप्रासादा यत्रार्गला नियम्यन्ते इति।
जीवाभिगममूलटीकाकारेण— आवर्त्तनपीठिका यत्रेन्द्रकीलको भवति इति।

(ग) वही, पृ० १५९
आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्—कूटो माडभागः उच्छ्रयः शिखरम् इति।
आह च—जीवाभिगममूलटीकाकृत्—अंकमयाः पक्षास्तदेकदेशभूता एवं पक्ष बाहवोऽपि द्रष्टव्या इति।

(घ) वही, पृ० १६०
उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण ओहाडणी हारग्रहणं ? महत् क्षुल्लकं च पुंछनी इति।

(च) वही, पृ० १६१
आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्— नैषेधिकी निषीदनस्थानम् इति।

(छ) वही, पृ० १६८
आह च जीवाभिगममूलटीकारः प्रकण्ठौ पीठविशेषौ इति।

(ज) वही, पृ० १६९
उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—प्रासादावतंसकौ प्रासादविशेषौ इति।

(झ) वही, पृ० १७६
उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—मनोगुलिका नाम पीठिका" इति।

(ट) वही, पृ० १७७
उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण-हयकण्ठौ—हयकण्ठप्रमाणौ रत्नविशेषौ एवं सर्वेऽपि कण्ठा वाच्या इति।

(ठ) वही, पृ० १८०
उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम् —तैलसमुद्गकौ सुगन्धितैलाधारौ।

(ड) वही, पृ० १८९
जीवाभिगममूलटीकायामपि ४६ —"उप्पित्थं त्रस्तयुक्तम्" इति।

(ढ) वही, पृ० १९५
उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम् दगमण्डपाः स्फाटिका मण्डपा इति।

(त) वही, पृ० २२६
जीवाभिगममूलटीकाकारः—"बिब्बोयणा-उपधानकान्युच्यन्ते" इति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वृत्ति के प्रारंभ में वृत्तिकार ने भगवान् महावीर को नमस्कार किया है और गुरु के आदेश से राजप्रश्नीय सूत्र के विवरण की सूचना दी है:—

प्रणमत-वीरजिनेश्वरचरणयुगं परमपाटलच्छायम् ।
अधरीकृतनतवासवमुकुटस्थितरत्नरुचिचक्रम् ।।
राजप्रश्नीयमहं, विवृणोमि यथाऽऽगमं गुरुनियोगात् ।
तत्र च शक्तिमशक्ति, गुरवो जानन्ति का चिन्ता ।।१।।

वृत्ति की परिसमाप्ति में वृत्तिकार ने गुरु की विजयकामना और पाठक की ज्ञानकामना की है—

अधरीकृतचिन्तामणि-कल्पलता-कामधेनुमाहात्म्याः ।
विजयन्तां गुरुपादाः विमलीकृतशिष्यमतिविभवाः ।
राजप्रश्नीयमिदं गम्भीरार्थं विवृण्वता कुशलं ।
यदवापि मलयगिरिणा साधुजनस्तेन भवतु कृती ।

३. जीवाजीवाभिगमे

नामबोध

प्रस्तुत आगम का नाम जीवाजीवाभिगमे है। इसमें जीव और अजीव इन दो मूलभुत तत्त्वों का प्रतिपादन है। इसलिए इसका नाम जीवाजीवाभिगमे रखा गया है। इसमें नौ प्रतिपत्तियां [प्रकरण] हैं। इनमें जीवों के संख्यापरक वर्गीकरण किए गए हैं।

१. संसारीजीव के दो प्रकार—त्रस और स्थावर।

२. संसारीजीव के तीन प्रकार—स्त्री, पुरुष और नपुंसक।

३. संसारीजीव के चार प्रकार—नैरयिक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव।

४. संसारीजीव के पांच प्रकार—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय।

५ संसारीजीव के छह प्रकार—पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक।

६. संसारीजीव के सात प्रकार—नैरयिक, तिर्यञ्च, तिर्यञ्चणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव और देवी।

७. संसारीजीव के आठ प्रकार—प्रथम समय नैरयिक, अप्रथम समय नैरयिक, प्रथम समय तिर्यञ्च, अप्रथम समय तिर्यञ्च।
प्रथम समय मनुष्य, अप्रथम समय मनुष्य
प्रथम समय देव, अप्रथम समय देव।

८. संसारीजीव के नौ प्रकार—पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय।

९. संसारीजीव के दस प्रकार—प्रथम समय एकेन्द्रिय, अप्रथम समय एकेन्द्रिय
प्रथम समय द्वीन्द्रिय, अप्रथम समय द्वीन्द्रिय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम समय त्रीन्द्रिय, अप्रथम समय त्रीन्द्रिय
प्रथम समय चतुरिन्द्रिय, अप्रथम समय चतुरिन्द्रिय
प्रथम समय पञ्चेन्द्रिय, अप्रथम समय पञ्चेन्द्रिय।

नौवीं प्रतिपत्ति के आठवें सूत्र से अन्त तक सर्व जीवाभिगम का निरूपण किया गया है। वह वर्गीकरण भिन्न दृष्टि से किया गया है, उदाहरणस्वरूप—जीव के दो प्रकार सिद्ध और असिद्ध।

जीव के तीन प्रकार सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यक्मिथ्यादृष्टि।

प्रस्तुत आगम में अवान्तर विषय विपुल मात्रा में उपलब्ध है। इसमें भारतीय समाज और जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। स्थापत्य कला की दृष्टि से पद्मवरवेदिका और विजयद्वार का वर्णन बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तुत आगम मे आदेशों का संकलन मिलता है। एक विषय में स्थविरों के अनेक मत थे। मत के लिए आदेश शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत आगम उत्तरवर्ती ग्रन्थ है। इसलिए इसमें स्थविरों के अनेक मतों का संकलन मिलता है। वृत्तिकार ने आदेश का अर्थ प्रकार किया है।[1] तात्पर्यार्थ में अनेक मतों का संकलन भी सिद्ध होता है। जीवा० २/२० में चार आदेशों का संकलन है। २/४८ में पांच आदेश उपलब्ध हैं। वृत्तिकार ने लिखा है कि पांच आदेशों में कौन सा आदेश समीचीन है, इसका निर्णय अतिशय ज्ञानी ही कर सकते हैं। सूत्रकार स्थविरों के समय में वे अतिशयज्ञानी उपलब्ध नहीं थे इसलिए सूत्रकार ने इस विषय में कोई निर्णय नहीं किया, केवल उपलब्ध आदेशों का संकलन कर दिया।[2]

रचनाकार

प्रस्तुत आगम की रचना स्थविरों ने की है। इसका आगम के प्रारंभ में स्पष्ट निर्देश है।[3]

व्याख्या ग्रन्थ

प्रस्तुत आगम की दो व्याख्याएं उपलब्ध हैं एक आचार्य हरिभद्रकृत और दूसरी आचार्य मलयगिरिकृत। आचार्य हरिभद्रकृत टीका संक्षिप्त है, मलयगिरिकृत टीका बहुत विस्तृत है। मलयगिरि ने अपनी वृत्ति में 'इतिवृद्धाः' तथा मूलटीका, मूलटीकाकार और चूर्णि का अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है।

---

१. जीवजीवाभिगम वृ० प० ५३ "आदेश शब्द इह प्रकारवाची" आदेसोत्ति पगारो "इतिवचनात्, एकेन प्रकारेण, एक प्रकारमधिकृत्येतिभावार्थः"

२. वही वृ० प० ५६ "अमीषां च पञ्चानामादेशानामन्यतमादेशसमीचीनतानिर्णयोऽतिशयज्ञानिभिः सर्वोत्कृष्ट-श्रुतलब्धि-संपन्नैर्वा कर्तु शक्यते, ते च सूत्रकृतप्रतिपत्तिकाले नासीरन्निति सूत्रकृन्न निर्णयं कृतवानिति"।

३. जीवाजीवाभिगमे १/१—'इह खलु जिणमयं जिणाणुमयं जिणाणुलोमं जिणप्पणीतं जिणपरूवियं जिणक्खायं जिणाणुचिण्णं जिणपण्णत्तं जिणदेसियं जिणपसत्थं अणुवीइ तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा थेरा भगवन्तो जीवाजीवाभिगमे णामज्झयणं पण्णवइंसु"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"इतिवृद्धा:"[१]

इयं च व्याख्या मूलटीकानुसारेण कृता ।[२]

"उक्तञ्च मूलटीकायाम्" ।[३]

"आह च मूलटीकाकृत्"[४]

"ताइ च मूलटीकाकृता वैविक्त्येन न व्याख्याता इति संप्रदायादवसेया:"[५]

"मूलटीकाकारेणाव्याख्यानात्"[६]

"आह च मूलटीकाकार:"—"उक्तं चूर्णौ"[७]

"आह च मूलटीकाकार:"—"उक्तञ्च मूलटीकाकारेण" ।[८]

उक्तं मूलटीकायाम्[९]

"आह च मूलटीकाकार:[१०]

"उक्तं च मूलटीकायाम्"[११]

"आह च मूलटीकाकार:[१२]

"आह च मूलटीकाकार:"[१३]

"उक्तं च मूलटीकायां"[१४]

"उक्तं च मूलटीकाकारेण"[१५]

"आह च मूलटीकाकार:"—"चूर्णिकारस्त्वेवमाह"[१६]

"आह च मूलटीकाकार:"—"आह च चूर्णिकृत्"[१७]

"उक्तं च मूलटीकायां"—"जीवाभिगम मूलटीकायां"[१८]

"आह च मूलटीकाकारोपि"—"आह च चूर्णिकृत्"[१९]

"तथा चाह मूलटीकाकार:"[२०]

"आह च मूलचूर्णिकृत्"[२१]

"मूलटीकाकारोप्याह····चूर्णिकारोप्याह"[२२]

"आह चूर्णिकृत्"[२३]

"तथा चाह मूलटीकाकार:"[२४]

"आह च चूर्णिकृत्"[२५]

"उक्तं चूर्णौ"[२६]

"आह च मूलटीकाकार:"[२७]

"आह चूर्णिकृत् आह च टीकाकार:[२८] "मूलटीकाकारेणापि"[२९] "आह च मूलटीकाकार:"[३०]

१. वृ० प० २७	९. वृ० प० १४१	१७. वृ० प० २१०	२४. वृ० प० ४३८
२. वृ० प० ६४	१०, ११. वृ० प० १४२	१८. वृ० प० २१४	२५. वृ० प० ४४१
३. वृ० प० १०९	१२. वृ० प० २७७	१९. वृ० प० ३२१	२६. वृ० प० ४४२
४. वृ० प० १२२	१३. वृ० प० १८४	२०. वृ० प० ३५४	२७. वृ० प० ४४४
५, ६. वृ० प० १३६	१४. वृ० प० २०४	२१. वृ० प० ३६९	२८. वृ० प० ४५०
७. वृ० प० १३७	१५. वृ० प० २०५	२२. वृ० प० ३७०	२९. वृ० प० ४५२
८. वृ० प० १८०	१६. वृ० प० २०९	२३. वृ० प० ३८४	३०. वृ० प० ४५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कार्य-संपूर्ति

इसके संपादन का बहुत कुछ श्रेय युवाचार्य महाप्रज्ञ को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य संपन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्‌रहस्य पकडने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनयशीलता, श्रमपरायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण-भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्यः क्षमता और कर्तव्यपरता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

प्रस्तुत आगमों के पाठ संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

अपने शिष्य-साधु-साध्वियों के सहयोग से पाठ संशोधन का बृहत् कार्य सम्यग् रूप से सम्पन्न हो सका है, इसका मुझे परम हर्ष है।

आचार्य तुलसी

अक्षय तृतीय, १ मई १९८७
अध्यात्म साधना केन्द्र,
महरोली—नई दिल्ली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

EDITORIAL

The present volume consists of three *āgamas—Ovāiyam, Rāyapaseṇiyam* and *Jīvājīvābhigame.*

OVĀIYAM

The text of *Aupapātika sūtra* has been constituted on the basis of the manuscripts and the *vṛtti*. The references to different ancient versions in this sūtra are in abundance. It is a repository of descriptions. That is why we find at various places the instruction—*jahā ovavāie* (as in *Ovavāia*), referring to similar describers of the other *āgamas* Neither the commentaries of those *āgamas* nor their authentic texts of the latter contain the describers accepted in the *Aupapātika*. Those describers, however, are available in other versions. It poses a problem for those who study the describers.

The text of this *Āgama* must be determined not only on the basis of *ādarśas* and *vṛtti* but also on the basis of the describers available in the *āgamic* commentaries and the texts of the other *āgamas*. But it is difficult to do so without the compilation of the totality of describers.

Some of the describers are as follows :

Bhagavaī :

7/175 : evaṁ jahā ovavāie jāva
7/176 : evaṁ jahā uvavāie, evaṁ jahā uvavāie
7/196 : jahā kūṇio jāva pāyacchitte
9/157 : "jahā ovavāie jāva egābhimuhe" "evaṁ jahā ovavāie jāva tivihāe"
9/158 : "jahā ovavāie jāva satthavāha" "jahā ovavāie jāva khattiyakuṇḍaggāme"
9/162 : ovavāie parisā vaṇṇao tahā bhāṇiyavvaṁ
9/204 : "jahā ovavāie jāva gagaṇatalamaṇulihantī" "evaṁ jahā ovavāie taheva bhāṇiyavvaṁ"
9/204 : jahā ovavāie jāva mahāpurisa
9/208 · jahā ovavāie jāva abhinandatā
9/209 : evaṁ jahā ovavāie kūṇio jāva ṇiggacchai
11/59 : jahā ovavāie
11/61 : jahā ovavāie kūṇiyassa
11/85 : jahā ovavāie jāva gahaṇayāe

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

11/88 : 198 : evaṁ jaheva ovavāie taheva
11/138 : jahā ovavāie taheva aṭṭaṇasālā taheva majjaṇaghare
11/154 : evaṁ jahā daḍhapaiṇṇassa
11/156 : evaṁ jahā daḍhapaiṇṇe
11/159 : jahā ovavāie
11/169 : jahā ammaḍo jāva bambhaloe
12/32 : evaṁ jahā kūṇio taheva savvam
13/107 : jahā kūṇio ovavāie jāva pajjuvāsai
14/107 : evaṁ jahā ovavāie jāva ārāhagā
14/110 : evaṁ jahā ovavāie ammaḍassa vattavvayā
15/186 : evaṁ jahā ovavāie daḍhappaiṇṇavattavvayā
15/189 : evaṁ jahā ovavāie jāva savvadukkhāṇamantam
25/569 : jahā ovavāie jāva suddhesaṇie
25/570 : jahā ovavāie jāva lūhāhāre
25/571 : jahā ovavāie jāva savvagāya

Bhagavaī Vṛtti :

patra 7 : aupapātikāt savyākhyāno'tra dṛśyaḥ
,, 11 : aupapātikavadvācyā
,, 317 : "evaṁ jahā uvavāie" tti tatra cedaṁ sūtramevam.........
,, 318 : "evaṁ jahā uvavāie jāva" ityanenedaṁ sūcitam.........
,, 319 : "jahā ceva uvavāie" tti tatra caivamidaṁ sūtram.........
,, 462 : "jahā uvavāie" tti tatra cedaṁ sūtramevaṁ leśataḥ.........
,, 463 : "jahā uvavāie" tti tadeva leśato darśyate.........
,, 463 : "evaṁ jahā uvavāie" tatra caitadevaṁ sūtram.........
,, 463 : "jahā uvavāie" tti cedamevaṁ sūtram.........
,, 463 : "jahā uvavāie parisāvannao" tti yathā kauṇikasyaupapātike
,, 476 : "jahā uvavāie" tti evaṁ caitattatra......
,, 479 : "jahā uvavāie" tti anena yatsūcitaṁ tadidam......
,, 481 : "jahā uvavāie" tti karaṇādidaṁ dṛśyam......
,, 482 : "evaṁ jahā uvavāie" tti anena yatsūcitaṁ tadidam......
,, 519 : "jahā uvavāie" ityetasmādatideśādidam dṛśyam......
,, 520 : "evaṁ jahā uvavāie" ityetatkaraṇādidaṁ dṛśyam......
,, 521 : "evaṁ jaheve" tyādi "evam", anantaradarśitenābhilāpena yathaupapātike siddhānadhikṛtya saṁhananādyuktaṁ tathaivehāpi......
,, 521 : vākyapaddhatiraupapātikaprasiddhā'dhyetā......
,, 542 : "jahā uvavāie taheva aṭṭaṇasālā taheva majjaṇaghare" tti yathaupapātike'ṭṭaṇasālā vyatikaro......
,, 545 : "jahā daḍhapainne" tti yathaupapātike dṛḍhapratijño'dhītastathā'yaṁ vaktavyaḥ taccaivam......
,, 545 : "evaṁ jahā daḍhapainno" ityanena yatsūcitaṁ tadevaṁ dṛśyam......
,, 548 : "jahā uvavāie" ityanena yatsūcitam
,, 549 : jahā ammaḍo" tti yathaupapātike ammaḍo'dhītastathā'yamiha vācyaḥ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

patra 563 : "evaṁ jahā uvavāie jāva ārāhaga" tti iha yāvatkaraṇādidamarthato leśena dṛśyam......
,, 563 : "evaṁ jahe" tyādinā yatsūcitam......
,, 696 : "evaṁ jahā uvavāie" ityādi bhāvitamevāmmaḍaparivrājakakathānaka iti
,, 924 : "jahā uvavāie" tti anenedaṁ sūcitam......
,, 924 : "jahā uvavāie" tti anenedaṁ sūcitam .....
, 924 : "jahā uvavāie" tti anenedaṁ sūcitam......

Jñātāvṛtti

,, 2 : "varṇakagrantho'trāvasare vācyaḥ......

Vivāgasuyam

1/1/70 : jahā daḍhapaiṇṇe
2/1/36 : jahā daḍhapaiṇṇe
2/10/1 : jahā daḍhapaiṇṇe

Rāyapaseṇiyam

sūtra 3,4 : asoyavarapāyave puḍhavisilāpaṭṭae vattavvayā ovavāiyagameṇaṁ neyā
,, 688 : egadisāe jahā uvavāie jāva appegatiyā

Rāyapaseṇiya vṛtti

page 3 : sampratyasyā nagaryā varṇakamāha—(Here *Aupapātika* has not been mentioned)
,, 8 : yāvacchabdakaraṇāt "saddie kittie nāe sacchatte" ityādyaupapātikagranthaprasiddhavarṇṇakaparigrahaḥ
,, 10 : aśokavarapādapasya pṛthivīśilāpaṭṭakasya ca vaktavyatā aupapātikagranthānusāreṇa jñeyā
,, 27 : yāvacchabdakaraṇādrājavarṇako devīvarṇakaḥ samavasaraṇaṁ caupapātikānusāreṇa tāvadvaktavyaṁ yāvatsamavasaraṇaṁ samāptam
,, 30 : yāvacchabdakaraṇāt "āikare titthagare" ityādikaḥ samasto'pi aupapātikagranthaprasiddho bhagavadvarṇako vācyaḥ, sa cātigarīyāniti na likhyate, kevalamaupapātikagranthādavaseyaḥ
,, 39 : bahave uggā bhogā ityādyaupapātikagranthoktaṁ sarvamavasātavyaṁ yāvat samagrāpi rājaprabhṛtikā pariṣatparyupāsīnā avatiṣṭhate
,, 116 : "evaṁ jahā uvavāie tahā bhāṇiyavvaṁ" iti evaṁ yathā aupapātike granthe tathā vaktavyaṁ. tacca evaṁ
,, 288 : ityādirūpā dharmakathāaupapātikagranthādavaseyā

Jambuddīvapaṇṇattī

2/65 : evaṁ jāva ṇiggacchai jahā ovavāie jāva āulabolabahulam
2/83 : evaṁ jahā ovavāie sacceva aṇagāravaṇṇao jāva uḍḍhañjāṇū
3/178 : evaṁ ovavāiyagameṇaṁ jāva tassa

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jambuddīvapaṇṇattī Vṛtti :

Śā. Vṛ. patra 14 : "vaṇṇao" tti ṛddhastimitasamṛddhā ityādi
,, aupapātikopāṅgaprasiddhaḥ samasto'pi varṇako draṣṭavyaḥ
,, cirātītamityādirvarṇakastatparikṣepi vanakhaṇḍavarṇakasahita-aupapātikato'vaseyaḥ
,, "vaṇṇao" tti atra rājño "mahayāhimavantamahante" tyādikorājñāśca "sukumālapāṇīpāye" tyādikovarṇakaḥ prathamopāṅgaprasiddho'bhidhātavyaḥ
,, yathā ca samavasaraṇavarṇakaṁ tathaupapātikagranthādavaseyam
,, "tae ṇaṁ mihilāe ṇayarīe siṅghāḍage" tyadikaṁ "jāva" pañjaliuḍā pajjuvāsantī" ti paryantamaupapātikagatamavagantavyam.... evopāṅgādavagantavyamiti
,, 143 : "yathaupapātike" evaṁ yathā prathamopāṅge.... nipātaḥ, aupapātikagamaścāyam
,, 154 : yathaupapātike sarvo'ṇagāravarṇakastathā'trāpi vācyaḥ
,, 155 : kiyadyāvadityāha—ūrdhvaṁ jānunī yeṣāṁ te ūrdhvajānavaḥ......atra yāvatpadasaṁgrāhyaḥ "appegaiyā domāsapariāyā" ityādikaḥ aupapātikagrantho vistarabhayānna likhita ityavaseyaṁ
,, 264 : evamuktakrameṇa aupapātikagamena prathamopāṅgagatapāṭhena tāvad vaktavyaṁ yāvattasya rājñaḥ purato mahāśvāḥ
,, 325 : vṛkṣavarṇanam prathamopāṅgato'vaseyaṁ

Sūrapaṇṇattī Vṛtti

patra 2 : "yāvacchabdenaupapātikagranthapratipāditaḥ samasto'pi varṇakaḥ āinnajaṇasamūhā" ityādiko draṣṭavyaḥ
,, 2 : tasyāpi caityasya varṇako vaktavyaḥ sa caupapātikagranthādavaseyaḥ
,, 2 : tasya rājñaḥ tasyāśca devyā aupapātikagranthokto varṇako'bhidhātavyaḥ
,, 2 : samavasaraṇavarṇanaṁ ca bhagavata aupapātikagranthādavaseyaṁ
,, 3 : "bahave uggā bhogā" ityādyaupapātikagranthovaktam
,, 3 : atra yāvacchabdādidamaupapātikagranthoktaṁ draṣṭavyam

Candrapaṇṇattī (Ms. Vṛtti)

patra 5 : aupapātikagranthaprasiddhaḥ samasto'pi varṇako draṣṭavyaḥ sa ca granthagauravabhayānna likhyate kevalaṁ tata evaupapātikādavaseyaḥ
,, 5 : aupapātikagranthokto veditavyaḥ
,, 5 : tasya rājñastasyāśca devyā aupapātikagranthokto varṇako'bhidhātavyaḥ
,, 5 : samavasaraṇavarṇanaṁ ca bhagavata aupapātikagranthādavaseyam
,, 6 : "bahave uggā bhogā" ityādyaupapātikagranthoktaṁ sarvamavaseyam

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Uvaṅgā

1/141 : jahā daḍhapaiṇṇo
2/13 : jahā daḍhapaiṇṇo

Dasāo

10/2 : rāyavaṇṇao evaṁ jahā ovavātie jāva cellaṇāe—
10/14-19 : sakorenṭamalladāmeṇaṁ chatteṇaṁ dharijjamāṇeṇaṁ uvavāiyagameṇaṁ neyavvaṁ jāva pajjuvāsai......

Dasā. (Ms. Vṛtti)
Vṛtti patra 11 : aupapātikagranthapratipāditaḥ samasto'pi varṇako vācyaḥ sa ceha granthagauravabhayānna likhyate kevalaṁ tata evaupapātikādavaseyaḥ. Dasā, 5/4

D. 5/5, Ms. Vṛtti patra 11 :
caityavarṇako bhaṇitavyaḥ sopyaupapātikagranthādavaseyaḥ

D. 5/6, Ms. Vṛttipatra 11 :
aupapātikoktaṁ pāṭhasiddhaṁ sarvamavaseyaṁ......

D. 10/2, Ms. Vṛttipatra 25 :
"tasya varṇako yathā aupapātikanāmnigranthe'bhihitastathā"

D. 10/2, Ms. Vṛttipatra 25 :
vistaravyākhyā tūpapatikānusāreṇa vācyā......

D. 10/3, Ms. Vṛttipatra 25 :
ādikaraḥ yāvatkaraṇāt...... samasto aupapātikagranthaprasiddho ..
...kevalamaupapātikagranthādavaseyaḥ...

D. 10/6, Ms. Vṛttipatra 26 :
jāvatti yāvatkaraṇāt jaṇavūhei vā......uggā bhogā......ityādyaupapātikagranthoktam ....

D: 10/14-19, Ms. Vṛttipatra 28 :
uvavātiyagameṇīti aupapātikagranthoktakauṇikavandanagamanaprakāreṇāyamapi nirgataḥ

D. 10/21, Ms. Vṛttipatra 29 :
ihāvasare dharmmakathā aupapātikoktā bhaṇitavyā

Sūtras of Ovāiyaṁ in other āgamas :

Ovāiyaṁ	*Bhagavaī*	*Rāya.*	*Jambu.*
Sūtra 32	25/559-563	—	
,, 33	25/564-568	—	
,, 36	25/576-579	—	
,, 40	25/582-598	—	
,, 43	25/600-612	—	
,, 44	25/613-618	—	
,, 64	9/204	Sū. 49-55	3/178

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

,, 65	—	—	3/180
,, 66	—	—	3/179

The Describer sūtras

The Describer *sūtras* take several concise forms in the ***Aupapātika***. These are :—

jāva :	udae jāva jhīṇe (117)
evaṁ jāva :	apaḍivirayā evaṁ jāva (161)
sesaṁ taṁ ceva :	paralogassa ārāhagā sesaṁ taṁ ceva (157)
evaṁ :	evaṁ uvajjhāyāṇaṁ therāṇam (16)
abhilāveṇaṁ :	evaṁ eeṇaṁ abhilāveṇaṁ (73)
evaṁ taṁ ceva :	sagaḍaṁ vā evaṁ taṁ ceva bhāṇiyavvaṁ jāva ṇaṇṇattha gaṅgāmaṭṭiyāe (123)
bhāṇiyavvaṁ :	evaṁ ceva pasatthaṁ bhāṇiyavvam (40) kandamanto eesiṁ vaṇṇao bhāṇiyavvo jāva siviya (10).
ṇeyavvaṁ :	taṁ ceva pasatthaṁ ṇeyavvaṁ. evaṁ ceva vaiviṇao vi eehiṁ paehiṁ ceva ṇeyavvo. (40)

Variant words and forms

The variant words and forms as approved by Grammar and holy usage in *Āgamas* are important from the linguistic standpoint. Hence they have been distinguished from the variant readings and are given below :

Sūtra 1	kukkuḍa	kuṅkaḍa	(kha)
,, 1	°musunḍhi°	°musanḍhi°	(ka, kha)
,, 1	°vaṁka	°vakka	(ga)
,, 1	°bhatta°	°hatta°	(ka)
,, 1	°kīlā°	°khīlā°	(ka, kha)
,, 1	°turaga°	°turaṅga°	(ka)
,, 1	darisaṇijjā	darisaṇīyā	(ka, kha)
,, 2	kālāgaru	kālāguru°	(ka)
,, 2	°kahaga°	°kahaka°	(ka, kha, ga)
, 4	°nikurambabhūe	°ṇiurambabhūe	(kha)
,, 5	darisaṇijjā	darasaṇijjā	(ka, kha)
,, 5	gulaiya	guluiya	(ka)
,, 6	abbhintara°	abbhantara°	(ka)
,, 6	bāhira	bahira	(ga)
,, 9	ṇīvehiṁ	ṇitehiṁ	(ka)
,, 13	°haladhara°	°halahara°	(vṛ)
,, 19	°haṇue	°haṇūe	(ka)
,, 19	bhuyagīsara°	bhuyaīsara°	(ka, kha, ga)
,, 19	akaraṇḍuya°	akaranduya°	(ka, kha)
,, 19	°ccharu°	°tharu°	(vṛ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Sūtra 19	gupphe	°gophe°	ga)
,, 19	°vīḍheṇam	°pīḍheṇam	(ka, kha)
,, 21	jayā	jadā	(ka)
,, 26	āyāvāyā	ādāvāyā	(ga)
,, 26	paravāyā	paravādā	(ga)
,, 31	omoyarıyā	avamoyariyā	(vṛ)
,, 32	bārasabhatte	{ bārasamabhatte	(ka)
		bārasamebhatte	(ga)
,, 32	cauddasa°	{ coddasama°	(ka, kha)
		coddasame°	(ga)
,, 32	solasa°	{ solasama°	(ka, kha)
		solasame°	(ga)
,, 32	caumāsie	caummāsie	(kha)
,, 33	°bhoitti	°bhoītti	(ga)
,, 34	davvābhi°	davvabhi°	(ka)
,, 40	entassa	intassa	(ga)
,, 43	°pautte	°pajutte	(ga)
,, 43	usaṇṇa°	osaṇṇa°	(ka, ga)
,, 43	°rūī	°ruyī	(ga)
,, 44	darisaṇāvaraṇijja°	daṁsaṇāvaraṇiya	(kha)
,, 46	°vīcī°	°vītī°	(ga)
,, 46	toyapaṭṭhaṁ	°toyavaṭṭhaṁ	(ka)
,, 49	°vaṇṇiya°	°paṇṇiya°	(ga)
,, 50	vıhassatī	vahassatī	(ga)
,, 51	tirīḍadhārī	kirīḍadhārī	(kha)
,, 52	mahapphalaṁ	mahāphalaṁ	(ka, kha, ga)
,, 52	gayagayā	gatagatā	(ka)
,, 52	paccoruhanti	paccorubhanti	(ga)
,, 58	pāḍiyakkapāḍiyakkāiṁ	pāḍiekkapāḍiekkāiṁ	(kha)
,, 59	paoya-laṭṭhiṁ	{ patoda-laṭṭhim	(ka)
		payotta-laṭṭhim	(ga)
,, 63	abbhiṁgehiṁ	abbaṁgehiṁ	(ka)
,, 63	°misimisanta°	°mismisanta°	(ga)
,, 63	°susiliṭṭha°	°susaliṭṭha°	(ka, ga)
,, 63	°vīiyaṅge	°vījiyaṅge	(ka)
,, 64	kūvaggāhā	kūtuyaggāhā	(ga)
,, 64	°turagāṇaṁ	°turaṅgāṇaṁ	(ka)
,, 64	sakhiṅkhiṇī°	sakiṅkiṇī°	(ka)
,, 67	°muiṅga°	°mudaṅga°	(ga)
,, 68	bhaṭṭittaṁ	bhaṭṭattaṁ	(ka)
,, 71	°koñca°	°kuñca°	(ga, vṛ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

,, 82	vaira°	vajja°	(kha)
,, 82	°ṇighasa°	°nikasa°	(kha)
,, 86	veyaṇijjaṁ	vedaṇijjaṁ	(ka, ga)
,, 90	se je	sejje	(ka, kha)
,, 92	se jāo	sejjāo	(ka. kha)
,, 92	°uriyāo	°puriyāo	(ka, ga)
,, 95	kukkuiyā	kokuiyā	(kha, ga)
,, 97	°ahavvaṇa	°athavvaṇa°	(ka, kha, ga)
,, 105	alāu°	lāu	(ga)
,, 117	carimehiṁ	caramehiṁ	(ka)
,, 158	°veñṭiyā	°vañṭiyā	(kha)
,, 159	bhūi°	bhūī°	(ka, kha ga)
,, 164	aṇagārā	aṇakārā	(ka, ga)
,, 170	tellā°	tilla°	(ka)
		tela°	(kha)
,, 175	vaya°	vai°	(ka, kha, ga)
,, 195	gā. 1, paiṭṭhiyā	pattiṭṭhiyā	(ka, kha)

Description of the Manuscripts

(क) This was obtained from Gadhaiyā Library, Sardarshahar, through Shri Madanchandji Gauthi. It contains 40 leaves and 80 pages. Each leaf is 11-3/4" long and 4-1/2" wide. There are 4 to 13 lines in each leaf, each line containing 40 to 46 letters. Commentary is inscribed in very small letters in the margin on all sides. The manuscript is beautiful, artistic and appears to have been used and read. The following eulogy is given at the end of the copy—

"iti śrī uvavāīsūtraṁ samāptaṁ. grantha 1167. cha. Saṁvat 1623 varṣe phālguna sudi 3 dine. Agra nagare. pātisāha śrī Akbara Jalāludīna rājya pravartamāne. śrī vṛhat kharataragacchālaṅkāra śrī pūjyarāja śrī 6 Jinasiṅgha-sūrivijayarājye paṇḍita śrī Labdhivardhanamunibhirupapātikā nāma upāṅgaṁ likhāpitaṁ. cha. vācyamānaṁ ciraṁ nandyāt. śubhaṁ bhavatu lekhakavācakayoḥ. śrī."

(ख) This manuscript was also obtained through Shri Madanchandji Gauthi from Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 59 leaves and 118 pages. Each page is 10-1/4" long and 4-1/2" wide. There are 7 to 9 lines in each leaf and each line contains 40 to 45 letters. The upper and lower margins of the page contain the translation of the text in Rajasthani language. The following eulogy by the scribe appears at the end of the manuscript—

"śrī uvāī upāṅgam paḍhamaṁ samattaṁ. granthāgraṁ 1225. cha. śrī. Saṁvat 1665 varṣe pauṣa māse śuklapakṣe saptamī tithau śrī somavāsare. śrī śrī vikrama nagare mahārājādhirāja mahārājā śrī rāyasinghjī vijayarāje paṇḍita karmasiṅghena lipīkṛtā. cha."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ग) This manuscript was also obtained through Sri Madanchandji Gauthi from Gadhaiyā Library, Sardarshahar. Each page contains 26 leaves and 52 pages. Each page is 10-1/2" long and 4-1/2" wide. Each page contains 15 lines with 46 to 48 letters in each line. The manuscript concludes with—"*uvāīyaṁ samattam, granthāgra 1200, śubhamastu cha. śrī,*" but the year is not mentioned therein. Looking at its leaves, letters and illustrations, the copy must be belonging to the 17th century.

(वृ) This manuscript of the vṛtti was obtained through Shri Madanchandji Gauthi from Gadhaiyā Library, Sardarshahar. It has 75 leaves and 150 pages. Each leaf contains 13 lines with 55 to 60 letters in each line. The size of the leaf is 10-1/4"×4-1/4". The manuscript is revised and clear. In the eulogy the following is inscribed—"*Śubhaṁ bhavatu. kalyāṇamastu. lekhakapāṭhakayośca bhadraṁ bhavatu, cha. saṁvat 1996 varṣe Mārgaśīrṣa sudi 1, bhaume likhitam. cha. śrī yādṛśam pustake dṛṣṭvā, tādṛśaṁ likhitaṁ mayā/yadi śuddhamaśuddhaṁ vā, mama doṣo na dīyate// cha. cha.*

(वृ. पा.) **Variant readings based on the Vṛtti**

There are no identical readings of different versions in the special manuscript of the *vṛtti* and the printed vṛtti. We have taken the manuscript *vṛtti* as authoritative.

Rāyapaseṇiyam

The text of this *sūtra* has been determined on the basis of manuscripts and the *Vṛtti*. *Jīvājīvābhigama* and *Aupapātika-sūtras* have also been used for determining the texts of the *Sūryābha* and the *Dṛḍhapratijña* chapters respectively. The commentator has mentioned the abundance of variant readings in different versions at every step. At the time of composing the commentary it posed a serious problem, but in later times it assumed still more serious dimensions. Even then we have revised the text by analysing the available material very minutely. None can claim that the revision of this text is totally flawless but this much can be asserted that we have maintained utmost neutrality and patience in our attempt to perform the task.

The construction of the text of this *sūtra* has exacted vast labour, and resulted in the enlargement of the body of the *sūtra*, as also in the intelligibility of the text and the tastefulness of the subject-matter.

Variant words and forms

The variant words and forms as approved by grammatical rules and holy usage in *Āgamas* are important from the linguistic standpoint, so they have been distinguished from the variant readings and are given below—

Sūtra No. 8	mauḍa	matuḍa	(ka)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

,,	8	°dheyam	°dhejjam	(ka)
,,	9	ṇāi°	ṇādi°	(ka, kha, ga, ca)
,,	10	ukiṭṭhāe	okiṭṭhāe	(cha)
,,	12	paṭṭhe	{ vaṭṭhe	(kha, ga)
			{ maṭṭhe	(ca)
,,	13	ṇāiya	ṇātiya	(ka, kha, ga, gha, ca cha)
,,	15	hanta	handa	(ca)
,,	15	abhivandae	abhivandate	(cha)
,,	24	āyaṁsa°	ātaṅsa°	(gha, ca)
,,	37	miu°	mau°	(ka, kha, ga)
,,	37	pāsāie	pāsātie	(ka, kha ga, gha)
,,	40	atīva	atīta	(ca)
,,	48	tisovāṇa°	tisomāṇa°	(ka, kha, ga, ca)
,,	56	mahālateṇam	mahālaeṇam	(kha, ga, gha)
,,	56	vemāṇiehim	vemāṇitehim	(ka, kha, ga, gha)
,,	69	viraciya	viratiya	(ka, kha, ga, ca)
,,	71	°vāyāṇam	{ vāiyāṇam	(ka, kha, ga, cha)
			{ vāyayāṇam	(gha)
,,	75	oṇamanti	tonamanti	(ka, gha)
,	76	mau	miu	(kvacit)
,,	77	°ṭāṇam	°tāṇam	(ka, ca, cha)
,,	118	matthae	matthate	(ka, kha, ga, gha)
,,	118	jaeṇaṁ vijaeṇam	jateṇaṁ vijateṇam	(ka, kha, ga, gha)
,	124	bahuīo	{ bahugīo	(ka, kha, ga, gha)
			{ bahugīto	(ca, cha)
,,	129	dāra°	{ vāra	(ka, kha, ga, ca, cha)
			{ bāra	(gha)
,,	130	°kavelluyāo	°kaveluyāto	(ka, kha, ga, gha)
,	135	saṅkalāo	saṅkhalāo	(kvacit)
,,	137	pagaṇṭhagā	pakaṇṭhagā	(gha, ca)
,,	154	sāe pahāe paese	sāte pahāte patese	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
,,	159	savvouya°	savvouta°	(ka, kha, ga, gha)
,,	173	°piṇaddha	°vinaddha°	(gha)
,,	173	tiṭhāṇa°	titthāṇa°	(ka, kha,ga,gha, ca, cha)
,,	185	āīṇaga	ādīṇaga	(ka, kha, ga, gha)
,,	189	uḍḍham	uddham	(ka)
,,	197	°veiyā	°vetiyā	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
,,	197	phalaesu	°phalatesu	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

,,	219	tao	tago tato	(ka) (cha)
,,	228	°binṭā	°benṭā beṭhā	(ka kha, ga, cha) (ca)
,,	245	suvirai-rayattāṇe	suirai-raittāṇe	(ka, kha, ga, gha, cha)
,,	292	kaḍucchuyam	kaḍucchayam	(ka, kha, ga, gha)
,,	654	cariyāsu	caliyāsu	(ka, kha, ga)
,,	664	pīya°	pīla°	(ka, kha, ga)
,,	683	°vinda°	°vanda°	(gha)
,,	687	°vūhe	°pūhe	(ka, kha, ga)
,,	695	°paribhāittā	paribhāgettā	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
,,	706	koṭṭhayāo	koṭṭhāo	(ka, gha)
,,	720	agilāe	ailāe	(ka, ca)
,,	754	ao°	ayo° aya°	(ka, kha, ga) (gha)
,,	755	bhiccā	bheccā	(gha)
,,	760	kisie	kasie	(ka,kha, ga,gha, cha)
,,	771	vāukāyassa	vāuyāgassa	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
,,	787	bhikkhuyāṇam	bhichuyāṇam	(gha, ca)
,,	791	°ppaogeṇa	°ppayogeṇa	(gha)

Description of the Manuscript

(क) This manuscript was obtained from Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 49 leaves and 98 pages. Each leaf is 10-1/2 "x 4-1/2", with 13 lines in each leaf and 50-55 letters in each line. It was scribed in V.S 1671 and the following is its colophon :

"namo jiṇāṇaṁ jiyabhayāṇaṁ ṇamosuya devayāe bhagavaīe ṇamo paṇṇattīe bhagavaīe ṇamo bhagavao arahao pasassa passe supasse passavaṇīṇabhoe. cha. Rāyapaseṇaiyaṁ samattaṁ. cha. granthāgraṁ 2079 samarthitamidaṁ sūtraṁ. cha. saṁvat 1671 varṣe bhādravā sudi 11"

This colophon runs still further, but this faint portion is coloured with yellow.

(ख) They contain 55 and 61 leaves respectively.

(ग) Both of them are similar to the manuscript (क).

(घ) This manuscript belongs to Yati Kanakachandji of Pali (Marwar). Its size is 10½"×4½". It contains 54 leaves and 108 pages, with 13 lines in each page and 46 to 48 letters in each line.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

It was scribed in V.S 1566. The following colophon is appended at the end of the manuscript :—

"cha. śubhaṁ bhavatu lekhaka-pāṭhakayoḥ śrī saṅghasya ca. saṁvat 1566 varṣe caitra sudi 2 tithau adyeha śrīmadaṇahillapattane śrī vṛhat-kharatara-gacche śrī Vardhamānasūrisantāne śrī jinabhadrasūripaṭṭānukrameṇa śrī jinahaṁsasūrirajye vācanācharyajayākāragaṇiśiṣya vā. dharma-vilāsagaṇi-vācanārthaṁ bha. vastupālabhāryayā lilī śravikayā. Putraratna bha, sāliga pumukhaparivāra saśrīkayā suśreyārthaṁ ca lekhitaṁ śri Rājapraśnīyo-pāṅgam.

(च) This manuscript was obtained from the collection of Punamchand Buddhamal Dudheria of Chhapar (Rajasthan). Each leaf is 12"×5". There are 42 leaves and 84 pages in this copy, with 15 lines in each page and 48 to 54 letters in each line. Two illustrations are given in the first two pages. The script is beautiful but abounds in mistakes. Approximately it belongs to the sixteenth century.

(छ) This manuscript also was obtained from the collection of Punamchand Buddhamal Dudheria of Chhapar (Raj.) It contains 41 leaves and 82 pages, with 15 lines in each page and 57 to 60 letters in each line. The script is ordinarily fair but flawless,. It ends with the following colophon—"lipi saṁvat *1665 varṣe kārtika māse śukla pakṣe saptamī śukre Babberakapure paṇḍita Labdhikallolagaṇinā lekhi.*"

(वृ) It was obtained from Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. Its size is 10½"×4½". It contains 52 leaves and 104 pages, with 17 lines in each page and 65 to 70 letters in each line. This manuscript was scribed in V.S. 1605 and ends with the following colophon :—

"iti malayagiriviracitā rājapraśnīyopāṅgavṛttikā samarthitā. samāptam iti. pratyakṣaragaṇanayā granthāgraṁ. cha, cha. pratyakṣaragaṇanāto grantha-mānaṁ viniścitaṁ. saptatriṁśatśatānyatra. ślokānāṁ sarvasaṁkhyayāḥ. cha, granthāgraṁ śloka 3700, cha. śrī. saṁvat 1605 varṣe śrāvaṇa sudi 13, bhaume pattana vāstavyaṁ, paṇḍita Rudrasuta Jiganātha likhitaṁ. śubhaṁ bhavatu.

JĪVĀJĪVĀBHIGAME

The text of this sūtra has been revised on the basis of manuscripts and its *vṛtti*.

The *vṛtti* by Malayagiri is based on old *ādarśa*, hence the texts of palm leaf and the *vṛtti* are identical. The *sūtras* 3/218, 457, 578, 826 together with their footnotes may be consulted in this connection. A great variety of readings in the relatively later editions provides ample room for deliberation and research.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The fact regarding the dissimilarity of readings in the manuscripts of *Jīvājīvābhigama* has also been pointed out by Śānticandra, the commentator of *Jambūdvīpaprajñapti.*[1]

Upādhyāya Śānticandra has quoted the text about the description of the *Kalpavṛkṣa* from *Jīvājīvābhigama*. In describing the fourth *Kalpavṛkṣa* he has quoted the reading '*Kaṇaga-nigaraṇa*' which he explains as 'the heap of gold.'[1] In the *Vṛtti* of *Jīvājīvābhigama* the term '*Kaṇaganigaraṇam*' has been explained as '*Kanakasya nigaraṇam, kanaka-nigaraṇaṁ, gālitaṁ, kanakamiti bhāvaḥ*'[2]. The change in script has led to change in reading. We find the reading "*Kūḍāgārattha*" in some manuscripts. In the printed editions as well as the hand-written copy we find the reading '*Kūṭāgārādyāni*'. It has not been explained in the *Vṛtti* of *Jīvājīvābhigama*. Of course, it has been explained in the *Vṛtti* of "*Jambūdvīpa-prajñapti*"—"*Kūṭākāreṇa—śikharākṛtyāḍhyāni.*"[3]

Acarya Malayagiri has himself mentioned the variant readings of the manuscripts.[4] The verses, which the commentator quotes from other sources, have been included in the original text in comparatively recent manuscripts.[5]

In the *Vṛtti* we find the mention of the commentary on *Jambūdvīpa-prajñapti.* The commentators of *Jambūdvīpa-prajñapti* definitely belong to a period later than that of Malayagiri. Hence it is a matter worthy of investigation whether this mention is an interpolation or whether Malayagiri had really got with him some old commentary of *Jambūdvīpa-prajñapti.*[6]

At some places the *vṛtti* contains a lot of matter worth deliberation. The commentator has explained the term "*Sirivaccha* as *śrivṛkṣa*. Looking to the context it should be *śrīvatsa.*[7]

---

1. Jambūdvīpaprajñapti Vṛtti. p. 108 :

   atra cādhikāre jīvābhigamasūtrādarśe kvacidadhikapadam api dṛśyate tattu vṛttāvatyākhyātam svayaṃ paryālocyamānamapi na nārthapradamiti na likhitaṃ, ten tat sampradāyāda vagantavyam, tamantareṇa samyak pāṭhaśuddherapi kartumaśakyatvāditi.

1. Jambūdvīpa Vr. patra 102 : kanakanikaraḥ suvarṇarāśiḥ.

2. Jīvājīvābhigama, Vr. p. 267.

3. Jambūdvīpaprajñapti Vṛ. p. 107 : See the footnote of Jīvājīvābhigama, 3/594.

4. (a) Ibid. Vṛ. p. 321 :

   iha bahudhā sūtreṣu pāṭhabhedāḥ parametāvāneva sarvatrāpyartho nārthabhedāntaramityetadvyākhyānusāreṇa sarvepyanugantavyā na mogghavyamiti.

   (b) Ibid. Vr. p. 376 :

   "iha bhūyān pustakeṣu vācanābhedo galitāni ca sūtrāṇi bahuṣu pustakeṣu tato yathāvasthitavācanābhedapratipattyarthaṃ galitasūtroddharaṇārthaṃ caivaṃ sugamānyapi vivriyante.

5. Ibid, Vṛtti p. 331, 333, 334, 334; 3/820, 830, 834, 837 : The footnotes are worth seeing.

6. jīvābhigama, Vṛtti p. 382 :

   kvacit siṃhādīnāṃ varṇanaṃ dṛśyate tad bahuṣu pustakeṣu na dṛṣṭamityupekṣitaṃ, avaśyaṃ cettadvyākhyānena prayojanaṃ tarhi Jambūdvīpaprajñapti ṭikā paribhāvanīyā tatra savistaraṃ tadvyākhyānasya kṛtatvāt.

7. Ibid., vṛtti p. 271 :

   "Śrīvṛkṣeṇāṅkitaṃ—lāñchitaṃ vṛkṣo yeṣāṃ te śrīvṛkṣalāñchita vakṣasaḥ."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The original commentator and Malayagiri had before them the intricacies of variant readings and different expositions and in the times of later commentators also such discussions were often held. In this connection, a topic mentioned in the *vṛtti* is of historical importance. The commentator writes that this *sūtra* is obscure on account of the peculiarity of aim and purpose. It can be explained only on the basis of the right tradition and solid ground. It is sheer repudiation of the *sūtra* if it is explained carelessly and whimsically.[1] Due care had been taken that the *sūtra* may not be repudiated or wrongly interpreted. Consequently, attempt was made to preserve the text and its meaning. Even then due to variation in intelligence and scribe's carelessness discrepancies in readings and expositions have taken place. On account of the variant readings we had to take great pains in arriving at the correct text. The reader can estimate the labour involved by the variant readings and notes thereon appended in the edition.

The manuscript marked "*tā*" is an abridged version of the text, e.g. the following *sūtra* 1/41—"tāim bhante kiṁ puḍāiṁ āhārenti apu goyamā puṭṭhā ṇo apu. ogā ṇo aṇogā aṇantaro ṇavaraṁ aṇūiṁ pi ā bāyarāiṁ piā uḍḍhaṁ vi i ādiṁ pi i savisae ṇo avisae āṇupuvviṁ ṇo aṇāṇupuvvim ācchaddi vāghātaṁ pa siya tidisi ṣka. no vaṇṇato kālā nī gandhato su 2 rasato no phāsaho tesiṁ porāṇaṁ vipariṇāmettā apuvva vaṇṇa guṇa ṣka uppāettā ātasarīra khettogāḍhe poggale savvappaṇattāe āhāramāhārenti,"

Due to the flaw in script the reading like *katidisim* (ka) has found place in place of *kiṁtidisim*. We have not accepted the readings of the ता manuscript in many places, because they are too much abridged.

Variant words and forms

1/1	Jiṇakkāyam	Jiṇakhāyam	(kha)
		Jiṇakhātam	(tā)
,,	aṇuvīi	aṇuvītiyam	(ka, kha)
,,	roemāṇā	rotamāṇā	(tā)
1/14	saṅghayaṇa	saṅghataṇa	(tā)

1. Ibid., Vṛtti p. 450 :
sūtrāṇi hyamūni vicitrābhiprāyatayā durlakṣyāṇiti samyaksampradāyādavasātavyāni, sampradāyaśca yathoktasvarūpa iti na kācidanupapattiḥ, na ca sūtrābhiprāyamajñātvā anupapattirudbhāvanīyā, mahāśātanāyogato mahā'narthaprasakteḥ, sūtrakṛto hi bhagavanto mahīyānsaḥ pramāṇīkṛtāśca mahīyastaraistatkālavarttibhiranyairvidvadbhistato na tatsūtreṣu manāgapyanupapattiḥ, kevalaṃ sampradāyāvasāye yatṇo vidheyaḥ, ye tu sūtrābhiprāyamajñātvā yathākathañcidanupapattimudbhāvayante te mahato mahīyasa āśātayantīti dīrghatārasaṃsārabhājaḥ, āha ca ṭīkākāraḥ—"evaṃ vicitrāṇi sūtraṇi samyaksampradāyādavaseyānītyavijñāya tadabhiprāyaṃ nānupapatticodanā kāryā, mahāśātanāyogato mahā'narthaprasaṅgāditi" evaṃ ca ye samprati duṣṣamānubhāvataḥ pravacanasyopaplavāya dhūmaketava ivoṭṭhitāḥ sakalakālasukarāvyavacchinnasuvidhimārgānuṣṭhātṛsuvihitasādhuṣu matsariṇaste'pi vṛddhaparamparāyātasampradāyādavaseyaṃ sūtrābhiprāyamapāsyotsūtram prarūpayanto mahāśātanābhājaḥ pratipattavyā apakarṇayitavyāśca dūratastattvavedibhiriti kṛtaṃ prasaṅgena".

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

,,	saṇṇāo	saṇṇāto	(ka)
,,	joguvaoge	joguvatoge	(ka)
1/19	kohakasāe	kohakasāte	(ka)
1/21	kaṇhalessā	kiṇhalessā	(ga, ṭa)
1/26	āṇapāṇu°	āṇapāṇa°	(ṭ)
1/72	chīravirāliyā	chiravirāliyā	(k)
		chirivirāliyā	(kha)
		chirivavirālia	(ga, ṭa)
		chīravīrālī	(tā)
1/73	thīhū	thibhu	(ka)
1/100	tahappagārā	tahappakārā	(ka, kha, ga, ṭa)
1/101	duāgaiyā	duyāgatiyā	(ga)
1/119	āhāro	ādhāro	(tā)
2/59	paliovamāim	palitovamāim	(ka, kha, ga, ṭa)
2/60	abbhahiyāim	abbhadhiyāim	(ga)
2/74	phumphuaggi	phumphaaggi	(ka)
		pumphaaggi	(ga)
2/92	vāsapuhattam	vāsapudhattam	(ka)
		vāsapuhuttam	(ga, ṭa)
2/241	etāsi	etesi	(ka, kha, ga, ṭa)
		egāsi	(tā)
2/149	vaṇassati°	vaṇapphai°	(ka, kha, ga)
3/5	joyaṇa°	jotaṇa	(ka)
3/6	āvabahule	avabahule	(ka)
		āvabahule	(tā)
3/33	abādhāe	ābādhāe	(ka, kha, ṭa)
3/48	je ṇam imam	jeṇimam	(tā)
3/73	asīuttaram	āsīuttare	(tā)
3/77	aḍahattare	aḍasattarī	(ga)
		aṭṭhuttare	(tā)
3/77	kiṇhapuḍa	kiṇṇapuḍa	(ka, ga)
3/80	bāhalleṇam	pāhaleṇam	(tā)
3/94	kerisagā	kerisatā	(ka, kha, ga)
3/96	phuḍita°	phuḍiga°	(tā)
		sphuṭita°	(ma, vṛ)
3/118	usiṇavedaṇijjesu	usuṇavedaṇijjesu	(tā)
3/118	viraciya	viraiya	(ka, ga, ṭa)
3/119	egāham	ekāham	(kha, ga, ṭa)
3/234	ettha	tattha	(ka, kha, ga, ṭa)
		yattha	(tā)
3/323	jambūṇadamayā	jambūṇatamayā	(ka)
		iambūṇatāmayā	(ga, ṭa, tā)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3/371	uvagāriyālayaṇe	ovāriyalayaṇe	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
		uvakāriyalayaṇe	(tā)
3/372	khambhuggaya	thambhuggaya	(ka, ga)
3/412	dhūvadhaḍiyāo	dhūmadhaḍiyāo	(ka, kha)
3/593	oviya°	uvvitiya	(ka, kha)
		uvviiya	(ga)
3/733	bāyālīsam	bādālīsam	(tā)
3/750	bāyālīsam	bātālīsam	(tā)
3/748	kelāse	ketilāse	(kha)
		kailāse	(ga, ṭa, tri)
3/794	eguṇayālam	iūyālam	(ka)
		ūyālam	(kha, tā)
		iguyālam	(ga)
3/798	egayālīsam	eyālīsam	(ka, kha, ṭa)
		egayālīsam	(ga)
		itālīsam	(tā)
3/829	teṇaṭṭheṇam	eeṇaṭṭheṇam	(ga, tri)
3/838/13	maṇussāṇam	maṇūsāṇam	(tā)
3/840	kayāi	kadāyī	(tā)
3/841	balāhakā	balāhatā	(tā)
3/841	bādare vijjukāre	vātare vijjutāre	(tā)
	badare thaṇiyasadde	vātare thaṇitasadde	(tā)
3/841	nadī oi vā ṇihīti vā	ṇandīti vā ṇidhayoti vā	(tā)
3/860	supakkakhoyarasei	supikkakhotaraseti	(tā)
3/877	khodavaraṇṇam	khoyavaraṇṇam	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
3/949	khodasarisaṁ	khotodasarisam	(tā)
3/998	heṭṭhimpi	haṭṭhimpi	(ga, ṭa, tā)
		hiṭṭhampi	(tri)
3/1007	savvaheṭṭhillam	savvaheṭṭhimayam	(tā)
3/1007	savvovarillam	savvupparillam	(ka, kha, ṭa)
3/1007	savvabbhiṁtarillam	savvabbhantaram	(tā)
5/37	ṇiodā	ṇiotā	(tā)
5/54	°ṇiodajīvā	°ṇigodajīvā	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
5/58	°ṇiodajīvā	°ṇioyajīvāvi	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
9/11	aṇāie	aṇādīe	(tā)
9/28	sakāsāī	sakasādī	(tā)
9/131	ohidaṁsaṇī	avadhidaṁsaṇī	(ga, tri)
		odhidaṁsaṇī	(tā)

Description of the Manuscript

(क) Original text : leaves 94; saṁvat 1575; Hand-written.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

This Ms. belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaia Library, Sardarshahar. It contains 94 leaves and 188 pages with 15 lines in each page and 53-56 letters in each line. Its size is $13\frac{1}{4}'' \times 5''$. It is beautifully scribed. The following is the eulogy at the end :—

"Saṁvat 1575 varṣe āśvinamāse kṛṣṇapakṣe trayodaśyāṁ tithau bhṛguvāsare pattananagaramadhye moḍhajātiya Jośī viṭṭhalasuta laṭakaṇalikhitaṁ. cha. yādṛśaṁ pustake dṛṣṭaṁ, tādṛśaṁ likhitaṁ mayā/yadi śuddhamaśuddhaṁ va mama doṣo na dīyate //1/[śubham bhavatu lekhaka-pāṭhakayoḥ kalyāṇamastu. cha. cha. śrī. śrī. cha. granthāgra 5200.

(ख) Original text : leaves 80.

This Ms. belongs to Sardarshahar mentioned above. It contains 80 leaves and 160 pages, with 15 lines in each page and nearly 61 letters in each line. Its size $12'' \times 4\frac{1}{4}''$. The Ms. is very old and tattered. The scribing year is not mentioned at the end, but most probably it must belong to the 16th century.

(ग) Original text : leaves 90. Illustrated.

It belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 90 leaves and 180 pages with 15 lines in each page and about 63 words per line. Its size is $11\frac{1}{2}''\times4\frac{1}{2}''$. On the first page there is beautiful illustration in golden ink of the image of the Tīrthaṅkaradeva. It is very beautifully scribed. In the centre there is *bāvaḍī* and in the middle of that there is a red circular spot.

There is no puṣpikā and scribing year at the end of the ms., but most probably it belongs to the 16th century.

It almost tallies with the palmleaf manuscript and the commentary.

(ता) Palmleaf photo-print of Jaisalmer Bhaṇḍāra.

This copy mostly tellies with the commentary. It does not contain the pages containing the sūtras 105-115 of the third *pratipatti*.

(ट) टब्बा : Scribing year 1800. It belongs to the Order's Library, Ladnun. It had been thoroughly studied by Ācārya Kālūgaṇī (the eighth pontiff) and the text had been corrected by him at various places.

Jīvājīvābhigama ṭīkā (Hand-written)

It belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 250 leaves, and 500 pages with 15 lines per page and about 65 letters per line. Its size is $10'' \times 4\text{-}1/4''$. The scribing year is saṁvat 1717. The script is very beautiful.

Acknowledgements

Jainisam has a long tradition of councils held for compiling the texts of the *Āgamas*. Ere 1500 years from today there had been four councils on Āgama. After Devarddhigaṇī no well-planned *Āgama* council was held. The *Āgamas*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

compiled at that time fell into disorder during this long internal. So a well-organised council was the need of the hour to revise the *Āgamas* again. Ācārya Tulsī tried his best for a general consensus on *Āgama*-editing but it could not materialise. Lastly it was decided that if our editing of *Āgamas* is research-oriented, unbiased and punctilious, it will be universally accepted. On this consideration we started our work of holding the council for critically editing the *Āgamas*.

Ācāryaśrī Tulsī is the chief of this *vācanā*. *Vācanā* means "teaching", that comprises so many activities like search of the correct text, translation, critical and comparative study, and so on. In all these activities the active cooperation, guidance and encouragement from the Ācāryaśrī is always available to us. It was our forte for undertaking such onerous task.

Instead of expressing my gratitude to the Ācāryaśrī and thereby feeling relieved from the burden of his gratefulness, I feel it better to require more energy through his blessings and become heavier for taking up the next assignment.

In editing the texts of ***Ovāiyam*** and ***Rāyapaseṇiyam*** of this book Muni Sudarshan, Muni Madhukara, Muni Hiralal and in editing the text of ***Jīvājīvābhigame*** Muni Sudarshan & Muni Hiralal have worked with diligence and perseverance. Muni Chatramal, Muni Balchand, Muni Hansraj and Muni Maṇilal have also lent remarkable cooperation is editing the text of ***Jīvājīvābhigame.***

Word index of ***Ovāiyam*** has been prepared by Muni Shrichand and that of *Rāyapaseṇiyam* and ***Jīvājīvābhigame*** by Muni Hiralal. Muni Sudarshan, Muni Hiralal and Sādhvī Siddhaprajñā, and Samaṇī Kusumaprajñā actively cooperated in correcting the proofs of the book.

The general get-up of ***Ovāiyam*** and *Rāyapaseṇiyam* has been prepared by Muni Mohanlal "Amet". The first two indexes have been prepared by Muni Hiralal. In the revision of the text also he was remarkably helpful.

While evaluating their cooperation in the accomplishment of this assignment I express my gratefulness to all of them.

The services of Late Madanchand Gauthi, who had a deep insight into the *Āgamas* and who helped me in editing the text of the *Āgamas*, cannot be forgotten at this stage. If he had been alive, he would have been very happy at this achievemnt,

Shri Shrichand Rampuria, Kulapati, Jain Vishva Bharati and the Managing Editor of *Āgama* Literature, has been actively involved in the *Āgama* work from the very beginning. He is fully-determined and working hard to reach the *Āgama* literature to the laymen. Having relieved himself of his well-set Advocate's job he has been devoting most of his time to the *Āgama* programme. Shri

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Khemchand Sethia, President and Shri Shrichand Bengani, Secretary of Jain Vishva Bharti have also actively cooperated in this task. The English rendering of the Editorial and the Introduction were done under the supervision of Dr. N. Tatia and Dr. V. P. Jain by Shri R.S. Soni & Samaṇīs Chinmayaprājñā and Ujjvalaprājñā have also been actively associated with it.

It is simple formality to mention the names of those proceeding in the same direction with the same speed for a common goal. Really it is a sacred duty for us and we have all fulfilled it.

—Yuvācārya Mahāprajña

Adhyātma Sadhanā Kendra,
Mehrauli, Delhi.
Akṣaya Tṛtīyā, 1st May, 1987.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

INTRODUCTION

The present book is *Uvangasuttāṇi*. It contains the original text of twelve *Upāṅgas* with variant readings and abbreviated texts. It has two parts. The first part contains three Āgamas (1) *Ovāiyam*, (2) *Rāyapaseṇiyam* and (3) *Jīvājīvābhigame*. The second part contains nine *āgamas* : (1) *Paṇṇavaṇā*, (2) *Jambuddīvapaṇṇattī*, (3) *Candapaṇṇattī*, (4) *Sūrapaṇṇattī*, (5) *Nirayāvaliyāo* (*Kappiyāo*), (6) *Kappavaḍisiyāo* (7) *Pupphiyāo*, (8) *Pupphacūliyāo*, (9) *Vaṇhidasāo*.

In the ancient tradition we find the following two classifications of the āgamas :—

(1) *Aṅgapraviṣṭa* and (2) *Aṅgabāhya*.

There was no such categorisation as *Upāṅga* in the old tradition. *Nandīsūtra* bears no mention of any *Upāṅga*. In any older *āgama* too, *Upāṅga* has not been mentioned. The *Tattvārthabhāṣya* uses this word for the first time, which is the earliest in the available texts.[1]

Relation between Aṅga and Upāṅga

Tattvārthasūtra mentions the word *Upāṅga*, but it does not indicate any relationship between them. We find it mentioned in the *vṛtti* of *Jambūdvīpaprajñapti* and the *Sukhabodhā Sāmācārī* at page 34, composed by Shrichandra Sūri, the commentator of *Nirayāvalikā*. According to *Jambūdvīpaprajñapti*, the interrelationship between *aṅgas* and *upāṅgas* is shown as under :—

Aṅga	*Upāṅga*
Ācārāṅga	—Aupapātika
Sūtrakṛtāṅga	—Rājapraśnīya
Sthānāṅga	—Jīvājīvābhigama
Samavāyāṅga	—Prajñāpanā
Bhagavatī	—Jambūdvīpaprajñapti
Jñātādharmakathā	—Candraprajñapti
Upāsakadaśā	—Sūryaprajñapti
Antakṛddaśā	—Nirayāvalikā(Kalpikā)
Anuttaropapātikadaśā	—Kalpāvatansikā

1. Tattvārthabhāṣya, 1/20 : tasya ca mahāviṣayatvāttānstānarthānadhikṛtya prakaraṇasamāptyapekṣamaṅgopāṅganānātvam.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Praśnavyākaraṇa	—Puṣpikā
Vipākaśruta	—Puṣpacūlikā
Dṛṣṭivāda	—Vṛṣṇidaśā[1]

1. Ovāiyam

Nomenclature

The present *āgama* is called *Ovāiyam* (Aupapātikā). Its main theme is *upapāta*. *Samavasaraṇa* is its incidental treatment. On the basis of the main theme treated herein, it is known as Ovāiyam (Skt. Aupapātika). On deleting letters "va" as per the Prakrit Grammar Rule, we get *ovāiyam* form in place of *ovavāiyam*. We come across the same name in the Nandīsūtra.[2]

Subject-Matter

The main theme enunciated in the *Aupapātika* is 'rebirth', that so and so *upapāta* (instantaneous rebirth) takes place because of such and such conduct.

The exordium consists of many types of descriptions of town, monastery, garden, king etc. The present sūtra has come to be known as a Varṇaka (describer) sūtra because of these descriptions and has been used in various epilogues for this reason.

Commentaries

The first commentary of the Aupapātika is the *vṛtti* by Abhayadeva Sūri, the commentator of the nine *āgamas*. The introductory verse shows that Abhayadeva Sūri had got no other earlier *vṛtti* in front of him. He composed this *vṛtti* with the help of other texts. He himself mentions :—

śrīvarddhamānamānamya prāyo'nyagranthavīkṣitā /
aupapātikaśāstrasya vyākhyā kācidvidhīyate //

The commentator has mentioned the views of the foregoing ācāryas at several places.

1. snānādvā pāṇḍurībhūtagātrā iti vṛddhāḥ/(Vṛtti p. 171)
2. cūrṇikārastvāha/(Vṛtti p. 224)
3. asya ca vṛddhoktasyādhikṛtagāthāvivaraṇasyārtham bhāvārthaḥ/ (Vṛtti p. 225)

This commentary is neither too elaborate nor too abridged. Its medium size contains most of the points worth discussing.

The *Ovāiyam* contains numerous variant readings. Abhayadeva has described the first sūtra thus—"This sūtra is abundant in variant readings. I shall deal with only what is intelligible."[3] Most probably such variant readings do

1. Jambūdvīpaprajñapti, Śānticandrīyā Vṛtti, patra 1, 2.
2. Nandīsūtra, 76.
3. Aupapātika, vṛtti, page 2 :
iha ca bahavo vācanābhedā dṛśyante, teṣu ca yamevāvabhotsyāmahe tameva vyākhyāsyāmaḥ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

not appear in any other sūtra. If the commentator had not compiled them, they would have passed into oblivion.

The commentary ends with an eulogy in three verses, in which the commentator mentions the names of his *guru*—Shri Jineśvara Sūri, of the Candra lineage, and the place of composition—Aṇahilapāṭakanagar and Droṇācārya who revised the Vṛtti :

candrakula-vipula-bhūtala-yugapravara-vardhamānakalpataroḥ /
kusumopamasya sūreḥ guṇasaurabha-bharita-bhavanasya //
nissambandhavihārasya sarvadā śrījineśvarāhvasya /
śiṣyeṇābhayadevākhyasūriṇeyaṁ kṛtā vṛttiḥ //
aṇahilapāṭakanagare śrīmaddroṇākhyasūrimukhyena /
paṇḍitaguṇena guṇavatpriyeṇa saṁśodhitā ceyam //

The second commentary on the *Ovāiya* is '*Stabaka*', which was probably composed by Muni Dharmasī and belongs to the eighteenth century of the Vikram era.

2. *Rāyapaseṇiyam*

Nomenclature

This sūtra is called *Rāyapaseṇiyam*. Pt. Bechardas Doshi has named it as *Rāyapaseṇaiyam*, stating that it is based on the '*Rājaprasenakīya*' referred to by *Siddhasenagaṇī* and *Rājaprasenajita* referred to by Muni Candrasūri.[1]

The earliest mention of this sūtra is found in *Nandīsūtra*, under the name *Rāyapaseṇiya*.[2] The name has not been explained in the Nandī cūrṇi and its commentaries by Haribhadrasūri and Ācārya Malayagiri who has named it as 'Rājapraśnīya' while dealing with it. King Pradeśī had asked some questions to Keśīsvāmī. The present sūtra contains replies to the questions and hence the name '*Rājapraśnīya*'.[3]

From the point of view of treatment of the subject-matter, Malayagiri's commentary is quite in order and the name does not sound awkward or improper on that account. But lexicographically the name is open to criticism, specially by Pt. Bechardas who contends that—"the word '*praśna*' takes the forms '*paṇha*' and '*pasiṇa*' in Prakrit, and not the form '*paseṇa*'. There is no form as '*paseṇa*' according to Prakrit grammar. If we recognise it

1. Rāyapaseṇaiyam, praveśaka, page 6 & 7.
2. Nandī, sūtra 77.
3. (a) Rāyapaseṇiya vṛtti, page 1 :
atha kasmād idam upāṅgaṃ rājapraśnīyābhidhānamiti ? ucyate, iha pradeśināmā rājā bhagavataḥ keśikumāraśramaṇasya samīpe yān jīvaviṣayān praśnānakārṣīt, yāni ca tasmai keśikumāraśramaṇogaṇabhṛt vyākaraṇāni vyākṛtavān.
(b) Rāyapaseṇiya Vṛtti, page 2 :
rājapraśneṣu bhavaṃ rājapraśnīyam.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

as an authoritative form (*ārṣa*), all rules about the correct or wrong usage of words in Prakrit would have been set to naught.[1]

Pt. Bechardas's contention may be valid, but it is not irrefutable. In our view—

(1) The original form of '*paseṇiya*' is '*pasiṇiya*' (Skt. praśnita). In pronunciation, assumption of the form '*i*' by '*e*' is quite consistent. We find such departure elsewhere too. For example :—

pihuṇīṇam	=	pehuṇeṇam	(Deśī)
ṇivvāṇam	=	ṇevvāṇam	(Skt. nirvāṇam)
ṇivvutī	=	ṇevvutī	(Skt. nirvṛttiḥ)
tigicchiyam	=	tegicchiyam	(Skt. cikitsitam)
binṭā	=	benṭā	(Skt. vṛttam)
bi	=	be	(Skt. dvi)
tikālam	=	tekālam	(Skt. trikālam)

(2) In the *Āgama-sūtras* and old scriptures we find the text as rāyapaseṇiya'. The usage 'rāyapaseṇaiya' is not available anywhere. In the Nandīsūtra we come across 'rāyapaseṇiya' as mentioned earlier. In 'Pākṣika sūtra' too, 'rāyappaseṇiya' occurs.[2] The composer of the *avacūri* of Pākṣika sūtra gives its Sanskrit form as 'rājapraśniyam'.[3]

(3) Prasenajit takes the form 'paseṇaiya' in Prakrit In the *Sthānāṅga sūtra* the fifth *kulakara* is named as 'paseṇaiya'.[4] This form is available at various other places too.

If the subject-matter of the present sūtra had been related to King Prasenajit, the name could have been "Rāyapaseṇaiyam". But in fact the subject-matter relates to King Paesī; hence the form "rāyapaseṇaiya" is not compatible. In the *Dīghanikāya* King Pāyāsī is mentioned as a feudal lord to Prasenajit. But here we find no mention of King Prasenajit. Therefore the usage '*Rāyapaseṇaiyam*' has no basis.

From the point of view of the subject-matter we may conjecture about the name '*Rāyapaesiyam*', but there is no basis for such a conjecture.

King Pradeśī's queries form the basis of the composition of the sūtra in question. Therefore its name must be 'Rāyapaseṇiya' and none else.

Commentaries

Its two commentaries are named as (i) vṛtti, and (ii) stabaka (ṭabbā or

1. Rāyapaseṇaiyam, praveśaka, page 6.
2. Pākṣikasūtram. page 76.
3. Pākṣikasūtram Avacūri, page 77 :
   Rājñaḥ pradesi nāmnaḥ praśnāni, tānyadhikṛtya kṛtam adhyayanam—rājapraśniyam.
4. Ṭhāṇam, 7/62

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

bālāvabodha). The former is in Sanskrit while the latter is in the admixture of Rajasthani and Gujarati. Vṛtti was composed by the renowned annotator Ācārya Malayagiri while the stabaka was written jointly by Pārśvacandragaṇī (16th Century) and Muni Dharmasingh (18th Century). Stabaka is a short piece of translation but *vṛtti* is the real commentary which clarifies the underlying meaning of the sūtra. Although the *vṛtti* has not been able to explain the whole theme, yet the commentator has provided valuable information at various places.

The author had to face many obstacles in writing the *vṛtti*, the most difficult of them being the variations in text. He has mentioned this difficulty at several places.[1] To surmount these obstacles the *vṛtti* has been bifurcated in two parts :—

(i) The first part : for commentary of intelligible words, and (ii) the later part : for commentary of technical terms. Thus the first part is quite extensive, while the later part is brief. The causes of detailed treatment in the first part are twofold :—

(a) Novelty of the subject-matter.
(b) Abundance of variant readings.

Likewise the later part has been treated in brief due to the following reasons :

(a) Intelligibility of the text.
(b) Repetition of the terms already explained.
(c) Small number of variant readings.[2]

The commentator desires us to learn the mundane topics from the experts of that art.[3] Both Rājapraśnīya and Jīvābhigama bear identical topics at various places. Ācārya Malayagiri is the commentator of both of them. That is why the topics of the commentaries are largely identical. The commentator had obviously got the original commentary of Jīvābhigama, which fact has been mentioned time and again in this commentary.[4]

---

1. Rāyapaseṇiya Vṛtti, p. 204,241,259.
2. Rāyapaseṇiya Vṛtti, page 239 :
   iha prāktano granthaḥ prāyo'pūrvaḥ bhūyānapi ca pustakeṣu vācanābhedastato mā'bhūt śiṣyāṇāṃ sammoha iti kvāpi sugamo'pi yathāvasthitavācanākramapradarśanārthaṃ likhita, ita ūrdhvaṃ tu prāyaḥ sugamaḥ prāgvyākhyātasvarūpaśca na ca vācanābhedo'pyatibādara iti svayaṃ paribhāvanīyaḥ, viṣamapadavyākhyā tu vidhāsyate ita.
3. Ibid., page 145 :
   ete nartanavidhayaḥ abhinayavidhayaśca nāṭyakuśalebhyo veditavyāḥ.
4. (a) Ibid, page 100 :
   āha ca jīvābhigamamūlaṭikākṛt vijayadūṣyam vastraviśeṣaḥ iti.
   (b) Ibid, page 158 :
   āha ca jīvābhigamamūlaṭīkākāraḥ argalāprāsādā yatrārgalā niyamyante iti,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

At one stage Jīvābhigama cūrṇi has also been mentioned.

Vṛtti contains 3700 ślokas :—

pratyakṣaragaṇanāto granthamānaṁ viniścitam /
saptatriṁśacchatānyatra ślokānāṁ sarvasaṁkhyayā //

At the very outset, the commentator remembers Lord Mahāvīra reverentially and with guru's permission proceeds with the commentary on the Rājapraśnīya sūtra :—

praṇamata vīrajineśvaracaraṇayugaṁ paramapāṭalacchāyam /
adharīkṛtanatavāsavamukuṭasthitaratnarucicakram //
rājapraśnīyamahaṁ vivṛṇomi yathā'gamaṁ guruniyogāt /
tatra ca śaktimaśaktiṁ guravo jānanti kā cintā //

At the end, the commentator prays for the victory of his preceptor as also attainment of knowledge for the reader :—

adharīkṛtacintāmaṇi-kalpalatā-kāmadhenu-māhātmyāḥ /
vijayantāṁ gurupādāḥ vimalīkṛtaśiṣyamativibhavāḥ //
rājapraśnīyamidaṁ gambhīrārthaṁ vivṛṇvatā kuśalam /
yadavāpi malayagiriṇā sādhujanastena bhavatu kṛtī //1//

---

jīvābhigamamūlaṭīkākāreṇa—āvarttanapīṭhikā yatrendrakīlako bhavati iti.

(c) Ibid, page 159 :
āha ca jīvābhigamamūlaṭīkākṛt—kūṭo māḍabhāgaḥ ucchayaḥ śikharam iti.
āha ca—jīvābhigamamūlaṭīkākṛt—aṅkamayāḥ pakṣāstadekadeśabhūtā evam pakṣa bāhavo'pi dṛṣṭavyā iti.

(d) Ibid, p. 160 :
uktañca jīvābhigamamūlaṭīkākāreṇa ohāḍaṇī hāragrahaṇam ? mahat kṣullakam ca puñchanī' iti.

(e) Ibid, p. 161 :
āha ca jīvābhigamamūlaṭīkākṛt—naiṣedhikī niṣīdanasthānam iti.

(f) Ibid, p. 168 :
āha ca jīvābhigamamūlaṭīkākāraḥ—prakaṇṭhau pīṭhaviśeṣī iti.

(g) Ibid, p. 169 :
uktañ ca jīvābhigamamūlaṭīkāyām—prāsādāvataṃsakau prāsādaviśeṣau iti.

(h) Ibid, p. 176 :
uktañ ca jīvābhigamamūlaṭīkāyām—manogulikā nāma pīṭhikā iti.

(i) Ibid, p. 177 :
uktañ ca jīvābhigamamūlaṭīkākāreṇa—hayakaṇṭhau—hayakaṇṭhapramāṇau ratnaviśeṣau evam sarve'pi kaṇṭhā vācyā iti.

(j) Ibik, p. 180 :
uktañ ca jīvābhigamamūlaṭīkāyām—tailasamudgakau sugandhitailādhārau.

(k) Ibid, p. 189 :
jīvābhigamamūlaṭīkāyāmapi (46)—uppittham śvāsayuktam iti.

(l) Ibid, p. 195 :
uktañ ca jīvābhigamamūlaṭīkāyām—dagamaṇḍapāḥ-sphāṭikā maṇḍapā iti.

(m) Ibid, p. 226 :
jīvābhigamamūlaṭīkākāraḥ—bibboyaṇā—upadhānakānyucyante iti.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

JĪVĀJĪVĀBHIGAME

Nomenclature

The āgama under review is Jīvājīvābhigame. Jīva and ajīva—the two basic tattvas—have been dealt with herein, hence it has been named as Jīvājīvābhigama. It contains nine chapters in which the sentient beings have been numerically classified :—

1. Two kinds of mundane beings—mobile and immobile.
2. Three kinds of mundane beings—woman, man and eunuch.
3. Four kinds of mundane beings—hellish-beings, animals, men and gods.
4. Five kind of mundāne beings—one-sensed, two-sensed, three-sensed, four-sensed and five-sensed.
5. Six kinds of mundane beings—earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied, vegetation-bodied and mobile-bodied beings.
6. Seven kinds of mundane beings—hellish, male animals, female animals, men, women, gods and goddesses.
7. Eight kinds of mundane beings—first time hellish, second time hellish, first time animal, second time animal, first time man, second time man, first time god, second time god.
8. Nine kinds of mundane beings—earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied, vegetation-bodied, two-sensed, three-sensed, four-sensed and five-sensed.
9. Ten kinds of mundane beings—one time one-sensed, second time one-sensed, one time two-sensed, second time two-sensed, one time three-sensed, second time three-sensed, one time four-sensed, second time four-sensed, first time five-sensed, second time five-sensed.

The whole of Jīvābhigama has been dealt with upto the end of the eighth sūtra of the ninth *pratipatti*. This classification is based on various other criteria, e.g., two kinds of sentient beings—emancipated (*siddha*) and non-emancipated (*asiddha*).

A sentient being has three other categories too—one possessing right vision, perverted vision and right-cum-perverted vision.

In this āgama secondary subjects are available in abundance, which provide detailed information about Indian society and life. From the architectural point of view the description of '*padmavara*' (lotus) altar and '*vijayadvāra*' (gate of victory) is very important.

The āgama is a compilation of various *ādeśas* (view-points). The sthaviras

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

held divergent views on single topics. The word *ādeśa* was used for a view-point. This *āgama* is supplementary in nature. Hence it embodies various view-points of the sthaviras. The commentator uses *ādeśa* in the sense of "kinds".[1] In essence the compilation of various viewpoints is clearly proved. In Jīvājīvābhigame, 2/20, we find four *ādeśas* whereas in 2/48 there are five. The commentator is of the view that only the extraordinarily gifted persons can pass a judgment as to which of five *ādeśas* is proper. There were no such gifted persons during the period of the *sthaviras*, hence the commentator has obviously abstained from expressing his own views on the subject. He has simply compiled the available *ādeśas*.[2]

The sthaviras are the authors of this āgāma. This is clearly indicated at the beginning of the āgama.[3]

Commentaries

Two commentaries are available on this sūtra—one by Ācārya Haribhadra, and the other by Ācārya Malayagiri. The former is concise whereas the latter is quite eloborate. Malayagiri's vṛtti contains the ascription "iti vṛddhāḥ" as well as the mention of the original text, the commentator and the cūrṇi at several places :

'iti vṛddhāḥ'[4]
'iyaṁ ca vyākhyā mūlaṭīkānusāreṇa kṛtā'[5]
'uktañca mūlaṭīkāyāṃ'[6]
'āha ca mūlaṭīkākṛt'[7]
'tāi ca mūlaṭīkākṛtā vaiviktyena na vyākhyātā iti sampradāyādavaseyāḥ'[8]
'mūlaṭīkākāreṇāvyākhyānāt'[9]
'āha ca mūlaṭīkākāraḥ—uktaṁ cūrṇau'[10]
'āha ca mūlaṭīkākāraḥ—uktaṁ mūlaṭīkākāreṇa'[11]

---

1. Jīvājīvābhigama, Vṛtti p. 53 :
"ādeśa śabda iha prakāravācī"—'ādesotti pagaro'iti vacanāt, ekenaprakāreṇa, ekaprakāra-madhikṛtyetibhāvārthaḥ'.
2. Ibid., p. 59 :
amīṣāṃ ca pañcānāmādeśānāmanyatamādeśasamīcīnatānirṇayo'tiśayajñānibhiḥ sarvotkṛṣṭa-śruta labdhisampannairvā kartuṃ śakyate te ca sūtrakṛtpratipattikāle nāsīranniti sūtrakṛnna nirṇayaṃ kṛtavāniti".
3. Jīvājīvābhigame, 1/1 :
"iha khalu jiṇamayaṃ jiṇāṇumayaṃ jiṇāṇulomaṃ jiṇappaṇītaṃ jiṇaparūviyaṃ jiṇakkhāyaṃ jīṇāṇuciṇṇaṃ jiṇapaṇṇataṃ jiṇadesiyam jiṇapasatthṃ aṇuvīi taṃ saddahamāṇā taṃ pattiya-māṇā taṃ pattiyamāṇā taṃ roemaṇā therā bhagavantī jīvājivābhigame ṇāmajjhayaṇaṃ paṇṇavaiṃsu".
4. Vṛtti, p. 27
5. „ p. 64
6. „ p. 109
7. „ p. 122
8. „ p. 136
9. „ p. 136
10. „ p. 137
11. „ p. 180

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'uktaṁ mūlaṭīkāyām'[1]
'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'[2]
'uktaṁ ca mūlaṭīkāyāṁ'[3]
'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'[4]
'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'[5]
'uktañca mūlaṭīkāyāṁ'[6]
'uktañca mūlaṭīkākāreṇa'[7]
'āha ca mūlaṭīkākāraḥ', 'cūrṇikāstvevamāha'[8]
'āha ca mūlaṭīkākāraḥ' 'āha ca cūrṇikṛt'[9]
'uktañca mūlaṭīkāyāṁ', 'Jīvābhigama mūlaṭīkāyāṁ'[10]
'āha ca mūlaṭīkākāro'pi'. 'āha ca cūrṇikṛt'[11]
'tathā cāha mūlaṭīkākāraḥ'[12]
'āha ca mūlacūrṇikṛt'[13]
'mūlaṭīkākāro'pyāha......cūrṇikāro'pyāha'[14]
'āha cūrṇikṛt'[15]
'tathā cāha mūlaṭīkākāraḥ'[16]
'āha ca cūrṇikṛt'[17]
'uktaṁ cūrṇau'[18]
'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'[19]
'āha cūrṇikṛt āha ca ṭīkākāraḥ' [20]
'mūlaṭīkākāreṇāpi'[21]
'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'[22]

Fulfilling the assignment

The credit of editing this text goes to a great extent to Yuvācārya Mahāprajña, because the work has been accomplished through his perseverance day and night, otherwise this onerous task was difficult to be finalised. He is basically inclined towards yoga. Therefore it is easy for him to maintain his equipoise (concentration). Not only that, being engrossed in the study of the *Āgamas* in a routine manner he has developed a keen intellect in grasping the inner mysteries of things. The credit of his intellectual development goes to his humbleness, diligence and total surrender to his preceptor. He has been displaying such inclination since childhood. Since he came over to me, this

1. Vṛtti, p. 141
2. „ p. 142
3. „ p. 142
4. „ p. 277
5. „ p. 186
6. „ p. 204
7. „ p 205
8. „ p. 209
9. „ p. 210
10. „ p. 214
11. „ p. 321
12. Vṛtti, p. 354
13. „ p. 369
14. „ p. 370
15. „ p. 384
16. „ p. 438
17. „ p. 441
18. „ p. 442
19. „ p. 444
20. „ p. 450
21. „ p. 452
22. „ p. 457

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

learning has been gradually increasing. I am quite satisfied with his capacity to work and his dutifulness.

Seve.al other saints have cooperated in revising the text of this *āgama*. I heartily bless them and wish that their work-born capacity should develop all the more.

My joy knows no bounds to see that the gigantic task of text revision has been successfully brought to completion through the cooperation of my disciples —the monks and nuns of the order.

—Ācārya Tulsī

Adhyātma Sādhanā Kendra,
Mehrauli—New Delhi,
Akṣaya Tṛtīyā,
1st May, 1987.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रम

ओवाइयं

समोसरण-पयरणं सूत्र १ से ८१ पृ० १ से ८१

चंपानयरी-वण्णग-पदं १, पुण्णभद्दचेइय-वण्णग-पदं २, वणसंड-वण्णग-पदं ३, असोगपायव-वण्णग-पदं ८, पुढविसिलापट्टय-वण्णग-पदं १३, कूणियराय-वण्णग-पदं १४, धारिणीदेवी-वण्णग-पदं १५, पवित्ति-वाउय-पदं १६, महावीर-वण्णग-पदं १९, पवित्ति-वाउयस्स निवेदण-पदं २०, सविहि-णमोत्थु-पदं २१, भगवओ उवागम-पदं २२, समण-वण्णग-पदं २३, निग्गंथ-वण्णग-पदं २४, थेर-वण्णग-पदं २५, अणगार-वण्णग-पदं २७, अपडिबंध-विहार-पदं २८, तवोवहाण-वण्णग-पदं ३०, अणगार-वण्णग-पदं ४५, भवणवासि-वण्णग-पदं ४७, वाणमंतर-वण्णग-पदं ४९, जोइसिय-वण्णग-पदं ५०, वेमाणिय-वण्णग-पदं ५१, परिसा-निग्गमण-पदं ५२, पवित्ति-वाउयस्स निवेदण-पदं ५३, सविहि-णमोत्थु-पदं ५४, बलवाउय-निद्देस-पदं ५५, हत्थिवाउय-निद्देस-पदं ५६, जाणसालिय-निद्देस-पदं ५८, णयरगुत्तिय-निद्देस-पदं ६०, बलवाउयस्स निवेदण-पदं ६२, कूणिय-सज्जा-पदं ६३, परिकरसज्जा-पदं ६४, कूणियस्स निग्गमण-पदं ६५, आसीवयण-पदं ६८, कूणिय-पज्जुवासणा-पदं ६९, देवी-पज्जुवासणा-पदं ७०, धम्मदेसणा-पदं ७१, धम्मपडिवत्ति-पदं ७८, परिसा-पडिगमण-पदं ७९, कूणिय-पडिगमण-पदं ८०, देवी-पडिगमण-पदं ८१।

ओवाइय-पयरणं सूत्र ८२ से १९५ पृ० ५१ से ७७

गोयम-वण्णग-पदं ८२, कम्मबंध-पदं ८४, णेरइय-उववाय-पदं ८७, वाणमंतर-उववाय-पदं ८८, जोइसिय-उववाय-पदं ९४, कंदप्पिय-उववाय-पदं ९५, परिवायग-चरिया-पदं ९६, अम्मड-अंतेवासि-पदं ११५, अम्मड-चरिया-पदं ११८, दढपइण्ण-पदं १४१, देवकिब्बिसिय-उववाय-पदं १५५, सहस्सार-उववाय-पदं १५६, आजीवयाणं अच्चुय-उववाय-पदं १५८, समणाणं आभिओगिय-उववाय-पदं १५९, णिण्हगाणं गेवेज्ज-उववाय-पदं १६०, देस-विरय-वण्णग-पदं १६१, सव्व-विरय-वण्णग-पदं १६३, केवलिसमुग्घाय-पदं १६९, जोग-निरोह-पदं १८१, सिद्ध-वण्णग-पदं १८३, ईसीपब्भारापुढवी-वण्णग-पदं १९२, सिद्ध-वण्णग-पदं १९५।

रायपसेणियं

सूरियाभो सूत्र १ से ६६८ पृ० १ से १६१

उक्खेव-पदं १, सूरियाभस्स ओहिपओग-पदं ७, सूरियाभेण भगवओ वंदण-पदं ८, आभिओगिय-देव-पेसण-पदं ९, आभिओगिय-देवेहिं भगवओ वंदण-पदं १०, वंदणाणुमोदण-पदं ११,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभिओगिएहिं जोयणमंडलनिव्वत्तण-पदं १२, सूरियाभस्स गमण-घोसणा-पदं १३, सूरियाभविमाणवासिदेवाणं समवसरण-पदं १६, जाणविमाण-विउव्वण-पदं १७, ०तिसोवाणपडिरूवग-विउव्वण-पदं १९, ०तोरण-पदं २०, ०अट्ठमंगल-पदं २१, ०झय-पदं २२, ०छत्तातिछत्तआदि-पदं २३, ०भूमिभाग-विउव्वण-पदं २४, ०मणि-वण्णावास-पदं २५, ०पेच्छाघरमंडव-विउव्वण-पदं ३२, ०पेच्छाघरमंडवे भूमिभाग-विउव्वण-पदं ३३, ०पेच्छाघरमंडवे उल्लोय-विउव्वण-पदं ३४, ०पेच्छाघरमंडवे अक्खाडग-विउव्वण-पदं ३५, ०अक्खाडए मणिपेढिया-विउव्वण-पदं ३६, ०मणिपेढियाए सीहासण-विउव्वण-पदं ३७, ०सीहासणे विजयदूस-विउव्वण-पदं ३८, ०विजयदूसे अंकुस-विउव्वण-पदं ३९, ०अंकुसे मुत्तादाम-विउव्वण-पदं ४०, ०भद्दासण-विउव्वण-पदं ४१, जाणविमाण-विउव्वणस्स निगमण-पदं ४५, जाणविमाणारोहण-पदं ४७, पयाण-सज्जा-पदं ४९, जाणविमाण-पच्चोरुहण-पदं ५६, सूरियाभस्स वंदण-पदं ५८, वंदणाणुमोदण-पदं ५९, पज्जुवासणा-पदं ६०, धम्मदेसणा-पदं ६१, पण्ह-वागरण-पदं ६२, नट्टविहि-उवदंसण-पदं ६३, कूडागारसाला-दिट्ठंत-पदं १२१, सूरियाभ-विमाण-पदं १२४, ०पागार-पदं १२७, ०कविसीस-पदं १२८, ०दार-पदं १२९, ०वंदणकलस-पदं १३१, ०णागदंत-पदं १३२, ०सालभंजिया-पदं १३३, जालकडग-पदं १३४, ०घंटा-पदं १३५, ०वणमाला-पदं १३६, ०पगंठग-पदं १३७, ०तोरण-पदं १३८, ०दार-पदं १६२, ०वणसंड-पदं १७०, ०वणसंड-भूमिभाग-पदं १७१, ०वणसंड-जलासय-पदं १७४, ०वणसंड-घरग-पदं १८२, ०वणसंड-मंडवग-पदं १८४, ०वणसंड-पासायवडेंसग-पदं १८६, ०भूमिभाग-पदं १८७, ०उवगारिया-लयण-पदं १८८, ०पउमवरवेइया-पदं १८९, ०उवगारिया-लयण-पदं २०२, ०भूमिभाग-पदं २०३, मूलपासाय-वडेंसग-पदं २०४, ०पासायवडेंसग-पदं २०५, ०सुहम्म-सभा-पदं २०९, ०सुहम्म-सभा-दार-पदं २१०, ०मुहमंडव-पदं २११, ०दार-पदं २१२, ०भूमिभाग-उल्लोय-पदं २१३, ०मंगलग-पदं २१४, ०पेच्छाघर-मुहमंडव-पदं २१५, ०भूमिभाग-उल्लोय-पदं २१६, ०अक्खाडग पदं २१७, ०मणिपेढिया-पदं २१८, ०सीहासण-पदं २१९, ०मंगलग-पदं २२०, ०मणिपेढिया-पदं २२१, ०चेइयथूभ-पदं २२२, मंगलग-पदं २२३, ०मणिपेढिया-पदं २२४, जिणपडिमा-पदं २२५, ०मणिपेढिया-पदं २२६, ०चेइयरुक्ख-पदं २२७, मंगलग-पदं २२९, ०मणिपेढिया-पदं २३०, ०महिंदज्झय-पदं २३१, ०मंगलग-पदं २३२, ०नंदापुक्खरिणी-पदं २३३, ०तिसोवाणपडिरूवग-पदं २३४, ०मणोगुलिया-पदं २३५, ०गोमाणसिया-पदं २३६, ०भूमिभाग-पदं २३७, ०मणिपेढिया-पदं २३८, ०चेइय-खंभ-पदं २३९, जिण-सकहा-पदं २४०, ०मंगलग-पदं २४१, ०मणिपेढिया-पदं २४२, ०सीहासण-पदं २४३, ०मणिपेढिया-पदं २४४, ०देवसयणिज्ज-पदं २४५, ०मणिपेढिया-पदं २४६, ०महिंदज्झय-पदं २४७, ०मंगलग-पदं २४८, ०पहरणकोस-पदं २४९, ०मंगलग-पदं २५०, सिद्धायतण-पदं २५१, ०मणिपेढिया-पदं २५२, ०जिणपडिमा-पदं २५३, ०उववायसभा पदं २६०, ०अभिसेगसभा-पदं २६५, ०अलंकारियसभा-पदं २६७, ०ववसायसभा-पदं २६९, सूरियाभदेव-पदं २७४, सूरियाभस्स अभिसेग-पदं २७७, अभिसेग-काले देवकिच्च-पदं २८१, वद्धावण-पदं २८२, अलंकरण-पदं २८३, सिद्धायतणपवेस-पदं २८८, ०थुइ-पदं २९२, ०दाहिणिल्लं पइ गमण-पदं २९४, उत्तरिल्लं पइ गमण-पदं ३१३, ०पुरत्थि-मिल्लं पइ गमण-पदं ३३२, ०सुहम्मसभापवेस-पदं ३५१, ०उववायसभापवेस-पदं ४१४, ०अभिसेगसभापवेस-पदं ४७४, ०अलंकारसभापवेस-पदं ५३४, ०ववसायसभापवेस-पदं ५९४, ०सूरियाभविमाणे अच्चणिया-पदं ६५४, ०नंदापुक्खरिणी-गमण-पदं ६५६, ०सुहम्मसभा-निसीदण-पदं ६५६, ०सूरियाभ-वण्णग-पदं ६६५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पएसि कहाणगं सूत्र ६६८ से ८१७ १६२ से २१२

केयइ-अद्ध-पदं ६६८, सेयविया-पदं ६६९, मिगवण-पदं ६७०, पएसि-पदं ६७१, सूरियकंता-पदं ६७२, सूरियकंत-पदं ६७३, चित्त-सारहि-पदं ६७५, कुणाला-पदं ६७६, सावत्थी-पदं ६७७, कोट्ठय-पदं ६७८, जियसत्तु-पदं ६७९, पाहुड-उवणयण-पदं ६८०, चित्तस्स आवास-पदं ६८५, केसि-आगमण-पदं ६८६, चित्तस्स जिण्णासा-पदं ६८७, कंचुइपुरिसस्स निवेदण-पदं ६८९, चित्तस्स केसि-समीवे गमण-पदं ६९०, धम्मदेसणा-पदं ६९३, चित्तस्स गिहि-धम्म-पडिवज्जण-पदं ६९५, समणोवासय-वण्णग-पदं ६९८, जियसत्तुणा पाहुड-पेसण-पदं ६९९, चित्तस्स निवेयण-पदं ७००, केसिस्स पडिवयण-पदं ७०३, पुणोनिवेयण-अब्भुवगमण-पदं ७०४, उज्जाणपाल-निद्देसण-पदं ७०६, पाहुड-उवणयण-पदं ७०८, केसिस्स सेयविया-आगमण-पदं ७११, उज्जाणपालगाणं चित्तस्स निवेदण-पदं ७१३, चित्तस्स केसि-पज्जुवासणा-पदं ७१४, चाउज्जाम-धम्मदेसणा-पदं ७१७, चित्तस्स निवेदण-पदं ७१८, केसिस्स पडिवयण-पदं ७१९, चित्त-पएसि-पदं ७२३, पएसि-केसि-पदं ७३६, जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं ७४८, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५०, जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं ७५१, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५२, जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं ७५३, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५४, जीव-सरीर-अण्णत-पदं ७५५, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५६, जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं ७५७, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५८, जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं ७५९, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७६०, जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं ७६१, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७६२, जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं ७६३, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७६४, मूढ-कट्ठहारय-पदं ७६५, अक्कोसं पइ पएसिस्स वितक्कणा-पदं ७६६, केसिस्स समाधाण-पदं ७६७, पएसिस्स पडिकूल-वट्टण-हेउ-पदं ७६८, ववहारग-पदं ७६९, जीवोवदंसणट्ठ-निवेदण-पदं ७७०, केसिस्स समाधाण-पदं ७७१, हत्थि-कुंथु-जीव-समाणत्त-पदं ७७२, कुल-परंपरागयदिट्ठि-अच्छड्डुण-पदं ७७३, अयहारग-दिट्ठंत-पदं ७७४, पएसिस्स गिहिधम्म-पडिवज्जण-पदं ७७५, आयरिय-विणयपडिवत्ति-पदं ७७६, पएसिस्स अत्त-निवेदण-पदं ७७७, पएसिस्स खामणा-पदं ७७८, चाउज्जामधम्म-कहण-पदं ७७९, रमणिज्ज-अरमणिज्ज-पद ७८०, पएसिणा रज्जस्स चउभाग-करण-पदं ७८८, पएसिस्स समणोवासयत्त-पदं ७८९, पएसिस्स रज्जोवरइ-पदं ७९०, सूरिकंताए सूरियकंतेण मंतणा-पदं ७९१, सूरियकंताए विसप्पओग-पदं ७९३, पएसिस्स समाहि-मरण-पदं ७९५, सूरियाभ-देव-पदं ७९७, दढपइण्णग-पदं ७९९ ।

जीवाजीवाभिगमे

पढमा दुविहपडिवत्ती सूत्र १४३ पृ० २१५ से २३७

उक्खेव-पदं १, अजीवाभिगम-पदं ३, जीवाभिगम-पदं ६, पुढविकाइय-पदं १३, आउकाइय-पदं ६३, वणस्सइकाइय-पदं ६६, तेउकाइय-पदं ७६, वाउकाइय-पदं ८०, बेइंदिय-पदं ८४, तेइंदिय-पदं ८८, चउरिंदिय-पदं ८९, नेरइय-पदं ९२, तिरिक्खजोणिय-पदं ९७, मणुस्स-पदं १२६, देव-पदं १३५ ।

दोच्चा तिविहपडिवत्ती सू० १५१ पृ० २३८ से २५६

तच्चा चउव्विहपडिवत्ती सू० ११३८ पृ० २५७ से ४७३

नेरइयउद्देसओ बीओ ७६, नेरइय उद्देसओ तइओ १२८, तिरिक्खजोणियउद्देसओ पढमो १३०, तिरिक्खजोणियउद्देसओ बीओ १८३, विसुद्धलेस्स-पदं २०४, मणुस्साधिगारो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१२, देवाधिकारो २३०, दीवसमुद्दवत्तव्वयाधिकारो २५७, विजयदाराधिकारो २९९, विजयाए रायहाणीए अधिकारो ३५१, विजयदेवाधिगारो ४३९, वेजयंतादि-अधिगारो ५६६, जंबुद्दीवाधिगारो ५७१, जंबुद्दीवे चंदसूरादि-अधिगारो ७०३, लवणसमुद्दाधिगारो ७०४, धायइसंडदीवाधिगारो ७९६, कालोदसमुद्दाधिगारो ८१०, पुक्खरवरदीवाधिगारो ८२१, मणुस्सखेत्ताधिगारो ८३५, जोइसमंडलाधिगारो ८३८, माणुसोत्तरपव्वताधिगारो ८३९, चंदादीणं उववन्नाधिगारो ८४२, पुक्खरोदसमुद्दाधिगारो ८४८, वरुणवरदीवाधिगारो ८५६, वरुणोदसमुद्दाधिगारो ८५९, खीरवरदीवाधिगारो ८६२, खीरवरसमुद्दाधिगारो ८६२, घयवरदीवाधिगारो ८६८, घयोदसमुद्दाधिगारो ८७१, खोदवरदीवाधिगारो ८७४, खोदोदसमुद्दाधिगारो ८७७, णंदिस्सरवरदीवाधिगारो ८८०, णंदिस्सरोदसमुद्दाधिगारो ९२५, अरुणादिदीवसमुद्दाधिगारो ९२७, दीवसमुद्दपरिमाणाधिगारो ९५३, लवणादिसमुद्द-उदयरसाधिगारो ९५५, समुद्देसु जीवाधिगारो ९६५, दीवसमुद्दाणं नामधेज्जादिअधिगारो ९७२, इंदियविसयाधिगारो ९७६, देवगति-पदं ९८८, देवविगुव्वणा-पदं ९९०, जोइसउद्देसओ ९९९, वेमाणियउद्देसओ पढमो १०३८, वेमाणियउद्देसओ बीओ १०५७

चउत्थी पंचविहपडिवत्ती	**सू० २५**	**पृ० ४७४ से ४७६**
पंचमी छव्विहपडिवत्ती	**सू० ६०**	**पृ० ४७७ से ४८७**
छट्ठी सत्तविहपडिवत्ती	**सू० १२**	**पृ० ४८८ से ४८९**
सप्तमी अट्ठविहपडिवत्ती	**सू० २३**	**पृ० ४९० से ४९१**
अट्ठमी नवविहपडिवत्ती	**सू० ५**	**पृ० ४९२**
नवमी दसविहपडिवत्ती	**सू० २९३**	**पृ० ४९३ से ५१५**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकेत-निर्देशिका

● ० ये दोनों बिन्दु पाठ-पूर्ति के द्योतक हैं। पाठ-पूर्ति के प्रारम्भ में भरे बिन्दु और समापन्न में रिक्त बिन्दु ० का संकेत किया गया है। देखें, पृष्ठ ८, सू ८

' ' यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है।

० पाठ में संलग्न दिया गया एक बिन्दु अपूर्ण पाठ होने का सूचक है। देखें, पृष्ठ ३, पाठान्तर १२, पृ० ११६, सूत्र १४२

[?] कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिह्न आदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें, पृ० २२, सूत्र ३२

× क्रोस पाठ नहीं होने का द्योतक है। देखें, पृ० ६ पाठान्तर ६

जाव आदि पर जो अंक है वे पूर्ति आधार स्थल के द्योतक है। जैसे—पृ०६, पाठान्तर १५

पृ० १०२ सूत्र ६६ पाठान्तर का अंक ६

पृ० ६७, सूत्र ४५, पाठान्तर का अंक ५

पृ० ११५, सूत्र १३६, पाठान्तर का अंक १४

पृ० ११६, सूत्र १४२, पाठान्तर का अंक २

पृ० १२५, सूत्र १२६, पादटिप्पणांक १,२,३ आदि

सं० पा० संक्षिप्त पाठ

नावृ० नायाधम्मकहाओ वृत्ति

जं० पुवृ० जंबुद्दीवपण्णत्ती पुण्यसागरीयवृत्ति

„ शावृ० „ „ शान्तिचन्द्रीयवृत्ति

„ हीवृ० „ „ हीरविजयवृत्ति

राय० वृ० रायपसेणियं वृत्ति

राय० सू० रायपसेणियं सूत्र

ओ०सू० ओवाइयं सूत्र

उत्त० उत्तरज्झयणाणि

भ० भगवती

पण्ण० पण्णवणा

जी० जीवा० जीवाजीवाभिगमे

जंबु०/जंबू० जंबुद्दीवपण्णत्ती

पण्हा० पण्हावागरणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओवाइयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समोसरण-पयरणं

चंपानयरी-वण्णग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था—रिद्ध-त्थिमिय[1]-समिद्धा 'पमुइय-जणजाणवया'[2] आइण्ण-जण-मणूसा[3] हल-सयसहस्स-संकिट्ठ-'विकिट्ठ'[4]-लट्ठ'[5]-पण्णत्त[6]-सेउसीमा कुक्कुड[7]-संडेय-गाम-पउरा 'उच्छु-जव-सालिकलिया'[8] गो-महिस-गवेलग-प्पभूया[9] 'आयारवंत'[10]-चेइय-जुवइविविहसण्णिविट्ठबहुला'[11] उक्कोडिय-गायगंठिभेय[12]-भड[13]-तक्कर-खंडरक्खरहिया खेमा णिरुवद्दवा[14] सुभिक्खा वीसत्थसुहावासा[15] अणेगकोडि-

---

१. त्थमिय (क, ख, ग,) ।

२. पमुइयजणुज्जाणजणवया (वृपा) ।

३. मणुस्सा (नावृ पत्र १) ।

४. वियट्ठ (नावृ पत्र १); विगिट्ठ (जं० पुवृ पत्र ३); विअट्ठ (जं० हीवृ पत्र ८) ।

५. वियलट्ठ (ग) ।

६. पण्णत्ता (क); 'पण्णत्त' त्ति योग्यीकृता बीजवपनस्य (वृ); सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र २९३) अस्य पदस्य व्याख्या एवं उपलभ्यते—प्रज्ञया-विशिष्टकर्म्मविषयबुद्ध्या आप्ते—प्राप्ते अतीव सुष्ठु परिकर्म्मिते इति भावः ।

७. कुंकुड (ख) ।

८. °सालियकलिया (क); उच्छुअवसालिमालिणीया (वृपा); रायपसेणइयवृत्तौ एष पाठो नास्ति व्याख्यातः ।

९. गवेलप्पभूया (क) ।

१०. 'आकारवन्ति सुन्दराकाराणि, आकारचित्राणि वा' इति वृत्तिव्याख्यानात् 'आयारवंतं' इति मूलपाठः, 'आयारचित्त' इति पाठभेदश्च फलितो भवति ।

११. 'अरहंतचेइयजणवइविसण्णिविट्ठबहुला' इति पाठान्तरं प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुवृ पत्र ३, हीवृ पत्र ८, इतिवृत्तिद्वयेपि व्याख्यातमस्ति । 'सूवयागचित्तचेइयजूयचिइसण्णिविट्ठवहुला' इति पाठान्तरं प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः हीवृसङ्केतितायां वृत्तावेव व्याख्यातमस्ति । रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० ४)—'आयारवंत-चेइय-जुवइविसिट्ठ-सण्णिविट्ठबहुला' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—आकारवन्ति सुन्दराकारानि चैत्यानि युवतीनां च पण्यतरुणीनामिति भावः, विशिष्टानि सन्निविष्टानि, सन्निवेशपाटका इति भावः, बहुलानि बहूनि यस्यां सा तथा ।

१२. °भेयय (क, ग,); गाहगंठिभेयय (वृपा) ।

१३. रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० ४) एतत्पदं नास्ति व्याख्यातम् ।

१४. निरुवद्दुया (ख, ग, नावृ) ।

१५. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ ज्ञाताधर्मकथायाः वृत्तौ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोडुंबियाइण्ण[1]-णिव्वुयसुहा नड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग[2]-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायराणुचरिया आरामुज्जाण-अगड-तलाग-दीहिय-वप्पिणि[3] गुणोववेया[4] उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा चक्क-गय-मुसुंढि[5]-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाड-घणदुप्पवेसा धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ता कविसीसग-वट्टरइय-संठियविरायमाणा अट्टालय-चरिय-दार-गोपुर-तोरण-उण्णय[6]-सुविभत्तरायमग्गा छेयायरिय-रइय-दढफलिह-इंदकीला विवणि-वणियछित्त[7]-सिप्पियाइण्ण-णिव्वुयसुहा[8] 'सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-पणियावण-विविहवत्थुपरिमंडिया'[9] सुरम्मा नरवइ-पविइण्ण-महिवइपहा अणेगवरतुरग-मत्तकुंजर-रहपहकर[10]-सीय-संदमाणियाइण्ण-जाण-जुग्गा विमउल-णवणलिणि-सोभियजला 'पंडुरवर-भवण-सण्णिमहिया'[11] उत्ताणगनयण[12]-पेच्छणिज्जा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

पुण्णभद्दचेइय-वण्णग-पदं

२. तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था—चिराईए[13] पुव्वपुरिस-पण्णत्ते पोराणे[14] सद्दिए कित्तिए[15] णाए सच्छत्ते सज्झए

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः हीरविजयवृत्तौ च 'पाषण्डिनां गृहस्थानां च' इति व्याख्यागतं विद्यते। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुण्यसागरवृत्तौ तु 'पासंडिगिहत्थवीसत्थसुहावासा' इति मूलपाठः उल्लिखितोस्ति । °सुहवासा (क) ।

१. कोडुंबियाइण्ण (क, ग) ।

२. विलंबय (ग) ।

३. वप्पिण (क, ग, नावृ, जं पुवृ, शावृ) ।

४. उप अप इत इत्येतस्य शब्दत्रयस्य स्थाने शकन्ध्वादिदर्शनादकारलोपे उपपेतेति भवति (वृ) । अतोग्रे सर्वेषु प्रयुक्तादर्शेषु 'नंदणवण-सन्निभप्पगासा' इति पाठो दृश्यते । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः हीरविजयवृत्तावपि एष लभ्यते, प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ अस्य पाठान्तरत्वेन उल्लेखोस्ति, ज्ञाताधर्मकथाया वृत्तौ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुण्यसागरवृत्तौ च नैष लभ्यते, तेनासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः ।

५. मुसंढि (रायवृ पृ० ५, जं० पुवृ पत्र ४, हीवृ पत्र ६) ।

६. समुण्णय (ख, ग) ।

७. वणिच्छित्त (ख, ग, नावृ पत्र ३, राय वृ पृ० ६); वाचनान्तरे छेत्तशब्दस्य स्थाने छेयशब्दोभिधीयते तत्र च छेकशिल्पिकाकीर्णेति व्याख्येयम् (वृ) ।

८. निवुयसुहा (ग) ।

९. 'विविहवेसपरिमंडिया (ग); विविहवसुपरिमंडिया (रायवृ पृ० ६, जं० पुवृ पत्र ४, हीवृ पत्र ६); पुस्तकान्तरेधीयते—सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु पणियावणविविहवेसपरिमंडिया (वृ) ।

१०. °पवरकर (ग) ।

११. रायपसेणइयवृत्तौ 'पंडुरवरभवणपंतिमहिया' इति पाठो लिखितोस्ति ।

१२. उत्ताणनयण (क, ख, ग, नावृ पत्र ३) ।

१३. चिराइए (ग); चिरः—चिरकालः आदिः—निवेशो यस्य तच्चिरादिकम् (वृ); ज्ञाताधर्मकथाया वृत्तौ (पत्र ४) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुण्यसागरवृत्तौ (पत्र ४) च 'चिरादिकं' इत्येव व्याख्यातमस्ति, किन्तु तस्याः हीरविजयवृत्तौ (पत्र ११) 'चिरातीतं' इत्यपि व्याख्यातमस्ति—चिरकाले भूतभूयः काले आदिर्निवेशो यस्य तच्चिरादिकं चिरकालोतीतो यस्मात्तच्चिरातीतं वा चिरात्चिरकालीनपर्यायप्राप्तानतिक्रम्य गच्छतीति चिरातिगं वा चिरकालीनेषु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सघंटे सपडागाइपडागमंडिए[1] सलोमहत्थे कयवेयड्डिए[2] लाउल्लोइय-महिए गोसीस-सरसरत्तचंदण-दद्दर-दिण्णपंचंगुलितले उवचियवंदणकलसे[3] वंदणघड-सुकय-तोरण-पडिदुवारदेसभाए आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्लदामकलावे 'पंचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क'[4]-पुप्फपुंजोवयारकलिए कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरक्क[5]-धूव-मघमघेंत[6]-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधगंधिए[7] गंधवट्टिभूए नड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-पवग-कहग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-भुयग-मागहपरिगए बहुजण-जाणवयस्स[8] विस्सुयकित्तिए बहुजणस्स आहुस्स[9] आहुणिज्जे पाहुणिज्जे अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे 'जाग-सहस्सभाग-पडिच्छए'[10] बहुजणो अच्चेइ आगम्म पुण्णभद्दं[11] चेइयं पुण्णभद्दं[12] चेइयं ।।

वणसंड-वण्णग-पदं

३. से णं पुण्णभद्दे चेइए एक्केणं महया वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ।।

४. से णं वणसंडे किण्हे किण्होभासे नीले नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धोभासे तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीयच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए घणकडियकडच्छाए[13] रम्मे

श्रेष्ठमित्यर्थः । स्वीकृतपाठे 'चिरातीत' मिति व्याख्यातमभिप्रेतमस्ति ।

१४. पुराणे (नावृ पत्र ४, रायवृ पृ० ८, जं० पुवृ० पत्र ५) ।

१५. वित्तिए (क, ख, ग, वृ, नावृ); कित्तिए (वृपा); रायपसेणइयवृत्तावपि 'कित्तिए' इति पदं लिखितमस्ति ।

१. सपडाए पडागाइपडागमंडिए (वृपा) ।

२. °वयद्दीए (क); °वयड्डिए (ख, जं० पुवृ पत्र ५) ।

३. बहुष्वादर्शेषु 'उवचियचंदणकलसे' इत्यपि पाठो दृश्यते किन्तु 'वंदण' स्थाने 'चंदण' इति पाठो जातः वृत्तौ वन्दनकलशाः माङ्गल्यघटाः इति व्याख्यातमस्ति, अनेन 'वंदणकलसे' इत्येव पाठः सिद्ध्यति ।

४. पंचविहसरिस° (क); ज्ञाताधर्मकथायाः वृत्तौ (पत्र ४) 'सरस' इति पदं व्याख्यातं नैव दृश्यते ।

५. तुरुक्क (नावृ पत्र ४, जं० पुवृ पत्र ५)

६. °मघंत (क, ख) ।

७. सुगंधवरगंधिए (ख) ।

८. जणवयस्स (ग) ।

९. क्वचिदिदं न दृश्यते (वृ); जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुण्यसागरवृत्तावपि एतत्पदं नैव दृश्यते ।

१०. जागभागदायसहस्सपडिच्छए (वृपा) ।

११,१२. पुण्णभद्द° (क) ।

१३. घणकडियकडिच्छाए (क, ख); °कडच्छए (ग); जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र १८७) 'घणकडितडच्छाए' इति पाठः मूलपाठरूपेण 'घणकडियकडच्छाए' इति च पाठान्तररूपेण व्याख्यातोस्ति—इह शरीरस्य मध्यभागे कटिस्ततोन्यस्यापिमध्यभागः कटिरिव कटिरित्युच्यते, कटिस्तटमिव कटितटं घना अन्यान्यशाखानु प्रवेशतो निबिडा कटितटे—मध्यभागे छाया यस्य स घनकटितटच्छायः, मध्यभागे निबिडतरच्छाय इत्यर्थः, क्वचित्पाठः 'घनकडियकडच्छाए' इति, तत्रायमर्थः—कटः सञ्जातोस्येति कटितः कटान्तरेणोपरि आवृत इत्यर्थः कटितश्चासौ कटश्च कटितकटः घना—निबिडा कटितकटस्येवाधोभूमौ छाया यस्य स घन-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महामेहनिकुरंबभूए[1] ॥

५. से[2] णं पायवे मूलमंते कंदमंते खंधमंते तयामंते सालमंते पवालमंते पत्तमंते पुप्फमंते फलमंते बीयमंते[3] अणुपुव्व[4]-सुजाय-रुइल-वट्टभावपरिणए 'एक्कखंधी अणेगसाला'[5] अणेगसाह-प्पसाह-विडिमे अणेगनरवाम-सुप्पसारिय-अगेज्झ-घण-विउल-वद्ध [वट्ट[6] ?]

कटितकटच्छायः । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २८) हीरविजयवृत्तौ (पत्र १२) चापि एवमेवास्ति ।

१. °निकुरुंबभूए (जं० हीवृ पत्र १२) ।

२. अभयदेवसूरिणा प्रस्तुतसूत्रस्यवृत्तौ ज्ञाताधर्मकथायाः वृत्तौ (पत्र ६) च 'ते णं पायवा, पिंडिम-णीहारिम' इति सूत्रद्वयं बहुवचनान्तं 'सुय-बरहिण' इति सूत्रं एकवचनान्तं व्याख्यातमस्ति । मलयगिरिसूरिणा जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र १८७) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २९) च त्रीण्यपिसूत्राणि बहुवचनान्तानि व्याख्यातानि सन्ति ।

अभयदेवसूरिणा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ वाचनान्तरस्य उल्लेखः कृतोऽस्ति—एतान्येव वृक्षविशेषणानि वनषण्डविशेषणतया वाचनान्तरेऽधीतानि । एतस्य वाचनान्तरस्याधारेण त्रिष्वपि सूत्रेषु एकवचनान्तः पाठः स्वीकृतः । आदर्शगतः पाठ एवमस्ति—ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो खंधमंतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंत्तो पुप्फमंतो फलमंतो बीयमंतो अणुपुव्व-सुजाय-रुइल-वट्टभावपरिणया अणेगसाह-प्पसाह-विडिमा अणेगनरवाम-सुप्पसारिय-अगेज्झ-घण-विउल-बद्ध-(वट्ट ?) खंधा अच्छिद्द-पत्ता अविरलपत्ता अवाईणपत्ता अणइइपत्ता निद्धूय-जरढ-पंडुपत्ता णवहरिय-भिसंत-पत्तभारंधयार-गंभीरदरिसणिज्जा उवणिग्गय-णव-तरुण-पत्त-पल्लव-कोमलउज्जलचलंतकिसलय-सुकुमालपवाल सोहियवरंकुरग्गसिहरा णिच्चं कुसुमिया णिच्चं माइया णिच्चं लवइया णिच्चं थवइया णिच्चं गुलइया णिच्चं गोच्छिया णिच्चं जमलिया णिच्चं जुवलिया णिच्चं विणमिया णिच्चं पणमिया (णिच्चं सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसग-धरा ?) णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरा ।

पिंडिम-णीहारिमं सुगंधि सुह-सुरभि-मणहरं च महया गंधद्धणिं मुयंता णाणाविहगुच्छगुम्ममंड-वगघरगसुहसेउकेउबहुला अणेगरह-जाण-जुग्ग-सिविय-पविमोयणा सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

३. 'हरियमंता' इति क्वचिद् दृश्यते (वृ) । ४. अणुपुव्वि (ग, राय वृ० १०)

५. 'क' प्रतौ 'एक्कखंधा अणेगसाला' 'ग' प्रतौ 'एक्कखंधा' इति पाठभेदाः लभ्यन्ते । वृत्तौ एतत्पाठद्वयमपि नास्ति व्याख्यातम् । ज्ञाताधर्मकथाया वृत्तावपि (पत्र ५) नानयोर्व्याख्या विद्यते । रायपसेणइय वृत्तौ (पृ० १०) जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र १८७) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २९) च 'एगखंधी' इति पाठो व्याख्यातोऽस्ति—ते पादपाः प्रत्येकमेकस्कन्धाः, प्राकृते चास्य स्त्रीत्वमिति एगक्खंधी ।

६. ज्ञाताधर्मकथायाः वृत्तौ (पत्र ५) अभयदेवसूरिणा प्रस्तुतपाठो व्याख्यातस्तत्र 'वट्ट' पदमेव व्याख्यातमस्ति—विपुलो विस्तीर्णो वृत्तश्च स्कन्धो येषां ते तथा मलयगिरिणा जीवाजीवाभिगमस्य वृत्तौ (पत्र १८७) रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १३) च 'वृत्तस्कन्धा' इति व्याख्यातमस्ति । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २९) 'बद्ध वृत्त' इति पदद्वयमपि नास्ति व्याख्यातम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंधे[1] अच्छिद्दपत्ते अविरलपत्ते अवाईणपत्ते अणईइपत्ते[2] निद्धूय[3]-जरढ-पंडुपत्त[4]-णवहरिय-भिसंत-पत्तभारंधयार-गंभीरदरिसणिज्जे उवणिग्गय[5]-णव-तरुण-पत्त-पल्लव-कोमलउज्जल-चलंतकिसलय-सुकुमालपवाल-सोहियवरंकुरग्गसिहरे णिच्चं कुसुमिए णिच्चं माइए[6] णिच्चं लवइए णिच्चं थवइए णिच्चं गुलइए णिच्चं गोच्छिए णिच्चं जमलिए णिच्चं जुवलिए णिच्चं विणमिए णिच्चं पणमिए [णिच्चं सुविभत्त-'पिंडि-मंजरि'[7]-वडेंसगधरे ?][8] णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय- जमलिय - जुवलिय - विणमिय - पणमिय-सुविभत्त-पिंडि[9]-मंजरि-वडेंसगधरे ।।

६. सुय-वरहिण-मयणसाल-कोइल-कोहंगक[10]-भिंगारग[11]-कोंडलग[12]-जीवंजीवग-णंदीमुह-कविल-पिंगलक्खग-कारंडक[13]- चक्कवाय- कलहंस-सारस-अणेगसउणगणमिहुणविरइयसद्दुण्णइयमहुरसरणाइए सुरम्मे संपिंडियदरियभमर-महुयरिपहकर-परिलिंतमत्तछप्पय-कुसुमासवलोल-महुरगुमगुमंतगुंजंतदेसभाए 'अब्भिंतरपुप्फफले बाहिर-पत्तोच्छण्णे पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छन्न-पलिच्छन्ने'[14] 'साउफले निरोयए अकंटए'[15] 'णाणाविहगुच्छ-गुम्म-

---

१. वाचनान्तरेऽत्रस्थानेधिकपदान्येवं दृश्यते—पाईण-पडीणायायसाला उदीण-दाहिण-विच्छिण्णा ओणय-नय-पणयविप्पहाइयओलंबप-लंबलंबसाहप्पसाहविडिमा अवाईणपत्ता अणुइण्णपत्ता ।

२. अणईयपत्ता (ख, ग);अणीइपत्ता (जं० शावृ पत्र २९) ।

३. निद्धय (ख); निद्धुय (ग) ।

४. औपपातिकस्य अप्रयुक्तादर्शे 'पंडुरपत्ता' इत्यपि पाठो लभ्यते ।

५. उवविणिग्गय (राय वृ०पृ० १४, जी० ३।२७४, जं० शावृ पत्र २६, हीवृ पत्र १३) ।

६. मुकुलिता (राय वृ० पृ० १५, जीवृ पत्र १८२ जं० शावृ० पत्र २५); मुकुलिता मयूरिता (जं० हीवृ० पत्र १३) ।

७. रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १५) जीवाजीवाभिगम वृत्तौ (पत्र १८२) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शान्ति-चन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २५) च 'पडि-मंजरि' इति पाठो व्याख्यातोस्ति ।

८. कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठः आदर्शेषु नोपलभ्यते, वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः, किन्तु रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १५) जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र १८२) च एष पाठो व्याख्यातोस्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शान्तिचन्द्रीयवृत्तावपि (पत्र २५) एषोस्ति व्याख्यातः, तत्र औपपतिकस्य उल्लेखो विद्यते—औपपातिकादौ तु 'सुविभत्त-पिंडिमंजरीवडिंसगधराओ' इति पाठः । संकलितपाठे एष पाठो विद्यते, तेन पृथक् पाठेपि एष युक्तोस्ति ।

९. पिंड (ग) ।

१०. कोभंगक (औपपातिकवृत्ति हस्तलिखित); कोरक (जी० ३।२७५, रायवृ० पृ० १५, जं० शावृ० पत्र ३०) ।

११. भिंगारक (क, ख); भिंगार (ग) ।

१२. कडिलका (ख); कोंडल (ग) ।

१३. कारंड (क, ख); कारंडग (ग) ।

१४. एतानि त्रिण्यपि क्वचिद् वृक्षाणां विशेषणानि दृश्यन्ते (वृ) ।

१५. निरोया अकंटया साउफला निद्धफला (जी० ३।२७५); रायपसेणइयवृत्ता (पृ० १६) वपि एतानि चत्वारि पदानि एतेनैव क्रमेण व्याख्यातानि सन्ति । नीरोगकाः.........अकण्टकाः...... स्वादुफलाः, स्निग्धफला इत्यपि क्वचित् (जं० शावृ पत्र ३०); साउफले मिट्ठफले निरोयए (नावृ० पत्र ६); प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'साउफले' त्ति मिष्ठफलः इति व्याख्यातमस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंडवगसोहिए[1] 'विचित्तसुहकेउभूए'[2] वावी-पुक्खरिणी[3]-दीहियासु य सुनिवेसियरम्मजाल-हरए ॥

७. 'पिंडिम-णीहारिमं सुगंधि'[4] सुह-सुरभि-मणहरं च महया गंधद्धणिं[5] मुयंते णाणाविहगुच्छगुम्ममंडवगघरग-सुहसेउकेउवहुले[6] 'अणेगरह-जाण-जुग्ग-सिविय-पवि-मोयणे'[7] सुरम्मे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

असोगपायव-वण्णग-पदं

८. तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एक्के असोगवरपायवे पण्णत्ते[8]—कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूले मूलमंते कंदमंते[9] •खंधमंते तयामंते सालमंते पवालमंते पत्तमंते पुप्फमंते फलमंते बीयमंते अणुपुव्व-सुजाय-रुइल-वट्टभावपरिणए अणेगसाह-प्पसाह-विडिमे अणेगनरवाम-सुप्पसारिय-अग्गेज्झ-घण-विउल-बद्ध [वट्ट[10] ?] खंधे अच्छिद्दपत्ते अविरलपत्ते अवाईणपत्ते अणईइपत्ते निद्धूय-जरढ-पंडुपत्ते णवहरियभिसंत-पत्तभारंधयार-गंभीरदरिस-णिज्जे उवणिग्गय-णव-तरुण-पत्त-पल्लव-कोमलउज्जलचलंतकिसलय-सुकुमालपवाल-सोहियवरंकुरग्गसिहरे णिच्चं कुसुमिए णिच्चं माइए णिच्चं लवइए णिच्चं थवइए णिच्चं गुलइए णिच्चं गोच्छिए णिच्चं जमलिए णिच्चं जुवलिए णिच्चं विणमिए णिच्चं पणमिए [णिच्चं सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरे[11] ?] णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरे ।

---

१. °मंडवगरम्मसोहिए (ग); क्वचित् 'णाणाविह-गुच्छगुम्ममंडवगरम्मसोहिए' रम्मेत्ति क्वचिन्न-दृश्यते (वृ) ।

२. विचित्तसुहसेउकेउबहुले (वृपा); विचित्तसुह-केउबहुले (जी० ३।२७५; जं० शावृपा० पत्र ३०) ।

३. पुक्खरणी (क, ख, ग) ।

४. पिंडिमं णीहारिमं सुगंधि (क); पिंडिमणीहा-रिमसुगंधि (ख, ग) ।

५. गंधद्धुणिं (ख, ग) ।

६. सुहसेउकेउबहुला (रायवृ० पृ० १७, जी० ३।२७६) ।

७. अणेगसगड - रह-जाण-जुग्ग-सीया-संदमाणिय-पडिमोयणा (जी० ३।२७६) ।

८. अशोकपादपवर्णके क्वचिदिदमधिकमधीयते—दूरोवगयकंदमूलवट्टलट्ठसंठियसिलिट्ठघणमसिण-निद्धजायनिरुवहउव्विद्धपवरखंधी अणेगणरप-वरभुयागेज्झे कुसुमभरसमोणमंतपत्तलविसाले महुकरिभमरगणगुमगुमाइयनिलितउड्डितसस्सि-रीए णाणासउणगणमिहुणसुमहुरकण्णसुहपलत्त सद्दमहुरे (वृ) । रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १०) एष पाठो ग्रन्थान्तरप्रसिद्धपाठरूपेण व्याख्यातो दृश्यते—'दूरुग्गयकंदमूलवट्टलट्ठसंधि - असिलिट्ठ घणमसिणसिणिद्धअणुपुव्विसुजायणिरुवहतोव्वि-द्धपवरखंधी अणेगणरपवरभुयअगेज्झे कुमुमभर-समोणमंतपत्तलविसालसाले महुकरिभमरगण-गुमुगुमाइयणिलितउड्डेंतसस्सिरीए णाणासउण-गणमिहुणसुमहुरकण्णसुहपलत्तसद्दमहुरे कुसवि-कुसविसुद्धरुक्खमूले पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।' अस्य वाचनान्तरस्य रायपसेणियवृत्तिगतपाठस्य च अध्ययनेन एतत् स्पष्टं भवति—लिपिदोषेण पाठानां परिवर्तनं जातम्, वृत्तिकारैरपि यादृशाः पाठा लब्धास्ता-दृशा व्याख्याताः । उदाहरणरूपेण चिन्हाङ्कित-पाठानां वाचनान्तरपाठैस्तुलना कार्या ।

९. सं० पा०—कंदमंते जाव पविमोयणे ।

१०,११. द्रष्टव्यं पञ्चमसूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिंडिम-णीहारिमं सुगंधिं सुह-सुरभि-मणहरं च महया गंधद्धणिं मुयंते णाणाविह-गुच्छगुम्ममंडवगघरग-सुहसेउकेउबहुले अणेगरह-जाण-जुग्ग-सिविय°-पविमोयणे[1] सुरम्मे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

९. से णं असोगवरपायवे अण्णेहिं[2] बहूहिं तिलएहिं लउएहिं[3] छत्तोवेहिं सिरीसेहिं सत्तिवण्णेहिं[4] दहिवण्णेहिं लोद्धेहिं धवेहिं चंदणेहिं अज्जुणेहिं णीवेहिं कुडएहिं कलंबेहिं[5] फणसेहिं दाडिमेहिं[6] सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पियएहिं पियंगूहिं पुरोवगेहिं[7] रायरुक्खेहिं णंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ॥

१०. ते णं तिलया लउया[8] *छत्तोवा सिरीसा सत्तिवण्णा दहिवण्णा लोद्धा धवा चंदणा अज्जुणा णीवा कुडया कलंवा फणसा दाडिमा साला ताला तमाला पियया पियंगू पुरोवगा रायरुक्खा° णंदिरुक्खा कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो[9] जाव[10] *णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरा ।

पिंडिम-णीहारिमं सुगंधिं सुह-सुरभि-मणहरं च महया गंधद्धणिं मुयंता णाणाविह-गुच्छगुम्ममंडवगघरग-सुहसेउकेउवहुला अणेगरह-जाण-जुग्ग°-सिविय-पविमोयणा[11] सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

११. ते णं तिलया लउया जाव[12] णंदिरुक्खा अण्णाहिं[13] बहूहिं पउमलयाहिं णागलयाहिं असोगलयाहिं चंपगलयाहिं चूयलयाहिं वणलयाहिं वासंतियलयाहिं अइमुत्तयलयाहिं कुंदलयाहिं सामलयाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता । ताओ णं पउमलयाओ 'जाव सामलयाओ'[14] णिच्चं कुसुमियाओ जाव[15] वडेंसगधराओ[16] पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥

---

१. परिभोयणे (ख) ।

२. अण्णेहि य (ग) ।

३. बउएहिं (क); बकुलैः (वृ) ।

४. सत्तवण्णेहिं (रायवृ० पृ० १२) ।

५. कलंबेहि सव्वेहिं (क, ख); सव्वेहिं (ग, वृ); जीवाजीवाभिगमे (३।३८८) तद्वृत्तौ च तथा रायपसेणइयवृत्ता (पृ० १२) वृद्धृते प्रस्तुत-सूत्रपाठे 'सव्वेहिं' एतत्पदं नैव दृश्यते ।

६. × (क, ख) ।

७. रायपसेणियवृत्ता (पृ० १२) वुद्धृते पाठे एतत्पदं नैव दृश्यते । जीवाजीवाभिगमे (३।३८८) च अस्य स्थाने 'पारावय' इति पदं लभ्यते ।

८. सं० पा०—लउया जाव णंदिरुक्खा ।

९. सं० पा०—कंदमंतो एएसिं वण्णओ भाणियव्वो जाव सिविय ।

१०. ओ० सू० ५ ।

११. परिमोयणा (ख, ग) ।

१२. ओ० सू० १० ।

१३. अण्णेहिं (क, ग); अण्णेहि य (ख) ।

१४. × (क, ख, ग); रायपसेणइयवृत्ता (पृ० १८) वुद्धृते औपपातिकपाठे चिह्नाङ्कितः पाठो विद्यते । तदाधारेणासौ मूले स्वीकृतः, उक्त क्रमेणाप्यसौ युज्यते । जीवाजीवाभिगमे (३।३९०) पि एतत्संवादी पाठो दृश्यते ।

१५. ओ० सू० ५ ।

१६. वडिंसयधरीयो (क, ग); वडिंसयधारीओ (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. तस्स[1] णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे अट्ठ अट्ठ मंगलगा पण्णत्ता, तं जहा—सोवत्थिय-सिरिवच्छ-नंदियावत्त[2]-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा सव्व-रयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा समीरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

तस्स णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे किण्हचामरज्झया नीलचामरज्झया लोहियचामरज्झया हालिद्दचामरज्झया सुक्किलचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वइरदंडा जलयामलगंधिया सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

तस्स णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थगा पउमहत्थगा कुमुयहत्थगा[3] नलिणहत्थगा सुभगहत्थगा सोगंधियहत्थगा पुंडरीयहत्थगा महापुंडरीयहत्थगा सयपत्तहत्थगा सहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा॥

पुढविसिलापट्टय-वण्णग-पदं

१३. तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा 'ईसिं खंध[4]-समल्लीणे'[5], एत्थ णं महं एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते—विक्खंभायाम[6]-उस्सेह-सुप्पमाणे किण्हे 'अंजणग-वाण-कुवलय'[7]-

---

१. वृत्तिकृता एतत् सूत्रं वाचनान्तरत्वेन उट्टङ्कि-तम्—इह लतावर्णनान्तरमशोकवर्णकं पुस्त-कान्तरे इदमधिकमधीयते। रायपसेणइयसूत्रे (३, ४) ओवाइयगमेणं इति संक्षिप्तपाठोस्ति तस्य वृत्तौ मलयगिरिणा एतत्पूर्णं सूत्रं व्या-ख्यातमस्ति। प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ अभयदेव-सूरिणा ये ये पाठाः वाचनान्तरत्वेन उट्टङ्कि-तास्ते भगवत्यादिसूत्राणां वृत्तौ मूलपाठत्वेन व्याख्याताः सन्ति। तेन ज्ञायते अभयदेवसूरिणा ये आदर्शाः प्रमाणीकृतास्ते मूलपाठरूपेण अन्ये च वाचनान्तररूपेण उट्टङ्किताः।

२. क्वचिद् 'नंदावत्त' इति पाठः (रायवृ पृ० १६)।

३. 'कुसुमहत्थय' त्ति पाठान्तरं (वृ)।

४. खंधी (क)।

५. मलयगिरिणा रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० २२) 'ईसिं खंध-समल्लीणे' इति पाठः 'पुढविसिला-पट्टए पण्णत्ते' इति पाठानन्तरं व्याख्यातः—एको महान् पृथ्वीसिलापट्टक प्रज्ञप्तः, कथम्भूत इत्याह 'ईसिं खंध-समल्लीणे' इत्यादि, इह स्कन्धः स्थुडमित्युच्यते तस्याशोकवरपादपस्य यत् स्थुडं तत् ईषद्-मनाक् सम्यग्लीनस्तदासन्न इत्यर्थः। प्रस्तुतसूत्रे अभयदेवसूरिणा पूर्वमेव व्याख्यातः—'ईसिं खंध-समल्लीणे' मनाक् स्कन्धासन्न इत्यर्थः। 'एत्थ णं महं एक्के' इत्यत्र 'एत्थ णं' ति शब्दः अशोकवरपादपस्य यदधोत्रेत्येवं सम्बन्धनीयः। रायपसेणइयसूत्रस्य समायोजना अधिकं सङ्गतास्ति।

६. अतः रायपसेणइयवृत्तौ व्याख्यातः पाठः स्वीकृतपाठाद्भिन्नोस्ति। वाचनान्तरपाठेन तस्य प्रायः साम्यमस्ति—विक्खंभायामसुप्पमाणे किण्हे अंजणगघणकुवलयहलहरकोसेज्जसरिसो आगासकेसकज्जलकक्केयणइंदनीलअयसिकुसुम-प्पगासे भिंगंजणभंगभेयरिट्ठगनीलगुलियगवला-इरेगे भमरनिकुरंबभूए जंबूफलअसणकुसुमबंध-णनीलुप्पलपत्तनिकरमरगयासासगनयणकीयासि-वण्णे णिद्धे घणे अज्झुसिरे रूवगपडिरूवग-दरिसणिज्जे आयंसतलोवमे सुरम्मे सीहासण-संठिए सुरूवे मुत्ताजालखइयंतकम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे।

७. अंजणवाणकुवलयघणकुवलय (क)।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

हलधरकोसेज्जागास-केस-कज्जलंगी खंजण-सिंगभेद-रिट्ठय-जंबूफल-असणग-सणबंधण-णीलुप्पलपत्तनिकर-अयसिकुसुमप्पगासे मरगय-मसार-कलित्त-णयणकीयरासिवण्णे[1] णिद्ध-घणे अट्ठसिरे आयंसय-तलोवमे सुरम्मे ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर[2]- वणलय-पउमलयभत्तिचित्ते[3] आईणग-रूय[4]-बूर-णवणीय-तूलफासे सीहासणसंठिए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे[5] ॥

कूणियराय-वण्णग-पदं

१४. तत्थ णं चंपाए णयरीए कूणिए णामं राया परिवसइ—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे अच्चंतविसुद्ध-दीहराय-कुल-वंस-सुप्पसूए णिरंतरं रायलक्खण-विराइयंगमंगे 'बहुजण-बहुमाण-पूइए'[6] सव्वगुण-समिद्धे खत्तिए मुइए मुद्धाहिसित्ते माउ-पिउ-सुजाए दयपत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए सेउकरे केउकरे णरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए[7] पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूवरयए आओग-पओग-संपउत्ते विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए पडिपुण्ण-जंतकोस-कोट्ठागाराउधागारे[8] बलवं दुब्बलपच्चामित्ते ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं[9] ओहय-सत्तुं निहयसत्तुं मलियसत्तुं उद्धियसत्तुं निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं ववगयदुब्भिक्खं मारि-भय-विप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं 'पसंत-डिंब-डमरं'[10] रज्जं पसासेमाणे[11] विहरइ ॥

धारिणीदेवी-वण्णग-पदं

१५. तस्स णं कोणियस्स रण्णो धारिणी णामं देवी होत्था—सुकुमाल-पाणिपाया 'अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा'[12] लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माणप्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकार[13]-कंत-पिय-दंसणा सुरूवा करयल-परिमिय-पसत्थ-तिवली-वलिय-मज्झा 'कुंडलुल्लिहिय-गंडलेहा'[14] कोमुइ[15]-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण- सोम-

---

१. °रासिदित्ते (ख)।
२. × (वृ)।
३. °भित्तिचित्ते (वृ)।
४. रुय (ख, वृ)।
५. वाचनान्तरे पुनः सिलापट्टकवर्णकः किञ्चिद-न्यथा दृश्यते—अंजणगघणकुवलयहलहरकोसेज्ज-सरिसे आगासकेसकज्जलकक्केयणइंदणीलअय-सिकुसुमप्पगासे भिंगंजणसिंगभेयरिट्ठगनील-गुलियागवलाइरेगभमरनिकुरंबभूए जंबूफल-असणकुसुमबंधननीलुप्पलपत्तनिगरमरगयासास-गनयणरासिवण्णे निद्धे घणे अज्झुसिरे रूवग-पडिरूवदरिसणिज्जे मुत्ताजालखइयंतकम्मे (वृ)।
६. × (व)।
७. पुरिसवरपुंडरीए (ख, रायवृ० पृ० २५)।
८. °राउहधरे (रायवृ० पृ० २६)।
९. अप्पडिकंटयं (रायवृ० पृ० २६)।
१०. 'पसंताहिय-डमरं' ति क्वचित्पाठः (वृ)।
११. पसाहेमाणे (क, ग, वृपा)।
१२. अहीणपंचिंदियसरीरा (क); क्वचित्तु—अहीणपुण्णपंचिंदियसरीरा (वृ)।
१३. °सोम्माकार (वृ)।
१४. कुंडलल्लिहिय (क); कुंडलोल्लिखितपीन-गंडलेखा (वृपा)।
१५. कोमुई (क); कोमुईय (ख); सर्वासु प्रतिषु 'कोमुइ····सोमवयणा' अयं पाठः पूर्वं वर्तते,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वयणा सिंगारागार-चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-'विहिय-[चिट्ठिय' ?[1]] विलास-सललिय-संलाव-णिउण-जुत्तोवयार-कुसला[2] 'सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्णविलासकलिया'[3] पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा कोणिएण[4] रण्णा भिंभसारपुत्तेण[5] सद्धि अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी[6] विहरइ ।।

पवित्ति-वाउय-पदं

१६. तस्स णं कोणियस्स[7] रण्णो एक्के पुरिसे विउल-कय-वित्तिए भगवओ पवित्ति-वाउए भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेइ ।।

१७. तस्स णं पुरिसस्स वहवे अण्णे पुरिसा दिण्ण-भति-भत्त-वेयणा[8] भगवओ पवित्ति-वाउया भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेंति ।।

१८. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोणिए राया भिंभसारपुत्ते[9] वाहिरियाए उवट्ठाण-सालाए अणेगगणणायग-दंडणायग[10]-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय[11]-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम - सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय- संधिवाल-सद्धि संपरिवुडे विहरइ ।।

महावीर-वण्णग-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे

'कुंडलुल्लिहियगंडलेहा' इतिः पाठः पश्चात् वर्तते ।

१. वृत्तिकृता 'विहितं—चेष्टितम्' इति व्याख्या-तम् । ५१ सूत्रस्य वाचनान्तरे 'चेट्ठिय' इति पदमुपलभ्यते । रायपसेणइयवत्तौ (पृ० २६) समुद्धृते पाठेपि 'चेट्ठिय' इति पदं दृश्यते, सम्भाव्यते अत्रापि प्राचीनलिप्यां विद्यमानं 'चिट्ठिय' इति पदं अर्वाचीनलिप्यां 'विहिय' मिति रूपे प्रावर्तितमभूत् ।

२. कुसला बिंबोट्ठी (क) ।

३. × (क, ख, ग, वृ); क्वचिदिदमन्यद् दृश्यते—सुंदरथण - जघण-वयण - कर-चरण-नयण-लावण्णविलासकलिया (वृ) ।

४. दशाश्रुतस्कंधस्य दशम्या दशाया द्वितीय सूत्रस्य व्याख्यायां वृत्तिकृता भिन्नपद्धतिकः पाठः समुद्धृतः—तस्य देवी समस्तान्तःपुर-प्रधाना भार्या सकलगुणसमन्विता चेल्लणा नाम्नी तस्या वर्णको यथा औपपातिकनाम्नि ग्रंथेऽभिहितस्तथाभिधातव्यः, स चायं—'सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्णपंचेंदिय-सरीरा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माण-पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरगा' इत्यादि वर्णको वाच्यः जावत्ति यावत्करणात् 'चेल्लणाए सद्धि अणुरत्ते अविरत्ते इट्ठे सद्दफरिसे रसरूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणु-ब्भवमाणे विहरइ' इति पदकदम्बकपरिग्रहः विस्तरव्याख्या तूपपातिकानुसारेण वाच्या नेह विस्तरभिया प्रतन्यते । किन्तु चेल्लणायाः वर्णने नैष पाठः सङ्गच्छते । 'सेणिएणं सद्धि अणुरत्ता अविरत्ता' इत्यादिपाठपद्धतिः समी-चीना भवेत् ।

५. × (वृ) ।

६. पच्चणुब्भवमाणी (क, ग) ।

७. कुणियस्स (क, ख) ।

८. वेदणा (क) ।

९. भंभसारपुत्ते (क); भिंभिसारपुत्ते (वृ) ।

१०. × (क, ख, ग) ।

११. कोडंबिय (क, ख, ग) ।

पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे[1] जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे बोहए सव्वण्णू सव्वदरिसी सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे—भुयमोयग-भिंग -नेल-कज्जल- पहट्ठभमरगण-णिद्ध-निकुरुंब- निचिय-कुंचिय- पयाहिणावत्त-मुद्धसिरए दालिमपुप्फप्पगास-तवणिज्जसरिस-निम्मल-सुणिद्ध[2]-केसंत-केसभूमी घण-निचिय-सुबद्ध-लक्खणुन्नय-कूडागारनिभ-पिंडियग्गसिरए छत्तागारुत्तिमंगदेसे णिव्वण-सम-लट्ठ-मट्ठ-चंदद्धसम-णिडाले उडुवइपडिपुण्ण-सोमवयणे अल्लीणपमाणजुत्तसवणे सुस्सवणे[3] पीण-मंसल-कवोलदेसभाए 'आणामियचावरुइल-किण्हब्भराइ तणु-कसिण-णिद्धभमुहे'[4] अवदालिय-पुंडरीयणयणे कोयासिय-धवल-पत्तलच्छे गरुलायतउज्जु-तुंग-णासे ओयविय-सिल-प्पवाल-बिंबफल-सण्णिभाहरोट्ठे पंडुरससिसयल-विमलणिम्मलसंख-गोक्खीर-फेण-कुंद-दगरय-मुणालिया-धवलदंतसेढी अखंडदंते अप्फुडियदंते अविरलदंते सुणिद्धदंते सुजायदंते एगदंत-सेढी विव अणेगदंते हुयवहणिद्धंत-धोय-तत्त- तवणिज्ज-रत्ततलतालुजीहे अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्तमंसू मंसलसंठिय-पसत्थ-सद्दूल-विउलहणुए चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबुवर- सरिसगीवे

---

१. वियट्टछउमे अरहा जिणे केवली सत्तहत्थुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनाराय-संघयणे अणुलोमवाउवेगे कंकग्गहणी कवोयपरिणामे सउणिपोसपिट्ठंतरोरुपरिणए पउमुप्पल-गंधसरिसनिस्साससुरभिवयणे छवि निरायंक-उत्तमपसत्थअइसेयनिरुवमपले (पाठान्तरेण—तले) जल्लमल्लकलंकसेयरयदोसवज्जियसरीर-निरुवलेवे छायाउज्जोइयंगमंगे घणनिचियसुबद्ध-लक्खणुण्णयकूडागारनिभपिंडियग्गसिरए सामलि-बोंडघणनिचियच्छोडियमिउविसयपसत्थसुहुमल-क्खणसुगंधसुन्दरे....(वृ)। वृत्तिकृता 'संपाविउ-कामे' इति पाठस्य व्याख्यानन्तरं लिखितमस्ति—'जिणे जाणए' इत्यादि विशेषणानि क्वचिन्न दृश्यन्ते, दृश्यन्ते पुनरिमानि—'अरहं' त्ति (वृत्ति पत्र २९) अत्र वृत्तिकृता न स्पष्टीकृतं वाचनान्तरे कियन्ति विशेषणानि दृश्यन्ते। 'भुयमोयग' इति पाठस्य व्याख्यावसरे वृत्तिकृता लिखितम्—अधिकृतवाचनायां भुजमोचकशब्दादारभ्यैवेद-मधीयते ('दारभ्यचेद'—मुद्रितवृत्ति) न सामलीत्यादि। किन्तु एतेन 'अरहा' इत्यतः प्रारभ्य 'सामलि°' वाक्यांशपर्यन्तं पाठो वाचनान्तरेस्ति—इति न स्पष्टं भवति। तथापि अधिकृतवाचना भुजमोचकशब्दादेव 'प्रतीयते' अन्यथा शरीरवर्णकविशेषणानां द्विरुक्तता स्यात्। प्रतिपाठावलोकनेनापि एतन्मतं समर्थितं भवति।

वियट्टछउमे अरहा जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे बोहए सव्वण्णू सव्वदरिसी सत्तहत्थुस्सेहे समचउरंस-संठाणसंठिए वज्जरिसहसंघयणे सरीरे निरुवलेवे छायाउज्जोइयंगमंगे जल्लमल्लकलंकसेयरहिय-सरीरे सिवमयल....(क)।

वियट्टछउमे अरहा जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे बोहए सव्वण्णू सव्वदरिसी सत्तहत्थुस्सेहे समचउरंस-संठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे जल्ल-मल्लकलंकसेयरहियसरीरे सिवमयल····(ख)।

२. सिणिद्ध (क)।

३. × (क, ख)।

४. वाचनान्तरे तु दृश्यते—'आणामियचावरुइल-किण्हब्भराइसंठियसंगयआययसुजायभमुए' (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूल-उसभ-नागवरपडिपुण्णविउलक्खंधे 'जुगसन्निभ-पीण-रइय-पीवर-पउट्ठसंठिय'[1]-सुसिलिट्ठ[2]-विसिट्ठ-घण-थिर-सुबद्ध-संधि-पुरवर-फलिह-वट्टियभुए[3] भुयगीसर-विउलभोग-आयाण-पलिहउच्छूढ[4]-दीहबाहू[5] रत्ततलोवइय-मउय-मंसल-सुजाय-लक्खणपसत्थ-अच्छिद्दजालपाणी पीवरकोमलवरंगुली[6] आयंब-तंब-तलिण-सुइ-रुइल-णिद्धणखे चंदपाणिलेहे सूरपाणिलेहे संखपाणिलेहे चक्कपाणिलेहे दिसासोत्थियपाणिलेहे 'चंद-सूर-संख-चक्क-दिसासोत्थियपाणिलेहे'[7] 'कणग-सिलायलुज्जल-पसत्थ-समतल-उवचिय-विच्छिण्ण-पिहुलवच्छे सिरिवच्छंकियवच्छे'[8] अकरंडुय-कणग-रुयय-निम्मल-सुजाय-निरुवहयदेहधारी[9] सण्णयपासे संगयपासे सुंदरपासे सुजायपासे मियमाइय-पीण-रइय-पासे उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-रमणिज्जरोमराई झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी 'झसोयरे सुइकरणे'[10] गंगावत्तग-पयाहिणावत्त-तरंगभंगुर-रविकिरणतरुण-बोहिय-अकोसायंत-पउम-गंभीर-वियडणाभे[11] साहय-सोणंद-मुसल-दप्पण-णिकरियवरकणगच्छरुसरिस-वरवइर-वलियमज्झे पमुइयवर-तुरग-सीहवर[12]-वट्टियकडी 'वरतुरग-सुजाय-सुगुज्झदेसे'[13] आइण्ण-हउव्व-णिरुवलेवे वरवारण-तुल्ल-विक्कम-विलसियगई गयससण-सुजाय-सन्निभोरू सामुग्ग[14]-णिमग्ग-गूढजाणू एणी-कुरुविंद[15]-वत्त-वट्टाणुपुव्वजंघे संठिय-सुसिलिट्ठ[16]-गूढगुप्फे सुप्पइट्ठिय-कुम्मचारुचलणे अणुपुव्वसुसंहयंगुलीए[17] उण्णय-तणु-तंब-णिद्धणक्खे रत्तुप्पलपत्त-मउय-सुकुमाल-कोमलतले अट्ठसहस्सवरपुरिसलक्खणधरे[18] आगासगएणं चक्केणं, आगासगएणं

---

१. सुसंठिय (ख, ग)।

२. सुसलिट्ठ (क); सलिट्ठ (वृ०)।

३. वट्टियबाहू (वृ); वाचनान्तरे—'पुरवरफलिह-वट्टियभूए' इत्येतावदेव भुजविशेषणं दृश्यते। (वृ०)।

४. पलिउच्छूढ (क); फलिहउच्छूढ (ग, वृपा)।

५. वाचनान्तरे—'युगसन्निभपीनरतिदपीवरपउट्ठ-संठियसुसिलिट्ठविसिट्ठघणथिरसुबद्धसंधि' (वृ)।

६. क्वचित् तु दृश्यते—'पीवरवट्टियसुजायकोमल-वरंगुली' (वृ)

७. वाचनान्तरेऽधीयते—'रविससिसंखवरचक्कसो-त्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहे 'अणेगवरलक्खणु-त्तिमपसत्थसुइरइयपाणिलेहे' (वृ)।

८. वाचनान्तरे तु वक्षोविशेषणान्येवं दृश्यन्ते—'उवचिय - पुरवरकवाडविच्छिन्नपिहुलवच्छे, 'कणयसिलायलुज्जलपसत्थसमतलसिरिवच्छरइ-यवच्छे' (वृ)।

९. 'अट्ठसहस्सपडिपुण्णवरपुरिसलक्खणधरे' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ); 'क, ख' आदर्शयोरपि एष पाठो दृश्यते।

१०. झसोयरे सुइकरणे पउमवियडणाभे (क); झसोदरपउमवियडणाभे (वृपा)।

११. विउडणाभे (क, ख) वियडणाहे (वृ)।

१२. सीहअइरेग (वृपा)।

१३. वाचनान्तरे तु 'पसत्थवरतुरगगुज्झदेसे' (वृ)।

१४. समुग्ग (ग)।

१५. कुरुविंद (क, ख)।

१६. सुसलिट्ठविसिट्ठ (क); सुसिलिट्ठविसिट्ठ (ख)।

१७. अणुपुव्वसुसाहयपीवरंगुलीए (वृ)।

१८. वाचनान्तरेधीयते— नगनगरमगरसागरचक्कं-कवरंकमंगलंकियचलणे विसिट्ठरूवे हुयवहनिद्धूम-जलियतडितडियतरुणरविकिरणसरिसतेए अणा-सवे अममे अकिंचणे छिन्नसोए निरुवलेवे ववगयपेमरागदोसमोहे निग्गंथस्स पवयणस्स देसए सत्थनायगे पइट्ठावए समणगपई समण-गविंदपरिवड्ढिए चउत्तीसबुद्धवयणाइसेसपत्ते पणतीससच्चवयणाइसेसे (वृ); 'क' आदर्शे पि एष पाठो लभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छत्तेणं, आगासियाहिं चामराहिं,[1] आगासफालियामएणं[2] सपायवीढेणं सीहासणेणं,धम्मज्झएणं पुरओ पकड्ढिज्जमाणेणं, चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं, छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे चंपाए नयरीए बहिया उवणगरग्गामं उवागए चंपं नगरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे ।।

पवित्ति-वाउयस्स निवेदण-पदं

२०. तए णं से पवित्ति[3]-वाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं[4] वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकिय-सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव कूणिए राया भिंभसार-पुत्ते[5] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं[6] कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं कंखंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति[7], जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पत्थंति[8], जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं अभिलसंति, जस्स णं देवाणुप्पिया णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ-तुट्ठ[9]-°चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया भवंति, से णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे चंपाए णयरीए उवणगरग्गामं उवागए चंपं णगरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे । 'तं एयं णं'[10] देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमि, पियं भे भवउ ।।

सविहि-णमोत्थु-पदं

२१. तए णं से कूणिए राया भिंभसारपुत्ते तस्स पवित्ति-वाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ[11]-°चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-°हियए[12] वियसिय-वरकमल-णयण-वयणे पयलिय-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइयवच्छे[13] पालंब-पलंबमाण-घोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं नरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता[14] पाउयाओ ओमुयइ,

---

१. सेयवरचामराहिं (ख) ।
२. आगासफलियामएणं (क, ग); आगासगएणं फलियामएणं (ख) ।
३. पउत्ति (क, वृ) ।
४. मंगल्लाइं (ग, वृ) ।
५. भंभसारपुत्ते (ग) ।
६. अंजुलिं (क) ।
७. पेहेंति (ख) ।
८. पीच्छंति (क); पिच्छंति (ख) ।
९. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
१०. एतेणं (क); एएणं (ख) ।
११. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
१२. 'धाराहयनीवसुरहिकुसुम व चंचुमालइयऊसवियरोमकूवे' इदं च विशेषणं क्वचिदेव दृश्यते (वृ) ।
१३. विराइयवच्छे (ख) ।
१४. क्वचिदिदं पादुकाविशेषणं दृश्यते—वेरुलिय-वरिट्ठअंजणनिउणोवियमिसिमिसिंतमणिरयण-मंडियाओ (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओमुइत्ता[1] एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए अंजलि-मउलियहत्थे[2] तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ[3], निवेसेत्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता करयल[4]°परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं°कट्टु एवं वयासी—णमोत्थु णं अरहंताणं[5] भगवंताणं आइगराणं तित्थगराणं सहसंबुद्धाणं[6] पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं[7] अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं वियट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं मुत्ताणं मोयगाणं बुद्धाणं बोहयाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं[8]। णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थगरस्स[9] °सहसंबुद्धस्स पुरिसोत्तमस्स पुरिससीहस्स पुरिसवरपुंडरीयस्स पुरिसवरगंध-हत्थिस्स अभयदयस्स चक्खुदयस्स मग्गदयस्स सरणदयस्स जीवदयस्स दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिस्स अप्पडिहयवरनाणदंसणधरस्स वियट्टछउमस्स जिणस्स जाणयस्स तिण्णस्स तारयस्स मुत्तस्स मोयगस्स बुद्धस्स बोहयस्स सव्वण्णुस्स सव्वदरिसिस्स सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं° संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोपदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए[10], पासइ[11] मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवर-गए पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता तस्स पवित्ति-वाउयस्स अट्ठुत्तरं सयसहस्सं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी—जया णं देवाणु-प्पिया! समणे भगवं महावीरे इहमागच्छेज्जा इह समोसरिज्जा इहेव चंपाए णयरीए बहिया पुण्णभद्दे चेइए[12] अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरेज्जा तया णं मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि त्ति कट्टु विसज्जिए[13]॥

भगवओ उवागमण-पदं

२२. तए णं समणे भगवं महावीरे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-

---

१. तथेदमपि 'अवहट्टु पंच रायककुहाइं, तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणं' (वृ); 'क' आदर्शेपि एष पाठो लभ्यते।

२. मउलियग्गहत्थे (ख)।

३. णिनेमि (क); णमेइ (ख); णिमेइ (ग)।

४. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।

५. अरिहंताणं (ख)।

६. सयंसंबुद्धाणं (क, ख, ग)।

७. °गंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोग-हियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं (क, ख)।

८. संपत्ताणं नमोजिणाणं (क, ख)।

९. सं० पा०—तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स

१०. इहमागए (ख, ग)।

११. पासउ (क, ख, ग)।

१२. चेइए अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे (क)।

१३. एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ त्ति वाचनान्तरे वाक्यम् (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे[1] पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय सुयमुह-गुंजद्ध-रागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलंते[2] जेणेव चंपा णयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता[3] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

समण-वण्णग-पदं

२३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवाओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो—अप्पेगइया उग्गपव्वइया भोगपव्वइया राइण्ण-णाय-कोरव्व-खत्तियपव्वइया भडा जोहा सेणावई पसत्थारो सेट्ठी इब्भा अण्णे य बहवे एवमाइणो उत्तमजाइ-कुल-रूव-विणय-विण्णाण-वण्ण-लावण्ण-विक्कम-पहाण-सोभग्ग-कंतिजुत्ता 'बहुधण- धण्ण- णिचय - परियाल[4]-फिडिया'[5] णरवइगुणाइरेगा इच्छियभोगा सुहसंपललिया किंपागफलोवमं च मुणियविसय-सोक्खं, जलबुब्बुयसमाणं कुसग्ग-जलबिंदुचंचलं जीवियं य णाऊण, अद्धुवमिणं रयमिव पडग्गलग्गं संविधुणित्ताणं, चइत्ता हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं चिच्चा धणं एवं—धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं रज्जं रट्ठं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयणमाइयं संत-सार-सावतेज्जं, विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दाणं[6] च दाइयाणं परिभायइत्ता, मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया—अप्पेगइया अद्धमासपरियाया अप्पेगइया मासपरियाया अप्पेगइया दुमासपरियाया अप्पेगइया तिमास-परियाया जाव अप्पेगइया एक्कारसमासपरियाया अप्पेगइया वासपरियाया अप्पेगइया दुवासपरियाया अप्पेगइया तिवासपरियाया अप्पेगइया अणेगवासपरियाया—संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

निग्गंथ-वण्णग-पदं

२४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे निग्गंथा भगवंतो—अप्पेगइया आभिणिबोहियणाणी[7] °अप्पेगइया सुयणाणी अप्पेगइया ओहिणाणी अप्पेगइया मणपज्जवणाणी अप्पेगइया° केवलणाणी अप्पेगइया मणबलिया अप्पेगइया वयबलिया अप्पेगइया कायबलिया[8] अप्पेगइया मणेणं सावाणुग्गहसमत्था अप्पेगइया वएणं सावाणुग्गहसमत्था अप्पेगइया काएणं सावाणुग्गहसमत्था अप्पेगइया

१. अहापंडरे (क); अहापंडुरे (ख) ।

२. जलंते असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्ट-गंसि परत्थाभिमुहे पलियंकनिसन्ने अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे (क); 'संपलियंक-निसन्ने' इदं च वाचनान्तरपदम् (वृ) ।

३. ओगिण्हित्ता आगासगएणं चक्केणं जाव सुहं-सुहेणं विहरमाणे (क) ।

४. परिवार (ग) ।

५. बहुधणधण्णणिचय - परिवारठिइगिहवासा (वृपा) ।

६. आचारचूलायां (१५।१३) 'दायं' इति पाठः स्वीकृतोस्ति प्रस्तुतप्रकरणे एष एव पाठः समीचीनः प्रतीयते, किन्तु प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु 'दायं' इति पाठः क्वापि नोपलब्धः, तेन 'दाणं' इति पाठः स्वीकृतः ।

७. सं० पा०—आभिणिबोहियणाणी जाव केवली-णाणी ।

८. 'नाणबलिया दंसणबलिया चारित्तबलिया' वाचनान्तराधीतं चेदं विशेषणत्रयम् (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खेलोसहिपत्ता 'अप्पेगइया जल्लोसहिपत्ता अप्पेगइया विप्पोसहिपत्ता अप्पेगइया आमोसहिपत्ता अप्पेगइया सव्वोसहिपत्ता'[1] अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी अप्पेगइया बीयबुद्धी अप्पेगइया पडबुद्धी अप्पेगइया पयाणुसारी[2] अप्पेगइया संभिण्णसोया अप्पेगइया खीरासवा अप्पेगइया महुयासवा अप्पेगइया सप्पियासवा अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया[3] अप्पेगइया उज्जुमई अप्पेगइया विउलमई अप्पेगइया विउव्वणिड्ढिपत्ता अप्पेगइया चारणा अप्पेगइया विज्जाहरा अप्पेगइया आगासाइवाई[4] अप्पेगइया कणगावलिं तवोकम्मं पडिवण्णा[5] अप्पेगइया एगावलिं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया महालयं सीहणिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया भद्दपडिमं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया महाभद्दपडिमं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया सव्वओभद्दपडिमं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया आयंबिलवद्धमाणं[6] तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया मासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया दोमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया तेमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा जाव अप्पेगइया सत्तमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया पढमसत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया बीयसत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया तच्चसत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया राइंदियं[7] भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया एगराइयं[8] भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया अट्ठअट्ठमियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया णवणवमियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया दसदसमियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा[9] अप्पेगइया खुड्डियं मोयपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया महल्लियं

---

१. एवं जल्लोसहिपत्ता विप्पोसहिपत्ता आमोसहिपत्ता सव्वोसहिपत्ता (क, ग)।

२. पयाणुसारा (क, ख)।

३. °महाणसीया (वृ)।

४. आगासाबासी (क, ख)।

५. पडिवण्णगा (वृ)।

६. °वद्धमाणकं (क, ख)।

७,८. अहोराइंदियं (क, ख, ग)। एक्कराइंदियं (क, ख, ग); अर्थदृष्ट्या उभावपि पाठौ न संगच्छेते। प्रथमे पाठे 'अहो' 'दियं' द्वावपि शब्दौ दिवसवाचिनौ स्तः। द्वितीये पाठे 'दियं' शब्दोधिकोस्ति। तेनास्माभिर्वृत्तिगतः पाठः स्वीकृतः। एकादश्याः प्रतिमायाः कृते 'राइंदियं' तथा द्वादश्याः प्रतिमायाः कृते 'एगराइयं' पाठो लभ्यते। समवायाङ्गे (१२।१) उक्तप्रतिमयोः कृते 'अहोराइया' तथा 'एगराइया' पाठः प्राप्यते। दशाश्रुतस्कन्ध (७।३१,३२) वृत्तौ एकादश्याः प्रतिमाया व्याख्या इत्थमस्ति—'एकादशी अहोरात्रप्रमाणा—अहोरात्रिकी'। द्वादश्या व्याख्या तत्रैवेत्थमस्ति—'एकरात्रिदिवा—एकरात्रिप्रमाणा। अत्र रात्रिदिवा शब्दादपि रात्रिरेव ग्राह्या, अन्यथा एकरात्रिकी इत्यस्य विरोधात्।' अत्र वृत्तिकृता द्वितीयः पाठः समीचीनो नोपलब्ध इति प्रतिभाति। इत्थं प्रतीयते क्वचिद् 'अहो' शब्द आसीत् क्वचिच्च 'दिवा'। प्रतिलिपिषु जायमानासु द्वयोरेकत्रयोगो जातः। तथैव 'राइयं' इत्यत्रापि पूर्वप्रतिमायाः 'राइंदियं' पाठानुसृतिर्जाता।

९. क्वचिदिहस्थाने—भद्रा सुभद्रा महाभद्रा सर्वतोभद्रा भद्रोत्तराश्च भिक्षुप्रतिमाः पठ्यन्ते, तदनुसारी पाठ इत्थं जायते—'भद्दपडिमं पडिवण्णा सुभद्दपडिमं पडिवण्णा महाभद्दपडिमं पडिवण्णा सव्वओभद्दपडिमं पडिवण्णा भद्दुत्तरपडिमं पडिवण्णा।' (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोयपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया जवमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया वइरमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा[1]—संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

थेर-वण्णग-पदं

२५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे थेरा भगवंतो—जाइसंपण्णा कुलसंपण्णा बलसंपण्णा रूवसंपण्णा विणयसंपण्णा णाणसंपण्णा दंसणसंपण्णा चरित्तसंपण्णा लज्जासंपण्णा लाघवसंपण्णा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी, जियकोहा[2] जियमाणा जियमाया जियलोभा जिइंदिया जियणिद्दा जियपरीसहा जीवियास-मरणभय-विप्पमुक्का, वयप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा णिग्गहप्पहाणा निच्छयप्पहाणा अज्जवप्पहाणा मद्दवप्पहाणा लाघवप्पहाणा खंतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जप्पहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा, चारुवण्णा लज्जा तवस्सी जिइंदिया सोही अणियाणा अप्पोसुया अबहिल्लेसा अप्पडिलेसा सुसामण्णरया दंता—इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओकाउं विहरंति[3] ।।

२६. तेसि णं भगवंताणं 'आयावाया वि'[4] विदिता भवंति, 'परवाया वि'[5] विदिता भवंति, आयावायं जमइत्ता नलवणमिव[6] मत्तमातंगा अच्छिद्दपसिणवागरणा रयणकरंडगस-माणा कुत्तियावणभूया परवाइपमद्दणा[7,8] दुवालसंगिणो समत्तगणिपिडगधरा सव्वक्खरसण्णिवाइणो सव्वभासाणुगामिणो अजिणा जिणसंकासा जिणा[9] इव अवितहं वागरमाणा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

अणगार-वण्णग-पदं

२७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे अणगारा भगवंतो इरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणा-समिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणगुत्ता वयगुत्ता काय-

---

१. वाचनान्तराधीतमथ पदचतुष्कम्—'विवेगपडिमं पडिवण्णा विउसग्गपडिमं पडिवण्णा उवहाण-पडिमं पडिवण्णा पडिसंलीणपडिमं पडिवण्णा' (वृ) ।

२. जियकोहे (क) अग्रे सर्वत्र 'एकारः' ।

३. क्वचिदेवं च पठ्यते—'बहूणं आयरियाणं बहूणं उवज्झायाणं बहूणं गिहत्थाणं पव्वइयाणं च दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा' (वृ) ।

४. आयावाइणो (वृ) ।

५. परवादा (ग); परवाइणो (वृपा) ।

६. नलवणा इव (वृपा) ।

७. परवाइयपमद्दणा (वृ) ।

८. 'परवाईहिं अणोक्कंता इत्यादि चोद्दसपुव्वी' इत्यन्तं वाचनान्तरं परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं अणोद्धंसिज्जमाणा विहरंति 'अप्पेगइया आयारधरा......।' वृत्तिकृता 'अप्पेगइया....सुगमानि' इति लिखितम्, तदा-धारेण एषा पाठपद्धतिः सम्भाव्यते—'अप्पे-गइया आयारधरा एवं सूयगड-ठाण-समवाय-विवाहपण्णत्ति - नायाधम्मकहा - उवासगदसा-अंतगडदसा-अणुत्तरोववाइयदसा-पण्हावागरण-दसा-विवागसुयधरा एगारसंगधरा दुवालसंग-धरा नवपुव्वी दसपुव्वी चोद्दसपुव्वी (वृ) ।

९. जिणो (क, ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी अममा अकिंचणा[1] निरुवलेवा कंसपाईव मुक्कतोया, संखो[2] इव निरंगणा[3], जीवो विव अप्पडिहयगई, जच्चकणगं पिव जायरूवा, आदरिसफलगा इव पागडभावा, कुम्मो इव गुत्तिंदिया, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा, गगणमिव निरालंबणा, अणिलो इव निरालया, चंदो इव सोमलेसा, सूरो इव दित्ततेया[4], सागरो इव गंभीरा, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का, मंदरो इव अप्पकंपा, सारयसलिलं व सुद्धहियया, खग्गविसाणं[5] व एगजाया, भारुंडपक्खी[6] व अप्पमत्ता, कुंजरो इव सोंडीरा, वसभो इव जायत्थामा, सीहो इव दुद्धरिसा, वसुंधरा इव सव्वफासविसहा, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता[7] ।।

अपडिबंध-विहार-पदं

२८. नत्थि 'णं तेसिं'[8] भगवंताणं कत्थइ पडिबंधे[9] । [से य पडिबंधे चउव्विहे भवइ, तं जहा[10]—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । दव्वओ—सचित्ताचित्तमीसिएसु[11] दव्वेसु । खेत्तओ—गामे वा णयरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा । कालओ—समए वा आवलियाए वा[12] •आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा

---

१. वाचनान्तरे 'अकोहे' त्यादीन्येकादशपदानि दृश्यन्ते—'अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिणिव्वुया अणासवा अग्गंथा छिण्णसोया' (वृ); सूत्रकृताङ्गे-(२।२।६४) प्येष पाठो विद्यते ।

२. संख (क, ग) ।

३. निरंजणा (ग) ।

४. तेयंसि (ख, ग) ।

५. खग्गिविसाणं (क्वचित्) ।

६. भारंडपक्खी (ख, वृ) ।

७. वृत्तिकृता 'कंसपाईव मुक्कतोया' इत्यादिपदानां व्याख्या द्वितीयाचाराङ्गस्य भावनाध्ययनान्तर्गतसङ्ग्रहगाथे अनुसृत्य कृतास्ति, तथा वाचनान्तरेपि तथैव पाठो लब्धः—निरुवलेपतामेवोपमानैराह—वक्ष्यमाणपदानां च भावनाध्ययनाद्युक्ते इमे संग्रहगाथे —
कंसे संखे जीवे, गयणे वाए य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ।।१।।
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ।।२।।
उक्तगाथानुक्रमेण तानि पदानि व्याख्यास्यामः, वाचनान्तरे इत्थमेव दृष्टत्वादिति (वृ० पृ० ६७); वृत्तिकृता सर्वेषां विशेषणानामन्ते पुस्तकान्तरे विशेषणानि सर्वाण्येतानीदं चाधिकम् 'आदरिसफलगा इव पायडभावो'—इति गृहीतम्, प्रतिषु विशेषणमिदं 'जच्चकणगं' अतोनन्तरमस्ति । द्रष्टव्यं अंगसुत्ताणि भाग १ : परिशिष्ट २ आलोच्यपाठ तथा वाचनान्तर ।

८. तेसि णं (क, ख) ।

९. पडिबंधे भवइ (ग, वृ) ।

१०. वाचनान्तरे पुनः 'तं जहा' इत्यतः परंगमान्तं (सूत्र २८, २९ पर्यन्तं) यावदिदं पठ्यते—अंडए इ वा पोयए इ वा 'अंडजे इ वा बोंडजे इ वा' इत्यत्र पाठान्तरे उग्गहिए इ वा पग्गहिए वा जं णं जं णं दिसं इच्छंति तं णं तं णं दिसं विहरंति सुइभूया लघुभूया अणप्पगंथा (वृ); सूत्रकृताङ्गे (२।२।६६) प्येतादृशः पाठो विद्यते—अंडए इ वा पोयए इ वा उग्गहे इ वा पग्गहे इ वा जण्णं जण्णं दिसं इच्छंति तण्णं तण्णं दिसं अपडिबद्धा सुइभूया लहुभूया अप्पग्गंथा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

११. °मीसएसु (क, ख, ग) ।

१२. सं० पा०—आवलियाए वा जाव अयणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मासे वा° अयणे वा अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे । भावओ—कोहे वा माणे वा मायाए वा लोहे वा भए वा हासे वा[१] । एवं तेसिं ण भवइ[२]] ॥

२९. तेणं भगवंतो वासावासवज्जं अट्ठ गिम्ह-हेमंतियाणि मासाणि गामे एगराइया णयरे पंचराइया वासीचंदणसमाणकप्पा समलेट्ठुकंचणा समसुहदुक्खा इहलोगपरलोग-अप्पडिबद्धा संसारपारगामी कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरंति ॥

तवोवहाण-वण्णग-पदं

३०. तेसि णं भगवंताणं एएणं विहारेणं विहरमाणाणं इमे एयारूवे सब्भिंतर-बाहिरए तवोवहाणे होत्था[३], तं जहा—अब्भितरए वि[४] छव्विहे, बाहिरए वि छव्विहे ॥

३१. से किं तं बाहिरए[५] ? बाहिरए छव्विहे, तं जहा—अणसणे ओमोयरिया भिक्खायरिया रसपरिच्चाए कायकिलेसे पडिसंलीणया ॥

३२. से किं तं अणसणे ? अणसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्तरिए य आवकहिए य।

से[६] किं तं इत्तरिए ? इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—चउत्थभत्ते, छट्ठभत्ते, अट्ठमभत्ते, दसमभत्ते, बारसभत्ते, चउद्दसभत्ते, सोलसभत्ते, 'अद्धमासिए भत्ते'[७] मासिए भत्ते, दोमासिए भत्ते, तेमासिए भत्ते, चउमासिए भत्ते, पंचमासिए भत्ते, छम्मासिए भत्ते। से तं इत्तरिए।

से किं तं आवकहिए ? आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य ।

से किं तं पाओवगमणे[८] ? पाओवगमणे[९] दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—वाघाइमे य

---

१. दशाश्रुतस्कन्धस्य पर्युषणाकल्पे (७६) अन्यान्यपि पदानि दृश्यन्ते—पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरती वा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा ।

२. कोष्ठकवर्त्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।

३. वाचनान्तरे—'जायामायावित्ति' 'अदुत्तरं वा' (वृ); सूत्रकृताङ्गे (२।२।६६) प्येतादृशः पाठो विद्यते—'तेसि णं भगवंताणं इमा एयारूवा जायामायावित्ती होत्था'।

४. × (क) ।

५. बाहिरए तवे (ख, ग) ।

६. भगवत्यां (२५।५६०) प्रतिप्रश्नस्य सूत्रसंख्या स्वतंत्रा विद्यते। प्रस्तुतसूत्रे प्रतिविषयस्य एकैव सूत्रसंख्यास्ति । अयं भेदः यद्यपि समालोच्योस्ति, तथापि नात्र परिवर्तनं कर्तुं शक्यम् । प्रस्तुतसूत्रस्य अनेकानि सूत्राणि अनेकेषु आगमेषु साक्ष्यरूपेण उट्टङ्कितानि वर्तन्ते, तेन तत्र तत्र स्थले सूत्रसंख्या विपर्ययो न स्यात् इत्याशङ्कयैव एतत्परिवर्तनमशक्यमस्ति ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. पायवगमणे (क) ।

९. स्थानाङ्गे (२।४१५,४१६) भगवत्यां उत्तराध्ययने च भिन्ना पाठपरम्परा लभ्यते—पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य । नियमं अपडिकम्मे । भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य । नियमं सपडिकम्मे (भ० २५।५६२, ५६३); अहवा सपरिकम्मा अपरिकम्मा य आहिया। नीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि (उत्त० ३०।१३) भगवत्याराधनायाः भक्तप्रत्याख्यानस्य 'सविचारं अविचारं' इति भेदद्वयं कृतमस्ति—दुविहं तु भत्तपच्चक्खाणं सविचारमध अविचारं (२।६५) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्वाघाइमे य। णियमा अप्पडिकम्मे। से तं पाओवगमणे।

से किंतं भत्तपच्चक्खाणे? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—वाघाइमे य निव्वाघाइमे य। णियमा सपडिकम्मे। से तं भत्तपच्चक्खाणे। [से तं आवकहिए[1]?]। से तं अणसणे॥

३३. से किं तं ओमोदरियाओ? ओमोदरियाओ दुविहा पण्णत्ताओ, तं जहा—दव्वोमोदरिया य भावोमोदरिया य।

से किं तं दव्वोमोदरिया? दव्वोमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवगरणदव्वोमोदरिया य भत्तपाणदव्वोमोदरिया य।

से किं तं उवगरणदव्वोमोदरिया? उवगरणदव्वोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगे वत्थे, एगे पाए, चियत्तोवकरणसाइज्जणया। से तं उवगरणदव्वोमोदरिया।

से किं तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया? भत्तपाणदव्वोमोदरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठ कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते[2] कवले आहारमाहारेमाणे[3] अप्पाहारे, दुवालस कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोदरिए, सोलस कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागपत्तोमोदरिए, चउवीसं कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पत्तोमोदरिए, 'एक्कतीसं कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे किंचूणोमोदरिए'[4], वत्तीसं कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एगेण वि घासेणं[5] ऊणयं आहारमाहारेमाणे समणे णिग्गंथे णो पकामरसभोइ त्ति वत्तव्वं सिया। से तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया। से तं दव्वोमोदरिया।

से किं तं भावोमोदरिया? भावोमोदरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अप्पकोहे, अप्पमाणे, अप्पमाए, अप्पलोहे, अप्पसद्दे, अप्पझंझे[6]। से तं भावोमोदरिया। से तं ओमोदरिया॥

३४. से किं तं भिक्खायरिया? भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वाभिग्गहचरए खेत्ताभिग्गहचरए कालाभिग्गहचरए भावाभिग्गहचरए उक्खित्तचरए णिक्खित्तचरए उक्खित्तणिक्खित्तचरए णिक्खित्तउक्खित्तचरए वट्टिज्जमाणचरए साहरिज्जमाणचरए उवणीयचरए अवणीयचरए उवणीयअवणीयचरए अवणीयउवणीयचरए संसट्ठचरए असंसट्ठचरए तज्जायसंसट्ठचरए अण्णायचरए मोणचरए[7] दिट्ठलाभिए अदिट्ठलाभिए पुट्ठलाभिए अपुट्ठलाभिए भिक्खलाभिए अभिक्खलाभिए अण्णगिलायए ओवणिहिए परिमियपिंडवाइए[8] सुद्धेसणिए संखादत्तिए। से तं भिक्खायरिया॥

३५. से किं तं रसपरिच्चाए? रसपरिच्चाए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—निव्विइए[9],

---

१. एतन्निगमनं भगवत्यां (२५।५६३) उपलभ्यते। अत्रापि अपेक्षितमस्ति, परन्तु आदर्शेषु नोपलभ्यते।

२. कुक्कड° (क); कुक्कुडि° (क्वचित्)।

३. आहारेमाणे (ग)।

४. चिन्हाङ्कितः पाठः भगवत्यां (७।२४) नोपलभ्यते। तद्वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः। द्रष्टव्यं व्यवहारस्य (८।१७) पादटिप्पणम्।

५. गासेणं (क)।

६. अप्पझंझे अप्पतुमंतुमे (भ० २५।५३८)।

७. मोणचरए दिट्ठचरए अदिट्ठचरए (ख,ग)।

८. °पिंडलाभिए (ख, ग)।

९. निव्वीए (क, ख); निव्वीयए (वृ); निव्विगितिए (भ० २५।५७०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणीयरसपरिच्चाए, आयंबिलए[1], आयामसित्थभोई, अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे[2]। से तं रसपरिच्चाए ॥

३६. से किं तं कायकिलेसे ? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—ठाणट्ठिइए[3] उक्कुडुयासणिए पडिमट्ठाई वीरासणिए नेसज्जिए[4] आयावए अवाउडए अकंडुयए अणिट्ठुहए[5] सव्वगायपरिकम्म-विभूसविप्पमुक्के। से तं कायकिलेसे ॥

३७. से किं तं पडिसंलीणया ? पडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इंदियपडिसंलीणया कसायपडिसंलीणया जोगपडिसंलीयणया विवित्तसयणासणसेवणया।

से किं तं इंदियपडिसंलीणया ? इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियविसयप्पयारनिरोहो वा सोइंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, चक्खिदियविसयप्पयारनिरोहो वा चक्खिदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, घाणिंदियविसयप्पयारनिरोहो वा घाणिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, जिब्भिंदियवियप्पयारनिरोहो वा जिब्भिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, फासिंदियविसयप्पयारनिरोहो वा फासिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा। से तं इंदियपडिसंलीणया।

से किं तं कसायपडिसंलीणया ? कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—कोहस्सुदयनिरोहो[6] वा उदयपत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं, माणस्सुदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरणं, मायाउदयणिरोहो वा उदयपत्ताए वा मायाए विफलीकरणं, लोहस्सुदयणिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोहस्स विफलीकरणं। से तं कसायपडिसंलीणया।

से किं तं जोगपडिसंलीणया ? जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगपडिसंलीणया वइजोगपडिसंलीणया कायजोगपडिसंलीणया।

से किं तं मणजोगपडिसंलीणया ? मणजोगपडिसंलीणया—अकुसलमणणिरोहो वा, कुसलमणउदीरणं वा[7]। से तं मणजोगपडिसंलीणया।

से किं तं वइजोगपडिसंलीणया ? वइजोगपडिसंलीणया—अकुसलवइणिरोहो वा, कुसलवइउदीरणं वा[8]। से तं वइजोगपडिसंलीणया।

से किं तं कायजोगपडिसंलीणया ? कायजोगपडिसंलीणया—जण्णं सुसमाहियपाणि-पाए[9] कुम्मो इव गुत्तिदिए सव्वगायपडिसंलीणे[10] चिट्ठइ। से तं कायजोगपडिसंलीणया।

---

१. आयंबिलिए (वृ)।
२. लुक्खाहारे (क); लूहाहारे तुच्छाहारे (वृपा)।
३. ठाणाइए (ग, वृपा); ठाणातिए (ठाणं ५।४२); ठाणादीए (भ० २५।५७१)।
४. 'दंडायए लगंडसाई' ति क्वचिद् दृश्यते (वृ)।
५. 'धुयकेसमंसुलोम' ति क्वचिद् दृश्यते (वृ)।
६. कोहोदय° (ख, ग)।
७. वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरणं (भ० २५।५७७)।
८. वा, वईए वा एगत्तीभावकरणं (भ० २५।५७७)।
९. सुसमाहिय-पसंत-साहरियपाणिपाए (भ० २५।५७८)।
१०. अल्लीण-पल्लीणे (भ० २५।५७८)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[से तं जोगपडिसंलीणया ?[1]] ।

से किं तं विवित्तसयणासणसेवणया ? विवित्तसयणासणसेवणया—जण्णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सहासु पवासु 'पणियगिहेसु पणियसालासु'[2] इत्थी-पसु-पंडगसंसत्तविरहियासु[3] वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । [से तं विवित्तसयणासणसेवणया ?] से तं पडिसंलीणया । से तं बाहिरए तवे ॥

३८. से किं तं अब्भितरए तवे ? अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—'पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं सज्झाओ झाणं विउस्सग्गो'[4] ॥

३९. से किं तं पायच्छित्ते ? पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे तवारिहे छेदारिहे मूलारिहे अणवट्ठप्पारिहे पारंचियारिहे । से तं पायच्छित्ते ॥

४०. से किं तं विणए ? विणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणविणए दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वइविणए कायविणए लोगोवयारविणए ।

से किं तं णाणविणए ? णाणविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणविणए सुयणाणविणए ओहिणाणविणए मणपज्जवणाणविणए केवलणाणविणए । से तं णाणवणिए ।

से किं तं दंसणविणए ? दंसणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुस्सूसणाविणए य अणच्चासायणाविणए य ।

से किं तं सुस्सूसणाविणए ? सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—अब्भुट्ठाणेइ[5] वा, आसणाभिग्गहेइ वा, आसणप्पयाणंति[6] वा, सक्कारेइ वा, सम्माणेइ वा, किइकम्मेइ वा, अंजलिप्पग्गहेइ वा, एंतस्स अभिगच्छणया[7], ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स पडिसंसाहणया । से तं सुस्सूसणाविणए ।

से किं तं अणच्चासायणाविणए ? अणच्चासायणाविणए पणयालीसविहे पण्णत्ते, तं जहा—अरहंताणं अणच्चासायणा अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासायणा आयरियाणं अणच्चासायणा एवं उवज्झायाणं थेराणं कुलस्स गणस्स संघस्स किरियाणं संभोगस्स आभिणिबोहियणाणस्स सुयणाणस्स ओहिणाणस्स मणपज्जवणाणस्स केवलणाणस्स. एएसिं चेव भत्ति-बहुमाणेणं, एएसिं चेव वण्णसंजलणया । से तं अणच्चासायणाविणए । से तं दंसणविणए ।

---

१. एतन्निगमनं भगवत्यां (२५।५७८) उपलभ्यते । अत्रापि अपेक्षितमस्ति परन्तु आदर्शेषु नोपलभ्यते ।

२. × (भ० २५।५७९) ।

३. पंडगविवज्जियासु (भ० २५।५७९) ।

४. पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ । झाणं विउसग्गो, (क,ख) ।

५. भगवत्यां (२५।५८५) पदानां क्रमभेदो लभ्यते—सक्कारे इ वा सम्माणे इ वा किइकम्मे इ वा अब्भुट्ठाणे इ वा अंजलिपग्गहे इ वा आसणाभिग्गहे इ वा आसणाणुप्पदाणे इ वा, एंतस्स पच्चुग्गच्छणया ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स पडिसंसाहणया ।

६. आसणप्पयाणाति (ख, ग) ।

७. अणुगच्छणया (क, ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से किं तं चरित्तविणए ? चरित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सामाइयचरित्तविणए छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए परिहारविसुद्धिचरित्तविणए[1] सुहुमसंपरायचरित्तविणए अहक्खायचरित्तविणए। से तं चरित्तविणए।

से किं तं मणविणए ? मणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थमणविणए अपसत्थमणविणए।

से[2] किं तं अपसत्थमणविणए ? अपसत्थमणविणए जे य मणे सावज्जे सकिरिए सकक्कसे कडुए णिट्ठुरे फरुसे अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे परितावणकरे उद्दवणकरे भूओवघाइए तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा। से तं अपसत्थमणविणए।

से किं तं पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए [3]•जे य मणे असावज्जे अकिरिए अकक्कसे अकडुए अणिट्ठुरे अफरुसे अणण्हयकरे अछेयकरे अभेयकरे अपरितावणकरे अणुद्दवणकरे अभूओवघाइए तहप्पगारं मणो पहारेज्जा। से तं पसत्थमणविणए। से तं मणविणए।

से किं तं वइविणए ? वइविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थवइविणए अपसत्थवइविणए।

से किं तं अपसत्थवइविणए ? अपसत्थवइविणए जा य वई सावज्जा सकिरिया सकक्कसा कडुया णिट्ठुरा फरुसा अण्हयकरी छेयकरी भेयकरी परितावणकरी उद्दवणकरी भूओवघाइया तहप्पगारं वइं णो पहारेज्जा। से तं अपसत्थवइविणए।

से किं तं पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए जा य वई असावज्जा अकिरिया अकक्कसा अकडुया अणिट्ठुरा अफरुसा अणण्हयकरी अछेयकरी अभेयकरी अपरितावणकरी अणुद्दवणकरी अभूओवघाइया तहप्पगारं वइं पहारेज्जा। से तं पसत्थवइविणए°। से तं वइविणए।

से किं तं कायविणए ? कायविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थकायविणए अपसत्थकायविणए।

से किं तं अपसत्थकायविणए ? अपसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणाउत्तं गमणे अणाउत्तं ठाणे अणाउत्तं निसीदणे अणाउत्तं तुयट्टणे अणाउत्तं उल्लंघणे अणाउत्तं पल्लंघणे अणाउत्तं सव्विंदियकायजोगजुंजणया[4]। से तं अपसत्थकायविणए।

से किं तं पसत्थकायविणए ? पसत्थकायविणए [5]•सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—आउत्तं गमणे आउत्तं ठाणे आउत्तं निसीदणे आउत्तं तुयट्टणे आउत्तं उल्लंघणे आउत्तं पल्लंघणे

१. परिहारविशुद्ध° (क)।

२. स्थानाङ्गे (७।१३१-१३४) भगवत्यां (२५।५८९-५९३) च मनोवाग्विनययोः प्रकारभेदो लभ्यते। उदाहरणरूपेण—से किं तं पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए असावज्जे अकिरिए निरुवक्केसे अणण्हवकरे अच्छविकरे अभूयाभिसंकणे। सेत्तं पसत्थमणविणए। अग्रे सूत्रत्रयेपि सप्तैव भेदा विद्यन्ते।

३. सं० पा०—तं चेव पसत्थं नेयव्वं, एवं चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो।

४. सव्विंदियजोगजुंजणया (ठाणं ७।१३६, भ० २५।५९६)।

५. सं० पा०—एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

आउत्तं सव्विंदियकायजोगजुंजणया°। से तं पसत्थकायविणए। से तं कायविणए।

से किं तं लोगोवयारविणए? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अब्भासवत्तियं परच्छंदाणुवत्तियं कज्जहेउं कयपडिकिरिया[1] अत्तगवेसणया देसकालण्णुया सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया। से तं लोगोवयारविणए। से तं विणए॥

४१. से किं तं वेयावच्चे? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते तं जहा—आयरियवेयावच्चे[2] उवज्झायवेयावच्चे सेहवेयावच्चे गिलाणवेयावच्चे तवस्सिवेयावच्चे थेरवेयावच्चे साहम्मियवेयावच्चे कुलवेयावच्चे गणवेयावच्चे संघवेयावच्चे। से तं वेयावच्चे॥

४२. से किं तं सज्झाए? सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—वायणा पडिपुच्छणा[3] परियट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा। से तं सज्झाए॥

४३. से किं तं झाणे? झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अट्टे झाणे रुद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे॥

अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अमणुण्ण-संपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओग-सतिसमण्णागए यावि भवइ, मणुण्ण-संपओग-संपउत्ते तस्स अविप्पओग-सतिसमण्णागए यावि भवइ, आयंक-संपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओग-सतिसमण्णागए यावि भवइ, परिजुसिय-कामभोग-संपओग-संपउत्ते तस्स अविप्पओग-सतिसमण्णागए यावि भवइ।

अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—कंदणया सोयणया तिप्पणया विलवणया[4]।

रुद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—हिंसाणुबंधी मोसाणुबंधी तेणाणुबंधी[5] सारक्खणाणुबंधी।

रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—ओसण्णदोसे बहुदोसे[6] अण्णाणदोसे आमरणंतदोसे।

धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—आणाविजए अवायविजए विवागविजए[7] संठाणविजए।

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—आणारुई णिसग्गरुई 'उवएसरुई सुत्तरुई'[8]।

---

१. कयपडिकइया (ठाणं ७।१३७, भ० २५।५९७)।

२. स्थानाङ्गे (१०।१७) भगवत्यां (२५।५९८) च पदानां क्रमभेदो विद्यते।

३. पुच्छणा (क)।

४. परिदेवणता (ठाणं ४।६२); परिदेवणया (भ० २५।६०२)।

५. तेयाणुबंधी (भ० २५।६०३)।

६. बहुलदोसे (भ० २५।६०४); भगवतीवृत्तौ (पत्र ९३६) 'बहुदोसे' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—'बहुदोसे' त्ति बहुष्वपि सर्वेष्वपि।

७. विवादविजए (ग)।

८. सुत्तरुई ओगाढरुई (ठाणं ४।६६); सुत्तरुयी ओगाढरुयी (भ० २५।६०६); स्थानाङ्गे भगवत्यां च 'उवएसरुई' पदस्य स्थाने 'ओगाढरुई' इति पदं लभ्यते। उत्तराध्ययने (२८।१६) स्थानाङ्गस्य दशमे (१०४) स्थाने 'उवएसरुई' इत्येव लभ्यते। भगवत्यां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—वायणा पुच्छणा परियट्टणा धम्मकहा।

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा एगत्ताणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा'[1]।

सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—पुहत्तवियक्के सवियारी एगत्त-वियक्के अवियारी 'सुहुमकिरिए अप्पडिवाई समुच्छिण्णकिरिए अणियट्टी'[2]।

सुक्कस्स[3] णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—'विवेगे विउसग्गे अव्वहे असम्मोहे'[4]।

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे।

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'अवायाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अणंतवत्तियाणुप्पेहा विपरिणामाणुप्पेहा'[5]। से तं झाणे॥

४४. से किं तं विउस्सग्गे? विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वविउस्सग्गे य भावविउस्सग्गे य।

से किं तं दव्वविउस्सग्गे? दव्वविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—'सरीर-विउस्सग्गे गणविउस्सग्गे'[6] उवहिविउस्सग्गे भत्तपाणविउस्सग्गे।

से किं तं भावविउस्सग्गे? भावविउस्सग्गे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—कसायविउस्सग्गे संसारविउस्सग्गे कम्मविउस्सग्गे।

अवगाढरुचेर्यो वैकल्पिकोर्थः कृतस्तेन अनयोर्द्वयोः पदयोरेकार्थत्वमवसीयते—अथवा 'ओगाढ' त्ति साधुप्रत्यासन्नीभूतस्तस्य साधूपदेशाद् रुचिरवगाढरुचिः।

१. एगाणुप्पेहा अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा (ठाणं ४।६८); एकत्ताणुप्पेहा अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा (भ० २५।६०८)।

२. अत्र द्वे परम्परे उपलभ्येते। प्रस्तुतसूत्रे उत्तराध्ययने (२९।७३) च सूक्ष्मक्रिय-अप्रतिपाति, समुच्छिन्नक्रिय-अनिवृत्ति इति पाठो लभ्यते। स्थानाङ्गे (४।६९) भगवत्यां (२५।६०९) च सूक्ष्मक्रिय-अनिवृत्ति, समुच्छिन्न-क्रिय-अप्रतिपाति इति पाठो दृश्यते। उत्तरवर्तिग्रन्थेषु प्रायः प्रस्तुतसूत्रपरम्परैव अनुसृता दृश्यते।

३. भगवत्यां (२५।६१०,६११) शुक्लध्यानस्य लक्षणानां आलम्बनानां च व्यत्ययो लभ्यते—सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे। सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—अव्वहे, असंमोहे, विवेगे, विउस्सग्गे। असौ व्यत्ययश्च चिन्तनीयोस्ति। स्थानाङ्गे (४।७०,७१) उत्तरवर्तिसाहित्ये च सर्वत्रापि प्रस्तुतसूत्रसम्मता परम्परा अनुस्यूतास्ति।

४. अव्वहे असम्मोहे विवेगे विउस्सग्गे (ठाणं ४।७०)।

५. अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अवायाणुप्पेहा (ठाणं ४।७२, भ० २५।६१२)।

६. गणविउसग्गे सरीरविउसग्गे (भ० २५।६१४)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से किं तं कसायविउस्सग्गे ? कसायविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—कोहकसायविउस्सग्गे माणकसायविउस्सग्गे मायाकसायविउस्सग्गे लोहकसायविउस्सग्गे। से तं कसायविउस्सग्गे।

से किं तं संसारविउस्सग्गे ? संसारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—णेरइयसंसारविउस्सग्गे तिरियसंसारविउस्सग्गे मणुयसंसारविउस्सग्गे देवसंसारविउस्सग्गे। से तं संसारविउस्सग्गे।

से किं तं कम्मविउस्सग्गे ? कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे दरिसणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे वेयणीयकम्मविउस्सग्गे मोहणीयकम्मविउस्सग्गे आउयकम्मविउस्सग्गे गोयकम्मविउस्सग्गे अंतरायकम्मविउस्सग्गे। से तं कम्मविउस्सग्गे। से तं भावविउस्सग्गे। [से तं अब्भितरए तवे ?] ॥

अणगार-वण्णग-पदं

४५. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अणगारा भगवंतो'[1]—अप्पेगइया आयारधरा[2] °अप्पेगइया सूयगडधरा अप्पेगइया ठाणधरा अप्पेगइया समवायधरा अप्पेगइया विवाहपण्णत्तिधरा अप्पेगइया नायाधम्मकहाधरा अप्पेगइया उवासगदसाधरा अप्पेगइया अंतगडदसाधरा अप्पेगइया अणुत्तरोववाइयदसाधरा अप्पेगइया पण्हावागरणदसाधरा अप्पेगइया° विवागसुयधरा,[3] अप्पेगइया वायंति अप्पेगइया पडिपुच्छंति अप्पेगइया परियट्टंति अप्पेगइया अणुप्पेहंति, अप्पेगइया अक्खेवणीओ विक्खेवणीओ संवेयणीओ णिव्वेयणीओ चउव्विहाओ[4] कहाओ कहंति, अप्पेगइया उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया—संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

४६. संसारभउव्विग्गा[5] जम्मण-जर-मरण-करण-गंभीर-दुक्ख-पक्खुभिय-पउर-सलिलं संजोग-विओग-वीचि-चिंता-पसंग-पसरिय-वह-बंध-महल्ल-विउल-कल्लोल-कलण-विलविय-लोभ-कलकलेंत-बोलबहुलं अवमाणण-फेण-तिव्वखिंसण-पुलंपुलप्पभूय[6]-रोगवेयण-परिभव-विणिवाय-फरुसधरिसणा-समावडिय-कढिणकम्मपत्थर-तरंग-रंगंत[7]-निच्चमच्चुभय-तोयपट्ठं कसाय-पायाल-संकुलं भवसयसहस्स-कलुसजल-संचयं पइभयं अपरिमियमहिच्छ-कलुसमइवाउ-वेग-उद्धम्ममाणदगरयरयंधकार[8]-वरफेण-पउर-आसापिवास-धवलं मोहमहावत्त-भोगभममाण-गुप्पमाणुच्छलंत[9]-पच्चोणिवयंतपाणिय-पमायचंडबहुदुट्ठसावय-समाहयुद्धायमाण-पब्भार-घोरकंदियमहारव-रवंत-भेरवरवं अण्णाणभमंतमच्छ-परिहत्थ-अणिहुतिंदियमहामगर-तुरिय-चरिय-खोखुब्भमाण-नच्चंत-चवल-चंचल-चलंत-घुम्मंत-जल-समूहं अरइ-भय

---

१. ते णं इत्यादि (क)।
२. सं० पा०—आयारधरा जाव विवागसुयधरा।
३. अतः परं वृत्तौ वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति—'तत्थ-तत्थ तहिं-तहिं देसे-देसे गच्छागच्छि गुम्मागुम्मि फुडाफुडिं'। 'ख,ग' आदर्शयोरपि एष पाठो लभ्यते।
४. बहुविहाओ (क)।
५. भवोव्विग्गा (क); भउव्विग्गाभीया (ख,ग)।
६. पलुपणप्पभूय (वृपा)।
७. तरंग (क)।
८. उद्धुव्वमाण° (ख,वृपा); उद्धव्वमाण° (ग)।
९. सुप्पमाणुच्छलंत (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसायसोग-मिच्छत्त-सेलसंकडं अणाइसंताण-कम्मबंधणकिलेसचिक्खल्ल[1]-सुदुत्तारं[2] अमर-णर-तिरिय-णिरयगइ[3]-गमण-कुडिलपरियत्त-विउल-वेलं चउरंतमहंतमणवयग्गं रुंदं[4] संसारसागरं भीमदरिसणिज्जं[5] तरंति धिइ-धणिय-निप्पकंपेण तुरियचवलं[6] संवर[7]-वेरग्ग-तुंग-कूवय-सुसंपउत्तेणं णाण-सिय-विमलमूसिएणं सम्मत्त-विसुद्ध-लद्ध-णिज्जामएणं धीरा संजमपोएण सीलकलिया पसत्थज्झाण-तववाय-पणोल्लिय-पहाविएणं उज्जम-ववसाय-गहिय-णिज्जरण-जयण-उवओग-णाण-दंसणविसुद्धवयभंड[8]-भरियसारा जिणवरवयणोव-दिट्ठमग्गेण अकुडिलेण सिद्धि-महापट्टणाभिमुहा समणवरसत्थवाहा सुसुइ-सुसंभास-सुपण्ह-सासा गामे-गामे एगरायं णगरे-णगरे पंचरायं दूइज्जंता जिइंदिया णिब्भया गयभया सचित्ताचित्तमीसएसु दव्वेसु विरागयं गया 'संजया विरता'[9] मुत्ता लहुया णिरवकंखा साहू णिहुया चरंति धम्मं ॥

भवणवासि-वण्णग-पदं

४७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे असुरकुमारा देवा अंतियं पाउब्भवित्था—काल-महाणीलसरिस-णीलगुलिय-गवल-अयसिकुसुमप्पगासा वियसिय-सयवत्तमिव पत्तल-निम्मल[10]-ईसीसियरत्ततंब-णयणा गरुलायत-उज्जु-तुंगणासा ओयविय[11]-सिल-प्पवाल-बिंबफलसण्णिभाहरोट्ठा पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोखीर-फेण-दगरय-मुणालिया-धवलदंतसेढी हुयवह-णिद्धंत-धोय-तत्त-तवणिज्ज-रत्ततलतालु-जीहा अंजण-घण-कसिण-रुयग-रमणिज्ज-णिद्धकेसा वामेगकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंध-पुप्फप्पगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता बिइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगय-तुडिय-पवरभूसण-निम्मल-मणि-रयण-मंडिय-भुया दसमुद्दा-मंडियग्गहत्था 'चूलामणि-चिंधगया'[12], सुरूवा महिड्ढिया महज्जुइया महब्बला[13] महायसा महासोक्खा महाणुभागा[14] हारविराइयवच्छा कडग-तुडिय-थंभियभुया अंगय-कुंडल-मट्ठ-'गंड-कण्णपीढधारी'[15] विचित्तहत्थाभरणा[16] विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणग-पवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी[17] पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं

---

१. °चिक्खिल (क); °चिक्खिल्ल (ख)।
२. सुदुत्तरं (क, ख, ग)।
३. णरय° (क)।
४. रुद्दं (ख), अशुद्धं प्रतिभाति।
५. भीमं दरिसणिज्जं (क)।
६. तुरियं चवलं (क); तुरियचंचलं (ख)।
७. संवेग (क)।
८. दंसणचरित्तविसुद्धवरभंड (वृपा)।
९. संचयाओविरया (वृपा)।
१०. निम्मला (क, ख)।
११. उवचिय (ख)।
१२. चूडामणिचिंधया (क, ख)।
१३. × (ग)।
१४. अतोग्रे वृत्तौ वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति—हारविराइयवच्छा····पलंबवणमालधरा। पूर्णः पाठो मूले स्वीकृतोस्ति।
१५. गंडतलकण्णपीढधारी (क); गंडगलकण्ण-पीढधारी (ख)।
१६. विचित्तवत्थाभरणा (क); विचित्तहत्थाभरणा विचित्तवत्थाभरणा (ख)।
१७. भासरबोंदी (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए[1] दिव्वाए जुईए[2] दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं आगम्मागम्म रत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो 'आयाहिण-पयाहिणं'[3] करेंति[4], करेत्ता वंदंति, णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता[5] 'णच्चासण्णे णाइदूरे'[6] सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति ।।

४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे असुरिंदवज्जिया भवणवासी देवा अंतियं पाउब्भवित्था—

णागपइणो सुवण्णा, विज्जू अग्गीया दीवा।
उदही दिसाकुमारा य, पवणथणिया य भवणवासी ।।१।।

णागफडा-गरुल-वइर-'पुण्णकलस-सीह'[7]-हयवर-'गयंक-मयरंकवर'[8]-मउड-वद्धमाण-णिज्जुत्त-विचित्त-चिंधगया सुरूवा महिड्ढिया जाव[9] पज्जुवासंति ।।

वाणमंतर-वण्णग-पदं

४९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स वहवे वाणमंतरा देवा अंतियं पाउब्भवित्था—पिसायभूया[10] य जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-भुयग-पइणो य महाकाया गंधव्वणिकायगणा[11] णिउणगंधव्वगीयरइणो अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवादिय-भूयवादिय[12]-कंदिय-महाकंदिया य कुहंड-पययदेवा चंचल-चवल-चित्त-कीलण-दवप्पिया 'गंभीर-हसिय-भणिय-पिय-गीय-णच्चणरई'[13] वणमालामेल-मउड-कुंडल-सच्छंदविउव्वियाहरण-चारुविभूसणधरा सव्वोउयसुरभि-कुसुम-सुरइयपलंब-सोभंत-कंत-वियसंत-चित्तवणमाल-रइय-वच्छा कामगमा कामरूवधारी णाणाविहवण्णराग-वरवत्थ-चित्तचिल्लय-णियंसणा विविह-देसीणेवच्छ-गहियवेसा पमुइय-कंदप्प-कलह-केली-कोलाहलप्पिया हासबोलबहुला[14] अणेग-मणि-रयण-विविह-णिज्जुत्त-चित्त[15]-चिंधगया सुरूवा महिड्ढया जाव[16] पज्जुवासंति ।।

जोइसिय-वण्णग-पदं

५०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स (बहवे ?) जोइसिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था—विहस्सती चंदसूरसुक्कसणिच्छरा राहू धूमकेतुबुहा य अंगारका

---

१. रिद्धीए (वृ) ।
२. जुत्तीए (क, ग) ।
३. आयाहिणं पयाहिणं (ख) ।
४. करेइ (क, ख) ।
५. वाचनान्तरे दृश्यन्ते—'साइं साइं नामगोयाइं सार्विति (वृ) ।
६. णच्चासण्णा णाइदूरा (क) ।
७. इह सूत्रं 'पुण्णकलससंकिण्णउप्फेससीहे' त्येवं क्वचिद्विशेषो दृश्यतो (वृ) ।
८. गयकमलायरमयंकवर (ख) ।
९. ओ० सू० ४७ ।
१०. पिसायाभूया (ग) ।
११. गंधव्वाणिकायगया (क, ख); गंधव्वपइगणा (वृपा) ।
१२. भूयवादी य (क) ।
१३. गहिरहसियगीयणच्चणरइ त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
१४. हासकेलिबहुला (वृपा) ।
१५. चित्राणि चिह्नानि (वृ) ।
१६. ओ० सू० ४७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य तत्ततवणिज्जकणगवण्णा जे य गहा जोइसंमि[1] चारं चरंति केऊ य गइरइया अट्ठावीस-तिविहा य णक्खत्तदेवगणा णाणासंठाणसंठियाओ य पंचवण्णाओ ताराओ ठियलेसा[2] चारिणो य अविस्सामममंडलगई पत्तेयं णामंक-पागडिय-चिंधमउडा महिड्ढिया जाव[3] पज्जुवासंति ।।

वेमाणिय-वण्णग-पदं

५१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स (बहवे ?) वेमाणिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था—सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सा-राणय-पाणयारण-अच्चुयवई[4] पहिट्ठा देवा जिणदंसणुस्सुयागमण[5]-जणियहासा पालग-

१. जोइसं (क, ख) ।

२. चित्तलेसा (ख), वियाल (ग) ।

३. ओ० सू० ४७ ।

४. वैमानिकवर्णकोपि व्यक्तो, नवर वाचनान्तरगतं किञ्चिदस्य व्याख्यायते, तदन्तरगतं किञ्चद-धिकृतवाचनान्तरगतं च—तत्र सामाणियतायत्तीससहिया सलोगपालअग्गमहिसिपरिसाणियअायर-क्खेहिं संपरिवुडा कोष्ठकवर्तिवृत्तेर्मूलपाठो नोपलभ्यते—(देवसहस्रानुयातमार्गैं सुरवरगणेश्वरः प्रयतैः) समणुगम्मंतसस्सिरीया (सर्वादरभूषिता सुरसमूहनायकाः सौम्यचारुरूपाः) देवसंघजय-सद्दकयालोया मिगमहिसवराहछगलदद्दुरहयगयवइभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिंधमउडा पालगपुप्फगसोमणससिरिवच्छनंदियावट्टकामगमपीतिगममणोगमविमलसव्वओभद्दनामधेज्जेहिं विमा-णेहिं तरुणदिवागरकरातिरेगप्पहेहिं मणिकणगरयणघडियजालुज्जलहेमजालपेरंतपरिगएहिं सपयरवर-मुत्तदामलंबंतभूसणेहिं पचलियघंटावलिमहुरसद्दवंसतंतीतलतालगीयवाइयरवेणं महुरेणं मणोहरेणं पूरयंता अंबरं दिसाओ य, सोभेमाणा तुरियं संपट्ठिया थिरजसा देविंदा हट्ठतुट्ठमणसा, सेसावि य कप्पवरविमाणाहिवा सविमाणविचित्तचिंधनामंकविगडपागडमउडाडोवसुभदंसणिज्जा समन्निति, लोयंतविमाणवासिणो यावि देवसंघा य पत्तेयविरायमाणविरइयमणिरयणकुंडलभिसंतनिम्मलनिय-गंकियविचित्तपागडियचिंधमउडा दायंता अप्पणो समुदयं, पेच्छंतावि य परस्स रिद्धीओ जिणिंदवं-दणनिमित्तभत्तीए चोइयमई (हर्षितमानसाश्च जीतकल्पमनुवर्तयमाना देवाः) जिणदंसणूसुयाग-मणजणियहासा विउलबलसमूहपिंडिया संभमेणं गगणतलविमलविउलगमणगइचवलचलियमण-पवणजइणसिग्घवेगा णाणाविहजाणवाहणगया ऊसियविमलधवलआयवत्ता विउव्वियजाणवाहण-विमाणदेहरयणप्पभाए उज्जोएंता नहं वितिमिरं करेंता, सव्विड्ढीए हुलियं (प्रयाताः) ।

गमान्तररमिदम्—पसिढिलवरमउडतिरीडधारी मउडदित्तसिरिया रत्ताभा पउमपम्हगोरा सेया ।

पुस्तकान्तरे देवीवर्णको दृश्यते, स चैवम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अच्छरगणसंघाया अंतियं पाउब्भवित्था । ताओ णं अच्छराओ धंतधोयकणगरुयग-सरिसप्पभाओ समइक्कंता य बालभावं अणइवरसोम्मचारुरूवा निरुवहयसरसजोव्वणकक्कसतरुण-वयभावमुवगयाओ निच्चामवट्ठियसहावा सव्वंगसुंदरीओ इच्छियनेवत्थरइयरमणिज्जगहियवेसा किं ते हारद्धहारपाउत्तरयणकुंडलवामुत्तगहेमजालमणिजालकणगजालसुत्तमउरितिरिय (तिय) कडगखड्डुगएगावलिकंठसुत्तमगहगधरच्छगेवेज्जसोणिसुत्तगतिलगफुल्लगसिद्धत्थियकण्णवालियससिसूर-

पुप्फग-सोमणस[1]-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-कामगम-पीइगम-मणोगम-विमल-सव्वओभद्द[2]-णाम-धेज्जेहिं विमाणेहिं ओइण्णा 'वंदणकामा जिणाणं'[3] मिग-महिस-वराह-छगल-दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभंक-विडिम-पागडिय-चिंधमउडा पसिढिल[4]-वरमउड-तिरीडधारी कुंडलुज्जोवियाणणा मउड-दित्त-सिरया रत्ताभा पउम-पम्हगोरा सेया सुभवण्णगंधफासा उत्तमवेउव्विणो विविहवत्थगंधमल्लधारी महिड्ढिया जाव[5] पज्जुवासंति ॥

परिसा-निग्गमण-पदं

५२. तए णं चंपाए णयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया 'जणसद्दे इ वा[6], जणवूहे इ वा[7] जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे जाव[8] संपाविउकामे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव[9] चंपाए णयरीए बहिया[10] पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-

---

उसभचक्कयतलभंगयतुडियहत्थमालयहरिसकेऊरवलयपालंबपलंबअंगुलिज्जगवलक्खदीणारमालियाचंदसूरमालियाकंचिमेहलकलावपयरगपरिहेरगपायजालघंटियाखिंखिणिरयणोरुजालखुड्डियवरनेउरचलणमालियाकणगणिगलजालगमगरमुहविरायमाणणेऊरपचलियसद्दालभूसणधारणीओ दसद्धवण्णरागरइयरत्तमणहरे (महार्घाणीनासानिःश्वासवायुवाह्यानि चक्षुर्हराणि वर्णस्पर्शयुक्तानि) हयलालापेलवाइरेगे धवले कणगखचियंतकम्मे आगासफालियसरिसप्पहे अंसुयणियत्थाओ आयरेणं तुसारगोखीरहाररदगरयपंडुरदुगुल्लसुकुमालसुकयरमणिज्जउत्तरिज्जाइं पाउयाओ वरचंदणचच्चियाओ वराभरणभूसियाओ सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरइयविचित्तवरमल्लधारिणीओ सुगंधिचुण्णंगरागवरवासपुप्फपूरगविराइया अहियसस्सिरीया उत्तमवरधूवधूविया सिरीसमाणवेसा दिव्वकुसुममल्लदामपब्भंजलिपुडाओ (उच्चत्वेन) चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमललाडाओ चंदाहियसोमदंसणाओ उक्काओ विव उज्जोयमाणाओ विज्जुघणमिरीइसूरदिप्पंततेयअहियतरसन्निगासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ संगयगयहसियभणियचेट्ठियविलाससललियसंलावनिउणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथणजघणवयणकरचरणनयणलावण्णरूवजोव्वण विलासकलियाओ सुरवधूओ सिरीसनवणीयमउयसुकुमालतुल्लफासाओ ववगयकलिकलुसाओ धोयनिद्धंतरयमलाओ सोमाओ कंताओ पियदंसणाओ सुरूवाओ जिणभत्तिदंसणाणुरागेणं हरिसियाओ ओवइयाओ यावि जिणसगासं दिव्वेणं सेसं तं चेव नवरं ठियाओ चेव (वृ) ।

५. जिणदंसणूसगागमण (ख, ग) ।

१. सोमणस्स (क, ख) ।

२. सव्वओ भद्दसरिस (क, ख) ।

३. वंदका जिणिदं (ग) ।

४. सिढिल (क, ख) ।

५. ओ० सू० ४७ ।

६. क्वचिद् 'बहुजणसद्दे इ वा' (वृ) ।

७. क्वचित्पठ्यते 'जाणवाए इ वा' 'जणुल्लावे इ वा' (वृ) ।

८. ओ० सू० १६ ।

९. इह (ख, ग, वृ) ।

१०. बाहिं (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स[1] धम्मियस्स सुवयणस्स सवण-याए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो।

एयं णे पेच्चभवे 'इहभवे य'[2] हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुपडोयारेणं—राइण्णा[3] खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई[4] लेच्छईपुत्ता अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय[5]-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितयो[6] अप्पेगइया वंदणवत्तियं अप्पेगइया पूयणवत्तियं अप्पेगइया सक्कारवत्तियं अप्पेगइया सम्माणवत्तियं अप्पेगइया दंसणवत्तियं अप्पेगइया कोऊहलवत्तियं[7] अप्पेगइया[8] अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निस्सं-कियाइं करिस्सामो[9] अप्पेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, अप्पेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जिण-भत्तिरागेणं अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पाय-च्छित्ता[10] सिरसा कंठे मालकडा आविद्धमणि-सुवण्णा कप्पिय-हारद्धहार-तिसर-पालंब-पलंब-माण-कडिसुत्त-सुकयसोहाभरणा पवरवत्थपरिहिया चंदणोलित्तगायसरीरा, अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया अप्पेगइया रहगया[11] अप्पेगइया सिवियागया[12] अप्पेगइया संद-माणियागया अप्पेगइया पायविहार-चारेणं[13] पुरिसवग्गुरा-परिक्खित्ता[14] महया उक्किट्ठ-सीहणाय-बोल- कलकलरवेणं 'पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव'[15] करेमाणा[16] चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवाग-च्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थगराइसेसे पासंति, पासित्ता जाणवाहणाइं ठवेंति,[17] ठवेत्ता जाणवाहणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव

---

१. आयरियस्स (क)।
२. × (ख, वृ); इहभवे य परभवे य (वृपा)।
३. क्वचित्पठ्यते 'इक्खागा नाया कोरव्वा' (वृ)।
४. लच्छइ (क, ख)।
५. मांडबिय (वृ)।
६. °प्पभिइओ (ख)।
७. कोऊल्ल° (ग)।
८. अप्पेगइया अट्ठविणिच्छयहेउं (क्वचित्)।
९. 'अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ)।
१०. 'उच्छोलणपधोय' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ)।
११. वाचनान्तराधीतमथपदपञ्चकम् — जाणगया जुग्गगया गिल्लिगया थिल्लिगया पवहणगया (वृ)।
१२. सीया° (वृ)।
१३. चारिणो (क, ख, ग)।
१४. वग्गावग्गि गुम्मागुम्मिंति क्वचिद् दृश्यते (वृ)।
१५. °भूयमिव (क, ख)।
१६. अतः परं वृत्तौ वाचनान्तरस्य निर्देशः—क्वचिदिदं पदचतुष्टयं दृश्यते—पायदद्दरेणं भूमिं कंपेमाणा अंबरतलं पिव फोडेमाणा एगदिसिं एगाभिमुहा। भगवत्या (९।१५७) मेतद् मूलपाठरूपेण उपलभ्यते।
१७. विट्ठब्भंति (वृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता[1] समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा[2] पज्जुवासंति ॥

पवित्ति-वाउयस्स निवेदण-पदं

५३. तए णं से पवित्ति-वाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ[3]-*चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण °हियए ण्हाए[4] *कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता 'चंपं णयरिं'[5] मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया *[6]उवट्ठाणसाला जेणेव कूणिए राया भिंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं कंखंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पत्थंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं अभिलसंति, जस्स णं देवाणुप्पिया णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया भवंति, से णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे चंपं णगरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसढे। तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमि, पियं भे भवउ ॥

सविहि-णमोत्थु-पदं

५४. तए णं से कूणिए राया भिंभसारपुत्ते तस्स पवित्ति-वाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए वियसिय-वरकमल-णयण-वयणे पयलिय-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइयवच्छे पालंब-पलंबमाण-घोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं नरिंदे सीहासणाओ

---

१. इतो वाचनान्तरगतं बहु लिख्यते—जाणाइं मुयंति वाहणाइं विसज्जेंति पुप्फतंबोलाइयं आउहमाइयं सचित्तालंकारं पाहणाओ य एगसाडियं उत्तरासंगं (करेंति ?) आयंता चोक्खा परमसुइभूया अभिगमेणं अभिगच्छंति, चक्खुफासे मणसा एगत्तीभावकरणेणं सुसमाहियपसंतसाहरियपाणिपाया अंजलिमउलियहत्था एवमेयं भंते! अवितहमेयं असंदिद्धमेयं, इच्छियमेयं, पडिच्छियमेयं इच्छियपडिच्छियमेयं, सच्चेणं एसमट्ठे, माणसियाए—तच्चित्ता तम्मणा तल्लेसा तदज्झवसिया तत्तिव्वज्झवसाणा तदप्पियकरणा तयट्ठोवउत्ता तब्भावणाभाविया एगमणा अविमणा अणण्णमणा जिणवयणधम्माणुरागरत्तमणा वियसियवरकमलनयणवयणा पज्जुवासह समोसरणाइं गवेसह आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा आएसणेसु वा आवसहेसु वा पणियगेहेसु वा पणियसालासु वा जाणगिहेसु वा जाणसालासु वा कोट्ठागारेसु वा सुसाणेसु वा सुण्णागारेसु वा परिहिंडमाणा परिघोलेमाणा (वृ)।

२. पंजलिकडा (ग)।

३. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव अप्प०।

५. चंपाणयरिं (क)।

६. सं० पा०—सच्चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया जाव णिसीयइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए अंजलि-मउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ, निवेसेत्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—णमोत्थुणं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थगराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरणाणदंसणधराणं वियट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं मुत्ताणं मोयगाणं बुद्धाणं बोहयाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थगरस्स सहसंबुद्धस्स पुरिसोत्तमस्स पुरिससीहस्स पुरिसवरपुंडरीयस्स पुरिसवरगंधहत्थिस्स अभयदयस्स चक्खुदयस्स मग्गदयस्स सरणदयस्स जीवदयस्स दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिस्स अप्पडिहयवरणाणदंसणधरस्स वियट्टछउमस्स जिणस्स जाणयस्स तिण्णस्स तारयस्स मुत्तस्स मोयगस्स बुद्धस्स बोहयस्स सव्वण्णुस्स सव्वदरिसिस्स सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासइ मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे॰ णिसीयइ, णिसीइत्ता तस्स पवित्ति-वाउयस्स अद्धतेरस-सयसहस्साइं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

बलवाउय-निद्देस-पदं

५५. तए णं से कूणिए राया भिंभसारपुत्ते बलवाउयं आमंतेइ, आमंतेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! आभिसेक्कं[1] हत्थिरयणं पडिकप्पेहि, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि, सुभद्दापमुहाणं[2] य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए 'पाडियक्क-पाडियक्काइं'[3] जत्ताभिमुहाइं[4] जुत्ताइं[5] जाणाइं उवट्ठवेहि, चंपं णयरिं सब्भितर-बाहिरियं 'आसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु'[6] आसित्त-सित्त-सुइ[7]-सम्मट्ठ-रत्थंतरावण-वीहियं मंचाइमंचकलियं णाणा-

---

१. अभिसेक्कं (ख)।
२. सुभद्दपमुहाण (क)।
३. पाडेक्कं (वृ)।
४. जत्तागमणाइं (वृ)।
५. क्वचिद् युग्यानि पठ्यन्ते (वृ)।
६. आसियसमज्जिउवलित्तं (क); 'ख, ग' प्रत्योश्चिन्हाङ्कितः पाठो नोपलभ्यते। 'आसियसमज्जिओवलित्तं' 'सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु' इदं च वाक्यद्वयं क्वचिन्नोपलभ्यते (वृ)।
७. सुचिय (क, ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहराग-ऊसिय-'ज्झय-पडागाइपडाग-मंडियं[1] लाउल्लोइय-महियं गोसीस-सरसरत्तचंदण[2]-•दद्दर-दिण्णपंचंगुलितलं उवचियवंदणकलसं वंदणघड-सुकय-तोरण-पडिदुवारदेसभायं आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्लदामकलावं पंचवण्ण-सरससुरभिमुक्क-पुप्फपुंजोवयार-कलियं कालगुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं° गंधवट्टिभूयं करेहि य कारवेहि य, करेत्ता य कारवेत्ता य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि। णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदए ॥

हत्थिवाउय-निद्देस-पदं

५६. तए णं से बलवाउए कूणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ[3]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं[4] सामि! त्ति आणाए विणएणं वयणं[5] पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता हत्थिवाउयं आमंतेइ, आमंतेत्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कूणियस्स रण्णो भिंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

५७. तए णं से हत्थिवाउए बलवाउयस्स एयमट्ठं सोच्चा[6] आणाए विणएणं वयणं[7] पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता[8] छेयायरिय-उवएस-मइ-कप्पणा-विकप्पेहिं सुणिउणेहिं 'उज्जल-णेवत्थि-हव्व-परिवच्छियं'[9] सुसज्जं धम्मिय [वम्मिय ?] सण्णद्ध[10]-बद्धकवइयउप्पीलिय-

---

१. पडाग-मंडियं (क)।

२. सं० पा०—°चंदन जाव गंधवट्टिभूयं।

३. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।

४. एवं वयासी (ख, ग)।

५. × (क, ग)।

६. × (क)।

७. × (क, ग)।

८. अतोग्रे 'आभिसेयं हत्थिरयणं' ति यत् क्वचिद्-दृश्यते सोऽपपाठः (वृ)।

९. उज्जलणेवत्थेहिं (वृपा); भगवत्यादर्शे 'एवं जहा ओववाइए' इति पाठो लभ्यते, द्रष्टव्यं ७।१७५ सूत्रस्य पञ्चमं पादटिप्पणम्। भगवतीवृत्तौ (पत्र ३१७) औपपातिकस्य पाठो लिखितोस्ति, तत्र ये ये पाठभेदा: सन्ति ते यथास्थानं दर्शयिष्यन्ते उज्जलणेवत्थं हव्व परिवच्छियं।

१०. भगवतीवृत्तौ (पत्र ३१७) उद्धृते औपपातिक-पाठे 'चम्मियसण्णद्ध' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—चर्मणि नियुक्ताश्चार्म्मिकास्तैः सन्नद्धः कृत-सन्नाहश्चार्म्मिकसन्नद्धः। प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ च 'धम्मियसण्णद्ध' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—धर्मणिनियुक्ता धार्मिकाः तैः सन्नद्ध—कृत-सन्नाहं यत्तद्धार्मिकसन्नद्धम्। अनयोर्द्वयोरपि सूत्रयोर्व्याख्याकाराः अभयदेवसूरिणो वर्तन्ते। तैर्यथा यथा पाठो लब्धस्तथा तथा व्याख्यातः प्राचीनलिप्यां धकार-चकार-वकाराणां प्रायः सादृश्यमस्ति, तेन अर्वाचीनलिप्यामत्र वर्णन-विपर्ययो जातः इति कल्पनापि नास्वाभाविकी। अस्मिन् प्रकरणे 'वम्मिय' इति पाठो सर्वथा उपयुक्तोस्ति। 'सण्णद्धबद्धवम्मियकवए' (भ० ७।१८५) इति विशेषणं सैनिकस्य लभ्यते। युद्धसज्जे हस्तिनि चापि एतद्विशे-षणमुपयुक्तमस्ति। सम्भाव्यते अस्य विपर्ययः 'धम्मिय, चम्मिय' रूपेण जातः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कच्छवच्छ[1]-'गेवेज्जबद्धगल-वरभूसणविरायंतं'[2] अहियतेयजुत्तं[3] 'सललियवरकण्णपूरविराइयं पलंबओचूल[4]-महुयरकयंधयारं'[5] चित्तपरिच्छेयपच्छयं[6] पहरणावरण[7]-भरिय-जुद्धसज्जं सच्छत्तं सज्झयं सघंटं[8] पंचामेलय[9]-परिमंडियाभिरामं ओसारिय-जमलजुयलघंटं विज्जुपिणद्धं व कालमेहं उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं[10] मत्तं गुलगुलंतं[11] मण-पवण-जइणवेगं[12] भीमं संगामिया-ओज्झं[13] आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेइ, पडिकप्पेत्ता हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेइ, सण्णहेत्ता जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ।।

जाणसालिय-निद्देस-पदं

५८. तए णं से बलवाउए जाणसालियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सुभद्दापमुहाणं देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्क-पाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठवेहि, उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

५९. तए णं से जाणसालिए बलवाउयस्स एयमट्ठं आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव जाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाणाइं पच्चुवेक्खेइ, पच्चुवेक्खेत्ता जाणाइं संपमज्जेइ, संपमज्जेत्ता जाणाइं संवट्टेइ, संवट्टेत्ता जाणाइं णीणेइ, णीणेत्ता जाणाणं दूसे पवीणेइ, पवीणेत्ता जाणाइं समलंकरेइ[14], समलंकरेत्ता जाणाइं वरभंडग-मंडियाइं करेइ, करेत्ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाहणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ, पच्चुवेक्खेत्ता वाहणाइं संपमज्जेइ, संपमज्जेत्ता वाहणाइं णीणेइ, णीणेत्ता वाहणाइं अप्फालेइ, अप्फालेत्ता दूसे

---

१. °वच्छकच्छ (वृपा, भ० वृत्ति पत्र ३१७) ।
२. गेवेज्जगबद्धभूसणविराइयं (वृपा), गेवेज्ज-गबद्धगलगभूसणविराइयं (भ० वृत्तिपत्र ३१७)
३. 'अहियाहियतेयजुत्तं' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
४. पलंबवचूल (क) ।
५. वाचनान्तरं त्वेवं ज्ञेयं (नेयं—मुद्रितवृत्ति)—'विरइयवरकण्णपूरं सललियपलंबओचूल-चामरुक्करकयंधयारं' (वृ); विरइयकण्णपूरस-ललियपलंबावचूलचामरुक्करकयंधयारं (भ० वृत्तिपत्र ३१७) ।
६. चित्तपरिच्छोयपच्छयं (क, ख); चित्त-परिच्छोयपच्छयं कणगघडियं सुत्तगसुबद्ध-कच्छं (भ० वृत्तिपत्र ३१८) ।
७. सचावसरपहरणा (वृपा); बहुपहरणावरण (भ० वृत्तिपत्र ३१८) ।
८. 'सपडागं' इत्यपि दृश्यते । (वृ) ।
९. पंचामेल (क, ख) ।
१०. सक्खं (वृपा, भ० वृत्तिपत्र ३१८) ।
११. क्वचित् 'महामेहमिव' दृश्यते (वृ); मेहमिव गुलगुलंतं (भ० वृत्तिपत्र ३१८) ।
१२. सिग्घवेगं (वृपा) ।
१३. संगामियाओग्गं । (क, वृ); संगामियपाओग्गं (ख); संगामियअयोगं (ग); संगामिया-ओज्जं, संगामियाओज्झं (वृपा); वृत्तौद्वितीय-पाठान्तरं मूलपाठरूपेण स्वीकृतम् । भगवत्यां (७।१७५) 'संगामियं अओज्झं' इति पाठो लभ्यते । अर्थसमीक्षया एष पाठः सम्यक् प्रति-भाति ।
१४. समलंकारेइ (क); समालंकारेइ (ग, वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवीणेइ, पवीणेत्ता वाहणाइं समलंकरेइ, समलंकरेत्ता वाहणाइं वरभंडग-मंडियाइं करेइ, करेत्ता 'वाहणाइं जाणाइं जोएइ, जोएत्ता पओय-लट्ठि पओय-धरए य समं आडहइ, आडहित्ता वट्टमग्गं गाहेइ, गाहेत्ता'[1] जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवगच्छित्ता बलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ[2] ।।

णयरगुत्तिय-निद्देस-पदं

६०. तए णं से बलवाउए णयरगुत्तियं आमंतेइ, आमंतेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चंपं णयरिं सब्भितरबाहिरियं आसित्त[3]-सम्मज्जिओवलित्तं जाव[4] कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

६१. तए णं से णयरगुत्तिए बलवाउयस्स एयमट्ठं आणाए विणएणं वयणं[5] पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता चंपं णयरिं सब्भितर-बाहिरियं आसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं जाव[6] कारवेत्ता य जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ।।

बलवाउयस्स निवेदण-पदं

६२. तए णं से बलवाउए कोणियस्स रण्णो भिंभसार-पुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पियं पासइ, हय-गय[7]-°रह-पवरजोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं° सण्णाहियं पासइ, 'सुभद्दापमुहाण य'[8] देवीणं पडिजाणाइं उवट्ठवियाइं पासइ, चंपं णयरिं सब्भितर[9]-बाहिरियं जाव[10] गंधवट्टिभूयं कयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए[11] पीइमणे[12] °परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए जेणेव कूणिए राया भिंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—कप्पिए णं देवाणुप्पियाणं आभिसेक्के हत्थिरयणे, हय-गय-रह-पवरजोहकलिया य चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया, सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्क-पाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठावियाइं, चंपाणयरी सब्भितर-बाहिरिया आसित्त-सम्मज्जिओवलित्ता जाव[13] गंधवट्टिभूया कया, तं णिज्जंतु णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं अभिवंदया ।।

कूणिय-सज्जा-पदं

६३. तए णं से कूणिए राया भिंभसारपुत्ते बलवाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ[14]-°चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण°-हियए

१. दशाश्रुतस्कन्धे (१०।१०) चिह्नाङ्कितपाठस्य स्थाने भिन्नः क्रमो लभ्यते—जाणाइं जोएति, जोएत्ता वट्टमग्गं गाहेति, गाहेत्ता पओय-लट्ठि पओयधरए य समं आडहइ, आडहित्ता।

२. पच्चप्पिणाइ (क)।

३. आसिय (क, ख)।

४. ओ० सू० ५५।

५. × (क, ग)।

६. ओ० सू० ५५।

७. सं० पा०—हयगय जाव सण्णाहियं।

८. सुभद्दापमुहाणं (ग)।

९. अब्भितर (क)।

१०. ओ० सू० ५५।

११. चित्तमाणंदिए णंदिए (ग)।

१२. सं० पा०—पीइमणे जाव हियए।

१३. ओ० सू० ५५।

१४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अणेगवायाम-जोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते सयपाग-सहस्सपागेहिं सुगंधतेल्लमाईहिं पीणणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विहणिज्जेहिं सव्विदियगायपल्हाय-णिज्जेहिं[1] अब्भिगेहिं अब्भिगिए समाणे तेल्लचम्मंसि-पडिपुण्ण-पाणि-पाय-सुउमाल-कोमल-तलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पत्तट्ठेहिं[2] कुसलेहिं मेहावीहिं निउणसिप्पोवगएहिं अब्भिंगण[3]-परिमद्दणुव्वलण-करण-गुणणिम्माएहिं अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए—चउव्विहाए संबाहणाए संबाहिए समाणे अवगय-खेय[4]-परिस्समे अट्टण-सालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समत्तजालाउलाभिरामे[5] विचित्त-मणिरयण-कुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणि-रयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुहोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहिं पुणो-पुणो कल्लाणग-पवर-मज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासाइ[6]-लूहियंगे सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणाणुलित्तगत्ते अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसंवुए[7] सुइमाला[8]-वण्णग-विलेवणे य आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियहारद्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकयसोभे पिणद्ध[9]-गेवेज्जग-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललियकया-भरणे वरकडग-तुडिय-थंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए मुद्दियपिंगलंगुलीए[10] कुंडलउज्जोविया-णणे मउडदित्तसिरए हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे पालंब-पलंबमाण-पड-सुकयउत्तरिज्जे[11] णाणामणिकणग-रयण-विमल-महरिह-णिउणोविय-मिसिमिसंत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-आविद्ध-वीरवलए, किं बहुणा ? कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए णरवई सकोरंट-मल्लदामेणं[12] छत्तेणं[13] धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीइयंगे[14]-मंगल-जयसद्द-कयालोए[15]

१. एतानि पदानि वाचनान्तरे क्रमान्तरेणाधीयन्ते (वृ) ।

२. पट्ठेहिं (ख, ग) ।

३. अब्भंगण (क, ग, वृ) ।

४. सेय (क, ख) ।

५. समुत्त० (वृपा) ।

६. कासाइय (ख, ग) ।

७. संवुए (ग, वृ); सुसंवुए (वृपा) ।

८. सुरभिमाला (ख, ग)।

९. पिणिद्ध (क, ख, ग) ।

१०. मुद्दियापिंगलंगुलीए (ख, ग); × (वृ); मुद्दि-यपिंगलंगुलीए (वृपा) ।

११. सुकय-पडउत्तरिज्जे (ना० १।१।२५, जं० ३।९) ।

१२. सकोरेंट० (क, ग) ।

१३. वाचनान्तरे पुनश्छत्रवर्णक एवं दृश्यते—अब्भपडलपिंगलुज्जलेणं अविरलसमसहिय-चंदमंडलसमप्पभेणं मंगलसयभत्तिछेयचित्तियं[1]-खिखिणिमणिहेमजालविरइयपरिगयपेरंतकणग-घंटिया पयलियकिणिकिणितसुइसुहसुमहुरसद्दाल-सोहिएणं सप्पयरवरमुत्तदामलंबंतभूसणेणं[2] नरिंदवामप्पमाणरुंदपरिमंडलेणं सीयायववाय-वरिसविसदोसनासणेणं तमरयमलबहलपडल-धाडणपभाकरेणं उडु[3]सुहसिवच्छायसमणुबद्धेणं

१. मुद्रितवृत्तौ 'विचित्तिय' पाठस्तथा 'विचित्रितम्' व्याख्या विद्यते, किन्तु हस्तलिखितवृत्तौ 'चित्तिय' पाठस्तथा 'चित्रितम्' इति व्याख्या विद्यते ।

२. भूसणधरेणं (हस्तलिखितवृत्ति) ।

३. उउ (मुद्रितवृत्ति) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवालसद्धिं संपरिवुडे धवल-महामेहणिग्गए इव गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण[1] मज्झे ससिव्व पिअदंसणे णरवई जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं[2] णरवई दुरूढे ।।

परिकर-सज्जा पदं

६४. तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो भिंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स

वेरुलियदंडसज्जिएणं वइरामयवत्थिनिउणजोइयअट्ठसहस्सवरकंचणसलागनिम्मिएणं सुणिम्मलरययसुच्छएणं निउणोवियमिसिमिसितमणिरयणसूरमंडलवितिमिरकरनिग्गयग्गपडिहयपुणरविपच्चापडंतचंचलमिरिइकवयं विणिमुयंतेणं सपडिदंडेणं धरिज्जमाणेणं आयवत्तेणं विरायंते (वृ) ।

१४. वाचनान्तरेतु—'चउहिय[1] पवरगिरिकुहरविवरणसमुइयनिरुवहयचमरपच्छिमसरीरसंजायसंगयाहिं अमलियसियकमलविमलुज्जलियरययगिरिसिहरविमलससिकिरणसरिसकलधोयनिम्मलाहिं पवणाहयचवललियतरंगहत्थनच्चंतवीइपसरियखीरोदगपवरसागरुप्पूरचंचलाहिं माणससरपरिसरपरिचियावासविसयवेसाहिं कणगगिरिसिहरसंसियाहिं ओवइयउप्पइयतुरियचवलजइणसिग्घवेगाहिं हंसवधूयाहिं चेव कलिए । णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहिं चिल्लियाहिं नरवइसिरि[2] समुदयपगासणकरीहिं वरपट्टणुग्गयाहिं समिद्धरायकुलसेवियाहिं कालागरु[3] पवरकुंदुरुक्कतुरुक्कवरवण्णवासगंधुद्धुयाभिरामाहिं सललियाहिं उभओपासंपि उक्खिप्पमाणाहिं चामराहिं[4] सुहसीयलवायवीइयंगे' (वृ) ।

१५. अतः परं 'जेणेव' अतः पूर्वं भगवतीवृत्त्यां (पत्र ३१८) औपपातिकस्य यः पाठः उद्धृतोस्ति स प्रस्तुतपाठात् भिन्नो लभ्यते—'एवं जहा उववाइए जाव' इत्यनेनेदं सूचितम्—अणेगगणनायगदंडनायगराईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियमंतिमहामंतिगणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दणगरनिगमसेट्ठिसेणावइसत्थवाहदूयसंधिपालसद्धिं संपरिवुडे धवलमहामेहनिग्गए विव गहगणदिप्पंतरिक्खतारागणमज्झे ससिव्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ मज्जणघराओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव । प्रस्तुतसूत्रस्यअष्टादशे सूत्रे भगवतीवृत्तौ (४६३) च परिवारवर्णनेपि ईदृशः पाठो लभ्यते—अणेगगणनायगदंडनायगराईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियमंतिमहामंति गणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दनगरनिगमसेट्ठिसत्थवाहदूयसंधिवालसद्धिं संपरिवुडे । यत्र राज्ञः परिवारवर्णनं तत्रैतादृशः पाठो लभ्यते, यत्र च जनसमूहवर्णनं तत्र 'मतिमहामंति' आदिपदानि नैव दृश्यन्ते । द्रष्टव्यं प्रस्तुतसूत्रस्य ५२ सूत्रं तथा भगवतीवृत्तावपि (पत्र ४६३) उद्धृतः औपपातिकपाठः—'माहणा भडा जोहा मल्लई लच्छई अण्णे य बहवे राईसरतलवरमाडबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइ त्ति । प्रस्तुतप्रकरणे जनसमूहवर्णकः पाठः केनापि कारणेन प्रविष्टोभूत् इति सम्भाव्यते ।

१. तारागण (क) ।
२. गयवरं (क) ।

---

१. 'ताहि य' त्ति क्वचित् (वृ) ।
२. सरि (हस्तलिखितवृत्ति) ।
३. कालागरुः—कृष्णागरुः (हस्तलिखितवृत्ति) ।
४. कलित इति वर्तते (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठ मंगलया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा—सोवत्थिय-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणया।

तयाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं 'दिव्वा य छत्तपडागा'[1] सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउद्धय[2]-विजयवेजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

तयाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं वरमणिरयणपादपीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं[3] बहुकिंकर[4]-कम्मकर-पुरिस-पायत्तपरिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए[5] संपट्ठियं।

तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा[6] कुंतग्गाहा 'चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा'[7] पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा[8] हडप्पग्गाहा[9] पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

तयाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिंछिणो[10] हासकरा डमरकरा दवकारा चाडुकरा कंदप्पिया कोक्कुइया किड्डकरा य वायंता य गायंता य णच्चंता य हसंता य भासंता य 'सासंता य'[11] सावेंता य रक्खंता[12] य आलोयं च करेमाणा जयजयसद्दं[13] पउंजमाणा[14] पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

तयाणंतरं 'च णं'[15] जच्चाणं तरमल्लिहायणाणं[16] थासग-अहिलाण-चामर-गंड-

---

१. दिव्वायवत्तपडागा (राय० सू० ५०)। रायपसेणइयसूत्रस्य वृत्तौ (पृ० १०८) 'दिव्यातपत्रपताका' इति व्याख्यातमस्ति, अतः 'दिव्वायवत्तपडागा' इति पाठः फलितो भवति। सम्भाव्यते लिपिदोषेण वकारस्य स्थाने छकारो जातः, तेन पाठपरिवर्तनमभूत।

२. वाउद्धूय (ख)।

३. सपाउयाजुग° (भ० वृत्तिपत्र ४७६)।

४. दासीदासकिंकर (वृपा)।

५. अहाणुपुव्वी (क)।

६. असिलट्ठिग्गाहा (वृपा)।

७. चावग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा (क, ख)।

८. कूवयग्गाहा (भ० वृत्तिपत्र ४७६)।

९. हडप्पयग्गाहा (क); हडप्फयग्गाहा (ख)।

१०. पिच्छिणो (ग)।

११. × (क, ख); सासिता य (वृ)।

१२. रावेंता (वृपा)।

१३. जयसद्दं (ग)।

१४. सङ्ग्रहगाथाश्चास्य गमस्य क्वचिद् दृश्यन्ते, तद्यथा—

असिलट्ठिकुंतचावे, चामरपासे य फलगपोत्थे य।
वीणाकूयग्गहे, तत्तो हडप्पग्गाहे[1] य॥
दंडी मुंडिसिहंडी, पिंछी[2] जडिणो य हासकिड्डा य।
दवकार[3] चडुकारा, कंदप्पिय-कुक्कुइ गायए॥
गायंता वायंता, नच्चंता तह हसंतहासेंता।
सावेंता रावेंता, आलोयजयं पउंजंता॥ (वृ)।

१५. × (क, ग)।

१६. वाचनान्तरेत्वेवमधीयते — 'वरमल्लिभासणाणं हरिमेलामउलमल्लियच्छाणं चंचुच्चियललियपुलियचलचवलचंचलगईणं लंघणवग्गणधावणधोरण तिवई[4] जइणसिक्खियगईणं ललंतलामगललायवरभूसणाणं मुहभंडगओचूलगथासग-

---

१. दंडप्पग्गाहे (हस्तलिखिवृत्ति)।

२. पिच्छी (मुद्रितवृत्ति)।

३. दवकारा (हस्तलिखितवृत्ति)।

४. तिवइ (हस्तलिखितवृत्ति)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिमंडियकडीणं किंकरवतरुणपरिग्गहियाणं[1] अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं 'ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणं'[2] ईसीउच्छंगविसाल-धवलदंताणं कंचणकोसी-पविट्ठदंताणं कंचणमणिरयणभूसियाणं[3] वरपुरिसारोहगसंपउत्ताणं[4] अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

तयाणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदिघोसाणं सखिंखिणीजाल[5]-परिक्खित्ताणं हेमवय-चित्त-तिणिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाणं कालायससुकयणेमि-जंतकम्माणं सुसिलिट्ठवत्तमंडलधुराणं[6] आइण्णवरतुरगसुसंपउत्ताणं[7] कुसलनरच्छेयसारहिसुसंपग्गहियाणं[8] बत्तीसतोणपरिमंडियाणं[9] सकंकडवडेंसगाणं सचावसरपहरणावरणभरिय-जुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

तयाणंतरं च णं असि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणुपाणिसज्जं पायत्ताणीयं[10] पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।।

कूणियस्स निग्गमण-पदं

६५. तए णं से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे[11] कुंडलउज्जोवियाणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसहे मणुयरायवसभकप्पे अब्भहियं रायतेय-लच्छीए दिप्पमाणे हत्थिक्खंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवर-चामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं वेसमणे विव[12] णरवई अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

मिलाणचमरीगंडपरिमंडियकडीणं किंकरवरतरुणपरिग्गहियाणं' (वृ); हरिमेलामउलमल्लियच्छाणं चंचुच्चियललियपुलियचलचवलचंचलगईणं लंघणवग्गणधावणधोरणतिवईजइणसिक्खियगईणं ललंतलामगललायवरभूसणाणं मुहभंडगओचूलग (क, ख, ग), भगवतीवृत्तौ (पत्र ४७९) वाचनान्तरस्य पाठे 'वरमल्लिहाणाणं' इति मूलपाठत्वेन तथा 'वरमल्लिहायणाणं' वरमल्लिभासणाणं' एतद् द्वयं पाठान्तरत्वेन उल्लिखितमस्ति ।

१. × (ग) ।

२. ईसीमंताणं (क, ग) ।

३. × (ग, वृ) ।

४. × (ग, वृ); वरपुरिसारोहगसंपउत्ताणं (वृपा) ।

५. सखिंखिणीजाला (ग) ।

६. क्वचिद्दृश्यते 'सुसंविद्धचक्कमंडलधुराणं (वृ)।

७. तुरगसंपउत्ताणं (क, ख) ।

८. क्वचित्पठ्यते —'हेमजालगवक्खजालखिंखिणीघंटजालपरिक्खित्ताणं (वृ) ।

९. बत्तीसतोरण° (क, ग, वृपा) ।

१०. वाचनान्तरे पुनः—'सन्नद्धबद्धवम्मियकवयाणं उप्पीलियसरासणवट्टियाणं पिणद्धगेवेज्जविमलवरबद्धचिधपट्टाण गहियाउहप्पहरणाणं' (वृ) ।

११. अतः परं भगवतीवृत्तौ (पत्र ३१९) 'पालंबपलंबमाणपडसुकयउत्तरिज्जे' इति पाठ; उल्लिखितोस्ति, परन्तु प्रस्तुतसूत्रे नैष पाठो लभ्यते ।

१२. चेव (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६६. तए[1] णं तस्स कूणियस्स रण्णो भिंभसारपुत्तस्स पुरओ महं आसा आसधरा[2], उभओ पासिं णागा णागधरा[3], पिट्ठओ रहसंगेल्लि ।।

६७. तए णं से कूणिए राया भिंभसारपुत्ते अब्भुग्गयभिंगारे पग्गहियतालियंटे[4] ऊसवियसेयच्छत्ते पवीइयवालवीयणीए[5] सव्विड्ढीए सव्वजुतीए[6] सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं[7] सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं[8] सव्व-तुडिय-सद्दसण्णिणाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय[9]-मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ ।।

आसीवयण-पदं

६८. तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो 'चंपाए णयरीए'[10] मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किब्बिसिया[11] कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया वद्धमाणा पूसमाणया[12] खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं[13] हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जय-विजयमंगलसएहिं अणवरयं अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी—जय-जय णंदा ! जय-जय भद्दा ! भद्दं ते, अजियं जिणाहि जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि । इंदो इव देवाणं चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं भरहो इव मणुयाणं बहूइं

---

१. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (३।१७९) एतत्सूत्रं पूर्वं विद्यते, ततश्च राजवर्णकं सूत्रं वर्तते । इह च राजवर्णकं सूत्रं पूर्वमस्ति ततश्च 'आसा आस-धरा' एतत्सूत्रमस्ति । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः क्रमः सम्यक् प्रतिभाति । प्रस्तुतसूत्रे न जाने केन-कारणेन क्रमविपर्ययो जातः ।

२. आसवरा (क, ख, वृपा) ।

३. णागवरा (क, ख, वृपा) ।

४. °तालयंटे (ख, ग) ।

५. °वीजिणीए (क, ख) ।

६. सव्वजुत्तीए (क, वृ); सव्वजुईए (ख) ।

७. क्वचिदिदं पदचतुष्कमधिकं दृश्यते—'पगईहिं नायगेहिं तालायरेहिं सव्वोरोहेहिं' (वृ) ।

८. क्वचिद्दृश्यते—'सव्वपुप्फवत्थगंधमल्लालंकार-विक्कसाए' (वृ) ।

९. मुरव (क, ख, ग) ।

१० चंपं णयरिं (ख) ।

११. 'इड्ढिसिय' त्ति रूढिगम्याः 'किट्टिसिय' त्ति किल्विषिका भाण्डादय इत्यर्थः, क्वचित् किट्टिसिक स्थाने 'किव्विसिय' त्ति पठ्यते (भ० वृत्तिपत्र ४८१) ।

१२. पूसमाणवा (भ० वृत्तिपत्र ४८१); अतः परं भगवतीवृत्तौ 'खंडियगणा' इति पाठो नास्ति, किन्तु तत्र त्रीणि पाठान्तराणि उल्लिखितानि सन्ति—'इज्जिसिया पिंडिसिया घंटिय'पि क्वचिद्दृश्यते, तत्र च इज्यां—पूजामिच्छन्त्ये-षयन्ति वा ये ते इज्यैषास्त एव स्वार्थिके क प्रत्ययविधानाद् इज्यैषिकाः, एवं पिण्डैषिका अपि, नवरं पिण्डो—भोजनम्, घाण्टिकास्तु ये घण्टया चरन्ति तां वा वादयन्ति ।

१३. मणोभिरामाहिं (क); वाचनान्तराधीतमथ प्रायो वाग्विशेषणकदम्बकम्—'उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरिया-हिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं मियमहुरगंभीरगाहिगाहिं (मियमहुरगंभीर-सस्सिरियाहिं' त्ति क्वचिद्दृश्यते—भ० वृत्तिपत्र ४८२) अट्ठसइयाहिं अपुणरुत्ताहिं' (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासाइं बहूइं वाससयाइं 'बहूइं वाससहस्साइं'[1] 'बहूइं वाससयसहस्साइं'[2] अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो परमाउं पालयाहि इट्ठजणसंपरिवुडो चंपाए णयरीए अण्णेसिं च बहूणं गामागर-णयर-खेड-कब्बड-'दोणमुह-मडंब'[3]-पट्टण-आसम-निगम[4]-संवाह-संणिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं 'सामित्तं भट्टित्तं'[5] महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल- तुडिय-घण-मुइंगपडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि त्ति कट्टु जय-जय सद्दं पउंजंति ॥

कूणिय-पज्जुवासणा पदं

६९. तए णं से कूणिए राया भिंभसारपुत्ते नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे[6]-अभिणंदिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे कंतिसोहग्गगुणेहिं[7] पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे[8] बहूणं नरनारिसहस्साणं दाहिणहत्थेणं[9] अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे 'मंजुमंजुणा घोसेणं आपडिपुच्छमाणे'[10]-आपडिपुच्छमाणे'[11] भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे-समइच्छमाणे[12] चंपाए नयरीए मज्झं-

---

१. × (ग)।
२. × (ख)।
३. मडंबदोणमुह (ग, वृ)।
४. × (ग, वृ)।
५. भट्टित्तं सामित्तं (वृ)।
६. उन्नइज्जमाणे (वृपा)।
७. कंतिदिव्वसोहग्गगुणेहिं (क, ख); कंतिरूव-सोहग्गजोव्वणगुणेहिं (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।
८. पिच्छिज्जमाणे (क, ग); पेच्छिज्जमाणे (ख); पच्छिज्जमाणे (वृ)।
९. अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे २ दाहिण-हत्थेणं बहूणं नरनारिसहस्साणं (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।
१०. अपडिबुज्भमाणे (क, वृपा); पडिबुज्भमाणे (ख, वृपा); प्रस्तुतसूत्रस्य वाचनान्तरे पर्यु-षणाकल्पे (सूत्र ७५) 'अपडिबुज्भमाणे' तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (३।१८६) 'अपडिवुज्भमाणे' इति पाठो लभ्यते।
११. × (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।
१२. वाचनान्तरे त्वेवं—'तंती-तल-ताल-तुडिय[1]-गीयवाइयरवेणं महुरेणं मणहरेणं जयसद्दुग्घोस-विसएणं[2] मंजुमंजुणा घोसेणं अपडिबुज्भमाणे[3] 'कंदरगिरिविवरकुहरगिरिवरपासादुद्धघणभवण-देवकुलसिंघाडगतिगचउक्कचच्चरआरामुज्जाण-काणणसभापवापदेसदेसभागे'[4] 'पडिसुयासय-सहस्ससंकुलं'[5] करेंते'[6] हयहेसियहत्थिगुलगुलाइय-रहघणघणसद्दमीसएणं महया कलकलरवेण जणस्स 'महुरेणं पूरयंते'[7] सुगंधवरकुसुमचुण्ण-सभापएस' त्ति (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।

---

१. × (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।
२. °मीसएणं—जयेति शब्दस्य यद् उद्घोषणं तेन मिश्री यः (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।
३. अपरिबुज्भमाणे (हस्तलिखितवृत्ति)।
४. अयं पुनर्दण्डकः क्वचिदन्यथा दृश्यते—'कंदर-दरिकुहरविवरगिरिपायारट्टालचरियदारगोउर-पासायदुवारभवणदेवकुलआरामुज्जाणकाणण—
५. पडिसद्द° (डिंसुआ) (मुद्रितवृत्ति)।
६. पडिसुयासयसहस्ससंकुले करेमाणे (भ० वृत्ति-पत्र ४८३)।
७. सुमहुरेणं पूरेंतोऽबरं समंता (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासइ, पासित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ, ठवेत्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायकउहाइं, तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणयं,[1] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, [तं जहा—सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए एगसाडिय[2]-उत्तरासंगकरणेणं चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं[3] मणसो[4] एगत्तिभावकरणेणं[5]]। समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ। [तं जहा—काइयाए वाइयाए माणसियाए। काइयाए—ताव संकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे[6] पज्जुवासइ। वाइयाए—जं जं भगवं वागरेइ एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते! से जहेयं तुब्भे वदह अपडिकूलमाणे[7] पज्जुवासइ। माणसियाए—महयासंवेगं जणइत्ता तिव्वधम्माणुरागरत्ते पज्जुवासइ[8]]॥

देवी पज्जुवासणा-पदं

७०. तए णं ताओ सुभद्दप्पमुहाओ[9] देवीओ अंतोअंतेउरंसि ण्हायाओ[10] •कयबलिकम्माओ कय-कोउय-मंगल°-पायच्छित्ताओ सव्वालंकारविभूसियाओ[11] बहूहिं खुज्जाहिं चिलाईहिं वामणीहिं वडभीहिं[12] बब्बरीहिं पउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं[13] ईसिणियाहिं[14] थारुइणियाहिं[15] लासियाहिं लउसियाहिं सिंहलीहिं दमिलीहिं आरबीहिं पुलिंदीहिं

उव्विद्धवासरेणुकविलं[1] नभं करेंते कालागुरु-कुंदुरुक्क[2]-तुरुक्क-धूवनिवहेणं जीवलोगमिव वासयंते समंतओखुभियचक्कवालं पउरजणबालवुड्ढपमुइयतुरियपहावियविउलाउलबोलबहुलं नभं करेंते' (वृ); भगवतीवृत्तौ (पत्र ४८३) एतद् वाचनान्तरं मूलपाठत्वेन उल्लिखितमस्ति। एतस्मिन् ये ये पाठभेदाः सन्ति ते यथास्थानमुपदर्शिताः।

१. वालवीयणियं (क); वालवीयणिज्जं (ख,ग)

२. एगसाडिएणं (भ० २।६७)।

३. 'हत्थिखंधविट्ठंभणयाए' त्ति वाचनान्तरम् (वृ)

४. मणसा (ग)।

५. एगत्तिकरणेणं (ख); एगत्तीकरणेणं (भ० २।६७)। कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।

६. पंजलिकडे (ग)।

७. अपडिकूलेमाणे (ग)।

८. कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।

९. धारिणीप्पमुहाओ (वृपा)।

१०. सं० पा०—ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ।

११. वाचनान्तरं — 'वाहुयसुभगसोवत्थियवद्धमाणपुस्समाणवजयविजयमंगलसएहिं अभिथुव्वमाणीओ कप्पाछेयायरियरइयसिरसाओ महया गंधद्धणिं मुयंतीओ' (वृ)।

१२. वडभियाहिं (वृ)।

१३. पण्हवियाहिं (ख, ग)।

१४. ईसिगिणियाहिं (भ० ६।१४४ का पादटिप्पणम्)।

१५. चारुणियाहिं (ख); चाराणियाहिं (ग)।

---

१. °रेणुमइलं (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।

२. पवरकुंदुरुक्क (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पक्कणीहिं वहलीहिं मरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहिं[1] इंगिय-चिंतिय-पत्थिय[2]-वियाणियाहिं सदेसणेवत्थ-गहियवेसाहिं चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-कंचुइज्ज-महत्तरवंदपरिक्खित्ताओ अंतेउराओ निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पाडियक्क-जाणाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पाडियक्क-पाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं दुरूहंति, दुरूहित्ता णियगपरियालसद्धिं संपरिवुडाओ चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति, पासित्ता पाडियक्क-पाडियक्काइं जाणाइं ठवेंति, ठवेत्ता जाणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं जाव चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-कंचुइज्ज-महत्तरवंदपरिक्खित्ताओ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति। [तं जहा—सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए अचित्ताणं दव्वाणं अविओ-सरणयाए[3] विणओणयाए गायलट्ठीए चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं मणसो[4] एगत्तिभावकर-णेणं][5]। समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता कूणियरायं पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएणं पंजलिकडाओ पज्जुवासंति॥

धम्मदेसणा-पदं

७१. तए णं समणे भगवं महावीरे कूणियस्स रण्णो भिंभसारपुत्तस्स सुभद्दापमुहाण य देवीणं तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए[6] ओहबले अइबले महब्बले अपरिमिय-बल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंतिजुत्ते सारय-णवत्थणिय-महुरगंभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए[7] अमम्मणाए 'सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइ-याए'[8] पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—अरिहा[9] धम्मं परिकहेइ। तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अगिलाए धम्मं आइक्खइ। सावि य णं अद्धमाहगा भासा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो[10] सभासाए परिणामेणं परिणमइ, तं जहा—अत्थि लोए अत्थि अलोए, अत्थि जीवा अत्थि अजीवा अत्थि बंधे अत्थि मोक्खे अत्थि पुण्णे अत्थि पावे अत्थि आसवे अत्थि संवरे अत्थि वेयणा अत्थि णिज्जरा, अत्थि अरहंता अत्थि चक्कवट्टी अत्थि वलदेवा अत्थि वासुदेवा, अत्थि नरगा अत्थि णेरइया अत्थि तिरिक्खजोणिया अत्थि तिरिक्खजोणिणीओ, अत्थि

---

१. 'विदेसपरिपिंडियाहिं' ति वाचनान्तरम् (वृ)।

२. पत्थियमणोगय (वृपा)।

३. अविमोयणयाए (भ० ६।१४६)।

४. मणस्स (भ० ६।१४६)।

५. कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।

६. °परिवाराए (क, ख, ग)।

७. द्रष्टव्यं रायपसेणइयसूत्रस्य ६१ सूत्रस्य पाद-टिप्पणम्।

८. सव्वक्खरसण्णिवाइयाए (ग); क्वचिदिदं विशेषणद्वयम्—'फुडविसयमहुरगंभीरगाहियाए सव्वक्खरसण्णिवाइयाए (वृ)।

९. अरहा (क)।

१०. अप्पणो-अप्पणो (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माया अत्थि पिया अत्थि रिसओ, अत्थि देवा अत्थि देवलोया, अत्थि सिद्धा अत्थि सिद्धी अत्थि परिणिव्वाणे अत्थि परिणिव्वुया, अत्थि पाणाइवाए मुसावाए अदत्तादाणे मेहुणे परिग्गहे अत्थि कोहे माणे माया लोभे अत्थि पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुण्णे परपरिवाए अरइरई मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले, अत्थि पाणाइवायवेरमणे मुसावायवेरमणे अदत्तादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे[1] •अत्थि कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लोभविवेगे पेज्जविवेगे दोसविवेगे कलहविवेगे अब्भक्खाणविवेगे पेसुण्णविवेगे परपरिवायविवेगे अरतिरतिविवेगे मायामोसविवेगे° मिच्छादंसणसल्लविवेगे[2], सव्वं अत्थिभावं अत्थि त्ति वयइ, सव्वं णत्थिभावं णत्थि त्ति वयइ, सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति फुसइ पुण्णपावे पच्चायंति जीवा सफले कल्लाणपावए ॥

७२. धम्ममाइक्खइ—इणमेव णिग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए[3] संसुद्धे पडिपुण्णे णेयाउए सल्लकत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे 'णिज्जाणमग्गे णिव्वाणमग्गे'[4] अवितहमविसंधि[5] सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे। इत्थंठिया[6] जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। एगच्चा पुण एगे भयंतारो[7] पुव्वकम्मावसेसेणं अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति—महड्ढिएसु[8] •महज्जुइएसु महब्बलेसु महायसेसु° महासोक्खेसु महाणुभागेसु दूरंगइएसु चिरट्ठिइएसु। ते णं तत्थ देवा भवंति महिड्ढिया[9] •महज्जुइया महब्बला महायसा महासोक्खा महाणुभागा दूरंगइया° चिरट्ठिइया हारविराइयवच्छा[10] •कडग-तुडिय-थंभियभुया अंगय-कुंडल-मट्ठगंड-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा° पभासेमाणा कप्पोवगा गतिकल्लाणा आगमेसिभद्दा[11] •पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा° पडिरूवा ॥

७३. तमाइक्खइ—एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति, पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जंति, तं जहा—महारंभयाए महापरिग्गहयाए पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं।

•[12]एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पकरेंति, पकरेत्ता

---

१. सं० पा०—परिग्गहवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे।
२. मिच्छादंसणसल्लवेरमणे (ख)।
३. केवलि (ख, ग); केवले (वृ)।
४. णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे (क, ग)।
५. अवितहमविसंधे (क); अवितहमसंदिद्धे (ख)।
६. इहट्ठिया (ग, वृ)।
७. भवंतारो (क)।
८. सं० पा०—महिड्ढिएसु जाव महासोक्खेसु।
९. सं० पा०—महिड्ढिया जाव चिरट्ठिया।
१०. सं० पा०—हारविराइयवच्छा जाव पभासेमाणा।
११. सं० पा०—आगमेसिभद्दा जाव पडिरूवा।
१२. सं० पा०—एवं एएणं अभिलावेणं तिरिक्खजोणिएसु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति तं जहा°—माइल्लयाए अलियवयणेणं उक्कंचणयाए वंचणयाए।

•[1]एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पकरेंति, पकरेत्ता मणुस्सेसु उववज्जंति, तं जहा°—पगइभद्दयाए पगइविणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरिययाए।

•[2]एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा देवत्ताए कम्मं पकरेंति, पकरेत्ता देवेसु उववज्जंति, तं जहा°—सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं अकामणिज्जराए बालतवोकम्मेणं ॥

७४. तमाइक्खइ—

जह णरगा गम्मंती, जे णरगा जा य वेयणा णरए।
सारीरमाणसाइं[3], दुक्खाइं तिरिक्खजोणीए ॥१॥
माणुस्सं च अणिच्चं, वाहि-जरा-मरण-वेयणा-पउरं।
देवे य देवलोए, देविड्ढि देवसोक्खाइं[4] ॥२॥
णरगं तिरिक्खजोणिं, माणुसभावं च देवलोगं च।
सिद्धे य सिद्धवसहिं, छज्जीवणियं परिकहेइ ॥३॥
जह जीवा बज्झंती, मुच्चंती जह य संकिलिस्संति।
जह दुक्खाणं अंतं, करेंति केई अपडिबद्धा ॥४॥
'अट्टा अट्टियचित्ता'[5], जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति।
जह वेरग्गमुवगया, कम्मसमुग्गं विहाडेंति ॥५॥
जह रागेण कडाणं, कम्माणं पावगो फलविवागो।
जह य परिहीणकम्मा, सिद्धा सिद्धालयमुवेंति[6] ॥६॥

७५. तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ, तं जहा—अगारधम्मं[7] अणगारधम्मं च ॥

७६. अणगारधम्मो ताव—इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावाय-अदत्तादाण-मेहुण-परिग्गह-राईभोयणाओ वेरमण। अयमाउसो! अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते। एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए णिग्गंथे वा णिग्गंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवति ॥

७७. अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ, तं जहा—पंच अणुव्वयाइं, तिण्णि गुणव्वयाइं, चत्तारि सिक्खावयाइं। पंच अणुव्वयाइं, तं जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सदारसंतोसे, इच्छापरिमाणे। तिण्णि गुणव्वयाइं, तं जहा—'दिसिव्वयं, उवभोगपरिभोगपरिमाणं,

१. सं० पा०—मणुस्सेसु।
२. सं० पा०—देवेसु।
३. सारीरमाणुसाइं (क, ख, ग)।
४. देवभोगाइं (ख)।
५. अट्टदुहट्टियचित्ता (क, ख, वृपा); अट्टणियट्टियचित्ता (वृपा)।
६. वाचनान्तरे गाथाः क्रमान्तरेणाधीयन्ते तदन्ते च एवं खलु जीवा निस्सीलेत्याद्यधीयते—'एवं खलु जीवा निस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा अक्कोहा णिक्कोहा छीणक्कोहा' एवं मानाद्यभिलापका अपि अणुपुव्वेणं अणमिच्छमीससम्ममित्यादिना क्रमेण (वृ)।
७. आगारधम्मं (क, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणत्थदंडवेरमणं[1]। चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा—सामाइयं, देसावयासियं, पोसहोववासे, अतिहिसंविभागे। अपच्छिमा मारणंतिया संलेहणाझूसणाराहणा[2]। अयमाउसो! अगार-सामाइए धम्मे पण्णत्ते। एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणो-वासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ॥

धम्मपडिवत्ति-पदं

७८. तए णं सा महतिमहालिया मणूसपरिसा[3] समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ[4]-°चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण[5]-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता अत्थेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, अत्थेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवण्णा॥

परिसा-पडिगमण-पदं

७९. अवसेसा णं परिसा समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सुअक्खाए ते भंते! निग्गंथे पावयणे, °[6]सुपण्णत्ते ते भंते! निग्गंथे पावयणे, सुभासिए ते भंते! निग्गंथे पावयणे, सुविणीए ते भंते! निग्गंथे पावयणे, सुभाविए ते भंते! निग्गंथे पावयणे°, अणुत्तरे ते भंते! निग्गंथे पावयणे। धम्मं[7] णं आइक्खमाणा उवसमं आइक्खह, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह, वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह। णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए, किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं? एवं वदित्ता[8] जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया॥

कूणिए-पडिगमण-पदं

८०. तए णं से कूणिए राया भिंभसारपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ[9]-°चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सुयक्खाए ते भंते! निग्गंथे पावयणे[10], °सुपण्णत्ते ते भंते! निग्गंथे पावयणे, सुभासिए ते भंते! निग्गंथे पावयणे, सुविणीए ते भंते! निग्गंथे पावयणे, सुभाविए ते भंते! निग्गंथे पावयणे, अणुत्तरे ते भंते! निग्गंथे पावयणे। धम्मं णं आइक्खमाणा उवसमं आइक्खह, उवसमं आइक्ख-

---

१. अणत्थदंडवेरमणं दिसिव्वयं उवभोगपरिभोग-परिमाणं (क, ग)।
२. °जूसणा° (क)।
३. महच्चपरिसा (ग, वृ)।
४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
५. आयाहिणं (ख)।
६. सं० पा०—एवं सुपण्णत्ते सुभासिए सुविणीए सुभाविए।
७. धम्मो (क, ख, ग)।
८. वंदित्ता (क, ग)।
९. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
१०. सं० पा०—पावयणे जाव किमंग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणा विवेगं आइक्खइ, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खइ, वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खइ। णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए°, किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं ? एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

देवी-पडिगमण-पदं

८१. तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ[1]- °चित्तमाणंदियाओ पीइमणाओ परमसोमणस्सियाओ हरिसवस-विसप्पमाण °हियायाओ उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी— सुयक्खाए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे,[2] °सुपण्णत्ते ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुभासिए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुविणीए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुभाविए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, अणुत्तरे ते भंते ! निग्गंथे पावयणे। धम्मं णं आइक्खमाणा उवसमं आइक्खइ, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खइ, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खइ, वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खइ। णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए°, किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं ? एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूयाओ तामेव दिसं पडिगयाओ ॥

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

२. सं० पा०—पावयणे जाव किमंग ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओवाइय-पयरणं

गोयम-वण्णग-पदं

८२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे 'गोयमे गोत्तेणं'[1] सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वइररिसहणाराय-संघयणे कणग-पुलग-णिघस-पम्ह-गोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे[2] ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से[3] समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

८३. तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोऊहल्ले, उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोऊहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोऊहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

कम्मबंध-पदं

८४. जीवे णं भंते ! असंजए[4] अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते पावकम्मं अण्हाइ ? हंता अण्हाइ ।।

८५. जीवे णं भंते ! असंजए[5] °अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले° एगंतसुत्ते मोहणिज्जं पावकम्मं अण्हाइ ? हंता अण्हाइ ।।

८६. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे किं मोहणिज्जं कम्मं बंधइ ? वेय-णिज्जं कम्मं बंधइ ? गोयमा ! मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ, वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ, णण्णत्थ चरिममोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे वेयणिज्जं कम्मं बंधइ, णो मोहणिज्जं कम्मं बंधइ ।।

---

१. गोयमसगोत्ते णं (भ० १।६) ।

२. महातवे घोरतवे (क, ख, ग) । भगवत्यामपि (१।६) एतद् विशेषणं नास्ति ।

३. अतः परं भगवत्यां (१।६) निम्ननिर्दिष्टानि विशेषणान्यपि दृश्यन्ते—'चोद्दसपुव्वी चउनाणो-वगए सव्वक्खरसन्निवाती' ।

४. अस्संजए (क) ।

५. सं० पा०—असंजए जाव एगंतसुत्ते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेरइय-उववाय-पदं

८७. जीवे णं भंते ! असंजए[1] °अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले° एगंतसुत्ते उस्सण्णं[2] तसपाणघाई कालमासे कालं किच्चा णेरइएसु उववज्जइ ? हंता उववज्जइ ।।

वाणमंतर-उववाय-पदं

८८. जीवे णं भंते ! असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए पेच्च[3] देवे सिया ? गोयमा ! अत्थेगइया देवे सिया, अत्थेगइया णो देवे सिया ।।

८९. से केणट्ठे भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया देवे सिया ? अत्थेगइया णो देवे सिया ? गोयमा ! जे इमे जीवा गामागर-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह-सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए अकामछुहाए अकामबंभचेरवासेणं अकामअण्हाणग-सीयायव-दंसमसग-सेय-जल्ल-मल[4]-पंक-परितावेणं अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहिं[5] तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा 'जसेइ वा'[6] बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे ।।

९०. से जे इमे गामागर-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—अंडुबद्धगा णियलबद्धगा हडिबद्धगा चारगबद्धगा हत्थछिण्णगा पायछिण्णगा कण्णछिण्णगा नक्कछिण्णगा ओट्ठछिण्णगा जिब्भछिण्णगा सीसछिण्णगा मुखछिण्णगा मज्झछिण्णगा वइकच्छछिण्णगा हियउप्पाडियगा णयणुप्पाडियगा दसणुप्पाडियगा वसणुप्पाडियगा तंदुलछिण्णगा कागणिमंसक्खावियगा ओलंबियगा लंबियगा घंसियगा घोलियगा फालियगा[7] पीलियगा[8] सूलाइयगा सूलभिण्णगा खारवत्तिया वज्झवत्तिया सीहपुच्छियगा दवग्गिदड्ढगा पंकोसण्णगा पंके खुत्तगा वलयमयगा वसट्टमयगा णियाणमयगा अंतोसल्लमयगा गिरिपडियगा तरुपडियगा मरुपडियगा[9] गिरिपक्खंदोलगा तरुपक्खंदोलगा मरुपक्खंदोलगा[10] जलपवेसी जलणपवेसी विसभक्खियगा सत्थोवाडियगा वेहाणसिया गेद्धपट्ठगा कंतारमयगा दुब्भिक्खमयगा असंकिलिट्ठपरिणामा ते[11] कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई

१. सं० पा०—असंजए जाव एगंतसुत्ते ।
२. ओसण्णं (ग) ।
३. पेच्चा (क); पच्छा (ख) ।
४. मल्ल (क, ख, ग) ।
५. तेहिं (ख, ग, वृ) ।
६. जसे इ वा उट्ठाणेइ वा कम्मे इ वा (वृपा) ।
७. फोडियगा (ग) ।
८. × (वृ); पीलियगा (वृपा) ।
९. मरुपडियगा भरपडियगा (ग, वृपा) ।
१०. × (क, ख) ।
११. तं (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता ? गोयमा ! बारसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि। ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९१. से जे इमे गामागर[1]-॰णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह॰-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—पगइभद्दगा पगइउवसंता[2] पगइपतणुकोह-माणमायालोहा[3] मिउमद्दवसंपण्णा अल्लीणा[4] विणीया अम्मापिउसुस्सूसगा[5] अम्मापिऊणं[6] अणइक्कमणिज्जवयणा अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेण अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणा बहूइं[7] वासाइं आउयं पालेंति, पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु ॰[8]देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चउद्दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि। ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे॰ ॥

९२. से जाओ इमाओ गामागर[9]-॰णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह॰-सण्णिवेसेसु इत्थियाओ भवंति, तं जहा—अंतोअंतेउरियाओ गयपइयाओ मयपइयाओ बालविहवाओ छड्डियल्लियाओ माइरक्खियाओ पियरक्खियाओ भायरक्खियाओ[10] पइरक्खियाओ कुलघररक्खियाओ ससुरकुलरक्खियाओ[11] परूढणह-केस-कक्ख-रोमाओ[12] ववगयपुप्फगंधमल्लालंकाराओ अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल-पंक-परितावियाओ ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मंस-परिचत्तकयाहाराओ अप्पिच्छाओ अप्पारंभाओ अप्पपरिग्गहाओ अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभ-समारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणीओ अकामबंभचेरवासेणं तामेव पइसेज्जं णाइक्कमंति। ताओ णं इत्थियाओ एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणीओ बहूइं वासाइं ॰[13]आउयं पालेंति पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चउसट्ठिवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि। ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे॰॥

---

१. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु।
२. °उवसंतक्का (ग)।
३. पगइतणु° (क, ग)।
४. आलीणा (वृ); भद्दगा (वृपा)।
५. अम्मापिउण° (ख); अम्मापिऊण° (ग)।
६. अम्मापिईणं (क, ख, ग)।
७. बहु (क)।
८. सं० पा०—तं चेव सव्वं णवरं चउद्दस-वाससहस्साइं।
९. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु।
१०. भातिरक्खियाओ (क)।
११. 'मित्तनाइनिययसंबंधिरक्खियाओ' त्ति क्वचित् (वृ)।
१२. मंसुरोमाओ (वृपा)।
१३. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव चउसट्ठिवास-सहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९३. से जे इमे गामागर[1]-°णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणा-सम-संवाह°-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—दगबिइया दगतइया दगसत्तमा दग-एक्कारसमा गोयम-गोव्वइय-गिहिधम्म-धम्मचिंतग-अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढसावगप्पभितयो। तेसि णं मणुयाणं णो कप्पंति इमाओ नव रसविगईओ आहारेत्तए, तं जहा—खीरं दहिं णवणीयं सप्पि तेल्लं फाणियं महुं मज्जं मंसं। णण्णत्थ[2] एक्काए सरिसवविगईए। ते णं मणुया अप्पिच्छा °[3]अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणा बहूइं वासाइं आउयं पालेंति, पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! चउरासीइवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा? हंता अत्थि। ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा? णो इणट्ठे समट्ठे° ॥

जोइसिय-उववाय-पदं

९४. से जे इमे गंगाकूला[4] वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा—होत्तिया[5] पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई[6] हुंबउट्ठा[7] दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खाला दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा[8] कूलधमगा मिगलुद्धगा हत्थितावसा उद्दंडगा दिसापोक्खिणो वाकवासिणो[9] बिलवासिणो[10] जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा जलाभिसेयकढिणगाया[11] आयावणाहिं[12] पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा बहूइं वासाइं परियागं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। °[13]तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा? हंता अत्थि। ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा? णो इणट्ठे समट्ठे° ॥

---

१. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु।
२. अण्णत्थ (क)।
३. सं० पा०—तं चेव सव्वं णवरं चउरासीइ वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।
४. गंगाकूलक (ख)।
५. द्रष्टव्यं भगवतीसूत्रं (११।५६) तत् टिप्पणं च।
६. वालई (क)।
७. हुंपउट्ठा (क, ख)।
८. संखधम्मगा (वृ)।
९. वाकवासिणो अंबुवासिणो (क, ख, ग); 'वक्कलवासिणो' त्ति वल्कलवाससः (भ० वृत्तिपत्र ५१९)।
१०. वेलवासिणो (वृपा)।
११. °कढिणगायभूया (क, ख, ग, वृपा)।
१२. आयावणेहिं (ग)।
१३. सं० पा०—पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई सेसं तं चेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंदप्पिय-उववाय-पदं

९५. से जे इमे गामागर[1]-•णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा—कंदप्पिया कुक्कुइया मोहरिया गीयरइप्पिया नच्चणसीला। ते णं एएणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता[2] कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, •[3]तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा? हंता अत्थि। तेणं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा? णो इणट्ठे समट्ठे° ।।

परिवायग-चरिया-पदं

९६. से जे इमे गामागर[4]-•णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु परिव्वाया भवंति, तं जहा—संखा जोगी काविला भिउव्वा हंसा परमहंसा बहुउदगा कुलिव्वया[5] कण्हपरिव्वाया। तत्थ खलु इमे अट्ठ माहणपरिव्वाया भवंति, तं जहा—

कंडू[6] य करकंटे य, अंबडे य परासरे। कण्हे दीवायाणे चेव, देवगुत्ते य नारए ।।१।।

तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तिय-परिव्वाया भवंति, तं जहा—

सीलई मसिहारे[7], नग्गई भग्गई ति य। विदेहे राया, रामे बले ति य ।।२।।

९७. ते णं परिव्वाया रिउवेद-यजुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा पारगा धारगा सडंगवी सट्ठितंतविसारया संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे अण्णेसु य बहूसु 'बंभण्णएसु य सत्थेसु'[8] सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था ।।

९८. ते णं परिव्वाया दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणा पण्णवेमाणा परूवेमाणा विहरंति। जं णं अम्हं किं चि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए य पक्खालियं समाणं सुई भवइ। एवं खलु अम्हे चोक्खा चोक्खायारा सुई सुइसमायारा भवित्ता अभिसेयजलपूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गमिस्सामो ।।

९९. तेसि णं परिव्वायाणं णो कप्पइ अगडं वा तलायं वा नइं वा वाविं वा पुक्खरिणिं वा दीहियं वा गुंजालियं वा सरं[9] वा सागरं वा ओगाहित्तए, णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं ।।

१००. (तेसि णं परिव्वायाणं ?) णो कप्पइ सगडं वा[10] •रहं वा जाणं वा जुग्गं वा

१. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।
२. °अपडिक्कंता (ख) ।
३. सं० पा०—सेसं तं चेव णवरं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियाइं ठिई ।
४. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।
५. कुडिव्वया (ख, ग) ।
६. कन्ने (क) ।
७. समंहारे (क); ससिहारे (ग) ।
८. वाचनान्तरे—परिव्वायएसु य नएसु (वृ) ।
९. सरिसं (वृपा) ।
१०. सं० पा०—सगडं वा जाव संदमाणियं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिल्लि वा थिल्लि का पवहणं वा सीयं वा° संदमाणियं वा दुरुहित्ता णं गच्छित्तए ।।

१०१. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा गोणं वा महिसं वा खरं वा दुरुहित्ता णं गमित्तए, णण्णत्थ बलाभिओगेणं ।।

१०२. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ नडपेच्छा इ वा[1] °णट्टगपेच्छा इ वा जल्ल-पेच्छा इ वा मल्लपेच्छा इ वा मुट्ठियपेच्छा इ वा वेलंबगपेच्छा इ वा पवगपेच्छा इ वा कहगपेच्छा इ वा लासगपेच्छा इ वा आइक्खगपेच्छा इ वा लंखपेच्छा इ वा मंखपेच्छा इ वा तूणइल्लपेच्छा इ वा तुंबवीणिपेच्छा इ वा भुयगपेच्छा इ वा° मागहपेच्छा इ वा पेच्छित्तए ।।

१०३. तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ हरियाणं लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा 'लूसणया वा'[2] उप्पाडणया वा करित्तए ।।

१०४. तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ इत्थिकहा इ वा भत्तकहा इ वा रायकहा इ वा देसकहा इ वा चोरकहा इ वा जणवयकहा इ वा अणत्थदंडं[3] करित्तए ।।

१०५. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयपायाणि वा तंबपायाणि वा तउय-पायाणि वा सीसगपायाणि वा रयय-जायरूव-काय-वेडंतिय-वट्टलोह-कंसलोह-हारपुडय-रीतिया-मणि-संख-दंत-चम्म-चेल-सेल-पायाणि वा अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं महद्धण-मोल्लाइं[4] धारित्तए, णण्णत्थ अलाउपाएण वा दारुपाएण वा मट्टियापाएण वा ।।

१०६. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयबंधणाणि वा[5] °तंब-बंधणाणि वा तउय-बंधणाणि वा सीसगबंधणाणि वा रयय-जायरूव-काय-वेडंतिय-वट्टलोह-कंसलोह-हारपुडय-रीतिया-मणि-संख-दंत-चम्म-चेल-सेल-बंधणाणि वा अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[6] °महद्धण-मोल्लाइं[7] धारित्तए ।।

१०७. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ णाणाविहवण्णरागरत्ताइं वत्थाइं धारित्तए, णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए ।।

१०८. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ हारं वा अद्धहारं वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणालिं वा मुरविं वा कंठमुरविं वा पालंबं वा तिसरयं वा कडिसुत्तं वा दसमुद्दिआणंतगं वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अंगयाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा मउडं वा चूलामणिं वा पिणिद्धत्तए, णण्णत्थ एगेणं तंविएणं पवित्तएणं ।।

१०९. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए, णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं ।।

११०. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अगलुएण वा चंदणेण वा कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए, णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए ।।

---

१. सं० पा०—नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छा ।

२. × (वृ); लूसणया वा (वृपा) ।

३. अणट्ठादंडं (ग) ।

४,७. बहुमुल्लाणि (क, ख, ग); आचारचूलायां (६।१३) 'विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं' इति पाठो विद्यते ।

५. सं० पा०—अयबंधणाणि वा जाव महद्धण-मोल्लाइं ।

६. पुस्तकान्तरे समग्रमिदं सूत्रद्वय (१०५, १०६) मस्त्येव (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१११. तेसि णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए पत्थए जलस्स पडिगाहित्तए, से वि य वहमाणए णो चेव णं अवहमाणए, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे, से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे, से वि य पिबित्तए णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठाए सिणाइत्तए वा ।।

११२. तेसिं णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए अद्धाढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए[1] •णो चेव णं अवहमाणए, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे, से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य दिण्णे° णो चेव णं अदिण्णे, से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठाए णो चेव णं पिबित्तए सिणाइत्तए वा ।।

११३. तेसि णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए[2] •णो चेव णं अवहमाणए, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे, से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य दिण्णे° णो चेव णं अदिण्णे, से वि य सिणाइत्तए णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठाए पिबित्तए वा ।।

११४. ते णं परिव्वायगा एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहिं तेसिं गई,•[3]तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे° ।।

अम्मड-अंतेवासि-पदं

११५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसया गिम्ह-कालसमयंसि जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानईए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ णयराओ पुरिमतालं णयरं संपट्ठिया विहाराए ।।

११६. तए णं तेसिं परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे ।।

११७. तए णं ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा-पारब्भमाणा उदगदातारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इसीसे अगामियाए[4] •छिण्णावायाए दीहमद्धाए° अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए[5] •अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे° झीणे । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं

१,२. सं० पा०—वहमाणए जाव णो ।

३. सं० पा०—दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता सेसं तं चेव ।

४. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए ।

५. सं० पा०—उदए जाव झीणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमीसे अगामियाए[१] °छिण्णावायाए दीहमद्धाए° अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे अगामियाए[२] °छिण्णावायाए दीहमद्धाए° अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, करेत्ता उदगदातारमलभमाणा दोच्चंपि अण्णमण्णं सद्दावेंति,सद्दावेत्ता एवं वयासी—इहण्णं देवाणुप्पिया ! उदगदातारो णत्थि तं णो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए[३], अदिण्णं साइज्जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे[४] भविस्सइ । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडए य कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता गंगं महाणइं ओगाहित्ता वालुयासंथारए संथरित्ता संलेहणा-झूसियाणं भत्त-पाण-पडियाइक्खियाणं पाओवगयाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए त्ति कट्टु अण्ण-मण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तिदंडए य[५] °कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य° एगंते एडेंति, एडेत्ता गंगं महाणइं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता वालुयासंथारए संथरंति, संथारित्ता वालुयासंथारयं दुरुहंति, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहा संपलियंकनिसण्णा करयल[६]-°परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु एवं वयासी—णमोत्थु णं अरहंताणं जाव[७] सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं । णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[८] संपाविउकामस्स । णमोत्थु णं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स । पुव्विं णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए 'थूलए पाणाइवाए'[९] पच्चक्खाए जावज्जीवाए, मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए । इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, [१०]°सव्वं मुसावायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं अदिण्णादाणं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं मेहुणं पच्चक्खामो जावज्जीवाए°, सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं अब्भक्खाणं पेसुण्णं परपरिवायं अरइरइं मायामोसं मिच्छादंसणसल्लं 'अकरणिज्जं जोगं'[११] पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं—चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए । जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुण्णं मणामं पेज्जं[१२] वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं[१३] मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं दंसा, मा णं मसगा, मा णं वाइय-

१,२. सं०पा०—अगामियाए जाव अडवीए ।
३. भुंजित्तए (वृपा) ।
४. तववयलोवे (क) ।
५. सं० पा०—तिदंडए य जाव एगंते ।
६. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।
७,८. ओ० सू० २१ ।
९. थूलगपाणाइवाए (क) ।
१०. सं० पा०—एवं जाव सव्वं परिग्गहं ।
११. × (क, ख, ग) ।
१२. थेज्जं (क, ख, वृपा) ।
१३. रयणकरंडग° (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पित्तिय-सिंभिय-सण्णिवाइय[1] विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयंपि णं चरिमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु संलेहणा-झूसिया[2] भत्तपाणपडियाइक्खिया पाओवगया कालं अणवकंखमाणा विहरंति। तए णं ते परिव्वाया बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा। तहिं तेसिं गई, •[3]तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता° ? गोयमा! दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ? हंता अत्थि। ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा ? हंता अत्थि॥

अम्मड-चरिया-पदं

११८. बहुजणे णं भंते! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ। से कहमेयं भंते! एवं खलु गोयमा! जं णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[4] •एवं भासइ एवं पण्णवेइ° एवं परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे[5] •णयरे घरसए आहारमाहरेइ,° घरसए वसहिं उवेइ, सच्चे णं एसमट्ठे अहंपि णं गोयमा! एवमाइक्खामि[6] •एवं भासामि एवं पण्णवेमि एवं° परूवेमि एवं खलु अम्मडे परिव्वायए[7] •कंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए° वसहिं उवेइ॥

११९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए[8] •कंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए° वसहिं उवेइ ? गोयमा! अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए[9] •पगइउवसंतयाए पगइपतणुकोहमाणमायालोहयाए मिउमद्दवसंपण्णयाए अल्लीणयाए° विणीययाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं 'अण्णया कयाइ'[10] तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओ-वसमेणं ईहापूह[11]-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धीए[12] वेउव्वियलद्धीए ओहिणाण-लद्धी[13] समुप्पण्णा। तए णं से अम्मडे परिव्वायए तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउं कंपिल्लपुरे णयरे घरसए[14] •आहारमाहरेइ,

---

१. इह प्रथमाबहुवचनलोपो विद्यते।
२. झूसणा झूसिया (वृपा)।
३. सं० पा०—दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता परलोगस्स आराहगा सेसं तं चेव।
४. सं० पा०—एवमाइक्खइ जाव एवं।
५. सं० पा०— कंपिल्लपुरे जाव घरसए।
६. सं० पा०—एवमाइक्खामि जाव परूवेमि।
७,८. सं० पा०—परिव्वायए जाव वसहिं।
९. सं० पा०—पगइभद्दयाए जाव विणीययाए। वृत्तिकृता ९१ सूत्रे क्वचित् 'भद्दगा' इत्युल्लिखितम्। प्रस्तुतसूत्रस्य पूर्तिर्वृत्तौ कृतास्ति, तत्र 'भद्दयाए' इति पाठः स्वीकृतः, इत्यस्ति समीक्षास्पदम्।
१०. × (क, ख, ग)।
११. ईहाबूहे (ग); ईहाबूह (वृ)।
१२. वाचनान्तरे 'वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी' त्ति पठ्यते (वृ)।
१३. ओहिणाणलद्धीए (क)।
१४. सं० पा०—घरसए जाव वसहिं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घरसए° वसहिं उवेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अम्मडे[1] परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए[2] °आहारमाहरेइ, घरसए° वसहिं उवेइ ॥

१२०. पहू णं भंते ! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे। गोयमा ! अम्मडे णं परिव्वायए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे[3] °उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंध-मोक्ख-कुसले असहेज्जदेवासुरणाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल[4]-गंधव्व-महोरगाइ-एहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे इणमो निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंज-पेमाणुरागरत्ते 'अयमाउसो ! निग्गंथे'[5] पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे चउद्दस-अट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुच्छणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएणं पीढफलगसेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं° अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१२१. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए[6] °मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए° ॥

१२२. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि जलं सयराहं उत्तरित्तए, णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं ॥

१२३. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ सगडं वा[7] °रहं वा जाणं वा जुग्गं वा गिल्लिं वा थिल्लिं वा पवहणं वा सीयं वा संदमाणियं वा दुरुहित्ताणं गच्छित्तए ॥

१२४. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा गोणं वा महिसं वा खरं दुरुहित्ताणं गमित्तए, णण्णत्थ बलाभिओगेणं ॥

१२५. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा णट्टगपेच्छाइ वा जल्ल-पेच्छाइ वा मल्लपेच्छाइ वा मुट्ठियपेच्छाइ वा वेलंबगपेच्छाइ वा पवगपेच्छाइ वा कहग-पेच्छाइ वा लासगपेच्छाइ वा आइक्खगपेच्छाइ वा लंखपेच्छाइ वा मंखपेच्छाइ वा तूणइल्लपेच्छाइ वा तुंववीणियपेच्छाइ वा भुयगपेच्छाइ वा मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए ॥

१२६. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ हरियाणं लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए ॥

---

१. क्वचित् 'अम्बडे' दृश्यते तदयुक्तम् (वृ) ।

२. सं० पा०—घरसए जाव वसहिं ।

३. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, णवरं ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघरदारपवेसी (क्वचित् 'चियत्तघरंतेउरपवेसी' ति—वृ) एयं ण वुच्चइ ।

४. क्वचित् 'गरुडे' त्ति नाधीयते (वृ) ।

५. क्वचित् 'इणमो निग्गंथे' इति दृश्यते (वृ) ।

६. सं० पा०—जावज्जीवाए जाव परिग्गहे णवरं सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए ।

७. सं० पा०—सगडं वा तं चेव भाणियव्वं जाव णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

१२७. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा राय-कहाइ वा देसकहाइ वा चोरकहाइ वा जणवयकहाइ वा अणत्थदंडं करित्तए ।।

१२८. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ अयपायाणि वा तंवपायाणि वा तउयपायाणि वा सीसगपायाणि वा रयय-जायरूव-काय-वेडंतिय-वट्टलोह-कंसलोह-हारपुडय-रीतिया-मणि-संख-दंत-चम्म-चेल-सेल-पायाणि वा अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं महद्धण-मोल्लाइं धारित्तए, णण्णत्थ अलाउपाएण वा दारुपाएण वा मट्टियापाएण वा ।।

१२९. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ अयबंधणाणि वा तंवबंधणाणि वा तउयबंधणाणि वा सीसगबंधणाणि वा रयय-जायरूव-काय-वेडंतिय-वट्टलोह-कंसलोह-हारपुडय-रीतिया-मणि-संख-दंत-चम्म-चेल-सेल-बंधणाणि वा अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं महद्धणमोल्लाइं धारित्तए ।।

१३०. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ णाणाविहवण्णरागरत्ताइं वत्थाइं धारित्तए, णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए ।।

१३१. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ हारं वा अद्धहारं वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा मुरविं वा कंठमुरविं वा पालंबं वा तिसरयं वा कडिसुत्तं वा दसमुद्दिआणंतगं वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अंगयाणि वा केऊराणि वा कुंड-लाणि वा मउडं वा चूलामणिं वा पिणिद्धत्तए, णण्णत्थ एगेणं तंबिएणं पवित्तएणं ।।

१३२. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए, णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं ।।

१३३. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ अगलुएण वा चंदणेण वा कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए°, णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए ।।

१३४. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मीस-जाएइ वा अज्झोयरएइ वा पूइकम्मेइ वा कीयगडेइ वा पामिच्चेइ वा अणिसिट्ठेइ वा अभिहडेइ वा 'ठवियएइ वा'[1] 'रइयएइ वा'[2] कंतारभत्तेइ वा दुब्भिक्खभत्तेइ वा गिलाण-भत्तेइ वा वद्दलियाभत्तेइ वा पाहुणगभत्तेइ वा भोत्तए वा पायए वा ।।

१३५. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणेइ वा[3] °कंदभोयणेइ वा फलभोयणेइ वा हरियभोयणेइ वा° बीयभोयणेइ वा भोत्तए वा पायए वा ।।

१३६. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स चउव्विहे अणट्ठादंडे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, तं जहा—अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे ।।

१३७. अम्मडस्स कप्पइ मागहए अद्धाढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए णो चेव णं अवहमाणए[4], °से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे°, से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य सावज्जे त्ति काउं[5] णो चेव णं अणवज्जे, से वि य जीवा ति काउं[6] णो चेव णं अजीवा, से वि य दिण्णे

---

१. ठवइत्तए वा (ख) ।

२. रइत्तए वा (क, ख) ; × (ग) ।

३. सं० पा०—मूलभोयणे इ वा जाव बीयभोयणे ।

४. सं० पा०—अवहमाणए जाव से ।

५. कट्टुं (ग, वृ) ।

६. कट्टुं (क, ग, वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णो चेव णं अदिण्णे, से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिबित्तए वा णो चेव णं सिणाइत्तए ॥

१३८. अम्मडस्स कप्पइ मागहए[1] आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए से वि य वहमाणए[2] °णो चेव णं अवहमाणए, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे, से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य सावज्जे त्ति काउं णो चेव णं अणवज्जे, से वि य जीवा ति काउं णो चेव णं अजीवा, से वि य दिण्णे° णो चेव णं अदिण्णे, से वि य सिणाइत्तए णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिबित्तए वा ॥

१३९. अम्मडस्स णो कप्पइ अण्णउत्थिए[3] वा अण्णउत्थियदेवयाणि वा अण्णउत्थिय-परिग्गहियाणि 'वा चेइयाइं'[4] वंदित्तए वा णमंसित्तए वा[5] °पूइत्तए वा सक्कारित्तए वा सम्माणित्तए वा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं° पज्जुवासित्तए वा, णण्णत्थ 'अरहंतेहिं वा'[6] ॥

१४०. अम्मडे णं भंते ! परिव्वायए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! अम्मडे णं परिव्वायए उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासय-परियायं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा[7] बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं अम्मडस्स वि देवस्स दससागरोवमाइं ठिई।

दढपइण्ण-पदं

१४१. से णं भंते ! अम्मडे देवे ततो[8] देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्ख-

---

१. मागहए य (क)।

२. सं० पा०—वहमाणए जाव णो।

३. अण्णउत्थिया (ख)।

४. अरहंतचेइयाइं (क); अरहंतचेइयाणि वा (ग)।

५. सं० पा०—णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए।

६. अरहंतेहिं वा अरहंतचेइयाइं वा (क,ख, ग); वृत्तौ 'णण्णत्थ अरहंतेहिं वा' एतदेव व्याख्यातमस्ति 'अरहंत चेइयाइं वा' इति व्याख्यातं नास्ति। आदर्शेषु एतद् वाक्यं लभ्यते। 'अण्णत्थ' योगे पंचमी विभक्तिर्भवति। तदपेक्षया 'अरहंतचेइयाइं वा' इति वाक्यमशुद्धमपि विद्यते।

७. भगवत्याः एकादशशतके (१६९) औपपातिकस्य अम्मडप्रकरणस्य सूचनमस्ति तथा वृत्तौ (पत्र ५४९) स पाठः उद्धृतोस्ति—यथौपपातिके अम्बडोधीतस्तथायमिह वाच्यः, तत्र च यावत्करणादेतत्सूत्रमेवं दृश्यं—'गहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूइं जोयणकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदे कप्पे वीइवइत्त' त्ति। किन्तु प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु वृत्तौ च एष पाठः सम्प्रति नैव लभ्यते। केनापि कारणेन त्रुटितो भूदिति सम्भाव्यते।

८. ताओ (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एणं अणंतरं चयं[1] चइत्ता कहिं गच्छिहिति[2] ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं दित्ताइं वित्ताइं वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइं बहुधण-जायरूव[3]-रययाइं आओग-पओग-संपउत्ताइं विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणाइं बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु[4] पुमत्ताए[5] पच्चायाहिति ॥

१४२. तए[6] णं तस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अम्मापिईणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ ॥

१४३. से णं तत्थ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण[7] राइंदियाणं वीइक्कंताणं[8] सुकुमालपाणिपाए[9] °अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे लक्खण वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे° ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे दाराए पयाहिति ॥

१४४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं काहिंति, तइय-दिवसे[10] चंदसूरदंसणियं काहिंति, छट्ठे दिवसे जागरियं[11] काहिंति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते णिव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहे[12] अम्मापियरो इमं[13] एयारूवं गोण्णं[14]

१. चइं (ग) ।

२. गमिहिति (ग) ।

३. तत्तय (क) ।

४. कुले (वृपा) ।

५. पुत्तत्ताए (क) ।

६. प्रस्तुतागमे रायपसेणइयसूत्रे च दृढप्रतिज्ञस्य प्रकरणं प्रायः समानमस्ति, केवलं पाठरचनायाः किञ्चित्-किञ्चिद् भेदो दृश्यते ।

७. अद्धट्ठमाण य (ख) ।

८. आदर्शेषु 'दाराए' इति कर्तृपदं लभ्यते । वस्तुतः इदं कर्मपदं स्यादिति युक्तमस्ति 'पयाहिति' इति क्रियापदस्य सन्दर्भे तथा स्थानाङ्ग (९।६२) रायपसेणइय (८०१) सूत्रयोः साक्ष्येण च अस्य कर्मपदस्य पुष्टि र्जायते । तदेवं पाठरचना एवं भवति—वीइक्कंताणं सा सुकुमालपाणिपायं···सुरूवं दारयं पयाहिति ।

९. सं० पा०—सुकुमालपाणिपाए जाव ससिसोमाकारे ।

१०. बिइय० (ग); 'चंदसूरदंसणियं' तृतीय दिवसस्य उत्सवो विद्यते । विपाकवृत्तौ (२।४७) एतत् संवादी उल्लेखोपि लभ्यते, यथा—'चंदसूरपासणियं व' त्ति अन्वर्थानुसारिणं तृतीय दिवसोत्सवम् । रायपसेणइय (८०२) सूत्रस्य 'दढपइण्णा' प्रकरणे 'ततियदिवसे' इति पाठोस्ति, नायाधम्मकहाओ (१।१।८१) सूत्रेपि इत्थमेवास्ति, तेन 'बिइय' इति अशुद्धं प्रतिभाति ।

११. धम्मजागरियं (क) ।

१२. बारसाहे दिवसे (क, ख, ग, वृ); विपाकसूत्रे (२।४८) 'संपत्ते बारसाहे' पाठोस्ति । केषुचिदादर्शेषु 'संपत्ते बारसमे दिवसे' इति पाठोस्ति । 'बारसाहे दिवसे' अनयोः संयुक्तरूपं प्रतिभाति । वृत्तिकारस्य सम्मुखे एष एव पाठ आसीत् । अस्य पाठस्य वृत्तिर्यथा तथा कृतास्ति । यथा—तत्र 'बारसाहे दिवसे' त्ति द्वादशाख्ये दिवसे इत्यर्थः, अथवा द्वादशानामह्नां समाहारो द्वादशाहं तस्य दिवसो येनासौ पूर्णो भवतीति द्वादशाहदिवसस्तत्र (पृ० १९३) वस्तुतः 'बारसमे दिवसे', अथवा 'बारसाहे' अनयोर्मध्ये एकेन पाठेन भवितव्यम् । अस्माकं सम्मुखे एका स्तबकप्रतिरस्ति तस्यां केवलं 'बारसाहे' पाठोस्ति । रायपसेणइयसूत्रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणणिप्फण्णं णामधेज्जं काहिंति—जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भत्थंसि चेव समाणंसि धम्मे दढापइण्णा[1], तं होउ[2] णं अम्हं दारए दढपइण्णे णामेणं। तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेहिंति दढपइण्णत्ति[3]॥

१४५. तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं[4] जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण[5]-णक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेहिंति॥

१४६. तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहाविहिति सिक्खाविहिति, तं जहा—१. लेहं २. गणियं ३. रूवं ४. णट्टं ५. गीयं ६. वाइयं ७.

---

(८०२) पि 'बारसमे दिवसे' पाठोस्ति। अस्माभिरत्र स एव स्तबकप्रतिगतः पाठः स्वीकृतः।

१३. अयं (वृपा)।

१४. गोण्णं (क)।

१. दढपइण्णा (क, ख, ग)।

२. होऊ (क, ख)।

३. इह स्थाने पुस्तकान्तरे 'पंच धाइपरिग्गहिए' इत्यादि ग्रन्थो दृश्यते, स च प्रागवद् व्याख्येयः, किंचिच्च तस्य व्याख्यायते—'हत्था हत्थं संहरिज्जमाणे' त्ति हस्ताद्धस्तान्तरं संह्रियमाणो—नीयमानः, अङ्कादङ्कं परिभुज्यमानः—उत्सङ्गादुत्सङ्गान्तरं परिभोज्यमानः उत्सङ्गस्पर्शसुखमनुभाव्यमानः, 'उवनच्चिज्जमाणे' त्ति उपनर्त्यमानो नर्तनं कार्यमाण इत्यर्थः, उपगीयमानः—तथाविधबालोचितगीतविशेषैर्गीयमानो गाप्यमानो वा, 'उवलालिज्जमाणे' त्ति उपलाल्यमानः क्रीडादिलालनया, 'उवगूहिज्जमाणे' त्ति उपगूह्यमानः आलिङ्ग्यमानः 'अवयासिज्जमाणे' त्ति अपत्रास्यमानः अपगतत्रासः क्रियमाणः, अपयास्यमानो वा उत्कण्ठातिरेकान्निर्दयालिङ्गनेनापीड्यमानः, अप्रयास्यमानो वा समीहितपूरणेन प्रयासमकार्यमाणः, 'परिवंदिज्जमाणे' त्ति परिवन्द्यमानः स्तूयमानः परिचुम्ब्यमानः—इति व्यक्तं, 'परंगिज्जमाणे' त्ति प्ररङ्ग्यमाणः चङ्क्रम्यमाणः, एतेषां च संह्रियमाणादिपदानां द्विर्वचनाभीक्ष्ण्यविवक्षयेति 'निव्वायनिव्वाघायं' त्ति निर्वातं निर्व्याघातं च यद् गिरिकन्दरं तदालीन इति (वृ)। भगवतीवृत्तावपि (पत्र ५४५) औपपातिकस्य एष पाठः उद्धृतोस्ति—'जहा दढपइन्ने' त्ति औपपातिके दृढप्रतिज्ञोधीतस्तथायं वक्तव्यः, तच्चैवं—'मज्जणधाईए मंडणधाईए कीलावणधाईए अंकधाइए' इत्यादि, 'निव्वायनिव्वाघायंसि' इत्यादि च वाक्यमिहैवं संबन्धनीयं 'गिरिकंदरमल्लीणेव्व चंपगपायवे निव्वायनिव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ' त्ति 'परंगामणं' ति भूमौ सप्पणं 'पयचंकामणं' त्ति पादाभ्यां सञ्चारणं 'जेमामणं' ति भोजनकारणं 'पिंडवद्धणं' ति कवलवृद्धिकारणं 'पज्जपावणं' ति प्रजल्पनकारणं 'कण्णवेहणं' ति प्रतीतं 'संवच्छरपडिलेहणं' ति वर्षग्रंथिकरणं 'चोलोयणं, ति चूडाधरणं 'उवणयणं' ति कलाग्राहणं 'गब्भाहाणजम्मणमाइयाइं कोउयाइं करेंति' त्ति गर्भाधानादिषु यानि कौतुकानि—रक्षाविधानादीनि तानि गर्भाधानादीन्येवोच्यन्त इति गर्भाधानजन्मादिकानि कौतुकानीत्येवं समानाधीकरणतया निर्देशः कृतः। द्रष्टव्यं रायपसेणइयसूत्रस्य ८०३,८०४ सूत्रद्वयम्।

४. साइरेगट्ठवरिसजायगं (वृ)।

५. करण-दिवस (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरगयं ८. पुक्खरगयं ९. समतालं १०. जूयं[1] ११. जणवायं[2] १२. पासगं १३. अट्ठावयं १४. पोरेकव्वं[3] १५. दगमट्टियं १६. अण्णविहिं १७. पाणविहिं १८. वत्थविहिं १९. विलेवणविहिं[4] २०. सयणविहिं २१. अज्जं २२. पहेलियं २३. मागहियं २४. गाहं २५. गीइयं २६. सिलोयं २७. हिरण्णजुत्तिं २८. सुवण्णजुत्तिं[5] २९. गंधजुत्तिं[6] ३०. चुण्णजुत्तिं ३१. आभरणविहिं ३२. तरुणीपडिकम्मं ३३. इत्थिलक्खणं ३४. पुरिसलक्खणं ३५. हयलक्खणं ३६. गयलक्खणं ३७. गोणलक्खणं ३८. कुक्कुडलक्खणं ३९. छत्तलक्खणं ४०. दंडलक्खणं ४१. असिलक्खणं ४२. मणिलक्खणं ४३. काकणिलक्खणं[7] ४४. वत्थुविज्जं ४५. खंधावारमाणं[8] ४६. नगरमाणं ४७. वूहं ४८. पडिवूहं ४९. चारं ५०. पडिचारं ५१. चक्कवूहं ५२. गरुलवूहं ५३. सगडवूहं ५४. जुद्धं ५५. निजुद्धं ५६. जुद्धाइ-जुद्धं ५७. मुट्ठिजुद्धं ५८. बाहुजुद्धं ५९. लयाजुद्धं ६०. ईसत्थं ६१ छरुप्पवादं[9] ६२. धणु-वेदं[10] ६३. हिरण्णपागं ६४. सुवण्णपागं ६५. वट्टखेड्डं[11] ६६. सुत्तखेड्डं ६७. णालियाखेड्डं ६८. पत्तच्छेज्जं ६९. कडगच्छेज्जं ७०. सज्जीवं ७१. निज्जीवं ७२. सउणरुयं—इति सेहा-वित्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिईणं उवणेहिति ॥

१४७. तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेहिंति सम्माणेहिंति, सक्कारित्ता सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसज्जेहिंति ॥

१४८. तए णं से दढपइण्णे दारए[12] बावत्तरिकलापंडिए नवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसदेसी-भासाविसारए गीयरई गंधव्वणट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहु-जोही बाहुप्पमद्दी वियालचारी साहसिए अलंभोगसमत्थे यावि भविस्सइ ॥

१४९. तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो बावत्तरिकलापंडियं[13] °नवंगसुत्तपडि-बोहियं अट्ठारसदेसी-भासाविसारयं गीयरइं गंधव्वणट्टकुसलं हयजोहिं गयजोहिं रहजोहिं बाहुजोहिं बाहुप्पमद्दिं वियालचारिं साहसियं° अलंभोगसमत्थं च वियाणित्ता विउलेहिं अण्णभोगेहिं पाणभोगेहिं लेणभोगेहिं वत्थभोगेहिं सयणभोगेहिं कामभोगेहिं उवणि-मंतेहिंति ॥

१५०. तए णं से दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं[14] °पाणभोगेहिं लेणभो-गेहिं वत्थभोगेहिं° सयणभोगेहिं कामभोगेहिं णो सज्जिहिति णो रज्जिहिति णो गिज्झि-

---

१. दूयं (ख)।
२. जणवयं (ख, ग)।
३. पुरेकव्वं (ग)।
४. लेणविहिं (क); लेणविहिं विलेवणविहिं (ख)।
५. × (क, ख, ग)।
६. × (क)।
७. कागिणि° (क)।
८. खंधारमाणं (क, ग)।
९. छरुप्पवाहं (क)।
१०. धणुव्वेहं (क)।
११. चक्खेड्डं (ख); बंधुखेड्डं (ख); पब्भखेड्डं (ग)।
१२. 'विन्नयपरिणयमेत्ते' त्ति क्वचित् (वृ)।
१३. सं० पा०—°पंडियं जाव अलंभोगसमत्थं।
१४. सं० पा०—अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिति णो मुज्झिहिति[1] णो अज्झोववज्जिहिति। से जहाणामए उप्पलेइ वा पउमेइ वा कुमुएइ वा नलिणेइ वा सुभगेइ वा सुगंधिएइ[2] वा पोंडरीएइ वा महापोंडरीएइ वा सयपत्तेइ वा सहस्सपत्तेइ वा[3] पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे णोवलिप्पिहिति कामरएणं णोवलिप्पिहिति भोगरएणं णोवलिप्पिहिति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं ॥

१५१. से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति ॥

१५२. से[4] णं भविस्सइ अणगारे भगवंते इरियासमिए[5] °भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिया-समिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए° गुत्तबंभयारी ॥

१५३. तस्स णं भगवओ एएणं विहारेणं विहरमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ॥

१५४. तए णं से दढपइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए[6] केसलोए बंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा[7] कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लद्धावलद्धं परेहिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ 'तज्जणाओ तालणाओ'[8] परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति तमट्ठमाराहित्ता चरिमेहिं उस्सास-णिस्सासेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥

देवकिब्बिसिय-उववाय-पदं

१५५. सेज्जे इमे गामागर[9] °णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा—आयरियपडिणीया उवज्झायपडिणीया तदुभयपडिणीया कुलपडिणीया गणपडिणीया आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारगा अवण्णकारगा अकित्तिकारगा बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा[10] विहरित्ता बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता[11] कालमासे कालं किच्चा

---

१. × (क, ख, वृ)।

२. सुगंधेति (क)।

३. वा सयसहस्सपत्ते इ वा (क, ख, ग); 'सयसहस्सपत्ते इ वा' एष पाठः चिन्तनीयोस्ति प्रायः 'सहस्सपत्ते' इत्येव पाठो दृश्यते। शतसहस्रपत्रं इति पदं विश्रुतं नास्ति।

४. प्रस्तुतसूत्रे आदर्शेषु 'गुत्तबंभयारी' इति पर्यन्तः पाठो लभ्यते। १६४ सूत्रे पाठः किञ्चिद् विस्तृतोस्ति। अतः द्वयोरपि संक्षिप्तपाठयोः संकेतौ भिन्नौ वर्तेते, तेनैव पाठयोः पूर्त्तिभिन्न-स्थलाभ्यां कृतास्ति।

५. सं० पा०—इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

६. अदंतधावणए (क)।

७. फलहकसेज्जा (क, ख)।

८. तालणाओ तज्जणाओ (क, ख, ग)

९. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु

१०. उप्पाएमाणा (क, ख)।

११. °अपडिक्कंता (ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेणं लंतए कप्पे देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, [1]°तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! तेरससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा? हंता अत्थि। तेणं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा? णो इणट्ठे समट्ठे।°

सहस्सार-उववाय-पदं

१५६. सेज्जे इमे सण्णि-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया पज्जत्तया भवंति, तं जहा—जलयरा थलयरा खहयरा। तेसि णं अत्थेगइयाणं सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं[2] ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणाणं सण्णीपुव्वजाइ-सरणे समुप्पज्जई॥

१५७. तए णं ते समुप्पण्णजाइ-सरणा समाणा सयमेव पंचाणुव्वयाइं[3] पडिवज्जंति, पडिवज्जित्ता बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणा बहूइं वासाइं आउयं पालेंति, पालेत्ता भत्तं पच्चक्खंति, पच्चक्खित्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, [4]°तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा? हंता अत्थि! ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा? हंता अत्थि°॥

आजीवयाणं-अच्चुय-उववाय-पदं

१५८. से जे इमे गामागर[5]-°णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु आजीवया भवंति, तं जहा—दुघरंतरिया तिघरंतरिया सत्तघरंतरिया उप्पलवेंटिया घरसमुदाणिया विज्जुयंतरिया उट्टियासमणा। ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, [6]°तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा? हंता अत्थि। ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा? णो इणट्ठे समट्ठे°॥

समणाणं आभिओगिय-उववाय-पदं

१५९. सेज्जे इमे गामागर[7]-°णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-

---

१. सं० पा०—तेरस सागरोवमाइं ठिई अणाराहगा सेसं तं चेव।
२. खओवसमएणं (क)।
३. पंचणुव्वयाहिं (क)।
४. सं० पा०—अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता परलोगस्स आराहगा सेसं तं चेव।
५. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु।
६. सं० पा०—बावीसं सागरोवमाइं ठिई अणाराहगा सेसं तं चेव।
७. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा—अत्तुक्कोसिया[1] परपरिवाइया भूइकम्मिया भुज्जो-भुज्जो कोउयकारगा। ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, [2]तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा? हंता अत्थि। ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा? णो इणट्ठे समट्ठे° ॥

णिण्हगाणं गेवेज्ज-उववाय-पदं

१६०. सेज्जे इमे गामागर[3]-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संवाह°-सण्णिवेसेसु णिण्हगा भवंति, तं जहा—बहुरया, जीवपएसिया, अव्वत्तिया, सामुच्छेइया[4], दोकिरिया, तेरासिया, अबद्धिया[5] इच्चेते सत्त पवयणणिण्हगा केवलं चरियालिंग-सामण्णा मिच्छद्दिट्ठी[6] बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा विहरित्ता 'बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता'[7] कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं उवरिमेसु गेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, [8]तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा? हंता अत्थि। ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा? णो इणट्ठे समट्ठे° ॥

देस-विरय-वण्णग-पदं

१६१. सेज्जे इमे गामागर[9]-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संवाह°-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—'अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा'[10] धम्मिया धम्माणुया धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई[11] धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा सुसीला[12] सुव्वया सुप्पडियाणंदा साहूहिं, एगच्चाओ[13] पाणाइवायाओ

१. अत्तुक्कसिया (ग)।
२. सं० पा०—बावीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स अणाराहगा सेसं तं चेव।
३. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु।
४. सामुच्छिया (क, ख); सामुच्छित्तिया (ग)।
५. अव्वद्धिया (क, ख, ग)।
६. मिच्छद्दिट्ठिहिं (क, ग)।
७. × (क)।
८. सं० पा०—एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स अणाराहगा।
९. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु।
१०. १६३ सूत्रे 'अणारंभा अपरिग्गहा' इति पाठो विद्यते। तथैव पद्धत्या अत्रापि चिह्नान्तरवर्तिपाठो युज्यते। सूत्रकृताङ्गे (२।२।७१) पि एष पाठो लभ्यते।
११. धम्मप्पलोइया (ग)।
१२. सूत्रकृताङ्गे (२।२।७१) एतत्पदं दृश्यते। प्रस्तुतसूत्रस्य पाठशोधनाय अप्रयुक्तेषु आदर्शेषु एतत्पदं लभ्यते।
१३. एगइयाओ (वृपा)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया[1]। *एगच्चाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया। एगच्चाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया। एगच्चाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया। एगच्चाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया°। एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया। एगच्चाओ आरंभ-समारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया। एगच्चाओ करण-कारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए एगच्चाओ अपडिविरया। एगच्चाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ 'पयण-पयावणाओ'[2] अपडिविरया। एगच्चाओ कोट्टण-पिट्टण-तज्जण-तालण-वह-बंध-परिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया। एगच्चाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्लालंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया। जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया[3] कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति, तओ वि एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया ।।

१६२. तं जहा[4]—समणोवासगा भवंति, अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसला असहेज्जा देवासुर-णाग-सुवण्ण[5]-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ता 'अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे' ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउर-परघरदारप्पवेसा[6] चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ[7]-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण[8] य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणा विहरंति, विहरित्ता भत्तं पच्चक्खंति, ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, *[9]तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार-

---

१. सं० पा०—अपडिविरया एवं जाव परिग्गहाओ।
२. एतादृश्याऽऽवृत्तिरन्यवाक्येषु नास्ति।
३. वाचनान्तरे 'सावज्जा अबोहिया' (वृ)।
४. से जहाणामए ति क्वचित् (वृ)।
५. × (क, ग)।
६. पुरघरदार° (क); घरदार° (ग)।
७. वत्थगंध (ग)।
८. पडिहारिएण (क)।
९. सं० पा०—बावीसं सागरोवमाइं ठिई आराहगा सेसं तं चेव। तहेव (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? हंता अत्थि° ।।

सव्व-विरय-वण्णग-पदं

१६३. सेज्जे इमे गामागर[1]-°णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—'अणारंभा अपरिग्गहा'[2] धम्मिया[3] °धम्माणुया धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मपलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वित्तिं° कप्पेमाणा सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू[4], सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरिया[5] °सव्वाओ मुसावायाओ पडिविरया, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया, सव्वाओ मेहुणाओ पडिविरया,° सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया। सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ[6] °पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ, पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ° मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया। सव्वाओ आरंभ-समारंभाओ पडिविरया। सव्वाओ करण-कारावणाओ पडिविरया। सव्वाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया। सव्वाओ कोट्टण-पिट्टण-तज्जण-तालण-वह-बंध-परिकिलेसाओ पडिविरया। सव्वाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्लालंकाराओ पडिविरया। जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति, तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए ।।

१६४. 'से जहाणामए'[7] अणगारा भवंति—इरियासमिया भासासमिया[8] °एसणासमिया आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिआसमिया मणसमिया वइसमिया कायसमिया मणगुत्ता वइगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी चाई लज्जू धन्ना खंतिखमा जिइंदिया सोहिया अणियाणा अप्पुस्सुया अबहिल्लेसा सुसामण्णरया दंता° इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओकाउं विहरंति ।।

१६५. तेसि णं भगवंताणं एएणं विहारेणं विहरमाणाणं अत्थेगइयाणं अणंते[9] °अणुत्तरे णिव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जइ। ते बहूइं वासाइं केवलपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खंति, पच्चक्खित्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे[10] °मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए केसलोए बंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लद्धावलद्धं परेहिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, तमट्ठमाराहित्ता चरिमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाण° मंतं करेंति ।।

१६६. जेसिं पि य णं एगइयाणं णो केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जइ। ते बहूइं

१. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।
२. × (ख, ग) ।
३. सं० पा०—धम्मिया जाव कप्पेमाणा ।
४. साहूहिं (ख) ।
५. पडिविरिया जाव सव्वाओ ।
६. सं० पा०—लोभाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ ।
७. से जहाणामए त्ति क्वचिन्न (वृ) ।
८. सं० पा०—भासासमिया जाव इणमेव ।
९. सं० पा०—अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे ।
१०. सं० पा०—नग्गभावे जाव मंतं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासाइं छउमत्थ-परियागं पाउणंति, पाउणित्ता आबाहे उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा भत्तं पच्चक्खंति। ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे[1] °मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए केसलोए बंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लद्धावलद्धं परेहिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति°, तमट्ठमाराहित्ता चरिमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं अणंतं अणुत्तरं निव्वाघायं निरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवलवरणाणदंसणं उप्पाडेंति[2], तओ पच्छा सिज्झिहिंति[3] °बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति परिणिव्वाहिंति सव्वदुक्खाण° मंतं करेहिंति[4]॥

१६७. एगच्चा पुण एगे भयंतारो पुव्वकम्मावसेसेणं कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं[5] तेसिं गई, °तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा? हंता अत्थि। ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा? हंता अत्थि[6]॥

१६८. सेज्जे इमे गामागर[7]-°णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—सव्वकामविरया सव्वरागविरया[8] सव्वसंगातीता सव्वसिणेहाइक्कंता अक्कोहा निक्कोहा खीणक्कोहा °अमाणा निम्माणा खीणमाणा अमाया निम्माया खीणमाया अलोहा निल्लोहा खीणलोहा[9]° अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपयडीओ खवेत्ता उप्पि लोयग्गपइट्ठाणा भवंति॥

केवलिसमुग्घाय-पदं

१६९. अणगारे णं भंते! भावियप्पा केवलिसमुग्घाएणं समोहए[10] केवलकप्पं लोयं फुसित्ता णं चिट्ठइ? हंता चिट्ठइ। से णूणं भंते! केवलकप्पे लोए तेहिं निज्जरापोग्गलेहिं फुडे? हंता फुडे। छउमत्थे णं भंते! मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणइ पासइ? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१७०. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं[11] °गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं° जाणइ पासइ? गोयमा! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिए, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए, वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए, वट्टे पडिपुण्ण-

---

१. सं० पा०—नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहित्ता।
२. समुप्पाडिंति (क)।
३. सं० पा०—सिज्झिहिंति जाव मंतं।
४. काहिंति (ख, ग)।
५. तेहिं (क, ख, ग)।
६. सं० पा०—तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई आराहगा चेव सेसं तं चेव।
७. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु।
८. × (क, ख, ग)।
९. सं० पा०—माणे माया लोहा।
१०. समोहणइ २ त्ता (क, ख, ग)
११. सं० पा०—वण्णं जाव जाणइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदसंठाणसंठिए, एक्कं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलियं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते। देवे णं महिड्ढीए महज्जुतीए महब्बले महाजसे महासोक्खे महाणुभावे सविलेवणं गंधसमुग्गयं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अवदालेइ, अवदालेत्ता जाव इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरा-णिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा। से णूणं गोयमा! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे? हंता फुडे। छउमत्थे णं गोयमा! मणुस्से तेसिं घाणपोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं[1] °गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं° जाणइ पासइ? भगवं! णो इणट्ठे समट्ठे। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ— छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं णिज्जरा-पोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं[2] °गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं° जाणइ पासइ। एसुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो! सव्वलोयं पि य णं ते फुसित्ता णं चिट्ठंति।

१७१. कम्हा णं भंते! केवली समोहणंति? कम्हा णं केवली समुग्घायं गच्छंति? गोयमा! केवलीणं चत्तारि कम्मंसा अपलिक्खीणा[3] भवंति, तं जहा—वेयणिज्जं आउयं णामं गोत्तं। सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ, सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ, विसमं समं करेइ, बंधणेहिं ठिईहि य, विसमसमकरणयाए, बंधणेहिं ठिईहि य। एवं खलु केवली समोहणंति, एवं खलु केवली समुग्घायं गच्छंति॥

१७२. सव्वे वि णं भंते! केवली समुग्घायं गच्छंति? णो इणट्ठे समट्ठे।

'अकिया ण'[4] समुग्घायं, अणंता केवली जिणा।
जरमरणविप्पमुक्का,[5] सिद्धिं वरगइं गया॥१॥

१७३. कइसमए णं भंते! आवज्जीकरणे पण्णत्ते? गोयमा! असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते॥

१७४. केवलिसमुग्घाए णं भंते! कइसमइए पण्णत्ते,? गोयमा! अट्ठसमइए पण्णत्ते, तं जहा—पढमे समए दंडं करेइ, बीए समए कवाडं करेइ, तइए समए मंथं करेइ, चउत्थे समए लोयं पूरेइ, पंचमे समए लोयं पडिसाहरइ, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता सरीरत्थे भवइ॥

१७५. से णं भंते! तहा समुग्घायगए किं मणजोगं जुंजइ? वयजोगं जुंजइ? कायजोगं जुंजइ? गोयमा! णो मणजोगं जुंजइ, णो वयजोगं जुंजइ, कायजोगं जुंजइ॥

१७६. कायजोगं जुंजमाणे किं ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ? ओरालियमीसासरीरकायजोगं[6] जुंजइ? वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ? वेउव्वियमीसासरीरकायजोगं जुंजइ? आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ? आहारगमीसासरीरकायजोगं जुंजइ? कम्मग-

---

१, २. सं० पा०—वण्णं जाव जाणइ।

३. 'अवेइया अनिज्जिणा' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ)।

४. अकिरिया ण (ख); अकित्ता णं (क्वचित्)।

५. जाइजरामरणविप्पमुक्का (ख, ग)।

६. °मीससरीर° (ख, ग); °मिस्ससरीर° (क्वचित्)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरीरकायजोगं[1] जुंजइ ? गोयमा ! ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ, ओरालियमीसासरीर-कायजोगं पि जुंजइ, णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ, णो वेउव्वियमीसासरीरकायजोगं जुंजइ णो आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ, णो आहारगमीसासरीरकायजोगं जुंजइ, कम्मगसरीरकायजोगं पि जुंजइ। पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ, बिइय-छट्ठ-सत्तमेसु समएसु ओरालिमीसासरीरकायजोगं जुंजइ, तइय-चउत्थ-पंचमेहिं कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ॥

१७७. से णं भंते ! तहा समुग्घायगए 'सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ'[2] सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ? णो इणट्ठे समट्ठे। से णं तओ पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता तओ पच्छा मणजोगं पि जुंजइ, वयजोगं पि जुंजइ, कायजोगं पि जुंजइ ॥

१७८. मणजोगं जुंजमाणे किं सच्चमणजोगं जुंजइ ? मोसमणजोगं जुंजइ ? सच्चामोसमणजोगं जुंजइ ? असच्चामोसमणजोगं जुंजइ ? गोयमा ! सच्चमणजोगं जुंजइ, णो मोसमणजोगं जुंजइ, णो सच्चामोसमणजोगं जुंजइ, असच्चामोसमणजोगं पि जुंजइ ॥

१७९. वयजोगं जुंजमाणे किं सच्चवइजोगं जुंजइ ? मोसवइजोगं जुंजइ ? सच्चा-मोसवइजोगं जुंजइ ? असच्चामोसवइजोगं जुंजइ ? गोयमा ! सच्चवइजोगं जुंजइ, णो मोसवइजोगं, जुंजइ, णो सच्चामोसवइजोगं जुंजइ, असच्चामोसवइजोगं पि जुंजइ ॥

१८०. कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लंघेज्ज वा पल्लंघेज्ज वा, उक्खेवणं वा अवक्खेवणं[3] वा तिरियक्खेवणं वा करेज्जा, पाडिहारियं वा पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणेज्जा ॥

जोग-निरोह-पदं

१८१. से णं भंते ! तहा सजोगी सिज्झइ[4] °बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ सव्वदुक्खाण° मंतं करेइ[5] ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८२. से णं पुव्वामेव सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णजोगिस्स[6] हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं पढमं मणजोगं निरुंभइ, तयाणंतरं च णं बिंदियस्स[7] पज्जत्तगस्स जहण्णजोगिस्स[8] हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं विइयं वइजोगं निरुंभइ, तयाणंतरं च णं सुहुमस्स पणगजीवस्स[9] अपज्जत्तगस्स जहण्णजोगिस्स[10] हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं तइयं कायजोगं णिरुंभइ। से णं 'एएणं उवाएणं'[11] पढमं मणजोगं णिरुंभइ, णिरुंभित्ता वयजोगं

---

१. कम्मसरीर° (क); कम्मासरीर° (ख, ग)।
२. सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ (क, ख, ग)।
३. पक्खेवणं (क)।
४. सिज्झिहिति (क, ख, ग); सं० पा०—सिज्झइ जाव मंतं।
५. करिहिति (क, ख)।
६. जहण्णमणजोगिस्स (ख); जहण्णजोगस्स (ग)।
७. पंचिंदियस्स (क, ख)।
८. जहण्णवयजोगस्स (ख)।
९. पणगस्स (क)।
१०. जहण्णकायजोगस्स (ख, ग)।
११. पउत्तेणं उवाएणं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिरुंभइ, णिरुंभित्ता कायजोगं णिरुंभइ, णिरुंभित्ता जोगनिरोहं करेइ, करेत्ता अजोगत्तं[1] पाउणइ, पाउणित्ता ईसिंहस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए[2] असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं[3] सेलेसिं पडिवज्जइ। पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्धाए असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणंते कम्मंसे खवयंतो[4] वेयणिज्जाउयणामगोए इच्चेते चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ, खवेत्ता ओरालियतेयकम्माइं[5] सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता[6] उज्जुसेढीपडिवण्णे अफुसमाणगई उड्ढं[7] एक्कसमएणं अविग्गहेणं गंता[8] सागरोवउत्ते सिज्झइ ।।

सिद्ध-वण्णग-पदं

१८३. ते णं तत्थ सिद्धा हवंति सादीया अपज्जवसिया असरीरा जीवघणा दंसण-णाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा निरेयणा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं[9] चिट्ठंति।

१८४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ते णं तत्थ सिद्धा भवंति सादीया अपज्ज-वसिया[10] °असरीरा जीवघणा दंसणणाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा निरेयणा नीरया णिम्मला विति-मिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं° चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहाणामए बीयाणं अग्गिदड्ढाणं पुणरवि अंकुरुप्पत्ती ण भवइ, एवामेव सिद्धाणं कम्मबीए दड्ढे पुणरवि जम्मुप्पत्ती न भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ते णं तत्थ सिद्धा भवंति सादीया अपज्जवसिया[11] °असरीरा जीवघणा दंसणणाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा निरेयणा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं° चिट्ठंति ।।

१८५. जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति ? गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति ।।

१८६. जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संठाणे सिज्झंति ? गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे सिज्झंति ।।

१८७. जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए उक्कोसेणं पंचधणुसइए सिज्झंति ।।

१८८. जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झंति ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडियाउए सिज्झंति ।।

१८९. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे। एवं जाव[12] अहेसत्तमाए ।।

१९०. अत्थि णं भंते ! सोहम्मस्स कप्पस्स अहे सिद्धा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे। एवं सव्वेसिं पुच्छा—ईसाणस्स सणंकुमारस्स जाव[13] अच्चुयस्स गेवेज्जविमाणाणं

---

१. अजोगयं (वृ)।
२. ईसिंपंचरहस्सक्खरुच्चारणद्धाए (ख, ग)।
३. अंतोमुहुत्तं (ग)।
४. खवेइ (ख)।
५. °तेयाकम्माइं (क, ग)।
६. विप्पजहइ, २ त्ता (क)।
७. × (वृ)।
८. उड्ढं गंता (वृ)।
९. °मणागयद्धं कालं (ख)।
१०, ११. सं० पा०—अपज्जवसिया जाव चिट्ठंति।
१२. भ० २।७५।
१३. ओ० सू० ५१।

अणुत्तरविमाणाणं ।।

१६१. अत्थि णं भंते ! ईसीपब्भाराए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ।।

ईसीपब्भारापुढवी-वण्णग-पदं

१६२. से कहिं खाइ णं[1] भंते ! सिद्धा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-ग्गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं[2] बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुए तिण्णि य अट्ठारे गेविज्जविमाणावाससए वीईवइत्ता विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिय-सव्वट्ठसिद्धस्स य महाविमाणस्स सव्वुवरिल्लाओ[3] थूभियग्गाओ दुवालसजोयणाइं अबाहाए एत्थ णं ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता—पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिरएणं । ईसीपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठ-जोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, तयाणंतरं च णं मायाए-मायाए[4] परिहायमाणी-परिहायमाणी सव्वेसु चरिम-पेरंतेसु मच्छियपत्ताओ तणुयतरी[5] अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।।

१६३. ईसीपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ईसीइ वा ईसीपब्भाराइ वा तणूइ वा तणुयरीइ[6] वा सिद्धीइ वा सिद्धालएइ वा मुत्तीइ वा मुत्तालएइ वा लोयग्गेइ वा लोयग्गथूभिगाइ वा लोयग्गपडिबुज्झणाइ[7] वा सव्वपाण-भूय-जीव-सत्त-सुहावहाइ वा ।।

१६४. ईसीपब्भारा णं पुढवी सेया संखतल[8]-विमलसोल्लिय[9]-मुणाल[10]-दगरय-तुसार-गोक्खीर-हारवण्णा उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया सव्वज्जुणसुवण्णगमई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया समरीचिया[11] सुप्पभा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

सिद्ध-वण्णग-पदं

१६५. ईसीपब्भाराए णं पुढवीए सीयाए जोयणंमि लोगंतो । तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स णं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ णं सिद्धा भगवंतो[12] सादीया अपज्जवसिया 'अणेगजाइ - जरा-मरण-जोणि-वेयणं संसारकलंकलीभाव-पुणब्भव-

१. × (क, ख, ग) ।
२. ताराभवणाओ (ग) ।
३. सव्वुप्परिल्लाओ (क, ग) ।
४. माताए पएसपरिहाणीए (पण्ण० २।६४) ।
५. तणुयरी (ग) ।
६. तणुतणूई (क); तणूअरीइ (ग) ।
७. °पडिपुच्छणाइ (ग) ।
८. आयंस (वृ); संखतल (वृपा) ।
९. विमलसोत्थिय (पण्ण० २।६६) ।
१०. मुणालिय (ख) ।
११. समीरिचिया (क) ।
१२. भगवंता (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गब्भवासवसही-पवंचं अइक्कंता[1] सासयमणागयद्धं चिट्ठंति[2]।

कहिं[3] पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?।
कहिं बोंदिं चइत्ताणं, कत्थ गंतूण सिज्झई ? ॥१॥
अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोंदिं चइत्ताणं तत्थ गंतूण सिज्झई ॥२॥
जं संठाणं तु इहं, भवं चयंतस्स चरिमसमयंमि[4]।
आसी य पएसघणं, तं संठाणं तहिं तस्स ॥३॥
दीहं वा हस्सं[5] वा, जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं।
तत्तो तिभागहीणा, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥४॥
तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो।
एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ॥५॥
चत्तारि य रयणीओ, रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिमओगाहणा भणिया ॥६॥
एक्का य होइ रयणी साहीया[6] अंगुलाइ[7] अट्ठ भवे।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्णओगाहणा भणिया ॥७॥
ओगाहणाए सिद्धा 'भव-तिभागेण'[8] होंति परिहीणा।
संठाणमणित्थंथं, जरामरणविप्पमुक्काणं ॥८॥
जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का।
अण्णोण्णसमोगाढा, पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥९॥
फुसइ अणंते सिद्धे, सव्वपएसेहिं णियमसा[9] सिद्धो।
ते वि असंखेज्जगुणा, देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥१०॥
असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य।
सागारमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥११॥
केवलणाणुवउत्ता[10], जाणंती सव्वभावगुणभावे।
पासंति सव्वओ खलु, केवलदिट्ठीहिं[11] णंताहिं ॥१२॥

---

१. पाठान्तरमिदम् 'अणेगजाइजरामरणजोणि-संसारकलंकलीभावपुणब्भवगब्भवासवसहिपवंच-समइक्कंत' त्ति (वृ)।
२. कालं चिट्ठंति (पण्ण० २।६७)।
३. अतः पूर्वं प्रज्ञापनायां (२।६७) एषा गाथा दृश्यते—
तत्थ वि य ते अवेदा, अवेदणा निम्ममा असंगया य।
संसारविप्पमुक्का, पदेसा निव्वत्तसंठाणा ॥१॥
४. चरम' (ख)।
५. हुस्सगं (ख)।
६. साहिया (ख)।
७. अंगुलाइं (क, ख)।
८. भव-भागेण (ख)।
९. णियमसो (ग)।
१०. केवलनाणोउवत्ता (ख)
११. केवलदिट्ठीहिं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण वि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं ।
जं सिद्धाणं सोक्खं, अव्वाबाहं उवगयाणं ॥१३॥
जं देवाणं सोक्खं, सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं ।
ण य पावइ मुत्तिसुहं, णंताहिं[1] वग्गवग्गूहिं ॥१४॥
सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा ।
सोणंतवग्गभइओ, सव्वागासे ण माएज्जा ॥१५॥
जह णाम कोइ मिच्छो, नगरगुणे बहुविहे वियाणंतो ।
न चएइ परिकहेउं, उवमाए तहिं असंतीए ॥१६॥
इय सिद्धाणं सोक्खं, अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं ।
किंचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ॥१७॥
जह सव्वकामगुणियं, पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई ।
तण्हाछुहाविमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ॥१८॥
इय सव्वकालतित्ता, अउलं निव्वाणमुवगया सिद्धा ।
सासयमव्वाबाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥१९॥
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति[2] य, पारगयत्ति य परंपरगय त्ति ।
उम्मुक्क-कम्म-कवया, अजरा अमरा असंगा य ॥२०॥
णिच्छिण्णसव्वदुक्खा, जाइजरामरणबंधणविमुक्का ।
अव्वाबाहं सुक्खं अणुहोंती सासयं सिद्धा ॥२१॥
अतुलसुहसागरगया,[3] अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता ।
सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठंति 'सुही सुहं पत्ता'[4] ॥२२॥

ग्रन्थ-परिमाण

अक्षर-परिमाण :	**४८४१६**
अनुष्टुप-श्लोक :	**१५१३ अक्षर ३**

१. अणंताहिं वि (ख) ।
२. बुद्धित्ति (ख); बोद्धत्ति (ग) ।
३. प्रज्ञापनायां (२।६७) एषा गाथा नैव दृश्यते ।
४. सुह संपत्ता (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रायपसेणइयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरियाभो

उक्खेव-पदं

१. तेणं[1] कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नामं[2] नयरी होत्था—'रिद्ध-त्थिमिय'[3]-समिद्धा जाव[4] पासादीया दरिसणीया[5] अभिरूवा पडिरूवा ।।

२. तीसे णं आमलकप्पाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अंबसालवणे नामं चेइए होत्था—चिराईए[6] जाव[7] पडिरूवे ।।

३. °[8]'तस्स णं वणसंडस्स वहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे असोगवरपायवे पण्णत्ते ।।

४. तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ईसिं खंधसमल्लीणे, एत्थ णं महं एक्के पुढवि-सिलापट्टए पण्णत्ते° ।।

५. सेयो राया । धारिणी देवी ।।

६. सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव[9] राया पज्जुवासइ ।।

सूरियाभस्स ओहिपओग-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरियाभे[10] देवे सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए सूरियाभंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं, अन्नेहिं वहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहयनट्ट[11]-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवादिय-रवेणं[12] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं

---

१. नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्व साहूणं । तेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. नाम (क, ख, छ); णाम (च) ।

३. रिद्धत्थमिय (क, ख, ग, च); रिद्धित्थिमिय (घ, छ) ।

४. ओ० सू० १ ।

५. दरिसणिज्जा (वृ) ।

६. पोराणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. ओ० सू० २-७ ।

८. सं० पा०—असोयवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया ओववाइयगमेणं नेया । पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यं ओ० सू० ८-१३ ।

९. ओ० सू० १९-६९ ।

१०. सूरियाभे णामं (वृ) ।

११. महतामहतनट्ट° (क, ख, ग, च) ।

१२. पडुप्पवादियरवेणं (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओहिणा आभोएमाणे-आभोएमाणे पासति[1] ॥

सूरियाभेण भगवओ वंदण-पदं

८. तत्थ[2] समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे (दीवे ?) भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे[3] परमसोमणस्सिए हरिसवस[4]-विसप्पमाणहियए विगसियवरकमलणयणे[5] पयलिय[6]-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइयवच्छे पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सुरवरे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति, करेत्ता 'तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं'[7] अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं[8] धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि 'निवेसेइ, निवेसेत्ता'[9] ईसिं पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता 'कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ, पडिसाहरेत्ता'[10] करयलपरिग्गहियं 'दसणहं सिरसावत्तं'[11] मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं[12] 'पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं'[13] लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीवदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्टछउमाणं[14] जिणाणं जावयाणं[15] 'तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं'[16] 'सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं'[17] सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं[18] सिद्धिगइनामधेयं[19] ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आइगरस्स तित्थयरस्स जाव सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगते, पासइ[20] मे भगवं तत्थगते इहगतं ति कट्टु वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता 'सीहासणवरगए पुव्वाभिमुहं सण्णिसण्णे'[21] ॥

---

१. पासइ पासित्ता (क, छ)।
२. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
३. पीयमणे (क, ख, ग, घ, च, छ)।
४. हरसवस (घ)।
५. विहसिय° (छ)।
६. पचलिय (च)।
७. सत्तट्ठपयाइं तित्थयराभिमुहे (क, ख, ग, घ, च, छ)।
८. जाणं (च, छ)।
९. णिमेइ णिमेत्ता (क, ख, ग, च)।
१०. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
११. सिरसावत्तं दसनहं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१२. सहसंबुद्धाणं (ओ० सू० २१)।
१३. × (क, ख, ग, घ)।
१४. विउट्टछम्माणं (क); × (ख, ग, घ); विउट्टछउमाणं (च)।
१५. जाणगाणं (क, ख, ग, घ)।
१६. बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं तिण्णाणं तारयाणं (क, ख, ग, घ)।
१७. × (क, ख, ग, घ); सव्वन्नूणं सव्वदंसीणं (च)।
१८. °मपुणरावत्ति (च)।
१९. °नामधेज्जं (क)।
२०. पासउ (क, ख, ग, घ, च, छ)।
२१. × (क, ख, ग, घ, च, छ); सिंहासनवरगतः गत्वा च° (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभिओगिय-देव-पेसण-पदं

९. 'तए णं तस्स सूरियाभस्स'[1] इमे एयारूवे 'अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे'[2] समुप्पज्जित्था—सेयं[3] खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्तए नमंसित्तए सक्कारित्तए सम्माणित्तए कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासित्तएत्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं गच्छह णं तुमे[4] देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं नयरिं अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेह, करेत्ता वंदह णमंसह, वंदित्ता णमंसित्ता साइं-साइं नामगोयाइं साहेह, साहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं जं किंचि 'तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा'[5] असुइं अचोक्खं पूइयं दुब्भिगंधं तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय एगंते एडेह, एडेत्ता णच्चोदगं णाइमट्टियं पविरल-फुसियं[6] रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदयवासं वासह, वासित्ता णिहयरयं णट्ठरयं भट्ठरयं[7] उवसंतरयं पसंतरयं करेह, करेत्ता जलयथलयभासुरप्पभूयस्स बेंटट्ठाइस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमस्स जन्नुस्सेहपमाणमेत्तिं[8] ओहिं[9] वासं वासह, वासित्ता कालागरु-पवरकुंदुरुक्क[10]-तुरुक्क-धूव[11]-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंध[12]-वरगंधगंधियं[13] गंधवट्टिभूतं दिव्वं सुरवराभि-

---

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

२. मणोगए अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए संकप्पे (वृ)।

३. 'सेयं खलु' अतः प्रारभ्य 'पज्जुवासित्तएत्ति कट्टु' इतिपर्यन्तः पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः। ज्ञाताधर्मकथायां अस्य संवादी पाठो लभ्यते। द्रष्टव्यं अंगसुत्ताणि भाग ३ पृष्ठ ३७१: नायाधम्मकहाओ २।१।१।१२। आदर्शेषु विस्तृतः पाठो लभ्यते—एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि। एयं मे पेच्चा हियाए सुहाए खमाए दयाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सतित्ति कट्टु।

४. तुब्भे (छ)।

५. तृणं वा, काष्ठं वा, काष्ठशकलं वा, पत्रं वा, कचवरं वा (वृ)।

६. पफुसियं (क, ख, ग, घ, च)।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

८. °पमाणमेत्तं (क, ख, ग, घ)।

९. ओह (क, घ, च)।

१०. °कंदुरुक्क (क, ख, ग, घ, च); °कुंदरुक्क (छ)।

११. धूय (क, ख, ग, घ); धूमय (च)।

१२. सुगंधि (पइण्णगसमवाओ सू० १४४)।

१३. वरगंधियं (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गमणजोग्गं करेह य 'कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता'[1] य खिप्पामेव एयमाणत्तियं[2] पच्चप्पिणह ॥

आभिओगिय-देवेहिं भगवओ वंदण-पदं

१०. तए णं ते आभिओगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[3] °चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया करयल-परिग्गहियं दसणहं[4] सिरसावत्तं 'मत्थए अंजलिं'[5] कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं[6] अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं[7] जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायंति, परिया-इत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति[8], समोहणित्ता उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए[9] तुरियाए 'चवलाए चंडाए'[10] जवणाए[11] सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा-वीईवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव आमलकप्पा णयरी जेणेव अंबसालवणे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं महावीरं तिक्खुत्तो 'आयाहिणं पयाहिणं'[12] करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अम्हे णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स आभियोग्गा देवा देवाणुप्पियं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ॥

वंदणाणुमोदण-पदं

११. देवाइ[13] ! समणे भगवं महावीरे 'ते देवे'[14] एवं वयासी—'पोराणमेयं देवा ! जायमेयं देवा ! किच्चमेयं देवा ! करणिज्जमेयं'[15] देवा! आइण्णमेयं देवा ! अब्भणुण्णाय-मेयं देवा ! जण्णं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवा अरहंते भगवंते वंदंति

---

१. कारावेह करेत्ता य कारावेत्ता (क, ख, ग, घ, च) ।

२. सर्वादर्शेषु 'एवमाणत्तियं' पाठोस्ति, किन्तु अर्थविचारणया तथा औपपातिकं (६१ सूत्रं) अनुसृत्य 'एयमाणत्तियं' पाठः स्वीकृतः । 'एवमाणत्तियं' लिपिदोषाज्जात इति संभाव्यते ।

३. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।

४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. अंजलिं मत्थए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. जोइरसाणं (घ, च) ।

७. रयणाणं जाव (च, छ) ।

८. समोहणंति (क, ख, ग, घ, छ) ।

९. ओकिट्ठाए (घ) ।

१०. चंडाए चवलाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. जयणाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. आयाहिणपयाहिणं (क, छ) ।

१३. देवाय (क, ख, ग, च, छ); तए णं देवा य (घ) ।

१४. देवा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१५. जुत्तमेयं देवा पोराणमेयं देवा किच्चमेयं देवा ····(छ); पौराणमेतत्····जीतमेतत्····अभ्यनु-ज्ञातमेतत्····करणीयमेतत् ····आचीर्णमेतत्···· (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता तओ साइं-साइं णामगोयाइं साहिंति, तं पोराणमेयं[1] देवा ![2] •जीयमेयं देवा ! किच्चमेयं देवा ! करणिज्जमेयं देवा ! आइण्णमेयं देवा !° अब्भणुण्णायमेयं देवा ! ।।

आभिओगिएहिं जोयणमंडलनिव्वत्तण-पदं

१२. तए णं ते आभिओगिया देवा[3] समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ[4] •तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, तं जहा—रयणाणं[5] •वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं° रिट्ठाणं अहाबायरे[6] पोग्गले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायंति, परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संवट्टयवाए[7] विउव्वंति, से जहाणामए—भइयदारए[8] सिया तरुणे 'बलवं जुगवं जुवाणे'[9] अप्पायंके[10] थिरग्गहत्थे 'दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरुपरिणए'[11] घण-णिचिय-वट्टवलियखंधे[12] चम्मेट्ठग-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगत्ते उरस्सबलसमण्णागए तलजमलजुयलबाहू लंघण-पवण-जइण-पमद्दणसमत्थे[13] छेए दक्खे पत्तट्ठे[14] कुसले मेधावी णिउणसिप्पोवगए एगं महं 'दंडसंपुच्छणिं वा सलागाहत्थगं वा'[15] वेणुसलाइयं वा गहाय रायंगणं वा रायंतेउरं वा 'आरामं वा उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा'[16] अतुरियमचवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता संपमज्जेज्जा, एवामेव[17] तेवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा संवट्टयवाए[18]

---

१. पोराणयमेयं (क, ख, ग, घ, च) ।

२. सं० पा०—देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं ।

३. देवा २ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

५. सं० पा०—रयणाणं जाव रिट्ठाणं ।

६. अहबायरे (क, ख, ग, च) ।

७. संवट्टावाए (क) ।

८. कम्मारदारए (क, ख, ग, घ, च); भइयदारए कम्मादारए (छ) ।

९. जुगवं बलवं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. अप्पायंके थिरसंघयणे (क, ख, ग, घ, च, छ)

११. पडिपुण्णपाणिपाए पिट्ठंतरोरुपरिणए (क, ख, ग, घ, च, छ); दढपाणिपायपासपिट्ठंतरोरुपरिणते (अणु० ४१६, जी० ३।११८) ।

१२. वलियावलियखंधे (क, ख, ग, घ, छ); वलियवलियखंधे (च); अतः परं आदर्शेषु पाठानां क्रमो भिन्नो विद्यते—लंघणवग्गणजवणवायामसमत्थे (°गयणवायामणसमत्थे—च, °जयणवायामपमद्दणसमत्थे—छ) चम्मेट्ठदुघणमुट्ठियसमाहयनिचियगत्ते (°गायगत्ते—क, ख, ग, घ) उरस्सबलसमण्णागए तालजमलजुयलबाहू (°जुयलफलिहनिभबाहू (क, ख, ग, घ, च) ।

१३. वायामणसमत्थे (वृपा) ।

१४. पट्ठे—प्रष्ठो—वाग्मी (वृ, जी० ३।११८) ।

१५. सलागाहत्थगं वा दंडसंपुच्छणिं वा (वृ) ।

१६. देवउलं वा सभं वा पवं वा आरामं वा उज्जाणं वा (वृ) ।

१७. एवमेव (च); एवमे (छ) ।

१८. संवट्टवाए (क, ख, ग, घ, छ); संवट्टावाए (च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विउव्वंति, विउव्वित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वतो समंता जोयणपरिमंडलं जं किंचि 'तणं वा पत्तं वा'[1] •कट्ठं[2] वा सक्करं वा असुइं अचोक्खं पूइयं दुब्भिगंधं तं सव्वं° आहुणिय-आहुणिय एगंते एडेंति, एडित्ता खिप्पामेव उवसमंति[3], उवसमित्ता—दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता अब्भवद्दलए विउव्वंति[4], से जहाणामए—भइयदारगे सिया तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं दगवारगं वा 'दगथालगं वा दगकलसगं वा दगकुंभगं वा'[5] गहाय आरामं वा[6] •उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा° पवं वा अतुरिय[7] •मचवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं° सव्वतो समंता आवरिसेज्जा, एवामेव तेवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा अब्भवद्दलए विउव्वंति, विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायंति[8], पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयाइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं णच्चोदगं णातिमट्टियं तं पविरल-फुसियं[9] रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगं वासं वासंति, वासेत्ता णिहयरयं णट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति, करेत्ता खिप्पामेव उवसामंति, उवसामित्ता—

तच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता पुप्फवद्दलए विउव्वंति, से जहाणामए—मालागारदारए सिया तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं 'पुप्फछज्जियं वा पुप्फपडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा'[10] गहाय रायंगणं वा[11] •रायंतेउरं वा आरामं वा उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा अतुरियमचवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं° सव्वतो समंता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेज्जा, एवामेव ते सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा पुप्फवद्दलए विउव्वंति, विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायंति[12], •पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयाइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता° जोयणपरिमंडलं जलयथलयभासुरप्पभूयस्स बेंटट्ठाइस्स दसद्धवण्णकुसुमस्स जण्णुस्सेहपमाणमेत्तिं ओहिं[13] वासं वासंति, वासित्ता कालागरु-पवरकुंदुरुक्क[14]-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं[15] गंधवट्टिभूतं दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेंति य कारवेंति य करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव उवसामंति, उवसामित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं

---

१. सं० पा०—पत्तं वा तहेव ।

२. तृणकाष्ठादि (वृ) ।

३. उवसमिति (च, छ); पच्चुवसमंति (वृ) ।

४. विउव्वंति अब्भवद्दलए विउव्वित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. दगवेलगं° (क, ख, ग, घ, च); दगवालगं° (छ) ; दगकुंभगं वा दगथालगं वा दगकलसगं वा (वृ) ।

६. सं० पा०—आरामं वा जाव पवं ।

७. सं० पा०—अतुरिय जाव सव्वतो ।

८. पतणुतणायंति (क, ख, ग, घ, छ) ।

९. पप्फुसियं (क, ख, ग, घ) ।

१०. पुप्फडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा पुप्फवत्थियं वा (क, ख, ग, घ, च); पुप्फपडलगं वा पुप्फपत्थियं वा पुप्फचंगेरियं वा पुप्फछज्जियं वा (छ) ।

११. सं० पा० रायंगणं वा जाव सव्वतो ।

१२. पतणुतणायंति (क, ख, ग, घ, छ); सं०पा०—पतणतणायंति जाव जोयणपरिमंडलं ।

१३. उब्विं (क); ओहं (च) ।

१४. °कुंदरुक्क (ख, ग, घ, च) ।

१५. गंधवरगंधियं (च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावीरं तिक्खुत्तो[1] •आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति°, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए[2] •तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं° वीईवयमाणा-वीईवयमाणा जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

सूरियाभस्स गमण-घोसणा-पदं

१३. तए णं से सूरियाभे देवे तेसिं आभिओगियाणं देवाणं अंतिए[3] एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[4]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए पायत्ताणियाहिवइं देवं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए मेघोघरसियगंभीरमहुरसद्दं जोयणपरिमंडलं सूसरं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एवं 'वयाहि—आणवेइ'[5] णं भो ! सूरियाभे देवे, गच्छति णं भो ! सूरियाभे देवे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए णयरीए अंबसालवणे चेइए समणं भगवं महावीरं अभिवंदए, तुब्भेवि णं भो ! देवाणुप्पिया ! सव्विड्ढीए[6] •सव्वजुतीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडिय-सद्दसण्णिनाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-पडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोस° णाइयरवेणं[7] णियगपरिवालसद्धिं संपरिवुडा साइं-साइं जाणविमाणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं[8] चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं[9] पाउब्भवह ॥

१४. तए णं से पायत्ताणियाहिवती देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ[10]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए[11] करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव मेघोघरसिय-गंभीरमहुरसद्दा जोयणपरिमंडला सुस्सरा घंटा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं मेघोघ-

---

१. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव वंदित्ता ।

२. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणा ।

३. अंते (क, ख, ग) ।

४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

५. वयासी आणवेसि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. सव्वड्ढीए (छ); सं० पा०—सव्विड्ढीए जाव णाइयरवेणं ।

७. णातियरवेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. अकालपरिहीणा (ख, ग, घ, च, छ) ।

९. अंतिके (वृ) ।

१०. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

११. अतः परं 'क, च, छ' इत्यादर्शेषु 'एवं देवो' 'ख, ग' आदर्शयोः 'एवं देवा' इत्येव पाठो विद्यते । वृत्तौ 'जाव पडिसुणित्ता' इति संक्षिप्त-पाठस्य निर्देशोस्ति— यावच्छब्दकरणात् 'करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवा ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ' त्ति द्रष्टव्यम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रसियगंभीरमहुरसद्दं जोयणपरिमंडलं सूसरं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेति ।

तए णं तीसे[1] मेघोघरसियगंभीरमहुरसद्दाए जोयणपरिमंडलाए सूसराए घंटाए तिक्खुत्तो उल्लालियाए समाणीए[2] से सूरियाभे विमाणे पासायविमाण-णिक्खुडावडिय-सद्दघंटापडिसुया[3]-सयसहस्ससंकुले जाए यावि होत्था ।।

१५. तए णं तेसिं सूरियाभविमाणवासिणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरइपसत्त-निच्चप्पमत्त-विसय-सुहमुच्छियाण सूसरघंटारव-विउलबोल-'तुरिय-चवल'[4]-पडिबोहणे कए समाणे घोसणकोऊहलदिण्णकण्ण-एगग्गचित्त-उवउत्त-माणसाणं से पायत्ताणीयाहिवई देवे तंसि घंटारवंसि णिसंत-पसंतंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणे एवं वयासी—हंत[5] सुणंतु भवंतो सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सूरियाभविमाणपइणो वयणं हियसुहत्थं । आणवेइ णं भो ! सूरियाभे देवे, गच्छइ णं भो ! सूरियाभे देवे जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं नयरिं अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं अभिवंदए, तं तुब्भेवि णं देवाणुप्पिया ! सव्विड्ढीए[6] अकालपरिहीणं[7] चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवह ।।

सूरियाभविमाणवासिदेवाणं समवसरण-पदं

१६. तए णं ते सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य पायत्ताणियाहिवइस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ[8]-°चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया अप्पेगइया वंदणवत्तियाए अप्पेगइया पूयणवत्तियाए अप्पेगइया सक्कारवत्तियाए अप्पेगइया सम्माणवत्तियाए[9] अप्पेगइया कोऊहलवत्तियाए[10] 'अप्पेगइया असुयाइं सुणिस्सामो, अप्पेगइया सुयाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो, अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्तेमाणा'[11] अप्पेगइया अण्णमण्णमणुवत्तेमाणा[12] अप्पेगइया जिणभत्तिरागेणं 'अप्पेगइया धम्मो त्ति'[13] अप्पेगइया जीयमेयं ति कट्टु सव्विड्ढीए जाव[14] अकालपरिहीणं[15] चेव[16] सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवंति ।।

---

१. तीए (ख, ग, घ, च, छ) ।
२. समाणाए (घ) ।
३. °वडिंसुया (क, ख, ग, घ, च) ।
४. × (ख, ग, घ, च) ।
५. हंद (च); अहं भो (छ) ।
६. पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यं त्रयोदशसूत्रम् ।
७. अकालपरिहीणा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
९. अतः परं औपपातिके (सू० ५२) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (५।२७) च 'दंसणवत्तियं' पाठो विद्यते । नात्रासौ लभ्यते ।
१०. कोउहल्लवत्तियाए (क, घ); कोऊहल्लवत्तियाए (च); कुतूहलजिनभक्तिरागेण (वृ) ।
११. अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्तेमाणा अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो अप्पेगइया सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो (वृ) ।
१२. अण्णमण्णमन्नेमाणा (च, छ) ।
१३. × (वृ) ।
१४. राय० सू० १३ ।
१५. अकालपरिहीणा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१६. एव (क, घ); एवं (ख, ग, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाणविमाण-विउव्वण-पदं

१७. तए णं से सूरियाभे देवे ते सूरियाभविमाणवासिणो वहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए जाव[1] अकालपरिहीणं चेव अंतियं पाउब्भवमाणे पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[2]-°चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए आभिओगियं देवं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी --खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं[3] ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइरवेइया[4]-परिगयाभिरामं विज्जाहर-जमलजुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं[5] रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं[6] भिब्भिसमाणं[7] चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलि-चलिय-महुर-मणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउणओवियं[8]-मिसिमिसेंतमणिरयणघंटियाजाल-परिक्खित्तं[9] जोयणसयसहस्सविच्छिण्णं दिव्वं गमणसज्जं सिग्घगमणं णाम जाणविमाणं विउव्वाहि, विउव्वित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं[10] पच्चप्पिणाहि ।।

१८. तए णं से आभिओगिए देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ[11] °चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए करयलपरिग्गहियं[12] °दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं[13] °दंडं निसिरति, तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं° अहाबायरे पोग्गले 'परिसाडेइ, परिसाडित्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाएइ, परियाइत्ता'[14] दोच्चं पि वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहण्णति, समोहणित्ता अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं[15] °लीलट्ठियसालभंजियागं ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउम-लयभत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइरवेइया-परिगयाभिरामं विज्जाहर-जमलजुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलि-चलिय-महुर-मणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउण-

१. राय० सू० १३ ।
२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
३. °सालिभंजियागं (च, छ) ।
४. वरवइरवेइया (क, ख, ग, घ, च); पवरवइर-वेइया (छ) ।
५. अच्चीसहस्समालिणीयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
६. भासिमाणं (क, ख, घ, च); भासमाणं (ग); भिसिमाणं (छ) ।
७. भिब्भिसिमाणं (क, ख, ग, घ) ।
८. °उचितानि (वृ) ।
९. मिसिमिसेंतरयण° (क, ख, ग, घ, च) ।
१०. एवमाणत्तियं (ख, ग, घ, च, छ) ।
११. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियाए ।
१२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव पडिसुणेइ ।
१३. सं० पा०—जोयणाइं जाव अहाबायरे ।
१४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१५. सं० पा०—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव जाणविमाणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओविय-मिसिमिसेंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं जोयणसयसहस्सवित्थिण्णं दिव्वं गमणसज्जं सिग्घगमणं णाम दिव्वं° जाणविमाणं वेउव्विउं[1] पवत्ते यावि होत्था ॥

० तिसोवाणपडिरूवग-विउव्वण-पदं

१९. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं[2] तिसोवाण-पडिरूवए विउव्वति, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं। तेसिं तिसोवाणपडिरूवगाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया णिम्मा, रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवण्णरुप्पामया फलगा, लोहितक्खमइयाओ सूईओ, वइरामया संधी, णाणामणिमया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ य[3] पासादीया[4] °दरिसणिज्जा अभिरूवा° पडिरूवा ॥

० तोरण-पदं

२०. तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं[5] 'पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तोरणा पण्णत्ता। तेसि णं तोरणाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—तेणं तोरणा णाणामणिमया, णाणा-मणिएसु'[6] थंभेसु उवनिविट्ठसण्णिविट्ठा, 'विविहमुत्तंतरारूवोवचिया[7], विविहतारारूवो-वचिया'[8] °ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गय-वइरवेइया-परिगयाभिरामा विज्जाहर-जमलजुयल-जंतजुत्ता पिव अच्चीसहस्समालणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा घंटावलि-चलिय-महुर-मणहरसरा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा° पडिरूवा ॥

० अट्ठमंगल-पदं

२१. तेसि णं तोरणाणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा[9] °सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समरीइया सउज्जोया पासा-दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा° पडिरूवा ॥

० झय-पदं

२२. तेसि णं तोरणाणं उप्पिं बहवे किण्हचामरज्झए[10] °नीलचामरज्झए लोहियचामर-

---

१. विउव्वियं (क, ख, ग, च, छ); वेउव्वियं (घ)।

२. तिदिसि ततो (क, ख, ग, घ, च)।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

४. सं० पा०—पासादीया जाव पडिरूवा।

५. तिसोमाण° (च)।

६. पुरतो तोरणे विउव्वति ते णं तोरणा णाणा-मणिमएसु (क, ख, ग, घ); पुरतो तोरणा विउव्वंति ते णं तोरणा णाणामणिमएसु (छ); पुरतो तोरणे विउव्वइ तोरणा णाणा-मणिमया णाणामणिमएसु (वृ)।

७. विविहमुत्तंतरोवचिया (जी० ३।२८८)।

८. विविहतारारूवोवइया विविहमुत्तंतरोवविया (क, ख, ग, घ, च, छ); सं० पा०—विविहतारारूवोवचिया जाव पडिरूवा। क्वचिदेतत्साक्षाल्लिखितमपि दृश्यते (वृ)।

९. सं० पा०—दप्पणा जाव पडिरूवा।

१०. सं० पा०—किण्हचामरज्झए जाव सुक्किल-चामरज्झए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्झए हालिद्दचामरज्झए° सुक्किलचामरज्झए अच्छे सण्हे रुप्पपट्टे वइरदंडे[1] जलयामल-गंधिए सुरम्मे[2] पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे विउव्वइ ।।

० छत्तातिछत्तआदि-पदं

२३. तेसि णं तोरणाणं उप्पि बहवे छत्तातिछत्ते 'पडागाइपडागे घंटाजुगले चामर-जुगले'[3] उप्पलहत्थए पउम[4] - णलिण - सुभग - सोगंधिय-पोंडरीय-महापोंडरीय-सतपत्त-सहस्सपत्तहत्थए सव्वरयणामए अच्छे[5] *सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे णीरए निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समरीइए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे विउव्वइ ।।

० भूमिभाग-विउव्वण-पदं

२४. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरम-णिज्जं भूमिभागं विउव्वति, से जहाणामए—आलिंगपुक्खरेइ वा मुइंगपुक्खरेइ वा 'परिपुण्णे सरतलेइ'[6] वा करतलेइ वा चंदमंडलेइ वा सूरमंडलेइ वा आयंसमंडलेइ वा उरब्भचम्मेइ वा 'वसहचम्मेइ वा'[7] वराहचम्मेइ वा सीहचम्मेइ वा वग्घचम्मेइ वा 'मिग-चम्मेइ वा'[8] दीवियचम्मेइ वा अणेगसंकुकीलगसहस्सवितते[9], आवड-पच्चावड-सेढि-पसेढि-'सोत्थिय-सोवत्थिय'[10]-पूसमाणव-वद्धमाणग-'मच्छंडग-मगरंडग'[11]-'जार-मार'[12]-फुल्लावलि-पउमपत्त-सागरतरंग-वसंतलय-पउमलयभत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं सउज्जोएहिं णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए, तं जहा—किण्हेहिं णीलेहिं लोहि-एहिं हालिद्देहिं सुक्किलेहिं ।

० मणि-वण्णावास-पदं

२५. तत्थ णं जेते किण्हा मणी, तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए—जीमूतएइ वा अंजणेइ वा खंजणेइ वा कज्जलेइ वा 'मसीइ वा मसीगुलियाइ वा'[13] गवलेइ वा गवलगुलियाइ वा भमरेइ वा भमरावलियाइ वा भमरपतंगसारेइ[14] वा

---

१. वइरामयदंडे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सुकम्मे (क, ख, ग, घ) ।

३. घंटाजुयले पडागाइपडागे (क, ख, ग, घ, च); घंटाजुयले चामरजुयले पडागाइपडागे (छ) । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (४।३०) गंगामहानद्यास्तोर-णवर्णने तथा जीवाजीवाभिगमे (३।२९१ वापी-वर्णने च स्वीकृतपाठस्य संवादी पाठो लभ्यते ।

४. अत्र सर्वासु प्रतिषु 'कुमुद' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तौ 'पद्महस्तकाः' पाठो व्याख्यातोस्ति तथा १३८ सूत्रे जाव 'पउमहत्था' एवंविधः पाठः प्राप्यते, तेनात्र 'पउम' इति पाठो युज्यते ।

५. सं० पा०—अच्छे जाव पडिरूवे ।

६. परिपुण्णसरतलेइ (वृ) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. छगलचम्मेइ वा (वृ); जीवाजीवाभिगमे (३।२७७) 'विगचम्मेति वा' इति पाठोस्ति ।

९. °सहस्सवितते णाणाविहपंचवन्नेहिं मणीहिं उवसोभिते (वृ) ।

१०. सोवत्थिय (च); सोत्थिय (छ) ।

११. मच्छंडा-मगरंडा (च, छ) ।

१२. जारा-मारा (च) ।

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ); क्वचित् 'मसी इति वा मसीगुलिया इति वा' न दृश्यते (वृ)।

१४. पत्तसारेइ (क, ख, ग, घ, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबूफलेइ वा अद्दारिट्ठेइ वा परपुट्ठेइ[1] वा गएइ वा गयकलभेइ वा 'किण्हसप्पेइ वा'[2] किण्हकेसरेइ वा आगासथिग्गलेइ वा किण्हासोएइ वा किण्हकणवीरेइ वा किण्हबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? णो[3] इणट्ठे समट्ठे, 'ते णं किण्हा'[4] मणी इत्तो इट्ठतराए चेव कंततराए चेव 'पियतराए चेव'[5] मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव वण्णेणं पण्णत्ता ।।

२६. तत्थ णं जेते नीला मणी, तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए—भिंगेइ वा भिंगपत्तेइ वा सुएइ वा सुयपिच्छेइ वा चासेइ वा चासपिच्छेइ वा णीलीइ वा णीलीभेदेइ वा णीलीगुलियाइ वा सामाएइ वा 'उच्चंतगेइ वा'[6] वणराईइ वा हलधरवसणे इ वा मोरग्गीवाइ वा 'पारेवयग्गीवाइ वा'[7] अयसिकुसुमेइ वा 'वाणकुसुमेइ वा'[8] अंजणकेसियाकुसुमेइ वा नीलुप्पलेइ वा णीलासोगेइ वा 'णीलकणवीरेइ वा णीलबंधुजीवेइ वा'[9] भवे एयारूवे सिया? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं णीला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव[10] •कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° वण्णेणं पण्णत्ता ।।

२७. तत्थ णं जेते लोहिया मणी, तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए—'ससरुहिरेइ वा उरब्भरुहिरेइ वा वराहरुहिरेइ वा मणुस्सरुहिरेइ वा महिसरुहिरेइ वा बालिंदगोवेइ'[11] वा बालदिवाकरेइ वा संझब्भरागेइ वा गुंजद्धरागेइ वा जासुअणकुसुमेइ वा किंसुयकुसुमेइ वा पालियायकुसुमेइ वा जाइहिंगुलएइ वा सिलप्पवालेइ वा पवालअंकुरेइ वा लोहियक्खमणीइ वा लक्खारसगेइ वा किमिरागकंबलेइ[12] वा चीणपिट्ठरासीइ वा 'रत्तुप्पलेइ वा'[13] रत्तासोगेइ वा रत्तकणवीरेइ वा रत्तबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं लोहिया मणी इत्तो इट्ठतराए चेव[14] •कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° वण्णेणं पण्णत्ता ।।

२८. तत्थ णं जेते हालिद्दा मणी, तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए—चंपएइ वा चंपगछल्लीइ वा 'चंपगभेएइ वा'[15] हालिद्दाइ वा हालिद्दाभेदेइ वा हलिद्दागुलियाइ वा हरियालियाइ वा हरियालभेदेइ वा हरियालगुलियाइ वा 'चिउरेइ वा

---

१. परट्ठुतेइ (क, ख, ग, च); परट्ठुतेइ (घ) ।
२. × (क, ख, ग, घ, च) ।
३. गोयमा ! णो (जी० ३।२७८) ।
४. ओवम्मं समणाउसो ! ते णं किण्हा (वृ) ।
५. × (वृ) ।
६. उच्चंतेति वा (क, ख, ग, घ) ।
७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. × (क, ख, ग, घ, च, छ); इत उर्ध्वं क्वचित्—'इंदनीलेइ वा महानीलेइ वा मरगतेइ वा' इति दृश्यते (वृ) ।
९. णीलबंधुजीवेइ वा णीलकणवीरेइ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१०. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं ।
११. उरब्भरुहिरेइ वा ससरुहिरेइ वा नररुहिरेइ वा वराहरुहिरेइ वा बालिंदगोवेइ (क, ख, ग, घ); उरब्भरुहिरेइ वा नररुहिरेइ वा वराहरुहिरे वा बालिंदगोवेइ (च); उरब्भरुहिरेइ वा ससरुहिरेइ वा वराहरुहिरेइ वा बालिंदगोवेइ (छ) ।
१२. किमिकंदलेइ (क, ख, ग); किमिरागरत्तकंबलेइ (जी० ३।२८०) ।
१३. × (क, ख, ग, घ) ।
१४. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं ।
१५. × (क, ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिउरंगरातेइ वा"[1] 'वरकणगेइ वा"[2] वरकणगनिघसेइ वा[3] वरपुरिसवसणेइ वा अल्लकी-कुसुमेइ वा चंपाकुसुमेइ वा कुहंडियाकुसुमेइ वा 'कोरंटकदामेइ वा"[4] तडवडाकुसुमेइ वा घोसेडियाकुसुमेइ वा सुवण्णजूहियाकुसुमेइ वा सुहिरण्णकुसुमेइ वा 'बीययकुसुमेइ वा"[5] पीयासोगेइ वा पीयकणवीरेइ वा पीयबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं हालिद्दा मणी एत्तो इट्ठतराए चेव[6] °कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्ण-तराए चेव मणामतराए चेव° वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२९. तत्थ णं जेते सुक्किला मणी, तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए—अंकेइ वा 'संखेइ वा चंदेइ वा कुमुद-उदक-दयरय-दहिघण-खीर-खीरपूरेइ वा कोंचावलीइ वा हारावलीइ वा हंसावलीइ वा बलागावलीइ वा चंदावलीइ वा"[7] सारतिय-बलाहएइ वा धंतधोयरुप्पपट्टेइ वा सालिपिट्ठरासीइ वा कुंदपुप्फरासीइ वा कुमुदरासीइ वा सुक्कच्छिवाडीइ वा पिहुणमिंजियाइ वा भिसेइ वा मुणालियाइ वा गयदंतेइ वा लवंग-दलएइ वा पोंडरियदलएइ वा[8] सेयासोगेइ वा सेयकणवीरेइ वा सेयबंधुजीवेइ वा भवे एया-रूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं सुक्किला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव[9] °कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° वण्णेणं पण्णत्ता ॥

३०. तेसि णं मणीणं इमेयारूवे गंधे पण्णत्ते, से जहाणामए—कोट्ठपुडाण वा तगर-पुडाण वा एलापुडाण वा चोयपुडाण वा चंपापुडाण वा दमणापुडाण वा कुंकुमपुडाण वा चंदणपुडाण वा उसीरपुडाण वा मरुआपुडाण वा जातिपुडाण वा जूहियापुडाण वा मल्लिया-पुडाण वा ण्हाणमल्लियापुडाण वा केतगिपुडाण वा पाडलिपुडाण वा णोमालियापुडाण[10] वा अगुरुपुडाण वा लवंगपुडाण वा 'वासपुडाण वा कप्पूरपुडाण वा"[11] अणुवायंसि वा[12] ओभिज्ज-माणाण वा कोट्टिज्जमाणाण वा भंजिज्जमाणाण[13] वा उक्किरिज्जमाणाण वा विक्किरिज्ज-माणाण वा परिभुज्जमाणाण[14] वा भंडाओ[15] भंडं साहरिज्जमाणाण वा[16] ओराला मणुण्णा मणहरा घाणमणनिव्वुतिकरा सव्वओ समंता गंधा अभिनिस्सवंति[17] भवे एयारूवे सिया ?

---

१. चउरंगेइ वा चउरंगरातेइ वा (क, च, छ); चउरंगेइ वा चिउरंगरातेइ वा (ख, ग); चिउरंगेइ वा चिउरंगरातेइ वा (घ)।
२. × (वृ)।
३. वा सुवण्णसिप्पेइ वा (क, ख, ग, घ, च, छ)।
४. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
५. कोरंटवरमल्लदामेति वा (क, ख, ग, च, छ); बीअकुसुमेइ वा कोरंटवरमल्लदामेति वा (घ)।
६. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं।
७. संखेति वा चंदेति वा कुंदेति वा दंतेति वा हंसावलीति वा कोंचावलीति वा हारावलीति वा चंदावलीति वा (क, ख, ग, घ, च, छ)।
८. वा सिंधुवारमल्लदामेति वा (जी० ३।२८२)।
९. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं।
१०. णेमालिया° (च)।
११. कप्पूरपुडाण वा वासपुडाण वा (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१२. वा पडिकूलवायंसि (छ)।
१३. रुचिज्जमाणाण (जी० ३।२८३)।
१४. परिभाइज्जमाणाण वा (वृपा)।
१५. भंडाओ वा (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१६. × (छ)।
१७. अभिनिस्सदंति (क, ख, ग); अभिनिस्सरंति (छ, वृ); अभिनिस्सवन्ति (वृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव[1] *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° गंधेणं पण्णत्ता ।।

३१. तेसि णं मणीणं इमेयारूवे फासे पण्णत्ते, से जहानामए—आइणेइ वा रूएइ वा बूरेइ वा णवणीएइ वा हंसगब्भतूलियाइ वा सिरीसकुसुमनिचयेइ वा बालकुमुदपत्तरासीइ[2] वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव[3] *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° फासेणं पण्णत्ता ।

० पेच्छाघरमंडव-विउव्वण-पदं

३२. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं पिच्छाघरमंडवं विउव्वइ—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं अब्भुग्गय - सुकय-वइरवेइया[4]-तोरणवररइय[5]-सालभंजियागं[6] सुसिलिट्ठ - विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-वेरुलिय-विमलखंभं णाणामणिकणगरयणखचिय-उज्जलबहुसमसुविभत्तभूमिभागं[7] ईहामिय-उसभ-तुरग - नर - मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ - चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्तं 'खंभुग्गय - वइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्स-मालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीय-रूवं'[8] कंचणमणिरयणथूभियागं णाणाविहपंचवण्णघंटापडागपरिमंडियग्गसिहरं चवलं मरीतिकवयं[9] विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहियं[10] गोसीस-सरस-रत्तचंदण-दद्दर-दिन्नपंचंगुलितलं उवचियवंदणकलसं वंदणघड-सुकय-तोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-मल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुक्क - पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूतं 'अच्छर-गण-संघ-संविकिण्णं दिव्वतुडियसद्दसंपणाइयं'[11] अच्छं[12] *सण्हं लण्हं घट्ठं मट्ठं णीरयं निम्मलं निप्पंकं निक्कंकडच्छायं सप्पभं समरीइयं सउज्जोयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं° पडिरूवं ।

० पेच्छाघरमंडवे भूमिभाग-विउव्वण-पदं

३३. तस्स णं पिच्छाघरमंडवस्स अंतो[13] बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति जाव[14] मणीणं फासो ।।

---

१. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव गंधेणं ।

२. बालकुसुमपत्तरासीइ (क,ख,ग,घ,च, वृपा) ।

३. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव फासेणं ।

४. वरवेइया (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तावपि 'वरवेदिका' इति व्याख्यातमस्ति, किंतु जीवाजीवाभिगमस्य (३।३७२) सूत्रस्य तथा ज्ञाताधर्मकथायाः (१।१।८६) सूत्रस्य सन्दर्भे 'वइरवेइया' इति पाठ उपयुक्तोस्ति । प्रस्तुतसूत्रस्य (१७) सूत्रे यानविमानवर्णनेपि 'वइरवेइया' इति पाठो लभ्यते ।

५. तोरणवरवइर (क, ख, ग, घ) ।

६. सालिभंजियागं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. °सुविभत्तदेसभायं (क, ख, ग, घ, च); °सुविभत्तदेसभूमिभायं (छ) ।

८. × (च) ।

९. मिरीति° (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. लाइयउल्लोइयमहियं (वृ) ।

११. दिव्वतुडियसद्दसंपणाइयं अच्छरघणसंघसंविइण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. सं० पा०—अच्छं जाव पडिरूवं ।

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१४. राय० सू० २४-३१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

० पेच्छाघरमंडवे उल्लोय-विउव्वण-पदं

३४. तस्स णं पेच्छाघरमंडवस्स उल्लोयं विउव्वति—पउमलयभत्तिचित्तं[1] अच्छं[2] °सण्हं लण्हं घट्ठं मट्ठं णीरयं निम्मलं निप्पंकं निक्कंकडच्छायं सप्पभं समरीइयं सउज्जोयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं° पडिरूवं ॥

० पेच्छाघरमंडवे अक्खाडग-विउव्वण-पदं

३५. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगं वइरामयं अक्खाडगं विउव्वति ॥

० अक्खाडए मणिपेढिया-विउव्वण-पदं

३६. तस्स णं अक्खाडयस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महेगं मणिपेढियं विउव्वति—अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमयं अच्छं[3] °सण्हं लण्हं घट्ठं मट्ठं णीरयं निम्मलं निप्पंकं निक्कंकडच्छायं सप्पभं समरीइयं सउज्जोयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं° पडिरूवं ॥

० मणिपेढियाए सीहासण-विउव्वण-पदं

३७. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ। तस्स णं सीहासणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते—तवणिज्जामया चक्कला, रययामया सीहा, सोवण्णिया पाया, णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं, जंबूणयमयाइं गत्ताइं, वइरामया संधी, णाणामणिमए वेच्चे[4] से णं सीहासणे ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ते ससारसारोवचियमणिरयणपायपीढे[5] अत्थरग-मिउमसूरग-णवतयकुसंत-लिंब[6]-केसर-पच्चत्थुयाभिरामे[7] 'आईणग-रूय-बूर-णव-

१. जीवाजीवाभिगमे (३।३०८) 'पउमलयाभत्तिचित्ता जाव सामलयाभत्तिचित्ता सव्वतवणिज्जमया' इति पाठो लभ्यते। किन्तु प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु केवलं पद्मलताया एव उल्लेखो विद्यते, वृत्तावपि इत्थमेवास्ति — पद्मलताभक्तिचित्रं 'जाव पडिरूवमि' ति, यावच्छब्दकरणात् 'अच्छं सण्हं' मित्यादिविशेषणकदम्बकपरिग्रहः।

२, ३. सं० पा०—अच्छं जाव पडिरूवं।

४. वच्चे (च)।

५. संसार° (क, ख, ग, च, छ)।

६. प्रस्तुतसूत्रे अस्य पदस्य द्वौ पाठभेदौ लभ्येते—लिक्ख (क); लिंब (ख, ग, घ, च, छ)। ज्ञाताधर्मकथायां (१।१।१८) अस्य पदस्य 'लिंब' इति पाठभेदो विद्यते। जीवाजीवाभिगमे (३।३११) मूलपाठे 'लिच्च' इति पदं विद्यते, पाठान्तरे च 'लिक्ख' इति पदमस्ति। एतैः पाठभेदैर्ज्ञायते 'लिंब' इति पाठस्य 'लिच्च' इति रूपे परावर्तनं जातम्। वृत्तिकारैर्यथा यथा पाठो लब्धस्तथा तथा व्याख्यातः—नायाधम्मकहाओ (वृत्तिपत्र १७) लिम्बो-बालोरभ्रस्योर्णायुक्ताकृत्तिः। जीवाजीवाभिगमे (वृत्तिपत्र २१०) लिच्चानि—नमनशीलानि च केशराणि। रायपसेणइयवृत्तौ लिम्बानि कोमलानि नमनशीलानि च केशराणि मध्ये यस्य मसूरकस्य तत् नवत्वक्कुशान्तलिम्बकेशरम्। रायपसेणइयवृत्तौ कोमलानि, जीवाजीवाभिगमस्य वृत्तौ नमनशीलानि इति व्याख्यातमस्ति। अनेन अर्थसादृश्यं प्रतीयते। 'लिच्च' इति पदं लिपिकाराणां प्रसादत एवं जातमस्ति।

७. पत्थयाभिरामे (च); पडुत्थुयाभिरामे (छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीय-तूलफासे सुविरइयरयत्ताणे ओयवियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे रत्तंसुअसंवुए सुरम्मे[1] पासाईए[2] दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

० सीहासणे विजयदूस-विउव्वण-पदं

३८. तस्स णं सीहासणस्स उवरिं, एत्थ णं महेगं विजयदूसं विउव्वइ[3]—संखंक[4]-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुंजसन्निगासं सव्वरयणामयं अच्छं सण्हं[5] पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥

० विजयदूसे अंकुस-विउव्वण-पदं

३९. तस्स णं सीहासणस्स उवरिं विजयदूसस्स य बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगं वयरामयं अंकुसं विउव्वति[6] ॥

० अंकुसे मुत्तादाम-विउव्वण-पदं

४०. तस्सिं च णं वयरामयंसि अंकुसंसि कुंभिक्कं मुत्तादामं विउव्वति[7]। से णं कुंभिक्के मुत्तादामे अण्णेहिं चउहिं कुंभिक्केहिं[8] मुत्तादामेहिं तदद्धुच्चत्तपमाणमेत्तेहिं[9] सव्वओ समंता संपरिखित्ते। ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरमंडियागा[10] णाणा-मणिरयणविविहहारद्धहारउवसोभियसमुदया[11] ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता[12] पुव्वावरदाहिणुत्त-रागएहिं वाएहिं मंदायं-मंदायं 'एज्जमाणा-एज्जमाणा'[13] पलंबमाणा[14]-पलंबमाणा[15] पझंझ-माणा[16]-पझंझमाणा उरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमणणिव्वुतिकरेणं सद्देणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा-आपूरेमाणा सिरीए अतीव[17]-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभे-माणा चिट्ठंति ॥

० भद्दासण-विउव्वण-पदं

४१. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स सीहासणस्स अवरुत्तरेणं[18] उत्तरेणं उत्तरपुर-

१. सुविरइ-रयत्ताणे (रइत्ताणे – ख, ग, घ) ओयविय (उवचिय—क,च,छ) खोमदुगुल्लपट्ट-पडिच्छायणे रत्तंसुअसंवुए (संवुडे – च, छ) सुरम्मे आईणगरूयबूरणवणीयतूलफासमउए (क, ख, ग, घ, च, छ)।

२. पासातीए (क, ख, ग, घ)।

३. विउव्वंति (वृ)। एकवचनस्य कर्त्ता कथं बहु-वचनं क्रियायाम्।

४. संख (घ, छ, वृ)।

५. जीवाजीवाभिगमे (३।४१२) जाव पदेन पूर्णः पाठः सूचितोस्ति।

६, ७. विउव्वंति (वृ)। एक वचनस्य कर्त्ता कथं बहुवचनं क्रियायाम्।

८. अद्धकुंभिक्केहिं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

९. °पमाणेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१०. °पयरगमंडियागा (ख, ग); °पइरमंडियागा (च); × (वृ)।

११. °समुदाया (वृ)।

१२. °संपत्ता वाएहिं (घ, च, छ)।

१३. एईज्जमाणाणं २ (क, ख, ग); एइज्जमाणाणं २ (घ); एइज्जमाणं एइज्जमाणं (च); एयज्जमाणाणं एयज्जमाणाणं (छ)।

१४. बलंबमाणा (क, ख, ग)।

१५. पलंबमाणाणं (घ)।

१६. पडंकमाणा (क); पव्भकमाणा (ख,ग,च,छ)।

१७. अतीत (च)।

१८. 'अवरुत्तरेणं' अत्र सप्तमी स्थाने तृतीया वर्तते। स्थानाङ्गसूत्रे वृत्तिकारेण 'दाहिणेणं' 'एतादृशेषु प्रयोगेषु 'णं' वाक्यालंकारत्वेन स्वीकृतम्। किन्तु अत्र वृत्तिकृता तृतीया सप्तमी विभक्तिरूपेण व्याख्याता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ ॥

४२. तस्स णं सीहासणस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ ॥

४३. तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स अब्भिंतरपरिसाए अट्ठण्हं देवसाहस्सीणं अट्ठ भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ। एवं—दाहिणेणं मज्झिमपरिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति। दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति। पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवतीणं सत्त भद्दासणे विउव्वति ॥

४४. तस्स णं सीहासणस्स चउदिसिं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति, तं जहा—पुरत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ ॥

जाणविमाण-विउव्वणस्स निगमण-पदं

४५. तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए—अइरुग्गयस्स वा हेमंतियबालियसूरियस्स[1], खयरिंगालाण वा रत्तिं पज्जलियाणं, जवाकुसुमवणस्स[2] वा केसुयवणस्स वा पारियायवणस्स वा सव्वतो समंता संकुसुमियस्स भवे एयारूवे सिया? णो इणट्ठे[3] समट्ठे। तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स एत्तो इट्ठतराए चेव[4] °कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° वण्णे पण्णत्ते। गंधो य फासो य जहा[5] मणीणं ॥

४६. तए णं से आभियोगिए देवे दिव्वं जाणविमाणं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं[6] °दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणति ॥

जाणविमाणारोहण-पदं

४७. तए णं से सूरियाभे देवे आभियोगस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ[7] °तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए दिव्वं जिणिंदाभिगमणजोग्गं उत्तरवेउव्वियरूवं विउव्वति, विउव्वित्ता चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहिं अणिएहिं, तं जहा—गंधव्वाणिएण य णट्टाणिएण य सद्धिं संपरिवुडे तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं दुरुहति,

---

१. °बालसूरियस्स (छ)।

२. जासुमणस्स (क, ख, ग, घ, च); जावसुमणस्स (छ)।

३. इणमट्ठे (क, ख, ग, घ, च)।

४. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णे।

५. राय० सू० ३०,३१।

६. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव पच्चप्पिणति।

७. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरुहित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

४८. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ तं दिव्वं जाण-विमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरुहंति, दुरुहित्ता पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वणत्थेहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति । अवसेसा देवा य देवीओ य तं दिव्वं जाणविमाणं[1] •अणुपयाहिणीकरेमाणा° दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरुहंति, दुरुहित्ता पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वणत्थेहिं भद्दासणेहिं निसीयंति ।।

पयाण-सज्जा-पदं

४९. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स तं दिव्वं जाणविमाणं दुरुढस्स समाणस्स अट्ठट्ठ मंगला[2] पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ[3]-•णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ°-दप्पणा ।।

५०. तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगार-दिव्वायवत्तपडागा[4] सचामरा दंसणरइया आलोयदरिसणिज्जा[5] वाउद्धयविजयवेजयंतीपडागा ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।।

५१. तयणंतरं[6] च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभितं चंदमंडल-निभं समुस्सियं विमलमायवत्तं पवरसीहासणं च मणिरयणभत्तिचित्तं सपायपीढं सपाउया-जोयसमाउत्तं[7] बहुकिंकरामरपरिग्गहियं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थियं ।।

५२. तयणंतरं च णं वइरामय-वट्ट-लट्ठ-संठिय-सुसिलिट्ठ-परिघट्ठ-मट्ठ-सुपतिट्ठिए विसिट्ठे[8] अणेगवरपंचवण्णकुडभी-सहस्सपरिमंडियाभिरामे[9] वाउद्धयविजयवेजयंतीपडा-गच्छत्तातिच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे जोयणसहस्समूसिए महतिमहालए महिंदज्झए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिए ।।

५३. तयणंतरं च णं सुरूव[10]-णेवत्थ-परिकच्छिया सुसज्जा सव्वालंकारभूसिया महया भड-चडगर-पहगरेणं पंच अणीयाहिवइणो पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।।

५४. तयणंतरं[11] च णं बहवे आभियोगिया देवा देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहिं, 'सएहिं-सएहिं, विसेसेहिं, सएहिं-सएहिं विहवेहिं, सएहिं-सएहिं णिज्जोएहिं,'[12] सएहिं-सएहिं णेवत्थेहिं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।।

---

१. सं० पा०—जाणविमाणं जाव दाहिणिल्लेणं ।

२. मंगलगा (वृ) ।

३. सं० पा०—सिरिवच्छ जाव दप्पणा ।

४. दिव्वा य छत्तपडागा (ओ० सू० ६४, जं० ३।१७८) ।

५. लोयदरिसणिज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. तयाणंतरं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. समाउया° (क, ख, ग, च) ।

८. सिट्ठो (क, ख, ग); सिट्ठे (घ, च, छ) ।

९. सहस्सुस्सिए (वृ) ।

१०. सरूव (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. एतत्सूत्रं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

१२. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (३।१७८) चिह्नाङ्कित-पाठस्य स्थाने एतादृश: पाठो विद्यते—'एवं वेसेहिं चिंधेहिं निओएहिं' । अस्य पाठस्य 'वेसेहिं' इति पदं सम्यक् प्रतिभाति । 'विसे-सेहिं' इति पदस्य कश्चिद् विशिष्टोर्थो नैव ज्ञायते । °णेज्जाएहिं (क,ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५. तयणंतरं च णं सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए जाव[1] नाइयरवेणं सूरियाभं देवं पुरतो पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति ॥

जाणविमाण-पच्चोरुहण-पदं

५६. तए णं से सूरियाभे देवे तेणं पंचाणीयपरिखित्तेणं वइरामयवट्ट-लट्ठ-संठिय[2]-•सुसिलिट्ठ-परिघट्ठ-मट्ठ-सुपतिट्ठिएणं विसिट्ठेणं अणेगवरपंचवण्णकुडभी-सहस्सपरिमंडिया-भिरामेणं वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिएणं तुंगेणं गगणतलमणुलिहंतसिह-रेणं° जोयणसहस्समूसिएणं महतिमहालतेणं महिंदज्झएणं पुरतो कड्ढिज्जमाणेणं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं[3], •चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं° सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं सूरियाभविमाण-वासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[4] णाइयरवेणं सोध-म्मस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं उवदंसेमाणे-उवदंसेमाणे 'पडिजागरेमाणे-पडिजागरेमाणे'[5] जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिल्ले णिज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छति, जोयणसयसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे वीतिवय-माणे[6] ताए उक्किट्ठाए[7] •तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए देवगईए° तिरियमसंखिज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीतीवयमाणे-वीतीवयमाणे जेणेव 'नंदीसरवरे दीवे'[8] जेणेव दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दिव्वं देविड्ढिं[9] •दिव्वं देवजुतिं° दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरेमाणे-पडिसाहरेमाणे पडिसंखेवेमाणे-पडिसंखेवेमाणे जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव आमलकप्पा नयरी जेणेव अंबसालवणे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं[10] तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता[11] समणस्स भगवओ महावीरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे[12] तं दिव्वं जाणविमाणं ईसिं चउरंगुलमसंपत्तं धरणितलंसि ठवेई, ठवेत्ता चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहिं अणिएहि य— गंधव्वाणिएण य णट्टाणिएण य सद्धिं संपरिवुडे ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति ॥

५७. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति। अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति ॥

---

१. राय० सू० १३।
२. सं० पा०—संठिय जाव जोयणसहस्समूसिएणं।
३. सं० पा०—सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसहिं।
४. राय० सू० १३।
५. उवलालेमाणे उवलालेमाणे (वृ)।
६. वयमाणे (क, ख, ग, घ, च)।
७. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखिज्जाणं।
८. नन्दीश्वरो द्वीपः (वृ)।
९. सं० पा०—देविड्ढि जाव दिव्वं।
१०. विमाणेणं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
११. × (क, ख, ग, घ, च)।
१२. दिसाभागे (क, ग, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरियाभस्स-वंदण-पदं

५८. तए णं से सूरियाभे देवे [चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं ?][1] चउहिं अग्गमहिसीहिं[2] °सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं°, सोलसहिं आयरक्खदेव-साहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[3] णाइयरवेणं[4] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--अहण्णं भंते! सूरियाभे देवे देवाणुप्पियं वंदामि नमंसामि[5] °सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामि ॥

वंदणाणुमोदण-पदं

५९. सूरियाभाइ! समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी—पोराणमेयं सूरियाभा! 'जीयमेयं सूरियाभा!'[6] किच्चमेयं सूरियाभा! करणिज्जमेयं सूरियाभा! आइण्णमेयं सूरियाभा! अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा! जण्णं भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता तओ पच्छा साइं-साइं नाम-गोत्ताइं साहिंति, तं[7] पोराणमेयं सूरियाभा! जाव अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा!

पज्जुवासणा-पदं

६०. तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ[8] °तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता° समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासति ॥

धम्मदेसणा-पदं

६१. तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभस्स देवस्स तीसे य महतिमहालियाए [9]इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जतिपरिसाए विदुपरिसाए देवपरिसाए खत्तियपरिसाए इक्खाग-परिसाए कोरव्वपरिसाए अणेगसयाए अणेगवंदाए अणेगसयवंदपरिवाराए परिसाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंतिजुत्ते सारय-णवत्थणिय-महुरगंभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे, उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए[10] अमम्म-

---

१. सप्तमसूत्रानुसारेणात्रैष पाठो युज्यते।

२. सं० पा०—अग्गमहिसीहिं जाव सोलसहिं।

३. राय० सू० १३।

४. णाइएणं (क, ख, ग, घ, च)।

५. सं० पा०—नमंसामि जाव पज्जुवासामि।

६. × (क, ख, ग, च, छ)।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

८. सं० पा०—हट्ठ जाव समणं।

९. रायपसेणइयवृत्तौ आचार्यमलयगिरिणा औपपातिकस्य पाठः समुद्धृतः, स च अभयदेवसूरिव्याख्यात-पाठात् किञ्चिद् भिद्यते—

(ओवाइय वृत्ति पृ० १४७)	(रायपसेणइय वृत्ति पृ० ११६ पं० बेचरदास द्वारा संपादित)
अगरलयाए अमम्मणाए सव्वक्खरसण्णि-वाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए	अगग्गयाए अमम्मणाए फुडविसयमहुरगंभीर-गाहिगाए सव्वक्खरसन्निवाइयाए गिराए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयण-णीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—अरिहा धम्मं परिकहेइ" जाव परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

पण्ह-वागरण-पदं

६२. तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1]-•चित्तमाणंदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण°-हियए उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! सूरियाभे देवे किं भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? सम्मदिट्ठी ? मिच्छ-दिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?

सूरियाभाइ ! समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी—सूरियाभा ! तुमण्णं भवसिद्धिए, नो अभवसिद्धिए[3]। •सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए°। चरिमे, नो अचरिमे ॥

नट्टविहि-उवदंसण-पदं

६३. तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए[4] •पीइमणे° परमसोमणस्सिए[5] हरिसवस-विसप्पमाणहियए समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं बयासी—तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह, 'सव्वओ जाणह सव्वओ पासह'[6], सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह, 'सव्वे

सव्वभासाणुगामिणीए सव्वसंसयविमोयणीए
अपुणरुत्ताए सरस्सईए

अत्र 'अगरलयाए,' 'पुण्णरत्ताए' इति शब्दद्वयं आलोच्यमस्ति। 'अगरलयाए' (सुविभक्ताक्षरतया) इति पाठापेक्षया 'अगग्गयाए' (अगद्गदया) इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति।

'पुण्णरत्ताए' इति पाठस्य व्याख्या अभयदेवसूरिणा इत्थं कृतास्ति—'पूर्णा च स्वरकलाभिः रक्ता च—गेयरागानुरक्ता या सा तथा तया।'

वृत्तिकारेण आदर्शे एतादृश एव पाठो लब्धस्तेन तथा व्याख्यातः।

रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १६०) गेयस्य अष्टगुणानां व्याख्या प्रसंगे 'पूर्णं', 'रक्तं' इतिगुणद्वयं व्याख्यातमीरितं यथा—तत्र यत् स्वरकलाभिः परिपूर्णं गीयते तत् 'पूर्णम्,' गेयरागानुरक्तेन यद् गीयते तद् 'रक्तम्'। एषा व्याख्या अभयदेवसूरिकृत 'पूर्णरक्त' व्याख्यया तुल्यास्ति। अनया ज्ञायते सा व्यर्था नास्ति, तेन आचार्यमलयगिरिणा समुद्धृतः औपपातिकपाठो वाचनाभेदस्य प्रतीयते।

१. चिन्हाङ्कितपाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते। एष वृत्त्याधारेण स्वीकृतः। द्रष्टव्यानि औपपातिकस्य ७१ से ७६ सूत्राणि।

२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।

३. सं० पा०—अभवसिद्धिए जाव चरिमे।

४. सं० पा०—चित्तमाणंदिए जाव परमसोमणस्सिए।

५. °सोमणसे (क, ख, ग, च, छ)।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावे जाणह सव्वे भावे पासह"। जाणंति णं देवाणुप्पिया! मम पुव्विं वा पच्छा वा ममेय-रूवं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसतिबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तए॥

६४. तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणइ तुसिणीए संचिट्ठति॥

६५. तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—तुब्भे णं भंते! सव्वं जाणह[2] "सव्वं पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह। जाणंति णं देवाणुप्पिया! मम पुव्विं वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभि-समण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसतिबद्धं नट्टविहिं° उवदंसित्तएत्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ[3], समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरति[4], "तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंज-णाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसा-डेति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाएइ परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, समोहणित्ता° बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति, से जहानामए—आलिंग-पुक्खरेइ वा जाव[5] मणीणं फासो॥

६६. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे पिच्छाघरमंडवं विउव्वति—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं वण्णओ[6] अंतो बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं उल्लोयं अक्खाडगं च मणिपेढियं च विउव्वति॥

६७. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं सीहासणं सपरिवारं जाव[7] दामा चिट्ठंति॥

६८. तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवतो महावीरस्स आलोए पणामं करेति, करेत्ता अणुजाणउ मे भगवंति कट्टु सीहासणवरगए तित्थयराभिमुहे सण्णिसण्णे॥

६९. तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए नाणामणिकणगरयणविमल-महरिह-'निउण-ओविय'[8]-मिसिमिसेंतविरचियमहाभरण-कडग[9]-तुडियवरभूसणुज्जलं पीवरं पलंबं दाहिणं भुयं पसारेति।

१. × (क, ख, ग, च, छ)।
२. सं० पा०—जाणह जाव उवदंसित्तए।
३. समोहणइ (क, ख, ग, च, छ)।
४. सं० पा०—निसिरति अहाबायरे अहासुहुमे दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं जाव बहुसम°।
५. राय० सू० २४-३१।
६. राय० सू० ३२-३६।
७. राय० सू० ३७-४४।
८. निउणोविय (क, ख, ग); निउणोवचिय (घ, च)।
९. कणग (क, ख, ग, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तओ णं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं एगाभरण-वसणगहियणिज्जोयाणं दुहओ संवेल्लियग्गणियत्थाणं 'आविद्धतिलयामेलाणं पिणद्धगेवेज्जकंचुयाणं'[1] उप्पीलिय-चित्तपट्ट-परियर-सफेणकावत्तरइय-संगय-पलंब-वत्थंत-चित्त-चिल्ललग-नियंसणाणं एगावलि-कंठरइय-सोभंत-वच्छ-परिहत्थ-भूसणाणं अट्ठसयं नट्ट-सज्जाणं देवकुमाराणं णिग्गच्छइ ।।

७०. तयणंतरं[2] च णं नानामणि[3] *कणगरयणविमल-महरिह-निउण-ओविय-मिसि-मिसेंतविरचियमहाभरण-कडग-तुडियवरभूसणुज्जलं° पीवरं पलंबं वामं भुयं पसारेति ।

तओ णं सरिसियाणं[4] सरित्तयाणं सरिव्वतीणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं एगाभरण-वसणगहियणिज्जोईणं दुहओ संवेल्लियग्गणियत्थीणं आविद्धतिलयामेलीणं[5] पिणद्धगेवेज्जकंचुईणं नानामणि-कणग[6]-रयण-भूसण-विराइयंगमंगीणं चंदाणणाणं चंदद्ध-समनिलाडाणं चंदाहियसोमदंसणाणं उक्का इव उज्जोवेमाणीणं सिंगारागारचारुवेसाणं संगयागय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलासललिय-संलावनिउणजुत्तोवयारकुसलाणं गहिया-उज्जाणं अट्ठसयं नट्टसज्जाणं देवकुमारीणं णिग्गच्छइ ।।

७१. तए णं से सूरियाभे देवे 'अट्ठसयं संखाणं विउव्वइ, अट्ठसयं संखवायाणं विउव्वइ, अट्ठसयं सिंगाणं विउव्वइ, अट्ठसयं सिंगवायाणं विउव्वइ, अट्ठसयं संखियाणं विउव्वइ, अट्ठसयं संखियवायाणं विउव्वइ'[7], अट्ठसयं खरमुहीणं विउव्वइ, अट्ठसयं खरमुहिवायाणं विउव्वइ, अट्ठसयं पेयाणं विउव्वइ, अट्ठसयं पेयावायगाणं विउव्वइ, अट्ठसयं पिरिपिरियाणं[8] विउव्वइ, अट्ठसयं पिरिपिरियावायगाणं विउव्वइ[9], एवमाइयाइं[10] एगूणपण्णं आउज्जविहा-णाइं विउव्वइ, विउव्वित्ता तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयाओ य सद्दावेति ।।

७२. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं सद्दाविया समाणा हट्ठ[11] *तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण-हियया° जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरि-ग्गहियं[12] *दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति°, वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं कायव्वं ।।

७३. तए णं से सूरियाभे देवे ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेह,

---

१. × (वृ) ।
२. तयाणंतरं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
३. सं० पा०—नानामणि जाव पीवरं ।
४. सरिसयाणं (क, ख, ग, वृ) ।
५. °मेलाणं (छ) ।
६. × (क, ख, ग, घ, च) ।
७. × (ख, ग, घ) ।
८. परिपरियाणं (च, छ) ।
९. अतः परं वृत्तौ अन्येषां आतोद्यानां नामान्यपि उल्लिखितानि सन्ति द्रष्टव्यानि वृत्तिपत्राणि १२६-१२८ । ७७ सूत्रे शेषातोद्यानां नामानि साक्षाल्लिखितानि सन्ति ।
१०. एवमातियाणं (क, ख, ग, घ, छ); एवमाति-याणि (च) ।
११. सं० पा०—हट्ठ जाव जेणेव ।
१२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता गोयमाइयाणं[1] समणाणं निग्गंथाणं तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसइबद्धं[2] णट्टविहिं उवदंसेह, उवदंसित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

७४. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ[3] °तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं[4] °तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता° नमंसित्ता जेणेव गोयमादिया समणा निग्गंथा तेणेव निग्गच्छंति ।।

७५. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेंति, करेत्ता समामेव पंतीओ बंधंति, बंधित्ता समामेव ओणमंति, ओणमित्ता समामेव उण्णमंति[5], उण्णमित्ता एवं सहियामेव ओणमंति, ओणमित्ता सहियामेव उण्णमंति, उण्णमित्ता संगयामेव[6] ओणमंति, ओणमित्ता संगयामेव उण्णमंति, उण्णमित्ता थिमियामेव[7] ओणमंति, ओणमित्ता थिमियामेव उण्णमंति, उण्णमित्ता समामेव पसरंति, समामेव आउज्जविहाणाइं गेण्हंति, गेण्हित्ता समामेव पवाएंसु समामेव पगाइंसु समामेव पणच्चिंसु ।।

७६. किं ते ? उरेण मंदं, सिरेण तारं, कंठेण वितारं, तिविहं तिसमय[8]-रेयग-रइयं गुंजावंककुहरोवगूढं[9] रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं सकुहरगुंजंत[10]-वंस-तंती-तल-ताल-लय-गहसुसंप-उत्तं महुरं समं सललियं मणोहरं मउरिभियपयसंचारं सुरइं सुणतिं वरचारुरूवं दिव्वं णट्टसज्जं गेयं पगीया[11] वि होत्था ।।

७७. 'किं ते'[12] ? उद्धमंताणं—संखाणं सिंगाणं संखियाणं खरमुहीणं पेयाणं पिरिपिरियाणं, आहम्मंताणं—पणवाणं पडहाणं, अप्फालिज्जमाणाणं—भंभाणं होरंभाणं, तालिज्जंतीणं—भेरीणं झल्लरीणं दुंदुहीणं, आलवंताणं[13]—मुरयाणं[14] मुइंगाणं नंदीमुइंगाणं, उत्तालिज्जंताणं—आलिंगाणं कुतुंबाणं गोमुहीणं मद्दलाणं[15], मुच्छिज्जंताणं—वीणाणं विपंचीणं वल्लकीणं, कुट्टिज्जंतीणं—महंतीणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं, सारिज्जंताणं—बद्धीसाणं सुघोसाणं नंदिघोसाणं, फुट्टिज्जंतीणं[16]—भामरीणं छब्भामरीणं[17] परिवायणीणं, छिप्पंताणं—

---

१. गोयमातियाणं (च) ।
२. द्वात्रिंशद्विधम् (वृ) ।
३. सं० पा०—हट्ठ जाव करयल जाव पडिसुणंति ।
४. सं० पा०—महावीरं जाव नमंसित्ता ।
५. उब्भमंति (क, ख, ग) ।
६. थिमियमेव (क, घ, च); थिमियामेव (छ) ।
७. संगयामेव (क, ख, च) ।
८. तिसम (क, ख, ग, घ, च) ।
९. कुंजावंक° (क) । गुंजा+अवंक°=गुंजावंक° ।
१०. सकुहरकुजंत (क, ख, ग, च) ।
११. गीया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१२. किं च ते देवकुमारा देवकुमारिकाश्च प्रगीतवन्त प्रनर्तितवन्तश्च ? (वृ) ।
१३. आलिपंताणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१४. मुरयवराणं (क, छ); मुरजवराणं (घ) ।
१५. मद्दीलीणं मद्दलाणं (घ) ।
१६. स्पन्दनम् (वृ) ।
१७. उब्भामरीणं (क, ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तूणाणं तुंबवीणाणं, आमोडिज्जंताणं—आमोटाणं[1] झंझाणं[2] नउलाणं, अच्छिज्जंतीणं—मुगुंदाणं हुडुक्कीणं विचिक्कीणं, वाइज्जंताणं—करडाणं डिंडिमाण किणियाणं[3] कडंबाणं[4], ताडिज्जंताणं—दद्दरगाणं दद्दरिगाणं कुतुंबराणं[5] कलसियाणं मड्डयाणं[6] आताडिज्जंताणं[7]—तलाणं तालाणं कंसतालाणं, घट्टिज्जंताणं—रिंगिसियाणं[8] लत्तियाणं मगरियाणं सुंसुमारियाणं, फूमिज्जंताणं—वंसाणं[9] वेलूणं वालीणं परिलीणं बद्धगाणं[10] ॥

७८. तए णं से दिव्वे गीए 'दिव्वे नट्टे दिव्वे वाइए'[11], [12]°अब्भुए गीए अब्भुए नट्टे अब्भुए वाइए, सिंगारे गीए सिंगारे नट्टे सिंगारे वाइए, उराले गीए उराले नट्टे उराले वाइए, मणुण्णे गीए मणुण्णे नट्टे मणुण्णे वाइए°, 'मणहरे गीए मणहरे नट्टे'[13] मणहरे वाइए, उप्पिंजलभूते कहकहभूते[14] दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

७९. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स सोत्थिय-सिरिवच्छ-नंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पण-मंगलभत्तिचित्तं णामं दिव्वं नट्टविधिं उवदंसेंति ॥

८०. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेंति, करेत्ता तं चेव भाणियव्वं जाव[15] दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

८१. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स आवड-पच्चावड-सेढि-पसेढि-सोत्थिय-सोवत्थिय[16]-पूसमाणव[17]-वद्धमाणग-'मच्छंडा-मगरंडा-जारा-मारा'[18]-फुल्लावलि-पउमपत्त-सागरतरंग-वसंतलता[19]-पउमलयभत्तिचित्तं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

८२. एवं च एक्किक्कियाए णट्टविहीए समोसरणादिया एसा वत्तव्वया जाव[20] दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

८३. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स

---

१. आमोताणं (क, च, छ)।
२. कुंभाणं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
३. किरियाणं (क, ख, ग, घ)।
४. करंबाणं (क)।
५. कुतुंबाणं (क, ख, ग, घ, च, छ); एतत्पदं वृत्त्याधारेण स्वीकृतम्। वृत्तौ १२७ पृष्ठेपि 'कुस्तुम्बराणाम्' इति पदं दृश्यते।
६. मडुयाणं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
७. आवडिज्जंताणं (क, ख, ग, च, छ)।
८. गिरिसियाएणं (क); गिरिसियाणं (ख, ग, घ, च, छ)।
९. कुमिवंसाणं (क)।
१०. पव्वगाणं (क, ख, ग, व, च, छ)।
११. दिव्वे वाइए दिव्वे नट्टे (वृ)।
१२. सं० पा०—एवं अब्भुए सिंगारे उराले मणुन्ने।
१३. मणहरे नट्टे मणहरे गीते (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१४. °कहा° (क, ख, ग, घ, च, छ); °कहग° (घ)।
१५. राय० सू० ७५-७८।
१६. + (च, छ)।
१७. पूसमाणग (क, ख, ग, च, छ); पूसमाण (घ)।
१८. मच्छंडग-मगरंडग-जार-मारा (छ)।
१९. चतुर्विंशतितमे सूत्रे '°लय' शब्दो विद्यते अत्र तु '°लता'।
२०. राय० सू० ७५-७८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईहामिअ-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग - वालग-किन्नर-रुरु - सरभ-चमर - कुंजर- वणलय-पउमलयभत्तिचित्तं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

८४. एगओवंकं, 'एगओखहं दुहओखहं'[१], 'एगओचक्कवालं दुहओचक्कवालं चक्कद्ध-चक्कवालं'[२] णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

८५. चंदावलिपविभत्तिं च[३] सूरावलिपविभत्तिं च वलयावलिपविभत्तिं[४] च हंसावलिपविभत्तिं च एगावलिपविभत्तिं च तारावलिपविभत्तिं च 'मुत्तावलिपविभत्तिं च कणगावलिपविभत्तिं च'[५] रयणावलिपविभत्तिं च 'आवलिपविभत्तिं च'[६] णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

८६. चंदुग्गमणपविभत्तिं च सूरुग्गमणपविभत्तिं च उग्गमणुग्गमणपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं[७] उवदंसेंति ।।

८७. चंदागमणपविभत्तिं च सूरागमणपविभत्तिं च आगमणागमणपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

८८. चंदावरणपविभत्तिं च सूरावरणपविभत्तिं च आवरणावरणपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

८९. चंदत्थमणपविभत्तिं च सूरत्थमणपविभत्तिं च अत्थमणत्थमणपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

९०. चंदमंडलपविभत्तिं च सूरमंडलपविभत्तिं च नागमंडलपविभत्तिं च जक्खमंडलपविभत्तिं च भूतमंडलपविभत्तिं च 'रक्खस-महोरग-गंधव्वमंडलपविभत्तिं च'[८] मंडलपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

९१. 'उसभमंडलपविभत्तिं च सीहमंडलपविभत्तिं च'[९], हयविलंबियं गयविलंबियं, 'हयविलसियं गयविलसियं'[१०], मत्तहयविलसियं मत्तगयविलसियं, 'मत्तहयविलंबियं मत्तगयविलंबियं'[११] दुयविलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

९२. सागरपविभत्तिं[१२] च नागरपविभत्तिं च सागर-नागरपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

९३. नंदापविभत्तिं च चंपापविभत्तिं च नंदा-चंपापविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं

१. × (ख, ग, वृ) ।
२. चक्कदुचक्कवालं (क, घ) ।
३. वा (घ) ।
४. वलियावलि° (क, ख, ग) ।
५. कणगावलिपविभत्तिं च मुत्तावलिपविभत्तिं च (घ) ।
६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । आदर्शेषु एतेषां नाट्यविधीनां पाठः सर्वत्र एकरूपो नास्ति । क्वचित् नाट्यविधेर्मौलिकं नाम लिखितमुपलभ्यते, यथा—उग्गमणुग्गमणपविभत्तिं आगमणागमणपविभत्तिं, क्वचिद् एतद् नास्ति । अत्र जीवाजीवाभिगमवृत्ति (पत्र २४६) रपि द्रष्टव्या
७. णट्टविहं (घ, च, छ) ।
८. × (वृ) ।
९. उसभललियविक्कंतं सीहललियविक्कंतं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१०. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
११. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१२. सगडुद्धियपविभत्तिं च साग° (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवदंसेंति ॥

९४. मच्छंडापविभत्तिं च मयरंडापविभत्तिं च 'जारापविभत्तिं च मारापविभत्तिं च'[1] मच्छंडा-मयरंडा-जारा-मारापविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

९५. 'क' त्ति ककारपविभत्तिं च 'ख' त्ति खकारपविभत्तिं च 'ग' त्ति गकारपविभत्तिं च 'घ' त्ति घकारपविभत्तिं च 'ङ' त्ति ङकारपविभत्तिं च ककार-खकार-गकार-घकार-ङकार-पविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

९६. एवं—चकारवग्गो वि ॥

९७. टकारवग्गो वि ॥

९८. 'तकारवग्गो वि ॥

९९. पकारवग्गो वि'[2] ॥

१००. असोयपल्लवपविभत्तिं च अंबपल्लवपविभत्तिं च जंबूपल्लवपविभत्तिं च कोसंबपल्लवपविभत्तिं च पल्लवपविभत्तिं[3] च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१०१. पउमलयापविभत्तिं[4] °च नागलयापविभत्तिं च असोगलयापविभत्तिं च चंपगलयापविभत्तिं च चूयलयापविभत्तिं च वणलयापविभत्तिं च वासंतियलयापविभत्तिं च अइमुत्तयलयापविभत्तिं च कुंदलयापविभत्तिं च° सामलयापविभत्तिं च लयापविभत्तिं[5] च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१०२. दुयं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१०३. विलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१०४. दुयविलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१०५. अंचियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१०६. रिभियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१०७. अंचियरिभियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१०८. आरभडं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१०९. भसोलं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

११०. आरभडभसोलं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

१११. उप्पायनिवायपसत्तं[6] संकुचिय-पसारियं रियारियं[7] भंतसंभंतं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ॥

११२. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेंति जाव[8] दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

---

१. जारपविभत्तिं च मारपविभत्तिं च (छ) ।

२. तवग्गो वि पवग्गो वि (क, ख, ग, च, छ) ।

३. पल्लव २ पविभत्तिं च (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—पउमलयापविभत्तिं जाव सामलयापविभत्तिं ।

५. लया २ पविभत्तिं (घ) ।

६. उप्पायनिवायपवत्तं (क, ख, ग, घ, च) ; उप्पायनिवायपविभत्तं (छ); अयं पाठो वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः ।

७. रयारइयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ; रेचकारचितं (वृ) ।

८. राय० सू० ७५-७८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११३. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स 'चरमपुव्वभवणिबद्धं च चरमचवणनिबद्धं च चरमसाहरणनिबद्धं च चरमजम्मणनिबद्धं च चरमअभिसेअनिबद्धं च चरमबालभावनिबद्धं च चरमजोव्वणनिबद्धं च चरमकामभोगनिबद्धं च चरमनिक्खमणनिबद्धं च चरमतवचरणनिबद्धं च चरमणाणुप्पायनिबद्धं च चरमतित्थ-पवत्तणनिबद्धं च चरमपरिनिव्वाणनिबद्धं च चरमनिबद्धं च'[1] णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।

११४. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य चउव्विहं वाइत्तं वाएंति, तं जहा—ततं विततं घणं सुसिरं[2] ।।

११५. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ च चउव्विहं गेयं गायंति, तं जहा—'उक्खित्तं पायंतं मंदायं रोइयावसाणं च'[3] ।।

---

१. पुव्वभवचरियनिबद्धं च देवलोयचरियणिबद्धं च चवणचरियणिबद्धं च साहरणचरियणिबद्धं च जम्मणचरियणिबद्धं च अभिसेअचरियनिबद्धं च बालभावचरियनिबद्धं च कामभोगचरियनिबद्धं च तवचरणचरियनिबद्धं च तित्थपवत्तणचरियनिबद्धं च परिनिव्वाणचरियनिबद्धं च चरिमचरियनिबद्धं च (क, ख, ग. घ, च, छ) ।

२. झुसिरं (जी० ३।४४७) ।

३.

रायपसेणइय (सू० ११५)	रायपसेणइय (सू०२८१)	स्थानांग (४।६३४)	जीवाजीवाभिगम (३।४४७)
उक्खित्तं	उक्खित्तायं	उक्खित्तए	उक्खित्तं
पायंतं	पायंतायं	पत्तए	पवत्तं
मंदायं	मंदायं	मंदए	मंदायं
रोइयावसाणं	रोइयावसाणं	रोविंदए	रोइयावसाणं

रायपसेणइय (सू० ११५) वृत्ति :—उत्क्षिप्तं प्रथमतः समारभ्यमाणम् पादान्तम्—पादवृद्धम् वृद्धादि-चतुर्भागरूपपादबद्धम् इति भावः । मध्यभागे मूर्छनादिगुणोपेततया मन्दं मन्दं घोलनात्मकम् रोचितावसानम् इति—रोचितं यथोचितलक्षणोपेततया भावितम्—सत्यापितम् इति यावत् अवसानं यस्य तद् रोचितावसानम् (वृत्ति, पृ० १४४,१४५) ।

रायपसेणइय सू० २८१ । अत्र वृत्तिकृता नास्ति किञ्चिद् व्याख्यातम् स्थानाङ्ग (४।६३४) वृत्तिकारेण लिखितमत्र—नाट्यगेयाभिनयसूत्राणि सम्प्रदायाभावान्न विवृतानि (वृत्ति, पत्र २७२) ।

जीवाजीवाभिगम (३।४४७) । वृत्ति :—'उत्क्षिप्तं' प्रथमतः समारभ्यमाणम् 'प्रवृत्तम्' उत्क्षेपाव-स्थातो विक्रान्तं मनाग्भरेण प्रवर्त्तमानं मन्दायमिति—मध्यभागे मूर्छनादि गुणोपेततया मन्दं मन्दं घोलनात्मकं 'रोचितावसान' मिति रोचितं—यथोचितलक्षणोपेततया भावितं सत्यापितममिति यावत् अवसानं यस्य तद् रोचितावसानम् (वृत्ति, पत्र २४७) ।

रायपसेणइयसूत्रे द्विवारं गेयस्य उल्लेखोस्ति, तत्र द्वितीयवारे प्रथमवर्तिनो द्वयोः शब्दयोः स्वार्थिकः क प्रत्ययः कृतोस्ति तेन 'उक्खित्तायं, पायंतायं' पाठो जातः । यद्यपि आदर्शेषु 'पायत्तायं' पाठो दृश्यते किन्तु लिपि दोषाद् एवं जातः प्रतीयते । तेन अस्माभिर्मूले 'पायंतायं' पाठः स्वीकृतः ।

जीवाजीवाभिगमे त्रयः शब्दाः रायपसेणइयशब्देभ्यस्तुल्या वर्तन्ते केवलं द्वितीयशब्दो भिन्नोस्ति । स्थानांगे 'पत्तए, रोविंदए' द्वौ शब्दौ भिन्नौ वर्तेते । असौ वाचनाभेदोस्ति अथवा लिपिदोषेण परिवर्तनं जातमिति न निश्चेतुं शक्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११६. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं णट्टविहिं उवदंसेंति, तं जहा—अंचियं रिभियं आरभडं भसोलं च ।।

११७. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं अभिणयं[1] अभिणेंति, तं जहा—'दिट्ठंतियं पाडंतियं[2] सामन्नओविणिवाइयं[3] लोगमज्झावसाणियं[4] च'[5] ।।

११८. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य गोयमादियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं[6] दिव्वं बत्तीसइबद्धं[7] नट्टविहिं उवदंसित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एयमाणत्तियं[8] पच्चप्पिणंति ।।

११९. तए णं से सूरियाभे देवे तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरइ, पडिसाहरेत्ता खणेणं जाते एगे एगभूए ।

१२०. तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नियगपरिवालसद्धिं संपरिवुडे तमेव दिव्वं जाण-विमाणं दुरुहति, दुरुहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

---

१. णट्टं अभिणयं (क, ख, ग, घ, च) ।

२. पाडियंतियं (क,घ); पाडियं (ख, ग, च, छ); २८१ सूत्रेपि सर्वप्रतिष 'पाडंतियं' पाठो विद्यते ।

३. सामंतोवणिवाइयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. अंतोमज्झावसाणियं (क, ख, ग, घ); २८१ सूत्रे एतत्तुल्यप्रकरणे सर्वासु प्रतिषु 'लोगमज्झाव-साणियं' इति पाठोस्ति तथा जीवाजीवाभिगमे (३।४४७) पि एष पाठो लभ्यते ।

५.

रायपसेणइय (सू० ११७,२८१)	स्थानांग (४।६३७)	जीवाजीवाभिगम (३।४४७)
दिट्ठंतियं	दिट्ठंतिते	दिट्ठंतियं
पाडंतियं	पाडिसुते	पाडिसुयं
सामन्नओविणिवाइयं	सामन्नओविणिवाइयं	सामन्नतोविणिवातियं
लोगमज्झावसाणियं	लोगमज्झावसिते	लोगमज्झावसाणियं

स्थानाङ्गवृत्तौ नास्ति व्याख्यातोसौ पाठः ।

रायपसेणइयसूत्रे प्रथमवारमसौ व्याख्यातोस्ति—'दार्ष्टान्तिकम् प्रात्यन्तिकम् सामान्यतोविनिपातम् लोकमध्यावसानिकम् ।' (वृत्ति, पृ० १४५) । वृत्त्यनुसारेणात्र 'सामन्नओविणिवातं' पाठो युज्यते । जीवाजीवाभिगमवृत्तावपि 'सामान्यतोविनिपातिकम्' इति व्याख्यातमस्ति । आदर्शेषु 'सामंतोवणिवा-इयं' जातम् । सम्भवतः 'सामन्नओ' स्थाने 'सामन्नो' जातः अस्यैव 'सामन्तो' रूपे परिवर्तनं जातमिति प्रतीयते । स्थानांगे 'पडिसुते' पाठस्तथा जीवाजीवाभिगमवृत्तौ 'प्रतिश्रुतिकम्' इति व्याख्यातोस्ति पाठः । एतौ द्वावपि 'रायपसेणइयसूत्रस्य' 'पाडंतिय' शब्दाद् वाचनाभेदं गच्छतः ।

६. देवाणुभागं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. बत्तीसइनिबद्धं (क, ख, च, छ) ।

८. एवमाणत्तियं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूडागारसाला-दिट्ठंत-पदं

१२१. 'भंतेति'[1] ! भयवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी'[2]—

१२२. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स एसा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते कहिं अणुप्पविट्ठे ? गोयमा ! सरीरं गए सरीरं अणुप्पविट्ठे ।।

१२३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सरीरं गए सरीरं अणुप्पविट्ठे ? गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहतो लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा। तीसे णं कूडागारसालाए अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे 'जणसमूहे एगं'[3] महं अब्भवद्दलगं वा वासवद्दलगं वा महावायं वा एज्जमाणं[4] पासति, पासित्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुप्पविसित्ताणं चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—सरीरं गए, सरीरं अणुप्पविट्ठे ।।

सूरियाभ-विमाण-पदं

१२४. 'कहिं णं'[5] भंते ! सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे नामं विमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं पुरओ[6] बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं 'बहुईओ जोयणकोडीओ बहुईओ जोयणकोडाकोडीओ'[7] उड्ढं दूरं वीतीवइत्ता, एत्थ णं सोहम्मे नामं

---

१. भंतेत्ति (क, ख, ग)।

२. पुस्तकान्तरे तु इदं वाचनान्तरं दृश्यते—'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जिट्ठे अन्तेवासी' इत्यादि—'इंदभूई नामं अणगारे गोयमसगोत्ते सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविपुलतेयलेस्से चउदसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाई समणस्स भगवतो महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले, उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोउहल्ले, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवंतं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेत्ता वंदति नमंसति, वंदिता नमंसित्ता एवं वयासी'—(वृ)।

३. जणसमूहे चिट्ठति, तए णं से जणसमूहे एगं (च, छ); जनसमूहः तिष्ठति, स च एकं (वृ)।

४. एज्जमाणं वा (क, ख, ग, घ)।

५. कहण्णं (क); कहणं (ख, ग, च, छ); कहं णं (घ)।

६. × (क, ख, ग, घ, च)।

७. बहुगीतो जोयणसहस्सातो बहुगीतो जोयणकोडाकोडीतो बहुगीतो जोयणसहस्सकोडीओ (क, ख, ग, च); बहुगीतो जोयणकोडीतो बहुगीतो जोयणकोडाकोडीतो बहुगीतो जोयणयसहस्सकोडीतो (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कप्पे पण्णत्ते—पाईणपडीणायते उदीणदाहिणवित्थिण्णे अद्धचंदसंठाणसंठिते अच्चिमालि-भासरासिवण्णाभे, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं, 'सव्वरयणामए अच्छे सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे णीरए निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समरीइए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे'[1], एत्थ[2] णं सोहम्माणं देवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्साइं[3] भवंति इति मक्खायं[4]। ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१२५. तेसि णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—असोग-वडेंसए सत्तवण्णवडेंसए[5] चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे सोधम्मवडेंसए ते णं वडेंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव[6] पडिरूवा ॥

१२६. तस्स णं सोधम्मवडेंसगस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमेणं तिरियं असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं वीईवइत्ता[7], एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे विमाणे पण्णत्ते—अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, गुणयालीसं[8] च सयसहस्साइं बावन्नं च सहस्साइं अट्ठ य अडयाले जोयणसते परिक्खेवेणं, [सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे[9] ?] ॥

० पागार-पदं

१२७. से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। से णं पागारे तिण्णि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले एगं जोयणसयं विक्खंभेणं, मज्झे पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं, उप्पिं पणवीसं[10] जोयणाइं विक्खंभेणं। मूले वित्थिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए, गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणामए[11] अच्छे जाव[12] पडिरूवे ॥

० कविसीस-पदं

१२८. से णं पागारे णाणाविहपंचवण्णेहिं[13] कविसीसएहिं उवसोभिए, तं जहा—किण्हेहिं नीलेहिं लोहितेहिं हालिद्देहिं सुक्किलेहिं कविसीसएहिं। ते णं कविसीसगा एगं जोयणं आयामेणं, अद्धजोयणं विक्खंभेणं, देसूणं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामया[14] अच्छा जाव[15] पडिरूवा ॥

---

१. प्रतिषु एष पाठो नास्ति। वृत्तिगतस्य 'सर्वात्मना रत्नमयः यावत् करणात् अच्छे सण्हे घट्ठे' इति पाठस्यानुसारेण स्वीकृतोयं पाठः।

२. तत्र (वृ)।

३. विमाणवास° (क, ख, ग, छ)।

४. मक्खाया (क, ख, ग, घ, च, छ)।

५. सहिवण्ण° (क, ख, ग)।

६. राय० सू० २१।

७. वीतीवइज्जा (क, ख, ग, घ)।

८. ऊयालीसं (क, ख, ग, घ)।

९. कोष्ठकवर्ती पाठः प्रतिषु नोपलभ्यते, किन्तु १२४ सूत्रक्रमेण अत्रासौ युज्यते। संक्षिप्त-पद्धत्यनुसारेण लिपिकारैर्न लिखित इत्यनुमीयते।

१०. पणुवीसं (घ)।

११. सव्वकणगामए (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१२. राय० सू० २३।

१३. णाणामणिपंचवण्णेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१४. सव्वमणिया (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१५. राय० सू० २१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

० द्वार-पदं

१२९. सूरियाभस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए दारसहस्सं-दारसहस्सं भवतीति मक्खायं। ते णं दारा पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर - वणलय - पउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गय - वइरवेइया-परिगयाभिरामा विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्ता पिव अच्चीसहस्समालणीया[1] रूवग-सहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा॥

१३०. वण्णो दाराणं तेसिं होइ, तं जहा—वइरामया णिम्मा, रिट्ठामया पइट्ठाणा, वेरुलियमया खंभा, जायरूवोवचिय-पवरपंचवण्णमणिरयणकोट्टिमतला, हंसगब्भमया[2] एलुया, गोमेज्जमया इंदकीला, लोहियक्खमईओ दारचेडाओ, जोईरसमया उत्तरंगा,[3] लोहियक्खमईओ सूईओ, वइरामया संधी, नाणामणिमया समुग्गया, वइरामया अग्गला अग्गलपासाया, रययामईओ[4] आवत्तणपेढियाओ, अंकुत्तरपासगा, निरंतरियघणकवाडा, भित्तीसु चेव भित्तिगुलिया छप्पन्ना तिण्णि होंति, गोमाणसिया तत्तिया, णाणामणिरयण-वालरूवग[5]-लीलट्ठियसालभंजियागा, वइरामया कूडा, रययामया[6] उस्सेहा, सव्वतवणिज्जमया उल्लोया, णाणामणिरयणजालपंजर-मणिवंसग[7]-लोहियक्ख-पडिवंसग[8]-रययभोमा[9], अंकामया पक्खा पक्खबाहाओ, जोईरसमया[10] वंसा वंसकवेल्लुयाओ[11], रययामईओ पट्टियाओ, जायरूवमईओ ओहाडणीओ, वइरामईओ उवरिपुंछणीओ, सव्वसेयरययामए छायणे, अंकमय-कणगकूडतवणिज्जथूभियागा, सेया 'संखतल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीरफेण-रययणिगरप्पगासा, तिलग-रयणद्धचंदचित्ता'[12], नाणामणिदामालंकिया, अंतो बहिं च सण्हा, तवणिज्ज-वालुया-पत्थडा, सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा॥

० वंदणकलस-पदं

१३१. तेसि णं दाराणं उभओ पासे[13] दुहओ निसीहियाए सोलस-सोलस वंदणकलस-परिवाडीओ पण्णत्ताओ। ते णं वंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा

१. °मालिणीया (क, ख, ग, घ, च, छ)।
२. °गया (क, ख, ग, घ, च)।
३. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।३००) 'वेरुलियामया कवाडा' इति पाठो विद्यते।
४. वइरामई (जी० ३।३००); आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः—'अर्गलाप्रासादा यत्रार्गला नियम्यते' इति। एतौ द्वौ अपि वज्ररत्नमयौ (वृ)।
५. वालगरूवग (क, ख, ग, घ, च, छ)।
६. रयणामय (क, ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमस्य (३।३००) अनुसारेण स्वीकृतोयं पाठः।
७. °वंस (क, ख, ग, घ, च, छ)।
८. °वंस (क, ख, ग, घ, च, छ)।
९. °भोम्मा (क, ख, ग, च)।
१०. °रसा° (क, ख, ग, छ)।
११. °कवेडयातो (छ)।
१२. संखतल - विमल-निम्मल- दहिघण-गोखीरफेण-रययनियर-प्पगासद्धचंदचित्ताइं (वृपा); °इत्ता (क, ख, ग, घ, च)।
१३. पासा (क, ख, ग, घ, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिधाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव[1] पडिरूवा[2] महया-महया महिंदकुंभसमाणा[3] पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

० णागदंत-पदं

१३२. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस णागदंतपरिवाडीओ पण्णत्ताओ । ते णं नागदंता मुत्ताजालंतरुसियहेमजाल-'गवक्खजाल-खिंखिणीघंटाजालपरिक्खित्ता'[4] अब्भुग्गया अभिणिसिट्ठा तिरियं सुसंपग्गहिया[5] अहेपन्नगद्धरूवगा पन्नगद्धसंठाणसंठिया सव्ववइरामया अच्छा जाव[6] पडिरूवा महया-महया गयदंतसमाणा पण्णत्ता समणाउसो !

तेसु णं णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा णीलसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा लोहितसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा हालिद्दसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा सुक्किलसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा ।

ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरमंडियगा[7] नाणामणिरयण-विविहहाररद्धहार उवसोभियसमुदया[8] °ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता पुव्वावरदाहिणुत्तरागएहिं वाएहिं मंदायं-मंदायं एज्जमाणा-एज्जमाणा पलंबमाणा-पलंबमाणा पझंझमाणा-पझंझमाणा उरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमणणिव्वुतिकरेणं सद्देणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा-आपूरेमाणा° सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

तेसि णं णागदंताणं उवरिं अण्णाओ सोलस-सोलस नागदंतपरिवाडीओ पण्णत्ताओ । ते णं नागदंता[9] °मुत्ताजालंतरुसियहेमजाल - गवक्खजाल - खिंखिणीघंटाजालपरिक्खित्ता अब्भुग्गया अभिणिसिट्ठा तिरियं सुसंपग्गहिया अहेपन्नगद्धरूवा पन्नगद्धसंठाणसंठिया सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा महया-महया° गयदंतसमाणा पण्णत्ता समणाउसो !

तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता । तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीओ पण्णत्ताओ । ताओ णं धूवघडीओ कालागरु-पवरकुंदुरुक्कतुरुक्क-धूव-मघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं घाणमणणिव्वुतिकरेणं गंधेणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा-आपूरेमाणा[10] °सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठंति ।।

० सालभंजिया-पदं

१३३. तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस सालभंजिया-

---

१. राय० सू० २१ ।

२. पडिरूवगा (वृ) ।

३. इंदकुंभसमाणा (क, ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमे (३।३०१) पि 'महिंदकुंभसमाणा' इति पाठो विद्यते ।

४. °जाला-खिंखिणीजाल° (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सुसंपरिग्गहिया (वृ) ।

६. राय० सू० २१ ।

७. °मण्डितानि (वृ) : °पतरगमंडिता (जी० ३।३०२); प्रस्तुतागमस्य चत्वारिंशत्तमे सूत्रे '°पयरमंडियागा' इति पाठो विद्यते ।

८. सं० पा०—°समुदया जाव सिरीए ।

९. सं० पा०—नागदंता तं चेव गयदंतसमाणा ।

१०. सं० पा०—आपूरेमाणा जाव चिट्ठंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिवाडीओ पण्णत्ताओ। ताओ णं सालभंजियाओ लीलट्ठियाओ सुपइट्ठियाओ सुअलं-कियाओ[1] णाणाविहरागवसणाओ णाणामल्लपिणद्धाओ मुट्ठिगेज्झसुमज्झाओ आमेलग-जमल-जुयल-वट्टिय-अब्भुण्णय-पीण-रइय-संठियपओहराओ[2] रत्तावंगाओ असियकेसीओ मिउ-विसय-पसत्थ-लक्खण-संवेल्लियग्गसिरयाओ ईसिं असोगवरपायवसमुट्ठियाओ वामहत्थग्ग-हियग्गसालाओ ईसिं अद्धच्छिकडक्खचिट्ठितेहिं[3] लूसमाणीओ[4] विव, चक्खुल्लोयणलेसेहिं[5] अण्णमण्णं खिज्जमाणीओ विव, पुढविपरिणामाओ सासयभावमुवगयाओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ चंदाहियसोमदंसणाओ उक्का विव उज्जोवेमाणाओ विज्जु-घण-मिरिय-सूर-दिप्पंत-तेय-अहिययर-सन्निकासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ पासाई-याओ[6] °दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ तेयसा अतीव-अतीव उवसोभेमाणीओ-उवसोभेमाणीओ° चिट्ठंति॥

° **जालकडग-पदं**

१३४. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस 'जालकडगा पण्णत्ता'[7]। ते णं जालकडगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा॥

° **घंटा-पदं**

१३५. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए सोलस-सोलस घंटापरिवाडीओ पण्णत्ताओ। तासि णं घंटाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तं जहा—जंबूणयामईओ घंटाओ. वइरामईओ लालाओ, णाणामणिमया घंटापासा, तवणिज्जामईओ संकलाओ, रययामयाओ रज्जूओ। ताओ णं घंटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हंसस्सराओ कुंचस्सराओ सीहस्सराओ दुंदुहिस्सराओ णंदिस्सराओ णंदिघोसाओ मंजुस्सराओ मंजुघोसाओ सुस्सराओ सुस्सर-घोसाओ[8] ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमणनिव्वुतिकरेणं सद्देणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणाओ-आपूरेमाणाओ[9] °सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणाओ-उवसोभे-माणाओ° चिट्ठंति॥

° **वणमाला-पदं**

१३६. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस वणमाला-परिवाडीओ पण्णत्ताओ। ताओ णं वणमालाओ णाणादुमलय-किसलय-पल्लव-समाउलाओ छप्पयपरिभुज्जमाण-सोहंत-सस्सिरीयाओ पासाईयाओ[10] °दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

२. संठियपीवरपओहराओ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

३. °कडक °(क, घ, च); °कडक्क °(ख, ग); वृत्तिकारेण 'अर्ध' तिर्यग् वलितं इति व्याख्यातम्। जीवाजीवाभिगमस्य (पत्र २०७) वृत्तौ 'अड्ड' तिर्यग् वलितं इति व्याख्यातमस्ति। अत्रापि 'अड्ड' इति पदं युक्तमस्ति। एतद् देशीभाषा पदं विद्यते, 'आडो' इति भाषायाम्।

४. °माणाओ (घ)।

५. °लेसातो (क, ख, ग, घ)।

६. सं० पा०—पासाईयाओ जाव चिट्ठंति।

७. जालकडगपरिवाडीओ पण्णत्ताओ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

८. °णिग्घोसाओ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

९. सं० पा०—आपूरेमाणाओ जाव चिट्ठंति।

१०. सं० पा०—पासाईओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिरूवाओ° ।।

० पगंठग-पदं

१३७. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस पगंठगा पण्णत्ता । ते णं पगंठगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, पणवीसं जोयणसयं बाहल्लेणं, सव्ववइरामया अच्छा जाव[1] पडिरूवा । तेसि णं पगंठगाणं उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता । तेणं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं[2] जोयणसयं विक्खंभेणं[3], अब्भुग्गयमूसिय-पहसिया[4] इव, विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडाग-च्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतर-रयण[5] पंजरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्त-पोंडरीय[6]-तिलगरयणद्धचंद-चित्ता[7] अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्ज[8]-वालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा जाव दामा[9] ।।

० तोरण-पदं

१३८. तेसि णं दाराणं उभओ पासे [दुहओ णिसीहियाए[10] ?] सोलस-सोलस तोरणा पण्णत्ता—णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसन्निविट्ठा जाव[11] पउमहत्थगा ।।

१३९. तेसि णं तोरणाणं पुरओ[12] दो दो सालभंजियाओ[13] पण्णत्ताओ । जहा हेट्ठा तहेव[14] ।।

१४०. तेसि णं तोरणाणं पुरओ नागदंतगा पण्णत्ता । जहा हेट्ठा जाव[15] दामा ।।

१४१. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयसंघाडा गयसंघाडा नरसंघाडा किन्नरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव[16] पडिरूवा[17] ।।

---

१. राय० सू० २१ ।

२. पणु° (च) ।

३. अत्र 'आयाम-विक्खंभेणं' इति पाठः अपेक्षितोस्ति । जीवाजीवाभिगमे (३।३०७) एतत्तुल्यप्रकरणे 'आयाम-विक्खंभेणं' इति पाठो विद्यते ।

४. पहासिया (छ, वृ) ।

५. सूत्रे चात्र विभक्तिलोपः प्राकृतत्वात् (वृ) ।

६. °रीया (क, ख, ग, घ) ।

७. अतोग्रे आदर्शेषु 'णाणामणिदामालंकिया' इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ नास्ति व्याख्यातोसौ । जीवाजीवाभिगमवृत्तावपि (पत्र २०६) नास्ति व्याख्यातः । मुद्रितवृत्तौअसौ केनापि प्रक्षिप्तः । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्वृत्तित्रयेसौ व्याख्यातो दृश्यते ।

८. °णिज्जा (क, ख, ग, घ, च) ।

९. जावदामा उवरिं पगंठगाणं उभया छत्ताइच्छत्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) 'दामा' इति पाठग्रहणेन३३-४० सूत्रस्य 'चिट्ठंति' पर्यन्तः पाठो ग्राह्यः ।

१०. उभयोः पार्श्वयोरेकैकनैषेधिकीभावेन या द्विधा नैषेधिकी तस्याम्—इति वृत्त्यनुसारेण कोष्ठकान्तर्गतः पाठो युज्यते ।

११. राय० सू० २०-२३ ।

१२. पुरतः प्रत्येकम् (वृ) ।

१३. सालि° (च छ) ।

१४. राय० सू० १३३ ।

१५. राय० सू० १३२ ।

१६. राय० सू० २१ ।

१७. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।३१८) संक्षिप्तपाठ एव स्वीकृतोस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४२. [1]•तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयपंतीओ°[2] ॥

१४३. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयवीहीओ° ॥

१४४. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयमिहुणाइं° ॥

१४५. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो पउमलयाओ[3] •दो दो नागलयाओ दो दो असोगलयाओ दो दो चंपगलयाओ दो दो चूयलयाओ दो दो वणलयाओ दो दो वासंतियलयाओ दो दो अइमुत्तयलयाओ दो दो कुंदलयाओ दो दो° सामलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ[4] •णिच्चं माइयाओ णिच्चं लवइयाओ णिच्चं थवइयाओ णिच्चं गुलइयाओ णिच्चं गोच्छियाओ णिच्चं जमलियाओ णिच्चं जुवलियाओ णिच्चं विणमियाओ णिच्चं पणमियाओ [णिच्चं सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरीओ ?] णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरीओ° 'सव्वरयणामईओ अच्छाओ'[5] •सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णीरयाओ निम्मलाओ निप्पंकाओ निक्कंकडच्छायाओ सप्पभाओ समरीइयाओ सउज्जोयाओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ° पडिरूवाओ ॥

१४६. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो दिसासोवत्थिया[6] पण्णत्ता—सव्वरयणामया[7] अच्छा पडिरूवा ॥

१४७. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो वंदणकलसा पण्णत्ता। ते णं वंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा[8] •सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पल-पिधाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा महया-महया महिंदकुंभसमाणा पण्णत्ता समणाउसो° ! ॥

१४८. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो भिंगारा पण्णत्ता। ते णं भिंगारा वरकमलपइट्ठाणा[9] •सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिधाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा° महया मत्तगयमहामुहाकतिसमाणा[10] पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

१४९. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो आयंसा पण्णत्ता। तेसि णं आयंसाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—तवणिज्जमया पगंठगा,[11] अंकामया मंडला 'अणुग्घसितनिम्म-

---

१. सं० पा०—एवं पंतीओ वीही मिहुणाइं; वीहीतो पंतीतो (क, ख, ग, घ, च, छ)।

२. राय० सू० १४१।

३. सं० पा०—पउमलयाओ जाव सामलयाओ।

४. सं० पा०—कुसुमियाओ सव्वरयणामईओ।

५. °मय अच्छा (वृ); सं०पा०—अच्छाओ जाव पडिरूवाओ।

६. अक्खयसोवत्थिया (क, ख, ग, घ, च, छ)।

७. जाम्बूनदमया (वृपा)।

८. सं० पा०—वरकमलपइट्ठाणा तहेव।

९. सं० पा०—वरकमलपइट्ठाणा जाव महया।

१०. मत्तगयमुहाकति° (क, ख, ग, घ, च, छ); मत्तगयमहामुहागिइ° (वृ)।

११. अतः परं प्रयुक्तादर्शेषु एतादृशः पाठो लभ्यते—'वेरुलियमया सुरया वइरामया दोवारंगा नानामणिया मंडला' एष वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः। जीवाजीवाभिगमादर्शेषु (३।३२२) एष पाठः किञ्चिद्भेदेनोपलभ्यते—वेरुलियमया छरूहा वइरामया वरंगा णाणामणिमया वलक्खा अंकमया मंडला। तस्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाए छायाए[१] समणुबद्धा, चंदमंडलपडिणिकासा महया-महया अद्धकायसमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

१५०. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो वइरनाभा थाला पण्णत्ता—अच्छ-तिच्छाडिय-सालि[२]-तंदुल-णहसंदिट्ठ-पडिपुण्णा इव चिट्ठंति सव्वजंबूणयमया अच्छा जाव पडिरूवा महया-महया रहचक्कसमाणा[३] पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

१५१. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो पातीओ पण्णत्ताओ। 'ताओ णं'[४] पातीओ अच्छोदगपरिहत्थाओ णाणाविहस्स[५] फलहरियगस्स बहुपडिपुण्णाओ विव चिट्ठंति सव्व-रयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ महया-महया गोकलिंजगचक्कसमाणीओ[६] पण्णत्ताओ समणाउसो ! ॥

१५२. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो सुपइट्ठगा[७] पण्णत्ता। 'ते णं सुपइट्ठगा सुसव्वो-सहिपडिपुण्णा णाणाविहस्स च पसाधणभंडस्स बहुपडिपुण्णा'[८] इव चिट्ठंति सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१५३. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो मणोगुलियाओ[९] पण्णत्ताओ। तासु णं मणोगु-लियासु बहवे सुवण्णरुप्पामया फलगा पण्णत्ता। तेसु णं सुवण्णरुप्पामएसु फलगेसु बहवे वइरामया नागदंतया पण्णत्ता। तेसु णं वइरामएसु णागदंतएसु बहवे रययामया[१०] सिक्कगा पण्णत्ता। तेसु णं रययामएसु[११] सिक्कगेसु बहवे वायकरगा पण्णत्ता। ते णं वायकारगा किण्हसुत्तसिक्कग[१२]-गवच्छिया[१३] णीलसुत्तसिक्कग-गवच्छिया लोहियसुत्तसिक्कग-गवच्छिया हालिद्दसुत्तसिक्कग-गवच्छिया सुक्किलसुत्तसिक्कग-गवच्छिया सव्ववेरुलियमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

वृत्तावपि (पत्र-२१२) असौ व्याख्यातोस्ति। प्रस्तुतागमे वृत्तिकारेण मलयगिरिणा उपलब्धा-दर्शेषु नैष पाठो दृष्टः ,तेन न व्याख्यातः अथवा उत्तरवर्तिभिर्लिपिकारैः जीवाजीवा-भिगमादर्शमनुसृत्य अत्रापि प्रक्षिप्तः अथवा वाचना भेदस्यापि संभावनाकर्तुं शक्या।

१. °निम्मलाते छायाते (क, ख, ग, घ); × (च, छ)।

२. सालिय (क, ख, ग, घ, च, छ)।

३. रहचक्कवालसमाणा (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तौ 'रथचक्रसमानानि' इति व्याख्यात-मस्ति। जीवाजीवाभिगमे (३।३२३) पि 'रहचक्कसमाणा' इति पाठोस्ति।

४. तोणं (क, ख, ग, घ, च)।

५. णाणामणिपंचवण्णस्स (क, ख, ग, घ, छ)।

६. गोकलिंजर° (क, ख, ग, घ, च, छ)।

७. सुपइट्ठा (क, ख, ग, घ, च, छ)।

८. णाणाविहभंडविरइया (क, ख, ग, घ, च, छ); मूलपाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतोस्ति। जीवाजीवाभिगमे (३।३२५) पि एतादृश एव पाठो दृश्यते।

९. मणगु° (क, ख, ग, घ); मणिगु° (च, छ)।

१०. वइरामया (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तौ तथा जीवाजीवाभिगमस्य (३।३२६) आदर्शेषु वृत्तावपि (पत्र २१४) च रजतप-दमुपलभ्यते। प्रस्तुतागमस्यादर्शेषु 'वइर' इति पदं केनापि लिपिदोषादिकारणेन प्रविष्टम-भूत्।

११. वइरामएसु (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१२. °सिक्का (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१३. गवत्थिता (घ)।

१५४. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो चित्ता रयणकरंडगा पण्णत्ता—से जहाणामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चित्ते रयणकरंडए वेरुलियमणि[1]-फालियपडल[2]-पच्चोयडे साए पहाए ते पएसे सव्वतो समंता ओभासेति उज्जोवेति तावेति पभासेति[3], एवमेव तेवि चित्ता रयणकरंडगा साए पभाए ते पएसे सव्वओ समंता ओभासेंति उज्जोवेंति तावेंति पभासेंति[4]।

१५५. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयकंठा गयकंठा नरकंठा किन्नरकंठा किंपुरिसकंठा महोरगकंठा गंधव्वकंठा उसभकंठा सव्वरयणामया[5] अच्छा जाव पडिरूवा॥

१५६. 'तेसि णं तोरणाणं पुरओ'[6] दो दो पुप्फचंगेरीओ मल्लचंगेरीओ चुण्णचंगेरीओ गंधचंगेरीओ वत्थचंगेरीओ आभरणचंगेरीओ सिद्धत्थचंगेरीओ[7] लोमहत्थचंगेरीओ पण्णत्ताओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ॥

१५७. 'तेसि णं तोरणाणं'[8], पुरओ दो दो पुप्फपडलगाइं[9] °मल्लपडलगाइं चुण्णपडलगाइं गंधपडलगाइं वत्थपडलगाइं आभरणपडलगाइं सिद्धत्थपडलगाइं° लोमहत्थपडलगाइं पण्णत्ताइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं[10] °सण्हाइं लण्हाइं घट्ठाइं मट्ठाइं णीरयाइं निम्मलाइं निप्पंकाइं निक्कंकडच्छायाइं सप्पभाइं समरीइयाइं सउज्जोयाइं पासादीयाइं दरिसणिज्जाइं अभिरूवाइं° पडिरूवाइं॥

१५८. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो सीहासणा पण्णत्ता। तेसि णं सीहासणाणं वण्णाओ जाव[11] दामा॥

१५९. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो रुप्पमया[12] छत्ता पण्णत्ता। ते णं छत्ता वेरुलियविमलदंडा[13] जंबूणयकण्णिया वइरसंधी मुत्ताजालपरिगया अट्ठसहस्सवरकंचणसलागा दद्दरमलयसुगंधि-सव्वोउयसुरभिसीयलच्छाया मंगलभत्तिचित्ता चंदागारोवमा॥

१६०. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो चामराओ पण्णत्ताओ। ताओ णं चामराओ 'चंदप्पभ-वेरुलिय-वइर-नानामणिरयणखचियचित्तदंडाओ'[14] 'सुहुमरययदीहवालाओ संखंक-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुंजसन्निगासातो'[15] सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ॥

---

१. वेरुलिया° (क, ख, ग, घ, च)।
२. फलिह° (क, ख, ग, घ, च, छ)।
३. पगासति (क, ख, ग, घ, च, छ)।
४. पगासेंति (क, ख, ग, घ)।
५. °वइरामया (क, ख, ग, घ, च, छ)।
६. तेसु णं हयकंठएसु जाव उसभकंठएसु (क, ख, ग, घ, च, छ)।
७. सिद्धत्था° (ख, ग, च, छ); सिद्धत्थग° (वृ)।
८. तासु णं पुप्फचंगेरीसु जाव लोमहत्थचंगेरीसु क, ख, ग, घ, च, छ)।
९. सं० पा०—पुप्फपडलगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं।
१०. सं० पा०—अच्छाइं जाव पडिरूवाइं।
११. राय० सू० ३७-४०।
१२. रुप्पच्छदा (जीवा० ३।३३२)।
१३. तिविट्ठदंडा (क, ख, ग); निविट्ठदंडा (घ)।
१४. णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१५. संखंक-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ सुहुमरययदीहवालाओ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६१. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो तेल्लसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा पत्तसमुग्गा[1] चोयगसमुग्गा तगरसमुग्गा एलासमुग्गा हरियालसमुग्गा हिंगुलयसमुग्गा[2] मणोसिलासमुग्गा अंजणसमुग्गा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० दार-पदं

१६२. सूरियाभे णं विमाणे एगमेगे दारे[3] अट्ठसयं चक्कज्झयाणं, एवं[4] मिगज्झयाणं[5] गरुडज्झयाणं[6] रुच्छज्झयाणं[7] छत्तज्झयाणं पिच्छज्झयाणं सउणिज्झयाणं सीहज्झयाणं, उसभज्झयाणं, अट्ठसयं सेयाणं चउ-विसाणाणं नागवरकेऊणं ॥

१६३. एवामेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे एगमेगे दारे 'असीयं असीयं'[8] केउ-सहस्सं भवति इति मक्खायं ॥

१६४. 'तेसि णं दाराणं एगमेगे दारे'[9] पण्णट्ठि-पण्णट्ठि भोमा पण्णत्ता। तेसि णं भोमाणं भूमिभागा उल्लोया य भाणियव्वा[10] [तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए जाणि तेत्तीसमाणि भोमाणि[11]]। तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं सीहासणे [पण्णत्ते ?] सीहासणवण्णओ[12] सपरिवारो। अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं-पत्तेयं 'सीहासणे पण्णत्ते'[13] ॥

१६५. तेसि णं दाराणं उत्तरागारा[14] सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया, तं जहा—रयणेहिं[15] °वइरेहिं वेरुलिएहिं लोहियक्खेहिं मसारगल्लेहिं हंसगब्भेहिं पुलगेहिं सोगंधिएहिं जोईरसेहिं अंजणेहिं अंजणपुलगेहि रयएहिं जायरूवेहिं अंकेहिं फलिहेहिं° रिट्ठेहिं ॥

१६६. तेसि णं दाराणं उप्पिं अट्ठट्ठ मंगलगा[16] °पण्णत्ता°[17]।

---

१. × (क, ख, ग, घ)।

२. हिंगुरुय° (क); हिंगुलुय° (ख, ग, व)।

३. वारे (क, ख, ग, घ, च, छ)।

४. अट्ठसयं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

५. मिगि (च)।

६. जंग० (च, छ)।

७. पण्डितबेचरदासजीसंपादितवृत्तौ (पृ० १८०) 'रुद्ध' इतिपदं मुद्रितमस्ति, किन्तु नास्यात्रसङ्गतिर्दृश्यते। प्रस्तुतसूत्रस्य हस्तलिखितवृत्तौ 'ऋच्छ' इति पदमस्ति। 'घ' संकेतितादर्शेपि 'ऋच्छ' इतिपदं लभ्यते। जीवाजीवाभिगमसूत्रस्य (३।३२५) हस्तलिखितवृत्तावपि 'ऋच्छ' इतिपदं निर्दिष्टमस्ति। शेषप्रयुक्तादर्शेषु एतत् पदं अस्य स्थाने वा अन्यत् पदमनुपलब्धमस्ति।

८. आसीयं (क, ख, ग, च); असीयं (घ, छ)।

९. सुरियाभे विमाणे (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१०. राय० सू० २४-३१, ३४।

११. कोष्ठकवर्तिपाठः आदर्शेषु नोपलभ्यते, वृत्तावस्ति व्याख्यातः—बहुमध्यदेशभागे यानि त्रयस्त्रिंशत्तमानि भौमानि। जीवाजीवाभिगमे (३।३३६) एतत् संवादी पाठो विद्यते।

१२. राय० सू० ३७-४४।

१३. भद्दासणा पण्णत्ता (क, ख, ग, घ, च, छ); शेषेषु च भौमेषु प्रत्येकमेकैकं सिंहासनं परिवाररहितम् (वृ)।

१४. उत्तिमा° (क, ख, ग, ग, च, छ); उवरिमा° (वृपा)।

१५. सं० पा०—रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं।

१६. सं० पा०—मंगलगा सज्झया जाव छत्तातिछत्ता।

१७. राय० सू० २१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६७. तेसि णं दाराणं उप्पिं बहवे किण्हचामरज्झया°[1] ॥

१६८. तेसि णं दाराणं उप्पिं बहवे° छत्तातिछत्ता°[2] ॥

१६९. 'एवामेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे चत्तारि दारसहस्सा भवंतीति मक्खायं'[3] ॥

० वणसंड-पदं

१७०. सूरियाभस्स विमाणस्स चउद्दिसिं पंच जोयणसयाइं अवाहाए[4] चत्तारि वण-संडा पण्णत्ता, तं जहा—'असोगवणे, सत्तवण्णवणे चंपगवणे, चूयवणे'[5] पुरत्थिमेणं[6] असोगवणे, दाहिणेणं सत्तवण्णवणे, पच्चत्थिमेणं चंपगवणे, उत्तरेणं चूयवणे। ते णं वणसंडा साइरेगाइं अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं[7] आयामेणं, पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं, 'पत्तेयं पत्तेयं'[8] पागारपरिखित्ता 'किण्हा किण्होभासो'[9] °नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिव्वा तिव्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया तिव्वा तिव्वच्छाया घणकडिय-कडच्छाया[10] रम्मा महामेहणिकुरंबभूया° वणसंडवण्णओ[11]।

० वणसंड-भूमिभाग-पदं

१७१. तेसि णं वणसंडाणं अंतो बहुसमरणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता—से जहानामए आलिंगपुक्खरेति वा जाव[12] णाणाविह[13] पंचवण्णेहिं 'मणीहि य'[14] तणेहि य उवसोभिया[15]।

१७२. तेसि णं गंधो फासो णायव्वो[16] जहक्कमं ॥

१७३. तेसि णं भंते ! तणाण य मणीण य पुव्वावरदाहिणुत्तरागतेहिं वातेहिं

---

१. राय० सू० २२।

२. राय० सू० २३।

३. × (वृ)? एवामेव····मक्खायं (वृपा)।

४. आबाहाते (क, ख, ग, घ, च, छ)।

५. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

६. पुव्वेणं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

७. जोयणसहस्साइं (च, छ)।

८. पत्तेयं (क, ख, ग, घ, च)।

९. किण्हा किण्होभासा जाव पडिमोयणा सुरम्मा (वृ); अत्र वृत्तिकृतान्येपि केचिच्छब्दा व्याख्याताः। सं० पा०—किण्होभासा ते णं पायवा मूलमंतो।

१०. वृत्तौ यावत्पदसूचितः पाठो व्याख्यातोस्ति। तत्र 'घणकडितडियच्छाया' इति पाठस्य व्याख्या उपलभ्यते—'घनकडितडियच्छाया, इति इह शरीरस्य मध्यभागे कटिस्ततोऽन्य-स्यापि मध्यभागः कटिरिव कटिरित्युच्यते, कटिस्तटमिव कटितटं घना—अन्योऽन्यशाखा-प्रशाखानुप्रवेशतो निविडा कटितटे-मध्यभागे छाया येषां ते तथा—मध्यभागे निविड-तरच्छाया इत्यर्थः। अस्माभिः यावत्पदसूचितः पाठः औपपातिकादवतारितः तेन तदनुसारी एव पाठः स्वीकृतः। द्रष्टव्यं औपपातिक (सू० ४) सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

११. ओ० सू० ५-७।

१२. राय० सू० २४।

१३. णाणामणि (क)।

१४. × (क, च, छ)।

१५. राय० सू० २४-२९।

१६. राय० सू० ३०, ३१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'मंदायं-मंदायं'[1] एइयाणं वेइयाणं 'कंपियाणं चालियाणं फंदियाणं'[2] घट्टियाणं खोभियाण उदीरियाणं केरिसए सद्दे भवइ ? गोयमा ! से जहानामए सीयाए वा संदमाणीए वा रहस्स वा सच्छत्तस्स सज्झयस्स सघंटस्स सपडागस्स सतोरणवरस्स सनंदिघोसस्स सखिखिणिहेमजालपरिखित्तस्स हेमवय-चित्तविचित्त[3]-तिणिस-कणगणिज्जुत्तदारुयायस्स[4] सुसंपिणद्धारकमंडलधुरागस्स[5] कालायससुकयणेमिजंतकम्मस्स आइण्णवरतुरगसुसंपउत्तस्स कुसलणरच्छेयसारहि-सुसंपरिग्गहियस्स[6] सरसय-बत्तीस-तोण-परिमंडियस्स सकंकडावयंसगस्स[7] सचाव-सर-पहरण-आवरण-भरियजोहजुज्झ[8]-सज्जस्स रायंगणंसि वा रायंतेउरंसि वा, रम्मंसि वा मणिकोट्टिमतलंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अभिघट्टिज्जमाणस्स उराला[9] मणुण्णा मणोहरा[10] कण्णमणनिव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिणिस्सवंति, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे। से जहाणामए वेयालियवीणाए उत्तरमंदा-मुच्छियाए[11] अंके[12] सुपइट्ठियाए कुसलनरनारिसुसंपग्गहियाते चंदण-सार-निम्मिय-कोण-परिघट्टियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयम्मि मंदायं-मंदायं एइयाए वेइयाए [कंपियाए[13]] चालियाए [फंदियाए[14] ?] घट्टियाए खोभियाए उदीरियाए ओराला मणुण्णा मणहरा कण्णमण-निव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे। से जहानामए किन्नराण वा किंपुरिसाण वा महोरगाण वा गंधव्वाण वा भद्दसालवण-गयाणं वा नंदणवणगयाणं वा 'सोमणसवणगयाणं वा'[15] पंडगवणगयाणं वा हिमवंत-मलय-मंदरगिरि[16]-गुहासमन्नागयाणं वा एगओ[17] सहियाणं[18] सन्निसन्नाणं समुब्विट्ठाण[19] पमुइय-पक्कीलियाणं गीयरइ-गंधव्वहरिसियमणाणं[20] गज्जं पज्जं कत्थं[21] गेयं पयवद्धं पायवद्धं

१. मंदायं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
२. चालियाणं (क, ख, ग, घ, च); चलियाणं स्पन्दियाणं (छ)।
३. छ प्रतौ 'विचित्त' इति पाठोस्ति, अन्यासु च प्रतिषु 'चित्त' इति पाठः, किन्तु वृत्तौ जीवाजीवाभिगमे (३।२८५) तद्वृत्तौ (पत्र १९२) च—चित्रविचित्रं—मनोहारिचित्रोपेतम् इति व्याख्यातमस्ति।
४. °णिज्जत्त° (क, ख, ग, घ, च)।
५. °द्धाचक्क° (क, ख, ग, च)।
६. ससंपग्ग° (क, ख, ग, घ, च, छ)।
७. कंकडा° (क, ख, ग, घ, च)।
८. भरियज्झ (क, ख, ग, घ, च, छ)।
९. नियट्टिज्जमाणस्स उराला (छ)।
१०. × (वृ)।
११. समुच्छियाए (च, छ)।
१२. अंक (क, च, छ); अंकं (ख, ग, घ)।
१३,१४. अस्मिन्नेव सूत्रे पूर्वं 'कंपियाणं चालियाणं फंदियाणं' इति पाठः, तद्वत् अत्र 'कंपियाए—फंदियाए' इति पाठो न लभ्यते। जीवाजीवाभिगमे (३।२८५) एष पाठ उपलब्धोस्ति।
१५. × (क, ख, ग, घ, च)।
१६. कंदर° (क, ख, ग, घ); मंदिर° (छ)।
१७. एकयओ (क, ख, ग, घ)।
१८. संगहियाणं (च, छ)।
१९. सहिताणं संमुहागयाणं समुपविट्ठाणं संनिविट्ठाणं (जीवा० ३।२८५)।
२०. अत्रादर्शेषु 'गंधव्वरइहसियमणाणं' इति पाठो लभ्यते। वृत्तौ नास्त्यसौ व्याख्यातः। पंडित बेचरदाससम्पादिते प्रस्तुतसूत्रे 'गंधव्वहसियमणाणं' इति पाठो दृश्यते। किन्तु अर्थ विचारणया नैषोपि सम्यक् प्रतिभाति। जीवाजीवाभिगमस्य (३।२८५) सन्दर्भे असौ पाठः स्वीकृतोस्ति।
२१. गच्छं (क, ख, ग, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'उक्खित्तायं पायत्तायं'[1] मंदायं रोइयावसाणं सत्तसरसमन्नागयं अट्ठरससुसंपउत्तं[2] छद्दोस-विप्पमुक्कं एक्कारसालंकारं अट्ठगुणोववेयं, गुंजावंककुहरोवगूढं[3] रत्तं[4] तिट्ठाणकरणसुद्धं[5] •सकुहरगुंजंतवंस-तंती-तल-ताल-लय-गहसुसंपउत्तं महुरं समं सललियं मणोहरं मउरिभिय-पयसंचारं सुरइं सुणतिं वरचारुरूवं दिव्वं णट्टसज्जं गेयं° पगीयाणं भवेयारूवे सिया ? हंता सिया ॥

० वणसंड-जलासय-पदं

१७४. तेसि णं वणसंडाणं तत्थ तत्थ 'देसे तहिं तहिं'[6] बहूओ खुड्डा-खुड्डियाओ वावीओ पुक्खरिणीओ दीहियाओ गुंजालियाओ सरसीओ[7] सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ बिल-पंतियाओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ[8] समतीराओ वयरामयपासाणाओ तवणिज्जतलाओ सुवण्ण-सुज्झ[9]-रयय-वालुयाओ वेरुलिय-मणि-फालिय-पडल-पच्चोयडाओ सुओयार[10]-सुउत्ताराओ णाणामणि-तित्थ[11]-सुबद्धाओ चाउक्कोणाओ आणुपुव्वसुजायवप्प-गंभीरसीयलजलाओ[12] संछन्नपत्तभिस-मुणालाओ बहुउप्पल-कुमुय-नलिण-सुभग-सोगंधिय-पोंडरीय-सयवत्त-सहस्सपत्त-केसरफुल्लोवचियाओ छप्पयपरिभुज्जमाणकमलाओ अच्छ-विमलसलिलपुण्णाओ 'पडिहत्थभमंतमच्छकच्छभ-अणेगसउणमिहुणगपविचरिताओ पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेदियापरिक्खित्ताओ पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिखित्ताओ'[13] अप्पेगइयाओ आसवोयगाओ 'अप्पेगइयाओ वारुणोयगाओ'[14] अप्पेगइयाओ खीरोयगाओ अप्पेगइयाओ घओयगाओ अप्पेगइयाओ खोदोयगाओ[15] अप्पेगतियाओ पगईए[16] उयगरसेणं पण्णत्ताओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥

१७५. तासि णं खुड्डाखुड्डियाणं वावीणं[17] •पुक्खरिणीणं दीहियाणं गुंजालियाणं सरसीणं सरपंतियाणं सरसरपंतियाणं° बिलपंतियाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि

---

१. ओक्खित्तायं पयत्तायं (च, छ); उक्खित्तायं पवत्तायं (जीवा० ३।२८५)।

२. × (क, ख, च, छ); जीवाजीवाभिगमे (३।२८५) प्यसावस्ति।

३. गुंजावक्क° (क, ख, ग, घ, च, छ)। गुंजा+अवंक°=गुंजावंक°।

४. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

५. सं० पा०—तिट्ठाणकरणसुद्धं पगीयाणं।

६. तहिं तहिं देसे देसे (क, छ); तहिं देसे देसे (ख, ग, ध, च)। जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) पि 'देसे तहिं तहिं' इत्येव दृश्यते।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्त्याधारेण स्वीकृतोसौ पाठः। जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) पि दृश्यते, तद्वृत्तावपि चास्ति व्याख्यातः।

८. 'कूडाओ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

९ सज्झ (क, ख, ग, घ, च); सुब्भं (जीवा० ३।२८६)।

१०. सुहोयार (जीवा० ३।२८६)।

११. × (क, ख, ग, घ, च)।

१२. अणु° (क, ख, ग, ध, च)।

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) प्यसावस्ति।

१४. × (क, ख, ग, घ, च)।

१५. खोयगातो (घ)। अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।२९६) एतत् अतिरिक्तं विशेषणं लभ्यते—अप्पेगतियाओ अमयरससमरसोदाओ।

१६. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१७. सं० पा०—वावीणं जाव बिलपंतियाणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिसोमाणपडिरूवगा पण्णत्ता। तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं 'अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया नेमा रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवण्णरुप्पमया फलगा, लोहितक्खमइयाओ सूइओ, वयरामया संधी, णाणामणिमया अवलंबणा अवलंबण-बाहाओ य पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा"[1] ॥

१७६. [2]*तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तोरणं पण्णत्तं[3] ॥

१७७. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं उप्पि अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता[4]° ॥

१७८. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं उप्पि बहवे किण्हचामरज्झया[5]° ॥

१७९. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं उप्पि बहवे छत्तातिछत्ता[6]° ॥

१८०. 'तासि णं खुड्डाखुड्डियाणं वावीणं[7] *पुक्खरिणीणं दीहियाणं गुंजालियाणं सरसीणं सरपंतियाणं सरसरपंतियाणं° बिलपंतियाणं[8] तत्थ तत्थ 'देसे तहिं तहिं'[9] बहवे उप्पायपव्वयगा नियइपव्वयगा[10] जगईपव्वयगा[11] दारुइज्जपव्वयगा दगमंडवा दगमंचगा[12] दगमालगा दगपासायगा[13] उसड्डा[14] खुड्डखुड्डगा अंदोलगा पक्खंदोलगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१८१. तेसु[15] णं उप्पायपव्वएसु[16] *नियइपव्वएसु जगईपव्वएसु दारुइज्जपव्वएसु दगमंडएसु दगमंचएसु दगमालएसु दगपासायएसु उसड्डएसु खुड्डखुड्डएसु अंदोलएसु° पक्खंदोलएसु बहूइं हंसासणाइं कोंचासणाइं गरुलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं 'भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं'[17] सीहासणाइं[18] पउमासणाइं दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं ॥

० वणसंड-घरग-पदं

१८२. तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ 'देसे तहिं तहिं'[19] बहवे आलिघरगा मालिघरगा कयलिघरगा लयाघरगा अच्छणघरगा पिच्छणघरगा मज्जणघरगा[20] पसाधणघरगा गब्भ-

---

१. वण्णो (क, ख, ग, घ, च); वण्णतो (छ)।
२. सं० पा०—तोरणाणं झया छत्ताइछत्ता य णेयव्वा।
३. राय० सू० २०।
४. राय० सू० २१।
५. राय० सू० २२।
६. राय० सू० २३।
७. सं० पा०—वावीणं जाव बिलपंतियाणं।
८. तासु (तासि) णं खुड्डावावीसु जाव बिलपंतियासु (क, ख, ग, घ, च, छ)।
९. तहिं तहिं देसे देसे (क, ख, ग, घ); तेहिं तेहिं देसे देसे (च, छ)।
१०. नियय° (क, ख, ग, घ, च, छ, वृपा)।
११. जई° (क, ख, ग)।
१२. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१३. °पव्वयगा (क, ख, ग, घ, च)।
१४. उसरदगा (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१५. तेसि (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१६. सं० पा०—उप्पायपव्वएसु पक्खंदोलएसु।
१७. पक्खासणाइं मगरासणाइं भद्दासणाइं (क, ख, ग, घ, छ)।
१८. उसभासणाइं सीहासणाइं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१९. तहिं तहिं देसे देसे (क, ख, ग, घ, च, छ)।
२०. × (क, ख, ग, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घरगा मोहणघरगा[1] सालघरगा जालघरगा 'कुसुमघरगा चित्तघरगा'[2] गंधव्वघरगा आयंस-घरगा[3] सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

१८३. तेसु णं आलिघरगेसु[4] •मालिघरगेसु कयलिघरगेसु लयाघरगेसु अच्छणघरगेसु पिच्छणघरगेसु मज्जणघरगेसु पसाधणघरगेसु गब्भघरगेसु मोहणघरगेसु सालघरगेसु जालघरगेसु कुसुमघरगेसु चित्तघरगेसु गंधव्वघरगेसु° आयंसघरगेसु तहिं तहिं घरएसु बहूइं हंसासणाइं[5] •कोंचासणाइं गरुलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं सीहासणाइं पउमासणाइं° दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं ।।

० वणसंड-मंडवग-पदं

१८४. तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ देसे[6] तहिं तहिं बहवे जाइमंडवगा[7] जूहियामंडवगा 'मल्लियामंडवगा णोमालियामंडवगा'[8] वासंतिमंडवगा[9] 'दहिवासुयमंडवगा सूरिल्लि-मंडवगा'[10] तंबोलिमंडवगा मुद्दियामंडवगा णागलयामंडवगा अतिमुत्तलयामंडवगा अप्फोया-मंडवगा[11] मालुयामंडवगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

१८५. तेसु णं जाइमंडवएसु[12] •जूहियामंडवएसु मल्लियामंडवएसु णोमालियामंडवएसु वासंतिमंडवएसु दहिवासुयमंडवएसु सूरिल्लिमंडवएसु तंबोलिमंडवएसु मुद्दियामंडएसु णागलयामंडवएसु अतिमुत्तलयामंडवएसु अप्फोयामंडवएसु° मालुयामंडवएसु बहवे पुढविसिलापट्टगा अप्पेगतिया हंसासणसंठिया जाव अप्पेगतिया दिसासोवत्थियासण-संठिया अण्णे य बहवे वरसयणासणविसिट्ठसंठाणसंठिया[13] पुढविसिलापट्टगा पण्णत्ता समणाउसो! आईणग-रूय-बूर[14]-णवणीय-तूल-फासा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। तत्थ[15] णं बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति[16] रमंति ललंति कीलंति कित्तंति[17] मोहेंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलविवागं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति[18] ।।

---

१. मोह° (क, ख, ग, घ) ।
२. चित्तघरगा कुसुमघरगा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. सं० पा०—आलिघरगेसु जाव आयंसघरगेसु ।
५. सं० पा०—हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थियास-णाइं ।
६. देसे देसे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. जातिमंडवसंठाणगा (क, ख, ग, घ, छ) ।
८. णेमालिया° मल्लिया° (घ); नोमालिया° मल्लिय° (छ) ।
९. वासंतिय° (क, ख, ग, घ) ।
१०. सुरिल्लिमंडवगा दहिवासुयमंडवगा (क, ख, ग, घ) ।
११. अणया° (क, ख, ग, घ) ।
१२. सं० पा०—जाइमंडवएसु जाव मालुयामंडव-एसु ।
१३. मंसलसुघट्ठविसिट्ठ° (क, ख, ग, घ, च, छ, वृपा) ।
१४. पूर (क, ख, ग, घ) ।
१५. अत्थि (क, ख, ग, घ, च) ।
१६. × (वृ) ।
१७. × (वृ) ।
१८. चिट्ठंति विहरंति (च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

○ वणसंड-पासायवडेंसग-पदं

१८६. तेसि णं वणसंडाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता। ते णं पासायवडेंसगा पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय-पहसिया इव[1] तहेव[2] बहुसमरमणिज्जभूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं[3]। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया[4] •महज्जुइया महाबला महायसा महासोक्खा महाणुभागा° पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—असोए[5] सत्तपण्णे चंपए चूए[6]॥

○ भूमिभाग-पदं

१८७. सूरियाभस्स णं देवविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते[7] जाव[8] तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति[9] •सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति, हसंति रमंति ललंति कीलंति कित्तंति मोहेंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलविवागं पच्चणुब्भवमाणा° विहरंति॥

○ उवगारिया-लयण-पदं

१८८. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसे, एत्थ णं महेगे उवगारिया[10]-लयणे पण्णत्ते—एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसय-सहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं, जोयणं बाहल्लेणं, सव्व-जंबूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे॥

○ पउमवरवेइया-पदं

१८९. से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण सव्वओ समंता संपरिखित्ते। सा णं पउमवरवेइया अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं, उवकारिय-लेणसमा परिक्खेवेणं॥

१९०. तीसे णं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया[11]

---

१. राय० सू० १३७।
२. राय० सू० २४-३४।
३. राय० सू० ३७-४४।
४. सं०पा०—महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया।
५. आसोए (क, ख, ग, घ, च)।
६. वृत्तौ अतोग्रे अधिकं विवृतमस्ति—'ते णं इत्यादि, ते अशोकादयो देवाः स्वकीयस्य वनखण्डस्य स्वकीयस्य प्रासादावतंसकस्य, सूत्रे बहुवचनं प्राकृतत्वात् प्राकृते वचनव्यत्य-योऽपि भवतीति, स्वकीयानां सामानिकदेवानां स्वासां स्वासामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वासां स्वासां परिषदां स्वेषां स्वेषामनीकानां स्वेषां स्वेषामनीकाधिपतीनां स्वेषां स्वेषामात्म-रक्षाणां 'आहेवच्चं पोरेवच्चं' इत्यादि प्राग्वत्।
'प्राग्वद्' इति वृत्तिकारस्य सूचनया ज्ञायते वृत्तिकारस्य सम्मुखे भिन्नवाचनायाः मूलपाठः आसीत्।
७. पण्णत्ते, तं जहा—वणसंडविहूणे (क, ख, ग, घ, च, छ)। यद्यप्यसौ पाठः सर्वासु प्रतिषु लभ्यते तथापि नावश्यकः प्रतिभाति। वृत्तावपि नास्ति गृहीतोसौ।
८. राय० सू० २४-३१।
९. सं० पा०—आसयंति जाव विहरंति।
१०. उवारिय (घ); उवाइय (छ)।
११. सं० पा०—वइरामया सुवण्णरुप्पामया फलगा णाणामणिमया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•नेमा रिट्ठामया पइट्ठाणा वेरुलियामया खंभा सुवण्णरुप्पामया फलगा लोहितक्खमईयो सूईओ वइरामया संधी° णाणामणिमया कलेवरा णाणामणिमया कलेवरसंघाडगा णाणामणिमया रूवा णाणामणिमया रूवसंघाडगा अंकामया[1] •पक्खा पक्खबाहाओ, जोईरसमया वंसा वंसकवेल्लुयाओ रययामईओ पट्टियाओ जायरूवमईओ ओहाडणीओ, वइरामईओ° उवरिपुंछणीओ 'सव्वसेयरययामए छायणे'[2] ॥

१६१. सा णं पउमवरवेइया एगमेगेणं हेमजालेणं एगमेगेणं गवक्खजालेणं एगमेगेणं खिंखिणीजालेणं एगमेगेणं 'घंटाजालेणं एगमेगेणं मुत्ताजालेणं'[3] एगमेगेणं मणिजालेणं एगमेगेणं कणगजालेणं एगमेगेणं रयणजालेणं[4] एगमेगेणं पउमजालेणं[5] सव्वतो समंता संपरिखित्ता[6]। ते णं जाला[7] तवणिज्जलंबूसगा जाव[8] उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

१६२. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे[9] तहिं तहिं बहवे हयसंघाडा[10] •गयसंघाडा नरसंघाडा किन्नरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा° उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा[11] ॥

१६३. •तीसे णं पउमवरवेयइाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहवे हयपंतीओ°[12] ॥

१६४. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहवे हयवीहीओ°[13] ॥

१६५. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहूइं हयमिहुण्णाइं°[14] ॥

१६६. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहवे पउमलयाओ°[15] ॥

१६७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पउमवरवेइया पउमवरवेइया ? गोयमा ! पउमवरवेइयाए णं तत्थ तत्थ देसे[16] तहिं तहिं वेइयासु वेइयाबाहासु य वेइयफलएसु[17] य वेइयपुडंतरेसु य, खंभेएसु खंभबाहासु खंभसीसेसु[18] खंभपुडंतरेसु, सूईसु सूईमुखेसु सूईफलएसु

---

१. सं० पा०—अंकामया····उवरिपुंछणीओ ।

२. सव्वरयणामए अच्छायणे (ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (३।२६४, वृत्ति पत्र १८०) 'सव्वसेयरययामए छायणे' इति पाठो व्याख्यातोस्ति । रायपसेणीयवृत्तौ 'सव्वरयणामए' इति पाठो लिपिदोषाज्जातः । वृत्तिकृता 'एतत् सर्वं द्वारवत् भावनीयं' इत्युल्लिखितम् । तत्रापि च 'सव्वसेयरययामए' इति पाठोस्ति (राय० सू० १३०), वृत्तावपि (पृ० १६०) 'रजतमयं' इति व्याख्यातमस्ति ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. रयणजालेणं सव्वरयणजालेणं (क, ख, ग, घ च); सव्वरयणजालेणं (छ) ।

५. × (छ) ।

६. परिक्षिप्ताः (वृ) ।

७. दामा (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

८. राय० सू० ४० ।

९. देसे देसे (क, ख, ग, च, छ) ।

१०. सं० पा०—हयसंघाडा जाव उसभसंघाडा ।

११. सं० पा०—पडिरूवा जाव पंतीतो वीहीतो मिहुणाणि लयाओ ।

१२,१३,१४. राय सू० १६२ ।

१५. राय० सू० १४५ ।

१६. देसे देसे (क, ख, ग, च, छ) ।

१७. × (वृत्ति, जी० ३।२६६) ।

१८. °फलतेसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूईपुडंतरेसु, पक्खेसु पक्खबाहासु 'पक्खपेरंतेसु पक्खपुडंतरेसु'[1] बहुयाइं उप्पलाइं[2] पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं[3] सयवत्ताइं सहस्सवत्ताइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं[4] पडिरूवाइं महया वासिक्कछत्तसमाणाइं[5] पण्णत्ताइं समणाउसो ! से एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पउमवरवेइया पउमवरवेइया ।।

१९८. पउमवरवेइया णं भंते ! किं सासया असासया ? गोयमा! सिय सासया सिय असासया ।।

१९९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासया सिय असासया ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया । से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय सासया सिया असासया ।।

२००. पउमवरवेइया णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! ण कयाति णासि, ण कयाति णत्थि, ण कयाति न भविस्सइ, भुविं 'च भवइ य'[6] भविस्सइ य, धुवा णियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा पउमवरवेइया ।।

२०१. सा णं पउमवरवेइया एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता । से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं, उवयारिया[7]-लेणसमे परिक्खेवेणं। वणसंडवण्णओ भाणियव्वो जाव[8] विहरंति ।।

० उवगारिया-लयण-पदं

२०२. तस्स णं उवयारिया[9]-लेणस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ तोरणा[10] झया छत्ताइच्छत्ता[11] ।।

० भूमिभाग-पदं

२०३. तस्स णं उवयारिया-लयणस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[12] मणीणं फासो ।।

० मूलपासायवडेंसग-पदं

२०४. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगे मूलपासायवडेंसए पण्णत्ते । से णं मूलपासायवडेंसते[13] पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ[14] भूमिभागो उल्लोओ[15] सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं[16] अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता ।।

---

१. × (वृत्ति); जीवाजीवाभिगमे (३।२९९) 'पक्खपेरंतेसु' इत्येकमेव पदमस्ति ।

२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. राय० सू० १५७ ।

५. वासिक्कय° (क, ख, ग, घ, छ) ।

६. भवइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७,९. उवारिया (क, ख, ग, घ, च) ।

८. राय० सू० १७०-१८५ ।

१०. अतः परं 'अट्ठट्ठमंगलगा इति पदं गम्यमस्ति ।

११. राय० सू० १९-२३ ।

१२. राय० सू० २४-३१ ।

१३. पासाय° (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१४. राय० सू० १३७ ।

१५. °राय० सू० २४-३४ ।

१६. राय० सू० ३७-४४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

० पासायवडेंसग-पदं

२०५. से णं मूलपासायवडेंसगे[1] अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाण-मेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिखित्ते[2]। ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय जाव वण्णओ[3] भूमिभागो उल्लोओ[4] सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं[5] अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता[6]॥

२०६. ते णं पासायवडेंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिखित्ता। ते णं पासावडेंसया पणवीसं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ भूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता॥

२०७. ते णं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता। ते णं पासायवडेंसगा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं वण्णओ[7] उल्लोओ[8] सीहासणं अपरिवारं[9] अट्ठट्ठ[10] मंगलगा झया छत्तातिछत्ता॥

२०८. ते[11] णं पासायवडेंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसगेहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता। ते णं पासायवडेंसगा एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च उड्ढं उच्चत्तेणं, पन्नरसजोयणाइं अड्ढाइज्जे कोसे विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ भूमि-भागो जाव[12] झया छत्तातिछत्ता॥

० सुहम्म-सभा-पदं

२०९. तस्स णं मूलपासायवडेंसयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं सभा सुहम्मा पण्णत्ता— एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसयसन्निविट्ठा जाव[13] अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणाइया अच्छा जाव पडिरूवा॥

---

१. पासाय° (क, ख, ग, घ, च, छ)।
२. परिक्षिप्तः (वृ)।
३. राय० सू० १३७।
४. राय० सू० २४-३४।
५. राय० सू० ३७-४४।
६. राय० सू० २१-२३।
७. राय० सू० १३७।
८. राय० सू० २४-३४।
९. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१०. पासायउवरिं अट्ठट्ठ (क, ख, ग, घ, च, छ)।
११. 'च, छ' प्रत्योरेतत्सूत्रं नैव दृश्यते। वृत्तौ (पृ० २१३) अर्द्धतृतीयक्रोशाधिकपंचदश योजनोर्ध्वानां प्रासादावतंसकानां सूत्रमस्ति व्याख्यातम्। यथा—'ते पि प्रासादावतंसका अन्यैश्चतुर्भिः प्रासादावतंसकैस्तदर्द्धोच्चत्व प्रमाणैः अनन्तरोक्तप्रासादावतंसकार्द्धोच्चत्व-प्रमाणैर्मूलप्रासादावतंसकापेक्षया षोडशभाग-प्रमाणैः; सर्वतः समंतात् संपरिक्षिप्ताः; तदर्द्धोच्चत्वप्रमाणमेव दर्शयति—एकत्रिंशतं योजनानि क्रोशं च ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन पंचदश-योजनानि अर्द्धतृतीयांश्चैवक्रोशान् विष्क-म्भतः। एतेषामपि स्वरूपादि वर्णनमनन्त-रोक्तम्'।
१२. राय० सू० २०५।
१३. राय० सू० ३२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

० सुहम्म-सभा-दार-पदं

२१०. सभाए णं सुहम्माए तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, तं जहा--पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं। ते णं दारा[1] सोलस[2] जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, तावतियं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा[3] जाव[4] वणमालाओ[5] ॥

० मुहमंडव-पदं

२११. तेसि णं दाराणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मुहमंडवे पण्णत्ते। ते णं मुहमंडवा एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं [6]•अणेगखंभसयसन्निविट्ठा जाव[7] अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणाइया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० दार-पदं

२१२. तेसि णं मुहमंडवाणं तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं। ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, तावतियं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा जाव[8] वणमालाओ ॥

० भूमिभाग-उल्लोय-पदं

२१३. तेसि णं मुहमंडवाणं भूमिभागा उल्लोया[9] ॥

० मंगलग-पदं

२१४. तेसि णं मुहमंडवाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता°[10] ॥

० पेच्छाघर-मुहमंडव-पदं

२१५. तेसि णं मुहमंडवाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं पेच्छाघरमंडवे पण्णत्ते। मुहमंडववत्तव्वया[11] जाव[12] दारा ॥

० भूमिभाग-उल्लोय-पदं

२१६. [13]•तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं भूमिभागा उल्लोया°[14] ॥

० अक्खाडग-पदं

२१७. तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं वइरामए अक्खाडए पण्णत्ते ॥

० मणिपेढिया-पदं

२१८. तेसि णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढिया

---

१. दारा साइरेगाइं (छ)।
२. सोलस सोलस (वृ)।
३. वरकमल° (छ)।
४. राय० सू० १२९-१३६।
५. वणमालाओ तेसि णं दाराणं उवरिं मंगलरूवा छत्ताइछत्ता (छ)।
६. सं० पा०—वण्णओ सभाए सरिसो।
७. राय० सू० ३२।
८. राय० सू० १२९-१३६।
९. राय० सू० २४-३४।
१०. राय० सू० २१-२३।
११. मुहमंडवा वण्णेयव्वा (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१२. राय० सू० २११, २१२।
१३. सं० पा०—भूमिभागा उल्लोया।
१४. राय० सू० २४-३४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ।।

० सीहासण-पदं

२१९. तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणे पण्णत्ते। सीहासणवण्णओ[1] सपरिवारो ।।

० मंगलग-पदं

२२०. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिछत्ता[2] ।।

० मणिपेढिया-पदं

२२१. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियातो सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ।।

० चेइयथूभ-पदं

२२२. तासि णं मणिपेढियाणं[3] उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं चेइयथूभे[4] पण्णत्ते। ते णं चेइय-थूभा सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सेया संखंक[5]-°कुंद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुंजसन्निगासा° सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

० मंगलग-पदं

२२३. तेसि णं चेइयथूभाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिछत्ता जाव सहस्स-पत्तहत्थया ।।

० मणिपेढिया-पदं

२२४. तेसि णं चेइयथूभाणं 'पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं'[6] मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ।।

० जिणपडिमा-पदं

२२५. तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमातो जिणुस्सेहपमाणमेत्ताओ पलियंकनिसन्नाओ[7] थूभाभिमुहीओ सन्निखित्ताओ चिट्ठंति, तं जहा—उसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा ।।

० मणिपेढिया-पदं

२२६. तेसि णं चेइयथूभाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढिताओ सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं,

---

१. राय० सू० ३७-४४।

२. राय० सू० २१-२३।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

४. थूभे (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तेस्तथा जीवाजीवाभिगमस्य (३।३८१) अनुसारेण 'चेइय' इति पदं युज्यते।

५. सं० पा०—संखंक सव्वरयणामया।

६. चउद्दिसिं पत्तेयं-पत्तेयं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

७. °सन्निसण्णा (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ।।

० चेइयरुक्ख-पदं

२२७. तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं चेइयरुक्खे पण्णत्ते। ते णं चेइय-रुक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधो, 'अद्धजोयणं विक्खंभेणं'[1], छ जोयणाइं विडिमा, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं[2], साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता ।।

२२८. तेसि णं चेइयरुक्खाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामयमूल-रययसुपइट्ठियविडिमा[3] रिट्ठामय-'विउलकंद-वेरुलिय'[4]-रुइलखंधा सुजायवरजायरूवपढमग-विसालसाला नाणामणिमयरयणविविहसाहप्पसाह-वेरुलियपत्त-तवणिज्जपत्तबिंटा जंबूणय-रत्त-मउय-सुकुमाल-पवाल-'पल्लव-वरंकुरधरा'[5] विचित्तमणिरयणसुरभि-कुसुम-'फल-भर'[6]-नमियसाला 'सच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया'[7] अहियं नयणमणणिव्वु-इकरा[8] अमयरससमरसफला[9] पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा[10] ।।

---

१. अट्ठजोयणाइं° (क, ख, ग, घ, च, छ); 'अद्धजोयणं विक्खंभेणं' एष वृत्त्यनुसारी पाठोस्ति। प्रत्यनुसारी पाठ इत्थमस्ति—'अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं' प्रतीनां 'अट्ठ जोयणाइं' एष पाठः अशुद्धः प्रतीयते। जीवाजीवाभिगमे (३।३८६) 'अद्धजोयणं विक्खंभेणं' इत्येव पाठो दृश्यते।

२. विष्कम्भेन (वृ)।

३. °सुविडिमा (क, ख, ग, घ, च, छ)।

४. विउलाकंदा वेरुलिया (क, ख, ग, घ, च), वृत्तौ 'विउल' शब्दो न व्याख्यातः।

५. सोभियावरंकुरग्गसिहरा (क, ख, ग, घ, च, छ)।

६. भरभरिय (क, ख, ग, घ, च, छ)।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

८. मणनयणणि° (क, ख, ग, घ, च, छ)।

९. °फला सच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१०. २२८ सूत्रानन्तरं प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ एवं व्याख्यातमस्ति—एते च चैत्यवृक्षा अन्यैर्बहुभिस्तिलकलवक - च्छत्रोपग- शिरीष-सप्तपर्ण - दधिपर्ण-लोध्र-धव-चन्दन-नीप-कुटज-पनस-ताल-तमाल- प्रियाल- प्रियङ्गु- पारापत - राजवृक्ष - नन्दिवृक्षैः सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षिप्ता, ते च तिलका यावन्नन्दिवृक्षा मूलमन्तः कन्दमन्त इत्यादि सर्वमशोकपादपवर्णनायामिव तावद् वक्तव्यं यावत् परिपूर्णं लतावर्णनम्। प्रयुक्तादर्शेषु एतद्व्याख्यानुसारी पाठो नैव लभ्यते। किन्तु जीवाजीवाभिगमस्य आदर्शेषु तादृशः पाठो लभ्यते स चैवमस्ति— तेणं चेइयरुक्खा अण्णेहिं बहूहिं तिलय-लवय-छत्रोवग-सिरीस-सत्तिवण्ण-दहिवण्ण -लोद्ध-धव-चंदण-(अज्जुण?) नीव-कुडय- कयंब - पणस - ताल-तमाल-पियाल-पियंगु - पारावय-रायरुक्ख-नंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता। ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो जाव सुरम्मा।

ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा अण्णाहिं बहूहिं पउमलयाहिं जाव सामलयाहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता। ताओ णं पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ जाव पडिरूवाओ (जीवा० ३।३८८-३९०)।

जीवाजीवाभिगमस्य वृत्तावपि एष व्याख्यातोस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

० मंगलग-पदं

२२९. तेसि णं चेइयरुक्खाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइछत्ता ॥

० मणिपेढिया-पदं

२३०. तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणि-मईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० महिंदज्झय-पदं

२३१. तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं महिंदज्झए पण्णत्ते। ते णं महिंद-ज्झया सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं उव्वेहेणं, अद्धकोसं[1] विक्खंभेणं वइरामय-वट्ट-'लट्ठ-संठिय-सुसिलिट्ठ'[2]-परिघट्ठ-मट्ठ-सुपतिट्ठिया विसिट्ठा[3] अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्स-परिमंडियाभिरामा वाउद्धुयविजय-वेजयंती-पडाग-च्छत्तातिच्छत्तकलिया[4] तुंगा गगणतल-मणुलिहंतसिहरा[5] पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

० मंगलग-पदं

२३२. तेसि णं महिंदज्झयाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिछत्ता ॥

० नंदापुक्खरिणी-पदं

२३३. तेसि णं महिंदज्झयाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं नंदा[6] पुक्खरिणी पण्णत्ता। ताओ णं पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस[7] जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छाओ जाव[8] पगईए[9] उदगरसेणं पण्णत्ताओ[10] °पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ°। पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइयापरिक्खित्ताओ, पत्तेयं-पत्तेयं वणसंड-परिक्खित्ताओ[11]।

० तिसोवाणपडिरूवग-पदं

२३४. तासि णं णंदाणं पुक्खरिणीणं तिदिसिं तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता। तिसोवाणपडिरूवगाणं वण्णओ[12] तोरणा झया छत्तातिछत्ता।

० मणोगुलिया-पदं

२३५. सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं मणोगुलियासाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तं जहा— पुरत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, दाहिणेणं अट्ठसाहस्सीओ, उत्तरेणं अट्ठसाहस्सीओ। तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरुप्पामया फलगा पण्णत्ता। तेसु णं सुवण्णरुप्पामएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंतया पण्णत्ता। तेसु णं वइरामएसु

---

१. जोयणं (क, ख, ग, घ); जोइणं (च, छ)।

२. लट्ठि पसिलिट्ठ (क, ख, ग, घ, च)।

३. × (क, ख, ग, घ, च)।

४. °छत्तकलिया (क, ख, ग, घ, च, छ)।

५. गगणतलमभिकंखमाण° (क, ख, ग, घ, च, छ)।

६. नंदाओ (क, ख, ग)।

७. द्वाविंश (छ)।

८. राय० सू० १७४।

९. पागइयाओ (क, ख, ग, घ, च); पगइयाओ (छ)।

१०. सं० पा०—पण्णत्ताओ।

११. राय० सू० १८९-२०१।

१२. राय० सू० १९-२३।

णागदंतएसु किण्हसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा[1] चिट्ठंति ॥

० गोमाणसिया-पदं

२३६. सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं गोमाणसियासाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—[2]°पुरत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, दाहिणेणं अट्ठसाहस्सीओ, उत्तरेणं अट्ठसाहस्सीओ। तासु णं गोमाणसियासु बहवे सुवण्णरुप्पामया फलगा पण्णत्ता। तेसु णं सुवण्णरुप्पामएसु फलगेसु बहवे वइरामया नागदंतया पण्णत्ता°। तेसु णं वइरामएसु णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता। तेसु णं रययामएसु सिक्कगेसु बहवे वेरुलियामइओ धूवघडियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं धूवघडियाओ कालागरु-पवर[3]°कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं घाणमणणिव्वुतिकरेणं गंधेणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा-आपूरेमाणा सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठंति ॥

० भूमिभाग-पदं

२३७. सभाए णं सुहम्माए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[4] मणीहिं उवसोभिए मणिफासो य उल्लोओ य ॥

० मणिपेढिया-पदं

२३८. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्व-मणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० चेइय-खंभ-पद

२३९. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं माणवए चेइयखंभे पण्णत्ते—सट्ठिं जोय-णाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जोयणं उव्वेहेणं, जोयणं विक्खंभेणं, 'अडयालीसअंसिए अडयालीसइ-कोडीए अडयालीसइविग्गहिए'[5] सेसं जहा[6] महिंदज्झयस्स ॥

० जिण-सकहा-पदं

२४०. माणवगस्स णं चेइयखंभस्स उवरिं बारस जोयणाइं ओगाहेत्ता, हेट्ठावि बारस जोयणाइं वज्जेत्ता, मज्झे छत्तीसाए[7] जोयणेसु, एत्थ णं बहवे सुवण्णरुप्पामया फलगा पण्णत्ता। तेसु णं सुवण्णरुप्पामएसु फलएसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता। तेसु णं वइरामएसु नागदंतेसु बहवे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता। तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वइरामया गोलवट्टसमुग्गया पण्णत्ता। तेसु णं वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुयाओ[8]

---

१. अत्र समर्पणसूचकः संकेतः केनापि कारणेन त्रुटितोस्ति। १३२ सूत्रमिह प्राप्तमस्ति। द्रष्टव्यं जीवाजीवभिगमस्य ३।३९७ सूत्रम्।

२. सं० पा०—जहा मणोगुलिया जाव णागदंतया।

३. सं० पा०—कालागरुपवर जाव चिट्ठंति।

४. राय० सू० २४-३४।

५. अडयालीसं असीइए अडयालीसं सइकोडिए अडयालीसं सइविग्गहे (क, ख, ग, घ, च, छ)।

६. राय० सू० २३१, २३२।

७. बत्तीसाए (क, ख, ग); छव्वीसाए (च); तीसाए (छ)।

८. बहवे (क, ख, ग, घ, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिण-सकहाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति । ताओ णं सूरियाभस्स देवस्स अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ[1] °वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ माणणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासणिज्जाओ ॥

० मंगलग-पदं

२४१. माणवगस्स चेइयखंभस्स उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता ॥

० मणिपेढिया-पदं

२४२. तस्स माणवगस्स चेइयखंभस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० सीहासण-पदं

२४३. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगे सीहासणे पण्णत्ते—सीहासणवण्णतो[2] सपरिवारो ॥

० मणिपेढिया-पदं

२४४. तस्स णं माणवगस्स चेइयखंभस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० देवसयणिज्ज-पदं

२४५. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगे देवसयणिज्जे पण्णत्ते । तस्स णं देवसयणिज्जस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—णाणामणिमया पडिपाया, सोवण्णिया पाया, णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं, जंबूणयामयाइं गत्तगाइं, 'वइरामया संधी'[3], णाणामणिमए वेच्चे, रययामई तूली, 'लोहियक्खमया बिब्बोयणा, तवणिज्जमया गंडोवहाणया'[4] । से णं देवसयणिज्जे 'सालिंगणवट्टिए उभओबिब्बोयणे'[5] दुहओ उण्णते मज्झे णयगंभीरे[6] गंगापुलिणवालुया[7] उद्दालसालिसए सुविरइयरयत्ताणे ओयवियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे[8] रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आईणग-रूय-बूर-णवणीय-तूलफासे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

० मणिपेढिया-पदं

२४६. तस्स णं देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरत्थिमेणं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

---

१. सं० पा०—अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ ।

२. राय० सू० ३७-४४ ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. तवणिज्जमया गंडोवहाणया लोहियक्खमया (मई) बिब्बोयणा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. णयगंभीरे सालिंगणवट्टीए (क, ख, ग, घ, च) ।

७. °बाल (क, ख, ग, घ, च); °वालुए (छ) ।

८. अत्र वृत्तौ 'प्रतिच्छदनं' विद्यते, किन्तु ३७ सूत्रे 'प्रतिच्छादनम्' अस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

० महिंदज्झय-पदं

२४७. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं खुड्डए[1] महिंदज्झए पण्णत्ते—सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं[2] उव्वेहेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, वइरामयवट्टलट्ठसंठिय-सुसिलिट्ठ[3]-°परिघट्ठ-मट्ठ-सुपतिट्ठिए विसिट्ठे अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामे वाउद्धयविजय-वेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे ।।

० मंगलग-पदं

२४८. तस्स णं खुड्डामहिंदज्झयस्स उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ।।

० पहरणकोस-पदं

२४९. तस्स णं खुड्डामहिंदज्झयस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स महं एगे चोप्पाले नाम पहरणकोसे पण्णत्ते—सव्ववइरामए अच्छे जाव पडिरूवे। तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स फलिहरयण-खग्ग-गया-धणुप्पमुहा बहवे पहरणरयणा संनिखित्ता चिट्ठंति—उज्जला निसिया सुतिक्खधारा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

० मंगलग-पदं

२५०. सभाए णं सुहम्माए उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ।।

० सिद्धायतण-पदं

२५१. सभाए णं सुहम्माए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगे सिद्धायतणे पण्णत्ते—एगं जोयणसयं आयामेणं, पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं, बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सभागमएणं जाव[4] गोमाणसियाओ, भूमिभागा उल्लोया तहेव[5] ।।

० मणिपेढिया-पदं

२५२. तस्स णं सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं[6] ।।

० जिणपडिमा-पदं

२५३. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगे देवच्छंदए पण्णत्ते—सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ।।

२५४. तत्थ णं अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाणमित्ताणं संनिखित्तं संचिट्ठति। तासि णं जिणपडिमाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—तवणिज्जमया हत्थतल-पायतला, अंकामयाइं नक्खाइं अंतोलोहियक्खपडिसेगाइं[7], कणगामईओ जंघाओ, कणगामया

१. खुड्ड (क, ग)।

२. २३१ सूत्रे 'अद्धकोसं' पाठो विद्यते, अत्र तु सर्वासु प्रतिषु 'जोयणं' पाठो लभ्यते। वृत्त्यनुसारेणापि 'अद्धकोसं' पाठो युज्यते, यथा—'तस्य प्रमाणं वर्णकश्च महेन्द्रध्वजवद् वक्तव्यम्'।

३. सं० पा०—सुसिलिट्ठ पडिरूवे।

४. राय० सू० २०९-२३६।

५. राय० सू० २४-३४।

६. राय० सू० २३८।

७. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।४१५) अत्र एष पाठो विद्यते—'कणगामया पादा, कणगामया गोप्फा'। आनखशिखवर्णने एष उपयुक्तोस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाणू, कणगामया ऊरू, कणगामईओ गायलट्ठीओ, 'तवणिज्जमईओ नाभीओ, रिट्ठामईओ रोमराईओ, तवणिज्जमया चूचुया'[1], तवणिज्जमया सिरिवच्छा[2], सिलप्पवालमया ओट्ठा, फालियामया दंता, तवणिज्जमईओ जीहायो, तवणिज्जमया[3] तालुया, कणगामईओ नासिगाओ अंतोलोहियक्खपडिसेगाओ, अंकामयाणि अच्छीणि अंतोलोहियक्खपडिसेगाणि[4], 'रिट्ठामईओ ताराओ'[5], रिट्ठामयाणि अच्छिपत्ताणि, रिट्ठामईओ भमुहाओ, कणगामया कवोला[6], कणगामया सवणा, कणगामईओ णिडालपट्टियाओ, वइरामईओ सीसघडीओ, तवणिज्जमईओ केसंतकेसभूमीओ, रिट्ठामया उवरिमुद्धया ।।

२५५. तासि णं जिणपडिमाणं पिट्ठतो पत्तेयं-पत्तेयं छत्तधारगपडिमाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं छत्तधारगपडिमाओ हिमरययकुंदेंदुप्पगासाइं सकोरंटमल्लदाम[7]-धवलाइं आयवत्ताइं सलीलं 'धारेमाणीओ-धारेमाणीओ'[8] चिट्ठंति ।।

२५६. तासि णं जिणपडिमाणं उभओ पासे 'दो दो'[9] चामरधारपडिमाओ[10] पण्णत्ताओ। ताओ णं चामरधारपडिमाओ चंदप्पह-वइर-वेरुलिय-नानामणिरयणखचिय-चित्तदंडाओ[11] 'सुहुमरययदीहवालाओ संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ'[12] 'धवलाओ चामराओ'[13] 'गहाय सलीलं वीजेमाणीओ'[14] 'सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ'[15] ।।

२५७. तासि णं जिणपडिमाणं पुरतो दो दो नागपडिमाओ 'जक्खपडिमाओ भूयपडिमाओ'[16] कुंडधारपडिमाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति—सव्वरयणामईओ अच्छाओ

---

१. तवणिज्जमया चुच्चुया तवणिज्जामईओ नाभीओ रिट्ठामईओ रोमराईओ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

२. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।४१५) अत्र एष पाठो विद्यते—'कणगमईओ बाहाओ, कणगमईओ पासाओ, कणगमईओ गीवाओ, रिट्ठामए मंसू'।

३. तवणिज्जा° (च,छ)।

४. °सेगाओ (च, छ)।

५. × (वृ)।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

७. °दामाइं (च, छ)। वृत्तौ एकवचनं व्याख्यातम्।

८. उधारेमाणीओ-उधारेमाणीओ (क, ख, ग, घ च)।

९. पत्तेयं पत्तेयं (क, ख, ग, घ, च, छ); मूलपाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः। पूर्ववर्ती 'पत्तेयं पत्तेयं' इति पाठस्य 'एकैका' इति व्याख्यातमस्ति। अत्र 'प्रत्येकम् उभयोः पार्श्वयोः 'द्वे द्वे' इति व्याख्यातमस्ति, अनेन 'दो दो' इति पाठः सङ्गच्छते। द्रष्टव्यम्—जीवाजीवाभिगमस्य ३।४१७ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

१०. °धारग° (क, ख, ग, घ)।

११. णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१२. संखंककुंदगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ सुहुमरययदीहवालाओ (क,ख,ग,घ,च,छ)।

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१४. सलीलं उधारेमाणीतो २ (क, ख, ग, घ); सलीलं धारेमाणीओ २ (च, छ)। स्वीकृतपाठः वृत्त्यनुसारी वर्तते। जीवाजीवाभिगम- (३। ४१७) सूत्रेपि एष एव पाठः स्वीकृतोस्ति।

१५. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१६. भूयपडिमाओ जक्खपडिमाओ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव पडिरूवाओ ।।

२५८. 'तत्थ णं देवच्छंदए'[1] जिणपडिमाणं पुरतो अट्ठसयं घंटाणं अट्ठसयं वंदणकलसाणं अट्ठसयं भिंगाराणं एवं—आयंसाणं थालाणं पाईणं सुपइट्ठाणं मणोगुलियाणं वायकरगाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं, हयकंठाणं[2] °गयकंठाणं नरकंठाणं किन्नरकंठाणं किंपुरिसकंठाणं महोरगकंठाणं गंधव्वकंठाणं, °उसभकंठाणं पुप्फचंगेरीणं[3] °मल्लचंगेरीणं चुण्णचंगेरीणं गंध-चंगेरीणं वत्थचंगेरीणं आभरणचंगेरीणं सिद्धत्थचंगेरीणं° लोमहत्थचंगेरीणं, पुप्फपडलगाणं[4] °मल्लपडलगाणं चुण्णपडलगाणं गंधपडलगाणं वत्थपडलगाणं आभरणपडलगाणं सिद्धत्थपड-लगाणं° लोमहत्थपडलगाणं, सीहासणाणं छत्ताणं चमराणं, तेल्लसमुग्गाणं[5] °कोट्ठसमुग्गाणं पत्तसमुग्गाणं चोयगसमुग्गाणं तगरसमुग्गाणं एलासमुग्गाणं हरियालसमुग्गाणं हिंगुलय-समुग्गाणं मणोसिलासमुग्गाणं °अंजणसमुग्गाणं, अट्ठसयं झयाणं[6], अट्ठसयं धूवकडुच्छुयाणं संनिखित्तं चिट्ठति ।।

२५९. तस्स णं सिद्धायतणस्स उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ।।

°उववायसभा-पदं

२६०. तस्स णं सिद्धायतणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा उववायसभा पण्णत्ता जहा सभाए सुहम्माए तहेव जाव[7] 'उल्लोओ य'[8] ।

२६१. 'तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता'[9]—अट्ठजोयणाइं[10] °आयाम-विक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा° । देवसयणिज्जं तहेव सयणिज्जवण्णओ[11] । अट्ठट्ठ[12] मंगलगा झया छत्तातिछत्ता ।।

२६२. तीसे णं उववायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगे हरए पण्णत्ते—एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं तहेव[13] ।।

---

१. तासि णं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—हयकंठाणं जाव उसभकंठाणं ।

३. सं० पा०—पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगे-रीणं ।

४. सं० पा०—पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडल-गाणं ।

५. सं० पा०—तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजण-समुग्गाणं ।

६. वृत्तौ सङ्ग्रहणीगाथाद्वयमपि दृश्यते—
चंदणकलसा भिंगारगा य, आयंसया य थाला य ।
पातीउ सुपइट्टा मणगुलिका वायकरगा य ।।१।।
चिता रयणकरंडा, हय-गय-नरकंठगा य चंगेरी ।
पडलग-सीहासण-छत्त-चामरा समुग्गय-झया य ।।२।।

७. राय० सू० २०९-२३७; तस्याश्च सुधर्मागमेन स्वरूपवर्णन-पूर्वादिद्वारत्रयवर्णनमुखमण्डप-प्रेक्षा-गृहमण्डपादिवर्णनादिप्रकाररूपेण तावत् वक्तव्यं यावत् उल्लोकवर्णनम् (वृ) ।

८. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. असौ पाठो वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः—तस्य च बहुसमरणीयभूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागेत्र महत्येका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता (वृ) ।

१०. सं० पा०—अट्ठजोयणाइं ।

११. राय० सू० २४५ ।

१२. अत्र प्रारम्भे 'उववायसभाए णं उवरिं' इति वाक्यशेषः ।

१३. राय० सू० २३३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६३. से णं हरए एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। पउमवरवेइया वणसंडवण्णओ[1] ॥

२६४. तस्स णं हरयस्स तिदिसं तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता[2] ॥

० अभिसेगसभा-पदं

२६५. तस्स णं हरयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा अभिसेगसभा पण्णत्ता सुहम्मागमएणं जाव[3] गोमाणसियाओ। मणिपेढिया[4] सीहासणं अपरिवारं[5] जाव[6]

---

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ)। राय० सू० १८९-२०१।

२. राय० सू० २३४।

३. राय० सू० २०६-२३७।

४. राय० सू० २६१।

५. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ)। २६५, २६७, २६९ एषु त्रिष्वपि सूत्रेषु 'सीहासणं अपरिवारं' इति पाठो युज्यते, यद्यपि आदर्शेषु तथा पंडितबेचरदास-संपादितवृत्तौ 'सीहासणं सपरिवारं' पाठो लभ्यते, किन्तु २६५ सूत्रे 'जाव दामा' इति समर्पणवाक्येन 'सीहासणं अपरिवारं' अस्यैव पाठस्य पुष्टिर्जायते। वृत्तिकृता अपरिवारं सिंहासनं व्याख्यातम्, किन्तु लिपिदोषेण मुद्रणदोषेण वा अपरिवारस्य स्थाने सपरिवारं जातम्। जीवाजीवाभिगमवृत्त्यवलोकनेन एतत् स्पष्टं भवति।

जीवाजीवाभिगमवृत्ति (पत्र २३६)	रायपसेणइयवृत्ति (पृ० २३५, २३६)
सिंहासनवर्णकः प्राग्वत्, नवरमत्र परिवारभूतानि भद्रासनानि न वक्तव्यानि।	सिंहासनवर्णकः प्राग्वत् नवरमत्र परिवारभूतानि भद्रासनानि च वक्तव्यानि।
तस्याश्चाभिषेकसभाया उत्तरपूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येकालंकारसभा प्रज्ञप्ता, सा च प्रमाणस्वरूपद्वारत्रयमुखमण्डपप्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेणाभिषेक - सभावत्तावद्वक्तव्या यावदपरिवारं सिंहासनम्।	तस्याश्च अभिषेकसभाया उत्तरपूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येका अलंकारसभाप्रज्ञप्ता, सा अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-मुखमण्डप - प्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद् वक्तव्या यावत् परिवारसिंहासनम्।
तस्या अलंकारसभाया उत्तरपूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येका व्यवसायसभा प्रज्ञप्ता, सा चाभिषेकसभावत्प्रमाणस्वरूपद्वारत्रयमुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद्वक्तव्या यावदपरिवारं सिंहासनम्।	तस्याश्च अलंकारसभाया उत्तरपूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येका व्यवसायसभा प्रज्ञप्ता, सा च अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-मुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद् वक्तव्या यावत् सिंहासनं सपरिवारम्।

रायपसेणइयवृत्तौ 'न वक्तव्यानि' स्थाने 'च वक्तव्यानि' मुद्रितमस्ति। वृत्त्यनुसारेण अलंकारसभायाः व्यवसायसभायाश्च अभिषेकसभावत् वर्णनमस्ति तेनानयोरपि सूत्रयोरपरिवारं सिंहासनं युज्यते। अत्र वृत्तौ च 'यावदपरिवारं सिंहासनं' स्थाने 'यावत् परिवारसिंहासनं' तथा 'यावत् सिंहासनं सपरिवारं' इति मुद्रितमस्ति। जीवाजीवाभिगमवृत्तेः सन्दर्भे तथा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तेर्हर्दिने मुद्रितपाठोऽशुद्धः प्रतीयते। तेनास्माभिः 'अपरिवारं' इति पाठः स्वीकृतः।

६. राय० सू० ३७-४०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दामा चिट्ठंति ।।

२६६. तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अभिसेयभंडे[1] संनिखित्ते चिट्ठइ। अट्ठट्ठ[2] मंगलगा तहेव[3] ।।

० अलंकारियसभा-पदं

२६७. तीसे णं अभिसेगसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, 'एत्थ णं महेगा'[4] अलंकारियसभा पण्णत्ता। जहा[5] सभा सुधम्मा मणिपेढिया अट्ठ जोयणाइं[6] सीहासणं अपरिवारं[7] ।।

२६८. 'तत्थ णं'[8] सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अलंकारियभंडे संनिखित्ते चिट्ठति। सेसं तहेव[9] ।।

० ववसायसभा-पदं

२६९. तीसे णं अलंकारियसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा ववसायसभा पण्णत्ता। जहा उववायसभा जाव[10] मणिपेढिया सीहासणं अपरिवारं[11] अट्ठट्ठ[12] मंगलगा ।।

२७०. तत्थ[13] णं सूरियाभस्स देवस्स एत्थ णं महेगे पोत्थयरयणे सन्निखित्ते चिट्ठइ। तस्स णं पोत्थयरयणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—'रिट्ठामईओ कंबिआओ'[14], तवणिज्जमए[15] दोरे, नाणामणिमए गंठी, अंकमयाइं पत्ताइं[16], वेरुलियमए[17] लिप्पासणे[18], 'तवणिज्जमई संकला, रिट्ठामए छादणे'[19], रिट्ठामई मसी, वइरामई लेहणी[20], रिट्ठामयाइं अक्खराइं, धम्मिए लेक्खे[21] ।।

---

१. आभि° (क, ख, ग, घ)।

२. अत्र प्रारम्भे 'अभिसेयसभाए णं उवरिं' इति वाक्यशेषः।

३. राय० सू० २१-२३।

४. महा (क, ख, ग, घ)।

५. अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-मुखमण्डप-प्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद् वक्तव्या यावत् परिवारसिंहासनम् (वृ)। राय० सू० २०९-२३७।

६. राय० सू० २६१।

७. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं २६५ सूत्रस्य पादटिप्पणम्। राय० सू० ३७-४०।

८. तओ (क, ख, ग, घ)।

९. राय० सू० २६६।

१०. अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-मुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद् वक्तव्या यावत् सिंहासनं सपरिवारम् (वृ)। राय० सू० २६०-२६१।

११. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं २६५ सूत्रस्य पादटिप्पणम्। राय० सू० ३७-४०।

१२. अत्र प्रारम्भे 'ववसायसभाए णं उवरिं' इति वाक्यशेषः। राय० सू० २१-२३।

१३. तस्स (क, ख, ग, घ)।

१४. रयणामइयाइं रिट्ठाइं उकंठियाइं (क, ख, ग, च, छ); रिट्ठकंठियाइं रयणामयाइं (घ)।

१५. रयणामए (वृ); जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र २३७) रजतमयो दवरगः।

१६. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१७. नाणामणिमए (वृ); जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र २३७) नाणामणिमयं लिप्यासनम्।

१८. लिवासणे (क, ख, ग, च); लिवीमाणे (घ)।

१९. रिट्ठामए छंदणे तवणिज्जामई संकला (क, ख, ग, घ, च, छ)।

२०. लेहिणी (घ)।

२१. सत्थे (क, ख, ग, घ, च, छ, वृपा)।

Jain Education International 	For Private & Personal Use Only 	www.jainelibrary.org

२७१. ववसायसभाए णं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा[1] ॥

२७२. तीसे[2] णं ववसायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, महेगे बलिपीढे पण्णत्ते—अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

२७३. तस्स णं बलिपीढस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा[3] नंदा पुक्खरिणी पण्णत्ता। हरयसरिसा[4] ॥

सूरियाभदेव-पदं

[तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरियाभे देवे सूरियाभे विमाणे उववातसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिते अंगुलस्स असंखेज्जतिभागमेत्तीए ओगाहणाए उववण्णे।][5]

२७४. तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववण्णमित्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं[6] गच्छइ, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाण-पज्जत्तीए भासमणपज्जत्तीए][7] ॥

२७५. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—'किं मे पुव्विं करणिज्जं ? किं मे पच्छा करणिज्जं ? किं मे पुव्विं सेयं ? किं मे पच्छा सेयं ? किं मे पुव्विं पि पच्छा वि[8] हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ? ॥

२७६. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा सूरियाभस्स देवस्स इमेयारूवं अज्झत्थियं[9] *चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं° समुप्पण्णं समभिजाणित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं सूरियाभे विमाणे सिद्धायतणंसि जिणपडिमाणं जिणुस्सेहपमाणमेत्ताणं अट्ठसयं संनिखित्तं चिट्ठति। सभाए णं सुहम्माए माणवए चेइए खंभे, वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूओ जिण-सकहाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति। ताओ णं देवाणुप्पियाणं अण्णेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ[10] *वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ माणणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासणिज्जाओ। तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं करणिज्जं, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छा करणिज्जं, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं सेयं, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छा सेयं, तं एयण्णं[11] देवाणुप्पियाणं

---

१. राय० सू० २१-२३।

२. प्रयुक्तादर्शेषु २७२, २७३ सूत्रयोः क्रमभेदो विद्यते।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

४. राय० सू० २६२-२६४।

५. एतत् कोष्ठकवर्त्तिसूत्रं आदर्शेषु नोपलभ्यते, वृत्तौ व्याख्यातमस्ति। जीवाजीवाभिगमस्य ३।४३९ सूत्रेणापि अस्य समर्थनं जायते ॥

६. पज्जत्तभावं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

७. कोष्ठकान्तरवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।

८. किं मे पुव्विं सेयं किं मे पुव्विं पच्छाएवि (क, ख, ग, घ, च)

९. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव समुप्पण्णं।

१०. सं० पा०—अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ।

११. एतं णं (क, ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्विं पि[1] पच्छा वि हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति ॥

सूरियाभस्स अभिसेग-पदं

२७७. तए णं से सूरियाभे देवे तेसिं सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[2] °चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए[3] सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता उववायसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ, जेणेव हरए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हरयं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पुरत्थिमिल्लेणं[4] तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जलावगाहं करेइ, करेत्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकिड्डं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसूईभूए हरयाओ पच्चोत्तरइ, पच्चोत्तरित्ता जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अभिसेयसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

२७८. तए णं सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सूरियाभस्स देवस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेह ॥

२७९. तए णं ते आभिओगिआ देवा सामाणियपरिसोववण्णेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ[5] °तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवा ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं[6] पडिसुणंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं[7] °दंडं निसिरंति, तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायंति, परियाइत्ता° दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता अट्ठसहस्सं[8] सोवण्णियाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पामयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं भोमिज्जाणं कलसाणं, एवं—भिंगाराणं आयंसाणं थालाणं पाईणं

---

१. × (क, ख, ग, घ) ।
२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
३. हयहियए (ख, ग, घ, च, छ) ।
४. पुरत्थिमेणं (क, ख, ग, घ, च) ।
५. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।
६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. सं पा०—जोयणाइं जाव दोच्चं ।
८. अट्ठसयं (क, ख, ग, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुपतिट्ठाणं 'मणोगुलियाणं वायकरगाणं चित्ताणं'[1] रयणकरंडगाणं, पुप्फचंगेरीणं[2] •मल्लचंगेरीणं चुण्णचंगेरीणं गंधचंगेरीणं वत्थचंगेरीणं आभरणचंगेरीणं सिद्धत्थचंगेरीणं° लोमहत्थचंगेरीणं, पुप्फपडलगाणं[3] •मल्लपडलगाणं चुण्णपडलगाणं गंधपडलगाणं वत्थ-पडलगाणं आभरणपडलगाणं सिद्धत्थपडलगाणं° लोमहत्थपडलगाणं, सीहासणाणं छत्ताणं चामराणं, तेल्लसमुग्गाणं[4] •कोट्ठसमुग्गाणं पत्तसमुग्गाणं चोयगसमुग्गाणं तगरसमुग्गाणं एलासमुग्गाणं हरियालसमुग्गाणं हिंगुलयसमुग्गाणं मणोसिलासमुग्गाणं° अंजणसमुग्गाणं अट्ठसहस्सं झयाणं, अट्ठसहस्सं[5] धूवकडुच्छुयाणं[6] विउव्वंति, विउव्वित्ता ते साभाविए य वेउ-व्विए य कलसे य जाव कडुच्छुए य गिण्हंति, गिण्हित्ता सूरियाभाओ विमाणाओ पडि-निक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए[7] •चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं° वीतिवयमाणा-वीतिवयमाणा जेणेव खीरोदयसमुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता खीरोयगं गिण्हंति, गिण्हित्ता 'जाइं तत्थुप्पलाइं[8] •पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं सयवत्ताइं° सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुक्खरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरोदयं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थुप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता'[9] जेणेव समयखेत्ते जेणेव भरहेरवयाइं वासाइं जेणेव मागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता तित्थमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव गंग-सिंधू-रत्ता-रत्तवईओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं[10] गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवंतसिहरिवासहर-पव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे[11] सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पउम-पुंडरीयदहा[12] तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव हेमवय-एरण्णवयाइं वासाइं जेणेव रोहिय[13]-रोहियंस-सुवण्णकूल-रुप्पकूलाओ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
२. सं० पा०—पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थ-चंगेरीणं।
३. सं० पा०—पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थ-पडलगाणं।
४. सं० पा०—तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणस-मुग्गाणं।
५. अट्ठसयं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
६. °च्छयाणं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
७. सं० पा०—चवलाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं जाव वीतिवयमाणा।
८. सं पा०—तत्थुप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं।
९. जाइं तत्थुप्पलाइं ताइं गेण्हंति गेण्हित्ता (क, ख, ग, घ)।
१०. सरितोदगं (जी० ३।४४५)।
११. सव्वतुयरे (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१२. °दहे (छ)।
१३. × (क, ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उभओकूलमट्टियं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव 'सद्दावाति-वियडावाति'[1]-वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे[2] °सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहि-सिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता° जेणेव महाहिमवंत-रुप्पिवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छंति[3], °उवागच्छित्ता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति गिण्हित्ता° जेणेव महापउम-महापुंडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गिण्हंति, गिण्हित्ता[4] °जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव हरिवासरम्मगवासाइं जेणेव हरि[5]-हरिकंत-नरनारिकंताओ[6] महाणईओ तेणेव उवा-गच्छंति[7], °उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति गेण्हित्ता° जेणेव गंधावाति-मालवंतपरियागा वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव[8] °उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता° जेणेव णिसढ-णीलवंत-वासधरपव्वया[9] °तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता° जेणेव तिगिच्छि[10]-केसरि-द्दहाओ तेणेव उवागच्छंति[11], °उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव पुव्वविदेहावरविदेहवासाइं[12] जेणेव सीता[13]-सीतोदाओ महाणदीओ तेणेव उवागच्छंति[14], °उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव सव्वमागहवरदामपभासाइं तित्थाइं °तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता तित्थमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव[15] सव्वंतरणईओ[16] °तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव सव्ववक्खारपव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे[17] °सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव मंदरे पव्वते जेणेव भद्दसालवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे जाव

---

१. सद्दावतिवियडावतिपरियागा (क, ख, ग, घ, च, छ) स्वीकृतपाठः वृत्त्यनुसारी वर्त्तते। द्रष्टव्यं 'ठाणं' ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
२. सं० पा०—सव्वतूयरे तहेव जेणेव।
३. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव।
४. सं० पा०—गिण्हित्ता तहेव जेणेव।
५. हरिसलिल (क, ख, ग घ, च, छ)।
६. नरकंतो (घ); नारिकंताओ (छ)।
७. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव।
८. सं० पा० —तेणेव तहेव जेणेव।
९. सं० पा०—वासधरपव्वया तहेव जेणेव।
१०. तिगच्छि(क, ख, ग, घ, च)।
११. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव।
१२. महाविदेहेवासे (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१३. × (क, ख, ग, घ)।
१४. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव।
१५. जीवाजीवाभिगमे (३।४४५) 'वक्खारपव्वया' पाठः अतः पूर्वं विद्यते।
१६. सं० पा०—सव्वंतरणईओ जेणेव।
१७. सं० पा०—सव्वतूयरे तहेव जेणेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं च दिव्वं च [1]सुमणदामं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पंडगवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए च सरसं च गोसीसचंदणं च दिव्वं च[1] सुमणदामं दद्दरमलयसुगंधियगंधे गिण्हंति, गिण्हित्ता एगतो मिलायंति, मिलाइत्ता ताए उक्किट्ठाए[2] °तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा-वीईवयमाणा° जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव अभिसेयसभा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं[3] उवट्ठवेंति ।।

२८०. तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ, चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवारातो, तिण्णि परिसाओ, सत्त अणियाओ, सत्त अणियाहिवइणो[4], °सोलस आयरक्ख-देवसाहस्सीओ°, अण्णेवि बहवे सूरियाभविमाणवासिणो देवा य देवीओ य तेहिं साभाविएहि य वेउव्विएहि य वरकमलपइट्ठाणेहिं[5] सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं चंदणकयचच्चाएहिं आविद्धकंठेगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं[6] सुकुमालकरयलपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं[7] सोवण्णि-याणं कलसाणं[8], °अट्ठसहस्सेणं रुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं सुवण्णरुप्पामयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसह-स्सेणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं°, अट्ठसहस्सेणं भोमिज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतूयरेहिं[9] °सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं° सव्वोसहिसिद्धत्थएहिं य सव्विड्ढीए जाव[10] नाइयरवेणं[11] महया-महया इंदाभिसेएणं अभिसिंचंति ।।

अभिसेगकाले देवकिच्च-पदं

२८१. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स महया-महया इंदाभिसेए वट्टमाणे—अप्पेग-तिया देवा सूरियाभं विमाणं नच्चोयगं नातिमट्टियं पविरलफुसियरयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगवासं वासंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं हयरयं नट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुइ[12]-संमट्ठरत्थंतरावणवीहियं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं मंचाइमंचकलियं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं णाणाविहरागोसियझयपडागाइपडागमंडियं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरससरत्तचंदणदद्दर-

---

१. × (क, ख, घ, घ) ।
२. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव जेणेव ।
३. °सेयं तो (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. सं० पा०—अणियाहिवइणो जाव अण्णेवि ।
५. °ट्ठाणेहि य (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. °सएणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. सं० पा०—कलसाणं जाव अट्ठसहस्सेणं ।
९. सं० पा०—सव्वतूयरेहिं जाव सव्वोसहिसिद्ध-त्थएहिं ।
१०. राय० सू० १३।
११. नाइएणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१२. सुइं (क, ख, ग, घ); सुयं (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिण्णपंचंगुलितलं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं उवचियवंदणकलसं वंदण-घडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं आसत्तोसत्त-विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं पंचवण्ण-सुरभि[1]-मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं सुगंधगंधियं[2] गंधवट्टिभूतं करेंति, अप्पेगतिया देवा हिरण्णवासं वासंति, सुवण्ण-वासं वासंति, रयणवासं वासंति, वइरवासं वासंति, पुप्फवासं वासंति, 'फलवासं वासंति'[3], मल्लवासं वासंति, गंधवासं वासंति, चुण्णवासं वासंति, आभरणवासं वासंति, अप्पेगतिया देवा हिरण्णविहिं भाएंति, एवं—सुवण्णविहिं रयणविहिं[4] पुप्फविहिं फलविहिं मल्लविहिं गंधविहिं चुण्णविहिं आभरणविहिं[5] भाएंति, अप्पेगतिया देवा चउव्विहं वाइत्तं वाएंति—ततं विततं घणं सुसिरं, अप्पेगइया देवा चउव्विहं गेयं गायंति, तं जहा—उक्खित्तायं पायंतायं[6] मंदायं रोइयावसाणं[7], अप्पेगतिया देवा दुयं नट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा दुय-विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा अंचियं नट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा रिभियं नट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगइया देवा अंचिय-रिभियं नट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगइया देवा आरभडं नट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगइया देवा भसोलं नट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगइया देवा आरभड-भसोलं नट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेइगया देवा उप्पायनिवायपसत्तं संकुचिय-पसारियं रियारियं[8] भंत-संभंतं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा चउव्विहं अभिणयं अभिण-यंति, तं जहा—दिट्ठंतियं पाडंतियं सामन्नओविणिवाइयं[9] लोगमज्झावसाणियं, अप्पे-गतिया देवा 'बुक्कारेंति, अप्पेगतिया देवा पीणेंति, अप्पेगतिया लासेंति, अप्पेगतिया तंडवेंति'[10], अप्पेगतिया बुक्कारेंति, पीणेंति, लासेंति, तंडवेंति, अप्पेगतिया अप्फोडेंति, अप्पेगतिया वग्गंति, अप्पेगतिया तिवइं छिंदंति, अप्पेगतिया अप्फोडेंति, वग्गंति, तिवइं छिंदंति, अप्पेगतिया हयहेसियं करेंति, अप्पेगतिया हत्थिगुलगुलाइयं करेंति, अप्पेगतिया रहघणघणाइयं करेंति, अप्पेगतिया हयहेसियं करेंति, हत्थिगुलगुलाइयं करेंति, रहघण-घणाइयं करेंति, अप्पेगतिया 'उच्छलेंति, अप्पेगतिया पोच्छलेंति'[11], अप्पेगतिया उक्किट्ठियं

---

१. °वण्णसरससुरभि (ओ० सू० २)।

२. सुगंधियं (घ); सुगंधवरगंधगंधिए (ओ० सू० २)।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

४. अतः परं 'वइरविहिं' इति पाठः प्राप्तोस्ति, किन्तु आदर्शेषु नोपलभ्यते जीवाजीवाभिगम-वृत्तौ 'वइरवासं वइरविहिं' एतौ द्वावपि न स्तो व्याख्यातौ।

५. तत्थ अप्पेगइया देवा आभरण° (क, ख, ग, घ, च, छ)।

६. पायत्तायं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

७. रोइंदा° (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं ११५ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

८. रेयाइयं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

९. सामंतो° (क, ख, ग, च, छ); द्रष्टव्यं ११७ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

१०. वक्कारेंति अप्पेगतिया पीणेंति अप्पेगतिया आयासेंति अप्पेगतिया तंडावेंति (क, च)।

११. उच्छोलेंति अप्पेगतिया पच्छोलेंति (क, ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेंति, अप्पेगतिया उच्छलेंति, पोच्छलेंति, उक्किट्ठियं करेंति, अप्पेगतिया ओवयंति[1], अप्पेगतिया उप्पयंति, अप्पेगतिया परिवयंति, अप्पेगइया तिण्णि वि, अप्पेगइया सीहनायं नयंति, अप्पेगतिया पाददद्दरयं करेंति, अप्पेगतिया भूमिचवेडं दलयंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि, अप्पेगतिया गज्जंति, अप्पेगतिया विज्जुयायंति, अप्पेगइया वासं वासंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि करेंति, अप्पेगतिया जलंति, अप्पेगतिया तवंति, अप्पेगतिया पतवेंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि, अप्पेगतिया हक्कारेंति, अप्पेगतिया थुक्कारेंति[2], अप्पेगतिया थक्कारेंति, अप्पेगतिया 'साइं साइं नामाइं साहेंति'[3], अप्पेगतिया चत्तारि वि, अप्पेगतिया[4] देवसण्णिवायं करेंति, अप्पेगतिया देवुज्जोयं करेंति, अप्पेगइया देवुक्कलियं करेंति, अप्पेगइया देवकहकहगं[5] करेंति, अप्पेगतिया देवदुहदुहगं[6] करेंति, अप्पेगतिया चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगइया देवसण्णिवायं, देवुज्जोयं, देवुक्कलियं, देवकहकहगं, देवदुहदुहगं, चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्तहत्थगया, अप्पेगतिया वंदणकलसहत्थगया अप्पेगतिया भिंगारहत्थगया जाव[7] धूवकडुच्छुयहत्थगया हट्ठतुट्ठ[8] °चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया[9] सव्वओ समंता आहावंति परिधावंति ।।

वद्धावण-पदं

२८२. तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णे य बहवे[10] सूरियाभरायहाणिवत्थव्वा देवा य देवीओ य महया-महया इंदाभिसेगेणं अभिसिंचंति, अभिसिंचित्ता पत्तेयं-पत्तेयं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! 'जय-जय नंदा ! भद्दं ते'[11], अजियं जिणाहि, जियं च पालेहि, जियमज्झे वसाहि—इंदो इव देवाणं, चंदो इव ताराणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, भरहो इव मणुयाणं—बहूइं पलिओवमाइं बहूइं सागरोवमाइं बहूइं पलिओवम-सागरोवमाइं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं सूरियाभस्स विमाणस्स अण्णेसिं च बहूणं सूरियाभविमाणवासीणं देवाण य देवीण य 'आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहि त्ति कट्टु महया-महया सद्देणं'[12] जय-जय सद्दं पउंजंति ।।

१. जीवाजीवाभिगमे (३।४४७) केषाञ्चित् पदानां व्यत्ययो दृश्यते ।
२. वुक्कारेंति (च, छ); थूत्कुर्वन्ति (वृ) ।
३. साइं नामाइं सावेंति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. अप्पेगइया देवा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५. देवा° (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
६. दुहदुहगं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. राय० सू० २७९ ।
८. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
९. अतः परं 'सूरियाभे विमाणे' इति पाठोपेक्ष्यते, द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।४४७ सूत्रम् ।
१०. बहेव य (क, ख, ग, घ) ।
११. जय नंदा भद्दं ते (क, ख, ग, छ); जय जय भद्दं ते (घ) ।
१२. यद्यपि प्रतिषु 'आहेवच्चं जाव महया-महया कारेमाणे पालेमाणे विहराहि' एवं पाठो लभ्यते, किन्तु लिपिदोषादसौ पाठः अशुद्धो जात इति प्रतीयते । जीवाजीवाभिगमे (३।४४८) एष पाठः समीचीनो वर्तते—आहेवच्चं जाव आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहित्ति कट्टु महता-महता सद्देणं जय-जय सद्दं पउंजंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलंकरण-पदं

२८३. तए णं से सूरियाभे देवे महया-महया इंदाभिसेगेणं अभिसित्ते समाणे[1] अभिसेयसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव अलंकारियसभा[2] तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

२८४. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा अलंकारियभंडं उवट्ठवेंति ।।

२८५. तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता नासा-नीसास-वाय-वोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणग-खचियंत-कम्मं आगासफालिय-समप्पभं दिव्वं देवदूसजुयलं नियंसेति, नियंसेत्ता हारं पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता अद्धहारं पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता एगावलिं पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता मुत्तावलिं पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता रयणावलिं पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता एवं—अंगयाइं केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं[3] दसमुद्दाणंतगं विकच्छसुत्तगं मुरविं कंठमुरविं पालंबं कुंडलाइं चूडामणिं चित्तरयणसंकडं[4] मउडं—पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अप्पाणं अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता दद्दरमलय-सुगंधगंधिएहिं गायाइं भुकुंडेति[5] दिव्वं च सुमणदामं पिणिद्धेइ ।।

२८६. तए णं से सूरियाभे देवे केसालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं वत्थालंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता अलंकारियसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छति, ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे[6] तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे[6] सण्णिसण्णे ।।

२८७. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा पोत्थयरयणं उवणेंति[7] ।।

सिद्धायतणपवेस-पदं

२८८. तते णं से सूरियाभे देवे पोत्थयरयणं गिण्हति, गिण्हित्ता 'पोत्थयरयणं मुयइ,

१. माणे (क, ख, ग, घ)।

२. आलंकारिया° (क, ख, ग)।

३. कडिसुत्तगा (क, ख, ग, घ, च)।

४. प्रयुक्तादर्शेषु एष पाठो नोपलभ्यते, वृत्तौ एष व्याख्यातोस्ति। भगवत्यां (९।१९०) 'एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं' इति समर्पणपाठोस्ति, तद्वृत्तौ 'रयणसंकडुक्कडं' इति पाठो व्याख्यातोस्ति।

५. भखंडेइ (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।४५१ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

६. सं० पा०—सीहासणे जाव सण्णिसण्णे।

७. उवणमंति (क, ख, ग, घ, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुइत्ता[1] पोत्थयरयणं विहाडेइ, विहाडित्ता पोत्थयरयणं वाएति, वाएत्ता धम्मियं ववसायं 'ववसइ, ववसइत्ता'[2] पोत्थयरयणं पडिणिक्खिवइ[3], पडिणिक्खिवित्ता सीहासणातो अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता ववसायसभातो पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता णंदं पुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता हत्थपादं पक्खालेति, पक्खालेत्ता आयंते चोक्खे परमसुईभूए[4] एगं महं सेयं रययामयं विमलं सलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहागितिसमाणं भिंगारं पगेण्हति, पगेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं[5] •पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं सयवत्ताइं° सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हति, गेण्हित्ता णंदातो पुक्खरिणीतो 'पच्चोत्तरति, पच्चोत्तरित्ता'[6] जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

२८९. तए णं 'तस्स सूरियाभस्स देवस्स'[7] चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णे य बहवे सूरियाभविमाणवासिणो[8] •वेमाणिया देवा य° देवीओ य अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्तहत्थगया सूरियाभं देवं पिट्ठतो-पिट्ठतो समणुगच्छंति ।

२९०. तए णं 'तस्स सूरियाभस्स देवस्स'[9] आभिओगिया देवा य देवीओ य अप्पेगतिया वंदणकलसहत्थगया जाव[10] अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगया हट्ठतुट्ठ[11]-•चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया° सूरियाभं देवं पिट्ठतो-पिट्ठतो समणुगच्छंति ।।

२९१. तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहूहि य[12] •सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं° देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[13] णातियरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिद्धायतणं[14] पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
२. गिण्हिति गिण्हित्ता (क, ख, ग) ; गिण्हति गिण्हित्ता (घ) ।
३. पडिणिक्खवइ (क); पडिक्खिवइ (ख, ग, घ)।
४. × (क, ख, ग, च, छ) ।
५. सं० पा०—उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ।
६. पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. तं सूरियाभं देवं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. सं० पा०—सूरियाभविमाणवासिणो जाव देवीओ ।
९. तं सूरियाभं देवं (क, ख, ग, च, छ) ।
१०. राय० सू० २७९ ।
११. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव सूरियाभं ।
१२. सं० पा०—बहूहि य जाव देवेहि ।
१३. राय० सू० १३ ।
१४. जीवाजीवाभिगमे (३।४५७) अतोग्रे यः पाठोस्ति स प्रकरणदृष्ट्या सङ्गतोस्ति । प्रस्तुतसूत्रादर्शे स नोपलभ्यते । वृत्तिश्च संक्षिप्तास्ति किन्तु तं पाठं बिना प्रकरणसम्बन्धो नैव जायते, स च एवमस्ति—अणुप्पयाहिणीकरेमाणे - अणुप्पयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेति, करेत्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता जिणपडिमाओ पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए ण्हावेति, ण्हावित्ता सरसेणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जिणपडिमाणं आलोए पणाम करेति, करेत्ता लोमहत्थगं गिण्हति, गिण्हित्ता 'जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता"[1] जिणपडिमाओ सुरभिणा[2] गंधोदएणं ण्हाएइ, ण्हाइत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिपइ, अणुलिंपइत्ता, जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूसजुयलाइं नियंसेइ, नियंसेत्ता 'अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं वण्णारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं आभरणारुहणं"[3] करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता जिणपडिमाणं पुरतो अच्छेहिं सण्हेहिं[4] रययामएहिं अच्छरसा[5]-तंदुलेहिं अट्ठट्ठ[6] मंगले आलिहइ, तं जहा—सोत्थियं[7] °सिरिवच्छं नंदियावत्तं वद्धमाणगं भद्दासणं कलसं मच्छं° दप्पणं ॥

० थुइ-पदं

२९२. तयाणंतरं च णं चंदप्पभ-वइरवेरुलिय[8]-विमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुत्तमाणुविद्धं च धूववट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहिय पयत्तेणं[9] धूवं दाऊण जिणवराणं सत्तट्ठ पदाणि ओसरति, ओसरित्ता दसंगुलि अंजलि करियमत्थयम्मि य पयत्तेणं,[10] अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं[11] अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहिं संथुणइ, संथुणित्ता[12] वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ[13], निवाडित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थुणं अरहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगणाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं

गोसीसचंदणेणं गाताइं अणुलिपइ, अणुलिपित्ता जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूसजुयलाइं णियंसेइ, णियंसेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहि य अच्चेति, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं वण्णारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं आभरणारुहणं करेति, करेत्ता जिणपडिमाणं पुरतो अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसा-तंदुलेहिं अट्ठट्ठ-मंगलए आलिहति, आलिहित्ता कयगाहग्गहित-करतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलितं करेति, करेत्ता **चंदप्पभ°**

१. × (क, ख, ग, च, छ)।

२. सुरभि (क, ख, ग, घ, च, छ)।

३. × (क, ख, ग, घ, छ); स्वीकृतः पाठो जीवाजीवाभिगमवृत्तावपि (पत्र २५४) व्याख्यातोस्ति।

४. सण्हेहिं सेएहिं (च, छ)।

५. अच्छरसाहिं (क, ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र २५४) अच्छरसतन्दुलाः, पूर्वपदस्य दीर्घान्तता प्राकृतत्वात्।

६. अट्ठ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

७. सं० पा०—सोत्थियं जाव दप्पणं।

८. रयणवइरवेरुइय (क, ख, ग, घ, च,छ)।

९. पत्तयं (क, ख, ग, च); पत्तेयं (घ)।

१०. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

११. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१२. संथुणित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ पच्चोसक्कित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१३. निवडेइ (क, ख, ग, घ, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरणाण-दंसणधराणं विअट्टच्छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवं अयलं अरुअं अणंतं अक्खयं अव्वाबाहं अपुणरावित्ति-सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता—

२९३. जेणेव सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[1] दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं 'दलयइ, दलइत्ता'[2] कयग्गहगहियं[3] •करयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फ° पुंजोवयार-कलियं करेइ, करेत्ता धूवं दलयइ, दलयित्ता—

० दाहिणिल्लं पइ गमण-पदं

२९४. जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थ-एणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंद-णेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्त[4] •विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

२९५. जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झ-देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता बहुमज्झ-देसभागं लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ, आलिहित्ता कयग्गहगहिय[5] •करयल-पब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

२९६. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्त[6] •विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयल-पब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ,

---

१. उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जति पमज्जित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ)।

२. पंचंगुलितलं ददाति (वृ); मंडलगं आलिहइ, आलिहित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ)।

३. कयग्गाह° (क, ख, ग, घ, छ)। सं० पा०—कयग्गहगहियं जाव पुंजोवयारक-लियं।

४. सं० पा०—आसत्तोसत्त जाव धूवं।

५. सं० पा०—कयग्गहगहिय जाव धूवं।

६. सं० पा०—आसत्तोसत्त कयग्गहगहिय धूवं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दलयित्ता—

२९७. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थं परामुसइ, परामुसित्ता खंभे य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता जहा चेव पच्चत्थिमिल्लस्स दारस्स जाव[1] धूवं दलयइ, दलयित्ता—

२९८. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चेव[2] सव्वं ॥

२९९. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चेव[3] सव्वं ॥

३००. जेणेव दाहिणिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता अक्खाडगं च मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं[4] °जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलइत्ता—

३०१. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे[5] °तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव[6] ॥

३०२. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे (उत्तरिल्ला खंभपंती[7] ?) तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव ॥

३०३. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव ॥

३०४. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° तं चेव ॥

---

१. राय० सू० २९६ ।

२. राय० सू० २९६ ।

३. राय० सू० २९६ ।

४. सं० पा०—पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं ।

५. सं० पा०—पच्चत्थिमिल्ले दारे तं चेव, उत्तरिल्ले दारे तं चेव, पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव, दाहिणिल्ले दारे तं चेव ।

६. राय० सू० २९६ ।

७. यथा—२९७ सूत्रे 'उत्तरिल्ला खंभपंती,' ३२५, ३३० सूत्रयोः 'दाहिणिल्ला खंभपंती' ३३५,३४० सूत्रयोः 'पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती'—इति पाठो विद्यते, अतः अस्मिन् सूत्रे 'उत्तरिल्ले दारे' इत्यस्य स्थाने 'उत्तरिल्ला खंभपंती' इति पाठो युज्यते । किन्तु एष पाठो वृत्तौ प्रतिषु च क्वापि नोपलब्धः तेन मूलपाठे 'उत्तरिल्लेदारे' इत्येव सुरक्षितः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०५. जेणेव दाहिणिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[1] •लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता चेइय° थूभं च मणिपेढियं च[2] •लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता° दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं[3] •जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-मल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३०६. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणपडिमाए आलोए पणामं करेइ, करेत्ता तं चेव[4] ।।

३०७. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव[5] सव्वं ।।

३०८. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव[6] ।।

३०९. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव[7] सव्वं ।।

३१०. जेणेव दाहिणिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ,[8] •उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता चेइयरुक्खं च मणिपेढियं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता° तं चेव[9] ।।

३११. जेणेव दाहिणिल्ले महिंदज्झए[10] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता महिंदज्झयं च मणिपेढियं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता° तं चेव[11] सव्वं ।।

३१२. जेणेव दाहिणिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं[12] •चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठ-विप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयति, दलइत्ता—

० उत्तरिल्लं पइ गमण-पदं

३१३. सिद्धायतणं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव

---

१. सं० पा०—उवागच्छित्ता थूभं ।
२. सं० पा०—मणिपेढियं च दिव्वाए ।
३. सं० पा०—पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं ।
४. राय० सू० २६१,२६२ ।
५,६,७. राय० सू० २६१, २६२ ।
८. सं० पा०—उवागच्छइ तं चेव ।
९. राय० सू० २९४ ।
१०. सं० पा०—महिंदज्झए तं चेव ।
११. राय० सू० २९४ ।
१२. सं० पा०—गोसीसचंदणेणं पुप्फारुहणं आस-त्तोसत्त धूवं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं चेव[1] ॥

३१४. जेणेव उत्तरिल्ले महिंदज्झए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[2] ॥

३१५. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ॥

३१६. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[3] ॥

३१७. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा[4] °तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव[5] ॥

३१८. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव[6] ॥

३१९. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव[7] ॥

३२०. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव[8] ॥

३२१. जेणेव उत्तरिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जा चेव दाहिणिल्ले वत्तव्वया सा चेव[9] सव्वा ॥

३२२. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[10] ॥

३२३. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[11] ॥

३२४. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[12] ॥

३२५. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[13] ॥

३२६. जेणेव उत्तरिल्लस्स दारे मुहमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[14] ॥

३२७. जेणेव उत्तरिल्ले मुहमडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[15] ॥

३२८. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[16] ॥

३२९. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ,

१. राय० सू० ३१२ ।
२. राय० सू० ३११ ।
३. राय० सू० ३१० ।
४. सं० पा०—जिणपडिमा तं चेव ।
५,६,७,८. राय० सू० ३०६ ।
९. राय० सू० ३०० ।
१०,११,१२. राय० सू० २९६ ।
१३. राय० सू० २९७ ।
१४. राय० सू० २९५ ।
१५,१६. राय० सू० २९६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छित्ता[१]॥

३३०. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[२] ॥

३३१. जेणेव सिद्धायतणस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव[३] ॥

० पुरत्थिमिल्लं पइ गमण-पदं

३३२. जेणेव सिद्धायतणस्स पुरित्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[४] ॥

३३३. जेणेव पुरत्थिमिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव पुरित्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[५] ॥

३३४. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे[६] °तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[७] ॥

३३५. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[८] ॥

३३६. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[९] ॥

३३७. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ॥°

३३८. जेणेव पुरत्थिमिल्ले पेच्छाघरमंडवे[१०] °जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघर-मंडवस्स बहुमज्झदेसभाए जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[११] ॥

३३९. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[१२] ॥

३४०. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[१३] ॥

३४१. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[१४] ॥

---

१. राय० सू० २९६ ।

२. राय० सू० २९७ ।

३,४. राय० सू० २९४ ।

५. राय० सू० २९५ ।

६. सं० पा०—दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव ।

७. राय० सू० २९६ ।

८. राय० सू० २९७ ।

९. राय० सू० २९६ ।

१०. सं० पा०—पेच्छाघरमंडवे एवं थूभे जिण-पडिमाओ चेइयरुक्खा महिंदज्झया नंदापुक्ख-रिणी तं चेव जाव धूवं दलइ २त्ता ।

११. राय० सू० ३०० ।

१२. राय० सू० २९७ ।

१३. राय० सू० २९७ ।

१४. राय० सू० २९६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४२. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[1] ॥

३४३. जेणेव पुरत्थिमिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[2] ॥

३४४. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[3] ॥

३४५. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ॥[4]

३४६. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ॥[5]

३४७. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[6] ॥

३४८. जेणेव पुरत्थिमिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[7] ॥

३४९. जेणेव पुरत्थिमिल्ले महिंदज्झए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[8] ॥

३५०. जेणेव पुरत्थिमिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] ॥

सुहम्मसभापवेस-पदं

३५१. जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव[10] माणवए चेइयखंभे जेणेव वइरामया गोलवट्टसमुग्गा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेइ, विहाडेत्ता जिणसकहाओ लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता धूवं दलयइ, दलयित्ता जिणसकहाओ वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पडिणिक्खिवइ, पडिणिक्खिवित्ता माणवगं चेइयखंभं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं जाव[11] धूवं दलयइ,

---

१. राय० सू० २९६ ।

२. राय० सू० ३०५ ।

३,४,५. राय० सू० ३०६ ।

६. राय० सू० ३०९ ।

७. राय० सू० ३१० ।

८. राय० सू० ३११ ।

९. राय० सू० ३१२ ।

१०. अतः 'पडिणिक्खिवइ' पर्यन्तं वृत्तौ (पृष्ठ २९४) भिन्नः पाठो व्याख्यातोस्ति—यत्रैव मणिपीठिका तत्रागच्छति, आलोके च जिनसक्थां प्रणामं करोति, कृत्वा यत्र माणवकचैत्यस्तम्भो यत्र वज्रमयाः गोलवृत्ताः समुद्गकाः तत्रागत्य समुद्गकान् गृह्णाति, गृहीत्वा विघाटयति, विघाट्य च लोमहस्तकं परामृश्य तेन प्रमार्ज्य उदकधारया अभ्युक्ष्य गोशीर्षचन्दनेनानुलिम्पति, ततः प्रधानैर्गन्धमाल्यैरर्चयति धूपं दहति, तदनन्तरं भूयोऽपि वज्रमयेषु गोलवृत्तसमुद्गेषु प्रतिनिक्षिपति । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य—३।५१६ सूत्रम् ।

११. राय० सू० २९४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दलयित्ता—

३५२. जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे[1] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चेव[2] ॥

३५३. जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे[3] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च देवसयणिज्जं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता° तं चेव[4] ॥

३५४. जेणेव मणिपेढिया जेणेव खुड्डागमहिंदज्झए[5] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च खुड्डागमहिंदज्झयं च लोमहत्थएणं पमज्जइ पमज्जित्ता° तं चेव[6] ॥

३५५. जेणेव पहरणकोसे चोप्पालए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता फलिहरयणपामोक्खाइं पहरणरयणाइं[7] लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं[8] •जाव आभरणारुहणं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३५६. जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए[9] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[10] धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३५७. जेणेव सभाए सुहम्माए दाहिणिल्ले दारे[11] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

---

१. सं० पा०—सीहासणे तं चेव ।

२. राय० सू० २६४ ।

३. सं० पा०—देवसयणिज्जे तं चेव ।

४. राय० सू० २६४ ।

५. सं० पा०—खुड्डागमहिंदज्झए तं चेव ।

६. राय० सू० २६४ ।

७. पहरणकोसं चोप्पालं (क, ख, ग, घ, च, छ); २४६ सूत्रस्य सन्दर्भे आदर्शगतः पाठः सम्यग् न प्रतिभाति ।

८. सं० पा०—पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं ।

९. प्रस्तुतसूत्रस्य तथा जीवाजीवाभिगमस्य (पत्र २५७) सभायाः सुधर्मायाः बहुमध्यदेशभागेऽर्चनिका पूर्ववत् करोति—इति विवरणानुसारी पाठोत्र स्वीकृतः । यद्यपि प्रतिषु जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव—इति पाठोस्ति किन्तु 'जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे' अयं पाठः पूर्वपंक्तावेवागतस्तेन पुनर्न युज्यते ।

१०. राय० सू० २९३ ।

११. सं० पा०—दाहिणिल्ले दारे तहेव अभिसेयसभासरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालिभंजियाओ बालरूवए य तहेव, जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव सीहासणे च मणिपेढियं च सेसं तहेव आययणसरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जहा अभिसेयसभा तहेव सव्वं जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव लोमहत्थयं परामुसइ, पोत्थयरयणे लोमहत्थएणं पमज्जइ २ त्ता दिव्वाए दगधाराए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५८-३७५. (जहा २९४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

३७६. सभं सुहम्मं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ।।

३७७-३९३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

३९४. जेणेव सभाए सुहम्माए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[1] ।।

३९५. जेणेव सभाए सुहम्माए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता--

३९६-४१३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

० उववायसभापवेस-पदं

४१४. जेणेव उववायसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उववायसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च देवसयणिज्जं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता[2] ।।

४१५. जेणेव उववायसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[3] ।।

४१६. जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

४१७-४३४. (जहा २९४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

४३५. उववायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

४३६-४५२. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

४५३. जेणेव उववायसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[4] ।।

४५४. जेणेव उववायसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

४५५-४७२. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

४७३. जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता[5] ।।

० अभिसेगसभापवेस-पदं

४७४. जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभिसेयसभं पुरत्थि-

---

अग्गेहिं वरेहिं य गंधेहिं मल्लेहिं य अच्चेइ २ त्ता मणिपेढियं सीहासणे च सेसं तं चेव, पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी । (जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तोरणे य तिसोवाणं य सालिभंजियाओ य बालरूवए य तहेव) । कोष्ठकवर्ती पाठः सर्वासुप्र तिषु वर्तते, किन्तु अस्य सूत्रस्य वृत्तौ (पृष्ठ २६७) तथा जीवाजीवाभिगमस्य वृत्तौ (पत्र २५८) चापि नासौ व्याख्यातोस्ति । उपपातसभाया अनन्तरमसौ पाठोऽविकलरूपेण समायातः । संभवतः लिपिदोषेण सोत्रापि पुनर्लिखितः ।

१. राय० सू० ३३१ ।

२. राय० सू० २९४ ।

३. राय० सू० २९३ ।

४. राय० सू० ३३१ ।

५. राय० सू० ३१२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता[1] ।।

४७५. जेणेव अभिसेयभंडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता अभिसेयभंडं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता[2] ।।

४७६. जेणेव अभिसेयसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[3] ।।

४७७. जेणेव अभिसेयसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

४७८-४९५. (जहा २९४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

४९६. अभिसेयसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

४९७-५१३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

५१४. जेणेव अभिसेयसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[4] ।।

५१५. जेणेव अभिसेयसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५१६-५३३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

० अलंकारसभापवेस-पदं

५३४. जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता[5] ।।

५३५. जेणेव अलंकारियभंडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता अलंकारियभंडं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता[6] ।।

५३६. जेणेव अलंकारियसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[7] ।।

५३७. जेणेव अलंकारियसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५३८-५५५. (जहा २९४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

५५६. अलंकारियसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५५७-५७३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

५७४. जेणेव अलंकारियसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[8] ।।

५७५. जेणेव अलंकारियसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५७६-५९३—(जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

१,२. राय० सू० २९४ ।

३. राय० सू० २९३ ।

४. राय० सू० ३३१ ।

५,६. राय० सू० २९४ ।

७. राय० सू० २९३ ।

८. राय० सू० ३३१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

० ववसायसभापवेस-पदं

५९४. जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ववसायसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पोत्थयरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता पोत्थयरयणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता अग्गेहिं वरेहि य गंधेहिं मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं[1] ।।

५९५. जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता[2] ।।

५९६. जेणेव ववसायसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[3] ।।

५९७. जेणेव ववसायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५९८-६१५. (जहा २९४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

६१६. ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

६१७-६३३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ।।

६३४. जेणेव ववसायसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[4] ।।

६३५. जेणेव ववसायसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

६३६-६५३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि)° ।।

० सूरियाभविमाणे अच्चणिया-पदं

६५४. 'जेणेव बलिपीढे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बलिविसज्जणं करेइ, करेत्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ'[5], सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु चउम्मुहेसु महापहपहेसु पागारेसु[6] अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु 'काणणेसु वणेसु वणसंडेसु वणराईसु'[7] अच्चणियं करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।।

६५५. तए णं ते आभिओगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा[8] °हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति°, पडिसुणेत्ता सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्कएसु चच्चरेसु

१,२. राय० सू० २९४ ।

३. राय० सू० २९३ ।

४. राय० सू० ३३१ ।

५. वृत्तौ (पृष्ठ २९७) अस्य पाठस्य स्थाने भिन्नः पाठो व्याख्यातोस्ति—बलिपीठे समागत्य तस्य बहुमध्यदेशभागवत् अर्चनिकां करोति, कृत्वा च आभियोगिकदेवान् शब्दापयति । 'बलिविसज्जणं करेइ' इति पाठः ६५६ सूत्रे 'तए णं से सूरियाभे देवे' इति पाठान्तरं व्याख्यातमस्ति ।

६. पागारएसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. वणेसु वणराईसु काणणेसु वणसंडेसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—समाणा जाव पडिसुणेत्ता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउम्मुहेसु महापहपहेसु पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु काणणेसु वणेसु वणसंडेसु वणराईसु अच्चणियं करेंति, करेत्ता जेणेव सूरियाभे देवे[1] [*]तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ।।

० नंदापुक्खरिणी-गमण-पदं

६५६. तए[2] णं से सूरियाभे देवे जेणेव णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नंदं पुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता हत्थपाए पक्खालेइ, पक्खालेत्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ, पच्चुत्तरेत्ता जेणेव सभा सुधम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

० सुहम्मसभा-निसीदण-पदं

६५७. तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य[3] बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं[4] देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए[5] [*]सव्वजुतीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडियसद्दसण्णिनाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-पडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहिनिग्घोस° नाइयरवेणं जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

६५८. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं[6] उत्तरपुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चउसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति ।।

६५९. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पुरत्थिमेणं चत्तारि अग्गमहिसीओ चउसु भद्दासणेसु[7] निसीयंति ।।

६६०. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भिंतरियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ अट्ठसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति ।।

६६१. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणेणं मज्झिमाए परिसाए दस देवसाह-

१. सं० पा०—देवे जाव पच्चप्पिणंति ।

२. वृत्तौ (पृष्ठ २६८) भिन्नः पाठो व्याख्यातोऽस्ति—ततः सूर्याभदेवो बलिपीठे बलिविसर्जनं करोति, कृत्वा चोत्तरपूर्वां नन्दापुष्करिणीमनुप्रदक्षिणीकुर्वन् पूर्वतोरणेनानुप्रविशति अनुप्रविश्य च हस्तौ पादौ प्रक्षालयति । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।५५६ सूत्रम् ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. वेमाणिय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सं० पा०—सव्विड्ढीए जाव नाइयरवेणं ।

६. ४१ सूत्रे उत्तरेणं पाठोऽस्ति तदनुसारेणात्राप्यसौ युज्यते । जीवाजीवाभिगमे (३।५५८) प्यस्मिन्नेव प्रकरणे चासौ विद्यते ।

७. ४२ सूत्रे 'चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ' इति पाठोऽस्ति । अत्र 'चउसु भद्दासणेसु निसीयंति' तत्र संभवतः सपरिवारवर्णने साहस्सीओ इति पाठः कृतः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्सीओ दसहिं भद्दासणसाहस्सीहिं निसीयंति ।।

६६२. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीतो बारसहिं भद्दासणसाहस्सीहिं निसीयंति ।।

६६३. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पच्चत्थिमेणं सत्त अणियाहिवइणो सत्तहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति ।।

६६४. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चउद्दिसिं सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ सोलसहिं भद्दासणसाहस्सीहिं णिसीयंति, तं जहा—पुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि साहस्सीओ, दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ, ते णं आयरक्खा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध[1]-विमल-वरचिंधपट्टा गहियाउहपहरणा ति-णयाणि ति-संधीणि वयरामय-कोडीणि धणूइं पगिज्झ परियाइय-कंडकलावा णीलपाणिणो पीतपाणिणो रत्तपाणिणो चाव-पाणिणो चारुपाणिणो चम्मपाणिणो दंडपाणिणो खग्गपाणिणो पासपाणिणो नील-पीय-रत्त चाव-चारु-चम्म-दंड-खग्ग-पासधरा[2] आयरक्खा रक्खोवगा गुत्ता गुत्तपालिया जुत्ता जुत्त-पालिया पत्तेयं-पत्तेयं समयओ विणयओ 'किंकरभूया इव'[3] चिट्ठंति[4] ।।

० सूरियाभ-वण्णग-पदं

६६५. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

६६६. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । एमहिड्ढीए एम-हज्जुईए एमहब्बले एमहायसे एमहासोक्खे एमहाणुभागे सूरियाभे देवे । 'अहो णं'[5] भंते ! सूरियाभे देवे महिड्ढीए[6] °महज्जुईए महब्बले महायसे महासोक्खे° महाणुभागे ।।

६६७. सूरियाभेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुई से दिव्वे देवाणुभागे—किण्णा[7] लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? पुव्वभवे के आसी ? किंणामए वा ? को वा गोत्तेणं ? कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संबाहंसि वा सण्णिवेसंसि वा ? किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा 'माहणस्स वा'[8] अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जण्णं सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी[9] °सा दिव्वा देवज्जुई से दिव्वे° देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ?

---

१. बद्धआविद्ध (च, छ) ।
२. पासवरधरा (क, ख, ग, घ, च) ।
३. °भूयाइ (च); °भूयाइं (छ) ।
४. अतोग्रे 'छ' प्रतौ 'एएहिं चउहिं सामाणिय-साहस्सीहिं जाव दिव्वाइं'; वृत्तौ (पृष्ठ २७१) च—तेहिं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, इत्यादि सुगमं, यावत् 'दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति' । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।५६३ सूत्रम् ।
५. अम्हाणं (छ) ।
६. सं० पा०—महिड्ढीए जाव महाणुभागे ।
७. किण्हा (च) ।
८. × (क, ख, ग, घ) ।
९. सं० पा०—देविड्ढी जाव देवाणुभागे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पएसि-कहाणगं

केयइ-अद्ध-पदं

६६८. गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे केयइ[1]-अद्धे नामं जणवए होत्था—रिद्ध[2]-त्थिमियसमिद्धे पासादीए[3] °दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे ॥

सेयविया-पदं

६६९. तत्थ णं केइय[4]-अद्धे जणवए सेयविया णामं नगरी होत्था—रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा जाव[5] पडिरूवा ॥

मिगवण-पदं

६७०. तीसे णं सेयवियाए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था—रम्मे नंदणवणप्पगासे सव्वोउय-पुप्फ[6]-फलसमिद्धे सुभसुरभिसीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासादीए[7] °दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे ॥

पएसि-पदं

६७१. तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णामं राया होत्था—महयाहिमवंत[8]-°महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे अच्चंतविसुद्ध-दीहरायकुल-वंससुप्पसूए णिरंतरं रायलक्खण-विराइ-यंगमंगे बहुजणबहुमाणपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुइए मुद्धाहिसित्ते माउपिउसुजाए दयपत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए सेउकरे केउकरे नरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिस-वरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिन्न-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूवरयए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डिय-पउरभत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए पडिपुण्ण-जंत-कोस-कोट्ठागाराउधागारे बलवं दुब्बलपच्चामित्ते—ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं ओहयसत्तुं निहयसत्तुं मलियसत्तुं उद्धियसत्तुं

---

१. केकइ (छ)।
२. रिद्धि (क, ख, ग, घ, च, छ)।
३. सं० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे।
४. केयगइ (छ)।
५. ओ० सू० १।
६. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
७. सं० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे।
८. सं० पा०—महयाहिमवंत जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं ववगयदुब्भिक्खं मारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसंतडिंबड-मरं रज्जं पसासेमाणे° विहरइ। अधम्मिए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्माणुए अधम्मपलोई अधम्मपलज्जणे[1] अधम्मसीलसमुयाचारे अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे हण-छिंद-भिंद-पवत्तए[2] 'लोहियपाणी पावे चंडे रुद्दे खुद्दे'[3] साहस्सीए उक्कंचण-वंचण[4]-माया-नियडि-कूड-कवड-साइसंपओगबहुले[5] निस्सीले निव्वए निग्गुणे निम्मेरे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे, बहूणं दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरिसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए[6] अधम्मकेऊ समुट्ठिए,[7] गुरूणं णो अब्भुट्ठेइ णो विणयं पउंजइ, 'समण-माहणाणं नो अब्भुट्ठेइ नो विणयं पउंजइ'[8], सयस्स वि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ ।।

सूरियकंता-पदं

६७२. तस्स णं पएसिस्स रण्णो सूरियकंता नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया[9] •अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकारकंतपियदंसणा सुरूवा करयलपरिमियपसत्थतिवलीवलियमज्झा कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइरयणियरविमलपडिपुण्णसोमवयणा सिंगारागार चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा°, पएसिणा रण्णा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्द[10]-•फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी° विहरइ ।।

सूरियकंत-पदं

६७३. तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए[11] •अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे लक्खणवंजणगुणोववेए माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे° पडिरूवे[12] ।।

---

१. °पज्जणे (क, ख, ग); °पज्जवमाणे (घ); °पजणणे (च, छ, वृ); वृत्तौ 'अधम्मपजणणे' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—'अधर्मं प्रकर्षेण जनयति—उत्पादयति लोकानामपीत्यधर्म-प्रजननः'। वृत्तिकारेण यादृशः पाठो लब्ध-स्तादृशो व्याख्यातः। किन्तु अन्यागमानां संदर्भेसौ पाठो विचार्यते तदा 'अधम्मपलज्जणे' इति पाठः संगतिमर्हति। सूत्रकृतांगे (२।२। ५७) 'अधम्मपलज्जणा' इति पाठोस्ति। औपपातिके (सू० १६१) 'धम्मपलज्जणा' इति पाठोस्ति। अत्रापि 'अधम्मपलज्जणे' पाठ आसीत्। पाठसंशोधने प्रयुक्तादर्शत्रयेभ्योस्य पुष्टिर्जायते। तत्र 'पज्जणे' इति पाठो लभ्यते। अत्र लकारो लिपिदोषेण त्यक्तोस्ति। केषु-चिदादर्शेषु लिपिदोषेण वर्णविपर्ययो जातस्तेन 'अधम्मपजणणे' इति पाठः संवृत्तः।

२. भिंदा० (क, ख, ग, घ, च, छ)।

३. चंडे रुद्दे खुद्दे लोहियपाणी (क,ख,ग,घ,च,छ)।

४. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

५. °संपओगे (क, ख, ग, च)।

६. उच्छूणयाउ (क, ख, ग, च, छ)।

७. समट्ठिओ (क, ख, ग, घ)।

८. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

९. सं०पा०—सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ।

१०. सं० पा०—सद्द जाव विहरइ।

११. सं० पा०—सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे।

१२. सुकुमालपाणिपाए जाव सुन्दरे (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६७४. से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था। पएसिस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च 'कोसं च'[1] कोट्ठारं[2] च पुरं च अंतेउरं च[3] सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ।।

चित्त-सारहि-पदं

६७५. तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे भाउय-वयंसए चित्ते णामं सारही होत्था—अड्ढे[4] °दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे° बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय-उवप्पयाण-अत्थसत्थ-ईहामइविसारए, उप्पत्तियाए वेणतियाए कम्मयाए पारिणामियाए—चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य 'मंतेसु य'[5] 'रहस्सेसु य गुज्झेसु य सावत्थीरहस्सेसु य निच्छएसु य'[6] ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे[7] मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए, सव्वट्ठाण[8]-सव्वभूमियासु लद्धपच्चए[9] विदिण्णविचारे रज्जधुराचिंतए आवि होत्था।।

कुणाला-पदं

६७६. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला[10] नामं जणवए होत्था—रिद्ध-त्थिमियसमिद्धे[11] °पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे° ।।

सावत्थी-पदं

६७७. तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नामं नयरी होत्था—रिद्ध-त्थिमियसमिद्धा जाव[12] पडिरूवा ।।

कोट्ठय-पदं

६७८. तीसे णं सावत्थीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नामं चेइए होत्था—पोराणे[13] जाव[14] पासादीए ।।

जियसत्तु-पदं

६७९. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रण्णो अंतेवासी जियसत्तू नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[15] रज्जं पसासेमाणे विहरइ।।

पाहुड-उवणयण-पदं

६८०. तए णं से पएसी राया अण्णया कयाइ महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ, सज्जावेत्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छ णं

---

१. × (क, ख, ग, घ, च)।
२. कोट्ठागारं (छ)।
३. च जणवयं च (क, ख, ग, घ, च, छ)।
४. सं० पा०—अड्ढे जाव बहुजणस्स।
५. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
६. गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य (वृ)।
७. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
८. सव्वट्ठा (क, ख, ग, घ, छ)।
९. लद्धओवलद्धपच्चए (छ)।
१०. कुणाल (क,ख,ग,घ,च)।
११. सं० पा०—°समिद्धे।
१२. ओ० सू० १।
१३. अत्र 'चिराइए' स्थाने 'पोराणे' पाठः प्रतीयते।
१४. ओ० सू० २-७।
१५. राय० सू० ६७१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्ता ! तुमं सावत्थिं नगरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं[1] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं उवणेहि[2], जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायणीईओ य रायववहारा[3] य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहि त्ति कट्टु विसज्जिए ।।

६८१. तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ[4] •तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ°, पडिसुणेत्ता तं महत्थं[5] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता पएसिस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं महत्थं[6] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं ठवेइ, ठवेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सच्छत्तं[7] •सज्झयं सघंटं सपडागं सतोरणवरं सनंदिघोसं सखिखिणि-हेमजाल-परिखित्तं हेमवय-चित्त-विचित्त-तिणिस-कणगणिज्जुत्तदारुयायं सुसंपिणद्धारकमंडलधुरागं कालायससुकयणेमिजंतकम्मं आइण्णवरतुरगसुसंपउत्तं कुसलणरच्छेयसारहिसुसंपरिग्गहियं सरसयबत्तीसतोणपरिमंडियं सकंकडावयंसगं सचाव-सर-पहरण-आवरण-भरियजोहजुज्झ-सज्जं° चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह[8], °उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं° पच्चप्पिणह ।।

६८२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

६८३. तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं[9] •सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलिय-सरासण-पट्टिए पिणद्धगेविज्जविमल[10]-वरचिंधपट्टे गहियाउहपहरणे तं महत्थं[11] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहेति, दुरुहेत्ता बहूहिं पुरिसेहिं सण्णद्ध[12]-•बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलिय-सरासणपट्टिए पिणद्धगेविज्जविमल-वरचिंधपट्टे° गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं-धरेज्जमाणेणं महया भड-चडगर-रहपहकर-विंदपरिक्खित्ते[13] साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, सुहेहिं

१. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
२. अवणेहि (क,ख,ग,घ,च,छ) ।
३. ववहारा (क,ख,ग,घ,च,छ) ।
४. सं० पा०—हट्ठ जाव पडिसुणेत्ता ।
५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
६. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
७. सं० पा०—सच्छत्तं जाव चाउग्घंटं ।
८. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह ।
९. सं० पा०—एयमट्ठं जाव हियए ।
१०. सनद्धगेविज्जबद्धआबद्धविमल (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
११. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
१२. सं० पा०—सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं ।
१३. पंडुपरि० (क, ख, ग, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासेहिं पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अंतरा वासेहिं वसमाणे-वसमाणे केयइ-अद्धस्स[1] जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणालाजणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ, सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए निगिण्हइ, रहं ठवेति, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं[2] *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं गिण्हइ, जेणेव अब्भितरिया उवट्ठाणसाला जेणेव जियसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, जियसत्तुं रायं करयलपरिग्गहियं[3] *दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, तं महत्थं[4] *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं उवणेइ ॥

६८४. तए णं से जियसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं[5] *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं पडिच्छइ[6], चित्तं सारहिं सक्कारेइ सम्माणेइ[7] पडिविसज्जेइ, रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ ॥

चित्तस्स आवास-पदं

६८५. तए णं से चित्ते सारही विसज्जिते समाणे जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव 'चाउग्घंटे आसरहे'[8] तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, तुरए निगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकिए जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे पुव्वावरण्हकालसमयंसि गंधव्वेहि य णाडगेहि य उवनच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

केसि-आगमण-पदं

६८६. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमार-समणे जातिसंपण्णे कुलसंपण्णे बलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी[9] जसंसी[10] जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिद्दे जितिंदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे[11] गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे[12] अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे[13] मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे

---

१. अद्धाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
२. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
३. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु ।
४. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
६. पिच्छइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. चाउघंटं आसरहं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. वच्चंसि सोहग्गंसि (छ) ।
१०. जस्संसि बायंसि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
११. वयप्पहाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१३. × (क, ख, ग, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेयप्पहाणे[1] नयप्पहाणे[2] नियमप्पहाणे[3] सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले[4] •घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विपुलतेयलेस्से [5]चउदसपुव्वी चउणाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणु-पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, सावत्थीनयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

चित्तस्स जिण्णासा-पदं

६८७. तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे[5] इ वा 'जणबोले इ वा'[6] जणकलकले इ वा 'जणउम्मी इ वा'[7] जणसण्णिवाए इ वा[8] •बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जातिसंपण्णे[9] पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नगरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! केसिं कुमार-समणं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ।
एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुपडोयारेणं—राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितयो अप्पेगइया वंदणवत्तियं अप्पेगइया पूयणवत्तियं अप्पेगइया सक्कारवत्तियं अप्पेगइया सम्माणवत्तियं अप्पेगइया दंसणवत्तियं अप्पेगइया कोऊहलवत्तियं अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो अप्पेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, अप्पेगइया गिहि-धम्मं[10] पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सिरसा कंठेमालकडा आविद्धमणिसुवण्णा कप्पियहारद्धहार-तिसर-पालंब-

---

१. × (क, ख, ग, घ, च)।
२. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
३. × (घ)।
४. सं० पा०—ओराले चउदसपुव्वी।
५. जणसमूहे (छ)।
६. × (क, ख, ग, घ)।
७. × (क, ख, ग, घ)।
८. सं० पा०—जणसण्णिवाए इ वा जाव परिसा पज्जुवासइ।
९. राय० सू० ६८६।
१०. अत्र औपपातिके ५२ सूत्रे 'पंचाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं' इति पाठो विद्यते, किन्तु अर्थसमीक्षयास्माभिरत्र 'गिहिधम्मं' इत्येव पाठः स्वीकृतः। अर्थ-समीक्षार्थं द्रष्टव्यं ६६५ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकयसोहाभरणा पवरवत्थपरिहिया चंदणोलित्तगायसरीरा, अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया अप्पेगइया रहगया अप्पेगइया सिवियागया अप्पेगइया संदमाणियागया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता महया उक्किट्ठ-सीहणाय-बोल-कलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सावत्थीए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता केसि-कुमार-समणस्स अदूरसामंते जाणवाहणाइं ठवेंति, ठवेत्ता जाणवाहणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता केसिं कुमार-समणं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति° ।।

६८८. तए णं तस्स सारहिस्स तं महाजणसद्दं च जणकलकलं च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए[1] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—किं णं अज्ज[2] सावत्थीए णयरीए इंदमहे इ वा खंदमहे इ वा रुद्दमहे इ वा मउंदमहे इ वा 'सिवमहे इ वा वेसमणमहे इ वा'[3] नागमहे इ वा 'जक्खमहे इ वा भूयमहे इ वा'[4] थूभमहे इ वा चेइयमहे इ वा रुक्खमहे इ वा गिरिमहे इ वा दरिमहे इ वा अगडमहे इ वा 'नईमहे इ वा'[5] सरमहे इ वा सागरमहे इ वा ? जं णं इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता[6] भोगा[7] राइण्णा इक्खागा णाया कोरव्वा[8] °खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई मल्लइपुत्ता लेच्छई लेच्छइपुत्ता° इब्भा इब्भ-पुत्ता, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितयो ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सिरसा कंठेमालकडा आविद्धमणिसुवण्णा कप्पियहार-अद्धहार-तिसर-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्तय-कयसोहाहरणा चंदणोलित्तगाय-सरीरा पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता महया उक्किट्ठ-सीहणाय-बोल-कलकलरवेणं[9] °समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा अंबरतलं पिव फोडेमाणा° एगदिसाए एगाभिमुहा अप्पेगतिया हयगया अप्पे-गतिया गयगया[10] °अप्पेगतिया रहगया अप्पेगतिया सिवियागया अप्पेगतिया संदमाणियागया अप्पेगतिया° पायविहारचारेणं महया-महया वंदावंदएहिं निग्गच्छंति । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता

---

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

२. अज्ज जाव (क,च) ।

३. × (क,ख,ग,घ,च) ।

४. भूयमहे इ वा जक्खमहे इ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. × (च) ।

६. × (क,ख,ग,घ,च,छ) ।

७. भोगादिभिः सर्वैः सह पुत्तरूपस्य विकल्पा बोद्धव्याः ।

८. सं० पा०—कोरव्वा जाव इब्भा ।

९. सं० पा०—कलकलरवेणं····एगदिसाए जहा उववाइए जाव अप्पेगतिया । रायपसेणइय-वृत्तौ समग्रः पाठो व्याख्यातोस्ति । तत्र औप-पातिकस्य समर्पणसूचना नास्ति । आदर्शेषु सा किमर्थं कृतेति न ज्ञायते । औपपातिकस्य वृत्त्य-नुसारिपाठे 'अंबरतलपिव' इत्यादि नास्ति, वाचनान्तरे तत् समुपलभ्यते । द्रष्टव्यं—औपपातिकस्य ५२ सूत्रस्य वाचनान्तरम् ।

१०. सं० पा०—अप्पेगतिया गयगया जाव पायवि-हारचारेणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंचुइ-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—'किं णं'[1] देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नगरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा ? 'जं णं'[2] इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा [जाव ?] णिग्गच्छंति ।।

कंचुइपुरिसस्स निवेदण-पदं

६८६. तए णं से कंचुइ-पुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स आगमण-गहिय-विणिच्छए चित्तं सारहिं करयलपरिग्गहियं[3] •दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता एवं वयासी—णो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहे इ वा जाव[4] सागरमहे इ वा । जं णं इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता जाव[5] वंदावंदएहिं निग्गच्छंति । एवं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जातिसंपण्णे जाव[6] गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए[7] •इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए णगरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, तेणं अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा जाव इब्भा इब्भपुत्ता अप्पेगतिया वंदणवत्तियाए[8] •अप्पेगइया पूयणवत्तियाए अप्पेगइया सक्कारवत्तियाए अप्पेगइया सम्माणवत्तियाए अप्पेगइया दंसणवत्तियाए अप्पेगइया कोऊहलवत्तियाए अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो, अप्पेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, अप्पेगइया गिहिधम्मं[9] पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सिरसा कंठेमालकडा आविद्ध-मणि-सुवण्णा कप्पियहारद्धहार-तिसरपवर-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोहाभरणा पवरवत्थ-परिहिया चंदणोलित्तगायसरीरा अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया अप्पेगइया रहगया अप्पेगइया सिवियागया अप्पेगइया संदमाणियागया अप्पेगइया पायविहारचारेणं° महया-महया वंदावंदएहिं णिग्गच्छंति ।।

चित्तस्स केसि-समीवे गमण-पदं

६९०. तए णं से चित्ते सारही कंचुइ-पुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[10]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वस-विसप्पमाण°-हियए कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं[11] आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह[12], •उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

६९१. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं

---

१. किण्हं (क,घ,च,छ) ।
२. जाव (क, ख, ग, घ, च,छ); अत्र भोगा इत्यस्यानन्तरं जाव शब्दो युज्यते, किन्तु लिपिदोषात् 'जं णं' इत्यस्य स्थाने लिखितः प्रतीयते ।
३. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता ।
४,५. राय० सू० ६८८ ।
६. राय० सू० ६८६ ।
७. सं० पा०—इहमागए जाव विहरइ ।
८. सं० पा०—वंदणवत्तियाए जाव महया ।
९. द्रष्टव्यं ६८७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
१०. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
११. चाउघंटं (क, ख, ग, घ, च, छ) । द्रष्टव्यं ६८१ सूत्रम् ।
१२. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव° उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

६९२. तए णं से चित्ते सारही ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ[1], दुरुहित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं[2] छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर[3]-वंदपरिखित्ते सावत्थीणगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसि-कुमार-समणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिं कुमार-समणं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ ।।

धम्मदेसणा-पदं

६९३. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहातो वेरमणं ।।

६९४. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

चित्तस्स गिहिधम्म-पडिवज्जण-पदं

६९५. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ[4]°तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण°हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसिं कुमार-समणं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं[5] पावयणं । पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! 'तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! जं णं तुब्भे वदह'[6] त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं[7], एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं

१. रूहइ (क, ख, ग, घ, च) ।
२. कोरेंट° (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं ६८३ सूत्रस्य पाठः ।
३. चडगरेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए ।
५. निग्गंथाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) । अस्य पाठस्य औपपातिकानुसारित्वमस्ति, तेन 'निग्गंथं' इति पाठः समायातः । भगवतः पार्श्वस्य शासने 'श्रमण' पदस्य 'अर्हत्' पदस्य वा प्रयोगः समुपलभ्यते ।
६. एवमेयं भंते २ अवितहमेयं भंते सच्चेणं एस अट्ठे जणं तुब्भे वयह (क,ख,ग, घ,च,छ) ।
७. औपपातिके २३ सूत्रे अतोग्रे 'चिच्चा सुवण्णं' पाठो लभ्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं[1] परिभाइत्ता, मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, णो खलु अहं तहा संचाएमि चिच्चा हिरण्णं[2], •एवं--धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए 'चाउज्जामियं गिहिधम्मं'[3] पडिवज्जिस्सामि[4]।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि[5] ॥

६९६. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए 'चाउज्जामियं गिहि-धम्मं'[6] उवसंपज्जित्ताणं विहरति ॥

६९७. तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

समणोवासय-वण्णग-पदं

६९८. तए णं से चित्ते सारही समणोवासए जाए[7]—अहिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्ण-पावे आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरणबंधप्पमोक्खकुसले असहिज्जे[8] देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वितिगिच्छे[9] लद्धट्ठे गहियट्ठे अभिगयट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे[10] परमट्ठे सेसे अणट्ठे 'ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघरप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे'[11],

१. दाइयं (क, ख, ग, घ, च)।

२. सं० पा०—हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए।

३. पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं (क, ख, ग, घ, च, छ); ६९३ सूत्रे केशिस्वामिना चित्तसारथये चातुर्यामिको धर्मः कथितः, तदानीं चित्तसारथिना द्वादश-विधो गृहिधर्मः कथं स्वीकृतः ? प्रस्तुतपाठः औपपातिकसूत्रेण पूरितः। तत्र 'पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं' इति पाठः आसीत्, स एवात्र अनुकृतः, किन्तु अर्थ-समीक्षयात्र 'चाउज्जामियं गिहिधम्मं' इति पाठो युज्यते।

४. पडिवज्जित्तए (क, ख, ग, घ, च, छ)। एतत् पाठस्य स्वीकारे 'अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए' इति वाक्ये किमपि क्रियापदं न स्यात् तथा च 'उवासगदसाओ' (१।२३) सूत्रे एतत्तुल्य-वाक्ये 'पडिवज्जिस्सामि' पाठो विद्यते। तेना-त्रापि स एव पाठो युज्यते।

५. करेसी (क, ख, ग, घ, च, छ)।

६. द्रष्टव्यं पूर्वसूत्रस्य पादटिप्पणम्।

७. जाव (क, ख, ग, घ, च)। अशुद्धं प्रति-भाति।

८. असहिज्ज (ख, ग, घ, च)।

९. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१०. अयमट्ठे (क, ख, ग, घ, च, छ)।

११. चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरपरघरप्पवेसे (क,ख,ग,घ,च,छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणे-पडिलाभेमाणे, 'बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं'[1] अप्पाणं भावेमाणे जाइं तत्थ रायकज्जाणि य[2] •रायकिच्चाणि य रायणीईओ य° रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

जियसत्तुणा पाहुडपेसण-पदं

६९९. तए णं से जियसत्तुराया अण्णया कयाइ महत्थं[3] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! सेयवियं नगरिं[4], पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं[5] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं उवणेहि, मम पाउग्गं च णं जहाभणियं अवितहमसंदिद्धं वयणं विण्णवेहि त्ति कट्टु विसज्जिए ॥

चित्तस्स निवेयण-पदं

७००. तए णं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रण्णा विसज्जिए समाणे तं महत्थं[6] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं 'गिण्हइ, गिण्हित्ता'[7] जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थीणयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, तं महत्थं[8] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं ठवेइ, ण्हाए[9] •कयबलिकम्मे कयकोउयमंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं° महया पायविहारचारेणं[10] महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ, सावत्थीणगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छति, केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा[11] •निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसिं कुमार-समणं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी एवं खलु

---

१. अहापरिग्गहेहिं तवोकम्मेहिं (वृ); बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं (वृपा)।

२. सं० पा०—रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि।

३. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं।

४. नगरं (च, छ)।

५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं।

६. सं० पा० – महत्थं जाव पाहुडं।

७. गिण्हइ जाव (क, ख, ग, घ, च, छ); अत्र 'जाव' शब्दः अनावश्यकः प्रतिभाति। ६८१ सूत्रेण तुलनायां कृतायां 'जाव' शब्दस्य स्थाने 'गिण्हित्ता' पाठो युज्यते।

८. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं।

९. सं० पा०—ण्हाए जाव सरीरे सकोरेंट महया।

१०. पायचारविहारेणं (क, ख, ग, घ, छ); प्रस्तुतागमस्य ६८८ सूत्रे तथा औपपातिकस्य ५२ सूत्रे तथा 'च' प्रतौ 'पायविहारचारेणं' पाठोस्ति, तेन स एव मूले स्वीकृतः।

११. सं० पा०—सोच्चा जाव हट्ठ उट्ठाए जाव एवं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहं[1] भंते ! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं[2] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए। तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नगरिं। पासादीया णं भंते ! सेयविया नगरी। दरिसणिज्जा[3] णं भंते ! सेयविया णगरी। अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी। पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी। समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरिं ॥

७०१. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

७०२. तए णं चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं[4] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए। तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नगरिं। पासादीया णं भंते ! सेयविया णगरी। दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया णगरी। अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी। पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी°। समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरिं ॥

केसिस्स पडिवयण-पदं

७०३. तए णं केसी कुमार-समणे चित्तेणं सारहिणा दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता! से जहाणामए वणसंडे सिया—किण्हे किण्होभासे[5] •नीले नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धोभासे तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीअच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए घणकडियकडच्छाए रम्मे महामेहनिकुरंबभूए° जाव[6] पडिरूवे। से णूणं चित्ता ! से वणसंडे बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ? हंता अभिगमणिज्जे।

तंसि च णं चित्ता ! वणसंडंसि बहवे भिलुंगा नाम पावसउणा[7] परिवसंति। जे णं तेसिं बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसिवाणं ठियाणं चेव मंससोणियं आहारेंति। से णूणं चित्ता ! से वणसंडे तेसि णं बहूणं दुपय[8]-•चउप्पय-मिय--पसु-पक्खी°-सिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ? णो ति, कम्हा णं ? भंते ! सोवसग्गे, एवमेव चित्ता ! तुब्भं पि सेयवियाए णयरीए पएसी नामं राया परिवसइ—अहम्मिए जाव[9] णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ। तं कहं णं अहं चित्ता ! सेयवियाए नगरीए समोसरिस्सामि ?

पुणो निवेयण-अब्भुवगमण-पदं

७०४. तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—किं णं भंते ! तुब्भं पएसिणा रण्णा कायव्वं ? अत्थि णं भंते ! सेयवियाए नगरीए अण्णे बहवे ईसर-तलवर[10]-

---

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
२. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं।
३. एवं दरिसणिज्जा (क, ख, ग, घ, छ)।
४. सं० पा०—महत्थं जाव विसज्जिए। चेव जाव समोसरह।
५. सं० पा०—किण्होभासे जाव पडिरूवे।
६. ओ० सू० ५-७।
७. पावसमणा (क); पासवणा (च, छ)।
८. सं० पा०—दुपय जाव सिरीसिवाणं।
९. राय० सू० ६७१।
१०. सं० पा०—ईसर-तलवर जाव सत्थवाह°।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहपभितयो, जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति नमंसिस्संति[1] •सक्कारिस्संति सम्माणिस्संति कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासिस्संति, विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभिस्संति, पाडिहारिएण पीढ-फलग-सेज्जा-संथारेणं उवणिमंतिस्संति[2] ।।

७०५. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—अवि याइं चित्ता ! समोसरिस्सामो[3] ।।

उज्जाणपाल-निद्देसण-पदं

७०६. तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, केसिस्स कुमार-समणस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव सावत्थी णगरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह । जहा सेयवियाए नगरीए निग्गच्छइ, तहेव जाव[4] अंतरा वासेहिं वसमाणे-वसमाणे कुणाला[5]-जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव केकय[6]-अद्धे जणवए जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उज्जाणपालए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जया णं देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमार-समणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तया णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! केसिं कुमार-समणं वंदिज्जाह नमंसिज्जाह, वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं अणुजाणेज्जाह[7], पाडिहारिएणं पीढ-फलग[8]-•सेज्जा-संथारेणं° उवणिमंतिज्जाह, एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह ।।

७०७. तए णं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[9]-•चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया करयलपरिग्गहियं[10] •दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता° एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ।

पाहुड-उवणयण-पदं

७०८. तए णं चित्ते सारही जेणेव सेयविया णगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं[11] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° गेण्हइ, जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं करयल[12] •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु

१. सं० पा०—नमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति ।
२. निमंतेहिंति (वृ) ।
३. जाणिस्सामो (वृ); समोसरिस्सामो (वृपा) ।
४. राय० सू० ६८२, ६८३ ।
५. कुणाल (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
६. केइय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. अणुजाणेत्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. सं० पा०—पीढफलग जाव उवणिमंतिज्जाह ।
९. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
१०. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव एवं ।
११. सं० पा०—महत्थं जाव गेण्हइ ।
१२. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता तं महत्थं[1] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° उवणेइ[2] ॥

७०९. तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं[3] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° पडिच्छइ, चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ ॥

७१०. तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठ[4] •तुट्ठचित्त-माणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए पएसिस्स रण्णो अंति-याओ पडिनिक्खमइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए[5] •कयबलिकम्मे° उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणी-संपउत्तेहिं 'उवणच्चिज्जमाणे उवगाइ-ज्जमाणे'[6] उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस[7]-•रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

केसिस्स सेयविया-आगमण-पदं

७११. तए णं से केसी कुमार-समणे अण्णया कयाइ पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणइ, सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पंचहिं अणगारसएहिं[8] •सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे जेणेव केयइ-अद्धे जणवए जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥

७१२. तए णं सेयवियाए नगरीए सिंघाडग[9]-•तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महा-पहपहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणवोले इ वा जणकलकले इ वा जणउम्मी इ वा जणसण्णिवाए इ वा जाव°[10] परिसा णिग्गच्छइ ॥

उज्जाणपालगाणं चित्तस्स निवेदण-पदं

७१३. तए णं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ[11]-•चित्तमाणं-दिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छंति, केसिं कुमार-समणं वंदंति नमंसंति, अहापडिरूवं ओग्गहं अणुजाणंति, पाडिहारिएणं[12] •पीढ-फलग-सेज्जा° संथारएणं उवनिमंतंति, णामं गोयं पुच्छंति ओधारेंति[13],

१. सं० पा०—महत्थं जाव उवणेइ ।
२. उवणमेइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
३. सं० पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ ।
४. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए ।
५. सं० पा०—ण्हाए जाव उप्पिं ।
६. उवणच्चिज्जमाणे २ उवगेयमाणे २ (क, ख, ग, घ, च) ।
७. सं० पा०—फरिस जाव विहरइ ।
८. सं० पा०—अणगारसएहिं जाव विहरमाणे ।
९. सं० पा०—सिंघाडग महया जणसद्दे इ वा परिसा ।
१०. राय० सू० ६८७ ।
११. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
१२. सं० पा०—पाडिहारिएणं जाव संथारएणं ।
१३. आधारेंति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगंतं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता अण्णमण्णं एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया ! चित्ते सारही दंसणं कंखइ दंसणं पत्थेइ[1] दंसणं पीहेइ दंसणं अभिलसइ, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठतुट्ठ[2]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए भवति, से णं एस केसी कुमार-समणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सेयवियाए णगरीए बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं[3] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ तं[4] गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेएमो पियं से भवउ, अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुर्णेति जेणेव सेयविया णगरी जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे[5] जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति, चित्तं सारहिं करयल[6] •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं° वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया ! दंसणं कंखंति[7] •दंसणं पत्थेंति दंसणं पीहेंति दंसणं° अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ[8] •तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाणहियया° भवह, से णं अयं पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे पुव्वाणु-पुव्विं चरमाणे[9] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सेयवियाए णगरीए बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ।।

चित्तस्स केसि-पज्जुवासणा-पदं

७१४. तए णं से चित्ते सारही तेसिं उज्जाणपालगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ[10]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए विगसिय-वरकमलणयणे पयलिय-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइयवच्छे पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सारही° आसणाओ अब्भुट्ठेति, पाय-पीढाओ पच्चोरुहइ, पाउयाओ ओमुयइ, एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, अंजलि-मउलियग्ग-हत्थे[11] केसि-कुमार-समणाभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—'नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[12] सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं'[13], नमोत्थु णं केसिस्स कुमार-समणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासइ[14] मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, विउलं

१. पेच्छइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
३. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।
४. ता (क, घ, च, छ); तो (ख, ग) ।
५. गेहे (क, छ) ।
६. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेंति ।
७. सं० पा०—कंखंति जाव अभिलसंति ।
८. सं० पा०—हट्ठ जाव भवह ।
९. सं० पा०—चरमाणे समोसढे जाव विहरइ ।
१०. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ ।
११. मउलियहत्थे (क, ख, ग, घ, च) ।
१२. राय० सू० ८ ।
१३. × (क) ।
१४. पासउ (क, ख, ग, घ, च, छ); अष्टमे सूत्रे वृत्तिमनुसृत्य 'पासइ' पाठः स्वीकृतः तथैव अत्रापि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया[1] ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह[2], •उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं° पच्चप्पिणह ।।

७१५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा[3] •तहेव पडिसुणित्ता° खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव[4] उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

७१६. तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[5]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण°हियए ण्हाए कयबलिकम्मे[6] •कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता[7] सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर-वंदपरिखित्ते सेयवियाणगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव मियवणे उज्जाणे जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिकुमार-समणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिं कुमार-समणं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ ।।

चाउज्जाम-धम्मदेसणा-पदं

७१७. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं । तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया° ।।

चित्तस्स निवेदण-पदं

७१८. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[8]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसिं कुमार-समणं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अम्हं पएसी राया अधम्मिए जाव[9] सयस्स वि जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्ति[10] पवत्तेइ, तं जइ णं

---

१. द्रष्टव्यं ६८१ सूत्रम् ।

२. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह ।

३. सं० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव ।

४. राय० सू० ६८२ ।

५. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

६. सं० पा०—कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्घंटे जाव दुरुहित्ता सकोरेंट महया भड-चडगरेणं तं चेव जाव पज्जुवासइ । धम्मकहाए जाव तए णं ।

७. आरुहित्ता (क); रुहित्ता (ख, ग, घ, च)

८. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ तेहव एवं ।

९. राय० सू० ६७१ ।

१०. करभरपवृत्ति (क); °पविर्त्ति (ख, ग, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवाणुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा । बहुगुणतरं खलु होज्जा पएसिस्स रण्णो, तेसिं च बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसवाणं, तेसिं च बहूणं समण-माहण-भिक्खुयाणं, तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं होज्जा सयस्स वि य णं जणवयस्स ।।

केसिस्स पडिवयण-पदं

७१६. तए णं केसी कुमार-समणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे[1] केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—

आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे[2] केवलि-पण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

उवस्सयगयं समणं वा[3] •माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ° । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

गोयरग्गगयं[4] समणं वा माहणं वा[5] •णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासेइ णो विउलेणं असण-पाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेइ, नो अट्ठाइं[6] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं° पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

जत्थ वि य[7] णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थ 'वि य'[8] णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं[9] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं° पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

एएहिं च णं चित्ता ! चउहिं ठाणेहिं जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तं जहा—

आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा अभिगच्छइ वंदइ नमंसइ[10] •सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासेइ, अट्ठाइं[11] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं

१. जीवा (क, छ) ।

२. जीवा (छ) ।

३. सं० पा०—समणं वा तं चेव जाव एएण ।

४. वृत्तिकृता 'प्रातिहारेण पीठफलकादिना नामन्त्रयतीत्यादि तृतीयम्, गोचरगतं न अशनादिना प्रतिलाभयति—इत्यादि चतुर्थम्' कारणं स्वीकृतं तथा 'यत्रापि श्रमणः-साधुः माहनः—परमगीतार्थः श्रावकोऽभ्यागच्छति तत्रापि हस्तेन वस्त्राञ्चलेन छत्रेण वाऽऽत्मानमावृत्य न तिष्ठति इदं प्रथमं कारणम्', एवं मूलपाठलब्धं धर्माऽश्रवणस्य चतुर्थं कारणं धर्मश्रवणस्य प्रथमकारणत्वेन निर्दिष्टम् ।

५. सं० पा०—माहणं वा जाव पज्जुवासेइ ।

६, ९. सं० पा०—अट्ठाइं जाव पुच्छइ ।

७. × (क, च, छ) ।

८. × (क, च, छ) ।

१०. सं० पा०—नमंसइ जाव पज्जुवासेइ ।

११. सं० पा०—अट्ठाइं जाव पुच्छइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वागरणाइं° पुच्छइ। एएण वि[1] •ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं° लभइ सवणयाए।
उवस्सयगयं[2] •समणं वा माहणं वा अभिगच्छइ वंदइ णमंसइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ। एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए°।
गोयरग्गगयं समणं वा[3] •माहणं वा अभिगच्छइ वंदइ णमंसइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासेइ, विउलेणं[4] •असणपाणखाइमसाइमेणं° पडिलाभेइ, अट्ठाइं[5] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं° पुच्छइ। एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए।

जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं णो हत्थेण वा[6] •वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं° आवरेत्ताणं चिट्ठइ। एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए।
तुज्झं च णं चित्ता! पएसी राया—आरामगयं वा[7] •उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ। तं कहं णं चित्ता! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो?
उवस्सयगयं समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, णो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ। तं कहं णं चित्ता! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो?
गोयरग्गगयं समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्मणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, णो विउलेणं असणपाणखाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, णो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ। तं कहं णं चित्ता! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो?
जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा° अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ। तं कहं णं चित्ता! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो?॥

७२०. तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु भंते! अण्णया कयाइ कंबोएहिं चत्तारि आसा उवायणं[8] उवणीया, ते मए पएसिस्स रण्णो अण्णया चेव उवणेया[9]। तं एएणं खलु भंते! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं

---

१. सं० पा०—एएण वि जाव लभइ।
२. सं० पा०—उवस्सयगयं।
३. सं० पा०—समणं वा जाव पज्जुवासेइ।
४. सं० पा०- विउलेणं जाव पडिलाभेइ।
५. सं० पा०—अट्ठाइं जाव पुच्छइ।
६. सं० पा०—हत्थेण वा जाव आवरेत्ताणं।
७. सं० पा०—आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं।
८. उवणयणं (क); उवयणं (ख, ग, घ, च, छ)
९. विणेया (क, ख, ग, घ, च)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतिए हव्वमाणेस्सामि । तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्मइमाइक्खमाणा गिलाएज्जाह । अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह । छंदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह ।।

७२१. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—अवि याइं चित्ता ! जाणिस्सामो ।।

७२२. तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

चित्त-पएसि-पदं

७२३. तए णं से चित्ते सारही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे[1] पभाए कयनियमावस्सए सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं करयल[2] •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवायणं[3] उवणीया, ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया । तं एह णं सामी ! ते आसे चिट्ठं पासह ।।

७२४. तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेहि[4], •एयमाणत्तियं° पच्चप्पिणाहि ।।

७२५. तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ[5]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण°हियए उवट्ठवेइ, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ।।

७२६. तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ[6]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ण्हाए कय-बलिकम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिते° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सेयवियाए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ ।।

७२७. तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ ।।

७२८. तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रहवाएण य[7] परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता ! परिकिलंते मे सरीरे, परावत्तेहि रहं ।।

७२९. तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवाग-

१. °पंडरे (क); °पंडर (ख, ग, घ, च) ।
२. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।
३. उवणयं (क, ख, ग, घ, च) ।
४. सं० पा०—उवट्ठवेहि जाव पच्चप्पिणाहि ।
५. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
६. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे ।
७. × (क, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च्छइ, पएसिं रायं एवं वयासी—'एस णं'[1] सामी ! मियवणे उज्जाणे, एत्थ णं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो'[2] ।।

७३०. तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी—एवं होउ चित्ता !

७३१. तए णं से चित्ते सारही जेणेव केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हेइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तुरए मोएति, पएसिं रायं एवं वयासी—एह णं सामी ! आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो[3] ।।

७३२. तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ, चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमाणे[4] जत्थ [तत्थ[5] ?] 'केसिं कुमार-समणं'[6] महइमहालियाए महच्चपरिसाए मज्झगए महया-महया सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति । मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति । मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति । अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति । निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति ।
से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए,[8] उत्तप्पसरीरे ? एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? 'किं परिणामेइ ?'[9] किं खाइ ? किं पियइ ? किं दलयइ[10] ? किं पयच्छइ ? जेणं[11] एमहालियाए मणुस्सपरिसाए महया-महया सद्देणं बूया[12] । [साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ?][13] एवं संपेहेइ, संपेहित्ता चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता ! जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति[14] । •मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति । मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति । अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति । निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति । से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए, उत्तप्पसरीरे ? एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? किं परिणामेइ ? किं खाइ ? किं पियइ ? किं दलयइ ? किं पयच्छइ ? जेणं एमहालियाए मणुस्सपरिसाए महया-महया सद्देणं° बूया । साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ।।

७३३. तए णं से चित्ते सारही पएसिं रायं एवं वयासी—एस णं सामी !

---

१. सरणं (क, च) ।
२-३. पवीणामो (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. पवीणेमाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५. अत्रादर्शेषु 'जत्थ' पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ-विचारणया 'तत्थ' पाठो युज्यते ।
६. केसी कुमार-समणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
८. ववगए (क, ख, ग, घ, च) ।
९. × (क, ख, ग, घ, च) ।
१०. दलइ (च) ।
११. जण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ); मुद्रितवृत्तौ 'जंणं एस' इति लभ्यते ।
१२. बूभियाए (क, च); बूयाइ (छ) ।
१३. ७२७ सूत्रे केशिस्वामिना प्रदेशिराजकृतः संकल्प एव स्मारितः । तत्र 'साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए' इति पाठो विद्यते, तदास्मिन् प्रदेशिराजकृतसंकल्पसूत्रे स पाठांशः कथं न स्यात् ? इति पौर्वापर्यार्थविचारणया 'साए वि····इति' पाठांशोत्र युज्यते ।
१४. सं० पा०—पज्जुवासंति जाव बूया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासवच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जातिसंपण्णे जाव[1] चउणाणोवगए 'अहोऽवहिए अण्णजीविए'[2] ॥

७३४. तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी—'अहोऽवहियं णं'[3] वयासि चित्ता ! अण्णजीवियं णं वयासि चित्ता ! हंता सामी ! अहोऽवहियं[4] णं वयामि, अण्णजीवियं णं वयामि ॥

७३५. अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! एस पुरिसे ? हंता सामी ! अभिगमणिज्जे । अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं ? हंता सामी ! अभिगच्छामो ॥

पएसि-केसि-पदं

७३६. तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी— तुब्भे णं भंते ! अहोऽवहिया अण्णजीविया ?

७३७. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—पएसी ! से जहाणामए अंकवाणिया इ वा संखवाणिया इ वा सुंकं भंसेउकामा[5] णो सम्मं पंथं पुच्छंति । एवामेव पएसी ! तुमं वि विणयं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि । से णूणं तव पएसी ! ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति[7] । •मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति । मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति । अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति । निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति । से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए, उत्तप्पसरीरे ? एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? किं परिणामेइ ? किं खाइ ? किं पियइ ? किं दलयइ ? किं पयच्छइ ? जे णं एमहालियाए मणुस्सपरिसाए महया-महया सद्देणं बूया । साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं° पवियरित्तए । से णूणं पएसी ! अत्थे समत्थे ? हंता ! अत्थि ॥

७३८. तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—से केस णं भंते ! तुज्झं नाणे वा दंसणे वा, जेणं[8] तुब्भे मम एयारूवं अज्झत्थियं[9] •चिंतियं पत्थियं मणोगयं° संकप्पं समुप्पण्णं जाणह पासह ?

७३९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—एवं खलु पएसी ! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं पंचविहे णाणे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणे सुयणाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे ॥

७४०. से किं तं आभिणिबोहियणाणे ? आभिणिबोहियणाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—उग्गहो ईहा अवाए धारणा ॥

---

१. राय० सू० ६८६ ।
२. अहोहिए अण्णं जीवे (क, ख, ग); अहोहिए अण्णजीवी
३. अहोहि अण्णं (क, ख, ग, घ) ।
४. अहोहियं (क, ख, ग, घ) ।
५. भंजेउ° (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७. सं० पा०—पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए ।
८. जं णं (घ) ।
९. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव संकप्पं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७४१. से किं तं उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, जहा नंदीए जाव[1] से तं धारणा। से तं आभिणिबोहियणाणे ।।

७४२. से किं तं सुयणाणं ? सुयणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—अंगपविट्ठं च, अंगबाहिरगं च सव्वं भाणियव्वं जाव[2] दिट्ठिवाओ ।।

७४३. [3]•से किं तं ओहिणाणं ? ओहिणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—भवपच्चइयं च, खओवसमियं च° जहा नंदीए[4] ।।

७४४. [5]•से किं तं मणपज्जवणाणे ?° मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उज्जुमई य विउलमई य[6] ।।

७४५. [7]•से किं तं केवलणाणं ? केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—भवत्थकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च[8]° ।

७४६. तत्थ णं जेसे आभिणिबोहियणाणे, से णं ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे सुयणाणे, से वि य ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे ओहिणाणे, से वि य ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे मणपज्जवणाणे, से वि य ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे केवलणाणे, से णं ममं नत्थि, से णं अरहंताणं भगवंताणं । इच्चेएणं पएसी ! अहं तव चउव्विहेणं छाउमत्थिएणं णाणेणं इमेयारूवं अज्झत्थियं[9] •चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं° समुप्पण्णं जाणामि पासामि ।।

७४७. तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अह णं भंते ! इहं उवविसामि ? पएसी ! साए उज्जाणभूमीए तुमंसि चेव जाणए ।।

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७४८. तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते उवविसइ, केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—तुब्भं णं भंते ! समणाणं णिग्गंथाणं एस[10] सण्णा एस पइण्णा[11] एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे 'एस पमाणे'[12] एस समोसरणे, जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं ? ।।

७४९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—पएसी ! अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं एस सण्णा[13] •एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे° एस समोसरणे, जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो 'तं जीवो'[14] तं सरीरं ।।

---

१. नंदी सू० ४०-४६ ।
२. नंदी सू० ७३-१२६ ।
३. सं० पा०—ओहिणाणं भवपच्चइयं खओवसमियं ।
४. नंदी सू० ७-२२ ।
५. सं० पा०—मणपज्जवणाणे ।
६. नंदी सू० २३-२५ ।
७. सं० पा०—तहेव केवलणाणं सव्वं भाणियव्वं ।
८. नंदी सू० २७-३३ ।
९. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव समुप्पण्णं ।
१०. एसा (छ) ।
११. पण्णा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१२. × (क, ख, ग, घ, च) ।
१३. सं० पा०—एस सण्णा जाव एस समोसरणे ।
१४. तज्जीवो (क, ख, ग, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५०. तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—जति णं भंते ! तुब्भं समणाणं णिग्गंथाणं एस सण्णा[1] •एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस° समोसरणे, जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो 'तं जीवो'[2] तं सरीरं—एवं खलु ममं अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए णगरीए अधम्मिए जाव[3] सयस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेति से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे। तस्स णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था—इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं जति णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा—एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेमि। तए णं अहं सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता [कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु ?] नरएसु [णेरइयत्ताए ?] उववण्णे तं मा णं नत्तुया ! तुमं पि भवाहि अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेहि। मा णं तुमं पि एवं चेव सुबहुं पावकम्मं[4] •कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए° उववज्जिहिसि। तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा[5] जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं।

जम्हा णं से अज्जए ममं आगंतुं नो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मम पइण्णा[6] समणाउसो ! जहा तज्जीवो तं सरीरं॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५१. तए णं से केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णामं देवी ? हंता अत्थि। जइ णं तुमं पएसी तं सूरियकंतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं[7] केणइ पुरिसेणं ण्हाएणं[8] •कयबलिकम्मेणं कयकोउयमंगलपायच्छित्तेणं° सव्वालंकारभूसिएणं सद्धिं इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सते कामभोगे पच्चणुब्भवमाणिं पासिज्जासि, तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स कं डंडं निव्वत्तेज्जासि ? अहं णं भंते ! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं वा पायच्छिण्णगं वा सूलाइगं वा सूलभिण्णगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा।

'अह णं'[9] पएसी से पुरिसे तुमं एवं वदेज्जा—मा ताव मे सामी! मुहुत्तागं[10] हत्थच्छि-

१. सं० पा०—एस सण्णा जाव समोसरणे।
२. तज्जीवो (क, ख, ग, घ, च)।
३. राय० सू० ६७१।
४. सं० पा०—पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि।
५. रोवएज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ)।
६. पन्ना (क, ख, ग, घ, च)।
७. °विभूसियं (छ)।
८. सं० पा०—ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएणं।
९. अहण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१०. मुहुत्तगं (छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण्णगं वा[1] •पायछिण्णगं वा सूलाइगं वा सूलभिण्णगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं° जीवियाओ ववरोवेहि जाव ताव अहं मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणं एवं वयामि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारूवं आवइं पाविज्जामि, तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे वि केइ पावाइं कम्माइं समायरह[2], मा णं से वि एवं चेव आवइं पाविज्जिहिह[3], जहा णं अहं । तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि ? णो तिणट्ठे समट्ठे । कम्हा णं ? जम्हा णं भंते ! अवराही णं से पुरिसे । एवामेव पएसी ! तव वि अज्जए होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव[4] णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ । से णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं[5] •पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए° उववण्णे । तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था—इट्ठे कंते[6] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण° पासणयाए ! से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] । चउहिं च णं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए से णं तत्थ महब्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए नरयपालेहिं भुज्जो-भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?]

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए निरयाउयंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी अहुणोववण्णे नरएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] । तं सद्दहाहि णं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं ।।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५२. तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस पण्णओ उवमा, इमेण पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! मम अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नगरीए धम्मिया[7] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्माणुया धम्मपलोई धम्मपलज्जणी धम्मसीलसमुयाचारा धम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणी[8] समणोवासिया

१. सं० पा०—हत्थच्छिण्णगं वा जाव जीवियाओ ।
२. समायरउ (क, ख, ग, घ) ।
३. पाविज्जिहिइ (घ, च) ।
४. राय० सू० ६७१ ।
५. सं० पा०—सुबहुं जाव उववण्णे ।
६. सं० पा०—कंते जाव पासणयाए ।
७. सं० पा०—धम्मिया जाव वित्तिं ।
८. °माणा (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिगयजीवा[1] •जीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंधप्पमोक्ख-कुसला असहिज्जा देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया णिव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा अभिगयट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ता अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउरघरप्पवेसा चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणी, समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइम-साइमेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणी-पडिलाभेमाणी, बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं° अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। सा णं तुज्झं वत्तव्वयाए सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा। तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था—इट्ठे कंते[2] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण° पासणयाए, तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा—एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया[3] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्माणुया धम्मपलोई धम्मपलज्जणी धम्मसीलसमुयाचारा धम्मेण चेव° वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरामि।

तए णं अहं सुबहुं[4] पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता[5] •कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु° देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा, तं तुमं पि णत्तुया ! भवाहि धम्मिए[6] •धम्मिट्ठे धम्मक्खाई धम्माणुए धम्मपलोई धम्मपलज्जणे धम्मसीलसमुयाचारे धम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे समणोवासए जाव अप्पाणं भावेमाणे° विहराहि। तए णं तुमं पि एयं चेव सुबहुं पुण्णोवचयं[7] •समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववज्जिहिसि। तं जइ णं अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तज्जीवो तं सरीरं।

जम्हा सा अज्जिया ममं आगंतुं णो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा[8] जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं।

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५३. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—जति णं तुमं पएसी ! ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं उल्लपडगं भिंगार-कडच्छुयहत्थगयं देवकुलमणुपविसमाणं केइ पुरिसे वच्चघरंसि ठिच्चा एवं वदेज्जा—एह ताव सामी ! इह

१. सं० पा०—अभिगयजीवा सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं।
२. सं० पा०—कंते जाव पासणयाए।
३. सं० पा०—धम्मिया जाव वित्तिं।
४. सुहं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
५. सं० पा०—समज्जिणित्ता जाव देवलोएसु।
६. सं० पा०—धम्मिए जाव विहराहि।
७. सं० पा०—पुण्णोवचयं जाव उववज्जिहिसि।
८. पण्णा (क, ख, ग, घ, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्तागं[1] आसयह वा चिट्ठह वा निसीयह वा तुयट्टह वा। तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणिज्जासि? णो तिणट्ठे समट्ठे। कम्हा णं? जम्हाणं भंते! असुई असुइ-सामंतो। एवामेव पएसी! तव वि अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए णयरीए धम्मिया जाव[2] अप्पाणं भावेमाणी विहरति। सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं[3] •पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा। तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था—इट्ठे[4] •कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए°, किमंग पुण पासणयाए? सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए।

चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए—

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे, से णं माणुसे भोगे नो आढाति नो परिजाणाति। से णं इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए[5] •गिद्धे गढिए° अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिण्णए भवति, दिव्वे पेम्मे संकंते भवति। से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए।

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए[6] •गिद्धे गढिए° अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ—इयाणिं गच्छं मुहुत्ते गच्छं जाव इह अप्पाउया णरा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, से णं इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए।

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं[7] •कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गढिए° अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे भवइ, उड्ढं पि य णं चत्तारि पंचजोअणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छति[8]। से णं इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए।

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५४. तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते! एस

१. मुहुत्तगं (क, छ)।
२. राय० सू० ७५२।
३. सं० पा०—सुबहुं जाव उववण्णा।
४. सं० पा०—इट्ठे किमंग।
५. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे।
६. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे।
७. सं० पा०—दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे।
८. हवइ (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णओ उवमा, इमेणं पुण[1] कारणेणं णो उवागच्छति—
एवं खलु भंते! अहं[2] अण्णया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगणणायक-दंडणायग-राईसर[3]-तलवर- माडंबिय-कोडुंबिय- इब्भ-सेट्ठि - सेणावइ- सत्थवाह-मंति- महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि।
तए णं मम णगरगुत्तिया ससक्खं 'सहोढं सलोद्दं'[4] सगेवेज्जं अवउडगबंधणबद्धं चोरं उवणेंति। तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अओकुंभीए पक्खिवावेमि, अओमएणं पिहाणएणं पिहावेमि, अएण य तउएण य कायावेमि, आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि।
तए णं अहं अण्णया कयाइं जेणामेव सा अओकुंभी तेणामेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता तं अओकुंभि उग्गलच्छावेमि[5], उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि, णो चेव णं तीसे अओकुंभीए[6] केइ छिड्डे इ वा विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए। जइ णं भंते! तीसे अओकुंभीए होज्ज केइ छिड्डे इ वा[7] •विवरे इ वा अंतरे इ वा° राई वा, जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए, तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं।
जम्हा णं भंते! तीसे अओकुंभीए णत्थि केइ छिड्डे इ वा[8] •विवरे इ वा अंतरे इ वा, राई वा, जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया° निग्गए, तम्हा सुपतिट्ठिया मे पइण्णा[9] जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५५. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी पएसी! से जहाणामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा। अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो-अंतो अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण-निचिय-निरंतर-णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं[10] पिहेइ। तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया-महया सद्देणं तालेज्जा। से णूणं पएसी! से सद्दे णं अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ? हंता णिग्गच्छइ। अत्थि णं पएसी! तीसे कूडागारसालाए केइ छिड्डे इ वा[11] •विवरे इ वा अंतरे इ वा° राई वा, जओ णं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए? नो 'तिणट्ठे समट्ठे'[12]। एवामेव पएसी! जीवे वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा पव्वयं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! अण्णो जीवो[13] •अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं°॥

१. पुण मे (क, ख, ग, च, छ)।
२. × (क, च)।
३. ईसर (क, ख, ग, घ, च, छ)।
४. सहोढं (क, ख, ग, घ, छ); सहोट (च)।
५. उल्लंछावेमि (घ)।
६. अयोकुंभीए (क, ख, ग); अयकुंभीए (घ)।
७. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव राई।
८. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव निग्गए।
९. पन्ना (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१०. दुवारणयणाइं (ख, ग)।
११. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव राई।
१२. इणमट्ठे (क)।
१३. सं० पा०—जीवो तं चेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५६. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते! एस पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं णो उवागच्छइ—एवं खलु भंते! अहं अण्णया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए[1] •अणेगगणणायक-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे° विहरामि। तए णं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं[2] •सहोढं सलोद्दं सगेवेज्जं अवउडगबंधणबद्धं चोरं° उवणेंति। तए णं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि, ववरोवेत्ता अओकुंभीए पक्खिवावेमि, अओमएणं पिहाणएणं पिहावेमि[3], •अएण य तउएण य कायावेमि, आय° पच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि।
तए णं अहं अण्णया कयाइ जेणेव सा कुंभी तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता तं अओकुंभिं उग्गलच्छावेमि, तं अओकुंभिं किमिकुंभिं पिव पासामि, णो चेव णं तीसे अओकुंभीए केइ छिड्डे इ वा[4] •विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जतो णं ते जीवा बहियाहिंतो अणुपविट्ठा। जति णं तीसे अओकुंभीए होज्ज केइ छिड्डे इ वा[5] •विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जतो णं ते जीवा बहियाहिंतो° अणुपविट्ठा, तो णं अहं सद्दहेज्जा[6] •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं°।
जम्हा णं तीसे अओकुंभीए नत्थि केइ छिड्डे इ वा[7] •विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जतो णं ते जीवा बहियाहिंतो° अणुपविट्ठा, तम्हा सुपतिट्ठिआ मे पइण्णा जहा—तज्जीवो, 'तं सरीरं'[8], •नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं°॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५७. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—अत्थि णं तुमे पएसी! कयाइ य अए धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा? हंता अत्थि। से णूणं पएसी! अए धंते समाणे सव्वे अगणिपरिणए भवति? 'हंता भवति'[9], अत्थि णं पएसी! तस्स अयस्स केइ छिड्डे इ वा[10] •विवरे इ वा अंतरे वा राई वा °जेणं से जोई बहियाहिंतो अंतो अणुपविट्ठे? नो तिणट्ठे समट्ठे। एवामेव पएसी! जीवो वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा पव्वयं भिच्चा बहियाहिंतो अंतो अणुपविसइ। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी[11]! •जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं°॥

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५८. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते! एस

---

१. सं० पा०—उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि।
२. सं० पा०—ससक्खं जाव उवणेंति।
३. सं० पा०—पिहावेमि जाव पच्चइएहिं।
४. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव राई।
५. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव अणुपविट्ठा।
६. सं० पा०—सद्दहेज्जा जहा अण्णो जीवो तं चेव।
७. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव अणुपविट्ठा।
८. तस्सरीरं (क, ग, घ, च, छ)। सं० पा०—सरीरं तं चेव।
९. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१०. सं० पा०—छिड्डे इ वा जेणं।
११. सं० पा०—पएसी! तहेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—भंते ! से जहाणामए—केइ पुरिसे तरुणे[1] •बलवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरुपरिणए घण-णिचिय-वट्ट-वलियखंधे चम्मेट्ठग-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगत्ते उरस्सबलसमण्णागए तलजमलजुयलबाहू लंघण-पवण-जइण-पमद्दणसमत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी णिउण° सिप्पोवगए पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ? हंता पभू। जति णं भंते ! सच्चेव[2] पुरिसे बाले[3] •अदक्खे अपत्तट्ठे अकुसले अमेहावी मंदविण्णाणे पभू होज्जा पंचकंडगं निसिरित्तए, तो णं अहं सद्दहेज्जा[4] •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं°। जम्हा णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जाव मंदविण्णाणे णो 'पभू पंचकंडयं'[5] निसिरित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा—तज्जीवो[6] •तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५६. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—से जहाणामए—केइ पुरिसे तरुणे[7] •बलवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरुपरिणए घण-णिचिय-वट्ट-वलियखंधे चम्मेट्ठग-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगत्ते उरस्सबलसमण्णागए तल-जमल-जुयलबाहू लंघण-पवण-जइण-पमद्दणसमत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी णिउण° सिप्पोवगए णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए[8] नवएणं उसुणा 'पभू पंचकंडगं'[9] निसिरित्तए ? हंता पभू। सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लएणं धणुणा कोरिल्लयाए जीवाए कोरिल्लएणं उसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ? णो तिणट्ठे समट्ठे। कम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति। एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले[10] •अदक्खे अपत्तट्ठे अकुसले अमेहावी° मंदविण्णाणे अपज्जत्तोवगरणे णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो[11] •अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं°।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७६०. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—भंते ! से जहाणामए—केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगते पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ? हंता पभू। सो चेव णं भंते ! पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे सिढिलवलिया-वणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले

१. सं० पा०—तरुणे जाव सिप्पोवगए।

२. से चेव (क)।

३. सं० पा०—बाले जाव मंदविण्णाणे; अस्य पाठस्य पूर्तिः 'छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी' अनेन पाठेन कृता।

४. सं० पा०—सद्दहेज्जा जहा अण्णो जीवो तं चेव।

५. पभू यं च कंडगं (क, च)।

६. सं० पा०—तज्जीवो तं चेव।

७. सं० पा०—तरुणे जाव सिप्पोवगए।

८. पडिचियाए (क, ख, ग, घ, च, छ)।

९. पभू णं च कंडगं (क)।

१०. सं० पा०—बाले जाव मंदविण्णाणे।

११. सं० पा०—जीवो तं चेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा[1] •तउयभारगं वा सीसगभारगं° वा परिवहित्तए। जति णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे[2] •सिढिलवलियावणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले° परिकिलंते पभू एगं महं अयभारगं वा[3] •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा° परिवहित्तए, तो णं अहं सद्दहेज्जा[4] •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तज्जीवो तं सरीरं° । जम्हा णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुण्णे[5] •जराजज्जरियदेहे सिढिलवलियावणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले° परिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा[6] •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा° परिवहित्तए, तम्हा सुपतिट्ठिता मे पइण्णा[7] •जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं° ।।

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७६१. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—से जहाणामए—केइ[8] पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए णवियाए विहंगियाए णवएहिं सिक्कएहिं णवएहिं पच्छियापिडएहिं[9] पहू एगं महं अयभारगं वा[10] •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा° परिवहित्तए ? हंता पभू । पएसी! से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए जुण्णियाए दुब्बलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए[11], जुण्णएहिं दुब्बलएहिं घुणक्खइएहिं सिढिल-तया-पिणद्धएहिं सिक्कएहिं, जुण्णएहिं दुब्बलएहिं घुणक्खइएहिं पच्छियापिडएहिं[12] पभू एगं महं अयभारगं वा[13] •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा° परिवहित्तए ? णो तिणट्ठे समट्ठे। कम्हा णं ? भंते ! तस्स पुरिसस्स जुण्णाइं उवगरणाइं भवंति । एवामेव पएसी ! से चेव पुरिसे जुण्णे[14] •जराजज्जरियदेहे सिढिलवलियावणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरल-परिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले परि° किलंते जुण्णोवगरणे नो पभू एगं महं अयभारगं वा[15] •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा° परिवहित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं ।।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७६२. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते[16] ! •एस

---

१. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए।
२. सं० पा०—जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते।
३. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए।
४. सं० पा०—सद्दहेज्जा तहेव ।
५. सं० पा०—जुण्णे जाव किलंते ।
६. सं ० पा० —अयभारगं वा जाव परिवहित्तए।
७. सं० पा०—पइण्णा तहेव ।
८. के वि (घ, च) ।
९. पच्छियापिंडएहिं (क); पत्थियपिडएहिं (ख, ग, घ); पट्ठियापिंडएहिं (च); पत्थयपिंड-एहिं (छ) ।
१०. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए।
११. वाहंगियाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१२. पच्छिपिडएहिं (क, ख); पत्थियापिडएहिं (ग, घ); पच्छिपिडएहिं (च); पच्छपिंड-एहिं (छ) ।
१३. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए।
१४. सं०पा०—जुण्णे जाव किलंते ।
१५. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए।
१६. सं० पा०—भंते जाव नो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं° नो उवागच्छइ—एवं खलु भंते[1] ! •अहं अण्णया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेग-गणणायक-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च- चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे° विहरामि। तए णं मम णगरगुत्तिया चोरं उवणेंति।

तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतगं[2] चेव तुलेमि, तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मयं तुलेमि णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते[3] वा नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा लहुयत्ते वा।

जति णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते वा[4] •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा, तो णं अहं सद्दहेज्जा[5] •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं°।

जम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ अण्णत्ते वा[6] •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा, तम्हा सुपतिट्ठिया मे पइण्णा जहा—तज्जीवो[7] •तं सरीरं णो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं°॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७६३. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—अत्थि णं पएसी ! तुमे कयाइ वत्थी 'धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे'[8] वा ? हंता अत्थि। अत्थि णं पएसी ! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स, अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते वा[9] •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे।

एवामेव पएसी ! जीवस्स अगरुलघुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ अण्णत्ते वा[10] •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी[11] ! •जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं°॥

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७६४. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस[12] •पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं° नो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! अहं अण्णया[13] •कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेग-गणणायक-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-

१. सं० पा०—भंते जाव विहरामि।
२. जीवतगं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
३. आणत्ते (क, ख, ग, च, छ)।
४. सं० पा०—अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते।
५. सं० पा०—सद्दहेज्जा तं चेव।
६. सं० पा०—अण्णत्ते वा····लहुयत्ते।
७. सं० पा०—तज्जीवो तं चेव।
८. वातपुण्णे (क, ख, ग, घ, च, छ)।
९. सं० पा०—अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते।
१०. सं० पा०—अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते।
११. सं० पा०—पएसी तं चेव।
१२. सं० पा०—एस जाव नो।
१३. सं० पा०—अण्णया जाव चोरं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोडुंबिय - इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति - महामंति - गणग - दोवारिय- अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि। तए णं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं सहोढं सलोद्दं सगेवेज्जं अवउडगबंधणबद्धं° चोरं उवणेंति। तए णं अहं तं पुरिसं सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि।

तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं[1] करेमि, करेत्ता सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि। एवं तिहा चउहा संखेज्जहा फालियं करेमि[2], •करेत्ता सव्वतो समंता समभिलोएमि°, णो चेव णं तत्थ जीवं पासामि।

जइ णं भंते! अहं 'तंसि पुरिसंसि'[3], दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंमि जीवं पासंतो[4], तो णं अहं सद्दहेज्जा[5] •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं°।

जम्हा णं भंते! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंमि जीवं न पासामि, तम्हा सुपतिट्ठिया मे पइण्णा जहा—तज्जीवो तं सरीरं[6], •नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं° ॥

मूढ-कट्ठहारय-पदं

७६५, तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ तुच्छतराओ। के णं भंते! तुच्छतराए? पएसी! से जहाणामए—केइ पुरिसा वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोईभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए[7] •छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए° कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि। अह तं जोइभायणे जोई विज्झवेज्जा, तो[8] णं तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि त्ति कट्टु कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा।

तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्तंतरस्स तेसिं पुरिसाणं असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोतिभायणे तेणेव उवागच्छइ, जोइभायणे जोइं विज्झायमेव पासति।

तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएति, नो चेव णं तत्थ जोइं पासति।

तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ, फरसुं गेण्हइ, तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ, सव्वतो समंता समभिलोएइ, णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ। एवं[9] •तिहा चउहा° संखेज्जहा वा

---

१. पालियं (च,छ)।
२. सं० पा०—करेमि णो।
३. तं पुरिसं (क,च,छ)।
४. पासं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
५. सं० पा० सद्दहेज्जा तं चेव।
६. सं० पा०—सरीरं तं चेव।
७. अकामियाए (क,ख,ग,घ); अकामयाए (च, छ); सं० पा०—अगामियाए जाव किंचि।
८. एत्तो (क); पुत्ता (च, छ)।
९. सं० पा०—एवं जाव संखेज्जहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फालियं करेइ, सव्वतो समंता समभिलोएइ, नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ।

तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहाफालिए वा[1] •तिहाफालिए वा चउहाफालिए वा° संखेज्जहाफालिए वा जोइं अपासमाणे संते तंते परिस्संते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ, परियरं मुयइ, मुइत्ता एवं वयासी—अहो ! मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे[2] करयलपल्लत्थमुहे[3] अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाइ।

तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति, जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति, तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पं[4] •चिंतासोगसागरसंपविट्ठं करयलपल्लत्थमुहं अट्टज्झाणोवगयं भूमिगय-दिट्ठियं° झियायमाणं पासंति, पासित्ता एवं वयासी—किं णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमण-संकप्पे[5] •चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करयलपल्लत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए° झियायसि ?

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा[6] ममं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं[7] •पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइभाय-णाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि। अह तं जोइभायणे जोई विज्झवेज्जा, तो णं तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि त्ति कट्टु कट्ठाणं अडविं अणु-°पविट्ठा। तए णं अहं तओ मुहुत्तंतरस्स तुब्भं असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छामि जाव झियामि।

तए णं तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे पत्तट्ठे[8] •कुसले महामई विणीए विण्णाणपत्ते° उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा[9] •कयकोउयमंगलपायच्छित्ता° हव्वमागच्छेह जा णं अहं असणं साहेमित्ति कट्टु परियरं बंधइ, परसुं गिण्हइ, सरं करेइ, सरेण अरणिं महेइ, जोइं पाडेइ, जोइं संधुक्खेइ, तेसिं पुरिसाणं असणं साहेइ।

तए णं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा[10] •कयकोउयमंगल°-पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति।

तए णं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ।

तए णं ते पुरिसा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा वीसाएमाणा[11] •परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं च णं° विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं

---

१. सं० पा०—दुहाफालिए वा णाव संखेज्जहा।
२. °सागरं पविट्ठे (घ)।
३. °पल्हत्थमुहे (क)।
४. सं० पा०—मणसंकप्पं जाव झियायमाणं।
५. सं० पा०—मणसंकप्पे जाव झियायसि।
६. अणुपविट्ठा समाणा (घ)।
७. सं० पा०—अडविं जाव पविट्ठा।
८. सं० पा०—पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे।
९. सं०पा०—कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह।
१०. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता।
११. सं० पा०—वीसाएमाणा जाव विहरंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणा आयंता चोक्खा परमसुईभूया तं पुरिसं एवं वयासी--अहो ! णं तुमं देवाणुप्पिया ! जड्डे मूढे अपंडिए णिव्विण्णाणे अणुवएसलद्धे जे णं तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहा फालियंसि वा[1] •तिहा फालियंसि वा चउहा फालियंसि वा संखेज्जहा फालियंसि वा° जोतिं पासित्तए। से एएणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छतराओ ॥

अक्कोसं पइ पएसिस्स वितक्कणा-पदं

७६६. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—जुत्तए णं भंते ! तुब्भं इय छेयाणं दक्खाणं पत्तट्ठाणं[2] कुसलाणं महामईणं विणीयाणं विण्णाणपत्ताणं उवएसलद्धाणं अहं इमीसे[3] महालियाए महच्चपरिसाए मज्झे उच्चावएहिं आओसेहिं आओसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए, उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भंछित्तए, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए ? ॥

केसिस्स समाधाण-पदं

७६७. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कति परिसाओ पण्णत्ताओ ? भंते ! जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खत्तियपरिसा, गाहावइपरिसा, माहणपरिसा, इसिपरिसा।

जाणासि णं तुमं पएसी ! एयासिं चउण्हं परिसाणं कस्स का दंड-णीई पण्णत्ता ? हंता ! जाणामि—जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्झइ, से णं हत्थच्छिण्णए वा पायच्छिण्णए वा सीसच्छिण्णए वा सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ। जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्झइ, से णं तणेण वा वेढेण[4] वा पलालेण वा वेढित्ता अगणिकाएणं झामिज्जइ[5]। जे णं माहणपरिसाए अवरज्झइ, से णं अणिट्ठाहिं अकंताहिं[6] •अप्पियाहिं अमणुण्णाहिं° अमणामाहिं वग्गूहिं उवालभित्ता कुंडियालंछणए वा सूणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ। जे णं इसिपरिसाए अवरज्झइ, से णं णाइअणिट्ठाहिं[7] •णाइअकंताहिं णाइअप्पियाहिं णाइअमणुण्णाहिं° णाइअमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ।

एवं च ताव पएसी ! तुमं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामं वामेणं दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टसि॥

पएसिस्स पडिकूल-वट्टण-हेउ-पदं

७६८. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेणं संलद्धे[8], तए णं ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए[9] •चिंतिए पत्थिए मणोगए° संकप्पे समुप्पज्जित्था—जहा-जहा णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेणं[10]•

१. सं० पा० दुहाफालियंसि वा जोतिं।
२. पट्ठाणं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
३. इमाए (क); इमीसेए (ख, ग, घ, च, छ)।
४. वेंटेण (क); वेंढेण (ख,ग); × (घ)।
५. झाविज्जइ (घ)।
६. सं० पा०—अकंताहिं जाव अमणामाहिं।
७. सं० पा०—णाइअणिट्ठाहिं जाव णाइअमणामाहिं।
८. संलत्ते (क्वचित्)।
९. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव संकप्पे।
१०. सं० पा०—वामेणं जाव विवच्चासं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं° विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिस्सामि, तहा-तहा णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च, दंसणं च दंसणोवलंभं च, जीवं च जीवोवलंभं च उवलभिस्सामि। तं एएणं कारणेणं अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं[1] •दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं° विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए ॥

ववहारग-पदं

७६९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारगा पण्णत्ता ? हंता जाणामि, चत्तारि ववहारगा पण्णत्ता—देइ नामेगे णो सण्णवेइ। सण्णवेइ नामेगे नो देइ। एगे देइ वि सण्णवेइ वि। एगे णो देइ णो सण्णवेइ। जाणासि णं तुमं पएसी ! एएसि चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी ? के अव्ववहारी ? हंता जाणामि—तत्थ णं जेसे पुरिसे देइ णो सण्णवेइ, से णं पुरिसे ववहारी। तत्थ णं जेसे पुरिसे णो देइ सण्णवेइ, से णं पुरिसे ववहारी। तत्थ णं जेसे पुरिसे देइ वि सण्णवेइ वि, से पुरिसे ववहारी। तत्थ णं जेसे पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ, से णं अववहारी। 'एवामेव तुमं पि ववहारी, णो चेव णं तुमं पएसी ! अववहारी'[2] ॥

जीवोवदंसणट्ठं-निवेदण-पदं

७७०. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! 'इय छेया'[3] दक्खा[4] •पत्तट्ठा कुसला महामई विणीया विण्णाणपत्ता° उवएसलद्धा, समत्था णं भंते ! ममं करयलंसि वा[5] आमलयं जीवं सरीराओ अभिणिवट्टित्ताणं उवदंसित्तए ? ॥

केसिस्स समाधाण-पदं

७७१. तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते[6]। तणवणस्सइकाए एयइ वेयइ चलइ फंदइ घट्टइ[7] उदीरइ, तं तं भावं परिणमइ। तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—पाससि णं तुमं पएसी राया ! एयं तणवणस्सइकायं एयंतं[8] •वेयंतं चलंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरंतं° तं तं भावं परिणमंतं ? हंता पासामि। जाणासि णं तुमं पएसी ! एयं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ ? असुरो वा चालेइ ? णागो वा चालेइ ? किण्णरो वा चालेइ ? किंपुरिसो वा चालेइ ? महोरगो वा चालेइ ? गंधव्वो वा चालेइ ? हंता जाणामि—णो देवो चालेइ[9], •णो असुरो चालेइ, णो णागो चालेइ, णो किण्णरो चालेइ, णो किंपुरिसो चालेइ, णो महोरगो चालेइ° णो गंधव्वो चालेइ, वाउयाए चालेइ।
पाससि णं तुमं पएसी ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं ? णो तिणट्ठे समट्ठे।

---

१. सं० पा०– वामेणं जाव विवच्चासं।
२. एवामेव णो चेव णं तुमं पएसी अववहारी ववहारी (क, ख, ग, घ, च)।
३. अइछेया (क)।
४. सं० पा०—दक्खा जाव उवएसलद्धा।
५. व्वा (क)।
६. संजुत्ते (क, ख, ग, घ, च, छ)।
७. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
८. सं० पा०—एयंतं जाव तं तं।
९. सं० पा०—चालेइ जाव णो गंधव्वो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ णं तुमं पएसी ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स[1] •सकम्मस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स° ससरीरस्स रूवं न पाससि, तं कहं णं पएसी ! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं [सरीराओ अभिणिवट्टित्ताणं ?] उवदंसिस्सामि ?
एवं खलु पएसी ! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं, वायं, अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा नो वा करिस्सइ। एताणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकायं[2] •अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं, वायं, अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा° णो वा करिस्सइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो[3] •अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं°।

हत्थि-कुंथु-जीव समाणत्त-पदं

७७२. तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—से णूणं भंते ! हत्थिस्स कुंथुस्स य समे चेव जीवे ? हंता पएसी ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे। से णूणं भंते ! हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव 'अप्पासवतराए चेव'[4] [5]•अप्पाहारतराए चेव अप्पनीहारतराए चेव अप्पुस्सासतराए चेव अप्पनीसासतराए चेव अप्पिड्ढितराए चेव अप्पमहतराए चेव अप्पज्जुइतराए चेव° ? कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरिय[6]•तराए चेव महासवतराए चेव महाहारतराए चेव महानीहारतराए चेव महाउस्सासतराए चेव महानीसासतराए चेव महिड्ढितराए चेव महामहतराए चेव महज्जुइतराए चेव ?°।
हंता पएसी ! हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव[7], •हत्थीओ कुंथू अप्पकिरियतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महाकिरियतराए चेव, हत्थीओ कुंथू अप्पासवतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महासवतराए चेव, एवं आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइएहिं हत्थीओ कुंथू अप्पतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महातराए चेव°।
कम्हा णं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?
पएसी ! से जहाणामए कूडागारसाला सिया[8]—•दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवाय° गंभीरा। अह णं केइ पुरिसे जोइं व दीवं व गहाय तं कूडागारसालं अंतो-अंतो अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण-निचिय-निरंतर-णिच्छिड्डाइं दुवार-वयणाइं पिहेति, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा। तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो-अंतो ओभासेइ उज्जोवेइ तावेति पभासेइ, णो चेव णं बाहिं।

१. सं० पा०—सरूविस्स जाव ससरीरस्स।
२. सं० पा०—धम्मत्थिकायं जाव णो।
३. सं० पा०—जीवो तं चेव।
४. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
५. सं० पा०—एवं आहार नीहार उस्सास नीसास इड्ढि महज्जुइ अप्पतराए चेव।
६. सं० पा०—महाकिरिय जाव हंता।
७. सं० पा०—महाकम्मतराए चेव तं चेव।
८. सं० पा०—सिया जाव गंभीरा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह णं से पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इड्डरयं अंतो-अंतो ओभासेइ उज्जोवेइ तावेति पभासेइ, णो चेव णं इड्डरगस्स बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं, णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं। एवं--गोकिलिजेणं[1] 'पच्छियापिडएणं गंडमाणियाए'[2] 'आढएणं अद्धाढएणं पत्थएणं अद्धपत्थएणं कुलवेणं अद्धकुलवेणं चाउब्भाइयाए अट्ठभाइयाए सोलसियाए बत्तीसियाए चउसट्ठियाए'[3] अहं णं से पुरिसे तं पईवं दीवचंपएणं पिहेज्जा। तए णं से पदीवे दीवचंपगस्स अंतो-अंतो ओभासेति उज्जोवेइ तावेति पभासेइ, नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं, नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं णो चेव णं कूडागारसालं, णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं। एवामेव पएसी ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपदेसेहिं सचित्तीकरेइ—खुड्डियं वा महालियं वा। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो[4] °अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ॥

कुल-परंपरागयदिट्ठि-अच्छड्डण-पदं

७७३. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एस सण्णा[5] °एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस° समोसरणे, जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं।

तयाणंतरं च णं ममं पिउणो वि एस सण्णा[6] °एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे, जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं°।

तयाणंतरं मम वि एस सण्णा[7] °एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे, जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं°।

तं नो खलु अहं बहुपुरिसपरंपरागयं कुलणिस्सियं दिट्ठिं छड्डेस्सामि[8] ॥

अयहारग-दिट्ठंत-पदं

७७४. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिरायं एवं वयासी—मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भवेज्जासि, जहा व से पुरिसे अयहारए। के णं भंते ! से अयहारए ? पएसी ! से जहाणामए—केइ पुरिसा अत्थत्थी अत्थगवेसी अत्थलुद्धगा अत्थकंखिया अत्थपिवासिया अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाण-पत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं[9] छिण्णावायं° दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए[10] °छिण्णावायाए दीहमद्धाए° अडवीए कंचि देसं

---

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

२. गंडमाणियाए पच्छिपिडएणं (क,च); गंडमाणियाए पडिपिडएणं (ख,ग); गंडमाणियाए पिच्छिपिडिएणं (छ)।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।

४. सं० पा०—जीवो तं चेव।

५. सं० पा०—एस सण्णा जाव समोसरणे।

६. सं० पा०—एस सण्णा।

७. सं० पा०—एस सण्णा जाव समोसरणे।

८. छंड्डिस्सामि (च)।

९. अकामियं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१०. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुप्पत्ता समाणा एगमहं अयागरं पासंति—अएणं सव्वतो समंता आइण्णं विच्छिण्णं[1] सच्छडं[2] उवच्छडं[3] फुडं अवगाढं गाढं पासंति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[4] •चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°-हियया अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! अयभंडे इट्ठे कंते[5] •पिए मणुण्णे° मणामे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अयभारयं बंधित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं बंधंति, बंधित्ता अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए[6] •छिण्णावायाए दीहमद्धाए° अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति—तउएणं आइण्णं[7] •विच्छिण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं अवगाढं गाढं पासंति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया अण्णमण्णं सद्दावेंति°, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे[8] •इट्ठे कंते पिए मणुण्णे° मणामे। अप्पेणं चेव तउएणं सुबहुं अए लब्भति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अयभारयं छड्डेत्ता तउयभारयं बंधित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं छड्डेंति तउयभारं बंधंति।

तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्डेत्तए, तउयभारं बंधित्तए। तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे[9] •इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे। अप्पेणं चेव तउएणं° सुबहुं अए लब्भति। तं छड्डेहि णं देवाणुप्पिया ! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—दूराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, चिराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, अइगाढबंधणबद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, असिलिट्ठबंधणबद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, धणियबंधणबद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए—णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए।

तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएंति बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए[10] वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

[11]•तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं तंबागरं पासंति—.......तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं रुप्पागरं पासंति—.......तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता

---

१. विणिच्छिण्ण (क,च) ; विणिकिण्णं (घ); विण्णिच्छिण्णं (छ)।
२. सच्छड्डं (क,ख,ग); सघडं (घ); संत्थडं (च); सच्छण्णं (छ)।
३. उवत्थडं (च,छ)।
४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
५. सं० पा०—कंते जाव मणामे।
६. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए।
७. सं० पा०—आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता।
८. सं० पा०—तउयभंडे जाव मणामे।
९. सं० पा०—तउयभंडे जाव सुबहुं।
१०. विण्णवित्तए (क,ख,ग,घ,छ)।
११. सं० पा०—एवं तंबागरं रुप्पागरं सुवण्णागरं रयणागरं वइरागरं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणा एगं महं सुवण्णागरं पासंति ''''' तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं रयणागरं पासंति''''''' तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं वइरागरं पासंति—वइरेणं आइण्णं विच्छिण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं अवगाढं गाढं पासंति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाणहियया अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! वइरभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे। अप्पेणं चेव वइरेणं सुबहुं रयणे लब्भति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! रयणभारयं छड्डेत्ता वइरभारयं बंधित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, रयणभारं छड्डेंति वइरभारं बंधंति।

तए णं से पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्डेत्तए, वइरभारं बंधित्तए। तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! वइरभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे। अप्पेणं चेव वइरेणं सुबहुं अए लब्भति। तं छड्डेहि णं देवाणुप्पिया ! अयभारगं, वइर-भारगं बंधाहि।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—दूराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, चिराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, अइगाढबंधणबद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, असिलिट्ठबंधणबद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, धणियबंधणबद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए—णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता वइरभारयं बंधित्तए।

तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएंति बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया°।

तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं-साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति, वइर-वेयणं करेंति, सुबहुं दासी-दास-गो-महिस-गवेलगं गिण्हंति, अट्ठतलमूसिय[1]-पासायवडेंसगे करावेंति, ण्हाया कयबलिकम्मा उप्पिं पासायवरगया फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइ-बद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणा उवगिज्जमाणा उवलालिज्जमाणा इट्ठे सद्द-फरिस[2]-•रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणा° विहरंति।

तए णं से पुरिसे अयभारए[3] जेणेव सए नगरे तेणेव उवागच्छइ, अयभारगं गहाय वेयणं[4] करेति। तंसि अयपुग्गलंसि निट्ठियंसि झीणपरिव्वए[5] ते पुरिसे उप्पिं पासायवरगए[6] •फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए

---

१. °मूलिय (क,ख,ग,च,छ)।

२. सं० पा०—फरिस जाव विहरंति।

३. पूर्वं 'अयहारए' इति पाठो दृश्यते।

४. अयवेयणं (क, ख, ग, च, छ)।

५. °परिसाए (क)।

६. सं० पा०—पासायवरगए जाव विहरमाणे; अत्र 'पच्चणुभवमाणे पासति' इत्यनेनैवार्थं संगतिर्जायते। 'पच्चणुभवमाणे विहरमाणे' द्विरुक्तमिवाभाति, किन्तु सर्वेषु आदर्शेषु इत्थमेव पाठो लभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चणुभवमाणे° विहरमाणे पासति, पासित्ता एवं वयासी—अहो णं अहं अधण्णे अपुण्णे अकयत्थे अकयलक्खणे हिरिसिरिवज्जिए[1] हीणपुण्ण-चाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे। जति णं अहं मित्ताण वा णाईण वा नियगाण वा सुणेंतओ तो णं अहं पि एवं चेव उप्पिं पासायवरगए[2] •फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे° विहरंतो।

से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ—मा णं तुमं पएसी! पच्छाणुताविए भवेज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारए॥

पएसिस्स गिहिधम्म-पडिवज्जण पदं

७७५. एत्थ णं से पएसी राया संबुद्धे केसिं कुमार-समणं वंदइ[3] •नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—णो खलु भंते! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि, जहा व से पुरिसे अयभारए, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि। धम्मकहा जहा[4] चित्तस्स गिहिधम्मं पडिवज्जइ, जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

आयरिय-विणयपडिवत्ति-पदं

७७६. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी! कइ आयरिया पण्णत्ता? हंता जाणामि, तओ आयरिआ पण्णत्ता, तंजहा—कलायरिए, सिप्पायरिए, धम्मायरिए।

जाणासि णं तुमं पएसी! तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा? हंता जाणामि—कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं[5] संमज्जणं वा करेज्जा, पुप्फाणि वा आणवेज्जा, मज्जावेज्जा, मंडावेज्जा[6], भोयावेज्जा वा, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा, पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा।

जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा तत्थेव वंदेज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा सम्माणेज्जा, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा, फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवणिमंतेज्जा।

एवं च ताव तुमं पएसी! एवं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामं वामेणं[7] •दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं° वट्टित्ता ममं एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

पएसिस्स अत्त-निवेदण-पदं

७७७. तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु भंते! मम एयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं

---

१. °परिवज्जिए (क, ख, ग, च, छ)।
२. सं० पा०—पासायवरगए जाव विहरंतो।
३. सं० पा०—वंदइ जाव एवं।
४. राय० सू० ६६३।
५. उलेवणं (क, च, छ)।
६. मुंडावेज्जा (क, छ)।
७. सं० पा०—वामेणं जाव वट्टित्ता।
८. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं[1] •दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं° वट्टिए, तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-णलिणिसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अंतेउर-परियालसद्धिं संपरिवुडस्स[2] देवाणुप्पिए वंदित्ता नमंसित्ता एतमट्ठं भुज्जो-भुज्जो सम्मं विणएणं खामित्तए त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

पएसिस्स खामणा-पदं

७७८. तए णं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[3] •फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-णलिणिसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे° तेयसा जलंते हट्ठतुट्ठ[4] •चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए जहेव कूणिए तहेव[5] निग्गच्छइ—अंतेउर-परियालसद्धिं संपरिवुडे, पंचविहेणं अभिगमेणं[6] •अभिगच्छइ, [तंजहा—सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए, एगसाडियं उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीभावकरणेणं][7]। केसिं कुमार-समणं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता° वंदइ नमंसइ, एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो सम्मं विणएणं खामेइ ॥

चाउज्जामधम्म-कहण-पदं

७७९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिस्स रण्णो सूरियकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसे य महतिमहालियाए महच्चपरिसाए[8] •चाउज्जामं° धम्मं परिकहेइ[9] ॥

रमणिज्ज-अरमणिज्ज-पदं

७८०. तए[10] णं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाए उट्ठेति, केसिं कुमार-

---

१. सं० पा०—वामेणं जाव वट्टित्ता ।
२. परिवुडस्स (क, ख, ग, च) ।
३. सं० पा०—रयणीए जाव तेयसा ।
४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
५. ओ० सू० ६३-७० ।
६. सं० पा०—अभिगमेणं जाव वंदइ ।
७. कोष्ठकवर्तिपाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।
८. सं० पा०—महच्चपरिसाए जाव धम्मं ।
९. राय० सू० ६९३ ।
१०. केशिस्वामिना प्रदेशिराजस्य चातुर्यामः धर्मः कथितः । (द्रष्टव्यं सू० ७७९) प्रदेशिराजेन च देशरूपेण चातुर्यामः धर्मः स्वीकृतः । (द्रष्टव्यं सू० ७९६) किन्तु अत्र तत्स्वीकारस्य नास्ति कश्चिदुल्लेखः । ७९६ सूत्रे 'पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए' इत्यादि उल्लिखितमस्ति किन्तु इह नास्ति तस्योल्लेखः, तेनेति प्रतीयतेसौ पाठः संक्षिप्तपद्धत्या त्रुटितो जातः । प्रकरणानुसारेणात्र इत्थं पाठो युज्यते—तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।

तए णं से पएसी राया केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसिं कुमार-समणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणं वंदइ नमंसइ, जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

७८१. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—मा णं तुमं पएसी ! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा[1] अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा—से वणसंडेइ वा, णट्ट-सालाइ वा, इक्खुवाडेइ वा, खलवाडेइ वा ।।

७८२. कहं णं भंते[2] ! •वणसंडे पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवति ? पएसी !—जया णं° वणसंडे पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ, तया णं वणसंडे रमणिज्जे भवति । जया णं वणसंडे नो पत्तिए नो पुप्फिए नो फलिए नो हरियगरेरिज्जमाणे णो सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ तया णं जुण्णे झडे[3] परिसडिय-पंडुपत्ते सुक्करुक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ, तया णं वणसंडे[4] णो रमणिज्जे भवति ।।

७८३. [कहं[5] णं भंते ! णट्टसाला पुव्विं रमणिज्जा भवित्ता पच्छा अरमणिज्जा भवति ? पएसी ! ?] जया णं णट्टसाला गिज्जइ[6] वाइज्जइ नच्चिज्जइ अभिणिज्जइ हसिज्जइ रमिज्जइ, तया णं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ । जया णं णट्टसाला णो गिज्जइ[7] •णो वाइज्जइ णो नच्चिज्जइ णो अभिणिज्जइ णो हसिज्जइ° णो रमिज्जइ, तया णं णट्टसाला अरमणिज्जा भवइ ।।

तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं । पत्तियामि णं भंते ! निग्गथं पावयणं । रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं । तहमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं । अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! जं णं तुब्भे वदह त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव—सू० ६८८ इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं, एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, णो खलु अहं तहा संचाएमि चिच्चा हिरण्णं, एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए चाउज्जामियं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

तए णं से पएसी राया केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए चाउज्जामियं गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ।

तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

१. पच्छा मा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
२. सं० पा०—भंते ! वणसंडे ।
३. डोडे (क, ख, ग, घ); झाडे (च, छ) ।
४. वणे (क, च, छ) ।
५. ७८३, ७८४, ७८५ : कोष्ठकवर्तिपाठः पूर्व-सूत्रक्रमेण पूरितोस्ति ।
६. वइगिज्जइ (च, छ) ।
७. सं० पा०—गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७८४. [कहं णं भंते ! इक्खुवाडे पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवति ? पएसी ! ?] जया णं इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ लुज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ, तया णं इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ। जया णं इक्खुवाडे णो छिज्जइ[1] •णो भिज्जइ णो लुज्जइ णो खज्जइ णो पिज्जइ णो दिज्जइ°, तया णं इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ ।।

७८५. [कहं णं भंते ! खलवाडे पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवति ? पएसी ! ?] जया णं खलवाडे उच्छुब्भइ उडुइज्जइ[2] मलइज्जइ पुणिज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ, तया णं खलवाडे रमणिज्जे भवति। जया णं खलवाडे णो उच्छुब्भइ[3] •णो उडुइज्जइ णो मलइज्जइ नो पुणिज्जइ नो खज्जइ णो पिज्जइ णो दिज्जइ, तया णं खलवाडे° अरमणिज्जे भवति ।।

७८६. से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ—मा णं तुमं पएसी ! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा—से वणसंडेइ वा[4] •णट्टसालाइ वा, इक्खुवाडेइ वा° खलवाडेइ वा ।।

७८७. तए णं पएसी केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—णो खलु भंते ! अहं पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि, जहा—से वणसंडेइ वा[5] •णट्टसालाइ वा, इक्खुवाडेइ वा° खलवाडेइ वा,—अहं णं सेयबियापामोक्खाइं[6] सत्तगामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि—एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि, एगं भागं कोट्ठागारे छुभिस्सामि, एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि, एगेणं भागेणं महतिमहालियं कूडागारसालं करिस्सामि। तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिण्णभइ-भत्त-वेयणेहिं विउलं असणं पाणं साइमं खाइमं उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-भिक्खुयाणं पंथिय[7]-पहियाणं परिभाएमाणे, बहूहिं सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं[8] •अप्पाणं भावेमाणे° विहरिस्सामि त्ति कट्टु जामेव दिसिं[9] पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

पएसिणा रज्जस्स चउभाग-करण-पदं

७८८. तए णं से पएसी राया कल्लं[10] •पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोग-पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-णलिणिसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे° तेयसा जलंते सेयवियापामोक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारिभाए करेइ—एगं भागं बलवाहणस्स दलयइ[11],

१. सं० पा०—छिज्जइ जाव तया णं।
२. उड° (क, घ, च)।
३. सं० पा०—उच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे।
४. सं० पा०—वणसंडे इ वा।
५. सं० पा०—वणसंडे इ वा जाव खलवाडे।
६. °समक्खाइं (च, छ)।
७. पंथियाणं (क)।
८. सं० पा०— पोसहोववासस्स जाव विहरिस्सामि; औपपातिके (सू० १२०) अयं पाठः इत्थं लभ्यते—पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।' सूत्रकृताङ्गे (२।२।७२) पि इत्थमेव—'पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।'
९. दिसं (क)।
१०. सं० पा०—कल्लं जाव तेयसा।
११. सं० पा०—दलयइ जाव कूडागारसालं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°एगं भागं कोट्ठागारे छुभइ, एगं भागं अंतेउरस्स दलयइ, एगेणं भागेणं महतिमहालियं° कूडागारसालं करेइ।

तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं[1] °दिण्णभइ-भत्त-वेयणेहिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं° उवक्खडावेत्ता बहूणं समण[2]-°माहण-भिक्खुयाणं पंथिय-पहियाणं° परिभाएमाणे विहरइ॥

पएसिस्स समणोवासयत्त-पदं

७८९. तए णं से पएसी राया समणोवासए अभिगयजीवाजीवे[3] °उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंधप्पमोक्ख-कुसले असहिज्जे देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे अभिगयट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघर-प्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे, समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणे-पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ॥

पएसिस्स रज्जोवरइ-पदं

७९०. जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरति॥

सूरियकंताए सूरियकंतेण मंतणा-पदं

७९१. तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए[4] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था— जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं[5] °च बलं च वाहणं च कोट्ठागारं च पुरं च° अंतेउरं च ममं जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे पएसिं रायं केणवि सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा उद्दवेत्ता[6] सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता सयमेव रज्जसिरिं 'कारेमाणीए पालेमाणीए'[7] विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च[8] °रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च° अंतेउरं च ममं जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु तव पुत्ता! पएसिं रायं केणइ सत्थप्पओगेण वा[9] °अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण

---

१. सं० पा०—पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता।
२. सं० पा०—समण जाव परिभाएमाणे।
३. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे····विहरइ।
४. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
५. रट्ठं जाव अंतेउरं।
६. उवद्दवेत्ता (छ)।
७. कारेमाणी पालेमाणी (छ)।
८. सं० पा०—रज्जं च जाव अंतेउरं।
९. सं० पा०—सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवेत्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा° उद्दवेत्ता सयमेव रज्जसिरिं 'कारेमाणस्स पालेमाणस्स'[1] विहरित्तए ॥

७६२. तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

सूरियकंताए विसप्पओग-पदं

७६३. तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—मा णं सूरियकंते कुमारे पएसिस्स रण्णो इमं रहस्सभेयं करिस्सइ त्ति कट्टु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणि य मम्माणि[3] य रहस्साणि य विवराणि[4] य अंतराणि य पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

७६४. तए णं सूरियकंता देवी अण्णया कयाइ पएसिस्स रण्णो अंतरं जाणइ, जाणित्ता असणं[5] •पाणं खाइमं° साइमं 'सव्व-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं'[6] विसप्पजोगं पउंजइ । पएसिस्स रण्णो ण्हायस्स[7] •कयबलिकम्मस्स कयकोउय-मंगल° पायच्छित्तस्स सुहासणवरगयस्स तं विससंजुत्तं असणं[8] •पाणं खाइमं साइमं सव्व-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं° निसिरेइ ॥

पएसिस्स समाहि-मरण-पदं

७६५. तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो तं विससंजुत्तं असणं आहारेमाणस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला विपुला पगाढा कक्कसा कडुया 'फरुसा निट्ठुरा'[9] चंडा[10] तिव्वा दुक्खा दुग्गा दुरहियासा, पित्तजरपरिगयसरीरे 'दाहवक्कंतिए यावि'[11] विहरइ ॥

७६६. तए णं से पएसी राया सूरियकंताए देवीए अ-प्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, पोसहसालं पविसइ[12], उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, दब्भसंथारगं संथरेइ, दब्भसंथारगं दुरुहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[13] सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं केसिस्स कुमार-समणस्स मम 'धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स'[14] वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासइ मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ । पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए[15] पच्चक्खाए

---

१. कारेमाणे पालेमाणे (क, छ) ।
२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
३. वम्माणि (च) ।
४. विहुराणि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५. सं० पा०—असणं जाव साइमं ।
६. वत्थं गंधं सव्वालंकारं (क); सव्वत्थ° (च, छ) ।
७. सं० पा०—ण्हायस्स जाव पायच्छित्तस्स ।
८. सं० पा०—असणं जाव अलंकारं ।
९. × (क, ख, ग, च, छ) ।
१०. वंता (क, च, छ) ।
११. दाहवक्कंतिया वि (क,ख,ग,घ,च,छ,वृ) ।
१२. पमज्जइ (च) ।
१३. राय° सू० ८ ।
१४. धम्मोवएसट्ठाणस्स (क, ख, ग, घ, छ); × (च) ।
१५. सं० पा०—पच्चक्खाए जाव परिग्गहे; ७७९ सूत्रानुसारेण केशिस्वामिना प्रदेशिराजाय चातुर्यामिको धर्मः कथितः । ७८० सूत्रस्य पादटिप्पणगतपाठानुसारेण प्रदेशिराजेन केशिस्वामिनोन्तिके चातुर्यामिको गृहिधर्मः स्वीकृतः । प्रस्तुतसूत्रे पूर्वोक्तपाठानां संदर्भे एवासौ पाठः पूरितः तेनात्र चातुर्यामिक-गहिधर्मस्यैव पाठो युज्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•थूलए मुसावाए पच्चक्खाए, थूलए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए, थूलए °परिग्गहे पच्चक्खाए, तं इयाणिं पि णं तस्सेव भगवतो अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि[1] •सव्वं मुसावायं पच्चक्खामि सव्वं° अदिण्णादाणं पच्चक्खामि सव्वं° परिग्गहं पच्चक्खामि सव्वं—कोहं[2], •माणं, मायं, लोहं, पेज्जं, दोसं, कलहं, अब्भक्खाणं, पेसुण्णं, परपरिवायं, अरइरइं, मायामोसं°, मिच्छादंसणसल्लं, अकरणिज्जं जोयं पच्चक्खामि। सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि। जं पि य मे सरीरं इट्ठं[3] •कंतं पियं मणुण्णं मणामं पेज्जं वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सण्णिवाइय[4] विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा° फुसंतु त्ति एयं पि य णं चरिमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए[5] •देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिते अंगुलस्स असंखेज्जतिभागमेत्तीए ओगाहणाए सूरियाभदेवत्ताए° उववण्णे॥

सूरियाभ-देव-पदं

७९७. तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववण्णए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छति, [तंजहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आण-पाणपज्जत्तीए भास-मणपज्जत्तीए][6]। तं एवं खलु गोयमा! सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए॥

७९८. सूरियाभस्स णं भंते! देवस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता?
गोयमा! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता॥

दढपइण्णग-पदं

७९९. से णं सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिति?
गोयमा! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति—अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं वित्थिण्ण-विपुल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइं बहुधण-बहुजातरूव-रययाइं 'आओग-पओग-संपउत्ताइं'[7] विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं तत्थ अण्णयरेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चाइस्सइ॥

८००. तए[8] णं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि अम्मापिऊणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ॥

८०१. तए णं तस्स दारयस्स नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं

---

१. सं० पा०—पच्चक्खामि जाव परिग्गहं।
२. सं० पा०—कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं।
३. सं० पा०—इट्ठं जाव फुसंतु।
४. इह प्रथमा बहुवचनलोपो दृश्यते।
५. सं० पा०—उववायसभाए जाव उववण्णे।
६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।
७. × (क,ख,ग,घ,च,छ)।
८. प्रस्तुतागमे औपपातिकसूत्रे च दृढप्रतिज्ञस्य प्रकरणं प्रायः समानमस्ति, केवलं पाठरचनायाः किञ्चित्-किञ्चिद् भेदो दृश्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वितिक्कंताणं[1] सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससि-सोमाकारं[2] कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाहिइ ॥

८०२. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठितिवडियं करेस्संति ततिय दिवसे चंदसूरदंसणगं करेस्संति छट्ठे दिवसे जागरियं[3] जागरिस्संति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसमे[4] दिवसे णिव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे चोक्खे संमज्जिओवलित्ते विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेस्संति, मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा[5] •कयकोउयमंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिता अप्पमहग्घाभरणा° लंकिया भोयणमंडवंसि सुहासणवरगया तेणं मित्त-णाइ[6]-•णियग-सयण-संबंधि°-परिजणेण सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा वीसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं 'च णं'[7] विहरिस्संति। जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्त-णाइ[8]-•णियग-सयण-संबंधि°-परिजणं विउलेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेस्संति सम्माणिस्संति, तस्सेव मित्त[9]-•णाइ-णियग-सयण-संबंधि°-परिजणस्स पुरतो एवं वइस्संति —जम्हा णं देवाणुप्पिया ! इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया, 'तं होउ णं अम्हं एयस्स दारयस्स दढपइण्णे णामे णं'[10] ॥

८०३. तए णं तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठितिवडियं च चंदसूरदरिसणं च जागरियं च नामधिज्जकरणं च 'पजेमणगं च'[11] पचंकमणगं च कण्णवेहणं च संवच्छरपडिलेहणगं च 'चूलोवणयं च'[12] अण्णाणि य बहूणि गब्भाहाणजम्मणाइयाइं महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं करिस्संति ॥

८०४. तए णं दढपतिण्णे दारगे पंचधाईपरिक्खित्ते—[खीरधाईए 'मज्जणधाईए मंडणधाईए अंकधाईए कीलावणधाईए'[13]], अण्णाहिं बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं

---

१. अत्र 'सा' इति कर्तृपदं अध्याहार्यम्। द्रष्टव्यं ठाणं ६।६२ सूत्रम्।

२. सोम्मा° (क, ख, ग)।

३. धम्मजागरियं (क)।

४. बारसाहे (क, च)।

५. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव लंकिया।

६. सं० पा०—णाइ जाव परिजणेण।

७. चेव णं (क, ख, ग, च, छ)।

८. सं० पा०—णाइ जाव परिजणं।

९. सं० पा०—मित्त जाव परिजणस्स।

१०. तं होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे णामेणं। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति दढपइण्णत्ति (ओ० सू० १४४)।

११. पुरगामणं च पंथगामणं च पज्जेमामणगं च पिंडवद्धावणगं च पज्जमाणगं च (क); परंगामणं च पंचगामणं च पजेगामणगं च पिंडवद्धावणगं च पज्जमाणगं च (ख, ग, च); पगामणं च पचंकमणं च पजेपमाणगं च पिंडवद्धावणगं च पज्जमाणगं च (छ)।

१२. चोलावणं च उवणयं च (क, ख, ग, घ); चोलविणं च (च)।

१३. मंडणधाईए मज्जणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए (वृ)। कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वामणियाहिं वडभियाहिं बब्बरियाहिं बउसियाहिं[1] जोणियाहिं पल्हवियाहिं[2] ईसिणियाहिं थारुइणियाहिं[3] लासियाहिं लउसियाहिं दमिलाहिं सिंहलीहिं[4] पुलिंदीहिं आरबीहिं पक्कणीहिं बहलीहिं मुरंडीहिं[5] सबरीहिं[6] पारसीहिं णाणादेसीहिं विदेस-परिमंडियाहिं 'इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणयाहिं सदेश-णेवत्थ-गहिय-वेसाहिं'[7] निउणकुसलाहिं विणीयाहिं, चेडिया-चक्कवाल-वरतरुणिवंद-परियाल-संपरिवुडे वरिसधर[8]-कंचुइमहयरवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे-साहरिज्जमाणे उवणचिज्जमाणे-उवणचिज्जमाणे 'अंकाओ अंकं'[9] परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे 'उवगाइज्जमाणे-उवगाइज्जमाणे'[10] उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे 'उवगूहिज्जमाणे-उवगूहिज्जमाणे'[11] अवतासिज्जमाणे-अवतासिज्जमाणे 'परिवंदिज्जमाणे-परिवंदिज्जमाणे'[12] परिचुंबिज्जमाणे-परिचुंबिज्जमाणे रम्मेसु मणिकोट्टिम-तलेसु परंगमाणे परंगमाणे[13] गिरिकंदरमल्लीणे विव[14] चंपगवरपायवे णिव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढिस्सइ ।।

८०५. तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो सातिरेगअट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरण-णक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिंति ।।

८०६. तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउण-रुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अत्थओ य गंथओ य 'करणओ य'[15] 'सिक्खावेहिइ सेहावेहिइ'[16], तं जहा—१. लेहं २. गणियं ३. रूवं ४. नट्टं ५. गीयं ६. वाइयं ७. सरगयं ८. पुक्खरगयं ९. समतालं १०. जूयं ११. जणवायं[17] १२. पासगं १३. अट्ठावयं १४. पोरेकव्वं १५. दगमट्टियं १६. अन्नविहिं १७. पाणविहिं १८. वत्थविहिं १९. विलेवणविहिं २०. सयणविहिं २१. अज्जं[18] २२. पहेलियं २३. मागहियं[19] २४. गाहं २५. गीइयं[20] २६. सिलोगं २७. हिरण्णजुत्तिं २८. सुवण्णजुत्तिं २९. आभरणविहिं ३०. तरुणीपडिकम्मं ३१. इत्थिलक्खणं ३२. पुरिसलक्खणं ३३. हयलक्खणं ३४.

---

१. बक्क° (क); चउ° (ख, ग, च); पउसियाहिं (ओ० सू० ७०)।
२. पण्ण° (ख, ग, घ, च)।
३. बारुणियाहिं (क, च, छ); दारुणिणियाहिं (ख, ग, घ)।
४. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
५. मरुंडीहिं (ओ० सू० ७०)।
६. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
७. सदेसनेवच्छगहियवेसाहिं इंगियचिंतियपत्थिय-वियाणियाहिं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
८. वरिसवर (क, ख, ग, घ, च, छ)।
९. अंगेण अंगं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१०. परिगीयमानः (वृ)।
११. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१२. × (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१३. औपपातिक १४४ सूत्रस्य वाचनान्तरे—'परंगिज्जमाणे' इति पाठो दृश्यते।
१४. इव (क)।
१५. × (क, ख, ग, घ, च)।
१६. सिक्खावेहि य सेहावेहि य (क); सेहावेहि य सिक्खावेहि य (वृ)।
१७. जणवयं (घ, च, छ)।
१८. अज्जे (क, ख, ग, च)।
१९. मागहियं णिद्दाइयं (घ, च, छ)।
२०. गीयं (च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गयलक्खणं ३५. गोणलक्खणं ३६. कुक्कुडलक्खणं ३७. छत्तलक्खणं ३८. चक्कलक्खणं[1] ३९. दंडलक्खणं ४०. असिलक्खणं ४१. मणिलक्खणं ४२. कागणिलक्खणं[2] ४३. वत्थुविज्जं ४४. णगरमाणं ४५. खंधावारमाणं ४६. चारं ४७. पडिचारं ४८. वूहं ४९. पडिवूहं ५०. चक्कवूहं ५१. गरुलवूहं ५२. सगडवूहं ५३. जुद्धं ५४. निजुद्धं ५५. जुद्धजुद्धं[3] ५६. अट्ठिजुद्धं ५७. मुट्ठिजुद्धं ५८. बाहुजुद्धं ५९. लयाजुद्धं ६०. ईसत्थं ६१. छरुप्पवायं ६२. धणुवेयं ६३. हिरण्णपागं ६४. सुवण्णपागं[4] ६५. सुत्तखेड्डं[5] ६६. वट्टखेड्डं ६७. णालियाखेड्डं ६८. पत्तच्छेज्जं ६९. कडगच्छेज्जं ७०. सज्जीवं ७१. निज्जीवं ७२. सउणरुयं इति ॥

८०७. तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिइ ॥

८०८. तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति सम्माणिस्संति, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसज्जेहिंति ॥

८०९. तए णं से दढपइण्णे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते बावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए[6] गीयरई गंधव्वणट्टकुसले सिंगारागारचारुरूवे[7] संगय-गय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलास-णिउण-जुत्तोवयारकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी यावि भविस्सइ ॥

८१०. तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं[8] °विण्णयपरिणयमित्तं जोव्वणगमणुपत्तं बावत्तरिकलापंडियं णवंगसुत्तपडिबोहियं अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारयं गीयरइं गंधव्वणट्टकुसलं सिंगारागारचारुरूवं संगय-गय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलास-णिउण-जुत्तोवयारकुसलं हयजोहिं गयजोहिं रहजोहिं बाहुजोहिं बाहुप्पमद्दिं अलंभोगसमत्थं साहसियं° वियालचारिं च वियाणित्ता विउलेहिं अण्णभोगेहि य पाणभोगेहि य लेणभोगेहि य वत्थभोगेहि य सयणभोगेहि य उवनिमंतेहिंति ॥

८११. तए णं दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं[9] °पाणभोगेहिं लेणभोगेहिं वत्थभोगेहिं° सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति णो गिज्झिहिति णो मुज्झिहिति णो अज्झोववज्जिहिति । से जहाणामए पउमुप्पलेइ[10] वा पउमेइ वा[11] °कुमुएइ वा नलिणेइ वा सुभगेइ वा सुगंधिएइ वा पोंडरीएइ वा महापोंडरीएइ वा° सयपत्तेइ वा सहस्सपत्तेइ वा

१. × (क, ख, ग) ।
२. कागिणि° (क) ।
३. जुद्धाइजुद्धं (क, ख, ग) ।
४. °पागं मणिपागं धाउपागं (क,ख,ग,घ,च,छ) ।
५. °खेड्डं (क, ख, ग, च, छ) ।
६. °विहदेसप्प° (क, घ) ।
७. भिगारा° (क) ।
८. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावं जाव वियालचारिं ।
९. सं० पा०—अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ।
१०. 'उप्पलेइ' ओ० सू० १५०; अत्रापि 'उप्पलेइ' इति पाठो युक्तोस्ति ।
११. सं० पा०—पउमेइ वा जाव सयसहस्सपत्तेइ वा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंके जाते जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहिं जाए भोगेहिं संवड्ढिए णोवलिप्पिहिति[1] •कामरएणं णोवलिप्पिहिति भोगरएणं णोवलिप्पिहिति° मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं ।।

८१२. से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिति, मुंडे[2] भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सति ।।

८१३. से णं अणगारे भविस्सइ—इरियासमिए[3] •भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए, संखो इव निरंगणे, जीवो विव अप्पडिहयगइ, जच्चकणगं पिव जायरूवे, आदरिसफलगा इव पागडभावे, कुम्मो इव गुत्तिंदिए, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे, गगणमिव निरालंबणे, अणिलो इव निरालए, चंदो इव सोमलेसे, सूरो इव दित्ततेए, सागरो इव गंभीरे, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के, मंदरो इव अप्पकंपे, सारयसलिलं व सुद्धहियए, खग्गविसाणं व एगजाए, भारुंडपक्खी व अप्पमत्ते, कुंजरो इव सोंडीरे, वसभो इव जायत्थामे, सीहो इव दुद्धरिसे, वसुंधरा इव सव्वफासविसहे°, सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते ।।

८१४. तस्स णं भगवतो अणुत्तरेणं णाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्दवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजम-सुचरियतवफल[4]-णिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे णिरावरणे णिव्वाघाए केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ।।

८१५. तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ, सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणिहिति, तं जहा—आगतिं गतिं ठितिं चवणं 'उववायं तक्कं'[5] कडं मणोमाणसियं खइयं भुत्तं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं, अरहा अरहस्सभागी तं कालं तं मणवय-कायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ ।।

८१६. तए णं दढपइण्णे केवली एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं केवलि-परियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता, बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ, जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे केसलोए बंभचेरवासे अण्हाणगं अदंतमणगं अच्छत्तगं अणुवाहणगं भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावमाणाइं परेसिं[6] हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ उच्चावया विरूवरूवा बावीसं परीसहोवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेहिइ, आराहित्ता चरिमेहिं उस्सास-निस्सासेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ।।

---

१. सं० पा०—णोवलिप्पिहिति मित्तणाइ ।

२. केवलं मुंडे (क, च, छ) ।

३. सं० पा०—इरियासमिए जाव सुहुयहुयासणे ।

४. °सुचरियतवसुचरियफल (क,ख,ग,घ,च,छ); सच्चसंजमतवसुचरियसोवचियफल (प० ८१) ।

५. उववायं तत्थं (घ); उववातत्थं (च); उववायतत्थं (छ) ।

६. औपपातिके (सू० १५४) 'परेहिं' पाठो लभ्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८१७. सेवं भंते ! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।
णमो जिणाणं जियभयाणं । णमो सुयदेवयाए भगवतीए । णमो पण्णत्तीए भगवईए । णमो भगवओ अरहओ पासस्स । पस्से सुपस्से पस्सवणी णमो ॥

ग्रन्थ-परिमाण
अक्षर-परिमाण : ६३८६४
अनुष्टुप्-श्लोक-परिमाण : २६३४, अक्षर ६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवाजीवाभिगमे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमा दुविहपडिवत्ती

उक्खेव पदं

१. इह[1] खलु जिणमयं जिणाणुमयं जिणाणुलोमं[2] जिणप्पणीतं जिणपरूवियं जिणक्खायं[3] जिणाणुचिण्णं जिणपण्णत्तं जिणदेसियं जिणपसत्थं अणुवीइ[4] तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा[5] थेरा भगवंतो जीवाजीवाभिगमं णामज्झयणं[6] पण्णवइंसु[7] ॥

२. से किं तं जीवाजीवाभिगमे ? जीवाजीवाभिगमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—जीवाभिगमे य अजीवाभिगमे य ॥

अजीवाभिगम-पदं

३. से किं तं अजीवाभिगमे ? अजीवाभिगमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—रूविअजीवाभिगमे य अरूविअजीवाभिगमे य ॥

४. से किं तं अरूविअजीवाभिगमे ? अरूविअजीवाभिगमे दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकाए [8]धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए° । सेत्तं[9] अरूविअजीवाभिगमे ॥

५. से किं तं रूविअजीवाभिगमे ? रूविअजीवाभिगमे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—खंधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला । ते समासओ पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१. नमो उसभादियाणं चउवीसाए तित्थगराणं (क, ख, ग); नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं नमो उसभादियाणं चउवीसाए तित्थगराणं (ट); हारिभद्रीयवृत्तौ मलयगिरिवृत्तौ च पाठान्तरे लिखितं सूत्रं नास्ति विवृतम्, ताडपत्रीयप्रतावपि एतत् नास्ति लिखितम्, अतः प्रतीयते इदमस्ति अर्वाचीनम् । स्तबकप्रतौ नमस्कारसूत्रमपि लिखितं दृश्यते । एतत् अर्वाचीनतरं संभाव्यते ।

२. × (ख); जिणाणुलोमं जिणदिहियं (ता) ।

३. जिणखायं (ख); जिणखातं जिणाणुभासियं (ता) ।

४. अणुवीतियं (क, ख); अणुपुव्वीए (ग, ट) ।

५. रोतमाणा (ता) ।

६. णाम अज्झयणं (ता) ।

७. पण्णविंसु (ख) ।

८. सं० पा०—एवं जहा पण्णवणाए जाव सेत्तं ।

९. सेतं (क, ख, ग, ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया । 'जे वण्णपरिणता ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालवण्णपरिणता नीलवण्णपरिणता लोहियवण्णपरिणता हालिद्दवण्णपरिणता सुक्किलवण्णपरिणता ।

जे गंधपरिणता ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुब्भिगंधपरिणता य दुब्भिगंधपरिणता य ।

जे रसपरिणता ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—तित्तरसपरिणता कडुयरसपरिणता कसायरसपरिणता अंबिलरसपरिणता महुररसपरिणता ।

जे फासपरिणता ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तं जहा—कक्खडफासपरिणता मउयफासपरिणता गरुयफासपरिणता लहुयफासपरिणता सीयफासपरिणता उसिणफासपरिणता निद्धफासपरिणता लुक्खफासपरिणता ।

जे संठाणपरिणता ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणता वट्टसंठाणपरिणता तंससंठाणपरिणता चउरंससंठाणपरिणता आयतसंठाणपरिणता"[1] । एवं ते जहा[2] पण्णवणाए । सेत्तं रूविअजीवाभिगमे । सेत्तं अजीवाभिगमे ।।

जीवाभिगम-पदं

६. से किं तं जीवाभिगमे ? जीवाभिगमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—संसारसमावण्णजीवाभिगमे[3] य असंसारसमावण्णजीवाभिगमे य ।।

७. से किं तं असंसारसमावण्णजीवाभिगमे ? असंसारसमावण्णजीवाभिगमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणंतरसिद्धासंसारसमावण्णजीवाभिगमे य परंपरसिद्धासंसारसमावण्णजीवाभिगमे य ।।

८. से किं तं अणंतरसिद्धासंसारसमावण्णजीवाभिगमे ? अणंतरसिद्धासंसारसमावण्णजीवाभिगमे पण्णरसविहे पण्णत्ते, तं जहा—तित्थसिद्धा[4] °अतित्थसिद्धा तित्थगरसिद्धा अतित्थगरसिद्धा सयंबुद्धसिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धा बुद्धबोहियसिद्धा इत्थीलिंगसिद्धा पुरिसलिंगसिद्धा नपुंसकलिंगसिद्धा सलिंगसिद्धा अण्णलिंगसिद्धा गिहिलिंगसिद्धा एगसिद्धा° अणेगसिद्धा । सेत्तं अणंतरसिद्धा ।।

९. से किं तं परंपरसिद्धासंसारसमावण्णजीवाभिगमे ? परंपरसिद्धासंसारसमावण्णजीवाभिगमे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—अपढमसमयसिद्धा—दुसमयसिद्धा जाव अणंतसमयसिद्धा । से त्तं परंपरसिद्धासंसारसमावण्णजीवाभिगमे । सेत्तं असंसारसमावण्णजीवाभिगमे ।।

१०. से किं तं संसारसमावण्णजीवाभिगमे ? संसारसमावण्णएसु णं जीवेसु इमाओ णव पडिवत्तीओ एवमाहिज्जंति, तं जहा—

१. एगे एवमाहंसु—दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ।

२. एगे एवमाहंसु—तिविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ।

३. एगे एवमाहंसु—चउव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ।

---

१. एतावान् पाठः आदर्शेषु नास्ति, किन्तु प्रज्ञापनातः (१।४) पूरितोस्ति ।

२. पण्ण० १।४-६ ।

३. °समावण्णगजीवाभिगमे (क, ख, ग, ट) सर्वत्र ।

४. सं० पा०—तित्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. एगे एवमाहंसु—पंचविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ।
५. [1]एगे एवमाहंसु—छव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ।
६. एगे एवमाहंसु—सत्तविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ।
७. एगे एवमाहंसु—अट्ठविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ।
८. एगे एवमाहंसु—नवविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ।
९. एगे एवमाहंसु°—दसविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ।।

११. तत्थ णं जेते[2] एवमाहंसु 'दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता' ते एवमाहंसु तं जहा—तसा चेव थावरा चेव ।।

१२. से किं तं थावरा ? थावरा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइकाइया ।।

पुढविकाइय-पदं

१३. से किं तं पुढविकाइया ? पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइया य बायरपुढविकाइया य ।।

१४. से किं तं सुहुमपुढविकाइया ? सुहुमपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ।

संगहणीगाहा—

सरीरोगाहण-संघयण[3]-संठाणकसाय तह य हुंति सण्णाओ[4] ।
लेसिंदिय-समुग्घाओ, सण्णी वेए य पज्जत्ती ।।१।।
दिट्ठी दंसणनाणे, जोगुवओगे[5] तहा किमाहारे ।
उववाय-ठिई समुग्घाय-चवण-गइरागई चेव ।।२।।

१५. तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए तेयए कम्मए ।।

१६. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलासंखेज्जइभागं[6], उक्कोसेणवि अंगुलासंखेज्जइभागं ।।

१७ तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरा किं संघयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! छेवट्ट-संघयणा[7] पण्णत्ता ।।

१८. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! मसूरचंद-संठिया[8] पण्णत्ता ।।

१९. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए[9] माणकसाए मायाकसाए[10] लोहकसाए ।।

---

१. सं० पा०—एएणं अभिलावेणं जाव दसविहा ।
२. जे (ग) ।
३. संघतण (ता) ।
४. सण्णातो (क) ।
५. जोगुवतोगे (क) ।
६. अंगुलस्स असं° (ट, ता) उभयत्रापि ।
७. छेवट्ठ° (क, ख, ग, ट); सेवट्ट° (ता) ।
८. मसूरगचंद° (ट); मसुराचंदा° (ता) ।
९. कोहकसाते (क) ।
१०. मायकसाए (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा[1] •भयसण्णा मेहुणसण्णा° परिग्गहसण्णा ।।

२१. तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ लेसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तिण्णि[2] लेस्साओ पण्णत्ताओ तं जहा—कण्हलेस्सा[3] नीललेस्सा काउलेस्सा ।।

२२. तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ इंदियाइं पण्णत्ताइं ? गोयमा ! एगे फासिंदिए[4] पण्णत्ते ।।

२३. तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ[5] समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए ।।

२४. ते णं भंते ! जीवा किं सण्णी असण्णी ? गोयमा ! नो सण्णी, असण्णी ।।

२५. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया ? गोयमा ! णो इत्थिवेया णो पुरिसवेया, णपुंसगवेया ।।

२६. तेसि[6] णं भंते ! जीवाणं कइ पज्जत्तीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि पज्जत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारपज्जत्ती सरीरपज्जत्ती इंदियपज्जत्ती आणपाणुपज्जत्ती[7] ।।

२७. तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ अपज्जत्तीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि अपज्जत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारअपज्जत्ती जाव आणापाणुअपज्जत्ती ।।

२८. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी[8] ।।

२९. ते णं भंते ! जीवा किं चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी ? गोयमा ! नो चक्खुदंसणी, अचक्खुदंसणी, नो ओहिदंसणी नो केवलदंसणी ।।

३०. ते णं भंते ! जीवा किं नाणी अण्णाणी ? गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी सुयअण्णाणी[9] य ।।

३१. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी वइजोगी[10] कायजोगी ? गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ।।

३२. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ।।

३३. ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं, कालओ अण्णयरसमयट्ठिइयाइं, भावओ वण्णमंताइं

---

१. सं० पा०—आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा ।
२. तओ (क, ख) ।
३. किण्ह° (ग, ट) ।
४. फासिंदिते (क) ।
५. ततो (ग) ।
६. २६, २७ सूत्रद्वयस्थाने 'ता' संकेतितादर्शे इत्थं संक्षिप्तपाठोस्ति—तेसि णं भंते कति पज्जत्तीओ ४ पढमाओ। अपज्जत्तीओ वि एताए चउक्को ।
७. आणपाण° (ट) ।
८. सम्मामिच्छा° (ग); सम्मामिच्छ° (ट) ।
९. सुति (ता) ।
१०. वय° (ट) ।

गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं॥

३४. जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति ताइं किं एगवण्णाइं आहारेंति ? दुवण्णाइं आहारेंति ? तिवण्णाइं आहारेंति ? चउवण्णाइं आहारेंति ? पंचवण्णाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइंपि दुवण्णाइंपि तिवण्णाइंपि चउवण्णाइंपि पंचवण्णाइंपि आहारेंति, विहाणमग्गणं पडुच्च कालाइंपि आहारेंति जाव सुक्किलाइंपि आहारेंति ॥

३५. जाइं वण्णओ कालाइं[1] आहारेंति ताइं किं एगगुणकालाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकालाइंपि आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइंपि आहारेंति । 'एवं जाव सुक्किलाइं'[2] ॥

३६. जाइं[3] भावओ गंधमंताइं आहारेंति ताइं किं एगगंधाइं आहारेंति ? दुगंधाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगगंधाइंपि आहारेंति दुगंधाइंपि आहारेंति, विहाणमग्गणं पडुच्च सुब्भिगंधाइंपि आहारेंति दुब्भिगंधाइंपि आहारेंति ॥

३७. जाइं गंधओ सुब्भिगंधाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणसुब्भिगंधाइंपि आहारेंति जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइंपि आहारेंति । एवं दुब्भिगंधाइंपि ॥

३८. रसा जहा वण्णा ॥

३९. जाइं भावओ फासमंताइं आहारेंति ताइं किं एगफासाइं आहारेंति जाव अट्ठफासाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च नो एगफासाइं आहारेंति नो दुफासाइं आहारेंति नो तिफासाइं आहारेंति, चउफासाइं आहारेंति पंचफासाइंपि जाव अट्ठफासाइंपि आहारेंति, विहाणमग्गणं[4] पडुच्च कक्खडाइंपि आहारेंति जाव लुक्खाइंपि आहारेंति ॥

४०. जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकक्खडाइंपि आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइंपि आहारेंति । एवं जाव लुक्खा णेयव्वा ॥

४१. ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं आहारेंति ? अपुट्ठाइं आहारेंति ? गोयमा ! पुट्ठाइं आहारेंति नो अपुट्ठाइं आहारेंति ॥

४२. ताइं भंते ! किं ओगाढाइं आहारेंति ? अणोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! ओगाढाइं आहारेंति, नो अणोगाढाइं आहारेंति ॥

४३. ताइं भंते ! किमणंतरोगाढाइं आहारेंति ? परंपरोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइं आहारेंति, नो परंपरोगाढाइं आहारेंति ।

४४. ताइं भंते ! किं अणूइं आहारेंति ? बायराइं आहारेंति ? गोयमा ! अणूइंपि आहारेंति, बायराइंपि आहारेंति ॥

---

१. कालाइं पि (क, ख, ग, ट); कालवण्णाइं (पण्ण० २८।७) ।

२. एवं पंच वि वण्णा (ता) ।

३. ३६,३७,३८ सूत्रत्रयस्य स्थाने 'ता' संकेतितादर्शे एवं पाठ संक्षेपोस्ति—एवं गंधरसेसु वि ।

४. 'ता' आदर्शे अत्र पाठसंक्षेपः—विधाणमग्गणं कक्खडाइं सव्वाइं जाव अणंतगुणलुक्खाइं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५. ताइं भंते ! किं उड्ढं आहारेंति ? अहे आहारेंति ? तिरियं आहारेंति ? गोयमा ! उड्ढंपि आहारेंति, अहेवि आहारेंति, तिरियंपि आहारेंति ॥

४६. ताइं भंते ! किं आदिं आहारेंति ? मज्झे आहारेंति ? पज्जवसाणे आहारेंति ? गोयमा ! आदिंपि आहारेंति, मज्झेवि आहारेंति, पज्जवसाणेवि आहारेंति ॥

४७. ताइं भंते ! किं सविसए आहारेंति ? अविसए आहारेंति ? गोयमा ! सविसए आहारेंति, नो अविसए आहारेंति ॥

४८. ताइं भंते ! किं आणुपुव्विं आहारेंति ? अणाणुपुव्विं आहारेंति ? गोयमा ! आणुपुव्विं आहारेंति, नो अणाणुपुव्विं आहारेंति ॥

४९. ताइं भंते ! किं तिदिसिं आहारेंति ? चउदिसिं आहारेंति ? पंचदिसिं आहारेंति ? छद्दिसिं आहारेंति ? गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं ॥

५०. ओसण्णकारणं[1] पडुच्च वण्णओ कालाइं नीलाइं जाव सुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंधाइं[2] दुब्भिगंधाइं, रसओ 'तित्त जाव महुराइं'[3], फासओ कक्खड-मउय जाव निद्ध-लुक्खाइं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे जाव फासगुणे विप्परिणामइत्ता[4] परिपीलइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता अण्णे अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे[5] फासगुणे उप्पाइत्ता[6] आयसरीरखेत्तोगाढे[7] पोग्गले सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति ॥

५१. ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ?—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-जोणियपज्जत्तापज्जत्तेहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो अकम्म-भूमग-असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति, वक्कंतीउववाओ[8] भाणियव्वो ॥

५२. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं[9], उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥

५३. ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति ? असमोहया मरंति ? गोयमा ! समोहयावि[10] मरंति, असमोहयावि मरंति ॥

५४. ते[11] णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?—किं नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? मणुस्सेसु उववज्जंति ? देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति,

---

१. उस्सन्न° (क,ख) ।
२. सुरभि° (ग,ट) ।
३. जाव तित्त महुराइं (ख,ग,ट) ।
४ विपरिणामतित्ता (क) ।
५. जाव (क,ख,ग,ट) ।
६. ओघाएत्ता (क) ।
७. आतसरीरतोगाढे (क,ख,ग,ट) ।
८. पण्ण° ६।८२-८४ ।
९. °मुहुत्ते (ट) ।
१०. सम्मोहतावि (क) ।
११. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'ता' आदर्शे एवं पाठसंक्षेपोस्ति—तेणं भंते अणंतरं उव्व गो जहा उववातो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुस्सेसु उववज्जंति, णो देवेसु उववज्जंति ।।

५५. जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति किं एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचिदिएसु उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति, असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जंति, मणुस्सेसु अकम्मभूमग-अंतरदीवग-असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जंति ।।

५६. ते णं भंते ! जीवा कतिगतिया कतिआगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ! से त्तं सुहुमपुढविकाइया ।।

५७. से किं तं बायरपुढविकाइया ? बायरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा— सण्हबायरपुढविक्काइया य खरबायरपुढविक्काइया य ।।

५८. से किं तं सण्हबायरपुढविक्काइया ? सण्हबायरपुढविक्काइया सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हमत्तिया[1], भेओ[2] जहा पण्णवणाए जाव—ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । 'तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता । तत्थ णं जेते पज्जत्तगा, एतेसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसतसहस्साइं । पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति—जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा । से त्तं खरबादरपुढविकाइया'[3] ।।

५९. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए तेयए कम्मए, तं चेव[4] सव्वं, णवरं— चत्तारि लेसाओ, अवसेसं जहा[5] सुहुमपुढविक्काइयाणं, आहारो[6] णियमा छद्दिसिं । उववाओ तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो, देवेहिं जाव सोहम्मेसाणेहिंतो । ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ।।

६०. ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति ? असमोहया मरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति, असमोहयावि मरंति ।।

६१. ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?—किं नेरइएसु उववज्जंति ? पुच्छा । गोयमा नो नेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति मणुस्सेसु उववज्जंति, नो देवेसु उववज्जंति 'तं चेव'[7] जाव[8] असंखेज्जवासा-उयवज्जेहिंतो उववज्जंति ।।

६२. ते णं भंते ! जीवा कतिगतिया कतिआगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुगतिया तिआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ! से त्तं बायरपुढविक्काइया । से त्तं

---

१. °मट्टिया (क,ग,ट) ।

२. भेतोसिं (क,ख); ततो से (ग); भेउ से (ट) ।

३. असौ चिन्हाङ्कितः पाठः प्रज्ञापना (१।२०) सूत्राधारेण स्वीकृतोस्ति । प्रस्तुतसूत्रस्य मलयगिरीयवृत्तौ असौ व्याख्यातोस्ति, 'ता' आदर्शे अस्य संक्षेपो लभ्यते—खर बा फा पुढवी य स्था वा सूरकंते य ज्जाव तत्थ णिमा ।

४. जी० १।१६-२१ ।

५. जी० १।२२-५० ।

६. आहारो जाव (क,ख,ग,ट) ।

७. तहेव (क); तहेव (ख) ।

८. जी० १।५५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुढविकाइया ॥

आउकाइय-पदं

६३. से किं त आउक्काइया ? आउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमआउक्काइया[1] य बायरआउक्काइया य। सुहुमआउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य ॥

६४. तेसि[2] णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए तेयए कम्मए। जहेव सुहुमपुढविक्काइयाणं, णवरं—थिबुगसंठिया पण्णत्ता, सेसं तं चेव जाव[3] दुगइया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता। से त्तं सुहुमआउक्काइया ॥

६५. से[4] किं तं बायरआउक्काइया ? बायरआउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—ओसा हिमे[5] °महिया करए हरतणुए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वरुणोदए खीरोदए घओदए[6] खोतोदए रसोदए° जे यावण्णे तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य, तं चेव सव्वं, णवरं—थिबुगसंठिया, चत्तारि लेसाओ, आहारो नियमा छद्दिसिं, उववाओ तिरिक्खजोणियमणुस्स-देवेहिंतो, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं, सेसं तं चेव जहा बायरपुढविकाइया जाव[7] दुगतिया तिआगतिआ, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ! सेत्तं बायरआउक्काइया। सेत्तं आउक्काइया ॥

वणस्सइकाइय-पदं

६६. से[8] किं तं वणस्सइकाइया ? वणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमवणस्सइकाइया य बायरवणस्सइकाइया य ॥

६७. से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया ? सुहुमवणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य तहेव, णवरं—अणित्थंथसंठिया,[9] दुगतिया दुआगतिया, अपरित्ता अणंता, अवसेसं जहा पुढविक्काइयाणं। से तं सुहुमवणस्सइकाइया ॥

६८. से किं तं बायरवणस्सइकाइया ? बायरवणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया य साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया य ॥

६९. से[10] किं तं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया ? पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया

---

१. सुहम° (क)।

२. एतस्य सूत्रस्य स्थाने 'ता' आदर्शे एवं पाठोस्ति—जहा सुहुमपुढवी तहा सव्वं णवरं थिबुगसंठितासरीरा।

३. जी० १।१६-५६

४. एतस्य सूत्रस्य स्थाने 'ता' आदर्शे एवं पाठोस्ति बादरआउक्काइया णं सत्तवाससहस्सा सेसं पुढविसरिसं।

५. सं० पा०—हिमे जाव जे।

६. × (मवृ)।

७. जी० १।५६-६१।

८. ६६,६७ सूत्रयोः स्थाने 'ता' आदर्शे एवं पाठोस्ति—सुहुमवणस्सति णाणत्तं णाणासंठिता परित्ता अणंता।

९. अनियतसंस्थानसंस्थितानि (मवृ)।

१०. ६९-७२ सूत्रचतुष्टयस्य स्थाने 'ता' आदर्शे एतावान् पाठोस्ति पत्तेय दुवालस जाव तिलसंकुलिया बहुएहिं तिलेहिं सेत्तं पत्तेयसरीरबाद-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा—

१. रुक्खा २. गुच्छा ३. गुम्मा ४. लता य ५. वल्ली य ६. पव्वगा चेव।
७. तण ८. वलय ९. हरिय १०. ओसहि ११. जलरुह १२. कुहणा य बोधव्वा ॥१॥

७०. से किं तं रुक्खा? रुक्खा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगट्ठिया य बहुबीया य॥

७१. से किं तं एगट्ठिया? एगट्ठिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

निंबंब जंबु कोसंब, साल अंकोल्ल पीलु सेलू य।
जाव[1] पुण्णाग णागरुक्खे, सीवण्णि तहा असोगे य॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। एतेसि णं मूलावि असंखेज्जजीविया, एवं कंदा खंधा तया साला पवाला। पत्ता पत्तेयजीवा। पुप्फाइं अणेगजीवाइं। फला एगट्ठिया। सेत्तं एगट्ठिया॥

७२. से किं तं बहुबीया? बहुबीया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थिय-तेंदुय-उंबर-कविट्ठे आमलग-फणस-दाडिम-णग्गोह-काउंबरीय-तिलय-लउय-लोद्धे धवे। जे यावण्णे तहप्पगारा। एतेसि णं मूलावि असंखेज्जजीविया जाव[2] फला बहुबीयगा। सेत्तं बहुबीयगा। सेत्तं रुक्खा। एवं जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्वं, जाव[3] जे यावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं कुहणा।

नाणाविहसंठाणा, रुक्खाणं एगजीविया पत्ता।
खंधोवि एगजीवो, ताल-सरल-नालिएरीणं ॥१॥
'जह सगलसरिसवाणं, सिलेसमिस्साण वट्टिया वट्टी।
पत्तेयसरीराणं, तह होंति सरीरसंघाया ॥२॥
जह वा तिलपप्पडिया, बहुएहिं तिलेहि संहिता संती।
पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया'[4] ॥३॥

सेत्तं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया॥

७३. से किं तं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया? साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—आलुए[5], मूलए, सिंगबेरे, हिरिलि, सिरिलि, सिस्सिरिलि, किट्ठिया[6], छिरिया, छीरविरालिया[7], कण्हकंदे, वज्जकंदे, सूरणकंदे, खेलूडे[8], भद्दमोत्था[9], पिंडहलिद्दा, लोही[10], णीहू थीहू[11] अस्सकण्णी, सीहकण्णी सीउंढी, मुसंढी। जे

रवण। मलयगिरिवृत्तौ च ७०-७२ सूत्रत्रयस्य स्थाने 'एवं भेदो भाणियव्वो जहा पण्णवणाए जह वा तिलसंकुलिया' इति पाठो व्याख्यातोऽस्ति।

१. पण्ण° १।३५।
२. जी० १।७१।
३. पण्ण° १।३७-४७।
४. जह सगलसरिसवाणं पत्तेयसरीराणं गाहा २। जह वा तिलसक्कुलिया गाहा ३ (क,ख,ग)।
५. तुलना—भग० ७।६६; उत्त० ३६।९७-९९।
६. किट्टिका (मवृ)।
७. छिरविरालिया (क); छिरिविरालिया (ख); छिरियविरालिया (ग,ट); छीरविराली (ता)।
८. खल्लूडो (क); खल्लूडे (ट); सेल्लड (ता)।
९. किमिरासि भद्द° (क,ख,ग,ट)।
१०. लोहीरी (क,ग); लोहरी (ट)।
११. थिभु (क); थीहू थुहा (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य[1]। 'तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता। तत्थ णं जेते पज्जत्तगा तेसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं। पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कंमति—जत्थ एगो तत्थ सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा, सिय अणंता'[2]॥

७४. तेसि णं भंते! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता? गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—'ओरालिए तेयए कम्मए'[3], तहेव जहा बायरपुढविकाइयाणं, णवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं, सरीरगा अणित्थंथसंठिया, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं जाव दुगइया तिआगइया, अपरित्ता[4] अणंता पण्णत्ता। सेत्तं बायरवणस्सइकाइया। 'सेत्तं वणस्सइकाइया'[5]। सेत्तं थावरा॥

७५. से किं तं तसा? तसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—तेउक्काइया वाउक्काइया ओराला तसा[6]॥

तेउकाइय-पदं

७६. से किं तं तेउक्काइया? तेउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमतेउक्काइया य बायरतेउक्काइया य॥

७७. से किं तं सुहुमतेउक्काइया? सुहुमतेउक्काइया जहा सुहुमपुढविक्काइया, नवरं—सरीरगा सूइकलावसंठिया[7], एगगइया दुआगइया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता, सेसं तं चेव[8]। सेत्तं सुहुमतेउक्काइया॥

७८. से[9] किं तं बादरतेउक्काइया? बादरतेउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—इंगाले[10] •जाला मुम्मुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए संघरिस-

---

१. अतोग्रे 'ता' प्रतौ एवं पाठसंक्षेपो विद्यते—णाणत्तं णाणासंठिता ठिति दससहस्सा ओगाहणा सातिरेगं जोयणसहस्सं अपरित्ता अणंता जाव सेत्तं थावरा।

२. प्रयुक्तादर्शेषु चिन्हाङ्कितपाठस्य संकेतो नास्ति। मलयगिरीयवृत्तौ 'जाव सिय संखेज्जा' इति संक्षिप्तपाठमादृत्य 'जाव' पदस्य पूर्तिर्निर्दिष्टास्ति।

३. ओरालिते तेयते कम्मते (क)।

४. परित्ता (ग,ट)।

५. × (क,ख,ग)।

६. तसा पाणा (क,ख,ग,ट); हारिभद्रीय-मलयगिरीयवृत्त्योरपि 'पाणा' इति पदं व्याख्यातं नास्ति।

७. सूयि° (क,ता)।

८. जी० १।१४-५६।

९. प्रस्तुतालापके 'ता' प्रतौ पाठसंक्षेपो विद्यते—बादरतेउभेदो णाणत्तं ठिति तिण्णि रातिंदियाओ।

१०. सं० पा०—प्रयुक्तादर्शेषु पाठसंक्षेपः एवमस्ति—इंगाले जाले (जाला-ख) मुम्मुरे जाव सूरकंतमणिनिस्सिए, जे यावन्ने तप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। मलयगिरीयवृत्तौ पाठसंक्षेपस्य पद्धतिर्भिन्नास्ति—इंगाले जाव तत्थ नियमा। अस्य आधारेणैव प्रज्ञापनामनुसृत्य पाठः पूरितोस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुट्ठिए सूरकंतमणिणिस्सिए। जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता। तत्थ णं जेते पज्जत्तगा, एएसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं। पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति—जत्थ एगो° तत्थ णियमा असंखेज्जा॥

७९. तेसि णं भंते! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता? गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए तेयए कम्मए। सेसं[1] तं चेव। सरीरगा सूइकलावसंठिया। तिण्णि लेस्सा। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं। तिरियमणुस्सेहिंतो उववाओ। सेसं तं चेव जाव एगगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता। सेत्तं बादरतेउक्काइया। सेत्तं तेउक्काइया॥

वाउकाइय-पदं

८०. से[2] किं तं वाउक्काइया? वाउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुहुमवाउक्काइया य बायरवाउक्काइया य। सुहुमवाउक्काइया जहा[3] तेउक्काइया, णवरं—सरीरगा पडागसंठिया। एगगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखिज्जा। सेत्तं सुहुमवाउक्काइया॥

८१. से किं तं बादरवाउक्काइया? बादरवाउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—पाईणवाते[4] पडीणवाते[5] दाहिणवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउब्भामे वाउक्कलिया वायमंडलिया उक्कलियावाए मंडलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टगवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए। जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता। तत्थ णं जेते पज्जत्तगा, एतेसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं। पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति—जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा॥

८२. तेसि णं भंते! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए[6]। सरीरगा पडागसंठिया। चत्तारि समुग्घाया—वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए। आहारो णिव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं।

१. जी० १।७७।

२. प्रस्तुतालापकेषु 'ता' प्रतौ पाठसंक्षेपो विद्यते—सुहुमवाउ जहा सुहुमतेउ णाणत्तं पडागसं आहारो णिव्वाघातेणं ६ वाघा सिय ३-६। बादरवाउभेदो णाणत्तं एवं चेव ट्ठिती सह उ णिव्वाघातेणं ६ वाघातं य ३-६ ना सरीरगा ४ समुग्घाता वि ४।

३. जी० १।७७।

४. पातीणवाते (क)।

५. अतोग्रे आदर्शेषु पाठसंक्षेपोस्ति। मलयगिरिणा 'बादरवाउकाइया वि एवं चेव नवरं भेदो जहा पण्णवणाए' इति पाठानुसारिव्याख्या कृतास्ति तथा पूर्णपाठोपि तत्र उल्लिखितः। अस्माभिः स मूले स्वीकृतः।

६. अतोनन्तरं १।१६,१७ सूत्रयोः सूचकं 'सेसं तं चेव' इति पाठो युज्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववाओ देवमणुयनेरइएसु[1] णत्थि। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं। सेसं तं चेव एगगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो! सेत्तं बायरवाउक्काइया। सेत्तं वाउक्काइया॥

८३. से किं तं ओराला तसा[2]? ओराला तसा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा— बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया॥

बेइंदिय-पदं

८४. से किं तं बेइंदिया? बेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुलाकिमिया जाव[3] समुद्दलिक्खा, जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा— पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य॥

८५. तेसि णं भंते! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता? गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए तेयए कम्मए॥

८६. तेसि णं भंते! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा[4] पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंगुलासंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं बारसजोयणाइं, छेवट्टसंघयणा[5], हुंडसंठिया, चत्तारि[6] कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि लेसाओ, दो इंदिया, तओ समुग्घाया—वेयणा कसाया मारणंतिया, नोसण्णी असण्णी, णपुंसगवेयगा, पंच पज्जत्तीओ, पंच अपज्जत्तीओ, सम्मद्दिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, णो चक्खुदंसणी, अचक्खुदंसणी, णो ओहिदंसणी, णो केवलदंसणी॥

८७. ते णं भंते! जीवा किं णाणी? अण्णाणी? गोयमा! णाणीवि अण्णाणीवि। जे णाणी ते नियमा दुण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोहियणाणी य सुयणाणी य। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य। नो मणजोगी, वइजोगी कायजोगी। सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि। आहारो नियमा छद्दिसिं। उववाओ 'तिरियमणुस्सेसु नेरइयदेवअसंखेज्जवासाउयवज्जेसु'[7]। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस

१. ५१ सूत्रे 'जीवा कओहिंतो उववज्जंति?' इति आगमनात्मक उपपातः सूचितोस्ति। ५४ सूत्रे 'जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति?' इति उद्वर्तनानन्तरं जायमान उपपातः सूचितः। पूर्वसंकेते पंचमी विभक्तिः तथा द्वितीयसंकेते सप्तमीविभक्तिः संगतास्ति। अत्र पूर्वसंकेतः नास्ति उल्लिखितः केवलं द्वितीय एव। तत्रापि व्यतिक्रमोस्ति। अयं पाठः स्थितिपाठस्य पश्चाद् उपयुक्तोस्ति।

२. तसा पाणा (क, ख, ग, ट)।

३. पण्ण० १।४६।

४. ओगाहणा (क, ख, ग)।

५. सेवट्ट° (क); सेवट्टसंघतणि (ख, ग, ट, ता)।

६. 'ता' प्रतौ भिन्ना पाठरचना दृश्यते—कसा ४ सण्णा ४ लेस्सा ३ इंदि २ समुद्धाता ३ असण्णि णपुंसवेदा पज्जत्ति ना ट्ठीती वास १२ सम्मद्दिट्ठी वि मिच्छा णो सम्मामि णाणीवि अण्णाणी वि दो वे णियमा णो मण वइजोगी वि कायजोगी वि सागारो अणागा किमाहारमाहारेंति जहा बादरपुढवीणं उववातो णिरयदेवअसंखेज्जाउअवज्जो दुआगतिया दुगतिया परित्ता असंखे।

७. इदं आगमनात्मकोपपातसूत्रमस्ति, तेनात्र पञ्चमी विभक्तिर्युज्यते। अत्र लिपिप्रमादात् अथवा संक्षिप्तीकरणप्रमादात् विभक्तेर्विपर्ययो जातः। वृत्तौ व्याख्यातः पाठः समीचीनोस्ति—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवच्छराणि। समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति। कहिं गच्छति? नेरइयदेवअसंखेज्ज-वासाउयवज्जेसु गच्छंति। दुगइया दुआगइया, परित्ता असंखेज्जा। सेत्तं बेइंदिया॥

तेइंदिय-पदं

८८. से[1] किं तं तेइंदिया? तेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता[2], तं जहा—ओवइया[3] रोहिणिया जाव[4] हत्थिसोंडा, जे यावण्णे तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तहेव जहा बेइंदियाणं, णवरं—सरीरोगाहणा उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं, तिण्णि इंदिया, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगूणपण्णराइं-दियाइं, सेसं तहेव दुगइया दुआगइया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता। से तं तेइंदिया॥

चउरिंदिय-पदं

८९. से[5] किं तं चउरिंदिया? चउरिंदिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अंधिया पोत्तिया[6] जाव[7] गोमयकीडा, जे यावण्णे तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जगा य॥

९०. तेसि णं भंते! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता? गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता तं चेव णवरं—सरीरोगाहणा उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं, इंदियाइं चत्तारि, चक्खुदंसणी[8] अचक्खुदंसणी[9], ठिई उक्कोसेणं छम्मासा। सेसं जहा तेइंदियाणं जाव असंखेज्जा पण्णत्ता। से तं चउरिंदिया॥

९१. से किं तं पंचेंदिया? पंचेंदिया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा॥

नेरइय-पदं

९२. से किं तं नेरइया? नेरइया सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइया जाव[10] अहेसत्तमपुढविनेरइया[11]। ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा या॥

९३. तेसि णं भंते! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता? गोयमा! तओ सरीरगा

'उपपातो देवनारकासङ्ख्यातवर्षायुष्कवर्जेभ्यः शेषतिर्यग्मनुष्येभ्यः'। प्राकृतव्याकरण ३।१३६ 'पञ्चम्यास्तृतीया च' इति पञ्चमीस्थाने सप्तमी विभक्तिरपि जायते। यदि एवं स्वीक्रियतेः? तदा नास्ति लिपिप्रमादः, किन्तु सूत्रकारेणापि केषुचिच्च सप्तम्याः प्रयोगः कृतः।

१. प्रस्तुतालापकस्य 'ता' प्रतौ पाठसंक्षेपो विद्यते—तेंदिया वि एवं चेव णाणत्तं गाउता ३ अउणपण्ण रातिदिया ट्ठिती इंदिया ३।

२. मलयगिरिवृत्तौ अतोग्रे 'भेदो जहा पण्णवणाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति।

३. उवइया (क, ट); वेयविया (ख); उव्वविया (ग)।

४. पण्ण० १।५०।

५. प्रस्तुतालापकस्य 'ता' प्रतौ पाठसंक्षेपो विद्यते—चउरिंदिया वि एवं चेव जाव नव जाती कुल ते चेव ओगाहणा ४ ठिति मासा ६।

६. पुत्तिया (ख, ग, ट)।

७. पण्ण० १।५१।

८. °णीवि (क, ग)।

९. °णीवि (क, ग)।

१०. पण्ण० १।५३।

११. तमतमपुढवी° (ग); तमतमापुढवी° (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्विए तेयए कम्मए ॥

९४. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं 'अंगुलस्स असंखेज्जइभागं'[1], उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं। तत्थ णं जासा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं 'अंगुलस्स संखेज्जइभागं'[2] उक्कोसेणं धणुसहस्सं ॥

९५. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरा किंसंघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं[3] असंघयणी[4]—णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू णेव संघयणमत्थि। जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा अमणुण्णा अमणामा ते तेसिं संघातत्ताए[5] परिणमंति ॥

९६. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरा किंसंठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जेते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया। तत्थ णं जेते उत्तरवेउव्विया तेवि हुंडसंठिया पण्णत्ता। चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि लेसाओ, पंचइंदिया[6], चत्तारि समुग्घाया आइल्ला, सण्णीवि, असण्णीवि, नपुंसगवेया[7], 'छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ',[8] तिविहा दिट्ठी, तिण्णि दंसणा, णाणीवि अण्णाणीवि, जे णाणी ते नियमा तिण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिनाणी। जे अण्णाणी ते अत्थेगइया दुअण्णाणी अत्थेगइया तिअण्णाणी, जे य दुअण्णाणी ते णियमा मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य, जे तिअण्णाणी ते नियमा मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य विभंगणाणी य, तिविहे जोगे, दुविहे उवओगे, छद्दिसिं आहारो, ओसण्णकारणं[9] पडुच्च वण्णओ कालाइं जाव[10] सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति, उववाओ तिरियमणुस्सेसु[11], ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, दुविहा मरंति, उव्वट्टणा भाणियव्वा जओ आगया, णवरि संमुच्छिमेसु[12] पडिसेहो, दुगइया दुआगइया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ! से तं नेरइया ॥

तिरिक्खजोणिय-पदं

९७. से किं तं पंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? पंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य ॥

९८. से किं तं संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जलयरा थलयरा खहयरा ॥

---

१. अंगुलअसंखेज्जइभागं (क, ख, ट, ता, वृ); अंगुलअसंखेज्जोभागो (ग)।
२. अंगुलअसंखेज्जइभागं (मवृ)।
३. संघतणाणं (ग)।
४. असंघतणी (ख, ग, ता)।
५. संघतणत्ताए (ता)।
६. पंचेंदिया (ख, ग, ट)।
७. °वेदका (क, ख, ग); °वेदगा (ट)।
८. पर्याप्तिद्वारे पञ्चपर्याप्तयः पञ्चापर्याप्तयः (मवृ)।
९. ओसन्नं कारणं (ग, ट)।
१०. पण्ण० २८।२०।
११. अत्र पञ्चमी स्थाने सप्तमी। वृत्तिः—उपपातो यथा व्युत्क्रान्तिपदे प्रज्ञापनायां तथा वक्तव्यः, पर्याप्तपञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्येभ्योऽसङ्ख्यातवर्षायुष्कवर्जेभ्यो वक्तव्यः।
१२. संमुच्छितेसु (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९९. से[1] किं तं जलयरा ? जलयरा पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—मच्छगा कच्छभा मगरा गाहा सुंसुमारा ।।

१००. से किं तं मच्छा ? एवं जहा पण्णवणाए जाव[2] जे यावण्णे तहप्पगारा[3], ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ।।

१०१. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए तेयए कम्मए । सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, छेवट्टसंघयणी[4], हुंडसंठिया, चत्तारि कसाया, सण्णाओवि, लेसाओ तिण्णि, इंदिया पंच, समुग्घाया तिण्णि, णो सण्णी असण्णी, णपुंसगवेया, पज्जत्तीओ अपज्जत्तीओ य पंच, दो दिट्ठीओ, दो दंसणा, दो नाणा, दो अण्णाणा, दुविहे जोगे, दुविहे उवओगे, आहारो छद्दिसिं, उववाओ तिरियमणुस्सेहिंतो, नो देवेहिंतो नो नेरइएहिंतो, तिरिएहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो, 'अकम्मभूमगअंतरदीवगअसंखेज्जवासाउयवज्जेसु मणुस्सेसु,[5] ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । मारणंतियसमुग्घाएणं दुविहावि मरंति, अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं ? नेरइएसुवि तिरिक्खजोणिएसुवि मणुस्सेसुवि देवेसुवि, नेरइएसु रयणप्पहाए, सेसेसु पडिसेहो । तिरिएसु सव्वेसु उववज्जंति संखेज्जवासाउएसुवि असंखेज्जवासाउएसुवि चउप्पएसु पक्खीसुवि । मणुस्सेसु सव्वेसु कम्मभूमिएसु, नो अकम्मभूमिएसु, अंतरदीवएसुवि संखेज्जवासाउएसुवि असंखेज्जवासाउएसुवि पज्जत्तएसुवि अपज्जत्तएसुवि । देवेसु जाव वाणमंतरा, चउगइया दुआगइया[6], परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता । से तं जलयरसंमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया[7] ।।

१०२. से किं तं थलयरसंमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? थलयरसंमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—चउप्पयथलयरसंमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्पसंमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ।।

१०३. से किं तं चउप्पयथलयरसंमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? चउप्पयथलयरसंमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—एगखुरा दुखुरा 'गंडी-

---

१. प्रस्तुतालापकस्य 'ता' प्रतौ पाठसंक्षेपो विद्यते—से किं तं जज भेदो जाव सुंसुमारा एगागारा पण्णत्ता ते समासतो तं पज्ज अपज्ज तेसि णं भंते कति सरीरा ३ ओगाहा आहारे य जधा बेइंदियाणं उववातो जधा पुढ णवरं देवा ण उववज्जंति ठिती पुव्वकोडी समोहता वि मर जस कहिं गच्छं कि णेरइओ चतुसुवि जति णेरइ कि रयण यातो रयणप्प णो सक्कर जाव णो अधेसत्तमा पुढवीणेरइएसु उवव तिरिक्खमणुय देवेसु मणुस्सेसु अंतरदीवेसु उव देवेसु जाव वाणसंतोसुउव णो जोति णो वेमा दुआगतिया चतुगतिया परित्ता असंखे समणाउसो सेतं जल ।

२. पण्ण० १।५६-६० ।

३. तहप्पकारा (क, ख, ग, ट) ।

४. सेवट्ट° (क, ख, ग) ।

५. अत्र आदर्शेषु मिश्रितः पाठो वर्तते—पूर्वः पाठः पञ्चम्यन्तः उत्तरवर्ती च सप्तम्यन्तः वृत्तौ एवं व्याख्यातोस्ति—उपपातो यथा व्युत्क्रान्तिपदे तथा वक्तव्यः, तिर्यग्मनुष्येभ्योऽसङ्ख्यातवर्षायुष्कवर्जेभ्यो वाच्यः, द्रष्टव्यं जीवा० १।८७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

६. दुयागतिया (ग) ।

७. संमुच्छिमजलचर° (मवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पया सणप्फया[1] जाव[2] जे यावण्णे तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। 'तओ सरीरगा, ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहत्तं[3], ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउरासीइवाससहस्साइं, सेसं जहा जलयराणं जाव चउगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता[4]। सेत्तं चउप्पयथलयरसंमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥

१०४. से किं तं थलयरपरिसप्पसंमुच्छिमा ? थलयरपरिसप्पसंमुच्छिमा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उरपरिसप्पसंमुच्छिमा[5] भुयपरिसप्पसंमुच्छिमा ॥

१०५. से किं तं उरपरिसप्पसंमुच्छिमा ? उरपरिसप्पसंमुच्छिमा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—अही अयगरा आसालिया महोरगा ॥

१०६. से किं तं अही ? अही दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वीकरा य मउलिणो य ॥

१०७. से किं तं दव्वीकरा ? दव्वीकरा अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—आसीविसा जाव[6] सेत्तं दव्वीकरा ॥

१०८. से किं तं मउलिणो ? मउलिणो अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—दिव्वा गोणसा जाव[7] से तं मउलिणो। सेत्तं अही ॥

१०९. से किं तं अयगरा ? अयगरा एगागारा पण्णत्ता। से तं अयगरा ॥

११०. से किं तं आसालिया ? आसालिया जहा[8] पण्णवणाए। से तं आसालिया ॥

१११. से किं तं महोरगा ? महोरगा जहा[9] पण्णवणाए। से तं महोरगा। जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, तं चेव, णवरि—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणपुहत्तं। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्साइं, सेसं जहा जलयराणं जाव चउगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा। से तं उरपरिसप्पा[10] ॥

११२. से किं तं भुयपरिसप्पसंमुच्छिमथलयरा[11]? भुयपरिसप्पसंमुच्छिमथलयरा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा— गोहा[12] णउला जाव[13] जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं। ठिती[14] उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं, सेसं जहा जलयराणं जाव[15] चउगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता। से तं भुयपरिसप्प-

१. गंडीपता सणप्पता (ग)।
२. पण्ण० १।६३-६६।
३. °पुहुत्तं (क, ट); °पहुत्तं (ग)।
४. तेसि णं भंते कति सरीराओ जहा जलचरसंमुच्छिमा तहेव णाणत्तं ओगाहा गाउतवुधत्तं ट्ठिती चउरासीति वाससह (ता)।
५. उरग° (ग, ट)।
६. पण्ण० १।७०।
७. पण्ण० १।७१।
८. पण्ण० १।७३।
९. पण्ण० १।७४।
१०. उरग° (ख, ग, ट)।
११. भुयग° (ग, ट)।
१२. गाहा (ग)।
१३. पण्ण० १।७५।
१४. स्थितिर्जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तम् (मवृ)।
१५. जी० १।१०१।

संमुच्छिमा। से तं थलयरा॥

११३. से किं तं खहयरा? खहयरा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा[1]—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी विततपक्खी॥

११४. से किं तं चम्मपक्खी? चम्मपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—वग्गुली जाव[2] जे यावण्णे तहप्पगारा। से तं चम्मपक्खी॥

११५. से किं तं लोमपक्खी? लोमपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—ढंका जाव[3] जे यावण्णे तहप्पगारा। से तं लोमपक्खी॥

११६. से किं तं समुग्गपक्खी? समुग्गपक्खी एगागारा पण्णत्ता जहा[4] पण्णवणाए। एवं विततपक्खी जाव[5] जे यावण्णे तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, णाणत्तं सरीरोगाहणा[6] जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं। ठिती[7] उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं, सेसं जहा जलयराणं जाव[8] चउगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता। से तं खहयरसंमुच्छिमतिरिक्खजोणिया। से तं संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया॥

११७. से किं तं गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया? गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जलयरा थलयरा खहयरा॥

११८. से किं तं जलयरा? जलयरा पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—मच्छा कच्छभा मगरा गाहा सुंसुमारा। सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो तहेव जहा पण्णवणाए जाव[9] जे यावण्णे तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य॥

११९. तेसि णं भंते! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए। सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, छव्विहसंघयणी पण्णत्ता, तं जहा—वइरोसभनारायसंघयणी उसभनारायसंघयणी नारायसंघयणी अद्धनारायसंघयणी कीलियासंघयणी छेवट्टसंघयणी[10]। छव्विहसंठिया[11] पण्णत्ता, तं जहा—समचउरंससंठिया णग्गोहपरिमंडले साति खुज्जे वामणे हुंडे, 'चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, छ लेस्साओ'[12], पंच इंदिया,

---

१. अतोग्रे 'ते समासओ' इति पर्यन्तः पाठः मलयगिरिणा 'भेदो जहा पण्णवणाए' इति संक्षिप्तरूपेण स्वीकृत्य व्याख्यातः।

२. पण्ण० १।७७।

३. पण्ण० १।७८।

४. पण्ण० १।७९।

५. पण्ण० १।८०।

६. तथा चात्र क्वचित्पुस्तकान्तरेऽवगाहनास्थित्योर्यथाक्रमं सङ्ग्रहणिगाथे—
जोयणसहस्सगाउयपुहुत्त तत्तो य जोयणपुहत्तं।
दोण्हंपि धणुपुहत्तं संमुच्छिमवियगपक्खीणं॥१॥
संमुच्छ पुव्वकोडी चउरासीई भवे सहस्साइं।
तेवण्णा बायाला बावत्तरिमेव पक्खीणं॥२॥

७. ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं (ट)।

८. जी० १।१०१।

९. पण्ण० १।५६-६०।

१०. सेवट्ट° (क, ग, ट)।

११. किं संठिता (ता)।

१२. कसा ४, सण्णा ४, लेस्सा ६ (क, ख, ग, ट, ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंच समुग्घाया आइल्ला, सण्णी नो असण्णी, तिविहवेया[1], छपज्जत्तीओ छअपज्जत्तीओ, दिट्ठी तिविहावि, तिण्णि दंसणा, णाणीवि अण्णाणीवि—जे णाणी ते अत्थेगइया दुण्णाणी अत्थेगइया तिण्णाणी[2], जे दुण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी य सुयणाणी य, जे तिण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी य, एवं अण्णाणीवि, जोगे तिविहे, उवओगे दुविहे, 'आहारो छद्दिसिं'[3], 'उववाओ[4] नेरइएहिं जाव[5] अहेसत्तमा, तिरिक्खजोणिएसु सव्वेसु असंखेज्जवासाउयवज्जेसु, मणुस्सेसु अकम्मभूमग-अंतरदीवग-असंखेज्जवासाउयवज्जेसु, देवेसु जाव सहस्सारो'[6], ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, दुविहावि मरंति, अणंतरं उव्वट्टित्ता 'नेरइएसु जाव अहेसत्तमा, तिरिक्खजोणिएसु, मणुस्सेसु सव्वेसु, देवेसु जाव सहस्सारो'[7], चउगतिया चउआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता। से तं जलयरा॥

१२०. से किं तं थलयरा? थलयरा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—चउप्पया य परिसप्पा य॥

१२१. से किं तं चउप्पया? चउप्पया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—एगखुरा सो चेव भेदो जाव[8] जे यावण्णे तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। चत्तारि सरीरा, ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं छ गाउयाइं, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं, णवरं—उव्वट्टित्ता नेरइएसु चउत्थपुढविं ताव गच्छंति, सेसं जहा जलयराणं जाव चउगतिया चउआगतिया, परित्ता असंखिज्जा पण्णत्ता। से तं चउप्पया॥

१२२. से किं तं परिसप्पा? परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य॥

१२३. से किं तं उरपरिसप्पा? उरपरिसप्पा तहेव आसालियवज्जो भेदो भाणियव्वो[9]। सरीरा चत्तारि। ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वट्टित्ता नेरइएसु जाव पंचमं पुढविं ताव गच्छंति, तिरिक्खमणुस्सेसु सव्वेसु, देवेसु जाव सहस्सारो, सेसं जहा जलयराणं जाव चउगतिया चउआगतिया, परित्ता असंखेज्जा। से तं उरपरिसप्पा॥

---

१. तिविहा वेता वि (क); तिविह वेता (ख); तिविधा वेदादि (ट); त्रिविधवेदापि (मवृ)।

२. तिणाणि (क, ख)।

३. आधारो जधा बेंदियाणं (ता)।

४. अत्र केषुचित्पदेषु पञ्चमी केषुचिच्च पञ्चम्यर्थे सप्तमी।

५. द्रष्टव्यं प्रज्ञापनायाः ६।८८ सूत्रम्।

६. उववा असंखेज्जवासाउयवज्जो जाव सहस्सारो चतुसुवि गतीसु (ता)।

७. जाव सहस्सारा ताव गच्छंति (ता)।

८. जी० १।१०३; स्थलचरगर्भव्युत्क्रान्तिकानां भेदोपदर्शकं सूत्रं यथा संमूर्च्छिमस्थलचराणां (मवृ)।

९. जी० १।१०५-१०९, १११; नवरमत्रासालिका न वक्तव्या, सा हि संमूर्च्छिमैव न गर्भव्युत्क्रान्तिका, तथा महोरगसूत्रे 'जोयणसयंपि जोयणसयपुहुत्तियावि जोयण सहस्सं पि' इत्येतदधिकं वक्तव्यं, शरीरादिद्वारकदम्बकसूत्रं तु सर्वत्रापि गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचराणामिव, नवरमवगाहनास्थित्युद्वर्त्तनासु नानात्वम् (मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२४. से किं तं भुयपरिसप्पा ? भुयपरिसप्पा भेदो तहेव, चत्तारि सरीरा, ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहत्तं। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्पा, णवरं—दोच्चं पुढविं गच्छंति। से तं भुयपरिसप्पा। से तं थलयरा॥

१२५. से किं तं खहयरा ? खहयरा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—चम्मपक्खी तहेव[1] भेदो, ओगाहणा[2] जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो, सेसं जहा जलयराणं, णवरं[3]—तच्चं पुढविं गच्छंति जाव[4] से तं खहयरगब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया। से तं तिरिक्खजोणिया॥

मणुस्स-पदं

१२६. से किं तं मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य[5]॥

१२७. कहि णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति ? गोयमा ! अंतो मणुस्सखेत्ते जाव[6] अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करेंति॥

१२८. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए तेयए कम्मए। 'संघयण-संठाण-कसाय-सण्णा-लेसा जहा[7] बेइंदियाणं, इंदिया पंच, समुग्घाया तिण्णि, असण्णी, णपुंसगा, अपज्जत्तीओ पंच, दिट्ठि-दंसण-अण्णाण-जोग-उवओगा जहा[8] पुढविकाइयाणं, आधारो जहा[9] बेइंदियाणं, उववातो नेरइय-देव-तेउ-वाउ-असंखाउवज्जो, अंतोमुहुत्तं ठिती, समोहतावि असमोहतावि मरंति, कहिं गच्छंति ? णेरइय-देव-असंखेज्जाउवज्जेसु, दुआगतिया दुगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो'[10] ! से तं संमुच्छिममणुस्सा॥

---

१. जी० १।११३-११६।

२. क्वचित्पुस्तकान्तरेऽवगाहनास्थित्योर्यथाक्रमं संग्रहणिगाथे—
जोयणसहस्स छग्गाउयाइ तत्तो य जोयणसहस्सं।
गाउयपुहत्त भुयगे धणुयपुहत्तं च पक्खीसु॥१॥
गब्भंमि पुव्वकोडी तिण्णि य पलिओवमाइं परमाउं।
उरभुयग पुव्वकोडी पलिय असंखेज्जभागो य॥२॥

३. नवरं जाव (क, ख, ग, ट); मलयगिरीयवृत्तौ यावत् इति पदं व्याख्यातं नास्ति।

४. जी० १।११६।

५. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट' आदर्शेषु 'भेदो जहा पण्णवणाए तहा निरवसेसं भाणियव्वं जाव छउमत्था य केवली य' इति पाठो विद्यते।

६. पण्ण० १।८४।

७. जी० १।८७।

८. जी० १।२८-३२।

९. जी० १।८८।

१०. असौ स्वीकृतपाठः 'ता' संकेतितादर्शस्य मलयगिरीयवृत्तेश्चाधारेण गृहीतोस्ति। तयोः क्वचित् साधारणो भेदोपि दृश्यते—
ताः—कति सरि ३ जधा पुढविका संघतण संठाण कसा सण्णा लेसा जधा बेंदियाणं इंदिया पंच समुग्धा ३ असणि णपुंस भवे पज्जत्तीओ ४ दिट्ठि अण्णाण जोग अयोगा जता पुढविका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२९. से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा ? गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा · कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा । 'एवं मणुस्सभेदो भाणियव्वो जहा पण्णवणाए जाव[1] छउमत्था य केवली य'[2] । ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ।।

१३०. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए जाव[3] कम्मए । सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं । 'छच्चेव संघयणी, छच्चेव संठिया'[4] ।।

१३१. ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसाई[5] जाव लोभकसाई ? अकसाई ? गोयमा ! सव्वेवि ।

आधारो जधा बेंदियाणं उववातो वि णेर देव तेउ वाउ असंखेज्जाउवज्जो अंतोमुहुत्तं ठिति समोहता वि असमोमरन्ति कहिं ग णेर देवा असंखेज्जाउवज्जेसु दुआगतिया दुगतिया परि असं सेत्तं संमू ।

मलयगिरीयवृत्तिः—तेसि णं भंते ! शरीराणि त्रीणि औदारिकतैजसकार्मणानि, अवगाहना जघन्यतः उत्कर्षतश्चाङ्गुलासंख्येयभागप्रमाणा, संहननसंस्थानकषायलेश्याद्वाराणि यथा द्वीन्द्रियाणां, इन्द्रियद्वारे पञ्चेन्द्रियाणि, सञ्ज्ञिद्वारवेदद्वारे अपि द्वीन्द्रियवत्, पर्याप्तिद्वारे ऽपर्याप्तयः पञ्च, दृष्टिदर्शनज्ञानयोगोपयोगद्वाराणि (यथा) पृथिवीकायिकानां, आहारो यथा द्वीन्द्रियाणां, उपपातो नैरयिकदेवतेजोवाय्वसङ्ख्यातवर्षायुष्कवर्जेभ्यः, स्थितिर्जघन्यत उत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणा, नवरं जघन्यपदादुत्कृष्टमधिकं वेदितव्यम्, मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते असमवहताश्च, अनन्तरमुद्वृत्य नैरयिकदेवासङ्ख्येयवर्षायुष्कवर्जेषु शेषेषु स्थानेषूत्पद्यन्ते, अत एव गत्यागतिद्वारे द्व्यागतिका द्विगतिकास्तिर्यग्मनुष्यगत्यपेक्षया, 'परीत्ता' प्रत्येकशरीरिणोऽसङ्ख्येयाः, प्रज्ञप्ताः हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! उपसंहारमाह—'सेत्तं संमुच्छिममणुस्सा' ।

शेषेषु आदर्शेषु संक्षिप्तः पाठो विद्यते, स च १२५ सूत्रस्य पादटिप्पणे निर्दिष्टोस्ति । प्रतीयते संक्षिप्तपाठस्य वाचना स्वीकृतवाचनातो भिन्नास्ति । संक्षिप्तवाचनायां प्रज्ञापनायाः समर्पणमस्ति, तत्र च संहननसंस्थानादिद्वाराणि नैव विद्यन्ते ।

१. पण्ण० १।८४-१२७ ।

२. जाव अघक्खातो छउमत्था य केवली य (ता) ।

३. पण्ण० १२।१ ।

४. छव्विहसंघयणा छव्विहसंठिता (ख); छव्विहसंघयणा छस्संठाणा (ट); एवं गब्भ पंचेंदियतिरियगमओ संघयणं संठाणं छव्विधं (ता) ।

५. अतः 'उववज्जंति' पर्यन्तं 'ता' प्रतौ पाठभेदः एवमस्ति—कोहकसाई ४ कसायी जाव अकसायीवि किं आहारसण्णोवयुत्ता ४ णोसण्णोवयुत्ता जाव णोसण्णोवयुत्तावि किं कण्हलेस्सा ७ जाव अलेसावि किं सोतिंदियोवयुत्ता ५ णोइंदियोवयुत्ता जाव णोइंदियोवयुत्तावि सत्त समुद्धाता सण्णीवि असण्णीवि णोसण्णी णोअसण्णीवि किं इत्थी वेदा ३ जाव अवेदगावि पज्जत्ती ५ अपज्जत्तीओ ५ दिट्ठी ३ नाणीवि अण्णा णाणा ५ अण्णाणा ३ भयणाए किं मणजोगि ३ अजोगि ४ उवयोग २ आधारो जहा बेंदियाणं उववातो अधेसत्तम तेउ वाउ असंखाउवज्जेहिं ठिती ३ पलि समोहा अस मरंति तेणं भंते अणंतरं उव्व कहिं ग निरंतरं जाव सव्वठसिद्धे उववज्जंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३२. ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव नोसण्णोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि[1] ॥

१३३. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेसा जाव अलेसा ? गोयमा ! सव्वेवि । सोइंदियोवउत्ता जाव नोइंदियोवउत्तावि, सत्त समुग्घाया, तं जहा—वेयणासमुग्घाए जाव[2] केवलिसमुग्घाए । सण्णीवि[3] नोसण्णी-नोअसण्णीवि, इत्थिवेयावि जाव अवेयावि, 'पंच पज्जत्ती पंच अपज्जत्ती'[4] तिविहावि दिट्ठी, चत्तारि दंसणा, णाणीवि अण्णाणीवि—जे णाणी ते अत्थेगतिया दुणाणी अत्थेगतिया तिणाणी अत्थेगतिया चउणाणी अत्थेगतिया एगणाणी जे दुण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी य, जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी य, अहवा आभिणिबोहियणाणी सुयनाणी मणपज्जवणाणी य, जे चउणाणी ते णियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी य, जे एगणाणी ते नियमा केवलनाणी, एवं अण्णाणीवि दुअण्णाणी तिअण्णाणी । मणजोगीवि वइकायजोगीवि अजोगीवि । दुविहे उवओगे । आहारो छद्दिसिं 'उववाओ अहेसत्तम-तेउ-वाउ-असंखेज्जवासाउयवज्जेहिं'[5] । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । दुविहावि मरंति । उव्वट्टित्ता नेरइयाइसु जाव अणुत्तरोववाइएसु, अत्थेगतिया सिज्झंति[6] °बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेंति ॥

१३४. ते णं भंते ! जीवा कतिगतिया कतिआगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचगतिया चउआगतिया, परित्ता संखेज्जा पण्णत्ता । सेत्तं मणुस्सा ॥

देव-पदं

१३५. से किं तं देवा ? देवा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया । 'एवं भेदो भाणियव्वो जहा[7] पण्णवणाए'[8] । ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । तेसि णं तओ सरीरगा—वेउव्विए तेयए कम्मए । ओगाहणा दुविहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ । तत्थ णं जासा

---

१. सव्वेति (क) सर्वत्र ।

२. पण्ण० ३६।१ ।

३. सण्णी असण्णीवि (क) ।

४. पंच पज्जत्ती (क); पंच पज्जत्तापज्जत्तीओ (ख, ग); पर्याप्तिद्वारे पञ्च पर्याप्तयः पञ्चापर्याप्तयः भाषामनःपर्याप्त्योरेकत्वेन विवक्षणात् (मवृ) ।

५. स्वीकृतपाठस्याधारभूमिरस्ति 'ता' प्रतिः मलयगिरीयावृत्तिश्च । शेषेषु आदर्शेषु विस्तृतः पाठो वर्तते—उववातो नेरइएहिं अधेसत्तमवज्जेहिं तिरिक्खजोणिएहिं तेउवाउअसंखेज्जवासाउअवज्जेहिं मणूस्सेहिं अकम्मभूमग-अंतरदीवग-असंखेज्जवासाउयवज्जेहिं देवेहिं सव्वेहिं ।

६. सं० पा०—सिज्झंति जाव अंतं ।

७. पण्ण० १।१३०-१३७ ।

८. चिन्हाङ्कितपाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । आदर्शेषु पाठसंक्षेपः भिन्नप्रकारेण वर्तते—से किं तं भवणवासी २ दसविहा पण्णत्ता तं जहा असुरा जाव थणिया सेत्तं भवणवासी । से किं तं वाणमंतरा २ देवभेदो भाणियव्वो (सव्वो भाणियव्वो—ग, ट) जाव (क, ख, ग, ट); भेदो जाव सव्वट्ठसि (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं, सरीरगा[1] छण्हं संघयणाणं असंघयणी—णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू[2]। जे पोग्गला इट्ठा कंता 'पिया सुभा मणुण्णा मणामा'[3] ते[4] तेसिं सरीरसंघायत्ताए परिणमंति ॥

१३६. किंसंठिया ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तर-वेउव्विया य। तत्थ णं जेते भवधारणिज्जा ते णं समचउरंससंठिया पण्णत्ता। तत्थ णं जेते उत्तरवेउव्विया ते णं नाणासंठाणसंठिया पण्णत्ता। चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णा, छ लेस्साओ, पंच इंदिया, पंच समुग्घाया, सण्णीवि असण्णीवि, इत्थिवेदावि पुरिसवेदावि नो नपुंसगवेया, 'पज्जत्तीओ अपज्जत्तीओ'[5] पंच, दिट्ठी तिण्णि, तिण्णि दंसणा, णाणीवि अण्णाणीवि—जे नाणी ते नियमा तिण्णाणी, अण्णाणी भयणाए, दुविहे उवओगे, तिविहे जोगे, आहारो[6] णियमा छद्दिसिं, ओसण्णकारणं पडुच्च वण्णओ हालिद्दसुक्किलाइं जाव[7] आहारमाहारेंति, उववाओ तिरियमणुस्सेसु[8], ठिती जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, दुविहावि मरंति, 'उव्वट्टित्ता नो नेरइएसु गच्छंति, तिरियमणुस्सेसु जहासंभवं[9], नो देवेसु गच्छंति,' दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता। से तं देवा। से तं पंचेंदिया। सेत्तं ओराला तसा[10] ॥

१३७. थावरस्स[11] णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता ॥

१३८. तसस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो-मुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

---

१. एतत् पदं 'तेसि णं भंते जीवाणं सरीरा किं-संघयणी पण्णत्ता' एतस्य पाठस्य सूचकमस्ति। 'ता' प्रतौ अस्य पदस्य स्थाने एवं पाठोस्ति 'किंसघयणी'।

२. ण्हारू नेव संघयणमत्थि (क, ख, ग, ट)।

३. 'क, ख, ग, ट' आदर्शेषु अस्य पदचतुष्टयस्य स्थाने 'जाव' इति पदं दृश्यते।

४. × (क, ख, ट)।

५. पज्जत्तापज्जत्तीओ (क, ख, ग); पज्जत्ती अपज्जत्तीओ (ट); पज्जत्तीओ ५ अपज्ज (ता)।

६. अतः 'ता' प्रतौ भिन्नः पाठो दृश्यते—आहारो जहा नेरइयाणं ठिती वि। तेणं भंते जीवा मारणंतिय स समोअसमोह दोवि अणंतदव्वा तेउ वाउ विगलंदिय संमुच्छिम वज्जेहिं णेरइय वज्जे देववज्जे सेसेवि असंखाउवज्जे पज्जत्तएसु उव तेणं भंते जीवा कति दुआगतीया दुगतीया परि असं पसत्थे ओस्सण्णकारणं वण्णतो हालिद्द सुकिला गं सुब्भि रसतो अंब महुराइं फास मउय लहुय णिद्धण्हाणि जाव आहार-माहारेंति उववातो जहा णेरतियाणं ठिती वि पण्णत्ता समणाउसो सेत्तं देवा सेत्तं तसा।

७. पण्ण० २८।२६।

८. पञ्चमी स्थाने सप्तमी विभक्तिः।

९. अनन्तरमुद्वृत्य पृथिव्यम्बुवनस्पतिकायिकगर्भ-व्युत्क्रान्तिकसङ्ख्यातवर्षायुष्कतिर्यक्पञ्चेन्द्रिय-मनुष्येषु गच्छन्ति न शेषजीवस्थानेषु (मवृ)।

१०. तसा पाणा (क, ख, ग, ट)।

११. 'ता' प्रतौ १३७, १३८ सूत्रे नैव विद्येते। 'क, ख, ग, ट' आदर्शेषु अतः १४१ सूत्रपर्यन्तं त्रससूत्रं पूर्वं विद्यते, तदनन्तरं च स्थावर-सूत्रमस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३९. थावरे[1] णं भंते ! थावरेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणीओ ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोया असंखेज्जा पुग्गलपरियट्टा, ते णं पुग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो ॥

१४०. तसे णं भंते ! तसेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओ ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा ॥

१४१. थावरस्स णं भंते ! केवइकालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहा तससंचिट्ठणाए ॥

१४२. तसस्स णं भंते ! केवइकालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

१४३. एएसि णं भंते ! तसाणं थावराण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसा, थावरा अणंतगुणा। से तं दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥

---

१. अतः १४१ सूत्रपर्यन्तं 'ता' प्रतौ वाचनाभेदो विद्यते—थावरेणं भंते थावरे ति कालतो केवच्चिरं होति गो जह अंतोमु उक्को वणस्सति कालो तसस्स संचिट्ठणा पुढविकालो थावरस्संतरं पुढविकालो तसस्संतरं वणस्सतिकालो।

दोच्चा तिविहपडिवत्ती

१. तत्थ जेते एवमाहंसु 'तिविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता' ते एवमाहंसु, 'तं जहा'[1]—इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥

२. से किं तं इत्थीओ ? इत्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तिरिक्खजोणित्थीओ मणुस्सित्थीओ[2] देवित्थीओ ॥

३. से किं तं तिरिक्खजोणित्थीओ ? तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जलयरीओ थलयरीओ खहयरीओ[3] ॥

४. से किं तं जलयरीओ ? जलयरीओ पंचविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मच्छीओ जाव[4] सुंसुमारीओ । से तं जलयरीओ ॥

५. से किं तं थलयरीओ ? थलयरीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चउप्पईओ य परिसप्पीओ य ॥

६. से किं तं चउप्पईओ ? चउप्पईओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एगखुरीओ जाव[5] सणप्फईओ । से तं चउप्पयथलयरतिरिक्खजोणित्थीओ ॥

७. से किं तं परिसप्पीओ ? परिसप्पीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उरपरिसप्पीओ[6] य भुयपरिसप्पीओ[7] य ॥

८. से किं तं उरपरिसप्पीओ ? उरपरिसप्पीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—अहीओ अयगरीओ महोरगीओ य । सेत्तं उरपरिसप्पीओ ॥

९. से किं तं भुयपरिसप्पीओ ? भुयपरिसप्पीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गोहीओ णउलीओ सेधाओ सल्लीओ सरडीओ सरंधीओ[8] 'साराओ खाराओ'[9] पवलाइ-

---

१. × (क, ख) ।
२. माणु° (क, ख) ।
३. अतोग्रे तिर्यग्योनिस्त्रियः सम्बन्धी आलापकः 'ता' प्रतौ वृत्तौ च नास्ति ।
४. जी० १।९८ ।
५. जी० १।१०२ ।
६. उरगपरि° (क, ग, ट) ।
७. भुयगपरि° (क, ग, ट) ।
८. सरिवीओ (क); सरंवीओ (ख); सरंथीओ (ग); प्रज्ञापनायां (१।७६) भुजपरिसर्पालापके 'सरंडा' इति पदमस्ति । प्रश्नव्याकरणे च 'सरंब' इति पदमस्ति, तस्य पाठान्तरे 'सरंग' इति दृश्यते ।
९. सावाओ खराओ (क, ख); सावाओ खाराओ (ग); भावाओ वासाओ खाराओ (ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

याओ[१] चउप्पाइयाओ[२] मूसियाओ मुगुंसियाओ[३] घरोलियाओ[४] जाहियाओ[५] छीरविरालियाओ[६]। सेत्तं भुयपरिसप्पीओ ।।

१०. से किं तं खहयरीओ ? खहयरीओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा— चम्मपक्खीओ जाव[७] विततपक्खीओ। सेत्तं खहयरीओ। सेत्तं तिरिक्खजोणित्थीओ ।।

११. से किं तं मणुस्सित्थियाओ? मणुस्सित्थियाओ तिविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा— कम्मभूमियाओ अकम्मभूमियाओ अंतरदीवियाओ[८] ।।

१२. से किं तं अंतरदीवियाओ ? अंतरदीवियाओ अट्ठावीसइविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एगूरुइयाओ आभासियाओ जाव[९] सुद्धदंताओ। सेत्तं अंतरदीवियाओ ।।

१३. से किं तं अकम्मभूमियाओ ? अकम्मभूमियाओ तीसतिविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पंचसु हेमवएसु पंचसु एरण्णवएसु पंचसु हरिवासेसु पंचसु रम्मगवासेसु पंचसु देवकुरासु पंचसु उत्तरकुरासु। सेत्तं अकम्मभूमियाओ ।।

१४. से किं तं कम्मभूमियाओ ? कम्मभूमियाओ पण्णरसविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पंचसु महाविदेहेसु। सेत्तं कम्मभूमगमणुस्सित्थीओ। सेत्तं मणुस्सित्थीओ ।।

१५. से किं तं देवित्थियाओ ? देवित्थियाओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा— भवणवासिदेवित्थियाओ वाणमंतरदेवित्थियाओ जोइसियदेवित्थियाओ वेमाणियदेवित्थियाओ[१०] ।।

१६. से किं तं भवणवासिदेवित्थियाओ ? भवणवासिदेवित्थियाओ दसविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—असुरकुमारभवणवासिदेवित्थियाओ जाव[११] थणियकुमारभवणवासिदेवित्थियाओ। से तं भवणवासिदेवित्थयाओ ।।

१७. से किं तं वाणमंतरदेवित्थियाओ ? वाणमंतरदेवित्थियाओ अट्ठविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पिसायवाणमंतरदेवित्थियाओ जाव[१२] गंधव्ववाणमंतरदेवित्थयाओ। से तं वाणमंतरदेवित्थियाओ ।।

१८. से किं तं जोइसियदेवित्थियाओ ? जोइसियदेवित्थियाओ पंचविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चंदविमाणजोइसियदेवित्थियाओ सूर-गह-नक्खत्त-ताराविमाणजोइसिय-

---

१. पवणाइयाओ (ग); पवण्णाईयाओ (ट)।
२. वाउप्पइय (पण्हा० १।८); प्रश्नव्याकरणवृत्तौ 'वातोत्पत्तिका' इति व्याख्यातमस्ति।
३. मुगुसियाओ (क, ख); मुंगुसियाओ (ग); मुगसियाओ (ट); मंगुस (पण्ण० १।७६)।
४. घेरोलियाओ (ट)।
५. गोहियाओ जोहियाओ (क); गोहियाओ जाहियाओ (ख, ग, ट)।
६. थिरावलियाओ (क); थिरीविरालियाओ (ख); छिरविरालियाओ (ग, ट); छीरल (पण्हा० १।८)।
७. जी० १।११३-११६।
८. अतोग्रे मनुष्यस्त्रीसम्बन्धी आलापकः 'ता' प्रतौ वृत्तौ च नास्ति।
९. पण्ण० १।८६।
१०. अतोग्रे देवस्त्रीसम्बन्धी आलापकः 'ता' प्रतौ वृत्तौ च नास्ति।
११. पण्ण० १।१३१।
१२. पण्ण० २।४५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवित्थियाओ। सेत्तं जोइसियदेवित्थियाओ ॥

१९. से किं तं वेमाणियदेवित्थियाओ ? वेमाणियदेवित्थियाओ दुविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा— सोहम्मकप्पवेमाणियदेवित्थियाओ ईसाणकप्पवेमाणियदेवित्थियाओ। सेत्तं वेमाणियदेवित्थियाओ ॥

२०. इत्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एगेणं आदेसेणं— जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं। एक्केणं आदेसेणं— जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं नव पलिओवमाइं। एगेणं आदेसेणं—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं। एगेणं आदेसेणं—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइं ॥

२१. तिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥

२२. जलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

२३. चउप्पयथलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहा तिरिक्खजोणित्थीओ ॥

२४. उरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणित्थीणं[1] भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं[2] पुव्वकोडी। एवं भुयपरिसप्पतिरिक्खजोणित्थीओ[3] ॥

२५. एवं खहयरतिरिक्खित्थीणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो ॥

२६. मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं[4] तिण्णि पलिओवमाइं। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

२७. कम्मभूमयमणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

२८. भरहेरवयकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

२९. पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

३०. अकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा !

---

१. उरग० (क, ख, ग, घ)।
२. उक्कस्सं (क, ख)।
३. भुयगपरिसप्पि० (क, ग, ट); भुयपरिसप्पि° (ख)।
४. उक्कस्सेणं (क, ख) प्रायः सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

३१. हेमवएरण्णवए जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगं, उक्कोसेणं पलिओवमं। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

३२. हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणयाइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

३३. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणाइं तिण्णि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

३४. अंतरदीवगअकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणयं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

३५. देवित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं ॥

३६. भवणवासिदेवित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं ॥

३७. एवं असुरकुमारभवणवासिदेवित्थियाए, नागकुमारभवणवासिदेवित्थियाए जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं पलिओवमाइं। एवं सेसाणवि जाव थणियकुमारीणं[1] ॥

३८. वाणमंतरीणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं[2] अद्धपलिओवमं ॥

३९. 'जोइसियदेवित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा'[3] ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं[4], उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं ॥

४०. चंदविमाणजोइसियदेवित्थीणं[5] जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं 'तं चेव'[6] ॥

---

१. °कुमाराणं (क)।

२. उक्कस्सं (क)।

३. जोतिसीणं (क)।

४. पलिओवमअट्ठभागं (ग, ट); मलयगिरिवृत्तावपि 'अष्टभागपल्योपमं' इति व्याख्यातमस्ति।

५. °देवित्थियाए (क, ख, ग, ट) चन्द्रविमानवासिज्योतिष्कस्त्रीणाम् (मवृ)।

६. जी० २।३९।

४१. सूरिविमाणजोइसियदेवित्थीणं[1] जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिमब्भहियं ॥

४२. गहविमाणजोइसियदेवित्थीणं जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ॥

४३. णक्खत्तविमाणजोइसियदेवित्थीणं जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं सातिरेगं ॥

४४. ताराविमाणजोइसियदेवित्थीणं[2] जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगं अट्ठभागपलिओवमं ॥

४५. वेमाणियदेवित्थीणं[3] जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं ॥

४६. सोहम्मकप्पवेमाणियदेवित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ॥

४७. ईसाणदेवित्थीणं जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं णव पलिओवमाइं ॥

४८. इत्थी णं भंते ! इत्थित्ति कालओ केवच्चिरं[4] होइ ? गोयमा ! एक्केणादेसेण —जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दसुत्तरं पलिओवमसयं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं । एक्केणादेसेण—जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठारस पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्त-मब्भहियाइं[5] । एक्केणादेसेण—जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं चउद्दस पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं । एक्केणादेसेण—जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं पलिओवमसयं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियं । एक्केणादेसेण—जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं पलिओवमपुहुत्तं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियं ॥

४९. तिरिक्खजोणित्थी णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भ-हियाइं ॥

५०. जलयरीए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहुत्तं ॥

५१. 'चउप्पयथलयरीए जहा ओहियाए'[6] ॥

५२. उरपरिसप्पि[7]-भुयपरिसप्पित्थीणं[8] जहा जलयरीणं ॥

५३. खहयरीए[9] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं ॥

५४. मणुस्सित्थी णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च

---

१. °देवित्थियाए (क, ख, ग, ट); सूर्यविमानवासिज्योतिष्कदेवीनाम् (मवृ) ।
२. °देवित्थियाए (क, ख, ग, ट); ताराविमानज्योतिष्कदेवीनाम् (मवृ) ।
३. °देवित्थियाए (क, ख, ग, ट); वैमानिकदेवस्त्रीणाम् (मवृ) ।
४. किच्चिरं (ग) ।
५. °पुहुत्त° (क, ग) ।
६. चउप्पदथलयरतिरिक्खी जधा ओहिता तिरिक्खी (क, ख, ग, ट) ।
७. उरगपरिसप्पि (क, ख, ग, ट) ।
८. भुयग° (क, ख, ग, ट) ।
९. खहयरि (क); खहयरि (ख, ग, ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहत्तमब्भहियाइं। धम्म-चरणं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

५५. एवं कम्मभूमियावि भरहेरवयावि[1], णवरं—खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं देसूणपुव्वकोडिमब्भहियाइं[2]। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

५६. पुव्वविदेह-अवरविदेहित्थीणं खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहत्तं। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

५७. अकम्मभूमिकमणुस्सित्थी[3] णं भंते ! अकम्मभूमिकमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ॥

५८. हेमवएरण्णवए अकम्मभूमिकमणुस्सित्थी णं भंते ! हेमवएरण्णवए अकम्म-भूमिकमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं पलिओवमं। संहरणं[4] पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियं ॥

५९. हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थी णं भंते ! हरिवासरम्मगवास-अकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं[5] पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगाइं, उक्कोसेणं दो पलि-ओवमाइं। संहरणं[6] पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणपुव्व-कोडिमब्भहियाइं ॥

६०. उत्तरकुरुदेवकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सित्थी[7] णं भंते ! उत्तरकुरुदेवकुरुअकम्मभू-मिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणाइं तिण्णि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलि-ओवमाइं। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं[8] ॥

६१. अंतरदीवाकम्मभूमिगमणुस्सित्थी[9] णं भंते ! अंतरदीवाकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागं। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियं ॥

---

१. भरसेर° (ग, ट)।
२. °कोडीअब्भहियाइं (क, ख, ट)।
३. अकम्मभूमक° (ग); अकम्मभूमिग° (ट)।
४. साहरणं (क, ख, ग)।
५. पलितोवमाइं (क, ख, ग, ट)।
६. साहरणं (क, ख, ग)।
७. °देवकुरूणं (ग, ट)।
८. अब्भधियाइं (ग)।
९. °भूमग° (क); °भूमक° (ख, ग, ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२. देवित्थी णं भंते ! देवित्थित्ति कालओ, 'जच्चेव संचिट्ठणा'[1] ।।

६३. इत्थीणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो ।।

६४. एवं सव्वासिं तिरिक्खित्थीणं ।।

६५. मणुस्सित्थीए खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं 'एक्कं समयं,'[2] उक्कोसेणं अणंतं कालं—जाव अवड्ढपोग्गल-परियट्टं देसूणं। एवं जाव[3] पुव्वविदेह-अवरविदेहियाओ ।।

६६. अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो। एवं जाव[4] अंतर-दीवियाओ ।।

६७. देवित्थियाणं सव्वासिं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ।।

६८. एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थियाणं मणुस्सित्थियाणं 'देवित्थियाण य'[5] कतरा कतराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्व-त्थोवाओ[6] मणुस्सित्थियाओ, तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ ।।

६९. एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थियाणं—जलयरीणं थलयरीणं खहयरीण य कतरा कतराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्व-त्थोवाओ खहयरतिरिक्खिजोणित्थियाओ, थलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ।।

७०. एयासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं—कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतर-दीवियाण य कतरा कतराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवाओ अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ, ३. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्म-भूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, ५. हरिवासरम्मगवासअकम्म-भूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ ७. हेमवएरण्णवयअकम्मभूमिग-मणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, ९. भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, ११. पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ ।।

७१. एयासि णं भंते ! देवित्थियाणं—भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं[7] वेमाणिणीण य कतरा कतराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ वेमाणियदेवित्थियाओ, २. भवणवासिदेवित्थियाओ असंखेज्ज-

---

१. 'सेव संचिट्ठणा भाणियव्वा' तदेवावस्थानं वक्तव्यम् (मवृ) ।
२. समयं (क); समओ (ख, ट) ।
३. जी० २।५५ ।
४. जी० २।५८-६० ।
५. देवित्थियाणं (क, ख, ग, ट) ।
६. सव्वत्थोवा (क, ग) ।
७. जोइसियाणं (क, ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणाओ, ३. वाणमंतरदेवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, ४. जोइसियदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ।।

७२. एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थियाणं—जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं, मणुस्सित्थियाणं—कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं, देवित्थियाणं—भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीण य कतरा कतराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवाओ अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ, ३. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ[1] संखेज्जगुणाओ, ५. हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ ७. हेमवएरण्णवयअकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, ९. भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, ११. पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, १२. वेमाणियदेवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, १३. भवणवासिदेवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, १४. खहयरतिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, १५. थलयरतिरिक्खिजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, १६. जलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, १७. वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, १८. जोइसियदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ।।

७३. इत्थिवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंधठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढो सत्तभागो[2] पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणो, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीओ । पण्णरस वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती कम्मणिसेओ ।।

७४. इत्थिवेदे णं भंते ! किंपगारे पण्णत्ते ? गोयमा ! फुंफुअग्गिसमाणे[3] पण्णत्ते । सेत्तं इत्थियाओ ।।

७५. से किं तं पुरिसा ? पुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा ।।

७६. से किं तं तिरिक्खजोणियपुरिसा ? तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जलयरा थलयरा खहयरा । इत्थिभेदो भाणियव्वो जाव[4] खहयरा । सेत्तं खहयरा । सेत्तं तिरिक्खजोणियपुरिसा ।।

७७. से किं तं मणुस्सपुरिसा ? मणुस्सपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा[5] । सेत्तं मणुस्सपुरिसा ।।

७८. से किं तं देवपुरिसा? देवपुरिसा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थीभेदो भाणियव्वो[6]

---

१. × (क, ख, ग) सर्वत्र ।

२. °भाओ (क, ख, ग, ट) ।

३. फुंफ° (क); पुंफ° (ग); फुम्फुकाग्निसमानः, फुम्फुकशब्दो देशीत्वात्कारीषवचनः (मवृ) ।

४. जी० २।४-१० ।

५. अस्मिन् सूत्रे पूर्वसूत्रवत् 'इत्थिभेदो भाणियव्वो' इति सूचना नास्ति कृता तथापि मनुष्यवर्णनकृते द्रष्टव्यानि जी० २।१२-१४ सूत्राणि ।

६. जी० २। १६-१९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जाव सव्वट्ठसिद्धा'[1] ॥

७९. पुरिसस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

८०. तिरिक्खजोणियपुरिसाणं मणुस्सपुरिसाणं जा चेव इत्थीणं ठिती सा चेव भाणियव्वा[2] ॥

८१. देवपुरिसाणवि जाव सव्वट्ठसिद्धाणं ति ताव ठिती जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्वा[3] ॥

८२. पुरिसे णं भंते ! पुरिसेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं ॥

८३. तिरिक्खजोणियपुरिसे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं। एवं तहेव[4] संचिट्ठणा जहा इत्थीणं जाव[5] खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसस्स संचिट्ठणा ॥

८४. मणुस्सपुरिसाणं भंते ! कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

८५. एवं सव्वत्थ जाव[6] पुव्वविदेह-अवरविदेह-कम्मभूमगमणुस्सपुरिसाणं। अकम्मभूमगमणुस्सपुरिसाणं जहा अकम्मभूमिकमणुस्सित्थीणं[7] जाव[8] अंतरदीवगाणं। जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा जाव[9] सव्वट्ठसिद्धगाणं ॥

८६. पुरिसस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

८७. तिरिक्खजोणियपुरिसाणं[10] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो। एवं जाव खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसाणं ॥

८८. मणुस्सपुरिसाणं[11] भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं

---

१. मलयगिरिवृत्तौ 'जाव अणुत्तरोववाइया' इति पाठ उट्टङ्कितोस्ति तथा यावत्पदेनात्र सनत्कुमारादारभ्य कल्पोपपन्नदेवानां कल्पातीतदेवानां च ग्रहणं जायते।

२. जी० २। २१-३४।

३. पण्ण० ४। मलयगिरिणा कस्याश्चिद् विस्तृतवाचनाया आधारेण व्याख्या कृता उपलब्धसूत्रं च पाठान्तररूपेण उल्लिखितम्—क्वचिदेवं सूत्रपाठ:—'देवपुरिसाण ठिई जहा पण्णवणाए ठिइपए तहा भाणियव्वा'।

४. तं चेव (ग)।

५. जी० २। ५०-५३।

६. जी० २। ५५,५६।

७. °भूमक° (क,ग); °भूमग° (ट)।

८. जी० २। ५७-६१।

९. जी० २। ८१।

१०. अस्य सूत्रस्य स्थाने वृत्तौ निम्नलिखितं सूत्रं व्याख्यातमस्ति—जं तिरिक्खजोणित्थीणमंतरं तं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं (मवृ)।

११. अस्य सूत्रस्य स्थाने वृत्तौ निम्नलिखितं सूत्रं व्याख्यातमस्ति—जं मणुस्सइत्थीणमन्तरं तं मणुस्सपुरिसाणं (मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समयं, उक्कोसेणं 'अणंतं कालं'[1]—अणंताओ उस्सप्पिणीओ जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

८९. कम्मभूमकाणं जाव[2] विदेहो जाव[3] धम्मचरणे एक्को समओ, सेसं जहित्थीणं जाव[4] अंतरदीवकाणं ॥

९०. देवपुरिसाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

९१. भवणवासिदेवपुरिसाणं ताव जाव सहस्सारो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

९२. आणतदेवपुरिसाणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं वासपुहत्तं[5], उक्कोसेणं वणस्सतिकालो । एवं जाव गेवेज्जदेवपुरिसस्सवि ॥

९३. अणुत्तरोववातियदेवपुरिसस्स जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं साइरेगाइं ॥

९४. अप्पाबहुयाणि, जहेवित्थीणं जाव[6]—

९५. एतेसि णं भंते ! देवपुरिसाणं—भवणवासीणं वाणमंतराणं जोतिसियाणं वेमाणियाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा वेमाणियदेवपुरिसा २. भवणवइदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा ३. वाणमंतर-देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ४. जोतिसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा ॥

९६. एतेसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियपुरिसाणं—जलयराणं थलयराणं खहयराणं, मणुस्सपुरिसाणं—कम्मभूमगाणं[7] अकम्मभूमगाणं[8] अंतरदीवगाणं, देवपुरिसाणं—भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं सोधम्माणं जाव सव्वट्ठसिद्धगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा अंतरदीवग-अकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा ३. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि[9] संखेज्जगुणा ५. हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि संखेज्जगुणा ७. हेमवतहेरण्णवत-वासअकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि संखेज्जगुणा ९. भरहेरवतवासकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा

---

१. वनस्पतिकाल : (मवृ) ।

२. जी० २ । ५५, ५६ ।

३. जी० २ । ८८ ।

४. जी० २ । ६६ ।

५. °पुधत्तं (क); °पुहुत्तं (ग, ट) ।

६. अस्मिन् यावत्पदे स्त्रीणामल्पबहुत्वानां समाहारः कृतोस्ति । तत्कृते द्रष्टव्यानि इमानि सूत्राणि—जी० २ । ६८-७० । 'ता' प्रतौ एतेषां पञ्चानामपि अल्पबहुत्वानां पाठे भिन्ना वाचना दृश्यते—एतेसि णं भंते तिरिक्खजोणियपुरिसाणं मणु देवपु कतरे क सव्वत्थोवा मणुस्स पु तिरी असं देवपुरि संखे । पुच्छा सव्वत्थोवा खह थल संखे ज ति संखे । मणु पु जधा मणुयीणं एतेसि णं भंते देव पु भवण जाव वेमाणि कत सव्व-त्थोवा अणुत्तरोववातिया देव पुरिसा उवरिमं गे संखे मज्झिम गे सं हेट्ठिम गे अच्चुए कप्पे देवपु सं जावणते सं सहस्सारो असं महासु असं लंतए असं बंभलोए असं माहिंदे असं खहचर पंचि असं थल सं जल सं वाण सं जोति संखे । मलयगिरिवृत्तावपि पूर्णः पाठो व्याख्यातोस्ति ।

७. °भूमकाणं (क, ख) ।

८. अकम्मभूमा (ख, ग) ।

९. सर्वत्र—तुल्या इति गम्यम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोवि संखेज्जगुणा ११. पुव्वविदेह-अवरविदेहकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि संखेज्जगुणा १२. अणुत्तरोववातियदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा १३. उवरिमगेविज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा १४. मज्झिमगेविज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा १५. हेट्ठिमगेविज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा १६. अच्चुयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा जाव आणतकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा २० सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा २४. महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा जाव माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा २५. सणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा । २६. ईसाणकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा २७. सोधम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा । २८. भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा २९. खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा ३०. थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा ३१. जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा ३२. वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्जगुणा ३३. जोतिसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा ।।

९७. पुरिसवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंधट्ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ संवच्छराणि, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दसवाससयाइं अबाहा अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मणिसेओ ।।

९८. पुरिसवेदे णं भंते ! किंपकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! 'दवग्गिजालसमाणे'[१] पण्णत्ते'[२] । सेत्तं पुरिसा ।।

९९. से किं तं नपुंसगा[३] ? नपुंसगा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयनपुंसगा तिरिक्खजोणियनपुंसगा मणुस्सजोणियनपुंसगा ।।

१००. से किं तं नेरइयनपुंसगा ? नेरइयनपुंसगा सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयनपुंसगा सक्करप्पभापुढविनेरइयनपुंसगा जाव अधेसत्तमपुढविनेरइयनपुंसगा ।।

१०१. से किं तं तिरिक्खजोणियनपुंसगा ? तिरिक्खजोणियनपुंसगा पंचविधा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा बेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा तेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा चउरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा पंचिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा ।।

१०२. से किं तं एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा ? एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा पंचविधा[४] पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया आउक्काइया तेउक्काइया वाउक्काइया वणस्सतिकाइया । से तं एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा ।।

१०३. से किं तं बेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा ? बेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा अणेगविधा पण्णत्ता[५] । से तं बेइंदियतिरिक्खजोणिया । एवं तेइंदियावि, चउरिंदियावि ।।

---

१. वणदवग्गि° (क, ख, ग, ट) ।
२. दवग्गिजालसमाणोयं (ता) ।
३. णपुंसगा (क, ख, ता) ।
४. अणेगविधा (क, ग) ।
५. प्रयुक्तपाठादर्शेषु द्वीन्द्रियादीनां भेदा न सन्ति साक्षात् लिखिताः । मलयगिरिवृत्तौ प्रज्ञप्ता इति पदानन्तरं 'तद्यथा—पुलाकिमिया इत्यादि पूर्ववत्तावद्वक्तव्यं यावच्चतुरिन्द्रियभेदपरिसमाप्तिः' इति व्याख्यातमस्ति, अनेन प्रतीयते वृत्तिकारस्य सम्मुखे कश्चिद् विस्तृतपाठादर्श: आसीत् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०४. से किं तं पंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा ? पंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—जलयरा थलयरा खहयरा ।।

१०५. से किं तं जलयरा ? जलयरा सो चेव 'इत्थिभेदो आसालियसहितो'[1] भाणियव्वो । से तं पंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा ।।

१०६. से किं तं मणुस्सनपुंसगा ? मणुस्सनपुंसगा तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा । भेदो[2] ।।

१०७. नपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।।

१०८. नेरइयनपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं 'सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अधेसत्तमापुढविनेरइया'[3] ।।

१०९. तिरिक्खजोणियनपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।।

११०. एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ।।

१११. पुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं । सव्वेसिं एगिंदियनपुंसगाणं ठिती भाणियव्वा[4] ।।

११२. 'बेइंदियतेइंदियचउरिंदियनपुंसगाणं ठिती भाणितव्वा'[5] ।।

११३. पंचिंदियतिरिक्खिजोणियनपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । एवं जलयरतिरिक्खजोणियनपुंसग-चउप्पदथलयर-उरगपरिसप्पभुयगपरिसप्प-खहयरतिरिक्खजोणियनपुंसगस्स सव्वेसिं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।।

---

१. पुव्वुत्तभेदो आसालियवज्जितो (ग); मलयगिरिवृत्तौ 'खचराश्च' अतोग्रे 'एते च प्राग्वत्सप्रभेदा वक्तव्याः' इत्येव व्याख्यातमस्ति । 'ता' प्रतौ पाठसंक्षेपो विद्यते ।

२. अतोग्रे 'क, ख, ग' आदर्शेषु एते वर्णाः लिखिता दृश्यन्ते लू तृ ला थ ह्रा । 'ट' प्रतौ 'जाव भाणियव्वो' इति पाठोस्ति । 'ता' प्रतौ पाठसंक्षेपो विद्यते । मलयगिरिणा 'एतेपि प्राग्वत्सप्रभेदा वक्तव्याः' इति व्याख्यातम् ।

३. 'ता' प्रतौ विस्तृतवाचना दृश्यते— रतणाए जहं दस वा उक्को सागरं सक्कर ३ वालु ३ ग्रा पंक ग्रा द धूम द दग्रा तमाए सत्तदस बावीसा तमतमा बावीस तेत्तीस । मलयगिरिणा 'विशेषचिन्तायां' इति उल्लेखपूर्वकं विस्तृतवाचना व्याख्यातास्ति ।

४. जी० १ । ६५, ७४, ७९, ८२ । 'ता' प्रतौ विस्तृतवाचना दृश्यते—पुढिवि एवं विधा आउ णपुंस ग्रा तेउ ३ रातिंदिया वाउ ३ वास सह वण दस वास सह । मलयगिरिवृत्तावपि विस्तृतवाचना व्याख्यातास्ति ।

५. 'ता' प्रतौ एवं पाठो विद्यते—बेंदि बार वासा तेंदि अउणपण्णं राति चतु छम्मास । मलयगिरिणापि इत्थमेव व्याख्यातम् ।

११४. मणुस्सनपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

११५. कम्मभूमगभरहेरवय-पुव्वविदेह-अवरविदेहमणुस्सनपुंसगस्सवि तहेव ॥

११६. अकम्मभूमगमणुस्सनपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च 'जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं'[१]। साहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। एवं जाव अंतरदीवगाणं ॥

११७. नपुंसए णं भंते ! नपुंसएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं वणस्सइकालो[२] ॥

११८. णेरइयनपुंसए[३] णं भंते ! णेरइयनपुंसएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। एवं पुढवीए ठिती भाणियव्वा[४] ॥

११९. तिरिक्खजोणियनपुंसए णं भंते ! तिरिक्खजोणियनपुंसएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

१२०. एवं[५] एगिंदियनपुंसगस्स वणस्सतिकाइयस्सवि एवमेव। सेसाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालतो, खेत्तओ असंखेज्जा लोया ॥

१२१. बेइंदियतेइंदियचउरिंदियनपुंसगाण य जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं ॥

१२२. 'पंचिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसए णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहत्तं। एवं जलयरतिरिक्खचउप्पदथलचरउरपरिसप्पभुयपरिसप्पमहोरगाणवि'[६] ॥

१२३. मणुस्सनपुंसगस्स णं भंते ! मणुस्सनपुंसएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहत्तं। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। एवं कम्मभूमगभरहेरवयपुव्वविदेहअवरविदेहेसुवि भाणियव्वं ॥

१२४. अकम्मभूमगमणुस्सनपुंसए णं भंते ! अकम्मभूमगमणुस्सनपुंसएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च[७] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं मुहुत्तपुहत्तं। साहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। एवं सव्वेसिं जाव

१. जहण्णेणवि उक्को अंतो मु (ता)।
२. तरुकालो (क, ख, ग, ट)।
३. 'ता' प्रतौ अस्य सूत्रस्य स्थाने पाठसंक्षेप एवमस्ति—णेरइयाणं जधा ठिती।
४. पण्ण० ४।४-२२।
५. 'ता' प्रतौ द्वीन्द्रियादिपर्यन्तं एवं पाठोस्ति— एगिंदिणपुंसए पुढवि आउ वा जणय पुढविकालो वणस्सतीणं वण कालो पिगलाणं संखेज्जकालं।
६. एवं जाव खहचर (ता)।
७. × (क, ख, ग, ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतरदीवगाणं ॥

१२५. नपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं ॥

१२६. णेरइयनपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो[1] ॥

१२७. रयणप्पभापुढवीनेरइयनपुंसगस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो, एवं सव्वेसिं जाव[2] अधेसत्तमा ॥

१२८. तिरिक्खजोणियनपुंसगस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं ॥

१२९. एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं ॥

१३०. पुढविआउतेउवाऊणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

१३१. [3]वणस्सतिकाइयाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव असंखेज्जा लोया[3]। बेइंदियादीणं[4] जाव खहयराणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

१३२. मणुस्सनपुंसगस्स खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो। धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं। एवं कम्मभूमकस्सवि भरतेरवतस्स पुव्वविदेहअवरविदेहकस्सवि ॥

१३३. अकम्मभूमकमणुस्सनपुंसगस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो। संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो। एवं जाव अंतरदीवगत्ति ॥

१३४. एतेसि णं भंते ! णेरइयनपुंसगाणं तिरिक्खजोणियनपुंसगाणं मणुस्सनपुंसगाण य कतरे कतरेहिंतो[5] •अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा मणुस्सनपुंसगा २. नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ३. तिरिक्खजोणियनपुंसगा अणंतगुणा ॥

१३५. एतेसि णं भंते ! नेरइयनपुंसगाणं[6]—रयणप्पहापुढविणेरइयनपुंसगाणं जाव अहेसत्तमपुढविणेरइयनपुंसगाण य कतरे कतरेहिंतो[7] •अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा अहेसत्तमपुढविनेरइयनपुंसगा ६. छट्ठपुढविणेरइनपुंसगा असंखेज्जगुणा जाव दोच्चपुढविणेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ७. इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ॥

१३६. एतेसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियनपुंसगाणं—एगिंदियतिरिक्खजोणिय-

---

१. तरुकालो (क, ख, ग, ट)।
२. जी० २।११६।
३. वणस्सतीणं पुढविकालो (ता)
४. सेसाणं बेइंदियादीणं (क, ख, ग, ट)।
५. सं० पा०—कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
६. × (ग, ट, ता)।
७. सं० पा०—कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसगाणं पुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं जाव वणस्सतिकाइयएगिंदिय-तिरिक्खजोणियनपुंसगाणं, बेइंदियतेइंदियचउरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं पंचेंदिय-तिरिक्खजोणियनपुंसगाणं—जलयराणं थलयराणं खहयराण य कतरे कतरेहिंतो[1] •अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा खहयरतिरिक्खजोणिय-नपुंसगा २. थलयरतिरिक्खजोणियनपुंसगा संखेज्जगुणा ३. जलयरतिरिक्खजोणियनपुंसगा संखेज्जगुणा ४. चतुरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया ५. तेइंदियतिरिक्खजोणिय-नपुंसगा विसेसाहिया ६. बेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया ७. तेउक्काइयएगिं-दियतिरिक्खजोणियनपुंसगा असंखेज्जगुणा ८. पुढविक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया ९. 'आऊ विसेसाहिया १०. वाऊ विसेसाहिया'[2] ११. वणस्सतिकाइयएगिंदिय-तिरिक्खजोणियनपुंसगा अणंतगुणा ।।

१३७. एतेसि णं भंते ! मणुस्सनपुंसगाणं—कम्मभूमिनपुंसगाणं अकम्मभूमिनपुंसगाणं अंतरदीवगनपुंसगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा अंतरदीवगअकम्मभूमगमणुस्सनपुंसगा ११. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्म-भूमगा दोवि संखेज्जगुणा एवं जाव पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमगा दोवि संखेज्जगुणा ।।

१३८. एतेसि णं भंते ! णेरइयनपुंसगाणं—रयणप्पभापुढविनेरइयनपुंसगाणं जाव अधेसत्तमापुढविणेरइयनपुंसगाणं, तिरिक्खजोणियनपुंसगाणं—एगिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं जाव वणस्सतिकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिय-नपुंसगाणं बेइंदियतेइंदियचतुरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-नपुंसगाणं—जलयराणं थलयराणं खहयराणं, मणुस्सनपुंसगाणं—कम्मभूमिगाणं अकम्म-भूमिगाणं अंतरदीवगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा अधेसत्तमपुढविणेरइयनपुंसगा ६. छट्ठपुढविनेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा जाव दोच्चपुढविनेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ७. अंतरदीवगमणुस्सनपुंसगा असंखेज्जगुणा १७. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सनपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा जाव पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमगमणुस्सनपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा १८. रयणप्पभापुढवि-णेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा १९. खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा असंखेज्जगुणा २०. थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा संखेज्जगुणा २१. जलयरपंचेंदियतिरिक्ख-जोणियनपुंसगा संखेज्जगुणा २२. चतुरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया २३. तेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया २४. बेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया २५. तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा असंखेज्जगुणा २६. पुढवि-काइयएगिंदियतिरिक्खिजोणियनपुंसगा विसेसाहिया २७. आउक्काइयतिरिक्खिजोणिय-नपुंसगा विसेसाहिया २८. वाउकाइयतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया २९. वणस्सइ-काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा अणंतगुणा ।।

१३९. नपुंसगवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंधठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेण ऊणगा,

---

१. सं० पा०—कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया । २. एवं आउवाउ (क, ख, ग, ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, 'दोण्णि य वाससहस्साइं'[1] अबाधा, अबाहूणिया कम्मठिती कम्मणिसेगो ।।

१४०. नपुंसगवेदे णं भंते ! किंपगारे पण्णत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाहसमाणे पण्णत्ते समणाउसो ! से तं नपुंसगा ।।

१४१. एतासि[2] णं भंते ! इत्थीणं पुरिसाणं नपुंसगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा पुरिसा २. इत्थीओ संखेज्जगुणाओ ३. नपुंसगा अणंतगुणा ।।

१४२. एतासि णं भंते ! तिरिक्खजोणिइत्थीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं तिरिक्खजोणियनपुंसगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणियपुरिसा २. तिरिक्खजोणिइत्थीओ संखेज्जगुणाओ ३. तिरिक्खजोणियनपुंसगा अणंतगुणा ।।

१४३. एतासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुस्सनपुंसगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा मणुस्सपुरिसा २. मणुस्सित्थीओ संखेज्जगुणाओ ३. मणुस्सनपुंसगा असंखेज्जगुणा ।।

१४४. एतासि णं भंते ! देवित्थीणं देवपुरिसाणं णेरइयनपुंसगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा णेरइयनपुंसगा २. देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ३. देवित्थीओ संखेज्जगुणाओ ।।

१४५. एतासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं तिरिक्खजोणियनपुंसगाणं, मणुस्सित्थीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुस्सनपुंसगाणं, देवित्थीणं देवपुरिसाणं णेरइयनपुंसगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिय वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा मणुस्सपुरिसा २. मणुस्सित्थीओ संखेज्जगुणाओ ३. मणुस्सनपुंसगा असंखेज्जगुणा ४. णेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ५. तिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा ६ तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ७. देवपुरिसा संखेज्जगुणा[3] ८. देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ९. तिरिक्खजोणियनपुंसगा अणंतगुणा ।।

१४६. एतासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं—जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं, तिरिक्खजोणियपुरिसाणं—जलयराणं थलयराणं खहयराणं, तिरिक्खजोणियनपुंसगाणं—एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं पुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं जाव वणस्सतिकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं बेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं तेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं चउरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं पंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं—जलयराणं थलयराणं खहयराणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा २. खहयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ३. थलयरपंचिदियतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा ४. थलयरपंचिदियतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ५. जलयरतिरिक्ख-

---

१. वीस य वास सया (ता) । सर्वत्र ।

२. एतेसि (क, ख, ग, ट); एगासि (ता) ३. असंखेज्जगुणा (क, ख, ट)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोणियपुरिसा संखेज्जगुणा ६. जलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ७. खहयर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा असंखेज्जगुणा ८. थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा संखेज्जगुणा ९. जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा संखेज्जगुणा १०. चउरिंदिय-तिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया ११. तेइंदियनपुंसगा विसेसाहिया १२. बेइंदियनपुंसगा विसेसाहिया १३. तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा असंखेज्जगुणा १४. पुढवि-काइयनपुंसगा विसेसाहिया १५. आउक्काइयनपुंसगा विसेसाहिया १६. वाउक्काइयनपुंसगा विसेसाहिया १७. वणस्सतिकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा अणंतगुणा ॥

१४७. एतासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं—कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवि-याणं, मणुस्सपुरिसाणं—कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं, मणुस्सनपुंसगाणं—कम्मभूमगाणं[1] अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! २. अंतरदीवगा मणुस्सित्थियाओ मणुस्स-पुरिसा य एते णं दोण्णि वि तुल्ला सव्वत्थोवा ६. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सि-त्थियाओ मणुस्सपुरिसा एते णं दोण्णिवि तुल्ला संखेज्जगुणा १०. हरिवासरम्मगवास-अकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य एते णं दोण्णिवि तुल्ला संखेज्जगुणा १४. हेमवतहेरण्णवतअकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य दोण्णिवि तुल्ला संखेज्जगुणा १६. भरहेरवतकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि संखेज्जगुणा १८. भरहेरवतकम्मभूमिगमणु-स्सित्थियाओ दोवि संखेज्जगुणाओ। २०. पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि संखेज्जगुणा २२. पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि संखेज्ज-गुणाओ २३. अंतरदीवगमणुस्सनपुंसगा असंखेज्जगुणा २५. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमग-मणुस्सनपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा २७. 'हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमगमणुस्सनपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा २९. हेमवतहेरण्णवतअकम्मभूमगमणुस्सनपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा ३१. भरहेरवतकम्मभूमगमणुस्सनपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा'[2] ३३. पुव्वविदेहअवरविदेह-कम्मभूमगमणुस्सनपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा ॥

१४८. एतासि णं भंते ! देवित्थीणं—भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीणं, देवपुरिसाणं—भवणवासीणं जाव वेमाणियाणं, सोधम्मकाणं जाव गेवेज्जकाणं अणुत्तरोववातियाणं, णेरइयनपुंसगाणं—रयणप्पभापुढविणेरइयनपुंसगाणं जाव अहेसत्तम-पुढविनेरइयनपुंसगाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवा अणुत्तरोववातियदेवपुरिसा ८. उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा 'तहेव जाव आणते'[3] कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा, ९. अहेसत्तमाए पुढवीए णेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा १०. छट्ठीए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ११. सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा १२. महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा १३. पंचमाए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा १४. लंतए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा १५. चउत्थीए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा १६. बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा १७. तच्चाए

---

१. कम्मभूमिकाणं (क); कम्मभूमाणं (ग)।

२. एवं तहेव जाव (क, ख, ग, ट)।

३. मज्झिम गे सं हेट्ठिम गे अच्चते क दे पुरि सं जाव आणते (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा १८. माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा १९. सणंकुमारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा २०. दोच्चाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा २१. ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा २२. ईसाणे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ २३. सोधम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा २४. सोधम्मे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ २५. भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा २६. भवणवासिदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ २७. इमीसे रयणप्पभापुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा २८ वाणमंतरदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा २९. वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ३०. जोतिसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा ३१. जोतिसियदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ॥

१४६. एतासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं—जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं, तिरिक्खजोणियपुरिसाणं—जलयराणं थलयराणं खहयराणं, तिरिक्खजोणियपुरिसाणं—जलयराणं थलयराणं खहयराणं, तिरिक्खजोणयनपुंसगाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं—पुढविक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं जाव वणस्सतिकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं बेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं तेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं चउरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं पंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं—जलयराणं थलयराणं खहयराणं, मणुस्सित्थीणं—कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं, मणुस्सपुरिसाणं—कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं, मणुस्सनपुंसगाणं—कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं, देवित्थीणं—भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोतिसिणीणं वेमाणिणीणं, देवपुरिसाणं—भवणवासीणं वाणमंतराणं जोतिसियाणं वेमाणियाणं, सोधम्मकाणं जाव गेवेज्जकाणं अणुत्तरोववातियाणं, नेरइयनपुंसगाणं—रयणप्पभापुढविनेरइयनपुंसगाणं जाव अहेसत्तमपुढविणेरइयनपुंसगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! २. अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य, एते णं दोवि तुल्ला सव्वत्थोवा, ६. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमगमणुस्सित्थीओ पुरिसा य, एते णं दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा। एवं १०. हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ। एवं १४. हेमवतहेरण्णवय १६. भरहेरवयकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा[1] दोवि संखेज्जगुणा १८. भरहेरवतकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणाओ २०. पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि संखेज्जगुणा २२. पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दोवि संखेज्जगुणाओ २३. अणुत्तरोववातियदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा ३०. उवरिमगेवेज्जा देवपुरिसा संखेज्जगुणा जाव आणते कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा ३१. अधेसत्तमाए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ३२. छट्ठीए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ३३. सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ३४. महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ३५. पंचमाए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ३६. लंतए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ३७. चउत्थीए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ३८. बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ३९. तच्चाए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ४०. माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ४१. सणंकुमारे

१. °हेरवयवासकम्म° (क, ग, ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा[1] ४२. दोच्चाए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ४३. अंतरदीवगअकम्मभूमगमणुस्सनपुंसगा असंखेज्जगुणा ५३. देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमग-मणुस्सनपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा। एवं जाव[2] विदेहत्ति ५४. ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ५५. ईसाणे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ५६. सोधम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा ५७. सोहम्मे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ५८. भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा ५९. भवणवासिदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ६०. इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा ६१. खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा ६२. खहयर-तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ६३. थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा ६४. थलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ६५. जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्ज-गुणा ६६. जलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ६७. वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्ज-गुणा ६८. वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ६९. जोतिसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा ७०. जोतिसियदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ७१. खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा[3] असंखेज्जगुणा ७२. थलयरनपुंसगा संखेज्जगुणा ७३. जलयरनपुंसगा संखेज्जगुणा ७४. चतुरिंदियनपुंसगा विसेसाहिया ७५. तेइंदियनपुंसगा विसेसाहिया ७६. बेइंदियनपुंसगा विसेसाहिया ७७. तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा असंखेज्जगुणा ७८. पुढवि-क्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया ७९. आउक्काइयएगिंदियतिरिक्ख-जोणियनपुंसगा विसेसाहिया ८०. वाउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया ८१. वणस्सतिकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा[4] अणंतगुणा॥

१५०. इत्थीणं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! एगेणं आएसेणं जहा[5] पुव्विं भणियं। एवं पुरिसस्सवि नपुंसगस्सवि। संचिट्ठणा पुणरवि तिण्हंपि जहा[6] पुव्विं भणिया। अंतरंपि तिण्हंपि जहा[7] पुव्विं भणियं तहा नेयव्वं॥

१५१. तिरिक्खजोणित्थियाओ तिरिक्खजोणियपुरिसेहिंतो तिगुणाओ तिरूवाहियाओ, मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसेहिंतो सत्तावीसतिगुणाओ सत्तावीसतिरूवाहियाओ, देवित्थियाओ देवपुरिसेहिंतो बत्तीसइगुणाओ बत्तीसइरूवाहियाओ। सेत्तं तिविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता॥

संगहणी गाहा—

तिविहेसु होइ भेओ, ठिई य संचिट्ठणंतरप्पबहुं[8]
वेदाण य बंधठिती, वेओ तह 'किंपगारो उ'[9]॥१॥

---

१. संखेज्जगुणा (क, ख, ग, ता)।

२. देवकुरूत्तरकुर्वकर्म्मभूमकहरिवर्षरम्यकवर्षा-कर्म्मभूमकहैमवतहैरण्यवताकर्म्मभूमकभरतैर-वतकर्म्मभूमकपूर्वविदेहापरविदेहकर्म्मभूमक-मनुष्यनपुंसका यथोत्तरं संखेयगुणाः (मवृ)।

३. °नपंसा (ग)।

४. वणप्फइ° (क, ख, ग)।

५. जी० २।२०-४७; ७९-८१; १०७-११६।

६. जी० २।४८-६२; ८२-८५; ११७-१२२।

७. जी० २।६३-६७; ८६-९३; १२४-१३३।

८. °तहप्पबहुं (क)।

९. किंपगारे य (ट, ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तच्चा चउव्विहपडिवत्ती

१. तत्थ जेते एवमाहंसु 'चउव्विधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता' ते एवमाहंसु, तं जहा—नेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा ॥

२. से किं तं नेरइया ? नेरइया सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—पढमापुढविनेरइया[1] दोच्चापुढविनेरइया तच्चापुढविनेरइया चउत्थापुढवीनेरइया पंचमापुढवीनेरइया छट्ठापुढवि-नेरइया सत्तमापुढवीनेरइया ॥

३. पढमा णं भंते ! पुढवी किंनामा किंगोत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! घम्मा णामेणं, रयणप्पभा गोत्तेणं ॥

४. दोच्चा णं भंते ! पुढवी किंनामा किंगोत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! वंसा णामेणं, सक्करप्पभा गोत्तेणं । एवं एतेणं अभिलावेणं सव्वासिं पुच्छा, णामाणि इमाणि सेला तच्चा अंजणा चउत्थी रिट्ठा पंचमी मघा छट्ठी माघवती सत्तमा जाव[2] तमतमा गोत्तेणं पण्णत्ता[3] ॥

५. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी केवतिया बाहल्लेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! इमा णं रयणप्पभापुढवी असिउत्तरं जोयणसयसहस्सं[4] बाहल्लेणं पण्णत्ता । एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्वा—

आसीतं बत्तीसं, अट्ठावीसं तहेव[5] वीसं च ।
अट्ठारस सोलसगं, अट्ठुत्तरमेव हिट्ठिमिया ॥१॥

६. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी कतिविधा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—खरकंडे पंकबहुले कंडे आवबहुले[6] कंडे ॥

---

१. पढमपु° (क, ख, ट) ।

२. पण्ण० १।५३ ।

३. 'ता' प्रतौ अस्यालापकस्य पाठ एवमस्ति—एवं घम्मा वंसा सेला अंजणरिट्ठा मघा य माघवती । सत्तण्हं पुढवीणं एते णामा मुणेतव्वा जाव सत्तमा माधवती णामेणं तमतमा गोत्तेणं पण्णत्ता । मलयगिरिवृत्तौ पाठान्तरस्य उल्लेखोस्ति—अत्र केषुचित्पुस्तकेषु संग्रहणि गाथे—

घम्मा वंसा सेला अंजण रिट्ठा मघा य माघ-वती ।
सत्तण्हं पुढवीणं एए नामा उ नायव्वा ॥१॥
रयणा सक्कर वालुय पंका धूमा तमा तम-तमा य ।
सत्तण्हं पुढवीणं एए गोत्ता मुणेयव्वा ॥२॥

४. जोतण° (क) ।

५. च होंति (ता, मवृ) ।

६. अवबहुले (क); आदबहुले (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते, तं जहा—१. रयणे[1] २. वइरे ३. वेरुलिए ४. लोहितक्खे ५. मसारगल्ले ६. हंसगब्भे ७. पुलए ८. सोयंधिए ९. जोतिरसे १०. अंजणे ११. अंजणपुलए १२. रयते १३. जातरूवे १४. अंके १५. फलिहे १६. रिट्ठे कंडे ॥

८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते । एवं जाव रिट्ठे ॥

९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पंकबहुले कंडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥

१०. एवं आवबहुले कंडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥

११. सक्करप्पभा णं भंते ! पुढवी कतिविधा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता । एवं जाव अहेसत्तमा ॥

१२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! तीसं णिरयावाससयसहस्सा[2] पण्णत्ता । एवं एतेणं अभिलावेणं सव्वासिं पुच्छा, इमा गाहा अणुगंतव्वा—

तीसा य पण्णवीसा, पण्णरस दसेव तिण्णि य हवंति ।
पंचूणसयसहस्सं, पंचेव अणुत्तरा णरगा ॥१॥

जाव अहेसत्तमाए पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाणरगा पण्णत्ता, तं जहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपतिट्ठाणे ॥

१३. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे घणोदधीति वा घणवातेति वा तणुवातेति वा ओवासंतरेति वा ? हंता अत्थि । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

१४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसजोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

१५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्कं जोयणसहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ते । एवं जाव रिट्ठे ॥

१६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पंकबहुले कंडे केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! चउरासीतिजोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

१७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए आवबहुले[3] कंडे केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! असीतिजोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

१८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?

---

१. रतणकंडे (क, ग); रयणकंडे (ख, ट); रयणामए कंडे (ता) ।

२. अतोग्रे 'ता' प्रतौ भिन्नः पाठोस्ति—
तीसा य पण्णवीसा पण्णवीसा पण्णरस दसेव सतसहस्साइं ।
तिण्णेगं पंचूणं पंचेव अणत्तरा णरता ॥
जावधेसत्तमाए णं भंते केवति णिरयावाससतस गो पंचदिसि पंच अणुत्तरा महमहालया महाणिरया पं तं काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पतिट्ठाणे णाम पंचमे ।

३. आउबहुले (ख, ट, ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवाते केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते । 'एवं तणुवातेवि ओवासंतरेवि'[1] ।।

२०. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए घणोदही केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

२१. सक्करप्पभाए पुढवीए घणवाते केवतिए बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते । एवं तणुवातेवि, ओवासंतरेवि । जहा सक्करप्पभाए पुढवीए एवं जाव अधेसत्तमाए ।।

२२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए खेत्तच्छेएणं छिज्जमाणीए अत्थि दव्वाइं वण्णतो काल-नील-लोहित-हालिद्द-सुक्किलाइं, गंधतो सुरभिगंधाइं दुब्भिगंधाइं, रसतो तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुराइं, फासतो कक्खड-मउय-गरुय-लहु-सीत-उसिण-णिद्ध-लुक्खाइं, संठाणतो परिमंडल-वट्ट-तंस-चउरंस-आययसंठाणपरिणयाइं अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णओगाढाइं अण्णमण्ण-सिणेहपडिबद्धाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ।।

२३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडस्स सोलसजोयणसहस्सबाहल्लस्स खेत्तच्छेएणं छिज्जमाणस्स अत्थि दव्वाइं जाव[2] ? हंता अत्थि ।।

२४. इमीसे[3] णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणनामगस्स कंडस्स जोयणसहस्स-बाहल्लस्स खेत्तच्छेएणं छिज्जमाणस्स तं चेव जाव ? हंता अत्थि । एवं जाव रिट्ठस्स ।।

२५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पंकबहुलस्स कंडस्स चउरासीतिजोयण-सहस्सबाहल्लस्स खेत्तच्छेएणं छिज्जमाणस्स तं चेव । एवं आवबहुलस्सवि असीतिजोयण-सहस्सबाहल्लस्स ।।

२६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिस्स वीसं जोयणसहस्सबाहल्लस्स खेत्तच्छेएण तहेव । एवं घणवातस्स असंखेज्जजोयणसहस्सबाहल्लस्स तहेव । 'तणुवातस्स ओवासंतरस्सवि तं चेव'[4] ।।

२७. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए खेत्तच्छे-एण छिज्जमाणीए अत्थि दव्वाइं वण्णतो जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि । एवं घणोदहिस्स वीसजोयणसहस्सबाहल्लस्स, घणवातस्स असंखेज्जजोयणसहस्सबाहल्लस्स, एवं जाव ओवासंतरस्स । जहा सक्करप्पभाए एवं जाव अहेसत्तमाए ।।

२८. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी किंसंठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरि-

---

१. तणुवाते एवं चेव इमीसे र ओवासंतरे के बाहल्ले असंखेज्जाइं जोयण सह बाह पं (ता)।

२. वण्णतो काल जाव परिणयाइं (क, ख, ग, ट)।

३. 'ता' प्रतौ अस्य सूत्रस्य पाठसंक्षेप एवमस्ति— एवं रतणादीणं जाव रिट्ठेत्ति ।

४. 'ता' प्रतौ अत्र पाठभेदो विद्यते—तणुवातोवा-संतराणं असंखजोयण सह बाहल्लेणं जस्स जं पमाणं तस्स तं भाणितव्वं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठिता पण्णत्ता ।।

२९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे किंसंठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्ते ।।

३०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे किंसंठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिए पण्णत्ते। एवं जाव रिट्ठे। एवं पंकबहुलेवि। एवं आवबहुलेवि, घणोदधीवि, घणवाएवि, तणुवाएवि, ओवासंतरेवि—सव्वे झल्लरिसंठिता पण्णत्ता ।।

३१. सक्करप्पभा णं भंते ! पुढवी किंसंठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरिसंठिता पण्णत्ता ।।

३२. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए घणोदधी किंसंठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्ते। एवं जाव ओवासंतरे। जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया एवं जाव अहेसत्तमाएवि ।।

३३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ केवतियं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसहिं जोयणेहिं अबाधाए[1] लोयंते पण्णत्ते। एवं दाहिणिल्लातो पच्चत्थिमिल्लातो उत्तरिल्लातो ।।

३४. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो केवतियं अबाधाए लोयंते पण्णते ? गोयमा ! तिभागूणेहिं तेरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते। एवं चउद्दिसिंपि ।।

३५. वालुयप्पभाए णं भंते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लातो पुच्छा। गोयमा ! सतिभागेहिं तेरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते। एवं चउद्दिसिंपि ।।

३६. एवं[2] सव्वासिं चउसुवि दिसासु पुच्छितव्वं—पंकप्पभाए चोद्दसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते। पंचमाए[3] तिभागूणेहिं पण्णरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते। छट्ठीए सतिभागेहिं पण्णरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते। सत्तमीए सोलसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते। एवं जाव उत्तरिल्लातो ।।

३७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणोदधिवलए घणवातवलए तणुवातवलए ।।

३८. इमीसे[4] णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए दाहिणिल्ले चरिमंते कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविधे पण्णत्ते, तं जहा—घणोदधिवलए घणवायवलए तणुवायवलए। एवं जाव उत्तरिल्ले। एवं सव्वासिं जाव अधेसत्तमाए उत्तरिल्ले ।।

३९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलए केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! छ जोयणाणि बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

---

१. आबाधाए (क, ख, ट)।

२. 'ता' प्रतौ अस्य सूत्रस्य स्थाने एवं पठोस्ति—चतुत्थीए चोद्दसहिं आबाधाए पंचमाए तिभागूणेहिं पण्णरसहिं जो ष्कछट्ठीए सतिभागेहिं पण्णरसहिं जो ष्क सत्तमीए सोलस चतुद्दिसिं।

३. धूमप्पभाए (क, ट)।

४. 'ता' प्रतौ अस्य सूत्रस्य स्थाने एवं पाठोस्ति—एवं चतुद्दिसिं। एवं सेसाण वि पुढ।

४०. सक्करप्पभाए[1] पुढवीए घणोदधिवलए केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! सतिभागाइं छजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

४१. वालुयप्पभाए पुच्छा । गोयमा ! तिभागूणाइं सत्त जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते । एवं एतेणं अभिलावेणं—पंकप्पभाए सत्त जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते । धूमप्पभाए सतिभागाइं सत्त जोयणाइं । तमप्पभाए तिभागूणाइं अट्ठ जोयणाइं । तमतमप्पभाए अट्ठ जोयणाइं ।।

४२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवायवलए केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अद्धपंचमाइं जोयणाइं बाहल्लेणं ।।

४३. सक्करप्पभाए पुच्छा । गोयमा ! कोसूणाइं पंच जोयणाइं बाहल्लेणं । एवं एतेणं अभिलावेणं—वालुयप्पभाए पंच जोयणाइं बाहल्लेणं[2] । पंकप्पभाए सक्कोसाइं पंच जोयणाइं बाहल्लेणं । धूमप्पभाए अद्धछट्ठाइं जोयणाइं बाहल्लेणं । तमप्पभाए कोसूणाइं छ जोयणाइं बाहल्लेणं । अहेसत्तमाए छ जोयणाइं बाहल्लेणं ।।

४४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तणुवायवलए केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! छक्कोसेणं बाहल्लेणं पण्णत्ते । एवं एतेणं अभिलावेणं—सक्करप्पभाए सतिभागे छक्कोसे बाहल्लेणं[3] । वालुयप्पभाए तिभागूणे सत्त कोसं बाहल्लेणं । पंकप्पभाए पुढवीए सत्त कोसं बाहल्लेणं । धूमप्पभाए सतिभागे सत्त कोसे बाहल्लेणं । तमप्पभाए तिभागूणे अट्ठ कोसे बाहल्लेणं । अधेसत्तमाए पुढवीए अट्ठ कोसे बाहल्लेणं ।।

४५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलयस्स छज्जोयणबाहल्लस्स खेत्तच्छेएणं छिज्जमाणस्स अत्थि दव्वाइं वण्णतो काल-नील-लोहित-हालिद्द-सुक्किलाइं जाव[4] ? हंता अत्थि ।।

४६. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए घणोदधिवलयस्स सतिभागछजोयणबाहल्लस्स खेत्तच्छेदेणं छिज्जमाणस्स जाव ? हंता अत्थि । एवं जाव अधेसत्तमाए जं जस्स बाहल्लं ।।

४७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवातवलयस्स अद्धपंचमजोयण-बाहल्लस्स खेत्तच्छेदेणं छिज्जमाणस्स जाव ? हंता अत्थि । एवं जाव अहेसत्तमाए जं जस्स बाहल्लं । एवं तणुवायवलयस्सवि जाव अधेसत्तमाए जं जस्स बाहल्लं ।।

४८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलए किंसंठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते पण्णत्ते, 'जे णं इमं'[5] रयणप्पभं पुढविं सव्वतो संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ।।

४९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवातवलए किंसंठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टे वलयागार[6] °संठाणसंठिते पण्णत्ते,° जे णं इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए

---

१. 'ता' प्रतौ सूत्रद्वयस्य स्थाने पाठसंक्षेपोस्ति—दोच्चाए सतिभागाइं छ तच्चाए तिभागूणाणि सत्त चउत्थीए सत्त पंचमाए सतिभागाइं सत्तजोयणाइं छट्ठी तिभागूणाइं अट्ठ सत्तमाए अट्ठ जो ।

२. बाहल्लेणं पण्णत्ताइं (क, ग) सर्वत्र ।

३. क्वचिद् 'बाहल्लेणं पण्णते' इति विद्यते (क, ख, ग, ट) ।

४. जी० ३।२२ ।

५. जे णिमं (ता) ।

६. सं० पा०—वलयागारे तहेव जाव जे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घणोदधिवलयं सव्वतो समंता संपरिक्खिवित्ताणं चिट्ठइ। एवं जाव अहेसत्तमाए घणवातवलए ॥

५०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तणुवातवलए किंसंठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए पण्णत्ते[1], जे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवातवलयं सव्वतो समंता संपरिक्खिवित्ताणं चिट्ठइ। एवं जाव अधेसत्तमाए तणुवातवलए ॥

५१. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी केवतियं आयाम-विक्खंभेणं ? 'केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ता'[2] ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते। एवं जाव अधेसत्तमा ॥

५२. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी अंते य मज्झे य सव्वत्थ समा बाहल्लेणं पण्णत्ता ? हंता गोयमा ! इमा णं रयणप्पभा पुढवी अंते य मज्झे य सव्वत्थ समा बाहल्लेणं। एवं जाव अधेसत्तमा ॥

५३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववण्णपुव्वा ? सव्वजीवा उववण्णा ? गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववण्णपुव्वा, नो चेव णं सव्वजीवा उववण्णा। 'एवं जाव अहेसत्तमाए'[3] ॥

५४. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी सव्वजीवेहिं विजढपुव्वा ? सव्वजीवेहिं विजढा ? गोयमा ! इमा णं रयणप्पभा पुढवी सव्वजीवेहिं विजढपुव्वा, नो चेव णं सव्वजीवविजढा। एवं जाव अधेसत्तमा ॥

५५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठपुव्वा ? सव्वपोग्गला पविट्ठा ? गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठपुव्वा, नो चेव णं सव्वपोग्गला पविट्ठा। एवं जाव अधेसत्तमाए[4] ॥

५६. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा ? सव्वपोग्गला विजढा ? गोयमा ! इमा णं रयणप्पभा पुढवी सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा, नो चेव णं सव्वपोग्गलेहिं विजढा। एवं जाव अधेसत्तमा ॥

५७. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी किं सासता[5] ? असासता ? गोयमा ! सिय सासता, सिय असासता ॥

५८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासता सिय असासता ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासता, वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—'सिय सासता'[6], सिय असासता। एवं जाव अधेसत्तमा ॥

५९. इमा णं भंते। रयणप्पभा पुढवी कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! न कयाइ[7]

१. जाव (क, ख, ग, ट)।

२. × (क, ख, ग, ट)।

३. एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए (ग, ट); जावधेसत्तमा (ता); अधःसप्तम्याः (मवृ)।

४. अधःसप्तम्यां पृथिव्याम् [मवृ]।

५. सासया (ग, ट, ता)।

६. तं चेव जाव (क, ख, ग, ट)।

७. कदायि (क, ख, ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण आसि, ण कयाइ[1] णत्थि, ण कयाइ[2] ण भविस्सति। भुविं च भवइ य भविस्सति य धुवा णियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिता णिच्चा। एवं जाव अधेसत्तमा[3]॥

६०. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए 'रयणस्स[4] कंडस्स उवरिल्लातो चरिमंताओ'[5] हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं केवतियं अबाधाए[6] अंतरे पण्णत्ते? गोयमा! एक्कं जोयणसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते॥

६१. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए 'रयणस्स कंडस्स'[7] उवरिल्लातो चरिमंताओ वइरस्स कंडस्स उवरिल्ले चरिमंते, एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते? गोयमा! एक्कं जोयणसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते॥

६२. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए 'रयणस्स कंडस्स'[8] उवरिल्लाओ चरिमंताओ वइरस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते? गोयमा! दो जोयणसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते। 'एवं कंडे-कंडे दो दो आलावगा जाव[9] रिट्ठस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते सोलस जोयणसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते'[10]॥

६३. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए 'रयणस्स कंडस्स'[11] उवरिल्लाओ चरिमंताओ पंकबहुलस्स कंडस्स उवरिल्ले चरिमंते, एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते? गोयमा! सोलस जोयणसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते। हेट्ठिल्ले[12] चरिमंते एक्कं

१,२. कताथि (क, ख)।

३. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट' आदर्शेषु सूत्रद्वयं उपलभ्यते—इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंतातो हेट्ठिल्ले चरिमंते एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते? गोयमा! असिउत्तरं जोयणसतसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते। इमीसे णं भंते! रयण पु उवरिल्लातो चरिमंतातो खरस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णते? गोयमा! सोलस जोयणसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते। 'ता' प्रतौ नैतद् विद्यते, मलयगिरिवृत्तावपि नास्ति व्याख्यातम्। वृत्तिकृता पाठभेदसूचनापि नास्ति कृता। स्यादस्य अर्वाचीनत्वं अथवा वृत्तिकृता नैष वाचनाभेदः समुपलब्धः। एतत् सूत्रद्वयं नावश्यकं प्रतीयते, अस्य विषयः ६२,६३ सूत्रयोः प्रतिपादितोस्ति। तत् सूत्रद्वयस्वीकारे पौनरुक्त्यमेव भवेत्।

४. रयणामयस्स (ता)।

५. उवरिल्लातो चरिमंताओ रयणस्स कंडस्स (क, ख, ग, ट)।

६. आबाधाए (क, ता) प्रायः सर्वत्र।

७. × (क, ख, ग,ट); रयणामयस्स कंडस्स (ता)।

८. × (क, ख, ग, ट)।

९. जी० ३।७।

१०. एवं जाव रिट्ठस्स उवरिल्ले पण्णरस जोयणसहस्साइं हेट्ठिल्ले चरिमंते सोलस जोयणसहस्साइं (क, ख, ग, ट)।

११. × (क, ख, ग, ट)।

१२. अतः सूत्रस्य पूर्तिपर्यन्तं मलयगिरिवृत्तौ त्रयाणां सूत्राणां पूर्णपाठस्य संकेतो व्याख्या च विद्यते, तदनुसारेण पाठसंरचना इत्थं भवति—इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडस्स उवरिल्लातो चरिमंताओ पंकबहुलस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं अबाधाए केवतियं अंतरे पण्णते? गोयमा! एकं जोयणसयसहस्सं। इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडस्स उवरिल्लातो चरिमंताओ आवबहुलस्स कंडस्स उवरिल्ले

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयणसयसहस्सं[1]। आवबहुलस्स उवरिल्ले एक्कं जोयणसयसहस्सं, हेट्ठिल्ले चरिमंते असीउत्तरं[2] जोयणसयसहस्सं[3]। 'घणोदहिस्स उवरिल्ले असिउत्तरजोयणसयसहस्सं, हेट्ठिल्ले[4] चरिमंते दो जोयणसयसहस्साइं ॥

६४. इमीसे[5] णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवातस्स उवरिल्ले चरिमंते दो जोयणसयसहस्साइं, हेट्ठिल्ले चरिमंते असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं ॥

६५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तणुवातस्स उवरिल्ले चरिमंते असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं अवाधाए अंतरे, हेट्ठिल्लेवि असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं। एवं ओवासंतरेवि ॥

६६. दोच्चाए[6] णं भंते ! पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं केवतियं अवाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बत्तीसुत्तरं जोयणसयसहस्सं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

६७. दोच्चाए[7] घणोदधिस्सुवरिल्ले चरिमंते एवं चेव, हेट्ठिल्ले चरिमंते बावण्णुत्तरं जोयणसतसहस्सं। घणतणुवातोवासंतराणं जहा रयणाए ॥

६८. तच्चाए उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्ले चरिमंते अट्ठावीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते। घणोदधिस्स उवरिल्ले चरिमंते एवं चेव, हेट्ठिल्ले

चरिमंते, एस णं अबाधाए केवतियं अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! एकं जोयणसयसहस्सं। इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडस्स उवरिल्लातो चरिमंताओ आवबहुलस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असीउत्तरं जोयणसयसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते।

१. °सहस्सं आबाधाए अं (ता)।

२. आसीउत्तरं (ता)।

३. °सहस्सं आबाधाए अंतरे पं (ता)।

४. घणोदधिस्सुवरिमे एवं चेव हेट्ठिमे (ता)।

५. 'ता' प्रतौ अस्य अग्रिमसूत्रस्य च स्थाने एवं पाठोस्ति—घणवातस्सुवरिमं एवं चेव हेट्ठिल्ले असंखेज्जाइं जोयणस तणुवातोवासंतराणं हेट्ठिम उवरिम असंखेज्जाइं जो।

६. सक्करप्पभाए (क, ख, ग, ट)।

७. ६७-७२ सूत्राणां स्थाने 'क, ख, ग, ट' आदर्शेषु संक्षिप्तपाठोस्ति, अर्थबोधजटिलतापि विद्यते। [illegible] वाचनास्ति, [illegible] मूले स्व स्वीकृता। संक्षिप्तवाचना एवमस्ति—सक्करप्प पु उवरि घणोदधिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते बावण्णुत्तरं जोयणसयसहस्सं अबाधाए। घणवातस्स असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं पण्णत्ता। एवं जाव उवासंतरस्सवि जावधेसत्तमाए, णवरं जीसे जं बाहल्लं तेण घणोदधी संबंधेतव्वो बुद्धीए। सक्करप्पभाए अणुसारेणं घणोदहिसहिताणं इमं पमाणं। तच्चाए णं भंते ! अडयालीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं। पंकप्पभाए पुढवीए चत्तालीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं। धूमप्पभाए पु अट्ठतीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं। तमाए पुढवीए छत्तीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं। अधेसत्तमाए पुढवीए अट्ठावीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं जाव अधेसत्तमाए णं (अधेसत्तमाए एस णं—ट) भंते ! पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंतातो उवासंतरस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अडयालीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं । सेसं जधा रयणाए ।।

६९. चउत्थीए हेट्ठिल्लातो उवरिल्ले वीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते । घणोदधिस्स उवरिल्ले एवं चेव, हेट्ठिल्ले चत्तालीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं । सेसं जहा रयणाए ।।

७०. पंचमाए उवरिल्लातो हेट्ठिल्ले अट्ठारसुत्तरं जोयणसतसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते । घणोदधिस्सुवरिल्ले एवं चेव, हेट्ठिमे अट्ठतीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं । सेसं जधा रयणाए ।।

७१. छट्ठीए उवरिमातो हेट्ठिमं सोलसुत्तरं जोयणसतसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते । घणोदधिस्स उवरिमं एवं चेव, हेट्ठिल्ले छत्तीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं । सेसं जहा रयणाए ।।

७२. सत्तमाए हेट्ठिल्लातो उवरिल्ले अट्ठुत्तरं जोयणसतसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते । घणोदधिस्स उवरिमं एवं चेव, हेट्ठिमं अट्ठावीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं । सेसं जहा रयणाए ।।

७३. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय बाहल्लेणं किं तुल्ला ? विसेसाहिया ? संखेज्जगुणा ? वित्थारेणं[1] किं तुल्ला ? विसेसहीणा ? संखेज्जगुणहीणा ? गोयमा ! इमा णं रयणप्पभा पुढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय बाहल्लेणं नो तुल्ला, विसेसाहिया, नो संखेज्जगुणा । वित्थारेणं नो तुल्ला, विसेसहीणा, नो संखेज्जगुणहीणा ।।

७४. दोच्चा णं भंते ! पुढवी तच्चं पुढविं पणिहाय बाहल्लेणं किं तुल्ला ? एवं चेव भाणितव्वं । एवं तच्चा चउत्थी पंचमी छट्ठी ।।

७५. छट्ठी णं भंते ! पुढवी सत्तमं पुढविं पणिहाय बाहल्लेणं किं तुल्ला ? विसेसाहिया ? संखेज्जगुणा ? एवं चेव भाणियव्वं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ।।

नेरइयउद्देसओ बीओ

७६. कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ।।

७७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं केवतियं ओगाहित्ता हेट्ठा केवइयं वज्जित्ता मज्झे केवतिए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठावि एगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अडहत्तरे[2] जोयणसयसहस्से, एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्साइं[3] भवंतित्तिमक्खाया । ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा जाव[4] असुभा णरएसु वेयणा, एवं एएणं अभिलावेणं उववज्जिऊण[5] भाणियव्वं ठाणप्पयाणुसारेणं । जत्थ जं बाहल्लं जत्थ जत्तिया वा नरयावाससयसहस्सा जाव अहेसत्तमाए पुढवीए । अहेसत्तमाए मज्झिमं केवतिए कति अणुत्तरा महइमहालया महाणिरया पण्णत्ता एवं पुच्छितव्वं वागरेयव्वंपि तहेव । छट्ठी-

---

१. वित्थरेणं (ता) ।।
२. अडसत्तरी (ग); अट्ठुत्तरे (ता) ।
३. णरयावासं सतसहस्सा (ता) ।
४. पण्ण० २।२१-२७ ।
५. उववज्जिऊण (क, ट); उववंजिऊण (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमासु काऊअगणिवण्णाभा भाणियव्वा ॥

७८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरका[1] किंसंठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--आवलियपविट्ठा य आवलियबाहिरा य। तत्थ णं जेते आवलियपविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—वट्टा तंसा चउरंसा। तत्थ णं जेते आवलियबाहिरा ते णाणासंठाणसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—अयकोट्ठसंठिता[2] पिट्ठपयणगसंठिता[3] कंडूसंठिता लोहीसंठिता कडाहसंठिता थालीसंठिता पिहडगसंठिता किण्हसंठिता[4] उडवसंठिता[5] मुरवसंठिता मुयंगसंठिता नंदिमुयंगसंठिता आलिंगकसंठिता सुघोससंठिता दद्दरयसंठिता पणवसंठिता पडहसंठिता भेरिसंठिता झल्लरीसंठिता कुत्तुंवकसंठिता नालिसंठिता। एवं जाव तमाए[6] ॥

७९. अहेसत्तमाए[7] णं भंते ! पुढवीए णरका किंसंठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--वट्टे य तंसा य ॥

८०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरका केवतियं बाहल्लेणं[8] पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि जोयणसहस्साइं, बाहल्लेणं पण्णत्ता, तं जहा—'हेट्ठा घणा सहस्सं'[9], मज्झे झुसिरा सहस्सं, उप्पि संकुइया सहस्सं। एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

८१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरका केवतियं आयामविक्खंभेणं ? केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जवित्थडा य असंखेज्जवित्थडा य। तत्थ णं जेते संखेज्जवित्थडा ते णं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, संखेज्जाइं, जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता। तत्थ णं जेते असंखेज्जवित्थडा ते णं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता। एवं जाव तमाए ॥

८२. अहेसत्तमाए[10] णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्ज-

---

१. नरगा (ट, ता)।

२. °कोट्ठग° (ता)।

३. पिट्ठयपणग० (ग); पिट्ठपणय० (ट); अतोग्रे 'ता' प्रतौ संग्रहणीगाथे स्तः। मलयगिरिवृत्तावपि ते उद्धृते विद्येते। गाथा—
अयकोट्ठ पिट्ठपयणग कंडू लोही कहाड संठाणा।
थाली पिहडग किण्ह उडमय मुरवे मुतिंगे य ॥
नंदिमुतिंगे आलिंगु सुघोसे दद्दरे य पणो य।
पडहा भेरी झल्लरि धत्तुवा णालि संठाणा ॥ (ता)।
अयकोट्ठपिट्ठपयणग कंडूलोही कडाह संठाणा।
थाली पिहडग किण्ह (ग) उडए मुरवे मुयंगे य ॥
नंदिमुइंगे आलिंग सुघोसे दद्दरे य पणवे य।
पडहग झल्लरि भेरीकुत्तुंबग नाडि संठाणा ॥ (मवृ)।

४. किण्णपुडसं० (क, ग); किमियडसं० (ख); किमिपुडसं० (ट)।

५. 'ख, ग, ट' आदर्शेषु केषाञ्चित् पदानां व्यत्ययो दृश्यते।

६. पंचमी छट्ठी (ता)।

७. 'ता' प्रतौ अत्र पाठसंक्षेपः—तमतमाए दुविहा पं तं वट्टे य तंसा य।

८. पाहलेणं (ता)।

९. हेट्ठिल्ले चरिमंते घणं सहस्सं (क, ख); हेट्ठिल्लि घणो सहस्सं (ट)।

१०. तमतमाए (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य। तत्थ णं जेसे संखेज्जवित्थडे से णं एक्कं जोयणसयसहस्सं[1] आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि कोसे य अट्ठावीसं च धणुसतं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलयं च किंचिविसेसाधिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते। तत्थ णं जेते असंखेज्जवित्थडा ते णं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं[2] आयामविक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं[3] परिक्खेवेणं पण्णत्ता ॥

८३. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नरया केरिसया वण्णेणं पण्णत्ता? गोयमा! काला कालोभासा[4] गंभीरलोमहरिसा[5] भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता। एवं जाव अधेसत्तमाए ॥

८४. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए णरका केरिसया गंधेणं पण्णत्ता? गोयमा! से जहाणामए अहिमडेति वा गोमडेति वा सुणमडेति[6] वा 'मज्जारमडेति वा मणुस्समडेति वा महिसमडेति वा मूसगमडेति वा'[7] आसमडेति वा हत्थिमडेति वा सीहमडेति वा वग्घमडेति वा विगमडेति[8] वा दीवियमडेति वा मयकुहिय-विणट्ठ[9]-कुणिमवावण्ण-दुरभिगंधे[10] 'असुइविलीणविगय[11]-बीभच्छदरिसणिज्जे किमिजालाउलसंसत्ते'[12] भवेयारूवे सिया? णो इणट्ठे समट्ठे। गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतरका चेव अकंततरका चेव[13] °अप्पियतरका चेव अमणुण्णतरका चेव° अमणामतरका चेव गंधेणं पण्णत्ता। एवं जाव अधेसत्तमाए पुढवीए ॥

८५. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए णरया केरिसया फासेणं पण्णत्ता? गोयमा! से जहानामए असिपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा कलंबचीरियापत्तेइ वा सत्तग्गेइ[14] वा कुंतग्गेइ वा तोमरग्गेति वा नारायग्गेति वा सूलग्गेति वा लउलग्गेति वा भिंडिमालग्गेति वा सूचिकलावेति वा 'विच्छुयकंटएति वा कवियच्छूति वा'[15] इंगालेति वा जालेति वा मुम्मुरेति वा अच्चिति वा अलाएति वा सुद्धागणीइ व भवे एयारूवे सिया? णो तिणट्ठे समट्ठे। गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतरका चेव जाव अमणामतरका चेव फासे णं पण्णत्ता। एवं जाव अधेसत्तमाए पुढवीए ॥

८६. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नरका केमहालया पण्णत्ता? गोयमा!

---

१. अतोग्रे 'ता' प्रतौ 'जंबुद्दीवपमाणे' इति पाठोस्ति।

२. जोयणसयसहस्साइं (क, ग, ट); जोयणाइं (ता)।

३. जाव (क, ग, ट); जोयणाइं (ता)।

४. कालावभासा (क, ग, ट)।

५. °हरिसणा (ता)।

६. साण° (ता)।

७. महिसम मज्जारम (ता)।

८. विगडमडेति (क, ख, ट)।

९. चिरविणट्ठ (क, ख, ग, ट)।

१०. दुब्भिगंधे (क, ख, ग)।

११. असुय° (क, ग); असुईविगत (ता)।

१२. किमियजालाउलसंसत्ते असुइविलीणविगयवीभच्छदरिसणिज्जे (क, ख, ग, ट)।

१३. सं० पा०—अकंततरगा चेव जाव अमणामतरगा।

१४. सत्तिअग्गेति (ता)।

१५. कवियच्छुति वा विच्छुयकंटेति वा (क,ग,ट); कवियच्छुति वा विच्चुयकंटेति वा (ख); विच्चुयडक्केति वा° (ता), वृश्चिकदंशः° (मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अयण्णं जंबुद्दीवे[1] दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतरए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूवसंठाणसंठिते[2] वट्टे रथचक्कवालसंठाणसंठिते वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिते वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिते एक्कं जोयणसतसहस्सं आयामविक्खंभेणं जाव[3] किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। देवे णं महिड्ढीए[4] °महज्जुतीए महाबले महायसे महेसक्खे° महाणुभागे जाव इणामेव-इणामेवत्तिकट्टु इमं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा। से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरिताए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए[5] जइणाए[6] छेयाए[7] दिव्वाए देवगतीए वीतिवयमाणे-वीतिवयमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासेणं वीतिवएज्जा—अत्थेगतिए वीतिवएज्जा अत्थेगतिए नो वीतिवएज्जा, एमहालता णं गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा पण्णत्ता। एवं जाव अधेसत्तमाए, णवरं—अधेसत्तमाए अत्थेगतियं नरगं वीतिवएज्जा, 'अत्थेगइए नरगे'[8] नो वीतिवएज्जा॥

८७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरगा किंमया[9] पण्णत्ता ? गोयमा ! सव्ववइरामया पण्णत्ता। तत्थ णं नरएसु बहवे जीवा य पोग्गला य अवक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति। सासता णं ते णरगा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया। एवं जाव अहेसत्तमाए[10]॥

८८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया कतोहिंतो उववज्जंति—किं असण्णीहिंतो उववज्जंति ? सरीसिवेहिंतो उववज्जंति ? पक्खीहिंतो उववज्जंति ? चउप्पएहिंतो उववज्जंति ? उरगेहिंतो उववज्जंति ? इत्थियाहिंतो उववज्जंति ? मच्छमणुएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! असण्णीहिंतो उववज्जंति जाव मच्छमणुएहिंतोवि उववज्जंति। 'एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा घोसेयव्वा'[11]—

असण्णी खलु पढमं, दोच्चं च सरीसिवा ततिय पक्खी।
सीहा जंति चउत्थि, उरगा पुण पंचमिं जंति॥१॥
छट्ठिं च इत्थियाओ, मच्छा मणुया य सत्तमिं जंति।
'एसो खलु उववातो, नेरइयाणं तु नातव्वो'[12]॥२॥

---

१. जंबु जाव किंचविसेसपरिक्खेणं (ता)।

२. तेल्लापूत° (क, ख, ग)।

३. ठाणं १।२४८।

४. सं० पा० —महिड्ढीए जाव महाणुभागे। अस्य पूर्तिर्मलयगिरिवृत्तेः पाठमाश्रित्य कृतास्ति। तत्र 'महेसक्खे' इति पदस्य 'महासोक्खे, महासक्खे' इति पाठान्तरद्वयं विद्यते।

५. × (मवृ)।

६. अन्ये तु जितया विपक्षजेतृत्वेनेति व्याचक्षते। (मवृ)।

७. × (क, ख, ग, ट); 'छेकया' निपुणया, वातोद्धूतस्य दिगन्तव्यापिनो रजस इव या गति सा उद्धूता तया, अन्ये त्वाहुः—उद्धतया दर्प्पातिशयेनेति (मवृ)।

८. अत्थेगइयं नरगं (क, ग)।

९. किंमता (क); किम्मया (ता)।

१०. अहेसत्तमा (क, ट, मवृ)।

११. सेसासु इमाए गाधाए णातव्वा (ता); सेसासु इमाए गाहाए अणुगंतव्वा (मवृ)।

१२. × (क, ख, ग, ट, मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जाव अधेसत्तमाए'[1] पुढवीए नेरइया णो असण्णीहिंतो उववज्जंति जाव णो इत्थियाहिंतो उववज्जंति, मच्छमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ।।

८९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया एक्कसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखिज्जा वा उववज्जंति । एवं जाव अधेसत्तमाए ।।

९०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा केवतिकालेणं[2] अवहिता सिता ? गोयमा ! ते णं असंखेज्जा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिता सिता जाव अधेसत्तमा ।।

९१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिण्णि य रयणीओ छच्च अंगुलाइं[3] । तत्थ णं जासा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ । दोच्चाए भवधारणिज्जे जहण्णओ अंगुलासंखेज्जभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जातो रयणीओ, उत्तरवेउव्विया जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जभागं, उक्कोसेणं एक्कतीसं धणूइं एक्का रयणी । तच्चाए भवधारणिज्जे एक्कतीसं धणूइं एक्का रयणी, उत्तरवेउव्विया बावट्ठि धणूइं दोण्णि रयणीओ । चउत्थीए भवधारणिज्जे बावट्ठि धणूइं दोण्णि य रयणीओ, उत्तरवेउव्विया पणवीसं धणुसयं । पंचमीए भवधारणिज्जे पणवीसं धणुसयं, उत्तरवेउव्विया अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं । छट्ठाए[4] भवधारणिज्जा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं, उत्तरवेउव्विया पंचधणुसयाइं । सत्तमाए भवधारणिज्जा पंचधणुसयाइं, उत्तरवेउव्विए धणुसहस्सं ।।

९२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं सरीरया किंसंघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी—णेवट्ठी णेव छिरा णवि ण्हारू[5] । जे पोग्गला अणिट्ठा[6] °अकंता अप्पिया असुहा अमणुण्णा° अमणामा, ते तेसिं सरीरसंघायत्ताए परिणमंति । एवं जाव अधेसत्तमाए ।।

९३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं सरीरा किंसंठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा— भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जेते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पण्णत्ता, तत्थ णं जेते उत्तरवेउव्विया तेवि हुंडसंठिता पण्णत्ता ।

---

१. संक्षेपार्थं सङ्ग्रहगाथया सूचितोसौ विषयः । अन्यथा सप्त आलापका अत्र भवन्ति । मलयगिरिवृत्तौ द्वयोरालापकयोर्निर्देशोपि लभ्यते । तेनैव कारणेन 'जाव अधेसत्तमाए' इत्यादि पाठोत्र दृश्यते । नत्वत्र द्विरुक्तेः कल्पना कार्या ।

२. केवतिया केवतिकालेणं। (ता)

३. 'ता' प्रतौ अतः पाठसंक्षेपोस्ति, यथा— उत्तरवे दुगुणं एवं दुगुणा दुगुणं जावधेस भवधा पंच धणुसया उत्तरवे धणुसहस्सं ।

४. छट्ठीए (ख, ग, ट) ।

५. ण्हारू णेव संघयणमत्थि (क, ख, ग, ट) ।

६. सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं जाव अहेसत्तमाए ।।

९४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं सरीरगा केरिसगा[1] वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव[2] परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता । एवं जाव अहेसत्तमाए ।।

९५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं सरीरया केरिसया गंधेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए अहिमडेइ वा तं चेव जाव[3] अहेसत्तमाए ।।

९६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं सरीरया केरिसया फासेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! फुडितच्छविविच्छविया[4] खरफरुस-झाम-झुसिरा फासेणं पण्णत्ता । एवं जाव अधेसत्तमाए ।।

९७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं केरिसया पोग्गला ऊसासत्ताए परिणमंति ? गोयमा ! जे पोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा, ते तेसिं ऊसासत्ताए परिणमंति । एवं जाव अहेसत्तमाए । 'एवं आहारस्सवि सत्तसुवि'[5] ।।

९८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं कति लेसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! एक्का काउलेसा पण्णत्ता । एवं सक्करप्पभाएवि ।।

९९. वालुयप्पभाए पुच्छा । दो लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा— नीललेसा काउलेसा य । 'ते बहुतरगा जे काउलेसा, ते थोवतरगा जे णीललेस्सा'[6] ।।

१००. पंकप्पभाए पुच्छा । एक्का नीललेसा पण्णत्ता ।।

१०१. धूमप्पभाए पुच्छा । गोयमा ! दो लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—किण्हलेस्सा य नीललेस्सा य । ते बहुतरका जे नीललेस्सा, ते थोवतरका जे किण्हलेसा ।।

१०२. तमाए पुच्छा । गोयमा ! एक्का किण्हलेस्सा । अधेसत्तमाए एक्का परमकिण्हलेस्सा ।।

१०३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? सम्मामिच्छदिट्ठी ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी वि मिच्छदिट्ठीवि सम्मामिच्छदिट्ठीवि । एवं जाव अहेसत्तमाए ।।

१०४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया किं नाणी ? अण्णाणी ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि । जे णाणी ते णियमा तिण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोधिय-

---

१. केरिसता (क, ख, ग) ।

२. जी० ३।८४ ।

३. जी० ३।८४ ।

४. फुडिग° (ता); स्फटित° (मवृ) ।

५. °सत्तण्हवि (क, ग, ट); णेरइयाणं केरिसया पोग्गला आहारत्ताए परिणमंति गो जे पो अणिट्ठा फ्रा ते तेसिं आधा एरि जाव धे स (ता) । मलयगिरिवृत्तावपि 'ता' प्रत्यनुसारीपाठो व्याख्यातोस्ति । वृत्तिकृता ततोग्रे पाठभेदसूचनापि कृता—इह पुस्तकेषु बहुधाऽन्यथा पाठो दृश्यते, अत एव वाचनाभेदोऽपि समग्रो दर्शयितुं न शक्यते, केवलं बहुषु पुस्तकेषु योऽविसंवादी पाठस्तत्प्रतिपत्त्यर्थं सुगमान्यप्यक्षराणि संस्कारमात्रेण विव्रियन्तेऽन्यथा सर्वमेलदुस्तानार्थं सूत्रमिति ।

६. तत्थ णं जे काउलेस्सा ते बहुतरका जे णीललेस्सा ते थोवतरका (ग, ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणी सुयणाणी अवधिणाणी। 'जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी अत्थेगइया तिअण्णाणी, जे दुअण्णाणी ते णियमा मतिअण्णाणी य सुयअण्णाणी य, जे तिअण्णाणी ते नियमा मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगणाणीवि। सेसा णं णाणीवि अण्णाणीवि तिण्णि जाव अधेसत्तमाए"॥

१०५. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए किं मणजोगी? वइजोगी? कायजोगी? तिण्णिवि। एवं जाव अहेसत्तमाए॥

१०६. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया किं सागरोवउत्ता? अणागारोवउत्ता? गोयमा! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि। एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए॥

१०७. इमीसे[2] णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया ओहिणा केवतियं खेत्तं जाणंति-पासंति? गोयमा! जहण्णेणं अद्धट्ठगाउयाइं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं। सक्करप्पभाए जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं अद्धट्ठाइं। एवं अद्धद्धगाउयं परिहायति जाव अधेसत्तमाए जहण्णेणं अद्धगाउयं, उक्कोसेणं गाउयं॥

१०८. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं कति समुग्घाता पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि समुग्घाता पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए। एवं जाव अहेसत्तमाए॥

१०९. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसयं खुहप्पिवासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति? गोयमा! एगमेगस्स णं रयणप्पभापुढविनेरइयस्स असब्भावपट्ठवणाए सव्वोदधी वा सव्वपोग्गले वा आसगंसि पक्खिवेज्जा णो चेव णं से रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए तित्ते वा सिता वितण्हे वा सिता, एरिसया णं गोयमा! रयणप्पभाए नेरइया खुधप्पिवासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। एवं जाव अधेसत्तमाए॥

११०. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया किं एकत्तं पभू विउव्वित्तए? पुहत्तंपि[4] पभू विउव्वित्तए? गोयमा! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए। एगत्तं विउव्वेमाणा एगं महं मोग्गररूवं वा[5] मुसुंढिरूवं वा, एवं—

मोग्गर-मुसुंढि-करवत-असि-सत्ती-हल-गता-मुसल-चक्का।
णाराय-कुंत-तोमर-सूल-लउड-भिंडमाला य।

जाव भिंडमालरूवं वा पुहत्तं विउव्वेमाणा मोग्गररूवाणि वा जाव भिंडमालरूवाणि वा ताइं संखेज्जाइं णो असंखेज्जाइं संबद्धाइं नो असंबद्धाइं सरिसाइं नो असरिसाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स कायं अभिहणमाणा[6]-अभिहणमाणा वेयणं उदीरेंति—उज्जलं

१. जे अण्णाणि ते अत्थे २,३ भयणाए। सेसासु णाणा अण्णाण तिण्णि ३ णियमा (ता)। मलयगिरिवृत्तौ शर्करप्रभायाः आलापको व्याख्यातोस्ति। स च वाचनान्तरगतः प्रतीयते।
२. एतत् सूत्रं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्।
३. अद्धगाउयाइं (क, ख, ग, ट)।
४. पुहुत्तंपि (ग, ट)।
५. अतोग्रे 'ग' प्रतौ मलयगिरिवृत्तौ च 'एवं मुसुंढिकरवत्त' इत्यादीनि पदानि सन्ति। मलयगिरिणा संग्रहणिगाथायाः पाठान्तररूपेण उल्लेखः कृतोस्ति—अत्र संग्रहणिगाथा क्वचित्पुस्तकेषु—
मुग्गरमुसुंढिकरकयअसिसत्ति हलं गयामुसलचक्का।
नारायकुंततोमरसूललउडभिंडिमाला य॥
६. अभिभवमाणा (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं फरुसं निट्ठुरं चंडं तिव्वं दुक्खं दुग्गं दुरहियासं। एवं जाव धूमप्पभाए पुढवीए ॥

१११. छट्ठसत्तमासु णं पुढवीसु नेरइया बहू[1] महंताइं लोहियकुंथुरूवाइं वइरामय-तुंडाइं[2] गोमयकीडसमाणाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स कायं समतुरंगेमाणा-समतुरंगेमाणा खायमाणा-खायमाणा सयपोरागकिमिया विव 'चालेमाणा-चालेमाणा'[3] अंतो-अंतो अणुप्पविसमाणा-अणुप्पविसमाणा वेदणं उदीरेंति—उज्जलं जाव दुरहियासं ॥

११२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया किं सीतवेदणं वेदेंति ? उसिण-वेदणं वेदेंति ? सीओसिणवेदणं वेदेंति ? गोयमा ! णो सीयं वेदणं वेदेंति, उसिणं वेदणं वेदेंति, नो सीतोसिणं वेदणं[4] वेदेंति। एवं जाव वालुयप्पभाए ॥

११३. पंकप्पभाए पुच्छा। गोयमा ! सीयंपि वेदणं वेदेंति, उसिणंपि वेदणं वेदेंति, नो सीओसिणवेदणं वेदेंति। ते बहुतरगा जे उसिणं वेदणं वेदेंति, ते थोवतरगा जे सीतं वेदणं वेदेंति ॥

११४. धूमप्पभाए पुच्छा। गोयमा ! सीतंपि वेदणं वेदेंति, उसिणंपि वेदणं वेदेंति, णो सीओसिणवेदणं वेदेंति। ते बहुतरगा जे सीतवेदणं वेदेंति, ते थोवतरका जे उसिण-वेदणं वेदेंति ॥

११५. तमाए पुच्छा। गोयमा ! सीयं वेदणं वेदेंति, नो उसिणं वेदणं वेदेंति, नो सीतोसिणं वेदणं वेदेंति। एवं अहेसत्तमाए, णवरं—परमसीयं ॥

११६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया केरिसयं णिरयभवं पच्चणुभव-माणा विहरंति ? गोयमा ! ते णं तत्थ णिच्चं भीता 'णिच्चं छुहिया'[5] 'णिच्चं तत्था'[6] णिच्चं तसिता णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं उपप्पुआ णिच्चं परममसुभमउलमणुबद्धं निरयभवं पच्चणुभवमाणा विहरंति। एवं जाव अधेसत्तमाए ॥

११७. अहेसत्तमाए णं पुढवीए पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाणरगा पण्णत्ता, तं जहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पतिट्ठाणे। तत्थ इमे पंच महापुरिसा अणुत्तरेहिं दंडसमादाणेहिं कालमासे कालं किच्चा अप्पतिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए[7] उववण्णा, तं जहा—रामे जमदग्गिपुत्ते[8] 'दाढाऊलेच्छतिपुत्ते'[9], वसू उवरिचरे, 'सुभूमे कोरव्वे'[10], बंभदत्ते चुलणिसुते[11]। ते णं तत्थ वेदणं वेदेंति—उज्जलं विउलं जाव[12]

१. पभू (क, ख); पहू (ट)।
२. वइरामइतुं° (ग)।
३. दालेमाणा २ (क, ख, ग)।
४. वेदणं अप्पयरा उण्हजोणिया (क)।
५. मलयगिरिवृत्तौ एतत्पदद्वयं व्याख्यातं नास्ति।
६. × (क)।
७. महानेरइयत्ताए (ता)।
८. जमदग्गिसुते सुभोम्मे कोरव्वा (ता); जम-दग्गिसुते (भव्)।
९. दढाऊ लच्छइपुत्ते (क); मलयगिरिवृत्तौ 'दाढादालः छातीसुतः' इति विवृतमस्ति। स्तबके 'दाढादाल छातीसुत अपर नाम दत्त-लक्ष्मीनो पुत्र' इति विद्यते वृत्तिस्तबकयो-राधारेण 'दाढादाले छातीसुते' तथा स्तबक-निर्दिष्ट-विकल्पानुसारेण 'दत्ते लच्छीपुत्ते' इति पाठो निष्पद्यते।
१०. × (ता)।
११. अतोग्रे 'क, ख, ट' प्रतिषु एष अतिरिक्तः पाठो वर्तते—ते णं तत्थ नेरइया जाया काला कालोभासा जाव परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता।
१२. जी० ३।११०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरहियासं ॥

११८. उसिणवेदणिज्जेसु[1] णं भंते ! णरएसु णेरइया केरिसयं उसिणवेदणं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! से जहाणामए—कम्मारदारए सिता—तरुणे बलवं जुगवं जुवाणे[2] अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरुपरिणए[3] घणनिचिय-वलियवट्टखंधे चम्मेट्ठग-दुघण-मुट्ठिय-समाहयनिचियगायगत्ते उरस्सबलसमण्णागए तलजमलजुयलबाहू लंघण-पवण-जवण-पमद्दणसमत्थे छेए दक्खे पट्ठे[4] कुसले मेहावी निउणसिप्पोवगए एगं महं अयपिंडं उदगवारगसमाणं[5] गहाय तं ताविय-ताविय कोट्टिय-कोट्टिय[6] जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं अद्धमासं साहणेज्जा[7], से णं तं सीतं सीतीभूतं अओमएणं संडासएणं[8] गहाय असब्भावपट्ठवणाए[9] उसिणवेदणिज्जेसु णरएसु पक्खिवेज्जा, से णं तं उम्मिसियणिमिसियंतरेणं पुणरवि पच्चुद्धरिस्सामित्तिकट्टु पविरायमेव पासेज्जा पविलीणमेव पासेज्जा पविद्धत्थमेव पासेज्जा णो चेव णं संचाएति अविरायं वा अविलीणं वा अविद्धत्थं वा पुणरवि पच्चुद्धरित्तए।

से जहा वा मत्तमातंगे दुपाए[10] कुंजरे सट्ठिहायणे पढमसरयकालसमयंसि वा चरमनिदाघ-कालसमयंसि वा उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए आउरे झूसिए[11] पिवासिए दुब्बले किलंते एक्कं महं पुक्खरिणिं पासेज्जा—चाउक्कोणं समतीरं अणुपुव्वसुजायवप्प-गंभीर-सीतलजलं संछण्णपत्तभिसमुणालं[12] बहुउप्पल[13]-कुमुद-णलिण-सुभग-सोगंधिय-पुंडरीय-

---

१. उसुणवेदणिज्जेसु (ता)।

२. × (क, ख, ग, ट)।

३. पिट्ठंतरोरुसंघाटापरिणए (क, ख, ग, घ)। अतोग्रे 'ता' प्रतौ अन्येषु आदर्शेषु च पाठस्य क्रमभेदः क्वचित्-क्वचित् शब्दभेदोपि विद्यते—तलजमलजुयलबाहुघणणिचितवलितपवट्टगालि-खंधे चंमेट्ठदुहणमुट्ठियसमाहयणिचितयंतगणे उरस्सबलसमण्णागते लंघणपवणजइणवाया-मणसमत्थे छेए दक्खे कुसले मेहावी णिउणे णिउणसिप्पोवगते (ता); लंघणपवणजइण-वायामणसमत्थे (°पमद्दणसमत्थे—ग) तल-जमलजुयल (°जुयलबाहु—ग) फलिहणिभ-बाहू घणणिचितवलियवट्टखंधे (°वट्टपालिखंधे —क, ख; °वट्टवालिखंधे—ग) चम्मेट्ठग-दुहणमुट्ठियमाहयणिचितगत्तगत्ते (°कयगत्ते—क, ख, ट) छेए दक्खे पट्ठे कुसले मेहावी णिउणे (णिउणे मेहावी—क, ख, ग, ट) णिउणसिप्पोवगए।

४. पत्तट्ठे (अणु० ४१६; राय० सू० १२)।

५. °वारसमाणं (क, ख, ग, ट); दगवारा सामाणं (ता)।

६. कोट्टिय उब्भिदिय-उब्भिदिय चुण्णिय-चुण्णिय (क, ख, ग, ट)।

७. साहण्णेज्जा (क)।

८. संदंसएणं (ग)।

९. असब्भावणाए° (क); असब्भावणय° (ख)।

१०. दये (ग); दुपए (ट); दुवाए (ता)।

११. झुज्झिए (ख, ट, ता); झिज्जिए (मवृपा)।

१२. संछण्णपउमपत्त° (क, ख, ग, ट, ता); सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'पउम' इति पदं विद्यते, किन्तु मलयगिरिवृत्तौ नास्ति व्याख्यतमिदम्। नायाधम्मकहाओ (१३।१७) तथा रायपसेणइय (सू० १७४) सूत्रेपि नैतत्पदं उपलभ्यते।

१३. 'ता' प्रतौ अयं पाठः किञ्चिद् भेदेन दृश्यते—बहुउप्पलपउमकुमुदणलिणसुभगसोगंधिय अर-विंदकोवणतसतपत्तसहस्सपत्तयप्फुसिकेसरोव-चितं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयपत्त-सहस्सपत्त-केसर-फुल्लोवचियं छप्पयपरिभुज्जमाणकमलं[1] अच्छविमलसलिलपुण्णं[2] परिहत्थभमंतमच्छकच्छभं[3] अणेगसउणगणमिहुणय-विरचिय[4]-सद्दुन्नइयमहुरसरनाइयं[5] तं पासइ, पासित्ता तं ओगाहइ, ओगाहित्ता से णं तत्थ उण्हंपि पविणेज्जा तण्हंपि पविणेज्जा खुहंपि पविणेज्जा जरंपि पविणेज्जा दाहंपि पविणेज्जा[6] णिद्दाएज्ज वा पयलाएज्ज वा सतिं वा रतिं वा धितिं वा मतिं वा उवलभेज्जा, सीए सीयभूए 'संकसमाणे-संकसमाणे'[7] साया-सोक्खबहुले यावि विहरेज्जा, एवामेव[8] गोयमा ! असब्भावपट्ठवणाए उसिणवेदणिज्जेहिंतो णरएहिंतो णेरइए उव्वट्टिए समाणे जाइं इमाइं मणुस्सलोयंसि[9] भवंति, तं जहा[10]—गोलियालिंछाणि वा सोंडियालिंछाणि वा भंडियालिंछाणि वा तिलागणीति वा तुसागणीति वा भुसागणीति वा णलागणीति वा अयागराणि वा तंवागराणि वा तउयागराणि वा सीसागराणि वा रुप्पागराणि वा सुवण्णागराणि वा[11] 'इट्टावाएति वा कुंभारावाएति वा कवेल्लुयावाएति वा'[12] लोहारंवरिसेति वा जंतवाडचुल्लीति वा—तत्ताइं समजोतिभूयाइं[13] फुल्लकिंसुयसमाणाइं[14] 'उक्कासहस्साइं विणिम्मुयमाणाइं जालासहस्साइं पमुच्चमाणाइं'[15] इंगालसहस्साइं पविक्खिरमाणाइं[16] अंतो-अंतो हुहुयमाणाइं[17] चिट्ठंति ताइं पासइ, पासित्ता

---

१. × (ता) ।
२. अच्छविमलसलीलपच्छपुण्णं (क, ख); अच्छविमलपच्छसलीलपुण्णं (ता) ।
३. परिभमंतमच्छ° (ता) ।
४. विरइय (क, ग, ट) ।
५. 'ता' प्रतौ 'सद्दुन्नइयमहुरसरनाइयं' इति पाठो नास्ति । रायपसेणइय (सू० १७४) सूत्रेपि एष पाठो नैव दृश्यते ।
६. × (ता) ।
७. संकासायमीणे २ (ता) ।
८. एवमेव (ट, ता) ।
९. × (ता) ।
१०. अतः पुरोवर्ती पाठः 'ता' प्रतिं मलयगिरिविवरणं च मुक्त्वा अन्येषु आदर्शेषु भिन्नक्रमो वर्तते, यथा—अयागराणि वा तउयागराणि वा सीसागराणि वा रुप्पागराणि वा हिरण्णागराणि वा सुवण्णागराणि वा कुंभागराणि वा सुसागणी वा इट्टायागणी वा कवेलुयागणी वा लोहारंबरेसि वा जंतूवाउचुल्ली वा हंडियलिच्छाणि वा सोंडियलिच्छाणि णलागणीति वा तिलागणीति वा तुसागणीति वा । ठाणं (८।१०) सूत्रेपि क्रमभेदो दृश्यते ।
११. वा हिरण्णागराणि वा (क, ख, ग, ट); 'ता' प्रतिं मुक्त्वा सर्वेषु आदर्शेषु एष पाठो विद्यते; मलयगिरिवृत्तौ च व्याख्यातोप्यस्ति, किन्तु नावश्यकोयं प्रतिभाति । ठाणं (८।१०) रायपसेणइय (सू० ७७४) सूत्रेपि 'हिरण्णागर' मिति पदं नैव दृश्यते ।
१२. कुंभागराणि वा भुसागणि वा इट्टायागणि वा कवेल्लुयागणि वा (क, ग, ट); कुंभाराणि वा इट्टायागणि वा कवेल्लुयागणि वा (ख) । ठाणं (८।१०) सूत्रे 'कुंभारावाएति वा कवेल्लुआवाएति वा इट्टावाएति वा' इति स्वीकृतपाठसंवादी पाठो लभ्यते ।
१३. समज्जोति° (क, ग) ।
१४. फुलकेसुसमाणाइं (ता); किंसुकफुल्लसमाणाइं (ठाणं ८।१०) ।
१५. उक्कासहस्साइं पमंचमाणाइं जालासहस्साइं विणिमुयमाणाइं (ता, मवृ) ।
१६. पविक्खरमाणाइं (क, ख, ग, ट) ।
१७. जुहुयमाणाइं (क, ग); हुहूआयमाणाइं (ता); क्वचित् 'अंतो अंतो सुहुयहुयासणा' इति पाठः (मवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताइं ओगाहइ, ओगाहित्ता से णं तत्थ उण्हंपि पविणेज्जा तण्हंपि पविणेज्जा खुहंपि पविणेज्जा जरंपि पविणेज्जा दाहंपि पविणेज्जा णिद्दाएज्ज वा पयलाएज्ज वा सतिं वा रतिं वा धिइं वा मतिं[1] वा उवलभेज्जा, सीए सीयभूए संकसमाणे-संकसमाणे सायासोक्खबहुले यावि विहरेज्जा, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! उसिणवेदणिज्जेसु णरएसु नेरइया एत्तो अणिट्ठतरियं चेव उसिणवेदणं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

११६. सीयवेदणिज्जेसु णं भंते ! णरएसु णेरइया केरिसयं सीयवेदणं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! से जहाणामए कम्मारदारए सिया तरुणे जुगवं बलवं जाव[2] णिउणसिप्पोवगते एगं महं अयपिंडं दगवारसमाणं गहाय ताविय-ताविय कोट्टिय-कोट्टिय जाव एगाहं[3] वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं मासं साहणेज्जा[4], से णं तं उसिणं उसिणभूतं अयोमएणं संडासएणं गहाय असब्भावपट्ठवणाए सीयवेदणिज्जेसु णरएसु पक्खिवेज्जा, से तं उम्मिसियनिमिसियंतरेण पुणरवि पच्चुद्धरिस्सामीति कट्टु पविरायमेव पासेज्जा [5]पविलीणमेव पासेज्जा पविद्धत्थमेव पासेज्जा° णो चेव णं संचाएज्जा पुणरवि पच्चुद्धरित्तए। से जहाणामए मत्तमायंगे [6]दुपाए कुंजरे सट्ठिहायणे पढमसरयकालसमयंसि वा चरमनिदाघकालसमयंसि वा उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए आउरे झुसिए पिवासिए दुब्बले किलंते एक्कं महं पुक्खरिणिं पासेज्जा—चाउक्कोणं समतीरं अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीर-सीतलजलं संछण्णपत्तभिसमुणालं बहुउप्पल-कुमुद-णलिण-सुभग-सोगंधिय-पुंडरीय-महापुंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-केसर-फुल्लोवचियं छप्पयपरिभुज्जमाणकमलं अच्छविमल-सलिलपुण्णं परिहत्थभमंतमच्छकच्छभं अणेगसउणगणमिहुणय-विचरिय-सद्दुन्नइय-महुरसरनाइयं तं पासइ, पासित्त तं ओगाहइ, ओगाहित्ता से णं तत्थ उण्हंपि पविणेज्जा तण्हंपि पविणेज्जा खुहंपि पविणेज्जा जरंपि पविणेज्जा दाहंपि पविणेज्जा णिद्दाएज्ज वा पयलाएज्ज वा सतिं वा रतिं वा धितिं वा मतिं वा उवलभेज्जा, सीए सीयभूए संकसमाणे-संकसमाणे सायासोक्खबहुले यावि विहरेज्जा, एवामेव गोयमा ! असब्भावपट्ठवणाए सीतवेदणेहिंतो णरएहिंतो नेरइए उव्वट्टिए समाणे जाइं इमाइं इहं माणुस्सलोए[7] हवंति, तं जहा—'हिमाणि वा हिमपुंजाणि वा हिमपडलाणि वा हिमकूडाणि वा सीयाणि वा सीयपुंजाणि वा सीयपडलाणि वा सीयकूडाणि वा तुसाराणि वा तुसारपुंजाणि वा तुसारपडलाणि वा तुसारकूडाणि वा'[8] ताइं पासति, पासित्ता ताइं ओगाहति, ओगाहित्ता से णं तत्थ सीतंपि

१. ऊहं (क, ख, ट)।
२. जी० ३।११८।
३. एकाहं (ख, ग, ट)।
४. हणेज्जा (क, ट, ता); संहणेज्जा (ख, ग)।
५. सं० पा०—तं चेव णं जाव णो।
६. सं० पा०—तहेव जाव सायासोक्खबहुले।
७. × (ता; पूर्वस्मिन् सूत्रे 'इहं' इति पदं नास्ति 'मणुस्सलोयंसि' इति पदमस्ति। अत्र 'ता' प्रतिं मुक्त्वा सर्वेषु आदर्शेषु 'इहं माणुस्सलोए' इति पाठो लभ्यते।
८. हिमपुंजाणि वा हिमपडलाणि वा हिमपडलपुंजाणि वा तुसाराणि वा तुसारपुंजाणि वा हिमकुंडाणि हिमकुंडपुंजाणि सीयाणि वा ४ (क, ख, ग, ट); हिमाणि वा हिमपुंजाणि वा हिमकुंडाणि वा हिमपडलाणि वा सीताणि वा सी ४ तुसाराणि वा तुसारपुं ४ (ता); स्वीकृतपाठः मलयगिरिवृत्त्यनुसारी विद्यते, किन्तु तुषारसम्बन्धी पाठस्तत्र नास्ति व्याख्यातः स च 'ता' प्रत्यनुसारी वर्तते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पविणेज्जा तण्हंपि पविणेज्जा खुहंपि पविणेज्जा जरंपि पविणेज्जा दाहंपि पविणेज्जा निद्दाएज्ज वा पयलाएज्ज वा[1] •सतिं वा रतिं वा धिति वा मतिं वा उवलभेज्जा°, उसिणे उसिणभूए संकसमाणे-संकसमाणे सायासोक्खबहुले यावि विहरेज्जा, गोयमा ! सीयवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइया एत्तो अणिट्ठतरियं चेव सीतवेदणं पच्चणुभवमाणा विहरंति ।।

१२०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणवि[2] उक्कोसेणवि ठिती भाणितव्वा जाव अधेसत्तमाए ।।

१२१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया अणंतरं उव्वट्टिय[3] कहिं-गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?—किं नेरइएसु उववज्जंति ? किं तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति एवं उव्वट्टणा भाणितव्वा जहा[4] वक्कंतीए तहा इहवि जाव अहेसत्तमाए ।।

१२२. इमीसे[5] णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसयं पुढविफासं पच्चणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव[6] अमणामं । एवं जाव अहेसत्तमाए ।।

१२३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसयं आउफासं पच्चणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं । एवं जाव अहेसत्तमाए एवं जाव वणप्फतिफासं अधेसत्तमाए पुढवीए ।।

१२४. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया-बाहल्लेणं सव्वक्खुड्डिया[7] सव्वंतेसु ? हंता गोयमा ! इमा णं रयणप्पभापुढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय[8] •सव्वमहंतिया बाहल्लेणं° सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु ।।

१२५. दोच्चा णं भंते ! पुढवी तच्चं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं पुच्छा । हंता गोयमा ! दोच्चा णं पुढवी[9] •तच्चं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं° सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु । एवं एएणं अभिलावेणं जाव छट्ठिया पुढवी अहेसत्तमं पुढविं पणिहाय सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु ।।

१२६. इमीसे[10] णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु जे पुढविक्काइया

---

१. सं० पा०—पयलाएज्ज वा जाव उसिणे ।

२. 'ता' प्रतौ विस्तृतः पाठोस्ति । मलयगिरि-वृत्तावपि तथैव व्याख्यातोस्ति । 'ता' प्रतिगतः पाठः—जहं दस वा उक्को साग । दोच्चाए ज ए उ ३ । तच्चा ज ३।७ । चउ उ १०।७ । पंच उ १७ ज १० । छट्ठी उ २२ ज १७ । सत्त ३३ । क्वचिद् जहा पण्णवणाए ठिइपदे (मवृपा) ।

३. 'ता' प्रतौ किञ्चिदधिकः पाठोस्ति—उव्व किं णेर ४ गोयमा ! णो णेर तिरि मणू णो दे एगिंदिय विगिलिय असंखाउवज्ज ।

४. पण्ण० ६।९९,१०० ।

५. 'ता' प्रतौ अतः पूर्वं १२६ सूत्रं विद्यते । पाठरचनायामपि भेदोस्ति—इमीसे णं भंते ! रयणप्प णेरगपरिसामंतेसु जे बादरपुढविक्काइया जाव वणस्सकाइया । तेसि णं भंते ! जीवा महाकम्मतरा च्चेव महासवतरा चेव महावेदण-तराच्चेव । हंता गोयमा ! इमीसे णं जाव महावेदणतरा च्चेव जाव अहेसत्तमाए ।

६. जी० ३।९२ ।

७. सव्वखुड्डिया (ट) ।

८. सं० पा०—पणिहाय जाव सव्वक्खुड्डिया ।

९. सं० पा०—पुढवी जाव सव्वक्खुड्डिया ।

१०. मलयगिरिणा प्रस्तुतसूत्रं १२७ सूत्रानन्तरं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव वणप्फतिकाइया, ते णं भंते ! जीवा महाकम्मतरा चेव महाकिरियतरा चेव महा-आसवतरा चेव महावेयणतरा चेव ? हंता गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु •'जे पुढविक्काइया जाव वणप्फतिकाइया ते णं जीवा महाकम्मतरा चेव महाकिरियतरा चेव महाआसवतरा चेव° महावेदणतरा चेव। एवं जाव अधेसत्तमा ॥

१२७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए नरयावाससयसहस्सेसु इक्कमिक्कंसि निरयावासंसि सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो। एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए, णवरं—'जत्थ जत्तिया णरगा'[२]।

संगहणीगाहा—

पुढवीं ओगाहित्ता, नरगा संठाणमेव बाहल्लं।
विक्खंभपरिक्खेवे, वण्णो गंधो य फासो य ॥१॥
तेसिं महालयत्तं, उवमा देवेण होइ कायव्वा।
जीवा य पोग्गला वक्कमंति तह सासया निरया ॥२॥
उववायपरीमाणं, अवहारुच्चत्तमेव संघयणं।
संठाणवण्णगंधे, फासे ऊसासमाहारे ॥३॥
लेसा दिट्ठी नाणे, जोगुवओगे तहा समुग्घाए।
तत्तो य खुप्पिवासा, विउव्वणा वेयणा य भए ॥४॥
उववाओ पुरिसाणं, ओवम्मं वेयणाए दुविहाए।
ठिइ उव्वट्टण पुढवी, उववाओ सव्वजीवाणं ॥५॥

नेरइयउद्देसओ तइओ

१२८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसयं पोग्गलपरिणामं पच्चणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव[३] अमणामं। एवं जाव अहेसत्तमाए। 'एवं—वेदणापरिणामं लेस्सपरिणामं णामपरिणामं गोत्तपरिणामं अरतिपरिणामं भयपरिणामं सोगपरिणामं खुहापरिणामं पिवासापरिणामं वाहिपरिणामं उस्सासपरिणामं अणुतावपरिणामं कोवपरिणामं माणपरिणामं मायापरिणामं लोहपरिणामं आहारसण्णा-परिणामं भयसण्णापरिणामं मेहुणसण्णापरिणामं परिग्गहसण्णापरिणामं'[४]।

संगहणीगाहा—

पोग्गलपरिणामे वेयणा य लेसा य नाम गोए य।
अरई भए य सोगे, खुहा पिवासा य वाही य ॥१॥

पाठान्तररूपेण उल्लिखितं—क्वचिदिदमपि सूत्रं दृश्यते—इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु....। उद्देशकान्ते सङ्ग्रहगाथास्वपि अस्य सूत्रस्य संकेतो नैवास्ति कृतः। द्रष्टव्यं पञ्चम्याः गाथायाः अन्त्यं चरणद्वयम्।

१. सं० पा०—तं चेव जाव महावेदणतरा।

२. जहिं जत्तिया णिरयावासा (ता)।

३. जी० ३।९२।

४. एवं नेयव्वं (क, ख, ग, ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उस्सासे अणुतावे[1], कोहे माणे य मायलोभे य।
चत्तारि य सण्णाओ, नेरइयाणं तु परिणामं ॥२॥

१२९. एत्थ किर अतिवयंती[2], नरवसभा केसवा जलचरा य।
रायाणो मंडलिया, जे य महारंभकोडुंबी ॥१॥
भिन्नमुहुत्तो नरएसु, 'तिरियमणुएसु होंति'[3] चत्तारि।
देवेसु अद्धमासो, उक्कोस विउव्वणा भणिया[4] ॥२॥
'जे पोग्गला अणिट्ठा, नियमा सो तेसि होई आहारो।
संठाणं तु अणिट्ठं, नियमा हुंडं तु नायव्वं ॥३॥
असुभा विउव्वणा खलु, नेरइयाणं तु होइ सव्वेसिं।
वेउव्वियं सरीरं, असंघयण हुंडसंठाणं'[5] ॥४॥
अस्साओ उववण्णो, अस्साओ चेव चयइ[6] निरयभवं।
सव्वपुढवीसु जीवो, सव्वेसु ठिइविसेसेसु ॥५॥
उववाएण व सायं, नेरइओ देवकम्मुणा वावि।
अज्झवसाणनिमित्तं, अहवा कम्माणुभावेणं ॥६॥
'नेरइयाणुप्पाओ[7], उक्कोसं पंचजोयणसयाइं'[8]।
दुक्खेणभिद्दुयाणं, वेयणसयसंपगाढाणं ॥७॥
अच्छिनिमीलियमेत्तं, नत्थि सुहं दुक्खमेव अणुवद्धं।
नरए नेरइयाणं, अहोनिसं पच्चमाणाणं ॥८॥
तेयाकम्मसरीरा[9], सुहुमसरीरा य जे अपज्जत्ता।
जीवेण मुक्कमेत्ता, वच्चंति सहस्ससो भेयं[10] ॥९॥
एत्थ य भिन्नमुहुत्तो, पोग्गल असुहा य होइ अस्साओ।
उववाओ उप्पाओ, अच्छि सरीरा उ बोद्धव्वा ॥१०॥

से तं नेरइया ॥

---

१. अणुभावे (क, ट)।

२. मतिवगंती (ता)।

३. होंति तिरियमणुएसु (ता)।

४. होति (ता)।

५. 'ता' प्रति मलयगिरिविवरणं च मुक्त्वा अन्येषु आदर्शेषु द्वयोर्गाथयो व्यत्ययः तद्गतचरणयोश्च व्यत्ययो दृश्यते—

असुभा विउव्वणा खलु, नेरइयाणं तु होइ सव्वेसिं।
संठाणं पि य तेसिं नियमा हुंडं तु नायव्वं।
जे पोग्गला अणिट्ठा नियमा सो तेसि होइ आहारो।
वेउव्वितं सरीरं असंघयण हुंड संठाणं।

६. वच्चइ (क, ख, ग); जहति (ट)।

७. 'ता' प्रति मलयगिरिविवरणं च मुक्त्वा अन्येषु आदर्शेषु 'तेयाकम्मसरीरा' एषा गाथा अतः पूर्वं विद्यते।

८. नेरइयाणुप्पाओ गाउय उक्कोस पंच जोयण-सयाइं (मवृपा)

९. तेता° (क)।

१०. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट' संकेतितादर्शेषु एका अतिरिक्ता गाथा लभ्यते—

अतिसीतं अतिउण्हं, अतितिण्हा अतिखुहा अतिभयं वा।
निरए नेरइयाणं, दुक्खसयाइं अविस्सामं ॥
मलयगिरिवृत्तौ नास्ति व्याख्याता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खजोणिय उद्देसओ पढमो

१३०. से किं तं तिरिक्खजोणिया ? तिरिक्खजोणिया पंचविधा पण्णत्ता, तं जहा— एगिंदियतिरिक्खजोणिया बेइंदियतिरिक्खजोणिया तेइंदियतिरिक्खजोणिया चउरिंदियतिरिक्खजोणिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया य ॥

१३१. से किं तं एगिंदियतिरिक्खजोणिया ? एगिंदियतिरिक्खजोणिया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया ॥

१३२. से किं तं पुढविक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया ? पुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया बादरपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया य ॥

१३३. से किं तं सुहुमपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया ? सुहुमपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया। से तं सुहुमा ॥

१३४. से किं तं बादरपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया ? बादरपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तबादरपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जत्तबादरपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया। से तं बादरपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया। से तं पुढविकाइयएगिंदिया ॥

१३५. से किं तं आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया ? आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, एवं जहेव पुढविकाइयाणं तहेव आउकायभेदो। एवं जाव वणस्सतिकाइया। से तं वणस्सइकायएगिंदियतिरिक्खजोणिया ॥

१३६. से किं तं बेइंदियतिरिक्खजोणिया ? बेइंदियतिरिक्खजोणिया दुविधा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगबेइंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जत्तगबेइंदियतिरिक्खजोणिया। से तं बेइंदियतिरिक्खजोणिया। एवं जाव चउरिंदिया ॥

१३७. से किं तं पंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? पंचेंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥

१३८. से किं तं जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य ॥

१३९. से किं तं संमुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? संमुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगसंमुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जत्तगसंमुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया। से तं संमुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥

१४०. से किं तं गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविधा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचेंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया। से तं गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया। से तं जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥

१४१. से किं तं थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया? थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविधा पण्णत्ता, तं जहा—चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥

१४२. से किं तं चउप्पदथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया? चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य, जहेव जलयराणं तहेव चउक्कतो भेदो। सेत्तं चउप्पदथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥

१४३. से किं तं परिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया? परिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया[२] भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया[३] ॥

१४४. से किं तं उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया? उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जहेव जलयराणं तहेव चउक्कतो भेदो। एवं भुयपरिसप्पाणवि भाणितव्वं। से तं भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया। से तं थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥

१४५. से किं तं खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया? खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य ॥

१४६. से किं तं संमुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया? संमुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगसंमुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जत्तगसंमुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य। एवं गब्भवक्कंतियावि जाव पज्जत्तगगब्भवक्कंतियावि अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियावि ॥

१४७. खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं[४] भंते! कतिविधे जोणिसंगहे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते, तं जहा—अंडया पोयया संमुच्छिमा ॥

१४८. अंडया तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥

१४९. पोतया तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी पुरिसा णपुंसगा। तत्थ णं जेते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा ॥

१५०. तेसिं[५] णं भंते! जीवाणं कति लेसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! छल्लेसाओ

---

१. १४०-१४५ एतेषां सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ मलयगिरिविवरणे च संक्षिप्तपाठो विद्यते—एवं चतुपदा उरयं भुय प पक्खीवि (ता); एवं चतुष्पदा उरःपरिसर्पा भुजपरिसर्पाः पक्षिणश्च प्रत्येकं चतुष्प्रकारा वक्तव्याः (मवृ)।

२. उरग° (ग)।

३. भुयग° (ग)।

४. पक्खीणं (ता); पक्षिणां भदन्त! (मवृ)।

५. एएसि (ट); एतेषां (मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा[1] जाव सुक्कलेसा ॥

१५१. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? सम्मामिच्छदिट्ठी ? गोयमा ! सम्मदिट्ठीवि मिच्छदिट्ठीवि सम्मामिच्छदिट्ठीवि ॥

१५२. ते णं भंते ! जीवा किं णाणी ? अण्णाणी ? गोयमा ! 'णाणीवि अण्णाणीवि'[2]—तिण्णि णाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए[3] ॥

१५३. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ? गोयमा ! तिविधावि ॥

१५४. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥

१५५. ते णं भंते ! जीवा कओ उववज्जंति ?—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? पुच्छा। गोयमा ! असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमग-अंतरदीवगवज्जेहिंतो उववज्जंति ॥

१५६. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं ॥

१५७. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाता पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच समुग्घाता पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए जाव[4] तेयासमुग्घाए ॥

१५८. ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहता मरंति ? असमोहता मरंति ? गोयमा ! समोहतावि मरंति असमोहतावि मरंति ॥

१५९. ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?—किं नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? पुच्छा। गोयमा ! एवं उव्वट्टणा भाणियव्वा जहा[5] वक्कंतीए तहेव ॥

१६०. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति जातीकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बारस जातीकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा ॥

संगहणी गाहा—

जोणीसंगहलेस्सादिट्ठी नाणे य जोग उवओगे।
उववायठिईसमुग्घाय चयणं जातीकुलविधी उ[6] ॥१॥

---

१. 'ता' प्रतौ अतः १५८ सूत्रपर्यन्तं संक्षिप्त-पाठोस्ति—कण्हादि ६ दिठीओ ३ णाणा भयणाए अण्णाणा ३ भयणाए जोगो ३ उवयोगो २ ते णं भंते ! कतो उवव जधा दुविधासु। जहं अंतो मु। उक्कोसं पलित असंखेज्जति ताउ धणु समुग्घाता ५। ते णं भंते ! मारणंतिय किं समो असं दोसु वि मरंति। ते णं भंते ! अणंतर चयं च जहा दुविधेसु।

२. दुविहा वि (मवृ)।

३. भतणाते (ख)। अतोग्रे 'क, ख' प्रत्योः अतिरिक्तः पाठोस्ति—दुविहेसु गब्भवक्कंतिताणं। 'ग' प्रतौ च स एवमस्ति—दुविधा संमुच्छिम गब्भवक्कंतिताणं।

४. पण्ण० ३६।१।

५. पण्ण० ६।१०५-१०६।

६. 'ता' प्रतिं मुक्त्वा अन्येषु आदर्शेषु एषा सङ्ग्रहणी गाथा नोपलभ्यते। मलयगिरिवृत्तौ असौ व्याख्यातास्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६१. भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कतिविधे जोणीसंगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते, तं जहा—अंडया[1] पोयया[2] संमुच्छिमा। एवं जहा खहयराणं तहेव, णाणत्तं—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वट्टित्ता दोच्चं पुढविं गच्छंति, णव जातीकुलकोडीजोणीपमुहसतसहस्सा भवंतीति मक्खायं, सेसं तहेव ।।

१६२. उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! पुच्छा। जहेव भुयपरिसप्पाणं तहेव, णवरं—ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वट्टित्ता जाव पंचमिं पुढविं गच्छंति, दस जातीकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा ।।

१६३. चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! दुविधे जोणीसंगहे पण्णत्ते, तं जहा—पोयया[3] य संमुच्छिमा य ।।

१६४. पोयया[4] तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी पुरिसा णपुंसगा। तत्थ णं जेते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा ।।

१६५. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ? सेसं जहा पक्खीणं, णाणत्तं—ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं। उव्वट्टित्ता चउत्थिं पुढविं गच्छंति, दस जातीकुलकोडी ।।

१६६. जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा[5]। जहा भुयपरिसप्पाणं, णवरं—उव्वट्टित्ता जाव अधेसत्तमिं पुढविं, अद्धतेरस जातीकुलकोडीजोणीपमुह[6] °सयसहस्सा° पण्णत्ता ।।

१६७. चउरिंदियाणं भंते ! कति जातीकुलकोडीजोणीपमुहसतसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! नव जातीकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा[7] समक्खाया ।।

१६८. तेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! अट्ठ जातीकुल[8] °कोडीजोणीपमुहसयसहस्सा°

---

१. अंडगा (ग); अंडका (ट)।

२. पोयगा (क, ट)।

३. जराउया (क, ख, ग, ट); ठाणं (३।३६,३९,४२,४५) सूत्रेषु क्रमशः मत्स्यानां पक्षिणां उरःपरिसर्पाणां भुजपरिसर्पाणां च अण्डज-पोतज-सम्मूर्च्छिमरूपेण त्रिविधत्वं प्रज्ञापितमस्ति, एवं चतुष्पदथलचराणां त्रिविधत्वं नास्ति तत्र प्रज्ञापितम्। अत्र विवक्षा भेद एव कारणम्। मलयगिरिणापि एतस्यैव सूचना कृतास्ति—इह येऽण्डजव्यतिरिक्ता गर्भव्युत्क्रान्तास्ते सर्वे जरायुजा अजरायुजा वा पोतजा इति विवक्षितमतोऽत्र द्विविधो यथोक्तस्वरूपी योनिसङ्ग्रह उक्तः, अन्यथा गवादीनां जरायुजत्वात् तृतीयोपि जरायुलक्षणो योनिसङ्ग्रहो वक्तव्यः स्यादिति।

४. जराउया (क, ख, ग, ट)।

५. 'ता' प्रतौ अत्र भिन्ना वाचना दृश्यते—जलचराणां जोणी सं तिविहे अद्धतेरसजाती कु जो जतो उववज्जंति सो ततो उववज्जंति उप्पि जाव सहस्सारो णरएसु पक्खी तच्चातो चतुप्पद चउत्थि उरगा पंचमीतो मच्छा सत्तमीतो। मलयगिरिवृत्तावपि ऊर्ध्वं यावत् सहस्रारः इति लभ्यते।

६. सं० पा०—जातीकुलकोडीजोणीपमुह जाव पण्णत्ता।

७. °जोणीपमुहसयमहस्सा जाव (क, ग, ट); °जोणीपमुह जाव (ख)।

८. सं० पा०—जातीकुल जाव समक्खाया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समक्खाया ॥

१६९. बेइंदियाणं भंते ! कइ जातीकुलकोडीजोणीपमुहसतसहस्सा पुच्छा । गोयमा! सत्त जातीकुलकोडीजोणीपमुहसतसहस्सा समक्खाया ।

१७०. कइ णं भंते ! 'गंधंगा ? कइ णं भंते ! गंधंगसया'[1] पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त गंधंगा सत्त गंधंगसया पण्णत्ता ॥

१७१. कइ णं भंते ! पुप्फजातीकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! सोलस पुप्फजातीकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता, तं जहा—चत्तारि 'जलजा णं चत्तारि थलजाणं'[2] चत्तारि 'महारुक्खाणं चत्तारि महागुम्मियाणं'[3] ॥

१७२. कति णं भंते ! वल्लीओ ? कति वल्लिसता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि वल्लीओ चत्तारि वल्लीसता पण्णत्ता ॥

१७३, कति णं भंते ! लताओ ? कति लतासता पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ लताओ अट्ठ लतासता पण्णत्ता ॥

१७४. कति णं भंते ! हरियकाया ? कति हरियकायसया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ हरियकाया तओ हरियकायसया पण्णत्ता । फलसहस्सं च बेंटबद्धाणं फलसहस्सं च णालबद्धाणं । ते[4] सव्वे हरितकायमेव समोयरंति ।

ते एवं समणुगम्ममाणा-समणुगम्ममाणा समणुगाहिज्जमाणा[5]-समणुगाहिज्जमाणा समणुपेहिज्जमाणा[6]-समणुपेहिज्जमाणा समणुचिंतिज्जमाणा[7]-समणुचिंतिज्जमाणा एएसु चेव दोसु काएसु समोयरंति, तं जहा—तसकाए चेव थावरकाए चेव । एवमेव सपुव्वावरेणं आजीवदिट्ठंतेणं[8] चउरासीति जातीकुलकोडीजोणीपमुहसतसहस्सा भवंतीति मक्खाया ॥

१७५. अत्थि णं भंते ! विमाणाइं 'अच्चीणि अच्चियावत्ताइं अच्चिप्पभाइं अच्चिकंताइं अच्चिवण्णाइं अच्चिलेस्साइं अच्चिज्झयाइं अच्चिसिंगाइं अच्चिसिट्ठाइं अच्चिकूडाइं[9] अच्चुत्तरवडिंसगाइं'[10] ? हंता अत्थि ॥

१७६. ते णं भंते ! विमाणा केमहालता पण्णत्ता ? गोयमा ! जावतिए णं सूरिए उदेति जावइएणं च सूरिए अत्थमेति एवतियाइं तिण्णोवासंतराइं अत्थेगतियस्स देवस्स

---

१. गंधगा पण्णत्ता कइणं भंते गंधगसया (क, ख, ग, ट); गंधा गंधंगसता (ता); क्वचिद् गन्धा इति पाठस्तत्र पदैकदेशे पदसमुदायोपचाराद् गन्धा इति गन्धाङ्गानीति द्रष्टव्यम् (मवृ) ।

२. जलयराणं चत्तारि थलयराणं (क, ट); लिपिकाराणां प्रमादेन 'जलयाणं थलयाणं' इति पदयोः स्थाने 'जलयराणं थलयराणं' इति पाठविपर्ययोः जातः इति सम्भाव्यते ।

३. महारुक्खियाणं° (क, ख, ग); °गुम्मियाणं (ट); महागुल्मिकादीनां जात्यादीनां, चत्वारि महावृक्षाणां (मवृ) ।

४. तेवि (मवृ) ।

५,६,७. एवं समणु° (क, ख, ग, ट) ।

८. आजीवियदि० (क, ट); आजीविदि० (ग); आजीविवदि० (ता) ।

९. अच्चिकिट्टीणि (ता) ।

१०. सोत्थीणि सोत्थियावत्ताइं सोत्थियपभाइं सोत्थियकंताइं सोत्थियवण्णाइं सोत्थियलेस्साइं सोत्थिसिंगाइं (सिंगाराइं—ग, ट); सोत्थिकूडाइं (कूडाइं—क, ख) सोत्थिसिट्ठाइं सोत्थुत्तरवडिंसगाइं (क, ख, ग, ट); 'ता'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगे विक्कमे सिता। से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए[1]• चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धयाए जइणाए छेयाए° दिव्वाए देवगतीए वीतीवयमाणे-वीतीवयमाणे जहण्णेणं[2] एकाहं वा दुयाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे वीतीवएज्जा—अत्थेगतियं[3] विमाणं वीतीवएज्जा अत्थेगतियं[4] विमाणं नो वीतीवएज्जा, एमहालता णं गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता समणाउसो[5] !।।

१७७. अत्थि णं भंते ! विमाणाइं 'सोत्थीणि सोत्थियावत्ताइं सोत्थियपभाइं सोत्थियकंताइं सोत्थियवण्णाइं सोत्थियलेसाइं सोत्थियज्झयाइं सोत्थिसिंगाइं सोत्थिकूडाइं सोत्थिसिट्ठाइं सोत्थुत्तरवडिंसगाइं'[6] ? हंता अत्थि ।।

१७८. ते णं भंते ! विमाणा केमहालता पण्णत्ता ? गोयमा ! •[7]जावतिए णं सूरिए उदेति जावइएणं च सूरिए अत्थमेति° एवतियाइं पंच ओवासंतराइं अत्थेगतियस्स देवस्स एगे विक्कमे सिता। •[8]से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धयाए जइणाए छेयाए दिव्वाए देवगतीए वीतीवयमाणे-वीतीवयमाणे जहण्णेणं एकाहं वा दुयाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे वीतीवएज्जा—अत्थेगतियं विमाणं वीतीवएज्जा अत्थेगतियं विमाणं नो वीतीवएज्जा, एमहालता णं गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता समणाउसो° !।।

१७९. अत्थि णं भंते ! विमाणाइं कामाइं कामावत्ताइं[9] •कामप्पभाइं कामकंताइं कामवण्णाइं कामलेस्साइं कामज्झयाइं कामसिंगाइं कामकूडाइं कामसिट्ठाइं° कामुत्तरवडिंसयाइं ? हंता अत्थि ।।

१८०. ते णं भंते ! विमाणा केमहालया पण्णत्ता ? गोयमा ! •[10] जावतिए णं सूरिए उदेति जावइएणं च सूरिए अत्थमेति एवतियाइं सत्त ओवासंतराइं अत्थेगतियस्स देवस्स एगे विक्कमे सिता। से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धयाए जइणाए छेयाए दिव्वाए देवगतीए वीतीवयमाणे-वीतीवयमाणे जहण्णेणं एकाहं वा दुयाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे वीतीवएज्जा—अत्थेगतियं विमाणं वीतीवएज्जा अत्थेगतियं विमाणं नो वीतीवएज्जा, एमहालता णं गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता समणाउसो° !।।

१८१. अत्थि णं भंते ! विमाणाइं विजयाइं वेजयंताइं जयंताइं अपराजिताइं ? हंता अत्थि ।।

प्रतौ वृत्तिद्वये च अर्चिरादीनां विमानानां त्रीणि अवकाशान्तराणि तथा स्वस्तिकादीनां पंच अवकाशान्तराणि लभ्यन्ते, अन्येषु प्रयुक्तादर्शेषु स्वस्तिकादीनां त्रीणि तथा अर्चिरादीनां पंच अवकाशान्तराणि लभ्यन्ते। प्राचीनतमां हारिभद्रीयवृत्तिमाश्रित्य तदनुसारी पाठ एव स्वीकृतः।

१. सं० पा०—तुरियाए जाव दिव्वाए।

२. जाव (क, ख, ग, ट)।

३. अत्थेगतिते (ग)।

४. अत्थेमतिया (ग)।

५. × (क, ख, ग, ट)।

६. अच्चीणि अच्चियावत्ताइं तहेव जाव अच्चुत्तरवडिंसगाइं (क, ख, ग, ट)।

७. सं० पा०—एवं जहा अच्चीणि णवरं एवतियाइं पंच ओवासंतराइं।

८. सं० पा०—सेसं तं चेव।

९. सं० पा०—कामावत्ताइं जाव कामुत्तरवडिंसयाइं।

१०. सं० पा०—जहा अच्चीणि णवरं सत्त ओवासंतराइं विक्कमे सेसं तहेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८२. ते णं भंते ! विमाणा केमहालता पण्णत्ता ? गोयमा ! जावतिए णं सूरिए उदेति आवइए णं च सूरिए अत्थमेति एवइयाइं नव ओवासंतराइं *'अत्थेगतियस्स देवस्स एगे विक्कमे सिता। से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए जइणाए छेयाए दिव्वाए देवगतीए वीतीवयमाणे-वीतीवयमाणे जहण्णेणं एकाहं वा दुयाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे वीतीवएज्जा°, नो चेव णं ते विमाणे वीईवएज्जा, एमहालयाणं विमाणा पण्णत्ता समणाउसो !।।

तिरिक्खजोणिय उद्देसओ बीओ

१८३. कतिविहा णं भंते ! संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! छव्विहा 'संसारसमावण्णगा जीवा'[१] पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया जाव तसकाइया ।।

१८४. से किं तं पुढविकाइया ? पुढविकाइया 'पण्णवणाए पदं निरवसेसं'[३] जाव सव्वट्ठ-सिद्धा देवा'[४] ।।

१८५. कतिविधा णं भंते ! पुढवी पण्णत्ता ? गोयमा ! छव्विहा पुढवी पण्णत्ता, तं जहा—सण्हपुढवी सुद्धपुढवी वालुयापुढवी मणोसिलापुढवी सक्करापुढवी खरपुढवी ।।

१८६. सण्हपुढवीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगं वाससहस्सं ।।

१८७. सुद्धपुढवीपुच्छा[५]। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस वाससह-स्साइं ।।

---

१. सं० पा०—सेसं तं चेव ।

२. × (मवृ) ।

३. निरवयवं (ता) ।

४. दुविहा पन्नत्ता तं सुहुमपुढविकाइया बायर-पुढविकाइया। से किं तं सुहुमपुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता तं पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से तं सुहुमपुढविक्काइया। से किं तं बादरपुढविक्काइया २ दुविहा पन्नत्ता तं जहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एवं जहा पण्णवणाए। सण्हा सत्तविहा पन्नत्ता। खरा अणेगविहा पन्नत्ता जाव असंखिज्जा। से तं बादरपुढविक्काइया। से तं पुढविक्काइया। एवं चेव जइ पण्णवणाए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव वणप्फइकाइया। एवं जत्थेको तत्थ सिय संखिज्जा सिय असंखि-ज्जा सित अणंता। से तं बादरवणस्सइकाइया। से तं वणप्फइकाइया। से किं तं तसकाइया चउविहा पन्नत्ता तं बेइंदिया तेइंदिया चउरि-दिया पंचिंदिया। से किं तं बेइंदिया अणेग-विहा पन्नत्ता। एवं जहेव पन्नवणाए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं ति जाव सव्वट्ठसिद्धगा देवा। से तं अणुत्तरोववाइया। से तं देवा। से त्तं पंचिंदिया। से त्तं तसकाइया (क, ख, ग, ट); इत्यादि प्रज्ञापनागतं प्रथमं प्रज्ञापना-पदं निरवशेषं वक्तव्यं यावदन्तिमं 'से तं देवा' इति पदम् (मवृ) ।

५. १८७-१९१ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ एका सङ्ग्रहणीगाथा लभ्यते—

सण्हा य सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्करा य
खरपुढवी ।
एक्कं बारस चोद्दस सोलस अट्ठारस बावीसा ।।

मलयगिरिवृत्तावपि 'ता' प्रत्यनुसारि विवरणं दृश्यते—एवमनेनाभिलापेन शेषाणामपि पृथिवीनामनया गाथया उत्कृष्टमनुगन्तव्यं, तामेव गाथामाह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८८. वालुयापुढवीपुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चोद्दस वाससहस्साइं ॥

१८९. मणोसिलापुढवीपुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सोलस वाससहस्साइं ॥

१९०. सक्करापुढवीपुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठारस वाससहस्साइं ॥

१९१. खरपुढवीपुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥

१९२. नेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! 'जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। ठितीपदं सव्वं भाणियव्वं जाव[1] सव्वट्ठसिद्धदेवत्ति'[2] ॥

१९३. जीवे णं भंते ! जीवेत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वद्धं[3] ॥

१९४. पुढविकाइए णं भंते ! पुढविकाइएत्ति कालतो केवच्चिरं होति ? गोयमा ! सव्वद्धं। एवं जाव तसकाइए ॥

१९५. पडुप्पन्नपुढविकाइया णं भंते ! केवतिकालस्स णिल्लेवा सिता ? गोयमा ! जहण्णपदे असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं, उक्कोसपदेवि[4] असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं—जहण्णपदातो उक्कोसपए असंखेज्जगुणा। एवं जाव पडुप्पन्नवाउक्काइया ॥

१९६. पडुप्पन्नवणप्फइकाइया णं भंते ! केवतिकालस्स निल्लेवा सिता ? गोयमा ! पडुप्पन्नवणप्फइकाइया जहण्णपदे अपदा उक्कोसपदेवि अपदा—पडुप्पन्नवणप्फतिकाइयाणं णत्थि निल्लेवणा ॥

१९७. पडुप्पन्नतसकाइया णं भंते ! 'केवतिकालस्स निल्लेवा सिया ? गोयमा ! पडुप्पन्नतसकाइया'[5] जहण्णपदे सागरोवमसतपुहत्तस्स[6], उक्कोसपदेवि सागरोवमसतपुहत्तस्स—जहण्णपदा[7] उक्कोसपदे विसेसाहिया ॥

---

१. पण्ण० ४।

२. चतुव्वीसा दंडएणं जाव सव्वट्ठंति (ता, मवृ)।

३. सव्वद्धा (क, ता)। अतोग्रे 'ता' प्रतौ भिन्नवाचनागतः पाठोस्ति—कायट्ठिती जहा णेतव्वं इमेहिं पदेहिं—जीवगतिंदियकाए जाव सुहुम बादरा। सव्वं अपरिसेसे तं उवरिल्लं णत्थि। मलयगिरिवृत्तौ द्वे सङ्ग्रहगाथे अत्र उपलभ्येते—

गइ इंदिए य काए जोगे वेए कसाय लेसा य।
सम्मत्तनाणदंसणसंजयउवओगआहारे ॥१॥
भासगपरित्तपज्जत्तसुहुम सण्णी भवइत्थि चरिमे य।
एएसिं तु पयाणं कायठिई होइ नायव्वा ॥२॥

४. उक्कोसपदे (क, ख, ग, ट)।

५. पुच्छा (क, ख, ग, ट)।

६. °सयस्स पुहत्तस्स (क, ट); सागरोवमसहस्सपुहत्तस्स (ख); सतसहस्सपुधत्तस्स (ता)।

७. जघण्णपदातो (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविसुद्धलेस्स-पदं

१९८. अविसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे असमोहतेणं[1] अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ-पासइ ? गोयमा[2] ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१९९. अविसुद्धलेस्से[3] णं भंते ! अणगारे असमोहतेणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ-पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२००. अविसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे समोहतेणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२०१. अविसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे समोहतेणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

२०२. अविसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे समोहतासमोहतेणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

२०३. अविसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे समोहतासमोहतेणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

विसुद्धलेस्स-पदं

२०४. विसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे असमोहतेणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? हंता जाणति-पासति ।।

२०५. °[4]विसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे असमोहतेणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? हंता जाणति-पासति ।।

२०६. विसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे समोहतेणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? हंता जाणति-पासति ।।

२०७. विसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे समोहतेणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? हंता जाणति-पासति ।।

२०८. विसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे समोहतासमोहतेणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? हंता जाणति-पासति° ।।

२०९. विसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे समोहतासमोहतेणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणति-पासति ? हंता जाणति-पासति ।।

---

१. असमोहएणं (क, ट) ।

२. × (ख, ट, ता) ।

३. 'ता' प्रतौ अतः भिन्ना वाचना दृश्यते—असमोहते णं भंते ! अणगारे असमोहतेणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस । समोहतेणं अविसुद्धलेस ३ अविसुद्धलेस समोह विसुद्धलेस्सा । समोहतेणं विसुद्धलेसं दे ४ णो तिण । अविसुद्धलेसे णं भंते ! समोहतासमोहतेणं अविसुद्धलेसं दे णो इ ५ अविसु समोहतासमोहतेणं विसुद्धलेसं णो तिण ६ विसुद्धले समोह विसुद्धलेसं देवं देविं अण जाणति पासति । हंता जाणति पासति । एवं विसुद्धलेसा असमोहतेणं दोवि जाणति पासति । समोहतेणं दोवि जाणति । समोहतासमोहतेणं दोवि जाणति पासति । एवं जाणति छण्ण जाणति एवं बारस आलावगा ।

४. सं० पा०—जहा अविसुद्धलेस्सेणं छ आलावगा एवं विसुद्धलेस्सेण वि छ आलावगा भाणितव्वा जाव विसुद्धलेस्से ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१०. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति एवं भासेंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ[1] पकरेति, तं जहा—सम्मत्तकिरियं च मिच्छत्तकिरियं च।

जं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेति, तं समयं मिच्छत्तकिरियं पकरेति।

जं समयं मिच्छत्तकिरियं पकरेति, तं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेति।

सम्मत्तकिरियापकरणताए मिच्छत्तकिरियं पकरेति।

मिच्छत्तकिरियापकरणताए सम्मत्तकिरियं पकरेति।

एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेति, तं जहा—सम्मत्तकिरियं च मिच्छत्तकिरियं च॥

२११. से कहमेयं[2] भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति एवं भासेंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेति तहेव[3] जाव सम्मत्तकिरियं च मिच्छत्तकिरियं च।

जेते एवमाहंसु, तं णं मिच्छा। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेति, तं जहा—सम्मत्तकिरियं वा मिच्छत्तकिरियं वा।

जं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेति, णो तं समयं मिच्छत्तकिरियं पकरेति।

जं समयं मिच्छत्तकिरियं पकरेति, नो तं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेति।

सम्मत्तकिरियापकरणयाए नो मिच्छत्तकिरियं पकरेति।

मिच्छत्तकिरियापकरणयाए णो सम्मत्तकिरियं पकरेति।

एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेति, तं जहा—सम्मत्तकिरियं वा मिच्छत्तकिरियं वा[4]॥

मणुस्साधिगारो

२१२. से किं तं मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य॥

२१३. से किं तं संमुच्छिममणुस्सा ? संमुच्छिममणुस्सा एगागारा पण्णत्ता॥

२१४. कहि णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति ? गोयमा ! अंतोमणुस्सखेत्ते जहा पण्णवणाए जाव[5] अंतोमुहुत्तद्धाउया चेव कालं पकरेंति। सेत्तं संमुच्छिममणुस्सा॥

२१५. से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा ? गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा॥

२१६. से किं तं अंतरदीवगा ? अंतरदीवगा अट्ठावीसतिविधा[6] पण्णत्ता, तं जहा—

---

१. कित्तियाओ (ता)।

२. कहमेतं (ख); कथमेतं (ता)।

३. तं चेव सव्वं उच्चारेयव्वं (ता)।

४. अस्यां तृतीयप्रतिपत्तौ तिर्यग्योन्यधिकारे द्वितीयोद्देशकः समाप्तः (मवृ)।

५. पण्ण० १।८४। द्रष्टव्यं अस्यैव सूत्रस्य प्रथमप्रतिपत्तेः १२७ सूत्रम्।

६. अट्ठावीसविहा (क, ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगोरुया[1] आभासिता वेसाणिया णंगूलिया[2] हयकण्णा[3] गयकण्णा गोकण्णा सक्कुल्लिकण्णा आयंसमुहा[4] मेंढमुहा अयोमुहा गोमुहा आसमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा आसकण्णा सीहकण्णा अकण्णा कण्णपाउरणा उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जुदंता घणदंता लट्ठ-दंता गूढदंता सुद्धदंता ॥

२१७. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं[5] एगोरुयदीवे णामं दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं चुल्लहिमवंतस्स वासधर-पव्वयस्स 'उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ'[6] लवणसमुद्दं तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे णामं दीवे पण्णत्ते—तिण्णि जोयण-सयाइं आयामविक्खंभेणं णव एगूणपण्णे[7] जोयणसए किंचि विसेसेण परिक्खेवेणं। से णं एगाए पउमवरवेदियाए एगेणं च वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। 'वण्णतो पउम-वरवेइया-वणसंडाणं जाव तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसयंति'[8] •सयंति चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीलंति मोहंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभव-माणा° विहरंति ॥

२१८. एगोरुयदीवस्स णं भंते ! केरिसए आगार भावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा !

---

१. एगुरूया (ट)।

२. णंगोली (क, ख, ग, ट); णंगोलिया (ठाणं ४।३२१)।

३. हयकण्णगा ह्व (क, ख, ग, ट); ह्व इति चतुः संख्यासूचको वर्णोस्ति। अग्रिमपदेष्वपि एष दृश्यते।

४. आतंस° (ट); आदंस° (ता)।

५. एगूरुय° (क, ख, ता); एकूरुय° (ट)।

६. पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो उत्तरपुरत्थिमे णं (ता)।

७. य अउणावण्णे (ता)।

८. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'ता' प्रति मलयगिरिवृत्ति च मुक्त्वा अन्येषु आदर्शेषु विस्तृतः पाठोस्ति सा णं पउमवरवेदिया अद्ध (केषुचिद् आदर्शेषु 'अट्ठ' इति पदं लिखितमस्ति—तदशुद्धम्) जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेण एगोरुयदीवं समंता परिक्खेवेणं पण्णत्ता। तीसे णं पउमवर-वेदियाए अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया णिम्मा एवं वेतियावण्णओ जहा रायपसेणइए तहा भाणियव्वो। सा णं पउमवरवेतिया एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता। से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं वेतियासमेणं परिक्खेवेणं पण्णत्ते, से णं वणसंडे किण्हे किण्होभासे, एवं जहा रायपसेणइयवणसंडवण्णओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं तणा य वण्णगंध फासो सद्दो तणाणं वावीओ उप्पायपव्वया पुढविसिलापट्टगा य भाणितव्वा जाव तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसयंति जाव विहरंति। रायपसेणइयसूत्रे एतत् प्रकरणं १८९-२०१ सूत्रेषु लभ्यते। मलयगिरिणा अस्यैव सूत्रस्य प्रकरणदर्शनार्थं सूचितम्—'तत्र पद्मव-रवेदिकावर्णको वनषण्डवर्णकश्च वक्ष्यमाणजम्बूद्वीपजगत्युपरिपद्मवरवेदिकावनषण्डवर्णकवद् भाव-नीयः'। स च तृतीयप्रतिपत्तौ देवाधिकारे प्रथमोद्देशके वर्तते। सं०पा०—आसयंति जाव विहरंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते। से जहाणामए—आलिंगपुक्खरेति वा[1], उत्तरकुरुगमो

१. अतोग्रे वाचनाद्वयं लभ्यते ताडपत्रीयादर्शे वृत्तिद्वये च एकोरुकवक्तव्यता अत्र संक्षिप्तास्ति उत्तरकुरुवक्तव्यतायै (प्रतिपत्ति ३।५७८-६३१) समर्पितास्ति। शेषादर्शेषु अत्र पूर्णः पाठोस्ति उत्तरकुरुप्रकरणे च संक्षिप्तः। तद्वक्तव्यता एकोरुकवक्तव्यतायै समर्पितास्ति। 'ता' प्रतेर्वृत्तिद्वयस्याधारेण पूर्ववर्तिसूत्रवत् संक्षिप्तवाचनात्र स्वीकृतास्ति। विस्तृतवाचनायां प्रस्तुतसूत्रे पाठसमर्पणमेवमस्ति—एवं सयणिज्जे भाणितव्वे जाव पुढविसिलापट्टगंसि तत्थ णं बहवे एगोरुयदीवया मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयंति जाव विहरंति।

एगोरुयदीवे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं २ बहवे उद्दालका मोद्दालका कोद्दालका कतमाला णट्टमाला सिंगमाला संखमाला दंतमाला सेलमालगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो जाव बीयमंतो पत्तेहि य पुप्फेहि य अच्छण्ण-पडिच्छण्णा सिरीए अतीव-अतीव सोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति।

एगोरुयदीवे णं दीवे तत्थ रुक्खा बहवे हेरुयालवणा भेरुयालवणा मेरुयालवणा सेरुयालवणा सालवणा सरलवणा सत्तपण्णवणा पूयफलिवणा खज्जूरिवणा णालिएरिवणा कुसविकुसवि जाव चिट्ठंति।

एगोरुयदीवे णं तत्थ बहवे तिलया लवया नग्गोहा जाव रायरुक्खा णंदिरुक्खा कुसविकुसवि जाव चिट्ठंति।

एगोरुयदीवे णं तत्थ बहूओ पउमलयाओ नागलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ एवं लयावण्णओ जहा उववाइए जाव पडिरूवाओ।

एगोरुयदीवे णं तत्थ बहवे सेरियागुम्मा जाव महाजातिगुम्मा। ते णं गुम्मा दसद्धवण्णं कुसुमं कुसुमेंति जेणं वायविहुयग्गसाला एगोरुयदीवस्स बहुसमरमणिज्जभूमिभागं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति।

एगोरुयदीवे णं तत्थ बहूओ वणराईओ पण्णत्ताओ। ताओ णं वणराईओ किण्हाओ किण्होभासाओ जाव रम्माओ महामेहणिगुरुंबभूताओ जाव महंतीं गंधद्धुणिं मुयंताओ पासादीयाओ।

एगोरुयदीवे तत्थ बहवे मत्तंगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से चंदप्पभ-मणिसिलाग-वरसीधु-पवरवारुणि-सुजातफल-पत्त-पुप्फ-चोय-णिज्जाससार-बहुदव्व जुत्तीसंभार-कालसंधियआसवा महु-मेरग-रिट्ठाभ-दुद्धजाति-पसन्न-तेल्लग-सताउखजूरमुद्दियासार-कविसायण-सुपक्कखोयरसवरसुरा-वण्ण-रसगंधफरिसजुत्त-बलवीरियपरिणामा मज्जविधी य बहुप्पगारा तहेव ते मत्तंगयावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए मज्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा विव विसट्टंति कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति।

एगोरुयदीवे तत्थ बहवे भिंगंगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से वारगघडकरगकलसकक्करिपयंचाणिउल्लंकवद्धणिसुपइट्ठकविट्ठपारीचसगभिंगारकरोडिसरंगपरगपत्ता घोसगाणल्लगवलियअवपदकगवालकाविचित्तवट्टकमणिवट्टकसिप्पिखोरपिणया कंचणमणिरयणभत्तिविचित्ता भाजणविही बहुप्पगारा तहेव ते भिंगंगयावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणताए भाजणविहीए उववेया फलेहिं पुण्णावि विसट्टंति कुसविकुस जाव चिट्ठंति।

एगुरुयदीवे णं तत्थ ५ बहवे तुडियंगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से आलिंगपणवपडहदद्दरकरडिडिंडिमभंभातहोरंभकण्णियखरमुहिमुयंगसंखियपरिल्लयपव्वगापरिवायणिवंसवेणुवीणा सुघोसगविपंचिमहतिकच्छभिरिकिसलकतलतालकंसालतालकसंपउत्ता आतोज्जविधी य णिउणगंधव्व-

समयकुसलेहिं फंदिया तिट्ठाणकरणसुद्धा तहेव ते तुडियंगयावि दुमगणा अणेगबहुविविधवीससापरिण-याए ततघणभूसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा विव विसट्टंति कुसविकुस जाव चिट्ठंति ।

एगुरुयदीवे णं तत्थ बहवे दीवसिहा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से संझाविरागसमए नवणिहिपतिणेवदीवियाचक्कवालविंदे पभूयवट्टिपलित्तणेहिं धणिउज्जालियतिमिरमद्दए कणगणिगर कुसुमियपारिजायघणप्पगासे कंचणमणिरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहिं दीवियाहिं सहसापज्जालिऊसवियणिद्धतेयदिप्पंतविमलगहगणसमप्पहाहिं वितिमिरकरसूरपसरिउज्जोवचिल्लि-याहिं जालाओज्जलपहसियाभिरामाहिं सोभमाणे तहेव ते दीवसिहावि दुमगणा अणेगबहुविविह-वीससापरिणयाए उज्जोयविहीए उववेया फलेहिं कुसविकुस जाव चिट्ठंति ।

एगुरुयदीवे णं तत्थ ५ बहवे जोइसिया णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से अचिरुग्गयसरय-सूरमंडलपडंतउक्कासहस्सदिप्पंतविज्जुज्जलहुयवहनिद्धूमजालियनिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जकिंसुयासोगज-वासुयणकुसुमविमउलियपुंजमणिरयणकिरणजच्चहिंगुलुयनियरूवाइरेगरूवा तहेव ते जोतिसियावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए उज्जोयविहीए उववेया सुहलेस्सा मंदलेस्सा मंदातवलेस्सा कूडा इव ठाणठिया अन्नमन्नसमोगाढाहिं लेस्साहिं साए पभाए सपदेसे सव्वओ समंता ओभासंति उज्जोवेंति पभासेंति कुसविकुसवि जाव चिट्ठंति ।

एगुरुयदीवे णं तत्थ ५ बहवे चित्तंगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से पेच्छाघरे विचित्ते रम्मे वरकुसुमदाममालुज्जललेसा भासंतमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए विरल्लियविचित्तमल्ल-सिरिसमुदयप्पगब्भे गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं मल्लेणं छेयासिप्पियविभागरइएण सव्वतो चेव समणु-बद्धे पविरललंबंतविप्पइट्ठेहिं पंचवण्णेहिं कुसुमदामेहिं सोभमाणे वणमालकतग्गए चेव दिप्पमाणे तहेव ते चित्तंगयावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए मल्लविहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिट्ठंति ।

एगोरुयदीवे तत्थ ५ बहवे चित्तरसा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से सुगंधवरकलम-सालितंदुलविसिट्ठणिरुवहतदुद्धरद्धे सारयघयगुडखंडमहुमेलिए अतिरसे परमण्णे होज्ज उत्तमवण्ण-गंधमंते रण्णो जहा वा वि चक्कवट्टिस्स होज्ज णिउणेहिं सूयपुरिसेहिं सज्जिए चउरकप्पसेयसित्ते इव ओदणे कलमसालिणिव्वत्तिए विपक्के सवप्फमिउविसयसगलसित्थे अणेगसालणगसंजुत्ते अहवा पडिपुण्णदव्वुवक्खडे सुसक्कए वण्णगंधरसफरिसजुत्तबलविरियपरिणामे इंदियबलवद्धणे खुप्पिवास-महणे पहाणगुलकढियखंडमच्छंडिघओवणीएव्व मोयगे सण्हसमियगब्भे हवेज्ज परमइट्ठगसंजुत्ते तहेव ते चित्तरसावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए भोजणविहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिट्ठंति ।

एगोरुयदीवे तत्थ ५ बहवे मणियंगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से हारद्धहारवेट्टणग-मउडकुंडलवासुत्तगहेमजालमणिजालकणगजालगसुत्तगउच्चितियकडगखुड्डियएगावालिकंठसुत्तमगरगउ-रत्थगेवेज्जसेणिसुत्तगचूलामणिकणगतिलगफुल्लगसिद्धत्थियकण्णवालिससिसूरउसभचक्कगतलभंगयतुडि-यहत्थमालगवलक्खदीणारमालिया चंदसूरमालिया हरिसयकेयूरवलयपालंबअंगुलेज्जगकंचीमेहलाक-लावपयरकपायजालघंटियखिंखिणिरयणोरुजालच्छुडियवरणेउरचलणमालिया कणगणिगरमालिया कंचणमणिरयणभत्तिचित्तव्व भूसणविधी बहुप्पगारा तहेव ते मणियंगावि दुमगणा अणेगबहुविविह-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीससापरिणताए भूसणविहीए उववेया कुसविकुस जाव चिट्ठंति ।

एगोरुयदीवे तत्थ ५ बहवे गेहागारा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से पागारट्टालगचरियदारगोपुरपासायाकासतलमंडवएगसालगविसालगतिसालगचउसालगगब्भघरमोहणघरवलभिघरचित्तसालगमालियभत्तिघरवट्टतंसचउरंसणंदियावत्तसंठियायतपंडुरतलमुंडमालहम्मियं अहव णं धवलहरअद्धमागहविब्भमसेलद्धसेलसंठियकूडागारेड्ढसुविहिकोट्ठगअणेगघरसरणलेणआवणविडंगजालवंदणिज्जूहअपवरककवोतालिचंदसालियरूवविभत्तिकलिता भवणविही बहुविकप्पा तहेव ते गेहागाराविदुमगणा अणेगबहुविविधवीससापरिणयाए सुहारुहाणा सुहोत्ताराए सुहनिक्खमणप्पवेसाए दद्दरसोपाणपंतिकलिताए पइरिक्काए सुहविहाराए मणाणुकूलाए भवणविहीए उववेया कुसविकुसावे जाव चिट्ठंति ।

एगोरुयदीवे तत्थ ५ बहवे अणिगणा णामं दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से आइणगखोमतणुयकंबलदुगुल्लकोसेज्जकालमिगपट्टचीणंसुयवतत्तावरणातवारवाणगपच्छुन्नाभरणचित्तसहिणगकल्लाणगभिगमेहलकज्जलबहुवण्णरत्तपीतसुविकिलमक्खयमितलोमहप्फरल्लगअवरतरा सिंधुउसभदामिलवंगकलिंगनलिणतंतुमयभत्तिचित्ता वत्थविही बहुप्पकारा हवेज्ज वरपट्टणुग्गता वण्णरागकलिता तहेव ते अणिगणावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणताए उववेया कुसविकुस जाव चिट्ठंति ।

एगोरुयदीवे णं भंते ! दीवे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! ते णं मणुया अणुवमतरसोमचारुरूवा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा भोगसस्सिरीया सुजायसव्वंगसुंदरंगा सुपइट्ठियकुम्मचारुचलणा रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालकोमलतला नगणगरमगरचक्कंकहरंकलक्खणंकियचलणा अणुपुव्वसुहायंगुलिया उण्णयतणुतंबणिद्धणक्खा संठियसुसलिट्ठगूढगुप्फा एणीकुरुविंदावत्तवट्टाणुपुव्वजंघा सामुग्गणिमग्गगूढजाणू गतससणसुजातसण्णिभोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्कमविलासितगति सुजातवरतुरगगुज्झदेसा आइण्णहतोव्व णिरुवलेवा पमुइयवरतुरगसीहअइरेगवट्टियकडी सोहयसोणिंदमुसलदप्पणणिगरितवरकणगच्छरुसरिसवरवइरवलितमज्झा उज्जुयसमसंहितसुजातजच्चतणुकसिणणिद्धआदेज्जलडहसुकुमालमउयरमणिज्जरोमराईगंगावत्तयपयाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोधियआकोसायंतपउमगंभीरविगडणाभा झसविहगसुजातपीणकुच्छी झसोदरा सुइकरणा पम्हवियडणाभा सण्णयपासा संगतपासा सुंदरपासा सुजातपासा मितमाइयपीणरइयपासा अकरुंडुयकणगरुयगनिम्मलसुजातनिरुवहयदेहधारी पसत्थबत्तीसलक्खणधरा कणगसिलातलुज्जलपसत्थसमतलउवचियविच्छिण्णपिहुलवच्छा सिरिवच्छंकियवच्छा पुरवरफलिहवट्टियभुया भुयगीसरविपुलभोगआयाणफलिहउच्छूढदीहबाहू जुगसन्निभपीणरतियपीवरपउट्ठसंठियउवचियघणथिरसुबद्धसुसलिट्ठपव्वसंधी रत्ततलोवइतमउयमंसलपसत्थलक्खणसुजायअच्छिद्दजालपाणी पीवरवट्टियसुजायकोमलवरंगुलीया तंबतलिणसुतिरुइरणिद्धणक्खा चंदपाणिलेहा सूरपाणिलेहा संखपाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसासोवत्थियपाणिलेहा चंदसूरसंखचक्कदिसासोवत्थियपाणिलेहा अणेगवरलक्खणुत्तमपसत्थसुविरइयपाणिलेहा वरमहिसवराहसीहसद्दूलउसभणागवरविउलउन्नतमइंदखंधा चउरंगुलसुप्पमाणकंबुसरिसगीवा अवट्ठितसुविभत्तसुजातचित्तमंसू मंसलसंठियपसत्थसद्दूलविपुलहणुया ओतवितसिलप्पवालबिंबफलसन्निभाहरोट्ठा पंडुरससिसगलविमलनिम्मलसंखदधिघणगोखीरफेणदगरयमुणालियाधवलदंतसेढी अखंडदंता अफुडियदंता अविरलदंता सुसिणिद्धदंता सुजातदंता एगदंतसेढिव्व अणेगदंता हुतवहनिद्धंतधोततत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा गरुलायतउज्जुतुंगणासा अवदालियपोंडरीकणयणा कोकासितधवलपत्तलच्छा

आणमियचावरुइलकिण्हपूराइयसंठियसंगतआयतसुजाततणुकसिणनिद्धभुमया अल्लीणप्पमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमंसलकवोलदेसभागा अचिरुग्गयबालचंदसंठियपसत्थविच्छिन्नसमणिडाला उडुवति-पडिपुण्णसोमवदणा छत्तागारुत्तमंगदेसा घणणिचियसुबद्धलक्खणुण्णयकूडागारणिभपिंडियसिरा हुतवहनिद्धंतधोततत्ततवणिज्जकेसंतकेसभूमी सामलिपोंडघणणिच्चियछोडियामिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणसुगंधसुंदरभुयमोयगभिंगणीलकज्जलपहट्ठभमरगणिणिद्धणिकुरुंबनिचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरया लक्खणवंजणगुणोववेया सुजायसुविभत्तसंगतंगा पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

ते णं मणुया ओहस्सरा हंसस्सरा कोंचस्सरा नंदिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा मंजुस्सरा मंजुघोसा सुस्सरा सुस्सरणिग्घोसा छायाउज्जोतियंगमंगा वज्जरिसभनारायसंघयणा समचउरंससंठाणसंठिया सिणद्धछवी णिरायंका उत्तमपसत्थअइसेसनिरुवमतणू जल्लमलकलंकसेयरयदोसवज्जियसरीरा निरुवमलेवा अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कवोतपरिणामा सउणीपोसपिट्ठंतरोरुपरिणता विग्गहियउन्नयकुच्छी पउमुप्पलसरिसगंधणिस्साससुरभिवयणा अट्ठधणुसयऊसिया तेसिं मणुयाणं चउसट्ठी पिट्ठिकरंडगा पण्णत्ता समणाउसो!

ते णं मणुया पगतिभद्दगा पगतिविणीया पगतिउवसंता पगतिपयणुकोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपण्णा अलीणा भद्दगा विणीया अप्पिच्छा असंनिहिसंचिया अचंडा विडिमंतरपरिवसणा जहिच्छियकामगामिणो य ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो!

तेसि णं भंते! मणुयाणं केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति? गोयमा! चउत्थभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति।

एगोरुयमणुईणं भंते! केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! ताओ णं मणुईओ सुजायसव्वंगसुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ता अच्चंतविसप्पमाणपउमसूमालकुम्मसंठितविसिट्ठचलणा उज्जुमउयपीवरनिरंतरपुट्ठसुसाहतचलणंगुलीओ अच्चुण्णयरतियतलिणितंबसुतिणिद्धणखा रोमरहियवट्टलट्ठसंठियअजहण्णपसत्थलक्खणअकोप्पजंघजुतला सुणिम्मियसुगूढजाणुमंसलसुबद्धसंधी कयलिक्खंभातिरेगसंठियणिव्वणसूमालमउयकोमलअविरलसंहतसुजातवट्टपीवरणिरंतरोरू अट्ठावयवीचि (दीवि-क) पट्टसंठियपसत्थविच्छिन्नपिहुलसोणी वदणायामप्पमाणदुगुणितविसालमंसलसुबद्धजहणवरधारणीओ वज्जविराइयपसत्थलक्खणनिरोदरा तिवलिवलियतणुणमियमज्झिआओ उज्जुयसमसंहितजच्चतणुकसिणणिद्धआदेज्जलडहसुविभत्तसुजातसोभंतरुइलरमणिज्जरोमराई गंगावत्तयपयाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोधियआकोसाइंतपउमगंभीरविगडणाभी अणुब्भडपसत्थपीणकुच्छी सण्णयपासा संगयपासा सुजायपासा मियमाईयपीणरइयपासा अकरंडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायणिरुवहयगातलट्ठी कंचणकलसायमाणसमसंहियसुजातलट्ठचूचुयआमेलगजमलजुगलवट्टिय-अच्चुण्णयरतियसंठियपयोधराओ भुजंगअणुपुव्वतणुयगोपुच्छवट्टसमसहियणमियआइज्जललियबाहा तंबणहा मंसलग्गहत्था पीवरकोमलवरंगुलीओ णिद्धपाणिलेहा रविससिसंखचक्कसोत्थियविभत्तसुविरतियपाणिलेहा पीणुण्णयकक्खवक्खवत्थिप्पदेसा पडिपुण्णगलकवोला चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठियपसत्थहणुगा दालिमपुप्फप्पगासपीवरपलंबकुंचियवराधरा सुंदरोत्तरोट्ठा दधिदगरयचंदकुंदवासंतिमउलअच्छिद्दविमलदसणा रत्तुप्पलपत्तमउयसूमालतालुजीहा कणयरमउलअकुडिलअब्भुग्गयउज्जुतुंगणासा सारयणवकमलकुमुदकुवलयविमउलदलणिगरसरसलक्खणअंकियकंतणयणा पत्तलधवलायततंबलोयणाओ आणामितचावरुइलकिण्हब्भराइसंठियसंगतआययसुजाय-

तणुकसिणणिद्धभुमगा अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमट्ठरमणिज्जगंडलेहा चउरंसपसत्थ-समणिडाला कोमुतिरयणिकरविमलपडिपुण्णसोम्मवयणा छत्तुन्नयउत्तिमंगा कुडिलसुसिणिद्धदीह-सिरया छत्तज्झयजूवथूभदामिणिकमंडलुकलसवाविसोत्थियपडागजवमच्छकुम्मरहवरमगरसुकथाल-अंकुसअट्ठावयवीईसुपइट्ठकमऊरसिरियाभिसेयतोरणमेइणिउदधिवरभवणगिरिवरआयंसललियगय-उसभसीहचमरउत्तमपसत्थबत्तीगलक्खणधरीओ हंससरिसगईओ कोइलमहुरगिरसूसराओ कंताओ सव्वस्स अणुमयाओ ववगयबलिपलियवंगदुव्वण्णवाहीदोभग्गसोगमुक्का उच्चत्तेण य नराणथोवूण-मूसियाओ सब्भावसिंगारचारुवेसा संगतहसियभणियचेट्ठियविलाससंलावणिउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयणलावण्णवण्णरूवजोवणविलासकलिया नंदणवणविवरचारिणीउव्व अच्छराओ अच्छेरगपेच्छणिज्जा पासाइताती दरिसणिज्जाती अभिरूवाओ पडिरूवाओ ।

तासि णं भंते ! मणुईणं केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ! गोयमा ! चउत्थभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ।

ते णं भंते ! मणुया किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! पुढविपुप्फफलाहारा ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

तीसे णं भंते ! पुढवीए केरिसए अस्साए पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहाणामए गुलेति वा खंडेति वा सक्कराति वा मच्छंडियाति वा भिसकंदेतिवा पप्पडमोततेति वा पुप्फउत्तराइ वा पउमुत्तराइ वा अकोसिताति वा विजताति वा महाविजयाइ वा पायसोवमाइ वा उवमाइ वा अणोवमाइ वा चउरक्के गोखीरे चउठाणपरिणए गुडखंडमच्छंडिउवणीए मंदग्गिकढिए वण्णेणं उववेए जाव फासेणं, भवेतारूवे सिता ? नो इणट्टे समट्ठे । तीसे णं पुढवीए एत्तो इट्ठयराए चेव जाव मणामतराए चेव आसाए णं पण्णत्ते ।

तेसि णं भंते ! पुप्फफलाणं केरिसए अस्साए पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहानामए रण्णो चाउरंत-चक्कवट्टिस्स कल्लाणे पवरभोयणे सतसहस्सनिप्फन्ने वण्णेणं उववेए गंधेणं उववेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे वीसायणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे बींहणिज्जे मयणिज्जे सव्विंदिय-गातपल्हायणिज्जे भवेतारूवे सिता ? णो तिणट्ठे समट्ठे । तेसि णं पुप्फफलाणं एत्तो इट्ठतराए चेव जाव अस्साए णं पण्णत्ते । ते णं भंते ! मणुया तमाहारेत्ता कहिं वसहिं उवेंति ? गोयमा ! रुक्खगेहालता णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

ते णं भंते ! रुक्खा किंसंठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! कूडागारसंठिता पेच्छाघरसंठिता छत्तागार-संठिता झयसंठिया थूभसंठिया तोरणसंठिया गोपुरवेतियपालगसंठिया अट्टालगसंठिया पासायसंठिया हम्मितलसंठिया गवक्खसंठिया वालग्गपोतियसंठिया अण्णे तत्थ बहवे वरभवणसयणासणविसिट्ठ-संठाणसंठिया सुभसीतलच्छाया णं ते दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगोरुयदीवे दीवे गेहाति गेहाययणाति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे ! रुक्खगेहालया णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगोरुयदीवे २ गामाति वा णगराति वा जाव सन्निवेसाति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे । जहच्छियकामगामिणो णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगूरुयदीवे असीति वा मसीइ वा किवणीइ वा पणीइ वा वाणिज्जाइ वा ? नो तिणट्ठे समट्ठे । ववगयअसिमसिकिसिविवणिवणिज्जा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थि णं भंते ! एगूरुयदीवे हिरण्णेति वा सुवण्णेति वा कंसेति वा दूसेति वा मणीति वा मुत्तिएति वा विपुलधणकणगरतणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जे वा ? हंता अत्थि। णो चेव णं तेसिं मणुयाणं तिव्वे ममत्तिभावे समुप्पज्जति।

अत्थि णं भंते ! एगोरुयदीवे रायाति वा जुवरायाति वा ईसरेति वा तलवरेइ वा मांडबिएति वा कोडुंबिएति वा इब्भेति वा सेट्ठीति वा सेणावतीति वा सत्थवाहेति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे। ववगयइड्ढिसक्कारा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगूरुयदीवे २ दासाइ वा पेसाइ वा सिस्साइ वा भयगाइ वा भाइल्लगाइ वा कम्मगराइ वा भोगपुरिसाइ वा ? नो इणट्ठे समट्ठे। ववगयआभिओगिया णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगोरुयदीवे दीवे मातात्ति वा पियाति वा भायाति वा भइणीति वा भज्जाति वा पुत्ताति वा धूयाइ वा सुण्हाति वा ? हंता अत्थि। नो चेव णं तेसि णं मणुयाणं तिव्वे पेज्जबंधणे समुप्पज्जति, पयणुपेज्जबंधणा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते। एगोरुयदीवे अरीति वा वेरियाति वा घायगाति वा वहगाति वा पडिणीइ वा पच्चमित्ताति वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ववयगयवेराणुबंधा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते। एगोरुयदीवे मित्ताति वा वतंसाति वा घडिताति वा सहीति वा सुहियाति वा महाभागाति वा संगतियाति वा ? नो तिणट्ठे समट्ठे। ववगतपेम्मा ते मणुयगणा पण्णत्ता समणउसो !

अत्थि णं भंते एगोरुयदीवे आवाहाति वा विवाहाति वा जन्नाति वा सद्धाति वा थालियाकाति वा चोलोवणतणाति वा सीमंतोवणतणाइ वा पितिपिंडनिवेयणाइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ववगयआवाहविवाहजन्नसद्धथालिपागचोलोवणतणसीमंतोवणतणपितिपिंडनिवेदणा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो।

अत्थि णं भंते ! एगोरुयदीवे २ इंदमहाइ वा रुद्दमहाइ वा खंदमहाइ वा सिवमहाइ वा वेसमणमहाइ वा मुगुंदमहाइ वा नागमहाइ वा जक्खमहाइ वा भूतमहाइ वा कूवमहाइ वा तलागणदिमहाइ वा दहमहाइ वा पव्वयमहाइ वा चेइयमहाइ वा रुक्खंसियणमहाइ वा थूभमहाइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ववगयमहामहिमा णं ते मणुयगणा पणत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते एगोरुयदीवे दीवे नडपिच्छाइ वा णट्टपेच्छाइ वा मल्लपेच्छाइ वा मुट्ठियपेच्छाइ वा विडंबगपेच्छाइ वा कहगपेच्छाइ वा पवगपेच्छाइ वा अक्खाइगपेच्छाइ वा लासगपेच्छाइ वा लंखपे० मंखपे० तूणइल्लपे० तुंववीणपेच्छाइ वा मागहपेच्छाइ वा कावपे० जल्लपि० कहयापेच्छाइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ववगयकोउहल्ला णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे सगडाइ वा रहाइ वा जाणाइ वा जुग्गाइ वा गिल्लीइ वा पिल्लीइ वा थिल्लीइ वा पवहणाइ वा सीयाइवा संदमाणियाइ वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे। पादचारविहारिणो णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे आसाइ वा हत्थीइ वा उट्टाइ वा गोणाइ वा महिसाइ वा खराइ वा अवीइ वा एलगाइ वा ? हंता अत्थि। नो चेव णं तेसि मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति।

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे गोवीइ वा महिसीइ वा उट्टीइ वा अयाइ वा एलगाइ वा ? हंता

अत्थि। नो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वामागच्छंति।

अत्थि णं भंते एगुरुयदीवे दीवे सीहाइ वा वग्घाइ वा दीवियाइ वा अच्छाइ वा परस्सराइ वा सियालाइ वा विडालाइ वा सुणगाइ वा कोलसुणगाइ वा कोकंतियाइ वा ससगाइ वा चित्तलाइ वा चिल्ललगाइ वा ? हंता अत्थि। नो चेव णं ते अण्णमण्णस्स तेसिं वा मणुयाणं किंचि आबाहं वा पबाहं वा उप्पायंति छविच्छेयं वा करेंति ! पगइभद्दगा णं ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगोरुयदीवे दीवे सालीइ वा वीहीइ वा गोहुमाइ वा उक्खूइ वा जवाइ वा तिलाइ वा ? हंता अत्थि। नो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति।

अत्थि णं भंते एगोरुयदीवे दीवे गत्ताइ वा दरीइ वा पाइ वा घंसीइ वा भिगूइ वा उवाएइ वा विसमेइ वा विजलेइ वा धूलीइ वा रेणूइ वा पंकेइ वा चलणीइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। एगूरुय-दीवे णं दीवे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगूरुयदीवे दीवे खाणूइ वा कंटएइ वा हीरएइ वा सक्कराइ वा तणपत्तकयवराइ वा असुईं वा पूईआति वा दुब्भिगंधाइ वा अचोक्खाइ रा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ववगयखाणुकंटकहीर-सक्करतणकयवरअसुइपूइयदुब्भिगंधमचोक्खवज्जिए णं एगोरूयदीवे पण्णत्ते समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे दीवे दंसाइ वा मसगाइ वा पिसुगाइ वा जूवाइ वा लिक्खाइ वा ढिकुणाइ वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे। ववगयदंसमसगपिसुतजूतलिक्खढिकुणपरिवज्जिए णं एगुरुयदीवे पण्णत्ते समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे अहीइ वा अयगराइ वा महोरगाइ वा ? हंता अत्थि। नो चेव णं ते अन्नमन्नस्स तेसिं वा मणुयाणं किंचि आबाहं वा पबाहं वा छविच्छेयं वा पकरेंति। पगइभद्दगा णं ते वालगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे गहदंडाइ वा गहमुसलाइ वा गहगज्जियाइ वा गहजुद्धाइ वा गहसंघाड-गाइ वा गहअवसव्वाइ वा अब्भाइ वा अब्भरुक्खाइ वा संझाइ वा गंधव्वनगराइ वा गज्जियाइ वा विज्जुयाइ वा उक्कापायाइ वा दिसादाहाइ वा निग्घाताइ वा पंसुविट्ठीति वा जूवागाइ वा जक्खा-लित्ताइ वा धूमियाइ वा महियाइ वा रउग्घायाइ वा चंदोवरागाइ वा सूरोवरागाइ वा चंदपरिवेसाइ वा सूरपरिवेसाइ वा पडिचंदाइ वा पडिसूराइ वा इंदधणूइ वा उदगमच्छाइ वा अमोहाइ वा कवि-हसियाइ वा पाईणवायाइ वा पडीणवायाइ वा जाव सुद्धवायाइ वा गामदाहाइ वा नगरदाहाइ वा जाव सण्णिवेसदाहाइ वा पाणक्खयजणक्खयकुलक्खयधणक्खयवसणभूतमणारियाइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे।

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे दीवे डिंबाइ वा डमराइ वा कलहाइ वा बोलाइ वा खाराइ वा वेराइ वा विरुद्धरज्जाइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ववगयडिंबडमरकलहबोलखारवेरविरुद्धरज्जविवज्जिया णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे दीवे महाजुद्धाइ वा महासंगामाइ वा महासत्थपडणाइ वा महापुरिसप-डणाइ वा महारुधिरपडणाइ वा नागबाणाइ वा खेणबाणाइ वा तामसबाणाइ वा दुब्भूइयाइ वा कुलरोगाइ वा गामरोगाइ वा णगररोगाइ वा मंडलरोगाइ वा सीसवेयणाइ वा अच्छिवेयणाइ वा कण्णवेयणाइ वा नक्खवेयणाइ वा णक्कवेयणाइ वा दंतवेयणाइ वा कासाइ वा सासाइ वा सोसाइ वा जराइ वा दाहाइ वा कच्छूइ वा कुट्ठाइ वा दगोवराइ वा अरिसाइ वा अजीरगाइ वा भगंदलाइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेतव्वो जाव मणुस्साणं अणुसज्जणा, णाणत्तं—अट्ठधणुसयऊसित्ता, चोउट्ठिं पिट्ठिकरंडगा, एगूणासीतिं रातिंदियाइं अणुपालेंति, ठिती जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं ॥

२१९. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं आभासियमणुस्साणं आभासियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासधर-पव्वयस्स 'पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ दाहिणपुरत्थिमिल्लेणं'[1] लवणसमुद्दं तिण्णि जोयण-सयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं आभासियमणुस्साणं आभासियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते। सेसं जहा एगूरुयाणं[2] ॥

वा इंदग्गहाइ वा खंदग्गहाइ वा कुमारग्गहाइ वा णागग्गहाइ वा जक्खग्गहाइ वा भूयग्गहाइ वा उव्वेवग्गहाइ वा धणुग्गहाइ वा एगाहियाइ वा बेयाहियाइ वा तेयाहियाइ वा चाउत्थगाहियाइ वा हिययसूलाइ वा मत्थगसूलाइ वा पाससूलाइ वा कुच्छिसूलाइ वा जोणिसूलाइ वा गाममारीइ वा जाव सन्निवेसमारीइ वा पाणक्खय जाव वसणभूतमणायरिय वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ववगयरो-गायंका णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे दीवे अइवासाइ वा मंदवासाइ वा सुवुट्ठीय वा मंदवुट्ठीय वा उदवाहाइ वा पवाहाइ वा दगुब्भेयाइ वा दगुप्पीलाइ वा गामवाहाइ वा जाव सन्निवेसवाहाइ वा पाणक्खय जाव वसणभूतमणारियाइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे ! ववगयदगोवद्दवा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

अत्थि णं भंते ! एगुरुयदीवे अयागराइ वा तंबागराइ वा सीसागराइ वा सुवण्णागराइ वा रयणागराइ वा वइरागराइ वा वसुहाराइ वा हिरण्णवासाइ वा सुवण्णवासाइ वा रयणवासाइ वा वइरवासाइ वा आभरणवासाइ वा पत्तवासाइ वा पुप्फवासाइ वा फलवासाइ वा बीयवासाइ वा गंधवासाइ वा मल्लवासाइ वा वण्णवासाइ वा चुण्णवासाइ वा खीरवुट्ठीति वा रयणवुट्ठीति वा सुवण्णवुट्ठीति वा तहेव जाव चुण्णवुट्ठीति वा सुकालाइ वा दुक्कालाइ वा सुभिक्खाइ वा दुभिक्खाइ वा अप्पग्घाइ वा महग्घाइ वा कयाइ वा विक्कयाइ वा अण्णिहीइ वा संचयाइ वा निधीइ वा निहाणाइ वा चिरपोराणाइ वा पहीणसामियाइ वा पहीणसेउयाइ वा पहीणगोत्तागराइं जाइं इमाइं गामागरण गरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसन्निवेसेसु सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु णगरणिद्धमणसुसाणगिरिकंदरसंतिसेलोवट्ठाणभवणगिहेसु सन्निखित्ताइं चिट्ठंति ? णो इणट्ठे समट्ठे। एगुरुयदीवे णं भंते ! दीवे मणुयाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओव-मस्स असंखेज्जइभागं असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं।

ते णं भंते ! मणुया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ? गोयमा ! ते णं मणुया छम्मासावसेसाउया मिहुणयाइं पसवंति अउणासीइं राइंदियाइं मिहुणाइं सारक्खंति संगोवंति य, सारक्खित्ता २ उस्ससित्ता निस्ससित्ता कासित्ता छीतित्ता अक्किट्ठा अव्वहिया अपरियाविया सुहंसुहेणं कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, देवलोगपरिग्ग-हिया णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

१. दाहिणपुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ (क, ख, ग, ट)।
२. °याणं निरवसेसं सव्वं (क, ख, ग, ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२०. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं णंगोलियमणुस्साणं 'णंगोलियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते'[2] ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासधरपव्वयस्स 'पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ दाहिणपच्चत्थिमिल्लेणं'[3] लवणसमुद्दं तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं णंगोलियमणुस्साणं णंगोलियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते। सेसं जहा एगूरुयाणं।

२२१. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं वेसाणियमणुस्साणं वेसाणिय दीवे णामं दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासधरपव्वयस्स 'पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरपच्चत्थिमिल्लेणं'[4] लवणसमुद्दं तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं वेसाणियमणुस्साणं वेसाणियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते। सेसं जहा एगूरुयाणं ॥

२२२. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं हयकण्णमणुस्साणं हयकण्णदीवे णामं दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगूरुयदीवस्स 'पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरपुरत्थिमिल्लेणं'[5] लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं हयकण्णमणुस्साणं हयकण्णदीवे णामं दीवे पण्णत्ते—चत्तारि जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं बारस 'पण्णट्ठ जोयणसया'[6] किंचिविसेसाहिया[7] परिक्खेवेणं, सेसं[8] जहा एगूरुयाणं ॥

२२३. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं गयकण्णमणुस्साणं गयकण्णदीवे णामं दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! आभासियदीवस्स 'पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ दाहिणपुरत्थिमिल्लेणं'[9] लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं गयकण्णमणुस्साणं गयकण्णदीवे णामं दीवे पण्णत्ते। सेसं जहा हयकण्णाणं ॥

२२४. एवं गोकण्णाण वि—'णंगूलियदीवस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ दाहिणपच्चत्थिमेणं'[10] लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहिता, एत्थ णं गोकण्णमणुस्साणं गोकण्णदीवे णामं दीवे पण्णत्ते। सेसं जहा हयकण्णाणं ॥

२२५. सक्कुलिकण्णाणं—'वेसाणियदीवस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरपच्चत्थिमेणं'[11] लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं सक्कुलिकण्णमणुस्साणं सक्कुलिकण्णदीवे णामं दीवे पण्णत्ते। सेसं जहा हयकण्णाणं ॥

---

१. 'क, ख, ग, ट' आदर्शेषु 'वेसाणिय' सूत्रानन्तरं 'णंगोलिय' सूत्रं विद्यते।
२. पुच्छा (क, ख, ग, ट)। अग्रिमसूत्रेष्वपि।
३,५. उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ (क, ख, ग, ट)।
४. दाहिणपच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ (क, ख, ग, ट)।
६. जोयणसया पन्नट्ठा (क, ख, ग); पेंसट्ठी जोयणसया (ट)।
७. किंचिविसेसूणा (क, ख, ग, ट)।
८. से णं एगाए पउमवरवेइयाए अवसेसं (क, ख, ग, ट)।
९. दाहिणपुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ (क, ख, ग, ट)।
१०. वेसाणियदीवस्स दाहिणपच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ (क, ख, ग, ट)।
११. णंगोलियदीवस्स उत्तरपच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ (क, ख, ग, ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२६. एवं[1] एएणं अभिलावेणं आदंसमुहादीणं लवणसमुद्दं पंच जोयणसयाइं ओगाहित्ता, पंच जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं । आसमुहादीणं छ जोयणसयाइं । आसकण्णादीणं सत्तजोयणसयाइं । उक्कामुहादीणं अट्ठ जोयणसयाइं । घणदंताणं नव जोयणसयाइं ।

संगहणीगाहा—

पढमंमि[2] तिण्णि उ सया, सेसाण सतुत्तरा नव उ जाव ।
ओगाहण - विक्खंभं दीवाणं परिरयं वोच्छं ॥१॥

---

१. 'क, ख, ग, ट' आदर्शेषु अतो भिन्ना वाचना लभ्यते—आयंसमुहाणं पुच्छा हयकण्णदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पंच जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणिल्लाणं आयंसमुहमणुस्साणं आयंसमुहदीवे नामं दीवे पण्णत्ते पंच जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं । आसमुहाईणं छ सया । आसकण्णाईणं सत्त । उक्कामुहाईणं अट्ठ । घणदंताईणं जाव नव जोयणसयाइं ।

२. अत्र तिस्त्रो वाचना लभ्यते । तत्र वृत्तिगता वाचना मूले स्वीकृता । द्वितीया ताडपत्रीयादर्शवाचना, सा चैवम्—

एगूरुयपरिक्खेवो, नव चेव सताइं अउणापण्णाइं ।
बारस पण्णट्ठाइं, हयकण्णाणं परिक्खेओ ॥१॥
पण्णरसेक्कासीया, आदंसमुहाण परिरयो होति ।
अट्ठारस्स सत्तणउया आसमुहाणं परिक्खेवो ॥२॥
बावीसं तेराइं, परिरयो होति आसकण्णाणं ।
पणुवीस अउणतीसा, उक्कामुहाणं परिक्खेवो ॥३॥
दो च्चेव सहस्साइं, अट्ठेव सता हवंति पणताला ।
घणदंतदीवस्स तु, विसेसाधिओ परिक्खेओ ॥४॥
अट्ठसया चोवट्ठा, संखातीता य पलियभागा तु ।
उच्चत्तं पिट्ठकरंडगा या आउं च सव्वेसिं ॥५॥
पढमंमि तिण्णि तु सता, सेसाण च उत्तरं णव उ जाव ।
ओगाहण विक्खंभं, दीवाणं परिरयं वोच्छं ॥६॥
पढमचउक्कस्स परिरयो, वि ततचउक्कस्स परिरयो अहितो ।
सोलेहिं तिहिं जोयण सतेहिं एमेव सेसाणं ॥७॥

तृतीया शेषादर्शवाचना विद्यते—

एगुरुयपरिक्खेवो, नव चेव सयाइं अउणपन्नाइं ।
बारस पन्नट्ठाइं, हयकण्णाणं परिक्खेवो ॥१॥

आयंसमुहाईणं पन्नरसेकासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं । एवं एतेणं कमेणं उव्वज्जिय २ णेयव्वा । चत्तारि २ एगप्पमाणा णाणत्तं ओगाहे विक्खंभे परिक्खेवे । पढम बितिय ततिय चउक्काणं ओगहो विक्खंभो परिक्खेवो य भणिओ चउत्थे चउक्के छ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं अट्ठार सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणं । पंचमचउक्के सत्त जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं बावीसं तेरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं । छट्ठचउक्के अट्ठ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पणवीसं अगुणत्तीसे जोयणसते परिक्खेवेणं । सत्तमचउक्के णव जोयणसयाइं आयाम-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमचउक्कपरिरया, बिइयचउक्कस्स परिरओ अहिओ ।
सोलेहि तिहिं उ जोयणएहिं एमेव सेसाण ॥२॥
एगोरुय परिक्खेवो, नव चेव सयाइ अउणपण्णाइं ।
बारस पण्णट्ठाइं, हयकण्णाणं परिक्खेवो ॥३॥
पण्णरसेक्कासीया, आयंसमुहाणं परिरओ होइ ।
अट्ठारस सत्तणउया, आसमुहाणं परिक्खेवो ॥४॥
बावीसं तेराइं, परिक्खेवो होइ आसकण्णाणं ।
पणुवीस अउणतीसा, उक्कामुहपरिरओ होइ ॥५॥
दो चेव सहस्साइं, अट्ठेव सया हवंति पणयाला ।
घणदंतद्दीवाणं, विसेसमहिओ परिक्खेवो ॥६॥

२२७. कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे णामं दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं सिहरिस्स वासधरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ 'लवणसमुद्दं तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं उत्तरिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे णामं दीवे पण्णत्ते । तहेव[2] उत्तरेण विभासा भाणितव्वा । से तं अंतरदीवगा"[3] ॥

२२८. से[3] किं तं अकम्मभूमगमणुस्सा ? अकम्मभूमगमणुस्सा तीसविधा पण्णत्ता, तं जहा—पंचहिं हेमवएहिं °पंचहिं हिरण्णवएहिं पंचहिं हरिवासेहिं पंचहिं रम्मगवासेहिं पंचहिं देवकुरूहिं° पंचहिं उत्तरकुरूहिं । सेत्तं अकम्मभूमगा ॥

२२९. से किं तं कम्मभूमगा ? कम्मभूमगा पण्णरसविधा पण्णत्ता, तं जहा—पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरवएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं । ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—आरिया[5] मिलेच्छा । एवं जहा पण्णवणापदे जाव[6] सेत्तं आरिया । सेत्तं गब्भवक्कंतिया । सेत्तं मणुस्सा ॥

विक्खंभेणं दो जोयणसहस्साइं अट्ठपण्णत्ताले जोयणसए परिक्खेवेणं ।
जस्स य जो विक्खंभो, ओगाहो तस्स तत्तिओ चेव ।
पढम पीयाण परिरतो ऊणो सेसाण अहिओ ॥१॥
सेसा जहा एगुरुयदीवस्स जाव सुद्धदंतदीवे । देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ।

१. जी० ३।२१८-२२६ ।

२. एवं जहा दाहिणिल्लाणं तहा उत्तरिल्लाणं भाणितव्वं णवरं सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स विदिसासु एवं जाव सुद्धदंतदीवेत्ति जाव सेत्तं अंतरदीवगा (क, ख, ग, ट) ; तहेव सिहरिपव्वतसमं णेयव्वा उत्तरेणं विभासा भाणितव्वा (ता) ।

३. २२८, २२९ सूत्रयोः स्थाने ताडपत्रीयादर्शे भिन्ना वाचना दृश्यते—से किं तं अकम्मभू २ तीसतिविधा पं । कम्म भू पण्णरसविधा ते समासतो दुविधा आरिगा मिल जहा पण्णवणाए पदो जाव अहक्खातचरिय सेत्तं मणुस्सं ।

४. सं० पा०—एवं जहा पण्णवणापदे जाव पंचहिं ।

५ आयरिया (क,ट) ।

६. पण्ण० १।८८-१२९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवाधिकारो

२३० से[1] किं तं देवा ? देवा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया ।।

२३१. से किं तं भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता । 'जहा पण्णवणापदे देवाणं भेदो तहा भाणियव्वो जाव सव्वट्ठसिद्धगा'[2] ।।

२३२. कहि णं भंते ! भवणवासिदेवाणं भवणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! भवणवासी देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स-बाहल्लाए, एवं जहा पण्णवणाए जाव[3] भवणा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एत्थ णं भवणवासीणं देवाणं सत्त भवणकोडीओ बावत्तरिं भवणावाससयसहस्सा भवंतित्ति-मक्खाता[4] । तत्थ णं बहवे भवणवासी देवा परिवसंति—असुरा नाग सुवण्णा य जहा पण्णवणाए जाव[5] विहरंति ।।

२३३. कहि णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं भवणा पण्णत्ता ? पुच्छा । एवं जहा पण्णवणाठाणपदे जाव[6] विहरंति ।।

२३४. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाणं भवणा पुच्छा । एवं जहा ठाणपदे जाव चमरे, एत्थ[7] असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसति जाव[8] विहरति[9] ।।

२३५. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो[10] कति परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिता चंडा जाया । अब्भि-तरिया समिता, मज्झिमिया[11] चंडा, बाहिरिया जाया ।।

२३६. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कति 'देवसाहस्सीओ पण्णत्तओ'[12] ? मज्झिमियाए परिसाए कति देवसाहस्सीओ पण्ण-त्ताओ ? बाहिरियाए परिसाए कति देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए चउवीसं देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए अट्ठावीसं देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए बत्तीसं देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।।

---

१. २३०, २३१ सूत्रयोः स्थाने ताडपत्रीयादर्शे एवं पाठभेदोस्ति—से किं तं देवा चतुव्विधा तं भवण प्क जधा पण्णवणा पदे देवभेदो जाव सव्वट्ठसिद्धो ।

२. तं जहा असुरकुमार जहा पण्णवणापदे देवाणं भेदो तहा भाणितव्वो जाव अणुत्तरोववाइया पंचविधा पण्णत्ता, तं जहा विजयवेजयंत जाव सव्वट्ठसिद्धगा । सेत्तं अणुत्तरोववाइया (क, ख, ग, ट) ।

३. पण्ण० २।३० ।

४. भवंति भवणवण्णतो जहा ठाणपदे जाव (ता) ।

५. पण्ण० २।३० ।

६. पण्ण० २।३१ ।

७. तत्थ (क, ख, ग, ट); यत्थ (ता) ।

८. पण्ण० २।३२ ।

९. महताहतण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति । उववात समुग्घात संठाणा य भाणि-तव्वा (ता) ।

१०. असुररण्णो (क, ख, ट, ता) ।

११. मज्झे (क, ख, ग) ।

१२. देवसहस्सा पण्णत्ता (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३७. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कति देविसया पण्णत्ता ? मज्झिमियाए परिसाए कति देविसया पण्णत्ता ? वाहिरियाए परिसाए कति देविसया पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए अद्धुट्ठा[1] देविसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए तिण्णि देविसया पण्णत्ता, वाहिरियाए अड्ढाइज्जा[2] देविसया पण्णत्ता ।।

२३८. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? मज्झिमियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? बाहिरियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? अब्भितरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? मज्झिमियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? वाहिरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाणं दो पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, वाहिरियाए परिसाए देवाणं दिवड्ढं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीणं दिवड्ढं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीणं पलिओवमं ठिती पणणत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीणं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता[3] ।।

२३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिया चंडा जाया । अब्भितरिया समिया मज्झिमिया चंडा बाहिरिया जाया ? गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अब्भितरपरिसा देवा वाहिता हव्वमागच्छंति, णो अव्वाहिता । मज्झिमपरिसा देवा वाहिता हव्वमागच्छंति, अव्वाहितावि । बाहिरपरिसा देवा अव्वाहिता हव्वमागच्छंति । अदुत्तरं च णं गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया अण्णयरेसु उच्चावएसु कज्ज-कोडुंबेसु समुप्पन्नेसु अब्भितरियाए परिसाए सद्धि सम्मुइ-संपुच्छणाबहुले विहरइ, मज्झिमियाए परिसाए सद्धिं[4] पयं पवंचेमाणे-पवंचेमाणे विहरति, बाहिरियाए परिसाए सद्धि पयं पचंडेमाणे-पचंडेमाणे विहरति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—चमरस्स णं असुरिंदस्स

१. अड्ढाइज्जा (त्रि, मवृ) ।

२. अद्धुट्ठा (त्रि, मवृ) । मलयगिरिवृत्तौ 'अर्ध-तृतीयानि त्रीणि अर्धचतुर्थानि' अनेन क्रमेण व्याख्यातमस्ति । हस्तलिखितवृत्तेः त्रिपाठ्यां प्रतावपिवृत्त्यनुसारी पाठः उपलब्धः । किन्तु मलयगिरिवृत्तौ द्वये सङ्ग्रहणीगाथे उद्धृते स्तः, तत्रापि स्वीकृतपाठस्य संवादित्वं लभ्यते—
चउवीसा अट्ठवीसा बत्तीससहस्स देवचमरस्स ।
अद्धुट्ठातिण्णि तहा अड्ढाइज्जा य देविसया ॥१॥
प्रस्तुताधिकारस्य २४२ सूत्रेपि 'अद्धपंचमा चत्तारि अद्धुट्ठा' एष क्रमो विद्यते, अनेनापि स्वीकृतपाठस्य पुष्टिर्जायते । भगवती (वृत्ति पत्र २०२) वृत्तौ असुरेन्द्रस्य देवीशतानि स्वीकृतपाठक्रमेण उपलभ्यते—तथा देवीशतानि क्रमेणाध्युष्टानि त्रीणि सार्द्धे च द्वे इति ।

३. इह भूयान् वाचनाभेद इति यथाऽवस्थितसूत्रे पाठनिर्णयार्थे सुगममपि सूत्रमक्षरसंस्कारमात्रेण विव्रियते (मवृ) ।

४. सद्धं (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ—समिया चंडा जाया। अब्भितरिया समिया, मज्झिमिया चंडा, बाहिरिया जाया ॥

२४०. कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं भवणा पण्णत्ता ? जहा ठाणपदे जाव बली, एत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसति जाव[1] विहरति ॥

२४१. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो कति परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिया चंडा जाया। अब्भितरिया समिया, मज्झिमिया चंडा, बाहिरिया जाया ॥

२४२. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो अब्भितरियाए परिसाए कति देवसहस्सा पण्णत्ता ? मज्झिमियाए परिसाए कति देवसहस्सा पण्णत्ता जाव बाहिरियाए परिसाए कति देविसया पण्णत्ता ? गोयमा ! बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो अब्भितरियाए परिसाए वीसं देवसहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए चउवीसं देवसहस्सा पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अट्ठावीसं देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए अद्धपंचमा देविसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए चत्तारि देविसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अद्धट्ठा देविसया पण्णत्ता ॥

२४३. बलिस्स ठितीए पुच्छा जाव बाहिरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं अद्धट्ठ पलिओवमा ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीणं अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीणं दो पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीणं दिवड्ढं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता। सेसं जहा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो ॥

२४४. कहि णं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं भवणा पण्णत्ता ? जहा ठाणपदे जाव दाहिणिल्लावि पुच्छियव्वा जाव धरणे, इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति जाव[2] विहरति ॥

२४५. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कति परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ, ताओ चेव जहा चमरस्स ॥

२४६. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कति देवसहस्सा पण्णत्ता जाव बाहिरियाए परिसाए कति देवीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए सट्ठिं देवसहस्साइं, मज्झिमियाए परिसाए सत्तरिं देवसहस्साइं, बाहिरियाए असीतिदेवसहस्साइं, अब्भितरियाए परिसाए पण्णत्तरं देविसतं पण्णत्तं, मज्झिमियाए परिसाए पण्णासं देविसतं पण्णत्तं, बाहिरियाए परिसाए पणवीसं देविसतं पण्णत्तं ॥

२४७. धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? मज्झिमियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता?

---

१. पण्ण० २।३३।   २. पण्ण० २।३४,३५।

बाहिरियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? अब्भितरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? मज्झिमियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? बाहिरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं सातिरेगं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाणं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं देसूणं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीणं देसूणं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीणं सातिरेगं चउब्भागपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीणं चउभागपलिओवमं ठिती पण्णत्ता। अट्ठो जहा चमरस्स॥

२४८. कहि णं भंते! उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं भवणा पण्णत्ता? जहा ठाणपदे जाव[1] विहरति॥

२४९. भूयाणंदस्स णं भंते! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कति देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ? मज्झिमियाए परिसाए कति देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ? बाहिरियाए परिसाए कति देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ? अब्भितरियाए परिसाए कति देविसया पण्णत्ता? मज्झिमियाए परिसाए कति देविसया पण्णत्ता? बाहिरियाए परिसाए कति देविसया पण्णत्ता? गोयमा! भूयाणंदस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए पन्नासं देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए सट्ठि देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए सत्तरि देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, अब्भितरियाए परिसाए 'दो पणवीसं देविसया'[2] पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए दो देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए पण्णत्तरं देविसयं पण्णत्तं॥

२५०. भूयाणंदस्स णं भंते! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता जाव बाहिरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! भूताणंदस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं देसूणं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाणं साइरेगं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीणं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीणं देसूणं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीणं साइरेगं चउब्भागपलिओवमं ठिती पण्णत्ता। अत्थो जहा चमरस्स। अवसेसाणं वेणुदेवादीणं महाघोसपज्जवसाणाणं ठाणपदवत्तव्वया णिरवयवा[3] भाणियव्वा[4], परिसाओ जहा धरण-भूताणंदाणं—दाहिणिल्लाणं जहा[5] धरणस्स उत्तरिल्लाणं जहा[6] भूताणंदस्स। परिमाणंपि ठितीवि॥

२५१. कहि णं भंते! वाणमंतराणं देवाणं 'भोमेज्जा णगरा'[7] पण्णत्ता? जहा ठाण-

१. पण्ण० २।३६।
२. पणुवीसा दो देविसता (ता)।
३. × (मवृ)।
४. पण्ण० २।३७-४०।
५. जी० ३।२४६,२४७।
६. जी० ३।२४८,२४९।
७. भवणा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पदे जाव[1] विहरंति ।।

२५२. कहि णं भंते ! पिसायाणं देवाणं भोमेज्जा णगरा पण्णत्ता ? जहा ठाणपदे जाव विहरंति, कालमहाकाला य तत्थ दुवे पिसायकुमाररायाणो परिवसंति जाव[2] विहरंति ।।

२५३. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं पिसायकुमाराणं जाव विहरंति, काले य एत्थ पिसायकुमारिंदे पिसायकुमारराया परिवसति महिड्ढिए जाव[3] विहरति ।।

२५४. कालस्स णं भंते ! पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो कति परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—ईसा तुडिया दढरहा । अब्भितरिया ईसा, मज्झिमिया तुडिया, बाहिरिया दढरहा ।।

२५५. कालस्स णं भंते ! पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो अब्भितरपरिसाए कति देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ जाव बाहिरियाए परिसाए कति देविसया पण्णत्ता ? गोयमा ! कालस्स णं पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो[4] अब्भितरियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, अब्भितरियाए परिसाए एगं देविसतं पण्णत्तं, 'एवं तिसुवि'[5] ।।

२५६. कालस्स णं भंते ! पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? मज्झिमियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? बाहिरियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता जाव बाहिरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! कालस्स णं पिसाय-कुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाणं देसूणं अद्धपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं सातिरेगं चउब्भागपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, अब्भंतरियाए परिसाए देवीणं सातिरेगं चउब्भागपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीणं चउब्भागपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीणं देसूणं चउब्भागपलिओवमं ठिती पण्णत्ता, 'अट्ठो जो चेव चमरस्स । एवं उत्तरिल्लस्सवि, एवं णिरंतरं जाव[6] गीयज-सस्स'[7] ।।

२५७. कहि णं भंते ! जोतिसियाणं देवाणं विमाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! जोतिसिया देवा परिवसंति ? गोयमा ! उप्पिं दीवसमुद्दाणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउए जोयणसते उड्ढं उप्पतित्ता दसुत्तरजोयणसय-

---

१. पण्ण० २।४१ ।
२. पण्ण० २।४२ ।
३. पण्ण० २।४३ ।
४. °कुमाररायस्स (ट) ।
५. मज्झिमियाए परिसाए एगं देविसतं पण्णत्तं बाहिरियाए परिसाए एगं देविसतं पण्णत्तं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
६. पण्ण. २।४५।
७. एवं सोलसण्हवि वंतरिंदाणं (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाहल्ले[1], एत्थ णं जोतिसियाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा जोतिसियविमाणावाससतसहस्सा भवंतीतिमक्खायं। ते णं विमाणा अद्धकविट्ठकसंठाणसंठिया एवं जहा ठाणपदे जाव चंदिम-सूरिया य, एत्थ णं जोतिसिंदा जोतिसरायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव[2] विहरंति ॥

२५८. चंदस्स[3] णं भंते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तुंबा तुडिया पव्वा। अब्भितरिया तुंबा, मज्झिमिया तुडिया, बाहिरिया पव्वा। सेसं जहा कालस्स परिमाणं, ठितीवि। अट्ठो जहा चमरस्स। एवं सूरस्स वि ॥

दीवसमुद्दवत्तव्वयाधिकारो

२५९. कहि णं भंते ! दीवसमुद्दा ? केवइया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? केमहालया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? किंसंठिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? किमाकारभावपडोयारा णं भंते ! दीवसमुद्दा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवाइया दीवा लवणादीया समुद्दा संठाणओ एकविधि-विधाणा वित्थरतो[4] अणेगविधिविधाणा दुगुणादुगुणे पडुप्पाएमाणा-पडुप्पाएमाणा पवित्थर-माणा-पवित्थरमाणा ओभासमाणवीचीया बहुउप्पल-पउम-कुमुद-णलिण-सुभग-सोगंधिय-'पोंडरीय-महापोंडरीय'[5]-सतपत्त-सहस्सपत्त-पप्फुल्लकेसरोवचिता पत्तेयं-पत्तेयं पउमवर-वेइयापरिक्खित्ता पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ता सयंभुरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा[6] पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

२६०. तत्थ णं अयं जंबुद्दीवे णामं दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतरए[7] सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिते, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिते, वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाण-संठिते, वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिते, एक्कं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस य सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसते तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलकं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

---

१. दसुत्तरे जोयणसए बाहल्लेणं (क); दसुत्तरसए जोयणबाहल्लेणं (ग); दसुत्तरं जोयणसयं बाहल्लेणं (ट); दसुत्तरसए जोयणसए (त्रि)।

२. पण्ण० २।४८।

३. 'ता' प्रतौ पूर्वं चन्द्रमसः पर्षन्निरूपकं सूत्रमस्ति, तदनन्तरं च सूर्यस्य, यथा—चंदस्स णं भंते ! पुच्छा गो तत्तो पं तं तुंबा तुडिता पव्वा, अब्भितरिया तुंबा, एवं एताओ वि णेतव्वाओ सेसं तहेव देविपमाणं ठिती य जधा बंतरिंदाणं। एवं सूरस्स वि। एष एव क्रमः अस्माभिरादृतः। स्थानाङ्गे ३।१५५,१५७ सूत्रयोरयमेव क्रमो दृश्यते ! 'ता' प्रतेः पाठभेदो निर्दिष्ट एव शेषादर्शेषु प्रस्तुतक्रमस्य व्यत्ययोस्ति—सूरस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ-परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तुंबा तुडिया पेच्चा, अब्भितरिया तुंबा, मज्झिमिया तुडिया, बाहिरिया पेच्चा। सेसं जहा कालस्स, अट्ठो जह चमरस्स। चंदस्सपि एवं चेव। मलयगिरि-वृत्तौ आदर्शलब्ध एव पाठः उद्धृतोस्ति।

४. वित्थारओ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. अरविंद कोवणत (ता)।

६. अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा सयंभुरमणपज्जवसाणा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

७. अब्भितरिए (क, ख, त्रि); अब्भितरए (ग); अब्भंतरए (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से णं एक्काए जगतीए सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते ॥

२६१. सा णं जगती अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले वारस जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, उप्पिं[1] चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले विच्छिण्णा[2] मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिता सव्ववइरामई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरिया[3] सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

२६२. सा णं जगती एक्केणं जालकडएणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता । से णं जाल-कडए अद्धजोयणं उड्ढ उच्चत्तेणं, पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं, सव्वरयणामए अच्छे सण्हे जाव[4] पडिरूवे ॥

२६३. तीसे णं जगतीए उप्पिं वहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महई एगा पउमवरवेदिया[5] पण्णत्ता, सा णं पउमवरवेदिया अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं[6], जगतीसमिया परिक्खेवेणं 'सव्वरयणामई अच्छा जाव पडिरूवा'[7] ॥

२६४. तीसे णं पउमवरवेइयाए अयमेयारूवे[8] वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरा-मया नेमा[9] रिट्ठामया पइट्ठाणा वेरुलियामया खंभा सुवण्णरुप्पामया[10] फलगा 'लोहितक्ख-मईओ सूईओ वइरामया संधी'[11] नाणामणिमया कलेवरा[12] नाणामणिमया[13] कलेवरसंघाडा णाणामणिमया रूवा नाणामणिमया रूवसंघाडा अंकामया पक्खा पक्खबाहाओ जोतिरसा-मया वंसा वंसकवेल्लुया रययामईओ पट्टियाओ जातरूवमईओ ओहाडणीओ वइरामईओ उवरिपुंछणीओ सव्वसेयरययामए छादणे ॥

२६५. सा णं पउमवरवेइया एगमेगेणं हेमजालेणं 'एगमेगेणं गवक्खजालेणं एगमेगेणं खिंखिणिजालेणं एगमेगेणं घंटाजालेणं एगमेगेणं मुत्ताजालेणं एगमेगेणं मणिजालेणं एगमेगेणं कणगजालेणं एगमेगेणं रयणजालेणं एगमेगेणं पउमजालेणं'[14] सव्वतो समंता संपरि-क्खित्ता ।[15]

ते णं जाला[16] तवणिज्जलंबूसगा[17] सुवण्णपयरगमंडिया[18] णाणामणिरयणविविहहारद्ध-

---

१. उप्पं (ता) ।
२. विथिण्णा (ता) ।
३. सस्सिरीया (क, ग); सस्सिरिया (ट, ता) ।
४. जी. ३।२६१।
५. पयुमवरवेइया (ता) ।
६. विक्खंभेणं सव्वरयणामई (क ख,ग,ट,त्रि) ।
७. × (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
८. इमे एतारूवे (ता) ।
९. णेम्मा (क, ख, ग, ट, ता) ।
१०. °रुप्पमया (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
११. वइरामया संधी लोहितक्खमइओ सूईआ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
१२. कडेवरा (क, ख,); कणे° (ता) ।
१३. × (क, ख, ग, ट, ता, त्रि) ।
१४. एगमेगेणं खिंखिणिजालेणं एवं घंटाजालेणं जाव मणिजालेणं एगमेगेणं पउमवरजालेणं, सव्वरयणामएणं (क, ख, ग, ट, त्रि); एगमेगेणं गवक्खजालेणं एएणं अभिलावेणं खिंखिणि जा घंटा जा रयत जा जातरूव जा मणि जा मुत्ता जा रतण जा सव्वरयण जा एगमेगेणं पयुमवरजालेणं (ता) ।
१५. परिक्खित्ता (मवृ) ।
१६. दामा (मवृपा) ।
१७. °लंबूसा (ता) ।
१८. °पतरामंडिया (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हारउवसोभितसमुदया ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता पुव्वावरदाहिणुत्तरागतेहिं वाएहिं मंदायं-मंदायं[1] एज्जमाणा[2]-एज्जमाणा पलंबमाणा[3]-पलंबमाणा पझंझमाणा[4]-पझंझमाणा तेणं ओरालेणं मणुण्णेणं मणोहरेणं[5] कण्णमणणेव्वुतिकरेणं सद्देणं सव्वतो समंता आपूरेमाणा-आपूरेमाणा सिरीए अतीव[6] उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

२६६. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे हयसंघाडा गयसंघाडा नरसंघाडा किण्णरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा[7] सव्वरयणामया 'अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा'[8] ॥

२६७. तीसे[9] णं पउमवरवेइयाए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे हयपंतीओ तहेव जाव पडिरूवाओ। एवं हयवीहीओ जाव पडिरूवाओ। एवं हयमिहुणाइं जाव पडिरूवाइं ॥

२६८. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे पउमलयाओ नाग-लयाओ, एवं असोग-चंपग-चूय[10]-वण-वासंतिय-अतिमुत्तग-कुंद-सामलयाओ णिच्चं[11] कुसुमियाओ णिच्चं माइयाओ[12] णिच्चं लवइयाओ णिच्चं थवइयाओ णिच्चं गुलइयाओ[13] णिच्चं गोच्छियाओ णिच्चं जमलियाओ णिच्चं जुवलियाओ णिच्चं विणमियाओ णिच्चं पणमियाओ णिच्चं सुविभत्त-पिंडि[14]-मंजरि-वडेंसगधरीओ णिच्चं कुसुमिय-माइय[15]-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय- जमलिय- जुवलिय- विणमिय - पणमिय - सुविभत्त-पिंडि[16]-मंजरि-वडेंसगधरीओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ[17] ॥

---

१. अतोग्रे 'क, ख, ट' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति —एतिया वेतिया कंपिता खोभिया चालिया फंदिया घट्टिया उदीरिया एतेसिं उरालेणं।

२. एईज्जमाणा (ता)।

३. कंपिज्जमाणा २ लंबमाणा (ग, त्रि)।

४. झंझमाणा २ सद्दायमाणा २ (ग); पयंपमाणा २ पवित्थरमाणा (ता); पझंझमाणा २ सद्दायमाणा २ (त्रि)।

५. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।

६. अतीव २ (ता)।

७. वसह° (त्रि)।

८. अच्छा जाव पडिरूवा (ता, मवृ)।

९. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'ता' प्रतौ मलयगिरिवृत्तौ च पाठसंक्षेपोस्ति—एवं पंतीओ वि विधीओ वि मिधुणा वि।

१०. × (मवृ); उत्तरकुरुप्रकरणे (पत्र २६४) मलयगिरिणा 'चूत' इति पदं स्वीकृतमस्ति।

११. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु पाठसंक्षेप एव-मस्ति—निच्चं कुसुमियाओ जाव सुविभत्त-पिंडिमंजरिवडिंसगधरीओ।

१२. मउलियाओ (मवृ)।

१३. 'गुम्मियाओ' इति गुल्मिताः (मवृ)।

१४. पेंडि° (ता); मलयगिरिणा 'पडि' इति पदं व्याख्यातम्—प्रतिविशिष्टो मञ्जरीरूपो योवतंसकस्तद्धराः। रायपसेणइयवृत्तावपि (पृ. १५) एतदेव व्याख्यातमस्ति। औपपातिकवृत्तौ (पृ. १४) अभयदेवसूरिणा पिण्ड्यो लुम्ब्यः इति व्याख्यातम्।

१५. मउलिय (मवृ)।

१६. पडि (मवृ)।

१७. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एकं अतिरिक्तं सूत्रं विद्यते—तीसे णं पउमवरवेइ-याए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे अक्खय-सोत्थिया पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पउमवरवेइया-पउमवरवेइया ? गोयमा ! पउमवरवेइयाए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं वेदियासु वेदियावाहासु[1] वेदियापुंडतरेसु खंभेसु खंभवाहासु खंभसीसेसु खंभपुंडतरेसु सूईसु सुईमुहेसु सूईफलएसु सुईपुडंतरेसु पक्खेसु पक्खबाहासु पक्खपेरंतेसु[2] बहूइं उप्पलाइं पउमाइं जाव सहस्सपत्ताइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं सण्हाइं लण्हाइं घट्ठाइं मट्ठाइं णीरयाइं णिम्मलाइं निप्पंकाइं निक्कंकडच्छायाइं सप्पभाइं समिरीयाइं सउज्जोयाइं पासादीयाइं दरिसणिज्जाइं अभिरूवाइं पडिरूवाइं महता वासिक्कच्छत्तसमाणाइं[3] पण्णत्ताइं समणाउसो ! से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पउमवरवेदिया-पउमवरवेदिया[4] ।।

२७०. पउमवरवेइया णं भंते ! किं सासया ? असासया ? गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया ।।

२७१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासया ? सिय असासया ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय सासया, सिय असासया ।।

२७२ पउमवरवेइया णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होति ? गोयमा ! ण कयावि णासि ण कयावि णत्थि ण कयावि न भविस्सति । भुविं च भवति य भविस्सति य धुवा नियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा पउमवरवेदिया ।।

२७३. तीसे णं जगतीए उप्पिं 'पउमवरवेइयाए बाहिं,'[5] एत्थ णं महेगे[6] वणसंडे पण्णत्ते—देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं, जगतीसमए परिक्खेवेणं, किण्हे किण्होभासे[7] नीले नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धोभासे तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीयच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए घणकडियकडच्छाए[8] रम्मे महामेहनिकुरंबभूए ।।

रायपसेणइय १६६ सूत्रानन्तरमपि एतद् नास्ति ।

१. °बाहासु वेदियासीसफलएसु (क, ख, ग, ट, त्रि); तथा रायपसेणइय (१६७) सूत्रे 'वेइय-फलएसु' इति पाठोस्ति ।

२. एतत्पदं मलयगिरिवृत्तौ व्याख्यातं नास्ति । रायपसेणइय (१६७) सूत्रे अतः परं 'पक्खपु-डंतरेसु' इत्यपि पाठो विद्यते ।

३. °च्छत्तसमयाइं (क, ख, ग, त्रि); °छत्तसामा-णाइं (ट, ता) ।

४. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु अतिरिक्तः पाठो लभ्यते—अदुत्तरं च गोयमा ! पउमवरवेइ-याए सासते नामधेज्जे पण्णत्ते । जं न कयावि णासि जाव निच्चे ।

५. बाहिं पउमवरवेइयाए (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

६. एगं महं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

७. अतः परवर्ती २७६ सूत्रपर्यन्तः पाठः 'ता' प्रति मलयगिरिवृत्ति च उपजीव्य स्वीकृतः । शेषेषु प्रयुक्तादर्शेषु 'जाव' पदसमर्पितः संक्षिप्त-पाठोस्ति, सोपि च नैव सङ्गतो दृश्यते । स चैवम्—जाव अणेगसगडरहजाणजुग्गपरिमोयणे सुरम्मे पासातीए सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे नीरए निप्पंके निम्मले निक्कंकडच्छाए सप्पभे समि-रीए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

८. घणकडितडच्छाए (क, ख, ग, ट, त्रि); मलयगिरिवृत्तौ 'घणकडितडच्छाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति । 'घणकडियकडच्छाए' इति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७४. ते णं पायवा मूलमंतो[2] कंदमंतो खंधमंतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमंतो फलमंतो बीयमंतो अणुपुव्व-सुजाय-रुइल-वट्टभावपरिणया एक्कखंधी[3] अणेगसाह-प्पसाह-विडिमा अणेगनरवाम-सुप्पसारिय-अगेज्झ-घण-विउल-वद्ध [वट्ट ?][4] खंधा अच्छिद्दपत्ता[5] अविरलपत्ता अवाईणपत्ता अणईइपत्ता[6] निद्धूय-जरढ-पंडुपत्ता णवहरिय-भिसंत-पत्तभारंधयार - गंभीरदरिसणिज्जा उवविणिग्गय-णव-तरुण-पत्त-पल्लव-कोमलउज्जलचलंतकिसलय-सुमालपवाल-सोहियवरंकुरग्गसिहरा णिच्चं कुसुमिया णिच्चं माइया णिच्चं लवइया णिच्चं थवइया णिच्चं गुलइया णिच्चं गोच्छिया णिच्चं जमलिया णिच्चं जुवलिया णिच्चं विणमिया णिच्चं पणमिया णिच्चं सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरा णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय- विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरा ॥

२७५. सुय-वरहिण-मयणसाल-कोइल-कोरक[7]-भिंगारग-कोंडलग- जीवंजीवग-नंदीमुह-कविल-पिंगलक्ख-कारंडक[8]-चक्कवाय-कलहंस-सारस-अणेगसउणगणमिहुणविरइयसद्दुण्णइय-महुरसरणाइया सुरम्मा संपिंडियदरियभमरमहुयरिपहकर-परिलितमत्तछप्पयकुसुमासवलोल-महुरगुमगुमंत-गुंजंतदेसभागा अब्भितरपुप्फफला बाहिरपत्तच्छण्णा[9] पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छन्न-पलिच्छन्ना 'निरोया अकंटया साउफला'[10] निद्धफला णाणाविहगुच्छ-गुम्म-मंडवग-सोहिया विचित्तसुहकेउबहुला वावी-पुक्खरिणी-दीहियासु य सुनिवेसियरम्मजालघरगा ॥

२७६. पिंडिम-णीहारिमं सुगंधिं सुह-सुरभिमणहरं च महया गंधद्धणिं मुयंता सुहसेउकेउबहुला 'अणेगसगड-रह'[11]-जाण-जुग्ग-सीया-संदमाणियपडिमोयणा सुरम्मा पासा-

---

पाठान्तररूपेणास्ति व्याख्यातः—इह शरीरस्य मध्यभागे कटिस्ततोऽन्यस्यापि मध्यभागः कटिरिव कटिरित्युच्यते, कटिस्तटमिव कटितटं घना अन्यान्य शाखानुप्रवेशतो निविडा कटितटे—मध्यभागे छाया यस्य स घनकटितटच्छायः, मध्यभागे निबिडतरच्छाय इत्यर्थः, क्वचित्पाठः 'घनवडियकडच्छाए' इति, तत्रायमर्थः—कटः सञ्जातोऽस्येति कटितः कटान्तरेणोपरि आवृत इत्यर्थः कटितश्चासौकटश्च कटितकटः घना—निबिडा कटितकटस्येवाधोभूमौ छाया यस्य स घनकटितकटच्छायः। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शांतिचन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २८) हीरविजयवृत्तौ (पत्र १२) चापि उक्तपाठद्वयमपि व्याख्यातं दृश्यते।

१. द्रष्टव्यं औपपातिकस्य पञ्चमसूत्रस्य पादटिप्पणम्।

२. मूलवंतो (ता)।

३. एग खंधी अणेगसाला (ता)।

४. मलयगिरिवृत्तौ 'वृत्तस्कन्धाः' तथा रायपसेणइयवृत्तावपि (पृ० १३) 'वृत्तस्कन्धाः' इत्येव व्याख्यातमस्ति किन्तु औपपातिकवृत्तौ 'बद्धः स्कन्धः' इति विवृतमस्ति। 'ता' प्रतावपि तथैव पाठोऽस्ति। द्रष्टव्यं औपपातिकस्य पञ्चमसूत्रस्य पादटिप्पणम्।

५. अतः पूर्वं 'ता' प्रतौ अयं पाठोऽस्ति—ते णं साला पाईणपडिणआयता उदीणदाहिण-वित्थिण्णा उण्णतणतं विप्पहाइयतोलंबपलंबलं-बसाहप्पसाहविडिमा।

६. × (ता)।

७. कोरंग (ता)।

८. 'कारण्डः कारण्डवः' एतौ द्वावपि समानार्थकौ स्तः।

९. °पत्तोच्छण्णा (ता)।

१०. साउफला अकंडगा (ता)।

११. अणेगरह (मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

२७७. तस्स णं वणसंडस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहानामए—आलिंगपुक्खरेति वा मुइंगपुक्खरेति वा सरतलेति वा करतलेति वा 'चंदमंडलेति वा सूरमंडलेति वा आयंसमंडलेति वा'[1] उरब्भचम्मेति वा उसभचम्मेति वा वराहचम्मेति वा सीहचम्मेति वा वग्घचम्मेति वा विगचम्मेति वा दीवियचम्मेति वा अणेगसंकुकीलगसहस्स-वितते आवड-पच्चावड-सेढी-पसेढी[2]-सोत्थिय-सोवत्थिय-पूसमाण-वद्धमाणग-मच्छंडक-'मकरंडक-जारमार'[3] फुल्लावलि-पउमपत्त-सागरतरंग - वासंतिलय - पउमलयभत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं समिरीएहिं सउज्जोएहिं नाणाविहपंचवण्णेहिं 'मणीहि य तणेहि य'[4] उवसोहिए, तं जहा—किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥

२७८. तत्थ णं जेते किण्हामणी य तणा य, तेसि णं इमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए—जीमूतेति वा अंजणेति वा खंजणेति वा 'कज्जलेति वा मसीति वा मसी-गुलियाति'[5] वा गवलेति वा गवलगुलियाति वा भमरेति वा भमरावलियाति वा भमर-पतंगयसारेति[6] वा जंबूफलेति वा अद्दारिट्ठेति वा परपुट्ठेति वा गएति वा गयकलभेति वा कण्हसप्पेइ वा कण्हकेसरेइ वा आगासथिग्गलेति वा कण्हासोएति वा किण्हकणवीरेइ[7] वा कण्हबंधुजीवेति वा',[8] भवे एयारूवे सिया ? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, 'ते णं कण्हा मणी य तणा य'[9] इत्तो इट्ठतराए चेव कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणा-मतराए चेव वण्णेणं पण्णत्ता[10] ॥

२७९. तत्थ[11] णं जेते णीलगा मणी य तणा य, तेसि णं इमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए—भिंगेति वा भिंगपत्तेति वा चासेति वा चासपिच्छेति वा सुएति वा सुय-पिच्छेति वा णीलीति वा णीलीभेदेति वा णीलीगुलियाति वा सामाएति वा उच्चंतएति वा वणराईइ वा हलधरवसणेइ वा मोरग्गीवाति वा पारेवयगीवाति वा अयसिकुसुमेति वा वाण-कुसुमेति वा[12] अंजणकेसिगाकुसुमेति वा णीलुप्पलेति वा णीलासोएति वा णीलकणवीरेति वा णीलबंधुजीवेति वा, भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, 'ते णं णीलगा मणी य तणा य'[13] एत्तो इट्ठतराए चेव कंततराए चेव[14] •पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए

१. आयंसमंडलेति वा चंदमंडलेति वा सूरमंडलेति वा (क, ख, ग, ट, त्रि)।
२. पडिसेढि (ता)।
३. मारंडा जारा मारा (ता)।
४. तणेहि य मणीहिं य (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।
५. गुलियाति (क, ख, ग, ट, त्रि); क्वचिद् 'मसी इति मसी गुलिया इति वे' ति न दृश्यते (मवृ)।
६. °पत्तगय° (त्रि)।
७. °कणियारेति (क, ख)।
८. जधा कण्हलेस्साए जाव (ता)।
९. तेसि णं कण्हाणं तणाणं मणीण य (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१०. पण्णत्ता समणाउसो (ता)।
११. २७९,२८०,२८२ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ भिन्ना वाचना विद्यते—णीला जहा णील-लेस्साए, लोहिता जधा तेउलेस्साए, सुक्किला जहा सुक्कलेस्साए, २८१ सूत्रं लिखितं नास्ति।
१२. अत ऊर्ध्वं क्वचित्—'इंदनीलेइ वा महानीलेइ वा मरगतेइ वा' (मवृ)।
१३. तेसि णं णीलगाणं तणाणं मणीण य (क, ख, ग, ट त्रि)।
१४. सं० पा०—चेव जाव वण्णेणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेव° वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२८०. तत्थ णं जेते लोहितगा मणी य तणा य, तेसि णं इमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए—ससकरुहिरेति वा उरभरुहिरेति वा 'वराहरुहिरेति वा मणुस्सरुहिरेति वा'[1] महिसरुहिरेति वा वालिंदगोवएति वा बालदिवागरेति वा संझब्भरागेति वा गुंजद्धरागेति वा 'जासुयणकुसुमेति वा पालियायकुसुमेति वा'[2], जातिहिंगुलुएति वा सिलप्पवालेति वा पवालंकुरेति वा लोहितक्खमणीति वा लक्खारसएति वा किमिरागरत्तकंबलेइ[3] वा चीणपिट्ठरासीइ वा रत्तुप्पलेति वा रत्तासोगेति वा रत्तकणवीरेति वा रत्तबंधुजीवेति वा, भवे एयारूवे सिया ? नो तिणट्ठे समट्ठे, 'ते णं लोहितगा मणी य तणा य'[4] एत्तो इट्ठतराए चेव[5] •कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णगतराए चेव मणामतराए चेव° वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२८१. तत्थ णं जेते हालिद्दगा मणी य तणा य, तेसि णं इमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए—चंपए वा चंपगच्छल्लीइ वा चंपकभेदेइ वा हलिद्दाति वा हलिद्दाभेदेति वा वा हलिद्दागुलियति वा हरियालेति वा हरियालभेदेति वा हरियालगुलियाति वा चिउरेति वा चिउरंगरागेति वा 'वरकणगेति वा'[6] वरकणगनिघसेति वा[7] वरपुरिसवसणेति वा 'अल्लइकुसुमेति वा'[8] चंपाकुसुमेइ वा कुहंडियाकुसुमेति वा 'कोरंटकदामेइ वा'[9] तडवडाकुसुमेति[10] वा घोसाडियाकुसुमेति वा सुवण्णजूहियाकुसुमेति वा सुहिरण्णयाकुसुमेइ वा बीयगकुसुमेति[11] वा पीयासोएति वा पीयकणवीरेति वा पीयबंधुजीवेति वा, भवे एयारूवे सिया ? नो इणट्ठे समट्ठे, ते णं हालिद्दा मणी य तणा य एत्तो इट्ठतराए चेव[12] •कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२८२. तत्थ णं जेते सुक्किलगा मणी य तणा य, तेसि णं इमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए—अंकेति वा संखेति वा चंदेति वा कुमुदेति[13] वा दगरएति[14] वा 'दहिघणेति वा खीरेति वा खीरपूरेति वा'[15] हंसावलीति वा कोंचावलीति वा हारावलीति वा वलायावलीति वा चंदावलीति वा सारइयबलाहएति वा धंतधोयरुप्पपट्टेइ वा सालिपिट्ठरासीति वा कुंदपुप्फरासीति वा कुमुयरासीति वा सुक्कछिवाडीति वा पेहुणमिंजाति वा भिसेति

---

१. णररुहिरेति वा वराहरुहिरेति वा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

२. चिन्हाङ्कितः पाठः 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु 'चीणपिठरासीइ वा' इति पाठानन्तरं विद्यते।

३. किमिरागेइ वा रत्तकंबलेइ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

४. तेसि णं लोहितगाणं तणाण य मणीण य (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. सं० पा०—चेव जाव वण्णेणं।

६. × (मवृ)।

७. वा सुवण्णसिप्पिएति वा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

८. × (क, ख, ट); सल्लइकुसुमेइ वा (ग); सेल्लइकुसुमेइ वा (त्रि)।

९. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१०. तडउडा° (क, ख, ग, ट, त्रि)।

११. कोरंटवरमल्लदामेति वा बीयग° (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१२. सं० पा०—चेव जाव वण्णेणं।

१३. कुंदेति (क, ख, ग, ट)।

१४. उदक-दयरय (राय० सू० २९); दगे इ वा दगरए इ (पण्ण० १७।१२८)।

१५. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा मिणालियाति वा गयदंतेति वा लवंगदलेति वा पोंडरीयदलेति वा 'सिंदुवारवरमल्लदामेति वा'[1] सेतासोएति वा सेयकणवीरेति वा सेयबंधुजीवेति वा, भवे एयारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, 'ते णं सुक्किला मणी य तणा य'[2] एत्तो इट्ठतराए चेव[3] °कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२८३. तेसि णं भंते ! मणीण य तणाण य केरिसए गंधे पण्णत्ते ? से जहाणामए—कोट्ठपुडाण वा 'पत्तपुडाण वा चोयपुडाण वा'[4] तगरपुडाण वा एलापुडाण वा[5] 'चंपापुडाण वा दमणापुडाण वा कुंकुमपुडाण वा चंदणपुडाण वा उसीरपुडाण वा मरुयापुडाण वा जातिपुडाण वा जूहियापुडाण वा मल्लियापुडाण वा ण्हाणमल्लियापुडाण वा केतकिपुडाण वा पाडलिपुडाण वा णोमालियापुडाण वा[6] वासपुडाण वा कप्पूरपुडाण वा'[7] अणुवायंसि उब्भिज्जमाणाण वा णिब्भिज्जमाणाण वा कोट्टेज्जमाणाण वा रुचिज्जमाणाण वा[8] उक्किरिज्जमाणाण वा विक्खरिज्जमाणाण[9] वा 'परिभुज्जमाणाण वा'[10] भंडाओ वा भंडं साहरिज्जमाणाणं ओराला मणुण्णा मणहरा[11] घाणमणणिव्वुतिकरा सव्वतो समंता गंधा अभिणिस्सवंति, भवे एयारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, 'ते णं मणी य तणा य'[12] एत्तो इट्ठतराए चेव[13] °कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव° मणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ता ॥

२८४. तेसि णं भंते ! मणीण य तणाण य केरिसए फासे पण्णत्ते ? से जहाणामए—आईणेति वा रूएति वा बूरेति वा णवणीतेति वा हंसगब्भतूलीति[14] वा सिरीसकुसुमणिचएति वा बालकुमुदपत्तरासीति[15] वा, भवे एतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ते णं

---

१. × (मवृ)।

२. तेसि णं सुक्किलाणं तणाणं मणीण य (क, ख, ग, ट, त्रि)।

३. सं० पा०—चेव जाव वण्णेणं।

४. × (मवृ)।

५. वा चोयगपुडाण वा (मवृ)।

६. वा अगुरुपुडाण वा लवंगपुडाण वा (राय सू० ३०)।

७. हिरिमेर (किरिमेर-ग,त्रि) पुडाण वा चंदणपुडाण वा कुंकुमपुडाण वा उसीरपुडाण वा चंपयपुडाण वा मरुयगपुडाण वा दमणगपुडाण वा जातिपुडाण वा जूहियापुडाण वा मल्लियापुडाण वा णोमल्लियपुडाण वा वासंतिपुडाण वा केयइपुडाण वा कप्पूरपुडाण वा पाडलिपुडाण वा (क, ख, ग, ट, त्रि); जातिपुडाण वा जूहियापुडाण वा मल्लियापुडाण वा मलियापु वासंतिपु दमणापु मरुतापुडाण वा (ता)।

८. अयं पेषणार्थे देशीधातु विद्यते। रायपसेणइय सूत्रे (३०) 'भंजिज्जमाणाण' इति पाठो लभ्यते, किन्तु 'श्लक्ष्णखण्डीक्रियमाणानाम्' इति विवृतमस्ति उभयत्रापि एकेनैव वृत्तिकारेण मलयगिरिणा, एतेन सम्भाव्यते वृत्तिकारस्य सम्मुखे रायपसेणइयसूत्रेपि 'रुचिज्जमाणाण' इति पाठः आसीत्।

९. विकिरिज्ज° (त्रि)।

१०. परिभुज्जमाणाण वा परियाभाइज्जमाणाण वा ठाणातो वा ठाणं संकामिज्जमाणाण वा (ता); परिभाइज्जमाणाण (मवृपा)।

११. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१२. तेसि णं तणाणं मणीण य (क, ख, ग, ट,त्रि)।

१३. सं० पा०—चेव जाव वण्णेणं।

१४. हंसगब्भेति (ता)।

१५. बालकुसुमपत्तरासीति (ट, मवृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणी य तणो य एत्तो इट्ठतराए चेव[1] •कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° फासेणं पण्णत्ता ॥

२८५. तेसि णं भंते! 'मणीण य तणाण य'[2] पुव्वावरदाहिणुत्तरागतेहिं वाएहिं मंदायं-मंदायं एइयाणं वेइयाणं कंपियाणं[3] चालियाणं 'फंदियाणं घट्टियाणं'[4] खोभियाणं[5] उदीरियाणं[6] केरिसए सद्दे पण्णत्ते? से जहाणामए--सिवियाए वा संदमाणीयाए वा रहवरस्स वा सछत्तस्स सज्झयस्स सघंटयस्स सपडागस्स[7] सतोरणवरस्स सणंदिघोसस्स सखिखिणिहेमजालपेरंतपरिखित्तस्स हेमवय-चित्तविचित्त-तेणिस-कणगनिज्जुत्तदारुयागस्स सुपिणद्धारकमंडलधुरागस्स[8] कालायससुकयणेमिजंतकम्मस्स[9] आइण्णवरतुरगसुसंपउत्तस्स कुसलणरछेयसारहिसुसंपरिग्गहितस्स सरसतबत्तीसतोणमंडितस्स[10] सकंकडवडेंसगस्स सचाव-सरपहरणावरणहरिय-जोहजुद्धसज्जस्स रायंगणंसि वा अंतेपुरंसि[11] वा रम्मंसि वा मणि-कोट्टिमतलंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अभिघट्टिज्जमाणस्स[12] ओराला मणुण्णा मणहरा कण्णमणणिव्वुतिकरा सव्वतो समंता सद्दा अभिणिस्संवति[13], भवे एतारूवे सिया? णो ति-णट्ठे समट्ठे, से जहाणामए—वेयालियाए वीणाए उत्तरमंदामुच्छिताए अंके सुपइट्ठियाए 'कुसलणरणारिसुसंपग्गहिताए चंदणसारनिम्मियकोणपरिघट्टियाए'[14] पच्चूसकालसमयंसि[15] मंदं-मंदं एइयाए वेइयाए कंपियाए चालियाए फंदियाए घट्टियाए खोभियाए उदीरियाए ओराला मणुण्णा मणहरा कण्णमणणिव्वुतिकरा सव्वतो समंता सद्दा अभिणिस्सवंति, भवे एयारूवे सिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, से जहाणामए—किण्णराण वा किंपुरिसाण वा महोरगाण वा गंधव्वाण वा भद्दसालवणगयाण वा नंदणवणगयाण वा सोमणसवणगयाण वा पंडगवणगयाण वा महाहिमवंत[16]-मलय-मंदरगिरि-गुहसमण्णागयाण वा एगतो[17] सहि-

१. सं० पा०—चेव जाव फासेणं।
२. तणाणं (क, ख, ग, ट, त्रि); मलयगिरिणात्र केवलं 'तृणानां' इति उल्लिखितम्, उपसंहार-वाक्यस्य व्याख्यायां 'मणीनां तृणानां च शब्दः' इत्युल्लिखितमस्ति, तत्रापि 'मणीनां' इति युज्यते।
३. कंपियाणं खोभियाणं (क, ख, ग, ट, त्रि); × (ता)।
४. घट्टिताणं फंडिताणं (ता)।
५. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।
६. × (ख, ग, ता)।
७. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।
८. सुविसुद्धचक्कमंडलधूरागस्स (क, ख, ट); × (ता)।
९. कालायससुकतणेमिवंत कम्मस्स सुसंबिद्धचक्क-मंडलधुरातस्स (ता)।
१०. 'बत्तीसतोरणमंडितस्स (क, त्रि); °बत्तीसतो-रणपरिमंडितस्स (ता); अत्र 'तोण' स्थाने 'तोरण' इति पदं लिपिदोषेण जातमस्ति।
११. रायंतेपुरंसि (ता)।
१२. °माणस्स वा णियट्टिज्जमाणस्स वा परूढवर-तुरंगस्स चंडवेगाइट्ठस्स (क, ख, ग, ट त्रि)।
१३. अभिणिस्समंति (ता); अभिनिस्सरन्ति (मवृ)।
१४. चंदणसारकोणपरिघट्टियाए कुसलणरणारि-संपग्गहियाए (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१५. पदोसपच्चूसकालसमयंसि (क, ख, ग, ट, त्रि); पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि (मवृपा, राय० सू० १७३)।
१६. हिमवंत (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१७. एगतओ (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताणं 'संमुहागयाणं समुपविट्ठाणं' संनिविट्ठाणं'[2] पमुदियपक्कीलियाणं गीयरति-गंधव्वहरिसियमणाणं गज्जं पज्जं कत्थं गेयं पयबद्धं पायबद्धं 'उक्खित्तायं पवत्तायं'[3] मंदायं रोचियावसाणं सत्तसरसमण्णागयं अट्ठरसुसंपउत्तं 'एक्कारसालंकारं छद्दोसविप्पमुक्कं'[4] अट्ठगुणोववेयं गुंजावंककुहरोवगूढं[5] रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं सकुहरगुंजंतवंस-तंती-तल-ताल-लय-गहसुसंपउत्तं मधुरं समं सललियं मणोहरं मउयरिभियपयसंचारं सुरतिं[6] सुणतिं वरचारुरूवं दिव्वं नट्टं सज्जं गेयं पगीयाणं'[7], भवे एयारूवे सिया ? गोयमा[8] ! एवंभूए सिया ॥

२८६. तस्स णं वणसंडस्स तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहुईओ[9] खुड्डा-खुड्डियाओ वावीओ पुक्खरिणीओ दीहियाओ गुंजालियाओ सरसीओ सरपंतियाओ 'सरसरपंतियाओ बिलपंतियाओ'[10] अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ[11] समतीराओ[12] वइरामयपासाणाओ तवणिज्जतलाओ 'सुवण्ण-सुब्भ-रययवालुयाओ वेरुलियमणिफालियपडल-पच्चोयडाओ'[13] सुहोयार-सुउत्ताराओ णाणामणितित्थ-सुबद्धाओ चाउक्कोणाओ आणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजलाओ संछण्णपत्तभिस-मुणालाओ बहुउप्पल-कुमुद-णलिण-सुभग-सोगंधिय-पोंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-फुल्लकेसरोवचियाओ छप्पयपरिभुज्जमाणकमलाओ अच्छविमलसलिलपुण्णाओ

---

१. सण्णिसण्णाणं (ट) ।

२. समवुगताणं सण्णिसण्णाणं सण्णिवेताणं (ता) ।

३. उक्खित्तपवत्तयं (क, ट); उक्खित्तायंपवुत्तायं पसुत्तायं (ता); उक्खित्तायं पायत्तायं (राय० सू० १७३) ।

४. छद्दोसविप्पमुक्कं एक्कारसगुणालंकारं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

५. 'ता' प्रतौ मलयगिरिविवरणे च एष पाठो नैव दृश्यते । शेषादर्शेषु विद्यते, रायपसेणइय वृत्तौ (पृ० १३१) व्याख्यातोस्ति । गुंजा+अवंक° गुंजावंक° ।

६. सुरभिं (क, ग) लिपिदोषेण तकारस्थाने भकारो जातः इति प्रतीयते ।

७. संगीताणं (ता) ।

८. हंता (ख, ता) ।

९. बहवे (क, ख, ग, ट, त्रि); बहुवीओ (ता) ।

१०. सरसरपंतीओ बिलपंतीओ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

११. 'ता' प्रतौ अतो भिन्ना वाचना लभ्यते—रययामयाओ सुओगार-सुउत्ताराओ णाणामणि-रयणतित्थबद्धाओ तवणिज्जतलाओ सुवण्ण-सीतब्भरियरमणियालुयाओ वेरुलियमणिरतण-फलिहपडलपच्चोअद्धाओ चातुक्कोणाओ समतीराओ अणुपुव्वसुयातवप्पगंभीरसीतलजल-संच्छण्णपयुमपत्तभिसमुणालातो पउमकुमुदणलिणसुभगसोगंधियअरविंदकोवणतसयपत्तसहस्स-पत्तफुल्लकेसरोवचिताओ अच्छविमलसलिल-पुण्णाओ परिहत्थभमंतमच्छच्छप्पदअणेगसउणगणमिधुणविचरियमद्दुण्णइयतमधुरणादिता अप्पेगतियाओ आसवोदगाओ अप्पे खारोदगाओ अप्पे घतोदगाओ अप्पे खोतोदगातो य अमतरस-समरसोदगाओ अप्पे पगतीए उदगरसेणं पं पत्तेयं २ पयुमवरवेइयाए परि पत्तेयं २ वणसंडपरि पासादि एक ।

१२. क, ख, ग, ट, त्रि' एतेषु आदर्शेषु एष पाठः अग्रे 'चाउक्कोणाओ' इति पाठानन्तरं विद्यते ।

१३. वेरुलियमणिफालियपडलपच्चोयडाओ सुवण्ण-सुब्भरययमणिवालुयाओ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिहत्थभमंतमच्छकच्छभ-अणेगसउणमिहुणपविचरिय-सद्दुण्णइयमहुरसरणाइयाओ[1] पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेदियापरिक्खित्ताओ पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ अप्पेगतियाओ आसवोदाओ अप्पेगतियाओ वारुणोदाओ अप्पेगतियाओ खीरोदाओ अप्पेगतियाओ घओ-दाओ अप्पेगतियाओ खोदोदाओ अप्पेगतियाओ अमयरससमरसोदाओ अप्पेगतियाओ 'पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ताओ'[2] पासाइयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ।।

२८७. तासि णं खुड्डा-खुड्डियाणं वावीणं जाव बिलपंतियाणं 'पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि'[3] तिसोवाणपडिरूवगा[4] पण्णत्ता। तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया नेमा[5] रिट्ठामया पतिट्ठाणा वेरुलियामया खंभा सुवण्णरुप्पामया फलगा[6] लोहितक्खमईओ सूईओ वइरामया संधी णाणामणिमया अव-लंबणा अवलंबणबाहाओ पासाइयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ।।

२८८. तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं 'तोरणे पण्णत्ते'[7]। ते णं तोरणा नाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसण्णिविट्ठा विविहमुत्तंतरोवचिया[8] विविहताराख्वोवचिया, ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गयवइरवेदियापरिगताभिरामा विज्जाहर-जमलजुयलजंतजुताविव अच्चिसहस्समालणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा[9] पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

२८९. तेसि णं तोरणाणं उप्पि[10] अट्ठट्ठ मंगलगा पण्णत्ता, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छणंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा सव्वरयणामया अच्छा जाव[11] पडिरूवा ।।

२९०. तेसि णं तोरणाणं उप्पि बहवे किण्हचामरज्झया नीलचामरज्झया लोहिय-चामरज्झया हालिद्दचामरज्झया सुक्किलचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वइरदंडा जलयामलगंधीया सुरूवा पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

२९१. तेसि णं तोरणाणं उप्पि बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामर-जुयला उप्पलहत्थगा 'पउम-णलिण-सुभग-सोगंधिय-पोंडरीय-महापोंडरीय-सतपत्त-सहस्स-

---

१. मलयगिरिणा प्रस्तुतप्रकरणे 'सद्दुण्णइयमहु-रसरणाइयाओ' इति पाठो नैव व्याख्यातः 'ता' प्रतौ एष पाठो विद्यते। वृत्तिकृता ३।११८ सूत्रे [वृत्ति पत्र १२३] एष व्याख्यातः; ३।८५७ सूत्रे [वृत्ति पत्र ३५०] चैष उद्धृतः।

२. अमृतरसेन स्वाभाविकेन प्रज्ञप्ताः (मवृ)।

३. तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं जाव बहवे (क, ख, ग, ट, त्रि); रायपसेणइयसूत्रे (१७५) पि स्वीकृतपाठस्य संवादी पाठो विद्यते।

४. तिसोमाण° (ता, राय० सू० १७५)।

५. णेम्मा (क, ख, ता); णिम्मा (ग, ट)।

६. फलहा (ता)।

७. तोरणा पण्णत्ता (क, ख, ग, ट त्रि)।

८. विविहमुत्तंतरोविया (मवृ); विविहमुत्तंतर-रूवोवचिया (राय० सू० २०)।

९. अतोग्रे रायपसेणइय सूत्रे (२०) इति पाठोस्ति —घंटावलिचलियमहुरमणहरसरा।'

१०. उप्पि बहवे (क, ख, ग, ट, त्रि); उवरि (ता)।

११. जी० ३।२६१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्तहत्थगा[1] सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

२९२. तासि णं खुड्डाखुड्डियाणं वावीणं जाव बिलपंतियाणं तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे उप्पायपव्वया णियइपव्वया[2] जगतीपव्वयगा दारुपव्वयगा दगमंडवगा दगमंचका दगमालगा दगपासायगा ऊसडा[3] खुड्डा[4] खडहडगा[5] 'अंदोलगा पक्खंदोलगा'[6] सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

२९३. तेसु णं उप्पायपव्वतेसु जाव पक्खंदोलएसु बहूइं हंसासणाइं कोंचासणाइं गरूलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं सीहासणाइं[7] पउमासणाइं दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं ।।

२९४. तस्स णं वणसंडस्स तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे आलिघरगा मालिघरगा कयलिघरगा लयाघरगा अच्छणघरगा पेच्छणघरगा मज्जणघरगा पसाहणघरगा गब्भघरगा मोहणघरगा[8] 'सालघरगा जालघरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गंधव्वघरगा'[9] आयंसघरगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

२९५. तेसु णं आलिघरएसु जाव आयंसघरएसु बहूइं हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं ।।

२९६. तस्स णं वणसंडस्स तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे जाईमंडवगा[10] जूहियामंडवगा[11] मल्लियामंडवगा णोमालियामंडवगा वासंतीमंडवगा दधिवासुयमंडवगा[12] सूरिल्लिमंडवगा तंबोलीमंडवगा मुद्दियामंडवगा णागलयामंडवगा अतिमुत्तमंडवगा अप्फोतामंडवगा मालुयामंडवगा सामलयामंडवगा[13] सव्वरयणामया[14] अच्छा जाव पडिरूवा ।।

२९७. तेसु णं जातीमंडवएसु जाव सामलयामंडवएसु बहवे पुढविसिलापट्टगा[15] पण्णत्ता, तं जहा—अप्पेगतिया[16] हंसासणसंठिता जाव[17] अप्पेगतिया दिसासोवत्थियासण-

---

१. जाव सयसहस्सवत्तहत्थगा (क, ख, ग, ट, त्रि); पउमहकुमुदहणलिणसुभगसोगंधिगह पोंडरीयहसयपत्तहसहस्सपत्तहसतसहस्सपत्त-हत्थगा (ता) ।

२. णीयपव्वया (ता); णियय पव्वया (मवृपा) ।

३. उसरदगा (क, ख); ओसरया (ता) ।

४. खुल्ला (ग); × (ता); खुड्डुमुड्डगा (राय० सू० १८०) ।

५. खडखडगा (ट, मवृ); खरखडया (ता); × (राय सू० १८०) ।

६. अंडोला पक्खंडोला (ता) ।

७. उसभासणाइं, सीहा° (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

८. मोहघरगा (क) ।

९. × (ता) ।

१०. जातिमंडवा (ता) ।

११. जूधियामंडवा (ता) ।

१२. दधिवासुया° (क, ख, ग) ।

१३. × (ता, मवृ); ३।८५७ सूत्रे एष पाठः 'ता' प्रतौ च विद्यते ।

१४. णिच्चं कुसुमिया णिच्चं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१५. पुढविसिल्लापट्टा (ता) ।

१६. × (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१७. 'क, ख, ग, ट, त्रि' संकेतितादर्शेषु पूर्णः पाठोस्ति । तत्र 'उसभासणसंठिया' इत्यपि दृश्यते । मलयगिरिणा २९३ सूत्रे एष पाठो नैव व्याख्यातः; प्रस्तुतसूत्रस्य विवरणे स उद्धृतः ।

रायपसेणइय सूत्रे (१८१) नास्ति स्वीकृतः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठिता। 'अण्णे'[1] य बहवे पुढविसिलापट्टगा'[2] वरसयणासणविसिट्ठसंठाणसंठिया'[3] पण्णत्ता समणाउसो ! आईणग-रूय-बूर-णवणीततूलफासा[4] सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्टंति[5] रमंति ललंति कीलंति मोहंति[6], पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति।।

२९८. तीसे णं जगतीए उप्पिं 'पउमवरवेदियाए अंतो'[7] एत्थ णं 'महं एगे'[8] वणसंडे पण्णत्ते—देसूणाइं दो जोयणाइं विक्खंभेणं जगतीसमए[9] परिक्खेवेणं[10], किण्हे किण्होभासे 'वणसंडवण्णओ तणसद्दविहूणो णेयव्वो। तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीडंति मोहंति, पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं[11] कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति'[12]।।

विजय दाराधिकारो

२९९. जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स कति दारा[13] पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—विजये वेजयंते जयंते अपराजिते।।

३००. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स विजये नामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पणयालीसं जोयणसहस्साइं अबाधाए जंबुद्दीवे दीवे पुरच्छिमपेरंते लवणसमुद्दपुरच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं सीताए महाणदीए उप्पिं, एत्थ णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स विजये णामं दारे पण्णत्ते—अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, तावतियं चेव पवेसेणं, सेए वरकणगथूभियागे ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ते खंभुग्ग-

---

१८५ सूत्रस्य विवरणे स उद्धृतोस्ति, किन्तु गङ्ग्रहगाथातो ज्ञायते 'उसभासणाइं' इति पाठः नास्ति प्रस्तुतोत्र। सा च एवमस्ति—
हंसेकोंच गरुडे उण्णय पणए य दीह भद्दे य।
पक्खे मयरे पउमे सीह दिसासोत्थिवारसमे।।१।।
(जी० वृत्ति पत्र २०० राय० वृत्ति पृ० १९६)।

१. 'ता' प्रतौ अतः 'समणाउसो' पर्यन्तं एवं पाठोस्ति—अण्णे विसिट्ठवरसयणसंठाणसंठिया।

२. तत्थ बहवे (क, ख, ग, ट, त्रि)।

३. मांसलसुघुट्ठविसिट्ठसंठाणसंठिया (मवृपा)।

४. तूलफासा मउया (क, ख, ग, घ, ट, त्रि); तूलफासा रत्तंसुगसंवुता सुरंमा (ता)।

५. तुयट्टंति हसंति (ता)।

६. किड्डंति अभिरमंति (ता)।

७. अंतो पउमवरवेइयाए (क, ख, ग, ट, त्रि)।

८. एगे महं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

९. वेइयासमए (क, ख, ग, ट, त्रि); २७३ सूत्रानुसारेण अत्रापि 'जगतीसमए' इति 'ता' प्रतिगतः पाठः स्वीकृतः 'वेइयासमए' इत्यपि पाठे नार्थभेदोस्ति, उभयत्रापि परिक्षेपस्य साम्यमस्ति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तावपि (१।१४) अयमेव पाठो लभ्यते।

१०. अतोग्रे 'ता' प्रतौ पाठसंक्षेपोस्ति—तं चेव णिरवयवं तणसद्दवज्जो जाव वंतरा विहरंति।

११. कंताणं (क, ख, ग, ट); कंताणं कडाणं (त्रि)।

१२. वृत्तिकृता उद्धृतः पाठः एवमस्ति—वणसंडवण्णतो सद्दवज्जो जाव विहरंति।

१३. दुवारा (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तवइरवेदियापरिगताभिरामे विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्ते इव अच्चीसहस्समालिणीए रूवगसहस्सकलिए भिसमाणे भिब्भिसमाणे चक्खुल्लोयणलेसे सुहफासे सस्सिरीयरूवे। 'वण्णो दारस्स तस्सिमो होइ'[1] तं जहा—वइरामया नेमा रिट्ठामया पतिट्ठाणा वेरुलियामया खंभा जायरूवोवचिय-पवरपंचवण्णमणिरयण-कोट्टिमतले हंसगब्भमए एलुए गोमेज्जमए इंदखीले लोहितक्खमईओ दारचेडाओ[2] जोतिरसामए उत्तरंगे वेरुलियामया कवाडा लोहितक्खमईओ सूईओ वइरामया संधी णाणामणिमया समुग्गगा 'वइरामया अग्गला'[3] अग्गलपासाया वइरामई आवत्तणपेढिया अंकुत्तरपासए[4] णिरंतरितघणकवाडे भित्तीसु चेव भित्तिगुलिया छप्पण्णा तिण्णि होंति गोमाणसिया तत्तिया णाणामणिरयणवालरूवग-लीलट्ठियसालभंजिया वइरामए कूडे रययामए उस्सेहे सव्वतवणिज्जमए उल्लोए णाणामणि-रयणजालपंजर - मणिवंसग लोहितक्खपडिवंसगरयतभोमे अंकामया पक्खा पक्खबाहाओ जोतिरसामया वसा वंसकवेल्लुयाओ य रययामईओ पट्टियाओ जायरूवमईओ ओहाडणीओ वइरामईओ उवरिपुंछणीओ सव्वसेतरययामए छादणे अंकमयकणगकूड-तवणिज्जथूभियाए सेते 'संखतलविमलणिम्मलदधिघण-गोखीर-फेण-रययणिगरप्पगासे तिलगरयणद्धचंदचित्ते'[5] णाणामणिमयदामालंकिए अंतो बहिं च सण्हे तवणिज्जवालुयापत्थडे[6] सुहफासे[7] सस्सिरीय-रूवे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

३०१. विजयस्स णं दारस्स उभओ पासिं[8] दुहओ[9] णिसीहियाए दो-दो वंदणकलस-परिवाडीओ पण्णत्ताओ। ते णं वंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा[10] पउमुप्पलपिहाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा महता-महता महिंदकुंभसमाणा पण्णत्ता समणाउसो ॥

३०२. विजयस्स णं दारस्स उभओ पासिं दुहओ णिसीहिआए दो दो णागदंतपरिवा-डीओ। ते णं णागदंतगा मुत्ताजालंतरुसियहेमजाल-गवक्खजाल-खिंखिणीघंटाजालपरिक्खित्ता अब्भुग्गता अभिणिसिट्ठा तिरियं सुसंपग्गहिता[11] अहेपण्णगद्धरूवा पण्णगद्धसंठाणसंठिता सव्ववइरामया[12] अच्छा जाव पडिरूवा महता-महता गयदंतसमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! तेसु णं णागदंतएसु बहवे 'किण्हसुत्तवद्धा वग्घारितमल्लदामकलावा'[13] जाव[14] सुक्किल-

---

१. वण्णाओ दारस्स रीयरूवे (क); वण्णओ दारस्स (ख, ग, ट, त्रि); वण्णो दारस्स तस्स होति (ता)।
२. दारचेडाओ (ग); दारवेढाओ (ट); द्वारपिण्डौ (मवृ); द्वारपिण्ड्यौ (जं० वृत्ति पत्र ४८)।
३. वइरामईयो अग्गलाओ (क, ख, त्रि); वइरा-मई अग्गला (ग)।
४. अंकुत्तरपासके (ट); अंकुत्तरपासगा (ता); अंकुत्तरपासगे (त्रि)।
५. संखतलविमलनिम्मलदधिघणगोखीरफेणरयय - नियरप्पगासद्धचंदचित्ते (ता, मवृपा)।
६. तविणज्जरुइलबालुगापत्थडे (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।
७. सुहप्फासे (क)।
८. पासं (ता)।
९. दुधाओ (ता)।
१०. आवद्ध° (क, ग)।
११. सुसंपरिगृहीताः (मवृ)।
१२. सव्वरयणामया (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१३. किण्हसुत्तबद्धवग्घारिया° (क, ख, ग, ट, ता त्रि)।
१४. राय० सू० १३२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा ।

ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा[1] सुवण्णपतरगमंडिता[2] णाणामणिरयण-विविधहारद्धहार-उवसोभितसमुदया जाव[3] सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

तेसि णं णागदंतगाणं उवरिं[4] अण्णाओ दो दो णागदंतपरिवाडीओ पण्णत्ताओ । ते णं णागदंतगा मुत्ताजालंतरुसिय[5] •हेमजाल-गवक्खजाल-खिखिणीघंटाजालपरिक्खित्ता अब्भुग्गता अभिणिसिट्ठा तिरियं सुसंपग्गहित्ता अहेपण्णगद्धरूवा पण्णगद्धसंठाणसंठिता सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा महता-महता गयदंतसमाणा पण्णत्ता° समणाउसो !

तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता। तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीओ पण्णत्ताओ । ताओ णं धूवघडीओ कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामाओ सुगंधवरगंधगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं घाणमणणिव्वुइकरेणं गंधेणं 'ते पएसे'[6] सव्वतो समंता आपूरेमाणीओ-आपूरेमाणीओ 'सिरीए अतीव-अतीव'[7] उवसोभेमाणीओ-उवसोभेमाणीओ चिट्ठंति ।।

३०३. विजयस्स णं दारस्स उभओ पासिं दुहओ णिसीधियाए दो दो सालभंजिया-परिवाडीओ पण्णत्ताओ । ताओ णं सालभंजियाओ लीलट्ठिताओ सुपइट्ठियाओ सुअलंकिताओ णाणाविहरागवसणाओ[8] णाणामल्लपिणद्धाओ मुट्ठीगेज्झसुमज्झाओ आमेलगजमलजुयल-वट्टियअब्भुण्णयपीणरचियसंठियपओहराओ रत्तावंगाओ असियकेसीओ मिदुविसयपसत्थ-लक्खण-संवेल्लितग्गसिरयाओ ईसिं असोगवरपादवसमुट्ठिताओ वामहत्थगहितग्गसालाओ ईसिं अद्धच्छिकडक्खचेट्ठिएहिं[9] लूसेमाणीओ विव, चक्खुल्लोयणलेसेहिं अण्णमण्णं खिज्ज-माणीओ[10] इव, पुढविपरिणामाओ सासयभावमुवगताओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमनिडालाओ चंदाहियसोमदंसणाओ उक्का विव उज्जोएमाणीओ विज्जुघणमिरिय-[11] सूरदिप्पंततेय-अहिययरसंनिकासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ

---

१. °लंबूसा (ता) ।
२. °पतरमंडिता (ता) ।
३. जी० ३।२६५ ।
४. उप्पिं (ता) ।
५. सं० पा०—मुत्ताजालंतरुसिया तहेव जाव समणाउसो !।
६. तपएसे (क, ख, ग, ट); तप्पएसे (त्रि) ।
७. अतीव अतीव सिरीए (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
८. नाणागारवसणाओ (क, ख, ग, ट, त्रि) । अतोग्रे मलयगिरिवृत्तौ केचित् पाठाः भिन्न-क्रमेण व्याख्याताः सन्ति—रत्तावंगाओ असिय-केसीओ मिदुविसयपसत्थलक्खणसंवेल्लितग्ग-सिरयाओ णाणामल्लपिणद्धाओ मुट्ठीगेज्झ-सुमज्झा आमेलगजमलजुयलवट्टियअब्भुण्णय-पीणरइयसंठियपओहराओ । रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १६५) एष एव स्वीकृतपाठसंवादी क्रमो लभ्यते ।
९. मलयगिरिणा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'अड्डुंतिर्यग्व-लितं' इति व्याख्यातमस्ति । रायपसेणइय वृत्तौ (पृ० १६६) 'अर्धं-तिर्यग्वलितं' इति लिखितं लभ्यते । व्याख्यानुसारेण तत्रापि 'अड्डुं' इति पदं युज्यते । एतद् देशीभाषापदं विद्यते, 'आडो' इति भाषायाम् ।
१०. पिज्जमाणीओ (ग); खिज्जेमाणीओ (ता); विज्जमाणीओ (क्व) ।
११. °मरीचि (क, ख, ग, ट); °मिरीयि (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिरूवाओ पडिरूवाओ 'तेयसा अतीव - अतीव उवसोभेमाणीओ - उवसोभेमाणीओ चिट्ठंति'[1] ।।

३०४. विजयस्स णं दारस्स उभओ पासिं दुहतो णिसीहियाए दो-दो जालकडगा पण्णत्ता । ते णं जालकडगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

३०५. विजयस्स णं दारस्स उभओ पासिं दुहओ णिसीधियाए दो-दो घंटाओ[2] पण्णत्ताओ । तासि णं घंटाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—जंबूणयामईओ[3] घंटाओ वइरामईओ लालाओ णाणामणिमया घंटापासा[4] तवणिज्जमईओ संकलाओ रययामईओ रज्जूओ । ताओ णं घंटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हंसस्सराओ कोंचस्सराओ 'सीहस्सराओ दुंदुहिस्सराओ णंदिस्सराओ णंदिघोसाओ'[5] मंजुस्सराओ मंजुघोसाओ सुस्सराओ सुस्सरघोसाओ[6] ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमणनिव्वुइकरेण सद्देण ते पदेसे सव्वतो समंता आपूरेमाणीओ-आपूरेमाणीओ सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणीओ - उवसोभेमाणीओ चिट्ठंति ।।

३०६. विजयस्स णं दारस्स उभओ पासिं दुहओ णिसीधियाए दो-दो वणमालाओ[7] पण्णत्ताओ । ताओ णं वणमालाओ णाणादुम-लय-किसलय-पल्लवसमाउलाओ छप्पयपरिभुज्जमाण[8]-सोभंतसस्सिरीयाओ 'पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ'[9] ।।

३०७. विजयस्स णं दारस्स उभओ पासिं दुहओ णिसीहियाए दो-दो पगंठगा[10] पण्णत्ता । ते णं पगंठगा चत्तारि जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, दो जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्ववइरामया[11] अच्छा जाव पडिरूवा । तेसि णं पगंठगाणं उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता । ते णं पासायवडेंसगा चत्तारि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसित-पहसिताविव विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंती-

---

१. (ता, मवृ); प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'पासाईयाओ इत्यादि विशेषणचतुष्टयं प्राग्वत्' इत्येव लभ्यते । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तावपि (पत्र ५२) 'प्रासादीया इत्यादिपदचतुष्टयं प्राग्वत् । रायपसेणइय सूत्रस्य वृत्तौ (पृ० १६६) 'अभिरूवाओ चिट्ठंति इति प्राग्वत्' ।

२. घंटापरिवाडीओ (क, ख, ग, ट, त्रि, राय० सू० १३५)

३. जंबूणतामईओ (क, ख, ग, ता); जंबूणदमईओ (त्रि) ।

४. घंटापासगा (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

५. णंदिस्सराओ णंदिघोसाओ सीहस्सराओ सीहघोसाओ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

६. सुस्सरणिग्घोसाओ (क, ख, ग, ट, ता, त्रि) ।

७. वणमालापरिवाडीओ (क, ख, ग, ट, त्रि, राय० सू० १३६) ।

८. छप्पयपरिभुज्जमाणकमल (क, ख, ग, ट, त्रि); 'कमल' इति पदं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् । रायपसेणइय (१३६) सूत्रेपि नैतत्पदं लभ्यते ।

९. पासाइयाओ ४ ते पदेसे ओराले जाव गंधेणं आपूरेमाणीओ २ जाव चिट्ठंति (क, ख, ग, ट, त्रि); णिच्चं कुसुमिआओ जाव वडेंसगधरीओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ (ता) ।

१०. पाअंठा (ता) सर्वत्र ।

११. सव्वरयणामया (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडाग-च्छत्तातिछत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा[1] जालंतररयण[2] पंजरुम्मिलितव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्त-पोंडरीय-तिलकरयणद्धचंदचित्ता[3] अंतो बाहिं च सण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा[4] सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

३०८. तेसि णं पासायवडेंसगाणं उल्लोया पउमलयाभत्तिचित्ता जाव[5] सामलयाभत्तिचित्ता सव्वतवणिज्जमया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

३०९. तेसिं[6] णं पासायवडेंसगाणं पत्तेयं-पत्तेयं अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए—आलिंगपुक्खरेति वा जाव[7] मणीहिं उवसोभिए। मणीण वण्णो गंधो फासो य नेयव्वो ।।

३१०. 'तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ जोयणं आयाम-विक्खंभेणं अद्धजोयणं[8] बाहल्लेणं, सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ।।

३११. तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणे पण्णत्ते[9]। तेसि णं सीहासणाणं अयमेयारूवे[10] वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—'रययामया सीहा सोवण्णिया पादा तवणिज्जमया चक्कला'[11] णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं[12] जंबूणयमयाइं गत्ताइं वइरामया संधी नाणामणिमए वेच्चे[13]। ते णं सीहासणा ईहामिय-उसभ[14]-•तुरग-णर-मगर - विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय°-पउमलयभत्तिचित्ता ससारसारोवचियविविह-

---

१. गगणतलमभिलंघमाणसिहरा (क, ख, ग, ट, त्रि); गगणतलमणुलंघमाणसिहरा (ता)।

२. सूत्रे चात्र विभक्तिलोपः प्राकृतत्वात् (मवृ)।

३. अतोग्रे आदर्शेषु 'णाणामणिमया दामालंकिया' इति पाठो लभ्यते। वृत्तौ नास्ति व्याख्यातोसौ। रायपसेणइयवृत्तावपि (पृ० १७०) नास्ति व्याख्यातः। मुद्रितवृत्त्योरसौ केनापि प्रक्षिप्तः। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्वृत्तित्रयेसौ व्याख्यातो दृश्यते।

४. तवणिज्जरुइलवालुयापत्थडगा (क, ख, ट, त्रि); तवणिज्जमयवालुयापत्थडगा (ग); तवणिज्जरुइलवालुयापत्थडा (ता)।

५. जी० ३।२६८। मलयगिरिवृत्तौ 'अतिमुत्तगलयभत्तिचित्ता कुंदलयभत्तिचित्ता सामलयभत्तिचित्ता' एतावान् पाठो नैव दृश्यते।

६. एतत् सूत्रं 'क, ख, ग, ट' आदर्शेषु नैव दृश्यते।

७. जी० ३।२७७-२८४।

८. अद्ध° (क); एतद् अशुद्धं प्रतिभाति।

९. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने मलयगिरिवृत्तौ 'तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणे पण्णत्ते' एष पाठो व्याख्यातोस्ति। जम्बूद्वीपवृत्तावपि (पत्र ५५) एवमेव व्याख्यातोस्ति। किन्तु रायपसेणियवृत्तौ (पृ० ९८)। मणिपीठिका सूत्रानन्तरं सिंहासनसूत्रं विद्यते।

१०. इमेतारूवे (ता)।

११. तवणिज्जमया चक्कला (चक्कवाला—ग, ट, त्रि) रयतामया सीहा सोवण्णिया पादा (क, ख, ग, ट, त्रि); °चक्कवाला (ता)।

१२. पायपीढगाइं (क, ख, ग, ट, त्रि); पायपीढा (ता)।

१३. विच्चे (क, ख, त्रि); वच्चे (ग)।

१४. सं० पा०—ईहामियउसभ जाव पउमलयभत्तिचित्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणिरयणपायपीढा अत्थरग[1]-मिउमसूरग[2]-नवतयकुसंत-लिच्च[3]-[लिंब ?] केसर[4]-पच्चुत्थ-ताभिरामा 'आईणग-रूय-बूर-णवनीत-तूलफासा सुविरचितरयत्ताणा ओयवियखोमदुगुल्ल-पट्टपडिच्छयणा रत्तंसुयसंवुया सुरम्मा'[5] पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

३१२. तेसि णं सीहासणाणं उप्पि पत्तेयं-पत्तेयं विजयदूसे पण्णत्ते। ते णं विजयदूसा सेया संखंक[6]-कुंद - दगरय - अमतमहियफेणपुंजसन्निकासा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

३१३. तेसि णं विजयदूसाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं वइरामया अंकुसा पण्णत्ता। तेसु णं वइरामएसु अंकुसेसु पत्तेयं-पत्तेयं कुंभिक्का मुत्तादामा पण्णत्ता। ते णं कुंभिक्का मुत्तादामा अण्णेहिं चउहिं 'कुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं तदद्धुच्चप्पमाणमेत्तेहिं'[7] सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता। ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरगमंडिया जाव[8] सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

३१४. तेसिं[9] णं पासायवडेंसगाणं उप्पि बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता सोत्थिय तधेव जाव[10] छत्ताइछत्ता ॥

३१५. विजयस्स णं दारस्स उभओ पासिं दुहओ णिसीहियाए दो दो तोरणा पण्णत्ता। 'वण्णओ जाव[11] सहस्सपत्तहत्थगा'[12] ॥

---

१. अच्छरग (क, ख, ग, त्रि)।

२. मलयमसूरय (ता)।

३. लिक्ख (ता); रायपसेणइयसूत्रे (सू० ३७) अस्य पदस्य द्वौ पाठभेदौ लभ्येते—'लिक्ख (क); लिव्व (ख, ग, घ, च, छ); ज्ञाताधर्मकथायां (१।१।१८) अस्य पदस्य 'लिव्व' इति पाठभेदो विद्यते। जीवाजीवाभिगमे (३।३११) मूलपाठे 'लिच्च' इति पदं विद्यते पाठान्तरे च 'लिक्ख' इति पदमस्ति। एतैः पाठभेदैर्ज्ञायते 'लिव्व' इति पाठस्य 'लिच्च इति रूपे परिवर्तनं जातम्। वृत्तिकारैर्यथा-यथा पाठो लब्धस्तथा-तथा व्याख्यातः—नायाधम्मकहाओ (वृत्ति पत्र १७) लिम्बो बालोरभ्रस्योर्णायुक्ता कृत्तिः। जीवाजीवाभिगमे (वृत्ति पत्र २१०) लिच्चानि नमनशीलानि च केशराणि। रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० ६६) लिम्बानि कोमलानि नमनशीलानि च केशराणि मध्ये यस्य मसूरकस्य तत् नवत्व-क्कुशान्तलिम्बकेशरम्। रायपसेणइयवृत्तौ कोमलानि, जीवाजीवाभिगमस्य वृत्तौ नमनशीलानि इति व्याख्यातमस्ति अनेन अर्थसादृश्यं प्रतीयते। 'लिच्च' इति पदं लिपिकाराणां प्रसादत एव जातमस्ति।

४. सीहकेसर (क, ख, ग, ट, त्रि); क्वचित् सिंहकेशरेति (मवृ)।

५. ओयवियखोमदुगुल्लपट्टपरिच्छयणा (दुगुल्लपडिच्छयणा—त्रि) सुविरचितरयत्ताणा रत्तंसुयसंवुया सुरम्मा आईणगरूयबूरणवणीततूलफासा मउया (क, ख, ग, ट, त्रि); आईणगरूयवरतूलफासा रत्तंसुयसंवुता सुरम्मा (ता)।

६. संख (ग, ट, त्रि, मवृ)।

७. तदद्धुच्चप्पमाणमेत्तेहिं अद्धकुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं (क, ख, ग, ट, त्रि)। °तदद्धुच्चत्तपमाणमेत्तेहिं (ता, राय० सू० ४०)।

८. जी० ३।२६५।

९. 'ता' मलयगिरिवृत्तौ च एतत्सूत्रं नैव लभ्यते।

१०. जी० ३।२८९-२९१।

११. जी० ३।२८८-२९१।

१२. ते णं तोरणा णाणामणिमया तहेव जाव अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१६. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो सालभंजियाओ पण्णत्ताओ। वण्णओ[1] ।।

३१७. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो णागदंतगा पण्णत्ता। 'णागदंतावण्णओ[2] उवरिमणागदंता णत्थि[3]' ।।

३१८. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो 'हयसंघाडा दो-दो गयसंघाडा एवं णर-किण्णर-किंपुरिस-महोरग-गंधव्व-उसभसंघाडा[4] सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा[5] एवं[6] पंतीओ वीहीओ मिहुणगा। दो-दो पउमलयाओ जाव[7] पडिरूवाओ ।।

३१९. तेसि[8] णं तोरणाणं पुरतो दो-दो दिसासोवत्थिया[9] पण्णत्ता सव्वरयणामया[10] अच्छा जाव पडिरूवा ।।

३२०. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो वंदणकलसा पण्णत्ता। वण्णओ[11] ।।

३२१. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो भिंगारगा पण्णत्ता वरकमलपइट्ठाणा जाव[12] महता-महता मत्तगयमहामुहागितिसमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

३२२. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो आयंसगा[13] पण्णत्ता। तेसि णं आयंसगाणं अय-मेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—तवणिज्जमया पयंठगा[14] वेरुलियमया छरुहा[15] वइरा-मया वरंगा[16] णाणामणिमया वलक्खा अंकमया मंडला अणोग्घसियनिम्मलाए छायाए समणुबद्धा[17] चंदमंडलपडिणिकासा महता-महता अद्धकायसमाणा[18] पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

---

१. जी० ३।३०३। जहेव णं हेट्ठा तहेव (क, ख, ग, ट, त्रि)।

२. जी० ३।३०२।

३. ते णं णागदंतगा मुत्ताजालंतरुसिया तहेव। तेसु णं णागदंतएसु बहवे किण्हे सुत्तवट्टवग्घारितमल्लदामकलावा जाव चिट्ठंति (क, ख, ग, ट, त्रि) स्वीकृतपाठो मलयगिरिवृत्तौ व्याख्यातोस्ति। 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एष नैव लभ्यते। प्रस्तुतप्रतिपत्तेः ३०२ सूत्रस्य 'उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति' इति पर्यवसानः पाठोत्र ग्रहणीयः 'तेसि णं णागदंतगाणं उवरिं' इत्यादिआलापको नात्र विवक्षितोस्ति।

४. हयसंघाडा जाव उसभसंघाडा पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. अतः परं रायपसेणइयसूत्रे संक्षिप्तपाठस्य स्थाने चत्वारि सूत्राणि (१४२-१४५) कृतानि सन्ति।

६. जी० ३।२६७।

७. जी० ३।२६८।

८. एतत्सूत्रं 'क, ख' प्रत्यौ मलयगिरिवृत्तौ च नैव लभ्यते।

९. अक्खयसोवत्थिया (ग, ट, त्रि)।

१०. सव्वजंबूणयामया (ता)।

११. ते णं चंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा तहेव सव्वरयणामया जाव पडिरूवा समणाउसो! (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१२. जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१३. आतंसगा (क, ख, ग); आदंसगा (ता, त्रि)।

१४. पाअंठगा (ता)।

१५. आवरुहा (ग); थरुहा (ता) थेरुहा (त्रि); वृत्तौ व्याख्यानात् पूर्वं उद्धृते पाठे 'थंभया' इति पदं दृश्यते। रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १७३) 'वेरुलियमया छरुहा' इति व्याख्यातमेव नास्ति।

१६. वारगा (क, ख, ग); वारंगा (ट, ता); वारसगा (त्रि)।

१७. सव्वतो चेव समणुबद्धा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१८. °सामाणा (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२३. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो 'वइरणाभा थाला पण्णत्ता'[1]। ते णं थाला अच्छ-तिच्छडिय-सालितंदुल-नहसंदट्ठ-पडिपुण्णा[2] इव[3] चिट्ठंति सव्वजंबूणदमया[4] अच्छा जाव पडिरूवा महता-महता रहचक्कसमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

३२४. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो पातीओ[5] पण्णत्ताओ। ताओ णं पातीओ अच्छोदय-पडिहत्थाओ णाणाविहस्स[6] फलहरितगस्स बहुपडिपुण्णाओ विव चिट्ठंति सव्व-रयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ महया-महया गोकलिंजगचक्कसमाणाओ[7] पण्ण-त्ताओ समणाउसो ! ॥

३२५. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो सुपतिट्ठगा[8] पण्णत्ता। ते णं सुपतिट्ठगा 'सुसव्वोसहिपडिपुण्णा णाणाविहस्स य पसाधणभंडस्स बहुपडिपुण्णा इव चिट्ठंति'[9] सव्व-रयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

३२६. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो मणोगुलियाओ[10] पण्णत्ताओ। 'ताओ णं मणोगुलियाओ सव्ववेरुलियामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ'[11]। तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरुप्पामया फलगा पण्णत्ता। तेसु णं सुवण्णरुप्पामएसु फलएसु बहवे वइरामया णागदंतगा पण्णत्ता। तेसु णं वइरामएसु णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया[12] पण्णत्ता। तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वायकरगा पण्णत्ता। 'ते णं वायकरगा'[13] किण्हसुत्त-सिक्कग-गवच्छिया, णीलसुत्तसिक्कग-गवच्छिया लोहियसुत्तसिक्कग-गवच्छिया, हालिद्द-सुत्तसिक्कग-गवच्छिया सुक्किलसुत्तसिक्कग-गवच्छिया सव्ववेरुलियामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

३२७. तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो चित्ता रयणकरंडगा पण्णत्ता, से जहाणामए— रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चित्ते रयणकरंडए वेरुलियमणि-फालियपडल-पच्चोयडे साए पभाए ते पदेसे सव्वतो समंता ओभासइ उज्जोवेइ तावेइ पभासेइ, एवामेव तेवि चित्ता रयणकरंडगा[14] साए पभाए ते पदेसे सव्वतो समंता ओभासेंति उज्जोवेंति तावेंति पभासेंति[15] ॥

३२८. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो हयकंठा गयकंठा नरकंठा किण्णरकंठा

---

१. वइरणाभे थाले पण्णत्ते (त्रि)।
२. बहुपडिपुण्णा (क, ख, ग, ट)।
३. विव (क, ट)।
४. °जंबूणतमया (क); जंबूणतामया (ग, ट, ता)।
५. वाधीओ (ता)।
६. नाणाविधपंचवण्णस्स (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।
७. गोलिंगचक्क° (क, ख, ता); गोकलिंगचक्क° (ट)।
८. पइट्ठा (ता)।
९. णाणाविहपसाहणगभंडविरचिया सव्वोसधि-पडिपुण्णा (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१०. मणगुलियाओ (ता)।
११. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१२. सिक्का (ता)।
१३. × (ता)।
१४. रयणकरंडगा पण्णत्ता वेरुलियपडलपच्चोयडा (क, ख, ग, ट, त्रि); रतणकरंडा वेरुलिय जाव (ता)।
१५. पभासेंति सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किंपुरिसकंठा महोरगकंठा गंधव्वकंठा उसभकंठा पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

३२९. 'तेसि णं तोरणाणं पुरतो'[1] दो-दो पुप्फचंगेरीओ, एवं मल्ल-'चुण्ण-गंध'[2]-वत्थाभरणचंगेरीओ सिद्धत्थचंगेरीओ लोमहत्थचंगेरीओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

३३०. तेसि[3] णं तोरणाणं पुरतो दो-दो पुप्फपडलाइं जाव लोमहत्थपडलाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं ॥

३३१. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो सीहासणाइं पण्णत्ताइं । 'तेसि णं सीहासणाणं वण्णओ जाव[4] दामा'[5] ॥

३३२. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो रुप्पच्छदा[6] छत्ता पण्णत्ता । ते णं छत्ता वेरुलियविमलदंडा[7] जंबूणयकण्णिका वइरसंधी मुत्ताजालपरिगता अट्ठसहस्सवरकंचणसलागा दद्दरमलयसुगंधी सव्वोउअसुरभिसीयलच्छाया मंगलभत्तिचित्ता चंदागारोवमा[8] ॥

३३३. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो चामराओ पण्णत्ताओ । ताओ णं चामराओ 'चंदप्पभ-वइर-वेरुलियनानामणिरयणखचियचित्तदंडाओ'[9] 'सुहुमरयतदीहवालाओ संखंक-कुंद-दगरय - अमयमहियफेणपुंजसण्णिकासाओ'[10] सव्वरयणामयाओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

३३४. तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो-दो तेल्लसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा पत्तसमुग्गा चोयसमुग्गा तगरसमुग्गा एलासमुग्गा हरियालसमुग्गा हिंगुलयसमुग्गा[11] मणोसिलासमुग्गा अंजणसमुग्गा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

३३५. विजये णं दारे अट्ठसतं चक्कज्झयाणं, एवं मिगज्झयाणं गरुडज्झयाणं ऋच्छज्झयाणं[12] छत्तज्झयाणं पिच्छज्झयाणं सउणिज्झयाणं सीहज्झयाणं उसभज्झयाणं, अट्ठसतं सेयाणं

---

१. तेसु णं हयकंठएसु जाव उसभकंठएसु (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. गंध चुण्ण (क, ख, ग, ट, त्रि); वण्ण चुण्ण गंध (ता) ।

३. 'ता' प्रतौ प्रस्तुतसूत्रस्य स्थाने पाठसंक्षेपोस्ति —एवं पडलगा वि दो दो । वृत्तावपि एवमेव व्याख्यातं दृश्यते ।

४. जी० ३११-३१३ ।

५. तेसि णं सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तहेव जाव पासादीया ४ (क, ख, ग, ट, त्रि); वण्णओ निरवयवो (ता) ।

६. रुप्पच्छया (ग, ट, त्रि); रुप्पमया (राय० सू० १५९) ।

७, वेरुलियभिसंतविमलदंडा (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

८. चंदागारोवमा वट्टा (क, ग, ट, त्रि); चंदागारोवमा छत्ता (ख, ता); चन्द्रमण्डलवद्वृत्तानीति भावः (मवृ) ।

९. नाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लिआओ (क, ख, ग, ट, त्रि); चंदप्पभवइरवेरुलियणाणामणिरयणओवितचित्तदंडाओ (ता) ।

१०. संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसण्णिकासाओ सुहुमरयतदीहवालाओ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

११. हिंगुलुय° (ता) ।

१२. विग° (ता); मुद्रित वृत्तौ (पत्र २१५) 'मृगगरुडरुरुकच्छत्र' इति पाठो दृश्यते, किन्तु हस्तलिखितवृत्यादर्शे 'रुरुक' स्थाने 'ऋच्छ' इतिपदं प्राप्तमस्ति । रायपसेणइयसूत्रस्य (द्रष्टव्यं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउविसाणाणं णागवरकेऊणं। एवामेव सपुव्वावरेणं विजयदारे असीयं[1] केउसहस्सं भवतित्ति मक्खायं ॥

३३६. विजये णं दारे णव भोमा[2] पण्णत्ता। तेसि णं भोमाणं अंतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता जाव[3] मणीणं फासो ॥

३३७. तेसि णं भोमाणं उप्पिं उल्लोया पउमलयाभत्तिचित्ता जाव[4] सामलया भत्तिचित्ता सव्वतवणिज्जमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

३३८. तेसि णं भोमाणं वहुमज्झदेसभाए जेसे पंचमे भोमे[5], तस्स णं भोमस्स वहुमज्झदेसभाए[6], एत्थ णं महं एगे सीहासणे पण्णत्ते। सीहासणवण्णओ[7] विजयदूसे[8] अंकुसे जाव[9] दामा चिट्ठंति ॥

३३९. तस्स णं सीहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं विजयस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसहस्साणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

३४०. तस्स णं सीहासणस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं विजयस्स देवस्स चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं चत्तारि भद्दासणा पण्णत्ता।

३४१. तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, एत्थ णं विजयस्स देवस्स अब्भितरियाए परिसाए अट्ठण्हं देवसाहस्सीणं अट्ठ भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

३४२. तस्स णं सीहासणस्स दाहिणेणं, एत्थ णं विजयस्स देवस्स मज्झिमियाए परिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

३४३. तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं, एत्थ णं विजयस्स देवस्स बाहिरियाए परिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

३४४. तस्स णं सीहासणस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं विजयस्स देवस्स सत्तण्हं अणियाहिवतीणं सत्त भद्दासणा पण्णत्ता ॥

३४५. तस्स णं सीहासणस्स 'पुरत्थिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं, एत्थ णं'[10] विजयस्स देवस्स सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। 'तं जहा—पुरत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, एवं चउसुवि जाव उत्तरेणं चत्तारि

---

१६२ सूत्रस्य पादटिप्पणम्) हस्तलिखितवृत्तावपि 'ऋच्छ' इति पदं दृश्यते। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र ६०) 'विग इति पदं व्याख्यातमस्ति।

१. आसीयं (क, ख, ग, ता)।

२. भोम्मा (ता) सर्वत्र।

३. जी० ३।२७५-२८४।

४. जी० ३।२६८।

५. भोम्मे (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।

६. अतोग्रे 'ता' प्रतौ भिन्ना वाचना दृश्यते— एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता जोयणं आयाम-विक्खंभेणं अद्धजोयणं बाहल्लेणं सव्वमणीमयी अच्छा जाव पडिरूवा। तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं महं एगे सीहासणे प वण्णओ विजयदूसे अंकुसे कुंभिक्केसु जाव सिरीए अतीव २।

७. जी० ३।३११।

८. विजयदूसे जाव (क, ख, ग, ट, त्रि)।

९. जी० ३।३११-३१३।

१०. सव्वतो समंता (ता, मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहस्सीओ'[1]। 'अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणे पण्णत्ते'[2]॥

३४६. विजयस्स णं दारस्स उवरिमागारे[3] सोलसविहेहिं रतणेहिं उवसोभिते,[4] तं जहा—रयणेहिं वइरेहिं वेरुलिएहिं जाव[5] रिट्ठेहिं॥

३४७. विजयस्स णं दारस्स उप्पिं[6] अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता[7], तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ जाव[8] दप्पणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा॥

३४८. विजयस्स[9] णं दारस्स उप्पिं बहवे कण्हचामरज्झया जाव[10] सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा॥

३४९. विजयस्स[11] णं दारस्स उप्पिं बहवे छत्तातिछत्ता तहेव[12]॥

३५०. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—विजए णं दारे विजए णं दारे? गोयमा! विजए णं दारे विजए णाम देवे 'महिड्ढीए महज्जुतीए[13] •महाबले महायसे महेसक्खे[14]° महाणुभावे[15] पलिओवमट्ठितीए परिवसति'[16]। से णं तत्थ चउण्हं सामाणिय-साहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, विजयस्स णं दारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिं च बहूणं 'विजयाए रायहाणीए वत्थव्वगाणं'[17] देवाणं देवीण य आहेवच्चं[18] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं° दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—विजए दारे-विजए दारे।

---

१. × (ता, मवृ)।

२. °भद्दासणा पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि); अवसेसेसु णं भोम्मेसु बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ सीहासणे पं वण्णओ णवरं परिवारो णत्थि (ता); अवशेषेषु प्रत्येकं-प्रत्येकं सिंहासनम-परिवारं सामानिकादिदेवयोग्यभद्रासनरूपपरि-वाररहितं प्रज्ञप्तम् (मवृ)।

३. उवरिमागार (क, ग, त्रि); उत्तिमा° (ख, ट, ता)।

४. उवसोभिता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. जी० ३।७।

६. उप्पिं बहवे (क, ख, ग, ट, त्रि); उवरिं ता)।

७. अतोग्रे 'ता' प्रतौ भिन्ना वाचनास्ति—जाव सतसहस्सपत्तहत्थगा।

८. जी० ३।२८६।

९,११. ३४८, ३४९ सूत्रे मलयगिरिणा नैव व्याख्याते। शांतिचन्द्रसूरिणा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति-वृत्तौ (पत्र ६२) एतस्मिन् विषये एवं टीकितम्—'विजयस्स णं दारस्स उप्पिं बहवे किण्हचामरज्झया जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। विजयस्स णं दारस्स उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता तहेव' 'विजयस्स णं दारस्स उप्पिं बहवे किण्हचामरज्झया' इत्यादि सूत्र-पाठः जीवाभिगमसूत्रबह्वादर्शेषु दृष्टत्वाल्लि-खितोस्ति, स च पूर्ववद् व्याख्येयः, वृत्तौ तु केनापि हेतुना व्याख्यातो नास्तीति।

१०. जी० ३।२९०।

१२. जी० ३।२९१।

१३. सं० पा०—महज्जुतीए जाव महाणुभावे।

१४. महासोक्खे (मवृपा)।

१५. × (मवृ)।

१६. परिवसति महिड्ढीए क्षा हारविरायतवच्छे जाव दसदिसाओ उज्जोवे (ता)।

१७. वाणमंतराणं (ता)।

१८. सं० पा०—आहेवच्चं जाव दिव्वाइं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अदुत्तरं च णं गोयमा ! विजयस्स णं दारस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते—जं ण कयाइ णासि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ,[1] °भुविं च भवति य भविस्सति य धुवे णियए सासए अक्खए° अवट्ठिए णिच्चे'[2] ।।

विजयाए रायहाणीए अधिकारो

३५१. कहि णं भंते ! विजयस्स देवस्स विजया णाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! विजयस्स णं दारस्स पुरत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीतिवतित्ता अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे वारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं विजयस्स देवस्स विजया णाम रायहाणी पण्णत्ता—बारस जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, सत्ततीसं जोयणसहस्साइं नव य अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेणं पण्णत्ता ।।

३५२. सा णं एगेणं पागारेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता । से णं पागारे सत्तसीसं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले अद्धतेरस जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे 'सक्कोसाइं छ'[3] जोयणाइं विक्खंभेणं, उप्पि तिण्णि सद्धकोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले विच्छिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पि तणुए बाहिं वट्टे अंतो चउरंसे गोपुच्छसंठाणसंठिते सव्व-कणगामए अच्छे जाव पडिरूवे ।।

३५३. से णं पागारे णाणाविहपंचवण्णेहिं कविसीसएहिं उवसोभिए, तं जहा—किण्हे-हिं जाव सुक्किलेहिं । ते णं कविसीसका अद्धकोसं आयामेणं, पंचधणुसताइं विक्खंभेणं, देसोणमद्धकोसं[4] उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

३५४. विजयाए णं रायहाणीए एगमेगाए बाहाए पणुवीसं-पणुवीसं दारसतं भवतीति मक्खायं । ते णं दारा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं[5], तावतियं चेव पवेसेणं, सेता वरकणगथूभियागा 'वण्णओ जाव[6] वणमालाओ'[7] ।।

३५५. तेसि णं दाराणं उभओ पासिं दुहओ णिसीहियाए दो-दो पगंठगा पण्णत्ता । ते णं पगंठगा एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च आयाम-विक्खंभेणं, पन्नरस जोयणाइं अड्ढा-इज्जे य कोसे बाहल्लेणं पण्णत्ता सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसि णं पगंठगाणं उप्पि पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता । ते णं पासायवडेंसगा एक्कतीसं जोयणाइं

---

१. सं० पा० —भविस्सइ जाव अवट्ठिए ।

२. चिह्नाङ्कितः पाठः 'ता' प्रतौ मलयगिरिवृत्तौ च नैव लभ्यते । शान्तिचन्द्रसूरिणा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र ६३) एतस्य सूत्रस्य विषये एवं टिप्पणी कृतास्ति—एतत् सूत्रं वृत्तावदृष्टव्याख्यानमपि जीवाभिगमसूत्रबह्वादर्शेषु दृष्टत्वाल्लिखितमस्तीति ।

३. छ सकोसाइं (क, ख, ट, ता) ।

४. देसूणं अद्ध° (क, ख, ट, ता) ।

५. आयामविक्खंभेणं (क, ख, ट, ता) ।

६. जी० ३।३००-३०६ ।

७. ईहामिय तहेव जहा विजए दारे जाव तवणिज्ज-वालुगपत्थडा सुहफासा सस्सिरीया सरूवा पासादीया ४ तेसि णं दाराणं उभयो पासिं दुहओ णिसीहियाए दो-दो चंदणकलसपरिवाडीओ पण्णत्ताओ तहेव भाणियव्वं जाव वणमालाओ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोसं च उड्ढं उच्चत्तेणं, पन्नरस जोयणाइं अड्ढाइज्जे य कोसे आयाम-विक्खंभेणं,[1] अब्भुग्गयमूसित-पहसिया विव वण्णओ उल्लोगा सीहासणाइं जाव[2] मुत्तादामा सेसं इमाए गाहाए अणुगंतव्वं, तं जहा—

तोरण मंगलया सालभंजिया णागदंतएसु दामाइं।
संघाडं पंति वीधी मिधुण लता सोत्थिया चेव ॥१॥
वंदणकलसा भिंगारगा य आदंसगा य थाला।
पातीओ य सुपतिट्ठा मणोगुलिया वातकरगा य ॥२॥
चित्ता रयणकरंडा हयगय णरकंठका य।
चंगेरी पडला सीहासण छत्त चामरा उवरि भोमा य ॥३॥

एवामेव सपुव्वावरेणं विजयाए रायहाणीए एगमेगे दारे असीतं-असीतं केउसहस्सं भवतीति मक्खायं ॥

३५६. 'तेसि णं दाराणं पुरओ'[3] सत्तरस-सत्तरस भोमा पण्णत्ता। तेसि णं भोमाणं 'भूमिभागा उल्लोया य भाणियव्वा'[4] 'तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए जेते नवमनवमा भोमा, तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणा पण्णत्ता। सीहासणवण्णओ जाव[5] दामा जहा हेट्ठा। एत्थ णं अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणा[6] पण्णत्ता ॥

३५७. तेसि णं दाराणं उवरिमागारा सोलसविधेहिं रयणेहिं उवसोभिया तं चेव जाव[7] छत्ताइछत्ता। एवामेव पुव्वावरेण विजयाए रायहाणीए पंच दारसता भवंतीति मक्खाया'[8] ॥

३५८. विजयाए णं रायहाणीए चउद्दिसिं पंच-पंच जोयणसताइं अवाहाए, एत्थ णं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—'असोगवणे सत्तिवण्णवणे चंपगवणे चूतवणे'[9]।

'पुव्वेण असोगवणं, दाहिणतो होइ सत्तिवण्णवणं।
अवरेणं चंपगवणं, चूयवणं उत्तरे पासे'[10] ॥१॥

---

१. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' संकेतितादर्शेषु पाठ-संक्षेपस्य भिन्ना पद्धतिरस्ति, सा चैवं विद्यते—सेसं तं चेव जाव समुग्गया णवरं बहुवयणं भाणितव्वं। विजयाए णं रायहाणीए एगमेगे दारे अट्ठसयं सेयाणं चउविसाणाणं णागवर-केऊणं।

२. जी० ३।३०७-३३५।

३. विजयाए णं रायहाणीए एगमेगे दारे (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।

४. जी० ३।३३६-३३७। उल्लोया य पउमलया-भत्तिचित्ता (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।

५. जी० ३।३३८-३४५।

६. भद्दासणा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

७. जी० ३।३४६-३४६।

८. चिन्हांकितपाठस्थाने 'ता' प्रतौ एवं पाठोस्ति—तेसि णं भोम्माणं अंतो बहुसमर तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए। जेते णवमा-णवमा भोम्मा तेएसिणं भोम्मा। बहुमज्झ पत्तेयं २ मणिपेढिया सीहासरिट्ठेहिं। तेसि णं दाराणं उप्पि अट्ठट्ठमंगलगा सतसहस्सपत्तहत्थगा।

९. पुरत्थिमेणं दाहि पच्च उत्त (ता)।

१०. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु गाथायाः स्थाने एष पाठो लभ्यते—पुरत्थिमेणं असोगवणे दाहिणेणं सत्तवण्णवणे पच्चत्थिमेणं चंपगवणे उत्तरेणं चूतवणे। प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'पुव्वेण असोगवणं इत्यादिरूपा गाथा पाठसिद्धा।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते णं वणसंडा साइरेगाइं दुवालस जोयणसहस्साइं आयामेणं, पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता—पत्तेयं-पत्तेयं पागारपरिक्खित्ता किण्हा[1] किण्होभासा वणसंडवण्णओ भाणियव्वो जाव[2] बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति णिसीदंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीलंति मोहंति पुरापोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कम्माणं कडाणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति ।।

३५९. तेसि णं वणसंडाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता। ते णं पासायवडेंसगा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च आयाम-विक्खंभेणं, अब्भुग्गतमूसिय-पहसिया विव 'तहेव जाव'[3] अंतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता, उल्लोया पउमलयाभत्तिचित्ता भाणियव्वा। तेसि णं पासायवडेंसगाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणा पण्णत्ता वण्णावासो सपरिवारा। तेसि णं पासायवडेंसगाणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया जाव[4] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—असोए सत्तिवण्णे[5] चंपए चूते। ते णं तत्थ 'साणं-साणं वणसंडाणं, साणं-साणं पासायवडेंसयाणं,'[6] साणं-साणं सामाणियाणं, साणं-साणं अग्गमहिसीणं, साणं-साणं परिसाणं, साणं-साणं आयरक्खदेवाणं आहेवच्चं जाव[7] विहरंति ।।

३६०. विजयाए णं रायहाणीए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव पंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए तणसद्दविहूणे जाव देवा य देवीओ य आसयंति जाव[8] विहरंति।

३६१. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं एगे महं उवगारियालयणे[9] पण्णत्ते—बारस जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं सत्त य पंचाणउते जोयणसते किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं, अद्धकोसं बाहल्लेणं, सव्वजंबूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे ।।

३६२. से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते। पउमवरवेइयाए वण्णओ, वणसंडवण्णओ जाव[10] विहरंति। से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं उवगारियालयणसमे परिक्खेवेणं ।।

३६३. तस्स णं उवगारियालयणस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता।

इत्येव लभ्यते। ताडपत्रादर्शेपि एषा गाथा उपलब्धास्ति। रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १८३) एषा गाथा संङ्ग्रहणीगाथात्वेन निर्दिष्टास्ति। प्रस्तुतागमादर्शेषु यः पाठोत्र पाठान्तररूपेण उट्टङ्कितोस्ति, स तत्र मूलपाठे विद्यते।

१. अतोग्रे 'ता' प्रतौ च पाठसंक्षेपोस्ति—किण्हा २ जाव आसयंति।

२. जी० ३।२७५-२९७।

३. वण्णओ (ता)। जी० ३।३०७-३०९।

४. जी० ३।३५०।

५. सत्तवण्णे (क, ख, त्रि)।

६. बहुवचनं प्राकृतत्वात्, प्राकृते हि वचनव्यत्ययो भवतीति (मवृ)।

७. जी० ३।३५०।

८. जी० ३।२७७-२८४,२८६-२९७।

९. ओवारिय° (क, ख, ग, ट, त्रि); उवकारिय° (ता)।

१०. जी० ३।२६३-२९७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वण्णओ[1] तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं तोरणा पण्णत्ता । वण्णओ[2] ।।

३६४. तस्स णं उवगारियालयणस्स उप्पि बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव 'मणीणं फासो'[3] । तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे मूलपासायवडेंसए पण्णत्ते । से णं[मूल ?][4] पासायवडेंसए 'बावट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च आयाम-विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसियप्पह-सिते तहेव । तस्स णं [मूल ?] पासायवडेंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[5] मणिफासे उल्लोए[6] ।।

३६५. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता । सा च 'एगं जोयणमायामविक्खंभेणं, अद्धजोयणं'[7] बाहल्लेणं सव्वमणिमई[8] अच्छा जाव पडिरूवा ।।

३६६. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं महं एगे सीहासणे पण्णत्ते । एवं सीहासण-वण्णओ[9] सपरिवारो ।।

३६७. तस्स[10] णं पासायवडेंसगस्स उप्पि बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता ।।

३६८. से णं [मूल ?] पासायवडेंसए अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते । ते णं पासायवडेंसगा एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धसोलसजोयणाइं अद्धकोसं च आयाम-विक्खंभेणं, अब्भुग्गत-मूसियपहसिया विव तहेव[11] । तेसि णं पासायवडेंसयाणं अंतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा उल्लोया । तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणं पण्णत्तं, वण्णओ[12] । तेसिं परिवारभूता भद्दासणा पण्णत्ता । तेसि णं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता ।।

३६९. ते णं पासायवडेंसका अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता । ते णं पासायवडेंसका 'अद्धसोलसजोयणाइं अद्धकोसं च'[13] उड्ढं उच्चत्तेणं, देसूणाइं अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसियपहसिया विव

---

१. जी० ३।२८७।
२. छत्तातिछत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि); जी० ३। २८८-२९१ ।
३. मणीहिं उवसोभिते मणिवण्णओ गंधरसफासो (क, ख, ग, ट, त्रि); जी० ३।२७७-२८४ ।
४. अत्र 'मूल' पदं लिपिदोषेण प्रमादेण वा त्रुटितं प्रतीयते । प्रासादावतंसकात् पूर्वं सर्वत्रापि मूलप्रासादावतंसकः इति पाठ उपयुक्तोस्ति । राजप्रश्नीयसूत्रे (२०४,२०५) पि 'मूलपासाय-वडेंसगे' इति पाठो लभ्यते ।
५. जी० ३।३०७,३०८ ।
६. अद्धतेवट्ठि जोयणाणि अद्धविक्खंभेणं जावुल्लोआ (ता) ।
७. दो जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं जोयणं (क, ख, ट) ।
८. सव्वतो समंता मणिमयी (ता) ।
९. जी० ३।३३८-३४५ ।
१०. एतत् सूत्रं 'ता, प्रतौ च नोपलभ्यते ।
११. जी० ३।३०७-३०९ ।
१२. जी० ३।३११-३१३। सिंहासनवर्णनं च प्रागवत् केवलमत्रापि सिंहासनमपरिवारं वक्तव्यम् (मवृ) ।
१३. पण्णरसजोयणाणि अड्ढातिज्जे य कोसे (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहेव[1]। तेसि णं पासायवडेंसगाणं अंतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा उल्लोया। तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं पउमासणा पण्णत्ता। तेसि णं पासायवडेंसगाणं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता ।।

३७०. ते णं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता। ते णं पासायवडेंसका देसूणाइं अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, देसूणाइं चत्तारि जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं अब्भुग्गतमूसियपहसिया विव भूमिभागा उल्लोया भद्दासणाइं उवरिं मंगलगा झया छत्तातिछत्ता ।।

३७१. ते[2] णं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता। ते णं पासायवडेंसगा देसूणाइं चत्तारि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, देसूणाइं दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेण अब्भुग्गयमूसियपहसिया विव भूमिभागा उल्लोया पउमासणाइं उवरिं मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता ।।

३७२. तस्स णं मूलपासायवडेंसगस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं विजयस्स देवस्स सभा सुधम्मा पण्णत्ता—अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं, छ सक्कोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, णव जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसतसंनिविट्ठा अब्भुग्गयसुकयवइरवेदियातोरण-वररइयसालभंजिया-सुसिलिट्ठ[3]-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थवेरुलियविमलखंभा णाणामणि-कणगरयणखइय-उज्जलबहुसमसुविभत्तभूमिभागा[4] 'ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गयवइरवेइया-परिगयाभिरामा[5] विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्ताविव अच्चिसहस्समालणीया रूवगसहस्स-कलिया भिसमाणा[6] भिब्भिसमाणा[7] चक्खुलोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा[8] कंचण-मणिरयणथूभियागा नाणाविहपंचवण्णघंटापडागपरिमंडितग्गसिहरा धवला मिरीइकवचं विणिम्मुयंती लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियवंदण-कलसा वंदणघडसुकयतोरण-पडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदाम-कलावा पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिता कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणाइया[9] अच्छा जाव पडिरूवा ।।

---

१. जी० ३।३०७-३०९ ।

२. आदर्शेषु एतत् सूत्रं नैव लभ्यते। वृत्तिकारेणापि अस्य उल्लेखः कृतोस्ति– तदेवं चतस्रः प्रासादावतंसकपरिपाट्यो भवन्ति, क्वचित्तिस्र एव दृश्यन्ते न चतुर्थी। वृत्तौ एतद् व्याख्यात-मस्ति।

३. रायपसेणइय (सू० ३२) सूत्रे 'सुसिलिट्ठ°' इति वाक्यं स्वतन्त्रमस्ति।

४. °सुविभत्तचित्तरमणिज्जकुट्टिमतला (क, ख, ग, ट, त्रि); सुविभक्तो निचितो—निविडो- रमणीयश्च भूमिभागो यस्यां सा (मवृ)।

५. खंभुग्गय° (क, ग)।

६. °माणी (ग, त्रि)।

७. °माणी (ग, त्रि)।

८. ईहामिगउसभउरग जाव सस्सिरीयरूवा (ता)।

९. दिव्वतुडियमधुरसद्दसंणिणाइया सुरम्मा सव्व-रयणामई (क, ख, ट); दिव्वतुडियमधुरसद्द-संपणाइया सुरम्मा सव्वरयणामई (ग, त्रि); दिव्वउडियसद्द संणिणाइया सव्वरयणामई (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७३. तीसे णं सोहम्माए सभाए तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं। ते णं दारा पत्तेयं-पत्तेयं दो-दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणं विक्खंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा 'दारवण्णओ जाव' वणमालाओ'[1] ॥

३७४. तेसिं[3] णं दाराणं पुरओ 'पत्तेयं-पत्तेयं मुहमंडवे पण्णत्ते'[4] ते णं मुहमंडवा अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं, 'छजोयणाइं सक्कोसाइं'[5] विक्खंभेणं, साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसयसंनिविट्ठा जाव[6] उल्लोया भूमिभागवण्णओ ॥

३७५. तेसि णं मुहमंडवाणं उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं अट्ठट्ठमंगलगा 'झया छत्ताइछत्ता'[7]

३७६. तेसि णं मुहमंडवाणं पुरओ 'पत्तेयं-पत्तेयं पेच्छाघरमंडवे पण्णत्ते'[8] ते णं पेच्छाघरमंडवा अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं[9], °छ जोयणाइं सक्कोसाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं° दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जाव[10] मणीणं फासो ॥

३७७. तेसि णं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं 'वइरामए अक्खाडगे पण्णत्ते'[11]। तेसि णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता। ताओ णं मणिपेढियाओ जोयणमेगं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

३७८. तासि णं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं 'सीहासणे पण्णत्ते'[12]। सीहासण-वण्णओ[13] सपरिवारो[14] ॥

३७९. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता ॥

३८०. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ 'पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता'[15]। ताओ णं मणिपेढियाओ दो-दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ

---

१. जी० ३।३००-३०६।

२. जाव वणमालादारवण्णओ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

३. अतः पूर्वं आदर्शेषु एकं अतिरिक्तसूत्रं दृश्यते—तेसि णं दाराणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगला ज्झया छत्ताइछत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि); तेसि णं दाराणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगला जाव सतसहस्सपत्त-हत्था सव्वरयणामया अच्छा जाव पडि (ता)। प्रतौ पूर्ववर्तिसूत्रे 'जाव सतसहस्सपत्तहत्थगा' इति पाठसमाहारोस्ति।

४. तिदिसिं तओ मुहमंडवा पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. छ सकोसाइं जोयणाइं (ता)।

६. जी० ३।३७२,३७३, ३०८, २७७-२८४।

७. पण्णत्ता सोत्थिय जाव मच्छ (ग,त्रि); पण्णत्ता तं जहा सोत्थिय जाव मच्छ (मवृ); ता'

८. तिदिसिं तओ पेच्छाघरमंडवा पण्णत्ता (क, ख, ट)।

९. सं० पा०—आयामेणं जाव दो।

१०. जी० ३।३७०-३७४,३०८,२७७-२८४।

११. वइरामया अक्खाडगा पण्णत्ता (क, ख, ट); वइरामया अक्खवाडगा पण्णत्ता (ग, त्रि)।

१२. सीहासणा पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१३. जी० ३।३०९-३११, ३३९-३४५।

१४. जाव दामा अपरिवारा (क, ख, ट); जाव दामा सपरिवारो (ग, त्रि); जाव दामा (ता)।

१५. तिदिसिं तओ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

३८१. तासि णं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं 'चेइयथूभे पण्णत्ते'[1]। ते णं चेइय-थूभा 'दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, सातिरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं',[2] सेया संखंक-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुंजसण्णिकासा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

३८२. तेसि णं चेइयथूभाणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा बहुकिण्हचामरज्झया[3] छत्तातिछत्ता ॥

३८३. तेसि णं चेतियथूभाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

३८४. तासि णं मणिपेढियाणं[4] उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं चत्तारि जिणपडिमाओ जिणुस्सेह-पमाणमेत्ताओ[5] पलियंकणिसण्णाओ[6] थूभाभिमुहीओ चिट्ठंति,[7] तं जहा—उसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा ॥

३८५. तेसि णं चेइयथूभाणं पुरओ[8] पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ दो-दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

३८६. तासि णं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं चेइयरुक्खे पण्णत्ते, ते णं चेइयरुक्खा अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधी, अद्धजोयणं विक्खंभेणं, छजोयणाइं विडिमा, बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणाइं[9] आयाम-विक्खंभेणं[10], साइरेगाइं अट्ठजोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

३८७. तेसि णं चेइयरुक्खाणं अयमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—'वइरामयमूल-रययसुपतिट्ठितविडिमा'[11] रिट्ठामयकंद[12]-वेरुलियरुइल-खंधा सुजातवरजातरूवपढमगविसाल-साला नाणामणिरयणविविधसाहप्पसाह - वेरुलियपत्त- तवणिज्जपत्तवेंटा जंबूणयरत्तमउय-

---

१. चेइयथूभा पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, ता, त्रि, मवृ)।

२. साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं (ता, मवृ)।

३. °झया पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

४. मणिपीढियाणं (त्रि)।

५. °मेत्तीओ (ता)।

६. संपलियंक° (ता)।

७. सन्निविट्ठाओ चिट्ठंति (क, ग, त्रि); सन्निखित्ताओ चिट्ठंति (ख, ट, राय० सू० २२५)।

८. पुरओ तिदिसिं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

९. अद्धजोयणाइं (क, ग, ट, त्रि)। मलयगिरिणा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'सापि चार्द्धं योजनं विष्कम्भेण' इति व्याख्यातम्, किन्तु एतत् सम्यग् न प्रतीयते। रायपसेणइय (सू० २२७ वृत्ति पृ० २१६) 'अष्टौ योजनानि विष्कम्भेण' इति व्याख्यातमस्ति तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति-वृत्तावपि (पत्र ३३२) 'अष्टौ योजनानि आयामविष्कम्भाभ्यां' इति व्याख्यातं दृश्यते, अतः 'अट्ठ जोयणाइं' इति पाठः एव समी-चीनोस्ति।

१०. विक्खंभेणं (ता, मवृ)।

११. वइरामयमूला रययसुपतिट्ठिता विडिमा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१२. रिट्ठामयविउलकंद (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुकुमालपवालपल्लववरंकुरधरा[1] विचित्तमणिरयणसुरभिकुसुमफलभरणमियसाला सच्छाया सप्पभा सस्सिरीया[2] सउज्जोया अधियं णयणमणणिव्वुतिकरा अमयरससमरसफला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

३८८. ते णं चेइयरुक्खा अण्णेहिं बहूहिं तिलय-लवय-छत्तोवग-सिरीस-सत्तिवण्ण-दहिवण्ण-लोद्ध-धव-चंदण-[अज्जुण ?][3]-नीव-कुडय-कयंब-पणस-ताल-तमाल-पियाल-पियंगु-पारावय-रायरुक्ख-नंदिरुक्खेहिं[4] सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता ॥

३८९. ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा 'कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो'[5] कंदमंतो जाव[6] सुरम्मा ॥

३९०. ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा अण्णाहिं बहूहिं पउमलयाहिं जाव[7] सामलयाहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता । ताओ णं पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ जाव[8] पडिरूवाओ ॥

३९१. तेसि णं चेइयरुक्खाणं उप्पिं[9] अट्ठट्ठमंगलगा 'झया छत्तातिछत्ता'[10] ॥

३९२. तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ 'पत्तेयं-पत्तेयं'[11] मणिपेढिया पण्णत्ता । ताओ णं मणिपेढियाओ जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

३९३. तासि णं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं महिंदज्झए पण्णत्ते । ते णं महिंदज्झया अद्धट्ठमाइं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं उव्वेहेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, वइरामय-वट्टलट्ठसंठिय-सुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपतिट्ठिता विसिट्ठा अणेगवर-पंचवण्णकुडभी-सहस्स-परिमंडियाभिरामा वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडाग-छत्तातिछत्तकलिया तुंगा गगणतल-मणुलिहंतसिहरा[12] पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

३९४. तेसि णं महिंदज्झयाणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता ।

३९५. तेसि णं महिंदज्झयाणं पुरओ 'पत्तेयं-पत्तेयं'[13] णंदा पुक्खरिणी पण्णत्ता । ताओ णं पुक्खरिणीओ अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं 'छ जोयणाइं सक्कोसाइं'[14] विक्खंभेणं, दस-

---

१. जंबूणयरत्तमउयसुकुमालवालपल्लवसोभंतवरं-कुरग्गसिहरा (क,ख,ग,ट,त्रि); जंबूणयरत्तम-उयसुकुमालकोमलपवालपल्लववरंकुरधरा (ता); क्वचित्पाठः 'जंबूणयरत्तमउयसुकुमालकोमल-पल्लवंकुरग्गसिहरा' (मवृ) ।

२. समिरीया (ख) ।

३. ५८३ सूत्रे 'अज्जुणा' इति पदं दृश्यते । औप-पातिकेपि (सूत्र ९) 'चंदणेहिं अज्जुणेहिं' इति पाठो लभ्यते ।

४. 'ता' प्रतौ 'बहूहिं तिलएहिं लवएहिं' इत्यादीनि सर्वाणि वृक्षवाचकानि पदानि तृतीया बहुवच-नान्तानि दृश्यन्ते ।

५. मूलवंतो (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

६. जी० ३।२७४-२७६ ।

७. जी० ३।२९८ ।

८. जी० ३।२९८ ।

९. उप्पिं बहवे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१०. जाव हत्थगा (ता); जाव सहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा (मवृ) ।

११. तिदिसिं तओ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१२. गगणतलमभिलंघमाणसिहरा (क, ख, ग, ट, ता, त्रि) ।

१३. तिदिसिं तओ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१४. छ सकोसाइं जोयणाइं (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छाओ सण्हाओ पुक्खरिणीवण्णओ, पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइया-परिक्खित्ताओ पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ वण्णओ[1] ॥

३९६. तासि णं णंदाणं पुक्खरिणीणं तिदिसिं तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता। तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं 'वण्णओ, तोरणा भाणियव्वा जाव[2] छत्तातिच्छत्ता'[3] ॥

३९७. सभाए णं सुहम्माए छ मणोगुलियासाहस्सीओ[4] पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमेणं दो साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं दो साहस्सीओ, दाहिणेणं एगा साहस्सी, उत्तरेणं एगा साहस्सी। तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरुप्पामया फलगा पण्णत्ता। तेसु णं सुवण्णरुप्पामएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंतगा पण्णत्ता। तेसु णं वइरामएसु नागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तवद्धा वग्घारितमल्लदामकलावा जाव सुक्किलसुत्तबद्धा वग्घारितमल्लदामकलावा। ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा जाव[5] चिट्ठंति ॥

३९८. सभाए णं सुहम्माए छ गोमाणसीसाहस्सीओ[6] पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमेणं दो साहस्सीओ, एवं पच्चत्थिमेणवि, दाहिणेणं सहस्सं एवं उत्तरेणवि। तासु णं गोमाणसीसु बहवे सुवण्णरुप्पामया फलगा पण्णत्ता[7]। °तेसु णं सुवण्णरुप्पामएसु फलगेसु बहवे वइरामया नागदंतगा पण्णत्ता°। तेसु णं वइरामएसु नागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता। तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं धूवघडियाओ कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामाओ जाव[8] घाणमणणिव्वुइकरेणं गंधेणं ते पएसे सव्वतो समंता आपूरेमाणीओ-आपूरेमाणीओ सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणीओ-उवसोभेमाणीओ चिट्ठंति ॥

३९९. सभाए[9] णं सुधम्माए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[10] मणीणं फासो उल्लोए पउमलयाभत्तिचित्ते जाव[11] सव्वतवणिज्जमए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

४००. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं 'महं एगा'[12] मणिपेढिया पण्णत्ता। सा णं मणिपेढिया दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

---

१. जी० ३।२८६। वण्णओ जाव पडिरूवाओ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

२. जी० ३।२८७-२९०।

३. पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं तोरणे पं वण्णओ (ता)।

४. गुलिकासहस्राणि (मवृ); मुद्रितवृत्तौ 'मनो' इति कोष्ठके मुद्रितमस्ति, किन्तु हस्तलिखित-वृत्तिषु 'गुलिका' इत्येव पदमस्ति।

५. जी० ३।३०२।

६. गोमाणसिया साहस्सीओ (ता, राय० सू० २३६)।

७. सं० पा०—पण्णत्ता जाव तेसु।

८. जी० ३।३०२।

९. 'ता' प्रतौ एतस्य सूत्रस्य स्थाने सूत्रद्वयं लभ्यते—सभाए णं सुहम्माए उल्लोया य पउमलताभत्तिचित्ता जाव सामल सव्वतवणि-ज्जमए जाव पडि। सभाए णं सु अंतो बहु-समरमणिज्जे भूमिभागे जाव मणि। मलयगिरि-वृत्तावपि सूत्रद्वयसंकेतो दृश्यते—'सभाए णं सुहम्माए' इत्यादि उल्लोकवर्णनं 'सभाए णं सुहम्माए' इत्यादि भूमिभागवर्णनं च प्राग्वत्।

१०. जी० ३।२७७-२८४।

११. जी० ३।३०८।

१२. एगा महं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०१. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं, एत्थ णं 'महं एगे'[1] माणवए णाम चेइयखंभे पण्णत्ते—अट्ठमाइं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं उव्वेहेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, 'छकोडीए छलंसे'[2] छविग्गहिते वइरामयवट्टलट्ठसंठिय-सुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपतिट्ठिते एवं जहा महिंदज्झयस्स वण्णओ जाव[3] पडिरूवे ।।

४०२. तस्स णं माणवकस्स चेतियखंभस्स उवरिं छक्कोसे ओगाहित्ता, हेट्ठावि छक्कोसे वज्जेत्ता, मज्झे अद्धपंचमेसु जोयणेसु एत्थ णं बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता । तेसु णं सुवण्णरुप्पमएसु फलएसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता । तेसु णं वइरामएसु नागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता । तेसु णं रययामयसिक्कएसु बहवे वइरामया गोलवट्टसमुग्गका पण्णत्ता । तेसु णं वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुयाओ[4] जिण-सकहाओ संनिक्खित्ताओ चिट्ठंति, जाओ[5] णं विजयस्स देवस्स अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ माणणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेतियं पज्जुवासणिज्जाओ ।।

४०३. माणवगस्स णं चेतियखंभस्स उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता ।।

४०४. तस्स णं माणवकस्स चेतियखंभस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं 'महं एगा'[6] मणिपेढिया पण्णत्ता । सा णं मणिपेढिया 'जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं'[7] सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ।।

४०५. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं, एत्थ णं 'महं एगे सीहासणे पण्णत्ते सपरिवारे'[8] ।।

४०६. तस्स णं माणवगस्स चेतियखंभस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता—जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ।।

४०७. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं, एत्थ णं महं एगे देवसयणिज्जे पण्णत्ते । तस्स णं देवसयणिज्जस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—नाणामणिमया पडिपादा, सोवण्णिया पादा, नाणामणिमया पायसीसा, जंबूणयमयाइं गत्ताइं, वइरामया संधी, णाणामणिमए वेच्चे[9], रययामई तूली, लोहियक्खमया बिब्बोयणा, तवणिज्जमई गंडोवहाणिया । से णं देवसयणिज्जे सालिंगणवट्टिए[10] उभओ बिब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झे णय-

१. × (क, ख, ग, ट, त्रि, राय० सू० २३९) ।
२. छअंसे छकोडीए (ता) ।
३. जी० ३।३९३, ३९४ ।
४. बहवे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
५. तावो (ता, राय० सू० २४०) ।
६. एगा महं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
७. दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं जोयणं बाहल्लेणं (क, ख, ग, ट, त्रि); अस्या एव प्रतिपत्तेः ३९२ सूत्रे तथा ४०६ सूत्रेपि 'जोयणं, अद्धजोयणं' इति संवादिपाठो लभ्यते । स्वीकृतपाठस्याधारोस्ति 'ता' प्रतिर्वृत्तिश्च ।
८. एगं महं सीहासणपण्णत्ते सीहासणवण्णओ (क, ख, ग, ट, त्रि); जी० ३।३३८-३४५ ।
९. विच्चे (क, ख, ग) ; तिच्चे (ट); चिच्चे (त्रि) ।
१०. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु 'सालिंगणवट्टिए' इति पदं 'मज्झे णयगंभीरे' इति वाक्यानन्तरमस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंभीरे गंगापुलिणवालुया-उद्दालसालिसए 'ओयवियखोमदुगुल्लपट्ट'[1]-पडिच्छयणे[2] आइणग-रूत-बूर-णवणीयतूलफासे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुते सुरम्मे[3] पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

४०८. तस्स णं देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं[4] एगा[5] मणिपेढिया पण्णत्ता—जोयणमेगं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

४०९. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पि 'एत्थ णं'[6] 'खुड्डए महिंदज्झए'[6] पण्णत्ते। 'पमाणं वण्णओ'[7] जो महिंदज्झयस्स'[8] ॥

४१०. तस्स णं खुड्डमहिंदज्झयस्स[9] पच्चत्थिमेणं एत्थ णं विजयस्स देवस्स महं एगे चोप्पाले[10] नाम पहरणकोसे पण्णत्ते—'सव्ववइरामए अच्छे जाव पडिरूवे'[11]। तत्थ णं विजयस्स देवस्स बहवे फलिहरयणपामोक्खा पहरणरयणा संनिक्खित्ता चिट्ठंति—उज्जला सुणिसिया, सुतिक्खधारा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

४११. तीसे णं सभाए सुहम्माए उप्पि बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता ॥

४१२. सभाए णं सुधम्माए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं 'महं एगे'[12] सिद्धायतणे पण्णत्ते—अद्धतेरस जोयणाइं आयामेणं, छ जोयणाइं सकोसाइं विक्खंभेणं, नव जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जाव गोमाणसिया वत्तव्वया जा चेव सहाए सुहम्माए वत्तव्वया सा चेव निरवसेसा भाणियव्वा[13] तहेव दारा मुहमंडवा पेच्छाघरमंडवा झया थूभा चेइयरुक्खा महिंदज्झया णंदाओ पुक्खरिणीओ 'सुधम्मासरिसप्पमाणं मणगुलिया दामा गोमाणसी'[14] धूवघडियाओ[15] तहेव भूमिभागे उल्लोए य जाव मणिफासो[16] ॥

४१३. तस्स णं सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता—दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव

---

१. ओतवित° (ता)।
२. पडिच्छायणे (ख)।
३. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु चिन्हाङ्कित-पाठस्य क्रमभेदो दृश्यते—सुविरइयरयत्ताणे ओयवियखोमदुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे रत्तंसुय-संवुते सुरम्मे आइणग-रूत-बूर-णवणीय-तूल-फासे।
४. महई (त्रि)।
५. एगं महं (क, ख, ग, ट, त्रि)।
६. खुड्डागमहिंदझए (ता)।
७. जी० ३।३९३,३९४।
८. अद्धट्ठमाइं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धकोसं उव्वेहेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं वेरुलियामयवट्ट-लट्ठसंठिते तहेव जाव मंगला झया छत्तातिछत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।
९. खुड्डागमहिंद° (ता)।
१०. चुंपाले (क, ख, ट); चुप्पालए (ग, त्रि); चोप्पालए (ता)।
११. × (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।
१२. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु प्रायः सर्वत्र 'एगे महं' इति पाठो लिखितोस्ति।
१३. जी० ३।३७२-३९९।
१४. तओ य सुधम्माए जहा पमाणं मणगुलियाणं (त्रि)।
१५. धूमघडियाओ (क, ख)।
१६. तं चेव सभाए सुधम्माए वत्तव्वता सच्चेव णिरवयवा पमाणादीया जाव गोमाणसियाओ (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिरूवा ॥

४१४. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं, एत्थ णं महं एगे देवच्छंदए पण्णत्ते—दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

४१५. तत्थ णं देवच्छंदए अट्ठसतं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताणं संणिखित्तं चिट्ठइ। तासि णं जिणपडिमाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—तवणिज्जमया हत्थतल-पायतला,[1] अंकामयाइं णक्खाइं अंतोलोहियक्खपरिसेयाइं, 'कणगामया पादा, कणगामया गोप्फा,'[2] कणगामईओ जंघाओ, कणगामया जाणू, कणगामया ऊरू, कणगामईओ गायलट्ठीओ, तवणिज्जमईओ णाभीओ, रिट्ठामईओ रोमराईओ, तवणिज्जमया चूचुया[3], तवणिज्जमया सिरिवच्छा 'कणगमईओ बाहाओ, कणगमईओ पासाओ, कणगमईओ गीवाओ, रिट्ठामए मंसू'[4] सिलप्पवालमया ओट्ठा, फालियामया[5] दंता तवणिज्जमईओ जीहाओ, तवणिज्जमया तालुया, कणगमईओ णासियाओ[6], अंतोलोहितक्खपरिसेयाओ, अंकामयाणि अच्छीणि अंतोलोहितक्खपरिसेयाइं[7] रिट्ठामईओ ताराओ[8] रिट्ठामयाइं अच्छिपत्ताइं, रिट्ठामईओ भमुहाओ, कणगामया कवोला, कणगामया सवणा,[9] कणगामयणिडालपट्टियाओ,[10] वइरामईओ सीसघडीओ तवणिज्जमईओ केसंतकेसभूमीओ[11] रिट्ठामया उवरिमुद्धजा ॥

४१६. तासि णं जिणपडिमाणं पिट्ठओ पत्तेयं-पत्तेयं छत्तधारपडिमाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं छत्तधारपडिमाओ हिमरययकुंदेंदुप्पगासाइं[12] सकोरेंटमल्लदामधवलाइं आतपत्ताइं[13] सलीलं धारेमाणीओ[14]-धारेमाणीओ चिट्ठंति ॥

४१७. तासि णं जिणपडिमाणं उभओ पासिं 'दो-दो'[15] चामरधारपडिमाओ

---

१. × (क, ख, ग)।

२. चिन्हितः पाठः प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ रायपसेणइयसूत्रस्य वृत्तावपि (पृ० २३०) व्याख्यातो नास्ति।

३. चुच्चुया (क, ग, त्रि); चुचुया (ख,ट)।

४. चिन्हितः पाठः प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ रायपसेणइयसूत्रे (सू० २५४) तद्वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः।

५. फलिहामया (क, ख, ग, त्रि)।

६. णासाओ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

७. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' प्रतिषु 'पुलगमईओ दिट्ठीओ' इति पाठोस्ति। 'ता' प्रतौ रिट्ठामईओ ताराओ' इति पाठानन्तरं 'पुलगमईओ' इति पदं लभ्यते। प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ रायपसेणइयसूत्रे (सू० २५४) तद्वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः।

८. तारगाओ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

९. सवणा अंतोलोहियक्खपरि (ता)।

१०. °णिडालवट्टा (क, ख, ग, ट); °णिडाला वट्टा (त्रि)।

११. केसंतभूमीओ (ता)।

१२. हिमरययकुंदेंदुसप्पकासाइं (क, ख, ग, ट, त्रि); हिमरययतकुमुदकुंदेंदुसण्णिकासाइं (ता)।

१३. आयावत्ताइं (क)।

१४. ओहारेमाणीओ २ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१५. पत्तेयं-पत्तेयं (क, ख, ग, ट, त्रि); प्रस्तुतवृत्तौ रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० २३२) च 'द्वे द्वे' इति व्याख्यातमस्ति। ताडपत्रीयादर्शे 'दो दो' इति पाठः उपलब्धोस्ति, तेनैष पाठः मूले स्वीकृतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ताओ। ताओ णं चामरधारपडिमाओ 'चंदप्पह-वइर-वेरुलिय-नाणामणिरयणखचित-चित्तदंडाओ'[1] सुहुमरययदीहवालाओ[2] संखंक-कुंद-दगरय-अमतमथितफेणपुंजसण्णिकासाओ धवलाओ चामराओ 'गहाय सलीलं वीजेमाणीओ'[3] चिट्ठंति ॥

४१८. तासि णं जिणपडिमाणं पुरओ दो-दो नागपडिमाओ, दो-दो जक्खपडिमाओ, दो-दो भूतपडिमाओ, दो-दो कुंडधारपडिमाओ[4] संनिक्खित्ताओ चिट्ठंति—सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

४१९. तत्थ[5] णं देवच्छंदए जिणपडिमाणं पुरओ अट्ठसतं घंटाणं[6] अट्ठसतं वंदणकलसाणं अट्ठसतं भिंगारगाणं एवं आयंसगाणं थालाणं पातीणं सुपतिट्ठकाणं मणगुलियाणं वातकरगाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं हयकंठगाणं[7] °गयकंठगाणं नरकंठगाणं किण्णरकंठगाणं किंपुरिसकंठगाणं महोरगकंठगाणं गंधव्वकंठगाणं उसभकंठगाणं, पुप्फचंगेरीणं एवं मल्ल-चुण्ण-गंध-वत्थाभरणचंगेरीणं सिद्धत्थचंगेरीणं लोमहत्थचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं सीहासणाणं छत्ताणं चामराणं, तेल्लसमुग्गाणं कोट्ठसमुग्गाणं पत्तसमुग्गाणं चोयसमुग्गाणं तगरसमुग्गाणं एलासमुग्गाणं हरियालसमुग्गाणं हिंगुलयसमुग्गाणं मणोसिलासमुग्गाणं अंजणसमुग्गाणं, अट्ठसयं झयाणं, अट्ठसयं° धूवकडुच्छुयाणं संनिक्खित्तं चिट्ठंति ॥

४२०. तस्स णं सिद्धायतणस्स उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता[8] ॥

---

१. चंदप्पभवइरवेरुलियणाणामणिकणगरयण विमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

२. एष पाठः 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु 'संखंक-कुंद' इति पाठानन्तरं विद्यते।

३. सलीलं ओहारेमाणीओ (क, ख, ग, ट, त्रि)। वृत्तौ चामराणि गृहीत्वा सलीलं वीजयन्त्यः' इति व्याख्यातमस्ति। 'ता' प्रतावपि वृत्तिसंवादी पाठोस्ति। ततः स एव मूले स्वीकृतः।

४. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एतावान् अतिरिक्तः पाठो लभ्यते—'विणओणयाओ पायवडियाओ पंजलीउडाओ'। एतत् पाठान्तरं 'ता' प्रतौ नास्ति उपलब्धम्। वृत्तौ रायपसेणइय (सू० २५७) सूत्रे तद् वृत्तावपि- नास्ति।

५. 'ता' प्रतौ 'तत्थ णं देवच्छंदए अट्ठसतं' इति पाठोस्ति, वृत्तौ च 'तस्मिन् देवच्छन्दके जिनप्रतिमानां पुरतोऽष्टशतं' इति व्याख्यातमस्ति। वृत्तिव्याख्यानुसारी पाठ एव स्वीकृतः। शेषादर्शेषु 'तासि णं जिणपडिमाणं पुरतो अट्ठसतं' एवं पाठो लभ्यते।

६. अतोग्रे 'ता' प्रतौ संग्रहणीगाथाद्वयं लभ्यते—
चंदणकलसा भिंगारा, चेव होंति थालाओ।
पातीओ सुपतिट्ठा, मणगुलिया वातकरगा य ॥१॥
चित्ता रयणकरंडा, हयगयणरकंठका य चंगेरी ॥
पडला सीहासण छत्त, चामरा समुग्गग झया य ॥२॥
वृत्तावपि एतद् गाथाद्वयं उल्लिखितमस्ति, अत्र सङ्ग्रहणी गाथा—
चंदणकलसा भिंगारगा य, आयंसगा य थाला य।
पाईओ सुपइट्ठा, मणगुलिया वायकरगा य ॥१॥
चित्ता रयणकरंडा, हयगयणरकंठगा य चंगेरी।
पडला सीहासण छत्त चामरा समुग्गय झया य ॥२॥

७. सं० पा०—हयकंठगाणं जाव उसभकंठगाणं पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थगचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं अट्ठसयं तेल्लसमुग्गाणं जाव धूवकडुच्छयाणं।

८. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु अतिरिक्तः पाठो लभ्यते—उत्तिमागारा सोलसविहेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२१. तस्स णं सिद्धायतणस्स णं उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगा उववायसभा पण्णत्ता 'जहा सुधम्मा तहेव जाव गोमाणसीओ उववायसभाए त्रि दारा मुहमंडवा उल्लोए भूमिभागे तहेव जाव[1] मणिफासो'[2] ॥

४२२. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता—जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

४२३. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पि, एत्थ णं महं एगे देवसयणिज्जे पण्णत्ते। तस्स णं देवसयणिज्जस्स वण्णओ[3] ॥

४२४. उववायसभाए णं उप्पि अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता[4] ॥

४२५. तीसे णं उववायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगे हरए पण्णत्ते। से णं हरए 'अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं, छ जोयणाइं सक्कोसाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छे सण्हे वण्णओ जहेव णंदाणं पुक्खरिणीण जाव[5] तोरणवण्णओ'[6] ॥

४२६. तस्स णं हरयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगा अभिसेयसभा पण्णत्ता जहा सभासुधम्मा तं चेव निरवसेसं जाव[7] गोमाणसीओ भूमिभाए उल्लोए तहेव ॥

४२७. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता—जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

४२८. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पि, एत्थ णं महं एगे सीहासणे पण्णत्ते सीहासणवण्णओ[8] अपरिवारो[9] ॥

४२९. तत्थ णं विजयस्स देवस्स सुबहू अभिसेकभंडे[10] संनिक्खित्ते चिट्ठति ॥

४३०. अभिसेयसभाए उप्पि 'अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता'[11] ॥

४३१. तीसे णं अभिसेयसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगा अलंकारियसभा

रयणेहिं उवसोभिया तं जहा रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं।

१. जी० ३।३७२-३९९।

२. पमाणं जहा सधम्मसभाए जाव वण्णगा (ता)।

३. जी० ३।४०७।

४. छत्तातिछत्ता जाव उत्तिमागारा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. जी० ३।३९५,३९६।

६. आयाम विक्खंभेणं उव्वेधो वण्णओ जहा णंदाए पुक्खरणीए से णेगाए पउमवणसंड वण्णओ जाव सयंति। तस्स णं हरतस्स तिदिसिं ततो तिसोमा तेसि णं तिसो पुरतो पत्तेयं तोरण वण्णओ (ता)।

७. जी० ३।३७२-३९९।

८. जी० ३।३११-३१३।

९. परिवारो (क, ग); सपरिवारं (ता); सपरिवारो (त्रि); वृत्तिकृता 'अपरिवारो' इति पाठ एव व्याख्यातोस्ति—सिंहासनवर्णकः प्राग्वत्, नवरमत्र परिवारभूतानि भद्रासनानि न वक्तव्यानि।

१०. अभिसेक्के भंडे (ख, ग, ता, त्रि)।

११. अट्ठट्ठमंगलए जाव उत्तिमागारा सोलसविधेहिं रयणेहिं (क, ख, ग, ट, त्रि); अट्ठट्ठमं जाव हत्थया (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता, अभिसेयसभा वत्तव्वया 'जाव[1] सीहासणं'[2] अपरिवारं[3] ।।

४३२ तत्थ णं विजयस्स देवस्स सुबहू अलंकारिए भंडे संनिक्खित्ते चिट्ठति ।।

४३३. अलंकारियसभाए उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता ।।

४३४. तीसे णं अलंकारियसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगा ववसायसभा पण्णत्ता, अभिसेयसभा वत्तव्वया जाव सीहासणं अपरिवारं[4] ।।

४३५. तत्थ णं विजयस्स देवस्स महं एगे पोत्थयरयणे संनिक्खित्ते चिट्ठति । तस्स णं पोत्थयरयणस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—रिट्ठमईओ कंबियाओ[5] तवणिज्जमए[6] दोरे 'णाणामणिमए गंठी अंकमयाइं पत्ताइं'[7] वेरुलियमए लिप्पासणे[8] तवणिज्जमई संकला रिट्ठामए छादणे[9] रिट्ठामई मसी, वइरामई लेहणी 'रिट्ठामयाइं अक्खराइं'[10] धम्मिए लेक्खे[11] ।।

४३६. ववसायसभाए णं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता ।।

४३७. तीसे[12] णं ववसायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं महं एगे बलिपीढे पण्णत्ते—दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं, सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ।।

४३८. तस्स णं बलिपीढस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगा णंदापुक्खरिणी पण्णत्ता, जं चेव माणं[13] हरयस्स, तं चेव सव्वं ।।

विजयदेवाधिगारो

४३९. तेणं कालेणं तेणं समएणं विजए देवे विजयाए रायहाणीए उववातसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिते अंगुलस्स असंखेज्जतिभागमेत्तीए ओगाहणाए[14] विजयदेवत्ताए उववण्णे ।।

---

१. जी० ३।४२६-४२८ ।

२. भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपेढियाओ जहा अभिसेयसभाए उप्पिं सीहासणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

३. सपरिवारे (ता) ।

४. सपरिवारं (क); सपरिवारो (ता) ।

५. कंवियाओ रयतामयाइं पत्तकाइं रिट्ठामयाइं अक्खराइं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

६. रजतमयः (वृ) ।

७. णाणामणिमए गंठी (क, ख, ग, ट, त्रि); अंकमयाइं पत्तगाइं णाणामणिमए गंठी (ता) ।

८. लिवासणे (ख, ता) ।

९. छंदणे (क, ग, ट, ता) ।

१०. × (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

११. सत्थे (क, ख, ग, ट त्रि) ।

१२. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु ४३७, ४३८ सूत्रयोः क्रमभेदः पाठभेदश्च वर्तते—तीसे णं ववसायसभाए णं उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं एगा महं नंदा पुक्खरिणी पण्णत्ता । जं चेव पमाणं हरयस्स तं चेव सव्वं । तीसे णं नंदाए पुक्खरिणीए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं एगे महा बलिपेढे पण्णत्ते दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं जोयणं बाहल्लेणं सव्वरयतामए अच्छे जाव पडिरूवे । 'ता' प्रतौ अनयोर्द्वयोः सूत्रयोः स्थाने एकमेव सूत्रमस्ति—तीसे णं ववसायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं बलिपेढे णामं पेढे पं दो जोयणाइं आयामवि जोयणं बा सव्वरतणामए अच्छे पडि ।

१३. जी० ३।४२५ ।

१४. बोंदीए (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४०. तए णं से विजए देवे अहुणोववण्णमेत्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छति [तं जहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए 'आणापाणुपज्जत्तीए भासमणपज्जत्तीए'[1]] ॥

४४१. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति भावं गयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—'किं मे पुव्विं करणिज्जं ? किं मे पच्छा करणिज्जं ? किं मे पुव्विं सेयं ? किं मे पच्छा सेयं'[2] ? किं मे 'पुव्विंपि पच्छावि'[3] हिताए सुहाए खमाए[4] णिस्सेयसाए[5] आणुगामियत्ताए भविस्सति[6] ॥

४४२. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा विजयस्स देवस्स इमं एतारूवं अज्झत्थियं चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं समुप्पण्णं समभिजाणित्ता[7] जेणेव विजए देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विजयं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं विजयाए रायहाणीए सिद्धायतणंसि अट्ठसतं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहपमाणमेत्ताणं संनिक्खित्तं चिट्ठति, सभाए सुधम्माए माणवए चेतियखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूओ[8] जिण-सकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति, जाओ णं देवाणुप्पियाणं अण्णेसिं च बहूणं विजयरायहाणिवत्थव्वाणं[9] देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ माणणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेतियं पज्जुवासणिज्जाओ। एतण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं करणिज्जं, एतण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छा करणिज्जं, एतण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं सेयं, एतण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छा सेयं, एतण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विंपि पच्छावि[10] •हिताए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए° आणुगामियत्ताए भविस्सति[11] ॥

४४३. तए णं से विजए देवे तेसिं सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ[12]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए देवसयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता देवदूसं[13] परिहेइ, परिहेत्ता देवसयणिज्जाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता उववायसभाओ पुरत्थिमेणं दारेणं[14] णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव

१. आणापाणपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए (क, ख, ग, ट, त्रि)। कोष्ठकान्तरवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।

२. किं मे पुव्विं सेयं किं मे पच्छा सेयं किं मे पुव्विं करणिज्जं किं मे पच्छा करणिज्जं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

३. पुव्विं वा पच्छा वा (क,ख,ग,ट,ता,त्रि)।

४. खेमाए (त्रि)।

५. णिस्सेसाए (क, ख, ग, त, ता); णिस्सेसयाते (त्रि)।

६. भविस्सतीति कट्टु एवं संपेहेति (क, ख, ग, ट, त्रि)।

७. जाणित्ता (क, ख, ग, ट, त्रि); अतोग्रे 'ता' प्रतौ अतिरिक्तः पाठो दृश्यते हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिता णंदिता पीतिमणा परमसोमणसिता हरिसवसविसप्पमाणहितया।

८. बहुवीओ (ता)।

९. × (ता)।

१०. सं० पा०—पच्छावि जाव आणुगामियत्ताए।

११. भविस्सतीति कट्टु महया महया जयजय सद्दं पउंजंति (क,ख,ग,ट,त्रि)।

१२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।

१३. दिव्वं देवदूसजुयलं (क,ख,ग,ट,त्रि)।

१४. पुरत्थिमिल्लेणं (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरए तेणेव उवागच्छति, हरयं अणुपदाहिणं करेमाणे-करेमाणे पुरत्थिमेणं तोरणेणं अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता हरयं ओगाहति, ओगाहित्ता[1] जलमज्जणं करेति, करेत्ता जलकिड्डं करेति, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसूइभूते हरयाओ पच्चुत्तरति, पच्चुत्तरित्ता जेणामेव अभिसेयसभा तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अभिसेयसभं पदाहिणं करेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

४४४. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेंति सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विजयस्स देवस्स महत्थं महग्घं महरिहं विपुलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेह ।।

४४५. तए णं ते आभिओगिया देवा सामाणियपरिसोववण्णेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[2]-•चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण° हियया करतलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवा ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति[3], समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं णिसिरंति, तं जहा—रयणाणं जाव[4] रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडंति, परिसाडित्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायंति, परियाइत्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रुप्पामयाणं[5] कलसाणं, अट्ठसहस्सं मणिमयाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पामयाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णमणिमयाणं, अट्ठसहस्सं रुप्पामणिमयाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पामणिमयाणं, अट्ठसहस्सं भोमेज्जाणं, अट्ठसहस्सं भिंगाराणं, एवं—आयंसगाणं थालाणं पातीणं सुपतिट्ठकाणं मणगुलियाणं वातकरगाणं, चित्ताणं रयणकरंडगाणं, पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थगचंगेरीणं, पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थगपडलगाणं, सीहासणाणं छत्ताणं चामराणं[6], तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं झयाणं, अट्ठसहस्सं धूवकडुच्छुयाणं विउव्वंति, विउव्वित्ता 'ते साभाविए य विउव्विए य कलसे य जाव धूवकडुच्छुए य गेण्हंति, गेण्हित्ता विजयातो रायहाणीतो पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता'[7] ताए उक्किट्ठाए[8] •तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए जइणाए छेयाए° दिव्वाए देवगतीए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा-वीईवयमाणा जेणेव खीरोदे समुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता खीरोदगं गिण्हंति, गिण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव[9] सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुक्खरोदे समुद्दे तेणेव उवा-

---

१. ओगाहित्ता जलावगाहणं करेति २ त्ता (क,ख,ग,ट,त्रि) ।
२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
३. समोहणंति (क,ख,ग,ट,त्रि) ।
४. जी० ३।७।४ ।
५. रुप्पमयाणं (क,ख,ग,ट,त्रि) सर्वत्र ।
६. चामराणं अवपडगाणं वट्टकाणं तवसिप्पाणं खोरगाणं पीणगाणं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।
७. गेण्हंति (ता); चिन्हाङ्कितः पाठो वृत्तौ व्याख्यातो नास्ति ।
८. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए ।
९. जी० ३।२८६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव समयखेत्ते जेणेव भरहेरवयाइं वासाइं जेणेव मागधवरदामप-भासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थोदगं गिण्हंति, गिण्हित्ता तित्थ-मट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव गंगा-सिंधु-रत्ता-'रत्तवतीओ महानदीओ'[1] तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सरितोदगं[2] गेण्हंति, गेण्हित्ता उभयतडमट्टियं[3] गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चुल्ल-हिमवंत-सिहरिवासधरपव्वता तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता 'सव्वतुवरे[4] सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले'[5] सव्वोसहिसिद्धत्थए य गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पउमद्दह-पुंडरीयद्दहा[6] तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव हेमवय-हेरण्णवयाइं[7] वासाइं जेणेव रोहिय-रोहितंस-सुवण्णकूल-रुप्पकूलाओ महानदीओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभयतडमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव 'सद्दावाति-वियडावाति'[8]-वट्टवेतड्ढपव्वता तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव महाहिमवंत-रुप्पि-वासधरपव्वता तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता •[9]सव्वतुवरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव महापउमद्दह-महापुंडरीय-द्दहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं[10] •जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव 'हरिवास-रम्मगवासाइं'[11] जेणेव हरि[12]-हरिकंत-नरकंत-नारिकंताओ महानदीओ[13] तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभयतडमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव 'गंधावाति-मालवंतपरियागा'[14]-वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागिच्छत्ता •[15]सव्वतुवरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव णिसह-नीलवंत-वासहरपव्वता तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतुवरे[16] •जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव तिगिच्छिदह[17]-केसरिदहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं[18] •जाव

---

१. रत्तवत्ती सलिला (क,ख,ग,ट,त्रि)।
२. सलिलोदक (राय० सू० २७९)।
३. उभओतड° (क,ख,ग,ट,त्रि); उभयं तड° (ता)।
४. सव्वतूयरे (राय०सू० २७९); 'तुवरः, तूवरः' इति शब्दद्वयमपि दृश्यते।
५. 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु चिन्हाङ्कितपाठस्य पुरतः प्रत्येकपदस्याग्रे यकारो विद्यते, यथा 'सव्वतूवरे य' इत्यादि।
६. °द्दहा दहा (ता)।
७. एरण्ण° (क,ख,ग,ट,त्रि)।
८. सद्दावइमालवंतपरियागा (क,ख,ग,ट,त्रि); स्वीकृतपाठः वृत्त्यनुसारी वर्तते। द्रष्टव्यं ठाणं ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
९. सं० पा०—सव्वपुप्फे तं चेव।
१०. सं० पा०—उप्पलाइं तं चेव।
११. हरिवासरम्मावासाइं (क, ख); हरिवासे रम्मावासेति (ग,त्रि)।
१२. × (क,ख,ग,ट,त्रि)।
१३. सलिलाओ (क,ख,ग,ट,त्रि)।
१४. वियडावतिगंधावति (क,ख,ग,ट,त्रि)।
१५. सं० पा०—सव्वपुप्फे तं चेव।
१६. सं० पा०—सव्वतुवरे य तहेव।
१७. तिगिंछिदह (क)।
१८. सं० पा०—उप्पलाइं तं चेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव पुव्वविदेहावरविदेहवासाइं जेणेव सीया-सीओ-याओ महाणईओ •[1]तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभय-तडमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव सव्वमागहवरदामपभासाइं तित्थाइं[2] •तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थोदगं गिण्हंति, गिण्हित्ता तित्थमट्टिय गेण्हंति, गेण्हित्ता° जेणेव सव्ववक्खारपव्वता तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सव्वंतरणदीओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता[3] •उभयतडमट्टियं गेण्हिंति, गेण्हित्ता° जेणेव मंदरे पव्वते जेणेव भद्दसालवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतुवरे जाव सव्वो-सहिसिद्धत्थए य गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं दिव्वं च सुमणदामं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव पंडगवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं दिव्वं च सुमण-दामं दद्दरमलयसुगंधिए गंधे गेण्हंति, गेण्हित्ता एगतो मिलंति[4], मिलित्ता जंबुद्दीवस्स पुरत्थि-मिल्लेणं दारेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए[5] •तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए जइणाए छेयाए° दिव्वाए देवगतीए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा-वीईवयमाणा जेणेव विजया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विजयं रायहाणिं अणुप्पयाहिणं करेमाणा-करेमाणा जेणेव अभिसेयसभा जेणेव विजए देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करतलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता विजयस्स देवस्स तं महत्थं महग्घं महरिहं विपुलं अभिसेयं उवट्ठवेंति ।।

४४६. तए णं तं विजयं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ, तिण्णि परिसाओ सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई सोलस आयरक्खदेव-साहस्सीओ अण्णे य बहवे विजयरायधाणिवत्थव्वगा वाणमंतरा देवा य देवीओ य तेहिं साभाविएहिं उत्तरवेउव्विएहिं य वरकमलपतिट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं चंदण-कयचच्चाएहिं[6] आविद्धकंठगुणेहिं पउमुप्पलपिधाणेहिं सुकुमालकरतलपरिग्गहिएहिं[7] अट्ठ-सहस्सेणं[8]। सोवण्णियाणं कलसाणं रूप्पामयाणं मणिमयाणं जाव अट्ठसहस्सेणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहिसिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए सव्वजुतीए सव्ववलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं

१. सं० पा०—जहा णईओ ।
२. सं० पा०—तित्थाइं तहेव जहेव ।
३. सं० पा०—गेण्हित्ता तं चेव ।
४. मेलंति (क,ख) ।
५. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए ।
६. °चच्चातेहिं (क,ख,ग,त्रि) ।
७. करतलसुकुमालकोमलपरिग्गहिएहिं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।
८. अट्ठसतेणं (क,ख,ग,ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वविभूतीए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं[1] सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं[2] सव्वदिव्वतुडियसद्द-सण्णिणाएणं[3] महया इड्ढीए महया जुतीए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुरिय-जमगसमगपडुप्पवादितरवेणं[4] संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरव-मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोसनादितरवेणं[5] महया-महया इंदाभिसेगेणं अभिसिंचंति ।।

४४७. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स महया-महया इंदाभिसेगंसि वट्टमाणंसि अप्पेगतिया देवा विजयं रायहाणिं णच्चोदगं णातिमट्टियं पविरलफुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिं गंधोदगवासं वासंति, अप्पेगतिया देवा विजयं रायहाणिं णिहतरयं णट्ठरयं भट्ठरयं पसंतरयं उवसंतरयं करेंति, अप्पेगतिया देवा विजयं रायहाणिं सब्भिंतरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जितोवलित्तं[6] सित्तसुइसम्मट्ठ-रत्थंतरावणवीहियं करेंति, अप्पेगतिया देवा विजयं रायहाणिं मंचातिमंचकलितं करेंति, अप्पेगतिया देवा विजयं रायहाणिं णाणाविहरागो-सियझय[7]-पडागतिपडागमंडितं करेंति, अप्पेगतिया देवा विजयं रायहाणिं लाउल्लोइय-महियं[8] गोसीस-सरसरत्तचंदण-दद्दरदिण्णपंचंगुलितलं करेंति, अप्पेगतिया देवा विजयं राय-हाणिं उवचियवंदणकलसं[9] वंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति, अप्पेगतिया देवा विजयं रायहाणिं आसत्तोसत्तविपुलवट्टवग्घारितमल्लदामकलावं करेंति, अप्पेगइया देवा विजयं रायहाणिं पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलितं करेंति, अप्पेगइया देवा विजयं रायहाणिं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवडज्झंत-मघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं करेंति, 'अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासंति, अप्पेगइया देवा सुवण्णवासं वासंति, अप्पेगइया देवा एवं—रयणवासं[10] पुप्फवासं मल्लवासं गंधवासं चुण्णवासं वत्थवासं आभरणवासं'[11], अप्पेगइया देवा हिरणविधिं भाएंति, 'एवं—सुवण्णविधिं रयणविधिं'[12] पुप्फविधिं मल्लविधिं गंधविधिं चुण्णविधिं वत्थविधिं आभरणविधिं'[13], अप्पे-

१. सव्वसंभमेणं सव्वोरोहेणं सव्वणाडएहिं (क, ख, ग, ट, त्रि); × (ता) ।

२. °अलंकारविभूसाए (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

३. सव्वदिव्वतुडियणिणाएणं (क, ख, ग, ट, त्रि); सव्वतुडियसद्द° (ता) ।

४. °तुडियजमग° (क, ख, ट, त्रि), 'तूर्य' शब्दस्य 'तूरं, तुरियं' इति प्रयोगद्वयं लभ्यते रकारस्य डकारो भवतीति 'तुडिय' मपि लभ्यते । प्राय: बहुषु स्थानेषु 'तुडिय' मिति पाठो लभ्यते, वृत्तौ च त्रुटितमिति । अत्र ताडपत्रीयादर्शे 'तुरिय' इति पदं प्राप्तं तेनात्र तत् स्वीकृतम् ।

५. णिग्घोससंनिनादितरवेणं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

६. आसित° (क, ख, ग, ट, त्रि); आसीत° (ता)।

७. णाणाविहरागरंजियऊसियभयविजयवेजयंती (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

८. °महियं करेंति अप्पेगतिया देवा विजयं राय-हाणिं (क, ख, ग, ट, त्रि); °महियं करेंति अप्पे (ता) ।

९. वृत्तौ एष आलापकः 'करेंति' इत्यन्तिमपदेन व्याख्यातः तथा अग्रिमालापकः 'अप्पेगतिया देवा वंदण' इति पृथग् व्याख्यातः ।

१०. रयणवासं वइरवासं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

११. अप्येकका देवा हिरण्यवर्षं वर्षन्ति, अप्येकका: सुवर्णवर्षमप्येकका आभरणवर्षं पुष्पवर्षमप्येकका माल्यवर्षमप्येककाश्चूर्णवर्षं वस्त्रवर्षं वर्षन्ति (मवृ) ।

१२. रयणविधिं वइरविधिं (क, ख, ग, ट, त्रि) । द्रष्टव्यं रायपसेणइय २८१ सूत्रस्य पाद-टिप्पणम् ।

१३. एवं सुवर्णरत्नाभरणपुष्पमाल्यगन्धचूर्णवस्त्र-विधिभाजनमपि भावनीयम् (मवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गतिया[1] देवा दुतं णट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा विलंबितं णट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा दुतविलंबितं णाम णट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा अंचियं णट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा रिभितं णट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा अंचितरिभितं णट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा आरभडं णट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा भसोलं णट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा आरभडभसोलं णट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया देवा 'उप्पायनिवायपसत्तं संकुचिय-पसारियं रियारियं भंत-संभंतं'[2] णाम णट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पेगतिया[3] देवा चउव्विधं वाइयं[4] वादेंति, तं जहा—ततं विततं घणं झुसिरं, अप्पेगतिया देवा चउव्विधं गेयं गायंति, तं जहा—'उक्खित्तं पवत्तं'[5] मंदायं रोइयावसाणं, अप्पेगतिया देवा चउव्विधं अभिणयं अभिणयंति, तं जहा—दिट्ठंतियं 'पाडिसुयं सामन्नतोविणिवातियं'[6] लोगमज्झावसाणियं, अप्पेगतिया देवा पीणंति, अप्पेगतिया देवा तंडवेंति, अप्पेगतिया देवा लासेंति, अप्पेगतिया देवा बुक्कारेंति, अप्पेगतिया देवा पीणंति तंडवेंति लासेंति बुक्कारेंति, अप्पेगतिया देवा अप्फोडेंति[7], अप्पेगतिया देवा वग्गंति, अप्पेगतिया देवा तिवंति छिंदंति, अप्पेगतिया देवा अप्फोडेंति वग्गंति तिवंति छिंदंति, अप्पेगतिया देवा हयहेसियं करेंति, अप्पेगतिया देवा हत्थिगुलगुलाइयं करेंति, अप्पेगतिया देवा रहघणघणाइयं करेंति अप्पेगतिया देवा हयहेसियं करेंति, हत्थिगुलगुलाइयं करेंति, रहघणघणाइयं करेंति, 'अप्पेगतिया देवा उच्छलेंति[8], अप्पेगतिया देवा पोच्छलेंति[9] अप्पेगतिया देवा उक्किट्ठिं करेंति, अप्पेगतिया देवा उच्छलेंति पोच्छलेंति उक्किट्ठिं करेंति'[10], अप्पेगतिया देवा सीहनादं नदंति, अप्पेगतिया देवा पाददद्दरयं करेंति, अप्पेगतिया देवा भूमिचवेडं दलयंति[11], 'अप्पेगतिया देवा सीहनादं पाददद्दरयं भूमिचवेडं दलयंति'[12] अप्पेगतिया देवा हक्कारेंति, अप्पेगतिया देवा थुक्कारेंति, अप्पेगतिया देवा थक्कारेंति[13], 'अप्पेगतिया देवा नामाइं साहेंति'[14] 'अप्पेगतिया देवा हक्कारेंति थुक्कारेंति थक्कारेंति नामाइं साहेंति'[15],

१. द्वात्रिंशतो नाट्यविधीनां मध्ये कांश्चन नाट्यविधीनुपन्यस्यति (मवृ)।
२. उप्पनणिवतपयत्तं संकुचितपसारियरेयारयितं भंगसंभंग (ता)।
३. क, ख, ग, ट, आदर्शेषु वाद्य-गेयसम्बन्धिनौ आलापकौ 'द्रुतनाट्यविधेः पूर्वं विद्येते। रायपसेणइय (सू० २८१) सूत्रेपि एवमेव विद्यते।
४. पेज्ज (ता)।
५. उक्खित्तयं पवत्तयं (क, ख, ग, ट, त्रि)।
६. पाडंतियं सामंतोवणिवातियं (क,ख,ग,ट,त्रि)।
७. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ भिन्नवाचनायाः पाठो व्याख्यातोस्ति। द्रष्टव्यं वृत्ति पत्र २४७,२४८। रायपसेणयसूत्रे (२८१) पि पदानां व्यत्ययो दृश्यते।
८. उच्छोलेंति (क,ख,ग,ट,त्रि) अग्रेपि एवमेव।
९. पच्छोलेंति (क, ख, ग, ट, त्रि) अग्रेपि एवमेव।
१०. चिन्हाङ्कितः पाठः वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।
११. अतोग्रे 'अप्पेगतिया देवा महता महता सद्देणं रवेंति' इति पाठो वृत्तौ व्याख्यातोस्ति।
१२. अप्येकका देवाश्चत्वार्यपि सिंहनादादीनि कुर्वन्ति (मवृ)।
१३. थक्कारेंति अप्पेगतिया देवा पुक्कारेंति (क,ख, ग,ट,त्रि)।
१४. × (मवृ)।
१५. अप्येककास्त्रीण्यप्येतानि कुर्वन्ति (मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पेगतिया देवा ओवयंति[1], अप्पेगतिया देवा उप्पयंति[2], अप्पेगतिया देवा परिवयंति, अप्पेगतिया देवा ओवयंति उप्पयंति परिवयंति, अप्पेगतिया देवा जलंति, अप्पेगतिया देवा तवंति, अप्पेगतिया देवा पतवंति, अप्पेगतिया देवा जलंति तवंति पतवंति, अप्पेगइया देवा गज्जंति, अप्पेगइया देवा विज्जुयायंति, अप्पेगइया देवा वासं वासंति, अप्पेगइया देवा गज्जंति विज्जुयायंति वासं वासंति, 'अप्पेगतिया देवा देवसन्निवायं करेंति'[3], अप्पेगतिया देवा देवुक्कलियं करेंति, अप्पेगइया देवा देवकहकहं करेंति, अप्पेगतिया देवा देवदुहदुहगं करेंति, 'अप्पेगतिया देवा देवसन्निवायं देवउक्कलियं देवकहकहं देवदुहदुहगं करेंति'[4], 'अप्पेगतिया देवा देवुज्जोयं करेंति, अप्पेगतिया देवा विज्जुयारं करेंति'[5], अप्पेगतिया देवा चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगतिया देवा देवुज्जोयं विज्जुयारं चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगतिया देवा उप्पलहत्थगता जाव सहस्सपत्तहत्थगता[6] वंदणकलसहत्थगता जाव धूवकडुच्छुयहत्थगता हट्ठतुट्ठ[7]-•चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया° हरिसवसविसप्पमाणहियया विजयाए रायहाणीए सव्वतो समंता आधावंति परिधावंति ॥

४४८. तए णं तं विजयं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ जाव[8] सोलसआयरक्खदेवसाहस्सीओ, अण्णे य बहवे विजयरायहाणी-वत्थव्वा वाणमंतरा देवा य देवीओ य तेहिं वरकमलपतिट्ठाणेहिं जाव अट्ठसहस्सेणं[9] सोवण्णियाणं कलसाणं तं चेव जाव अट्ठसहस्सेणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदगेहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फेहिं जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए जाव निग्घोसनाइयरवेणं महया-महया इंदाभिसेएणं अभिसिंचंति, अभिसिंचित्ता पत्तेयं-पत्तेयं करतलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासि—जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! जय-जय नंदा भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, अजितं जिणाहि सत्तुपक्खं, जितं पालयाहि मित्तपक्खं, जियमज्झे वसाहि तं देव ! निरुवसग्गं, इंदो इव देवाणं, चंदो इव ताराणं चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, भरहो इव मणुयाणं, बहूणि पलिओवमाइं बहूणि सागरोवमाणि बहूणि पलिओवम-सागरोवमाणि चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं विजयस्स देवस्स विजयाए रायहाणीए, अण्णेसिं च बहूणं विजयरायहाणि-वत्थव्वाणं वाणमंतराणं देवाणं देवीण य आहेवच्चं जाव[10] आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहित्ति कट्टु महता-महता सद्देणं जय-जय सद्दं पउंजंति ॥

४४९. तए णं से विजए देवे महया-महया इंदाभिसेएणं अभिसित्ते समाणे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अभिसेयसभाओ पुरत्थिमेणं दारेणं पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं

१. उप्पयंति (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
२. णिवयंति (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
३. × (मवृ) ।
४. अप्येककास्त्रीण्यप्येतानि कुर्वन्ति (मवृ) ।
५. × (मवृ) ।
६. सहस्सपत्तघंटाहत्थगता (क, ख, ग, ट, त्रि)।
७. सं० पा०—हट्ठतुट्ठा जाव हरिसवसविसप्पमाणहियया ।
८. जी० ३।४४६ ।
९. अट्ठसतेणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
१०. जी० ३।३५० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुप्पयाहिणीकरेमाणे-अणुप्पयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

४५०. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स 'आभिओगिया देवा आलंकारियं भंडं उवणेंति'[1] ।।

४५१. तए णं से विजए देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए दिव्वाए सुरभीए गंधकासाईए गाताइं लूहेति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाताइं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता[2] नासाणीसासवायवोज्झं[3] चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचियंतकम्मं आगासफलिहसमप्पभं[4] अहतं दिव्वं देवदूसजुयलं णियंसेइ, णियंसेत्ता हारं पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता अद्धहारं पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता एकावलिं[5] पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता एवं एतेणं अभिलावेणं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं कडगाइं तुडियाइं अंगयाइं केयूराइं दसमुद्दियाणंतकं[6] कुंडलाइं चूडामणिं चित्तरयणसंकडं[7] मउडं पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता 'गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खयं पिव अप्पाणं अलंकियविभूसितं करेति, करेत्ता दद्दरमलयसुगंधगंधिएहिं गंधेहिं गाताइं भुकुंडेति[8], भुकुंडेत्ता दिव्वं च सुमणदामं पिणिद्धेति ।।

४५२. तए णं से विजए देवे केसालंकारेणं वत्थालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकिते विभूसिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता'[9] अलंकारियसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ववसायसभं

---

१. सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेंति २ एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विजयस्स देवस्स आलंकारियं भंडं उवणेह तेणेव ते आलंकारियं भंडं जाव उवट्ठवेंति (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. अणुलिंपित्ता तयणंतरं च णं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

३. °वायगेज्झं (क, ख); °वावबज्झं (ट, त्रि) ।

४. °सरिसप्पभं (क, ख, ट, त्रि) ।

५. एवं एकावलिं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

६. दसमुद्दियाणंतकं कडिसुत्तकं वेअच्छिसुत्तगं मुरविं कंठमुरविं पालंबं (क, ख, ग, ट, त्रि); दसमुद्दियाणंताइं कडिसुत्तं (ता) ।

७. चित्तं रतणसंकुडुक्कडं (ता) ।

८. सुकुडेति (क, ख); सुकडेति (ग, ट); सुक्किडेति (त्रि); एततरदं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः (३।२१०) सूत्रस्याधारेण स्वीकृतः, हीरविजयसूरिणा अस्य व्याख्या एवं कृतास्ति—भुकुंडंति—उद्धूलयन्ति (हस्तलिखितवृत्तिपत्र ३०२)। प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु लिपिदोषेणास्य पदस्य अन्यथात्वं जातमिति सम्भाव्यते। भगवतीवृत्तौ (पत्र ४७७) वाचनान्तरपाठस्य विवरणे 'भुकुंडेंति त्ति उद्धूलयन्ति' इति लभ्यते ।

९. दिव्वं सुमणदामं पिणिधेति २ दद्दरमलयसुगंधगंधिए य गंधे पिणिधेइ २ गंथिमवेढिमपूरिमघातिमेणं चतुव्विधेणं म० (ता) अस्या अग्रिमं पत्रं नोपलभ्यते। दिव्वं सुमणदामं पिणिधेइ। तए णं से विजए देवे गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अप्पाणं अलंकियविभूसियं करेइ, करेत्ता पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ (मवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुप्पदाहिणीकरेमाणे-अणुप्पदाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

४५३. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स आभिओगिया देवा पोत्थयरयणं उवणेंति ॥

४५४. तए णं से विजए देवे पोत्थयरयणं गेण्हति, गेण्हित्ता पोत्थयरयणं मुयति, मुएत्ता पोत्थयरयणं विहाडेति, विहाडेत्ता पोत्थयरयणं वाएति, वाएत्ता धम्मियं ववसायं 'ववसइ, ववसइत्ता'[1] पोत्थयरयणं पडिणिक्खिवेइ, पडिणिक्खिवेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता ववसायसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता णंदं पुक्खरिणिं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे-अणुप्पयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता पुरत्थिमिल्लेणं तिसोपाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता हत्थं पादं पक्खालेति, पक्खालेत्ता एगं महं सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गिण्हति, गिण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं पउमाइं जाव[2] सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हति, गिण्हित्ता णंदातो पुक्खरिणीतो पच्चुत्तरेइ, पच्चुत्तरेत्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४५५. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव[3] अण्णे य बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य अप्पेगइया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्तहत्थगया विजयं देवं पिट्ठतो-पिट्ठतो अणुगच्छंति ॥

४५६. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स बहवे आभिओगिया देवा देवीओ य वंदणकलसहत्थगता जाव धूवकडुच्छुयहत्थगता विजयं देवं पिट्ठतो-पिट्ठतो अणुगच्छंति ॥

४५७. तए णं से विजए देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव अण्णेहि य बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए सव्वजुतीए जाव णिग्घोसणाइयरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिद्धायतणं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे-अणुप्पयाहिणी करेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता 'आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेति, करेत्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता जिणपडिमाओ पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए ण्हावेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाताइं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूसजुयलाइं'[4] णियंसेइ, णियंसेत्ता अग्गेहिं वरेहिं 'गंधेहिं मल्लेहि य'[5] अच्चेति, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं

१. पगिण्हति पगिण्हित्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

२. जी० ३।२८६।

३. जी० ३।४४६।

४. जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति २ त्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेति २ त्ता लोमहत्थगं गेण्हति २ त्ता जिणपडिमाओ लोमहत्थएणं पमज्जति २ त्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेति २ त्ता दिव्वाए सुरभिगंधकासाइए गाताइं लूहेति २ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाताइं अणुलिंपति २ त्ता जिणपडिमाणं अहयाइं सेताइं दिव्वाइं देवदूसजुयलाइं (क, ख, ग, ट त्रि)।

५. पुप्फेहिं गंधेहिं मल्लेहिं चुण्णेहिं (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वण्णारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं आभरणारुहणं करेति, करेत्ता[1] जिणपडिमाणं पुरतो अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसा-तंदुलेहिं[2] अट्ठट्ठमंगलए आलिहति[3], आलिहित्ता 'कयग्गाहग्गहितकरतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं'[4] पुप्फपुंजोवयारकलितं[5] करेति, करेत्ता चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवगंधुत्तमाणुविद्धं धूमवट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियामयं कडुच्छुयं पग्गहित्तु पयतो[6] धूवं दाऊण जिणवराणं 'सत्तट्ठ पदाणि ओसरति, ओसरित्ता दसंगुलिं अंजलिं करिय मत्थयम्मि य पयतो अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहिं 'अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहिं'[7] संथुणइ, संथुणित्ता'[8] वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि णिवाडेइ[9] तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि णमेइ,[10] णमेत्ता ईसिं पच्चुण्णमति, पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरति[11], साहरित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए 'अंजलिं कट्टु एवं वयासी— णमोत्थु णं अरहंताणं 'भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्त-माणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगणाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरणाणदंसणधराणं विअट्टच्छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवं अयलं अरुअं अणंतं अक्खयं अव्वाबाहं अपुणरावित्ति सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं'[12] वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता—

४५८. जेणेव सिद्धायणस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता दिव्वाए[13] दगधाराए[14] अब्भुक्खति, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं[15] दलयति,

---

१. करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारितमल्लदाम-कलावं करेति करेत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

२. अच्छरस-तन्दुलाः, पूर्वपदस्य दीर्घान्तता प्राकृतत्वात् (मवृ)।

३. आलिहति तं जहा सोत्थियसिरिवच्छ जाव दप्पण अट्ठट्ठमंगलए आलिहति (क, ख, ग, ट, त्रि)।

४. °विप्पमुक्केहिं दसद्धवण्णेहिं कुसुमेहिं सव्वतो समंता (ता)।

५. मुक्कपुप्फ° (क, ख, ग, ट, त्रि)।

६. पयत्तेणं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

७. महावित्तेहिं अपुणरुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं (ता)।

८. अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहिं महावित्तेहिं अत्थ-जुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं संथुणइ २ त्ता सत्तट्ठ पयाइं ओसरति ओसरित्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

९. णीहट्टु (क, ख, ग, ता)।

१०. णिवाएति (ता)।

११. पडिसाहरति (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१२. भगवंताणं जाव सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं तिकट्टु (क, ख, ग, ट, त्रि)। एवं प्रणिपति-दण्डकं पठित्वा 'वंदइ नमंसइ' इति (मवृ)।

१३. रायपसेणइयसुत्ते (सू० २९३) 'उवागच्छित्ता' इति पदानन्तरं 'लोमहत्थगं परामुसइ, परामु-सित्ता सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभागं लोम-हत्थेणं पमज्जति, पमज्जित्ता' इति पाठोस्ति। प्रस्तुतसूत्रस्यादर्शेषु एष नोपलभ्यते, वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः।

१४. उदग° (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१५. पंचंगुलितलेणं मंडलं आलिहति आलिहित्ता चच्चए (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दलइत्ता कयग्गाहग्गहियकरतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं[1] करेति, करेत्ता धूवं दलयति, दलइत्ता—

४५९. जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थयं गेण्हइ, गेण्हित्ता दारचेडीओ[2] य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खति, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयति, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव[3] आभरणारुहणं करेति, करेत्ता आसत्तोसत्तविपुल-वट्टवग्घारितमल्लदामकलावं करेति, करेत्ता कयग्गाहग्गहित[4]-•करतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फ° पुंजोवयारकलितं करेति, करेत्ता धूवं दलयति, दलइत्ता—

४६०. जेणेव 'दाहिणिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स'[5] मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेति, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं[6] मंडलगं आलिहति, आलिहित्ता कयग्गाह[7]-•ग्गहियकरतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलितं करेति, करेत्ता° धूवं दलयति, दलइत्ता—

४६१. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता दारचेडीओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खति, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं[8] •चच्चए दलयति, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गाहग्गहितकरतल-पब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेति, करेत्ता° धूवं दलयति, दलइत्ता—

४६२. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ला[9] खंभपंती तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता खंभे य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खति, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयति, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गाहग्गहियकरतल-पब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता धूवं दलयति दलइत्ता—

४६३. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव सव्वं भाणियव्वं

---

१. मुक्कपुप्फ° (क, ख, ग, ट, त्रि)।
२. दारविग्गओ (क, ख, ट) सर्वत्र।
३. जी० ३।४५५।
४. सं० पा०—कयग्गाहग्गहित जाव पुंजोवयार-कलितं।
५. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।
६. पंचंगुलितलेणं (क, ख, ग, ट, त्रि)।
७. सं० पा०—कयग्गाह जाव धूवं।
८. सं० पा०—गोसीसचंदणेणं जाव चच्चए दलयति आसत्तोसत्तकयग्गाह धूवं।
९. उत्तरिल्लाणं (ग, ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव[1] दारस्स अच्चणिया ॥

४६४. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति तं चेव[2] ॥

४६५. जेणेव दाहिणिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता अक्खाडगं च मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खति, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयति, दलइत्ता पुप्फारुहणं[3] °जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गाहग्गहितकरतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलइत्ता—

४६६. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, दारच्चणिया[4] ॥

४६७. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ला खंभपंती तहेव[5] ॥

४६८. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति तहेव[6] ॥

४६९. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ तहेव[7] ॥

४७०. जेणेव दाहिणिल्ले चेइयथूभे[8] तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता चेइयथूभं च मणिपेढियं च लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खइ, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गाहग्गहितकरतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता धूवं दलयति, दलइत्ता—

४७१. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जिणपडिमाए आलोए पणामं करेइ, करेत्ता 'जाव[9] नमंसित्ता'[10] ॥

४७२. जेणेव[11] उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छति,

---

१. जी० ३।४६१।
२. जी० ३।४६१।
३. सं० पा०—पुप्फारुहणं जाव धूवं।
४,६,७. जी० ३।४६१।
५. जी० ३।४६२।
८. चैत्यस्तम्भः (मवृ)।
९. जी० ३।४५७।
१०. लोमहत्थगं गेण्हति २ त्ता तं चेव सव्वं जं जिणपडिमाणं जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं वंदति णमंसति (क, ख, ग, ट, त्रि)।
११. ४७२-४७४ सूत्राणां स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठसंक्षेपोस्ति—एवं उत्तरिल्लाए वि एवं पुरत्थिमिल्लाए वि एवं दाहिणिल्लाए वि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छित्ता जाव नमंसित्ता ॥

४७३. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जाव नमंसित्ता ॥

४७४. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जाव नमंसित्ता ॥

४७५. जेणेव दाहिणिल्ले चेइयरुक्खे, दारविही[1] ॥

४७६. जेणेव दाहिणिल्ले महिंदज्झए, दारविही[2] ॥

४७७. जेणेव दाहिणिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता 'तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए य'[3] सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खइ, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयति, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गाहग्गहिय-करतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता धूवं दलयति, दलइत्ता—

४७८. सिद्धायतणं[4] अणुप्पयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव

१,२. जी० ३।४६१।

३. वेतियाओय तिसोमाणपडिरूवए य तोरणे य (क, ख, ग, ट, त्रि)।

४. ४७८-५१५ एतेषां सूत्राणां स्थाने आदर्शेषु वृत्तौ च पाठसंक्षेपो लभ्यते—सिद्धायतणं अणुप्पयाहिणं करेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ त्ता तहेव महिंदज्झया चेतियारुक्खे चेतियथूभे पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जिणपडिमा उत्तरिल्ला पुरत्थिमिल्ला दक्खिणिल्ला पेच्छाधरमंडवस्सवि तहेव जहा दक्खिणिल्लस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे जाव दक्खिणिल्ला णं खंभपंती मुहमंडवस्सवि तिण्हं दाराणं अच्चणिया भणिऊणं दक्खिणिल्ला णं खंभपंती उत्तरे दारे पुरच्छिमे दारे सेसं तेणेव कमेण जाव पुरत्थिमिल्ला णंदापुक्खरिणी जेणेव सभा सुधम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाए (क, ख, ग, ट, त्रि); सिद्धायतणं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरणी तेणेव उवाग २ वेइयासु य तोरणेसु य तिसोमाणअच्चणियं करेति जच्चेव णिग्गच्छमाणस्स दाहिणदहादीणं पज्जवसाणा सच्चेव समाणस्सवि णंदापुक्खरआदीया उत्तरिल्लादारावसाणा णातव्वा तं पुक्खरणी महिंदझया चेतिया चेतियथूभो पच्चत्थि पडिमा उत्तर पुर दाहिणापडिमा पेच्छाधरमं मुहमं उत्तरे दारे दारविधी जाव धूवं दहति २ जेणेव पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति एस वि दारादि जाव पुक्खरणावसाणा णातव्वा तं पुरिमे दारे मुह पे थू दाहिणा पडिमा पच्च उत्तर पुरत्थिमि जिण रुक्खो महिंदा पुक्खरणी (ता); सिद्धायतनमनुप्रदक्षिणीकृत्य यत्रैवोत्तरा नन्दापुष्करिणी स तत्रोपागच्छति, उपागत्य पूर्ववत्सर्वं करोति, कृत्वा चौत्तराहे माहेन्द्रध्वजे तदनन्तरमौत्तराहे चैत्यवृक्षे तत औत्तराहे चैत्यस्तूपे ततः पश्चिमोत्तरपूर्वदक्षिणजिनप्रतिमासु पूर्ववत्सर्वा वक्तव्या. तदनन्तरमौत्तराहे प्रेक्षागृहमण्डपे समागच्छति, तत्र दाक्षिणात्ये प्रेक्षागृहमण्डपे पूर्ववत्सर्वं वक्तव्यं, तत उत्तरद्वारेण विनिर्गत्यौत्तराहे मुखमण्डपे समागच्छति, तत्रापि दाक्षिणात्यमण्डपवत्सर्वं कृत्वोत्तरद्वारेण विनिर्गत्य सिद्धायतनस्य पूर्वद्वारे समागच्छति, तत्रार्चनिकां पूर्ववत्कृत्वा पूर्वस्य मुखमण्डपस्य दक्षिणोत्तरपूर्वद्वारेषु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं चेव[1] ॥

४७९. जेणेव उत्तरिल्ले महिंदज्झए[2] ॥

४८०. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयरुक्खे[3] ॥

४८१. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयथूभे[4] ॥

४८२. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा[5] ॥

४८३. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा[6] ॥

४८४. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा[7] ॥

४८५. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा[8] ॥

४८६. जेणेव उत्तरिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तहेव जहा[9] दक्खिणिल्लस्स ॥

४८७. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे[10] ॥

४८८. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे[11] ॥

४८९. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे[12] ॥

४९०. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ला खंभपंती[13] ॥

४९१. जेणेव उत्तरिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झ-देसभाए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[14] ॥

४९२. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे[15] ॥

४९३. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे[16] ॥

४९४. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे[17] ॥

४९५. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ला खंभपती[18] ॥

४९६. जेणेव सिद्धायतणस्स उत्तरिल्ले दारे[19] ॥

४९७. जेणेव सिद्धायतणस्स पुरत्थिमिल्ले दारे[20] ॥

४९८. जेणेव पुरत्थिमिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[21] ॥

क्रमेणोक्तरूपां पूजां विधाय पूर्वद्वारेण विनिर्गत्य पूर्वप्रेक्षामण्डपे समागत्य पूर्ववदर्चनिकां करोति ततः पूर्वप्रकारेणैव क्रमेण चैत्यस्तूपजिनप्रतिमाचैत्यवृक्षमाहेन्द्रध्वजनन्दापुष्करिणीनाम् (मवृ) । विषयावबोधस्य सौविध्यार्थं एष संक्षिप्तः पाठः पृथक्-पृथक् सूत्ररूपेण समायोजितोस्ति ।

१. जी० ३।४७७ ।
२. जी० ३।४७६ ।
३. जी० ३।४७५ ।
४. जी० ३।४७० ।
५,६,७,८. जी० ३।४७१ ।
९. जी० ३।४६५ ।
१०,११,१२. जी० ३।४६१ ।
१३. जी० ३।४६२ ।
१४. जी० ३।४६० ।
१५,१६,१७. जी० ३।४६१ ।
१८. जी० ३।४६२ ।
१९,२०. जी० ३।४५९ ।
२१. जी० ३।४६० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४९९. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे[1] ।।

५००. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ला खंभपती[2] ।।

५०१. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे[3] ।।

५०२. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे[4] ।।

५०३. जेणेव पुरत्थिमिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे[5] ।।

५०४. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे[6] ।।

५०५. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ला खंभपती[7] ।।

५०६. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे[8] ।।

५०७. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे[9] ।।

५०८. जेणेव पुरत्थिमिल्ले चेइयथूभे[10] ।।

५०९. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा[11] ।।

५१०. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा[12] ।।

५११. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा[13] ।।

५१२. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा[14] ।।

५१३. जेणेव पुरत्थिमिल्ले चेइयरुक्खे[15] ।।

५१४. जेणेव पुरत्थिमिल्ले महिंदज्झए[16] ।।

५१५. जेणेव पुरत्थिमिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जाव[17] धूवं दलयइ, दलइत्ता—

५१६. जेणेव[18] सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभं सुहम्मं पुरत्थि-

---

१. जी० ३।४६१।
२. जी० ३।४६२।
३,४. जी० ३।४६१।
५. जी० ३।४६५।
६. जी० ३।४६१।
७. जी० ३।४६२।
८,९. जी० ३।४६१।
१०. जी० ३।४७०।
११-१४. जी० ३।४७१।
१५. जी० ३।४७५।
१६. जी० ३।४७६।
१७. जी० ३।४७७।
१८. प्रस्तुतसूत्रस्य पाठः 'ता' प्रतिमनुसृत्य स्वीकृतोस्ति । वृत्तावपि प्रायः एवमेव व्याख्यातोस्ति । रायपसेणइयवृत्तावपि प्रायोस्य संवादित्वं दृश्यते । शेषप्रयुक्तादर्शेषु पाठभेदबाहुल्यमस्ति तच्चैवम्—तते णं तस्स विजयस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ एयप्पभिति जाव सव्विड्ढीए जाव णाइयरवेणं जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छंति २ त्ता । तए णं सभं सुधम्मं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे २ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति २ आलोए जिणसकहाणं पणामं करेति २ जेणेव मणिपेढिया तेणेव उवागच्छति २ त्ता जेणेव माणवयचेतियखंभे जेणेव वइरामया गोलवट्टसमुग्गका तेणेव उवागच्छति २ लोमहत्थयं गेण्हति २ वइरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थएण पमज्जइ २ वइरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेति २ त्ता जिणसकहाओ लोमहत्थएणं पमज्जति २ त्ता सुरभिणा गंधोदएणं तिसत्तखुत्तो जिणसकहाओ पक्खा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिल्लेणं दारेणं अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव[1] मणिपेढिया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आलोए जिणसकहाणं पणामं करेति, करेत्ता जेणेव माणवए चेतियखंभे जेणेव वइरामया गोलवट्टसमुग्गका तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए गेण्हइ, गेण्हित्ता विहाडेइ, विहाडेत्ता 'जिणसकहाओ गेण्हइ, गेण्हित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता जिणसकहाओ'[2] लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खइ, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता 'अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता'[3] धूवं दहति, दहित्ता वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पक्खिवइ, पक्खिवित्ता 'वइरामए गोलवट्टसमुग्गए पडिपिधेइ, पडिपिधेत्ता'[4] वइरामए गोलवट्टसमुग्गए पडिणिक्खिवइ, पडिणिक्खिवित्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता 'लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता'[5] माणवकं चेतियखंभं लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खइ, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता 'पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गाहग्गहितकरतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता धूवं दलयइ, दलइत्ता'[6]—

५१७. जेणेव[7] मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव तहेव दारच्चणिया[8] ।।

लेति २ सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिपइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहि य अच्चिणति २ त्ता धूवं दलयति २ त्ता वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पडिणिक्खिवति २ त्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ २ त्ता माणवकं चेतियखंभं लोमहत्थएणं पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ २ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयति २ पुप्फारुहणं जाव आसत्तोसत्त कयग्गाह धूवं दलयति ।

१. जे णं सा (ता)।

२. × (मवृ) ।

३. अच्चिणति २ (ता) ।

४. × (मवृ) ।

५. × (मवृ) ।

६. पुष्पाद्यारोपणं धूपदानं च करोति (मवृ)।

७. ५१७-५२१ सूत्राणां पाठः वृत्तिमनुसृत्य स्वीकृतोस्ति । 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु सुधर्मसभाया बहुमध्यदेशभागसूत्रस्य पश्चात् सिंहासन-देवशयनीय - क्षुल्लकमहेन्द्रध्वज - प्रहरणकोशसूत्राणि विद्यन्ते, यथा—जेणेव सभाए सुधम्माए बहुमज्झदेसभाए तं चेव । जेणेव सीहासणे तेणेव तहेव दारच्चणिता । जेणेव देवसयणिज्जे तं चेव जेणेव खुड्डागे महिंदज्झए तं चेव जेणेव पहरणकोसे चोप्पाले तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पत्तेयं २ पहरणाइं लोमहत्थएणं पमज्जति, पमज्जित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं तहेव सव्वं ।

वृत्तिव्याख्या एवमस्ति—सिंहासनप्रदेशे समागत्य सिंहासनस्य लोमहस्तकेन प्रमार्जनादिरूपां पूर्ववदर्चनिकां करोति, कृत्वा यत्र मणिपीठिका यत्र च देवशयनीयं तत्रोपागत्य मणिपीठिकाया देवशयनीयस्य च प्राग्वदर्चनिकां करोति तत उक्तप्रकारेणैव क्षुल्लकेन्द्रध्वजपूजां करोति कृत्वा च यत्र चोप्पालको नाम प्रहरणकोशस्तत्र समागत्य लोमहस्तेन परिघरत्नप्रमुखाणिप्रहरणरत्नानि प्रमार्जयति, प्रमार्ज्योदकधारयाऽभ्युक्षणं चन्दनचर्चां पुष्पाद्यारोपणं धूपदानं करोति, कृत्वा सभायाः सुधर्माया बहुमध्यदेशभागेऽर्चनिकां पूर्ववत्करोति, कृत्वा ।

रायपसेणइयवृत्तावपि अस्याः संवादित्वं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१८. जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[1] ॥

५१९. जेणेव मणिपेढिया जेणेव खुड्डागमहिंदज्झए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[2]—

५२०. जेणेव पहरणकोसे चोप्पाले तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता फलिहरयणपामोक्खाइं पहरणरयणाइं लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खइ, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयति, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेति, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेति, करेत्ता कयग्गाहग्गहियकरतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेति, करेत्ता धूवं दलयति, दलइत्ता—

५२१. जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[3]—

५२२. जेणेव[4] सभाए सुहम्माए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[4]—

दृश्यते । प्रस्तुतागमे बहुषु स्थानेषु वृत्तिव्याख्यायां ताडपत्रीयप्रतौ अर्वाचीनादर्शेभ्यः महान् वाचनाभेदो दृश्यते ।

८. जी० ३।४६५ ।

१,२. जी० ३।४६५ ।

३. जी० ३।४५८ ।

४. ५२२-५५३ सूत्राणां संक्षिप्तपाठस्य स्वतन्त्रसूत्रविन्यासो मूलपाठे कृतोस्ति । अनेन विषयावबोधस्य जटिलता निराकृताभूत् । संक्षिप्तपाठ एवमस्ति—सेसंपि दक्खिणदारं आदिकाउं तहेव णेयव्वं जाव पुरत्थिमिल्ला णंदापुक्खरिणी । सव्वाणं सभाणं जहा सुधम्माए सभाए तहा अच्चणिया उववायसभाए णवरि देवसयणिज्जस्स अच्चणिया । सेसासु सीहासणाण अच्चणिया । हरयस्स जहा णंदाए पुक्खरिणीए अच्चणिया । ववसायसभाए पोत्थयरयणं लोम दिव्वाए उदगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिपति अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य अच्चिणति २ त्ता लोमहत्थएणं पमज्जति जाव धूवं दलयति सेसं तं चेव णंदाए जहा हरयस्स तहा ।

एतेषां सूत्राणां वृत्तिव्याख्यानमित्थं वर्तते—सभायाः सुधर्माया दक्षिणद्वारे समागत्याचंनिकां पूर्ववत्करोति, ततो दक्षिणद्वारे विनिर्गच्छति, इत ऊर्ध्वं यथैव सिद्धायतनान्निष्क्रामतो दक्षिणद्वारादिका दक्षिणनन्दापुष्करिणी पर्यवसाना पुनरपि प्रविशत उत्तरनन्दापुष्करिणीप्रभृतिका उत्तरान्ता ततो द्वितीयं वारं निष्क्रामतः पूर्वद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसानार्चनिका वक्तव्या तथैव सुधर्मायाः सभाया अप्यन्यूनातिरिक्ता द्रष्टव्या ततः पूर्वनन्दापुष्करिण्या अर्चनिकां कृत्वोपपातसभां पूर्वद्वारेण प्रविशति, प्रविश्य च मणिपीठिकाया देवशयनीयस्य तदनन्तरं बहुमध्यदेशभागे प्राग्वदर्चनिकां विदधाति, ततो दक्षिणद्वारेण समागत्य तस्यार्चनिकां कुरुते, अत ऊर्ध्वमत्रापि सिद्धायतनवद्दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसानाऽर्चनिका वक्तव्या ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतोऽपक्रम्य ह्रदे समागत्य पूर्ववत्तोरणार्चनिकां करोति, कृत्वा पूर्वद्वारेणाभिषेकसभायां प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकायाः सिंहासनस्याभिषेकभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च पूर्ववदर्चनिकां क्रमेण करोति, तदनन्तरमत्रापि सिद्धायतनवद्दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसानाऽर्चनिका वक्तव्या, ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतः पूर्वद्वारेणालंकारसभां पूर्वद्वारार्चनिका पुरस्सरं प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकाया सिंहासनस्य अलंकारभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिकां करोति, ततोत्रापि सिद्धायतनवद्दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वाच्याः ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतः पूर्वद्वारेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२३. सभं सुहम्मं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[१]—

५२४. जेणेव सभाए सुहम्माए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[२]—

५२५. जेणेव सभाए सुहम्माए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[३]—

५२६. जेणेव उववायसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता उववायसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[४]—

५२७. जेणेव उववायसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[५]—

५२८. जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[६]—

५२९. उववायसभं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[७]—

५३०. जेणेव उववायसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[८]—

५३१. जेणेव उववायसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[९]—

५३२. जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता[१०]—

५३३. जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अभिसेयसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[११]—

५३४. जेणेव सुबहू अभिसेयभंडे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[१२]—

५३५. जेणेव अभिसेयसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[१३]—

५३६. जेणेव अभिसेयसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[१४]—

५३७. अभिसेयसभं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव

व्यवसायसभां प्रविशति, प्रविश्य पुस्तकरत्नं लोमहस्तकेन प्रमृज्योदकधारयाऽभ्युक्ष्य चन्दनेन चर्चयित्वा वरगन्धमाल्यैरर्चयित्वा पुष्पाद्यारोपणं धूपदानं च करोति, तदनन्तरं मणिपीठिकायाः सिंहासनस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेणार्चनिकां करोति, तदनन्तरमत्रापि सिद्धायतनवद्दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणी पर्यवसानाऽर्चनिका वक्तव्या।

ताडपत्रीयादर्शे किञ्चित् पाठ उपलब्धोस्ति, किञ्चित् पाठः तत्पत्रानुपलब्धौ अनुपलब्धोस्ति। उपलब्धपाठः प्रायो वृत्तिसंवादी वर्तते।

५. जी० ३।४५६-४७७।

१. जी० ३।४७८-४९५।

२. जी० ३।४९६।

३. जी० ३।४९७-५१५।

४. जी० ३।४६५।

५. जी० ३।४५८।

६. जी० ३।४५६-४७७।

७. जी० ३।४७८-४९५।

८. जी० ३।४९६।

९. जी० ३।४९७-५१५।

१०. जी० ३।४७७।

११,१२. जी० ३।४६५।

१३. जी० ३।४५८।

१४. जी० ३।४५६-४७७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[१]—

५३८. जेणेव अभिसेयसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[२]—

५३९. जेणेव अभिसेयसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता[३]—

५४०. जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[४] ॥

५४१. जेणेव सुबहू अलंकारियभंडे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[५]—

५४२. जेणेव अलंकारियसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[६]—

५४३. जेणेव अलकारियसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[७]—

५४४. अलंकारियसभं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[८]—

५४५. जेणेव अलंकारियसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[९]—

५४६. जेणेव अलंकारियसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[१०]—

५४७. जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ववसायसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेण अणुप्पविसति अणुप्पविसित्ता जेणेव पोत्थयरयणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता पोत्थयरयणं लोमहत्थगेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खति, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयति, दलइत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं[११] ॥

५४८. जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[१२]—

५४९. जेणेव ववसायसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[१३]—

५५०. जेणेव ववसायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[१४]—

५५१. ववसायसभं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[१५] ॥

५५२. जेणेव ववसायसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[१६]—

५५३. जेणेव ववसायसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता[१७]—

---

१. जी० ३।४७८-४९५ ।
२. जी० ३।४९६ ।
३. जी० ३।४९७-५१५ ।
४,५. जी० ३।४६५ ।
६. जी० ३।४५८ ।
७. जी० ३।४५९-४७७ ।
८. जी० ३।४७८-४९५ ।
९. जी० ३।४९६ ।
१०. जी० ३।४९७-५१५ ।
११,१२. जी० ३।४६५ ।
१३. जी० ३।४५८ ।
१४. जी० ३।४५९-४७७ ।
१५. जी० ३।४७८-४९५ ।
१६. जी० ३।४९६ ।
१७. जी० ३।४९७-५१५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५४. [1]जेणेव बलिपीढे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता बलिपीढस्स बहुमज्झदेसभागं दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खति, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं दलयति, दलइत्ता कयग्गाहग्गहियकरतलपब्भट्ठविमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेति, करेत्ता धूवं दलयति, दलइत्ता आभिओगिए देवे" सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विजयाए रायहाणीए 'सिंघाडगेसु[2] तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु चउम्मुहेसु महापहपहेसु[3] पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु[4] आरामेसु उज्जाणेसु काणणेसु वणेसु वणसंडेसु वणराईसु अच्चणियं करेह, करेत्ता ममेयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह"[5] ।।

५५५. ततेणं ते आभिओगिया[6] देवा विजएणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा[7] हट्ठतुट्ठ[8]-•चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया करतलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति,° पडिसुणेत्ता विजयाए रायहाणीए सिंघाडगेसु जाव वणराईसु अच्चणियं करेति, करेत्ता जेणेव विजए देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता[9] •विजयं देवं करतलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

५५६. [11]तए णं से विजए देवे बलिपीढे बलिविसज्जणं करेति, करेत्ता जेणेव उत्तरपुरत्थिमिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता 'उत्तरपुरत्थिमिल्लं नंदं पुक्खरिणिं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे"[10] पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुभति, पच्चोरुभित्ता हत्थपायं पक्खालेति, पक्खालेत्ता"[11] णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरति, पच्चुत्तरित्ता 'जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव

---

१. जेणेव बलिपीढं तेणेव उवागच्छति २त्ता आभिओगे देवे (क, ख, ग, ट, त्रि); जेणेव बलिपेढे दारविधी जाव धूवं डहति बलिविसज्जणं करेति २ आभियोग्गे देवे (ता); ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतो बलिपीठे समागत्य तस्य बहुमध्यदेशभागे पूर्ववदर्चनिकां करोति, कृत्वा चोत्तरपूर्वस्यां नन्दापुष्करिण्यां समागत्य तस्यास्तोरणेषु पूर्ववदर्चनिकां कृत्वाभियोगिकान् देवान् (मवृ) ।

२. 'क, ख, ग, त्रि' आदर्शेषु 'सिंघाडगेसु य' एवं प्रतिपदानन्तरं यकारो विद्यते ।

३. महापहपहेसु य पासाएसु य (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

४. तोरणेसु य वावीसु य पुक्खरिणीसु य जाव बिलपंतिगासु य (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

५. पागारेसु अट्टालएसु तरियासु दारेसु गोपुरेसु आरामेसु उज्जाणेसु काणणेसु वणेसु वणसंडेसु वणराई सिंघाडग तिय जाव पथेसु अच्चणियं करेध २ तमाणत्तियं पच्च (ता) ।

६. आभिओग्गा (ता) ।

७. समाणा जाव (क, ख, ग, ट, त्रि); अत्र 'जाव' पदस्य विपर्यासो जातः अथवा 'हट्ठतुट्ठा' इति पदस्य अनपेक्षितो लेखो जातः ।

८. सं० पा०—हट्ठतुट्ठा करतल जाव कट्टु एवं देवो त्ति जाव पडिसुणेत्ता ।

९. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव कट्टु ।

१०. णंद पु (ता) ।

११. तए णं से विजए देवे तेसिं णं आभिओगियाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिय जाव हयहियए जेणेव णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ त्ता पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं जाव हत्थपायं पक्खालेति २ त्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहारेत्थ गमणाए"[१] ॥

५५७. तए णं से विजए देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं[२] •चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणियाहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसेहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं° अण्णेहि य बहूहिं विजयरायहाणीवत्थव्वेहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[३] दुंदुहिनिग्घोसणाइयरवेणं 'विजयाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं'[४] जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

५५८. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति ॥

५५९. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पुरत्थिमेणं पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति ॥

५६०. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भितरियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ पत्तेयं-पत्तेयं[५] •पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु° णिसीयंति। एवं दक्खिणेणं मज्झिमियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ जाव णिसीदंति। दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पत्तेयं-पत्तेयं जाव णिसीदंति ॥

५६१. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स पच्चत्थिमेणं सत्त अणियाहिवती पत्तेयं-पत्तेयं जाव णिसीयंति ॥

५६२. तए णं तस्स विजयस्स देवस्स पुरत्थिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीदंति, तं जहा— पुरत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ[६], •दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ°, उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ। ते णं आयरक्खा सन्नद्ध-बद्ध-वम्मियकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्धगेवेज्ज[७]-विमलवरचिंधपट्टा गहियाउहपहरणा, ति-णयाइं ति-संधीणि वइरामयकोडीणि धणूइं अभिगिज्झ परियाइयकंडकलावा णीलपाणिणो पीयपाणिणो रत्तपाणिणो चावपाणिणो चारुपाणिणो चम्मपाणिणो 'दंडपाणिणो खग्गपाणिणो'[८] पासपाणिणो णील-पीय-रत्त-चाव-चारु-चम्म-दंड-खग्ग-पासधरा आयरक्खा रक्खोवगा गुत्ता गुत्तपालिता जुत्ता जुत्तपालिता पत्तेयं-पत्तेयं समयतो विणयतो किंकरभूता विव चिट्ठंति ॥

५६३. तए[९] णं से विजए देवे चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं

---

१. × (ता, मवृ)।
२. सं० पा०—सामाणियसाहस्सीहिं जाव अण्णेहि।
३. जी० ३।४४६।
४. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।
५. सं० पा०—पत्तेयं जाव णिसीयंति।
६. सं० पा०—साहस्सीओ जाव उत्तरेणं।
७. पिणद्धगेवेज्जबद्धआविद्ध (क, ख, ग, ट, त्रि)।
८. खग्गपाणिणो दंडपाणिणो (क, ख, ग, ट, त्रि)।
९. 'तए णं से विजए' इत्यादि सुप्रतीतं यावद्विजयदेववक्तव्यतापरिसमाप्तिः, इति वृत्तिगतसंकेताधारेण तथा रायपसेणइयसूत्रस्य वृत्तेः (पृ० २७१) आधारेण एतत् सूत्रं स्वीकृतम्। अस्य पूर्तिः जी० ३।३५०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं विजयस्स णं दारस्स विजयाए रायहाणीए, अण्णेसिं च बहूणं विजयाए राय-हाणीए वत्थव्वगाणं[1] देवाणं देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।।

५६४. विजयस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता ।।

५६५. विजयस्स णं भंते ! देवस्स सामाणियाणं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता । एमहिड्ढीए एमहज्जुतीए एमहब्बले एमहायसे एमहासोक्खे एमहाणुभागे विजए देवे विजए देवे ।।

वेजयंतादि-अधिगारो

५६६. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स वेजयंते णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं पणयालीसं जोयणसहस्साइं अवाधाए जंबुद्दीवे दीवे दाहिणपेरंते लवणसमुद्ददाहिणद्धस्स उत्तरेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स वेजयंते णामं दारे पण्णत्ते—अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सच्चेव सव्वा वत्तव्वता जाव[2] दारे[3] ।।

५६७. कहि णं भंते ! रायहाणी दाहिणे णं जाव[4] वेजयंते देवे वेजयंते देवे ।।

५६८. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स जयंते णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं पणयालीसं जोयणसहस्साइं जंबुद्दीवे दीवे पच्चत्थिमपेरंते लवणसमुद्दपच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेणं सीओदाए महाणदीए उप्पिं, एत्थ णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स जयंते णामं दारे पण्णत्ते । तं चेव से पमाणं जयंते देवे पच्चत्थिमेणं से रायहाणी जाव एमहिड्ढीए ।।

५६९. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स अपराइए णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स उत्तरेणं पणयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए जंबुद्दीवे दीवे उत्तरपेरंते लवण-समुद्दस्स उत्तरद्धस्स दाहिणेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे अपराइए णामं दारे पण्णत्ते तं चेव पमाणं । रायहाणी उत्तरेणं जाव अपराइए देवे । चउण्हवि अण्णंमि जंबुद्दीवे ।।

५७०. जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स दारस्स य दारस्स य एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! अउणासीतिं जोयणसहस्साइं बावण्णं च जोयणाइं देसूणं च अद्धजोयणं दारस्स य दारस्स य अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ।।

जंबुद्दीवाधिगारो

५७१. जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स पएसा लवणं समुद्दं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ।।

५७२. ते णं भंते ! किं जंबुद्दीवे दीवे ? 'लवणे समुद्दे'[5] ? गोयमा ! ते जंबुद्दीवे दीवे,

---

१. अतः परं 'वाणमंतराणं' इति पदं अध्याहार्यम् ।
२. जी० ३।२९९-३५० ।
३. णिच्चे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
४. जी० ४।३५१-५६५ ।
५. लवणसमुद्दे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो खलु ते लवणे समुद्दे ॥

५७३. लवणस्स णं भंते ! समुद्दस्स पदेसा जंबुद्दीवं दीवं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ॥

५७४. ते णं भंते ! किं लवणे समुद्दे जंबुद्दीवे दीवे ? गोयमा ! लवणे णं ते समुद्दे, नो खलु ते जंबुद्दीवे दीवे ॥

५७५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता लवणे समुद्दे पच्चायंति[1] ? गोयमा ! अत्थेगतिया पच्चायंति, अत्थेगतिया नो पच्चायंति ॥

५७६. लवणे णं भंते ! समुद्दे जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता जंबुद्दीवे दीवे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगतिया पच्चायंति, अत्थेगतिया नो पच्चायंति ॥

५७७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जंबुद्दीवे दीवे[2] ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं णीलवंतस्स दाहिणेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं गंधमायणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं उत्तरकुरा णाम कुरा पण्णत्ता—पाईणपडिणायता उदीणदाहिणवित्थिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिता एक्कारस जोयणसहस्साइं अट्ठ य बायाले जोयणसते दोण्णि य एक्कोणवीसतिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं। तीसे जीवा उत्तरेणं पाईणपडिणायता दुहओ वक्खारपव्वयं पुट्ठा, पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं वक्खारपव्वतं पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं वक्खारपव्वयं पुट्ठा, तेवण्णं जोयणसहस्साइं आयामेणं, तीसे धणुपट्ठं दाहिणेणं सट्ठिं जोयणसहस्साइं चत्तारि य अट्ठारसुत्तरे जोयणसते दुवालस य एकूणवीसतिभाए जोयणस्स परिक्खेवणं पण्णत्ता ॥

५७८. उत्तरकुराए णं भंते ! कुराए केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[3] तणाणं मणीण य वण्णो गंधो फासो सद्दो य भाणितव्वो ॥

५७९. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहुईओ खुड्डा-खुड्डीयाओ

१. पच्चायांति (ट)।

२. अस्य निगमनं ७०२ सूत्रे वर्तते।

३. जी० ३।२७७-२८५। 'जाव' इति पदादग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' सकेतितादर्शेषु उत्तरकुरु वक्तव्यतायाः संक्षिप्तः पाठोस्ति, विशदवर्णनार्थं च एकोरुकद्वीपवक्तव्यतायै समर्पितोस्ति, यथा—एवं एक्कोरुयदीववत्तव्वया जाव देवलोकपरिग्गहा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! णवरि इमं णाणत्तं—छधणुसहस्समूसिता दोछप्पन्ना पिट्ठकरंडसता अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति तिण्णि पलिओवमाइं देसूणाइं पलिओवमस्सासंखेज्जाइभागेण ऊणगाइं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं उक्कोसेणं एकूणपण्णराइंदियाइं अणुपालणा, सेसं जहा एगरूयाणं। उत्तरकुराए णं कुराए छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जंति, तं जहा—पम्हगंधा मियगंधा अममा सहा तेयालीसे सणिच्चारी। द्रष्टव्यं ३।२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम्। अर्वाचीनादर्शेषु उत्तरकुरुवक्तव्यता संक्षिप्तास्ति, एकोरुकवक्तव्यता च विस्तृतास्ति। ताडपत्रीयादर्शे, हारिभद्रीयवृत्तौ मलयगिरिवृत्तौ च एकोरुकवक्तव्यता संक्षिप्तास्ति, उत्तरकुरुवक्तव्यता च विस्तृतास्ति। अस्माभिः प्राचीनादर्शस्य वृत्त्योश्चाधारेण उत्तरकुरुवक्तव्यताया विस्तृतपाठः समादृतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वावीओ जाव[1] बिलपंतियाओ, तिसोवाणपडिरूवगा, तोरणा, पव्वयगा, पव्वयगेसु आसणाइं, घरगा, घरएसु आसणाइं, मंडवगा, मंडवएसु पुढविसिलापट्टगा। तत्थ णं बहवे उत्तरकुरा मणुस्सा मणुस्सीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीलंति मोहंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति[2] ॥

५८०. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे सेरियागुम्मा[3] •णोमालियागुम्मा कोरंटयगुम्मा बंधुजीवगगुम्मा मणोज्जगुम्मा बीयगुम्मा बाणगुम्मा कणइरगुम्मा कुज्जायगुम्मा सिंदुवारगुम्मा जातिगुम्मा मोग्गरगुम्मा जूहियागुम्मा मल्लियागुम्मा वासंतियागुम्मा वत्थुलगुम्मा कत्थुलगुम्मा सेवालगुम्मा अगत्थिगुम्मा मगदंतियागुम्मा चंपकगुम्मा जातिगुम्मा णवणीइयागुम्मा कुंदगुम्मा° महाजाइगुम्मा। ते णं गुम्मा दसद्धवण्णं कुसुमं कुसुमंति जेण कुराए बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे वायविहुयग्गसालेहिं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए सिरीए अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

५८१. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे रुक्खा हेरुयालवणा[4] भेरुयालवणा मेरुयालवणा सालवणा सरलवणा सत्तवण्णवणा पूयफलिवणा खज्जूरिवणा णालिएरिवणा कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो जाव[5] अणेगसगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणियपडिमोयणा सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, पत्तेहि य पुप्फेहि य[6] अच्छण्ण-पडिच्छण्णा सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

५८२. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे उद्दालका कोद्दालका मोद्दालका कतमाला णट्टमाला वट्टमाला दंतमाला सिंगमाला संखमाला सेयमाला णाम दुमगणा पण्णत्ता समाणाउसो! कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥

५८३. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे तिलया लउया छत्तोवा सिरीसा सत्तिवण्णा लोद्धा धवा चंदणा अज्जुणा णीवा कुडया कदंबा फणसा साला तमाला पियाला[7] पियंगू पारेवया रायरुक्खा णंदिरुक्खा कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥

५८४. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहूओ पउमलयाओ णागलयाओ

---

१. जी० ३।२८६।

२. अस्मिन् सूत्रे समाविष्टानामनेकसूत्राणां पूर्तिस्थलावबोधार्थं द्रष्टव्यं जी० ३।२८६-२९७।

३. सं० पा०—सेरियागुम्मा जाव महाजाइगुम्मा। वृत्तौ अन्तिमं पदं 'महाकुन्दगुल्माः' इति विद्यते, वृत्तिकृता तिस्रः गाथाः उद्धृताः सन्ति, तत्रापि अन्तिमं पदं 'महाकुंदे' इति विद्यते, किन्तु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (२।१०); भगवत्यां (२२।५); प्रज्ञापनायां (१।३८) च अन्तिमं पदं महाजातिगुल्माः इति विद्यते।

४. सेरुतालवणाइं हेरुतालवणाइं (जंबू० २।९)।

५. जी० ३।२७४-२७६।

६. य फलेहि य (जंबू० २।८)।

७. ३८८ सूत्रे 'पियाल' इति पदं दृश्यते। अत्र वृत्तावपि 'प्रियाला' इति विद्यते, किन्तु ताडपत्रीयादर्शे 'पियया' इति पदमस्ति। औपपातिके (सूत्र ९) पि 'पियएहिं' इति पदं लभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असोगलयाओ चंपगलयाओ चूयलयाओ वणलयाओ वासंतिकलयाओ अइमुत्तकलयाओ कुंदलयाओ सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ जाव[1] वडिंसयधराओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ।।

५८५. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहूओ वणराईओ पण्णत्ताओ। ताओ णं वणराईओ किण्हाओ किण्होभासाओ जाव[2]अणेगसगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणियपडिमोयणाओ सुरम्माओ पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ।।

५८६. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे मत्तंगया णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से चंदप्पभ-मणिसिलाग-वरसीधु-वरवारुणि-सुजातपत्त-पुप्फ-फल-चोय-णिज्जाससार-बहुदव्वजुत्तसंभार-कालसंधियासवा महु-मेरग-रिट्ठाभ[3]-दुद्धजाति-पसन्न-तेल्लग-सताउ- खज्जूरमुद्दियासार- काविसायण- सुपक्कखोयरसवरसुरा- वण्णरसगंध-फरिसजुत्त-बलवीरियपरिणामा मज्जविही बहुप्पगारा तहेव ते मत्तंगयावि दुमगणा अणेग-बहुविविहवीससापरिणयाए मज्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा वीसंदंति[4] कुसविकुस-विसुद्ध-रुक्खमूला जाव चिट्ठंति ।।१।।

५८७. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे भिंगंगया णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से करग-घडग-कलस-कक्करि-पायंचणि-उदंक-वद्धणि-सुपइट्ठग-विट्ठर-पारी-चसग-भिंगार-करोडि-सरग-परग- पत्ती- थाल- मल्लग- चवलिय[5]- दग-वारक-विचित्तवट्टक-मणिवट्टक-सुत्तिचारुपिणया कंचण-मणि-रयणभत्तिचित्ता भाजणविधी बहुप्पगारा तहेव ते भिंगंगयावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणताए भाजणविधीए उववेया[6] कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ।।२।।

५८८. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे तुडियंगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से आलिंग-मुइंग-पणव-पडह-दद्दरग-करडि-डिंडिम-भंभा-होरंभ-कणिय-खरमुहि-मगुंद-संखिय-पिरली-वच्चग- परिवाइणि- वंस- वेणु- सुघोस- विपंचि महति-कच्छभि-रगसिगा तल-ताल-कंसताल-सुसंपउत्ता आतोज्जविधी [बहुप्पगारा[7]?] णिउण-गंधव्वसमयकुसलेहिं फंदिया तिट्ठाणसुद्धा तहेव ते तुडियंगयावि दुमगणा अणेगबहु-विविधवीससापरिणयाए तत-वितत-घण-झुसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहीए उववेया कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ।।३।।

५८९. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे दीवसिहा णाम दुमगणा

---

१. जी० ३।२६८ ।

२. जी० ३।२७५,२७६ ।

३. 'रिट्ठरत्नवर्णाभा' रिष्ठा या शास्त्रान्तरे जम्बू-फलकालिकेति प्रसिद्धा (मवृ) ३।८६० सूत्रे 'जंबूफलकालिया' इति विशेषणं दृश्यते ।

४. विसट्टंति (मवृपा) ।

५. चवलिअ अवमद (जम्बू० वृत्ति पत्र १००) ।

६. उववेया फलेहिं पुण्णाविव विसट्टंति (जंबू० वृत्ति पत्र १०२) ।

७. मलयगिरिणा पूर्ववर्तिसूत्रद्वये 'मज्जविही भाजणविही' इति पदद्वयं न व्याख्यातम्, प्रस्तुत-सूत्रे 'बहुप्पगारा' इति पदं न व्याख्यातम्, किंतु रचनाक्रमेण 'आतोज्जविही' बहुप्पगारा इति पाठः सङ्गतो भवति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से संझाविरागसमए नवणिहिपतिणो दीविया-चक्कवालविंदे पभूयवट्टिपलित्तणेहे धणिउज्जालिए तिमिरमद्दए कणगणिगरण[1]-कुसुमितपारिजातकवणप्प-गासे कंचनमणिरयण-विमलमहरिहविचित्तदंडाहिं[2] दीवियाहिं सहसापज्जालिउस्सप्पियणिद्ध-तेय-दिप्पंतविमलगहगणसमप्पहाहिं वितिमिरकरसूर-पसरिउज्जोय-चिल्लियाहिं जालुज्जल-पहसियाभिरामाहिं सोभेमाणा तहेव ते दीवसिहावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिण-याए उज्जोयविधीए उववेया कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥४॥

५९०. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ- देसे तहिं-तहिं बहवे जोतिसिया णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से अचिरुग्गयसरयसूरमंडल-पडंतउक्कासहस्स-दिप्पंतविज्जु-उज्जलहुयवहनिद्धूमजलिय[3] - निद्धंतधोयतत्ततवणिज्ज - किंसुयासोयजासुयणकुसुमविमउलिय पुंज-मणिरयणकिरण-जच्चहिंगुलुयणिगररूवाइरेगरूवा तहेव ते जोतिसियावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए उज्जोयविहीए उववेया[4] कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥५॥

५९१. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे चित्तंगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से पेच्छाघरे विचित्ते रम्मे वरकुसुमदाममालुज्जले भासंतमुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलिए विरल्लियविचित्तमल्ल-सिरिसमुदयप्पगब्भे गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइ-मेणं मल्लेणं छेयसिप्पिय-विभागरइएण सव्वतो चेव समणुबद्धे पविरल-लंबंत-विप्पइट्ठेहिं पंचवण्णेहिं कुसुमदामेहिं सोभमाणे वणमालकतग्गए चेव दिप्पमाणे तहेव ते चित्तंगयावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए मल्लविहीए उववेया कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥६॥

५९२. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे चित्तरसा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से सुगंधवरकलमसालितंदुल-विसिट्ठणिरुवहतदुद्धरद्धे सारयघय-गुड-खंड-महुमेलिए अतिरसे परमण्णे होज्ज उत्तमवण्णगंधमंते, रण्णो जहा वा चक्कवट्टिस्स होज्ज णिउणेहिं सूयपुरिसेहिं सज्जिए चउरकप्पसेयसित्ते इव ओदणे कलमसालिणिव्वत्तिए विपक्के सबप्फ-मिउ-विसय-सगलसित्थे अणेगसालणगसंजुत्ते अहवा पडिपुण्णदव्वुवक्खडे सुसक्कए वण्णगंधरसफरिसजुत्त-बलविरियपरिणामे इंदियबलपुट्ठिवद्धणे खुप्पिवासमहणे पहाणगुलकढियखंडमच्छंडियओवणीएव्व मोयगे सण्हसमियगब्भे पण्णत्ते[5] तहेव ते चित्तरसा-

---

१. कनकनिकरः—सुवर्णराशिः (जंबू० वृत्ति पत्र १०२)।

२. 'महरिहतवणिज्जुज्जलविचित्त' —तपनीयं सुवर्णविशेषस्तेनोज्ज्वला—दीप्ताः (जम्बू० वृत्ति पत्र १०२)।

३. 'निर्धूमज्वलितोज्वलहुतवह' इति संस्कृतरूपस्य प्राकृते व्यत्ययोस्ति, मलयगिरिणा लिखित-मिदम्—सूत्रे च पदोन्यासव्यत्ययः प्राकृत-त्वात्।

४. उववेया सुहलेस्सा मंदलेस्सा मंदातवलेस्सा कूडा इव ठाणठिया अन्नमन्नसमोगाढाहिं लेस्साहिं साए पभाए सपदेसे सव्वओ समंता ओभासंति उज्जोवंति पभासेंति।

एतत् पाठान्तरं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र १०३) व्याख्यातमस्ति, एकोरुकप्रकरणे च प्रस्तुतसूत्रादर्शेष्वपि लभ्यते।

५. हवेज्ज परमेट्ठगसंजुत्ते (जंबू० वृत्ति पत्र १०४)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए भोजणविहीए उववेया कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥७॥

५९३. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे मणियंगा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से हारद्धहार-वेढणग-मउड-कुंडल-वामुत्तगहेमजाल-मणिजाल-कणगजालग-सुत्तग-ओवियकडग[1]-खुड्डियएगावलि-कंठसुत्त-मगरिग-उरत्थगेवेज्ज-सोणिसुत्तग-चूलामणि-कणगतिलग-फुल्लग-सिद्धत्थय-कण्णवालि-ससि - सूर-उसभ -चक्कग - तलभंगय-तुडिय-हत्थ-मालग-हरिसय-केयूर-वलय-पालंब - अंगुलेज्जग- वलक्ख-दीणारमालिया[2]-कंची-मेहला-कलाव- पयरग- पारिहेरग- पायजाल[3]- घंटिया-खिंखिणि- रयणोरुजाल[4]- वरणेउर -चलणमालिया-कणगणिगलमालिया-कंचणमणिरयणभत्तिचित्ता भूसणविधी बहुप्पगारा, तहेव ते मणियंगावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणताए भूसणविहीए उववेया कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥८॥

५९४. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे गेहागारा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से पागारट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-पासायाकासतल-मंडव-एगसालग-बिसालग-तिसालग-चउसालग- गब्भघर- मोहणघर- वलभिघर- चित्तसालमालय -भत्तिघर-वट्टतंसचउरंसणंदियावत्तसंठिया पंडुरतलमुंडमालहम्मियं अहव णं धवलहर-अद्धमागहविब्भम-सेलद्धसेलसुट्ठिय[5]-कूडागारड्ढ[6]- सुविहिकोट्ठग-अणेगघर-सरण-लेण-आवणा विडंग-जालवंद-णिज्जूह-अपवरक-चंदसालियरूवविभत्तिकलिता भवणविही बहुविकप्पा तहेव ते गेहागारावि दुमगणा अणेगबहुविविधवीससापरिणयाए सुहारुहण-सुहोत्ताराए सुहनिक्खमणप्पवेसाए दद्दरसोपाणपंतिकलिताए पइरिक्क-सुहविहाराए[7] मणोणुकूलाए[8] भवणविहीए उववेया कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥९॥

५९५. उत्तरकुराए णं कुराए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे अणिगणा णामं दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से आइणग-खोम-तणुय[9]-कंबल-दुगुल्ल-कोसेज्ज-कालमिगपट्ट-

---

१. उव्वितिय° (क, ख); उव्विइय° (ग); उच्चितिय° (ट); उर्व्वीकटकं (हस्त० वृत्ति)।

२. दीनारमालिका चन्द्रमालिका सूर्यमालिका (जंबू० वृत्तिपत्र १०६)।

३. पादोज्ज्वलं (मवृ)।

४. °जाल खुड्डिअ (जंबू० वृत्ति पत्र १०६)।

५. सेल अद्धसेलसंठिय (जंबू० वृत्तिपत्र १०६)।

६. आदर्शेषु 'कूडागारट्ठ' इति पदं लभ्यते, हस्तलिखितवृत्तिद्वये मुद्रितवृत्तौ चापि तथैव तदस्ति, किन्तु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र १०७)कूटाकारेण—शिखराकृत्याढ्यानि इति व्याख्यातमस्ति, तेन 'कूडागारड्ढ' इति पाठस्य अवबोधो जायते, अर्थदृष्ट्यापि सुसङ्गतोयं प्रतिभाति।

७. सर्वत्र स्त्रीत्वनिर्देशः प्राकृतत्वात् (मवृ)।

८. आदर्शेषु एकोरुकप्रकरणे 'मणोणुकूलाए' इति पाठो लभ्यते। मलयगिरिवृत्तेरुपलब्धादर्शेषु एष पाठो व्याख्यातो नैव प्राप्यते, किन्तु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र १०७) प्रस्तुतसूत्रालापकानां वृत्तिरुद्धतास्ति, तत्र एष पाठो व्याख्यातोस्ति, तेनात्र चायं मूले स्वीकृतः।

९. मलयगिरिवृत्तेरुपलब्धादर्शेषु एतत् पदं व्याख्यातं नैव लभ्यते। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (१०७) प्रस्तुतसूत्रसंवादिपाठव्याख्यायां एतत् व्याख्यातमस्ति—तनुः—शरीरं सुखस्पर्शतया लाति—अणुगृह्णाति तनुलं—तनुसुखादि कम्बलः प्रतीतः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंसुय-चीणंसुय-पट्टा आभरणचित्त-सहिणग[1]-कल्लाणग-भिंगिणील-कज्जलबहुवण्ण- रत्त-पीत-सुक्किल-सक्ख.य-मिगलोमहेमप्प-रल्लग-अवरुत्तर-सिंधु-उसभ-दामिल-वंग-कलिंग- नलिणतंतु-मयभत्तिचित्ता वत्थविही बहुप्पकारा हवेज्ज वरपट्टणुग्गता वण्णरागकलिता तहेव ते अणिगणावि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणताए वत्थविधीए उववेया कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥१०॥

५९६. उत्तरकुराए णं भंते ! कुराए मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! ते णं मणुया अतीव सोमचारुरूवा भोगुत्तमगयलक्खणा भोगसस्सिरीया सुजाय-सव्वंगसुंदरंगा सुपतिट्ठिय-कुम्मचारुचलणा रत्तुप्पलपत्त-मउयसुकुमालकोमलतला नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंकहरंक[2]-लक्खणंकियचलणा अणुपुव्वसुसाहतंगुलीया उण्णय-तणु-तंब-णिद्धणखा[3] संठिय-सुसिलिट्ठ-गूढगुप्फा एणी-कुरुविंद-वत्त-वट्टाणुपुव्वजंघा समुग्ग-णिमग्ग[4]-गूढजाणू गयससण[5]-सुजात[6]-सण्णिभोरू वरवारणमत्त[7]-तुल्लविक्कम-विलासितगती पमुइयवरतुरग-सीहवरवट्टियकडी[8] 'वरतुरग-सुजातगुज्झदेसा'[9] आइण्णहयव्व णिरुवलेवा साहयसोणंद-मुसल-दप्पण-णिगरितवरकणगच्छरुसरिस-वरवइरवलितमज्झा 'उज्जुय-सम-संहित-सुजात-जच्चतणु-कसिण-णिद्ध-आदेज्ज-लडह-सुकुमाल-मउय-रमणिज्जरोमराई गंगा-वत्तय-पयाहिणावत्त-तरंगभंगुर-रविकिरणतरुणबोधिय- आकोसायंतपउम- गंभीरवियडणाभा

'तणुअकम्बल' इति पाठे तु तन्तुकः—सूक्ष्मोर्णाकम्बलः ।

१. अतः परं मलयगिरिवृत्तौ 'गंभीर नेहल गयाल' एतानि त्रीणि पदानि व्याख्यातानि दृश्यन्ते—गम्भीराणि—निपुणशिल्पिनिष्पादिततयाऽलब्धस्वरूपमध्यानि 'नेहल' त्ति स्नेहलानि—स्निग्धानि 'गयालानि' उद्वेल्यमानानि परिधीयमानानि वा गर्जयन्ति । अस्य विवरणस्य अनन्तरमेव वृत्तिकृता लिखितं—शेषं सम्प्रदायादवसातव्यं, तमन्तरेण सम्यक् पाठशुद्धेरपि कर्त्तुमशक्यत्वात् जम्बूद्वीपवृत्तिकृता शान्तिचन्द्रसूरिणा 'सहिणग' इति पदानन्तरं प्राप्तस्य पाठस्य व्याख्या कृतास्ति । तद्दर्शनेन ज्ञायते 'भिंगि णील कज्जल' एतेषां पदानामेव विपर्यस्त पाठः 'गंभीर नेहल गयाल' इति जातः प्रमादः लिपिदोषेण, मलयगिरिणा तथाविध एव आदर्शः उपलब्धः । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ जीवाभिगमवृत्तेरविवृतः पाठो विवृतोस्ति । अस्य पाठस्य विषये शान्तिचन्द्रसूरिणा स्वयं टिप्पणी कृता—अत्र चाधिकारे जीवाभिगमसूत्रादर्शे क्वचित्-क्वचित् किञ्चिदधिकपदमपि दृश्यते तत्तु वृत्तावव्याख्यातं स्वयं पर्यालोच्यमानमपि च नार्थप्रदमिति न लिखितं, तेन तत् सम्प्रदायादवगन्तव्यं, तमन्तरेण सम्यक् पाठशुद्धेरपि कर्त्तुमशक्यत्वादिति ।

२. चक्क + अंकहर + अंक = चक्कंकहरंक ।

३. °णक्खा (जंबू० वृत्तिपत्र ११०; पण्ह० ४।७) ।

४. प्रश्नव्याकरणस्य (४।७) मूलपाठे 'णिसग्ग' इति पदम्, तस्य पाठान्तरे 'णिमग्ग' इति पदमस्ति । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र ११०) 'णिसग्ग' पदस्य पाठान्तरत्वेन उल्लेखोस्ति ।

५. श्वशनः—शुण्डादण्डः ।

६. सुजातशब्दस्य विशेषणस्यापि सतः परनिपातः प्राकृतत्वात् (मवृ) ।

७. मत्तशब्दस्य विशेष्यात्परनिपातः प्राकृतत्वात् (मवृ) ।

८. क्वचित्पुनरेवं पाठः 'पमुइयवरतुरगसीहअइरेगवट्टियकडी' (मवृ); प्रश्नव्याकरणस्य (४।७) मूले अयमेव पाठः स्वीकृतः । तत्र नास्ति पाठान्तरं किञ्चित् ।

९. पसत्थवरतुरगगुज्झदेसा (मवृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झस-विहग-सुजातपीणकुच्छी झसोदरा सुइकरणा[१] सण्णयपासा[२] संगतपासा सुंदरपासा सुजातपासा मितमाइय-पीणरइयपासा अकरंडुयकणगरुयगनिम्मल-सुजाय-निरुवहयदेहधारी कणगसिलातलुज्जल-पसत्थ-समतल-उवचिय-विच्छिण्ण-पिहुलवच्छा सिरिवच्छंकियवच्छा 'जुगसन्निभपीणरतियपीवरपउट्ठ-संठियसुसिलिट्ठविसिट्ठघणथिरसुबद्धसंधी'[३] पुरवरफलिह-वट्टियभुया[४] भुयगीसरविपुलभोग-आयाणफलिहउच्छूढ-दीहबाहू 'रत्ततलोवइत-मउय-मंसल-सुजाय-अच्छिद्दजालपाणी'[५] पीवरकोमलवरंगुलीया[६] आतंब-तलिण-सुचि-रुइर-णिद्ध-णक्खा चंदपाणिलेहा सूरपाणिलेहा संखपाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसासोवत्थियपाणिलेहा 'चंद-सूर-संख-चक्क-दिसासोवत्थिय-पाणिलेहा'[७] अणेगवरलक्खणुत्तम-पसत्थ-सुविरइयपाणि-लेहा[८] वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूल-उसभ-णागवर-पडिपुन्नविउलखंधा चउरंगुलसुप्पमाण-कंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठिय-पसत्थ-सद्दूलविपुलहणुया अवट्ठित-सुविभत्त-चित्तमंसू ओयवियसिलप्पवाल-बिंबफल-सन्निभाहरोट्ठा पंडुरससिसगल-विमलनिम्मलसंख-गोखीरफेण-कुंद-दगरयमुणालिया-धवलदंतसेढी अखंडदंता अप्फुडियदंता सुजातदंता अविरलदंता एगदंतसेढिव्व अणेगदंता हुतवहनिद्धंतधोततत्ततवणिज्ज-रत्ततलतालुजीहा गरुलायत-उज्जुतुंगणासा कोकासित-धवलपत्तलच्छा विप्फालियपुंडरीयनयणा[९] 'आणामियचावरुइल-

---

१. मलयगिरिवृत्तौ चिन्हाङ्कितपाठो व्यत्ययेन लभ्यते—झसविहगसुजातपीणकुच्छी झसोदरा सुइकरणा गंगावत्तयपयाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोधियआकोसायंतपउमगंभीरवियडणाभा उज्जुयसमसहितसुजातजच्चतणुकसिणणिद्धआदेज्जलडहसुकुमालमउयरमणिज्जरोमराई । प्रस्तुतसूत्रस्यैव यौगलिकस्त्रीवर्णने स्वीकृतपाठक्रमो दृश्यते, प्रश्नव्याकरणेपि (४।७) स्वीकृतपाठसंवादिक्रमो विद्यते, एकोरुकप्रकरणे प्रस्तुतसूत्रादर्शेष्वपि एष एव क्रमोस्ति ।

२. अतः पूर्वं आदर्शेषु 'पम्हवियडणाभा' इति पाठोस्ति मलयगिरिणा तस्य पाठान्तररूपेण उल्लेखः कृतः—क्वचिद् 'पम्हवियडनाभा' । प्रश्नव्याकरणे (४।७) 'गंगावत्तय'० इति पाठस्य वृत्तिकृता बाहुल्येन अपाठः सूचितः, तेन तत्र स पाठान्तररूपेण स्वीकृतः, अत्र च प्रस्तुतसूत्रवृत्तिकृता 'पम्हवियडनाभा' इति पाठः पाठान्तरत्वेन सूचितः । एतौ द्वावपि पाठौ नाभिवर्णनपरौ विद्येते, तयोरेक एव पाठः स्वीकार्योस्ति, स च वृत्तिमनुसृत्य अत्र 'गंगावत्तय'० इति पाठ एव स्वीकृतः ।

३. जुगसन्निभपीणरइयपउट्ठसंठियोवचियघणथिर-सुबद्धसुनिगूढपव्वसंधी (मवृपा) ।

४. मलयगिरिणा असौ पाठः पूर्ववर्तिपाठेन सह समस्तीकृतः, तेन पूर्ववर्तिपाठः भुजविशेषणं जातः । अभयदेवसूरिणा प्रश्नव्याकरण (४।७) वृत्तौ 'जुगसन्निभ०' इति पाठः स्वतंत्ररूपेण व्याख्यातः । स एव क्रमोस्माभिरनुसृतः ।

५. रत्ततलोवइयमंसलसुजायपसत्थलक्खणअच्छिद्द-जालपाणी (मवृपा) ।

६. पीवरवट्टियसुजायकोमलवरंगुलीया (मवृपा) ।

७. रविससिसंखवरचक्कसोत्थियविभत्तसुविरइय-पाणिरेहा (मवृपा) ।

८. सुचिरइय० (मवृ); सम्भाव्यते वृत्तिकृता 'सुचिरइय' इति पाठो लब्धः तेन तथा व्याख्यातः—शुचयः—पवित्रा रचिताः स्वकर्मणा । किन्तु अर्थमीमांसया 'सुविरइय' इति पाठ एव सङ्गतोस्ति । वृत्तिकृता 'रविससि'० इति पाठान्तरे सुविरचिता—सुष्ठुकृता इति व्याख्यातम् ।

९. अवदालियपोंडरीयनयणा (मवृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तणु-कसिण-निद्धभुया[1] अल्लीण-प्पमाणजुत्त-सवणा सुसवणा पीण-मंसल-कवोल-देसभागा निव्वण-सम-लट्ठ-मट्ठ-चंदद्धसमनिडाला उडुवतिपडिपुण्णसोमवदणा घणणिचियसुबद्धलक्ख-णुण्णयकूडागारणिभ-पिंडियसिरा छत्तागारुत्तमंगदेसा दाडिमपुप्फपगास-तवणिज्जसरिस-निम्मल-सुजाय-केसंतकेसभूमी सामलिवोंडघणणिचियछोडिय-मिउविसयपसत्थसुहुमलक्खण-सुगंधसुंदर- भुयमोयगभिंगि - णील- कज्जल- पहट्ठभमरगणणिद्ध- णिकुरंबनिचिय- कुंचिय-पयाहिणावत्त-मुद्धसिरया लक्खणवंजणगुणोववेया सुजायसुविभत्तसुरूवगा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

५९७. उत्तरकुराए णं भंते ! कुराए मणुईणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! ताओ णं मणुईओ सुजायसव्वंगसुंदरीओ पहाणमहेलागुणजुत्ताओ[2] 'अइकंत-विस-प्पमाण-पउमसूमाल-कुम्मसंठित-विसिट्ठचलणा'[3] उज्जु-मउय - पीवर-पुट्ठ-साहयंगुलीओ उण्णय-रतिय-तलिणतंब-सुइ-णिद्धणखा रोमरहिय-वट्ट-लट्ठसंठिय-अजहण्णपसत्थलक्खणजंघ-जुयला[4] 'सुणिम्मिय-सुगूढजाणू मंसलसुबद्धसंधी'[5] कयलीखंभातिरेगसंठिय-णिव्वण-सुकुमाल-मउय-कोमल-अविरल[6]-सम-संहत-सुजात-वट्ट-पीवर- णिरंतरोरू अट्ठावयवीचिपट्टसंठिय[7]-पसत्थ-विच्छिण्ण-पिहुलसोणी वदणायामप्पमाणदुगुणितविसाल-मंसलसुबद्धजहणवरधारणीओ 'वज्जविराइय-पसत्थलक्खणनिरोदरा तिवलिवलिय[8]-तणुणमियमज्झिआओ'[9] उज्जुय-सम-

---

१. क्वचित्पाठः—'आणामियचारुरुचिलकिण्हब्भ-राईसंठियसंगयआययसुजायभुमया'। क्वचित्-पुनरेवं पाठः —'आणामियचावरुइलकिण्हब्भरा-इतणुकसिणनिद्धभुमया' (मवृ)।

२. °महिला° (जंबु० २।१४)।

३. कंतविसयमिउसुकुमालकुम्मसंठियविसिट्ठचलणा (मवृ); अइकंतविसप्पमाणमउयसूमालकुम्म-संठियविसिट्ठचलणा (जंबु० २।१४)।

४. °लक्खणअकोप्पजंघजुयला (जंबु० २।१४)।

५ चिन्हाङ्कितः पाठः प्रश्नव्याकरणं (४।८) अनुसृत्य स्वीकृतः। एकोरुकप्रकरणे आदर्शेष्वपि एष एव पाठो लभ्यते। तत्र प्रश्नव्याकरणे विद्यमानमपि 'पसत्थ' इति पदं नास्ति। सम्भाव्यते मलयगिरिणा—'सुनिम्मियसुगूढ-जाणुमंडलसुबद्धा' इत्येव पाठो लब्धः, तेन तथा व्याख्यातः। किन्तु अर्थसमीक्षया नासौ संगच्छते। 'मंडल' शब्दस्यापि नास्ति काचित् सार्थकता। 'मंसलसुबद्धसंधी' इत्यस्य परिवर्तितोल्लेखः 'मंडलसुबद्धा' इति प्रतीयते। द्रष्टव्यं जंबुद्दीव-पण्णत्ती २।१४।

६. अइविमल (मवृ) अर्थसमीक्षया 'अविरल' इति पदमेव सुसङ्गतमस्ति।

७. मलयगिरिणा 'पट्टसंठिय' इति पाठो व्याख्यातः —पट्टवत्—शिलापट्टकादिवत् संस्थिता पट्ट-संस्थिता। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः हीरविजयवृत्तौ (हस्तलिखित पत्र १०२) 'पट्ठ' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—अष्टापदस्य द्यूतविशेषस्य वीचय इव वीचयस्तरङ्गाकारा रेखास्तत्प्रधान-पृष्ठमिव पृष्ठं फलकं अष्टापदवीचिफलकं तत्संस्थिता। प्रश्नव्याकरण (४।८) वृत्तौ 'अट्ठावयवीचिपट्ठसंठिय' इति पाठो व्याख्या-तोस्ति—अष्टापदस्य द्यूतविशेषस्य वीचय इव वीचयस्तरंगाकारा रेखास्तत्प्रधानं पृष्ठमिव पृष्ठं फलकं अष्टापदवीचिपृष्ठं तत्संस्थिता तत्संस्थाना। एकोरुकप्रकरणे प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु 'अट्ठावयवीचिपट्टसंठिय' इति पाठो लभ्यते। अत्र स एव आदृतः।

८. तिवलिविणीय (मवृ)।

९. मलयगिरिणा चिन्हाङ्कितः पाठः समासपूर्वकं व्याख्यातः। शान्तिचन्द्रसूरिणा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ते-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संहित-जच्चतणु-कसिण-णिद्ध-आदेज्ज-लडह-सुविभत्त-सुजात-सोभंत - रुइल - रमणिज्जरोम-राई गंगावत्तय-पयाहिणावत्त-तरंगभंगुर - रविकिरणतरुणबोधिय-आकोसायंतपउम-गंभीर-वियडणाभा अणुब्भड-पसत्थ-पीणकुच्छी सण्णयपासा संगयपासा सुंदरपासा सुजायपासा मितमाइयपीणरइयपासा अकरंडुय-कणगरुयगनिम्मल-सुजाय-णिरुवहयगातलट्ठी कंचणकलस-सुप्पमाण-सम-संहित-सुजात-लट्ठचूचुयआमेलग-जमलजुगल-वट्टिय- अब्भुण्णयरतियसंठियपयो-धराओ भुजंगअणुपुव्वतणुय[1]-गोपुच्छवट्टसम-संहिय-णमिय-आएज्ज-ललियबाहा तंबणहा मंसलग्गहत्था पीवरकोमलवरंगुलीआ णिद्धपाणिलेहा रवि-ससि-संख-चक्क-सोत्थिय-विभत्त-सुविरइयपाणिलेहा पीणुण्णयकक्ख-वक्ख-वत्थिप्पदेसा पडिपुण्णगलकवोला चउरंगुलसुप्पमाण-कंबुवरसरिसगीवा मंसल-संठिय-पसत्थहणुया दाडिमपुप्फप्पगास-पीवरपवराधरा सुंदरो-त्तरोट्ठा दधिदगरयचंदकुंदवासंतिमउलधवल-अच्छिद्दविमलदसणा रत्तुप्पलरत्त-मउयसूमाल-तालुजीहा कणइरमउल[2]-अब्भुग्गय-उज्जुतुंगणासा सारयणवकमलकुमुदकुवलयविमुक्कदल-णिगरसरिस-लक्खणअंकियणयणा पत्तल-चवलायंत[3]-तंबलोयणाओ आणामितचावरुइल-किण्हब्भराइसंठिय-संगत-आयय-सुजात-तणु-कसिण-णिद्धभमुया अल्लीण-पमाणजुत्त-सवणा पीण-मट्ठ-रमणिज्जगंडलेहा चउरंस-पसत्थ-समणिडाला कोमुइरयणिकर-विमलपडिपुण्ण-सोमवयणा छत्तुन्नयउत्तिमंगा कुडिल-सुसिणिद्ध-दीहसिरया छत्त-ज्झय-जूव-थूभ-दामिणि-कमंडलु - कलस-वावि - सोत्थिय - पडाग-जव-मच्छ - कुम्म-रहवर-मगर[4]-सुक[5]-थाल-अंकुस-अट्ठावय-सुपइट्ठक-मऊर[6]-सिरिदामाभिसेय[7]-तोरण-मेइणि-उदधि-वरभवण[8]-गिरि-वरआयंस-ललियगय-उसभ-सीह-चामर-उत्तमपसत्थबत्तीसलक्खणधरीओ हंससरिसगतीओ कोइलमहुर-गिरासुस्सराओ[9] कंताओ सव्वस्स अणुमयाओ ववगतवलिपलिया वंग-दुव्वण्ण-वाही-दोभग्ग-सोगमुक्काओ 'उच्चत्तेण य नराण थोवूणमूसियाओ'[10] सभावसिंगारचारुवेसा[11] संगय-गय-

---

वृत्तौ (पत्र ११४) अस्यैव अनुसरणं कृतम्। प्रश्नव्याकरण (४।८) वृत्तौ 'निरोदरा' इत्यन्तः पाठः स्वतंत्ररूपेण व्याख्यातः। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ते-र्हीरविजयवृत्तौ पुण्यसागरवृत्तौ च प्रश्नव्याकरण-वृत्तितुल्या व्याख्यातास्ति।

१. अणुपुव्वतणुय (मवृ)।

२. अतोग्रे जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र ११५) 'अकुडिल' इति पदं व्याख्यातमस्ति।

३. पत्तलधवल (जम्बू० वृत्तिपत्र ११५)।

४. मगरज्झय (जम्बू० वृत्तिपत्र ११६; पण्हा० ४।८)।

५. अंक (पण्हा० ४।८); अङ्कः—चन्द्रबिम्बा-न्तर्वर्त्तीश्यामावयवः, क्वचिदङ्कस्थाने शुक इति दृश्यते (जंबू० वृत्तिपत्र ११६)।

६. अमर (पण्हा० ४।८); मयूरः अमरो वा (पण्हा० वृत्ति)।

७. सिरियाभिसेय (पण्हा० ४।८); श्रियोभिषेको लक्ष्म्या अभिषेकः (जंबू० वृत्तिपत्र ११६)।

८. पवरभवण (पण्हा० ४।८)।

९. कोयलमहुयरिगिराओ (पण्हा० ४।८); एष पाठः स्वाभाविकः प्रतिभाति। स्वीकृतपाठः केनापि कारणेन परिवर्तित इवाभाति। प्रश्न-व्याकरणानुसारेण यदि पाठः परिकल्प्यते तदा 'कोइलमहुयरिसुस्सराओ' इति पाठो निष्पद्यते।

१०. चिन्हाङ्कितपाठः मलयगिरिवृत्तौ नास्ति व्याख्यातः। प्रश्नव्याकरणे (४।८) जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र ११६) तथा एकोरुकप्रकरणे सर्वादर्शेषु एष उपलभ्यते।

११. सिंगारागारचारुवेसा (पण्हा० ४।८); बहुषु आगमेषु एष एव पाठः उपलभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलाव-णिउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जहण-वयण-कर-चरण-णयण-लावण्ण-वण्ण-रूव[१]-जोव्वण-विलासकलिया नंदणवणचारिणीओव्व[२] अच्छराओ[३] अच्छेरगपेच्छणिज्जा पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ।।

५९८. ते णं मणुया ओहस्सरा हंसस्सरा कोंचस्सरा[४] नंदिस्सरा नंदिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा[५] मंजुस्सरा मंजुघोसा सुस्सरा सुस्सरणिग्घोसा पउमुप्पलगंधसरिसनीसाससुरभि-वयणा छवी णिरातंक-उत्तमपसत्थअइसेस-निरुवमतणू जल्ल-मल-कलंक-सेय-रय-दोसवज्जिय-सरीर-निरुवलेवा छायाउज्जोइयंगमंगा अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कवोतपरिणामा सउणिपोस-पिट्ठंतरोरुपरिणता विग्गहिय-उन्नयकुच्छी वज्जरिसभनारायसंघयणा समचउ-रंससंठाणसंठिया छधणुसहस्समूसिया ।

तेसिं मणुयाणं दोछप्पन्नपिट्ठिकरंडगसता पण्णत्ता समणाउसो !

ते णं मणुया पगतिभद्दगा पगतिउवसंता पगतिपयणुकोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपण्णा अल्लीणा भद्दगा विणीया अप्पिच्छा असंनिहिसंचया[६] अचंडा विडिमंतरपरिवसणा जहिच्छियकामगामिणो य ते मणुयगणा[७] पण्णत्ता समणाउसो !।।

५९९. तेसि णं भंते ! मणुयाणं केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ? गोयमा ! अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ।।

६००. ते णं भंते ! मणुया किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! पुढवीपुप्फफलाहारा ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !।।

६०१. तीसे णं भंते ! पुढवीए केरिसए आसाए पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहाणामए गुलेति वा 'खंडेति वा'[८] सक्कराति वा 'मच्छंडियाति वा'[९] पप्पडमोयएति वा भिसकंदेति[१०] वा पुप्फुत्तराइ वा पउमुत्तराइ वा विजयाति वा महाविजयाति वा उवमाति वा अणोवमाति वा चाउरक्के वा गोक्खीरे खंडगुलमच्छंडिउवणीए[११] पयत्तमंदग्गिकढिए[१२] वण्णेणं उववेते गंधेणं उववेते रसेणं उववेते फासेणं उववेते भवेयारूवे सिया ? नो तिणट्ठे समट्ठे, तीसे णं पुढवीए एत्तो इट्ठतराए चेव कंततराए चेव पियतराए चेव 'मणुण्णतराए चेव'[१३] मणामतराए चेव आसाए णं पण्णत्ते ।।

---

१. एतत्पदं मलयगिरिवृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

२. नंदनवणविवरचारिणीओव्व (पण्हा० ४।८) ।

३. अच्छराओ उत्तरकुरुमानुसच्छराओ (पण्हा० ४।८) ।

४. अतोग्रे वृत्तौ चतुर्णां पदानां एष व्याख्या-क्रमोस्ति—एवं सिंहस्वरा दुन्दुभिस्वरा नन्दि-स्वराः, नन्द्या इव घोषः—अनुनादो येषां ते नन्दीघोषाः ।

५. सीहणिग्घोसा (ता) ।

६. अणिहिसंचया (ता) ।

७. वृत्तौ क्वचित् मनुजगणाः क्वचित् मनुजाः इति प्रकारद्वयेन व्याख्यातमस्ति ।

८. × (मवृ) ।

९. × (ता) ।

१०. भिसकंडएति (ता) ।

११. °उववेते (ता) ।

१२. वृत्तौ 'पयत्त' इति पदं व्याख्यातं नास्ति । ३।६८६ सूत्रे 'प्रयत्नेन मन्दाग्निना क्वथितम्' इति व्याख्यातमस्ति (वृत्ति पत्र ३५३) ।

१३. वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०२. तेसि णं भंते ! पुप्फफलाणं केरिसए आसाए[1] पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहाणामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स कल्लाणे भोयणे सतसहस्सनिप्फन्ने वण्णेणं उववेते गंधेणं उववेते रसेणं उववेते फासेणं उववेते आसादणिज्जे वीसादणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे विंहणिज्जे सव्विंदियगातपल्हायणिज्जे, भवेयारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसि णं पुप्फफलाणं एत्तो इट्ठतराए चेव जाव मणामतराए चेव आसाए णं पण्णत्ते ।।

६०३. ते णं भंते ! मणुया तमाहारमाहारित्ता कहिं वसहिं उवेंति ? गोयमा ! रुक्खगेहालया णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

६०४. ते णं भंते ! रुक्खा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अप्पेगा कूडागारसंठिया अप्पेगा पेच्छाघरसंठिया अप्पेगा छत्तसंठिया अप्पेगा झयसंठिया अप्पेगा थूभसंठिया अप्पेगा तोरणसंठिया अप्पेगा गोपुरसंठिया अप्पेगा वेइयसंठिया अप्पेगा चोप्पालसंठिया अप्पेगा अट्टालगसंठिया अप्पेगा बीहिसंठिया अप्पेगा पासायसंठिया अप्पेगा हम्मियतलसंठिया अप्पेगा गवक्खसंठिया अप्पेगा वालग्गपोतियसंठिया अप्पेगा वलभीसंठिया अप्पेगा वरभवणविसिट्ठसंठाणसंठिया सुहसीयलच्छाया णं ते दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

६०५. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए गेहाणि वा गेहाययणाणि वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, रुक्खगेहालया णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

६०६. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए गामाति वा णगराति वा जाव सन्निवेसाति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, जहिच्छियकामगामिणो[2] णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

६०७. अत्थि णं भंते ! उतरकुराए कुराए असीति वा मसीति वा किसीति वा 'विवणीति वा'[3] पणीति वा वाणिज्जाति वा ? नो तिणट्ठे समट्ठे, ववगयअसिमसिकिसिविवणिपणिवाणिज्जा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

६०८. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए हिरण्णेति वा सुवण्णति[4] वा कंसेति वा दूसेति

---

१. अस्सादे (ता) ।

२. एकोरुकप्रकरणे आदर्शेषु 'जहिच्छियकामगामिणो' इति पाठोस्ति । वृत्तिकृता मलयगिरिणात्र 'जं नेच्छियकामगामिणो' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—यद्—यस्मान्नेच्छितकामगामिनः—न इच्छितं—इच्छाविषयीकृतं नेच्छितं, नायं नञ् किन्तु नशब्द इत्यत्रानादेशाभावो यथा 'नैके द्वेपस्य पर्याया' इत्यत्र, नेच्छितं—इच्छाया अविषयीकृतं कामं—स्वेच्छया गच्छन्तीत्येवंशीला नेच्छितकामगामिनः । शान्तिचन्द्रसूरिणा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र १२२) अस्य पाठस्य समर्थनं कृतम्—जीवाभिगमे तु 'जहेच्छिअकामगामिणो' इत्यस्य स्थाने 'जं नेच्छिअकामगामिणो' इति पाठः ।

३. × (मवृ); जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुण्यसागरवृत्तौ एष पाठो व्याख्यातोस्ति—'विवणित्ति' विपणिरिति हट्टोपजीविनः ।

४. प्रस्तुतप्रकरणे 'सुवर्ण कांस्य दूष्य' पदत्रयस्य प्रयोगः कथं संभवेत् ? उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण एष प्रश्नः समुपढौकितः तस्य समाधानमपि कृतम्—घटितं सुवर्णं तथा ताम्रत्रपुसंयोगजं कांस्यं तथा तन्तुसन्तानसम्भवं दूष्यं तत्र कथं सम्भवेयुः ?, शिल्पिप्रयोगजन्यत्वात् तेषां, न च तान्यतीतोत्सर्पिणीसत्कनिधानगतानि संभवन्तीति वाच्यं, सादिसपर्यवसितप्रयोगबन्धस्या-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा मणिमोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जेति वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुयाणं तिव्वे ममत्तभावे समुप्पज्जति ॥

६०९. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए रायाति वा जुवरायाति वा ईसरेति वा तलवरेइ वा कोडुंबिएति वा माडंबिएति वा इब्भेति वा सेट्ठीति वा सेणावतीति वा सत्थवाहेति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ववगयइड्ढिसक्कारा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

६१०. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए दासेति वा पेसेति वा सिस्सेति वा भयगेति वा भाइल्लगेति वा कम्मारएति वा ? नो तिणट्ठे समट्ठे, ववगतआभिओगिया णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

६११. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए मात्ताति वा पियाति वा भायाति वा भइणीति वा भज्जाति वा पुत्ताति वा धूयाति वा सुण्हाति वा ? हंता अत्थि, नो चेव णं तेसि णं मणुयाणं तिव्वे पेज्जबंधणे समुप्पज्जति, पयणुपेज्जबंधणा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

६१२. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए अरीति वा वेरीति[1] वा घातकेति वा वहकेति वा पडिणीएति वा पच्चामित्तेति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ववगतवेराणुबंधा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

६१३. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए मित्तेति वा वयंसेति[2] वा सहीति वा सुहिएति वा संगतिएति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ववगतनेहाणुरागा ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

६१४. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए आवाहाति वा वीवाहाति वा जन्नाति वा सद्धाति[3] वा थालिपाकाति वा पितिपिंडनिवेदणाति[4] वा 'चूलोवणयणाति वा सीमंतोवणयणाति वा'[5] ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ववगतआवाहवीवाहजन्नसद्धथालिपागपितिपिंडनिवेदणचूलोवणयणसीमंतोवणयणा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

६१५. अत्थि[6] णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए इंदमहाति वा खंदमहाति वा रुद्दमहाति[7] वा सिवमहाति वा वेसमणमहाति वा णागमहाति वा 'जक्खमहाति वा भूतमहाति वा मुगुंद-

---

सङ्ख्येकालस्थितेरसम्भवात्, एगोरुगोत्तरकुरुसूत्रयोरेतदालापकस्याकथनप्रसङ्गात्, उच्यते-संहरणप्रवृत्तक्रीडाप्रवृत्तदेवप्रयोगात् तानि सम्भवन्तीति सम्भाव्यते, (वृत्ति पत्र १२२)। प्रस्तुतप्रश्नस्य एतत् समाधानं स्वाभाविकं भवति—वर्णके कानिचित्पदानि प्रवाहपातीन्यपि भवन्ति।

१. वेरिएति (जंबु० २।२८)।

२. वयंसाइ वा णायएइ वा घाडिएइ वा (जंबु० २।२९)।

३. सड्ढाति (ता)।

४. मितपिंडणिवेतणाति (मवृ)।

५. × (जंबु० २।३०); क्वचित् "सीमंतुण्णयणाइं। वृत्तौ एतस्य पाठस्यानुसारिणी व्याख्या वर्तते—सीमन्तोन्नयनानीति वा, सीमन्तोन्नयनं —गर्भस्थापनम्।

६. वृत्तौ एतत्सूत्रं प्रेक्षासूत्रानन्तरं व्याख्यातमस्ति।

७. भद्द० (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाति वा'[1] कूवमहाति वा तलागमहाति वा णदिमहाति वा दहमहाति वा पव्वयमहाति वा 'रुक्खमहाति वा चेइयमहाति वा थूभमहाति वा'[2] ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ववगतमहामहिमा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !॥

६१६. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए णडपेच्छाति वा णट्टपेच्छाति वा जल्ल-पेच्छाति वा मल्लपेच्छाति वा मुट्ठियपेच्छाति वा वेलंबगपेच्छाति वा कहगपेच्छाति वा पवगपेच्छाति वा लासगपेच्छाति वा अक्खाइगपेच्छाति वा लंखपेच्छाति वा मंखपेच्छाति वा तूणइल्लपेच्छाति वा 'तुंबवीणपेच्छाति वा कावपेच्छाति वा'[3] मागहपेच्छाति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ववगतकोउहल्ला[4] णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !॥

६१७. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए सगडाति वा रहाति वा जाणाति वा जुग्गाति वा गिल्लीति वा थिल्लीति वा सीयाति वा संदमाणियाति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, पादचारविहारिणो[5] णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

६१८. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए आसाति वा हत्थीति वा उट्टाति वा गोणाति वा महिसाति वा खराति वा घोडाति वा अजाति वा एलाति वा ? हंता अत्थि, नो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

६१९. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए गावीति वा महिसीति वा उट्टीति वा अयाति वा एलिगाति वा ? हंता अत्थि, नो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमा-गच्छंति ॥

६२०. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए सीहाति वा वग्घाति वा विगाति वा दीविगाति वा अच्छाति वा परस्सराति वा सियालाति वा विडालाति[6] वा सुणगाति वा कोलसुणगाति वा कोकंतियाति वा ससगाति वा 'चित्तलाति वा'[7] चिल्ललगाति वा ? हंता अत्थि, नो चेव णं ते अण्णमण्णस्स तेसिं वा मणुयाणं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा करेंति, पगतिभद्दगा[8] णं ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !॥

६२१. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए सालीति वा वीहीति वा गोधूमाति वा जवाति वा तिलाति[9] वा उक्खूति वा ? हंता अत्थि, नो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

६२२. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए खाणूति वा 'कंटएति वा हीरएति वा सक्कराति वा तणकयवराति वा पत्तकयवराति वा असुईति वा पूइयाति वा दुब्भिगंधाति वा अचोक्खाति वा'[10] ? णो तिणट्ठे समट्ठे, 'ववगयखाणु-कंटक-हीर-सक्कर-तणकयवर-पत्तकयवर-असुई-पूइय-दुब्भिगंधमचोक्खपरिवज्जिया'[11] णं उत्तरकुरा पण्णत्ता समणाउसो !॥

---

१. भूतजक्ख (ता)।
२. रुक्खावेतियथूभचेतियमहाति वा (ता)।
३. तुंववीणिसूत (ता)।
४. व्यपगतकौतुकाः (मवृ)।
५. पादविहारचारिणः (मवृ)।
६. विरालाति (ता)।
७. × (मवृ)।
८. पगतिभद्दा (ता)।
९. जवजवाति (ता)।
१०. कंडएति वा तणकयवरेति वा पत्तकयरेति वा (ता)।
११. ववगतखाणुकंडकतणकयवरपत्तकयवरा णं (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२३. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए गड्डाति वा दरीति वा घसीति[1] वा भिगूति वा विसमेति वा धूलीति वा पंकेति वा चलणीति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, उत्तरकुराए णं कुराए बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो !।।

६२४. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए दंसाति[2] वा मसगाति वा 'ढिंकुणाति वा'[3] 'जूवाति वा लिक्खाति वा'[4] ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ववगतोवद्दवा णं उत्तरकुरा पण्णत्ता समणाउसो !।।

६२५. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए अहीति वा अयगराति वा 'महोरगाति वा'[5] ? हंता अत्थि, नो चेव णं ते अण्णमण्णस्स तेसिं वा मणुयाणं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेयं वा करेंति, पगइभद्दगा णं ते वालगणा पण्णत्ता समणाउसो !।।

६२६. अत्थि[6] णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए गहदंडाति वा गहमुसलाति वा गहगज्जिताति वा गहजुद्धाति वा गहसंघाडगाति वा गहअवसव्वाति वा अब्भाति वा अब्भरुक्खाति वा संझाति वा गंधव्वनगराति वा गज्जिताति वा विज्जुताति वा उक्कापाताति वा दिसादाहाति वा णिग्घाताति वा पंसुविट्ठीति वा जूवगाति वा जक्खालित्ताति वा धूमियाति वा महियाति वा रउग्घाताति वा चंदोवरागाति वा सूरोवरागाति वा चंदपरिवेसाति वा सूरपरिवेसाति वा पडिचंदाति वा पडिसूराति वा इंदधणूति वा उदगमच्छाति वा कविहसियाति वा अमोहाति वा पाईणवायाति वा पडीणवायाति वा जाव[7] सुद्धवाताति वा गामदाहाति वा नगरदाहाति वा जाव[8] सण्णिवेसदाहाति वा पाणक्खय-भूतक्खय-कुलक्खयाति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे[9] ।।

६२७. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए डिंबाति वा डमराति वा कलहाति वा बोलाति[10] वा खाराति वा वेराति वा महाजुद्धाति वा महासंगामाति वा 'महासन्नाहाति वा'[11] महापुरिसनिपडणाति वा[12] महासत्थनिपडणाति वा ववगतडिंब-डमर-कलह-बोल-खार-वेरा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !।।

६२८. अत्थि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए दुब्भूयाति[13] वा कुलरोगाति वा गामरोगाति वा णगररोगाति वा मंडलरोगाति वा 'पंडुरोगाति वा पोट्टरोगाति वा'[14] 'सिरोवेदणाति वा अच्छिवेदणाति वा कण्णवेदणाति वा नखवेदणाति वा दंतवेदणाति वा'[15] 'कासाति

१. घंसाति (क, ख, ग, ट त्रि)।
२. डंसाइ (ता)।
३. ढिंकुणाति वा पिसुगाति वा (ता) क्वचित् 'पिसुगा इति वा' इति पाठः (मवृ)।
४. × (ता)।
५. × (ता)।
६. 'ता' प्रतौ एतत्सूत्रं नोपलभ्यते। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तावपि नैतत्सूत्रमुपलब्धमस्ति।
७. जी० १।८१।
८. ठाणं २।६६०।
९. पूर्ववर्तिसूत्रेषु यथा कारणं प्रतिपादितमस्ति तथात्रनास्ति। वृत्तौ अस्ति कारणं प्रदर्शितम्—केषाञ्चिदनर्थहेतुतया केषाञ्चित्स्वरूपतश्च तत्र तेषामसम्भवात्।
१०. पोल (ता)।
११. × (ता)।
१२. वा महारुहिरणिपडणाति वा (ता)।
१३. दुब्भगगाति (ता)।
१४. मलयगिरिणा नैते पदे व्याख्याते।
१५. सीसवेयणादि वा कण्णवे दन्त णख (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा सासाति वा सोसाति वा जराति वा दाहाति वा कच्छूति वा खसराति वा कुट्ठाति वा अरिसाति वा अजीरगाति वा भगंदलाति वा इंदग्गहाति वा खंदग्गहाति वा कुमारग्गहाति वा णागग्गहाति वा जक्खग्गहाति वा भूतग्गहाति वा धणुग्गहाति वा उव्वेगाति वा एगाहियाति वा बेयाहियाति वा तेयाहियाति वा चाउत्थगाहियाति वा हियय‍सूलाति वा मत्थगसूलाति वा पाससूलाति वा कुच्छिसूलाति वा जोणिसूलाति वा[1] गाममारीति वा जाव सन्निवेसमारीति वा पाणक्खयाति वा जणक्खयाति वा धणक्खयाति वा कुलक्खयाति वा वसणभूतमणारियाति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ववगतरोगातंका णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

६२९. तेसि णं भंते मणुया णं केवतिकालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं देसूणाइं तिण्णि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणगाणि, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।।

६३०. ते णं भंते ! मणुया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति? गोयमा ! ते णं मणुया छम्मासावसेसाउया जुयलगं पसवंति, पसवित्ता एगूणपण्णं[2] राइंदियाइं अणुपालेंति, अणुपालेत्ता[3] कासित्ता छीइत्ता जंभाइत्ता अविकट्ठा अव्वहिता अपरियाविया कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववज्जंति । देवलोगपरिग्गहिया णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

६३१. उत्तरकुराए णं भंते ! कुराए कतिविधा मणुया अणुसज्जंति ? गोयमा ! छव्विहा मणुया अणुसज्जंति तं जहा—पउमगंधा[4] मियगंधा अममा तेतली सहा सणिचरा[5] । गाधाओ भाणितव्वाओ एवं—

उसु जीवा धणुपट्ठं, भूमी गुम्मा य हेरु उद्दाला ।
तिलग लया वणराई, रुक्खा मणुया य आहारो ।।१।।
गेहा गामा य असी, हिरण्ण राया य दास माया य ।
अरि वेरिए य मित्ते, विवाह मह णट्ट सगडा य ।।२।।
आसा गाओ सीहा, साली खाणू य गड्डदंसाही[6] ।
गहजुद्धरोगट्ठिई, उव्वट्टणा य अणुसज्जणा चेव ।।३।।

६३२. कहि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए जमगा नाम दुवे पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! नीलवंतस्स वासधरपव्वयस्स 'दाहिणिल्लाओ चरिमंताओ'[7] अट्ठचोत्तीसे जोयण-

---

१. खंदग्गहाति वा कुमारग्गहाति वा जक्ख भूत धणुग्गहाति वा दव्वेवाति वा एगाहियाति वा बेयाहि चाउत्थगा कासाति वा सासाति वा सोस जरा दाहा कच्छू कोढा डउ अरा अरिसा भगंदलहितासूलाति वा मत्था जोणि पास कुच्छिसू (ता) ।

२. एकुणुपण्णं (ता) ।

३. तओ पच्छा ओससित्ता वा नीससित्ता वा (ता) ।

४. पम्हगंधा (भ० ६।१३५, जंबू० २।४६)। आगमसाहित्ये प्रायः पद्मशब्दस्य 'पम्ह' इति रूपं लभ्यते, किन्तु वस्तुतः 'पउम, पम्म, पोम्म' इति रूपाणि संगच्छन्ते । अत्र ताडपत्रीयप्रतौ 'पउम' इति रूपं उल्लेखनीयमस्ति ।

५. सणिचारि (ता) ।

६. गद्ददंसा य अहि (ता) ।

७. दाहिणेणं (क, ख, ग, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सते चत्तारि य सत्तभागे जोयणस्स अबाधाए सीताए महाणदीए 'पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं'[1] उभओ कूले, एत्थ णं उत्तरकुराए जमगा णाम दुवे पव्वता पण्णत्ता—एगमेगं जोयणसहस्सं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसताणि उव्वेहेणं, मूले एगमेगं जोयणसहस्सं 'आयाम-विक्खंभेणं'[2] मज्झे अद्धट्ठमाइं जोयणसताइं 'आयाम-विक्खंभेणं'[3], उवरिं पंचजोयणसयाइं 'आयाम-विक्खंभेणं'[4], मूले तिण्णि जोयणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोयणसतं किंचिवि-सेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ता, मज्झे दो जोयणसहस्साइं तिण्णि य बावत्तरे जोयणसते किंचिविसेसाहिए[5] परिक्खेवेणं पण्णत्ता, उवरिं 'एगं जोयणसहस्सं पंच य'[6] एक्कासीते जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, मूले विच्छिण्णा[7], मज्झे संखित्ता, उप्पि तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिता[8] सव्वकणगामया अच्छा जाव[9] पडिरूवा पत्तेयं-पत्तेयं पउम-वरवेइयापरिक्खित्ता पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ता, वण्णओ[10] ।।

६३३. तेसि णं जमगपव्वयाणं उप्पि बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता, वण्णओ जाव[11] आसयंति ।।

६३४. तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं पासाय-वडेंसगा पण्णत्ता । ते णं पासायवडेंसगा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एकत्तीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं, अब्भुग्गतमूसित-पहसिता वण्णओ 'उल्लोए भूमी-भागो, मणिपेढिया दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं, सीहासणं विजयदूसे अंकुसा दामा णं च भुणेतव्वे विधी जाव[12]—

६३५. तेसि णं सीहासणाणं अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं जमगाणं देवाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, परिवारो वत्तव्वो[13] ।।

६३६. तेसि णं पासायवडेंसगाणं उप्पि अट्ठट्ठमंगलगा जाव[14] सहस्सपत्तहत्थगा'[15] ।।

---

१. × (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. विक्खंभेणं (ता); विष्कम्भत: (मवृ); जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र ३१९) 'आयाम-विष्कम्भ' इति पदद्वयमपि व्याख्यातमस्ति—मूले योजन-सहस्रमायामविष्कम्भाभ्यां वृत्ताकारत्वात् ।

३. विक्खंभेणं (ता,मवृ) ।

४. विक्खंभेणं (ता,मवृ) ।

५. किंचिविसेसूणे (ट, ता) ।

६. पन्नरसं (क,ख,ग,ट, त्रि) ।

७. वित्थिण्णा (ग, ता) ।

८. जबगसंठाणसंठिया (ख) : जाव चंगेरिसं० (ट); जमतसं° (ता); जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र ३१९) एतत् पाठान्तरमेव व्याख्यात-मस्ति—यमकौ—यमलजातौ भ्रातरौ तयोर्यत्-संस्थानं तेन संस्थितौ, परस्परं सदृशसंस्थाना-वित्यर्थः अथवा यमका नाम शकुनिविशेषास्तत्-संस्थानसंस्थितौ, संस्थानं चानयोर्मूलतः प्रारभ्य संक्षिप्त-संक्षिप्तप्रमाणत्वेन गोपुच्छस्येव बोध्यम् ।

९. जी० ३।२९१ ।

१०. वण्णओ दोण्हवि । जी० ३।२६३-२९७ ।

११. जी० ३।२७७-२९७ ।

१२. जी० ३।३०७-३१३ ।

१३. जी० ३।३४०-३४५ ।

१४. जी० ३।२८९-२९१ ।

१५. भूमीभागा उल्लोगा दो जोयणाइं मणिपेढियाओ वरसीहासणा सपरिवारा जाव जमगा चिट्ठंति (क,ख,ग,ट, त्रि), °सतसहस्स° (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जमगा पव्वता ? जमगा पव्वता ? गोयमा ! जमगपव्वतेसु[1] णं खुड्डा-खुड्डियासु जाव[2] विलपंतियासु बहूइं[3] उप्पलाइं जाव[4] सहस्सपत्ताइं जमगप्पभाइं[5] जमगागाराइं[6] जमगवण्णाइं जमगवण्णाभाइं[7], जमगा य एत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव[8] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति। ते णं तत्थ पत्तेयं-पत्तेयं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव[9] सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जमगपव्वताणं जमगाण य रायहाणीणं, अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं[10] °पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणा° पालेमाणा विहरंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं—वुच्चति जमगा पव्वता जमगा पव्वता।
'अदुत्तरं च णं गोयमा ! जाव णिच्चा'[11] ॥

६३८. कहि णं भंते ! जमगाणं देवाणं जमगाओ नाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जमगपव्वयाणं उत्तरेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीइवइत्ता अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं जमगाणं देवाणं जमगाओ णाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ—'बारस जोयणसहस्साइं जहा विजयस्स जाव[12] एमहिड्ढिया जमगा देवा जमगा देवा'[13] ॥

६३९. कहि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए नीलवंतद्दहे[14] णामं दहे पण्णत्ते ? गोयमा ! जमगपव्वयाणं 'दाहिणिल्लाओ चरिमंताओ'[15] अट्ठचोत्तीसे जोयणसते चत्तारि सत्तभागा जोयणस्स अबाहाए सीताए महाणईए बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं उत्तरकुराए कुराए नीलवंतद्दहे नामं दहे पण्णत्ते—उत्तरदक्खिणायते पाईणपडीणविच्छिण्णे एगं जोयणसहस्सं आयामेणं, पंच जोयणसताइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छे सण्हे रययामयकूले जाव[16] अणेगसउणगणमिथुणपविचरिय-सद्दुण्णइयमहुरसरणाइयए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, उभओ पासिं दोहि य पउमवरवेइयाहिं वणसंडेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, दोण्हवि वण्णओ[17] ॥

६४०. नीलवंतद्दहस्स णं दहस्स तत्थ-तत्थ 'देसे तहिं-तहिं बहवे तिसोमाणपडिरूवगा पण्णत्ता, वण्णओ'[18] ॥

---

१. जमगेसु णं पव्वतेसु तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहुईओ खुड्डा खुड्डियाओ वावीओ जाव बिलपंतियाओ तासु णं (क,ख,ग,ट,त्रि)।
२. जी० ३।२८६।
३. बहुगाइं (ता)।
४. जी० ३।२८६।
५. × (ता)।
६. × (क,ख,ग,ट,त्रि)।
७. × (क,ख,ग,ट,त्रि)।
८. जी० ३।३५०।
९. जी० ३।३५०।
१०. सं० पा०—आहेवच्चं जाव पालेमाणा।
११. × (ता, मवृ)।
१२. जी० ३।३५५-५६५।
१३. विजयरायहाणिसरिसियाओ एम्महिड्ढीया जमगा जाव विहरंति (ता)।
१४. णेलमंतद्दहे (ता)।
१५. दाहिणेणं (क,ख,ग,ट,त्रि)।
१६. जी० ३।२८६।
१७. जी० ३।२६५-२६७।
१८. जी० ३।२८७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४१. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं तोरणे पण्णत्ते, वण्णओ[१] ॥

६४२. तस्स णं नीलवंतद्दहस्स[२] बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं 'महं एगे'[३] पउमे पण्णत्ते—जोयणं आयाम-विक्खंभेणं[४], अद्धजोयणं बाहल्लेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, दो कोसे ऊसिते जलंतातो, सातिरेगाइं दसजोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ॥

६४३. तस्स णं पउमस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामए मूले रिट्ठामए कंदे वेरुलियामए नाले वेरुलियामया बाहिरपत्ता जंबूणयमया अब्भिंतरपत्ता तवणिज्जमया केसरा कणगमई कण्णिया नाणामणिमया पुक्खरत्थिभुया[५] ॥

६४४. सा णं कण्णिया अद्धजोयणं आयाम-विक्खंभेणं[६], कोसं बाहल्लेणं, 'सव्वप्पणा कणगमई'[७] अच्छा जाव[८] पडिरूवा ॥

६४५. तीसे णं कण्णियाए उवरिं बहुसमरमणिज्जे 'भूमिभागे जाव[९] मणीणं वण्णो गंधो फासो'[१०] ॥

६४६. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते—कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसतसंनिविट्ठं वण्णओ जाव[११] दिव्वतुडियसद्दसंपणाइए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

६४७. तस्स णं भवणस्स तिदिसिं ततो दारा पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं । ते णं दारा पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं धणुसताइं विक्खंभेणं, तावतियं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा दारवण्णओ जाव[१२] वणमालाओ ॥

६४८. तस्स[१३] णं भवणस्स उल्लोओ अंतो बहुसमरमणिज्जो भूमिभागो जाव[१४] मणीणं वण्णो गंधो फासो ॥

६४९. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं मणि-पेढिया पण्णत्ता—पंचधणुसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, अड्ढाइज्जाइं धणुसताइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

---

१. जाव बहवे तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरणत्ति (क,ख,ग,ट,त्रि); जी० ३।२८८-२९१ ।
२. णेलवंत° (ता) ।
३. एगे महं (क,ख,ग,ट,त्रि); महेगे (ता) ।
४. विक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।
५. पुक्खलत्थिरया (क); पुक्खलत्थिभया (ख,ट); पुक्खरुत्थिरता (ग,त्रि); पुक्खलत्थिभा (ता) ।
६. विक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।
७. सव्वकणगामई (क,ख,ग,ट,ता) ।
८. जी० ३।२६१ ।
९. जी० ३।२७७-२८४ ।
१०. देसभाए पण्णत्ते जाव मणीहिं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।
११. जी० ३।३७२ ।
१२. जी० ३।३००-३०६ ।
१३. 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु अस्य सूत्रस्य स्थाने एवं वाचनाभेदो दृश्यते—तस्स णं भवणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहानामए—आलिंगपुक्खरेति वा जाव मणीणं वण्णओ ।
१४. जी० ३।२७७-२८५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६५०. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं[1], एत्थ णं महं एगे देवसयणिज्जे पण्णत्ते, सयणिज्जवण्णओ[2] ॥

६५१. तस्स[3] णं भवणस्स उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा जाव[4] सहस्सपत्तहत्थगा ॥

६५२. से णं पउमे अण्णेणं अट्ठसतेणं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्ताणं पउमाणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते ॥

६५३. ते णं पउमा अद्धजोयणं आयाम-विक्खंभेणं, कोसं बाहल्लेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, कोसं ऊसिया जलंताओ, साइरेगाइं दस जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ताइं ॥

६५४. तेसि णं पउमाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया मूला जाव[5] कणगामईओ कण्णियाओ णाणामणिमया पुक्खरत्थिभुगा ॥

६५५. ताओ णं कण्णियाओ कोसं आयाम-विक्खंभेणं[6], अद्धकोसं बाहल्लेणं, सव्वकणगामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

६५६. तासि णं कण्णियाणं उप्पिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा जाव[7] मणीणं वण्णो गंधो फासो ॥

६५७. तस्स णं पउमस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं 'नीलवंतस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो'[8] चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। 'एतेणं सव्वो परिवारो पउमाणं भाणितव्वो'[9] ॥

६५८. से णं पउमे अण्णेहिं तिहिं पउमपरिक्खेवेहिं[10] सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, तं जहा—अब्भितरेणं[11] मज्झिमेणं बाहिरएणं। अब्भितरए[12] पउमपरिक्खेवे बत्तीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। मज्झिमए पउमपरिक्खेवे चत्तालीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। बाहिरए पउमपरिक्खेवे अडयालीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। एवमेव[13] सपुव्वावरेणं एगा पउमकोडी वीसं च पउमसतसहस्सा भवंतीति मक्खायं[14] ॥

६५९. से[15] केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—णीलवंतद्दहे ? णीलवंतद्दहे ? गोयमा !

---

१. उवरिं (क,ख,ग,ट,त्रि)।

२. देवसयणिज्जस्स वण्णओ (क,ख,ग,ट,त्रि); जी० ३।४०७।

३. 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एतत् सूत्रं नैव दृश्यते।

४. जी० ३।२८६-२९१।

५. जी० ३।६४३।

६. विक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं (क, ख,ग,ट,त्रि)।

७. जी० ३।२७७-२८४।

८. नीलवंतद्दहस्स कुमारस्स (क,ख,ग,ट,त्रि)।

९. एवं सव्वो परिवारो नवरि पउमाणं भाणितव्वो (क,ख,ग,ट,त्रि); एवं पउमेहिं परिवारो जावातरक्खाणं (ता); जी० ३।३४०-३४५।

१०. पउमवरपरिक्खेवेहिं (ग,त्रि)।

११. अब्भंतरए णं (ता)।

१२. अब्भिंतरए णं (क,ख,ग,ट)।

१३. एवामेव (क,ख,त्रि)।

१४. मक्खाया (क,ख,ग,ट,त्रि)।

१५. ६५९, ६६० सूत्रयोः स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु संक्षिप्तपाठो विद्यते, यथा—से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति णीलवंतद्दहे दहे ? गोयमा ! णीलवंतद्दहे णं तत्थ तत्थ जाइं उप्पलाइं जाव सतसहस्सपत्ताइं णीलवंतप्पभाइं णीलवंतद्दहकुमारे य सो चेव गमो जाव णीलवंतद्दहे २।

वृत्तौ प्रथमसूत्रे 'महर्द्धिकः इत्यादि यमकदेव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीलवंतद्दहे णं तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहूइं[1] उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं नीलवंतप्पभाइं नीलवंतागाराइं नीलवंतवण्णाइं नीलवंतवण्णाभाइं नीलवंते एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया महिड्ढिए जाव[2] पलिओवमट्ठितीए परिवसति। से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं नीलवंतद्दहस्स नीलवंताए य रायहाणीए अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—णीलवंतद्दहे, णीलवंतद्दहे॥

६६०. कहि णं भंते! णीलवंतस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो नीलवंता नाम रायहाणी पण्णत्ता? गोयमा! नीलवंतद्दहस्सुत्तरेणं अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे बारस जोयणसहस्साइं जहा[3] विजयस्स॥

६६१. नीलवंतद्दहस्स णं पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं दस-दस जोयणाइं अबाधाए, एत्थ णं दस-दस कंचणगपव्वता पण्णत्ता। ते णं कंचणगपव्वता एगमेगं जोयणसतं उड्ढं उच्चत्तेणं पणवीसं[4] पणवीसं जोयणाइं उव्वेहेणं, मूले एगमेगं जोयणसतं विक्खंभेणं, मज्झे पण्णत्तरिं जोयणाइं विक्खंभेणं[5], उवरिं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले तिण्णि सोलसुत्तरे[6] जोयणसते किंचिविसेसाहिए[7] परिक्खेवेणं, मज्झे दोन्नि सत्ततीसे जोयणसते किंचिविसेसूणे[8] परिक्खेवेणं, उवरिं एगं अट्ठावण्णं जोयणसतं किंचिविसेसूणे[9] परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिता सव्वकंचणमया अच्छा जाव पडिरूवा पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइयापरिक्खित्ता पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ता, वण्णओ[10]॥

६६२. तेसि णं कंचणगपव्वताणं उप्पिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता 'जाव[11] आसयंति'[12]॥

६६३. तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसए पण्णत्ते—'सड्ढबावट्ठि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं, मणिपेढिया दोजोयणिया सीहासणा सपरिवारा'[13]॥

६६४. 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—कंचणगपव्वता? कंचणगपव्वता? गोयमा! कंचणगेसु णं पव्वतेसु तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं वावीसु उप्पलाइं जाव कंचणगवण्णाभाइं कंचणगा य एत्थ देवा महिड्ढीया जाव[14] विहरंति। से तेणट्ठेणं'[15]॥

वन्निरवशेषं वक्तव्यं यावद् विहरति' इति संक्षेपः सूचितोस्ति।

१. जाव (क,ख,ट); जाइं (ग,त्रि)।

२. जी० ३।३५०।

३. जी० ३।३५१-५६५।

४. पणूवीसं (क, ख, ता)।

५. आयामविक्खंभेणं (क,ख,ग,ट,त्रि)।

६. सोल (क,ग) : सोले (ख,ट,त्रि)।

७. किंचिविसेसूणे (ता)।

८. किंचिविसेसाहिए (क,ख,ग,ट,त्रि)।

९. किंचिविसेसाहिए (क,ख,ग,ट,त्रि)।

१०. जी० ३।२६३-२६७।

११. जी० ३।२७७-२९७।

१२. ससद्दं जाव विहरंति (ता) : यावत्तृणानां मणीनां च शब्दवर्णनमिति (मवृ)।

१३. जहा जमिगासु तहा जाव अट्ठो (ता) : जी० ३।६३४-६३६।

१४. जी० ३।६३७।

१५. कंचणप्पभाइं कंचगा यत्थ दो देवा महिड्ढीया जाव पलि परिवसंति। ते णं तत्थ पत्तेयं २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६६५. 'रायहाणीओ वि तहेव' उत्तरेणं विजयरायहाणिसरिसियाओ अण्णंमि जंबुद्दीवे"[२] ॥

६६६. कहिणं भंते ! उत्तरकुराए कुराए उत्तरकुरुद्दहे नामं दहे पण्णत्ते ? गोयमा ! नीलवंतद्दहस्स 'दाहिणिल्लाओ चरिमंतओ"[३] अट्ठचोत्तीसे जोयणसते, 'एवं सो चेव गमो णेतव्वो[४] जो णीलवंतद्दहस्स, सव्वेसिं सरिसको दहसरिनामा य देवा, सव्वेसिं पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं कंचणगपव्वता दस-दस एकप्पमाणा उत्तरेणं रायहाणीओ अण्णंमि जंबुद्दीवे"[५] ॥

६६७. 'कहि णं भंते ! चंदद्दहे एरावणद्दहे मालवंतद्दहे, एवं एक्केक्को णेयव्वो"[६] ॥

चउण्हं सामाणिदेवसाहस्सीणं कंचणगए, कंचणियरायहाणीण य अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं दे २ से तेणट्ठेणं (ता) ।

१. जी० ३।३५१-५६३ ।

२. उत्तरेणं कंचणगाणं कंचणियाओ रायहाणीओ अण्णंमि जंबुद्दीवे तहेव सव्वं भाणितव्वं (क,ख, ग, ट, त्रि); काञ्चनिकाश्च राजधान्यो यमिकाराजधानीवद् वक्तव्याः (मवृ) ।

३. दाहिणेणं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

४. जी० ३।६३६-६६५ ।

५. चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अबाहाए सीयाए महा बहुमज्झ जहा णेलवंतद्दहस्स तहेव सव्वं जाव अट्ठो । उत्तरकुरुद्दहस्स णं तत्थ जाव सतसहस्सपत्ताइं उत्तरकुरुद्दहप्पभाइं उत्तरकुरु तत्थ दो देवा महिड्ढीया जाव पलितो । से णं तत्थ चउण्हं सामाणि उत्तरकुरुद्दहस्स उत्तरकुराए य रायहाणीए जाव विहरति से तेणट्ठेणं जाव रायहाणी उत्तरेणं । उत्तरकुरुद्दहस्स णं पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं दस २ जोयणाइं दस २ कंचणयए जहेवितरे तहेव जावड्ढो रायहाणीओ य (ता); वृत्तावपि अस्य संवादी पाठो व्याख्यातोस्ति ।

६. कहिणं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे चंदद्दहे णामं दहे पण्णत्ते ? उत्तरकुरुद्दहस्स दाहि चरिमं अट्ठचोत्तीसे जावेत्थ णं चंदद्दहे णामं दहे पं जहेव णेलवंतद्दहस्स तहेव सव्वं (ता) अतोग्रे पाठः त्रुटितोस्ति ।

'कहिणं भंते !' इत्यादि प्रश्नसूत्रं सुगमं, भगवानाह—गौतम ! उत्तरकुरुह्रदस्य दाक्षिणात्याच्चरमान्तादर्वाग् दक्षिणस्यां दिशि अष्टौ चतुस्त्रिंशानि योजनशतानि चतुरश्च सप्तभागान् योजनस्याबाधया कृत्वेति शेषः शीताया महानद्या बहुमध्यदेशभागे 'अत्र' अस्मिन्नवकाशे उत्तरकुरुषु कुरुषु चन्द्रह्रदो नामह्रदः प्रज्ञप्तः अस्यापि नीलवद्ह्रदस्येवायामविष्कम्भोद्वेधपद्मवरवेदिकावनषण्डत्रिसोपानप्रतिरूपकतोरणमूलभूतमहापद्माष्टशतपद्मपरिवारपद्मशेषपद्मपरिक्षेपत्रयवक्तव्यता वक्तव्या, नामान्वर्थसूत्रमपि तथैव, नवरं यस्मादुत्पलादीनि 'चन्द्रह्रदप्रभाणि' चन्द्रह्रदाकाराणि चन्द्रवर्णानि चन्द्रनामा च देवस्तत्र परिवसति तस्माच्चन्द्रह्रदाभोत्पलादियोगाच्चन्द्रदेवस्वामिकत्वाच्च चन्द्रह्रद इति, चन्द्राराजधानीवक्तव्यता काञ्चनपर्वतवक्तव्यता च राजधानीपर्यवसाना प्राग्वत् । साम्प्रतमैरावतह्रदवक्तव्यतामाह—'कहि णं भंते' इत्यादिप्रश्नसूत्रं पाठसिद्धं, निर्वचनमाह—गौतम ! चन्द्रह्रदस्यदाक्षिणात्याच्चरमान्तादर्वाग् दक्षिणस्यां दिशि अष्टौ चतुस्त्रिंशानि योजनशतानि चतुरश्च सप्तभागान् योजनस्याबाधया कृत्वेतिशेषः शीताया महानद्या बहुमध्यदेशभागे 'अत्र' एतस्मिन्नवकाशे ऐरावतह्रदो नामह्रदः प्रज्ञप्तः, अस्यापि नीलवन्नाम्नो ह्रदस्येवायामविष्कम्भादिवक्तव्यता परिक्षेपपर्यवसाना वक्तव्या, अन्वर्थसूत्र-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६६८. कहि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए जंबू-सुदंसणाए जंबूपेढे नामं पेढे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं नीलवंतस्स वासधरपव्वतस्स दाहिणेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं गंधमादणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीताए महाणदीए पुरत्थिमिल्ले कूले, एत्थ णं उत्तरकुराए कुराए जंबूपेढे नाम पेढे पण्णत्ते—पंचजोयणसताइं आयाम-विक्खंभेणं, पण्णरस एक्कासीते जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, बहुमज्झदेसभाए बारस जोयणाइं बाहल्लेणं, तदाणंतरं च णं माताए-माताए पदेसपरिहाणीए[1] परिहायमाणे-परिहायमाणे सव्वेसु चरमंतेसु दो कोसे बाहल्लेणं,[2] सव्व-जंबूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, वण्णओ दोण्हवि ।।

६६९. तस्स णं जंबूपेढस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता । तं चेव जाव तोरणा जाव[3] छत्तातिछत्ता[4] ।।

६७०. तस्स णं जंबूपेढस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेति वा जाव[5] मणीणं फासो ।।

६७१. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, मणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ।।

६७२. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महं जंबू सुदंसणा पण्णत्ता—अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधे, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, छ जोयणाइं विडिमा, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, सातिरेगाइं अट्ठ जोयणाइं

मपि तथैव, नवरं यस्मादुत्पलादीनि ऐरावतह्रदप्रभाणि, ऐरावतो नाम हस्ती तद्वर्णानि च ऐरावतश्च नामा तत्र देवः परिवसति तेन ऐरावतह्रद इति, ऐरावताराजधानी विजयराजधानीवत् काञ्चनकपर्वतवक्तव्यतापर्यवसाना तथैव । अधुना माल्यवन्नामह्रदवक्तव्यतामाह—'कहि णं भंते' इत्यादि सुगमं, भगवानाह—गौतम ! ऐरावतह्रदस्य दाक्षिणात्याच्चरमान्तादर्वाग् दक्षिणस्यां दिशि अष्टौ चतुस्त्रिंशानि योजनशतानि चतुरश्च सप्तभागान् योजनस्य अबाधया कृत्वेति शेषः शीताया महानद्या बहुमध्यदेशभागे 'अत्र' एतस्मिन्नवकाशे उत्तरकुरुषु कुरुषु माल्यवन्नामा ह्रदः प्रज्ञप्तः, स च नीलवद्ह्रदवदायामविष्कम्भादिना तावद्वक्तव्यो यावत्पद्मवक्तव्यतापरिसमाप्तिः, नामान्वर्थसूत्रमपि तथैव यस्मादुत्पलादीनि 'माल्यवद्ह्रदप्रभाणि' माल्यवद्ह्रदाकाराणि, माल्यवन्नामा वक्षस्कारपर्वतस्तद्वर्णानि—तद्वर्णाभानि माल्यवन्नामा च तत्र देवः परिवसति तेन माल्यवद्ह्रद इति, माल्यवतीराजधानी विजयाराजधानीवद्वक्तव्या काञ्चनकपर्वतवक्तव्यतावसाना प्राग्वत् (मवृ) ।

१. वृत्तौ एतत्पदं व्याख्यातं नास्ति ।

२. बाहल्लेणं पण्णत्ते (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

३. जी० ३।२८७-२९१ ।

४. छत्ता (ख); चत्तारि छत्ता (त्रि) ।

५. जी० ३।२७७-२८४, २८६-२९७; यावच्च बहवो वानमन्तरा देवा देव्यश्चासते शेरते यावद् विहरन्ति (मवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वग्गेणं पण्णत्ता, वइरामयमूल[1]-रययसुपतिट्ठियविडिमा[2], रिट्ठामयकंद[3]-वेरुलियरुइरखंधा सुजायवरजायरूवपढमगविसालसाला नाणामणिरयणाविविहसाहप्पसाह[4]-वेरुलियपत्तत-वणिज्जपत्तवेंटा जंबूणयरत्तमउयसुकुमालपवालपल्लवंकुरधरा[5] विचित्तमणिरयणसुरहिकुसुम-फलभर[6]-नमियसाला[7] सच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया अहियं मणोनिव्वुइकरी[8] पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

६७३. जंबूए णं सुदंसणाए चउद्दिसिं चत्तारि साला पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमेणं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं ।

तत्थ णं जेसे पुरत्थिमिल्ले साले, एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते—एगं कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसतसंनिविट्ठं, वण्णओ जाव भवणस्स दारं तं चेव, पमाणं पंचधणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं विक्खंभेणं जाव[9] वणमालाओ भूमिभागा उल्लोया मणिपेढिया पंचधणुसतिया देवसयणिज्जं भाणियव्वं ।

तत्थ णं जेसे दाहिणिल्ले साले, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते—कोसं च उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं आयाम-विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसियपहसिया, अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे, उल्लोया[10] । तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं[11] । तत्थ णं जेसे पच्चत्थिमिल्ले साले, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए, पण्णत्ते, तं चेव पमाणं सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं । तत्थ णं जेसे उत्तरिल्ले साले, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते, तं चेव पमाणं सीहासणं सपरिवारं ॥

६७४. तत्थ णं जेसे 'उवरिल्ले विडिमग्गसाले'[12], एत्थ णं महं एगे सिद्धायतणे पण्णत्ते—

---

१. वइरामया मूला (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

२. अतोग्रे 'ख' प्रतौ 'एवं चेतियरुक्खवण्णओ जाव पडिरूवा' इति संक्षिप्तः पाठोस्ति, 'क,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु 'एवं चेतियरुक्खवण्णओ जाव सव्वो' इति पाठो लिखितोस्ति, विस्तृतवर्णनपरः पाठोपि, अतो ज्ञायते तेषु संक्षिप्तवाचनायाः सम्मिश्रणं जातम् ।

३. रिट्ठमयविउलकंदा (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

४. अपरे सौवर्णिक्यो मूलशाखाः प्रशाखाः रजतमय्य इत्यूचुः (मवृ) ।

५. क्वचित्पाठः—'जंबूणयरत्तमउयसुकुमालकोमल-पल्लवंकुरग्गसिहरा' अन्ये तु 'जम्बूनदमया अग्रप्रवाला अङ्कुरापरपर्याया राजता' इत्याहुः (मवृ) ।

६. °कुसुमाफलभार (क, ख, ग, ट) ।

७. वृत्तौ अस्य व्याख्यानानन्तरं सपादं संग्रहगाथा-द्वयं लिखितमस्ति, तद्यथा—

मूला वइरमया से कंदो खंधो य रिट्ठवेरुलिओ ।
सोवण्णियसाहप्पसाह तह जायरूवा य ॥१॥
विडिमा रययवेरुलियपत्ततवणिज्जपत्तविंटा य ।
पल्लव अग्गपवाला जंबूणयरायया तीसे ॥२॥
रयणमयापुप्फफला ।

८. मणोनिव्वुइकरा (ग, ट); चैत्यवृक्षवर्णने (३।३८४) 'णयणमणणिव्वुतिकरा अमयरस-समरसफला' इति पाठो दृश्यते ।

९. जी० ३।६४६-६५१ ।

१०. जी० ३।३०७-३०९ ।

११. जी० ३।३१०-३१३,३३९-३४४,३१४ ।

१२. उवरिमविडिमग्गसाले (क, ख); उवरिमे विडिमे (ग, त्रि); वृत्तौ 'जम्ब्वाः सुदर्शनाया उपरिविडिमाया बहुमध्यदेसभागे सिद्धायतनम्' इतिव्याख्यातमस्ति । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र ३३३) प्रस्तुतागमपाठस्यार्थः उद्धृतोस्ति—'उपरितनविडिमाशालायामित्यध्याहार्यं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसतसंनिविट्ठे, वण्णओ[1] तिदिसिं तओ दारा पंचधणुसता अड्ढाइज्जधणुसयविक्खंभा, 'मणिपेढिया पंचधणुसतिया'[2] ॥

६७५. 'तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं, एत्थ णं महं एगे देवच्छंदए पण्णत्ते, पंचधणुसयाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे'[3] ॥

६७६. तत्थ णं देवच्छंदए अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेधप्पमाणाणं, एवं सव्वा सिद्धायतणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[4] धूवकडुच्छुया ॥

६७७. तस्स णं सिद्धायतणस्स उवरिं अट्ठट्ठमंगलया जाव सहस्सपत्तहत्थगा ॥

६७८. जंबू णं सुदंसणा मूले बारसहिं पउमवरवेइयाहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता[5], वण्णओ[6] ॥

६७९. जंबू णं सुदंसणा अण्णेणं अट्ठसतेणं जंबूणं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता। ताओ णं जंबूओ चत्तारि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, कोसं उव्वेहेणं, जोयणं खंधो[8], कोसं विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणाइं विडिमा, बहुमज्झदेसभाए चत्तारि जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, सातिरेगाइं चत्तारि जोयणाइं सव्वग्गेणं, वइरामयमूल-रयय-सुपइट्ठियविडिमा, रुक्खवण्णओ[9] ॥

६८०. जंबूए णं सुदंसणाए अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं अणाढियस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि जंबूसाहस्सीओ पण्णत्ताओ[10]। एवं जंबू परिवारो

जीवाभिगमे तथा दर्शनात्'। अनेनापि स्वीकृतपाठस्य पुष्टिर्जायते।

१. जी० ३।४१२, ४१३।

२. पंचधणुसयाइं आयामवि अड्ढाइज्जा बाह (ता)।

३. देवच्छंदओ पंचधणुसतविक्खंभो सातिरेगपंचधणुं स उच्चत्ते (क, ख, ग, ट, त्रि)।

४. जी० ३।४१४-४१६।

५. एतत् सूत्रं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु नैव लभ्यते, तेषु पूर्वसूत्रवर्ति 'धूवकडुच्छुया' इति पदानन्तरं 'उत्तिमागारा सोलसविधेहिं रयणेहिं उवेए तहेव चेव (ग, त्रि)' इति पाठो विद्यते, ४२० सूत्रेपि असौ पाठान्तरत्वेन निर्दिष्टोस्ति, वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः।

६. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु अतिरिक्तः पाठो दृश्यते—ताओ णं पउमवरवेइयाओ अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंचधणुसताइं विक्खंभेणं।

७. जी० ३।२६३-२७२।

८. खंधी (ता)।

९. सो चेव चेतियरुक्खवण्णओ (क, ख, ग, ट, त्रि); जी० ३।३८७।

१०. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं विस्तृतः पाठो विद्यते—जंबूए सुदंसणाए पुरत्थिमेणं एत्थ णं अणाढियस्स देवस्स चउण्हं अग्गमहिसीणं जंबूओ पण्णत्ताओ। एवं परिवारो सव्वो णायव्वो जंबूए जाव आयरक्खाणं। वृत्तौ पूर्णः पाठो व्याख्यातोस्ति—पूर्वस्यां चतसृणामग्रमहिषीणां योग्यानि चतस्रो, महाजम्ब्वा दक्षिणपूर्वस्यामभ्यन्तरपर्षदोऽष्टानां देवसहस्राणां योग्यान्यष्टौ जम्बूसहस्राणि, दक्षिणस्यां मध्यमपर्षदो दशानां देवसहस्राणां योग्यानि दश

जाव[1] आयरक्खाणं ॥

६८१. जंबू णं सुदंसणा तिहिं सइएहिं[2] वणसंडेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, तं जहा—'अब्भंतरएणं मज्झिमेणं बाहिरेणं'[3]

६८२ जंबूए णं सुदंसणाए पुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते पुरत्थिमभवणसरिसे[4] भाणियव्वे जाव[5] सयणिज्जं। एवं[6] दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं ॥

६८३. जंबूए णं सुदंसणाए उत्तर-पुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं महं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा पउमप्पभा चेव, कुमुदा कुमुदप्पभा। ताओ णं णंदाओ पुक्खरिणीओ कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, पंचधणुसयाइं उव्वेहेणं 'वण्णओ'[7] पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइया परिक्खित्ताओ पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ वण्णओ ॥

६८४. तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, वण्णओ जाव[8] तोरणा[9] ॥

६८५. तासि णं णंदापुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते—कोसप्पमाणे अद्धकोसं विक्खंभो सो चेव वण्णओ जाव सीहासणं सपरिवारं ॥

६८६. एवं[10] दक्खिण-पुरत्थिमेण वि पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता चत्तारि णंदा-

---

जम्बूसहस्राणि, दक्षिणापरस्यां बाह्यपर्षदो द्वादश देवसहस्राणां योग्यानि द्वादश जम्बूसहस्राणि, अपरस्यां सप्तानामनीकाधिपतीनां योग्यानि सप्त महाजम्ब्वः, ततः सर्वासु दिक्षु षोडशानामारक्षदेवसहस्राणां योग्यानि षोडश जम्बूसहस्राणि प्रज्ञप्तानि।

१. जं० ४।१५१।

२. जोयणसइएहिं (क, ख, ग, ट, त्रि); × (ता); शतिकैः—योजनशतप्रमाणैः (मवृ, जंबू० वृत्ति पत्र ३३४)।

३. पढमेणं दोच्चेणं तच्चेणं (क ख, ग, ट, त्रि)।

४. पुरत्थिमिल्ले भवण° (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. जी० ३।६७३।

६. ताडपत्रीयादर्शे वृत्तौ च अतः किञ्चिद् विस्तृतः पाठो दृश्यते—उवरिं अट्ठट्ठमंगलया जंबूए णं पढमवणसंडदाहिणेणं ओगाहित्ता एत्थ णं भवणे तहेव जाव सयणिज्जे पच्चत्थिमेणं वि उत्तरेण वि जंबूए णं सुदंसणाए भवणा तारिसा चेव तेसुवि देवसयणिज्जा।

७. जी० ३।२८६।

८. जी० ३।२८७-२९१।

९. अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णिप्पंकाओ णीरयाओ जाव पडिरूवाओ वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरणत्ति (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१०. ६८६-६८८ एतेषां त्रयाणां सूत्राणां स्थाने ताडपत्रीयादर्शे भिन्नः पाठोस्ति—जंबूए णं सु दाहिणपुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चत्तारि णंदा पु पं तं उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलाइय। उत्तरपुरिमाणं सरिसिलीओ पासायवडेंसा सीहा सपरिवारो एवं दाहिणपच्चत्थि भिंगा भिंगिणिभा च्चेव अंजणा कज्जलपभाच्चेव। सोच्चेव विही जाव सीहासणा सपरिवारा। उत्तरपुर पढमं वण पण्णासं जोयणाइं ओ ४ णंदाओ सिरिकंता सिरिचंदा सिरिणिलया चेव सिरिमहिता तहेव जाव सपरि। वृत्तौ एतानि सूत्राणि एवं व्याख्यातानि सन्ति—तासां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुक्खरिणीओ उप्पलगुम्मा नलिणा, उप्पला उप्पलुज्जला। तं चेव पमाणं तहेव पासायवडेंसगो तप्पमाणो ॥

६८७. एवं दक्खिण-पच्चत्थिमेणवि पण्णासं जोयणाइं, नवरं भिंगा भिंगणिभा चेव, अंजणा कज्जलप्पभा। सेसं तं चेव।

६८८. जंबूए णं सुदंसणाए उत्तर-पच्चत्थिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'सिरिकंता सिरिचंदा, सिरिणिलया चेव सिरिमहिया'[1] तं चेव पमाणं तहेव पासायवडेंसओ ॥

६८९. जंबूए णं सुदंसणाए पुरत्थिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तर-पुरत्थिमिल्लस्स[2] पासायवडेंसगस्स दाहिणेणं, एत्थ णं महं एगे कूडे पण्णत्ते—अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं 'दो जोयणाइं उव्वेहेणं'[3], मूले अट्ठ[4] जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे छ[5] जोयणाइं विक्खंभेणं,[6] उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले सातिरेगाइं पणुवीसं[7] जोयणाइं परिक्खेवेणं मज्झे सातिरेगाइं अट्ठारस[8] जोयणाइं परिक्खेवेणं, उवरिं सातिरेगाइं बारस जोयणाइं परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पिं[9] तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वजंबूणयामए अच्छे जाव[10] पडिरूवे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते,

---

पुष्करिणीनां बहुमध्यदेशभागेऽत्र महानेकः प्रासादावतंसकः प्रज्ञप्तः, स च जम्बूवृक्षदक्षिण-पश्चिमशाखाभाविप्रासादवत प्रमाणादिना वक्तव्यो यावत् 'सहस्सपत्तहत्थगा' इति पदं सर्वत्रापि च सिंहासनमनादृतदेवस्य सपरिवारम्। एवं दक्षिणपूर्वस्यां दक्षिणापरस्यामुत्तरापरस्यां च प्रत्येकं वक्तव्यं, नवरं नन्दा-पुष्करिणीनामनानात्वं, तच्चेदं—दक्षिणपूर्वस्यां पूर्वादिक्रमेण उत्पलगुल्मा नलिना उत्पला उत्पलोज्ज्वला, दक्षिणपूर्वस्यां भृङ्गा भृङ्ग-निभा अञ्जना कज्जलप्रभा, अपरोत्तरस्यां श्रीकान्ता श्रीचन्द्रा श्रीनिलया श्रीमहिता, उक्तञ्च—

पउमा पउमप्पभा चेव, कुमुयाकुमुयप्पभा।
उप्पलगुम्मा नलिणा, उप्पला उप्पलुज्जला ॥१॥
भिंगा भिंगनिभा चेव, अंजणा कज्जलप्पभा।
सिरिकंता सिरिचंदा, सिरिनिलया चेव सिरि-महिया ॥२॥

१. सिरिकंता सिरिमहिया, सिरिचंदा चेव तह य सिरिणिलया (क, ख, ग, ट, त्रि)।

२. पुरत्थिमेणं (त्रि)।

३. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु चिन्हाङ्कितः पाठः नैव लभ्यते, वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः। केवलं ताडपत्रीयादर्शे एवासौ विद्यते। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यामेष (४।१५६) पाठः उपलब्धोस्ति तद्वृत्तौ (पत्र ३३५) व्याख्यातोपि वर्तते।

४, ५, ७, ८. बारस अट्ठ सत्ततीसं पणुवीसं (क, ख, ग, ट, त्रि); जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तावपि (पत्र ३३५) स्वीकृतानि पदानि व्याख्यातानि सन्ति, पाठान्तरगतानि पदानि मतान्तरत्वेन परिदर्शितानि सन्ति—जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणैस्तु 'अट्ठुसहकूडसरिसा सव्वे जंबूणयामया भणिया' इत्यस्यां गाथायामृषभकूटसमत्वेन भणितत्वात् द्वादश योजनानि अष्टौ मध्ये चेत्यूचे, तत्त्वं तु बहुश्रुतगम्यम्।

६. आयामविक्खंभेण (क, ख, ग, ट, त्रि); वृत्तत्वेन य एव आयामः स एव विष्कम्भ इति (जम्बू० वृत्ति पत्र ३३५)।

९. उवरिं (ता)।

१०. जी० ३।२६१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोण्हवि वण्णओ[1] ॥

६६०. तस्स णं कूडस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[2] मणीणं तणाय य सद्दो ॥

६६१. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए 'एगं सिद्धायतणं—कोसप्पमाणं सव्वा सिद्धायतणवत्तव्वया'[3] ॥

६६२. जंबूए णं सुदंसणाए पुरत्थिमिल्लस्स[4] भवणस्स दाहिणेणं, दाहिण-पुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेणं, एत्थ णं महं एगे कूडे पण्णत्ते, 'तं चेव पमाणं सिद्धायतणं च'[5] ॥

६६३. जंबूए णं सुदंसणाए दाहिणिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेणं, दाहिण-पुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगे कूडे पण्णत्ते, तं चेव पमाणं सिद्धायतणं च ॥

६६४. जंबूए णं सुदंसणाए दाहिणिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेणं[6], दाहिण-पच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगे कूडे पण्णत्ते, तं चेव पमाणं सिद्धायतणं च ॥

६६५. जंबूए णं सुदंसणाए पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स दाहिणेणं, दाहिण-पच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेणं, एत्थ णं महं एगे कूडे पण्णत्ते, तं चेव पमाणं सिद्धायतणं च ॥

६६६. जंबूए णं सुदंसणाए पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेणं, उत्तर-पच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दाहिणेणं, एत्थ णं महं एगे कूडे पण्णत्ते, तं चेव पमाणं सिद्धायतणं च ॥

६६७. जंबूए णं सुदंसणाए उत्तरिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेणं, उत्तर-पच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगे कूडे पण्णत्ते, तं चेव पमाणं सिद्धायतणं च ॥

६६८. जंबूए णं सुदंसणाए उत्तरिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेणं, उत्तर-पुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगे कूडे पण्णत्ते, 'तं चेव पमाणं तहेव सिद्धायतणं'[7] ॥

---

१. जी० ३।२६३-२६७।

२. जी० ३।२७७-२८५।

३. सिद्धायतणे जम्बुसिद्धायणसरिसे जाव धूवकडुच्छुए (ता, मवृ); जी० ३।६७४-६७७।

४. पुरत्थिमस्स (क, ख, ग, त्रि)।

५. जेच्चेव उत्तरपुरत्थिमिल्लकूडसिद्धायतणवत्तव्वता सव्वे विहि पि (ता)।

६. परतो (ख, ग, त्रि, मवृ)।

७. तधेव जाव सिद्धायणे जाव कडुच्छुए जाव अट्ठट्ठमं (ता)। अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु सूत्रद्वयमुपलभ्यते जंबू णं सुदंसणा अण्णेहिं बहूहिं तिलएहिं लउएहिं जाव रायरुक्खेहिं हिंगुरुक्खेहिं जाव सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता। जंबूए णं सुदंसणाए उवरिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता, तं जहा—सोत्थियसिरिवच्छ° किण्हा चामरज्झया जाव छत्तातिच्छत्ता। ताडपत्रीयादर्शे एकं सूत्रमुपलभ्यते—जंबूए णं सुदंसणाए उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा जाव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९९. जंबूए णं सुदंसणाए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

सुदंसणा[1] अमोहा य, सुप्पबुद्ध जसोधरा।
विदेहजंबू सोमणसा, णियया णिच्चमंडिया ॥१॥
सुभद्दा य विसाला य, सुजाया सुमणा वि य।
सुदंसणाए जंबूए नामधेज्जा दुवालस[2] ॥२॥

७००. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जंबू सुदंसणा ? गोयमा ! जंबूए णं सुदंसणाए 'जंबूदीवाहिवती अणाढिते णामं'[3] 'देवे महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठितीए परिवसति। से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं जंबूदीवस्स[4] जंबूए सुदंसणाए अणाढियाते य रायधाणीए जाव[5] विहरति 'सेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—जंबू सुदंसणा'[6] ॥

७०१. कहि णं भंते ! अणाढियस्स देवस्स 'अणाढिया णामं रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं तिरियमसंखेज्जे। एवं जहा विजयस्स देवस्स जाव[7] समत्ता वत्तव्वया रायधाणीए, एमहिड्ढीए'[8] ॥

७०२.अदुत्तरं च णं गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे 'उत्तरकुराए कुराए'[9] तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे जंबूरुक्खा जंबूवणा जंबूसंडा[10] णिच्चं कुसुमिया जाव[11] वडेंसगधरा[12]। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जंबुद्दीवे दीवे।
'अदुत्तरं च णं गोयमा ! जंबुद्दीवस्स सासते णामधेज्जे पण्णत्ते—जण्ण कयावि णासि जाव[13] णिच्चे'[14] ॥

जंबुद्दीवे चंदसूरादि-अधिगारो

७०३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे कति चंदा पभासिंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति

सयसहस्सपत्तहत्थगा। प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ नैतत् सूत्रद्वयमपि व्याख्यातमस्ति। जम्बूवृक्षः अन्यैः जम्बूवृक्षैः परिवृतोऽस्ति तेन नैष पाठोऽपेक्षितोऽस्ति। जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ 'अट्ठट्ठमंगलगा' इति सूत्रं जम्ब्वा द्वादश नामानन्तरं व्याख्यातमस्ति।

१. ताडपत्रीयादर्शे वृत्तौ च नाम्नां भेदः क्रमभेदश्च दृश्यते—
सुदंसणा अमोहा य, सुप्पबुद्धा जसोधरा।
भद्दा य सुभद्दा य सुयाता सुमणा तिय ॥१॥
विदेहा बंधु सोमणसा णितिया णिच्चमंडिया।
सुदंसणाए जंबूए, एते णामा दुवालसा ॥२॥
(ता)।
सुदर्शना अमोघा सुप्रबुद्धा यशोधरा सुभद्रा विशाला सुजाता सुमनाः विदेहजम्बू सोमनस्या नियता नित्यमण्डिता (मवृ)।

२. अतः परं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (४।१५८) 'जंबूए णं अट्ठट्ठमंगलगा' इति पाठो विद्यते।

३. अणाढिए णाम जंबूदीवाहिपदि (ता)।

४. × (ता)।

५. जी० ३।३५०।

६. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।

७. जी० ३।३५१-५६५।

८. जंबुद्दीवाहिपतिस्स अणाढिया णाम रायहाणी पं जंबूएसु उत्तरेणं तिरियमसंखे जहा विजया (ता)।

९. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१०. जम्बूवणसंडा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

११. जी० ३।२७४।

१२. सिरीए अतीव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति (क, ख, ग, त्रि)।

१३. जी० ३।३५०।

१४. × (ता, मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा ? कति सूरिया तविंसु[1] वा तवंति वा तविस्संति वा ? कति नक्खत्ता जोयं जोइंसु वा जोयंति वा जोइस्संति वा ? कति महग्गहा चारं चरिंसु वा चरंति[2] वा चरिस्संति वा ? कति[3] तारागणकोडाकोडीओ सोभिंसु[4] वा सोभंति वा सोभिस्संतिवा ? गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा, दो सूरिया तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा, छप्पन्नं नक्खत्ता जोगं जोइंसु वा जोयंति वा जोएस्संति वा, छावत्तरं गहसतं चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा—

एगं[5] सतसहस्सं, तेत्तीसं 'खलु भवे सहस्साइं'[6] ।
णव य सया पन्नासा तारागण कोडकोडीणं[7] ॥१॥

सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ॥

लवणसमुद्दाधिगारो

७०४. जंबुद्दीवं[8] दीवं लवणे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ॥

७०५. लवणे णं भंते ! समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? गोयमा ! समचक्कवालसंठिते[9] नो विसमचक्कवाल संठिते[10] ॥

७०६. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणे णं समुद्दे दो जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, 'पन्नरस जोयणसयसहस्साइं एगासीइसहस्साइं सयमेगोणचत्तालीसे'[11] 'किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं'[12] । से णं एक्काए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते चिट्ठइ, दोण्हवि वण्णओ । सा णं पउमवरवेइया अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच धणुसयविक्खंभेणं लवणसमुद्दसमिया परिक्खेवेणं सेसं तहेव[13] । से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं जाव[14] विहरइ ॥

७०७. लवणस्स णं भंते ! समुद्दस्स कति दारा पण्णत्ता ? 'गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—विजए वेजयंते जयंते अपराजिते'[15] ॥

७०८. कहि णं भंते । लवणसमुद्दस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमपेरंते धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं सीओदाए[16] महानदीए

---

१. तवइंसु (ता) ।
२. चरिंति (क, ख, ट, त्रि) ।
३. केवतियाओ (ख, ग, ट, त्रि) ।
४. सोभंसु (क, ता); सोहंसु (त्रि) ।
५. एगं च (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
६. च सहस्साई (ता) ।
७. °कोडिकोडीणं (क, ख, ग); °कोडाकोडीणं (ट) ।
८. जंबुद्दीवं णाम (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
९. समचक्कवालयं (ता) ।
१०. विसमचक्कवालयं (ता) ।
११. छ सयसहस्साइं सयं च चत्तालं (ता) ।
१२. किंचिविसेसाहिए लवणोदधिणो चक्कवालपरिक्खेवेणं (ख, ग, ट, त्रि) ।
१३. जी० ३।२६३-२७२ ।
१४. जी० ३।२७३-२९८ ।
१५. जंबुद्दीवविजयसरिसे (ता) ।
१६. सीताए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पिं, एत्थ णं लवणस्स समुद्दस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते, जंबुद्दीवविजयसरिसे जाव[1] अट्ठट्ठमंगलगा[2] ।।

७०९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—विजए दारे, विजए दारे ? जो अट्ठो[3] जंबुद्दीवगस्स ।।

७१०. कहि णं भंते ! लवणगस्स विजयस्स देवस्स विजया णामं रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! विजयस्स दारस्स पुरत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे अण्णंमि लवणसमुद्दे बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं विजयस्स देवस्स विजया णाम रायहाणी पण्णत्ता, जंबुद्दीवगसरिसा[4] वत्तव्वया ।।

७११. [5]कहि णं भंते ! लवणसमुद्दस्स वेजयंते नाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! लवण-समुद्दे दाहिणपेरंते धातइसंडदीवस्स दाहिणद्धस्स उत्तरेणं, एत्थ णं वेजयंते णामं दारे पण्णत्ते, सेसं तं चेव सव्वं[6] ।।

७१२. एवं[6] जयंते वि तस्स वि रायहाणी पच्चत्थिमेणं ।।

७१३. कहि णं भंते ! लवणसमुद्दस्स अपराजिते तहेव रायहाणी वि उत्तरेणं अपराजितस्स दारस्स अण्णंमि लवणे जहा विजयरायहाणि-गमो उड्ढं उच्चत्तं तहा ।।

७१४. लवणस्स णं भंते ! समुद्दस्स दारस्स य दारस्स य एस णं केवतियं अबाधाए[7] अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! 'तिण्णि जोयणसतसहस्साइं पंचाणउई सहस्साइं दोण्णि य असीते

१. जी० ३।३००-३४९ ।

२. वृत्तौ अत्र किञ्चिद् विस्तृतः पाठो व्याख्यातोस्ति—अष्टौ योजनान्यूर्ध्वमुच्चै-स्त्वेन । एवं जम्बूद्वीपगतविजयद्वारसदृश-मेतदपि वक्तव्यं यावद्बहून्यष्टावष्टौ मङ्गल-कानि यावद्बहवः सहस्रपत्रहस्तकाः । ग, ट, त्रि' आदर्शेषु अतः प्रारभ्य ७१० सूत्रपर्यन्तं भिन्ना वाचना विद्यते, यथा—अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं एवं तं चेव सव्वं जहा जंबुद्दीवस्स विजय-सरिसेवि रायहाणी पुरत्थिमेणं अण्णंमि लवण-समुद्दे ।

३. जी० ३।३५० ।

४. जी० ३।३५१-५६५।

५. एवं वेजतंतं पि अप्पणिज्जेणं गमेणं लवणस्स दाहिणेणं रायहाणी (क, ख, ता) ।

६. ७१२,७१३ सूत्रयोः स्थाने 'ग, ट, त्रि' आद-र्शेषु पाठभेदो लभ्यते—एवं जयंतेवि, णवरि—सियाए महाणदीए उप्पिं भाणियव्वे । एवं अप-राजितेवि, णवरं—दिसीभागो भाणियव्वो । वृत्तौ एते द्वेपि सूत्रे किञ्चिद् विस्तृते विद्येते—कहि णं भंते ! इत्यादि, क्व भदन्त ! लवणसमुद्रस्य जयन्तं द्वारं प्रज्ञप्तं ? भगवा-नाह—गौतम ! लवणसमुद्रस्य पश्चिमपर्यन्ते धातकीखण्डपश्चिमार्द्धस्य पूर्वतः शीताया महा-नद्या उपरि लवणस्य समुद्रस्य जयन्तं नाम द्वारं प्रज्ञप्तं, तद्वक्तव्यतापि विजयद्वारवद् वक्तव्या, नवरं राजधानी जयन्तद्वारस्य पश्चिमभागे वक्तव्या । अपराजितद्वारप्रतिपाद-नार्थमाह—कहिणं भंते ! इत्यादि क्व भदन्त! लवणस्य समुद्रस्यापराजितं नाम द्वारं प्रज्ञप्तं ? भगवानाह—गौतम ! लवणसमुद्रस्योत्तरप-र्यन्ते धातकीखण्डद्वीपोत्तरार्द्धस्य दक्षिणतोत्र लवणस्य समुद्रस्यापराजितं नाम द्वारं प्रज्ञप्तं । एतद्वक्तव्यताऽपि विजयद्वारवन्निरवशेषा वक्तव्या, नवरं राजधानी अपराजितद्वारस्योत्तरतोऽव-सातव्या ।

७. आवाधाए (ख, ग, ट, ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयणसते कोसं च दारस्स य दारस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते[1] ।।

७१५. लवणस्स णं[2] •भंते ! समुद्दस्स पएसा धायइसंडं दीवं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ।।

७१६. ते णं भंते ! किं लवणे समुद्दे ? धायइसंडे दीवे ? गोयमा ! ते लवणे समुद्दे, नो खलु ते धायइसंडे दीवे ।।

७१७. धायइसंडस्स णं भंते ! दीवस्स पदेसा लवणं समुद्दं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ।।

७१८. ते णं भंते ! किं धायइसंडे दीवे ? लवणे समुद्दे ? गोयमा ! धायइसंडे णं ते दीवे, नो खलु ते लवणे समुद्दे° ।।

७१९. लवणे णं भंते समुद्दे जीवा उद्दाइत्ता[3]-•उद्दाइत्ता धायइसंडे दीवे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगतिया पच्चायंति, अत्थेगतिया नो पच्चायंति ।।

७२०. धायइसंडे णं भंते ! जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता लवणे समुद्दे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगतिया पच्चायंति, अत्थेगतिया नो पच्चायंति° ।।

७२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—लवणे समुद्दे ? लवणे समुद्दे ? गोयमा ! 'लवणस्स णं समुद्दस्स'[4] उदगे आविले[5] रइले[6] लोणे लिंदे[7] खारए कडुए अपेज्जे[8] बहूणं चउप्पय[9]-मिय-पसु-पक्खि-सिरीसवाणं, नण्णत्थ तज्जोणियाणं सत्ताणं, सुट्ठिए[10] एत्थ[11] लवणाहिवई देवे महिड्ढीए महज्जुतीए महाबले महायसे महेसक्खे महाणुभावे पलिओवमट्ठिईए । से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव लवणसमुद्दस्स सुट्ठियाए रायहाणीए अण्णेसिं जाव[12] विहरइ । से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—लवणे णं समुद्दे, लवणे णं समुद्दे ।

अदुत्तरं च णं गोयमा ! लवणे समुद्दे सासए जाव णिच्चे ।

७२२. लवणे णं भंते ! समुद्दे कति चंदा पभासिंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा ? एवं पंचण्हवि[13] पुच्छा । गोयमा ! लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, चत्तारि सूरिया तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा, बारसुत्तरं नक्खत्तसयं जोगं जोइंसु वा जोयंति वा जोएस्संति वा, तिण्णि बावण्णा महग्गहसया चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा, दुण्णि सयसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा नव य सया तारागणकोडकोडीणं[14] सोभं सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ।।

---

१. तिण्णेव सतसहस्सा, पंचाणउतिं भवे सहस्साइं । दो जोयणसत असिता, कोसं दारंतरे लवणे ।।१।। जाव अबाधाए अंतरे पण्णत्ते (क, ख, ग, ट, त्रि,) ।

२. सं० पा०—लवणस्स णं पएसा धायइसंडं दीवं पुट्ठा तहेव जहा जंबूदीवे धायइसंडेवि सोच्चेव गमो ।

३. सं० पा०—उद्दाइत्ता सो चेव विही, एवं धायइसंडेवि ।

४. लवणे णं समुद्दे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

५. आइले (ता) ।

६. रइले काले (ग, त्रि) ।

७. लंदरे (ग) ; लोद्दे (ता) ।

८. अप्पेज्जे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

९. दुपयचउप्पय (क, ख, ग, ट, त्रि) ; × (ता) ।

१०. सुत्थिए (क, ख) ; सोत्थिए (ग, त्रि) ।

११. जत्थ (ता) ।

१२. जी० ३ । ३५० ।

१३. जी० ३ । ७०३ ।

१४. °कोडिकोडीणं (ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७२३. कम्हा णं भंते ! लवणे समुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु[1] अतिरेगं-अतिरेगं वड्ढति वा हायति वा ? गोयमा ! 'जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चउद्दिसिं बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ लवणसमुद्दं'[2] पंचाणउतिं-पंचाणउतिं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चत्तारि 'महइमहालया महालिंजरसंठाणसंठिया'[3] महापायाला पण्णत्ता, तं जहा—वलयामुहे केयुए[4] जूयए[5] ईसरे। ते णं महापाताला एगमेगं जोयणसयसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, 'मज्झे एगपदेसियाए सेढीए एगमेगं जोयणसतसहस्सं विक्खंभेणं, उवरिं[6] मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं'[7] ॥

७२४. तेसि णं महापायालाणं कुड्डा सव्वत्थ समा दसजोयणसतबाहल्ला[8] सव्ववइरामया[9] अच्छा जाव[10] पडिरूवा। तत्थ णं बहवे जीवा पोग्गला य अवक्कमंति[11] विउक्कमंति चयंति उववज्जंति[12] सासया णं ते कुड्डा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—काले महाकाले वेलंबे पभंजणे ॥

७२५. तेसि णं महापायालाणं 'पत्तेयं-पत्तेयं'[13] तओ तिभागा पण्णत्ता, तं जहा—हेट्ठिल्ले तिभागे मज्झिल्ले[14] तिभागे उवरिल्ले तिभागे। ते णं तिभागा तेत्तीसं जोयणसहस्साइं तिण्णि य 'तेत्तीसे जोयणसते'[15] जोयणतिभागं च बाहल्लेणं पण्णत्ता। तत्थ णं जेसे हेट्ठिल्ले तिभागे, एत्थ णं वाउकाए संचिट्ठति। तत्थ णं जेसे मज्झिल्ले तिभागे, एत्थ णं वाउकाए य आउकाए य संचिट्ठति। तत्थ णं जेसे उवरिल्ले तिभागे, एत्थ णं आउकाए संचिट्ठति ॥

७२६. अदुत्तरं च णं गोयमा ! लवणसमुद्दे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे खुड्डालि-

---

१. °पुण्णिमासिणीसु (क, ख, ग, त्रि)।
२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउद्दिसिं लवणं समुद्दं (ता, मवृ)।
३. महालिंजरसंठाणसंठिया महइमहालया (क, ख, ग, ट, त्रि); °महारंजरसंठाणसंठिया (मवृपा)।
४. केतूए (क, ख, ग, ट); केयूए: (त्रि); केयूप (मवृ)।
५. जूवे (क, ख, ग, ट, त्रि); यूपः (मवृ)।
६. उप्पिं (ता)।
७. × (क, ख)।
८. °बाहल्ला पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।
९. सव्वरयणामया (ग)।
१०. जी० ३।२६१।
११. वक्कमंति (ख, ट, ता)।
१२. उवचयंति (ग, त्रि); उपचीयन्ते (मवृ); भगवत्यामपि (२।११३) 'उववज्जंति' इति पदं दृश्यते। अभयदेवसूरिणा तद्वृत्तावपि 'वक्कमंति' इत्यादिपदचतुष्टयस्य सम्यग् व्याख्या कृतास्ति—'वक्कमंति' उत्पद्यन्ते 'विउक्कमंति' विनश्यन्ति, एतदेव व्यत्ययेनाह—च्यवन्ते चेति उत्पद्यन्ते चेति (वृत्ति पत्र १४२)। मलयगिरिणा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ उक्तपदचतुष्टयस्य या व्याख्या कृता सा सम्यग् न प्रतिभाति—'अपक्रामन्ति' गच्छन्ति 'व्युत्क्रामन्ति' उत्पद्यन्ते जीवा इति सामर्थ्याद् गम्यम्, जीवानामेवोत्पत्तिधर्मकतया प्रसिद्धत्वात् 'चीयन्ते' चयमुपगच्छन्ति 'उपचीयन्ते' उपचयमायान्ति। 'व्युत्क्रामन्ति' इति पदस्य उत्पद्यन्ते इत्यर्थो न सङ्गच्छते।
१३. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१४. मज्झिमिल्ले (ट); मज्झिले (ता)।
१५. सते तेत्तीसे (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जरसंठाणसंठिया खुड्डापायाला[1] पण्णत्ता। ते णं खुड्डापाताला एगमेगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले एगमेगं जोयणसतं विक्खंभेणं, मज्झे एगपदेसियाए सेढीए एगमेगं जोयण-सहस्सं विक्खंभेणं, उप्पिं मुहमूले एगमेगं जोयणसतं विक्खंभेणं ।।

७२७. तेसि णं खुड्डापायालाणं कुड्डा सव्वत्थ समा दसजोयणबाहल्ला[2] सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा। तत्थ णं बहवे जीवा पोग्गला य[3] °अवक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति। सासया णं ते कुड्डा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं° असासया, पत्तेयं-पत्तेयं अद्धपलिओवमट्ठितीयाहिं देवताहिं परिग्गहिया ।।

७२८. तेसि णं खुड्डापातालाणं 'पत्तेयं-पत्तेयं'[4] तओ तिभागा पण्णत्ता, तं जहा—हेट्ठिल्ले तिभागे मज्झिल्ले तिभागे उवरिल्ले तिभागे। ते णं तिभागा तिण्णि तेत्तीसे जोयणसते-जोयणसते जोयणतिभागं च बाहल्लेणं पण्णत्ता। तत्थ णं जेसे हेट्ठिल्ले तिभागे, एत्थ णं वाउकाए संचिट्ठति, मज्झिल्ले तिभागे वाउआए आउयाए य संचिट्ठति, उवरिल्ले आउकाए संचिट्ठति। एवामेव सपुव्वावरेणं लवणसमुद्दे सत्त पायालसहस्सा अट्ठ य चुलसीता पातालसता भवंतीति मक्खाया ।।

७२९. तेसि णं 'खुड्डापातालाणं महापातालाण य'[5] हेट्ठिममज्झिमिल्लेसु तिभागेसु बहवे ओराला[6] वाया संसेयंति संमुच्छंति 'एयंति वेयंति'[7] चलंति 'घट्टंति खुब्भंति फंदंति उदीरेंति'[8] तं तं भावं परिणमंति। जया णं तेसिं खुड्डापातालाणं महापातालाण य हेट्ठिल्लमज्झिल्लेसु तिभागेसु बहवे ओराला वाया जाव तं तं भावं परिणमंति, तया णं से उदए उण्णामिज्जइ[9]। जया णं तेसिं खुड्डापायालाणं महापायालाण य हेट्ठिल्लमज्झिल्लेसु तिभागेसु नो बहवे ओराला जाव तं तं भावं न परिणमंति, तया णं से उदए नो उण्णामिज्जइ। अंतरावि य णं ते वाया उदीरेंति, अंतरावि य णं से उदगे उण्णामिज्जइ। अंतरावि य णं ते वाया नो उदीरेंति, अंतरावि य णं से उदगे णो उण्णामिज्जइ। एवं खलु गोयमा! लवणे समुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अइरेगं-अइरेगं वड्ढति वा हायति वा ।।

७३०. लवणे णं भंते! समुद्दे तीसाए मुहुत्ताणं कतिखुत्तो अतिरेगं-अतिरेगं वड्ढति वा हायति वा? गोयमा! लवणे णं समुद्दे तीसाए मुहुत्ताणं दुक्खुत्तो अतिरेगं-अतिरेगं वड्ढति वा हायति वा ।।

७३१. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—लवणे णं समुद्दे तीसाए मुहुत्ताणं दुक्खुत्तो अइरेगं-अइरेगं वड्ढइ वा हायइ वा? गोयमा! उद्धमंतेसु पायालेसु वड्ढइ आपूरेंतेसु पायालेसु हायइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—लवणे णं समुद्दे तीसाए मुहुत्ताणं दुक्खुत्तो अइरेगं-अइरेगं वड्ढइ वा हायइ वा ।।

---

१. °पायालकलसा (क, ख, ग, त्रि, मवृ)।

२. दसजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि); दश दश योजनानि बाहल्यतः (मवृ)।

३. सं० पा०—पोग्गला य जाव असासयावि।

४. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. महापातालाणं खुड्डगपातालाण य (क, ख, ग, ट, त्रि)।

६. कालिका (ता)।

७. × (मवृ)।

८. कंपंति खुब्भंति घट्टंति फंदंति (क, ख, ग, ट, त्रि)।

९. उण्णाहिज्जति (क, ख, ग, ता) सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७३२. लवणसिहा णं भंते ! केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं[1] केवतियं अइरेगं-अइरेगं वड्ढति वा हायति वा ? गोयमा ! लवणसिहा[2] णं 'सव्वत्थ समा'[3] दस जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, देसूणं अद्धजोयणं अतिरेगं-अतिरेगं वड्ढति वा हायति वा ।।

७३३. लवणस्स णं भंते ! समुद्दस्स 'कति णागसाहस्सीओ'[4] अब्भितरियं वेलं धरंति[5] ? कति नागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धरंति ? कति नागसाहस्सीओ अग्गोदयं धरंति ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीसं[6] णागसाहस्सीओ अब्भितरियं वेलं धरंति, बावत्तरि णागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धरंति, सट्ठि णागसाहस्सीओ अग्गोदयं धरंति । एवमेव[7] सपुव्वावरेणं एगा[8] णागसतसाहस्सी चोवत्तरिं[9] च णागसहस्सा भवंतीति मक्खाया ।।

७३४. कति णं भंते ! वेलंधरणागरायाणो[10] पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि वेलंधर-णागरायाणो पण्णत्ता, तं जहा—गोथूभे[11] सिवए संखे मणोसिलए[12] ।।

७३५. एतेसि णं भंते ! चउण्हं वेलंधरणागरायाणं कति आवासपव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवासपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—गोथूभे दओभासे[13] संखे दगसीमे ।।

७३६. कहि णं भंते ! गोथूभस्स वेलंधरणागरायस्स[14] गोथूभे णामं आवासपव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं गोथूभस्स वेलंधरणागरायस्स[15] गोथूभे णामं आवास-पव्वते पण्णत्ते । सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि तीसे जोयणसते कोसं च उव्वेधेणं, मूले दसबावीसे जोयणसते आयाम-विक्खंभेणं[16], मज्झे सत्त तेवीसे जोयण-सते आयाम-विक्खंभेणं उवरिं चत्तारि चउवीसे जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, मूले तिण्णि जोयणसहस्साइं दोण्णि य बत्तीसुत्तरे[17] जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, मज्झे दो जोयणसहस्साइं दोण्णि य छलसीते[18] जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, उवरिं एगं जोयणसहस्सं तिण्णि य ईयाले जोयणसते किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वकणगामए अच्छे जाव पडिरूवे । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, दोण्हवि वण्णओ[19] ।।

७३७. गोथूभस्स[20] णं आवासपव्वतस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते

---

१. विक्खंभेणं (ता) सर्वत्र ।
२. लवणसिहाए (क, ग) ।
३. × (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
४. केवतिया नागसहस्सा (ता) सर्वत्र ।
५. धरेंति (ता) सर्वत्र ।
६. बादालीसं (ता) ।
७. एवामेव (ता) ।
८. लवणसमुद्दे एगा (ता) ।
९. बावत्तरि (क, ख, ग, ट) अशुद्धमस्ति ।
१०. वेलंधरा णागराया (क, ख, ग, ट, त्रि); वेणंधर° (ता) ।
११. गोथुब्भे (ता) ।
१२. मणोसिलाए (ठाणं ४।३३०) ।
१३. उदयभासे (क, ख, ट); दगभासे (ग, त्रि) ।
१४. भुयगिंदस्स भुयगरण्णो (ता) सर्वत्र ।
१५. भुयगिंदस्स भुयगरण्णो (ता, मवृ) ।
१६. विक्खंभेणं (ता, मवृ) ।
१७. बत्तीसे (ता) ।
१८. चुलसीते (ट) ।
१९. जी० ३।२६३-२६७ ।
२०. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'ता' प्रतौ भिन्नपाठो लभ्यते—भूमिभागो ससद्दो जावासयंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव[1] आसयंति । तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं एगे महं पासायवडेंसए बावट्ठिं जोयणद्धं च उड्ढं उच्चत्तेणं तं चेव पमाणं अद्धं आयाम-विक्खंभेणं वण्णओ जाव[2] सीहासणं सपरिवारं ॥

७३८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोथूभे आवासपव्वए ? गोथूभे आवास-पव्वए ? गोयमा ! गोथूभे णं आवासपव्वते 'खुड्डा-खुड्डियासु जाव विलपंतियासु बहूइं उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं गोथूभप्पभाइं गोथूभागाराइं गोथूभवण्णाइं गोथूभवण्णाभाइं'[3], गोथूभे य एत्थ[4] देवे[5] महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठितीए परिवसति । से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव गोथूभस्स आवासपव्वतस्स गोथूभाए रायहाणीए[6] जाव[7] विहरति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—गोथूभे आवासपव्वते, गोथूभे आवास-पव्वते 'जाव णिच्चे'[8] ॥

७३९. रायहाणिपुच्छा । गोयमा ! गोथूभस्स आवासपव्वतस्स पुरत्थिमेणं तिरियम-संखेज्जे दीवसमुद्दे वीतिवइत्ता अण्णंमि लवणसमुद्दे 'बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता जहा[9] विजया'[10] ॥

७४०. कहि णं भंते ! सिवगस्स वेलंधरणागरायस्स[11] दओभासणामे आवासपव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं[12] लवणसमुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं सिवगस्स वेलंधरणागरायस्स दओभासे णामं आवास-पव्वते पण्णत्ते । 'जहा गोथूभो जाव[13] सीहासणं सपरिवारं'[14] ।

७४१. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—दओभासे आवासपव्वते ? दओभासे आवासपव्वते[15] ? गोयमा ! दओभासे णं आवासपव्वते लवणसमुद्दे अट्ठजोयणिए खेत्ते 'दगं सव्वतो समंता'[16] ओभासेति उज्जोवेति तावेति[17] पभासेति । 'सिवए एत्थ देवे महिड्ढीए

उवरिं बहुसमरमणिज्जो बहुमज्झदेसभाए पासायवडेंसओ विजयमूलपासायसरिसो जाव सीहासणं सपरिवारं ।

१. जी० ३।२७७-२९७ ।

२. जी० ३।३०७-३१३, ३३९-३४९ ।

३. तत्थ २ देसे तहिं २ बहुओ खुड्डाखुड्डियाओ जाव गोथूभवण्णाइं बहूइं उप्पलाइं तहेव जाव (क, ख, ग, ट, त्रि); बहुवीओ खुड्डाखुड्डीओ जाव बिल तासु णं खुड्डा जाव बिल बहुगाइं उप्पलाइं जाव पत्ताइं गोथूभप्पभाइं ३ (ता) ।

४. तत्थ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

५. भूयंति भुयगराया (ता, मवृ) ।

६. रायहाणीए अण्णेसिं च व गोथुभरायहाणि वत्थव्वाणा वाणमन्त (ता) ।

७. जी० ३।३५० ।

८. × (ता) ।

९. जी० ३।३५१-५६५ ।

१०. तं चेव पमाणं तहेव सव्वं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

११. भु २ (ता) ।

१२. दाहिणेणं (ता) ।

१३. जी० ३।७३६,७३७ ।

१४. तं चेव पमाणं जं गोथुभस्स णवरि सव्वअंका-मए अच्छे जाव पडिरूवे जाव (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१५. अट्ठो भाणियव्वो (क, ख, ग, ट, त्रि); अट्ठो पुच्छा (ता) ।

१६. सव्वतो समंता दगं (ता) ।

१७. तवति (क, ख, ग, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव रायहाणी से दक्खिणेणं सिविगा दओभासस्स सेसं[2] तं चेव[3] ॥

७४२. कहि णं भंते ! संखस्स वेलंधरणागरायस्स संखे णामं आवासपव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं संखस्स वेलंधरणागरायस्स संखे णामं आवासपव्वते पण्णत्ते । गोथूभ-गमो जाव[4] सीहासणं सपरिवारं[4] ॥

७४३. 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संखे आवासपव्वते ? संखे आवासपव्वते ? गोयमा ! संखे आवासपव्वते[5] 'खुड्डा-खुड्डियासु जाव बिलपंतियासु बहूइं उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं संखप्पभाइं[6] संखागाराइं[7] संखवण्णाइं संखवण्णाभाइं संखे य एत्थ देवे महिड्ढीए जाव[8] विहरति । से तेणट्ठेणं ॥

७४४. 'रायहाणी संखपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं विजयारायहाणी गमो'[9] ॥

७४५. कहि णं भंते ! मणोसिलकस्स[10] वेलंधरणागरायस्स दगसीमे[11] णामं आवास-पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं लवणसमुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं मणोसिलगस्स वेलंधरणागरायस्स दगसीमे णामं आवासपव्वते पण्णत्ते । 'गोथूभगमेणं जाव[12] सीहासणं सपरिवारं'[13] ॥

७४६. से[14] केणट्ठे भंते ! एवं वुच्चइ—दगसीमे आवासपव्वते ? दगसीमे आवास-पव्वते ? गोयमा ! दगसीमे णं आवासपव्वते सीतासीतोदाणं महाणदीणं सोता तत्थ गता ततो पडिहता पडिणियत्तंति, मणोसिलए य एत्थ देवे महिड्ढीए जाव[15] विहरति, से तेणट्ठेणं ॥

---

१. जी० ३।७३८, ७३९ ।

२. सिवए यत्थ भुयगि दे जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसति से णं तत्थ चउण्हं सा दओभासस्स य आवास पं सिवियाए रा अण्णेसिं च ब रायहाणि सिविया दओभासस्स दाहिणेणं अण्णंमि लवणे तहेवा (ता, मवृ) ।

३. जी० ३।७३६, ७३७ ।

४. तं चेव पमाणं नवरं सव्वरयणामए अच्छे से णं एगाए पउमवरवदियाए एगेण य वणसंडेणं जाव (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

५. अट्ठो (क, ख, ग, ट, ता, त्रि) ।

६. संखाभाइ (मवृ) ।

७. बहूओ खुड्डाखुड्डियाओ जाव बहूइं उप्पलाइं संखाभाइं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

८. जी० ३।३५० ।

९. जी० ३।३५०-५६५ । रायहाणीए पच्चत्थिमेणं संखस्स आवासपव्वयस्स संखा नाम रायहाणी तं चेव पमाणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१०. मणोसिलतस्स (ता) ।

११. उदगसीमए (क, ख, ग, त्रि) ।

१२. जी० ३।७३६,७३७ ।

१३. तं चेव पमाणं णवरि सव्व फलिहामए अच्छे जाव (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१४. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—अट्ठो गोयमा ! दगसीमंते णं आवासपव्वते सीतासीतोदगाणं महाणदीणं तत्थ गंता सोए पडिहम्मति । से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे मणोसिलए एत्थ देवे महिड्ढीए जाव से णं तत्थ चउण्हं सामाणिय जाव विहरति ।

१५. जी० ३।३५० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७४७. मणोसिला[1] रायहाणी ? दगसीमस्स आवासपव्वयस्स उत्तरेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीतिवतित्ता अण्णंमि लवणे तहेव[2]।

संगहणीगाहा—

कणगंकरययफालियमया[3] य वेलंधराणमावासा।
अणुवेलंधरराईण पव्वया होंति रयणमया ॥१॥

७४८. कइ णं भंते! अणुवेलंधरनागरायाणो[4] पण्णत्ता ? गोयमा! चत्तारि अणुवेलंधरणागरायाणो पण्णत्ता, तं जहा—कक्कोडए कद्दमए केलासे अरुणप्पभे ॥

७४९. एतेसि णं भंते! चउण्हं अणुवेलंधरणागराईणं[5] कति आवासपव्वया पण्णत्ता ? गोयमा! चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—कक्कोडए विज्जुप्पभे[6] केलासे[7] अरुणप्पभे ॥

७५०. कहि णं भंते! कक्कोडगस्स अणुवेलंधरणागरायस्स कक्कोडए णाम आवासपव्वते पण्णत्ते ? गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बायालीसं[8] जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं[9] कक्कोडगयस्स नागरायस्स कक्कोडए णाम आवासपव्वते पण्णत्ते—सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसताइं तं चेव पमाणं जं गोथूभस्स, णवरि—सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेसं जाव[10] सीहासणं सपरिवारं। अट्ठो[11] से बहूइं उप्पलाइं कक्कोडप्पभाइं, सेसं तं चेव,[12] णवरि—कक्कोडगपव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एवं तं चेव सव्वं ॥

७५१. कद्दमस्सवि सो चेव गमओ[13] अपरिसेसिओ, णवरि—दाहिणपुरत्थिमेणं आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी दाहिणपुरत्थिमेणं ॥

७५२. केलासेवि[14] एवं[15] चेव, णवरि—दाहिणपच्चत्थिमेणं केलासावि रायहाणी ताए चेव दिसाए ॥

---

१. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—कहि णं भंते! मणोसिलगस्स वेलंधरणागरायस्स मणोसिला णाम रायहाणी ? गोयमा! दगसीमस्स आवासपव्वयस्स उत्तरेणं तिरि अण्णंमि लवणे एत्थ णं मणोसिलया णाम रायहाणी पण्णत्ता तं चेव पमाणं जाव मणोसिलाए देवे।

२. जी० ३।३४९-५६३।

३. °फालिहमया (क, ख, ग, ट, त्रि)।

४. अणुवेलंधररायाणो (ग, मवृ); अणुवेलंधरणातरायाणो (ता)।

५. °रायाणं (ग)।

६. कद्दमए (क, ख, ग, ट, त्रि); विज्जुजिब्भे (ता); स्थानाङ्गे (४।३३१) 'विज्जुप्पभे' इति पाठो विद्यते।

७. केतिलासे (ख); कइलासे (ग, ट, त्रि)।

८. बातालीसं (ता)।

९. अतः परं ७५१ सूत्रपर्यन्त 'ता' प्रतौ एतावानेव पाठो लभ्यते—गोथूभगमो रायहाणि कक्कोडगस्स उत्तरपुरत्थि अण्णं लवणस तधेव एवं सव्वे विदिसासु अट्ठो णं अप्पणिज्जगवण्णाइं रायहाणीओ अप्प पुणो विदिसासु।

१०. जी० ३।७३६,७३७।

११. इदं पदं 'से केणट्ठेणं भंते' इति सूत्रस्य सूचकमस्ति।

१२. जी० ३।७३८,७३९।

१३. जी० ३।७३६-७३९।

१४. कइलासे (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१५. जी० ३।७३६-७३९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७५३. अरुणप्पभेवि[1] उत्तरपच्चत्थिमेणं रायहाणीवि ताए चेव दिसाए। चत्तारि वि एगप्पमाणा सव्वरयणामया य ।।

७५४. कहि णं भंते ! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स गोयमदीवे णाम दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! 'जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं'[2] बारसजोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स गोयमदीवे णाम दीवे पण्णत्ते—बारसजोयण-सहस्साइं आयामविक्खंभेणं, सत्ततीसं जोयणसहस्साइं नव य अडयाले जोयणसए किंचिविसे-सूणे[3] परिक्खेवेणं, जंबूदीवंतेणं अद्धेकूणणउतिं[4] जोयणाइं चत्तालीसं च पंचाणउतिभागे[5] जोयणस्स ऊसिए जलंताओ लवणसमुद्दं तेणं दो कोसे ऊसिते जलंताओ। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेणं वणसंडेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते[6] वण्णओ[7] दोण्हवि ।।

७५५. गोयमदीवस्स णं दीवस्स अंतो[8] बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहानामए—आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[9] आसयंति ।।

७५६. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स महं एगे अइक्कीलावासे नामं भोमेज्जविहारे पण्णत्ते—बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं अणेगखंभसत-सन्निविट्ठे, 'भवणवण्णओ भाणियव्वो'[10] ।।

७५७. अइक्कीलावासस्स णं भोमेज्जविहारस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[11] मणीणं फासो ।।

७५८. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता। सा णं मणिपेढिया जोयणं[12] आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं[13] बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ।।

७५९. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं देवसयणिज्जे पण्णत्ते, वण्णओ[14]। उप्पिं[15] अट्ठट्ठमंगलगा ।।

७६०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—'गोयमदीवे ? गोयमदीवे'[16] ? गोयमा !

---

१. जी० ३।७३६-७३९ ।

२. जंबुद्दीवस्स २ पच्चत्थिमिल्लातो वेइयंतातो लवणसमुद्दं पच्चत्थिमेणं (ता) ।

३. °विसेसोणे (क); विसेसाहिए (ख, ग, ट, त्रि) ।

४. अद्धेकोण° (ग) ।

५. पंचणउति° (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

६. तहेव (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

७. जी० ३।२६३-२६७ ।

८. उपरि (मवृ) ।

९. जी० ३।२७७-२९७ ।

१०. जी० ३।६४६-६४७; वण्णओ अच्छे जाव पडिरूवे उल्लोगो (ता) ।

११. जी० ३।२७७-२८४ ।

१२,१३. दो जोयणाइं, जोयणं (क,ख,ग,ट,त्रि); प्रस्तुतप्रतिपत्तौ ४०६ सूत्रेपि मणिपीठिका वर्णने 'जोयणं आयामविक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं' इति पाठो दृश्यते ।

१४. जी० ३।४०७ ।

१५. 'तस्य भौमेयविहारस्य उपरि' इत्यर्थः ।

१६. गोतमद्वीपो नाम द्वीपः (मवृ); अतः परं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु पाठ भेदो विद्यते—तत्थ २ देसे तहिं २ बहूइं उप्पलाइं जाव गोयमप्पभाइं से एएणट्ठेणं गोयमा जाव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमदीवस्स णं दीवस्स सासते णामधेज्जे पण्णत्ते ण कयावि णासि ण कयावि णत्थि ण कयावि ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे। सुट्ठिए य एत्थ देवे महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठितीए परिवसति। से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव गोयमदीवस्स सुट्ठियाए[1] रायहाणीए अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाण देवीण य आहेवच्चं जाव[2] विहरति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—गोयमदीवे, गोयमदीवे॥

७६१. कहि[3] णं भंते! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स सुट्ठिया णामं रायहाणी पण्णत्ता? गोयमा! गोयमदीवस्स पच्चत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे जाव अण्णंमि लवणसमुद्दे बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एवं तहेव सव्वं णेयव्वं जाव[4] सुत्थिए देवे॥

७६२. कहि णं भंते! जंबुद्दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता? गोयमा! 'जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स'[5] पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं जंबुद्दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता—'बारस जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, सेसं तं चेव जहा[6] गोतमदीवस्स परिक्खेवो'[7]। जंबुद्दीवंतेणं अद्धेकोणणउइं जोयणाइं चत्तालीसं पंचाणउतिं भागे जोयणस्स ऊसिया जलंताओ, लवणसमुद्दंतेणं दो कोसे ऊसिता जलंताओ। पउमवरवेइया, पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ते, दोण्हवि वण्णओ[8]। 'भूमिभागा तस्स बहुमज्झदेसभागे पासादवडेंसगा विजयमूलपासादसरिसया जाव[9] सीहासणा सपरिवारा'[10]॥

७६३. 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—चंददीवा? चंददीवा?'[11] गोयमा! 'बहुसु खुड्डाखुड्डियासु जाव बिलपंतियासु बहूइं उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं चंदप्पभाइं चंदागाराइं

णिच्चे।

वृत्तिकृता मलयगिरिणापि अस्य पाठान्तरस्य उल्लेखः कृतः—पुस्तकान्तरेषु पुनरेवं पाठः—'गोयमदीवे णं दीवे तत्थ तहिं तहिं बहूइं उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं गोयमप्पभाइं गोयमवन्नाइं गोयमवण्णाभाइं' इति, एवं प्राग्वद् भावनीयः। पूर्ववर्तिसूत्रेषु पर्वतानां अन्वर्थनामानि निर्दिष्टानि सन्ति, तेषामनुसरणत एव अन्वर्थनामवाचकः पाठो लभ्यते वाचनान्तरे, अर्वाचीनादर्शेषु एष एव उपलब्धोस्ति। किन्तु ताडपत्रीयादर्शे मलयगिरिवृत्तौ च अन्वर्थनामवाचकः पाठो नास्ति सम्मतः।

१. अणाढियाए (ता)।

२. जी० ३।३५०।

३. 'ता' प्रतौ अस्य सूत्रस्य स्थाने पाठसंक्षेपोस्ति—गोयमदीवस्स पच्चत्थिमेणं अण्णम्मि लवणे विजयसरिसा।

४. जी० ३।३५१-५६५।

५. जंबुद्दीवस्स दीवस्स (ता)।

६. जी० ३।७५४।

७. क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु चिन्हाङ्कितः पाठः 'जलंताओ' इति पदानन्तरं विद्यते।

८. जी० ३।२६३-२६७।

९. जी० ३।२७७-२९७,३६४-३६७।

१०. बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा जोइसिया देवा आसयंति। तेसि णं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पासायवडेंसगा बावट्ठि जोयणाइं बहुमज्झमणिपेढियाओ दो जोयणाइं जाव सीहासणा सपरिवारा भाणियव्वा तहेव (क, ख, ग, ट, त्रि)।

११. अट्ठो (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदवण्णाइं चंदवण्णाभाइं, चंदा य एत्थ देवा[1] महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति। ते ण तत्थ पत्तेयं-पत्तेयं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव चंददीवाणं चंदाण य रायहाणीणं अण्णेसिं च बहूणं जोतिसियाणं देवाणं देवीण य आहेवच्चं जाव[2] विहरंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! चंदद्दीवा जाव[3] णिच्चा ॥

७६४. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवगाणं चंदाणं चंदाओ नाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चंददीवाणं पुरत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता 'अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, तं चेव पमाणं जाव[4] एमहिड्ढीया चंदा देवा चंदा देवा'[5] ॥

७६५. कहि[6] णं भंते ! जंबुद्दीवगाणं सूराणं सूरदीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, तं चेव उच्चत्तं आयाम-विक्खंभेणं परिक्खेवो वेदिया वणसंडा भूमिभागा जाव आसयंति, पासायवडेंसगाणं तं चेव पमाणं, मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा, अट्ठो उप्पलाइं सूरप्पभाइं सूरा एत्थ देवा जाव रायहाणीओ सकाणं दीवाणं पच्चत्थिमेणं अण्णंमि जंबूद्दीवे दीवे सेसं तं चेव जाव[7] सूरा देवा ॥

७६६. कहि[8] णं भंते ! अब्भितरलावणगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ?

---

१. चंदद्दीवेसु णं २ तत्थ ३ खुड्डा खुड्डियासु बहुयाइं उप्पलाइं चंदप्पभाइं ३ चंद एत्थ जोतिसिंदा जोतिसियरायाणो (ता)।

२. जी० ३।३५०।

३. जी० ३।३५०।

४. जी० ३५१-५६५।

५. विजयसरिसियाओ (ता); मलयगिरिवृत्तौ 'ओगाहित्ता' इति पदानन्तरं 'विजया राजधानी सदृश्यौ वक्तव्ये' इति सूचितमस्ति।

६. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'ता' प्रतौ च संक्षिप्तपाठो दृश्यते—कहि णं भंते ! जंबुद्दीवगाणं सूराणं सुरदी २ गो जंबु पच्चत्थि जाव णाणत्तं सूरप्पभाइं ३ रायहाणीओ वि पच्चत्थिमेणं।

७. जी० ३।७६२-७६४।

८. ७६६-७७५ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ संक्षिप्तपाठोस्ति—कहि णं भंते ! अब्भितरलावणगाणं चंदद्दीवा दीवा पं गो जंबुद्दीवस्स २ पुर लवणं बारस जो एत्थ अब्भितरला जेच्चेव जंबुद्दीवाणं चंदाणं गमो सोच्चेव नाणत्तं रायहाणीओ तेसिं सताणं दीवाणं पुरत्थि अण्णम्मि लवणे बारस जो विजयरायहाणिसरिसाओ। कहि णं भंते ! अब्भितरलावणगाणं सूराणं सूरद्दी ते चेव णवरं जंबुद्दीवस्स पच्चत्थिमेणं रायहाणीओवि पच्चत्थिमेणं अण्णंमि लवणे विजयसरिसीओ। कहिणं भंते ! बाहिरलावणगाणं चंदाणं चंदद्दी गो लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमिल्लातो वेइयंतागो लवणसमु पच्चत्थिमेणं बारसजोयणसहस्स ओगा एत्थ णं बाहिरिलाणं चंदाणं चंदद्दीवा णामं दीवा पं जंबुद्दीवचंद वत्तव्वता णवरं धातइसंडं दीवंतेणं अद्धेकूणण लवणंतेणं दो कोसे ऊसिते रायहाणी सताणं पुर लवणे चेव। कहि णं भंते ! बाहिरला सूराणं सूरद्दीवा णामं दीवा पं जधेव चंदाणं तधेव णवरं पच्चत्थिमेणं। कहि णं भंते ! धातइसंडाणं चंदाणं चंदद्दीवा णामं दीवा पं गो धातइसंडपुर वेइयंतातो कालोयणं समुद्दं बारस जो ओगा एत्थ णं धातइसंडाणं चंदाण चंद्दीवा णामं दीवा पं जंबुद्दीवगचंदसरिसा णवरं सव्वतो समंता दो कोसे ऊसिता जलंतातो रायहाणीओ सयाणं दी पुरत्थि अण्णम्मि धातइ। एवं सूराणवि पच्चत्थिमेणं धातइसंदा तो कालोदं समुद्दं बारसजो ओगाहित्ता सव्वतो समंता दो कोसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं अब्भितरलावणगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता, जहा जंबुद्दीवगा चंदा तहा भाणियव्वा, णवरि—रायहाणीओ अण्णंमि लवणे, सेसं तं चेव ॥

७६७. एवं अब्भितरलावणगाणं सूराणवि लवणसमुद्दं बारस जोयणसहस्साइं तहेव सव्वं जाव[१] रायहाणीओ ॥

७६८. कहि णं भंते ! बाहिरलावणगाणं चंदाणं चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! लवणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेदियंताओ लवणसमुद्दं पच्चत्थिमेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं बाहिरलावणगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता—बारस जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, धायइसंडदीवंतेणं अद्धेकोणणवतिं जोयणाइं चत्तालीसं च पंचणउतिभागे जोयणस्स ऊसिता जलंताओ, लवणसमुद्दंतेणं दो कोसे ऊसिता पउमवरवेइया वणसंडा बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा, सो चेव अट्ठो[२] रायहाणीओ सगाणं[३] दीवाणं पुरत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे वीईवइत्ता अण्णंमि लवणसमुद्दे तहेव[४] सव्वं ॥

७६९. कहि णं भंते ! बाहिरलावणगाणं सूरा णं सूरदीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! लवणसमुद्दपच्चत्थिमिल्लाओ वेदियंताओ लवणसमुद्दं पुरत्थिमेणं बारस जोयण-सहस्साइं धायतिसंडदीवंतेणं अद्धेकूणणउतिं जोयणाइं चत्तालीसं च पंचनउतिभागे जोयणस्स, लवणसमुद्दंतेणं दो कोसे ऊसिया, सेसं तहेव जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पच्चत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे लवणे चेव बारस जोयणा तहेव सव्वं भाणियव्वं[५] ॥

७७०. कहि णं भंते ! धायइसंडदीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! धायइसंडस्स दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेदियंताओ कालोयं णं समुद्दं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं धायइसंडदीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता, सव्वतो समंता दो कोसा ऊसिता जलंताओ, बारस जोयणसहस्साइं तहेव विक्खंभ परिक्खेवो, भूमिभागो पासायवडिंसया मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा अट्ठो तहेव,

---

ऊसिते जलंतातो तं चेव सव्वं रायहाणीओ सूरदीवाणं पच्चत्थिमेणं अण्णंमि धातइसंडे जाव महि-ड्ढिया सुरा । कालोयणं चंदाणं कालोयणं समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लातो वेइयंताओ कालोयणं समुद्दं पच्चत्थिमेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं कालोयणगाणं तं चेव जहा धातइसंडगाणं रायहाणीओ सयाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे अण्णंमि कालोयणे जाव महिड्ढीया चंदा देवा । सुराव्वि एवं चेव नवरं कालोयणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेइयंताओ कालोयणं समुद्दं पुरत्थिमेणं बारसजोयणसह ओगा रायहाणीओ सूरद्दीवाणं पच्चत्थिमेणं अण्णंमि कालोयणे । एवं जहा धायइसंडाणं तहा दीवेसु जहा कालेयणकाण तहा समुद्देसु दीविच्चकाणं दीवेसु रायहाणीओ सामुद्दकाणं समुद्देसु जाव सुरद्दीवा समुद्दाणं ।

१. जी० ३।७६५ ।

२. एतत् पदं 'से केणट्ठेणं भंते !' इति सूत्रस्य सूचकमस्ति ।

३. साणं (क, ख) ।

४. जी० ३।७६२-७६४ ।

५. जी० ३।७६५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रायहाणीओ सकाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं अण्णंमि धायइसंडे दीवे, सेसं तं[1] चेव ॥

७७१. एवं सूरदीवावि, नवरं—धायइसंडस्स दीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेदियंताओ कालोयं णं समुद्दं बारस जोयणसहस्साइं तहेव सव्वं जाव रायहाणीओ सूराणं दीवाणं पच्चत्थिमेणं अण्णंमि धायइसंडे दीवे सव्वं तहेव[2] ॥

७७२. कहि णं भंते ! कालोयगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेदियंताओ कालोयण्णं समुद्दं पच्चत्थिमेण बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं कालोयगचंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता सव्वतो समंता दो कोसा ऊसिता जलंताओ, सेसं तहेव जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं अण्णंमि कालोयसमुद्दे बारस जोयणसहस्साइं तं चेव सव्वं जाव[3] चंदा देवा, चंदा देवा ॥

७७३. एवं सूराणवि, णवरं—कालोयस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेदियंतातो कालोयसमुद्दपुरत्थिमेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, तहेव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पच्चत्थिमेणं अण्णंमि कालोयसमुद्दे[4] तहेव[5] सव्वं ॥

७७४. एवं[6] पुक्खरवरगाणं चंदाणं पुक्खरवरस्स दीवस्स पुरित्थिमिल्लाओ वेदियंताओ

१. जी० ३।७६२-७६४ ।
२. जी० ३।७६५ ।
३. जी० ३।७६२-७६४ ।
४. कालोयणसमुद्दे (क, ख, ग, ट,); कालोयगसमुद्दे (त्रि) ।
५. जी० ३।७६५ ।
६. अतः ७७५ सूत्रस्य 'सरिणामएणु' इति पाठपर्यन्तं वृत्तौ स्पष्टं व्याख्यातमस्ति, यथा—एवं पुष्करवरद्वीपगतानां चन्द्राणां पुष्करवरद्वीपस्य पूर्वस्माद्वेदिकान्तात्पुष्करोदसमुद्रं द्वादश योजनसहस्राण्यवगाह्य द्वीपा वक्तव्याः राजधान्यः स्वकीयानां द्वीपानां पश्चिमदिशि तिर्यगसङ्ख्येयान् द्वीपसमुद्रान् व्यतिव्रज्यान्यस्मिन् पुष्करवरद्वीपे द्वादश योजनसहस्राण्यवगाह्य, पुष्करवरद्वीपगतसूर्याणां द्वीपाः पुष्करवरद्वीपस्य पश्चिमान्ताद्वेदिकान्तात्पुष्करवरसमुद्रं द्वादश योजनसहस्राण्यवगाह्य प्रतिपत्तव्याः, राजधान्यः पुनः स्वकीयानां द्वीपानां पश्चिमदिशि तिर्यगसङ्ख्येयान् द्वीपसमुद्रान् व्यतिव्रज्यान्यस्मिन् पुष्करवरद्वीपे द्वादश योजनसहस्राण्यवगाह्य, पुष्करवरसमुद्रगतचन्द्रसत्कचन्द्रद्वीपाः पुष्करवरसमुद्रस्य पूर्वस्माद्वेदिकान्तात्पश्चिमदिशि द्वादश योजनसहस्राण्यवगाह्य प्रतिपत्तव्याः, राजधान्यः स्वकीयानां द्वीपानां पूर्वदिशि तिर्यगसङ्ख्येयान् द्वीपसमुद्रान् व्यतिव्रज्यान्यस्मिन् पुष्करवरसमुद्रे द्वादश योजनसहस्रेभ्यः परतः, पुष्करवरसमुद्रगतसूर्यसत्कसूर्यद्वीपाः पुष्करवरसमुद्रस्य पश्चिमान्ताद्वेदिकान्तात्पूर्वतो द्वादश योजनसहस्राण्यवगाह्य, राजधान्यः पुनः स्वकीयानां द्वीपानां पश्चिमदिशि तिर्यगसङ्ख्येयान् द्वीपसमुद्रान् व्यतिव्रज्यान्यस्मिन् पुष्करोदसमुद्रे द्वादश योजनसहस्राण्यवगाह्य प्रतिपत्तव्याः । एवं शेषद्वीपगतानामपि चन्द्राणां चन्द्रद्वीपगतात्पूर्वस्माद्वेदिकान्तादनन्तरे समुद्रे द्वादश योजनसहस्राण्यवगाह्य वक्तव्याः, सूर्याणां सूर्यद्वीपाः स्वस्वद्वीपगतात्पश्चिमान्ताद्वेदिकान्तादनन्तरे समुद्रे, राजधान्यश्चन्द्राणामात्मीयचन्द्रद्वीपेभ्यः पूर्वदिशि अन्यस्मिन् सदृशनामके २ द्वीपे सूर्याणामप्यात्मीयसूर्यद्वीपेभ्यः पश्चिमदिशि तस्मिन्नेव सदृशनामकेऽन्यस्मिन् द्वीपे, द्वादश योजनसहस्रेभ्यः परतः, शेषसमुद्रगतानां तु चन्द्राणां चन्द्रद्वीपाः स्वस्वसमुद्रस्य पूर्वस्माद्वेदिकान्तात्पश्चिमदिशि द्वादश योजनसहस्राण्यवगाह्य, सूर्याणां तु स्वस्वसमुद्रस्य पश्चिमान्ताद्वेदिकान्तात्पूर्वदिशि द्वादशः योजनसहस्राण्यवगाह्य, चन्द्राणां राजधान्यः स्वस्वद्वीपानां पूर्वदिशि अन्यस्मिन् सदृशनामके समुद्रे, सूर्याणां राजधान्यः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुक्खरसमुद्दं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता चंददीवा, अण्णंमि पुक्खरवरे दीवे रायहाणीओ तहेव[1] ।।

७७५. एवं सूराणवि दीवा पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिमिल्लाओ वेदियंताओ पुक्खरोदं समुद्दं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता तहेव सव्वं जाव रायहाणीओ दीविल्लगाणं दीवे, समुद्दगाणं समुद्दे चेव, एगाणं अब्भिंतरपासे एगाणं बाहिरपासे रायहाणीओ दीविल्लगाणं दीवेसु समुद्दगाणं समुद्देसु सरिणामएसु इमे णामा अणुगंतव्वा—

संगहणीगाहा—

जंबुद्दीवे[2] लवणे, धायइ-कालोद-पुक्खरे वरुणे ।
खीर-धय खोय[3]-णंदी. अरुणवरे कुंडले रुयगे ।।१।।
आभरण-वत्थ-गंधे, उप्पल-तिलए य पुढवि-णिहि-रयणे ।
वासहर-दह-नईओ, विजया वक्खार-कप्पिदा ।।२।।
कुरु-[4]मंदर-मावासा, कूडा णक्खत्त-चंद-सूरा य । एवं भाणियव्वं ।।

७७६. कहि णं भंते ! देवद्दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! देवदीवस्स[5] पुरत्थिमिल्लाओ वेइयंताओ देवोदं समुद्दं वारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं देवदीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता, सच्चेव वत्तव्वया जाव[6] अट्ठो । रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पच्चत्थिमेणं देवदीवं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं देवदीवगाणं चंदाणं चंदाओ णामं रायहाणीओ पण्णत्ताओ ।।

७७७. कहि णं भंते ! देवद्दीवगाणं सूराणं सूरदीवा णामं दीवा पण्णत्ता गोयमा ! देवदीवस्स पच्चत्थिमिल्लाओ वेइयंताओ देवोदं समुद्दं वारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं देवदीवगाणं सूराणं सूरदीवा णामं दीवा पण्णत्ता, तधेव,[7] रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं देवदीवं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं ।।

७७८. कहि[8] णं भंते ! देवसमुद्दगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ?

स्वस्वद्वीपानां पश्चिमदिशि केवलमग्रेतनशेषद्वीपसमुद्रगतानां चन्द्रसूर्याणां राजधान्योऽन्यस्मिन् सदृशनामके द्वीपे समुद्रे वाऽग्रेतने वा पश्चात्तने वा प्रतिपत्तव्या नाग्रेतन एवान्यथाऽनवस्थाप्रसक्तेः । गाथाश्च तत्र नैव व्याख्याताः सन्ति, केवलं एतच्च देवद्वीपादर्वाक् सूर्यवराभासं यावद्' इति सङ्केतो विहितः ।

१. जी० ३।७६२-७६४ ।

२. अनुयोगद्वारे (१८५) गाथाचतुष्कं दृश्यते ।

३. इक्खुवरो य (ख, ग, त्रि) ।

४. कुर(क, ख, ग, ट, त्रि); पुर (ख) ।

५. अतः ७७७ सूत्रपर्यन्तं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु विद्यमानः पाठः पूर्वक्रमानुसारी नास्ति पूर्तिस्थलावलोकनेन एतत् स्पष्टं ज्ञातुं शक्यम्, तेन आदर्शवर्तिपाठोत्रपाठान्तररूपेण स्वीकृतः— देवोदं समुद्दं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता तेणेव कमेण पुरत्थिमिल्लाओ वेइयंताओ जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं देवद्दीवं समुद्दं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं देवदीवगाणं चंदाणं चंदाओ णामं रायहाणीओ सेसं तं चेव देवदीवचंदा देवा । एवं सूराणवि णवरं पच्चत्थिमिल्लाओ वेदियंताओ पच्चत्थिमेणं च भाणितव्वा तंमि चेव समुद्दे ।

६. जी० ३।७७०, ७६२-७६४ ।

७. जी० ३।७७६ ।

८. ७७८; ७७९ सूत्रयोः स्थाने 'ता' प्रतौ एवं पाठभेदोस्ति—कहि णं भंते ! देवसमुद्दाणं चंदाणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! देवोदगस्स समुद्दगस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेदियंताओ देवोदगं समुद्दं पच्चत्थिमेणं बारस जोयणसहस्साइं तेणेव कमेणं जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पच्चत्थिमेणं देवोदगं समुद्दं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं देवोदगाणं चंदाणं चंदाओ णामं रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं चेव सव्वं ।।

७७९. एवं सूराणवि, णवरि — देवोदगस्स पच्चत्थिमिल्लाओ वेइयंताओ देवोदगसमुद्दं पुरत्थिमेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता रायहाणीओ सगाणं-सगाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं देवोदगं समुद्दं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं ।।

७८०. एवं[1] नाग-जक्ख-भूत-सयंभूरमणगाणवि एवं चेव दीविच्चगाणं दीवेसु रायहाणीओ सामुद्दगाणं समुद्देसु ।।

७८१. अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे वेलंधराति वा णागराया 'अग्घाति वा खन्नाति वा'[2] सिंहाति वा विजातीति[3] वा हासवुड्ढीति[4] वा ? हंता अत्थि ।।

७८२. जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे अत्थि वेलंधराति वा णागराया अग्घाति वा खन्नाति वा सिंहाति वा विजातीति वा हासवुड्ढीति वा तहा णं बाहिरएसुवि समुद्देसु अत्थि वेलंधराइ वा णागराया अग्घाति वा खन्नाति वा सीहाति वा विजातीति वा हासवुड्ढीति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

७८३. लवणे णं भंते ! समुद्दे किं[5] ऊसिलोदगे ? पत्थडोदगे ? खुभियजले ? अखु-

---

चंदद्दीवा नामं दीवा देवसमुद्दं पच्चत्थिमेणं बारस जोयणसह ओगा एत्थ णं जावद्दो- रायधाणीओ चंददीवाणं पच्चत्थिमेणं देवसमुद्दं असं । एवं विवज्जासं सूराणं एवं णातिव्वा- णाति ।

१. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु अस्य सूत्रस्य स्थाने विस्तृतः पाठोऽस्ति, स च स्वयम्भूरमणसमुद्रस्य पृथक् पाठव्यवस्थानात् सञ्जातः । मलयगिरिणापि अत्र पाठभेदानां उल्लेखः कृतः—इह बहुधा सूत्रेषु पाठभेदाः परमेतावानेव सर्वत्राप्यर्थो नार्थभेदान्तरमित्येतद्व्याख्यानुसारेण सर्वेऽप्यनुगन्तव्या न मोग्धव्यमिति । आदर्शवर्तिपाठभेदः एवमस्ति —एवं णागे जक्खे भूतेवि चउण्हं दीवसमुद्दाणं । कहि णं भंते ! सयंभूरमणदीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? सयंभूरमणस्स दीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेतियंतातो सयंभुरमणोदगं समुद्दं बारस जोयणसहस्साइं तहेव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं सयंभुरमणोदगं समुद्दं पुरत्थिमेणं असंखेज्जाइं जोयण तं चेव, एवं सूराणवि, सयंभुरमणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेदियंताओ रायहाणीओ सकाणं सकाणं दीवाणं पच्चत्थिमिल्लाणं सयंभुरणोदं समुद्दं असंखेज्जा° सेसं तं चेव । कहि णं भंते ! सयंभूरमणसमुद्दकाणं चंदाणं°, सयंभुरमणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेतियंतातो सयंभुरमणं समुद्दं पच्चत्थिमेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, सेसं तं चेव । एवं सूराणवि, सयंभुरमणस्स पच्चत्थिमिल्लाओ सयंभुरमणोदं समुद्द पुरत्थिमेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं सयंभुरमणं समुद्दं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं सयंभुरमण जाव सूरादेवा ।

२. आहाइ वा (ता) ।

३. विज्जातीति (क, ख, ग, ट, त्रि); विजयाति (ता) ।

४. हुस्स° (क, ट, ता); हास° (ग); हृस्ववृद्धी जलस्येति गम्यते (मवृ) ।

५. 'क, ट, त्रि' आदर्शेषु प्रश्नचतुष्टयेपि 'किं' पदस्य प्रयोगो दृश्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भियजले ? गोयमा ! लवणे णं समुद्दे ऊसितोदगे, नो पत्थडोदगे; खुभियजले, नो अक्खुभियजले ।।

७८४. जहा णं भंते ! लवणे समुद्दे ऊसितोदगे, नो पत्थडोदगे; खुभियजले, नो अक्खुभियजले तहा णं बाहिरगा समुद्दा किं ऊसितोदगा ? पत्थडोदगा ? खुभियजला ? अक्खुभियजला ? गोयमा ! बाहिरगा समुद्दा नो ऊसितोदगा, पत्थडोदगा; नो खुभियजला अक्खुभियजला; पुण्णा पुण्णप्पमाणा 'वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा'[1] समभरघडत्ताए चिट्ठंति ।।

७८५. अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहका संसेयंति ? संमुच्छंति ? वासं वासंति ? हंता अत्थि ।।

७८६. जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहका संसेयंति, संमुच्छंति, वासं वासंति, तहा णं बाहिरएसुवि समुद्देसु बहवे ओराला बलाहका संसेयंति ? संमुच्छंति ? वासं वासंति ? णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

७८७. से केणट्ठेणं[2] भंते ! एवं वुच्चति—बाहिरगा णं समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति ? गोयमा ! बाहिरएसु णं समुद्देसु बहवे उदगजोणिया जीवा पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति[3], से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—बाहिरगा णं समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा जाव समभरघडत्ताए चिट्ठंति ।।

७८८. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवतियं उव्वेह[4]-परिवुड्ढीए[5] पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्स णं समुद्दस्स उभओ पासिं[6] पंचाणउति-पदेसे गंता पदेसं उव्वेह-परिवुड्ढीए पण्णत्ते, पंचाणउति[7]-वालग्गाइं गंता वालग्गं उव्वेह-परिवुड्ढीए पण्णत्ते, पंचाणउति-लिक्खाओ गंता लिक्खं उव्वेह-परिवुड्ढीए पण्णत्ते, 'जूया-जव'[8]-जवमज्झे अंगुल-विहत्थि[9]-रयणी-कुच्छी-धणु-गाउय-जोयण-जोयणसत-जोयणसहस्साइं गंता जोयणसहस्सं उव्वेह-परिवुड्ढीए पण्णत्ते ।।

७८९. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवतियं उस्सेह-परिवुड्ढीए पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्स णं समुद्दस्स उभओपासिं पंचाणउति-पदेसे गंता सोलसपएसे उस्सेह-परिवुड्ढीए पण्णत्ते । 'पंचाणउति-वालग्गाइं गंता सोलस-वालग्गाइं उस्सेह-परिवुड्ढीए पण्णत्ते । एवं'[10] जाव पंचाणउति-जोयणसहस्साइं गंता सोलस-जोयणसहस्साइं उस्सेध-परिवुड्ढीए पण्णत्ते ।।

---

१. वोसट्टमाणा वोलट्टमाणा (ता, मवृ); भगवत्यां (१।३१३, ३।१४८, ६।१५६) 'वोलट्टमाण वोसट्टमाण' अयमेव पदक्रमो दृश्यते ।
२. केणं खाइयणं अट्ठे णं (ता) ।
३. उवचयंति (ग, त्रि); उपचीयन्ते—उपचयमायान्ति (मवृ) । द्रष्टव्यं जी० ३।७२४ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
४. उवेध (ता) सर्वत्र ।
५. परिवड्ढीए (क, ख, ग, ता, त्रि) ।
६. °पासं (ता) ।
७. पंचाणउति २ (ग, ट, ता, त्रि) ।
८. जवाओ (क, ग, त्रि); जाआ (ता); × (मवृ) ।
९. पीतत्थी (ख, ता) ।
१०. लवणस्स णं समुद्दस्स एएणेव कमेणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७६०. लवणस्स णं भंते ! समुद्दस्स केमहालए गोतित्थे पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्स णं समुद्दस्स उभओपासिं पंचाणउतिं जोयणसहस्साइं गोतित्थे पण्णत्ते ।।

७६१. लवणस्स णं भंते ! समुद्दस्स केमहालए गोतित्थविरहिते खेत्ते पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविरहिते खेत्ते पण्णत्ते ।।

७६२. लवणस्स णं भंते ! समुद्दस्स केमहालए उदगमाले पण्णत्ते ? गोयमा ! दस जोयणसहस्साइं उदगमाले पण्णत्ते ।।

७६३. लवणे णं भंते ! समद्दे किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! गोतित्थसंठिते नावासंठिते[1] सिप्पिसंपुडसंठिते अस्सखंधसंठिते[2] वलभिसंठिते वट्टे वलयागारसंठिते पण्णत्ते ।।

७६४. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खेवेणं ? केवतियं उव्वेहेणं ? केवतियं उस्सेहेणं ? केवतियं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, पण्णरस जोयणसतसहस्साइं एकासीतिं च सहस्साइं सतं च एगुणयालं[3] किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेधेणं, सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहेणं, सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ।।

७६५. जइ णं[4] भंते ! लवणसमुद्दे दो जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, पण्णरस जोयणसतसहस्साइं एकासीतिं च सहस्साइं सतं च एगुणयालं किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेधेणं, सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते, कम्हा णं भंते ! लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति ? नो उप्पीलेति ? नो चेव णं एक्कोदगं करेति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे भरहेरवएसु वासेसु अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाधरा समणा समणीओ सावया सावियाओ मणुया पगतिभद्दया पगतिविणीया[5] पगतिउवसंता[6] पगति-पयणुकोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपन्ना अल्लीणा भद्दगा विणीता, तेसिं णं पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति[7]।
चुल्लहिमवंत-सिहरिसु वासहरपव्वतेसु देवा महिड्ढिया जाव[8] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तेसिं णं पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति ।

---

१. णावासंठाणसंठिए (ग, त्रि) ।
२. आसखंध ° (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
३. इऊयालं (क); ऊयालं (ख, ता); इगुयालं (ग) ।
४. जम्हा (ता) ।
५. × (ता, मवृ) ।
६. × (मवृ) ।
७. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु भिन्ना वाचना विद्यते । तस्यां गङ्गासिन्ध्वादि नदीनां ह्रदानां मन्दरपर्वतस्य च यथास्थानं पाठभेदा विद्यन्ते । ते च यथास्थानं दर्शयिष्यामः । अत्र यथा—गंगासिंधुरत्तारत्तवईसु सलिलासु देवया महिड्ढीयाओ जाव पलिओवमट्ठितीओ परिवसंति, तासि णं लवणसमुद्दे जाव नो चेव णं एगोदगं करेति ।
८. जी० ३।३४२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हेमवत-हेरण्णवतेसु'[1] वासेसु मणुया पगतिभद्दगा जाव विणीता, तेसि णं पणिहाए लवण-समुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति[2]।

सद्दावति-वियडावतिसु वट्टवेयड्ढपव्वतेसु देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तेसि णं पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति।

महाहिमवंत-रुप्पिसु वासहरपव्वतेसु देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तेसि णं पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति।

हरिवास-रम्मयवासेसु मणुया पगतिभद्दगा जाव विणीता, तेसि णं पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति।

गंधावति-मालवंतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वतेसु देवा महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तेसि णं पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति।

णिसढ-नीलवंतेसु वासहरपव्वतेसु देवा महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तेसि णं पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति[3]।

पुव्वविदेहावरविदेहेसु वासेसु अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावया सावियाओ मणुया पगतिभद्दगा जाव विणीता, तेसि णं पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति[4]।

देवकुरु-उत्तरकुरुसु मणुया पगतिभद्दगा जाव विणीता, तेसि णं पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एगोदगं करेति[5]।

जंबूए य सुदंसणाए अणाढिए णामं देवे जंबुद्दीवाहिवती महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठितीए परिवसति, तस्स पणिहाए लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णं एकोदगं करेति।

अदुत्तरं च णं गोयमा! लोगट्ठिती लोगाणुभावे जण्णं लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो ओवीलेति, नो उप्पीलेति, नो चेव णमेगोदगं करेति[6]॥

१. हेमवएरण्णवएसु (क, ख, ट); हेमवतेरण्णवतेसु (ग, त्रि); हेमवतएरण्ण° (ता)।

२. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—रोहियारोहितंससुवण्णकूलरुप्पकूलासु सलिलासु देवयाओ महिड्ढीयाओ तासिं पणिहाए।

३. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—सव्वाओ दहदेवयाओ भाणियव्वा पउमद्दहतिगिच्छिकेसरिदहावसाणेसु देवा महिड्ढीयाओ तासिं पणिहाए।

४. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—सीयासीओदगासु सलिलासु देवता महिड्ढीया।

५. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—मंदरे पव्वते देवता महिड्ढीया।

६. तृतीयप्रतिपत्तावेष मन्दरोद्देशकः समाप्तः (मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धायइसंडदीवाधिगारो

७९६. लवणसमुद्दं धायइसंडे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं[1] चिट्ठति ।।

७९७. धायइसंडे णं भंते ! दीवे किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? गोयमा ! समचक्कवालसंठिते, नो विसमचक्कवालसंठिते ।।

७९८. धायइसंडे णं भंते! दीवे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! चत्तारि जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण, इगयालीसं[2] जोयण-सतसहस्साइं दसजोयणसहस्साइं[3] णव य एगट्ठे जोयणसते किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं पण्णत्ते। से णं एगाए पउमवरवेदियाए एगेणं वणसंडेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, दोण्हवि वण्णओ[4] ।।

७९९. धायइसंडस्स णं भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—विजए वेजयंते जयंते अपराजिए ।।

८००. कहि णं भंते ! धायइसंडस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! धायइसंडदीवपुरत्थिमपेरंते कालोयसमुद्दपुरत्थिमद्धस्स[5] पच्चत्थिमेणं सीयाए महाणदीए उप्पिं, एत्थ णं धायइसंडदीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते[6]। तं चेव पमाणं, रायहाणीओ अण्णंमि धायइसंडे दीवे। सा वत्तव्वया भाणियव्वा ।।

---

१. संपरिखिवित्ताणं (ट, ता)।

२. एयालीसं (क, ख, ट); एगयालीसं (ग); इंतालीसं (ता)।

३. दस य सहस्साइं (ता, मवृ)।

४. अतोग्रे 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु 'दीवसमिया परिक्खेवेणं' इति पाठोपि विद्यते। वृत्तौ नैष व्याख्यातोस्ति। ताडपत्रीयादर्शेपि नास्ति। असौ स्वतः प्राप्तार्थो विद्यते। जी० २९३-२९७।

५. कालोयणसमुद्द°(क, ख, ट, ता)।

६. अतः परं ताडपत्रीयादर्शे भिन्नः पाठोस्ति—'जंबुद्दीवविजयसरिसे णवरं रायहाणी तिरियमसं अण्णम्मि धातइसंडे दीवे', अतश्च ८०७ सूत्रपर्यन्त पाठः त्रुटितोस्ति। मलयगिरिवृत्तौ किञ्चित् पाठभेदेन सह चत्वार्यपि सूत्राणि पूर्णरूपेण व्याख्यातानि सन्ति—तच्च जम्बूद्वीपविजयद्वारवदविशेषेण वेदितव्यं, नवरमत्र राजधानी अन्यस्मिन् धातकीषण्डे द्वीपे वक्तव्या। 'कहि णं भंते !' इत्यादि प्रश्नसूत्रं सुगमं, भगवानाह—गौतम ! धातकीषण्डद्वीपदक्षिणपर्यन्ते कालोदसमुद्रदक्षिणार्द्धस्योत्तरतोऽत्र धातकीषण्डस्य द्वीपस्य—वैजयन्तं नाम द्वारं प्रज्ञप्तं, तदपि जम्बूद्वीपवैजयन्तद्वारवदविशेषेण वक्तव्यं, नवरमत्रापि राजधानी अन्यस्मिन् धातकीषण्डद्वीपे ।। 'कहि णं भंते !' इत्यादि प्रश्नसूत्रं गतार्थं, भगवानाह—गौतम ! धातकीषण्डद्वीपपश्चिमपर्यन्ते कालोदसमुद्रपश्चिमार्द्धस्य पूर्वतः शीतोदाया महानद्या उपर्यत्र धातकीषण्डस्य द्वीपस्य जयन्तं नाम द्वारं प्रज्ञप्तं, तदपि जम्बूद्वीपजयन्तद्वारवद्वक्तव्यं, नवरं राजधानी अन्यस्मिन् धातकीषण्डे द्वीपे ।। 'कहि णं भंते !' इत्यादि, प्रश्नसूत्रं सुगमं भगवानाह—गौतम ! धातकीषण्डद्वीपोत्तरार्द्धपर्यन्ते कालोदसमुद्रोत्तरार्द्धस्य [मुद्रितवृत्तौ—'दक्षिणार्द्धस्य' इतिमुद्रितमस्ति] दक्षिणतोऽत्र धातकीषण्डस्य द्वीपस्यापराजितं नाम द्वारं प्रज्ञप्तं, तदपि जम्बूद्वीपगतापराजितद्वारवद्वक्तव्यं, नवरं राजधानी अन्यस्मिन् धातकीषण्डे द्वीपे ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८०१. एवं चत्तारिवि दारा भाणियव्वा[1] ॥

८०२. धायइसंडस्स णं भंते ! दीवस्स दारस्स य दारस्स य एस णं केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दस जोयणसयसहस्साइं सत्तावीसं च जोयणसहस्साइं सत्तपणतीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे दारस्स य दारस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

८०३. धायइसंडस्स णं भंते ! दीवस्स पदेसा कालोयं समुद्दं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ॥

८०४. ते णं भंते ! किं धायइसंडे दीवे ? कालोए समुद्दे ? गोयमा ! ते धायइसंडे, नो खलु ते कालोए समुद्दे ॥

८०५. एवं कालोयस्सवि[2] ॥

८०६. धायइसंडे दीवे जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता कालोए समुद्दे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगतिया पच्चायंति, अत्थेगतिया नो पच्चायंति ॥

८०७. एवं कालोएवि अत्थेगतिया पच्चायंति अत्थेगतिया णो पच्चायंति ॥

८०८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—धायइसंडे दीवे ? धायइसंडे दीवे ? गोयमा ! धायइसंडे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं पएसे बहवे धायइरुक्खा 'धायइवणा धायइसंडा'[3] णिच्चं कुसुमिया जाव[4] वडेंसगधरा[5] । धायइ-महाधायइरुक्खेसु यत्थ सुदंसण-पियदंसणा दुवे देवा महिड्ढिया जाव[6] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति । से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—धायइसंडे दीवे । अदुत्तरं च णं गोयमा ! जाव[7] णिच्चे ॥

८०९. धायइसंडे णं भंते ! दीवे कति चंदा पभासिसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा ? कति सूरिया तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा ? कइ महग्गहा चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा ? कइ णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा जोयंति वा जोइस्संति वा ? कइ तारागणकोडाकोडीओ सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ? गोयमा ! बारस चंदा पभासिसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा एवं—

चउवीसं[8] ससिरविणो, णक्खत्तसता य तिण्णि छत्तीसा ।
एगं च गहसहस्सं, छप्पन्नं धायईसंडे ॥१॥
'अट्ठेव सयसहस्सा, तिण्णि सहस्साइं सत्त य सयाइं'[9] ।
धायइसंडे दीवे, तारागणकोडकोडीणं[10] ॥२॥

सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ॥

---

१. जी० ३।२९२-५६६ ।
२. जी० ३।५७३, ५७४ ।
३. धातइसंडा धातइवणा (ता); बहवो धातकी-वनषण्डा बहूनि धातकीवनानि (मवृ) । जम्बूद्वीपप्रकरणे (३।७०२) वनानन्तरं षण्डस्य प्रतिपादनमस्ति ।
४. जी० ३।२७४ ।
५. उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
६. जी० ३।३५० ।
७. जी० ३।३४८ ।
८. मलयगिरिवृत्तौ एते गाथे किञ्चित् पाठभेदेन उद्धृते स्तः—
बारस चंदा सूरा नक्खत्तसया य तिन्नि छत्तीसा ।
एगं च गहसहस्सं छप्पन्नं धायईसंडे ॥१॥
अट्ठेव सयसहस्सा तिन्नि सहस्सा य सत्त य सया उ ।
धायइसंडे दीवे ताराभणकोडिकोडीओ ॥२॥
९. अट्ठ सतसहस्सा तिण्णि य सहस्सा सत्त य सया (ता) ।
१०. °कोडिकोडीणं (क, ग); °कोडाकोडीणं (ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालोदसमुद्दाधिगारो

८१०. धायइसंडं णं दीवं कालोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ ॥

८११. कालोदे णं भंते ! समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? गोयमा ! समचक्कवालसंठिते, णो विसमचक्कवालसंठिते ॥

८१२. कालोदे णं भंते ! समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, एकाणउतिं जोयणसय-सहस्साइं सत्तरिं च सहस्साइं छच्च पंचुत्तरे जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते। से णं एगाए पउमवरवेदियाए, एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ[1] ॥

८१३. कालोयस्स णं भंते ! समुद्दस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—विजए वेजयंते जयंते अपराजिए ॥

८१४. कहि णं भंते ! कालोदस्स समुद्दस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदसमुद्दपुरत्थिमपेरंते[2] पुक्खरवरदीवपुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं सीतोदाए महाणदीए उप्पि, एत्थ णं कालोदस्स समुद्दस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते। 'जंबुद्दीवगविजयसरिसा[3] णवरं—रायहाणीओ पुरत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता अण्णंमि कालोदे समुद्दे जहा[4] लवणे तहा चत्तारि रायहाणीओ समुद्दनामेसु'[5] ॥

८१५. कालोयस्स णं भंते ! समुद्दस्स दारस्स य दारस्स य एस णं केवतियं[6] आबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! 'बावीसं सयसहस्सा बाणउतिं च सहस्सा छच्च छयाले जोयणसते

---

१. जी० ३।२६३-२९७।

२. कालोदे समुद्दे पुर° (त्रि)।

३. जी० ३।३००-५६३।

४. जी० ३।७११-७१३।

५. चिन्हाङ्कितः पाठः ताडपत्रीयादर्शाधारेण स्वीकृतः। जी० ३।८००,८०१ सूत्रयोः स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु संक्षिप्तः पाठः। वृत्तौ च तत्र चत्वारि सूत्राणि व्याख्यातानि सन्ति। अत्रापि वृत्तिकृता चत्वार्येव सूत्राणि व्याख्यातानि आदर्शेष्वपि चतुर्णां सूत्राणां पाठोस्ति, किन्तु प्राक्तनं क्रममनुसृत्य संक्षिप्त-पाठ एव स्वीकृतः। 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठोस्ति—अट्ठेव जोयणाइं तं चेव पमाणं जाव रायहाणीओ। कहि णं भंते ! कालोयस्स समुद्दस्स वेजयंते णामं दारे पण्णत्ते? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स दक्खिणपेरंते पुक्खरवरदीवस्स दक्खिणद्धस्स उत्तरेणं, एत्थ णं कालोयसमुद्दस्स वेजयंते नामं दारे पण्णत्ते। कहि णं भंते ! कालोयसमुद्दस्स जयंते नामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमपेरंते पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिम-द्धस्स पुरत्थिमेणं सीताए महाणदीए उप्पि, एत्थ णं जयंते नामं दारे पण्णत्ते। कहि णं भंते ! अपराजिए नामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा! कालोयसमुद्दस्स उत्तरद्धपेरंते पुक्खरवरदीवो-त्तरद्धस्स दाहिणओ, एत्थ णं कालोयसमुद्दस्स अपराजिए णामं दारे पण्णत्ते सेसं तं चेव।

६. केवतियं २ (त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिण्णि य कोसा" दारस्स य दारस्स य आबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

८१६. कालोदस्स णं भंते ! समुद्दस्स पएसा पुक्खरवरदीवं पुट्ठा ? तहेव[2] ।।

८१७. एवं पुक्खरवरदीवस्सवि[3] ।।

८१८. कालोदे णं भंते ! समुद्दे जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तहेव भाणियव्वं[4] ।।

८१९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—कालोए समुद्दे ? कालोए समुद्दे ? गोयमा ! कालोयस्स णं समुद्दस्स उदके आसले[5] मासले पेसले 'कालए मासरासिवण्णाभे'[6] पगतीए उदगरसे[7] पण्णत्ते । काल-महाकाला य दो[8] देवा महिड्ढीया जाव पलिओवम-ट्ठितीया परिवसंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव[9] णिच्चे ।।

८२०. कालोए णं भंते ! समुद्दे कति चंदा पभासिंसु वा पुच्छा । गोयमा ! कालोए णं समुद्दे बायालीसं चंदा पभासिंसु वा 'पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बायालीसं सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा, एगं णक्खत्तसहस्सं छावत्तरं णक्खत्तसतं जोगं जोइंसु वा जोयंति वा जोइस्संति वा, तिण्णि महग्गहा सहस्सा छच्च सता छण्णउया चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा, अट्ठावीसं सयसहस्सा बारस य सहस्सा नव य सया पन्नासा तारागणकोडकोडीणं'[10] सोभं सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ।।

पुक्खरवरदीवाधिगारो

८२१. कालोयं णं समुद्दं पुक्खरवरे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ।।

८२२. 'पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? गोयमा'[11] ! समचक्कवालसंठिते[12], नो विसमचक्कवालसंठिते ।।

---

१. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु चिन्हाङ्कित-पाठस्य स्थाने एका गाथा उपलभ्यते—

बावीससयसहस्सा बाणउतिं खलु भवे सहस्साइं ।
छच्च सया छायाला दारंतर तिण्णि कोसा य ।।१।।

२. जी० ३।७१५, ७१६ ।

३. जी० ३।७१७, ७१८ ।

४. जी० ३।७१९, ७२० ।

५. आयले (ता) ।

६. धोकारालए मसिरासिवण्णाभे (ता) ।

७. उदगरसे णं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

८. दुवे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

९. जी० ३।३५० ।

१०. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु गाथात्रयमुपलभ्यते । वृत्तिकृता एता गाथा 'अन्यत्राप्युक्तम्' इत्युल्लेखपूर्वकं वृत्तौ उद्धृता सन्ति । अनेन सम्भाव्यते एतासां गाथानां अर्वाचीनादर्शेषु वृत्तिरचनादुत्तरकाले प्रक्षेपो जातः । ताश्च एवं विद्यन्ते—

बायालीसं चंदा, बायालीसं च दिणयरा दित्ता ।
कालोदधिम्मि एते चरंति संबद्धलेसागा ।।१।।
णक्खत्ताण सहस्सं एगं छावत्तरं च सतमण्णं ।
छच्च सता छण्णउया महागहा तिण्णि य सहस्सा ।।२।।
अट्ठावीसं कालोदहिम्मि बारस य सयसहस्साइं ।
नव य सया पन्नासा तारागणकोडिकोडीणं ।।३।।

मूलपाठे 'अट्ठावीसं सयसहस्सा' 'बारस य सहस्सा' इत्युपलभ्यते, किन्तु प्रस्तुतगाथाया 'बारस य सयसहस्साइं' मूलपाठपद्धत्या नास्ति समीचीनं अथवा छन्दोदृष्ट्या एवं संक्षेपीकरणं स्यात् ।

११. तहेव जाव (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१२. 'संठाणसंठिते (क, ख, ग, ट, त्रि) अग्रेपि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८२३. पुक्खरवरे णं भंते ! दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बाणउतिं 'च सयसहस्साइं अउणाणउतिं च सहस्सा अट्ठ य सया चउणउया परिक्खेवेणं पण्णत्ते'[1]। से णं एगाए पउमवरवेदियाए एगेण य वणसंडेण सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, दोण्हवि वण्णओ[2] ॥

८२४. पुक्खरवरस्स णं भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा – विजए वेजयंते जयंते अपराजिते ॥

८२५. कहि[3] णं भंते ! पुक्खरवरस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! पुक्खरवरदीवपुरत्थिमपेरंते पुक्खरोदसमुद्दपुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं पुक्खरवरदीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते[4], तं चेव सव्वं ॥

८२६. एवं[5] चत्तारिवि दारा[6] ॥

८२७. पुक्खरवरस्स णं भंते ! दीवस्स दारस्स य दारस्स य एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! 'अडतालीसं जोयणसयसहस्साइं बावीसं च सहस्साइं चत्तारि य अकुणत्तरे जोयणसते दारस्स य दारस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते'[7] ॥

८२८. पदेसा[8] दोण्हवि पुट्ठा, जीवा दोसुवि भाणियव्वा[9] ॥

---

१. खलु अउणोणउतिं भवे सहस्साति अट्ठ सया चउणया परिरओ पुक्खरवरस्स (क, ख, ग); खलु सयसहस्सा अउणाणउइं भवे सहस्साइं अट्ठ सया चउणउया य परिरए पुक्खरवरस्स (ट); खलु भवे सहस्साइं अट्ठ सया चउणउया य परिरओ पुक्खरवरस्स (त्रि)।

२. जी० ३।२६५-२९७।

३. 'ता' प्रतौ ८२५,८२६ सूत्रयोः स्थाने संक्षिप्तः पाठो विद्यते—जहा वातइसंडस्स सोच्चेव गमो रायहाणीओ पुक्खरवरेसु। एवं दारेसु चउसुवि।

४. अतः परं मलयगिरिवृत्तौ एवं व्याख्यातमस्ति —तत्र जम्बूद्वीपविजयद्वारवदविशेषेण वक्तव्यं, नवरं राजधानी अन्यस्मिन् पुष्करवरद्वीपे वक्तव्या। एवं वैजयन्तादिसूत्राण्यपि भावनीयानि, सर्वत्र राजधानी अन्यस्मिन् पुष्करवरद्वीपे।

५. जी० ३।३००-५६६।

६. अतः परं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु 'सीयासीओदा णत्थि भाणितव्वा' इति पाठो लभ्यते, किन्तु मलयगिरिवृत्तौ 'जम्बूद्वीपविजयद्वारवदविशेषेण वक्तव्यम्' इति सूचितमस्ति तेन नैष पाठः सङ्गच्छते। ताडपत्रीयादर्शलब्धपाठेनापि नास्य सङ्गतिर्विद्यते। 'सीतासीतोदानदी ने उपरि ते द्वार जाणवा पूर्व परे' इति स्तबकेनापि नास्य सङ्गतिरस्ति। तेनासौ पाठान्तरे स्वीकृतः।

७. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एका गाथा विद्यते—
अउयाल सयसहस्सा बावीसं खलु भवे सहस्साइं।
अगुणत्तरा य चउरो दारंतर पुक्खरवरस्स
सहस्साइं ॥१॥

८. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'ता' प्रतौ एवं पाठभेदोस्ति—पदेसा पुट्ठा आलावगा। जीवा उद्दाइता दो आलावगा। मलयगिरिवृत्तौ सूत्राणां सङ्केतः कृतोस्ति—पुक्खरवरदीवस्स णं भंते ! दीवस्स पएसा पुक्खरवरसमुद्दं पुट्ठा इत्यादि सूत्रचतुष्टयं प्राग्वत्।

९. जी० ३।५७१-५७६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८२९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—पुक्खरवरदीवे-पुक्खरवरदीवे ? गोयमा ! पुक्खरवरे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं पदेसे बहवे पउमरुक्खा पउमवणा पउमसंडा णिच्चं कुसुमिया जाव[1] वडेंसगधरा[2] पउम-महापउमरुक्खेसु एत्थ णं पउम-पुंडरीया णामं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति । से तेणट्ठेणं[3] गोयमा ! एवं वुच्चति—पुक्खरवरदीवे जाव[4] निच्चे ॥

८३०. पुक्खरवरे णं भंते ! दीवे केवइया चंदा पभासिंसु वा एवं पुच्छा । 'गोयमा ! पुक्खरवरेणं दीवे चोयालं चंदसयं पभासिंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, चोयालं चेव सूरियाण सतं तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा, चत्तारि बत्तीसा नक्खत्तसहस्सा जोगं जोइंसु वा जोयंति वा जोइस्संति वा बारस महग्गहसहस्सा छच्च सता बावत्तरा चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा छण्णउतिं सयसहस्सा चत्तालीसं सहस्सा चत्तारि सया तारागणकोडकोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा'[5] ॥

८३१. पुक्खरवरदीवस्स णं बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं माणुसुत्तरे नामं पव्वते पण्णत्ते—वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते, जे णं पुक्खरवरं दीवं दुहा विभयमाणे-विभयमाणे चिट्ठति, तं जहा—अब्भितरपुक्खरद्धं च बाहिरपुक्खरद्धं च ॥

८३२. अब्भितरपुक्खरद्धे णं भंते ! केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, 'एक्का जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य एऊणपण्णा जोयणसते किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते'[6] ॥

८३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—अब्भितरपुक्खरद्धे ? अब्भितरपुक्खरद्धे ? गोयमा ! अब्भितरपुक्खरद्धेणं माणुसुत्तरेणं पव्वतेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते । से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—अब्भितरपुक्खरद्धे ।
अदुत्तरं च णं जाव[7] णिच्चे ॥

---

१. जी० ३।२७४ ।
२. चिट्ठंति (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
३. एएणट्ठेणं (ग, त्रि, मवृ) ।
४. जी० ३।३५० ।
५. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु गाथात्रयं विद्यते—
चोयालं चंदसयं चउयालं चेव सूरियाण सयं ।
पुक्खरवरदीवंमि चरंति एते पभासेंता ॥१॥
चत्तारि सहस्साइं बत्तीसं चेव होंति णक्खत्ता ।
छच्च सया बावत्तर महग्गया बारस सहस्सा ॥२॥
छण्णउइ सयसहस्सा चत्तालीसं भवे सहस्साइं ।
चत्तारि सया पुक्खरवरे उ तारागणकोड-
कोडीणं ॥३॥
मलयगिरिणा 'उक्तं चैवंरूपं परिमाणमन्यत्रापि' इत्युल्लेखपूर्वकं स्ववृत्तौ तदेव गाथात्रयमुद्धृतम्, तत्र तृतीयगाथायाः तृतीयचरणं समीचीनमस्ति, यथा—चत्तारिं च सयाइं । आदर्शेषु अस्मिन् चरणे अक्षराधिक्यं वर्तते ।
६. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एका गाथा विद्यते—
कोडी बायालीसा तीसं दोण्णि य सया अगुणवण्णा ।
पुक्खरअद्धपरिरओ एवं से मणुस्सखेत्तस्स ॥१॥
७. जी० ३।३५० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८३४. अब्भितरपुक्खरद्धे णं भंते ! केवतिया चंदा पभासिसु वा पुच्छा[1]। गोयमा ! 'अब्भितरपुक्खरद्धे णं दीवे बावत्तरिं चंदा पभासिसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बावत्तरिं सूरिया तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा, दो सोलणक्खत्तसहस्सा जोगं जोइंसु वा जोयंति वा जोइस्संति वा, छम्महग्गहसहस्सा तिण्णि य सया छत्तीसा चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा, अडतालीसं सयसहस्सा बावीसं च सहस्सा दोण्णि य सया तारा-गणकोडकोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा'[2] ॥

मणुस्सखेत्ताधिगारो

८३५. मणुस्सखेत्ते[3] णं भंते ! केवतियं आयाम[4]-विक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी[5] •बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य एऊणपण्णा जोयणसते किंचिविसे-साहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते° ॥

८३६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—मणुस्सखेत्ते ? मणुस्सखेत्ते ? गोयमा ! मणुस्सखेत्ते णं तिविधा मणुस्सा परिवसंति, तं जहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतर-दीवगा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—मणुस्सखेत्ते, मणुस्सखेत्ते ।
अदुत्तरं च णं गोयमा ! मणुस्सखेत्तस्स सासए णामधेज्जे जाव[6] णिच्चे ॥

८३७. मणुस्सखेत्ते णं भंते ! कति चंदा पभासिसु वा पुच्छा[7]। 'मणुस्सखेत्ते बत्तीसं चंदसयं पभासिसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बत्तीसं सूरिया सयं तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा, तिण्णि णक्खत्तसहस्सा छच्च सता छण्णउया जोगं जोइंसु वा जोयंति वा जोइस्संति वा, एक्कारस सहस्सा छच्च सया सोला महग्गहा चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा, अट्ठासीतं सयसहस्सा चत्तालीसं च सहस्सा सत्त य सता तारागणकोडकोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा'[8] ॥

---

१. सा चेव पुच्छा जाव तारागणकोडकोडीओ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. चिह्नाङ्कितपाठस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु गाथात्रयं विद्यते—

बावत्तरिं च चंदा बावत्तरिमेव दिणकरा दित्ता ।
पुक्खरवरदीवड्ढे चरंति एते पभासेंता ॥१॥
तिन्नि सया छत्तीसा छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु ।
णक्खत्ताणं तु भवे सोलाइ दुवे सहस्साइं ॥२॥
अडयालसयसहस्सा बावीसं खलु भवे सहस्साइं ।
दो य सय पुक्खरद्धे तारागण कोडिकोडीणं ॥३॥

मलयगिरिणा 'उक्तं चैवंरूपं परिमाणमन्यत्रापि' इत्युल्लेखपूर्वकं तदेव गाथात्रयमुद्धृतम् ।

३. समयखेत्ते (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

४. चक्कवाल (ता) अग्रेपि ।

५. सं० पा०—जोयणकोडी जाव अब्भितर-पुक्खरद्धपरिरओ से भाणियव्वो जाव अउण-पण्णे (क, ख, ग, ट, त्रि); जोयणकोडी जाव अब्भंतरपुक्खरद्धस्स (ता) ।

६. जी० ३।३५० ।

७. कइ सूरा तवइंसु वा ३ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

८. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु गाथात्रयं विद्यते—

बत्तीसं चंदसयं बत्तीसं चेव सूरियाण सयं ।
सयलं मणुस्सलोयं चरेंति एते पभासेंता ॥१॥
एक्कारस य सहस्सा छप्पि य सोला महग्गहाणं तु ।
छच्च सया छण्णउया णक्खत्ता तिण्णि य सहस्सा ॥
अडसीइ सयसहस्सा चत्तालीस सहस्स मणुयलोगंमि ।
सत्त य सता अणूणा तारागणकोडकोडीणं ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोइसमंडलाधिगारो

८३८. एसो तारापिंडो, सव्वसमासेण मणुयलोगंमि।
बहिया पुण ताराओ, जिणेहिं भणिया असंखेज्जा ॥१॥
एवइयं तारग्गं, जं भणियं माणुसंमि लोगंमि।
चारं कलंबुयापुप्फसंठियं जोइसं चरइ ॥२॥
रविससिगहनक्खत्ता, एवइया आहिया मणुयलोए।
जेसिं नामागोत्तं, न पागया पण्णवेहिंति ॥३॥
छावट्ठिं पिडगाइं, चंदाइच्चाणं मणुयलोगंमि।
दो चंदा दो सूरा, होंति एक्केक्कए पिडए ॥४॥
छावट्ठिं पिडगाइं, नक्खत्ताणं तु मणुयलोगंमि।
छप्पन्नं नक्खत्ता, होंति एक्केक्कए पिडए ॥५॥
छावट्ठिं पिडगाइं, महग्गहाणं तु मणुयलोगंमि।
छावत्तरं गहसयं, होइ य एक्केक्कए पिडए ॥६॥
चत्तारि य[1] पंतीओ, चंदाइच्चाण मणुयलोगंमि।
छावट्ठी-छावट्ठी य होंति य एक्केक्किया पंती ॥७॥
छप्पन्नं पंतीओ, नक्खत्ताणं तु मणुयलोगंमि।
छावट्ठी-छावट्ठी य, होंति य एक्केक्किया पंती ॥८॥
छावत्तरं गहाणं, पंतिसयं होइ मणुयलोगंमि।
छावट्ठी-छावट्ठी य, होंति एक्केक्किया पंती ॥९॥
ते मेरुमणुचरंता,[2] पयाहिणावत्तमंडला सव्वे।
अणवट्ठितेहिं जोगेहिं, चंदा सूरा गहगणा य ॥१०॥
नक्खत्ततारगाणं, अवट्ठिया मंडला मुणेयव्वा।
तेवि य पयाहिणावत्तमेव मेरुं अणुचरंति[3] ॥११॥
रयणियरदिणयराणं, उड्ढे व[4] अहे व संकमो नत्थि।
मंडलसंकमणं पुण, 'सब्भंतरबाहिरं तिरिए'[5] ॥१२॥
रयणियरदिणयराणं, नक्खत्ताणं महग्गहाणं च।
चारविसेसेण भवे, सुहदुक्खविही मणुस्साणं[6] ॥१३॥
तेसिं पविसंताणं, तावक्खेत्तं तु वड्ढए नियमा।
तेणेव कमेण पुणो, परिहायइ निक्खमंताणं ॥१४॥

मलयगिरिणा 'उक्तं चैवरूपं परिमाणमन्यत्रापि' इत्युल्लेखपूर्वकं तदेव गाथात्रयमुद्धृतम्। तत्र तृतीया गाथा किञ्चिद् भिन्नपाठा वर्तते—
अट्ठासीयं लक्खा चत्तालीसं च तह सहस्साइं।
सत्त सया य अणूणा तारागणकोडकोडीणं ॥१॥

१. तु (ता)।
२. मेरुमणुपरिता (क, ख); मेरुपरियडंता (ग, त्रि); मेरुमणुयरिती (ट, ता)।
३. अणुपरिंति (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।
४. य (क, ख, ग, ट, ता, त्रि) अग्रेपि।
५. अब्भितरबाहिरं तिरिए (क, ख, ग, ट, त्रि); अब्भंतरबाहिरितिरियं (ता)।
६. मणूसाणं (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिया होइ तावखेत्तपहा[1]।
अंतो य संकुया[2] बाहिं वित्थडा चंदसूराणं ।।१५।।
'केणं वड्ढति'[3] चंदो ? परिहाणी केण होइ चंदस्स ?
कालो वा जोण्हो वा, केणणुभावेण चंदस्स ? ।।१६।।
किण्हं राहुविमाणं, निच्चं चंदेण होइ अविरहियं ।
चउरंगुलमप्पत्तं, हेट्ठा चंदस्स तं चरइ ।।१७।।
बावट्ठि-बावट्ठि, दिवसे-दिवसे उ सुक्कपक्खस्स ।
जं परिवड्ढइ चंदो, खवेइ तं चेव कालेणं ।।१८।।
पन्नरसइभागेण य, चंदं पन्नरसमेव 'तं वरइ'[4]।
पन्नरसइभागेण य, 'पुणोवि तं चेवतिक्कमइ'[5] ।।१९।।
एवं वड्ढइ चंदो, परिहाणी एव[6] होइ चंदस्स ।
कालो वा जोण्हा वा, तेणणुभावेण चंदस्स ।।२०।।
अंतो मणुस्सखेत्ते, हवंति चारोवगा य उववण्णा ।
पंचविहा जोइसिया, 'चंदा सूरा'[7] गहगणा य ।।२१।।
तेण परं जे सेसा, चंदाइच्चगहतारनक्खत्ता ।
नत्थि गई नवि चारो, अवट्ठिया ते मुणेयव्वा ।।२२।।
दो चंदा इह दीवे, चत्तारि य सागरे लवणतोए ।
धायइसंडे दीवे, बारस चंदा य सूरा य ।।२३।।
'दो दो जंबुद्दीवे, ससिसूरा दुगुणिया, भवे लवणे ।
लावणिगा'[8] य तिगुणिया, ससिसूरा धायईसंडे ।।२४।।
धायइसंडप्पभिति, उद्दिट्ठा तिगुणिया भवे चंदा ।
आइल्लचंदसहिया, अणंतराणंतरे खेत्ते ।।२५।।
रिक्खग्गहतारग्गं, दीवसमुद्देसु इच्छसी[9] नाउं ।
तस्स ससीहिं गुणियं[10], रिक्खग्गहतारयग्गं तु ।।२६।।
चंदातो सूरस्स य, सूरा चंदस्स अंतरं होइ ।
पन्नास सहस्साइं, जोयणाणं अणूणाइं ।।२७।।
सूरस्स य सूरस्स य, ससिणो ससिणो य अंतरं होइ ।
बहियाओ माणुसनगस्स जोयणाणं सयसहस्सं ।।२८।।

---

१. तावक्खेत्तमुहा (ता) ।
२. संकुता (क, ख, ता); संकडा (ग, त्रि); संकुटा (ट) ।
३. केण पवड्ढेति (क, ख) ।
४. आवरति (क, ख, ग, त्रि) ।
५. तेणेव कमेण वक्कमइ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
६. तेव (ता) ।
७. चंदसूरा (क, ता) ।
८. एगे जंबुद्दीवे दुगुणा लवणे चउगुणा होंति लावणगा (क,ख,ग,ट,त्रि); एते जंबुद्दीवे दुगुणा लवणे चउगुणा होंति लावणगा (ता) । एवं जंबुद्दीवे दुगुणा लवणे चउग्गुणा होंति' (मवृपा)
९. जदिच्छसे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
१०. उवणीतं (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरंतरिया चंदा, चंदंतरिया य दिणयरा दित्ता।
चित्तंतरलेसागा, सुहलेसा 'मंदलेसा य'[1] ॥२९॥
अट्ठासीइं च गहा, अट्ठावीसं च होंति नक्खत्ता।
एगससीपरिवारो, एत्तो ताराण वोच्छामि ॥३०॥
छावट्ठिसहस्साइं, नव चेव सयाइं पंचसयराइं।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडकोडीणं ॥३१॥
बहियाओ[2] माणुसनगस्स, 'चंदसूराणवट्ठिया जोगा'[3]।
चंदा अभिइजुत्ता[4], सूरा पुण होंति पूसेहिं ॥३२॥

माणुसुत्तरपव्वताधिगारो

८३९. माणुसुत्तरे णं भंते ! पव्वते केवतियं उड्ढं उच्चत्तेणं ? केवतियं उव्वेहेणं ? केवतियं मूले विक्खंभेणं ? केवतियं मज्झे विक्खंभेणं ? केवतियं उवरिं[5] विक्खंभेणं ? केवतियं अंतो गिरिपरिरएणं ? केवतियं बाहिं गिरिपरिरएणं ? केवतियं मज्झे गिरिपरिरएणं ? केवतियं उवरिं[6] गिरिपरिरएणं ? गोयमा ! माणुसुत्तरे णं पव्वते 'सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं'[7] उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि तीसे जोयणसए कोसं च उव्वेहेणं, मूले दसबावीसे जोयणसते विक्खंभेणं, मज्झे सत्ततेवीसे जोयणसते विक्खंभेणं, उवरि चत्तारिचउवीसे जोयणसते विक्खंभेणं, 'एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसते किंचिविसेसाहिए अंतोगिरिपरिरएणं'[8], एगा जोयणकोडी बायालीसं च सतसहस्साइं छत्तीसं च सहस्साइं सत्त चोद्दसोत्तरे जोयणसते बाहिं गिरिपरिरएणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सतसहस्साइं चोत्तीसं च सहस्सा 'अट्ठ य तेवीसुत्तरे'[9] जोयणसते मज्झे गिरिपरिरएणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं बत्तीसं च सहस्साइं नव य बत्तीसे जोयणसते उवरि गिरिपरिरएणं, मूले विच्छिण्णे[10] मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए अंतो सण्हे मज्झे उदग्गे बाहिं दरिसणिज्जे ईसिं[11] सण्णिसण्णे सीहणिसाई अवड्ढजव[12]-रासिसंठाणसंठिते सव्वजंबूणयामए अच्छे सण्हे जाव[13] पडिरूवे। उभओपासिं[14]

---

१. मंदलेसागा (क, ख, ग, त्रि)।
२. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु सूर्यप्रज्ञप्तौ (१९।२२) च एषा गाथा २६ गाथाया अनन्तरं विद्यते।
३. °अवट्ठिया तेया (मवृपा)।
४. अभीइजुत्ता (त्रि)।
५. सिहरे (क, ख, ग, ट, त्रि)।
६. उप्पिं (ता)।
७. सत्तरसेक्कवीसजोयणसते (ता)।
८. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु चिन्हाङ्कितपाठे एवं पाठभेदो दृश्यते—अंतो गिरिपरिरएणं एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। अग्रे स्थानत्रयेपि 'बाहिं गिरिपरिरएणं, मज्झे गिरिपरिरएणं, उवरि गिरिपरिरएणं' इति पाठा आदौ विद्यन्ते, स्थानत्रयेपि प्रतिपाद्यस्यान्ते पूर्ववत् 'परिक्खेवेणं' इति पाठोस्ति।
९. अट्ठतेवीसे (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१०. वित्थिण्णे (क, ग, ता)।
११. इसिं (ट, ता)।
१२. अवद्धजव (क, ग, ट)।
१३. जी० ३।२६१।
१४. उभओपासं (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहिं पउमवरवेदियाहिं दोहि य वणसंडेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, वण्णओ[1] दोण्हवि ॥

८४०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—माणुसुत्तरे पव्वते ? माणुसुत्तरे पव्वते ? गोयमा ! माणुसुत्तरस्स णं पव्वतस्स अंतो मणुस्सा[2] उप्पि सुवण्णा, बाहिं देवा। अदुत्तरं च णं गोयमा ! माणुसुत्तरं पव्वतं मणुस्सा ण कयाइ[3] वीतिवइंसु वा वीतिवयंति वा वीतिवइस्संति वा णण्णत्थ चारणेण[4] वा विज्जाहरेण[5] वा देवकम्मुणा वा[6]। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—माणुसुत्तरे पव्वते, माणुसुत्तरे पव्वते।
अदुत्तरं च णं जाव[7] णिच्चे ॥

८४१. जावं च णं माणुसुत्तरे पव्वते तावं च णं अस्सिं लोए त्ति पवुच्चति। जावं च णं वासाति वा वासधरपव्वताति[8] वा तावं च णं अस्सिं लोएत्ति पवुच्चति। जावं च णं गेहाइ वा गेहाव(य?)णाति[9] वा तावं च णं अस्सिं लोएत्ति पवुच्चति। जावं च णं गामाति वा जाव[10] सन्निवेसाति[11] वा तावं च णं अस्सिं लोएत्ति पवुच्चति। जावं च णं अरहंता[12] चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा[13] चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावया सावियाओ मणुया पगतिभद्दगा[14] •पगतिविणीया पगतिउवसंता पगति-पयणुकोहमाणमाया-लोभा मिउमद्दवसंपन्ना अल्लीणा भद्दगा° विणीता तावं च णं अस्सिं लोएत्ति पवुच्चति[15]।

---

१. जी० ३।२६३-२६८।

२. मणुया (क, ख, ग, ट, त्रि)।

३. कदायी (ता)।

४. चारणेहिं (क, ख, ग, ट, त्रि) अन्यत्र चारणेन पञ्चम्यर्थे तृतीया प्राकृतत्वात् 'चारणात्' (मवृ)।

५. विज्जाहरणेहिं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

६. वावि (क, ख, ग, ट, त्रि)।

७. जी ३।३५०।

८. वासधराति (क, ख, ग, ट, त्रि)।

९. प्रस्तुतसूत्रस्य ३।६०५ सूत्रे 'गेहायवणाणि' इति पाठो लभ्यते। वृत्तावपि एष एव व्याख्या-तोस्ति। अत्रापि वृत्तिकृता स्वीकृतपाठ एव व्याख्यातः—गृहायतनानीति वा तत्र गृहाणि प्रतीतानि गृहायतनानीति—गृहेष्वागमनानि। गेहावणाति (क, ख, ग, ट); गेहावतणाति (ता)। भगवत्यां (६।७६) 'गेहावणा' इति पाठः स्वीकृतोस्ति।

१०. ठाणं २।३६०।

११. रायहाणीति (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१२. अरहंताति वा (ता)।

१३. वासुदेवा पडिवासुदेवा (ग)।

१४. सं० पा०—पगतिभद्दगा जाव विणीता।

१५. अतः परं 'चंदोवरागाति' आलापकात्पूर्वं क्रम-द्वयं विद्यते, ताडपत्रीयादर्शस्य वृत्तेश्च एकः क्रमोस्ति, द्वितीयश्च अर्वाचीनादर्शानाम्। अस्माभिर्वृत्त्यनुसारिक्रमो मूले स्वीकृतः, अर्वा-चीनादर्शानां क्रमभेदः पाठभेदश्च एवं विद्यते—जावं च णं समयाति वा आवलियाति वा आणापाणूति वा थोवाइ वा लवाइ वा मुहुत्ताइ वा दिवसाति वा अहोरत्ताति वा पक्खाति वा मासाति वा उदूति वा अयणाति वा संवच्छराति वा जुगाति वा वाससताति वा वाससहस्साति वा वाससयसहस्साति वा पुव्वंगाति वा पुव्वाति वा तुडियंगाति वा, एवं पुव्वे तुडिए अडडे अववे हूहुए उप्पले पउमे णलिणे अत्थ-णिउरे अउते णउते पउते चूलिया सीसपहेलिया जाव य सीसपहेलियंगेति वा सीसपहेलियाति वा पलिओवमेति वा सागरोवमेति वा ओसप्पि-णीति वा उस्सप्पिणीति वा तावं च णं अस्सि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जावं च णं बहवे ओराला बलाहका[1] संसेयंति संमुच्छंति वासं वासंति तावं च णं अस्सिं लोएत्ति पवुच्चति। जावं च णं 'बादरे विज्जुकारे बादरे थणियसद्दे'[2] तावं च णं अस्सिं लोएत्ति पवुच्चति। जावं च णं बायरे अगणिकाए तावं च णं अस्सिं लोएत्ति पवुच्चति। जावं च णं आगराति वा 'नदीओइ वा णिहीति वा'[3] तावं च णं अस्सिं लोएत्ति पवुच्चति जावं च णं समयाति वा आवलियाति वा आणापाणूति वा थोवाइ[4] वा लवाइ वा मुहुत्ताइ वा दिवसाति वा अहोरत्ताति वा पक्खाति वा मासाति वा उदूति वा अयणाति वा संवच्छराति वा जुगाति वा वाससताति वा वाससहस्साति वा वाससयसहस्साति वा पुव्वंगाति वा पुव्वाति वा तुडियंगाति वा, एवं पुव्वे तुडिए अडडे अववे हूहुए उप्पले पउमे णलिणे अत्थणिउरे अउते 'णउते पउते'[5] चूलिया सीसपहेलिया जाव य सीसपहेलियंगेति वा सीसपहेलि-

पवुच्चति। जावं च णं बादरे विज्जुकारे बादरे थणियसद्दे तावं च णं अस्सिं जावं च णं बहवे ओराला बलाहका संसेयंति संमुच्छंति वासं वासंति तावं च णं अस्सिं लोएत्ति जावं च णं बायरे तेउकाए तावं च णं अस्सिं लोए जावं च णं आगराति वा नदीओइ वा णिहीति वा तावं च णं अस्सिं लोएत्ति पवुच्चति। जावं च णं अगडाति वा णदीति वा तावं च णं अस्सिं लोए।

१. बलाहता (ता)।

२. बातरे विज्जुतारे बातरे थणितसद्दे (ता); बादरे थणियसद्दे बादरे विज्जुकारे (मवृ)।

३. णंदीति वा णिधयोति वा (ता)।

४. अत्र ताडपत्रीयादर्शे गाथा चतुष्टयं लभ्यते—
समयावलि आणापाणू, थोवा य खणा लवा मुहुत्ता य।
अहोरत्त पक्खमासा, उदू य अयणा य बोद्धव्वा॥१॥
संवच्छरा जुवा खलु, वाससया खलु भवे सहस्सा य।
तत्तो य सतसहस्सा, पुव्वंगा चेव बोद्धव्वा॥२॥
पुव्वे तुडिए अडडे, अववे हूहूय उप्पले पउमे।
णलिणे अत्थणिपूरे, अउते पउते य णउते य॥३॥
चूलिय सीसपहेल्लिय, पलितोवम सागरोवमे च्चेव।
ओसप्पिणि उस्सप्पिणि, परियट्टद्धा य णेतव्वा॥४॥
जाव सव्वद्धाति वा।

५. पउते य णउते य (ता); पउते णउते (त्रि); मलयगिरिणापि प्रयुतानन्तरं नयुतं व्याख्यातम्—चतुरशीतिरयुतशतसहस्राणि एकं प्रयुताङ्गं, चतुरशीतिः प्रयुताङ्गशतसहस्राणि एकं प्रयुतं, चतुरशीतिः प्रयुतशतसहस्राणि एकं नयुताङ्गं, चतुरशीतिर्नयुतशतसहस्राणि एकं चूलिकाङ्गम्। किन्तु एतद् वाचनान्तरं प्रतीयते। अनुयोगद्वारसूत्रस्य चूर्णिकारेण वृत्तिकाराभ्यां हरिभद्र-मलधारिहेमचन्द्रसूरिभ्यां च पूर्वं 'नयुतं' ततश्च 'प्रयुतं' निर्दिष्टमस्ति—णउतंगे सुण्णसतं पंचहियं ततो चतु अट्ठ सत्त सुण्णं सत्त सुण्णं सत्त सुण्णं दो अट्ठ पण नव पण दो ति चउ ति नव सत्त ति नव सत्त ति नव दो ति दो नव नव ति ति सुण्ण दो पण चउ नव छ नव पण छ पण दो य ठवेज्जा २१. णउते सुण्णसतं दसाहियं ततो छ पण अट्ठ पण चतु णव ति णव अट्ठ चतु सुन्नं अट्ठ ति ति अट्ठ चतु छ अट्ठ सत्त छ अट्ठ सत्त छ छ पण पण ति पण पण अट्ठ सुण्णं सत्त नव ति ति चतु एक्को छ चतु अट्ठ पण एक्को दोण्णि य ठवेज्जा २२. पउतंगे पण्णरसुत्तरं सुण्णसतं ततो चतु सुण्ण णव एक्को पण चउ एक्को णव सुण्णं एक्को एक्को छ णव ति सुण्णं छ चतु छ सुण्ण सुण्ण णव सुण्ण सुण्ण एक्को छ सत्त अट्ठ णव चतु अट्ठ एक्को पण पण ति पण चतु सुण्ण छ सत्त सुण्ण एक्को त्ति एक्को अट्ठ एगं च ठवेज्जा २३ पउते वीसुत्तरं सुण्णसतं ततो छ ति णव णव पण णव एक्को ति ति सत्त दो ति सत्त छ दो चतु पण छ पण सत्त चतु दो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

याति वा पलिओवमेति वा सागरोवमेति वा ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा तावं च णं अस्सि लोएत्ति पवुच्चति । जावं च णं चंदोवरागाति वा सूरोवरागाति वा चंदपरिएसाति वा सूरपरिएसाति वा पडिचंदाति वा पडिसूराति वा इंदधणू वा उदगमच्छेइ वा 'अमोहाइ वा'[१] कपिहसिताणि वा तावं च णं अस्सि लोएत्ति पवुच्चति । जावं च णं चंदिमसूरिय-गहगणणक्खत्ततारारूवाणं अभिगमण-निग्गमण-बुड्ढि-णिवुड्ढि-अणवट्ठियसंठाणसंठिती आघविज्जति तावं च णं अस्सि लोएत्ति पवुच्चति ॥

चंदादीणं उववन्नाधिगारो

८४२. अंतो णं भंते ! 'माणुसुत्तरस्स पव्वतस्स'[२] जे चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारा-रूवा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा[३] ? कप्पोववण्णगा ? विमाणोववण्णगा ? चारोव-वण्णगा ? चारट्ठितीया ? गतिरतिया ? गतिसमावण्णगा ? गोयमा ! ते णं देवा णो उड्ढोववण्णगा, णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, णो चारट्ठितीया, गतिरतिया गतिसमावण्णगा, उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठाणसंठितेहिं[४] जोयणसाहस्सितेहिं तावखेत्तेहिं, साहस्सियाहिं 'बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं'[५] परिसाहिं महयाहयनट्ट-गीत-वादित-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवादितरवेणं 'दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा'[६] महया उक्किट्ठसीहणायबोलकलकलरवेणं[७] 'पक्खुभितमहासमुद्दरवभूतं पिव करेमाणा'[८] अच्छं पव्वयरायं पदाहिणावत्तमंडलचारं[९] मेरुं अणुपरियडंति ॥

८४३. 'तेसि णं भंते ! देवाणं जाहे'[१०] इंदे चवति[११] से कहमिदाणिं पकरेंति ? गोयमा ! ताहे[१२] चत्तारि पंच वा[१३] सामाणिया देवा[१४] तं ठाणं[१५] उवसंपज्जित्ताणं विहरंति

णव पण णव अट्ठ ति पण पण ति अट्ठ णव सुण्णं अट्ठ सत्त अट्ठ ति सुण्णं एक्को सुण्णं ति दो पण एक्क च ठवेज्जा २४ (चूर्णि पृष्ठ ३९, ४०) । हारिभद्रीयवृत्ति (पृष्ठ ५५, ५६) । मलधारिहेमचन्द्रवृत्ति (पत्र ९१) एतस्मिन् विषये अनुयोगद्वारसूत्रमधिकृतमस्ति, तेन तन्मतमेव स्वीकृतम् ॥

१. × (क, ख, ग, ट, त्रि, मवृ) ।

२. मणुस्सखेत्तस्स (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

३. 'ता' प्रतौ 'उववण्णगा' स्थाने सर्वत्रापि 'उव-वण्णा' इति पाठो विद्यते । मलयगिरिवृत्तावपि एवमेव ।

४. उड्ढमुहकलंबुयपुप्फ° (क,ख,ग,ट,त्रि); वृत्तौ नालिकापुष्पसंस्थानसंस्थितैः' इति व्याख्यात-मस्ति, नात्र पाठभेदः आशंकनीयः । ३।८३८ सूत्रस्य पञ्चदश्या गाथाया व्याख्यायां अस्य स्पष्टता दृश्यते—कलम्बुयापुष्पं—नालिकापुष्प तद्वत्संस्थिताः कलम्बुयापुष्पसंस्थिताः (वृत्ति पत्र ३३९) ।

५. वेउव्वियाहिं बाहिराहि (जं ७।५५) ।

६. × (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

७. उक्किट्ठसीहणायबोलकलकलसद्देणं (क, ख, ग, ट, त्रि); उक्किट्ठिसीहणायबोलकलरवेणं (ता)।

८. विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा (क, ख, ग, ट, त्रि); 'पक्खुभित' एतत्पदं वृत्तौ व्याख्यातं नास्ति ।

९. °मंडलयारं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१०. जया णं भंते तेसिं देवाणं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

११. चयति (क, ख, ट, ता, त्रि) ।

१२. जाव (क, ख, ट, मवृ) ।

१३. × (क, ख, ग, ट, ता, त्रि) ।

१४. देवाः समुदितीभूय (मवृ) ।

१५. इंदट्ठाणं (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जाव एत्थ अण्णे'[1] इंदे उववण्णे भवति ।।

८४४. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं विरहिते उववातेणं ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ।।

८४५. बहिया[2] णं भंते ! 'माणुसुत्तरस्स पव्वतस्स'[3] जे चंदिमसूरियगहणक्खत्ततारा-रूवा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा ? कप्पोववण्णगा ? विमाणोववण्णगा ? चारो-ववण्णगा ? चारट्ठितीया ? गतिरतिया ? गतिसमावण्णगा ? गोयमा ! ते णं देवा णो उड्ढोववण्णगा[4], णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, णो चारोववण्णगा, चारट्ठितीया, णो गतिरतिया, णो गतिसमावण्णगा, पक्किकट्टगसंठाणसंठितेहिं[5] जोयणसतसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सियाहि य बाहिराहिं परिसाहिं[6] महताहतनट्ट-गीत-वादित[7]-•तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवादितरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा महया उक्किट्ठ-सीहणायबोलकलकलरवेणं पक्खुभितमहासमुद्दरवभूतं पिव करेमाणा° सुहलेस्सा[8] मंदलेस्सा मंदायवलेस्सा चित्तंतरलेसा 'अण्णमण्णसमोगाढाहिं लेसाहिं कूडा इव ठाणट्ठिता'[9] ते पदेसे सव्वतो समंता ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ।।

८४६. 'तेसि णं भंते ! देवाणं जाहे'[10] इंदे चवति से कहमिदाणिं पकरेंति ? गोयमा ! ताहे[11] चत्तारि पंच वा सामाणिया देवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव तत्थ अण्णे इंदे उववण्णे भवति ।।

८४७. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं विरहओ उववातेणं ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ।।

---

१. जावत्थण्णे (क, ख, ता) ।

२. बाहिरया (क, ख); बाहिया (ग); बाहि-रिया (ट, त्रि) ।

३. मणुस्सखेत्तस्स (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

४. उड्ढोववण्णा तिरियोववण्णा (ता) ।

५. पक्किट्टग° (क, ख, ट, त्रि); 'इष्टा' शब्दे ष्टस्यानुष्ट्रेष्टा, संदष्टे (हेमशब्दानुशासन ८।२।३४) सूत्रे वर्जितत्वात् 'ष्टस्य ठो' न जातः । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्हीरविजयवृत्तौ 'पंकि-ट्टग' इति पाठो व्याख्यातोस्ति तथा सूर्यप्रज्ञप्ते-र्वृत्तौ (पत्र २८२) मलयगिरिणा 'पक्किट्ट' पदं व्याख्यातं तस्य समालोचनापि कृतास्ति—पक्का विषमा या इष्टका लोकप्रतीता तत्संस्थानेन संस्थितानि अयं भावः इष्टका हि चतुरस्रापि विष्कम्भापेक्षया दैर्घ्येण प्रायः पादाधिका भवति । सा च संस्थानतः समैव स्यात् प्रकाश्यक्षेत्रं तु वलयाकारेणं संस्थितं सद्विभक्तमतउपमोप-मेययोर्वैषम्यं संपद्येत अतो पक्केति विशेषणं, पक्कता चान्तः संकीर्णा बहिश्च विस्तीर्णत्येवं रूपेणावसातव्या न पुनर्यथा कथंचिदपीति, यत्तु सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रे 'पक्किट्टसंठाणे' ति पाठः श्रीमलयगिरिणा गम्यान्तरमकृत्वैव व्याख्यातसूत्र-पक्कपदस्य प्रयोजनं सम्यग् न विद्मः ।

६. वेउव्वियाहिं परिसाहिं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

७. सं० पा०—महताहनट्टगीयवादितरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा । आदर्शेषु अत्र संक्षिप्त-पाठोस्ति, विस्तृतः पाठो वृत्त्याधारेण स्वी-कृतः ।

८. सुहलेस्सा सीयलेस्सा (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

९. कूडा इव ठाणट्ठिता अण्णोण्णसमोगाढाहिं लेसाहिं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१०. जया णं भंते ! तेसिं देवाणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

११. जाव (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुक्खरोदसमुद्दाधिगारो

८४८. पुक्खरवरण्णं दीवं पुक्खरोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते[1] •सव्वतो समंता° संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ।।

८४९. पुक्खरोदे[2] णं भंते ! समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवाल-संठिते ? गोयमा ! समचक्कवालसंठिते, णो विसमचक्कवालसंठिते ।।

८५०. पुक्खरोदे णं भंते ! समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खे-वेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! संखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं[3] चक्कवालविक्खंभेणं, संखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते । 'से णं एगाए पउमवरवेदियाए, एगेणं, वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, दोण्हवि वण्णओ'[4] ।।

८५१. पुक्खरोदस्स णं समुद्दस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता, 'तहेव'[5] सव्वं पुक्खरोदसमुद्दपुरत्थिमपेरंते वरुणवरदीवपुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं पुक्खरोदस्स विजए नामं दारे पण्णत्ते । एवं[6] सेसाणवि'[7] ।।

८५२. दारंतरंमि संखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

८५३. पदेसा जीवा य तहेव[8] ।।

८५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—पुक्खरोदे समुद्दे ? पुक्खरोदे समुद्दे ? गोयमा ! पुक्खरोदस्स णं समुद्दस्स उदगे अच्छे पत्थे[9] जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे पगतीए उदगरसे[10] पण्णत्ते । सिरिधर-सिरिप्पभा यत्थ दो देवा[11] महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति । से एतेणट्ठेणं जाव[12] णिच्चे ।।

८५५. पुक्खरोदे णं भंते ! समुद्दे कति[13] चंदा पभासिंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा ? संखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव[14] संखेज्जा तारागणकोडकीडीओ[15] सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ।।

वरुणवरदीवाधिगारो

८५६. 'पुक्खरोदण्णं समुद्दं'[16] 'वरुणवरे णामं दीवे'[17] वट्टे 'जधेव पुक्खरोदसमुद्दस्स

---

१. सं पा०—वलयागारसंठाणसंठिते जाव संपरि-क्खिताणं ।

२. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एतत् सूत्रं नोल्लि-खितमस्ति ।

३. जोयणसहस्साइं (ता) अग्रेपि एवमेव ।

४. × (क,ख,ग,ट,त्रि); जी० ३।२६५-२६७ ।

५. जी० ३।७०७, ७०८ ।

६. जी० ३।७०८-७१३ ।

७. विजयादितधेवसव्वं रायहाणीओवि सरिणामएसु समुद्देसु (ता); मलयगिरिवृत्तौ चत्वार्यपि सूत्राणि पूर्णरूपेण व्याख्यातानि सन्ति ।

८. जी० ३।७१५-७२० ।

९. पच्छे (ख, ट) ।

१०. उदगरसे णं (क, ख, ग, ट, ता त्रि) ।

११. देवा जाव (ग, त्रि) ।

१२. जी० ३।३५० ।

१३. केवतिया (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१४. जी० ३।७२२ ।

१५. °कोडीकोडीओ (क); °कोडाकोडीओ (ख, ग, ट, त्रि) ।

१६. पुक्खरोदे णं समुद्दे (त्रि) ।

१७. वारुणिवरे णामं दीवेणं संपरि (क); वारुणि-वरे° (ख); वरुणवरेणं दीवेणं संपरि(ग, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तधा सव्वं"[1] ।।

८५७. 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—वरुणवरे दीवे ? वरुणवरे दीवे ? गोयमा !'[2] वरुणवरे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहुईओ[3] खुड्डा-खुड्डियाओ जाव[4] बिलपंतियाओ अच्छाओ जाव[5] सद्दुण्णइयमहुरसरनाइयाओ वारुणिवरोदगपडिहत्थाओ[6] पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइयापरिविखत्ताओ पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ वण्णओ[7] पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ । 'तिसोमाण-तोरणा । तासु णं खुड्डा-खुड्डियासु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पातपव्वया जाव पक्खंदोलगा सव्वफालियामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसु णं उप्पायपव्वएसु जाव पक्खंदोलएसु बहूइं हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थियासणाइं सव्वफालियामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं । वरुणवरे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे आलिघरगा जाव कुसुमघरगा सव्वफालियामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसु णं आलिघरएसु जाव कुसुमघरएसु बहूइं हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थिया-सणाइं सव्वफालियामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं । वरुणवरे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे जातिमंडवगा जाव सामलतामंडवगा सव्वफालियामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसु णं जातिमंडवएसु जाव सामलतामंडवएसु बहवे पुढविसिलापट्टगा पण्णत्ता, तं जहा—अप्पेगतिया हंसासणसंठिता जाव अप्पेगतिया वरसयणविसिट्ठसंठाणसंठिता सव्वफालियामया अच्छा जाव पडिरूवा । तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा जाव[8] विहरंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—वरुणवरे दीवे, वरुणवरे दीवे । वरुण-वरुणप्पभा यत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव[9] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति'[10] ।।

८५८. जोतिसं संखेज्जं[11] ।।

---

१. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु किञ्चिद् विस्तृतः पाठोस्ति—वलयागारे जाव चिट्ठति, तहेव समचक्कवालसंठिते केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! संखिज्जाइं जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं संखेज्जाइं जोयणसतसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते, पउमवरवेदियावणसंडवण्णओ । दारंतरं पदेसा जीवा तहेव सव्वं । जी० ३।८४८-८५३ ।

२. अट्ठो (ता) ।

३. बहुओ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

४. जी० ३।२८६ ।

५. जी० ३।२८६ ।

६. वारुणोदग° (क,ख,ट,ता) ।

७. जी० ३।२६५-२६७ ।

८. जी० ३।२८७-२६७ ।

९. जी० ३।३५० ।

१०. चिन्हाङ्कितपाठस्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु सङ्क्षिप्तपाठोस्ति—तासु ण खुड्डा-खुड्डियासु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पायपव्वता जाव खडहडगा सव्वफलियामया अच्छा तहेव वरुणवरुणप्पभा य एत्थ दो देवा महिड्ढीया परिवसंति । से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे । 'ता' प्रतेः पाठो मूले स्वीकृतः ।
वृत्तौ विस्तृतः पाठो लिखितोस्ति, सूचितं वृत्तिकृता—एतत्सर्वं प्राग्वद् व्याख्येयं, नवरं पुस्तकेष्वन्यथान्यथा पाठ इति यथावस्थितपाठ-प्रतिपत्त्यर्थं सूत्रमपि लिखितमस्ति ।

११. सव्वं संखेज्जगेणं जाव तारागणकोडिकोडीओ (क,ख,ग); सव्वं संखेज्जगुणं जाव तारागण-कोडाकोडीओ (ट); संखिज्जकेण नायव्वं (त्रि); जी० ३।८५५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरुणोदसमुद्दाधिगारो

८५९. वरुणवरण्णं दीवं वरुणोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयागार[1] •संठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति। 'पुक्खरोदवत्तव्वता जाव जीवोववातो'[2]॥

८६०. 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—वरुणोदे समुद्दे? वरुणोदे समुद्दे'[3]? गोयमा! वरुणोदस्स[4] णं समुद्दस्स उदए से जहानामए—चंदप्पभाइ वा मणिसिलागाइ[5] वा वरसीधूति वा वरवारुणीइ वा पत्तासवेइ वा पुप्फासवेइ वा 'फलासवेइ वा चोयासवेइ वा'[6] मधूति वा मेरएति वा[7] जातिप्पसन्नाइ वा खज्जूरसारेइ वा मुद्दियासारेइ वा कापिसायणेइ वा सुपक्कखोयरसेइ[8] वा[9] अट्ठपिट्ठणिट्ठिताइ वा 'जंबूफलकालियाइ वा वरपसण्णाइ वा'[10] उक्कोसमदपत्ता आसला मासला पेसला ईसिं ओट्ठावलंबिणी ईसिं तंवच्छिकरणी ईसिं वोच्छेदकडुई वण्णेणं उववेता गंधेणं उववेता रसेणं उववेता फासेणं उववेता आसादणिज्जा वीसादणिज्जा दीवणिज्जा दप्पणिज्जा[11] मयणिज्जा विहणिज्जा सव्विंदियगातपल्हायणिज्जा, भवेतारूवे सिया? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। वरुणोदस्स णं समुद्दस्स उदए

---

१. सं० पा०—वलयागार जाव चिट्ठति।

२. समचक्क विसमचक्कवि तहेव सव्वं भाणियव्वं विक्खंभपरिक्खेवो संखिज्जाइं जोयणसहस्साइं दारंतरं च पउमवर वणसडे पएसा जीवा (क, ख, ग, ट, त्रि); यथैव पुष्करोदसमुद्रस्य वक्तव्यता तथैवास्यापि यावज्जीवोपपातसूत्रद्वयम् (मवृ); जी० ३।८४९-८५३।

३. अट्ठो (क, ख, ग, ता, त्रि)।

४. वारुणोदस्स (क, ग, ट, ता, त्रि)।

५. मणिसलागाइं (ता)।

६. चोयासवेइ वा फलासवेइ वा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

७. वा अरिट्ठेति वा (ता)।

८. सुपिक्कखोतरसेति (ता)।

९. अतः परं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु भिन्ना वाचना दृश्यते—पभूतसंभारसंचित्ता पोसमाससतभिसयजोतविता (जोगवट्टिता—क; जोतवट्ठविया—ट) निरुवहतविसिट्ठदिन्नकालोवयारा सुधावा (सुधाता—ग, त्रि) उक्कोसग अट्ठपिट्ठपुट्ठा मुरवइंतवरकिमंदिण्णकद्दमा कापसन्ना अच्छा वरवारुणी अतिरसा जंबूफलपुट्ठवन्ना सुजाता ईसिउट्ठावलंबिणी अहियमधुरपेज्जा ईसीसिरत्तणेत्ता (ईसीरत्तणेत्ता—क) कोमलकवोलकरणी जाव आसादिता विसंती अणिहुयसंलावकरणहरिसपीतिजणणी संतत (संतसतत—क) बिब्बोहावविब्भमविलासवेल्लहलगमणकरणी विरणमधियसत्तजणणी य होति संगामदेसकाले कयरणरसमद (कयरणसमर—क; कायरणरसमर—ट) प्पसरकरणी कढियाणविज्जुयत्तिहिययाण मउयकरणी य होति उववेसिता समाणी गतिं खलावेति य सयलंमिवि सुभावुप्पालिया समरभग्गवणोसहयारसुरभिरसदीविया सुगंधा आसायणिज्जा विस्सायणिज्जा पीणणिज्जा दप्पणिज्जा मयणिज्जा सव्विंदियगातपल्हायणिज्जा आसला मासला पेसला वण्णेणं उववेया गंधेणं उववेया रसेणं उववेया फासेणं उववेया, भवे एयारूवे सिया? गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे, वारुणोदस्स णं समुद्दस्स उदए एत्तो इट्ठतरे जाव उदए अस्साए णं पण्णत्ते। तत्थ णं वारुणिवारुणकंता देवा महिड्ढीया जाव परिवसंति। से एएणट्ठेणं जाव णिच्चे।

१०. वरपसन्ना जंबूफलकालिया (ता)।

११. × (मवृ)।

एत्तो इट्ठतराए चेव जाव[1] मणामतराए चेव आसादे णं पण्णत्ते। वारुणि-वारुणिकंता यत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—वरुणोदे समुद्दे, वरुणोदे समुद्दे ।।

८६१. 'जोतिसं संखेज्जं'[2] ।।

खीरवरदीवाधिगारो

८६२. वरुणोदण्णं[3] समुद्दं खीरवरे णामं दीवे वट्टे[4] •वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति। तधेव[5] जाव—

८६३. 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—खीरवरे दीवे? खीरवरे दीवे? गोयमा! खीरवरे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहुईओ खुड्डा-खुड्डियाओ जाव बिलपंतियाओ अच्छाओ जाव सद्दुण्णइयमहुरसरनाइयाओ खीरोदगपडिहत्थाओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ'[6] 'पव्वतगा, पव्वतएसु आसणा, घरहा, घरएसु आसणा, मंडवा, मंडवएसु पुढविसिलापट्टगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। पंडरग-पुप्फदंता यत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति। से तेणट्ठेणं'[7] ।।

८६४. जोतिसं[8] संखेज्जं ।।

खीरवरसमुद्दाधिगारो

८६५. खीरवरण्णं दीवं खीरोदे णामं समुद्दे वट्टे[9] •वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति। तधेव[10] जाव—

८६६. से[11] केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—खीरोदे समुद्दे? खीरोदे समुद्दे? गोयमा!

---

१. जी० ३।६०१।

२. सव्वं जोइससंखिज्जकेण नायव्वं (क, ख, ग, ट, त्रि); जी० ३।८५५।

३. वारुणोदं णं (क,ख,ग,ट,ता); वारुणवरण्णं (त्रि)।

४. सं० पा०—वट्टे जाव चिट्ठति।

५. सव्वं संखेज्जगं विक्खंभे य परिक्खेवो य (क, ख,ग,ट,त्रि); जी० ३।८४६-८५३।

६. अट्ठो। बहुओ खुड्डा वावीओ जाव सरसरपंतियाओ खीरोदयपडिहत्थाओ पासातीयाओ ४ (क,ख,ग,ट,त्रि); अट्ठो वावीओ खीरोदगपडहत्थाओ रयतामईओ (ता)।

७. तासु णं खुड्डियासु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पायपव्वयगा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा पंडरग-पुप्फदंता (पुष्करदंता—क,ग,त्रि) एत्थ दो देवा महिड्ढीया जाव परिवसंति। से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे (क,ख,ग,ट,त्रि); जी० ३।८५७, २८६-२६७।

८. जोतिसं सव्वं (क,ख,ग,ट,त्रि); जी० ३।८५५।

९. सं० पा०—वट्टे जाव चिट्ठति।

१०. समचक्कवालसंठिते नो विसमचक्कवालसंठिते संखेज्जाइं जोयणस विक्खंभपरिक्खेवो तहेव सव्वं (क,ख,ग,ट,त्रि); जी० ३।८४६-८५३।

११. एतस्य सूत्रस्य स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—अट्ठो, गोयमा! खीरोयस्स णं समुद्दस्स उदगं से जहाणामए—सुउसुहीमारुपण्णअज्जुणतण (तरुण—क) सरसपत्तकोमल-अत्थिग्गत्तणग्गपोंडगवरुच्छुचारिणीणं लवंगपत-पुप्फपल्लवककोलगसफलरुक्खबहुगुच्छगुम्मकलितमलट्ठिमधुपयुरपिप्पलीफलितवल्लिवरविवरचारिणीणं अप्पोदगपीतसइरससमभूमिभागणिभय-सुहोसियाणं सुपोसितसुहातरोगपरिवज्जिताणं णिरुवहतसरीराणं (सरीरिणं—ग, त्रि) कालप्पसविणीणं बितियततियसम (साम—

खीरोदस्स णं समुद्दस्स उदए से जहानामए—रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चाउरक्के गोक्खीरे खंडगुलमच्छंडियोवणीते पयत्तमंदग्गिसुकढिए वण्णेणं उववेते गंधेणं उववेते रसेणं उववेते फासेणं उववेते आसादणिज्जे[1] °वीसादणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदयगातपल्हायणिज्जे, भवेतारूवे सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, खीरोदस्स णं समुद्दस्स उदए एत्तो इट्ठतराए चेव जाव मणामतराए चेव° आसादे णं पण्णत्ते। विमल-विमलप्पभा यत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति। से तेणट्ठेणं ॥

८६७. 'जोतिसं संखेज्जं'[2] ॥

घयवरदीवाधिगारो

८६८. खीरोदण्णं समुद्दं घयवरे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते[3] °सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति[3] जाव[4]—

८६९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—घयवरे दीवे ? घयवरे दीवे ? गोयमा ! घयवरे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहुईओ खुड्डा-खुड्डियाओ जाव विहरंति, णवरं—घयोदगपडिहत्थाओ पव्वतादी सव्वकणगमया, कणग-कणगप्पभा यत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति। से तेणट्ठेणं[5] ॥

८७०. जोतिसं संखेज्जं[6] ॥

घयोदसमुद्दाधिगारो

८७१. घयवरण्णं दीवं घयोदे णामं समुद्दे वट्टे[8] °वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता

ग,त्रि) प्पभूताणं अंजणवरगवलवलयजलधरजच्चंजणरिट्ठभमरपभूयसमप्पभाणं कुंडदोहणाणं वद्धत्थीपत्थुताणं रूढाणं मधुमासकाले संगहिते होज्ज चातुरक्केव होज्ज तासि खीरं मधुररसविवगच्छबहुदव्वसंपउत्ते पयत्तमंदग्गिसुकढिते आउत्तखंडगुडमच्छंडितोववेते रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स। उवट्ठविते आसायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीणणिज्जे जाव सव्विंदियगातपल्हातणिज्जे जाव वण्णेणं उवचिते जाव फासेणं, भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, खीरोदस्स णं से उदए एत्तो इट्ठयराए चेव जाव आसाएणं पण्णत्ते। विमलविमलप्पभा एत्थ दो देवा महिड्ढीया जाव परिवसंति, से तेणट्ठेणं।

१. सं० पा०—आसादणिज्जे जाव इट्ठतराए चेव आसादे।

२. संखेज्ज चंदा जाव तारा (क,ख,ग,ट,त्रि); जी० ३।८५५।

३. सं० पा०—वलयागारसंठाणसंठिते जाव चिट्ठति।

४. अत: ८६९, ८७० सूत्रयो: स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—समचक्कवाल नो विसम संखेज्जविसमपरि पदेसा जाव अट्ठो, गोयमा ! घयवरे णं दीवे तत्थ-तत्थ बहवे खुड्डा-खुड्डीओ वावीओ जाव घयोदगपडिहत्थाओ उप्पायपव्वयगा जाव खडहडगा सव्वकंचणमया अच्छा जाव पडिरूवा, कणयकणयप्पभा एत्थ दो देवा महिड्ढीया चंदा संखेज्जा।

५. जी० ३।८४९-८५३।

६. जी० ३।८५७; २८६-२९७।

७. जी० ३।८५५।

८. सं० पा०—वट्टे जाव चिट्ठति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति[1] जाव[2]—

८७२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—घयोदे समुद्दे ? घयोदे समुद्दे ? गोयमा ! घयोदस्स णं समुद्दस्स उदए से जहानामए—सारइयस्स गोघयवरस्स मंडे सुकढिते उद्दा[3] [ण ?] सज्जवीसंदिते विस्संते 'सल्लइ-कण्णियारपुप्फवण्णाभे'[4] वण्णेणं उववेते गंधेणं उववेते रसेणं उववेते फासेणं उववेते, आसादणिज्जे[5] °वीसादणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगात°पल्हायणिज्जे, भवेतारूवे सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, घयोदस्स णं समुद्दस्स उदए एत्तो इट्ठतराए चेव जाव[6] मणामतराए चेव आसादे णं पण्णत्ते ! कंत-सुकंता यत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति । से तेणट्ठेणं ।।

८७३. चंदादी तधेव[7] ।।

खोदवरदीवाधिगारो

८७४. घयोदण्णं[8] समुद्दं खोदवरे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति जाव[9]—

८७५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—खोदवरे दीवे ? खोदवरे दीवे ? गोयमा ! खोदवरे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहुईओ खुड्डा-खुड्डियाओ वावीओ जाव विहरंति,

---

१. अतः ८७२, ८७३ सूत्रयोः स्थाने 'क,ख,ग,ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—समचक्क तहेव दारपदेसा जीवा य अट्ठो गोयमा ! घयोदस्स णं समुद्दस्स उदए से जहा जवग्ग फुल्लसल्लइविमुकुलकण्णियारसरसवसुविबुद्धकोरेंटदामपिंडिततरस्स निद्धगुणतेयदीवियनिरुवहयविसिट्ठसुंदरतरस्स सुजायदहिमहियतद्दिवसगहियनवणीयपडुवणावियसुक्कड्ढियद्दाव (उदार-ट) सज्जवीसंदियस्स अहियं पीवरसुरहिगंधमणहरमहुरपरिणामदरिसणिज्जस्स पत्थनिम्मलसुहोवभोगस्स सरयकालंमि होज्ज गोघतवरस्स मंडए, भवे एतारूवे सिया ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! घतोदस्स णं समुद्दस्स एत्तो इट्ठतरे जाव अस्साएणं पण्णत्ते कंतसुकंता एत्थ दो देवा महिड्ढीया जाव परिवसंति सेसं तं चेव तारागणकोडीकोडीओ ।

२. जी० ३।८४९-८५३ ।

३. उद्दाव (क,ख,ग,ट,त्रि); उद्दा (ता); अद्दारः= स्थानान्तरेष्वद्याप्यसङ्क्रामितः (मवृ); देशीनाममालायां उद्दाणं—चुल्ली । एष अर्थः सङ्गतोस्ति ।

४. अल्लगकणियारपुप्फवण्णे (ता) ।

५. सं० पा०—आसादणिज्जे जाव पल्हायणिज्जे ।

६. जी० ३।६०० ।

७. जी० ३।८५५ ।

८. इमानि ८७४-८७६ सूत्राणि वृत्याधारेण स्वीकृतानि । 'ता' प्रतेः पाठसंक्षेप एवमस्ति—घतोदण्णं समुद्दं खोतवरे णामं दीवे जावट्ठो खोतोदगपडहत्थाओ वावीओ जाव सयंति णवरं—पव्वतगादी सव्ववेरुलियामया अच्छा जाव पडि सुप्पभमहप्पभा यत्थ दो चंदादी संखेज्जा । 'क,ख,ग,ट,त्रि' प्रतीनां पाठसंक्षेपः—घतोदण्णं समुद्दं खोदवरे णामं दीवे वट्टे वलयागारे जाव चिट्ठति तहेव जाव अट्ठो, खोतवरे णं दीवे तत्थ-२ देसे-२ तहिं-२ खुड्डावावीओ जाव खोदोदगपडिहत्थाओ उप्पातपव्वतता सव्ववेरुलियामया जाव पडिरूवा, सुप्पभमहप्पभा य दो देवा महिड्ढीया जाव परिवसंति, से एतेणं सव्वं जोतिसं तं चेव जाव तारा ।

९. जी० ३।८४९-८५३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवरं—खोदोदगपडिहत्थाओ पव्वतगादी सव्ववेरुलियामया। सुप्पभ-महप्पभा यत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति। से तेणट्ठेणं[३]॥

८७६. चंदादी संखेज्जा[२]॥

खोदोदसमुद्दाधिगारो

८७७. खोदवरणं[१] दीवं खोदोदे णामं समुद्दे वट्टे[४] •वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति जाव[५]—

८७८. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—खोदोदे समुद्दे? खोदोदे समुद्दे? गोयमा! खोदोदस्स णं समुद्दस्स उदए से जहानामए—उच्छूणं जच्चाणं वरपुंडगाणं हरिताभाणं[६] भेरुंडुच्छूण[७] वा कालपोराणं हरितालपिंजराणं अवणीतमूलाणं[८] 'तिभागणिव्वादितवाडाणं[९] गंठिपरिसोधिताणं'[१०] खोदरसे होज्ज वत्थपरिपूते चाउज्जातगसुवासिते अधियपत्थे लहुए वण्णेणं उववेते[११] •गंधेणं उववेते रसेणं उववेते फासेणं उववेते आसादणिज्जे वीसादणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे° सव्विंदियागातपल्हायणिज्जे, भवेतारूवे सिया? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, खोदोदस्स णं समुद्दस्स उदए एत्तो इट्ठतराए चेव जाव मणामतराए चेव आसादे णं पण्णत्ते। पुण्ण-पुण्णप्पभा यत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव

---

१. जी० ३।८५७; २८६-२८७।

२. जी० ३।८५५।

३. एतेषां ८७७-८७९ त्रयाणां सूत्राणां स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु इत्थं वाचना भेदो दृश्यते—खोयवरणं दीवं खोदोदे नाम समुद्दे वट्टे वलया° जाव संखेज्जाइं जोयणसत परिक्खेवेणं जाव अट्ठे, गोयमा! खोदोदस्स णं समुद्दस्स उदए जहा से आसलमासलपसत्थे वीसंतनिद्धसुकुमालभूमिभागे सुच्छिन्ने सुकट्ठलट्ठविसिट्ठनिरुवहयाजीयवाविते सुकासज (ग—क,ट) पयत्तनिउणपरिकम्म-अणुपालियसुबुद्धिबुद्धाणं सुजाताणं लवणतणदोसवज्जियाणं णयायपरिवड्ढियाणं निम्मातसुंदराणं रसेणं परिणयमउपीणपोरभंगुरसुजायमधुररसपुप्फविरइयाणं उवद्दवविवज्जियाणं सीयपरिफासियाणं अभिणवभग्गाणं (अभिणवभिग्गाणं—क; अभिणवतग्गाणं—ग, त्रि) अमलियाणं तिभायणिच्छोडियवाडगाणं अवणीतमूलाणं गंठिपरिसोहिताणं कुसलणरकप्पियाणं उच्छूणं (उच्छूढाणं—ट) जाव पोंडयाणं बलवगणरजत्तजंतपरिगालितमेताणं खोयरसे होज्जा वत्थपरिपूए चाउज्जातगसुवासिते अहियपत्थे लहुके वण्णोववेते तहेव, भवे एयारूवे सिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, खोयरसस्स णं समुद्दस्स उदए एत्तो इट्ठतराए चेव जाव आसाएणं पण्णत्ते। पुण्णभद्दमाणिभद्दा य इत्थ दुवे देवा जाव परिवसंति, सेसं तहेव, जोइसं संखेज्जं चंदा। वृत्तिकृतापि पाठभेदस्य सूचना कृतास्ति—इह प्रविरलपुस्तकेऽन्यथापि पाठो दृश्यते सोप्येतदनुसारेण व्याख्येयो, बहुषु तु पुस्तकेषु न दृष्ट इति न लिखितः (वृत्ति पत्र ३५३)।

४. सं० पा०—वट्टे जाव चिट्ठति।

५. जी० ३।८४९-८५३।

६. हरितानाम् (मवृ)।

७. भेरण्डेसूणां (मवृ)।

८. अमणीत° (ता)।

९. त्रिभागनिर्वाटितवाटानाम् (मवृ)।

१०. गंधिपरिसोधिताणं तिभागणिव्वादितवाडाणं (ता)।

११. सं० पा०—उववेते जाव सव्विंदियगातपल्हायणिज्जे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलिओवमट्ठितीया परिवसंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—खोदोदे समुद्दे, खोदोदे समुद्दे ॥

८७९. चंदादीण जधा पुक्खरोदस्स[1] ॥

णंदिस्सरवरदीवाधिगारो

८८०. खोदोदण्णं समुद्दं णंदिस्सरवरे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति। 'पुव्वक्कमेणं जाव[2] जीवोववातो'[3] ॥

८८१. से[4] केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—णंदिस्सरवरे दीवे ? णंदिस्सरवरे दीवे ? गोयमा ? णंदिस्सरवरे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं वहुईओ खुड्डा-खुड्डियाओ वावीओ जाव[5] विहरंति, णवरं—खोदोदगपडिहत्थाओ पव्वतगादी पुव्वभणिता सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

८८२. अदुत्तरं च णं गोयमा ! णंदिस्सरवरे दीवे चउद्दिसिं चक्कवालविक्खंभेणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि अंजणगपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं[6]। ते णं अंजणगपव्वता चतुरासीतिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं[7] जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले साइरेगाइं दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं[8], धरणियले दसजोयणसहस्साइं आयाम[9]-विक्खंभेणं, तदाणंतरं[10] मायाए-मायाए[11] परिहायमाणा-परिहायमाणा उवरिं[12] एगं[13] जोयणसहस्सं आयाम[14]-विक्खंभेणं, मूले एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते किंचिविसेसाहिए[15] परिक्खेवेणं, धरणियले एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते देसूणे[16] परिक्खेवेणं, उवरिं[17] तिण्णि जोयणसहस्साइं एकं च बावट्ठं जोयणसतं किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं[18], मूले विच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिता सव्वंजणमया[19] अच्छा जाव पडिरूवा, पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेदियापरिक्खित्ता, पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ता, वण्णओ[20] ॥

---

१. जी० ३।८५५।
२. जी० ३।८४९-८५३।
३. तहेव जाव परिक्खेवो। पउमवर वणसंडपरि दारा दारंतरप्पदेसे जीवा तहेव (क,ख,ग,ट,त्रि)।
४. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—से केणट्ठेणं भंते ! गोयमा ! देसे-२ बहुओ खुड्डा वावीओ जाव बिलपंतियाओ खोदोदगपडिहत्थाओ उप्पायपव्वगा सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा।
५. जी० ३।८५७।
६. णंदिस्सरवरदीवचक्कवालविक्खंभबहुमज्झदेसभागे एत्थ णं चउद्दिसिं चत्तारि अंजणयपव्वता पण्णत्ता (क,ख,ग,ट,त्रि)।
७. एगमेगं (क,ख,ग,ट,त्रि)।
८. × (क,ख,ग,ट,त्रि)।
९. × (ता)।
१०. ततोणंतरं (क,ख,ग) एत्तोणंतरं (त्रि)।
११. मायाए पदेसपरिहाणीए (क,ख,ग,ट,त्रि)।
१२. उप्पिं (ता)। एगमेगं (क,ख,ग,ट,त्रि)।
१३. एकैकं (मवृ)।
१४. × (ता)।
१५. किंचिविसेसाहियायं (ता)।
१६. किंचिविसेसूणा (ता)।
१७. सिहरितले (क,ग,त्रि); सिहरतले (ट); उप्पिं (ता)।
१८. परिक्खेवेणं प (ग)।
१९. सव्वंजणामया (क,ग,ता,त्रि)।
२०. जी० ३।२६३-२६७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८८३. तेसि णं अंजणगपव्वयाणं उवरिं[1] पत्तेयं-पत्तेयं बहुसमरमणिज्जो भूमिभागो 'पण्णत्तो, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेति वा जाव[2] विहरंति'[3] ।।

८८४. तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं सिद्धायतणे पण्णत्ते। ते णं सिद्धायतणा एगमेगं[4] जोयणसतं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसतसंनिविट्ठा, वण्णओ[5] ।।

८८५. तेसि णं सिद्धायतणाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि दारा पण्णता, 'तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं। पुरत्थिमेणं देवद्दारे, दाहिणेणं असुरद्दारे, पच्चत्थिमेणं णागद्दारे, उत्तरेणं सुवण्णद्दारे'[6]। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—देवे असुरे णागे सुवण्णे'[7]। ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, तावतियं चेव पवेसेणं सेता वरकणगथूभियागा, वण्णओ[8] ।।

८८६. तेसि णं दाराणं उभयतो पासिं दुहतो णिसीधियाए सोलस-सोलस वंदणकलसा पण्णत्ता, एवं णेतव्वं जाव[9] सोलस वणमालाओ ।।

८८७. तेसिं[10] णं दाराणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मुहमंडवे पण्णत्ते। ते णं मुहमंडवा एगं जोयणसतं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, सोइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसयसंनिविट्ठा, वण्णओ[11] ।।

८८८. तेसि णं मुहमंडवाणं पत्तेयं-पत्तेयं तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता। ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं जाव[12] वणमालाओ उल्लोगो

१. उप्पिं (ता)।
२. जी० ३।२७७-२९७।
३. ससद्दं जावासयंति (ता)।
४. एगं (ता)।
५. जी० ३।३७२।
६. देवद्दारे असुरद्दारे णागदारे सुवण्णद्दारे (क,ख, ग, ट, त्रि)।
७. × (ता)।
८. 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु, ८८६ सूत्रपर्यन्तं 'वण्णओ जाव वणमाला' इत्येव पाठो विद्यते। जाव वणमालाओ (ता); जी० ३।३००।
९. जी० ३।३०१-३०६।
१०. ८८७-८९८ सूत्राणां स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—तेसि णं दाराणं चउद्दिसिं चत्तारि मुहमंडवा पण्णत्ता, ते णं मुहमंडवा एगमेगं जोयणसतं आयामेण पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं वण्णओ। तेसि णं मुहमंडवाणं चउद्दिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता, ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं तावतियं चेव पवेसेणं सेसं तं चेव जाव वणमालाओ। एवं पेच्छाघरमंडवावि, तं चेव पमाणं जं मुहमंडवाणं, दाराबि तहेव णवरि बहुमज्झदेसे पेच्छाघरमंडवाणं अक्खाडगा मणिपेढियाओ अट्ठजोयणप्पमाणाओ सीहासणा अपरिवारा जाव दामा थूभाइं चउद्दिसिं तहेव णवरिं सोलसजोयणप्पमाणा सातिरेगाइं सोलस जोयणाइं उच्चा सेसं तहेव जाव जिणपडिमाओ। चेइयरुक्खा तहेव चउद्दिसिं तं चेव पमाणं जहा विजयाए रायहाणीए णवरिं मणिपेढियाए सोलसजोयणप्पमाणाओ।
११. जी० ३।३७२।
१२. जी० ३।३७३-३७५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिभागो उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा ॥

८८९. तेसि णं मुहमंडवाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं पेच्छाघरमंडवे पण्णत्ते। मुहमंडवप्पमाणतो वत्तव्वता जाव[1] भूमिभागो ॥

८९०. तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं अक्खाडए पण्णत्ते ॥

८९१. तेसि णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

८९२. तासि णं मणिपेढियाणं उप्पिं सीहासणा विजयदूसा अंकुसा दामा, उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा[2] ॥

८९३. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता। ताओ णं मणिपेढियाओ सोलस जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

८९४. तासि णं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं चेतियथूभे पण्णत्ते। ते णं चेतियथूभा सोलस जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, संखंक-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुंजसण्णिकासा अच्छा जाव पडिरूवा। उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा जाव सहस्सपत्तहत्थगा ॥

८९५. तेसि णं चेतियथूभाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

८९६. तासि णं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं चत्तारि जिणपडिमाओ जिणुस्सेधप्पमाणमेत्तीओ सव्वरयणामईओ संपलियंकनिसण्णाओ थूभाभिमुहीओ चिट्ठंति, तं जहा—उसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा ॥

८९७. तेसि णं चेतियथूभाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ सोलस जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

८९८. तासि णं मणिपेढिया णं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं चेतियरुक्खे पण्णत्ते। ते णं चेतियरुक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पमाणं वण्णावासो[3] य जहा विजयस्स जाव[4] अट्ठट्ठमंगलगा ॥

---

१. जी० ३।८८७,८८८।

२. जी० ३।३७८,६७९।

३. वण्णामासो (ता); 'तेसिणमयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते' इत्यादि चैत्यवृक्षवर्णनं विजयराजधानीगतचैत्यवृक्षवद् भावनीयं यावल्लतावर्णनमिति।

'तेसि णं' मित्यादि, तेषां चैत्यवृक्षाणामुपरि अष्टावष्टौ मङ्गलकानि बहवः कृष्णचामरध्वजा इत्यादि तावद् यावत् सहस्रपत्रहस्तकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपाः (मवृ)।

४. जी० ३।३८६-३८९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८९९. तेसि[1] णं चेतियरुक्खाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ॥

९००. तासि णं मणिपेढियाणं उप्पि पत्तेयं-पत्तेयं महिंदज्झए पण्णत्ते। ते णं महिंदज्झया सट्ठि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जोयणं उव्वेधेणं, जोयणं विक्खंभेणं, वइरामय जाव[2] अट्ठट्ठमंगलगा॥

९०१. तेसि णं महिंदज्झयाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं णंदा पुक्खरणी पण्णत्ता। ताओ णं णंदाओ पुक्खरणीओ एगमेगं जोयणसतं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेधेणं अच्छाओ[3] जाव[4] तोरणा[5]॥

९०२. तेसु[6] णं सिद्धायतणेसु पत्तेयं-पत्तेयं अडतालीसं मणोगुलियासाहस्सीओ"

---

१. ८९९-९०१ सूत्राणां स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—तेसि णं चेइयरुक्खाणं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ अट्ठजोयणविक्खंभाओ चउजोयणबाहल्लाओ महिंदज्झया चउसट्ठिजोयणुच्चा जोयणोववेधा जोयणविक्खंभा सेसं तं चेव। एवं चउद्दिसिं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ, णवरि खोयरसपडिपुण्णाओ जोयणसतं आयामेणं पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उव्वेधेणं सेसं तं चेव।

२. जी० ३।३९३,३९४।

३. मलयगिरिवृत्तौ अत्र एतत् सूचितमस्ति—'अच्छाओ सण्हाओ रययमयकूलाओ' इत्यादि पुष्करिणीवर्णनं जगत्युपरिपुष्करिणीवद् वक्तव्यं नवरं 'खोदरसपडिपुण्णाओ' इति वक्तव्यम्।

४. जी० ३।३९५,३९६।

५. अत्र वृत्तिकृता पाठान्तरस्य सूचना कृतास्ति—इदमन्यदधिकं पुस्तकान्तरे दृश्यते—'तासि णं पुक्खरिणीणं चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं—

'पुव्वेण असोगवणं दाहिणतो होइ सत्तपण्णवणं।
अवरेण चंपगवणं चूयवणं उत्तरे पासे॥१॥'

वृत्तिकृता सूचितौ पाठभेदौ (जी० ३।९१०) स्थानाङ्गेपि (४।३३९-३४३) उपलभ्येते तथा पुष्करिणीनां नामान्यपि स्वीकृतपाठाद् भिन्नानि पाठान्तरसदृशानि दृश्यते। असौ च वाचनाभेदोवगन्तव्यः।

६. मलयगिरिणा 'गुलिका, मनोगुलिका' इति सूत्रद्वयं व्याख्यातम्—'तेसु णं' मित्यादि, तेषु सिद्धायतनेषु प्रत्येकं-प्रत्येकमष्टचत्वारिंशत् गुलिकासहस्राणि गुलिकाः—पीठिका अभिधीयन्ते, ताश्च मनोगुलिकापेक्षया प्रमाणतः क्षुल्लास्तासां सहस्राणि गुलिकासहस्राणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—पूर्वस्यां दिसि षोडश सहस्राणि पश्चिमायां षोडशसहस्राणि दक्षिणस्यामष्टौ सहस्राणि उत्तरस्यामष्टौ सहस्राणि। 'तासु णं गुलियासु बहवे सुवण्णरुप्पामया फलगा पन्नत्ता' इत्यादि विजयदेवराजधानीगतसुधर्म्मासभायामिव वक्तव्यं यावद्दामवर्णनम्॥

'तेसु ण' मित्यादि, तेषु सिद्धायतनेषु प्रत्येकं प्रत्येकमष्टचत्वारिंशत् मनोगुलिका सहस्राणि प्रज्ञप्तानि, गुलिकापेक्षया प्रमाणतो महत्तराः, तद्यथा—पूर्वस्यां दिशि षोडश सहस्राणि, पश्चिमायां षोडशसहस्राणि, दक्षिणस्यामष्टौ सहस्राणि, उत्तरस्यामष्टौ सहस्राणि, एतास्वपि फलकनागदन्तकमाल्यदामवर्णनं प्राग्वत्। अस्यामेव प्रतिपत्तौ ३९५ सूत्रे वृत्तिकृता केवलं 'गुलिका' सूत्रमेव व्याख्यातमस्ति। ९०२-९०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमेणं सोलस्स साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं सोलस साहस्सीओ, दाहिणेणं अट्ठ साहस्सीओ, उत्तरेणं अट्ठ साहस्सीओ। तासु णं मणोगुलियासु[1] वहवे सुवण्ण-रुप्पमया फलगा जहा[2] विजयारायहाणीओ ॥

९०३. तेसु णं सिद्धायतणेसु पत्तेयं-पत्तेयं अडतालीसं गोमाणसियासाहस्सीओ[3] पण्णत्ताओ तधेव[4], णवरं—धूवघडियाओ ॥

९०४. तेसि णं सिद्धायतणाणं उल्लोया पउमलयाभत्तिचित्ता जाव[5] सव्वतवणिज्जमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

९०५. तेसि णं सिद्धायतणाणं अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे सद्दवज्जं[6] ॥

९०६. तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं मणि-पेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ सोलस जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

९०७. तासि[7] णं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं देवच्छंदए पण्णत्ते। ते णं देव-च्छंदगा सोलस जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, सातिरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

९०८. तेसु णं देवच्छंदएसु पत्तेयं-पत्तेयं अट्ठसयं जिणपडिमाणं तधेव जाव[8] अट्ठसतं धूवकडुच्छुगाणं ॥

९०९. तेसि णं सिद्धायतणाणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा[9] ॥

९१०. तत्थ[10] णं जेसे पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चतुद्दिसिं चत्तारि णंदाओ

सूत्राणां स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—मणोगुलियाणं गोमाणसीण य अडयालीसं-२ सहस्साइं पुरत्थिमेणवि सोलस पच्चत्थिमेणवि सोलस दाहिणेणवि अट्ठ उत्तरेणवि अट्ठ साहस्सीओ तहेव सेसं उल्लोया भूमिभागा जाव बहुमज्झदेसभागे मणिपेढिया सोलस जोयणा आयाम-विक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं।

७. मणगुलिया° (ता)।

१. मणुगुलियासु (ता)।

२. जी० ३।३९७।

३. मणुगुलिया° (ता)।

४. जी० ३।३९८।

५. जी० ३।३०८।

६. जी० ३।२७५-२८४।

७. ९०७-९०९ सूत्राणां स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठ भेदोस्ति—तासि णं मणि-पीढियाणं उप्पिं देवच्छंदगा सोलस जोय-णाइं आयामविक्खंभेणं सातिरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सव्वरयणा अट्ठसय जिणपडिमाणं सव्वो सो चेव गमो जहेव वेमा-णियसिद्धायतणस्स।

८. जी० ३।४१५-४१६।

९. जी० ३।२८९-२९१।

१०. ९१०-९१३ सूत्राणां स्थाने 'क, ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—तत्थ णं जेसे पुरच्छिमिल्ले अंजणपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदुत्तरा य णंदा आणंदा णंदिवद्धणा। ताओ णंदापुक्खरिणीओ एगमेगं जोयणसतसहस्सं आयामविक्खंभेणं दस जोयणाइं उव्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेदिया पत्तेयं-पत्तेयं वणसंड-परिक्खित्ता तत्थ तत्थ जाव सोवाण (सोमाण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ—णंदिसेणा अमोहा य गोथूभा[1] य सुदंसणा।
ताओ णं पुक्खरणीओ एगं जोयणसतसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, परिरओ[2] य दस जोयणाइं उव्वेधेणं, अच्छाओ, वण्णओ[3] 'णवरं—वट्टाओ समतीराओ खोदोदगपडिपुण्णाओ'[4] पत्तेयं-पत्तेयं वेइय-वणसंडपरिक्खित्ताओ[5], वण्णओ[6] ।।

९११. तासि णं पुक्खरणीणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं दधिमुहे पव्वते पण्णत्ते। ते णं दधिमुहा पव्वता चउसट्ठिं[7] जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेधेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, सव्वफालियामया[8] अच्छा जाव पडिरूवा, पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेदियापरिक्खित्ता, पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ता, वण्णओ[9] ।।

९१२. तेसि णं दधिमुहाणं पव्वताणं उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे[10] पण्णत्ते ।।

९१३. तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं-पत्तेयं सिद्धायतणे पण्णत्ते। सच्चेव अंजणगसिद्धायतणवत्तव्वता जाव[11] अट्ठट्ठमंगलगा ।।

९१४. तत्थ[12] णं जेसे दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ

—क) पडिरूवगा तोरणा। तासि णं पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं दहिमुहपव्वए पण्णत्ते, ते णं दहिमुहपव्वया चउसट्ठि जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता—सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइया वणसंडवण्णओ बहुसम जाव आसयंति सयंति। सिद्धायतणं तं चेव पमाणं अंजणपव्वएसु सच्चेव वत्तव्वया णिरवसेसं भाणियव्वं जाव उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा।

१. गोत्थुभा (ता)।

२. त्रीणि योजनशतसहस्राणि षोडश सहस्राणि द्वे शते सप्तविंशत्यधिके त्रीणि गव्यूतानि अष्टाविंशं धनुःशतं त्रयोदशाङ्गुलानि अर्द्धाङ्गुलं च किञ्चिद् विशेषाधिकं परिक्षेपेण प्रज्ञप्ताः (मवृ)।

३. जी० ३।२८६।

४. चिन्हाङ्कितपाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः 'ता' प्रतौ 'वेइयवणसंड वण्णओ' इति पाठान्तरं 'वट्टाओ समतीराओ एस विसेसो' इति पाठो लभ्यते।

५. अतः परं वृत्तिकृता पाठान्तरं सूचितम्—अत्रापीदमन्यदधिकं पुस्तकान्तरे दृश्यते—'तासि णं पुक्खरणीणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—पुरच्छिमेणं दाहिणेणं अवरेणं उत्तरेणं, पुव्वेणं असोगवणं जाव चूयवणं उत्तरे पासे एवं शेषाञ्जनपर्वतसम्बन्धिनीनामपि नन्दापुष्करिणीनां वाच्यम्।

६. जी० ३।२६५-२६७।

७. एगसट्ठि (ता)।

८. सव्वरयणामया (ठाणं ४।३४०)।

९. जी० ३।२६३-२६६।

१०. जी० ३।२७७-२६७; तस्य सशब्दवर्णनं तावद् वक्तव्यं यावद् बहवो 'देवा देवीओ य आसयंति सयंति जाव विहरंति' (मवृ)।

११. जी० ३।८८४-६०६।

१२. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—तत्थ णं जेसे दक्खिणिल्ले

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ—णंदुत्तरा य णंदा, आणंदा णंदिवद्धणा। 'सेसं तहेव'[1] ॥

६१५. तत्थ णं[2] जेसे पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ—भद्दा[3] य विसाला य कुमुदा पुंडरिगिणी। 'सेसं तहेव'[4] ॥

६१६. तत्थ[5] णं जेसे उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ—विजया वेजयंती, जयंती अपराजिया। 'सेसं तहेव'[6] ॥

६१७. तत्थ[7] णं बहवे भवणवति-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया देवा तिहिं चाउमासिएहिं पज्जोसवणाए य अट्ठविहाओ य महिमाओ करेंति। अण्णेसु य[8] बहूसु जिणजम्मण-निक्खमण-णाणुप्पादपरिणेव्वाणमादिएसु देवकज्जेसु य देवसमितीसु य 'देवसमवाएसु य देवसमुदएसु य'[9] समुवागता[10] समाणा पमुदितपक्कीलिता अट्ठाहियारूवाओ[11] महामहिमाओ करेमाणा सुहंसुहेणं विहरंति ॥

६१८. अदुत्तरं[12] च णं गोयमा ! णंदिस्सरवरे दीवे चक्कवालविक्खंभेणं बहुमज्झदेस-

---

अंजणपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भद्दा य विसाला य, कुमुया पुंडरिगिणी तं चेव पमाणं तहेव दधिमुहा पव्वया तं चेव पमाणं जाव सिद्धायतणा।

१. जेच्चेव पुरिमं जेणेव वि दधिमुहा सिद्धायतणविही सा इहवि (ता); जी० ३।६१०-६१३।

२. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—तत्थ णं जेसे पच्चत्थिमिल्ले अंजणपव्वए तस्स णं चउदिसिं चत्तारि णंदापुक्खरणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदिसेणा अमोहा य, गोत्थूभा य सुदंसणा। तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव सिद्धायतणा।

३. चंदा (ता)।

४. सच्चेव पुक्खरणीपमाणाइ विही जाव दधिमुहाणं (ता); जी० ३।६१०-६१३।

५. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—तत्थ णं जेसे उत्तरिल्ले अंजणपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदापुक्खरणीओ तं जहा—विजया वेजयंती जयंती अपराजिया। सेसं तहेव जाव सिद्धायतणा सव्वा चेइयवण्णणा णातव्वा।

६. सच्चेव विही (ता); जी० ३।६१०-६१३।

७. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि, आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—तत्थ णं बहवे भवणवइ-वाणमंतरजोतिसियवेमाणिया देवा चाउमासियपाडिवएसु संवच्छरिएसु वा अण्णेसु बहूसु जिणजम्मणणिक्खमणणाणुप्पत्तिपरिणिव्वाणमादिएसु य देवकज्जेसु य देवसमुदएसु य देवसमवाएसु य देवपओयणेसु य एगंतओ सहिता समुवागता समाणा पमुदितपक्कीलिया अट्ठाहितारूवाओ महामहिमाओ करेमाणा पालेमाणा सुहंसुहेणं विहरंति।

८. या (ता) अग्रे सर्वत्रापि।

९. देवसमुदएसु य देवसमवाएसु य (ता)।

१०. आगता (मवृ)।

११. अट्ठाहियाओ य (ता)।

१२. 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु रतिकरपर्वतालापको नैव विद्यते। मलयगिरिणापि सूचितमिदम्—रतिकरपर्वतचतुष्टयवक्तव्यता केषुचित् पुस्तकेषु सर्वथा न दृश्यते। ताडपत्रीयादर्शे मलयगिरिवृत्तौ च रतिकरपर्वतालापक उपलब्धोस्ति। स्थानाङ्गेपि (४।३४४-३४८) नन्दीश्वरवरद्वीपवर्णने एष आलापक उपलभ्यते। दिगम्बरसाहित्येपि एष उपलभ्यते (जैनेन्द्र-सिद्धान्त-कोश, भाग ३, पृष्ठ ५०३)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाए चउसु विदिसासु चत्तारि रतिकरपव्वता[1] पण्णत्ता, तं जहा—उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरपव्वते, दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरपव्वते, दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरपव्वते, उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरपव्वते। ते णं रतिकरपव्वता 'दस जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं'[2], [दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं ?] सव्वत्थ समा झल्लरिसंठाणसंठिया दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कत्तीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

९१९. तत्थ[3] णं जेसे उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

णंदुत्तरा णंदा उत्तरकुरा देवकुरा।
कण्हाए कण्हराईए रामाए रामरक्खियाए॥

९२०. तत्थ णं जेसे दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

सुमणा[4] सोमणसा अच्चिमाली मणोरमा।
पउमाए सिवाए सचीए अंजूए॥

---

१. रतिकरगपव्वता (ता, ठाणं ४।३४४) सर्वत्र।

२. ताडपत्रीयादर्शे चिन्हाङ्कितपाठस्थाने केवलं 'पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं' पाठोस्ति। चिह्नाङ्कितः पाठो मलयगिरिवृत्त्यनुसारी वर्तते। एतौ द्वावपि पाठौ वाचनानन्तरगतौ विद्येते अथवा केनापि कारणेन विपर्यस्तौ सञ्जातौ। कोष्ठकवर्तिपाठः स्थानाङ्गानुसारी वर्तते, स एवात्र युक्तोस्ति। दशमे स्थानेपि अस्य संवादी पाठो दृश्यते—दस जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं (१०।४३)। दिगम्बरग्रन्थेष्वपि उच्चताया उद्वेधस्य च एतदेव प्रमाणं लभ्यते (जैनेन्द्रसिद्धान्तकोश, भाग ३, पृष्ठ ५०३)।

३. ९१९-९२२ सूत्राणां पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः। स्थानाङ्गेपि (४।३४५-३४८) अस्य संवादी पाठो लभ्यते। ताडपत्रीयादर्शेत्र भिन्ना वाचना दृश्यते—तत्थ णं जेसे दाहिणिल्ले पुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं एत्थ णं सक्कस्स दे ३ चउण्हं अग्गमहिसीणं चत्तारि रायहाणीओ पं तं चंदप्पभा सुरप्पभा सुंकप्पभा सुलसप्पभा। पयुमाए सिवाए सईए अंजूए। तत्थ णं जेसे दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चतु एत्थ णं सक्कस्स देव चउण्हं अग्गमहि चत्तारि रायहाणीओ पं तं णिम्मला पंवेवण्णा कलहंसा धतरट्ठा। अमलाए अच्छराए नवमियाए रोहिणीए। तत्थ णं जेसे उत्तरपच्च रति तस्स णं चउद्दिसिं एत्थ णं ईसाणस्स दे ३ चउण्हं अग्गम ४ रायहाणीओ पं तं अट्ठा सिद्धत्था य सव्वभूता णिरामणी। कण्हाए कण्हराईए रामाए रामरक्खिताए। तत्थ णं जेसे उत्तरपुर र तस्स णं चउद्दिसिं एत्थ णं ईसा चउण्हं अग्गम चत्तारि रायहाणीओ पं तं वरदा वरदत्ता य गोत्थुभा य सुदंसणा। वसूए वसुमित्ताए वसुंधराए।

४. समणा (ठाणं ४।३४६)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९२१. तत्थ णं जेसे दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

भूता भूतवडेंसा गोथूभा सुदंसणा।
अमलाए अच्छराए णवमियाए रोहिणीए॥

९२२. तत्थ णं जेसे उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिमीसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

रयणा रतणुच्चया सव्वरतणा रतणसंचया।
वसूए वसुगुत्ताए[1] वसुमित्ताए वसुंधराए॥

९२३. केलास[2]-हरिवाहणा यत्थ दो देवा महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति। से तेणट्ठेणं 'जाव[3] णिच्चे'[4]॥

९२४. जोतिसं संखेज्जं[5]॥

णंदिस्सरोदसमुद्दाधिगारो

९२५. णंदिस्सरवरण्णं[6] दीवं णंदिस्सरोदे णामं समुद्दे वट्टे[7] •वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठइ। जच्चेव खोदोदसमुद्दस्स वत्तव्वता[8] सच्चेव इहं पि अट्ठसाहिया। सुमण-सोमणसा यत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति।

९२६. चंदादि संखेज्जा॥

अरुणादिदीवसमुद्दाधिगारो

९२७. णंदिस्सरोदण्णं[9] समुद्दं अरुणे णामं दीवे वट्टे, खोदवरदीवं वत्तव्वता[10] अट्ठसहिता

---

१. 'ता' प्रतौ एतत्पदमनुपलब्धमस्ति, मलयगिरिवृत्तौ 'वसुप्राप्तायाः' इतिपदोल्लेखो मुद्रितवृत्तौ हस्तलिखितवृत्तित्रयेपि विद्यते, किन्तु स्थानाङ्गभगवत्योः सन्दर्भे ज्ञायते एतत्पदं समीचीनं नास्ति। अत्र 'वसुगुत्ताए' इति पदं युज्यते। द्रष्टव्यं ठाणं ४।३४८,८।२८; भ० १०।९९)। वृत्तिकृता यादृशः पाठो लब्धस्तादृश एव उल्लिखितः।

२. कइलास (क,ख,ग,ट,त्रि)।

३. जी० ३।३५०।

४. णंदिस्सरवरे दीवे २ (ता)।

५. जी० ३।८५५।

६. ९२५,९२६ सूत्रयोः स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—णंदिस्सरवरण्णं दीवं णंदीसरोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते जाव सव्वं तहेव अट्ठो जो खोदोदगस्स जाव सुमणसोमणसभद्दा यत्थ दो देवा महिड्ढीया जाव परिवसंति सेसं तहेव जाव तारग्गं।

७. सं० पा०—वट्टे जाव चिट्ठति।

८. जी० ३।८७७-८७९।

९. णंदिस्सरवरोदं णं (ता); ९२७-९५४ सूत्राणां स्थाने अस्माभिः 'ता' प्रते वृत्तेश्चाधारेण पाठः स्वीकृतः। अन्यादर्शगताः पाठाः पाठान्तररूपेण गृहीताः सन्ति, ते सूत्राङ्कानुसारेण यथास्थानं परिलक्षितव्याः—णंदीसरोदं समुद्दं अरुणे णामं णंदीसरोदं समुद्दं अरुणे णामं दीवे वट्टे वलयागार जाव संपरिक्खित्ता णं चिट्ठति। अरुणे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सा इहं च, णवरं[१]—पव्वतगादी सव्ववइरामया। असोग-वीतसोगा यत्थ दो देवा ।।

९२८. अरुणण्णं[२] दीवं अरुणोदे णामं समुद्दे वट्टे, खोदोदसरिसो[३] गमो सुभद्द-सुमण-भद्दा यत्थ दो देवा ।।

९२९. अरुणोदण्णं[४] समुद्दं अरुणवरे णामं दीवे वट्टे, सोच्चेव गमो[५], णवरं—अरुणवरभद्द-अरुणवरमहाभद्दा यत्थ दो देवा ।।

९३०. अरुणवरण्णं[६] दीवं अरुणवरोदे णामं समुद्दे वट्टे जाव चिट्ठति। तधेव[७], णवरं—अरुणवर-अरुणमहावरा यत्थ दो देवा ।।

९३१. अरुणवरोदण्णं[८] समुद्दं अरुणवरोभासे णामं दीवे वट्टे जाव चिट्ठति। खोददीव-गमो[९], णवरं—अरुणवरोभासभद्द-अरुणवरोभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा ।।

९३२. अरुणवरोभासण्णं[१०] दीवं अरुणवरोभासे णामं समुद्दे वट्टे, सच्चेव खोदोदसमुद्दवत्तव्वता[११], णवरं—अरुणवरोभासवर-अरुणवरोभासमहावरा यत्थ दो देवा ।।

९३३. कुंडले[१२] दीवे कुंडले समुद्दे[१३], कुंडलवरे दीवे कुंडलवरे समुद्दे, कुंडलवरोभासे दीवे

णं भंते ! दीवे किं समचक्कवालसंठिते विसमचक्कवालसंठिए ? गोयमा ! समचक्कवालसंठिते नो विसमचक्कवालसंठिते, केवतियं चक्कवालसंठिते ? संखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं संखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते, पउमवरवणसंडदारा दारंतरा य तहेव संखेज्जाइं जोयणसतसहस्साइं दारंतरं जाव अट्ठो, वावीओ खोतोदगपडिहत्थाओ उप्पातपव्वयका सव्ववइरामया अच्छा, असोग वीतसोगा य एत्थ दुवे देवा महिड्ढीया जाव परिवसंति से तेण० जाव संखेज्जं सव्वं।

१०. जी० ३।८७४-८७६।

१. वृत्तौ 'नवरमत्र वाप्यादयः क्षीरो (क्षोदो) दक परिपूर्णाः' इति उल्लिखितमस्ति, किन्तु एतत् पूर्वं प्रतिपादितमेव। द्रष्टव्यं जी० ३।८७५।

२. अरुणण्णं दीवं अरुणोदे णामं समुद्दे तस्स वि तहेव परिक्खेवो अट्ठो खोतोदगे णवरिं सुभद्द सुमणभद्दा एत्थ दो देवा महिड्ढीया सेसं तहेव।

३. जी० ३।८७७-८७९।

४. अरुणोदगं समुद्दं अरुणवरे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाण° तहेव संखेज्जगं सव्वं जाव अट्ठो खोयोदगपडिहत्थाओ उप्पायपव्वतया सव्ववइरामया अच्छा, अरुणवरभद्द अरुणवरमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिड्ढीया।

५. जी० ३।८७४-८७६।

६. एवं अरुणवरोदेवि समुद्दे जाव देवा अरुणवर-अरुणमहावरा य एत्थ दो देवा सेसं तहेव ।।

७. जी० ३।८७७-८७९।

८. अरुणवरोदण्णं समुद्दं अरुणवरावभासे णामं दीवे वट्टे जाव देवा अरुणवरावभासभद्दारुणवरावभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा महिड्ढीया।

९. जी० ३।८७४-८७६।

१०. एवं अरुणवरावभासे समुद्दे णवरि देवा अरुणवरावभासवरारुणवरावभासमहावरा एत्थ दो देवा महिड्ढीया।

११. जी० ३।८७७-८७९।

१२. कुंडले दीवे कुंडलभद्दकुंडलमहाभद्दा (कुंड-कुंडलभद्दा—क) दो देवा महिड्ढीया। कुंडलोदे समुद्दे चक्खुसुभचक्खुकंता एत्थ दो देवा म०। कुंडलवरे दीवे कुंडलवरभद्दकुंडलवरमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिड्ढीया, कुंडलवरोदे समुद्दे कुंडलवर महाकुंडलवरा एत्थ दो देवा म०। कुंडलवरावभासे दीवे कुंडलवरावभास-भद्दकुंडलवरावभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंडलवरोभासे समुद्दे, एताइं नामाइं। देवा—कुंडले दीवे 'कुंडलभद्द-कुंडलमहाभद्दा'[1] यत्थ दो देवा। कुंडले समुद्दे चक्खुसुभचक्खुकंता यत्थ दो देवा। कुंडलवरे दीवे कुंडलवरभद्द-कुंडलवरमहाभद्दा यत्थ दो देवा। कुंडलवरे समुद्दे कुंडलवर-कुंडलमहावरा यत्थ दो देवा। कुंडलवरोभासे दीवे कुंडलवरोभासभद्द-कुंडलवरोभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा। कुंडलवरोभासे समुद्दे कुंडलवरोभासवर-कुंडलवरोभासमहावरा यत्थ दो देवा॥

९३४. एवं[2] रुयए दीवे रुयए समुद्दे, रुयगवरे दीवे रुयगवरे समुद्दे, रुयगवरोभासे[3] दीवे रुयगवरोभासे[4] समुद्दे, ताओ चेव वत्तव्वताओ[5], णवरं—रुयए दीवे सव्वट्ठ-मणोरमा यत्थ दो देवा। रुयए समुद्दे सुमण-सोमणसा यत्थ दो देवा। रुयगवरे दीवे रुयगवरभद्द-रुयगवरमहाभद्दा यत्थ दो देवा। रुयगवरे समुद्दे रुयगवर-रुयगवरमहावरा यत्थ दो देवा। रुयगवरोभासे दीवे रुयगवरोभासभद्द-रुयगवरोभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा। रुयगवरोभासे समुद्दे रुयगवरोभासवर-रुयगवरोभासमहावरा यत्थ दो देवा[6]॥

९३५. हारे[7] दीवे हारे समुद्दे, हारवरे दीवे हारवरे समुद्दे, हारवरोभासे दीवे हारवरो-

---

कुंडलवरोभासोदे समुद्दे कुंडलवरोभासवर-कुंडलवरोभासमहावरा एत्थ दो देवा म० जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति।

१३. एवं कुण्डलो द्वीपः कुण्डलः समुद्रश्च त्रिप्रत्यवतारो वक्तव्यः (मवृ)।

१. कुंडल-कुंडलभद्दा (ता)।

२. कुंडलवरोभासं णं समुद्दं रुचगे णामं दीवे वट्टे वलया जाव चिट्ठति, किं समचक्क विसमचक्कवाल? गोयमा! समचक्कवाल नो विसमचक्कवालसंठिते, केवतियं चक्कवाल पण्णत्ते? सव्वट्ठ मणोरमा एत्थ दो देवा सेसं तहेव। रुयगोदे नामं समुद्दे जहा खोतोदे समुद्दे संखेज्जाइं जोयणसतसहस्साइं चक्कवाल संखेज्जाइं जोयणसतसहस्साइं परिक्खेवेणं दारा दारंतरंपि संखेज्जाइं जोतिसंपि सव्वं संखेज्जं भाणियव्वं, अट्ठोवि जहेव खोदोदस्स नवरि सुमणसोमणसा एत्थ दो देवा महिड्ढीया तहेव रुयगाओ आढत्तं असंखेज्जं विक्खंभा परिक्खेवो दारा दारंतरं च जोइसं च सव्वं असंखेज्जं भाणियव्वं। रुयगोदण्णं समुद्दं रुयगवरं णं दीवे वट्टे रुयगवरभद्दरुयगवरमहाभद्दा एत्थ दो देवा रुयगवरोदे रुयगवररुयगवरमहावरा एत्थ दो देवा महिड्ढीया। रुयगवरावभासे दीवे रुयगवरावभासभद्दरुयगवरावभासमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिड्ढीया। रुयगवरावभासे समुद्दे रुयगवरावभासवररुयगवरावभासमहावरा एत्थ।

३. रुयगवरो भासवरे (ता)।

४. रुयगवरोभासवरे (ता)।

५. जी० ३।८७४-८७९।

६. अस्यानन्तरं वृत्तिकृता एका टिप्पणी कृतास्ति—एतावता ग्रन्थेन यदन्यत्र पठ्यते—
जंबुद्दीवे लवणे धायइ कालोय पुक्खरे वरुणे।
खीरघयखोयनंदी अरुणवरे कुंडले रुयगे॥१॥
इति तद्भावितम्। अत ऊर्ध्वं तु यानि लोके शङ्खध्वजकलशश्रीवत्सादीनि शुभानि नामानि तन्नामानो द्वीपसमुद्राः प्रत्येतव्याः, सर्वेपि च त्रिप्रत्यवताराः, अपान्तराले च भुजगवरः कुशवरः कौञ्चवर इति। द्रष्टव्यं प्रस्तुतागमस्य ३।७७५ सूत्रं तथा अनुयोगद्वारस्य १८५ सूत्रम्।

७. ९३५-९३७ सूत्राणां स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठो विद्यते—हारद्दीवे हारभद्दहारमहाभद्दा एत्थ। हारसमुद्दे हारवरहारवरमहावरा एत्थ दो देवा महिड्ढीया। हारवरे दीवे हारवरभद्दहारवरमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिड्ढीया। हारवरोए समुद्दे हारवरहारवर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भासे समुद्दे, ताओ च्चेव वत्तव्वताओ, णवरं—हारे दीवे हारभद्द-हारमहाभद्दा यत्थ दो देवा। हारे समुद्दे हारवर-हारमहावरा यत्थ दो देवा। हारवरे दीवे हारवरभद्द-हारवरमहाभद्दा यत्थ दो देवा। हारवरे समुद्दे हारवर-हारवरमहावरा यत्थ दो देवा। हारवरोभासे दीवे हारवरोभासभद्द-हारवरोभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा। हारवरोभासे समुद्दे हारवरोभासवर-हारवरोभासमहावरा यत्थ दो देवा॥

९३६. एवं सेसाभरणाणवि[1] तिपडोयारो भेदो भाणियव्वो जाव कणगरयणमुत्तावली[2]॥

९३७. एवं वत्थादीणं सव्वेसिं तिपडोयारं। वत्थं—आयिणादि, गंधा—कोट्ठादि, उप्पलादीणि वि तिपडोयारं, तिलगादीण वि रुक्खाणं, पुढवादीणं छत्तीसाए पदाणं तिपडोयारं, णिधीणं वि तिपडोयारं, चोद्दसण्हं रयणाणं तिपडोयारं चुल्लहिमवंतादीणं वासधरपव्वताणं, पउमादीणं[3] सोलसण्हं दहाणं, गंगासिंधुआदीणं महाणदीणं अंतरणदीण य, कच्छादीण वि बत्तीसण्हं विजयाणं, मालवंतादीणं चउण्हं वक्खारपव्वयाणं, सोहम्मादीणं दुवालसण्हं कप्पाणं, सक्कादीणं दसण्हं इंदाणं, 'देवकुर-उत्तरकुराणं, मंदरस्स, आवासाणं'[4], चुल्लहिमवंतादीणं बारसण्हं कूडाणं, कत्तियादीणं अट्ठावीसण्हं णक्खत्ताणं, चंदसूराणं, सव्वेसिं तिपडोयारं जाव सूरद्दीवे॥

९३८. 'सूरवरोभासण्णं[5] समुद्दं'[6] देवे णामं दीवे वट्टे जाव चिट्ठति। तधेव[7] णवरं[8]—

महावरा एत्थ। हारवराभासे दीवे हारवरावभासभद्दहारवरावभासमहाभद्दा एत्थ। हारवरावभासोए समुद्दे हारवरावभासवरहारवरावभासमहावरा एत्थ। एवं सव्वेवि तिपडोयारा णेतव्वा जाव सूरवरोभासोए समुद्दे, दीवेसु भद्दनामा वरनामा होंति उदहीसु, जाव पच्छिमभावं च खोतवरादीसु सयंभूरमणपज्जंतेसु वावीओ खोओदगपडिहत्थाओ पव्वयका य सव्ववइरामया।

१. °णाणिवि (ता)।

२. कणगणितजालग (ता)।

३. पयुमादीणं (ता)।

४. देवकुरउत्तरकुरमंदिरेसु णेरइयादीसु प्क आवासेसु (ता); वृत्तौ 'णेरइयादीसु' इति पाठो नास्ति व्याख्यातः। अनुयोगद्वारेऽपि (१८५।४) 'कुरु-मंदर आवासा' इति पाठो विद्यते। अस्मिन्नपि 'णेरइय' पदस्य सङ्ग्रहो नास्ति, तेनास्माभिर्मूले न स्वीकृतः।

५. ९३८-९५२ सूत्राणां स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठो विद्यते—देवदीवे दीवे दो देवा महिड्ढीया देवभद्ददेवमहाभद्दा एत्थ देवोदे समुद्दे देववरदेवमहावरा एत्थ जाव सयंभूरमणे दीवे सयंभूरमणभद्दसयंभूरमणमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिड्ढीया। सयंभुरमणण्णं दीवं सयंभुरमणोदे नामं समुद्दे वट्टे वलया जाव असंखेज्जाइं जोयणसतसहस्साइं परिक्खेवेणं जाव अट्ठो, गोयमा! सयंभुरमणोदए उदए अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते, सयंभुरमणवरसयंभूरमणमहावरा इत्थ दो देवा महिड्ढीया. सेसं तहेव जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभेंसु वा ३।

६. सूरणं दीवं (ता)।

७. जी० ३।८४९-८५१; ९५२। मलयगिरिणा वृत्तौ 'देवे णं भंते! दीवे' इति सूत्रमुल्लिखितं ततश्चैका टिप्पणी कृता—इदं तु सूत्रं बहुषु पुस्तकेषु न दृश्यते केषुचित् 'तहेव' इत्यतिदेश इति लिखितम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३९. कहि णं भंते ! देवस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! देवदीव-पुरत्थिमपेरंते देवसमुद्दपुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं देवस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते, पमाणं वण्णओ य भाणियव्वो जाव[1] विहरति ।।

६४०. कहि णं भंते ! विजयस्स देवस्स विजया णामं रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! विजयस्स दारस्स पच्चत्थिमेणं देवदीवं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं विजयस्स देवस्स विजया णामं रायहाणी पण्णत्ता जाव[2] एमहाणुभागे विजए देवे, विजए देवे ।।

६४१. एवं वेजयंत-जयंत-अपराइतादी, अट्ठो ।।

६४२. जोतिसं सव्वं जहा[3] रुयगदीवस्स णवरं—देवभद्द-देवमहाभद्दा यत्थ दो देवा ।।

६४३. देवण्णं दीवं देवोदे णामं समुद्दे वट्टे जाव चिट्ठति जाव[4]—

६४४. कहि णं भंते ! देवोदस्स समुद्दस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! देव-समुद्दपुरत्थिमपेरंते णागदीवपुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं देवोदस्स समुद्दस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते जाव विहरति । रायहाणी विजयदारस्स पच्चत्थिमेणं देवसमुद्दं तिरिय-मसंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं जाव एम्महिड्ढीए विजए देवे[5] ।।

६४५. जहा देवदीवे तहा णागदीवे, जहा देवसमुद्दे तहा णागसमुद्दे[6] ।।

६४६. एवं [जाव[7] ?]सयंभुरमणसमुद्दे णवरं—सयंभुरमणस्स उदए जहा पुक्खरोदस्स। सयंभुरमणे[8] पदेसा ण भण्णंति, जीवाणं उववातो ण भण्णति ।।

६४७. देवे[9] णागे[10] 'जक्खे भूते'[11] सयंभुरमणे एक्केक्के च्चेव भाणितव्वे तिपडोगारं

---

८. वृत्तिकृता 'देवद्वीपस्य द्वारसङ्ख्यासम्बन्धिसूत्र-मपि व्याख्यातम् ।

१. जी० ३।३०८-३५० ।

२. जी० ३।३५१-५६५ ।

३. द्रष्टव्यं जी० ३।६५२ ।

४. जी० ३।८४६-८५१; ६५२ ।

५. वृत्तौ विजयद्वारवक्तव्यतानन्तरं एवं व्याख्यात-मस्ति—एवं वैजयन्तजयन्तापराजितद्वारवक्त-व्यतापि भावनीया, नामान्वर्थचिन्तायामपि देववरदेवमहावरौ देवौ, शेषं तथैव यथा देवो द्वीपः । किन्तु ताडपत्रीयादर्शे अस्या व्याख्यायाः पाठो नैव दृश्यते ।

६ नवरं—नागे द्वीपे नागभद्रनागमहाभद्रौ, यथा देवः समुद्रः तथा नागः समुद्रः, नवरं—नाग-समुद्रे नागवरनागमहावरौ (मवृ) ।

७. वृत्तौ अतः पूर्वं यक्ष-भूतसंज्ञकं द्वीपद्वयं समुद्र-द्वयं च व्याख्यातमस्ति—एवं यक्षादयोपि द्वीप-समुद्रा वक्तव्याः नवरं—यक्षे द्वीपे यक्षभद्रयक्ष-महाभद्रौ देवौ, यक्षे समुद्रे यक्षवरयक्षमहावरौ, भूते द्वीपे भूतभद्रभूतमहाभद्रौ, भूते समुद्रे भूत-वरमहाभूतवरौ । ततश्च स्वयम्भूरमणस्य व्याख्यानं विद्यते—स्वयम्भूरमणे द्वीपे स्वयम्भू-रमण भद्र स्वयम्भूरमणमहाभद्रौ स्वयम्भूरमणे समुद्रे स्वयम्भूवर-स्वयंभूमहावरौ ।

८. सतंभु° (ता) ।

९. मलयगिरिणा 'देवे नागे' इत्यादि तथा चाह इत्युल्लेखपूर्वकं उद्धृतं मूलटीका-चूर्णिव्याख्यान-मपि समुद्धृतम्—तथा चाह 'देवे नागे जक्खे भूए य सयंभूरमणे अ एक्केके भाणियव्वो ।' मूल-टीकाकारोप्याह—'देवादयोन्त्या एकाकारा' । इति, चूर्णिकारोप्याह—'देवे नागे जक्खे भूए य सयंभूरमणे एतेन्तिमाः पञ्च एकैकाः प्रति-पत्तव्याः' ।

१०. णाते (ता) ।

११. भूते जक्खे (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णत्थि ॥

९४८. णंदिस्सरादीणं सयंभुरमणपज्जवसाणाणं[1] अट्ठ[चिंताए?[2]] बावीओ खोतोदग-पडिहत्थाओ उप्पातपव्वतगादी सव्ववइरामया ॥

९४९. 'णंदिस्सरादीणं भूतपज्जवसाणाणं समुद्दाणं अट्ठ [चिंताए ?[3]] खोदसरिसं उदगं'[4] सयंभुरमणसमुद्दस्स पुक्खरोदसरिसं ॥

९५०. अरुणादीया [दीव?]समुद्दा तिपडोयारा जाव सूरा, सेसा पंच एगभेया—देवे दीवे देवे समुद्दे, नागे[5] दीवे नागे समुद्दे, जक्खे दीवे जक्खे समुद्दे, भूते दीवे भूते समुद्दे, सयंभुरमणे दीवे सयंभुरमणे समुद्दे ॥

९५१. देवे दीवे देवभद्द-देवमहाभद्दा देवा, देवे समुद्दे देववर-देवमहावरा देवा। एवं जाव[6] सयंभुरमणे समुद्दे सयंभुवर-सयंभुमहावरा देवा ॥

९५२. रुयगादीणं दीवसमुद्दाणं विक्खंभ-परिक्खेव-दारंतरजोतिसं च असंखेज्जं ॥

दीवसमुद्दपरिमाणाधिगारो

९५३. केवतिया[7] णं भंते ! जंबुद्दीवा दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा जंबुद्दीवा दीवा पण्णत्ता। एवं जाव चंदसूरा असंखेज्जा ॥

९५४. केवतिया[8] णं भंते ! देवा दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे देवदीवे पण्णत्ते। दस वि एगागारा पण्णत्ता ॥

लवणादिसमुद्द-उदयरसाधिगारो

९५५. 'लवणस्स[9] णं भंते ! समुद्दस्स उदए'[10] केरिसए आसादेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! खारे कडुए[11] जाव[12] णण्णत्थ तज्जोणियाणं सत्ताणं ॥

---

१. सयंभुरमणं जाव अवसाणाणं (ता)।

२. अन्वर्थचिन्तायाम् (मवृ)।

३. अन्वर्थचिन्तायाम् (मवृ)।

४. खोदोदगादीणं सयंभुरमणावसाणाणं समुद्दाणं अट्ठि खोतोदसरिसं उदगं (ता)।

५. णाते (ता)।

६. द्रष्टव्यं ९४६ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

७. ९५३,९५४ सूत्रयोः स्थाने 'क, ख, ग,ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—केवइया णं भंते ! जंबुद्दीवा दीवा णामधेज्जेहिं पण्णता ? गोयमा ! असंखेज्जा जंबुद्दीवा २ नामधेज्जेहिं पण्णत्ता, केवतिया णं भंते ! लवणसमुद्दा २ पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा लवणसमुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता, एवं धायतिसंडावि, एवं जाव असंखेज्जा सूरदीवा नामधेज्जेहि य। एगे देवे दीवे पण्णत्ते एगे देवोदे समुद्दे पण्णत्ते, एवं णागे जक्खे भूते जाव एगे सयंभूरमणे दीवे एगे सयंभूरमणसमुद्दे णामधेज्जेणं पण्णत्ते।

८. कति (मवृ)।

९. ९५५-९६२ सूत्राणां स्थाने यथावकाशं 'क,ख, ग, ट, त्रि' गताः पाठभेदाः परिभावनीयाः, यथा—लवणस्स णं भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्य उदए आइले रइले लिंदे लवणे कडुए अपेज्जे बहूणं दुपयचउप्पयमिगपसुपक्खिसरिस-वाणं, णण्णत्थ तज्जोणियाणं सत्ताणं।

१०. लवणे णं भंते ! (ता)।

११. खडुए (ता)।

१२. जी० ३।७२१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९५६. कालोयस्स[1] णं पुच्छा। गोयमा! आसले मासले जाव[2] पगतीए उदगरसे णं पण्णत्ते॥

९५७. पुक्खरोदस्स[3] णं पुच्छा। गोयमा! पुक्खरोदस्स उदए अच्छे पत्थे जाव[4] पगतीए उदगरसे णं पण्णत्ते॥

९५८. वरुणोदस्स[5] णं भंते! समुद्दस्स केरिसए अस्सादे णं पण्णत्ते? गोयमा! से जहानामए चंदप्पभाति वा जहा[6] हेट्ठा॥

९५९. खीरोदस्स[7] णं पुच्छा। गोयमा! से जहानामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चाउरक्के गोक्खीरे जाव[8] एत्तो इट्ठतराए॥

९६०. घयोदस्स[9] णं पुच्छा। गोयमा! जहाणामते सारइयस्स गोघयवरस्स मंडे जाव[10] एत्तो मणामतराए चेव आसादे णं पण्णत्ते॥

९६१. खोतोदस्स[11] णं भंते! समुद्दस्स उदए केरिसए आसाए णं पण्णत्ते? गोयमा! से जहानामए उच्छूणं जाव[12] एत्तो इट्ठतराए॥

---

१. कालोयस्स णं भंते! समुद्दस्स उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते? गोयमा! पेसले आसले मासले कालए मासरासिवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते।

२. जी० ३।८१९।

३. पुक्खरोदगस्स णं भंते! समुद्दस्स उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते? गोयमा! अच्छे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते।

४. जी० ३।८५४।

५. वरुणोदस्स णं भंते! गोयमा! से जहाणामए—पत्तासवेति वा चोयासवेति वा खज्जूरसारेति वा मुद्दियासारेति वा सुपक्कखोतरसेति वा मेरएति वा काविसायणेति वा चंदप्पभाति वा मणसिलाति (मणिसलागाति—क, ख, ट) वा वरसीधूति वा पवरवारुणीति वा अट्ठपिट्ठपरिणिट्ठिताति वा जंबूफलकालिया वरप्पसण्णा उक्कोसमदप्पत्ता ईसिउट्ठावलंबिणी ईसितंबच्छिकरणी ईसिवोच्छेयकरणी आसला मासला पेसला वण्णेणं उववेता जाव णो तिणट्ठे समट्ठे, वारुणोदए इत्तो इट्ठतरए चेव जाव अस्साएणं प०।

६. जी० ३।८६०।

७ खीरोदस्स णं भंते! उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते? गोयमा! से जहाणामए—रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चाउरक्के गोखीरे पयत्तमंदग्गिसुकढिते आउत्तखंडमच्छंडितोववेते वण्णेणं उववेते जाव फासेण उववेए, भवे एयारूवे सिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा! खीरोयस्स एत्तो इट्ठ जाव अस्साएणं पण्णत्ते।

८. जी० ३।८६६।

९. घतोदस्स णं से जहाणामए सारतिकस्स गोघयवरस्स मंडे सल्लइकण्णियारपुप्फवण्णाभे सुकढितउदारसज्झवीसंदिते वण्णेणं उववेते जाव फासेण य उववेए भवे एयारूवे सिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, इत्तो इट्ठयरो।

१०. जी० ३।८७२।

११. खोदोदस्स से जहाणामए उच्छूण जच्चपुंडकाण हरियालपिंडराणं भेरुंडच्छूण वा कालपोराणं तिभागनिव्वाडियवाडगाणं बलवगणरजंतपरिगालियमित्ताणं जे य रसे होज्जा वत्थपरिपूए चाउज्जातगसुवासिते अहियपत्थे लहुए वण्णेणं उववेए जाव भवेयारूवे सिया? नो तिणट्ठे समट्ठे एत्तो इट्ठयरा।

१२. जी० ३।८७८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९६२. जहा[1] खोतो तहा सेसा वि। सयंभुरमणस्स जहा पुक्खरोदस्स ॥

९६३. कति णं भंते ! समुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता, तं जहा—लवणे वरुणोदे खीरोदे घयोदे ॥

९६४. कति णं भंते ! समुद्दा पगतीए उदगरसा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुद्दा पगतीए उदगरसा पण्णत्ता, तं जहा—कालोए[2] पुक्खरोदे सयंभुरमणे। अवसेसा समुद्दा उस्सण्णं खोतरसा पण्णत्ता[3] ॥

समुद्देसु जीवाधिगारो

९६५. कति[4] णं भंते ! समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णत्ता, तं जहा—लवणे कालोए[5] सयंभुरमणे। अवसेसा[6] समुद्दा अप्पमच्छकच्छभाइण्णा। 'णो च्चेव णं णिम्मच्छकच्छभा'[7] पण्णत्ता समणाउसो[8] ! ॥

९६६. लवणे णं भंते ! समुद्दे कति मच्छजातिकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त मच्छजातिकुलकोडीजोणीपमुहसतसहस्सा पण्णत्ता ॥

९६७. कालोए णं नव ॥

९६८. सयंभुरमणे पुच्छा अद्धतेरस मच्छजातिकुलकोडीजोणीपमुहसतसहस्सा पण्णत्ता ॥

९६९. लवणे णं भंते! समुद्दे मच्छाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं पंच जोयणसयाइं ॥

९७०. कालोए णं सत्त जोयणसताइं ॥

९७१. सयंभूरमणे जोयणसहस्सं[9] ॥

दीवसमुद्दाणं नामधेज्जादि अधिगारो

९७२. केवतिया णं भंते ! दीवसमुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ? गोयमा ! जावतिया लोगे सुभा णामा सुभा वण्णा सुभा गंधा सुभा रसा सुभा फासा एवतिया दीवसमुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ॥

९७३. केवतिया णं भंते ! दीवसमुद्दा उद्धारेणं[10] पण्णत्ता ? गोयमा ! जावतिया अड्ढाइज्जाणं उद्धारसागरोवमाणं उद्धारसमया एवतिया दीवसमुद्दा उद्धारेणं[11] पण्णत्ता ॥

९७४. दीवसमुद्दा णं भंते ! किं पुढविपरिणामा आउपरिणामा जीवपरिणामा पोग्गलपरिणामा ? गोयमा ! पुढविपरिणामावि आउपरिणामावि जीवपरिणामावि पोग्गल-

---

१. एवं सेसगाणवि समुद्दाणं भेदो जाव सयंभुरमणस्स, णवरि अच्छे जच्चे पत्थे जहा पुक्खरोदस्स ।
२. कालोयणे (ता) ।
३. पण्णत्ता समणाउसो (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
४. एतत् सूत्रं 'ता' प्रतौ ९७१ सूत्रस्य अनन्तरं विद्यते ।
५. कावोयणे (ता) ।
६. अवसेसा णं (ता) ।
७. × (क,ख,ग,ट,त्रि) ; °कच्छभाइण्णा (ता) ।
८. × (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
९. जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति उक्कोसेणं दस जोयणसताइं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
१०. उद्धारसमएणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
११. उद्धारसमएणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिणामावि ।।

६७५. दीवसमुद्देसु णं भंते ! सव्वपाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता[1] उववण्ण-पुव्वा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ।।

इंदियविसयाधिगारो

६७६. कतिविहे णं भंते ! इंदियविसए पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदियविसए पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियविसए जाव फासिंदियविसए ।।

६७७. सोतिंदियविसए णं भंते ! पोग्गलपरिणामे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुब्भिसद्दपरिणामे य दुब्भिसद्दपरिणामे य ।।

६७८. चक्खिदियपुच्छा[2]। गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुरूवपरिणामे य दुरूव-परिणामे य ।।

६७९. घाणिंदयपुच्छा। गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुब्भिगंधपरिणामे य दुब्भिगंधपरिणामे य ।।

६८०. रसपरिणामे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुरसपरिणामे य दुरसपरिणामे य ।।

६८१. फासपरिणामे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुफासपरिणामे य दुफासपरिणामे य ।।

६८२. से नूणं भंते ! 'उच्चावएसु सद्दपरिणामेसु'[3] उच्चावएसु रूवपरिणामेसु एवं गंधपरिणामेसु रसपरिणामेसु फासपरिणामेसु परिणममाणा पोग्गला परिणमंतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! 'उच्चावएसु सद्दपरिणामेसु'[4] परिणममाणा पोग्गला परिणमंतित्ति वत्तव्वं सिया ।।

६८३. से णूणं भंते ! सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति दुब्भिसद्दा पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमति ? हंता गोयमा ! सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दा पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति ।।

६८४. से[5] णूणं भंते ! सुरूवा पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति ? दुरूवा पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! ।।

६८५. एवं सुब्भिगंधा पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति ? दुब्भिगंधा पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! ।।

६८६. एवं सुरसा दुरसत्ताए ? हंता गोयमा ! ।।

६८७ एवं सुफासा दुफासत्ताए ? हंता गोयमा ! ।।

---

१. सव्वसत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. ६७८-६८१ सूत्राणां स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—एवं चक्खिदि-यविसयादिएहिवि सुरूवपरिणामे य दुरूपरिणामे य। एवं सुरभिगंधपरिणामे य दुरभिगंध-परिणामे य, एवं सुरसपरिणामे य दूरसरिणामे य। एवं सुफासपरिणामे य दुफासपरिणामे य।

३. उच्चावएहिं सद्दपरिणामेहिं (ता) ।

४. उच्चावएहिं सद्दपरिणामेहिं (ता) ।

५. ६८४-६८७ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ संक्षिप्तपाठोस्ति— एवं रूवगंधरसफासेसु अप्पणो अभिलावेणं दो-दो आलावगा। वृत्तावपि इत्थमेव व्याख्यातमस्ति—एवं रूपरसगन्धस्पर्शेष्वप्यात्मीयात्मीयाभिलापेन द्वौ द्वावालापकौ वक्तव्यौ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवगति-पदं

६८८. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता[2] पभू तमेव[3] अणुपरियट्टित्ताणं गिण्हित्तए ? हंता पभू ॥

६८९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति--देवे णं महिड्ढीए जाव 'महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं'[4] गिण्हित्तए ? गोयमा ! पोग्गले णं खित्ते समाणे पुव्वामेव सिग्घगती भवित्ता तओ पच्छा मंदगती भवति, देवे णं[5] 'पुव्वंपि पच्छावि'[6] सीहे सीहगती चेव तुरिए तुरियगती चेव । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति--'देवे णं महिड्ढीए जाव महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव'[7] अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए ॥

देवविगुव्वणा-पदं

६९०. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए[8] पोग्गले अपरियाइत्ता बालं[9] अच्छेत्ता अभेत्ता पभू गढित्तए[10] ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

६९१. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता बालं[11] छेत्ता भेत्ता पभू गढित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

६९२. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता बालं[12] अच्छेत्ता अभेत्ता पभू गढित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

६९३. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता बालं[13] छेत्ता भेत्ता पभू गढित्तए ? हंता पभू । तं चेव णं गंठिं[14] छउमत्थे मणूसे[15] ण जाणति ण पासति, एसुहुमं[16] च णं गढेज्जा ॥

६९४. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता बालं अच्छेत्ता अभेत्ता पभू दीहीकरित्तए वा ह्रस्सीकरित्तए[17] वा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

६९५. •[18]देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता

---

१. जी० ३।३५० ।
२. खवित्ता (त्रि) ।
३. तामेव (ता) ।
४. × (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
५. णं महिड्ढीए जाव महाणुभागे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
६. पुव्विं वा पच्छा वा (ता) ।
७. जाव एवं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
८. बाहिरिए (क, ख) ।
९. पुव्वामेव बालं (क,ख, ग, ट, त्रि) ।
१०. गहित्तए (ग,त्रि) सर्वत्र ।
११. पुव्वामेव बालं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
१२. पुव्वामेव बालं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
१३. पुव्वामेव बालं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
१४. संधिं (ख, ता, त्रि) ।
१५. × (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
१६. एवं सुहुमं (क, ख, ग): सुहुमं (ता) ; वृत्तौ 'एवं खलु' इति व्याख्यातमस्ति, किन्तु 'एगहिड्ढीया' इति पाठवत् 'एसुहुमं' इति पाठो युज्यते ।
१७. ह्रासी° (क) ।
१८. सं पा०-- एवं चत्तारिवि गमा, पढमबिइयभंगेसु अपरियाइत्ता एगंतरियगा अच्छेत्ता अभेत्ता, सेसं तहेव (क, ख, ग, ट, त्रि) ; तच्चेव आलावता ह्व जाव हंता पभू (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बालं छेत्ता भेत्ता पभू दीहीकरित्तए वा ह्रस्सीकरित्तए वा ? णो इणट्ठे समट्ठे ।।

९९६. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता बालं अच्छेत्ता अभेत्ता पभू दीहीकरित्तए वा ह्रस्सीकरित्तए वा ? णो इणट्ठे समट्ठे ।।

९९७. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता बालं छेत्ता भेत्ता पभू दीहीकरित्तए वा ह्रस्सीकरित्तए वा ? हंता पभू°। तं चेव णं गंठिं[1] छउमत्थे मणूसे ण जाणति ण पासति, एसुहुमं च णं दीहीकरेज्ज वा ह्रस्सीकरेज्ज वा ।।

जोइस-उद्देसओ

९९८. अत्थि णं भंते ! चंदिम-सूरियाणं हेट्ठिंपि[2] तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? उप्पिपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? हंता अत्थि ।।

९९९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—अत्थि णं 'चंदिम-सूरियाणं जाव उप्पिपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि'[3] ? गोयमा ! जहा जहा णं तेसिं देवाणं तव-नियम-'बंभचेराइं उस्सियाइं'[4] भवंति तहा तहा णं तेसिं देवाणं एवं पण्णायति अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—अत्थि णं चंदिम-सूरियाणं जाव उप्पिपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ।।

१०००. एगमेगस्स णं भंते ! चंदिम-सूरियस्स केवतिया णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो ? केवतिया महग्गहा परिवारो पण्णत्तो ? केवतिया तारागणकोडिकोडीओ[5] परिवारो पण्णत्तो[6] ? गोयमा ! एगमेगस्स णं चंदिम-सूरियस्स 'अट्ठावीसं णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो, अट्ठासीतिं महग्गहा परिवारो पण्णत्तो'[7],

गाहा—छावट्ठि सहस्साइं, णव य सताइं पंच सयराइं ।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडकोडीणं ।।१।।

१००१. जंबूदीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स[8] केवतियं अबाहाए जोतिसं चारं चरति ? गोयमा ! एक्कारस एक्कवीसे जोयणसते अबाहाए जोतिसं चारं चरति ।।

१००२. लोगंताओ भंते ! केवतियं अबाहाए जोतिसे पण्णत्ते[9] ? गोयमा ! एक्कारस

---

१. संधि (क,ख) ; 'तं च णं सिद्धि' मिति, तां ह्रस्वीकरणसिद्धि दीर्घीकरणसिद्धि वा (मवृ) ।
२. हट्ठिंपि (ग, ट, ता) ; हिट्ठंपि (त्रि) ।
३. उच्चारणा (ता) ।
४. बंभचेरवासाइं उक्कडाइं उस्सियाइं (क, ग,) ट, त्रि); बंभचेरवासाइं उस्सियाइं (ख) ; बंभचेराणुसिताणि (ता) ।
५. °कोडिकोडिसया (ता) ।
६. वृत्तिकृता वाचनाभेदस्य सूचना कृतास्ति—इह भूयान् पुस्तकेषु वाचनाभेदो गलितानि च सूत्राणि बहुषु पुस्तकेषु ततो यथावस्थितवाचना भेदप्रतिपत्त्यर्थं गलितसूत्रोद्धरणार्थं चैवं सुगमान्यपि विव्रियन्ते ।
७. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एका गाथा विद्यते—
अट्ठासीतिं च गहा अट्ठावीसं च होइ नक्खत्ता ।
एगससीपरिवारो एत्तो ताराण वोच्छामि ।।१।।
८. अतः परं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु भिन्ना वाचना दृश्यते—पुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ केवतियं अबाधाए जोतिसं चारं चरंति ? गोयमा ! एकारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अबाधाए जोतिसं चारं चरति, एवं दक्खिणिल्लाओ पच्चत्थिमिल्लाओ उत्तरिल्लाओ एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयण जाव चारं चरति ।
९. चारं वच्चति (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कारे जोयणसते अबाहाए जोतिसे पण्णत्ते[1] ॥

१००३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ केवतियं अबाहाए हेट्ठिल्ले[2] तारारूवे चारं चरति ? केवतियं अबाहाए सूरविमाणे चारं चरति ? केवतिए अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति ? केवतियं अबाहाए उवरिल्ले[3] तारारूवे चारं चरति ? 'गोयमा ! सत्त णउते जोयणसते अबाहाए'[4] हेट्ठिल्ले तारारूवे चारं चरति, 'अट्ठ जोयणसताइं'[5] अबाहाए सूरविमाणे चारं चरति, 'अट्ठ असीते जोयणसते'[6] अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति, नव जोयणसयाइं अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति ॥

१००४. हेट्ठिल्लाओ[7] णं भंते ! तारारूवाओ केवतियं अबाहाए सूरविमाणे चारं चरति ? केवइयं अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति ? केवतियं अबाहाए उवरिल्ले[8] तारारूवे चारं चरति ? गोयमा[9] ! दसहिं जोयणेहिं अबाहाए सूरविमाणे चारं चरति, णउतीए जोयणेहिं अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति, दसुत्तरे जोयणसते अबाहाए उवरिल्ले[10] तारारूवे चारं चरति ॥

१००५. सूरविमाणाओ णं भंते ! केवतियं अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति ? केवतियं अबाहाए उवरिल्ले[11] तारारूवे चारं चरति ? गोयमा[12] ! असीए[13] जोयणेहिं अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति, जोयणसए[14] अबाहाए उवरिल्ले[15] तारारूवे चारं चरति ॥

१००६. चंदविमाणाओ णं भंते ! केवतियं अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति ? गोयमा[16] ! वीसाए जोयणेहिं अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति एवामेव[17] सपुव्वावरेणं दसुत्तरजोयणसतबाहल्ले[18] तिरियमसंखेज्जे जोतिसविसए 'जोतिसे चारं चरति'[19] ॥

१००७. जंबूदीवे णं भंते ! दीवे कयरे णक्खत्ते सव्वब्भितरिल्लं[20] चारं चरति ? कयरे नक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं[21] चारं चरति ? कयरे नक्खत्ते सव्वउवरिल्लं[22] चारं चरति ?

---

१. चारं (ता) एतद्द्वयमपि अशुद्धं प्रतिभाति।
२. सव्वहेट्ठिल्ले (क, ख, ग, ट, त्रि)।
३. सव्वउवरिल्ले (क, ख, ग, ट, त्रि)।
४. गोयमा इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरणि सत्तहिं णउएहिं जोयणसतेहिं अबाहाए जोतिस (क, ख, ग, ट, त्रि)।
५. अट्ठहिं जोयणसतेहिं (क, ख, ग, ट, त्रि)।
६. अट्ठहिं असीएहिं जोयणसतेहिं (क, ख, ग, ट, त्रि)।
७. सव्वहेट्ठिमिल्लाओ (क, ख, ग, ट, त्रि)।
८. सव्वउवरिल्ले (क, ख, ग, ट, त्रि)।
९. गोयमा ! सव्वहेट्ठिल्लाओ णं (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१०. सव्वोपरिल्ले (क, ख, ग, ट, त्रि)।
११. सव्वउवरिल्ले (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१२. गोयमा सूरविमाणाओ णं (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१३. असीतीए (ता)।
१४. एगंमि जोयणसते (ता)।
१५. सव्वोवरिल्ले (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१६. गोयमा ! चंदविमाणाओ णं (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१७. वृत्तौ अतः सूत्रपर्यवसानं पाठो नैव व्याख्यातः।
१८. दसुत्तरसत जोयणबाहल्ले (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१९. पण्णत्ते (क, ख, ग, ट, त्रि)।
२०. सव्वब्भंतरयं (ता)।
२१. सव्वबाहिरियं (ता)।
२२. सव्वुप्परियं (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कयरे नक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्लं[1] चारं चरति ? गोयमा[2] ! अभिइनक्खत्ते[3] सव्वब्भितरिल्लं[4] चारं चरति, मूले णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरति, साती णक्खत्ते सव्वोवरिल्लं[5] चारं चरति, भरणीणक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्लं चारं चरति ।।

१००८. चंदविमाणे णं भंते ! किंसंठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! अद्धकविट्ठगसंठाण-संठिते सव्वफालियामए अब्भुग्गतमूसितपहसिते वण्णओ[6] ।।

१००९. 'एवं सूरविमाणेवि नक्खत्तविमाणेवि गहविमाणेवि ताराविमाणेवि'[7] ।।

१०१०. चंदविमाणे णं भंते ! केवतियं आयाम-विक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खेवेणं ? केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! छप्पन्ने एगसट्ठिभागे[8] जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, अट्ठावीसं एगसट्ठिभागे[9] जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१०११. 'सूरविमाणस्सवि सच्चेव'[10] पुच्छा । गोयमा ! अडयालीसं एगसट्ठिभागे[11] जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, चउवीसं एगसट्ठिभागे[12] जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१०१२. 'एवं गहविमाणेवि'[13] अद्धजोयणं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, कोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१०१३. 'णक्खत्तविमाणे णं'[14] कोसं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, अद्धकोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१०१४. 'ताराविमाणे णं'[15] अद्धकोसं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, पंचधणुसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१०१५. चंदविमाणं[16] णं भंते ! कति देवसहस्सा परिवहंति ? गोयमा ! सोलस देव-

---

१. सव्वहेट्ठिमयं (ता) ।
२. गोयमा जंबूदीवे णं दीवे (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
३. अभीइ° (ग, त्रि) ।
४. सव्वब्भंतरं (ता) ।
५. सव्वुपरिल्लं (क, ख, ट) ।
६. जी० ३।३०७ ।
७. एवं पंचवि जाव ताराविमाणे (ता) ; अतोग्रे 'क,ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु 'सव्वं अद्धकविट्ठसं-ठाणसंठिता' एतावान् अतिरिक्तः पाठो विद्यते ।
८,९. एगट्ठिभाए (ता) ।
१०. सूरविमाणे (ता) ।
११,१२. एगट्ठिभाए (ता) ।
१३. गहवि केवतियं आ पुच्छा गो (ता); वृत्तौ अतः त्रीण्यपि सूत्राणि पूर्णानि व्याख्यातानि सन्ति ।
१४. णक्खत्तंपि पुच्छा गो (ता) ।
१५. ताराधि पुच्छा गो (ता) ।
१६. चंदविमाणे (ता); 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु भिन्नः पाठः उपलभ्यते—चंदविमाणे णं भंते ! कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ? गोयमा ! चंदविमाणस्स णं पुरच्छिमेणं सेयाणं सुभगाणं सुप्पभाणं (सप्पभाणं—क,ग,ट) संखतलविमलनिम्मलदधिघणगोखीरफेणरययणिगरप्पगासाणं थिरलट्ठपउट्ठ-वट्टपीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबितमुहाणं रत्तुप्पलपत्तमउयसुमालतालुजीहाणं मधुगुलिय-पिंगलक्खाणं पसत्थसत्थवेरुलियभिसंतकक्कडनहाणं विसालपीवरोरुपडिपुण्णविउलखंधाणं मिउविसय-पसत्थसुहुमलक्खणविच्छिण्णकेसरसडोवसोभिताणं चंकमितललियपुलितधवलगव्वितगतीणं उस्सिय-सुणिम्मियसुजायअप्फोडियणंगूलाणं वइरामयणक्खाणं वइरामयदंताणं वयरामयदाढाणं (वयरामय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाढाणं तवणिज्जखुराणं--त्रि)' तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुयाणं तवणिज्जजोत्तगसुजोतिताणं कामगमाणं पीतिगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं मणोहराणं अमीयगतीणं अमियबलवीरियपुरिसकार-परक्कमाणं महता अप्फोडियसीहनाइयबोलकलयलरवेणं (गंभीरगुलगुलाइयरवेणं---ख; हयहेसिय-किलकिलाइयरवेणं---त्रि) महुरेण मणहरेण य पूरेंता अंबरं दिसाओ य सोभयंता चत्तारि देवसाह-स्सीओ सीहरूवधारीणं देवाणं पुरच्छिमिल्लं बाहं परिवहंति ।

चंदविमाणस्स णं दक्खिणेणं सेयाणं सुभगाणं सुप्पभाणं संखतलविमलनिम्मलदधिघणगोखीरफेण-रययणियरप्पभासाणं वइरामयकुंभजुयलसुट्ठितपीवरवरवइरसोंडवियदित्तसुरत्तपउमप्पकासाणं अब्भुण्ण-यमुहाणं (गुणाणं—त्रि) तवणिज्जविसालचंचलचलंतचवलकण्णविमलुज्जलाणं मधुवण्णभिसंतणिद्धपिंग-लपत्तलतिवण्णमणिरयणलोयणाणं अब्भुग्गतमउलमल्लियाणं धवलसरिससंठितणिव्वणदढमसिण [कसिण ---जं० ७।१७७] फालियामयसुजायदंतमुसलोवसोभिताणं कंचणकोसीपविट्ठदंतग्गविमलमणिरयणरुइर-पेरंतचित्तरूवगविराधिताणं तवणिज्जविसालतिलगपमुहपरिमंडिताणं णाणामणिरयणगुलियगेवेज्जब-द्धगलयवरभूसणाणं वेरुलियविचित्तदंडणिम्मलवइरामयतिक्खलट्ठअंकुसकुंभजुयलंतरोडियाणं तवणिज्ज-सुबद्धकच्छदप्पियबलुद्धुराणं जंबूणयविमलघणमंडलवइरामयलालाललियतालणाणामणिरयणघंटपासग-रयतामयरज्जूबद्धलंबितघंटाजुयलमहुरसरमणहराणं अल्लीणपमाणजुत्तवट्टियसुजातलक्खणपसत्थरमणि-ज्जवालगत्तपरिपुंछणाणं ओवचियपडिपुण्णकुम्मचलणलहुविक्कमाणं अंकामयणक्खाणं तवणिज्जतालु-याणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जजोत्तगसुजोतियाणं कामकमाणं पीतिकमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं मणोहराणं अमियगतीणं अमियबलवीरियपुरिसकारपरक्कमाणं महया गंभीरगुलगुलाइयरवेणं महुरेण मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिसाओ य सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ गयरूवधारीणं देवाणं दक्खिणिल्लं बाहं परिवहंति ।

चंदविमाणस्स णं पच्चत्थिमेणं सेताणं सुभगाणं सुप्पभाणं चंकमियललियपुलितचलचवलककुद-सालीणं सण्णयपासाणं संगयपासाणं सुजायपासाणं मियमाइतपीणरइतपासाणं झसविहगसुजातकुच्छीणं पसत्थणिद्धमधुगुलितभिसंतपिंगलक्खाणं विसालपीवरोरुपडिपुण्णविपुलखंधाणं वट्टपडिपुण्णविपुल-कवोलकलिताणं ईसिं आणय (आयय---त्रि) वसणोवट्ठाणं घणणिचितसुबद्धलक्खणुण्णतचंकमित-ललितपुलियचक्कवालचवलगव्वितगतीणं पीवरोरुवट्टिय (वट्टियपीवर— क,ख,ट; पीवरवट्टिय—ग) सुसंठितकडीणं ओलंबपलंबलक्खणपसत्थरमणिज्जवालगंडाणं समखुरवालधाणाणं समलिहिततिक्खग्ग (तिक्खग्गगुप्प---ट) सिंगाणं तणुसुहुमसुजातणिद्धलोमच्छविधराणं उवचितमंसलविसालपडिपुण्ण-खंधपमुहपुंडराणं वेरुलियभिसंतकडक्खसुणिरिक्खणाणं जुत्तप्पमाणप्पधाणलक्खणपसत्थरमणिज्ज-गग्गरगलसोभिताणं घग्घरगसुबद्धकण्ठपरिमंडियाणं नाणामणिकणगरयणघण्टवेयच्छगसुकयरतियमालि-याणं वरघंटागलगलियसोभंतसस्सिरीयाणं पउमुप्पलसगलसुरभिमालाविभूसिताणं वइरखुराणं विविधखुराणं फालियामयदंताणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुयाणं तणिज्जजोत्तगसुजोत्तियाणं कामकमाणं पीतिकमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं मणोहराणं अमितगतीणं अमियबलवीरियपुरिसयार-परक्कमाणं महया गंभीरगज्जियरवेणं मधुरेणं मणहरेण य पूरेंता अंबरं दिसाओ य सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ वसभरूवधारीणं देवाणं पच्चत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति ।

चंदविमाणस्स णं उत्तरेणं सेयाणं सुभगाणं सुप्पभाणं जच्चाणंतरमल्लिहायणाणं हरिमेलामउलमल्लि-यच्छाणं घणणिचितसुबद्धलक्खणुण्णताचंकमियललियपुलियचलचवलचंचलगतीणं लंघणवग्गणधावण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहस्सा परिवहंति, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं। पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं चत्तारि देवसहस्सा परिवहंति, दाहिणेणं[1] गयरूवधारीणं देवाणं चत्तारि देवसहस्सा परिवहंति, पच्चत्थिमेणं वसभरूवधारीणं देवाणं चत्तारि देवसहस्सा परिवहंति, उत्तरेणं आसरूवधारीणं देवाणं चत्तारि देवसहस्सा[2] परिवहंति ।।

१०१६. सूरस्सवि[3] एमेव ।।

१०१७. गहविमाणे णं भंते ! कति देवसहस्सा परिवहंति ? गोयमा ! अट्ठ देव-सहस्सा, रूवा चंदे तधेव, णवरं—दो दो ।।

१०१८. णक्खत्तविमाणं णं चत्तारि सहस्सा, दिसाए एक्केक्काए सहस्सा ।।

१०१९. ताराविमाणं णं दो सहस्सा पुरत्थिमेणं पंच सया, दिसाए-दिसाए पंच-पंच सता ।।

१०२०. एतेसि णं भंते ! चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो

धारणतिवइजइणसिविखतगईणं सण्णतपासाणं संगतपासाणं सुजायपासाणं मितमायितपीणरइयपासाणं झसविहगसुजातकुच्छीणं पीणपीवरवट्टितसुसंठितकडीणं ओलंबपलंबलक्खणपसत्थरमणिज्जवालगंडाणं तणुसुहुमसुजायणिद्धलोमच्छविधराणं मिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणविकिण्णकेसरवालिधराणं (पालि-धराणं—क, ख, ट; बालधराणं—त्रि) ललियसविलासगतिलाडवरभूसणाणं मुहमंडगोचूलचमरथा-सगपरिमंडियकडीणं तवणिज्जखुराणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुयाणं तवणिज्जजोत्तगसुजोतियाणं कामगमाणं पीतिगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं मणोहराणं अमितगतीणं अमियबलवीरियपुरिसयार-परक्कमाणं महया हयहेसियकिलकिलाइयरवेणं महुरेणं मणहरेण य पूरेंता अंबरं दिसाओ य सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ हयरूवधारीणं देवाणं उत्तरिल्लं बाहं परिवहंति ।

मलयगिरिणा अस्य पाठस्य सूचना कृतास्ति तथा अस्यार्थावलोकनाय जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिटीकाया नामोल्लेखः कृतः—क्वचित्सिंहादीनां वर्णनं दृश्यते तद्बहुषु पुस्तकेषु न दृष्टमित्युपेक्षितं, अवश्यं चेत्तद्व्याख्यानेन प्रयोजनं तर्हि जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिटीका परिभावनीया, तत्र सविस्तरं तद्व्याख्यानस्य कृतत्वात् । किन्तु आदर्शेषु उपलब्धः पाठः जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिपाठात् बहुषु स्थानेषु भिन्नोस्ति, उपलब्धा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिटीकापि आचार्यमलयगिरेरुत्तरकालीनास्ति, तेनैव भेदोसौ दृश्यते ।

१. दाधिणेणं (ता) ।

२. देवसधस्सा (ता) ।

३. १०१६-१०१९ सूत्राणां स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु भिन्नः पठोस्ति—एवं सूरविमाणस्सवि पुच्छा, गोयमा ! सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति पुव्वकमेणं । एवं गहविमाणस्सवि पुच्छा, गोयमा ! अट्ठ देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं जहा—सीहरूवधारीणं दो देवाणं साहस्सीओ पुरत्थि-मिल्लं बाहं परिवहंति, गयरूवधारीणं दो देवाणं साहस्सीओ दक्खिणिल्लं, दो देवाणं साहस्सीओ उसभरूवधारीणं पच्चत्थिमं, दो देवसाहस्सीओ तुरगरूवधारीणं उत्तरिल्लं बाहं परिवहंति । एवं णक्खत्तविमाणस्सवि पुच्छा, गोयमा ! चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं जहा—सीहरूव-धारीणं देवाणं एग्गा देवसाहस्सी पुरत्थिमिल्लं बाहं, एव चउद्दिसिंपि । एवं तारगाणवि, णवरि दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं जहा सीहरूवधारीणं देवाणं पंचदेवसता पुरत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति एवं चउद्दिसिंपि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अप्पगती वा ? सिग्घगती वा'[1] ? गोयमा ! चंदेहिंतो सूरा सिग्घगती, सूरेहिंतो गहा सिग्घगती, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगती, णक्खत्तेहिंतो 'तारा सिग्घगती,'[2] सव्वप्पगती चंदा, सव्वसिग्घगती तारारूवा[3] ॥

१०२१. एतेसि णं भंते ! चंदिम जाव ताराख्वाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा ? महिड्ढिया वा ? गोयमा ! तारारूवेहिंतो[4] णक्खत्ता महिड्ढीया, णक्खत्तेहिंतो गहा महिड्ढीया, गहेहिंतो सूरा महिड्ढीया, सूरेहिंतो चंदा महिड्ढीया, सव्वप्पिड्ढिया[5] तारारूवा, सव्वमहिड्ढीया चंदा ॥

१०२२. जंबूदीवे णं भंते ! दीवे तारारूवस्स य तारारूवस्स य एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे अंतरे पण्णत्ते, तं जहा—'वाघाइमे य निव्वाघाइमे य'[6] । तत्थ[7] णं जेसे णिव्वाघातिमे से जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं दो गाउयाइं 'तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते'[8] । तत्थ णं जेसे वाघातिमे से जहण्णेणं दोण्णि य छावट्ठे जोयणसए, उक्कोसेणं बारस जोयणसहस्साइं दोण्णि य बायाले[9] जोयणसए तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

१०२३. चंदस्स णं भंते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि-चत्तारि देविसहस्सा परिवारो पण्णत्तो । पभू णं ततो एगमेगा देवी अण्णाइं चत्तारि-चत्तारि देविसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए । एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देविसहस्सा पण्णत्ता । से तं तुडियं ॥

१०२४. पभू णं भंते ! चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडेंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदंसि सीहासणंसि[10] तुडिएण सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१०२५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—नो पभू चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडेंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? गोयमा ! चंदस्स जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो चंदवडेंसए विमाणे[11] सभाए सुधम्माए माणवगंसि चेतियखंभंसि[12] वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुयाओ जिण-सकहाओ सण्णिखित्ताओ चिट्ठंति, जाओ[13] णं चंदस्स जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो अण्णेसिं

---

१. सिग्घगती वा मंदगती वा (क, ख, ग, ट त्रि)।
२. ताराओ सिग्घतरियाओ (ता) ।
३. तारा (ता) ।
४. ताराहिंतो (ता) ।
५. सव्वप्पड्ढिया (क, ख, ग, त्रि) ।
६. क्वचित्सर्वत्र 'वाघाइए निव्वाघाइए' इति पाठस्तत्र व्याघातो—यथोक्तरूपोऽस्यास्तीति व्याघातिकम्, 'अतोऽनेकस्वरा' दिति मत्वर्थीय इकप्रत्ययः, व्याघातिकान्निर्गतं निर्व्याघातिकमिति (मवृ) ।
७. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु पूर्वं व्याघातिमस्य ततश्च निर्व्याघातिमस्य पाठो विद्यते ।
८. × (ता) ।
९. बाताले (ता) ।
१०. सीहासणंसि सीहासणवरगते (ता) ।
११. विमाणे चंदाए रायहाणीए (जं० ७।१८३) ।
१२. °खंभे (ता) ।
१३. ताओ (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च बहूणं जोतिसियाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ जाव[1] पज्जुवासणिज्जाओ, 'तासि पणिहाए'[2] नो पभू चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडेंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदंसि सीहासणंसि जाव भुंजमाणे विहरित्तए। से एएणट्ठेणं[3] गोयमा ! एवं वुच्चति—नो पभू चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडेंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदंसि सीहासणंसि तुडिएण सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए।

'पभू णं गोयमा'[4] ! चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडेंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव[5] सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहूहिं जोतिसिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपुरिवडे महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, 'केवलं परियारणिड्ढीए'[6] नो चेव णं मेहुणवत्तियं॥

१०२६. सूरस्स णं भंते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सूरप्पभा आयवाभा[7] अच्चिमाली पभंकरा। 'एवं अवसेसं जहा चंदस्स, णवरि—सूरवडेंसए विमाणे सूरंसि सीहासणंसि। तहेव सव्वेसिं गहाईणं चत्तारि अग्गमहिसीओ, तं जहा—विजया वेजयंती जयंती अपराजिया, तेसिं पि तहेव'[8]॥

१०२७. चंदविमाणे णं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता[9] ? गोयमा ! जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं॥

१०२८. देवीणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं॥

१०२९. सूरविमाणे देवाणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं॥

१०३०. देवीणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससतेहिमब्भहियं॥

१०३१. गहविमाणे देवाणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं॥

१०३२. देवीणं जहण्णेणं, चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं॥

१०३३. णक्खत्तविमाणे देवाणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्ध-

---

१. जी० ३।४०२।

२. ताओ पणिधाओ (ता)।

३. तेणट्ठेणं (ता)।

४. अदुत्तरं च णं गोयमा पभू (क,ख,ग,ट,त्रि)।

५. जी० ३।३५०।

६. वृत्तौ एष पाठो व्याख्यातो नास्ति। 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु 'केवलं परियारतुडिएण सद्धिं भोगभोगाइं बुद्धीए' इति पाठो विद्यते। भगवत्यां (१०।६६) स्वीकृतपाठस्य संवादी पाठो लभ्यते - केवलं परियारिड्ढीए।

७. आतावा (ता) दोसिणाभा (ठाणं ४।१७६)।

८. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'ता' प्रतौ वृत्तौ च भिन्ना वाचना दृश्यते—जहा चंदे तधेव जाव णो मेहुणवत्तियं सूरवडेंसए विमाणे सूरे सीहासणे एस विसेसो।

९. अतः १०३६ सूत्राणां स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु संक्षिप्ता वाचना विद्यते—एवं जहा ठितीपए तहा भाणियव्वा जाव ताराणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलिओवमं ।।

१०३४. देवीणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगं चउब्भाग-पलिओवमं ।।

१०३५. ताराविमाणे देवाणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं चउब्भाग-पलिओवमं ।।

१०३६. देवीणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगं अट्ठभाग-पलिओवमं ।।

१०३७. एतेसि णं भंते ! चंदिमसूरियगहणक्खत्ततारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! चंदिमसूरिया एते णं दोण्णिवि तुल्ला सव्वत्थोवा, णक्खत्ता संखेज्जगुणा, गहा संखेज्जगुणा, ताराओ संखेज्जगुणाओ ।।

वेमाणियउद्देसओ पढमो

१०३८. कहि णं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं विमाणा पण्णत्ता ! कहि णं भंते ! वेमाणिया देवा परिवसंति[१] ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहणक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसताइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूइं जोयणकोडीओ बहूइं जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता[२] सोहम्मीसाण[३]-•सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुत-गेवेज्ज°-अणुत्तरेसु य, एत्थ णं वेमाणियाणं चतुरासीतिं विमाणा-वाससतसहस्सा सत्ताणउतिं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खाया । ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव[४] पडिरूवा । एत्थ[५] णं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति । सोध-म्मीसाण जाव अणुत्तरा य देवा मिग-महिस-वराह-सिंह-छगल-दद्दुर-जाव[६] आयरक्खदेव-साहस्सीणं[७] विहरंति ।।

१०३९. कहि णं भंते ! सोधम्मगाणं देवाणं विमाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! सोधम्मगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थ णं सोधम्मे णामं कप्पे पण्णत्ते—पाईणपडिणायते उदीणदाहिण-वित्थिण्णे जाव एत्थ णं सोधम्माणं देवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता । ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसि णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसगा पण्णत्ता । तत्थ णं बहवे सोधम्मगा देवा परिवसंति जाव विहरंति[८] । सक्के यत्थ

१. अतः १०३९ सूत्रपर्यन्तं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु संक्षिप्ता वाचना विद्यते—जहा ठाणपदे तहा सव्वं भाणियव्वं णवरं परिसाओ भाणितव्वाओ जाव सक्के, अन्नेसिं च बहूणं सोधम्मकप्पवासीणं देवाण य देवीण य जाव विहरंति ।

२. वीतिवतित्ता (ता) ।

३. सं. पा०—सोहम्मीसाण जाव अणुत्तरेसु ।

४. जी० ३।२६१ ।

५. तत्थ (ता) ।

६. पण्ण० २।४९ ।

७. अत्र अग्रेपि च कतिचित् स्थानेषु पाठसंक्षेपो विद्यते, स च वृत्तौ अथवा प्रज्ञापनायाः द्वितीयपदे द्रष्टव्यः ।

८. विधरंति (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देविंदे देवराया मघवं पागसासणे जाव[1] विहरंति ॥

१०४०. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कति परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिता चंडा जाता, अब्भितरिया समिया, मज्झिमिया चंडा, बाहिरिया जाता ॥

१०४१. सक्कस्स[2] णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरियाए परिसाए कति देव-

---

१. पण्ण० २।५० ।

२. १०४१-१०५५ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ किञ्चिद् भेदेन पाठरचनास्ति—सक्कस्स णं भं अब्भंतर-परि कति देवसहस्सा पं मज्झिमए कति देव बाहिरए कति देवसहस्सा पं अब्भितरपरिसाए कति देविसया पं मज्झिम कति देवि बाहिरपरिसाए कति देविसया पं ? गो सक्कस्स णं दे ३ अब्भितर-परिसाए बारस देवसहस्सा पं मज्झि चोद्द बाहिरए सोलस देवसहस्सा, अब्भितरपरिसा सत्त देविसता मज्झिमए छ देविसता बाहिरए पंच देविसया । सक्कस्स णं भं ३ अब्भंतरपरि देवाणं केवतिकालं ठिती पं मज्झिमए दे केवतिका ठिती पं बाहिं देवा के ठिती अब्भंतरपरिसाए देवीणं केवतिकालं ठिति पं मज्झिमए के बाहिरपरिसाए देवीणं केवतिकालं ठिती पं ? गो ! सक्कस्स णं ३ अब्भंतरए देवाणं पंच पलितोवमाइं ठिती पं मज्झि ४ बाहिरए ३ पलि, अब्भंतरपरिसाए देवीणं तिण्णि पलितोवमाइं ठिती मज्झिमए दो पलितो बाहिरए देवीणं एगं पलितोवमं ठिती पं । से केणट्ठेणं भं एवं वु सक्कस्स देवि ३ तओ परिसाओ पं तं समिया चंडा जाव अब्भंतरिया समिया जाव बाहिरिया जाता ? गोयमा ! सक्के णं दे ३ अब्भंतरए बाहित्ता हव्व तहेव जहा चमरस्स, अदुत्तरं अ णं गोतमा बाहिरपरिसाए सद्धि पयं पयंदेमाणे २ विहरति । से तेणट्ठे णं ? गोयमा एवं वु सक्कस्स णं दे ३ जाव बाहिरिया जाता ।

कहि णं भंते ईसाणगाणं देवाणं विमाणा पं ? कहि णं भं ईसाणगा देवा परिवसंति जाव ईसाणे दे विहरति । ईसाणस्स णं भं कति परिसाओ पं जधेव सक्कस्स णवरं पमाणं ठिती णाणत्तं अब्भं-तरपरिसाए दस देवसहस्सा मज्झि बारस दे सह बाहिरपरि चोद्दस दे सह अब्भंतरपरि णव देविसता मज्झिमए अट्ठ वा सत्त सता, अब्भतरपरिसाए देवाणं सत पलितोवमाइं ठिती पं मज्झिम छ बाहि पंच, अब्भंतरए देवीणं पंच मज्झि चत्तारि वा तिण्णि पलि । अट्ठे जहा सक्कस्स ।

कहि णं भंते ! सणंकुमारा देवाणं विमा जाव सणंकुमारस्स कति परिसाओ ? गो ! तओ परिसा तं समिया चंडा जाता, तधेव णवरं पमाणं ठिती अब्भंतरपरि अट्ठ देवसहस्सा मज्झिम दस सह बाहि बारस सह, अब्भंतरपरिसाए देवा अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं पंच य पलितोवमठिती पं मज्झिमपरि अद्धपंचमाइं सागरो ४ पलि बहिरपरि अद्धपंचमाइं सागरो तिण्णि य पलि । अट्ठो जहा सक्के णवरं देवीओ णत्थि ।

कहि णं भंते ! माहिंदाणं देवाणं विमाणा जाव माहिंदस्स अब्भंतरपरिसाए छ देवसहस्सा मज्झिमए अट्ठ सह बाहिं दस स । ठितीए अब्भंतरपरि अद्धपंच सागरोवमाइं सत्त य पलि मज्झिम अद्धपंच सागरो छच्च पलि बाहि अद्ध पंच सागरो पंच य पलितोवमाइं ठिती पं । अट्ठो जहा सक्कस्स ।

बंभलोगाए वि सोच्चेव ठाणपदं गमो जाव बंभे विहरति ।

तस्स अब्भंतरपरिसाए चत्तारि देवसहस्सा मज्झिमए छ देवसह बाहिरए अट्ठ देवसहस्सा । ठिती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहस्सीओ पण्णत्ताओ ? मज्झिमियाए परिसाए तहेव[1] बाहिरियाए पुच्छा। गोयमा ! सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए चोद्दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए सोलस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तहा अब्भितरियाए परिसाए सत्त देवीसयाणि, मज्झिमियाए छच्च देवीसयाणि, बाहिरियाए पंच देवीसयाणि पण्णत्ताइं ॥

१०४२. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरियाए परिसाए देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? एवं मज्झिमियाए बाहिरियाएवि ? गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरियाए परिसाए पंच पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, देवीणं ठिती—अब्भितरियाए परिसाए देवीणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए दुण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता। अट्ठो सो चेव जहा[2] भवणवासीणं ॥

१०४३. कहि णं भंते ! ईसाणगाणं देवाणं विमाणा पण्णत्ता ? तहेव सव्वं जाव ईसाणे एत्थ देविंदे देवराया जाव[3] विहरति ॥

अब्भंतपरिसाए अद्धणवमाइं सागरो पंच य पलिओवमाइं मज्झिमपरिसाए अद्धणवमाइं सागरो चत्तारि पलि बाहिरए अद्धणवमाइं सागरो तिण्णि य पलि।

कहि णं भंते ! लंत जाव अब्भंतरए दो देवसहस्सा मज्झिमए चत्तारि देवसह बाहिरपरि छ देवसह। अब्भंतरए देवाणं बारस सागरो सत्त य पलि मज्झिमपरि बारस साग छच्च पलि बाहिरपरि बारस साग पंच य पलि।

कहि णं भंते ! महासुक्के ठाणपदगमेणं जाव सपरिवारो विहरति। अब्भंतरपरिसाए एगा देवसाहस्सी मज्झिमपरि दो देवसाह बाहिरपरिसाए चत्तारि देवसाहस्सीओ, अब्भंतरपरिसाए अद्ध-सोलससागरोवमाइं पंच य प मज्झिमपरि अद्धसोलससाग चत्तारि य पलि बाहिरपरि अद्धसोलससा तिण्णि य पलि।

कहि णं भंते ! सहस्सारे विमाण पं जाव अब्भंतरपरि पंच देवसया मज्झिम एगं देवसाहस्सं बाहिर दो देवसह, अब्भंतरपरि अद्धट्ठारससागरोवम सत्त य पलि मज्झिमए अद्धट्ठारससाग च्छच्चपलि बाहि अद्धट्ठारससा पंच य पलि। अट्ठो। कहि णं भंते ! आणत-पाणता णामं दुवे कप्पा पं ? गो ! जाव पाणतस्स अब्भंतरपरि अड्ढाइज्जा देवसता मज्झिमपरि पंच देवसता बाहिर एगं देवसहस्सं, अब्भंतरए एकूणवीसं सागर पंच य प मज्झिम एकूणवीसं सा चत्तारि य पलि बाहिरए एकूणवीसं सा तिण्णि य प। अट्ठो य।

कहि णं भंते ! आरुणच्चुता जावच्चुते सपरिवारे विहरति। अब्भंतरपरि देवाणं पणुवीसं सयं मज्झिम अड्ढाइज्जा सता बाहिरए पंचसया, अब्भंतर परि एक्कवीसं सागरो सत्त य पलि मज्झि एक्कवीसं सा च्छच्च प बाहिर प एक्कवीसं सा पंच य प ठिती पं।

मलयगिरि वृत्तौ विस्तृतपाठो व्याख्यातोस्ति। एवं वाचना त्रयं जायते।

१. जी० ३।२३६,२३७। ३. पण्ण० २।५१।
२. जी० ३।२३९।

१०४४. ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कति परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिता चंडा जाता, तहेव सव्वं, णवरं—अब्भितरियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ, बाहिरियाए चोद्दस देवसाहस्सीओ। देवीणं पुच्छा। अब्भितरियाए णव देवीसता पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए अट्ठ देवीसता पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए सत्त देविसता पण्णत्ता, देवाणं ठिती पुच्छा। अब्भितरियाए परिसाए देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए छ पलिओवमाइं, बाहिरियाए पंच पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। देवीणं पुच्छा। अब्भितरियाए पंच[1] पलिओवमाइं, मज्झिमियाए परिसाए चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अट्ठो तहेव भाणियव्वो ॥

१०४५. सणंकुमाराणं पुच्छा। तहेव[2] ठाणपदगमेणं जाव—

१०४६. सणंकुमारस्स तओ परिसाओ समिताई तहेव, णवरि—अब्भितरियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। अब्भितरियाए परिसाए देवाणं ठिती—अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं पंच पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अट्ठो सो चेव ॥

१०४७. एवं माहिंदस्सवि तहेव[3] तओ परिसाओ, णवरि—अब्भितरियाए परिसाए छद्देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ठिती देवाणं—अब्भितरियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं सत्त य पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सावरोवमाइं छच्च पलिओवमाइं, बाहिरियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं पंच य पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१०४८. तहेव सव्वेसिं इंदाण ठाणपयगमेणं विमाणा णेतव्वा[4]। ततो पच्छा परिसाओ पत्तेयं-पत्तेयं वुच्चति—

१०४९. बंभस्सवि तओ परिसाओ पण्णत्ताओ—अब्भितरियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ, मज्झिमियाए छ देवसाहस्सीओ, बाहिरियाए अट्ठ देवसाहस्सीओ। देवाणं ठिती—अब्भितरियाए परिसाए अद्धणवमाइं सागरोवमाइं पंच य पलिओवमाइं मज्झिमियाए परिसाए अद्धनवमाइं सागरोवमाइं चत्तारि य पलिओवमाइं, बाहिरियाए अद्धनवमाइं सागरोवमाइं तिण्णि य पलिओवमाइं। अट्ठो सो चेव ॥

१०५०. लंतगस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव अब्भितरियाए परिसाए दो देवसाहस्सीओ, मज्झिमियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए छद्देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ठिती भाणियव्वा—अब्भितरियाए परिसाए बारस सागरोवमाइं सत्त

---

१. साइरेगाइं पंच (त्रि)।
२. पण्ण० २।५२।
३. पण्ण० २।५३।
४. पण्ण० २।५४-५९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए बारस सागरोवमाइं छच्च पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए बारस सागरोवमाइं पंच पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१०५१. महासुक्कस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव अब्भितरियाए एगं देवसहस्सं, मज्झिमियाए दो देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ। अब्भितरियाए परिसाए अद्धसोलस सागरोवमाइं पंच पलिओवमाइं, मज्झिमियाए अद्धसोलस सागरोवमाइं चत्तारि पलिओवमाइं, बाहिरियाए अद्धसोलस सागरोवमाइं तिण्णि पलिओवमाइं। अट्ठो सो चेव ॥

१०५२. सहस्सारे पुच्छा जाव अब्भितरियाए परिसाए पंच देवसया, मज्झिमियाए परिसाए एगा देवसाहस्सी, बाहिरियाए दो देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ठिती—अब्भितरियाए अद्धट्ठारस सागरोवमाइं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, एवं मज्झिमियाए अद्धट्ठारस छप्पलिओवमाइं बाहिरियाए अद्धट्ठारस सागरोवमाइं पंच पलिओवमाइं। अट्ठो सो चेव ॥

१०५३. आणयपाणयस्सवि पुच्छा जाव तओ परिसाओ, णवरि—अब्भितरियाए अड्ढाइज्जा देवसया, मज्झिमियाए पंच देवसया, बाहिरियाए एगा देवसाहस्सी। ठिती—अब्भितरियाए एगूणवीसं सागरोवमाइं पंच य पलिओवमाइं, एवं मज्झिमियाए एगोणवीसं सागरोवमाइं चत्तारि य पलिओवमाइं, बाहिरियाए परिसाए एगूणवीसं सागरोवमाइं तिण्णि य पलिओवमाइं ठिती। अट्ठो सो चेव ॥

१०५४. कहि णं भंते! आरणअच्चुयाणं देवाणं तहेव अच्चुए सपरिवारे जाव विहरति ॥

१०५५. अच्चुयस्स णं देविंदस्स तओ परिसाओ पण्णत्ताओ। अब्भितरपरिसाए देवाणं पणवीसं सयं, मज्झिमपरिसाए अड्ढाइज्जा सया, बाहिरपरिसाए पंचसया, अब्भितरियाए एक्कवीसं सागरोवमाइं सत्त य पलिओवमाइं, मज्झिमियाए एक्कवीसं सागरोवमाइं छप्पलिओवमाइं, बाहिरपरिसाए एकवीसं सागरोवमाइं पंच य पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१०५६. कहि णं भंते! हेट्ठिमगेवेज्जगाणं देवाणं विमाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति? जहेव[1] ठाणपए तहेव। एवं मज्झिमगेवेज्जा उवरिमगेवेज्जगा अणुत्तरा य जाव[2] अहमिंदा नामं ते देवा पण्णत्ता समणाउसो! ॥

वेमाणियउद्देसओ बीओ

१०५७. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी किंपइट्ठिया पण्णत्ता? गोयमा! घणोदहिपइट्ठिया पण्णत्ता ॥

१०५८. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु विमाणपुढवी किंपइट्ठिया पण्णत्ता? गोयमा! घणवायपइट्ठिया पण्णत्ता ॥

---

१. पण्ण० २।६०। २. पण्ण० २।६१-६३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०५९. बंभलोए णं भंते ! कप्पे विमाणपुढवी[1] णं पुच्छा। घणवायपइट्ठिया पण्णत्ता ।।

१०६०. लंतए[2] तदुभयपइट्ठिया पण्णत्ता ।।

१०६१. महासुक्क-सहस्सारेसुवि तदुभयपइट्ठिया ।।

१०६२. आणय जाव अच्चुएसु णं भंते ! कप्पेसु पुच्छा। ओवासंतरपइट्ठिया पण्णत्ता ।।

१०६३. गेवेज्जविमाणपुढवीणं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! ओवासंतरपइट्ठिया पण्णत्ता ।।

१०६४. अणुत्तरोववाइयपुच्छा। ओवासंतरपइट्ठिया पण्णत्ता ।।

१०६५. सोहम्मीसाणकप्पेसु विमाणपुढवी केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।।

१०६६. एवं पुच्छा—सणंकुमार-माहिंदेसु छव्वीसं जोयणसयाइं। बंभ-लंतएसु पंचवीसं। महासुक्क-सहस्सारेसु चउवीसं। आणय-पाणयारणाच्चुएसु तेवीसं सयाइं। गेवेज्जविमाणपुढवी बावीसं। अणुत्तरविमाणपुढवी एक्कवीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं ।।

१०६७. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु विमाणा केवइयं उड्ढं उच्चत्तेणं ? गोयमा ! पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं ।।

१०६८. सणंकुमार-माहिंदेसु छ जोयणसयाइं। बंभ-लंतएसु सत्त। महासुक्क-सहस्सारेसु अट्ठ। आणय-पाणयारणाच्चुएसु नव ।।

१०६९. गेवेज्जविमाणाणं भंते ! केवइयं उड्ढं उच्चत्तेणं ? गोयमा ! दस जोयणसयाइं ।।

१०७०. अणुत्तरविमाणाणं एक्कारस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं ।।

१०७१. सोहम्मीसाणेणं भंते ! कप्पेसु विमाणा किंसंठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—आवलियापविट्ठा य आवलियाबाहिरा य। तत्थ णं जेते आवलियापविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—वट्टा तंसा चउरंसा। तत्थ णं जेते आवलियाबाहिरा ते णं णाणासंठाणसंठिया पण्णत्ता। एवं जाव गेवेज्जविमाणा ।।

१०७२. अणुत्तरविमाणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—वट्टे य तंसा य ।।

१०७३. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु विमाणा केवतियं आयाम-विक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जवित्थडा य असंखेज्जवित्थडा य। 'तत्थ णं जेते संखेज्जवित्थडा ते णं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं[3] आयाम-विक्खंभेणं, संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं। तत्थ णं जेते असंखेज्जवित्थडा ते णं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं। एवं जाव गेवेज्जविमाणा ।।

---

१. पुढवी (ग, ट, ता, त्रि)।

२. लंतए णं भंते गो (क, ख, ग,ट, त्रि)।

३. जोयणाइं (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०७४. अणुत्तरविमाणा पुच्छा। गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा[1]—संखेज्ज-वित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य। तत्थ णं जेसे संखेज्जवित्थडे से 'एगं जोयणसयसहस्सं'[2] जंबुद्दीवप्पमाणे 'जाव[3] अद्धंगुलगं च'[4]। तत्थ णं जेते असंखेज्जवित्थडा ते णं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं[5] •आयाम-विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं• परिक्खेवेणं पण्णत्ता ॥

१०७५. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! विमाणा कतिवण्णा पण्णत्ता? गोयमा! पंचवण्णा पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किला ॥

१०७६. सणंकुमार-माहिंदेसु चउवण्णा—नीला जाव सुक्किला, बंभलोग-लंतएसु तिवण्णा—लोहिया हालिद्दा सुक्किला, महासुक्क-सहस्सारेसु दुवण्णा—हालिद्दा य सुक्किला य, 'आणय-पाणतारणच्चुएसु सुक्किला, गेवेज्जविमाणा सुक्किला, अणत्तरोववातियविमाणा परमसुक्किला'[6] वण्णेणं पण्णत्ता ॥

१०७७. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु विमाणा केरिसया पभाए पण्णत्ता? गोयमा! णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सयंपभाए[7] पण्णत्ता जाव अणुत्तरविमाणा[8] ॥

१०७८. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु विमाणा केरिसया गंधेणं पण्णत्ता? गोयमा! से जहानामए—कोट्ठपुडाण वा जाव[9] एत्तो[10] इट्ठतरा चेव जाव अणुत्तरविमाणा ॥

१०७९. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु विमाणा केरिसया फासेणं पण्णत्ता? गोयमा! से जहानामए—आईणेति वा 'जाव[11] एतो इट्ठतरा चेव'[12] जाव अणुत्तरविमाणा ॥

१०८०. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु विमाणा केमहालया पण्णत्ता? गोयमा! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे 'जहा णिरयुद्देसे जाव[13] छम्मासेणं वीतिवएज्जा—अत्थेगतिए वीति-वएज्जा अत्थेगतिए नो वीतिवएज्जा एमहालया[14] णं गोयमा! एवं जाव अणुत्तरविमाणा'[15] ॥

१०८१. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु विमाणा किंमया[16] पण्णत्ता? गोयमा!

---

१. जहा णरगा तहा जाव अणुत्तरोववातिया (क, ख, ग, ट, त्रि)।
२. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।
३. जी० ३।८२।
४. × (क, ख, ग, ट, त्रि)।
५. जोयणसयाइं (क,ख,ग,ट,त्रि); सं० पा०—जोयणसहस्साइं जाव परिक्खेवेणं।
६. आणतादि जाव अणुत्तरा ताव सुक्किला (ता) आनतप्राणतारणाच्युतकल्पेषु एकवर्णानि, शुक्ल-वर्णस्यैकस्य भावात् ग्रैवेयकविमानानि अनुत्तर-विमानानि च परम शुक्लानि (मवृ)।
७. सयंपभपभाए (ता); स्वयं प्रभाणि (मवृ)।
८. अणुत्तरोववातियविमाणा णिच्चालोया णिच्चु-ज्जोता सयंपभाए पण्णत्ता (क,ख,ग,ट,त्रि)।
९. जी० ३।२८३।
१०. गंधेणं पण्णत्ता एवं जाव एत्तो (क, ख, ग, ट, त्रि)।
११. जी० ३।२८४।
१२. रूतेति वा सव्वो फासो भाणियव्वो (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१३. जी० ३।८६।
१४. एम्महलया (ता)।
१५. सव्वदीवसमुद्दाणं सो चेव गमो जाव छम्मासे वीइवएज्जा जाव अत्थेगतिया विमाणावासा नो वीईवएज्जा जाव अणुत्तरोववातियविमाणा अत्थेगतियं विमाणं वीईवएज्जा अत्थेगतिया नो वीईवएज्जा (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१६. किम्मया (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वरयणामया 'अच्छा जाव पडिरूवा'[1]। तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति[2]। सासया णं ते विमाणा दव्वट्ठयाए, 'वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहि य असासया। एवं जाव अणुत्तरविमाणा'[3]॥

१०८२. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु देवा कओहिंतो उववज्जंति? उववातो[4] जहा[5] वक्कंतीए[6] जाव अणुत्तरविमाणा॥

१०८३. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु देवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? गोयमा! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। एवं जाव सहस्सारे॥

१०८४. 'आणतादी गेवेज्जा अणुत्तरा य जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति'[7]॥

१०८५. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु देवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा केवतिएणं कालेणं अवहिया सिया? गोयमा! ते णं असंखेज्जा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया जाव सहस्सारो॥

१०८६. आणतादिसु[8] चउसु कप्पेसु देवा पुच्छा। गोयमा! ते णं असंखेज्जा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति, णो चेव णं अवहिया सिया। एवं जाव अणुत्तरविमाणा॥

१०८७. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु देवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा[9] पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं 'जासा भवधारणिज्जा सा'[10] जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ। तत्थ णं 'जासा उत्तरवेउव्विया सा'[11] जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागो उक्कोसेणं जोयणसतसहस्सं॥

---

१. पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।
२. उवचयंति (क,ख,ग,ट,त्रि); उपचीयन्ते (मवृ) द्रष्टव्यं जी० ३।७२४ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
३. जाव फासपज्जवेहिं असासता जाव अणुत्तरोववातिया विमाणा (क, ख, ग, ट, त्रि)।
४, उववातो णेयव्वो (क, ख, ग, ट, त्रि)।
५. पण्ण० ६।१०५-१०८।
६. वक्कंतीए तिरियमणूएसु पंचेंदिएसु संमुच्छिमवज्जिएसु, उववाओ वक्कंतीगमेणं (क, ख, ग, ट, ता, त्रि)।
७. सेसा संखेज्जा (ता)।
८. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठोस्ति—आणतादिगेसु चउसुवि गेविज्जेसु य समए जाव केवतिकालेणं अवहिता सिया? गो ते णं असंखेज्जा समये २ अवहीरमाणा २ असंखेज्जमेत्तपलियस्स सुहुमस्स असंखेज्जेणं कालेणं अवहीरंति नो चेव णं अवहिया सिया। अणुत्तरोववाइयाणं पुच्छा। ते णं असंखेज्जा समये समये अवहीरमाणा पलिओवमअसंखेज्जतिभागमेत्ते अवहीरंति नो चेव णं अवहिया सिया।
९. दुविहा सरीरा (क, ख, ग, ट, त्रि)।
१०. जेसे भवधारणिज्जे से (क, ख, ग, ट, त्रि)।
११. जेसे उत्तरवेउव्विए से (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०८८. सणंकुमार[1]-माहिंदेसु [भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्विया। भवधारणिज्जा छरयणीओ, उत्तरवेउव्विया तधेव। बंभ-लंतएसु पंच रयणीओ, महासुक्क-सहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ, आणतपाणतारणच्चुएसु तिण्णि रयणीओ, उत्तरवेउव्विया तधेव जोयण-सतसहस्सं सव्वेसि ।।

१०८९. गेवेज्जादेवाणं भंते ! केमहालिया[2] सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! गेवेज्जादेवाणं एगे भवधारणिज्जे सरीरए पण्णत्ते—से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागे, उक्कोसेणं दो रयणीओ। अणुत्तरदेवाणं एगा रयणी ।।

१०९०. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवाणं सरीरगा किंसंघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी[3]—नेवट्ठि नेव छिरा नेव ण्हारू[4]। जे पोग्गला इट्ठा कंता पिया सुभा मणुण्णा मणामा ते तेसिं सरीरसंघातत्ताए परिणमंति। एवं जाव अणुत्तरोववातिया ।।

१०९१. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवाणं सरीरगा किंसंठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जेते[5] भवधारणिज्जा ते समचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता। तत्थ णं जेते उत्तरवेउव्विया ते णाणासंठाणसंठिता पण्णत्ता जाव अच्चुओ ।।

१०९२. गेवेज्जादेवाणं[6] भंते ! सरीरा किंसंठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे भवधार-णिज्जे सरीरए समचउरंससंठाणसंठिते। एवं अणुत्तराणवि ।।

१०९३. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवाणं सरीरगा केरिसया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! कणगत्तयरत्ताभा वण्णेणं पण्णत्ता ।।

१०९४. सणंकुमार-माहिंदेसु णं पउमपम्हगोरा वण्णेणं पण्णत्ता। 'एवं बंभेवि'[7] ।।

१०९५. लंतए[8] णं भंते ! गोयमा ! सुक्किला वण्णेणं पण्णत्ता। एवं जाव गेवेज्जा ।।

१०९६. अणुत्तरोववातिया परमसुक्किला वण्णेणं पण्णत्ता ।।

१०९७. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवाणं सरीरगा केरिसया गंधेणं पण्णत्ता ? 'जहा[9] विमाणाणं गंधो जाव अणुत्तरोववाइयाणं'[10] ।।

---

१. १०८८,१०८९ सूत्रयोः स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि, आदर्शेषु एवं पाठोस्ति—एवं एक्केक्का ओसारेत्ताणं जाव अणुत्तरा णं एक्का रयणी गेविज्जणुत्तराणं एगे भवधारणिज्जे सरीरे उत्तरवेउव्विया नत्थि।

२. केम्महालिया (ता)।

३. असंघतणी (ता)।

४. ण्हारू णेव संघयणमत्थि (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. 'ता, प्रतौ 'जेसे' इत्यादि एकवचनान्तः पाठो दृश्यते, वृत्तावपि स च एकवचनान्तो व्याख्या-तोस्ति।

६. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क,ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठोस्ति—अवेउव्विया गेविज्जणुत्तरा, भवधारणिज्जा समचउरंससंठाणसंठिता, उत्तर-वेउव्विया णत्थि।

७. बंभलोगे णं भंते ! गोयमा ! अल्लमधुगव-ण्णाभा वण्णेणं पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

८. १०९५,१०९६ सूत्रयोः स्थाने 'ता' प्रतौ एवं पाठोस्ति—सेसा सुक्किला वण्णेणं पं जावणुत्तरा।

९. जी० ३।१०७८।

१०. गोयमा ! से जहाणामए कोट्ठपुडाण वा तदेव

१०६८. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवाणं सरीरगा केरिसया फासेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! थिरमउणिद्धसुकुमालफासेणं[1] पण्णत्ता । एवं जाव अणुत्तरोववातियाणं ।।

१०६९. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवाणं केरिसया पोग्गला उस्सासत्ताए परिणमंति ? गोयमा ! जे पोग्गला इट्ठा कंता पिया सुभा मणुण्णा मणामा ते तेसिं उस्सासत्ताए परिणमंति जाव अणुत्तरोववातियाणं ।।

११००. एवं आहारत्ताए वि[2] ।।

११०१. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता ।।

११०२. सणंकुमार-माहिंदेसु एगा पम्हलेस्सा । एवं बंभलोए वि[3] ।।

११०३. 'लंतए एगा सुक्कलेस्सा जाव गेवेज्जा ताव सुक्कलेस्सा ।।

११०४. अणुत्तरे एगा परमसुक्कलेस्सा'[4] ।।

११०५. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी[5] ? गोयमा ! 'सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि सम्मामिच्छादिट्ठीवि । एवं जाव गेवेज्जा[6] ।।

११०६. अणुत्तरोववातिया सम्मद्दिट्ठी, णो मिच्छादिट्ठी णो सम्मामिच्छादिट्ठी ।।

११०७. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवा किं णाणी ? अण्णाणी ? 'णाणीवि अण्णाणीवि'[7] 'जे णाणी ते णियमा तिण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोधियणाणी सुयणाणी अवधिणाणी । जे अण्णाणी ते णियमा तिअण्णाणी, तं जहा—मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी, विभंगणाणी य'[8] । एवं जाव गेवेज्जा ।।

११०८. अणुत्तरोववातिया णाणी, णो अण्णाणी 'नियमा तिण्णाणी'[9] ।।

११०९. सोहम्मीसाणेसु[10] णं भंते ! कप्पेसु देवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ? गोयमा ! मणजोगीवि वइजोगीवि कायजोगीवि जाव अणुत्तरा ।।

१११०. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! दुविहावि जाव अणुत्तरा ।।

सव्वं जाव मणामतरा चेव गंधेणं पण्णत्ता जाव अणुत्तरोववातिया (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१. °सुकुमालच्छविफासेणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. वि जाव अणुत्तरोववातिया (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

३. वि पम्हा (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

४. सेसेसु एक्का सुक्कलेस्सा अणुत्तरोववातियाणं एक्का परमसुक्किला (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

५. सम्मामिच्छदिट्ठी (क,ख,ग,त्रि) ।

६. तिण्णिवि जाव अंतिमगेवेज्जा (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

७. गोयमा दोवि (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

८. तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा नियमा (क,ख, ग,ट,त्रि); जे णाणी तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा नियमा (ता); चिह्नाङ्कितः पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः, द्रष्टव्यं ३।१०४ सूत्रम् ।

९. तिण्णि णाणा नियमा (क,ख,ग,ट,त्रि); नियमा तिण्णाणी तं आभिणिबो ३ (ता) ।

१०. ११०८,११०९ सूत्रयोः स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु पाठसंक्षेपोस्ति—तिविधे जोगे दुविहे उवओगे सव्वेसिं जाव अणुत्तरा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१११९. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवा ओहिणा केवतियं खेत्तं जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं अधे[1] जाव 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते'[2], उड्ढं जाव सगाइं[3] विमाणाइं, तिरियं जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा एवं—

सक्कीसाणा[4] पढमं, दोच्चं च सणंकुमारमाहिंदा ।
तच्चं च बंभ लंतग सुक्कसहस्सारग चउत्थी ।।१।।
आणयपाणयकप्पे, देवा पासंति पंचमिं पुढवीं ।
तं चेव आरणच्चुय, ओहीनाणेण पासंति ।।२।।
छट्ठीं हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जा, सत्तमिं च उवरिल्ला ।
संभिण्णलोगनालिं पासंति अणुत्तरा देवा ।।३।।

१११२. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवाणं कति समुग्घाता पण्णत्ता ? 'गोयमा ! पंच समुग्घाता पण्णत्ता, तं जहा'[5]--वेदणासमुग्घाते कसायसमुग्घाते मारणंतियसमुग्घाते वेउव्वियसमुग्घाते तेजससमुग्घाते । एवं जाव अच्चुया ।।

१११३. गेवेज्जणुत्तराणं[6] पुच्छा । गोयमा ! पंच—वेदणासमुग्घाते कसायसमुग्घाते मारणंतियसमुग्घाते विउव्वियसमुग्घाते तेजससमुग्घाते । णो चेव णं वेउव्वियसमुग्घातेण वा तेयासमुग्घातेण वा समोहणिंसु वा समोहण्णंति वा समोहणिस्संति वा ।।

१११४. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवा केरिसयं खुह-पिवासं पच्चणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! 'तेसि णं देवाणं णत्थि खुह-पिवासा । एवं'[7] जाव अणुत्तरोववातिया ।।

१११५. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवा किं[8] एगत्तं पभू विउव्वित्तए ? पुहत्तं[9] पभू विउव्वित्तए ? 'गोयमा ! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तंपि पभू विउव्वित्तए'[10] एगत्तं विउव्वेमाणा एगिंदियरूवं वा जाव पंचेंदियरूवं वा विउव्वंति, पुहत्तं विउव्वेमाणा एगिं-

---

१. अवही (ग) ।
२. रयणप्पभा पुढवी (क,ख,ग,ट,त्रि) ।
३. साइं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।
४. 'ता' प्रतौ गाथात्रयस्य स्थाने संक्षिप्तपाठोस्ति—सव्वेवि जाव संभिण्णलोगणालिं पासंति अणुत्तरा देवा । वृत्तिकृता प्रज्ञापनाया आधारेण विस्तृतपाठः उल्लिखितः, 'उक्तं च' इत्युल्लेखपूर्वकं गाथा त्रयमुद्धृतम् । 'ता' प्रतौ तृतीयगाथाया अन्तिमचरणद्वयमुल्लिखितमस्ति, तेन ज्ञायते गाथात्रयं ताडपत्रीयादर्शस्य पाठपरम्परायां सम्मतमस्ति ।
५. पंच आदिल्ला (ता) ।
६. वृत्तौ ग्रैवेयकसूत्रं स्वीकृतपाठवद् विद्यते, केवलं अनुत्तरोपपातिकसूत्रं पृथगस्ति—एवमनुत्तरोपपातिकानामपि वक्तव्यम् । आदर्शेषु प्रस्तुतसूत्रं द्विरूपं लभ्यते—गेविज्जणुत्तरा णं आदिल्ला तिण्णि समुग्घाता पण्णत्ता (क, ट); गेविज्जाणं आदिल्ला तिण्णिसमुग्घाता पण्णत्ता (ख,ग,त्रि); एषु 'अनुत्तरदेवानां सूत्रं लिखितं नास्ति ।
७. णत्थि खुहपिवासं पच्चणुभवमाणा विहरंति । (क,ख,ग,ट,त्रि); नास्त्येतद् यत्ते क्षुत्पिपासां प्रत्यनुभवन्तो विहरंति (मवृ) ।
८. × (ग, त्रि, मवृ) ।
९. पहुत्तं (क, ख, ग, ट); पुहुत्तं (त्रि) ।
१०. हंता पभू गोयमा (त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दियरूवाणि वा जाव पंचेंदियरूवाणि वा 'ताइं संखेज्जाइं पि असंखेज्जाइंपि सरिसाइंपि असरिसाइं पि संबद्धाइं पि असंबद्धाइं पि रूवाइं'[1] विउव्वंति, विउव्वित्ता 'ततो पच्छा'[2] जहिच्छिताइं कज्जाइं करेंति। एवं जाव अच्चुओ ॥

१११६. गेवेज्जादेवा[3] किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए? पुहत्तं पभू विउव्वित्तए? गोयमा! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए, णो चेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा विउव्वंति वा विउव्विस्संति वा। एवं अणुत्तरोववातिया ॥

१११७. सोहम्मीसाणेसु[4] णं भंते! कप्पेसु देवा केरिसयं सातासोक्खं पच्चणुभवमाणा विहरंति? गोयमा! मणुण्णे सद्दे मणुण्णे रूवे मणुण्णे गंधे मणुण्णे रसे मणुण्णे फासे पच्चणुभवमाणा विहरंति जाव गेवेज्जा ॥

१११८. अणुत्तरोववातिया पुच्छा। गोयमा! अणुत्तरा सद्दा अणुत्तरा रूवा अणुत्तरा गंधा अणुत्तरा रसा अणुत्तरा फासा पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

१११९. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु देवा केरिसगा इड्ढीए पण्णत्ता? गोयमा! महिड्ढीया महज्जुइया महाबला महायसा महेसक्खा महाणुभागा[5] जाव[6] अच्चुओ ॥

११२०. गेवेज्जा देवा पुच्छा। गोयमा! 'सव्वे समिड्ढीया समज्जुइया समबला समयसा समाणुभागा समसोक्खा अणिंदा अप्पेसा अपुरोहिया अहमिंदा'[7] णामं ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो! एवं अणुत्तरावि ॥

११२१. सोहम्मीसाणेसु[8] णं भंते! कप्पेसु देवा केरिसया विभूसाए पण्णत्ता? गोयमा!

---

१. संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा सरिसाणि वा असरिसाणि वा (ता)।

२. अप्पणो (क, ख, ग, ट, त्रि)।

३. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—गेवेज्जणुत्तरोववातिया देवा किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए पुहुत्तं पभू विउव्वित्तए? गोयमा! एगत्तंपि पुहुत्तंपि, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा विउव्वंति वा विउव्विस्संति वा।

४. १११७, १११८ सूत्रयोः स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु वाचना भेदोस्ति—सोहम्मीसाणदेवा केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुभवमाणा विहरंति? गोयमा! मणुण्णा सद्दा जाव मणुण्णा फासा जाव गेविज्जा। अणुत्तरोववाइया अणुत्तरा सद्दा जाव फासा।

५. अतः परं ११२० सूत्रपर्यन्तं वृत्तौ एतावदेव व्याख्यातमस्ति—एवं तावद् वक्तव्यं यावदनुत्तरोपपातिका देवाः।

६. इड्ढीए पण्णत्ता जाव (क, ख, ग, ट, त्रि)।

७. चिन्हाङ्कितः पाठः १०५४ सूत्रस्य वृत्तेराधारेण स्वीकृतः। मलयगिरिणा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ नैष पाठो व्याख्यातः ताडपत्रीयादर्शे अर्वाचीनादर्शेषु च 'सव्वे महिड्ढीया जाव अहमिंदा' एवं पाठोस्ति, किन्तु प्रज्ञापनायाः स्थानपदावलोकनेन (२।६०) प्रस्तुतसूत्रस्य १०५४ सूत्रस्य' वृत्तेरवलोकनेन (वृत्ति पत्र ३९३) च स्वीकृतपाठस्यैव सङ्गतिर्विभाव्यते।

८. ११२१-११२३ सूत्राणां स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु वाचना भेदोस्ति—सोहम्मीसाणा देवा केरिसया विभूसाए पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्वियसरीरा य अवेउव्वियसरीरा य, तत्थ णं जेते वेउव्वियसरीरा ते हारविराइयवच्छा जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा जाव पडिरूवा, तत्थ णं जेते अवेउव्वियसरीरा ते णं आभरणवसणरहिता पगतित्था विभूसाए पण्णत्ता। सोह-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जेते भवधारणिज्जा ते णं आभरणवसणरहिता पगतित्था विभूसाए पण्णत्ता। तत्थ णं जेते उत्तरवेउव्विया ते णं हारविराइयवच्छा जाव[1] दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा विभूसाए पण्णत्ता ॥

११२२. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवीओ केरिसियाओ विभूसाए पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दुविधाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भवधारणिज्जाओ य उत्तरवेउव्वियाओ य। तत्थ णं जाओ भवधारणिज्जाओ ताओ णं आभरणवसणरहिताओ पगतित्थाओ विभूसाए पण्णत्ताओ। तत्थ णं जाओ उत्तरवेउव्वियाओ ताओ णं अच्छराओ सुवण्णसद्दालाओ[2] सुवण्णसद्दालाइं[3] वत्थाइं पवर परिहिताओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ चंदाहियसोमदंसणओ[4] उक्का विव उज्जोवेमाणीओ विज्जुघणमरीइसूरदिप्पंततेयअहिययरसण्णिकासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ[5] पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ। 'सेसेसु देवा, देवीओ णत्थि'[6] जाव अच्चुतो ॥

११२३. गेवेज्जादेवा केरिसया विभूसाए पण्णत्ता ? गोयमा ! गेवेज्जादेवाणं एगे भवधारणिज्जे सरीरए आभरणवसणरहिते पगतित्थे विभूसाए पण्णत्ते। एवं अणुत्तरावि ॥

११२४. सोहम्मीसाणेसु[7] णं भंते ! कप्पेसु देवा केरिसए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! इट्ठे सद्दे इट्ठे रूवे इट्ठे गंधे इट्ठे रसे इट्ठे फासे पच्चणुभवमाणा विहरंति। एवं जाव गेवेज्जा ॥

११२५. अणुत्तरोववातियाणं अणुत्तरा सद्दा जाव अणुत्तरा फासा ॥

११२६. ठिती[8] सव्वेसिं भाणियव्वा देवीणवि[1] ॥

म्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवीओ केरिसियाओ विभूसाए पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दुविधाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वेउव्वियसरीराओ य अवेउव्वियसरीराओ य, तत्थ णं जाओ वेउव्वियसरीराओ ताओ सवण्णसद्दालाओ सुवण्णसद्दालाइं वत्थाइं पवर परिहिताओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ सिंगारागारचारुवेसाओ संगय जाव पासातीयाओ जाव पडिरूवा, तत्थ णं जाओ अवेउव्वियसरीराओ ताओ णं आभारणवसणरहियाओ पगतित्थाओ विभूसाए पण्णत्ताओ, सेसेसु देवा, देवीओ णत्थि जाव अच्चुओ, गेवेज्जगदेवा केरिसया विभूसाए० ? गोयमा! आभरणवसणरहिया, एवं देवी णत्थि भाणियव्वं, पगतित्था विभूसाए पण्णत्ता, एवं अणुत्तरावि।

१. पण्ण० २।४६।

२. °सद्दालगाओ (ता)।

३. °सद्दालगाइं (ता)।

४. × (ता)।

५. × (ता)।

६. × (ता)।

७. 'ता' प्रतौ ईशानस्य पृथग् निर्देशोस्ति, अन्योपि पाठभेदो विद्यते—सोहं २ देवा केरिसए कामभोगे पच्चणुभवमाणा वि ? गो इट्ठे सद्दे ५ पच्चणु। एवं देवीओ। एवीसाणेपि २। सणंकुमारादि जहा सोहम्मा जाव अणुत्तरादेवा।

८. 'ता' प्रतौ विस्तृतपाठो विद्यते—सोहम्मादेवाणं भंते ! केवतिकालं ठिती पं ? गो जहं पलि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११२७. अणंतरं[1] चयं चइत्ता जे जहिं गच्छंति तं भाणियव्वं ।।

११२८. 'सोहम्मे णं भंते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससतसहस्सेसु एगमेगंसि विमाणावासंसि'[2] सव्वपाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता पुढवीक्काइयत्ताए[3] देवत्ताए देवित्ताए आसणसयणखंभभंडमत्तोवकरणत्ताए उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो[4] । एवमीसाणेवि ।।

११२९. सणंकुमारे पुच्छा । हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो, णो चेव णं देवित्ताए जाव गेवेज्जा ।।

११३०. पंचसु णं भंते ! महतिमहालएसु अणुत्तरविमाणेसु सव्वपाणा[5] °सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता पुढवीक्काइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसणसयणखंभभंडमत्तोवकरणत्ताए उववण्णपुव्वा?° हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो, णो चेव णं देवत्ताए वा देवित्ताए ।।

११३१. णेरइयाणं भंते ! केवतिकालं[6] ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।।

११३२. तिरिक्खजोणियाणं[7] पुच्छा । जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलि-

---

उक्को दो सागरोवमाणि । देवीणं जहं पलि उक्को सत्त पलि । ईसाणे देवाणं जहं सातिरे पलि उक्को साइरेगाइं दो सागरोवमाणि । देवीणं जहं सातिरे पलि उक्को णव पलितो । सणंकुमा जहं दो सागरो उक्को ७ । माहिंदे सातिरे ७ । बंभे ७, १० । लंतए १०, १४ । महासु १४, १७ । एवं एक्केक्कं जाव अणुत्तराणं जहं ३१ उक्को ३३ । वृत्तावपि विस्तृतव्याख्या विद्यते । पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यं प्रज्ञापनायाश्चतुर्थं पदम्, ४।२१३-२९९ सूत्राणि ।

९. देवीत्ताएवि (क, ग); देवाण य (ट); देवत्ताएवि (त्रि) ।

१. 'ता' प्रतौ किञ्चिद् विस्तृतः पाठोस्ति—सोधंमा सोहंमा देवेहिंतो अणंतरे चयं चयित्ता कहिं गच्छंति २ ? पुढ आउ वणस्सति पंचिंदिएसु संखाउएसु । एवीसाणा । सणंकुमारा एवं चेव णवरं एगिंदिएसु ण उववज्जंति । एवं जाव सहस्सारो । आणतादिसु मणुस्सेसु उववज्जेति जाव अणुत्तरा । वृत्तावपि किञ्चिद् व्याख्यातमस्ति । पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यं प्रज्ञापनायाः षष्ठं पदम्, ६।१२३-१२५ सूत्राणि ।

२. सोहम्मीसाणेसु णं भंते कप्पेसु (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

३. पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सतिकाइयत्ताए (क, ख, ग, ट, त्रि); असौ पाठः समीचीनो नास्ति, मलयगिरिणापि असौ पाठः समीक्षितः—पृथ्वीकायतया देवतया देवीतया, इह च बहुषु पुस्तकेष्वेतावदेव सूत्रं दृश्यते, क्वचित्पुनरेतदपि—'आउकाइयत्ताए तेउक्काइयत्ताए' इत्यादि तन्न सम्यगवगच्छामस्तेजस्कायस्य तत्रासम्भवात् ।

४. अतः ११३० सूत्रपर्यन्तं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु भिन्ना वाचना दृश्यते—सेसेसु कप्पेसु एवं चेव, णवरि नो चेव णं देवित्ताए जाव गेवेज्जा, अणुत्तरोववातिएसुवि एवं णो चेव णं देवत्ताए देवित्ताए । सेत्तं देवा ।

५. सं० पा०—सव्वपाणा जाव देवत्ताए देवित्ताए आसण जाव हंता ।

६. केवतियं कालं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

७. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—एवं सव्वेसिं पुच्छा, तिरिक्खजोणियाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्को-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओवमाइं । एवं मणुस्सा । देवा जहा णेरइया ।।

११३३. णेरइए[1] णं भंते ! णेरइयत्ताए कालतो केवच्चिरं होति ? जहा कायट्ठिती देवाणवि एवं चेव ।।

११३४. तिरक्खिजोणिए णं भंते ! तिरिक्खजोणियत्ताए कालतो केवच्चिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालं ।।

११३५. मणुस्से णं भंते ! मणुस्सेति कालतो केवच्चिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं ।।

११३६. णेरइयस्स[2] णं भंते ! केवतिकालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालं ।।

११३७. तिरिक्खजोणियस्स णं भंते ! केवतिकालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं । मणुय-देवाणं वणस्सतिकालं ।।

११३८. एतेसि णं भंते ! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा, णेरइया असंखेज्जगुणा, देवा असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । सेत्तं चउव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा ।।

सेणं तिण्णि पलिओवमाइं, एवं मणुस्साण वि देवाणं जहा णेरइयाणं ।

१. ११३३,११३४ सूत्रयोः स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—देवणेरइयाणं जा चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा । तिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।

२. ११३६,११३७ सूत्रयोः स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—णेरइयमणुस्सदेवाणं अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो । तिरिक्खजोणियस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तसाइरेगं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थी पंचविहपडिवत्ती

१. तत्थ णं[1] जेते एवमाहंसु—'पंचविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता' ते एवमाहंसु, तं जहा—एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥

२. से किं तं एगिंदिया ? एगिंदिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—'पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य'[2] । 'एवं जाव पंचिंदिया दुविहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य'[3] ॥

३. एगिंदियस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥

४. बेइंदिया जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराणि । एवं तेइंदियस्स एगूणपण्णं राइंदियाणं, चउरिंदियस्स छम्मासा, पंचिंदियस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

५. एगिंदियअपज्जत्तगस्स[4] णं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । एव पंचण्हवि[5] ॥

६. एगिंदियपज्जत्तगस्स[6] णं जाव पंचिंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । 'एवं उक्कोसियावि ठिती अंतोमुहुत्तूणा सव्वेसिं पज्जत्ताणं कायव्वा'[7] ॥

७. एगिंदिए णं भंते ! एगिंदिएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

८. बेइंदियस्स णं भंते ! बेइंदिएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं जाव चउरिंदिए संखेज्जं कालं ॥

९. पंचेंदिए णं भंते ! पंचिंदिएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं ॥

१०. एगिंदियअपज्जत्तए णं भंते ! कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं जाव पंचिंदियअपज्जत्तए ॥

११. एगिंदियपज्जत्तए णं भंते ! कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो-

---

१. × (क, ख, ग, त्रि) ।
२. पज्जत्ता य अपज्जत्ता य (ता) ।
३. × (ता) ।
४. अपज्जत्तएगिंदियस्स (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
५. सव्वेसिं अपज्जत्ताणं जाव पंचिंदियाणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
६. पज्जत्तेगिंदियाणं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
७. एवं सव्वेसिं अंतोमुहुत्तूणगा सयाठिति (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्तं, उक्कोसेणं संखिज्जाइं वाससहस्साइं ।

१२. 'एवं बेइंदिएवि, णवरि—संखेज्जाइं वासाइं ।।

१३. तेइंदिए णं भंते ! संखेज्जा राइंदिया ।।

१४. चउरिंदिए णं संखेज्जा मासा ।।

१५. पंचिंदिए सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं"[1] ।।

१६. एगेंदियस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो-मुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं ।।

१७. बेइंदियस्स णं 'केवतियं कालं अंतरं'[2] होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ।।

१८. एवं तेइंदियस्स चउरिंदियस्स पंचेंदियस्स 'अपज्जत्तगाणं एवं चेव । पज्जत्त-गाणवि एवं चेव'[3] ।।

१९. एएसि[4] णं भंते ! एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचेंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया, एगिंदिया अणंतगुणा ।।

२०. एवं अपज्जत्तगाणं—सव्वत्थोवा पंचेंदिया अपज्जत्तगा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा ।।

२१. सव्वत्थोवा चतुरिंदिया पज्जत्तगा, पंचेंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा[5] ।।

२२. एतेसि णं भंते ! एगिंदियाणं पज्जत्ताअपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया अपज्जत्तगा, एगिं-

---

१. एवं जा ठिती सा संखेज्जगुणा जाव चतुरिंदिया । पंचि पज्जत्तएति कालतो के गो जह अंतोमु उक्को सागरोवमसतपुहत्तं सातिरेगं (ता) ।

२. अंतरं कालओ केवच्चिरं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

३. जहाहिगणं पंचण्हं अंतरं एवं अपज्जत्ताणवि पंचण्हं अंतरं एवं पज्जत्ताणं पंचण्हं अंतरं (ता) ।

४. 'ता' प्रतौ १९-२५ सूत्राणां स्थाने संक्षिप्त-वाचना दृश्यते—अप्पा बहुगा पंच जहा बहु-वत्तव्वताए ।

५. अतः परं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु 'सइंदिय-पज्जत्तगा विसेसाहिया' इति पाठो विद्यते । वृत्तौ नास्ति व्याख्यातोसौ । अपर्याप्तसूत्रे आदर्शेष्वपि नास्ति 'सइंदियाणं' इति पाठो नास्ति । प्रारंभे तेनोपसंहारेपि नास्ति अपेक्षितोसौ । एवं 'सइंदिय' सूत्रमपि वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्, पंचविधप्रतिपत्तौ नापेक्षितमपि । 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु तदेवं विद्यते—एतेसि णं भंते ! सइंदियाणं पज्जत्तगा अपज्जत्तगाणं कयरे ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिय अपज्जगा, सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । अतोग्रे 'एवं एगेंदियावि' इति संक्षिप्त-पाठोस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

२३. एतेसि णं भंते ! बेइंदियाणं पज्जत्ताअपज्जत्तगाणं अप्पाबहुं ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तगा, अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥

२४. एवं तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिया वि ॥

२५. एतेसि णं भंते ! एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाण य पज्जत्तगाण य अपज्जत्तगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, चउरिंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्ता अणंतगुणा[1], एगिंदिया पज्जत्ता संखेज्जगुणा[2] । सेत्तं पंचविधा संसारसमावण्णगा जीवा ॥

---

१. अणंतगुणा सइंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. संखेज्जगुणा सइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया सइंदिया विसेसाहिया (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमी छव्विहपडिवत्ती

१. तत्थ णं जेते एवमाहंसु 'छव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा' ते एवमाहंसु, तं जहा—पुढविकाइया आउक्काइया तेउक्काइया वाउकाइया वणस्सतिकाइया तसकाइया ॥

२. से[1] किं तं पुढविकाइया ? पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइया बादरपुढविकाइया य ॥

३. सुहुमपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एवं बादरपुढविकाइयावि। 'एवं जाव वणस्सतिकाइया'[2] ॥

४. से किं तं तसकाइया ? तसकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ॥

५. पुढविकाइयस्स[3] णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥

६. 'आउकाइयस्स सत्त वाससहस्साइं, तेउकाइयस्स तिण्णि राइंदियाइं, वाउकाइयस्स तिण्णि वाससहस्साइं, वणस्सतिकाइयस्स दस वाससहस्साइं, तसकाइयस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं'[4] ॥

७. 'अपज्जत्तगाणं[5] सव्वेसिं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तगाणं सव्वेसिं उक्कोसिया ठिती अंतोमुहुत्तूणा'[6] ॥

८. पुढविकाइए[7] णं भंते ! पुढविकाइयत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा !

---

१. पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिविषयाणि त्रीणि त्रीणि, त्रसकायविषयमेकमिति सर्वसङ्ख्यया षोडश सूत्राणि पाठसिद्धानि (मवृ)।

२. एवं चउक्कएणं भेएणं आउतेउवाउवणस्सतिकाइयाणं चतु णेयव्वा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

३. स्थितिविषयं सूत्रषट्कं सुप्रतीतम् (मवृ)।

४. एवं सव्वेसिं ठिती णेयव्वा, तसकाइयस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

५. अपर्याप्तविषयाण्यपि षट् सूत्राणि पाठसिद्धानि ……पर्याप्तविषया षट्सूत्री पाठसिद्धा (मवृ)।

६. अपज्जत्ता अंतोमु पज्जत्ताणं ठिती अंतोमुहुत्तूणा (ता)।

७. ८-१० सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ एवं वाचनाभेदोस्ति—पुढविक्काइए णं भंते ! पुढवि पुढवीणं संचिट्ठणा पुढविकालं जाव वाऊणं। वणस्सतीणं वणकालो। तसकातियाणं संचिट्ठणा दो सागरोवमसहस्सा संखेज्जवासमब्भहिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं[1]—•असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ° असंखेज्जा लोया। एवं[2] आउ-तेउ-वाउक्काइयाणं॥

९. वणस्सइकाइयाणं अणंतं कालं[3]—•अणंताओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा° आवलियाए असंखेज्जतिभागे॥

१०. तसकाइए णं भंते! तसकाइयत्ति कालतो केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं॥

११. 'अपज्जत्तगाणं छण्हवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं'[4]॥

१२. पुढविक्काइयपज्जत्तए[5] णं भंते! पुढविक्काइयपज्जत्तएत्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं। एवं आऊवि॥

१३. तेउक्काइयपज्जत्तए णं भंते! तेउक्काइयपज्जत्तएत्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं राइंदियाइं॥

१४. वाउक्काइयपज्जत्तए णं भंते! वाउक्काइयपज्जत्तएत्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं॥

१५. वणस्सइकाइयपज्जत्तए णं भंते! वणस्सइकाइयपज्जत्तएति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं॥

१६. तसकाइयपज्जत्तए णं भंते! तसकाइयपज्जत्तएत्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं॥

१७. अंतरं[1] पुच्छा। गोयमा! पुढवीणं वणस्सतिकालो जाव वाऊणं। वणस्सतीणं पुढविकालो। तसस्स वणस्सतिकालो। एवं अपज्जत्ताणं एवं पज्जत्ताणं अंतरं॥

---

१. सं० पा०—कालं जाव असंखेज्जा।

२. एवं जाव (क, ख, ग, ट, त्रि)।

३. सं० पा०—कालं जाव आवलियाए।

४. अपज्जत्ताणं संचिट्ठणा अंतोमुहुत्तं (ता)।

५. १२-१६ एतानि पञ्च सूत्राणि मलयगिरिवृत्तिमनुसृत्य प्रज्ञापनायाः कायस्थितिपदात् (१८।३९-४४) गृहीतानि सन्ति। 'ता' प्रतौ या वाचनास्ति सा अर्वाचीनादर्शेषु नोपलभ्यते। ताः—पज्जत्ताणं संचिट्ठणा जा जस्सुक्कोसा संखेज्जगुणा जाव वणस्सतीणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं। तसाणं पज्जत्ताणं संचिट्ठणा सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं। क, ख, ग, ट, त्रिः—पज्जत्तगाणं—वाससहस्सा संखा। पुढविदगाणिलतरूण पज्जत्ता। तेऊ राइंदिसंखा तससागरसतपुहत्तमब्भहियं (पुहुत्ताइं—ग)। पज्जत्तगाणं सव्वेसिं एवं।

१. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—पुढविकाइयस्स णं भंते! केवतियं कालं अंतरं होति? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो। एवं आउ-तेउ-वाउकाइयाणं वणस्सइकालो, तसकाइयाणवि, वणस्सइकाइयस्स पुढविकाइयकालो। एवं अपज्जत्तगाणवि वणस्सइकालो, वणस्सईणं पुढविकालो। पज्जत्तगाणवि एवं चेव वणस्सइकालो, पज्जत्तवणस्सईणं पुढविकालो। वृत्तौ पृथ्वीकायिकसूत्रस्य व्याख्याया अनन्तरं एवं व्याख्यातमस्ति—एवमप्तेजोवायुत्रससूत्राण्यपि भावनीयानि। वनस्पतिसूत्रे उत्कर्षतोसंख्येयं कालम् 'असंखेज्जाओ उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीओ कालतो

१८. अप्पाबहुयं[1]-सव्वत्थोवा[2] तसकाइया, तेउक्काइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउक्काइया विसेसाहिया, वणस्सतिकाइया अणंतगुणा। एवं अपज्जत्तगावि[3] पज्जत्तगावि[4] ॥

१९. एतेसि[5] णं भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा[6] °बहुया वा तुल्ला वा° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। सव्वत्थोवा आउक्काइया अपज्जत्तगा, पज्जत्तगा संखेज्जगुणा जाव वणस्सतिकाइयावि। सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥

२०. एएसि[7] णं भंते ! पुढविकाइयाणं जाव तसकाइयाणं पज्जत्तग-अपज्जत्तगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, तेउक्काइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया आउक्काइया वाउक्काइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया[8], तेउक्काइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढवि-आउ-वाउपज्जत्तगा विसेसाहिया[9] वणस्सतिकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा[10], वणस्सतिकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा[11] ॥

२१. सुहुमस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। 'एवं जाव सुहुमणिओयस्स'[12], एवं[13] अपज्जत्तगाणवि, पज्जत्तगाणवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥

२२. सुहुमे[14] णं भंते ! सुहुमेत्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो-

---

खेत्ततो असंखेज्जा लोगा' इति वक्तव्यम् (वृत्ति पत्र ४१२) तथा अपर्याप्तकानां पर्याप्तकानां च अन्तरकालो नैव व्याख्यातोस्ति।

१. १८-२० सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ संक्षिप्ता वाचनास्ति—अप्पाबहुगा पंच।

२. प्रथममल्पबहुत्वम्।

३. द्वितीयमल्पबहुत्वम्।

४. तृतीयमल्पबहुत्वम्।

५. चतुर्थमल्पबहुत्वम्।

६. सं० पा०—अप्पा वा एवं जाव विसेसाहिया।

७. पञ्चममल्पबहुत्वम्।

८. पृथिव्यप्वायवोऽपर्याप्तकाः क्रमेण विशेषाधिकाः प्रभूतप्रभूततरप्रभूततममसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिमानत्वात् (मवृ)।

९. ततः पृथिव्यप्वायवः पर्याप्ताः क्रमेण विशेषाधिकाः (मवृ)।

१०. अणंतगुणा सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया (क, ख, ग, ट)।

११. संखेज्जगुणा सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया (क, ख, ग, ट)।

१२. एवं सव्वं जाव सुहुमणिओगे सुहुमवणस्सति (ता)।

१३. अतः सूत्रपर्यन्तं 'ता' प्रतौ एवं पाठभेदोस्ति—सुहुमअपज्जत्तस्स णं भं केव ट्ठि ? गो ! जहं अंतोमु उक्को अंतो। एवं सव्वे ७। एवं पज्जत्तावि मुहुत्तं ७। वृत्तौ एतावतः पाठस्य स्थाने चतुर्दश सूत्राणां सङ्केतोस्ति—एवं सप्तसूत्री अपर्याप्तविषया सप्तसूत्री पर्याप्तविषया वक्तव्या, सर्वत्रापि जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् (वृत्ति पत्र ४१४)।

१४. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'ता' प्रतौ एवं पाठभेदोस्ति—सुहुमे णं भंते ! सुहुमेति कालतो केवचिरं होति ? पुढविकालो, एवं सव्वे ७। सुहुमअप जहं अंतोमु उक्को अंतो एवं सव्वे ७। एवं पज्जत्तापि मुहुत्तं ७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जकालं जाव[1] असंखेज्जा लोया। सव्वेसिं पुढविकालो जाव सुहुमणिओयस्स पुढविकालो। अपज्जत्तगाणं[2] सव्वेसिं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। एवं पज्जत्तगाणवि सव्वेसिं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥

२३. सुहुमस्स णं भंते ! 'केवतियं कालं अंतरं'[3] होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो ॥

२४. 'सुहुमपुढविकाइयस्स'[4] णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव[5] आवलियाए असंखेज्जतिभागे[6]। एवं जाव वाऊ। सुहुमवणस्सति-सुहुमनिओगस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं जहा ओहियस्स अंतरं। एवं[7] अपज्जत्ता-पज्जत्तगाणवि अंतरं ॥

२५. अप्पाबहुगं[8]—सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया, सुहुमआउ-वाऊ विसेसाहिया, सुहुमणिओया असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सतिकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया। एवं अपज्जत्तगाणं[9], पज्जत्तगाणवि एवं चेव ॥

२६. एतेसि णं भंते ! सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा, सुहुमा पज्जत्ता संखेज्जगुणा[10]। एवं जाव सुहुमणिगोया ॥

२७. एएसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं जाव सुहुमणिओयाण य पज्जत्ता-पज्जत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमपुढवि-आउ-वाउपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमणिओया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सतिकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्ता विसेसाहिया ॥

१. जी० ५।८।

२. वृत्तौ 'एवं' सूत्रसङ्केतो विद्यते—एवं सूक्ष्मापर्याप्तपृथिव्यादिविषयापि षट्सूत्री वक्तव्या। एवं पर्याप्तविषयापि सप्तसूत्री।

३. अंतरं केवच्चिरं (ता)।

४. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—सुहुमवणस्सतिकाइयस्स सुहुमणिओयस्सवि जाव असंखेज्जइभागो। पुढविकाइयादीणं वणस्सतिकालो। एवं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणवि।

५. जी० ५।६।

६. सुहुमे पुढविअंतरं वणस्सतिकालो (ता)।

७. यथा चेयमौघिकी सप्तसूत्री उक्ता तथाऽपर्याप्तविषया सप्तसूत्री पर्याप्तविषया च सप्तसूत्री वक्तव्या नानात्वाभावात् (मवृ)।

८. एवं अप्पाबहुगं (क, ख, ग, ट, त्रि); २५-२७ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ संक्षिप्ता वाचनास्ति अप्पाबहुगाणि पंच।

९. अपज्जत्तगाणं सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया (क)।

१०. असंखेज्जगुणा (त्रि) इति अशुद्धम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. बायरस्स[1] णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।[2] बादरपुढविकाइयस्स बावीसं वाससहस्साइं, बादरआउकाइयस्स सत्त वाससहस्साइं, बादरतेउक्काइयस्स तिण्णि राइंदियाइं, बादरवाउकाइयस्स तिण्णि वाससहस्साइं, बादरवणस्सतिकाइयस्स दसवाससहस्साइं, पत्तेयबादरवणस्सतिकाइयस्स दस वाससहस्साइं, णिओदस्स बादरणिओदस्स य अंतोमुहुत्तं जहण्णुक्कस्स, बादरतसकाइयस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं, अपज्जत्ताणं सव्वेसिं अंतोमुहुत्तं, पज्जत्ताणं उक्कोसा अंतोमुहुत्तूणा । णिओदस्स बादरणिओदस्स य पज्जत्ताणं अंतोमुहुत्तं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि ।।

२९. बायरे णं भंते ! बायरेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो[3] । बादरपुढविसंचिट्ठणा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीओ जाव बादरवाऊ । बादरवणस्सतिकाइयस्स जहा ओहिओ । बादरपत्तेयवणस्सतिकाइयस्स जहा बादरपुढवी । णिओते जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अड्ढाइज्जा पोग्गलपरियट्टा । बादरणिओते जहा बादरपुढवी । बादरतसकाइयस्स दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं । अपज्जत्ताणं सव्वेसिं अंतोमुहुत्तं । बादरपज्जत्ताणं संचिट्ठणा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं । बादरपुढविकाइयस्स संखेज्जाइं वाससहस्साइं, एवं आऊ, तेउकाइयस्स संखेज्जाइं राइंदियाइं, वाउकाइयस्स संखेज्जाइं वाससहस्साइं, एवं बादरवणस्सतिपज्जत्तए, पत्तेगबादरवणस्सतिकाइयस्सवि, बादरणिओदपज्जत्तए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, णिओदपज्जत्तए वि अंतोमुहुत्तं, बादरतसकाइयपज्जत्तए सागरोवमसतपुहत्तं सातिरेगं ।।

१. वृत्तिकृता अस्मिन्नालापके त्रिंशत् सूत्राणि व्याख्यातानि ।

२. अतः परं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं वाचना भेदो विद्यते—ठिई पण्णत्ता, एवं बायरतसकाइयस्सवि, बायरपुढवीकाइयस्स बावीस वाससहस्साइं, बायरआउस्स सत्तवाससहस्सं, बायरतेउस्स तिण्णि राइंदिया, बायरवाउस्स तिण्णि वाससहस्साइं, बायरवण दस वाससहस्साइं, एवं पत्तेयसरीरबादरस्सवि, णिओयस्स जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमु, एवं बायरणिओयस्सवि । अपज्जत्तगाणं सव्वेसिं अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तगाणं उक्कोसिया ठिई अंतोमुहुत्तूणा कायव्वा सव्वेसिं ।

३. अतः परं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु भिन्ना वाचना दृश्यते—बायरपुढविकाइयआउतेउवाउपत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयस्स बायरनिओयस्स एतेसिं जहण्णेणं अंतोमु उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीओ ।

संखातीयाओ समाओ, अंगुलभागे तहा असंखेज्जा ।
ओहे य बायरतरु-अणुबंधो सेसओ वोच्छं ।।१।।
उस्सप्पिणि-ओसप्पिणी, अड्ढाइय पोग्गलाण परियट्टा ।
बेउदधिसहस्सा, खलु साधिया होंति तसकाए ।।२।।
अंतोमुहुत्तकालो होइ अपज्जत्तगाण सव्वेसिं ।
पज्जत्तबायरस्स य, बायरतसकाइयस्सावि ।।३।।
एतेसिं ठिई सागरोवमसतपुहत्तं साइरेगं
तेउस्स संख राइंदिया, दुविहणिओए मुहुत्तमद्धं तु ।
सेसाणं संखेज्जा, वाससहस्सा य सव्वेसिं ।।४।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. बादरस्स[1] णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुढविकालो। बादरपुढविकाइयस्स वणस्सतिकालो जाव बादरवाउकाइयस्स, बादरवणस्सतिकाइयस्स पुढविकालो, पत्तेयबादरवणस्सइकाइयस्स वणस्सतिकालो, णिओदो बादरणिओदो य जहा बादरो ओहिओ, बादरतसकाइयस्स वणस्सतिकालो। अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणं च एसेव विही ॥

३१. अप्पाबहुयाणि[2]—सव्वत्थोवा बायरतसकाइया, बायरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सतिकाइया असंखेज्जगुणा, बायरणिओया असंखेज्जगुणा, बायरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा आउ-वाउकाइया असंखेज्जगुणा, बायरवणस्सतिकाइया अणंतगुणा, बायरा विसेसाहिया। एवं अपज्जत्तगाणवि। पज्जत्तगाणं सव्वत्थोवा बायरतेउक्काइया, बायरतसकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेगसरीरबायरा असंखेज्जगुणा, सेसा तहेव जाव बादरा विसेसाहिया ॥

३२. एतेसि णं भंते ! बायराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? सव्वत्थोवा बायरा पज्जत्ता, बायरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, एवं सव्वे जाव बायरतसकाइया ॥

३३. एएसि णं भंते ! बायराणं बायरपुढविकाइयाणं जाव बायरतसकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? सव्वत्थोवा बायरतेउक्काइया पज्जत्तगा, बादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सतिकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरणिओया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढवि-आउ-वाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सतिकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरा णिओगा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरपुढवि-आउ-वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा, बायरपज्जत्तगा विसेसाहिया, बायरवणस्सतिकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बायरा विसेसाहिया ॥

३४. एएसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं जाव सुहुमनिगोदाणं बायराणं बायरपुढविकाइयाणं जाव बायरतसकाइयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतसकाइया, बायरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, तहेव जाव बायरवाउकाइया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउक्काइया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया, सुहुम-

---

१. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु वाचनाभेदो विद्यते—अंतरं बायरस्स बायरवणस्सतिस्स णिओयस्स बायरणिओयस्स एतेसिं चउण्हवि पुढविकालो जाव असंखेज्जा लोया, सेसाणं वणस्सतिकालो। एवं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणवि अंतरं। ओहे य बायरतरु, ओघनिओए बायरणिओए य। कालमसखेज्जं अंतरं, सेसाण वणस्सतिकालो ॥१॥

२. ३१-३६ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ संक्षिप्ता वाचनास्ति—अप्पाबहुताणि पंच मीसगाणि विभाणितव्वाणि पंच जहा बहुवत्तव्वताए ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउकाइया सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिओया असंखेज्जगुणा, बायरवणस्सतिकाइया अणंतगुणा, बायरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, सुहुमा विसेसाहिया। एवं अपज्जत्तगावि पज्जत्तगावि, णवरि—सव्वत्थोवा बायरतेउक्काइया पज्जत्ता, बायरतसकाइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, सेसं तहेव जाव सुहुमा पज्जत्ता विसेसाहिया ॥

३५. एएसि णं भंते ! सुहुमाणं बादराण य पज्जत्ताणं अपज्जत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? (गोयमा! ?) सव्वत्थोवा बायरा पज्जत्ता, बायरा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा, सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्ता, सुहुमपज्जत्ता संखेज्जगुणा, एवं सुहुमपुढविबायरपुढवि जाव सुहुमनिओया बायरनिओया, नवरं—पत्तेयसरीरबायरवणस्सतिकाइया सव्वत्थोवा पज्जत्ता, अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। एवं बादरतसकाइयावि ॥

३६. सव्वेसिं पज्जत्तअपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? सव्वत्थोवा बायरतेउक्काइया पज्जत्ता, बायरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ते चेव अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरणिओया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा, बायरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा, आउ-वाउकाइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा, बायरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, बायरणिओया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा, बायरपुढवि-आउ-वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा. सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढवि-आउ-वाउकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमपुढवि-आउ-वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमणिगोया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमणिगोया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, बायरवणस्सतिकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा, बायरा पज्जत्तगा विसेसाहिया, बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा, बायरा अपज्जत्ता विसेसाहिया, बायरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सतिकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया ॥

३७. कतिविधा[1] णं भंते ! णिओदा[2] पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा[3] पण्णत्ता, तं जहा—णिओदा य णिओदजीवा य ॥

---

१. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु वृत्तौ च निगोदा निगोदजीवाश्च यथा सन्निधिलिखिता व्याख्यातास्च-सन्ति। ताडपत्रीयादर्शे निगोदानां पूर्णं प्रकरणं एकत्र विद्यते, तदनंतरं च निगोदजीवानां, ततश्च निगोदानां निगोदजीवानामल्पबहुत्वम्। अस्माभिः ताडपत्रीयादर्शक्रमोतिप्राचीनत्वेन च व्यवस्थितत्वेन स्वीकृतः। अस्मिन् क्रमे समापतितानां सूत्राणां व्यवस्था निम्नाङ्कैर्बोद्धव्या—

ता	अर्वाचीनादर्शवृत्तिः	ता	अर्वाचीनादर्शवृत्तिः	ता	अर्वाचीनादर्शवृत्तिः
१-४	१-४	१४-१६	२०-२२	२०-२२	१७-१९
५-१३	८-१६	१७-१९	५-७	२३-२४	२३-२४

२. णिओता (ता)।

३. दुविहा णिओदा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. णिओदा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमणिओदा य बायरणिओदा य ।।

३९. सुहुमणिओदा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य'[1] ।।

४०. बादरणिओदावि दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य ।।

४१. णिओदा णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, असंखेज्जा, णो अणंता ।।

४२. अपज्जत्ता[2] णं भंते ! णिओदा दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, असंखेज्जा, णो अणंता ।।

४३. पज्जत्ता णं भंते ! णिओदा दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, असंखेज्जा, णो अणंता ।।

४४. सुहुमणिओदा णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, असंखेज्जा, णो अणंता ।।

४५. अपज्जत्ता[3] णं भंते ! सुहुमणिओदा दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, असंखेज्जा, णो अणंता ।।

४६. पज्जत्ता णं भंते ! सुहुमणिओदा दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, असंखेज्जा, णो अणंता ।।

४७. बादरणिओदा[4] णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, असंखेज्जा, णो अणंता ।।

४८. अपज्जत्ता णं भंते ! बादरणिओदा दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, असंखेज्जा, णो अणंता ।।

४९. पज्जत्ता णं भंते ! बादरणिओदा दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, असंखेज्जा, णो अणंता ।।

५०. णिओदा णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, णो असंखेज्जा, अणंता । एवं पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि ।।

५१. 'एवं सुहुमाणवि तिण्णि आलावगा पदेसट्ठयाए सव्वे य अणंता । एवं पदेसट्ठताए बादराणवि तिण्णि आलावगा सव्वे य अणंता । एमेए दव्वपदेसेहिं अट्ठारस आलावगा'[5] ।।

५२. एतेसि णं भंते ! णिओदाणं सुहुमाणं बादराणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं दव्वट्ठयाए

---

१. पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. ४२,४३ सूत्रयोः स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु संक्षिप्तपाठोस्ति—एवं पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि ।

३. ४५,४६ सूत्रयोः स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु संक्षिप्तपाठोस्ति—एवं पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि ।

४. ४७-४९ सूत्राणां स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु संक्षिप्तपाठोस्ति—एवं बायरावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि ।

५. एवं सुहुमणिओयावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि । एवं बायरणिओयावि पज्जत्तयावि अपज्जत्तयावि सव्वे अणंता (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पदेसट्ठयाए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरणिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए, बादरणिओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा ।

'पदेसट्ठताए—सव्वत्थोवा बादरणिओदा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए, बादरणिओदा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा'[१] ।

दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा बादरणिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए, 'बादरणिओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा'[२], सुहुमणिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा सुहुमणिओदेहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बादरणिओदा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, बादरणिओदा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, 'सुहुमणिओदा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा'[३], सुहुमणिओदा पज्जत्ता पदेसट्ठताए संखेज्जगुणा ॥

५३. णिओदजीवा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमणिओदजीवा य बादरणिओदजीवा य ॥

५४. 'सुहुमणिओदजीवा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा'[४] ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य ॥

५५. 'बादरणिओदजीवा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा'[५] ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य ॥

५६. णिगोदजीवा णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, णो असंखेज्जा, अणंता । एवं अपज्जत्तावि अणंता, पज्जत्तावि अणंता ॥

५७. 'एवं सुहुमावि पज्जत्ता अपज्जत्ता तिविधावि अणंता'[६] ॥

५८. 'बादरणिओदजीवा णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? गोयमा ! णो संखेज्जा, णो असंखेज्जा, अणंता । एवं अपज्जत्तावि, एवं पज्जत्तावि । एवेते णिओदजीवेसु दव्वट्ठयाए णव आलावगा सव्वेवि अणंता'[७] 'एवं पदेसट्ठयाएवि णव आलावगा सव्वेवि अणंता । एवमेते णिओदजीवेसु सुहुम-बादरेसु दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए अट्ठारस आलावगा अणंता'[८] ॥

---

१. एवं पदेसट्ठताएवि (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
२. जाव (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
३. जाव (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
४. सुहुमणिगोदजीवा (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
५. बादरणिगोदजीवा (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
६. एवं सुहुमणिओयजीवावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
७. बादरणिओयजीवावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि (क, ख, ग, ट, त्रि) ।
८. एवं णिओदजीवा नवविहावि पएसट्ठयाए सव्वे अणंता (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५९. एतेसि[1] णं भंते ! णिओदजीवाणं सुहुमाणं बादराणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरणिओदजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए, बादरणिओदजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा।
पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा बादरणिओदजीवा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए, बादरणिओदजीवा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा।
दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा बादरणिओदजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए, बादरणिओदजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवेहिंतो पज्जत्तेहिंतो दव्वट्ठयाए बादरणिओदजीवा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, बादरणिओदजीवा[2] अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा ॥

६०. एतेसि णं भंते ! 'णिओदाणं णिओदजीवाणं सुहुमाणं बादराणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं'[3] दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरणिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए, बादरणिओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमणिओदेहिंतो[4] पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बादरणिओदजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, बादरणिओदजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा[5] पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा।
पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा बादरणिओदजीवा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए, बादरणिओदजीवा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिगोदजीवा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा[6], सुहुमणिओदजीवेहिंतो[7] पज्जत्तएहिंतो पदेसट्ठयाए बादरणिओदा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, बादरणिओदा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, 'सुहुमणिओदा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा'[8], सुहुम-

१. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—एवं णिओयजीवावि, णवरि संकमए जाव सुहुमणिओयजीवेहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बायरणिओयजीवा पज्ज पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सेसं तहेव जाव सुहुमणिओयजीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा।

२. °णिओता जीवा (ता) अग्रेपि एवमेव।

३. णिगोदाणं सुहुमाणं बायराणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं निओयजीवाणं सुहुमाणं बायराणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं (क,ख,ग,ट,त्रि)।

४. सुहुमणिओतेहिंतो (ता)।

५. °णिओदा जीवा (ता) अग्रेपि एवमेव।

६. असंखेज्जगुणा (ता)।

७. सुहुमणिओगा जीवेहिंतो (ता)।

८. जाव (क,ख,ग,ट,त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिओदा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा ।

दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा बादरणिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए, बादरणिओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, 'सुहुमणिओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठताए असंखेज्जगुणा'[1], सुहुमणिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमणिओदेहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बादरणिओदजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, 'बादरणिओदजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा'[2], सुहुमणिओदजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवेहिंतो[3] पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बादरणिओदजीवा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, 'बादरणिओदजीवा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमणिओदजीवेहिंतो पज्जत्तएहिंतो पदेसट्ठयाए बादरणिओदा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, बादरणिओदा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमणिओदा अपज्जत्ता पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा'[4], सुहुमणिओदा पज्जत्ता पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा । सेत्तं छव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा ।।

---

१. जाव (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

२. सेसा तहेव जाव (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

३. सुहुमणिओतजीवेहिंतो (ता) ।

४. सेसा तहेव जाव (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठी सत्तविहपडिवत्ती

१. तत्थ णं जेते एवमाहंसु 'सत्तविहा संसारसमावण्णगा जीवा' ते एवमाहंसु, तं जहा—नेरइया तिरिक्खा तिरिक्खजोणिणीओ मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ ।।

२. णेरइयस्स[1] ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।।

३. तिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।।

४. एवं तिरिक्खजोणिणीएवि, मणुस्साणवि, मणुस्सीणवि ।।

५. देवाणं ठिती तहा णेरइयाणं ।।

६. देवीणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं पणपण्णपलिओवमाणि ।।

७. नेरइय-देव-देवीणं जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा ।।

८. तिरिक्खजोणिएणं भंते ! तिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

९. तिरिक्खजोणिणीणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं । एवं मणुस्सस्स मणुस्सीएवि ।।

१०. णेरइयस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो । एवं सव्वाणं तिरिक्खजोणियवज्जाणं ।।

११. तिरिक्खजोणियाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहत्तं सातिरेगं ।।

१२. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ, मणुस्सा असंखेज्जगुणा, नेरइया असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ, देवा असंखेज्जगुणा[2], देवीओ

---

१. २-११ सूत्राणां स्थाने ताडपत्रीयादर्शे संक्षिप्ता वाचनास्ति—सत्तण्हवि ठिती, सत्तण्हवि संचिट्ठणा ओहियाणं अपज्ज पज्जत्ताणं, तिरिक्खजोणियस्स अंतरं जहं अंतोमु उक्को सागरोवमसतपुहत्तं सातिरेगं सेसाणं छण्हवि ।

२. आदर्शेषु नवमप्रतिपत्तावपि (९।२२०) 'देवा असंखेज्जगुणा' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तिकृता उभयत्रापि 'देवाः संख्येयगुणाः' इति व्याख्यातम् । सम्भाव्यते वृत्तिकृता आदर्शेषु देवा संखेज्जगुणा' इति पाठो लब्धः, इदानीमपि केषुचिदादर्शेषु एष पाठो लभ्यते, तं पाठमनुसृत्य वृत्तिकृता 'देवाः संख्येयगुणा' इति पाठस्य महादण्डकानुसारेण समर्थनं कृतम्—ताभ्यो देवाः संख्येयगुणाः, वानमन्तरज्योतिष्-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा। सेत्तं सत्तविहा संसारसमावण्णगा जीवा॥

काणामपि जलचरतिर्यंग्योनिकीभ्यः संख्येयगुणतया महादण्डके पठितत्वात् (वृत्तिपत्र ४२८) महादण्डके जलचरस्त्रीभ्यः व्यन्तराणां देवानां संख्येयगुणत्वमस्ति (प्रज्ञापनावृत्तिपत्र १६५)। एतदपेक्षया वृत्तिकृतो मतं समीचीनं, किन्तु समग्रदेवापेक्षया नैतत् समीचीनं भवति, प्रज्ञापनायास्तस्मिन्नेव पदे (३।३६) 'देवा असंखेज्जगुणा' इति पाठोस्ति। वृत्तिकृता इत्थमेव व्याख्यातमस्ति—ताभ्योपि देवा असंख्येयगुणाः, असंख्येयगुणप्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणिगतप्रदेशराशिमानत्वात् (प्रज्ञापनावृत्तिपत्र १२०) अनेन इदं स्पष्टं भवति यत्र समग्रदेवापेक्षः पाठस्तत्र 'असंखेज्जगुणा' इति पाठ एव युक्तः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमी अट्ठविहपडिवत्ती

१. तत्थ जेते एवमाहंसु 'अट्ठविहा संसारसमावण्णगा जीवा' ते एवमाहंसु—पढमसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया पढमसमयतिरिक्खजोणिया अपढमसमयतिरिक्खजोणिया पढमसमयमणुस्सा अपढमसमयमणुस्सा पढमसमयदेवा अपढमसमयदेवा ।।

२. पढमसमयनेरइयस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! 'एगं समयं ठिती पण्णत्ता'[1] ।।

३. अपढमसमयनेरइयस्स जहण्णेणं दसवाससहस्साइं समयूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ।।

४. 'एवं सव्वेसिं पढमसमयगाणं एगं समयं'[2] ।।

५. अपढमसमयतिरिक्खजोणियाणं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं समयूणाइं ।।

६. 'मणुस्साणं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं समयूणाइं'[3] ।।

७. देवाणं जहा णेरइयाणं[4] ।।

८. णेरइय-देवाणं जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणावि[5] ।।

९. पढमसमयतिरिक्खजोणिए णं भंते ! पढमसमयतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होती ? गोयमा ! 'एक्कं समयं'[6] ।।

१०. अपढमसमयतिरिक्खजोणियाणं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

११. पढमसमयमणुस्साणं एक्कं[7] समयं ।।

---

१. पढमसमयनेरइयस्स जह एक्कं समयं उक्का एक्कं समय (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

२. पढमसमयतिरिक्खजोणियस्स जह एक्कं समयं उक्को एक्कं समय (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

३. एवं मणुस्साणवि जहा तिरिक्खजोणियाणं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

४. णेरइयाणं ठिती (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

५. संचिट्ठणा दुविहाणवि (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

६. जह एक्कं समयं उक्को एक्कं समयं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

७. जह उ एक्कं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. अपढमसमयमणुस्साणं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं[1] ॥

१३. अंतरं—पढमसमयणेरइयस्स जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

१४. अपढमसमयणेरइयस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं[2], उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

१५. पढमसमयतिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं दो खुड्डागाइं भवग्गहणाइं समयूणाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

१६. अपढमसमयतिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं ॥

१७. पढमसमयमणुस्सस्स जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं समयूणाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

१८. अपढमसमयमणुस्सस्स जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

१९. 'देवा जहा नेरइया'[3] ॥

२०. अप्पाबहुगं—एतेसि णं भंते ! पढमसमयणेरइयाणं जाव पढमसमयदेवाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयमणुस्सा, पढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, पढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा ॥

२१. अपढमसमयणेरइयाणं जाव अपढमसमयदेवाणं एवं चेव अप्पाबहुं, णवरिं—अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥

२२. एतेसिं पढमसमयणेरइयाणं अपढमसमयणेरइयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? सव्वत्थोवा पढमसमयणेरइया, अपढमसमयनेरइया असंखेज्जगुणा । 'एवं सव्वे, णवरं—अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा'[4] ॥

२३. 'पढमसमयणेरइयाणं जाव अपढमसमयदेवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा'[5]? सव्वत्थोवा पढमसमयमणुस्सा, अपढमसमयमणुस्सा असंखेज्जगुणा, पढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, पढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । सेत्तं अट्ठविहा संसारसमावण्णगा जीवा[6] ॥

---

१. अतः परं ताडपत्रीयादर्शे वृत्तौ च 'देवा जहा णेरइया' इति पाठो लभ्यते, किन्तु 'णेरइय-देवाणं जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणावि' इति सूत्रेण गतार्थत्वात् नापेक्षितोसौ विद्यते ।

२. अप्रथमसमयनैरयिकसूत्रे पृथग् नोक्तः (मवृ) ।

३. देवाणं जहा णेरइयाणं जह दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्को वणस्सइकालो, अपढमसमय जह अंतो उक्को वणस्सइकालो (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

४. एवं सव्वे (क,ख,ग,ट,त्रि); पुच्छा सव्वत्थो पढमसमयति अपतिरि अणं (ता) ।

५. अट्ठण्हवि पुच्छा (ता) ।

६. जीवा पण्णता (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमी नवविहपडिवत्ती

१. तत्थ णं जेते एवमाहंसु 'णवविधा संसारसमावण्णगा जीवा' ते एवमाहंसु— पुढविक्काइया आउक्काइया तेउक्काइया वाउक्काइया वणस्सइकाइया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया ॥

२. ठिती[1] सव्वेसिं भाणियव्वा ॥

३. पुढविक्काइयाणं संचिट्ठणा पुढविकालो जाव वाउक्काइयाणं, वणस्सईणं वणस्सतिकालो, बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया संखेज्जं कालं, पंचेंदियाणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं ॥

४. अंतरं सव्वेसिं अणंतं कालं, वणस्सतिकाइयाणं असंखेज्जं कालं ॥

५. अप्पाबहुगं[2]—सव्वत्थोवा पंचिंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया, तेउक्काइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया, वणस्सतिकाइया अणंतगुणा। सेत्तं णवविधा संसारसमावण्णगा जीवा ॥

---

१. २-४ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ एवं पाठभेदोस्ति—ठिती पुव्वभणिता णवण्णवि, संचिट्ठणा, पुढविआउतेउवाऊणं पुढविकालं, वणस्सतीणं वणस्सतिकालं बिदिग ३ संखेज्जं कालं पंचिंदिए सागरोवमसहस्सं सातिरेगं। पुढविस्संतरं वणकालो जाव वाऊ, वणस्सति पुढविकालो, बिदि ३,४,५ वणकालो अंतरं।

२. अप्पाबहुए पुच्छा (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमी दसविहपडिवत्ती

१. तत्थ णं जेते एवमाहंसु 'दसविधा संसारसमावण्णगा जीवा' ते एवमाहंसु, तं जहा—पढमसमयएगिंदिया अपढमसमयएगिंदिया पढमसमयबेइंदिया अपढमसमयबेइंदिया[1] •पढमसमयतेइंदिया अपढमसमयतेइंदिया पढमसमयचउरिंदिया अपढमसमयचउरिंदिया° पढमसमयपंचिंदिया अपढमसमयपंचिंदिया ॥

२. पढमसमयएगिंदियस्स[2] णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! 'एगं समयं'[3]। अपढमसमयएगिंदियस्स जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयूणाइं। एवं सव्वेसिं पढमसमयिकाणं 'एगं समयं'[4], अपढमसमयिकाणं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयूणा जाव पंचिंदियाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ॥

३. संचिट्ठणा—पढमसमइयस्स 'एगं समयं'[5]। अपढमसमयिकाणं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं[6] एगिंदियाणं वणस्सतिकालो, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं संखेज्जं कालं, पंचिंदियाणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं ॥

४. पढमसमयएगिंदियाणं केवतियं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दो खुड्डागाइं

१. सं० पा०—अपढमसमयबेइंदिया जाव पढमसमयपंचिंदिया।

२. २-४ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ एवं पाठभेदोस्ति—पढमसमयिगाणं एगं समयं ठिती, अपढम जहं खुड्डागं भ समयूणं उक्कोसाग सता ठिती समयूणा जाव पंचिंदिया। पढमसमयिगाणं सव्वेसी एगं समयं संचिट्ठणा, अपढमसमयेगेंदिया जहं खुड्डागं भ समयूणं उक्को वणकालो, बेइंदियातेइंदिय चउ जहं खुड्डा समयूणं उक्को संखेज्जं कालं पंचिंदियो अपढमस जहं खुड्डा समऊणं उक्को सागरोवमसहस्सं सातिरेगं। पढमसमयएगिंदियस्स अंतरं जहं दो खुड्डाइं समयूणाइं उक्को वणकालो, अपढएगिंदियस्स अंतरं जहं खुड्डा समयाधिगं उक्को दो सागरोवमसहस्साइं। एवं पढमसमयिगाणं सव्वेसिं जहं दो खु समयूणाइं उक्को वणकालो अपढ जहं खुड्डा समयधिगं उक्को वणकालो।

३. जहण्णेणं एक्कं समयं उक्को एक्कं (क, ख, ग, ट, त्रि)।

४. जहण्णेणं एक्को समओ उक्कोसेणं एक्को समओ (क,ख,ग,ट,त्रि)।

५. जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं एक्कं समयं (क,ख,ग,ट,त्रि)।

६. उक्कोस्सेणं (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवग्गहणाइं समयूणाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो। अपढमसमयएगिंदियाणं अंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं। सेसाणं सव्वेसिं पढमसमयिकाणं अंतरं जहण्णेणं दो खुड्डागाइं भवग्गहणाइं समयूणाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो। अपढमसमयिकाणं सेसाणं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

५. पढमसमइयाणं सव्वेसिं सव्वत्थोवा पढमसमयपंचेंदिया, पढमसमयचउरिंदिया विसेसाहिया, पढमसमयतेइंदिया विसेसाहिया, पढमसमयबेइंदिया विसेसाहिया, पढमसमयएगिंदिया विसेसाहिया। एवं अपढमसमयिकावि, णवरि—अपढमसमयएगिंदिया अणंतगुणा ।।

६. दोण्हं अप्पबहुयं—सव्वत्थोवा पढमसमयएगिंदिया, अपढमसमयएगिंदिया अणंतगुणा, सेसाणं सव्वत्थोवा पढमसमयिगा अपढमसमयिगा असंखेज्जगुणा ।।

७. एतेसि णं भंते ! पढमसमयएगिंदियाणं अपढमसमयएगिंदियाणं जाव अपढमसमयपंचिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? सव्वत्थोवा पढमसमयपंचेंदिया, पढमसमयचउरिंदिया विसेसाहिया, पढमसमयतेइंदिया विसेसाहिया, 'पढमसमयबेइंदिया विसेसाहिया',[१] पढमसमयएगिंदिया विसेसाहिया, अपढमसमयपंचेंदिया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयचउरिंदिया विसेसाहिया जाव अपढमसमयएगिंदिया अणंतगुणा। सेत्तं दसविहा संसारसमावण्णगा जीवा। सेत्तं संसारसमावण्णगजीवाभिगमे ।।

८. से किं तं सव्वजीवाभिगमे ? सव्वजीवेसु णं इमाओ णव पडिवत्तीओ एवमाहिज्जंति। एगे एवमाहंसु—दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता जाव[२] दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ।।

९. तत्थ णं जेते एवमाहंसु दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा—सिद्धा चेव असिद्धा चेव ।।

१०. सिद्धे णं भंते ! सिद्धेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! साइए अपज्जवसिए ।।

११. असिद्धे णं भंते ! असिद्धेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! असिद्धे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणाइए[३] वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए ।।

१२. सिद्धस्स णं भंते ! 'केवतिकालं अंतरं'[४] होति ? गोयमा ! 'साइयस्स अपज्जवसियस्स'[५] णत्थि अंतरं ।।

१३. असिद्धस्स 'णं भंते ! केवइयं अंतरं होइ ? गोयमा[६] !' अणाइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं ।।

१४. एएसि णं भंते ! सिद्धाणं असिद्धाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा, असिद्धा अणंतगुणा ।।

---

१. एवं हेट्ठामुहा जाव (क,ख,ग,ट,त्रि)।
२. एगे एव २,३,४,५,६,७,८,९ एगे एवमाहंसु (ता)।
३. अणादीए (ता)।
४. अंतरं कालतो केवचिरं (ता)।
५. × (ता)।
६. पुच्छा (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सइंदिया चेव अणिंदिया चेव ॥

१६. 'सइंदिए णं भंते ! सइंदिएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! सइंदिए दुविहे पण्णत्ते—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, अणिंदिए साइए वा अपज्जवसिए । दोण्हवि अंतरं णत्थि'[1] ॥

१७. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा अणिंदिया, सइंदिया अणंतगुणा ॥

१८. अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सकाइया चेव अकाइया चेव ॥

१९. सकाइयस्स[2] संचिट्ठणंतरं जहा असिद्धस्स, अकाइयस्स जहा सिद्धस्स ॥

२०. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा अकाइया, सकाइया अणंतगुणा ॥

२१. अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—अजोगी य सजोगी य तधेव ॥

२२. अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सवेदगा चेव अवेदगा चेव ॥

२३. सवेदए णं भंते ! सवेदएत्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! सवेदए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिते, अणादीए वा सपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जेसे साइए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

२४. अवेदए णं भंते ! अवेदएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! अवेदए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—साइए वा अपज्जवसिते, साइए वा सपज्जवसिते । तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिते, से जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

२५. सवेदगस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, सादीयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

२६. अवेदगस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, साइयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव[3] अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

२७. अप्पाबहुगं—सव्वत्थोवा अवेदगा, सवेदगा अणंतगुणा ॥

२८. अहवा[4] दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सकसाई[5] य अकसाई य । सकसाई जहा सवेदए, अकसाई जहा अवेदए । सव्वत्थोवा अकसाई, सकसाई अणंतगुणा ॥

२९. अहवा दुविहा सव्वजीवा—सलेसा य अलेसा य जहा असिद्धा सिद्धा । सव्वत्थोवा अलेसा, सलेसा अणंतगुणा ॥

---

१. सइंदियस्स संचिट्ठणा अंतरं च जहा असिद्धस्स, अणिंदियस्स जहा सिद्धस्स (ता) ।

२. १९-२१ सूत्राणां स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु भिन्ना वाचना विद्यते—एवं चेव । एवं सजोगी चेव अजोगी चेव तहेव । एवं सलेस्सा चेव अलेस्सा चेव । ससरीरा चेव असरीरा चेव । संचिट्ठणं अंतरं अप्पाबहुयं जहा सइंदिया (सकसाइया-ग) एषु आदर्शेषु सकषायिकसूत्रानन्तरं लेश्यासूत्रं पुनर्लिखितमस्ति ।

३. जी० ९।२३ ।

४. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'क,ख,ग,ट,त्रि' आदर्शेषु एवं पाठभेदोस्ति—एवं सकसाई चेव अकसाई चेव, जहा सवेयके तहेव भाणियव्वे ।

५. सकसादी (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. 'अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा'[1] णाणी चेव अण्णाणी चेव ॥

३१. णाणी णं भंते ! णाणीत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! णाणी दुविहे पण्णत्ते—सादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिते से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं सातिरेगाइं ॥

३२. अण्णाणी तिविहे जहा[2] सवेदए[3] ॥

३३. 'णाणिस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, सादीयस्स सपज्जवसियस्स'[4] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

३४. अण्णाणिस्स 'अंतरं अणादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्जवसियस्स'[5] णत्थि अंतरं, सादीयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं ॥

३५. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा णाणी, अण्णाणी अणंतगुणा ॥

३६. अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता—सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य, संचिट्ठणा अंतरं जहण्णेणं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं[6] ॥

३७. अप्पाबहुं—सव्वत्थोवा अणागारोवउत्ता, सागारोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥

३८. अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—आहारगा चेव अणाहारगा चेव ॥

३९. आहारए णं भंते ! आहारएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! आहारए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—छउमत्थआहारए य केवलिआहारए य ॥

४०. छउमत्थआहारगस्स[7] जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं दुसमयूणं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—'असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ'[8] कालओ, खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ॥

४१. केवलिआहारए णं[9] •भंते ! केवलिआहारएत्ति कालओ° केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

४२. अणाहारए णं भंते ! अणाहारएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! अणाहारए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—छउमत्थअणाहारए य केवलिअणाहारए य ॥

४३. छउमत्थअणाहारए णं[10] •भंते ! छउमत्थअणाहारएत्ति कालओ° केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो समया ॥

४४. केवलिअणाहारए णं भंते ! केवलिअणाहारएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! केवलिअणाहारए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिद्धकेवलिअणाहारए य भवत्थकेवलि-

---

१. × (क,ख,ग,ट,त्रि)।
२. जी० ६।२३।
३. अण्णाणी जहा सवेदया (क,ख,ग,ट,त्रि)।
४. णाणिस्स अंतरं (क,ख,ग,ट,त्रि)।
५. दोण्हवि आदिल्लाणं (क, ख, ग, ट, त्रि)।
६. संचिट्ठणा दोण्हवि एवं अंतरंपि (ता)।
७ छउमत्थआहारए णं जाव केवचिरं होति ? गोयमा ! (क,ख,ग,ट,त्रि)।
८. जाव (क, ख, ग, ट, त्रि)।
९. सं० पा०—णं जाव केवचिरं।
१०. सं० पा०—णं जाव केवचिरं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणाहारए य ॥

४५. सिद्धकेवलिअणाहारए 'णं भंते ! सिद्धकेवलिअणाहारएत्ति कालओ केवचिरं होति'[1] ? गोयमा ! साइए अपज्जवसिए ॥

४६. भवत्थकेवलिअणाहारए 'णं भंते ! भवत्थकेवलिअणाहारएत्ति'[2] कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! भवत्थकेवलिअणाहारए दुविहे पण्णत्ते—सजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए य अजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए य ॥

४७. अजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए[3] णं भंते ! अजोगिभवत्थकेवलिअणाहारएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥

४८. सजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए[4] णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिअणाहारएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? अजहण्णमणुक्कोसेणं तिण्णि समया ॥

४९. छउमत्थआहारगस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो समया ॥

५०. केवलिआहारगस्स अंतरं अजहण्णमणुक्कोसेणं तिण्णि समया ॥

५१. छउमत्थअणाहारगस्स अंतरं जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं दुसमयूणं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ॥[5]

५२. सजोगिभवत्थकेवलिअणाहारगस्स णं भंते ! अंतरं केवतियं कालं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥

५३. अजोगिभवत्थकेवलिअणाहारगस्स णत्थि अंतरं ॥

५४. सिद्धकेवलिअणाहारगस्स 'साइयस्स अपज्जवसियस्स'[6] णत्थि अंतरं ॥

५५. 'एएसि णं भंते ! आहारगाणं अणाहारगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा'[7] ! सव्वत्थोवा अणाहारगा, आहारगा असंखेज्जगुणा ॥

५६. अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—भासगा[8] य अभासगा य ॥

५७. भासए णं भंते ! भासएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

५८. अभासए णं भंते ! अभासएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! अभासए दुविहे[9] पण्णत्ते—साइए वा अपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जेसे साइए

---

१. वृत्तौ 'ता' प्रतौ च एतत्सूत्रं अयोगिभवस्थकेवल्यनाहारकसूत्रानन्तरमस्ति ।

२. पुच्छा (ता) ।

३. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु ४७,४८ एतस्य सूत्रद्वयस्य व्यत्ययो दृश्यते ।

४. सजोगिभवत्थकेवलि पुच्छा (ता) ।

५. क, ख, ग, ट, त्रि आदर्शेषु अतः परं 'सिद्धकेवलिअणाहारसूत्रं' लिखितं दृश्यते ।

६. × (ता) ।

७. × (ता) ।

८. सभासगा (ग,त्रि) सर्वत्र ।

९. प्रज्ञापनायां (१८।१०५) अभाषकस्य त्रिविधत्वं प्रतिपादितमस्ति—अभासए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणाईए वा अपज्जवसिए, अणाईए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो[1] ।।

५९. भासगस्स णं भंते ! केवतिकालं अंतरं होति ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो[2] ।।

६०. अभासगस्स[3] साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, साइयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।।

६१. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा भासगा, अभासगा अणंतगुणा ।।

६२. अहवा दुविहा सव्वजीवा ससरीरी य असरीरी य । 'ससरीरी जहा असिद्धा'[4] असरीरी जहा सिद्धा । सव्वत्थोवा असरीरी, ससरीरी अणंतगुणा ।।

६३. अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—चरिमा चेव अचरिमा चेव ।।

६४. चरिमे णं भंते ! चरिमेत्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! चरिमे अणादीए सपज्जवसिए ।।

६५. अचरिमे दुविहे पण्णत्ते—अणाइए वा अपज्जवसिए, साइए वा अपज्जवसिए । 'दोण्हंपि णत्थि अंतरं'[5] ।।

६६. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुणा ।[6] सेत्तं दुविहा सव्वजीवा ।।

संगहणीगाहा—

सिद्धसइंदियकाए[7], जोए वेए कसायलेसा य ।
नाणुवओगाहारा, भाससरीरी य चरिमे य ।।१।।

६७. तत्थ णं जेते एवमाहंसु तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा—सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ।।

६८. सम्मदिट्ठी णं भंते ! सम्मदिट्ठीत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—साइए वा अपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए । तत्थ जेसे[8]

---

१. अणंतं कालं अणंता उस्सप्पिणी ओसप्पिणीओ वणस्सतिकालो (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. अणंतकालं वणस्सतिकालो (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

३. अभासगस्स पुच्छा (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

४. चिह्नाङ्कितः पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः ।

५. चरिमस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? णत्थि अंतरं । अचरिमस्स पुच्छा । अणादिगस्स अप णत्थि अंतरं, सादीगस्स अप णत्थि अंतरं (ता, मवृ) ।

६. अतः परं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु साकारानाकारालापको लिखितोस्ति, स च ३५ सूत्रानन्तरं पूर्वमेवागतः, वृत्तावपि तत्रैव व्याख्यातोस्ति, उक्तादर्शेषु तत्रापि लिखितोस्ति । अत्र लिपिदोषात् पुनर्लिखितः सम्भाव्यते ।

७. वृत्तौ एषा गाथा पाठान्तररूपेण उद्धृतास्ति,—'अत्र क्वचिद् द्विविधवक्तव्यता सङ्ग्रहणी गाथा' । अर्वाचीनादर्शेष्वपि नास्ति ।

८. अतः परं ७४ सूत्रपर्यन्तं 'ता' प्रतौ संक्षिप्तपाठः पाठभेदश्च विद्यते—जहा णाणिस्स, मिच्छद्दिट्ठिस्स संचिट्ठणंतराई जहा अण्णाणिस्स, सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स संचिट्ठणा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, तस्सेव अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलं परियट्टं देसूणं, अप्पाबहुयं भाणितव्वं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साइए सपज्जवसिते, से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं ॥

६९. मिच्छादिट्ठी तिविहे पण्णत्ते—अणाइए वा अपज्जवसिते, अणाइए वा सपज्जवसिते, साइए वा सपज्जवसिए। तत्थ जेसे साइए सपज्जवसिए, से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

७०. सम्मामिच्छादिट्ठी जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

७१. सम्मदिट्ठिस्स अंतरं साइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, साइयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव[१] अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं ॥

७२. मिच्छादिट्ठिस्स अणादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, साइयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं ॥

७३. सम्मामिच्छादिट्ठिस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

७४. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा सम्मामिच्छादिट्ठी, सम्मदिट्ठी अणंतगुणा, मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥

७५. अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता—परित्ता अपरित्ता नोपरित्ता-नोअपरित्ता ॥

७६. परित्ते णं भंते! परित्तेत्ति कालतो केवचिरं होति? परित्ते दुविहे पण्णत्ते—कायपरित्ते य संसारपरित्ते य ॥

७७. कायपरित्ते णं भंते! कायपरित्तेत्ति कालतो केवचिरं होति? 'गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं'[२] पुढविकालो[३] ॥

७८. संसारपरित्ते 'णं भंते! संसारपरित्तेत्ति कालओ केवचिरं होति? गोयमा'[४]। जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव[५] अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

७९. अपरित्ते णं भंते! अपरित्तेत्ति कालओ केवचिरं होति[६]? अपरित्ते दुविहे पण्णत्ते—कायअपरित्ते य संसारअपरित्ते य ॥

८०. कायअपरित्ते 'जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं'[७] वणस्सतिकालो[८] ॥

८१. संसारापरित्ते दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिते, अणादीए वा सपज्जवसिते ॥

८२. णोपरित्ते-णोअपरित्ते सादीए अपज्जवसिते ॥

८३. 'कायपरित्तस्स जहण्णेणं अंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो'[९] ॥

८४. संसारपरित्तस्स णत्थि अंतरं ॥

---

१. जी० ६।२३।

२. × (ता)।

३. असंखेज्जं कालं जाव असंखेज्जा लोगा (क,ख, ग,ट,त्रि)।

४. × (ता)।

५. जी० ६।२३।

६. × (ता)।

७. × (ता)।

८. अणंतं कालं वणस्सतिकालो (क, ख ग, ट, त्रि)।

९. कायपरित्ते अंतरं वणस्सतिकालो (ता)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८५. 'कायापरित्तस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं'[1] पुढविकालो'[2] ।।

८६. संसारापरित्तस्स अणाइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, णोपरित्त-नोअपरित्तस्सवि णत्थि अंतरं ।।

८७. अप्पाबहुयं—'सव्वत्थोवा परित्ता, णोपरित्ता-नोअपरित्ता अणंतगुणा, अपरित्ता अणंतगुणा'[3] ।।

८८. अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा[4] अपज्जत्तगा नोपज्जत्तग-नोअपज्जत्तगा ।।

८९. पज्जत्तगे णं भंते ! पज्जत्तगेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहत्तं साइरेगं ।।

९०. अपज्जत्तगे णं भंते ! अपज्जत्तगेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ।।

९१. नोपज्जत्त-णोअपज्जत्तए साइए अपज्जवसिते ।।

९२. पज्जत्तगस्स अंतरं[5] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ।।

९३. अपज्जत्तगस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं साइरेगं । 'णोपज्जत्तग-णोअपज्जत्तगस्स'[6] णत्थि अंतरं ।।

९४. अप्पाबहुयं—'सव्वत्थोवा नोपज्जत्तग-नोअपज्जत्तगा, अपज्जत्तगा अणंतगुणा, पज्जत्तगा संखेज्जगुणा'[7] ।।

९५. अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा बायरा नोसुहुम-नोबायरा ।।

९६. सुहुमे णं भंते ! सुहुमेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? 'गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं'[8], उक्कोसेणं पुढविकालो'[9] ।।

९७. बायरे णं भंते ! बायरेत्ति 'कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जइभागो'[10] ।।

९८. नोसुहुम-नोबायरे साइए अपज्जवसिए ।।

९९. सुहुमस्स अंतरं बायरकालो । बायरस्स अंतरं सुहुमकालो ।[11] 'नोसुहुम-नोबायरस्स'[12] 'अंतरं णत्थि'[13] ।।

---

१. कायअपरित्ते (ता) ।

२. असंखिज्जं कालं पुढविकालो (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

३. × (ता) ।

४. पज्जत्ता (ता) प्रायः सर्वत्र ।

५. अंतरं पुच्छा (ता) ।

६. तइयस्स (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

७. × (ता) ।

८. × (ता) ।

९. असंखिज्जं कालं पुढविकालो (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१०. कालो जाव अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं (ता) ।

११. वणस्सतिकालो (ता) ।

१२. तइयस्स (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

१३. णत्थंतरं (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१००. अप्पाबहुयं—'सव्वत्थोवा नोसुहुम-नोबायरा, बायरा अणंतगुणा, सुहुमा असंखेज्जगुणा'[1] ।।

१०१. अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णी असण्णी नोसण्णी-नोअसण्णी ।।

१०२. 'सण्णी णं भंते ! सण्णीत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहत्तं सातिरेगं'[2] ।।

१०३ 'असण्णी णं भंते ! असण्णीत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो'[3] ।।

१०४. नोसण्णी-नोअसण्णी साइए अपज्जवसिते ।।

१०५. 'सण्णिस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

१०६. असण्णिस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं'[4] ।।

१०७. 'णोसण्णी-णोअसण्णिस्स'[5] णत्थि अंतरं ।।

१०८. 'अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा सण्णी, नोसण्णी-नोअसण्णी अणंतगुणा, असण्णी अणंतगुणा'[6] ।।

१०९. अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—भवसिद्धिया अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिय-नोअभवसिद्धिया ।।

११०. भवसिद्धिए[7] अणादीए सपज्जवसिए, अभवसिद्धिए अणादीए अपज्जवसिए, णोभवसिद्धिय-णोअभवसिद्धिए सादीए अपज्जवसिए ।।

१११. भवसिद्धियस्स णत्थि अंतरं, 'अभवसिद्धियस्स णत्थि अंतरं, णोभवसिद्धिय-णोअभवसिद्धियस्स णत्थि अंतरं'[8] ।।

११२. अप्पाबहुयं—'सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया, णोभवसिद्धिय-णोअभवसिद्धिया अणंतगुणा, भवसिद्धिया अणंतगुणा'[9] । से तं तिविधा सव्वजीवा ।।

---

१. × (ता) ।

२. सण्णी जहा अपज्जत्तओ (ता) ।

३. असण्णी वणकालो (ता) ।

४. सण्णि अंतरं वणकालो असण्णि अंतरं सण्णि-कालो (ता) ।

५. ततियस्स (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

६. × (ता) ।

७. अर्वाचीनादर्शेषु एषोतिरिक्तः पाठोपि लिखितोस्ति —भवसिद्धिए णं भंते ! भवसिद्धीत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! भवसिद्धिए ।

८. एवं अभवसिद्धियस्सवि ततियस्स णत्थि अंतरं (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

९. × (ता); अतोनन्तरं 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु त्रसस्थावरालापको लिखितोस्ति । 'ता' प्रतौ वृत्तौ च नास्ति व्याख्यातः, इति मूले न स्वीकृतः, स चैवम् अहवा तिविहा सव्व तं तसा थावरा नोतसा नोथावरा, तसे णं भंते ! कालओ ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं साइरेगाइं, थावरस्स संचिट्ठणा वणस्सतिकालो, णोतसनोथावरा सातीए अपज्जवसिए । तसस्स अंतरं वणस्सतिकालो, थावरस्स तसकालो, णोतसणोथावरस्स णत्थि अंतरं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११३. तत्थ णं जेते एवमाहंसु चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तं जहा—मणजोगी वइजोगी कायजोगी अजोगी ॥

११४. मणजोगी णं भंते ! मणजोगित्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं वइजोगीवि ।

११५. कायजोगी णं भंते ! कायजोगित्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

११६. अजोगी साइए अपज्जवसिए ॥

११७. मणजोगिस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो । एवं वइ-जोगिस्स वि ॥

११८. कायजोगिस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

११९. अयोगिस्स णत्थि अंतरं ॥

१२०. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा मणजोगी, वइजोगी असंखेज्जगुणा,[1] अजोगी अणंत-गुणा, कायजोगी अणंतगुणा ॥

१२१. अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थिवेयगा[2] पुरिसवेयगा नपुंसगवेयगा अवेयगा ॥

१२२. इत्थिवेयए णं भंते ! इत्थिवेयएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! 'एगेण आएसेणं जहा[3] कायट्ठितीए'[4] ॥

१२३. पुरिसवेदस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं ॥

१२४. नपुंसगवेदस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो[5] ॥

१२५. 'अवेयए दुविहे पण्णत्ते—साइए वा अपज्जवसिते, साइए वा सपज्जवसिए, [तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिते?[6]] से जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं'[7] ॥

१२६. 'इत्थिवेदस्स अंतरं'[8] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

१२७. पुरिसवेदस्स अंतरं जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

१२८. 'नपुंसगवेदस्स अंतरं'[9] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं ॥

अप्पाबहु सव्वत्थोवा तसा, नोतसानोथावरा अणंतगुणा, थावरा अणंतगुणा ।

१. संखेज्जगुणा (क,ख,ग,ट,ता,त्रि); सर्वेष्वप्यादर्शेषु 'संखेज्जगुणा' इति पाठो लभ्यते, किन्तु नैष समीचीनोस्ति, वृत्तिकृता 'असंख्येयगुणा' इति व्याख्यातम्—तेभ्यो वाग्योगिनोऽसंख्येयगुणाः, द्वित्रिचतुरसञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां वाग्योगित्वात् । प्रज्ञापनाया (३।९६) मपि 'असंखेज्जगुणा' इति पाठो लभ्यते ।

२. °वेदा (ता) सर्वत्र ।

३. जी० २।४८; पण्ण० १८।७१ ।

४. पलियसयं दसुत्तरं अट्ठारस चोद्दस पलियपुहुत्तं समयो जहण्णो (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

५. अणंतं कालं वणस्सतिकालो (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

६. कोष्ठकान्तरगतः पाठः अत्र त्रुटितो दृश्यते । द्रष्टव्यं ९।२४ सूत्रम् ।

७. अवेदए जहा अकसायी (ता) ।

८. इत्थिवेदंतरं (ता) ।

९. नपुंसगंतरं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२९. 'अवेदगो जहा' हेट्ठा'[1][2] ।।

१३०. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा पुरिसवेदगा, इत्थिवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, नपुंसगवेदगा अणंतगुणा ।।

१३१. अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा— चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी[3] केवलदंसणी ।।

१३२. चक्खुदंसणी णं भंते ! चक्खुदंसणीत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं ।

१३३. अचक्खुदंसणी दुविहे पण्णत्ते—अणादिए वा अपज्जवसिए, अणादिए वा सपज्जवसिए ।।

१३४. ओहिदंसणी[4] जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो छावट्ठीओ सागरोवमाणं साइरेगाओ ।।

१३५. केवलदंसणी साइए अपज्जवसिए ।।

१३६. चक्खुदंसणिस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

१३७. अचक्खुदंसणिस्स दुविधस्स णत्थि अंतरं ।।

१३८. ओहिदंसणिस्स जहण्णेणं 'एक्कं समयं'[5], उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

१३९. केवलदंसणिस्स णत्थि अंतरं ।।

१४०. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा ओहिदंसणी, चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंसणी अणंतगुणा, अचक्खुदंसणी अणंतगुणा ।।

१४१. अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—संजया असंजया संजयासंजया णोसंजया-णोअसंजया-णोसंजयासंजया ।।

१४२. 'संजए णं भंते ! संजएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा'[6] ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ।।

१४३. असंजया जहा[7] अण्णाणी ।।

१४४. संजतासंजते जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ।।

१४५. णोसंजत-णोअसंजत-णोसंजतासंजते साइए अपज्जवसिए ।।

१४६. 'संजयस्स संजयासंजयस्स दोण्हवि अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं

---

१. जी० ९।२६ ।

२. अवेदकस्स अंतरं जहा अकसाइस्स (ता) ।

३. अवधिदंसणी (ग, त्रि); ओधिदंसणि (ता) ।

४. ओहिदंसणस्स (क, ख, ग); ओहिदंसणिस्स (ट, त्रि) ।

५. अंतोमुहुत्तं (क,ख,ग,ट,त्रि); अवधिदर्शनिनो जघन्येनैकं समयमन्तरं प्रतिपातसमयानन्तरसमय एव कस्यापि पुनस्तल्लाभभावात् क्वचिदन्तर्मुहूर्त्तमिति पाठः स च सुगमः तावता व्यवधानेन पुनस्तल्लाभभावात्, न चायं निर्मूलः पाठो मूलटीकाकारेणापि मतान्तरेण समर्थितत्वात् (मवृ) तयान्तराभिधानात् अवधिदर्शनी जघन्येनैकं समयं भवत्यवधिप्रतिपत्तिर्मुहूर्त्तान्तिरमेव मरणमिथ्यात्वगमनाभ्याम् (हावृ) ।

६. संजतस्स संचिट्ठणा (ता) ।

७. जी० ९।३२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। असंजयस्स आदि दुवे णत्थि अंतरं, साइयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। चउत्थगस्स णत्थि अंतरं[1]॥

१४७. 'अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा[2] संजया, संजयासंजया असंखेज्जगुणा, णोसंजय-णोअसंजय-णोसंजयासंजया अणंतगुणा, असंजया अणंतगुणा। सेत्तं चउव्विहा सव्वजीवा॥

१४८. तत्थ जेते एवमाहंसु पंचविधा सव्वजीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तं जहा[3]—कोहकसाई माणकसाई मायाकसाई लोभकसाई अकसाई॥

१४९. कोहकसाई माणकसाई मायाकसाई णं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं॥

१५०. 'लोभकसाइस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं[4]॥

१५१. 'अकसाई दुविहे जहा[5] हेट्ठा[6]॥

१५२. 'कोहकसाई माणकसाई मायाकसाई णं अंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं॥

१५३. लोहकसाइस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं[7]॥

१५४. अकसाई तहेव जहा[8] हेट्ठा॥

१५५. अप्पाबहुयं—'सव्वत्थोवा अकसाई, माणकसाई अणंतगुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायाकसाई विसेसाहिया, लोभकसाई विसेसाहिया[9]॥

१५६, अहवा पंचविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा सिद्धा॥

१५७. 'संचिट्ठणंतराणि जह[10] हेट्ठा भणियाणि'[11]॥

१५८. अप्पावहुयं—सव्वत्थोवा मणुस्सा, णेरइया असंखेज्जगुणा, देवा असंखेज्जगुणा, सिद्धा अणंतगुणा, तिरिया अणंतगुणा। सेत्तं पंचविहा सव्वजीवा॥

१५९. तत्थ[12] णं जेते एवमाहंसु छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तं जहा—

---

१. संजयस्स अंतरं जह मु उ जावड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं, असंजयंतरं जधेव अण्णाणिस्स, संजयास जधेव संजयस्स, णोसं णत्थि अंतरं (ता)।

२. थोवा (ता)।

३. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु नैरयिकाद्यालापकः पूर्वमस्ति। क्रोधकषायीत्याद्यालापकस्तदनन्तरमस्ति।

४. कोधक ज एगं समयं, उ मु। एवं माण माया लोभस्स अंतरं जहण्णे एगं समयं, उ मु (ता) चिन्तनीयोसौ पाठभेदः।

५. जी० ९।२८।

६. अकसायी जहा पुव्वभणिता दुविधेसु (ता)।

७. कोधंतरं ज एगं समयं उ मु। एवं माण माया लोभस्स अंतरं जधेव से दुविधेसु पुच्छा (ता) चिन्तनीयोसौ पाठभेदः।

८. जी० ९।२८।

९. अकसाइणो सव्वत्थोवा, माणकसाई तहा अणंतगुणा।
कोहे माया लोभे, विसेसमहिया मुणेतव्वा॥१॥ (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१०. जी० ६।७,८,१०,११; ९।१०; १२।

११. सव्वेसिं संचिट्ठणा, सिद्धे सातिए अप सव्वेसिं अंतरं, सिद्धस्स अंतरं णत्थि (ता)।

१२. 'क, ख, ग, ट, त्रि' आदर्शेषु एष ज्ञानालापको नोपलभ्यते। 'ता' प्रतौ एष आलापकः संक्षि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिनाणी मणपज्जवणाणी केवलनाणी अण्णाणी ।।

१६०. आभिणिबोहियणाणी णं भंते ! आभिणिबोहियणाणित्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं । एवं सुयणाणीवि ।।

१६१. ओहिणाणी णं भंते ! ओहिणाणीत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागारोवमाइं साइरेगाइं ।।

१६२. मणपज्जवणाणी णं भंते ! मणपज्जवणाणीत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ।।

१६३. केवलनाणी णं भंते ! केवलणाणीत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ।।

१६४. अण्णाणिणो तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए । तत्थ साइए सपज्जवसिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ।।

१६५. अंतरं—आभिणिबोहियणाणिस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं । एवं सुयणाणिस्सवि ओहिणाणिस्सवि मणपज्जवणाणिस्सवि, केवलणाणिणो णत्थि अंतरं । अण्णाणिस्स साइय-सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं ।।

१६६. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणी, ओहिणाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी सट्ठाणे दोवि तुल्ला विसेसाहिया, केवलणाणी अणंतगुणा, अण्णाणी अणंतगुणा ।।

१६७. अहवा छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदिया बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अणिंदिया ।।

१६८. 'संचिट्ठणंतरं जहा' हेट्ठा ।।

१६९. अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा पंचेंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेंदिया विसेसाहिया, अणिंदिया अणंतगुणा, एगिंदिया अणंतगुणा[2] ।।

१७०. अहवा छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरी वेउव्वियसरीरी आहारगसरीरी तेयगसरीरी कम्मगसरीरी असरीरी ।।

१७१. ओरालियसरीरी णं भंते ! ओरालियसरीरीत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं दुसमऊणं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव[3] अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं[4] ।।

प्तोऽस्ति तथा अष्टविधप्रतिपत्तये समर्पितोऽस्ति—आभिणिबोहियणाणी ५ अण्णाणी, सव्वेसिं संचिट्ठणा सव्वेसिं अंतरं अप्पाबहुं च भाणितव्वं जहा अट्ठविधेसु सव्वजीवेसु ।

१. जी० ४।७-९, १६-१८; ९।१६ ।

२. सव्वेसिं संचिट्ठणा सव्वेसिं अंतरं अप्पाबहुं च भाणितव्वं (ता) ।

३. जी० ५।२३ ।

४. ओरालियसरीरस्स संचिट्ठणा जहण्णेणं खुड्डागं भ दुसमयूणं उ बादरकालो (ता) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७२. वेउव्वियसरीरी जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं ॥

१७३. आहारगसरीरी जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥

१७४. तेयगसरीरी कम्मगसरीरी य 'पत्तेयं दुविहे'[१], तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिते ॥

१७५. 'असरीरी साइए अपज्जवसिते'[२] ॥

१७६. ओरालियसरीरस्स अंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं ॥

१७७. वेउव्वियसरीरस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो[३] ॥

१७८. आहारगसरीरस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव[४] अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

१७९. 'तेयग-कम्मगाणं दोण्हवि अणाइय-अपज्जवसियाणं णत्थि अंतरं, अणाइय-सपज्जवसियाणं णत्थि अंतरं'[५] ॥

१८०. 'असरीरिस्स साइय-अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं'[६] ॥

१८१ अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा आहारगसरीरी, वेउव्वियसरीरी असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरी असंखेज्जगुणा, असरीरी अणंतगुणा, तेयाकम्मसरीरी दोवि तुल्ला अणंतगुणा। सेत्तं छव्विहा सव्वजीवा ॥

१८२. तत्थ णं जेते एवमाहंसु सत्तविधा सव्वजीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तं जहा—पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सतिकाइया तसकाइया अकाइया ॥

१८३. 'संचिट्ठणंतरा जहा[७] हेट्ठा'[८] ॥

१८४. 'अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा तसकाइया, तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया, अकाइया[९] अणंतगुणा, वणस्सइकाइया अणंतगुणा'[१०] ॥

१८५. अहवा सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा अलेस्सा ॥

१८६. कण्हलेसे णं भंते ! कण्हलेसत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं[११] ॥

१८७. णीललेस्से णं भंते ! णीललेस्सेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं

---

१. दोवि दुविहा (ता)।

२. × (ता)।

३. अणंतं कालं वणस्सतिकालो (क, ख, ग, ट, त्रि)।

४. जी० ९।२३।

५. तेयंकम्मसरीरस्स दुण्हवि णत्थि अंतरं (क, ख, ग, ट, त्रि); द्वितयोरपि नास्त्यन्तरम् (मवृ)।

६. × (क, ख, ग, ट, त्रि, मवृ)।

७. जी० ५।८-१७,९।१९।

८. सव्वेसिं संचिट्ठणंतराइं भाणितव्वाइं अकाइएमादीए अप णत्थि य से अंतरं (ता)।

९. सिद्धा (क, ख, ग, ट, त्रि)।

१०. अप्पाबहुगं भाणियव्वं (ता)।

११. °मब्भतियाइं (ता) सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागमब्भहियाइं ।।

१८८. काउलेस्से णं भंते ! काउलेस्सेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागमब्भहियाइं ।।

१८९. तेउलेस्से णं भंते ! तेउलेस्सेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दोण्णि[1] सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं ।।

१९०. पम्हलेसे णं भंते ! पम्हलेसेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं ।।

१९१. 'सुक्कलेसे णं भंते ! सुक्कलेसेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं'[2] ।।

१९२. अलेस्से णं भंते ! सादीए अपज्जवसिते ।।

१९३. 'कण्हलेसस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं । एवं नीललेसस्सवि, काउलेसस्सवि'[3] ।।

१९४. 'तेउ-पम्ह-सुक्काणं अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो'[4] ।।

१९५. 'अलेसस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं'[5] ।।

१९६. अप्पाबहुयं[6]—सव्वत्थोवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा[7], अलेस्सा अणंतगुणा, काउलेस्सा अणंतगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया । सेत्तं सत्तविहा सव्वजीवा ।।

१९७. तत्थ णं जेते एवमाहंसु अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तं जहा[8]—

---

१. दो (ता) ।

२. सुक्का जहा किण्हा (ता) ।

३. कण्हणीलकाउतिण्हवि अंतरं जहा कण्हाए संचिट्ठणा (ता) ।

४. तेउलेसस्स णं भंते ! अंतरं का ? जह अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो । एवं पम्हलेसस्सवि, सुक्कलेसस्सवि (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

५. अलेसे णत्थंतरं (ता) ।

६. एतेसि णं भंते ! जीवाणं कण्हलेसाणं नीलकाउ तेउ पम्ह सुक्क अलेसाण य कतरे २ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

७. असंखेज्जगुणा (ता) ।

८. अतः परं 'ता' प्रतौ अर्वाचीनादर्शेषु च नैरयिकाद्यालापको विद्यते ततश्च ज्ञानाद्यालापकः । 'ता' प्रतौ च पाठोपि संक्षिप्तो वर्तते । वृत्तिकृता एतादृशं संक्षिप्तपाठमेव लक्ष्यीकृत्य एषा टिप्पणी कृतास्ति—सूत्रपुस्तकेष्वतिसंक्षेप इति विवृतम् । 'ता' प्रतिगतः पाठः एवं विद्यते—आभिणिबोधियणाणी जाव केवलणाणी मतिअण्णाणी सुत विभंग । आभिणिबो सुतणाणाणं संचिट्ठणा जहं अंतो उक्को छावट्ठिसागरो सातिरेगाणि, ओहिणाणीवि एमेव णवरं जहं समयं, मणपज्जवणा जह एगं समयं उक्को देसूणा पुव्वकोडी, केवलणाणी सादीए अपज्ज । मतिअण्णाणी सुतअण्णाणी जहा सवेदओ विब्भंगणाणी जहं एगं समयं उक्को तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भतिया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभिणिबोहियनाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी मतिअण्णाणी सुय-अण्णाणी विभंगणाणी ॥

१९८. आभिणिबोहियणाणी णं भंते ! आभिणिबोहियणाणित्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं सातिरेगाइं। एवं सुयणाणीवि ॥

१९९. ओहिणाणी णं भंते ! ओहिणाणित्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं सातिरेगाइं ॥

२००. मणपज्जवणाणी णं भंते ! मणपज्जवणाणित्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

२०१. केवलणाणी णं भंते ! केवलणाणित्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते ॥

२०२. मतिअण्णाणी णं भंते ! मतिअण्णाणित्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! मइअण्णाणी तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिते। तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिते, से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। सुयअण्णाणी एवं चेव।

२०३. विभंगणाणी णं भंते ! विभंगणाणित्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ॥

२०४. आभिणिबोहियणाणिस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। एवं सुय-णाणिस्सवि, ओहिणाणिस्सवि, मणपज्जवणाणिस्सवि ॥

२०५. केवलणाणिस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं ॥

२०६. मइअण्णाणिस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! अणादी-यस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, सादीयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं सातिरेगाइं। एवं सुयअण्णाणिस्स वि ॥

२०७. विभंगणाणिस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

आभिणिबोहित जाव मणपज्ज अंतरं जहं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतका अवड्ढ दो देसू मति सुत अण्णाणाणं अंतरं अणादि अप णत्थंतरं, सादी सपज्ज जहं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं साति, विब्भंगणाणिस्स वणकालो। पुच्छा गो अप्पाबहुयस्स थोवा मणप ओधिणा असं आभिणिबो सुयणाणी दोवि तुल्ला विसे विब्भ असं केवल अणं, मतिअ सुत स दोवि तुल्ला अणंतगुणा। सेतं एवमाहंसु अट्ठविहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०८. अप्पाबहुयं[1]—सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी, ओहिणाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी सट्ठाणे[2] दोवि तुल्ला विसेसाहिया, विभंगणाणी असंखेज्जगुणा, केवलणाणी अणंतगुणा, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य सट्ठाणे[3] दोवि तुल्ला अणंतगुणा ॥

२०९. अहवा अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइया, तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ सिद्धा[4] ॥

२१०. णेरइए णं भंते ! नेरइयत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

२११. तिरिक्खजोणिए णं भंते ! तिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

२१२. तिरिक्खजोणिणी णं भंते ! तिरिक्खजोणिणीत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं । एवं मणूसे मणूसी ॥

२१३. देवे जहा नेरइए ॥

२१४. देवी णं भंते ! देवीत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं ॥

२१५. सिद्धे णं भंते ! सिद्धेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

२१६. णेरइयस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

२१७. तिरिक्खजोणियस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहत्तं सातिरेगं ॥

२१८. तिरिक्खजोणिणी णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो । एवं मणुस्सस्सवि मणुस्सीएवि, देवस्सवि देवीएवि ॥

२१९. सिद्धस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं ॥

२२०. अप्पाबहुयं[5]—सव्वत्थोवा मणुस्सीओ, मणुस्सा असंखेज्जगुणा, नेरइया

---

१. एएसि णं भंते ! आभिणिबोहियणाणीणं सुयणाणि ओहि मण केवल मइअण्णाणि सुयअण्णाणि विब्भंगणाणीण य कतरे ? गोयमा ! (क,ख,ग,ट त्रि) ।

२. एए (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

३. × (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

४. अतः परं प्रस्तुतालापकपर्यन्तं 'ता' प्रतौ संक्षिप्तपाठोस्ति—संसारसमावण्णेसु पुव्वुत्ता संचिट्ठणा अंतरं वा अप्पाबहुगं जहा वत्तव्वताए ।

५. एतेसि णं भंते ! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मणूसाणं मणूसीणं देवाणं देवीणं सिद्धाणं य कतरे २ (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ, देवा असंखेज्जगुणा[१], देवीओ संखेज्जगुणाओ, सिद्धा अणंतगुणा, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा। सेत्तं अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ॥

२२१. तत्थ णं जेते एवमाहंसु णवविधा सव्वजीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तं जहा—एगिंदिया बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया णेरइया पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा देवा सिद्धा[२] ॥

२२२. एगिंदिए णं भंते! एगिंदियत्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

२२३. बेंदिए णं भंते! बेंदिएत्ति कालओ केवचिरं होति? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। एवं तेइंदिएवि, चउरिंदिएवि ॥

२२४. णेरइए णं भंते! णेरइएत्ति कालओ केवचिरं होति? गोयमा! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

२२५. पंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! पंचेंदियतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होति? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं। एवं मणूसेवि ॥

२२६. देवा जहा णेरइया ॥

२२७. सिद्धे णं भंते! सिद्धेत्ति कालओ केवचिरं होति? गोयमा! सादीए अपज्जवसिए ॥

२२८. एगिंदियस्स णं भंते! अंतरं कालओ केवचिरं होति? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं ॥

२२९. बेंदियस्स णं भंते! अंतरं कालओ केवचिरं होति? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो[३]। एवं तेंदियस्सवि चउरिंदियस्सवि णेरइयस्सवि पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्सवि मणूसस्सवि देवस्सवि सव्वेसिमेवं अंतरं भाणियव्वं ॥

२३०. सिद्धस्स णं भंते! अंतरं कालओ केवचिरं होति? गोयमा! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं ॥

२३१. अप्पाबहुयं[४]—सव्वत्थोवा मणुस्सा, णेरइया असंखेज्जगुणा, देवा असंखेज्जगुणा, पंचेंदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेंदिया विसेसाहिया, सिद्धा अणंतगुणा, एगिंदिया अणंतगुणा ॥

२३२. अहवा णवविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा[५]—पढमसमयणेरइया अपढम-

१. संखेज्जगुणा (मवृ)। द्रष्टव्यम्—६।१२ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

२. अतः परं प्रस्तुतालापकपर्यन्तं 'ता' प्रतौ संक्षिप्तपाठोस्ति—णवण्हवि संचिट्ठणा अंतरं च पुव्वुत्तं अप्पाबहुं थोवा मणूस्सा णेर असं देवा असं पंचिदियतिरिक्ख असं चतु वि ते वि बे वि सिद्धा अणं एगिंदिया अणं।

३. वणप्फतिकालो (क, ख, ग)।

४. एतेसि णं भंते! एगेंदियाणं बेइंदि तेइंदि चउरिंदियाणं णेरइयाणं पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं मणूसाणं देवाणं सिद्धाण य कयरे २? गोयमा! (क,ख,ग,ट,त्रि)।

५. अतः परं 'ता' प्रतौ प्रस्तुतालापकपर्यन्तं संक्षिप्तपाठोस्ति—पढमसमयणेरइया जाव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समयणेरइया पढमसमयतिरिक्खजोणिया अपढमसमयतिरिक्खजोणिया पढमसमयमणूसा अपढमसमयमणूसा पढमसमयदेवा अपढमसमयदेवा सिद्धा य ।।

२३३. पढमसमयणेरइया णं भंते ! पढमसमयणेरइएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! एक्कं समयं ।।

२३४. अपढमसमयणेरइए णं भंते ! अपढमसमयणेरइएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं समयूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ।।

२३५. पढमसमयतिरिक्खजोणिए णं भंते ! पढसममयतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! एक्कं समयं ।।

२३६. अपढमसमयतिरिक्खजोणिए णं भंते ! अपढमसमयतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

२३७. पढमसमयमणूसे णं भंते ! पढमसमथमणूसेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! एक्कं समयं ।।

२३८. अपढमसमयमणूसे णं भंते ! अपढमसमयमणूसेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडि-पुहत्तमब्भहियाइं ।।

२३९. देवे जहा णेरइए ।।

२४०. सिद्धे णं भंते ! सिद्धेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते ।।

२४१. पढमसमयणेरइयस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

२४२. अपढमसमयणेरइयस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

२४३. पढमसमयतिरिक्खजोणियस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दो खुड्डागाइं भवग्गहणाइं समयूणाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

२४४. अपढमसमयतिरिक्खजोणियस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं ।।

२४५. पढमसमयमणूसस्स जहा पढमसमयतिरिक्खजोणियस्स ।।

२४६. अपढमसमयमणूसस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ।।

२४७. पढमसमयदेवस्स जहा पढमसमयणेरइयस्स ।।

पढमसमयदेवा अप २ सिद्धा य एतेसिं संचिट्ठ-णंतरं च जहा हेट्ठा । अप्पाबहुं तधेव जाव अपढमसमयदेवा असंखे सिद्धा अणंतगुणा अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४८. अपढमसमयदेवस्स जहा अपढमसमयणेरइयस्स ।।

२४९. सिद्धस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं ।।

२५०. एएसि णं भंते ! पढमसमयणेरइयाणं पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं पढमसमय-मणूसाणं पढमसमयदेवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयमणूसा, पढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, पढम-समयदेवा असंखेज्जगुणा, पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा ।।

२५१. एएसि णं भंते ! अपढमसमयणेरइयाणं अपढमसमयतिरिक्खजोणियाणं अपढमसमयमणूसाणं अपढमसमयदेवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अपढमसमयमणूसा, अपढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ।।

२५२. एएसि णं भंते ! पढमसमयणेरइयाणं अपढमसमयणेरइयाण य कयरे कयरे-हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय-णेरइया, अपढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा ।।

२५३. एएसि णं भंते ! पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं अपढमसमयतिरिक्खजोणियाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयतिरिक्खजोणिया, अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ।।

२५४. मणुयदेवाणं अप्पाबहुयं जहा णेरइयाणं ।।

२५५. एएसि णं भंते ! पढमसमयणेरइयाणं पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं पढमसमय-मणूसाणं पढमसमयदेवाणं अपढमसमयणेरइयाणं अपढमसमयतिरिक्खजोणियाणं अपढम-समयमणूसाणं अपढमसमयदेवाणं सिद्धाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयमणूसा, अपढमसमयमणूसा असंखेज्जगुणा, पढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, पढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, पढमसमय-तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, सिद्धा अणंतगुणा, अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । सेत्तं नवविहा सव्वजीवा ।।

२५६. तत्थ णं जेते एवमाहंसु दसविधा सव्वजीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तं जहा— पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सतिकाइया बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अणिंदिया ।।

२५७. पुढविकाइए[1] णं भंते ! पुढविकाइएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोया । एवं आउ-तेउ-वाउकाइए ।।

२५८. वणस्सतिकाइए णं भंते ! वणस्सतिकाइएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं 'अणंतं कालं'[2] ।।

---

१. २५७-२६५ सूत्राणां स्थाने 'ता' प्रतौ संक्षिप्त-पाठोस्ति—संचिट्ठणंतराइं पुव्वुत्ताइं ।

२. वणस्सतिकालं (क,ख,ग,ट,त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५९. बेंदिए णं भंते ! बेंदिएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । एवं तेइंदिएवि चउरिंदिएवि ।।

२६०. पंचेंदिए णं भंते ! पंचेंदिएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं ।।

२६१. अणिंदिए णं भंते ! अणिंदिएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ।।

२६२. पुढविकाइयस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो । एवं आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स ।।

२६३. वणस्सइकाइयस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जा चेव पुढविकाइयस्स संचिट्ठणा ।।

२६४. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचेंदियाणं एतेसिं चउण्हंपि अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ।।

२६५. अणिंदियस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं ।।

२६६. अप्पाबहुयं[1]—सव्वत्थोवा पंचेंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेंदिया विसेसाहिया, तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया, अणिंदिया अणंतगुणा, वणस्सतिकाइया अणंतगुणा ।।

२६७. अहवा दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयणेरइया अपढमसमयणेरइया[2] पढमसमयतिरिक्खजोणिया अपढमसमयतिरिक्खजोणिया पढमसमयमणूसा अपढमसमयमणूसा पढमसमयदेवा अपढमसमयदेवा पढमसमयसिद्धा अपढमसमयसिद्धा ।।

२६८. पढमसमयणेरइए णं भंते ! पढमसमयणेरइएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! एक्कं समयं ।।

२६९. अपढमसमयणेरइए णं भंते ! अपढमसमयणेरइएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं समयूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ।।

२७०. पढमसमयतिरिक्खजोणिए णं भंते ! पढमसमयतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! एक्कं समयं ।।

२७१. अपढमसमयतिरिक्खजोणिए णं भंते ! अपढमसमयतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं

---

१. तेसि णं भंते ! पढविकाइयाणं आउ तेउ वाउ वण बेंदियाणं तेइंदियाणं चउरिं पंचेंदियाणं अणिंदियाण य कतरे २ गोयमा ! (क, ख, ग, ट, त्रि) ।

२. अतः परं २८७ सूत्रपर्यन्तं 'ता' प्रतौ पाठभेदो विद्यते—जाव पढमसमयसिद्धा अपढमसमयसिद्धा । संचिट्ठणंतरं पुव्वुत्तं पढमसमयसिद्धे एगं समयं, अपढमसमयसिद्धे सादीए अपज्जवसिए । दोण्हवि सिद्धस्स णत्थंतरं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणस्सइकालो ॥

२७२. पढमसमयमणूसे णं भंते ! पढमसमयमणूसेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! एक्कं समयं ॥

२७३. अपढमसमयमणूसे णं भंते ! अपढमसमयमणूसेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं ॥

२७४. देवे जहा णेरइए ॥

२७५. पढमसमयसिद्धे णं भंते ! पढमसमयसिद्धेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! एक्कं समयं ॥

२७६. अपढमसमयसिद्धे णं भंते ! अपढमसमयसिद्धेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

२७७. पढमसमयणेरइयस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

२७८. अपढमसमयणेरइयस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

२७९. पढमसमयतिरिक्खजोणियस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दो खुड्डागभवग्गहणाइं समयूणाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

२८०. अपढमसमयतिरिक्खजोणियस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं ॥

२८१. पढमसमयमणूसस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दो खुड्डागभवग्गहणाइं समयूणाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

२८२. अपढमसमयमणूसस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो ॥

२८३. देवस्स णं अंतरं जहा णेरइयस्स ॥

२८४. पढमसमयसिद्धस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! णत्थि अंतरं ॥

२८५. अपढमसमयसिद्धस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं ॥

२८६. 'एतेसि णं भंते ! पढमसमयणेरइयाणं पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं पढमसमयमणूसाणं पढमसमयदेवाणं पढमसमयसिद्धाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा[1] पढमसमयसिद्धा, पढमसमयमणूसा असंखेज्जगुणा, पढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, पढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा ॥

२८७. 'एतेसि णं भंते ! अपढमसमयणेरइयाणं जाव अपढमसमयसिद्धाण य कतरे

---

१. थोवा (ता); अल्पबहुत्वान्यत्रापि चत्वारि, तत्र प्रथममिदं—सर्वस्तोकाः (मवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा[1] अपढमसमयमणूसा, अपढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, अपढमसमयसिद्धा अणंतगुणा, अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा[2] ॥

२८८. [3]एतेसि[4] णं भंते ! पढमसमयणेरइयाणं अपढमसमयणेरइयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा[5] पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा ॥

२८९. [6]एतेसि णं भंते ! पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं अपढमसमयतिरिक्खजोणियाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा[5] पढमसमयतिरिक्खजोणिया, अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥

२९०. एतेसि णं भंते ! पढमसमयमणूसाणं अपढमसमयमणूसाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयमणूसा, अपढमसमयमणूसा असंखेज्जगुणा ॥

२९१. [6]एतेसि णं भंते ! पढमसमयदेवाणं अपढमसमयदेवाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयदेवा, अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा[6] ॥

२९२. एतेसि णं भंते ! पढमसमयसिद्धाणं अपढमसमयसिद्धाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा, अपढमसमयसिद्धा अणंतगुणा ॥

२९३. एतेसि[7] णं भंते ! पढमसमयणेरइयाणं अपढमसमयणेरइयाणं [8]पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं अपढमसमयतिरिक्खजोणियाणं पढमसमयमणूसाणं अपढमसमयमणूसाणं पढमसमयदेवाणं अपढमसमयदेवाणं पढमसमयसिद्धाणं[8] अपढमसमयसिद्धाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय सिद्धा, पढमसमयमणूसा असंखेज्जगुणा, अपढमसमयमणूसा असंखेज्जगुणा, पढमसमयणेरइया असंखेज्जगुण, पढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयणेरइया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, अपढमसमयसिद्धा अणंतगुणा, अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा। सेत्तं दसविहा सव्वजीवा[9]। सेत्तं सव्वजीवाभिगमे ॥

ग्रंथ परिमाण

कुल अक्षर १८२३७८ अनुष्टुप्श्लोक ५७२७ अक्षर १४

---

१. थोवा (ता); द्वितीयमिदं—सर्वस्तोकाः (मवृ)।

२. असंखेज्जगुणा (ता) अशुद्धं प्रतिभाति।

३. तृतीयं प्रत्येकभाविनैरयिकतिर्यङ्मनुष्यदेवानां पूर्ववत्, सिद्धानामेवं सर्वस्तोकाः (मवृ)।

४. वे पुडए सव्वत्थोवा (ता)।

५. थोवा (ता)।

६. जहा मणूसा तहा देवावि (क,ख,ग,ट,त्रि)।

७. समुदायगतं चतुर्थमेवं सर्वस्तोकाः (मवृ)।

८. जाव (ता)।

९. सव्वजीवा पण्णत्ता (क, ख, ग, ट, त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

ओवाइयं

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल सूत्र	पूर्ति आधार-स्थल सूत्र
अगामियाए जाव अडवीए	११७	११६
अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता परलोगस्स आराहगा सेसं तं चेव	१५७	८९
अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे	१६५	१५३
अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं	१५०	१४९
अपज्जवसिया जाव चिट्ठंति	१८४	१८३
अपडिविरया एवं जाव परिग्गहाओ	१६१	११७
अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, णवरं ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघरदारपवेसी[1] एयं ण वुच्चई	१२०	वृत्ति, पृष्ठ १८८
अयबंधणाणि वा जाव महद्धणमोल्लाइं	१०६	१०५
अवहमाणए जाव से	१३७	१११
असंजए जाव एगंतसुत्ते	८५,८७	८४
आगमेसिभद्दा जाव पडिरूवा	७२	वृत्ति, पृष्ठ १५३
आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी	२४	नंदी सू० २
आयारधरा जाव विवागसुयधरा	४५	नंदी सू० ७९
आवलियाए जाव अयणे	२८	वृत्ति, पृष्ठ ६८
इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी	१५२	२७
उदए जाव झीणे	११७	११६
एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स अणाराहगा सेसं तं चेव	१६०	८९
एवं एएणं अभिलावेणं तिरिक्खजोणिएसु	७३	७३
एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं	४०	४०

१. क्वचित्—'चियत्तघरंतेउरपवेसी' ति (वृ)।

एवं जाव सव्वं परिग्गहं	११७	११७
एवं माण माया लोहा	१६८	१६८
एवं सुपण्णत्ते सुभासिए सुविणीए सुभाविए	७६	७६
एवमाइक्खइ जाव एवं	११८	११८
एवमाइक्खामि जाव परूवेमि	११८	११८
कंदमंते जाव पविमोयणे	८	५,७
कंदमंतो एएसिं वण्णओ भाणियव्वो जाव सिविय	१०	५,७
कंपिल्लपुरे जाव घरसए	११८	११८
करयल जाव एवं	६२	२०
करयल जाव कट्टु	२१,११७	२०
गामागर जाव सण्णिवेसेसु	९१ से ९३,९५,९६ १५५,१५८ से १६१, १६३,१६८	८६
घरसए जाव वसहिं	११६	११८
°चंदण जाव गंधवट्टिभूयं	५५	२
जावज्जीवाए जाव परिग्गहे णवरं सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवए	१२१	११७
णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए	१३६	२
ण्हाए जाव अप्प०	५३	२०
ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ	७०	२०
तं चेव पसत्थं णेयव्वं, एवं चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो	४०	४०
तं चेव सव्वं णवरं चउरासीइ वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता	९३	९१
तं चेव सव्वं णवरं ठिई चउद्दसवाससहस्साइं	९१	८९
तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स	२१	१६
तिदंडए य जाव एगंते	११७	११७
तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई आराहगा चेव सेसं तं चेव	१६७	८९
तेरस सागरोवमाइं ठिई अणाराहगा सेसं तं चेव	१५५	८९
दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता परलोगस्स आराहगा सेसं तं चेव	११७	८९
दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता सेसं तं चेव	११४	८९
देवेसु············	७३	७३
धम्मिया जाव कप्पेमाणा	१६३	१६१
नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहित्ता	१६६	१५४
नग्गभावे जाव मंतं	१६५	१५४
नडपेच्छा इ वा जाव मागहपेच्छा	१०२	२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°पंडियं जाव अलंभोगसमत्थं	१४६	१४८
पगइभद्दयाए जाव विणीययाए	११६	६१
पडिविरया जाव सव्वाओ	१६३	११७
परिग्गहवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे	७१	ठाणं १।११४-१२५
परिव्वायए जाव वसहिं	११८,११६	११८
पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई सेसं तं चेव	६४	८६
पावयणे जाव किमंग	८०,८१	७६
पीइमणे जाव हियए	६२	२०
बावीसं सागरोवमाइं ठिई अणाराहगा सेसं तं चेव	१५८	८६
बावीसं सागरोवमाइं ठिई आराहगा सेसं 'तं चेव'[1]	१६२	८६
बावीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स अणाराहगा सेसं तं चेव	१५६	८६
भासासमिया जाव इणमेव	१६४	भगवती २।१
मणुस्सेसु..........	७३	७३
महिड्ढिएसु जाव महासोक्खेसु	७२	४७
महिड्ढिया जाव चिरट्ठिइया	७२	७२
मूलभोयणे इ वा जाव बीयभोयणे	१३५	वृत्ति
लउया जाव णंदिरुक्खा	१०	६
लोभाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ	१६३	७१
लोभे अत्थि जाव मिच्छादंसणसल्ले	७१	ठाणं १।१००-१०७
वण्णं जाव जाणइ	१७०	१६६
वहमाणए जाव णो	११२,११३	१११
वहमाणए जाव णो	१३८	१३७
सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए	१२३-१३३	१००-११०
सगडं वा जाव संदमाणियं	१००	वृत्ति, पृष्ठ १७६
सच्चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया जाव णिसीयइ	५३,५४	२०,२१
सिज्झइ जाव मंतं	१८१	१७७
सिज्झिहिति जाव मंतं	१६६	१५४
सुकुमालपाणिपाए जाव ससिसोमाकारे	१४३	१५
सेसं तं चेव जाव चउसट्ठिवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता	६२	६१
सेसं तं चेव णवरं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई	६५	८६
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	२१,५३,५६,६३,८०	२०
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	२०,७८	२०

१. तहेव (क, ख)।

हट्ठतुट्ठ जाव हियया‌ओ	८१	२०
हयगय जाव सण्णाहियं	६२	५७
हारविराइयवच्छा जाव पभासेमाणा	७२[1]	४७

रायपसेणइयं

अंकामया····उवरिपुंछणीओ	१६०	१३०; जी० २६४
अकंताहिं जाव अमणामाहिं	७६७	७५०
अगामियाए जाव अडवीए	७७४	७७४
अगामियाए जाव किंचि	७६५	७७४
अग्गमहिसीहिं जाव सोलसहिं	५८	७
अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ	२४०,२७६	वृत्ति, पृष्ठ २२५
अच्छं जाव पडिरूवं	३२,३४,३६	२१
अच्छाइं जाव पडिरूवाइं	१५७	२१
अच्छाओ जाव पडिरूवाओ	१४५	२१
अच्छे जाव पडिरूवे	२३	२१
अज्झत्थिए जाव संकप्पे	७६८	६
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	६८८,७३२,७३७,७७७,७९१,७९३	६
अज्झत्थियं जाव संकप्पं	७३८	६
अज्झत्थियं जाव समुप्पण्णं	२७६,७४६	६
अट्ठजोयणाइं·······	२६१	२४४
अट्ठाइं जाव पुच्छइ	७१६	७१६
अडवि जाव पविट्ठा	७६५	७६५
अड्ढे जाव बहुजणस्स	६७५	ओ० १४
अणगारसएहिं जाव विहरमाणे	७११	६८६
अणियाहिवइणो जाव अण्णेवि	२८०	७
अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव जाणविमाणं	१८	१७
अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते	७६२,७६३	७६२
अण्णत्ते वा····लहुयत्ते	७६२	७६२
अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं	८११	८१०
अण्णया जाव चोरं	७६४	७५४
अतुरिय जाव सव्वतो	१२	१२
अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं	६८८	ओ० ५२
अभवसिद्धिए जाव चरिमे	६२	६२
अभिगमेणं जाव वंदइ	७७८	ओ० ६९

१. वृत्तौ विशेषणानि किञ्चिदन्यूनानि दृश्यन्ते ।

अभिगयजीवाजीवे····विहरइ	७८६	६६८
अभिगयजीवा सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं	७५२	६६८
अयभारगं वा जाव परिवहित्तए	७६०,७६१	७६०
असणं जाव अलंकारं	७६४	७६४
असणं जाव साइमं	७६४	७८७
असोयवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया		
उववाइयगमेणं नेया	३,४	ओ० ८,१३
अहापडिरूवं जाव विहरइ	७१३	७११
आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता	७७४	७७४
आपूरेमाणाओ जाव चिट्ठंति	१३५	४०
आपूरेमाणा जाव चिट्ठंति	१३२	४०
आरामं वा जाव पवं	१२	१२
आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं		
आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं	७१६	७१६
आलिघरगेसु जाव आयंसघरगेसु	१८३	१८२
आसत्तोसत्त····कयग्गहग्गहिय····धूवं	२९६	२९४
आसत्तोसत्त जाव धूवं	२९४	२९१
आसयंति जाव विहरंति	१८७	१८५
इट्ठं जाव फुसंतु	७९६	ओ० ११७
इट्ठतराए चेव जाव गंधेणं	३०	२५
इट्ठतराए चेव जाव फासेणं	३१	२५
इट्ठतराए चेव जाव वण्णे	४५	२५
इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं	२६ से २९	२५
इट्ठे··· किमंग	७५३	७५०
इरियासमिए जाव सुहुयहुयासणे	८१३	ओ० २७
इहमागए जाव विहरइ	६८९	६८७
ईसर-तलवर जाव सत्थवाह°	७०४	६८८
उक्किट्ठाए जाव जेणेव	२७९	१०
उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखिज्जाणं	५६	१०
उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणा	१२	१०
उच्चत्तेणं वण्णओ	२१०	२०९
उच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे	७८५	७८५
उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	२८८	१९७
उप्पायपव्वएसु····पक्खंदोलएसु	१८१	१८०
उम्मुक्कबालभावं जाव वियालचारिं	८१०	८०९
उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह	६८१,७१४	६८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवट्ठवेह जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति	६९०,६९१	६८१,६८२
उवट्ठवेहि जाव पच्चप्पिणाहि	७२४	७२५
उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि	७५६	७५४
उववायसभाए जाव उववण्णे	७९६	जी० ३।३३९
उवस्सयगयं....	७१९	७१९
उवागच्छइ तं चेव	३१०	३०५
उवागच्छंति तहेव जेणेव	२७९	२७९
उवागच्छित्ता....थूभं	३०५	२९४
एएण वि जाव लभइ	७१९	७१९
एयंतं जाव तं तं	७७१	७७१
एयमट्ठं जाव हियए	६८३	६९०
एवं अब्भुए सिंगारे उराले मणुण्णे	७८	७८
एवं आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइ अप्पतराए[1] चेव	७७२	७७२
एवं जाव संखेज्जहा	७६५	७६४
एवं तंबागरं रुप्पागरं सुवण्णागरं रयणागरं वइरागरं	७७४	७७४
एवं पंतीओ वीही मिहुणाइं	१४२-१४४	१४१
एस जाव नो	७६४	७५४
एस सण्णा जाव एस समोसरणे	७४९	७४८
एस सण्णा जाव समोसरणे	७५०,७७३	७४८
एस सण्णा जाव समोसरणे....	७७३	७७३
एस सण्णा....तयाणंतरं	७७३	७७३
ओराले....चउदसपुव्वी	६८६	ओ० ८२; भ० ११९
ओहिनाणं भवपच्चइयं खओवसमियं	७४३	नंदी ७
कंखंति जाव अभिलसंति	७१३	७१३
कंते जाव पासणयाए	७५१,७५२	७५०
कंते जाव मणामे	७७४	७५०
कयग्गहगहिय जाव धूवं	२९५	२९४
कयग्गहगहिय जाव पुंजोवयारकलियं	२९३	१२
कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	७६५	६९२
कयबलिकम्मा जाव लंकिया	८०२	६९२
कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेइ	७६५	६९२
कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्घंटे जाव दुरुहित्ता सकोरेंट....महया....भडचडगरेणं तं चेव		

१. अंतराए (क,ख,ग,घ,च,छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव पज्जुवासइ । धम्मकहाए जाव तए णं	७१६,७१७	६९२-६९४
करयल जाव कट्टु	७२३	१०
करयल जाव वद्धावेंति	७१३	१२
करयल जाव वद्धावेत्ता	७०८	१२
करयलपरिग्गहियं जाव एवं	७०७	६८९
करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु	६८३	१०
करयलपरिग्गहियं जाव पच्चप्पिणति	४६	१२
करयलपरिग्गहियं जाव पडिसुणेइ	१८	१०
करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता	७२,६८९	१२
करेमि····णो	७६४	७६४
कलकलरवेणं····एगदिसाए जहा उववाइए जाव अप्पेगतिया	६८८	वृत्ति, पृष्ठ २८६
कलसाणं जाव अट्ठसहस्सेणं	२८०	२७९
कल्लं जाव तेयसा	७८८	७७७
कालागरुपवर जाव चिट्ठंति	२३६	१३२
किण्हचामरज्झए जाव सुक्किल्लचामरज्झए	२१	वृत्ति, पृष्ठ ८०
किण्होभासा········	१७०	ओ० ४
किण्होभासे जाव पडिरूवे	७०३	ओ० ४
कुसुमियाओ सव्वरयणामईओ	१४५	ओ० ५
कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव	७१५	६८२
कोरव्वा जाव इब्भा	६८८	वृत्ति, पृष्ठ २८५
कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं	७९६	ओ० ११७
खुड्डागमहिंदज्झए तं चेव	३५४	३५२
गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ	७८३	७८३
गिण्हित्ता तहेव जेणेव	२७९	२७९
गोसीसचंदणेणं····पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त····धूवं	३१२	२९४
चरमाणे····समोसढे जाव विहरइ	७१३	७१३
चवलाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं जाव वीतिवयमाणा	२७९	१०
चालेइ जाव णो गंधव्वो	७७१	७७१
चित्तमाणंदिए जाव परमसोमणस्सिए	६३	८
छिज्जइ जाव तया णं	७८४	७८४
छिड्डेइ वा जाव अणुपविट्ठा	७५६	७५६
छिड्डेइ वा जाव निग्गए	७५४	७५४
छिड्डेइ वा जाव राई	७५४ से ७५६	७५४
छिड्डेइ वा····जेणं	७५७	७५४
जणसण्णिवाए इ वा जाव परिसा पज्जुवासइ	६८७	ओ० ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते	७६०	७६०
जहा मणोगुलिया जाव णागदंतया	२३६	२३५
जाइमंडवएसु जाव मालुयामंडवएसु	१८५	१८४
जाणविमाणं जाव दाहिणिल्लेणं	४८	४८
जाणह जाव उवदंसित्तए	६५	६३
जिणपडिमा तं चेव	३१७-३२०	३०६-३०९
जीवो तं चेव	७५५,७५९,७७१,७७२	७५३
जुण्णे जाव किलंते	७६०,७६१	७६०
जोयणाइं जाव अहाबायरे	१८	१०
जोयणाइं जाव दोच्चं	२७९	१०
णाइअणिट्ठाहिं जाव णाइअमणामाहिं	७६७	७५०
णाइ जाव परिजणं	८०२	८०२
णाइ जाव परिजणेण	८०२	८०२
णिच्चं कुसुमियाओ....	१४५	ओ० १२
णोवलिप्पिहिति....मित्त	८११	ओ० १५०
ण्हाए जाव उप्पिं	७१०	७७४
ण्हाए जाव सरीरे सकोरेंट....महया	७००	६९२
ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएणं	७५१	७५१
ण्हायस्स जाव पायच्छित्तस्स	७९४	६९२
तउयभंडे जाव मणामे	७७४	७७४
तउयभंडे जाव सुबहुं	७७४	७७४
तज्जीवो तं चेव	७५८,७६२	७५२
तत्थुप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	२७९	१९७
तरुणे जाव सिप्पोवगए	७५८,७५९	१२
तहेव केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं	७४५	नंदी २६
तिक्खुत्तो जाव वंदित्ता	१२	१०
तिट्ठाणकरणसुद्धं....पगीयाणं	१७३	७६
तेणेव तहेव जेणेव	२७९	२७९
तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं	२५८,२७९	१६१
तोरणाण झया छत्ताइछत्ता य णेयव्वा	१७६-१७९	२०-२३
दक्खा जाव उवएसलद्धा	७७०	७६६
दप्पणा जाव पडिरूवा	२१	वृत्ति, पृष्ठ १९
दलयइ जाव कूडागारसालं	७८८	७८७
दाहिणिल्ले दारे तहेव अभिसेयसभासरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालि-		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंजियाओ वालरूवए य तहेव, जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव सीहासणे च मणि-पेढियं च सेसं तहेव आययणसरिसं जाव पुरत्थि-मिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जहा अभिसेयसभा तहेव सव्वं जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव लोमहत्थयं परामुसइ पोत्थयरयणं लोमहत्थ-एणं पमज्जइ २ त्ता दिव्वाए दगधाराए अग्गेहिं वरेहिं य गंधेहिं मल्लेहिं य अच्चेइ २ त्ता मणि-पेढियं सीहासणे च सेसं तं चेव, पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तोरणे य तिसोवाणं य सालिभंजियाओ य बालरूवए य तहेव ।	३५७-६५३	२६४-३५०
दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव	३३४-३३७	२९६-२९९
दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे	७५३	७५३
दुपय जाव सिरीसिवाणं	७०३	७०३
दुहाफालिए वा जाव संखेज्जहा	७६५	७६५
दुहाफालियंसि वा····जोति	७६५	७६५
देवसयणिज्जे तं चेव	३५३	वृत्ति, पृष्ठ २३५
देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं	११	११
देविड्ढि जाव दिव्वं	५६	५६
देविड्ढी जाव देवाणुभागे	६६७	६६७
देवे जाव पच्चप्पिणंति	६५५	१२
धम्मत्थिकायं जाव णो	७७१	७७१
धम्मिए जाव विहराहि	७५२	७५२
धम्मिया जाव वित्ति	७५२	६७१
नमंसइ जाव पज्जुवासेइ	७१९	७१९
नमंसामि जाव पज्जुवासामि	५८	६
नमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति	७०४	६
नागदंता तं चेव जाव गयदंतसमाणा	१३२	१३२
नानामणि जाव पीवरं	७०	६९
निसिरति अहाबायरे अहासुहमे दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं जाव बहुसम°	६५	१०
पइण्णा तहेव	७६०	७५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमलयाओ जाव सामलयाओ	१४५	ओ० ११
पउमलयापविभत्ति जाव समलयापविभत्ति	१०१	ओ० ११
पउमे इ वा जाव सयसहस्सपत्ते इ वा	८११	ओ० १५०
पएसी तं चेव	७६३	७५३
पएसी ! तहेव	७५७	७५३
पच्चक्खाए जाव परिग्गहे	७६६	६६३
पच्चक्खामि जाव परिग्गहं	७६६	६६३
पच्चत्थिमिल्ले दारे तं चेव, उत्तरिल्ले दारे तं चेव, पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव, दाहिणे दारे तं चेव	३०१ से ३०४	२६६
पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए	७३७	७३२
पज्जुवासंति जाव बूया	७३२	७३२
पडिरूवा जाव पंतीतो वीहीतो मिहुणाणि लयाओ	१६३-१६६	१४२-१४५
पण्णत्ताओ····	२३३	१७४
पतणतणायंति जाव जोयणपरिमंडलं	१२	१२
पत्तं वा तहेव	१२	६
पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे	७६५	७६६
पाडिहारिएणं जाव संथारएणं	७१३	७११
पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि	७५०	७५०
पासाईयाओ····	१३६	२१
पासाईयाओ जाव चिट्ठंति	१३३	जी० ३।३०३
पासादीए जाव पडिरूवे	६६८,६७०	२१
पासादीया जाव पडिरूवा	१६	२१
पासायवरगए जाव विहरंतो	७७४	७७४
पासायवरगए जाव विहरमाणे	७७४	७७४
पिहावेमि जाव पच्चइएहिं	७५६	७५४
पीढफलग जाव उवनिमंतिज्जाह	७०६	७०४
पुण्णोवचयं जाव उववज्जिहिसि	७५२	७५२
पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं	२५८,२७६	१५६
पुप्फपडलगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं	१५७	१५६
पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं	२५८,२७६	१५६
पुप्फारुहणं····आसत्तोसत्त जाव धूवं	३००,३०५,३५५	२६४
पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता	७८८	७८७
पेच्छाघरमंडवे एवं थूभे जिणपडिमाओ चेइयरुक्खा महिंदज्झया नंदापुक्खरिणी		

तं चेव जाव धूवं दलइ २ ता	३३८-३५०	वृत्ति, पृष्ठ २६४; सू० ३००, २९६, २९७,२९६, २९६, ३०५, ३०६,३०६, ३०६,३०६, ३१०, ३११, ३१२
पोसहोववासस्स जाव विहरिस्सामि	७८७	७८९
फरिस जाव विहरइ	७१०	६८५
फरिस जाव विहरंति	७७४	६८५
बहूहि य जाव देवेहि	२९१	७
बाले जाव मंदविण्णाणे	७५८,७५९	७५८
भंते जाव नो	७६२	७५४
भंते जाव विहरामि	७६२	७५४
भंते····वणसंडे	७८२	७८१
भूमिभागा उल्लोया	२१६	२१३
मंगलगा सज्झया जाव छत्तातिछत्ता	१६६,१६७,१६८	२१,२२,२३
मणपज्जवणाणे	७४४	नंदी २३
मणसंकप्पं जाव झियायमाणं	७६५	७६५
मणसंकप्पे जाव झियायसि	७६५	७६५
मणिपेढियं च....दिव्वाए	३०५	२९४
महच्चपरिसाए जाव धम्मं	७७९	६९३
महत्थं जाव उवणेइ	७०८	७००
महत्थं जाव गेण्हइ	७०८	६८१
महत्थं जाव पडिच्छइ	७०९	६८४
महत्थं जाव पाहुडं	६८०,६८१,६८३,६८४,६९९,७००	६८०
महत्थं जाव विसज्जिए । तं चेव जाव समोसरह	७०२	७००
महयाहिमवंत जाव विहरइ	६७१	ओ० १४
महाकम्मतराए चेव तं चेव	७७२	७७२
महाकिरिय जाव हंता	७७२	७७२
महावीरं जाव नमंसित्ता	७४	९
महिंदज्झए....तं चेव	३११	३०५
महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया	१८६	ओ० ४७
महिड्ढीए जाव महाणुभागे	६६६	६६६
माहणं वा जाव पज्जुवासेइ	७१९	७१९
मित्त जाव परिजणस्स	८०२	८०२
मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे	७५३	७५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रज्जं च जाव अंतेउरं	७६१	७६०
रट्ठं जाव अंतेउरं	७६१	७६०
रयणाणं जाव रिट्ठाणं	१२	१०
रयणीए जाव तेयसा	७७८	७७७
रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं	१६५	१०
रायंगणं वा जाव सव्वतो	१२	१२
रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि	६६८	६८०
वइरामया सुवण्णरुप्पामया फलगा नाणामणिमया	१६०	जी० ३।२६४
वंदइ जाव एवं	७७५	६२
वंदणवत्तियाए जाव महया	६८६	ओ० ५२; राय० ६८८
वणसंडे इ वा....	७८६	७८१
वणसंडे इ वा जाव खलवाडे	७८७	७८१
वण्णओ सभाए सरिसो	२११-२१४	२०६,२१०,२३७,२५१
वरकमलपइट्ठाणा जाव महया	१४८	१३१
वरकमलपइट्ठाणा तहेव	१४७	१३१
वामेणं जाव वट्टित्ता	७७६,७७७	७६७
वामेणं जाव विवच्चासं	७६८	७६७
वावीणं जाव बिलपंतियाणं	१७५,१८०	१७४
वासधरपव्वया तहेव जेणेव	२७६	२७६
विउलेणं जाव पडिलाभेइ	७१६	७१६
विविहतारारूवोवचिया जाव पडिरूवा	२०	१७
वीसाएमाणा जाव विहरंति	७६५	८०२
संखंक....सव्वरयणामया	२२२	१६०
संठिय जाव जोयणसहस्समूसिएणं	५६	५२
सच्छत्तं जाव चाउग्घंटं	६८१	१७३
सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं	६८३	६८३
सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवेत्ता	७६१	७६१
सद्द जाव विहरइ	६७२	ओ० १५
सद्दहेज्जा....जहा अण्णो जीवो तं चेव	७५६,७५८	७५४
सद्दहेज्जा तं चेव	७६२,७६४	७५४
सद्दहेज्जा तहेव	७६०	७५४
समज्जिणित्ता जाव देवलोएसु	७५२	७५२
समणं वा जाव पज्जुवासेइ	७१६	७१६
समणं वा तं चेव जाव एएण	७१६	७१६
समण जाव परिभाएमाणे	७८८	७८७
समाणा जाव पडिसुणेत्ता	६५५	१०
समिद्धे....	६७६	६६८
समुदया जाव सिरीए	१३२	४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरीरं तं चेव	७५६,७६४	७५२
सरूविस्स जाव ससरीरस्स	७७१	७७१
सव्वंतरणईओ जेणेव	२७६	२७६
सव्वतूयरे तहेव जेणेव	२७६	२७६
सव्वतूयरेहि जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहि	२८०	२७६
सव्विड्ढीए जाव (णा) नाइयरवेणं	१३,६५७	ओ० ६७
ससक्खं जाव उवणेंति	७५६	७५४
सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसहिं	५६	७
सिंघाडग····महया जणसद्दे इ वा····परिसा	७१२	६८७
सिया जाव गंभीरा	७७२	७५५
सिरिवच्छ जाव दप्पणा	४६	२१
सीहासणे जाव सण्णिसण्णे	२८६	२८३
सीहासणे तं चेव	३५२	वृत्ति, पृष्ठ २६६
सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे	६७३	८०१
सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ	६७२	ओ० १५
सुबहुं जाव उववण्णा	७५३	७५२
सुबहुं जाव उववण्णे	७५१	७५०
सुसिलिट्ठ जाव पडिरूवे	२४७	२३१
सूरियाभविमाणवासिणो जाव देवीओ	२८६	७
सोच्चा जाव हट्ठ....उट्ठाए जाव एवं	७००	६६५
सोत्थियं जाव दप्पणं	२६१	२१
हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थियासणाइं	१८३	१८१
हट्ठ जाव करयल जाव पडिसुणंति	७४	१०
हट्ठ जाव जेणेव	७२	७१३
हट्ठ जाव पडिसुणेत्ता	६८१	१०
हट्ठ जाव भवइ	७१३	७१३
हट्ठ जाव समणं	६०	६२
हट्ठ जाव हियए	४७,६६५,७१०	८
हट्ठ जाव हियया	१२,२७६	८
हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे	७२६	७१६
हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ	७१४	८
हट्ठतुट्ठ जाव सूरियाभं	२६०	८
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१३,१४,१७,१८,६२,२७७, ६६०,७१३,७१६,७२५,७७८	८
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	१०,१६,२८१,७०७,७१३,७७४	८
हट्ठतुट्ठ तहेव एवं	७१८	६६५
हत्थच्छिण्णगं वा जाव जीवियाओ	७५१	७५१
हत्थेण वा जाव आवरेत्ताणं	७१६	७१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हयकंठाणं जाव उसभकंठाणं	२५८	१५५
हयसंघाडा जाव उसभसंघाडा	१९२	१४१
हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए	६९५	६९५

जीवाजीवाभिगमे

अकंततरगा चेव जाव अमणामतरगा	३।८४	३।२७८
अणिट्ठा जाव अमणामा	३।९२	भ० १।२२४
अपढमसमयबेइंदिया जाव पढमसमयपंचिंदिया	९।१	४।१,९।१
अप्पा वा एवं जाव विसेसाहिया	५।१९	४।१९
आयामेणं जाव दो	३।३७६	६।३७२
आसयंति जाव विहरंति	३।२१७	३।२९७
आसादणिज्जे जाव इट्ठतराए चेव आसादे	३।८६६	३।८६०
आसादणिज्जे जाव पल्हायणिज्जे	३।८७२	३।८६०
आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा	१।२०	पण्ण० ८।१
आहेवच्चं जाव दिव्वाइं	३।३५०	ओ०सू० ६८
आहेवच्चं जाव पालेमाणा	३।६३६	३।३५०
इंगाले जाव तत्थ नियमा	१।७८	पण्ण० १।२६
ईहामियउसभ जाव पउमलयभत्तिचित्ता	३।३११	३।२८८
उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए	३।४४५	३।८६
उद्दाइत्ता सो चेव विही एवं धायइसंडेवि	३।७१८,७२०	३।५७५,५७६
उप्पलाइं तं चेव	३।४४५	३।४४५
उववेते जाव सव्विंदियगातपल्हायणिज्जे	३।८७८	३।८६०
उवागच्छित्ता जाव कट्टु	३।५५५	३।४४५
एएणं अभिलावेणं जाव दसविहा	१।१०	१।१०
एवं चत्तारिवि गमा, पढमबिइयभंगेसु अपरियाइत्ता एगंतरियगा अच्छेत्ता अभेत्ता, सेसं तहेव (क,ख, ग,ट,त्रि); ते च्चेव आलावता ह्व जाव हंता पभू (ता)	३।९९५-९९७	३।९९१-९९३
एवं जहा अच्चीणि णवरं एवतियाइं पंच ओवासंतराइं	३।१७८	३।१७६
एवं जहा पण्णवणाए जाव सेत्तं	१।५	पण्ण० १।३
एवं जहा पण्णवणापदे जाव पंचहिं	३।२२८	पण्ण० १।८७
कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया	२।१३४-१३६	४।१९
कयग्गाहग्गहित जाव पुंजोवयारकलितं	३।४५८	३।४५७
कयग्गाह जाव धूवं	३।४६०	३।४५८
कामावत्ताइं जाव कामुत्तरवडिंसयाइं	३।१७९	३।१७५
कालं जाव असंखेज्जा	५।८	पण्ण० १८।२६
कालं जाव आवलियाए	५।९	पण्ण० १८।३
गेण्हित्ता तं चेव	३।४४५	३।४४५

गोसीसचंदणेणं जाव चच्चए दलयति आसत्तोसत्त		
कयग्गाह धूवं	३।४६१	३।४५६
चेव जाव फासेणं	३।२८४	३।२८३
चेव जाव मणामतराए	३।२८३	३।२७८
चेव जाव वण्णेणं	३।२७६-२८२	३।२७८
जहा अच्चीणि णवरं सत्त ओवसंतराइं विक्कमे सेसं तहेव	३।१८०	३।१७६
जहा अविसुद्धलेस्सेणं छ आलावगा एवं विसुद्धलेस्सेणवि		
छ आलावगा भाणितव्वा जाव विसुद्धलेस्से	३।२०५-२०८	३।१९९-२०२
जहा णईओ	३।४४५	३।४४५
जातीकुलकोडीजोणीपमुह जाव पण्णत्ता	३।१६६	३।१६०
जातीकुल जाव समक्खया	३।१६८	३।१६७
जोयणकोडी जाव अब्भंतरपुक्खरद्धस्स	३।८३५	३।८३२
जोयणसहस्साइं जाव परिक्खेवेणं	३।१०७४	३।८२
णं जाव केवचिरं	९।४१,४३	९।३९
तं चेव जाव महावेदणतरा	३।१२६	३।१२६
तं चेव णं जाव णो	३।११९	३।११८
तहेव जाव सायासोक्खबहुले	३।११९	३।११८
तित्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा	१।८	पण्ण० १।१२
तित्थाइं तहेव जहेव	३।४४५	३।४४५
तुरियाए जाव दिव्वाए	३।१७६	३।८६
पगतिभद्दगा जाव विणीता	३।८४१	३।७९५
पच्छावि जाव आणुगामियत्ताए	३।४४२	३।४४१
पणिहाय जाव सव्वक्खुड्डिया	३।१२४	३।१२४
पण्णत्ता जाव तेसु	३।३९८	३।३९७
पत्तेयं जाव णिसीयंति	३।५६०	३।५५८
पयलाएज्ज वा जाव उसिणे	३।११९	३।११८
पुढवी जाव सव्वक्खुड्डिया	३।१२५	३।१२४
पुप्फारुहणं जाव धूवं	३।४६५	३।४५९
पोग्गला य जाव असासयावि	३।७२७	३।७२४
भविस्सइ जाव अवट्ठिए	३।३५०	३।२७२
महज्जुतीए जाव महाणुभावे	३।३५०	३।८६
महताहतनट्टगीयवादितरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा	३।८४५	३।८४२
महिड्ढीए जाव महाणुभागे	३।८६	वृत्ति, पत्र १०९
मुत्ताजालंतरुसिया तहेव जाव समणाउसो	३।३०२	३।३०२
लवणस्स णं पएसा धायइसंडं दीवं पुट्ठा तहेव		
जहा जंबूदीवे धायइसंडेवि सो च्चेव गमो	३।७१५-७१८	३।५७१-५७४
वट्टे जाव चिट्ठति	३।८६२,८६५,८७१, ८७७,९२५	३।७०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वलयागार जाव चिट्ठति	३।८५६	३।७०४
वलयागारसंठाणसंठिते जाव चिट्ठति	३।८६८	३।७०४
वलयागारसंठाणसंठिते जाव संपरिक्खित्ताणं	३।८४८	३।७०४
वलयागारे तहेव जाव जे	३।४७	३।४६
सव्वतुवरे य तहेव	३।४४५	३।४४५
सव्वपाणा जाव देवत्ताए देवित्ताए आलण जाव हंता	३।११३०	३।११२८
सव्वपुप्फे तं चेव	३।४४५	३।४४५
सामाणियसाहस्सीहिं जाव अण्णेहि	३।५५७	३।४४६
सिज्झंति जाव अंतं	१।१३२	ओ० सू० ७२
सेरियागुम्मा जाव महाजाइगुम्मा	३।५८०	जंबु० २।१०
सेसं तं चेव	३।१७८,१८२	३।१७६
सोहम्मीसाण जाव अणुत्तरेसु	३।१०३८	पण्ण० २।४६
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	३।४४३	वृत्ति, पत्र २४३
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	३।४४५	३।४४३
हट्ठतुट्ठा करतल जाव कट्टु एवं देवोत्ति जाव पडिसुणेत्ता	३।५५५	३।४४५
हट्ठतुट्ठा जाव हरिसवसविसप्पमाणहियया	३।४४७	३।४४१
हयकंठगाणं जाव उसभकंठगाणं पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं अट्ठसयं तेल्लसमुग्गाणं जाव धूवकडुच्छुयाणं	३।४१६	३।३२८-३३५; वृत्ति, पत्र २३४
हिमे जाव जे	१।६५	पण्ण० १।२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-२

तुलनात्मक

राज-वर्णक

ओवाइय सूत्र १४ — जंबुद्दीवपण्णत्ती ३।२,३
अत्र राजवर्णकस्य प्रकारान्तरं चापि लभ्यते।

देवी-वर्णक

ओवाइय सूत्र १५ — नायाधम्मकहाओ १।२।८

नमोत्थु-पूर्वावस्था-वर्णक

ओवाइय सूत्र २१,५४ — रायपसेणइयं सूत्र ८,७१४
नायाधम्मकहाओ २।१।११

नमोत्थु-सूत्र

ओवाइय सूत्र २१ :

णमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थगराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं[2] तिण्णाणं तारयाणं मुत्ताणं मोयगाणं बुद्धाणं बोहयाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं।

रायपसेणइयं सूत्र ८ :

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीवदयाणं[1] सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुगमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं[3] सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।

---

१. २९२ सूत्रे नास्ति।
२. १९ सूत्रे 'जाणए' पाठो विद्यते।
३. २९२ सूत्रे सिवं अयलं अरुअं अणंतं अक्खयं अव्वाबाहं अपुणराविति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणे भगवं महावीरे आइगरे""विभक्ति भेदेनैव पाठो निर्दिष्टसूत्रांकेषु विद्यते सूत्र १९,२१,५४

समवाओ १।२ :

समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवर-पोंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगोत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोय-गरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरणाणदंसणधरेणं वियट्टच्छउमेणं जिणेणं जावएणं तिण्णेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुय-मणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनाम-धेयं ठाणं संपाविउकामेणं ।

भगवती १।७

समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपोंडरीए पुरिसवर-गंधहत्थी लोगुत्तमे लोगनाहे लोगपदीवे लोगपज्जो-यगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए धम्म-देसए धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहए मुत्ते मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी सिव-मयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहं सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे ।

—जंबुद्दीवपण्णत्ती ५।२१

—नायाधम्मकहाओ १।१।७

—अणुत्तरोववाइयदसाओ ३।७५

प्रभात-वर्णक

ओवाइय सूत्र २२ :

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल-कोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धराग-सरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ।

रायपसेणइयं सूत्र ७२३ :

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए कयनियमाव-स्सए सहस्सररिसम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ।

रायपसेणइयं सूत्र ७७७ :

कल्लं पाउप्पभाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगास-किसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-णलिणि-संडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ।

भगवती २।१।६६

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल कोमलुम्मिलियम्मि अहपंडुरे पभाए रत्तासोयप्पकासे किसुय - सुयमुह - गुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंड-बोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ।

नायाधम्मकहाओ १।१।२४

(अतिरिक्त पाठ)

अणुओगदारं, लोइयं दव्वावस्सयं सू० १६

अनगार-प्रव्रज्या

ओवाइय सूत्र २३ :

चइत्ता हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं चिच्चा धणं एवं—धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं रज्जं रट्ठं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलधण - कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्त-रयणमाइयं संत-सार-सावतेज्जं, विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दाणं च दाइ-याणं परिभायइत्ता, मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया ।

आयार-चूला १५।२६ :

चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा वाहणं चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रयण-संत-सार-सावदेज्जं, विच्छड्डेत्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता, दायारेसु णं दायं पज्जभाएत्ता

रायपसेणइयं सूत्र ६६५ :

चिच्चा हिरण्णं, एवं—धणं धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि - मोत्तिय - संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयंति ।

निर्ग्रन्थ-तप-वर्णक

सूत्र २४,३२,३४,३५,३६	पण्हावागरणाइं ६।६
सूत्र २५,२६	रायपसेणइयं सूत्र ६८६
	भगवती २।६५
	नायाधम्मकहाओ १।१।४
सूत्र २७	भगवती २।५५
	रायपसेणइयं सूत्र ८१३
	निरयावलियाओ ३।४
सूत्र २७,२८,२९	पण्हावागरणाइं १०।११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबुद्दीवपण्णत्ती २।६८ से ७०
पज्जोसवणाकप्पो सूत्र ७८,७९,८०
द्रष्टव्यम्—अंगसुत्ताणि भाग-१

परिशिष्ट २ : आलोच्यपाठ तथा वाचनान्तर

सूत्र २७,२८,२९,३२,३४-३६ — सूयगडो २।२।६४ से ६६
सूत्र ३०-४४ — भगवती २५।५५७ से ६१८
उत्तरज्झयणाणि ३०।७-३६

बाह्यतप

सूत्र ३१ — ठाणं ६।६५

यावत्कथिक

सूत्र ३२ — ठाणं २।२००,२०१

ऊनोदरिका

सूत्र ३३ — भगवती ७।२४
ववहारो, ८।१७

कायक्लेश

सूत्र ३६ — ठाणं ७।४९

प्रतिसंलीनता

सूत्र ३७ — ठाणं ४।१९०,१९२
ठाणं ५।१३५

आभ्यन्तरतप

सूत्र ३८ — ठाणं ६।६६

प्रायश्चित्त

सूत्र ३९ — ठाणं १०।३७

विनय

सूत्र ४० — ठाणं ७।१३०-१३७

वैयावृत्त्य

सूत्र ४१ — ठाणं १०।१७

स्वाध्याय

सूत्र ४२ — ठाणं ५।२२०

ध्यान

सूत्र ४३ — ठाणं ४।६०-७२

देव-वर्णक

सूत्र ४७-५१ — पण्णवणा २।४०-६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिषद्-गमन-वर्णक

सूत्र ५२ — रायपसेणइयं सूत्र ६८८,६८९

नगरी-सज्जा-वर्णक

सूत्र ५५ — जंबुद्दीवपण्णत्ती ३।७

नित्यकर्म-वर्णक

सूत्र ६३ — नायाधम्मकहाओ १।१।२४
जंबुद्दीवपण्णत्ती ३।६

निगमन-वर्णक

भगवती ६।२०४ से २०६
सूत्र ६४-६६ — जंबुद्दीवपण्णत्ती ३।१७७-१८६
सूत्र ६९ — पज्जोसवणाकप्पो सूत्र ७५

पर्युपासना-वर्णक

सूत्र २६,७० — भगवती ६।३३, १४५,१४६

दासीनाम

सूत्र ७० — रायपसेणइयं सूत्र ८०४
जंबुद्दीवपण्णत्ती ३।११
नायाधम्मकहाओ १।१।८२

परिषद्-वर्णक

सूत्र ७१ :
तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहबले····।

रायपसेणइयं सूत्र ६१ :
तीसे य महतिमहालिताए इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जतिपरिसाए विदुपरिसाए देवपरिसाए खत्तियपरिसाए इक्खागपरिसाए कोरव्वपरिसाए अणेगसयाए अणेगवंदाए अणेगसयवंदपरिवाराए महतिमहालियाए ओहबले····।

देवलोक और देव-वर्णक

सूत्र ७२ — सूयगडो २।२

आयुबंध

सूत्र ७३ — ठाणं ४।६२५,६२८
भगवती ८।४२५ से ४२८

धर्मश्रद्धा-प्रकटन

सूत्र ७९ — रायपसेणइयं सूत्र ६९५
भगवती २।५२,९।१६४
नायाधम्मकहाओ १।१।१०१
उवासगदसाओ १।५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गौतम-वर्णक

सूत्र ८२ — भगवती १।६

उवासगदसाओ १।६६

वाणमंतर-उपपात

सूत्र ८८,८९ — भगवती १।४६

गंगाकूलवासी-वानप्रस्थक-तापस

सूत्र ९४ — भगवती ११।५६

निरयावलियाओ ३।३

परिव्राजक-वर्णक

सूत्र ९७ — भगवती २।२४।

अम्मड-परिव्राजक

सूत्र ११५-१५४ — भगवती १४।११० से ११२

दृढप्रतिज्ञ

सूत्र १४१-१५४ — रायपसेणइयं सूत्र ७९९-८१६

७२ कलाएं

सूत्र १४६	रायपसेणइयं सूत्र ८०६	जंबुद्दीवपण्णत्ती वृत्ति पत्र १३६,१३७	समवाओ ७२।७	णायाधम्मकहाओ १।१।८५
१. लेहं	लेहं	लेहं	लेहं	लेहं
२. गणियं	गणियं	गणियं	गणियं	गणियं
३. रूवं	रूवं	रूवं	रूवं	रूवं
४. णट्टं	नट्टं	नट्टं	नट्टं	नट्टं
५. गीयं	गीयं	गीअं	गीयं	गीयं
६. वाइयं	वाइयं	वाइयं	वाइयं	वाइयं
७. सरगयं	सरगयं	सरगयं	सरगयं	सरगयं
८. पुक्खरगयं	पुक्खरगयं	पोक्खरगयं	पुक्खरगयं	पोक्खरगयं
९. समतालं	समतालं	समतालं[1]	समतालं	समतालं
१०. जूयं	जूयं	जूअं	जूयं	जूयं
११. जणवायं	जणवायं	जणवायं	जणवायं	जणवायं
१२. पासगं	पासगं	पासयं	पोरेकव्वं	पासयं
१३. अट्ठावयं	अट्ठावयं	अट्ठावयं	अट्ठावयं	अट्ठावयं
१४. पोरेकव्वं	पोरेकव्वं	पोरेकव्वं	दगमट्टियं	पोरेकव्वं
१५. दगमट्टियं	दगमट्टियं	दगमट्टियं	अन्नविहिं	दगमट्टियं

१. क्वचित् 'तालमान'मिति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. अण्णविहिं	अन्नविहिं	अन्नविहिं	पाणविहिं	अण्णविहिं
१७. पाणविहिं	पाणविहिं	पाणविहिं	लेणविहिं	पाणविहिं
१८. वत्थविहिं	वत्थविहिं	वत्थविहिं	सयणविहिं	वत्थविहिं
१९. विलेवणविहिं	विलेवणविहिं	विलेवणविहिं	अज्जं	विलेवणविहिं
२०. सयणविहिं	सयणविहिं	सयणविहिं	पहेलियं	सयणविहिं
२१. अज्जं	अज्जं	अज्जं	मागहियं	अज्जं
२२. पहेलियं	पहेलियं	पहेलियं	गाहं	पहेलियं
२३. मागहियं	मागहियं	मागहिअं	सिलोगं	मागहियं
२४. गाहं	गाहं	गाहं	गंधजुत्ति	गाहं
२५. गीइयं	गीइयं	गीइअं	मधुसित्थं	गीइयं
२६. सिलोयं	सिलोगं	सिलोगं	आभरणविहिं	सिलोयं
२७. हिरण्णजुत्ति	हिरण्णजुत्ति	हिरण्णजुत्ति	तरुणीपडिकम्मं	हिरण्णजुत्ति
२८. सुवण्णजुत्ति	सुवण्णजुत्ति	सुवण्णजुत्ति	इत्थीलक्खणं	सुवण्णजुत्ति
२९. गंधजुत्ति	आभरणविहिं	चुण्णजुत्ति	पुरिसलक्खणं	चुण्णजुत्ति
३०. चुण्णजुत्ति	तरुणीपडिकम्मं	आभरणविहिं	हयलक्खणं	आभरणविहिं
३१. आभरणविहिं	इत्थिलक्खणं	तरुणीपरिकम्मं	गयलक्खणं	तरुणीपडिकम्मं
३२. तरुणीपडिकम्मं	पुरिसलक्खणं	इत्थिलक्खणं	गोणलक्खणं	इत्थीलक्खणं
३३. इत्थिलक्खणं	हयलक्खणं	पुरिसलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	पुरिसलक्खणं
३४. पुरिसलक्खणं	गयलक्खणं	हयलक्खणं	मिंढयलक्खणं	हयलक्खणं
३५. हयलक्खणं	गोणलक्खणं	गयलक्खणं	चक्कलक्खणं	गयलक्खणं
३६. गयलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	गोणलक्खणं	छत्तलक्खणं	गोणलक्खणं
३७. गोणलक्खणं	छत्तलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	दंडलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं
३८. कुक्कुडलक्खणं	चक्कलक्खणं	छत्तलक्खणं	असिलक्खणं	छत्तलक्खणं
३९. छत्तलक्खणं	दंडलक्खणं	दंडलक्खणं	मणिलक्खणं	दंडलक्खणं
४०. दंडलक्खणं	असिलक्खणं	असिलक्खणं	काकणिलक्खणं	असिलक्खणं
४१. असिलक्खणं	मणिलक्खणं	मणिलक्खणं	चम्मलक्खणं	मणिलक्खणं
४२. मणिलक्खणं	कागणिलक्खणं	कागणिलक्खणं	चंदचरियं	कागणिलक्खणं
४३. काकणिलक्खणं	वत्थुविज्जं	वत्थुविज्जं	सूरचरियं	वत्थुविज्जं
४४. वत्थुविज्जं	णगरमाणं	खंधावारमाणं	राहुचरियं	खंधारमाणं
४५. खंधावारमाणं	खंधावारमाणं	नगरमाणं	गहचरियं	नगरमाणं
४६. नगरमाणं	चारं	चारं	सोभाकरं	वूहं
४७. वूहं	पडिचारं	पडिचारं	दोभाकरं	पडिवूहं
४८. पडिवूहं	वूहं	वूहं	विज्जागयं	चारं
४९. चारं	पडिवूहं	पडिवूहं	मंतगयं	पडिचारं
५०. पडिचारं	चक्कवूहं	चक्कवूहं	रहस्सगयं	चक्कवूहं
५१. चक्कवूहं	गरुलवूहं	गरुडवूहं	सभासं	गरुलवूहं
५२. गरुलवूहं	सगडवूहं	सगडवूहं	चारं	सगडवूहं
५३. सगडवूहं	जुद्धं	जुद्धं	पडिचारं	जुद्धं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५४. जुद्धं	निजुद्धं	नियुद्धं	वूहं	निजुद्धं
५५. निजुद्धं	जुद्धजुद्धं	जुद्धातियुद्धं	पडिवूहं	जुद्धाइजुद्धं
५६. जुद्धाइजुद्धं	अट्ठिजुद्धं	दिट्ठिजुद्धं	खंधावारमाणं	अट्ठिजुद्धं
५७. मुट्ठिजुद्धं	मुट्ठिजुद्धं	मुट्ठिजुद्धं	नगरमाणं	मुट्ठिजुद्धं
५८. बाहुजुद्धं	बाहुजुद्धं	बाहुजुद्धं	वत्थुमाणं	बाहुजुद्धं
५९. लयाजुद्धं	लयाजुद्धं	लयाजुद्धं	खंधावारनिवेसं	लयाजुद्धं
६०. ईसत्थं	ईसत्थं	इसत्थं	नगरनिवेसं	ईसत्थं
६१. छरुप्पवादं	छरुप्पवायं	छरुप्पवायं	वत्थुनिवेसं	छरुप्पदायं
६२. धणुवेदं	धणुवेयं	धणुव्वेयं	ईसत्थं	धणुवेयं
६३. हिरण्णपागं	हिरण्णपागं	हिरण्णपागं	छरुप्पगयं	हिरण्णपागं
६४. सुवण्णपागं	सुवण्णपागं	सुवण्णपागं	आससिक्खं	सुवण्णपागं
६५. वट्टखेड्डं	सुत्तखेड्डं	सुत्तखेड्डं	हत्थिसिक्खं	वट्टखेड्डं
६६. सुत्तखेड्डं	वट्टखेड्डं	वत्थखेड्डं	धणुव्वेयं	सुत्तखेड्डं
६७. णालियाखेड्डं	णालियाखेड्डं	नालिआखेड्डं	हिरण्णपागं सुवण्णपागं मणिपागं धातुपागं	नालियाखेड्डं
६८. पत्तच्छेज्जं	पत्तच्छेज्जं	पत्तच्छेज्जं	बाहुजुद्धं दंडजुद्धं मुट्ठिजुद्धं अट्ठिजुद्धं निजुद्धं जुद्धाति- जुद्धं	पत्तच्छेज्जं
६९. कडगच्छेज्जं	कडगच्छेज्जं	कडच्छेज्जं	नालियाखेड्डं वट्टखेड्डं	कडच्छेज्जं
७०. सज्जीवं	सज्जीवं	सज्जीवं	पत्तच्छेज्जं कडगच्छेज्जं	सज्जीवं
७१. निज्जीवं	निज्जीवं	निज्जीवं	सज्जीवं निज्जीवं	निज्जीवं
७२. सउणरुयं	सउणरुयं	सउणरुअं मुनित्व आराहणा	सउणरुयं	सउणरुतं

सूत्र १५४

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए केसलोए बंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लद्धावलद्धं परेहिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया

राइपसेणइयं सूत्र ८१६

जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे केसलोए बंभचेरवासे अण्हाणगं अदंतवणगं अच्छत्तगं अणुवाहणगं भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावमाणाइं परेहिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ उच्चावया विरूवरूवा बावीसं परीसहोवसग्गा

गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहिया-सिज्जंति तमट्ठमाराहित्ता····।	गामकंटगा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेहिइ, आराहित्ता····।
	सूयगडो २।२।६७
	जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणगे अदंतवणगे अछत्तए अणोवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्धं माणावमाणणाओ हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहेंति, तमट्ठं आराहेत्ता····।
	ठाणं ९।६२
	से जहानामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए अच्छत्तए अणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्धवित्तीओ पण्णत्ताओ।
	भगवती १।४३३
	जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतवणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धो उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहेइ, आराहित्ता····।
	नायाधम्मकहाओ १।१६।३२४
	निरयावलियाओ ५।१

देवकिल्विषक-उपपात

सूत्र १५५	भगवती ९।२४०

श्रावक-वर्णक

सूत्र १६१, १६२	सूयगडो २।२।७१,७२
सूत्र १६२	रायपसेणइयं सूत्र ६९८
	भगवती २।९४

अनगार-वर्णक

सूत्र १६३-१६६	सूयगडो २।२।६३,६४,६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवली-समुद्घात

सूत्र १६९-१८४ — पण्णवणा ३६।७९-९४

गंधसमुद्गक विकिरण

सूत्र १७० — भगवती ६।१७३

ईषत्प्राग्भारापृथ्वी

सूत्र १९२-१९४ — पण्णवणा २।६४-६६

सूत्र १९२,१९३ — ठाणं ८।१०९,११०

समवाओ १२।११

सिद्ध-वर्णक

सूत्र १९५ — पण्णवणा २।६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-३

सद्दसूची

प्रमाणविधि

[● अव्यय, सर्वनाम, क्त्वा, तुम्, यप्, प्रत्यय के रूप और धातुरूप के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार दिया गया है।

● रूट (√) अंकित शब्द धातुएं हैं। उनके रूप डेस (—) के बाद दिए गए हैं।

● शब्द के बाद साक्ष्य-स्थल का अंक सूत्र का है, तथा दो अंक प्रतिपत्ति व सूत्र का है, तीसरा अंक सूत्र के अन्तर्गत गाथा का है।

जहां एक या दो संगहणी गाथाएं हैं वहां उसके प्रमाण उसी सूत्रांक में दे दिए गए हैं।]

अ

अ [च] रा ६७५

अइ [अयि] रा० ११,५६,६२

अइ [अति] रा० ७६७

अइकंत [अतिकान्त] जी० ३।५६७

अइक्कंत [अतिक्रान्त] ओ० १६८,१६५

√अइक्कम [अति+क्रम्]—अइक्कमंति ओ० ६२

अइक्कीलावास [अतिक्रीडावास] जी० ३।७५६, ७५७

अइगाढ [अतिगाढ] रा० ७७४

अइदूर [अतिदूर] ओ० ४७,५२,८३. रा० ६८७

अइबल [अतिबल] ओ० ७१. रा० ६१

अइमट्टिय [अतिमृत्तिक] रा० ६

अइमुत्तकलया [अतिमुक्तकलता] जी० ३।५८४

अइमुत्तयलया [अतिमुक्तकलता] ओ० ११. रा० १४५

अइमुत्तयलयापविभत्ति [अतिमुक्तकलताप्रविभक्ति] रा० १०१

अइरुग्गय [अचिरोद्गत] रा० ४५

अइरेग [अतिरेक] ओ० २३. जी० ३।५६०,७२६, ७३१,७३२

अइविकिट्ठ [अतिविकृष्ट] रा० ६८३

अइसेस [अतिशेष] ओ० ५२,६६,७०. जी० ३।५६८

अईव [अतीव] रा० १३२. जी० ३।५८०

अउणतीस [एकोनत्रिंशत्] जी० ३।२२६।५

अउणपण्ण [एकोनपञ्चाशत्] जी० ३।२२६।३

अउणाणउति [एकोननवति] जी० ३।८२३

अउणापण्ण [एकोनपञ्चाशत्] ओ० १६२

अउणासीति [एकोनाशीति] जी० ३।५७०

अउत [अयुत] जी० ३।८४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अउल [अतुल] ओ० १६५।१६. जी० ३।११६
अओकुंभी [अयस्कुम्भी] रा० ७५४,७५६
अओज्झ [अयोध्य] ओ० ५७
अओमय [अयोमय] रा० ७५४,७५६.
जी० ३।११६
अंक [अङ्क] ओ० ४८,५१. रा० १०,१२,१८,
२६,३८,६५,१३०,१६०,१६५,१७३,२२२,
२५६,२७६,८०४. जी० ३।७,२८२,२८५,
३००,३१२,३३३,३८१,४१७,५६६,८६४
अंक (मय) [अङ्कमय] जी० ३।७४७
अंकधाई [अङ्कधात्री] रा० ८०४
अंकमय [अङ्कमय] रा० १३०,२७०.
जी० ३।३००,३२२,४३५
अंकवाणिय [अङ्कवणिज्] रा० ७३७
अंकहर [अङ्कधर] जी० ३।५६६
अंकामय [अङ्कमय] रा० १३०,१४६,१६०,२५४.
जी० ३।२६४,३००,४१५
अंकिय [अङ्कित] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७
अंकुर [अङ्कुर] ओ० ५,८,१८४. रा० २७,
२२८. जी० ३।२७४,२८०,३८७,६७२
अंकुस [अङ्कुश] रा० ३६,४०. जी० ३।३१३,
३३८,५६७,६३४,८६२
अंकुसय [अङ्कुशक] ओ० ११७
अंकोल्ल [अङ्कोठ] जी० १।७४
अंग [अङ्ग] ओ० १५,६३,१४३. रा० ८०६,
८१०. जी० ३।५६६
अंगण [अङ्गन] ओ० २८
अंगपविट्ठ [अङ्गप्रविष्ट] रा० ७४२
अंगबाहिरक [अङ्गबाह्यक] रा० ७४२
अंगमंग [अङ्गाङ्ग] ओ० १४. रा० ७०,६७१.
जी०३।५६८
अंगय [अङ्गक] ओ० ६३
अंगय [अङ्गद] ओ० ४७,७२,१०८,१३१.
रा० २८५. ३।४५१
अंगारक [अङ्गारक] ओ० ५०
अंगुल [अङ्गुल] ओ० १६,१७०,१६२,१६५।७.
रा० ५६,१८८,७६६. जी० १।१६,७४,८६,६४,
१०१,१०३,१११,११२,११६,११६,१२१,
१२३ से १२५,१३०,१३५; ३।८२,६१,२६०,
४३६,५६६,५६७,७८८,८३८।१७,६६६,
१०७४,१०८७,१०८६,११११; ५।२३,२६;
६।४०,५१,६७,१७१
अंगुलक [अङ्गुलक] जी० ३।२६०
अंगुलग [अङ्गुलक] जी० ३।१०७४
अंगुलय [अङ्गुलक] जी० ३।८२
अंगुलि [अङ्गुलि] रा० २६२. जी० ३।४५७
अंगुलिज्जग [अङ्गुलीयक] ओ० ६३
अंगुलितल [अङ्गुलितल] ओ० २,५५. रा० ३२,
२८१,२६३,२६५. जी० ३।३७२,४४७,४५८,
४६०,५५४
अंगुलिय [अङ्गुलिक] ओ० १७०
अंगुली [अङ्गुली] ओ० १६
अंगुलीय [अङ्गुलीक] ओ० ६३. जी० ३।५६६,
५६७
अंगुलेज्जग [अङ्गुलीयक] जी० ३।५६३
√अंच [कृष्]—अंचेइ ओ० २१. रा० ८.
जी० ३।४५७
अंचितरिभित [अञ्चितरिभित] जी० ३।४४७
अंचित्ता [कृष्ट्वा] रा० २६२
अंचिय [अञ्चित] रा० १०५,११६,२८१.
जी० ३।४४७
अंचियरिभिय [अञ्चितरिभित] रा० १०७,२८१
अंचेत्ता [कृष्ट्वा] ओ० २१. रा० ८. जी० ३।४५७
अंजण [अञ्जन] ओ० ४७. रा० १०,१२,१८,२५,
६५,१६१,१६५,२५८,२७६. जी० ३।७,२७८,
३३४,४१६,४४५
अंजणकेसिगा [अञ्जनकेशिका] जी० ३।२७६
अंजणकेसिया [अञ्जनकेशिका] रा० २६
अंजणग [अञ्जनक] ओ० १३. जी० ३।८८२,
८८३,६१०,६१३ से ६१६
अंजणगिरि [अञ्जनगिरि] ओ० ६३

अंजणपुलय [अञ्जनपुलक] रा० १०,१२,१८,६५, १६५,२७६. जी० ३।७

अंजणमय [अञ्जनमय] जी० ३।८८२

अंजणा [अञ्जना] जी० ३।४,६८७

अंजलि [अञ्जलि] ओ० २०,२१,५३,५४,५६, ६२,६६,११७. रा० ८,१०,१२,१४,१८,४६, ७२,७४,११८,२७६,२७६,२८२,२६२,६५५, ६८१,६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४, ७२३,७६६. जी० ३।४४२,४४५,४४८,४५७, ५५५

अंजलिपग्गह [अञ्जलिप्रग्रह] ओ० ६६,७०. रा० ७७८

अंजलिप्पग्गह [अञ्जलिप्रग्रह] ओ० ४०

अंजू [अञ्जू] जी० ३।६२०

अंडग [अण्डक] ओ० ३३

अंडय [अण्डज] जी० ३।१४७,१४८,१६१

अंदुबद्धग [अन्दुबद्धक] ओ० ६०

अंत [अन्त] ओ० ७२,७४।४,१५४,१६५,१६६, १७७,१८१. रा० ३७,७७१,८१६. जी० १।१३३; ३।५२,१२४,१२५,३११,६४२,६५३, ७२३,७५४,७६२,७६८ से ७७६

अंतकम्म [अन्तकर्मन्] रा० २८५. जी० ३।४५१

अंतगडदसाधर [अन्तकृतदशाधर] ओ० ४५

अंतर [अन्तर] रा० १३२,२८१,७५४ से ७५७, ७६३,७६४. जी० १।१४१,१४२; २।६३,६६, ८६,८८,६२,१२५,१२६,१३३,१५०,१५१; ३।६० से ६३,६५,६६,६८ से ७२,११८,११६, २८८,३०२,४४७,५७०,५६८,७१४,८०२,८१५, ८२७,८३८।२७,८५२,६५२,१०२२,११३६, ११३७; ४।१६,१७; ५।१७,२३,२४,३० ; ६।१०; ७।१३; ८।४; ६।४,१२,१३,१६,२५, २६,३३,३४,३६,४६ से ५४,५६,६०,६५,७१, ७२,८३,८४,८६,६२,६३,६६,१०५ से १०७, १११,११७,११६,१२६ से १२८,१३६,१३७, १३६,१४६,१५२,१५३,१६५,१७६,१७७, १७६,१८०,१६३ से १६५,२०४ से २०७, २१६ से २१६,२२८ से २३०, २४१ से २४४, २४६,२४६,२६२ से २६५,२७७ से २८५

अंतरणई [अन्तर्नदी] रा० २७६

अंतरणदी [अन्तर्नदी] जी० ३।४५५,६३७

अंतरदीव [अन्तर्द्वीप] जी० २।६१

अंतरदीवक [अन्तर्द्वीपज,°क] जी० २।८६

अंतरदीवग [अन्तर्द्वीपज,°क] जी० १।५५,१०१, ११६,१२६; २।३४,७०,७२,७७,८५,६६, १०६,११६,१२४,१३३,१३७,१३८,१४७, १४६; ३।१५५,२१५,२१६,२२७,८३६

अंतरदीवय [अन्तर्द्वीपज,°क] जी० १।१०१

अंतरदीविया [अन्तर्द्वीपिका] जी० २।११,१३,६६, ७०,७२,१४७,१४६

अंतरा [अन्तरा] ओ० ५५. रा० २०,६८३,७०६. जी० ३।७२६

अंतराय [अन्तराय] ओ० ४४

अंतरिल [अन्तरित] जी० ३।४३६

अंतरिय [अन्तरित] रा० ७६६. जी० ३।८३८।२६

अंताहार [अन्त्याहार] ओ० ३५

अंतिय [अन्तिक] ओ० २१,४७ से ५१,५४,६३, ७८,८०,८१,११७,१२०,१२१ १५१. रा० १२, १३,१५ से १७,४७,६२,२७७,६६७,६८१, ६८३,६८५,६६०,६६४ से ६६६,७००,७०६, ७१०,७१३,७१४,७१६,७१८,७२०,७२६, ७७४,७७५,७६६,८१२. जी० ३।४४३

अंतेउर [अन्तःपुर] ओ० २३,७०,१६२. रा० ६७४,६६५,६६८,७५२,७५७,७७८, ७८७ से ७६१

अंतेउरिया [अन्तःपुरिकी] ओ० ६२

अंतेपुर [अन्तःपुर] जी० ३।२८५

अंतेवासि [अन्तेवासिन्] ओ० २३ से २५,२७,८२, ११५. रा० ६७६

अंतो [अन्तर्] ओ० ७०,६२ रा० २४,३३,६६, १३०,१३७,१८७,२५४,७५४,७५५,७५७,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७७२. जी० १।१२७; ३।७७,१११,११८,२१४, २७७,२९८,३००,३०७,३०९,३३६,३५२, ३५९,३६०,३६४,३६८,३६९,३९९,४१५, ६४८,६७३,७५५,७५७,८३८।१५,८३९,८४०, ८४२,९०५

अंतोमुहुत्त [अन्तर्मुहूर्त] जी० १।५२,५९,६५,७४, ७९,८२,८७,८८,१०१,१०३,१११,११९,१२१, १२३ से १२५,१२७,१२८,१३३,१३७ से १४०,१४२; २।२० से २२,२४ से ३४,४९, ५०,५३ से ६१,६३,६५ से ६७,७९,८२ से ८४,८७,८८,९०,९१,१०७,१०९ से १११, ११३,११४,११६,११९ से १३३; ३।१५६, १६१,१६२,१६५,१८६ से १९१,२१४,११३२, ११३४ से ११३७; ४।३ से ११,१६,१७; ५।५, ७,८,१० से १६,२१ से २४,२८ से ३०; ६।३, ८ से ११; ७।१३,१४; ९।२३ से २६,३१,३३, ३४,३६,४१,४७,५२,५७ से ६०,६८ से ७३, ७७,७८,८०,८३,८५,८९,९०,९२,९३,९६,९७, १०२,१०३,१०५,११४,११५,११७,११८, १२३,१२५,१२६,१२८,१३२,१३६,१४४, १४९,१५०,१५२,१५३,१६०,१६४,१६५, १७२,१७३,१७६ से १७८,१८६ से १९१, १९३,१९४,१९८,२०२,२०४,२०७,२११, २१६ से २१८,२२२,२२३,२२५,२२८,२२९, २४१,२४२,२५७ से २६०,२६२,२६४,२७७, २७८

अंतोमुहुत्तिय [अन्तर्मुहूर्तिक] ओ० १७३,१८२

अंतोसल्लमयग [अन्तर्शल्यमृतक] ओ० ९०

अंदोलग [अन्दोलक] रा० १८०. जी० ३।२९२

अंदोलय [अन्दोलक] रा० १८१

अंधकार [अन्धकार] ओ० ४६

अंधयार [अन्धकार] ओ० ५,८,५७. जी० ३।२७४

अंधिया [अन्धिका] जी० १।८९

अंब [आम्र] जी० १।७१

अंबड [अम्बड] ओ० ९६

अंबपल्लवपविभत्ति [आम्रपल्लवप्रविभक्ति] रा० १००

अंबरतल [अम्बरतल] ओ० ५२. रा० ६८८

अंबसालवण [आम्रशालवन] रा० २,८ से १०, १२,१३,१५,५६

अंबिल [अम्ल] जी० १।५; ३।२२

अंबिलोदय [अम्लोदक] जी० १।६५

अंबुभक्खि]अम्बुभक्षिन्] ओ० ९४

अंसुय [अंशुक] जी० ३।५९५

अकंटय [अकण्टक] ओ० ६,१४. रा० ६७१. जी० ३।२७५

अकंडुयय [अकण्डूयक] ओ० ३६

अकंत [अकान्त] रा० ७६७. जी० १।९५; ३।९२

अकंततरक [अकान्ततरक] जी० ३।८४

अकक्कस [अकर्कश] ओ० ४०

अकडुय [अकटुक] ओ० ४०

अकण्ण [अकर्ण] जी० ३।२१६

अकम्मभूमक [अकर्मभूमक] जी० २।१३३

अकम्मभूमग [अकर्मभूमक] जी० १।५१,५५, १०१,११९,१२९; २।३०,३२ से ३४,७७,८५, ९६,१०६,११६,१२४,१३७,१४७,१४९; ३।१५५,२१५,२२८,८३६

अकम्मभूमि [अकर्मभूमि] जी० २।१३७

अकम्मभूमिक [अकर्मभूमिज,°क] जी० २।५७,५८, ८५

अकम्मभूमिग [अकर्मभूमिज,°क] जी० २।५९ से ६१,६६,७०,७२,१३८,१४७,१४९

अकम्मभूमिय [अकर्मभूमिज] जी० १।१०१

अकम्मभूमिया [अकर्मभूमिजा] जी० २।११,१३, ७०,७२,१४७,१४९

अकयत्थ [अकृतार्थ] रा० ७७४

अकयलक्खण [अकृतलक्षण] रा० ७७४

अकरंडुय [अकरण्डक] ओ० १९. जी० ३।५९६, ५९७

अकरण [अकरण] ओ० ७८ से ८१

अकरणिज्ज [अकरणीय] ओ० ११७. रा० ७९९

अकसाइ [अकषायिन्] जी० १।१३१; ९।२८, १४८,१५१,१५४,१५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकाइय [अकायिक] जी० १।१८ से २०,१८२,
१८४
अकामछुहा [अकामक्षुध्] ओ० ८६
अकामणिज्जरा [अकामनिर्जरा] ओ० ७३
अकामतण्हा [अकामतृष्णा] ओ० ८६
अकामबंभचेरवास [अकामब्रह्मचर्यवास] ओ० ८६
अकाल [अकाल] रा० १३,१५ से १७
अकिंचण [अकिञ्चन] ओ० २७. रा० ८१३
अकित्तिकारग [अकीर्तिकारक] ओ० १५४
अकिया [अकृत्वा] ओ० १७२
अकिरिय [अक्रिय] ओ० ४०
अकुडिल [अकुटिल] ओ० ४६
अकुणत्तर [एकोनसप्तति] जी० ३।८२७
अकुव्वमाण [अकुर्वत्] रा० ७६२
अकुसल [अकुशल] रा० ७५८,७५६
अकुसलमण [अकुशलमनस्] ओ० ३७
अकुसलवय [अकुशलवचस्] ओ० ३७
अकोसायंत [अकोशायमान, विकसत्] ओ० १६
अक्किट्ठ [अक्लिष्ट] जी० ३।६३०
अक्कोह [अक्रोध] ओ० १६८
अक्ख [अक्ष] ओ० १२२
अक्खय [अक्षय] ओ० १६,२१,५४. रा० ८,२००,
२६२. जी० ३।५६,२७२,३५०,४५७,७६०
अक्खर [अक्षर] ओ० ७१,१८२. रा० ६१,२७०.
जी० ३।४३५
अक्खाइगपेच्छा [आख्यायकप्रेक्षा] जी० ३।६१६
अक्खाडग [अक्षवाटक] रा० ३५,६६,२१८,३००.
जी० ३।३७७,४६५,८६१
अक्खाडय [अक्षवाटक] रा० ३६,२१७,३००,
३२१,३३८. जी० ३।४६५,४८६,५०३,८६०
अक्खात [आख्यात] जी० ३।२३२
अक्खामित्ता [अक्षमयित्वा] रा० ७७६
अक्खाय [आख्यात] रा० १२४,१२६,१६३,१६६.
जी० १।१; ३।७७,१६१,१७४,२५७,३३५,
३५४,३५५,३५७,६५८,७२८,७३३,१०३८
अक्खीण [अक्षीण] रा० ७५१
अक्खीणमहाणसिय [अक्षीणमहानसिक] ओ० २४
अक्खुभियजल [अक्षुभितजल] जी० ३।७८३,७८४
अक्खेवणी [आक्षेपणी] ओ० ४५
अखंड [अखण्ड] ओ० १६. जी० ३।५६६
अखुभियजल [अक्षुभितजल] जी० ३।७८३
अगड [अवट] ओ० १,६६
अगडमह [अवटमह] रा० ६६८
अगणि [अग्नि] रा० ७५७. जी० ३।७७
अगणिकाय [अग्निकाय] रा० ७६७.
जी० ३।८४१
अगत्थिगुम्म [अगस्तिगुल्म] जी० ३।५८०
अगरला [अगरला,अगरल्लि] ओ० ७१. रा० ६१
अगरुलघुयत्त [अगरुलघुकत्व] रा० ७६३
अगलुय [अगरुक] ओ० ११०,१३३
अगामिया [अग्रामिका] ओ० ११६,११७.
रा० ७६५,७७४
अगार [अगार] ओ० १५,२३,५२,७६,७८,१२०,
१५१. रा० ७०,१३३, ६७२, ६८७, ६८६,
६६५, ८०६, ८१०, ८१२
अगारधम्म [अगारधर्म] ओ० ७५,७७
अगारसामाइय [अगारसामायिक] ओ० ७७
अगिला [दे० अग्लानि] ओ० ७१. रा० ७२०
अगुरु [अगुरु] रा० ३०
अगेज्झ [अग्राह्य] ओ० ५ जी० ३।२७४
अग्ग [अग्र] ओ० २३,६६. रा० ६६,७०,१३३,
२६१,३५१,५६४. जी० ३।३०३,४५७,५१६,
५४७,५८०,५६७,६७४
अग्गमहिसी [अग्रमहिषी] रा० ७,४२,४७,५६,५८,
२८०,६५६. जी० ३।३४०, ३५०, ३५६,
४४६,४४८,५५७,५५६,५६३,६१६ से ६२२,
१०२३,१०२६
अग्गय [अग्रक] जी० ३।५६१
अग्गलपासाय [अर्गलाप्रासाद] रा० १३०.
जी० ३।३००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गला [अर्गला] रा० १३०. जी० ३।३००

अग्गसिहर [अग्रशिखर] ओ० ५,८. रा० ३२. जी० ३।२७४,३७२

अग्गसो [अग्रशस्] जी० १।५८,७३,७८,८१

अग्गहत्थ [अग्रहस्त] ओ० ४७. रा० १२,७१४, ७५८ से ७६१. जी० ३।११८

अग्गि [अग्नि] ओ० ४८,१८४. रा० ७६१. जी० ३।६०१, ८६६

अग्गेज्झ [अग्राह्य] ओ० ८

अग्गोदय [अग्रोदक] जी० ३।७३३

अचंड [अचण्ड] जी० ३।५६८

अचक्खुदंसणि [अचक्षुर्दर्शनिन्] जी० १।२९,८६, ९०; ९।१३१,१३३,१३७,१४०

अचरिम [अचरम] रा० ६२. जी० ९।६३,६५,६६

अचवल [अचपल] रा० १२

अचित्त [अचित्त] ओ० २८,४६,६९,७०. रा० ७७८

अचिर [अचिर] जी० ३।५९०

अचोक्ख [दे० अचोक्ष] रा० ९,१२. जी० ३।६२२

√**अच्च** [अर्च्]—अच्चेइ ओ० २. रा० २९१. जी० ३।५१६—अच्चेति जी० ३।४५७

अच्चंत [अत्यन्त] ओ० १४. रा० ६७१

अच्चणिज्ज [अर्चनीय] ओ० २. रा० २४०,२७६. जी० ३।४०२,४४२,१०२५

अच्चणिया [अर्चनिका] रा० ६५४,६५५. जी० ३।४६३,४६६,५१७,५५४,५५५

अच्चा [अर्चा] ओ० ७२

अच्चासण्ण [अत्यासन्न] ओ० ४७,५२,८३. रा० ६०,६८७,६९२,७१६

अच्चि [अर्चिस्] ओ० ४७,७२. रा० १७,१८,२०, ३२,१२९. जी० १।७८; ३।८५,१७५,२८८, ३००,३७२

अच्चिकंत [अर्चिःकान्त] जी० ३।१७५

अच्चिकूड [अर्चि.कूट] जी० ३।१७५

अच्चिज्झय [अर्चिर्ध्वज] जी० ३।१७५

अच्चिप्पभ [अर्चिःप्रभ] जी० ३।१७५

अच्चिमालि [अर्चिर्मालिन्] रा० १२४

अच्चिमाली [अर्चिर्मालिनी] जी० ३।९२०,१०२३, १०२६

अच्चियावत्त [अर्चिरावर्त्त] जी० ३।१७५

अच्चिलेस्स [अर्चिर्लेश्य] जी० ३।१७५

अच्चिवण्ण [अर्चिर्वर्ण] जी० ३।१७५

अच्चिसिंग [अर्चिः शृङ्ग] जी० ३।१७५

अच्चिसिट्ठ [अर्चिः शिष्ट] जी० ३।१७५

अच्चुत [अच्युत] जी० ३।१०३८,११२२

अच्चुत्तरवडिंसग [अर्चिरुत्तरावतंसक] जी० ३।१७५

अच्चुय [अच्युत] ओ० १५८,१५९,१६२,१९०, १९२. जी० २।९६; ३।१०५४,१०५५,१०६२, १०६६,१०७४,१०८८,१०९१,११११,१११२, १११५,१११९

अच्चुयवइ [अच्युतपति] ओ० ५१

अच्चेत्ता [अर्चित्वा] रा० २९१. जी० ३।४५७

अच्चोदग [अत्युदक] रा० ९,१२. जी० ३।४४७

अच्चोयग [अत्युदक] रा० २८१

अच्छ [अच्छ] ओ० १२,१९४. रा० २१ से २३. ३२,३४,३६,३८,१२४ से १२८,१३१,१३२, १३४,१३७,१४१,१४५ से १४८,१५० से १५३,१५५ से १५७,१६०,१६१,१७४,१८० से १८५,१८८,१९२,१९७,२०९,२११,२१८, २२१,२२२,२२४,२२६,२३०,२३३,२३८, २४२,२४४,२४६,२५३,२५६,२६१,२७३, २९१. जी० ३।११८,११९,२६१ से २६३, २६६,२६८,२६९,२८६,२८९ से २९७,३०१, ३०२,३०४,३०७,३०८,३१२,३१८,३१९, ३२३ से ३२६,३२८ से ३३०,३३२,३३४, ३३७,३४७,३४८,३५२,३५३,३५५,३६१, ३६५,३७२,३७७,३८०,३८१,३८३,३८५, ३९२,३९५,३९९,४००,४०४,४०६,४०८, ४१०,४१३,४१४,४१८,४२२,४२५,४२७, ४३७,४५७,६३२,६३९,६४४,६४६,६४९, ६५५,६६१,६६८,६७१,६७५,६८९,७२४, ७२७,७३६,७५०,७५८,८३९,८४२,८५४,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८५७,८६३,८८१,८८२,८६१,८६३ से ८६५,
८६७,८६६,६०१,६०४,६०६,६०७,६१०,
६११,६१८,६५७,१०३८,१०३६,१०८१

√**अच्छ** [आस्]—अच्छेज्ज ओ० १६५।१८

अच्छ [ऋक्ष] जी० ३।६२०

अच्छणघरग [आसनगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२६४

अच्छण्ण [आच्छन्न] जी० ३।५८१

अच्छत्तग [अछत्रक] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ८१६

अच्छरस [अच्छरस] रा० १६२. जी० ३।४५७

अच्छरा [दे०] ओ० १७०. जी० ३।८६

अच्छरा [अप्सरस्] रा० ३२,२०६,२११. जी० ३।३७२,५६७,६२१,११२२

अच्छि [अक्षि] ओ० १६. रा० २५४. जी० ३।१२६।८,३०३,४१५,५६६

अच्छिज्जंत [आच्छिद्यमान] रा० ७७

अच्छिद्द [अच्छिद्र] ओ० ५,८,१६,२६. जी० ३।२७४,५६६,५६७

अच्छिपत्त [अक्षिपत्र] रा० २५४. जी० ३।४१५

अच्छिवेदणा [अक्षिवेदना] जी० ३।६२८

अच्छेत्ता [अछित्वा] जी० ३।६६०

अच्छेयकर [अछेदकर] ओ० ४०

अच्छेरग [आश्चर्य] जी० ३।५६७

अज [अज] जी० ३।६१८

अजरा [अजरा] ओ० १६५।१८

अजहण्ण [अजघन्य] जी० ३।५६७

अजहण्णमणुक्कोस [अजघन्योत्कर्ष] जी० ६।४८, ५०

अजिण [अजिन] ओ० २६

अजित [अजित] जी० ३।४४८

अजिय [अजित] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८

अजीरग [अजीरक] जी० ३।६२८

अजीव [अजीव] ओ० ७१,१२०,१३७,१३८,१६२. रा० ६६८,७५२,७८६

अजीवाभिगम [अजीवाभिगम] जी० १।२ से ५

अजोगत्त [अयोगत्व] ओ० १८२

अजोगि [अयोगिन्] जी० १।१३३; ६।२१,४६, ४७,५३,११३,११६,१२०

अज्ज [अद्य] रा० ६८८,६८६

अज्ज [आर्य] ओ० १४६

अज्जग [आर्यक] रा० ७५०,७५१,७७३

अज्जय [आर्यक] रा० ७५०,७५१

अज्जव [आर्जव] ओ० २५,४३. रा० ६८६,८१४

अज्जा [आर्या] रा० ८०६

अज्जिया [आर्यिका] ओ० १६. रा० ७५२,७५३

अज्जुण [अर्जुन] ओ० ६,१०. जी० ३।५८३

अज्जुणसुवण्णगमय [अर्जुनसुवर्णकमय] ओ० १६४

अज्झत्थिय [आध्यात्मिक] रा० ६,२७५,२७६, ६८८,७३२,७३७,७३८,७४६,७६८,७७७, ७६१,७६३. जी० ३।४४१,४४२

अज्झयण [अध्ययन] जी० १।१

अज्झवसाण [अध्यवसान] ओ० ११६,१५६. जी० ३।१२६।६

अज्झोयरय [अध्यवतरक] ओ० १३४

√**अज्झोववज्ज** [अधि+उप+पद्] —अज्झोववज्जिहिति ओ० १५०. रा० ८११

अज्झोववण्ण [अध्युपपन्न] रा० ७५३

अट्ट [आर्त] ओ० ७४

अट्ट (झाण) [आर्तध्यान] ओ० ४३

अट्टज्झाण [आर्तध्यान] रा० ७६५

अट्टणसाला [अट्टनशाला] ओ० ६३

अट्टालग [अट्टालक] जी० ३।५६४,६०४

अट्टालय [अट्टालक] ओ० १. रा० ६५४,६५५. जी० ३।५५४

अट्टियचित्त [आर्तितचित्त] ओ० ७४।५

अट्ठ [अर्थ] ओ० २०,२१,५२,५४,५७,५६,६१, ६३,८६ से ६५,१११ से ११४,११७ से १२०, १५४,१५५,१५७ से १६०,१६२,१६५ से १६७,१६६,१७०,१७२,१७७,१८३,१८४, १८६ से १६१. रा० १३,१६,२५ से ३१,४५,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७,६४,१२३,१७३,१६७,१६६,२७७,६८३,
६८७,६६०,६६८,७०१,७१३,७१४,७१६,
७१६,७२६,७५१ से ७५३,७५५,७५७,७५६,
७६१,७६३,७६५,७७१,७७४,७७६ से ७७८,
७८६,७८६,७६२,८१६. जी० ३।५८,८४,८५,
१६८ से २०३.२३६,२४७,२५६,२६६,२७१,
२७८ से २८५,३५०,४४३,५७७,५६६,६०१,
६०२,६०५ से ६०७,६०६,६१०,६१२ से
६१७,६२२ से ६२४,६२६,६२८,६३७,६५६,
६७४,७००,७०६,७२१,७३१,७३८,७४१,
७४३,७४६,७५०,७६०,७६३,७६५,७६८,
७७०,७७६,७८२,७८६,७८७,८०८,८१६,
८२६,८३३,८३६,८४०,८५४,८५७,८६०,
८६३,८६६,८६६,८७२,८७५,८७६,८८०,६२३,
६२५,६२७,६४१,६४८,६४६,६८६ से ६६२,
६६४ से ६६६,६६६,१०२४,१०२५,१०४२,
१०४४,१०४६,१०४६,१०५१ से १०५३

अट्ठ [अष्टन्] ओ० १२. रा० ८. जी १।३६

अट्ठअट्ठमिया [अष्टाष्टकिका] ओ० २४

अट्ठतीस [अष्टात्रिंशत्] जी० ३।७०

अट्ठपिट्ठणिट्ठिता [अष्टपिष्टनिष्ठिता] जी० ३।८६०

अट्ठभाइया [अष्टभागिका] रा० ७७२

अट्ठभाग [अष्टभाग] जी० २।३६,४४

अट्ठम [अष्टम] ओ० १७४,१७६

अट्ठमभत्त [अष्टमभक्त] ओ० ३२. जी० ३।५६६

अट्ठमी [अष्टमी] ओ० १२०,१६२. रा० ६६८, ७५२,७८६. जी० ३।७२३,७२६

अट्ठया [अर्थ] ओ० २०,१३७,१३८

अट्ठविह [अष्टविध] जी० १।५,१०; २।१७; ३।६१७; ८।१,२३; ६।१६७,२०६,२२०

अट्ठसिर [अष्टशिरस्] ओ० १३

अट्ठार [अष्टादशन्] ओ० १६२

अट्ठारस [अष्टादशन्] ओ० १४८. जी० २।४८

अट्ठारसविह [अष्टादशविध] रा० ८०६,८१०

अट्ठावण्ण [अष्टपञ्चाशत्] जी० ३।६६१

अट्ठावय [अष्टापद] ओ० १४६. रा० ८०६. जी० ३।५६७

अट्ठावीस [अष्टाविंशति] ओ० १७०. रा० १८८. जी० ३।५

अट्ठावीसइविह [अष्टाविंशतिविध] जी० २।१२

अट्ठावीसतिविध [अष्टाविंशतिविध] जी० २।२१६

अट्ठावीसतिविह [अष्टाविंशतिविध] ओ० ५०

अट्ठासीत [अष्टासीति] जी० ३।८३७

अट्ठि [अस्थि] ओ० १२०. रा० ६६८,७५२, ७८६. जी० १।६५,१३५; ३।६२,१०६०

अट्ठिजुद्ध [अस्थियुद्ध] रा० ८०६

अट्ठिसुह [अस्थिसुख] ओ० ६३

अडड [अटट] जी० ३।८४१

अडतालीस [अष्टचत्वारिंशत्] जी० ३।८२७

अडयाल [अष्टचत्वारिंशत्] रा० १२६. जी० ३।३५१

अडयालीस [अष्टचत्वारिंशत्] रा० २३५. जी० ३।६८

अडयालीसअंसिय [अष्टचत्वारिंशदस्रिक] रा० २३६

अडयालीसइकोडीय [अष्टचत्वारिंशत्कोटीक] रा० २३६

अडयालीसइविग्गहिय [अष्टचत्वारिंशद्विग्रहिक] रा० २३६

अडवी [अटवी] ओ० ११६,११७. रा० ७४४,७६५

अडहत्तर [अष्टसप्तति] जी० ३।७७

अड्ढ [आढ्य] ओ० १४,१४१. रा० ६७१,६७५, ७६६. जी० ३।५६४

अड्ढ [अर्ध] जी० ३।६६२

अड्ढबावट्ठि [अर्धद्विषष्टि] जी० ३।६६३

अड्ढाइज्ज [अर्धतृतीय] रा० १२६. जी० ३।६१, २३७,२३८,२४३,३५५,६३२,६४७,६४६, ६७३,६७४,६७३,१०५३,१०५५; ५।२६

अणइक्कमणिज्ज [अनतिक्रमणीय] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,७५२,७८६

अणइक्कमणिज्जवयण [अनतिक्रमणीयवचन] ओ० ६१

अणईइ [अनीति[1]] ओ० ५,८. जी० ३।२७४

---

१. ईति रहित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणंत [अनन्त] ओ० १६,२१,५४,१५३,१६५,
१६६,१७२,१८२,१६५।८. रा० ८,२६२,८१४,
जी० १।६,६७,७३,७४,१३६; २।६३,६५,८८,
१३२; ३।४५७; ५।६,२४,२६,४१ से ५१,५६
से ५८; ८।४; ६।२३,२६,३३,६६,७१,७३,७८,
१६४,१६५,१७८,२०२,२०४,२५८

अणंतक [अनन्तक] जी० ३।४५१

अणंतखुत्तो [अनन्तकृत्वस्] जी० ३।१२७,६७५,
११२८ से ११३०

अणंतग [अनन्तक] ओ० १०८,१३१. रा० २८५

अणंतगुण [अनन्तगुण] ओ० १६५।१४.
जी० १।३५,३७,४०,१४३; २।१३४,१३६,
१३८ १४१,१४२,१४५,१४६,१४६;
३।११३८; ४।१६ से २१,२५; ५।१८,२०,२५,
२७,३१,३३,३६,५२,६०; ६।१२; ७।२१ से
२३; ८।५; ६।५ से ७,१४,१७,२०,२७ से
२६,३५,६१,६२,६६,७४,८७,६४,१००,१०८,
११२,१२०,१३०,१४०,१४७,१५५,१५८,
१६६,१६६,१८१,१८४,१६६,२०८,२२०,
२३१,२५१,२५३,२५५,२६६,२८७,२८६,
२६२,२६३

अणंतपएसिय [अनन्तप्रदेशिक] जी० १।३३

अणंतर [अनन्तर] ओ० ६४,१४१,१८२,१६२.
रा० ५० से ५५,७०,२६२,७७३,७६६.
जी० १।४३,६१,११६; ३।१२१,१५६,६६८,
८३८।२५,८८२,११२७

अणंतरसिद्ध [अनन्तरसिद्ध] जी० १।७,८

अणंतवग्ग [अनन्तवर्ग] ओ० १६५।१५

अणंतवत्तियानुपेहा [अनन्तवृत्तिता(का)नुप्रेक्षा]
ओ० ४३

अणंतसंसारिय [अनन्तसंसारिक] रा० ६२

अणगार [अनगार] ओ० २७,४५,८२,१५२,
१६४,१६६. रा० ६८६,७११,८१३.
जी० ३।१६८ से २०६

अणगारधम्म [अनगारधर्म] ओ० ७५,७६

अणगारसामाइय [अनगारसामायिक] ओ० ७६

अणगारिया [अनगारिता] ओ० २३,५२,७६,७८,
१२०,१५१. रा० ६८७,६८६,६६५,८१२

अणच्चासायणा [अनत्याशातना] ओ० ४०

अणच्चासायणाविणय [अनत्याशातनाविनय]
ओ० ४०

अणट्ठ [अनर्थ] ओ० १२०,१६०. रा० ६६८,
७५२,७८६

अणट्ठादंड [अनर्थदण्ड] ओ० १३६

अणण्हयकर [अनास्नवकर] ओ० ४०

अणत्थदंड [अनर्थदण्ड] ओ० १०४,१२७

अणत्थदंडवेरमण [अनर्थदण्डविरमण] ओ० ७७

अणवकंखमाण [अनवकांक्षत्] ओ० ११७

अणवज्ज [अनवद्य] ओ० १३७,१३८

अणवट्ठप्पारिह [अनवस्थाप्यार्ह] ओ० ३६

अणवट्ठित [अनवस्थित] जी० ३।८३८।१०

अणवट्ठिय [अनवस्थित] जी० ३।८३८।३२,८४१

अणवण्णिय [अनपन्निक] ओ० ४६

अणवयग्ग [अनवदग्र] ओ० ४६

अणवरय [अनवरत] ओ० ६८

अणसण [अनशन] ओ० ३१,३२,११७,१४०,१५४,
१५७,१६२,१६५,१६६. रा० ८१६

अणह [अनघ] ओ० ६८

अणाइ [अनादि] ओ० ४६

अणाइय [अनादिक] जी० ६।११,१३,१६,६५,
६६,८६,१६४,१७६

अणाउत्त [अनायुक्त] ओ० ४०

अणागय [अनागत] ओ० १८३,१८४,१६५

अणागार [अनाकार] ओ० १६५।११.
जी० १।३२,८७; ३।१०६,११४,१११०;
६।३६,३७

अणाढायमाण [अनाद्रियमाण] रा० ७६०,७६१

अणाढित [अनादृत] जी० ३।७००

अणाढिय [अनादृत] जी० ३।६८०,७००,७०१,
७६५

अणाढिया [अनादृता] जी० ३।७००,७०१

अणाणुपुव्वी [अनानुपूर्वी] जी० १।४८
अणादिय [अनादिक] जी० ६।२५,१३३
अणादीय [अनादिक] जी० ६।२३,३१,३४,६४, ७२,८१,११०,१७४,२०२,२०६
अणारंभ [अनारम्भ] ओ० १६३
अणारिय [अनार्य] ओ० ७१. जी० ३।६२८
अणालोइय [अनालोचित] ओ० ९५,११५,१५९
अणाहारग [अनाहारक] जी० ६।३८,५१ से ५५
अणाहारय [अनाहारक] जी० ६।४२ से ४८
अणिंद [अनिन्द्र] जी० ३।११२०
अणिंदिय [अनिन्द्रिय] जी० ६।१५ से १७,१६७, १६६,२५६,२६१,२६५,२६६
अणिक्खित्त [अनिक्षिप्त] ओ० ११६
अणिगण [अनग्न] जी० ३।५९५
अणिच्च [अनित्य] ओ० ७४
अणिच्चाणुपेहा [अनित्यानुप्रेक्षा] ओ० ४३
अणिज्जिण्ण [अनिर्जीर्ण] रा० ७५१
अणिट्ठ [अनिष्ट] रा० ७६७. जी० १।६५; ३।६२,९७,१२२,१२३,१२८,१२६
अणिट्ठतरक [अनिष्टतरक] जी० ३।८४,८५
अणिट्ठतरय [अनिष्टतरक] जी० ३।११८,११६
अणिट्ठुर [अनिष्ठुर] ओ० ४०
अणिट्ठुहय [अनिष्ठीवक] ओ० ३६
अणित्थंत्थ [अनित्थंस्थ] ओ० १६५।८, जी० १।६७,७४
अणिय [अनीक] रा० ७,४७,५६,५८,२८०. जी० ३।३५०,४४६,५५७,५६३
अणियट्टि [अनिवृत्ति] ओ० ४३
अणियाण [अनिदान] ओ० २५,१६४
अणियाहिवइ [अनीकाधिपति] रा० ७,५६,५८, २८०. जी० ३।३५०,४४६,५५७,५६३
अणियाहिवति [अनीकाधिपति] रा० ४३. जी० ३।३४४,५६१
अणिल [अनिल] ओ० २७. रा० ८१३
अणिसिट्ठ [अनिसृष्ट] ओ० १३४
अणिहुतिंदिय [अनिभृतेन्द्रिय] ओ० ४६
अणीय [अनीक] रा० ५६
अणीयाहिवइ [अनीकाधिपति] रा० ५३
अणु [अणु] जी० १।४४; ३।६६८,६६६
अणुगंतव्व [अनुगन्तव्य] जी० ३।५,१२,३५५, ७७५
√**अणुगच्छ** [अनु+गम्]—अणुगच्छइ ओ० २१, रा० ८—अणुगच्छंति जी० ३।४५५
अणुगच्छित्ता [अनुगम्य] ओ० २१. रा० ८
अणुग्घसित [अनवघर्षित] रा० १४६
√**अणुचर** [अनु+चर्]—अनुचरंति जी० ३।८३८।११
अणुचरंत [अनुचरत्] जी० ३।८३८।१०
अणुचरिय [अनुचरित] ओ० १
अणुचिण्ण [अनुचीर्ण] जी० १।१
√**अणुजाण** [अनु+ज्ञा]—अणुजाणउ रा० ६८. —अणुजाणंति रा० ७१३.—अणुजाणेज्जाह रा० ७०६
अणुताव [अनुताप] जी० ३।१२८
अणुत्त [अणुत्व] जी० ३।६६६
अणुत्तर [अनुत्तर] ओ० ७२,७६ से ८१,१५३, १६५,१६६. रा० ८१४. जी० ३।१२,७७, ११७,१०३८,१०५६,१०८४,१०८६,१०९२, ११०४,११०६ से ११११,१११३,१११८, ११२०,११२३,११२५
अणुत्तरविमाण [अनुत्तरविमान] ओ० १६०. जी० ३।१०६६,१०७०,१०७२,१०७४,१०७७ से १०८२,१०८६,१९३०
अणुत्तरोववाइय [अनुत्तरोपपातिक] जी० १।१२३; ३।१०६४,१०६७
अणुत्तरोववाइयदसाधर [अनुत्तरोपपातिकदशाधर] ओ० ४५
अणुत्तरोववातिय [अनुत्तरोपपातिक] जी० २।६३, ६६,१४८,१४६; ३।१०७६,१०९०,१०९६, १०६८,१०६६,११०६,११०८,१११४,१११६, १११८,११२५

अनुद्दवणकर [अनुद्द्रवणकर] ओ० ४०

अणुपत्त [अनुप्राप्त] ओ० ११६,११७. रा० ८०९, ८१०

अणुपदाहिण [अनुप्रदक्षिण] जी० ३।४४३

अणुपयाहिणीकरेमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वत्] रा० ४७,४८,२७७,२८३,२८६,३१३,३७६, ४३५,४६६,५५६,६१६

अणुपरियट्टित्ता [अनुपरिवर्त्य] ओ० १७०

अणुपरियट्टित्ताणं [अनुपरिवर्त्य] जी० ३।८६

√अणुपरियट्ट [अनु+परि+वृत्]—अणुपरियट्टंति जी० ३।८४२

अणुपविट्ठ [अनुप्रविष्ट] रा० ७५६,७५७,७६५, ७७४

√अणुपविस [अनु+प्र+विश्]—अणुपविसइ ओ० ५६. रा० २७७.—अणुपविसति रा० २८३. जी० ३।४४३

अणुपविसमाण [अनुप्रविशत्] रा० ७५३,७६५

अणुपविसित्ता [अनुप्रविश्य] ओ० ५६. रा० २७७. जी० ३।४४३

√अणुपाल [अनु+पालय्]—अणुपालेंति ३।२१८

अणुपालेत्ता [अनुपाल्य] ओ० १६२. जी० ३।६३०

अणुपालेमाण [अनुपालयत्] ओ० १२०. रा० ६६८,७५२,७८९

अणुपुव्व [अनुपूर्व] ओ० ५,८,१६,११६,११७, १६८. रा० ८०३. जी० ३।११८,११६,२७४, ५६६,५६७

अणुप्पण्ण [अनुत्पन्न] ओ० १६६

अणुप्पत्त [अनुप्राप्त] रा० ७६५,७७४

अणुप्पदाहिणीकरेमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वत्] जी० ३।४५२

अणुप्पयाहिण [अनुप्रदक्षिण] जी० ३।४४५

अणुप्पयाहिणीकरेमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वत्] जी० ३।४४६,४५४,४५७,४७८,५२३,५२६, ५३७,५४४,५५१,५५६

अणुप्पविट्ठ [अनुप्रविष्ट] रा० १२२,१२३

√अणुप्पविस [अनु+प्र+विश्]—अणुप्पविसति रा० ७५५. जी० ३।४४३

अणुप्पविसमाण [अनुप्रविशत्] जी० ३।१११

अणुप्पविसित्ता [अनुप्रविश्य] रा० ७५५. जी० ३।४४३

अणुप्पविसित्ताणं [अनुप्रविश्य] रा० १२३

√अणुप्पेह [अनु+प्र+ईक्ष्]—अणुप्पेहंति ओ० ४५

अणुप्पेहा [अनुप्रेक्षा] ओ० ४२,४३

अणुबद्ध [अनुबद्ध] जी० ३।११६,१२६

अणुब्भड [अनुद्भट] जी० ३।५९७

अणुभाव [अनुभाव] जी० ३।१२६।६;८३८।१६

अणुमय [अनुमत] ओ० ११७. रा० ७५० से ७५३,७९६. जी० १।१;३।५९७

अणुयत्तेमाण [अनुवर्तमान] रा० १६

अणुरत्त [अनुरक्त] ओ० १५. रा० ६७२

अणुराग [अनुराग] ओ० ६६,१२०,१६२. रा० ६६८,७५२,७८९

√अणुलिंप [अनु+लिम्प्]—अणुलिंपइ रा० २६१. जी० ३।४५७.—अणुलिंपति रा० २८५. जी० ३।४५१

अणुलिंपइत्ता [अनुलिप्य] रा० २६१

अणुलिंपित्तए [अनुलेप्तुम्] ओ० ११०,१३३

अणुलिंपित्ता [अनुलिप्त] रा० २८५. जी० ३।४५१

अणुलित्त [अनुलिप्त] ओ० ४७,६३

अणुलिहंत [अनुलिहत्] ओ० ६४. रा० ५०,५२, ५६,१३७,२३१,२४७. जी० ३।३०७,३६३

अणुलेवण [अनुलेपन] ओ० ४७,७२

अणुवएस [अनुपदेश] रा० ७६५

अणुवत्तेमाण [अनुवर्तमान] रा० १६

अणुवाय [अनुवात] रा० ३०. जी० ३।२८३

अणुवाहणग [अनुपानत्क] रा० ८१६

अणुविद्ध [अनुविद्ध] रा० २६२. जी० ३।४५७

अणुवीइ [अनुवीचि] जी० १।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुवेलंधर [अनुवेलन्धर] जी० ३।७४७ से ७५०
अणुव्वय [अणुव्रत] ओ० ७७
√अणुसज्ज [अनु+सञ्ज्]—अणुसज्जंति
अणोवमा (दे) खाद्यविशेष
अणुसज्जणा [अनुसज्जना] जी० ३।२१८,६३१
अणुसार [अनुसार] जी० ३।७७
√अणुहो [अनु+भू]—अणुहोंति ओ० १६५।२१
अणूण [अनून] जी० ३।८३८।२७
अणेग [अनेक] ओ० १,५ से ८,१०,१६,४६,६३, ७१,१६५. रा० ७,१७,१८,२४,३२,५२,५६, ६१,६६,१७४,२०६,२११,२३१,२४७,७५४, ७५६,७६२,७६४. जी० ३।११८,११६,२५६, २७४ से २७७,२८६,३७२,३७४,३६३,५८१, ५८५ से ५६६,६३६,६४६,६७३,६७४,७५६, ८८४,८८८
अणेगजीव [अनेकजीव] जी० १।७१
अणेगवासपरियाय [अनेकवर्षपर्याय] ओ० २३
अणेगविध [अनेकविध] जी० ३।१०३
अणेगविह [अनेकविध] ओ० ३२ से ३६. जी० १।६,६५,७१ से ७३,७८,८१,८४,८८, ८६,१०७,१०८,११२,११४,११५; ३।६
अणेगसिद्ध [अनेकसिद्ध] जी० १।८
अणोगाढ [अनवगाढ] जी० १।४२
अणोग्घसिय [अनवघर्षित] जी० ३।३२२
अणोवम [अनुपम] ओ० १६५।१७,२२.
अणोवमा [दे०] खाद्यविशेष जी० ३।६०१
अणोवाहणग [अनुपानत्क] ओ० १५४,१६५,१६६
अण्ण [अन्य] ओ० १७,२३,५२,७६ से ८१. रा० ४०,५६,५८,१३२,१८५,२०५ से २०८, २४०,२७६,२८०,२८२,२८६,२६१,६५७, ६८७,६८८,७०४,७४८ से ७६४,७७१ से ७७३,८०३,८०४. जी० १।५०,६५,७१ से ७३,७८,८१,८४,८८,१००,१०३,१११,११२, ११४ से ११६,११८,१२१; ३।२६७,३०२, ३१३,३५०,३५१,३६८ से ३७१,३८८,३६०, ४०२,४४२,४४६,४४८,४५५,४५७,५५७, ५६३,५६६,६३७,६३८,६५२,६५८ से ६६०, ६६५,६६६,६७६,७१०,७१३,७२१,७३६, ७४७,७६०,७६१,७६३ से ७६६,७६८,७७० से ७७४,८००,८१४,८४३,८४६,६१७,१०२५
अण्ण [अन्न] ओ० १४६,१५०. रा० ८१०,८११
अण्णउत्थिय [अन्ययूथिक] ओ० १३६. जी० ३।२१०,२११
अण्णगिलायय [अन्नग्लायक] ओ० ३४
अण्णजीविय [अन्यजीविक] रा० ७३३,७३४,७३६
अण्णत्त [अन्यत्व] रा० ७६२,७६३
अण्णत्थ [अन्यत्र] ओ० ८६. जी० ३।७२१
अण्णमण्ण [अन्योन्य] ओ० ५२,११७,११८. रा० १६,४०,१३२,१३३,६८७,७१३,७७४. जी० ३।२२,२७,११०,१११,२६५,३०३,६२०, ६२५,८४५
अण्णयर [अन्यतर] ओ० २८,७२,८६ से ६३, १०५,१०६,१२८,१२६,१८६. रा० ७५० से ७५३,७६६. जी० १।३३; ३।२३६
अण्णया [अन्यदा] ओ० ११६. रा० ६८०
अण्णलिंगसिद्ध [अन्यलिङ्गसिद्ध] जी० १।८
अण्णविहि [अन्नविधि] ओ० १४६
अण्णाण [अज्ञान] ओ० ४६. जी० १।१०१,१२८; ३ १५२
अण्णाणदोस [अज्ञानदोष] ओ० ४३
अण्णाणि [अज्ञानिन्] जी० १।३०,८७,६६,११६, १३३,१३६; ३।१०४,१५२,११०७,११०८; ६।३०,३२,३५,१४३,१५६,१६४ से १६६
अण्णाणिय [अज्ञानिक] जी० ६।३४
अण्णायचरय [अज्ञातचरक] ओ० ३४
अण्णोण्ण [अन्योन्य] ओ० १६५।६
√अण्ह [आ+स्नु]—अण्हाइ ओ० ८४
अण्हयकर (आस्नवकर] ओ० ४०
अण्हाणग [अस्नानक] ओ० ८६,६२. रा० ८१६
अण्हाणय [अस्नानक] ओ० १५४,१६५,१६६
अति [अयि] रा० १२१,६६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**अतिक्कम** [अति+क्रम्]—अतिक्कमइ जी० ३.८३८।१९
अतित्थगरसिद्ध [अतीर्थंकरसिद्ध] जी० १।८
अतित्थसिद्ध [अतीर्थसिद्ध] जी० १।८
अतिदूर [अतिदूर] रा० ६०,६९२,७१६
अतिमट्टिय [अतिमृत्तिक] रा० १२,२८१. जी० ३।४४७
अतिमुत्तग [लया] [अतिमुक्तकलता] जी० ३।२६८
अतिमुत्तमंडवग [अतिमुक्तमण्डपक] जी० ३।२९६
अतिमुत्तलयामंडवग [अतिमुक्तलतामण्डपक] रा० १८४
अतिमुत्तलयामंडवय [अतिमुक्तलतामण्डपक] रा० १८५
अतिरस [अतिरस] जी० ३।५९२
अतिरेग [अतिरेक] रा० २८५. जी० ३।४५१, ५९७,७२३,७३०,७३२
√**अतिवय** [अति+व्रज्]—अतिवयंति जी० ३।१२९
अतिहिसंविभाग [अतिथिसंविभाग] ओ० ७७
अतीत [अतीत] ओ० १६८
अतीव [अतीव] रा० ४०,१३५,२३६. जी० ३।२६५,३०२,३०३,३०५,३१३,३९८, ५८१,५९६
अतुरिय [अत्वरित] रा० १२
अतुल [अतुल] ओ० १९५।२२
अत्तगवेसणया [आर्तगवेषणता] ओ० ४०
अत्तय [आत्मज] रा० ६७३
अत्तुक्कोसिय [आत्मोत्कर्षिक] ओ० १५९
अत्थ [अर्थ] ओ० ३७. रा० १५,२९२,७३७, ७७४. जी० ३।२५०,४५७
अत्थ [अस्त] जी० ३।१७६,१७८,१८०,१८२
अत्थओ [अर्थतस्] ओ० ४६. रा० ८०६,८०७
अत्थणिउर [अर्थनिकुर] जी० ६।८४१
अत्थत्थिय [अर्थार्थिक] ओ० ६८
अत्थमणत्थमणपविभत्ति [अस्तमनास्तमनप्रविभक्ति] रा० ८९
अत्थरग [आस्तरक] रा० ३७. जी० ३।३११
अत्थसत्थ [अर्थशास्त्र] रा० ६७५
अत्थि [अर्थिन्] रा० ७७४
अत्थि [अस्ति] ओ० ७१. जी० ३।२२
अत्थिभाव [अस्तिभाव] ओ० ७१
अत्थिय [अस्थिक] जी० १।७२
अदंतमणग [दे० अदन्तधावनक] रा० ८१६
अदंतवणय [दे० अदन्तधावनक] ओ० १५४, १६५,१६६
अदक्ख [अदक्ष] रा० ७५८,७५९
अदत्तादाण [अदत्तादान] ओ० ७१,७६,७७
अदत्तादाणवेरमण [अदत्तादानविरमण] ओ० ७१
अदिट्ठलाभिय [अदृष्टलाभिक] ओ० ३४
अदिण्ण [अदत्त] ओ० १११ से ११३,११७,१२७, १२८
अदिण्णादाण [अदत्तादान] ओ० ११७,१२१,१६१, १६३. रा० ६९३,७१७,७९६
अदुत्तरं [दे०] जी० ३।२३९
अदुवा [दे०] जी० ३।१२७
अदूरसामंत [अदूरसामन्त] ओ० ५२,६९,७०,८२. रा० १२३,६८७,६९२,७१६,७३१,७३६, ७४८,७७१
अद्द [आर्द्र] ओ० ४७
अद्दारिट्ठ [आर्द्रारिष्ट] रा० २५. जी० ३।२७८
अद्ध [अर्ध] ओ० १७०. रा० ४०,१२८,१४९, १८८,१८९,२०५ से २०८,२२७,२३१,२४७, ६६८,६६९,६८३,७०६,७११,७७२. जी० २।३८,३९,४१,४२; ३।८२,१०७,२३८, २४७,२५०,२५६,२६०,२६२,२६३,३००, ३१०,३१३,३५२ से ३५४,३५९,३६१ से ३६४,३६८ से ३७१,३७७,३८३,३८६,३९२, ३९३,४०१,४०४,४०६,४०८,४२२,४२७, ५६६,५६८ से ५७०,५९४,५९६,६३४,६४२,

६४४,६४६,६५२,६५३,६५५,६७२ से ६७४, ६७६,६८३,६८५,७०६,७०८,७११,७२७, ७३२,७३७,७५६,७५८,८००,८१४,८२५, ८५१,९३६,९४४,१०१२ से १०१४,१०२८, १०३०,१०३२,१०३३,१०७४,११२४
अद्धकविट्ठ [अर्धकपित्थ] जी० ३।१००८
अद्धकविट्ठक [अर्धकपित्थक] जी० ३।२५७
अद्धकाय [अर्धकाय] जी० ३।३२२
अद्धचंद [अर्धचन्द्र] रा० १२४,१३०,१३७. जी० ३।३००,३०७,५७७
अद्धच्छि [अर्धाक्षि] रा० १३३. जी० ३।३०३
अद्धछट्ठ [अर्धषष्ठ] जी० ३।४३
अद्धट्ठम [अर्धाष्टम] ओ० १४३. रा० ८०१. जी० ३।३९३,४०१,६३२
अद्धट्ठारस [अर्धाष्टादशन्] जी० ३।१०५२
अद्धणवम [अर्धनवम] जी० ३।१०४९
अद्धतेरस [अर्धत्रयोदशन्] ओ० ५४. रा० १२६, १७०. जी० ३।१६६,३५२,३७२,३७४,३७६, ३९५,४१२,४२५,९६८
अद्धनवम [अर्धनवम] जी० ३।१०४९
अद्धनाराय [अर्धनाराच] जी० १।११६
अद्धपंचम [अर्धपञ्चम] जी० २।३६; ३।४२,४७, २४२,४०२,१०४६,१०४७
अद्धमागह [अर्धमागध] जी० ३।५९४
अद्धमागहा [अर्धमागधी] ओ० ७१ रा० ६१
अद्धमास [अर्धमास] जी० ३।११८, १२९
अद्धमासपरियाय [अर्धमासपर्याय] ओ० २३
अद्धमासिय [अर्धमासिक] ओ० ३२
अद्धसेलसुट्ठिय [अर्धशैलसुस्थित] जी० ३।५९४
अद्धसोलस [अर्धषोडशन्] जी० ३।३६८, ३६९, १०५१
अद्धाहार [अर्धहार] ओ० ५२,६३,१०८,१३१ रा० ४०,१३२,२८५,६८७, से ६८९. जी० ३।२९५,३०२,४५१,५९३
अद्धा [अद्धा, अध्वन्] ओ० ११६,११७,१८२ से १८४,१९५।१४,१५,२२. रा० ७६५,७७४
अद्धाउय [अध्वायुष्क] जी० ३।२१४
अद्धाढय [अर्धाढक] ओ० ११२,१३७
अद्धाण [अध्वन्] ओ० ९९,१२२
अद्धासमय [अध्वसमय] जी० १।४
अद्धुट्ठ [दे०] जी० ३।१०७,२३७,२४२,२४३
अद्धुव [अध्रुव] ओ० २३
अद्धेकूणणउति [अर्धैकोननवति] जी० ३।७५४
अद्धेकोणणउइ [अर्धैकोननवति] जी० ३।७६२
अद्धेकोणणवति [अर्धैकोननवति] जी० ३।७६८
अधण्ण [अधन्य] रा० ७७४
अधम्म [अधर्म] रा० ६७१
अधम्मकेउ [अधर्मकेतु] रा० ६७१
अधम्मक्खाइ [अधर्माख्याति] रा० ६७१
अधम्मत्थिकाय [अधर्मास्तिकाय] रा० ७७१. जी० १।४
अधम्मपलज्जण [अधर्मप्ररञ्जन] रा० ६७१
अधम्मपलोइ [अधर्मप्रलोकिन्] रा० ६७१
अधम्मसीलसमुयाचार [अधर्मशीलसमुदाचार] रा० ६७१
अधम्माणुय [अधर्मानुग] रा० ६७१
अधम्मिय [आधर्मिक] रा० ६७१,७१८,७५०,७५१
अधम्मिट्ठ [अधर्मिष्ठ] रा ६७१
अधर [अधर] जी० ३।५९७
अधिय [अधिक] जी० ३।३८७,८७८
अधे [अधस्] जी० ३।११११
अधेसत्तमा [अधःसप्तमी] जी० २।१००,१०८, १२७,१३८,१४९; ३।२१,३८,४४,४६,४७, ५० से ५२,५४ से ५६,५८,५९,८३ से ८६,८८ से ९०,९२,९६,१०२,१०४,१०७,१०९,११६, १२०,१२३,१२६
अधेसत्तमी [अधःसप्तमी] जी० ३।१६६
अन्न [अन्य] रा० ७
अन्नविहि [अन्नविधि] रा० ८०६
अपंडिय [अपण्डित] रा० ७३२,७३७,७६५
अपच्छिम [अपश्चिम] ओ० ७७

अपज्जत्त [अपर्याप्त] रा० ७५६. जी० १।५१,६३, ६५,१०१; ३।१२६।६,१३३,१३४; ४।२५; ५।१७,२४,२६ से ३०,३३,३५,३६,३६ ४०, ४२,४५,४८,५०,५२,५४ से ६०

अपज्जत्तग [अपर्याप्तक] ओ० १८२. जी० १।१४, ५८,६७,७३,७८,८१,८४,८८,८६,६२,१००, १०३,१११,११२,११६,११८,१२१,१२६,१३५; ३।१३६,१३६,१४०,१४६; ४।२,५,१८,२०, २२,२३,२५; ५।३,४,७,११,१८ से २२,२५ से २७,३१ से ३४,३६; ६।६०,६३,६४

अपज्जत्तय [अपर्याप्तक] जी० १।५५,१०१; ४।१०

अपज्जत्ति [अपर्याप्ति] जी० १।२७,८६,६६,१०१, ११६,१२८,१३३,१३६

अपज्जवसित [अपर्यवसित] जी० ६।२३,२४,६६, ८१,८२,६२,१०४,१२५,१७५,१६२,२०१,२४०

अपज्जवसिय [अपर्यवसित] ओ० १८३,१८४,१६५. जी० ६।१० से १३,१६,२५,२६,३१,३३,३४, ४५,५४,५८,६०,६५,६८,७१,७२,८६,६८, ११०,११६,१३३,१३५,१४५,१६३,१६४,१७४, १७६,१८०,१६५,२०२,२०५,२०६,२१५,२१६, २२७,२३०,२४६,२६१,२६५,२७६,२८५

अपडिकूलमाण [अप्रतिकूलयत्] ओ० ६६

अपडिक्कंत [अप्रतिक्रान्त] ओ ६५,१५५,१५६

अपडिबद्ध [अप्रतिबद्ध] ओ० ७४।४

अपडिविरय [अप्रतिविरत] ओ० १६१

अपढम [अप्रथम] जी० १।६; ७।१,३,५,१०,१२, १४,१६,१८,२१ से २३; ६।१ से ७,२३२, २३४,२३६,२३८, २४२,२४४,२४६ २४८, २५१ से २५३ २५५,२६७,२६६,२७१,२७३, २७६ २७८,२८०,२८२,२८५,२८७ से २६३

अपतिट्ठाण [अप्रतिष्ठान] जी० ३।१२

अपत्तट्ठ [अप्राप्तार्थ] रा० ७५८,७५६

अपद [अपद] जी० ३।१६६

अपराइत [अपराजित] जी० ३।६४१

अपराइय [अपराजित] जी० ३।५६६

अपराजित [अपराजित] जी० ३।१८१,२६६,७०७, ७१३,८२४

अपराजिय [अपराजित] ओ० १६२.जी० ३।७६६, ८१३

अपराजिया [अपराजिता] जी० ३ ६१६, १०२६

अपरिग्गह [अपरिग्रह] ओ० १६३

अपरितावणकर [अपरितापनकर] ओ० ४०

अपरित्त [अपरीत] जी० १।६७,७४; ६।७५,७६, ८७

अपरिपूय [अपरिपूत] ओ० १११ से ११३,१३७, १३८

अपरिभूय [अपरिभूत] ओ० १४१. रा० ६७५, ७६६

अपरिमिय [अपरिमित] ओ० ४६,७१. रा० ६१

अपरियाइत्ता [अपर्यादाय] जी० ३।६६०

अपरियाविय [अपरितापित] जी० ३।६३०

अपरिवार [अपरिवार] रा० २०७,२६५,२६७, २६६. जी० ३।४२८,४३१,४३४

अपरिसेसिय [अपरिशेषित] जी० ३।७५१

अपलिक्खीण [अपरिक्षीण] ओ १७१

अपवरक [अपवरक] जी० ३।५६४

अपसत्थकायविणय [अप्रशस्तकायविनय] ओ० ४०

अपसत्थमणविणय [अप्रशस्तमनोविनय] ओ० ४०

अपसत्थवइविणय [अप्रशस्तवाक्‌विनय] ओ० ४०

अपस्समाण [अपश्यत्] ओ० ११७

अपासमाण [अपश्यत्] रा० ७६५

अपि [अपि] ओ० २३. रा० १६. जी० १।३४

अपुट्ठ [अस्पृष्ट] जी० १।४१

अपुट्ठलाभिय [अपृष्टलाभिक] ओ० ३४

अपुणरावत्तग [अपुनरावर्तक] ओ० १६,२१,५४

अपुणरावत्तय [अपुनरावर्तक] रा० ८

अपुणरावित्ति [अपुनरावृत्ति, अपुनरावर्तिन्] रा० २६२. जी० ३।४५७

अपुणरुत्त [अपुनरुक्त] रा० २६२, जी० ३।४५७

अपुण्ण [अपूर्ण] रा० ७६३

अपुण्ण [अपुण्य] रा० ७७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपुरोपुहय [अपुरोहित] जी० ३।११२०
अपुव्व [अपूर्व] जी० १।५०
अपूह[1] [अपोह] ओ० ११६,१५६
अपेज्ज [अपेय] जी० ३।७२१
अप्प [अल्प] ओ० २०,५३,६१ से ६३. रा० १२, ६८५,६६२,७००,७१६,७२६,७५३,७५८, ७५६,७७२,७७४,८०२. जी० १।१४३; २।६८ से ७२,७५,६६,१३४ से १३८,१४१ से १४६; ३।११८,६६५,१०३७,११३८; ४।१६,२२, २५; ५।१६,२०,२६,२७,३२ से ३६,५२, ५६,६०; ७।२०,२२,२३; ६।७,१४,५५, २५० से २५३,२५५ २८६ से २६३
अप्प [आत्मन्] ओ० २१ से २६,४५,५२,७१,८२, ८६,६४,६८,१२०,१४०,१५४,१५५,१५७, १६०. रा० ८,६,२८५,६८६,६८७,६८६,६६८, ७११,७१३,७१६,७५२,७५३,७८७,७८६, ८१४,८१६,८१७. जी० ३।५६६,६४४
अप्पकंप [अप्रकम्प] ओ० २७. रा० ८१३
अप्पकम्मतराय [अल्पकर्मतरक] रा० ७७२
अप्पकिरियतराय [अल्पक्रियातरक] रा० ७७२
अप्पकोह [अल्पक्रोध] ओ० ३३
अप्पगति [अल्पगति] जी० ३।११२०
अप्पज्जुइतराय [अल्पद्युतितरक] रा० ७७२
अप्पझंझ [अल्पझञ्झ] ओ० ३३
अप्पडिकम्म [अप्रतिकर्मन्] ओ० ३२
अप्पडिबद्ध [अप्रतिबद्ध] ओ० २६
अप्पडिलेस [अप्रतिलेश्य] ओ० २५
अप्पडिलोमया [अप्रतिलोमता] ओ० ४०
अप्पडिवाइ [अप्रतिपातिन्] ओ० ४३
अप्पडिहय [अप्रतिहत] ओ० १६,२१,२७,५४,८४, ८५,८७,८८,रा० ८,२६२,७५५,७५७,८१३. जी० ३।४५७
अप्पणया [आत्मन्] जी० १,५०,६६
अप्पतर [अल्पतर] ओ० ८६

१. वृत्तौ—वूह [व्यूह] इति व्याख्यातमस्ति ।

अप्पतराय [अल्पतरक] रा० ७७२
अप्पतिट्ठाण [अप्रतिष्ठान] जी० ३।१११७
अप्पवुस्समाण [अप्रद्विषत्] रा० ७६६
अप्पनीसासतराय [अल्पनिःश्वासतरक] रा० ७७२
अप्पनीहारतराय [अल्पनीहारतरक] रा० ७७२
अप्पपरिग्गह [अल्पपरिग्रह] ओ० ६१ से ६३, १६१,१६३
अप्पबहु [अल्पबहु] जी० २।१५१; ४।२५
अप्पबहुय [अल्पबहुक] जी० ६।६
अप्पमत्त [अप्रमत्त] ओ० २७ रा० ८१३
अप्पमहतराय [अल्पमहत्तरक] रा० ७७२
अप्पमाण [अल्पमान] ओ० ३३
अप्पमाय [अल्पमाय] ओ० ३३
अप्पलोह [अल्पलोभ] ओ० ३३
अप्पसद्द [अल्पशब्द] ओ० ३३
अप्पाण [आत्मन्] जी० ३।१६८ से २०६,४५१
अप्पाबहु [अल्पबहु] जी० ४।२२; ७।२१; ६।३७
अप्पाबहुग [अल्पबहुक] जी० ५।२५,७।२०; ८।५; ६।२७
अप्पाबहुय [अल्पबहुक] जी० २।१४,५।१८,३१; ६।१२,६।१७,२०,३५,६१,६६,७४,८७,६४, १००,१०८,११२,१२०,१३०,१४०,१४७, १५५,१५८,१६६,१६६,१८१,१८४,१६६, २०८,२२०,२३१ २५४,२६६.
अप्पारंभ [अल्पारम्भ] ओ० ६१ से ६३,१६१,१६३
अप्पासवतराय [अल्पाश्रवतरक] रा० ७७२
अप्पाहार [अल्पाहार] ओ० ३३
अप्पाहारतराय [अल्पाहारतरक] रा० ७७२
अप्पिच्छ [अल्पेच्छ] ओ० ६१ से ६३ जी० ३।५६८
अप्पिड्डितराय [अल्पर्धितरक] रा० ७७२
अप्पिड्डिय [अल्पर्धिक] जी० ३।१०२१
अप्पिय [अप्रिय] रा० ७६७ जी० १।६५; ३।६२
अप्पियतरक [अप्रियतरक] जी० ३।८४
अप्पुस्सासतराय [अल्पोच्छ्वासतरक] रा. ७७२
अप्पुस्सुय [अल्पौत्सुक्य] ओ० १६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पेस [अप्रेष्य] जी० ३।११२०

अप्पोसुय [अल्पौत्सुक्य] ओ० २५

√अप्फाल [आ+स्फाल्]—अप्फालेइ ओ० ५९

अप्फालिज्जमाण [आस्फाल्यमान] रा० ७७

अप्फालेत्ता [आस्फाल्य] ओ० ५९

अप्फुडिय [अस्फुटित] ओ० १९ जी० ३।५९६

√अप्फोड [आ+स्फोटय्]—अप्फोडेंति रा० २८१ जी० ३।४४७

अप्फोतामंडवग [दे० अप्फोयामण्डपक] जी० ३।२९६

अप्फोयामंडवग [दे० अप्फोयामण्डपक] जी० १८४

अप्फोयामंडवय [दे० अप्फोयामण्डपक] रा० १८५

अफरुस [अपरुष] ओ० ४०

अफुसमाणगइ [अस्पृशद्गति] ओ० १८२

अबद्धिय [अबद्धिक] ओ० १६०

अबहिल्लेस [अबहिर्लेश्य] ओ० २५, १६४

अबहुप्पसण्ण [अबहुप्रसन्न] ओ० १११ से ११३, १३७, १३८

अबाधा [अबाधा] जी० २।१३९; ३।३३ से ३६, ६० से ६३, ६५, ६६, ६८, से ७२, ३००, ५६६,५७०,६६२,६६१,७१४,८२७,१०२२

अबाहा [अबाधा] ओ० १९२. रा० १७०. जी० २।७३, ९७; ३।६६, ३५८, ५६९, ६३९, ७१४, ८०२, ८१५, ८२७, ८५२, १००१ से १००६, १०२२

अबाहूणिया [अबाधोनिका] जी० २।७३, ९७, १३९

अब्भ [अभ्र] ओ० १९. जी० ३।५९७, ६२६

अब्भंतर [अभ्यन्तर] ओ० १७०. जी० ३।८३८।१२

अब्भंतरय [अभ्यन्तरक] जी० ३।८६, २६०. ६८१

अब्भक्खाण [अभ्याख्यान] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३. रा० ७९६

अब्भक्खाणविवेग [अभ्याख्यानविवेक] ओ० ७१

अब्भणुण्णाय [अभ्युनुज्ञात] रा० ११, ५९

अब्भरुक्ख [अभ्ररुक्ष] जी० ३ ६२६

अब्भवद्दलय [अभ्रवार्दलक] रा० १२, १२३

अब्भहिय [अभ्यधिक] ओ० ६५,९४,९५. जी० २।३९.४१,४८,४९,५३ से ५५,५७ से ६१,६६,८३,८४,१२९; ३।१०२७ से १०३०, ११३५; ४।१६; ५।१०,२९; ६।९; ७।१२, १३; ९।४,१७२,१७६,१८६ से १९१,१९३, २०३,२१२,२२५,२२८,२३८,२४१,२७३,२७७

अब्भासवत्तिय [अभ्यासवर्तित] ओ० ४०

अब्भिंग [अभ्यङ्ग] ओ० ६३

अब्भिंगण [अभ्यङ्गन] ओ० ६३

अब्भिंगिय [अभ्यञ्जित] ओ० ६३

अब्भिंतर [आभ्यन्तर] ओ० ६,३०,५५,६० से ६२. रा० ४३. जी० ३।२३९,२५५,२७५,४४७, ६४३,६५८,७६६,७६७,७७५,८३१ से ८३४, १०५५

अब्भिंतरय [आभ्यन्तरक] ओ० ३०,३८,४४. जी० ३।६५८

अब्भिंतरिय [आभ्यन्तरिक] रा० ६६०,६८३. जी० ३।२३५ से २३९,२४१ से २४३,२४६, २४७,२४९,२५० २५४ से २५६, २५८, ३४१, ५६०,७३३,१०४० से १०४२,१०४४,१०४६, १०४७,१०४९,१०५३,१०५५

अब्भिंतरिल्ल [आभ्यन्तरिक] जी० ३।१००७

√अब्भुक्ख [अभि+उक्ष्]—अब्भुक्खइ जी० ३।४७०—अब्भुक्खति जी० ३।४५८—अब्भुक्खेइ रा० २९३—अब्भुक्खेति जी० ३।४६०

अब्भुक्खित्ता [अभ्युक्ष्य] जी० ३।४५८

अब्भुक्खेत्ता [अभ्युक्ष्य] रा० २९३. जी० ३।४६०

अब्भुग्गत [अभ्युद्गत] जी० ३।३०२,३५९,३६८, ३७०,६३४,१००८

अब्भुग्गय [अभ्युद्गत] ओ० ६७. रा० ३२,१३२, १३७,१८६,२०४ से २०६,२०८. जी० ३।३०७ ३५५,३६४,३६९,३७१,३७२,५९७,६७३

√अब्भुट्ठ [अभि+उत्+स्था]—अब्भुट्ठेइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओ० २१. रा० ८. जी० ३।४४३—अब्भुट्ठेति रा० २७७ जी० ३।४५४ अब्भुट्ठेमि. रा० ६६५

अब्भुट्ठाण [अभ्युत्थान] ओ० ४०

अब्भुट्ठिय [अभ्युत्थित] ओ० २६

अब्भुट्ठेत्ता [अभ्युत्थाय] ओ० २१. रा० ८. जी० ३।४४३ ।

अब्भुण्णय [अभ्युन्नत] रा० १३३. जी० ३।३०३, ५६७

अब्भुय [अद्भुत] रा० ७८

अभयदय [अभयदय] ओ० १६,२१,५४. रा० ८,२९२. जी० ३।४५७

अभवसिद्धिय [अभवसिद्धिक] रा० ६२. जी० ९।१०६ से ११२

अभासग [अभाषक] जी० ९।५६,६०,६१

अभासय [अभाषक] जी० ९।५८

अभिइ [अभिजित्] जी० ३।८३८।३२,१००७

अभिक्खणं [अभीक्ष्णम्] रा० १७३. जी० ३ २८५

अभिक्खलाभिय [अभिक्षालाभिक] ओ० ३४

√**अभिगच्छ** [अभि+गम्]—अभिगच्छइ ओ० ६९. रा० ७१९—अभिगच्छंति ओ० ७०.—अभिगच्छामो रा० ७३५

अभिगच्छणया [अभिगमन] ओ० ४०

अभिगम [अभिगम] ओ० ६९, ७०. रा० ७७८

अभिगमण [अभिगमन] ओ० ५२. रा० ९,१२, ४७,६८७. जी० ३।८४१

अभिगमणिज्ज [अभिगमनीय] रा० ७०३,७३५

अभिगय [अभिगत] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८, ७५२, ७८९

अभिगिज्झ [अभिगृह्य] जी० ३।५६२

अभिघट्टिज्जमाण [अभिघट्यमान] रा० १७३. जी० ३।२८५

अभिणंदंत [अभिनन्दत्] ओ० ६८

अभिणंदिज्जमाण [अभिनन्द्यमान] ओ० ६९

अभिणय [अभिनय] रा० ११७,२८१. जी० ३।४४७

अभिणिवट्टित्ताणं [अभिनिर्वर्त्य] रा० ७७०

अभिणिसिट्ठ [अभिनिसृष्ट] रा० १३२ जी० ३।३०२

√**अभिणिस्सव** [अभि+निर्+स्रु] —अभिणिस्सवंति, रा० १७३. जी० ३।२८३

√**अभिणी** [अभि+नी]—अभिणयंति रा० २८१. जी० ३।४४७—अभिणिज्जइ रा० ७८३—अभिणेंति रा० ११७

अभित्थुणंत [अभिष्टुवत्] ओ० ६८

अभिथुव्वमाण [अभिष्टूयमान] ओ० ६९

अभिदुदुय [अभिद्रुत] जी० ३।१२९.७

√**अभिनिस्सव** [अभि+निर्+स्रु]—अभिनिस्सवंति रा० ३०

अभिमुह [अभिमुख] ओ० ४७,५२,६९,७०,८३. रा० ६०,६८७,६९२,७१४,७१६

अभिराम [अभिराम] ओ० २,५५,५७,६३. रा० ९,१२,१७,१८,२०,३२,३७,५२,५६,१२९, १३२,२३१,२३६,२४७,२८६. जी० ३।२८८, ३००,३०२,३११,३७२,३९३,३९८,४४७, ५८९

अभिरूव [अभिरूप] ओ० १,७,८,१० से १३,१५, ७२,१९४. रा० १,१९ से २३,३२,३४,३६ से ३८, १२४,१३०,१३३,१३६,१३७,१४५,१५७, १७४,१७५,२२८,२३१,२३३,२४५,२४७,२४९, ६६८,६७०,६७२,६७६,७००,७०२. जी० ३।२३२,२६१,२६६,२६९,२७६,२८६ से २८८,२९०,३३०,३०३,३०६,३०७,३११, ३८७,३९३,४०७,४१०,५८१,५८४,५८५, ५९६,५९७,६३९,६७२,८५७,८६३,११२१, ११२२

√**अभिलस** [अभि+लष्]—अभिलसइ रा० ७१३ —अभिलसंति ओ० २०. रा० ७१३

अभिलाव [अभिलाप] जी० ३।४,५,१२,४१,४३, ४४,७७,८८,१२५,२२६,४५१

अभिवंदए [अभिवन्दितुम्] ओ० ५५. रा० १३

अभिवंदया [अभिवन्दितुम्] ओ० ६२

अभिसमण्णागय [अभिसमन्वागत] रा० ६३,६५,
६६७,७९७

√अभिसमागच्छ [अभि+सं+आ+गम्]
—अभिसमागच्छइ रा० ७१६.
—अभिसमागच्छति रा० ७५३

√अभिसिंच [अभि+सिच्]—अभिसिंचति रा०
२८०. जी० ३।४४६

अभिसिंचित्ता [अभिषिच्य] रा० २८२. जी०
३।४४८

अभिसित्त [अभिषिक्त] रा० २८३. जी० ३।४४९

अभिसेक [अभिषेक] जी० ३ ४३६

अभिसेगसभा [अभिषेकसभा] रा० २६५,२६७

अभिसेय [अभिषेक] ओ० ९८. रा० २६६,४७५.
जी० ३।४४७,५३४,५९७

अभिसेयसभा [अभिषेकसभा] रा० २७७,२७९,
२८३,४७४,४७६,४७७,४९६,५१४,५१५.
जी० ३।४२६,४३०,४३१,४३४,४४३,४४५,
४४९,५५३,५३५ से ५३९

अभिहड [अभिहृत] ओ० १३४

अभिहणमाण [अभिघ्नत्] जी० ३।११०

अभिहय [अभिहत] जी० ३।११८,११९

अभूओवघाइय [अभूतोपघातिक] ओ० ४०

अभेत्ता [अभित्वा] जी० ३।९९०

अभेयकर [अभेदकर] ओ० ४०

अमच्च [अमात्य] ओ० १८. रा० ७५४,७५६,
७६२,७६४

अमच्छरियया [अमत्सरिकता] ओ० ७३

अमणाम [दे० अमन 'आप'] रा० ७६७. जी०
१।९५; ३ ९२,१२२,१२३, १२८

अमणामतरक [दे० अमन 'आप' तरक] जी०
३।८४,८५

अमणुण्ण [अमनोज्ञ] ओ० ४३. रा० ७६७.
जी० १।९५; ३।३।९२

अमणुण्णतरक [अमनोज्ञतरक] जी० ३।८४

अमत [अमृत] जी० ३.३१२,४१७

अमम [अमम] ओ० २७. रा० ८१३. जी० ३।६३१

अमम्मण [अमन्मन] ओ० ७१. रा० ६१

अमय [अमृत] रा० ३८,१६०,२२२,२५६. जी०
३।३३३,३८१,३८७,८९४

अमयरस [अमृतरस] रा० २२८. जी० ३।२८६

अमर [अमर] ओ० ४६,१९५।२०. रा० ५१

अमरवइ [अमरपति] ओ० ६४

अमलगंधिय [अमलगन्धिक] ओ० १२. रा० २२

अमलगंधीय [अमलगन्धिक] जी० ३।२९०

अमला [अमला] जी० ३।९२१

अमाण [अमान] ओ० १६८

अमाय [अमाय] ओ० १६८

अमिय [अमृत] ओ० १९५।१८

अमेहावि [अमेधाविन्] रा० ७५८,७५९

अमोह [अमोघ] जी० ३।६२६,८४१

अमोहा [अमोघा] जी० ३।६९९,९१०

अम्मड [अम्बड] ओ० ११५,११७ से १४१

अम्मापिइ [अम्बापितृ] ओ० १४२,१४६

अम्मापिउ [अम्बापितृ] ओ० १४७,१४९. रा०
८००,८०७

अम्मापिउसुस्सूसग [अम्बापितृशुश्रूषक] ओ० ९१

अम्मापियर [अम्बापितृ] ओ० १४४,१४५. रा०
८०२,८०३,८०५,८०८,८१०

अम्ह [अस्मत्] रा० ८. जी० ३।४४१

अय [अयस्] रा० ७५४,७५६,७५७,७७४

अयकोट्ठ [अयःकोष्ठ] जी० ३।७८

अयगर [अजगर] जी० १।१०५,१०९; ३।६२५

अयगरी [अजगरी] जी० २।८

अयण [अयन] ओ० २८. जी० ३।८४१

अयपाय [अयस्पात्र] ओ० १०५,१२८

अयपिंड [अयस्पिण्ड] जी० ३।११८,११९

अयपुग्गल [अयस्पुद्गल] रा० ७७४

अयबंधण [अयोबन्धन] ओ० १०६,१२९

अयभंड [अयोभाण्ड] रा० ७७४

अयभार [अयोभार] रा० ७७४

अयभारग [अयोभारक] रा० ७६०,७६१,७७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अयभारय [अयोभारक] रा० ७७४
अयभारय [अयोहारक, अयोभारक] रा० ७७४,७७५
अयल [अचल] ओ० १६,२१,५४. रा० ८,२६२. जी० ३।४५७
अयसकारग [अयस्कारक] ओ० १५५
अयसि [अतसी] ओ० १३,४७. रा० २६. जी० ३।२७९
अयहारय [अयोहारक, अयोभारक] रा० ७७४,७७५
अया [अजा] जी० ३।६१९
अयागर [अयआकर] रा० ७७४. जी० ३।११८
अयोगि [अयोगिन्] जी० ६।११९
अयोमय [अयोमय] जी० ३।११९
अयोमुह [अजमुख] जी० ३।२१६
अरइ [अरति] ओ० ४६. जी० ३।१२८।१०
अरइरइ [अरतिरति] ओ० ७१,११७,१६१,१६३ रा० ७९६
अरकमंडल [अरकमण्डल] रा० १७३,६८१. जी० ३।२८५
अरणि [अरणि] रा० ७६५
अरति [अरति] जी० ३।१२८
अरतिरतिविवेग [अरतिरतिविवेक] ओ० ७१
अरमणिज्ज [अरमणीय] रा० ७८१ से ७८७
अरसाहार [अरसाहार] ओ० ३५
अरह [अर्ह] रा० ७७१,८१५,८१७
अरहंत [अर्हत्] ओ० २१,४०,५२,५४,७१,११७, १३९. रा० ८,११,५६,२९२,७१४,७४६, ७९६. जी० ३।४५७,७९५,८४१
अरि [अरि] जी० ३।६१२,६३१
अरिस [अर्शस्] जी० ३।६२८
अरिह [अर्ह] ओ० ७१,१४७. रा० ६१, ७१४, ७७६, ८०८
अरुण [अरुण] जी० ३।९२७,९२८,९५०
अरुणप्पभ [अरुणप्रभ] जी० ३,७४८,७४९,७५३
अरुणमहावर [अरुणमहावर] जी० ३।९३०
अरुणवर [अरुणवर] जी० ३।७७५,९२९,९३०
अरुणवरभद्द [अरुणवरभद्र] जी० ३।९२९
अरुणवरमहाभद्द [अरुणवरमहाभद्र] जी० ३।९२९
अरुणवरोद [अरुणवरोद] जी० ३।९३०,९३१
अरुणवरोभास [अरुणवरावभास] जी० ३।९३१, ९३२
अरुणवरोभासभद्द [अरुणवरावभासभद्र] जी० ३।९३१
अरुणवरोभासमहाभद्द [अरुणवरावभासमहाभद्र] जी० ३।९३१
अरुणवरोभासमहावर [अरुणवरावभासमहावर] जी० ३।९३२
अरुणवरोभासवर [अरुणवरावभासवर] जी० ३।९३२
अरुणोद [अरुणोद] जी० ३।९२८,९२९
अरुय [अरुज] ओ० १९,२१,५४. रा० ८,२९२. जी० ३।४५७
अरूवि [अरूपिन्] जी० १।३,४
अलं [अलम्] ओ० १४८ रा० ८०९
अलंकार [अलङ्कार] ओ० ६७,७०,९२,१४७, १६१,१६३. रा० १३,५३,१७३,२८६,६५७, ७१४,७५१,७९४,८०२,८०५,८०८. जी० ३।२८५,४४६,४५५
अलंकारिय [अलङ्कारिक] रा० २६८,२८४,५३५. जी० ३।४३२,५४१
अलंकारियसभा [अलङ्कारिकसभा] रा० २६७, २६९,२८३,२८६,५३४,५३६, ५३७,५५६, ५७४,५७५. जी० ३।४३१,४३३,४३४,४४९ ४५२,५४०,५४२ से ५४६
अलंकित [अलंकृत] जी० ४।४५२
अलंकिय [अलङ्कृत] ओ० २०,५३,६३ रा० १३०,२८५,२८६,६८५,६८६,६९२,७००, ७१६,७२६,८०२. जी० ३।३००,४५१
अलभमाण [अलभमान] ओ० ११७
अलाउपाय [अलाबुपात्र] ओ० १०५,१२८
अलाय [अलात] जी० १।७८; ३।८५
अलियवयण [अलीकवचन] ओ० ७३
अलेस [अलेश्य] जी० १।१३३; ९।२९,१९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलेस्स [अलेश्य] जी० ९।१८५,१९२,१९६
अलोग [अलोक] ओ० १९५।२
अलोय [अलोक] ओ० ७१
अलोह [अलोभ] ओ० १६८
अल्लई [आर्द्रकी] जी० ३।२८१
अल्लकी [आर्द्रकी] रा० २८
अल्लीण [आलीन] ओ० १९,९१ रा० ८०४. जी० ३।५९६ से ५९८,७९५,८४१
अल्लीणया [आलीनता] ओ० ११९
अवउडग [दे० अवकोटक] रा० ७५४,७५६,७६४
अवंक [अवक्र] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५
अवंग [अपाङ्ग] रा० १३३. जी० ३।३०३
अवंगुयदुवार [दे० अपावृतद्वार] ओ० १६२. रा० ६९८,७५२,७८९
अवक्कम [अप+क्रम्]—अवक्कमंति रा० १०. जी० ३।८७—अवक्कमति रा० १८
अवक्कमित्ता [अपक्रम्य] रा०. १० जी० ३।४४५
अवक्खेवण [अवक्षेपण] ओ० १८०
अवगय [अपगत] ओ० ६३
अवगाढ [अवगाढ] रा० ७७४
अवज्झाणायरिय [अपध्यानाचरित] ओ० १३६
अवट्ठित [अवस्थित] जी० ३।५९.५९६
अवट्ठिय [अवस्थित] ओ० १९. रा० २०० जी० ३।२७३, ३५०, ७६०, ८३८।११
अवड्ढ [अपार्ध] जी० २।६५, ८८,१३२; ३।८३९; ९।२३,२६,३३,६९,७१,७३,७८, १४६, १६४, १६५, १७८, २०२, २०४
अवड्ढोमोदरिय [अपार्धविमोदरिक, उपार्धा०] ओ० ३३
अवणद्ध [अवनद्ध] रा० ७६०, ७६१
√अवणी [अप+नी]—अवणेमो रा०७२९
अवणीत [अपनीत] जी० ३।८७८
अवणीयउवणीयचरय [अपनीतउपनीतचरक] ओ० ३४
अवणीयचरय [अपनीतचरक] ओ० ३४
अवणेमाण [अपनयत्] रा० ७३२
अवण्णकारग [अवर्णकारक] ओ० १५४
अवतासिज्जमाण [अपत्रास्यमान] रा० ८०४
√अवदाल [अव+दलय्]—अवदालेइ ओ० १७०
अवदालिय [अवदालित] ओ०१९
अवदालेत्ता [अवदल्य] ओ० १७०
अवधिणाणि [अवधिज्ञानिन्] जी० ३।१०४,११०७
अवमाण [अपमान] रा० ८१६
अवमाणण [अपमानन] ओ०४६
अवयंसग [अवतंसक] रा० १७३, ६८१
अवर [अपर] रा० ४०, १३२, १६३, १६९ जी० ३।२६५, २८५, ३५८, ५९५
√अवरज्झ [अप्+राध्]—अवरज्झइ रा० ७६७
अवरण्ह [अपराह्ण] रा० ६८५
अवरत्त [अपरात्र] रा० १७३
अवरविदेह [अपरविदेह] जी० २।२९,५६,७०, ७२,८५,९६,११५,१२३,१३७, १३८, १४७, १४९; ३।४४५, ७९५
अवरविदेहक [अपरविदेहक] जी० २।१३२
अवरविदेहिया [अपरविदेहिका] जी० २।६५
अवराहि [अपराधिन्] रा० ७५१
अवरुत्तर [अपरोत्तर] रा० ४१,६५८. जी० ३।३३९,५५८,६३५,६५७,६८०
अवलंबण [अवलम्बन] रा० १९, १७५. जी० ३।२८७, ८६०
अवलंबणबाहा [अवलम्बनबाहु] रा० १९,१७५. जी० ३।२८७
अवलद्ध [अपलब्ध] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ८१६
अवलि [अवलि] रा० २९ जी० ३।२८२
अवलिया [अवलिका] रा० २५ जी० ३।२७८
अवव [अवव] जी० ३।८४१
अवसाण [अवसान] ओ० ६३
अवसेस [अवशेष] ओ० ७२, ७९, १६७ रा० ४८, ५७, १६४ जी० १।५९, ६७; ३।२५०, ३४५, ३५६, ६३०, ९६४, ९६५, १०२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अववहारि [अव्यवहारिन्] रा० ७६६
अवहट्टु [अपहृत्य] ओ०६६
अवहमाणय [अवहमानक] ओ० १११से ११३, १३७,१३८
अवहार [अपहार] जी० ३।१२७
अवहित [अपहृत] जी० ३।६०
अवहिय [अपहृत] जी० ३।१०८५, १०८६
√अवहीर [अप+हृ]—अवहीरंति जी० ३।६०
अवहीरमाण [अपह्रियमाण] जी० ३।६०, १०८६
अवाईण [अवातीन, अवाचीन] ओ० ५, ८ जी० ३।२७४
अवाउडय [अप्रावृतक] ओ. ३६
अवाय [अवाय] रा० ७४०
अवायविजय [अपायविचय] ओ० ४३
अवायाणुप्पेहा [अपायानुप्रेक्षा] ओ० ४३
अवि [अपि] रा० १२ जी० १।१६
अविओसरणया [अव्युत्सर्जन] ओ० ६६, ७० रा० ७७८
अविग्गह [अविग्रह] ओ० १८२
अविग्घ [अविघ्न] ओ० ६८
अवितह [अवितथ] ओ० २६, ६६,७२. रा० ६६६
अविद्धत्थ [अविध्वस्त] जी० ३।११८
अविप्पओग [अविप्रयोग] ओ० ४३
अवियारि [अविचारिन्] ओ० ४३
अविरत्त [अविरक्त] ओ० १५ रा ६७२
अविरय [अविरत] ओ० ८४, ८५. ८७, ८८
अविरला [अविरल] ओ० ५, ८, १६ जी० ३।२७४, ५६६, ५६७
अविरहिय [अविरहित] जी० ३।८३८। १७
अविराय [दे० अप्रस्फुटित] जी० ३।११८
अविरुद्ध [अविरुद्ध] ओ० ६३
अविलीण [अविलीन] जी० ३।११८
अविसंधि [अविसन्धि] ओ० ७२
अविसय [अविषय] जी० १।४७
अविसुद्धलेस्स [अविशुद्धलेश्य] जी० ३।१६६ से २०४, २०६, २०८
अविस्साम [अविश्राम] ओ० ५०
अवेइय [अवेदित] रा० ७५१
अवेदग [अवेदक] जी० ६।२२, २६, २७,१२६, १३०
अवेदय [अवेदक] जी० ६।२४, २८
अवेय [अवेद] जी० १।१३३
अवेयग [अवेदक] जी० ६।१२१
अवेयय]अवेदक] ६।१२५
अव्वत्तिय [अव्यक्तिक] ओ० १६०
अव्वय [अव्यय] रा० २०० जी० ३।५६,२७२, ३५०, ७६०
अव्ववहारि [अव्यवहारिन्] रा ७६६
अव्वह [अव्यथ] ओ० ४३
अव्वहित [अव्यथित] जी० ३।६३०
अव्वाबाह [अव्याबाध] ओ० १६, २१, ५४, १६५।१३ रा० ८,२६२ जी० ३।४५७
अव्वाहित[अव्याहृत] जी० ३।२३६
√अस [अस्]—अत्थि, ओ० २८ रा० २०० जी० १।८२—अत्थु ओ० २१ रा० ८ जी० ३।४५७—असि रा० ७४७ —आसि रा० २०० जी० ३।२६—आसी ओ० १६५।३ रा० ६६७—सिय रा० १६८—सिया ओ० ३३ रा०१२
असइं [असकृत्] जी० ३।६७५
असंकिलिट्ठ [असंक्लिष्ट] ओ० ४७
असंकिलिट्ठपरिणाम [असंक्लिष्टपरिणाम] ओ० ६०
असंख [असंख्य] जी० १।१२८
असंखिज्ज [असंख्येय] रा० ५६ जी० १।८०, १२१; ३।८६
असंखेज्ज [असंख्येय] ओ० १७३,१८२. रा० १० १२,१२४,१२६,२७६,७७२. जी० १।३३,५१ ५५,५६,५८,६१,६२,६४,६५,७३, ७७ से ७६ ८१,८२,८७,८८,६०,६६,१०१,१०३,११२;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११६,११६,१२३,१२८,१३३,१३६,१३६,
१४०; २।१२०,१३१; ३।१६,२१,२६,२७,
५१,६४,६५,८१,८२,६०,११०,१५५,१६५,
२५७,२५६,३५१,४४५,६३८,७०१,७१०,७३६,
७४७,७६१,७६४,७६८,७६६,७७६ से ७७६,
८१४,८३८।१,६४०,६४४,६५२,६५३,१००६,
१०७३,१०७४,१०८३,१०८५,१०८६,११११,
१११५; ५।८, ६,२२,२३,२६,४१ से ५०
५६,५८; ८।४; ६।४०, ५१,६७,१७१,२५७
असंखेज्जइभाग [असंख्येयतमभाग] रा० ७६६.
जी० १।१६,७४,८६,६४,१०१,१०३,१११,
११२,११६,११६,१२१,१२३,१२५,१३०,
१३५,१३६; २।२५, ३० से ३४,५३,५७ से
६१,७३; ६।६७, १८६
असंखेज्जगुण [असंख्येयगुण] ओ० १८२,१६५।१०.
जी० २।६८, ७१,७२,६५,६६,१३४ से १३६,
१३८,१४३ से १४६; ३।१६५, ११३८;
४।२३,२५; ५।१८ से २०, २५,२७,३१ से
३६,५२,५६,६०; ६।१२; ७।२०, २२,२३;
८।५; ६।६, ७,५५,१००,१२०,१४०,१४७,
१५८,१६६,१८१,१८४,२०८,२२०,२३१,
२५० से २५२, २५५,२६६,२८६ से २८८,
२६०,२६१,२६३
असंखेज्जजीविय [असंख्येयजीविक] जी० १।७१,७२
असंखेज्जतिभाग [असंख्येयतमभाग] जी० २।१३६;
३।६१, १५६,२१८, ४३६,६२६,६६६,१०८६,
१०८७,१०८६,११११; ५।६, २३,२४,२६;
६।४०, ५१,१७१,१८७,१८८
असंखेज्जभाग [असंख्येयभाग] ओ० १६२.
जी० ३।६१
असंग [असङ्ग] ओ० २०
असंघयण [असंहनन] जी० ३।१२६।४
असंघयणि [असंहनिन्] जी० १।६५, १३५;
३।६२,१०६०
असंजय [असंयत] ओ० ८४,८५,८७,८८.
जी० ६।१४१, १४३,१४६,१४७
असंत [असत्] ओ० १६५।१६
असंदिद्ध [असन्दिग्ध] ओ० ६६. रा० ६६६
असंनिहि [असन्निधि] जी० ३।५६८
असंपत्त [असम्प्राप्त] ओ० ४७,८४,८५,८७. रा०
४०,५६, १३२. जी १।५८, ७३,७८,८१;
३।२६५
असंबद्ध [असम्बद्ध] जी० ३।११०,१११५
असंभंत [असम्भ्रान्त] रा० १२
असंवुड [असंवृत] ओ० ८४,८५,८७
असंसट्ठचरय [असंसृष्टचरक] ओ० २४
असंसारसमावण्ण [असंसारसमापन्न] जी १।६ से ६
असच्चामोसमणजोग [असत्यमृषामनोयोग]
ओ० १७८
असच्चामोसवइजोग [असत्यमृषावाग्योग] ओ०
१७६
असण [अशन] ओ० ११७,१२०,१४७,१६२.
रा० ६६८,७०४,७१६,७५२,७६५,७७६,७८७
से ७८६,७६४ से ७६६,८०२,८०८
असणग [अशनक] ओ० १३
असणि [अशनि] जी० २।७८
असण्णि [असंज्ञिन्] जी० १।२४, ८६,६६,१०१,
११६,१२८,१३६; ३।८८; ६।१०१,१०३,
१०६,१०८
असति [असकृत्] जी० ३।१२७
असब्भावपट्ठवणा [असद्भावप्रस्थापना]
जी० ३।१०६,११८,११६
असब्भावुब्भावणा [असद्भावोद्भावना]
ओ० १५५,१६०
असमोहत [असमवहत] जी० १।१२८; ३।१५८,
१६८, १६६,२०४,२०५
असमोहय [असमवहत] जी० १।५३,६०,८७
असम्मोह [असम्मोह] ओ०४३
असरणाणुप्पेहा [अशरणानुप्रेक्षा] ओ० ४३
असरिस [असदृश] जी० ३।११०,१११५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असरीर [अशरीर] ओ० १८३,१८४,१९५।११. रा० ७७१
असरीरि [अशरीरिन्] जी० ९।६२,१७०,१७५, १८०,१८१
असहिज्ज [असाहाय्य] रा० ६९८,७५२,७८९
असहेज्ज [असाहाय्य] ओ० १२०,१६२
असावज्ज [असावद्य] ओ० ४०
असासत [अशाश्वत] जी० ३।५७,५९
असासय [अशाश्वत] रा० १९८,१९९. जी० ३।८७, २७०,२७१,७२४,७२७,१०८१
असि [असि] ओ० ६४. जी० ३।११०,६०७,६३१
असिइ [अशीति] जी० ३।५
असिद्ध [असिद्ध] जी० ९।९,११,१३,१४,१९,२९, ६२
असिपत्त [असिपत्र] जी० ३।८५
असिय [असित] रा० १३३. जी० ३।३०३
असिलक्खण [असिलक्षण] ओ० १४६. रा ८०६
असिलिट्ठ [अश्लिष्ट] रा० ७७४
असीत [अशीति] जी० ३।३५५
असीति [अशीति] जी० ३।१७
असीय [अशीति] रा० १६३. जी० ३।३३५
असुइ [अशुचि] ओ० ९८,१४४. रा० ९,१२,७५३, ८०२ जी० ३।८४,६२२
असुभ [अशुभ] रा० ७५३. जी० १।९५; ३।७७, ११६,१२९।४
असुभाणुप्पेहा [अशुभानुप्रेक्षा] ओ ४३
असुय [अश्रुत] रा० १६
असुर [असुर] ओ० ६८,१२०,१६२. रा० २८२, ६९८,७५२,७७१,७८९,८१५. जी० ३।२३२, ४४८,८८५
असुरकुमार [असुरकुमार] ओ० ४७. जी० २।१६, ३७; ३।२३३,२३४,२४०
असुरकुमारराय [असुरकुमारराज] जी० ३।२३४ से २३९,२४३
असुरकुमारिंद [असुरकुमारेन्द्र] जी० ३।२३४
असुरद्दार [असुरद्वार] जी० ३।८८५
असुरिंद [असुरेन्द्र] ओ० ४८. जी० ३।२३५ से २३९,२४३
असुह [अशुभ] जी० ३।९२,१२९।१०
असोग [अशोक] ओ० ८,९,१२,१३. रा० ३,४, १३३. जी० १।७१; ३।३०३,९२७
असोगलया [अशोकलता] ओ० ११. रा० १४५. जी० ३।२६८,५८४
असोगलयापविभत्ति [अशोकलताप्रविभक्ति] रा० १०१
असोगवडेंसय [अशोकावतंसक] रा० १२५
असोगवण [अशोकवन] रा० १७०. जी० ३।३५८
असोय [अशोक] रा० १८६. जी० ३।३५९,५९०
असोयपल्लवपविभत्ति [अशोकपल्लवप्रविभक्ति] रा० १००
अस्स [अश्व] जी० ३।७९३
अस्सकण्णि [अश्वकर्णी] जी० १।७३
अस्साव [आस्वाद] जी० ३।९५८
अस्साय [असात] जी० ३।१२९।५,१०
अस्सुय [अश्रुत] ओ० ५२
अह [अथ] ओ० २२
अहक्खायचरित्तविणय [यथाख्यातचरित्रविनय] ओ० ४०
अहत [अहत] जी० ३।४५१
अहमिंद [अहमिन्द्र] जी० ३।१०५६,११२०
अहय [अहत] ओ० ६३. रा० ७,२९१. जी० ३।४५७
अहर [अधर] ओ० १९,४७. जी० ३।५९६
अहव [अथवा] जी० ३।५९४
अहवा [अथवा] जी० १।१३३
अहव्वणवेव [अथर्वणवेद] ओ० ९७
अहाणुपुव्वी [यथानुपूर्वी] ओ ६४. रा० ४९ से ५४,७७४
अहा [अथ] रा० ७२३
अहापडिरूव [यथाप्रतिरूप] ओ० २१,२२,५२. रा० ८,९,६८६,६८७,६८९,७०६,७११,७१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहापरिग्गहिय [यथापरिगृहीत] ओ० १२०
अहाबायर [यथाबादर] रा० १०,१२,१८,६५, २७६. जी० ३।४४५
अहासुह [यथासुख] रा० ६६५,७७५
अहासुहुम [यथासूक्ष्म] रा० १०,१२,१८,६५, २७६. जी० ३।४४५
अहि [अहि] जी० १।१०५,१०६,१०८; ३।८४,६५,६२५,६३१
अहिगय [अभिगत] रा० ६८८
अहिगरण [अधिकरण] ओ० १२०,१६२. रा० ६६८,७५२,७८६
अहिय [अधिक] ओ० ५७,६३ रा० ७०, १३३, २३८. जी० २।१५१; ३।२२६।२,५,३०३, ६७२,११२२; ७।१६,१८; ६।४,२४४,२४६, २८०,२८२,११२२
अहियथर [अधिकतर] रा० १३३. जी० ३।३०३, ११२२
√**अहियास** [अधि+आस्, सह्]—अहियासिज्जंति ओ० १५४. रा० ८१६
अहिलाण [अमिलान] ओ० ६४
अही [अही] जी० २।८
अहीण [अहीन] ओ० १५,१४३.रा० ६७२,६७३ ८०१
अहुणा [अधुना] जी० ३।४४८
अहुणोववण्ण [अधुनोपपन्न] रा० ७५१,७५३
अहुणोववण्णमित्तय [अधुनोपपन्नमात्रक] रा० २७४
अहुणोववण्णय [अधुनोपपन्नक] रा० ७५१,७५३, ७६७
अहे [अधस्] ओ० १८६ रा० १३२ जी० १।४५
अहेसत्तमा [अधःसप्तमी] जी० १।६२,११६, १२२; २।१३५,१४८,१४६; ३।११ से १३, २७,३२,४३,४७,४६,५३.७६,७७,७६,८०,८२, ८७, ६३ से ६५,६७,१०३,१०४,१०६,१०८, ११५,११७,१२१ से १२३,१२५,१२७,१२८
अहो [अहो] रा० ६६६
अहोनिस [अहर्निश] जी० ३।१२६।८
अहोरत्त [अहोरात्र] ओ० २८ जी० ३।८४१
अहोवहिय [आधोवधिक] रा० ७३३,७३४,७३६
अहोवाय [अधोवात] जी० १।८१
अहोसिर [अधःशिरस्] ओ० ४५,८२

आ

आइ [आदि] ओ० २३,६३,६६. जी० १।१३३; ३।१०२७
आइं [दे०] रा० ७०५
√**आइक्ख** [आ+चक्ष्,ख्या]—आइक्खइ ओ० ५२. रा० ६८७—आइक्खंति जी० ३।२१०— आइक्खह ओ० ७६—आइक्खामि जी० ३।२११—आइक्खिस्सामो रा० ७१६ —आइक्खेज्जा रा० ७१८—आइक्खेज्जाह रा० ७२०
आइक्खग [आख्यायक] ओ० १,२
आइक्खगपेच्छा [आख्यायकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५
आइक्खमाण [आचक्षाण,आख्यात्] ओ० ७६ से ८१ रा० ७२०,७३२
आइक्खित्तए [आचक्षितुम्,आख्यातुम्] ओ० ७६
आइगर [आदिकर] ओ० १६,२१,५२,५४ रा० ८
आइच्च [आदित्य] जी० ३।८३८।४
आइज्ज [आदेय] ओ० १६
आइण [आजिन] रा० ३१
आइणग [आजिनक] जी० ३।४०७,५६५
आइण्ण [आकीर्ण] ओ० १,१४,१६,६४. रा० १७३,६७१,६७५,६८१,७७४. जी० ३।२८५,६६५
आइण्ण [आचीर्ण] रा० ११,५६
आइण्ण [दे०] जात्यश्व जी० ३।५६६
आइय [आदिक] ओ० २३,१२०,१४६,१६२ जी० ३।२५६

आईण [आजिन] जी० ३।२८४,१०७९
आईणग [आजिनक] ओ० १३ रा० ३७,१८५, २४५. जी० ३।२९७,३११
आउ [आयुष्] जी० १।१२८
आउ [दे० अप्] जी० २।१३०,१३६; ३।१२३, ९७४; ५।८,१२,२०,२७,२९,३३,३६; ९।२५७
आउकाइय [अप्कायिक] जी० १।१२; ३।१८२, १८४,२५६,२६२,२६६; ५।६,१८; ८।५
आउकाय [अप्काय] जी० ३।१३५,७२५,७२८
आउक्काइय [अप्कायिक] जी० १।६३,६५; २।१०२,१३८,१४६,१४९; ३।१३५; ५।१, १९,२०; ८।१
आउक्खय [आयुःक्षय] ओ० १४१. रा० ७९९
आउज्ज [आतोद्य] रा० ७०,७१,७५
आउधागार [आयुधागार] ओ० १४. रा० ६७१
आउय [आयुष्क] ओ० ४४,९१ से ९३,१५७, १७१,१८८. रा० ७५३. जी० १।५१,५५,६१, ८७, १०१,११९,१२७,१३३; ३।१५५,६३०
आउर [आतुर] रा० ७६०,७६१. जी० ३।११८, ११९
आउल [आकुल] ओ० ६३. जी० ३।८४
आउस [आयुष्मत्] ओ० ७६,१२०,१७०. रा० १३१,१३२,१४७ से १५१,१८५,१९७,६९८, ७५०,७५२,७८९. जी० १।५६,६२,६५,८२,९६, १२८,१४०; ३।१७६,१७८,१८०,१८२,२५९, २६९,२९७,३०१,३०२,३२१ से ३२४,५८२, ५८६ से ५९५,५९८,६००,६०३ से ६०७,६०९ से ६१७,६२०,६२२ से ६२५,६२७,६२८,६३०, ९६५,१०५६,११२०
आउसेस [आयुःशेष] रा० ८१६
आउह [आयुध] रा० ६६४,६८३. जी० ३।५६२
आएज्ज [आदेय] जी० ३।५९७
आएस [आदेश] जी० २।१५०, ९।१२२
आओग [आयोग] ओ० १४,१४१ रा० ६७१,७९९
आओस [आक्रोश] रा० ७६६

आओसित्तए [आक्रोष्टुम्] रा० ७६६
आकति [आकृति] रा० १४८
आकारभाव [आकारभाव] जी० ३।२५९
आकासतल [आकाशतल] जी० ३।५९४
आकिति [आकृति] जी० ३।४५४
आकोसायंत [आकोशायमान, विकसत्] जी० ३।५९६,५९७
आगइ [आगति] जी० १।१४
आगइय [आगतिक] जी० १।७४,७७,८७,८८,९६, १०१
आगंतुं [आगन्तुम्] रा० ७५०
√**आगच्छ** [आ+गम्]—आगच्छइ ओ० १७७ —आगच्छंति जी० ३।२३९—आगच्छिज्जा रा० ७०६ —आगच्छेज्ज ओ० १८०.— आगच्छेज्जा ओ० २१. जी० ३।८६— आगच्छेज्ज रा० ७६५
आगच्छित्तए [आगन्तुम्] रा० ७५१
आगत [आगत] रा० १७३. जी० ३।२६५,२८५
आगति [आगति] रा० ८१५
आगतिय [आगतिक] जी० १।५६,६२,६४,६५, ६७,७९,८०,८२,१०३,१११,११२,११६,११९, १२१,१२३,१२८,१३४,१३६
आगमण [आगमन] ओ० ५१. रा० ६८९
आगमणागमणपविभत्ति [आगमनागमनप्रविभक्ति] रा० ८७
आगमेसिभद्द [आगमिष्यद्भद्र] ओ० ७२
आगम्म [आगम्य] ओ० २
आगय [आगत] ओ० ५२. रा० ४०,७०,१३२, ६८५,६८७,६८९,७१३,७६५,८०२. जी० १।९६
आगर [आकर] ओ० ६८,८९ से ९३,९५,९६, १५५,१५८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७. जी० ३।८४१
आगार [आकार] ओ० १९. जी० ३।४८ से ५०, ३०३,३४६,३५७,६३७,६५९,७३८,७४३, ७६३,११२२

आगारभाव [आकारभाव] जी० ३।२१८,५७८, ५९६,५९७

आगास [आकाश] ओ० १३,१९

आगासत्थिकाय [आकाशास्तिकाय] रा० ७७१. जी० १।४

आगासथिग्गल [आकाश 'थिग्गल'] रा० २५ जी० ३।२७८

आगासफलिह [आकाशस्फटिक] जी० ३।४५१

आगासफालिह [आकाशस्फटिक) । रा० २८५

आगासाइवाइ [आकाशातिपातिन्] ओ० २४

आगासिय [आकाशिक] ओ० १९

आगिति [आकृति] रा० २८८. जी० ३।३२१

√आघव [आ+ख्या]—आघविज्जति जी० ३।८४१

आघवण [आख्यान] रा० ७७४

आघवित्तए [आख्यातुम्] रा० ७७४

आघवेमाण [आख्यात्] ओ० ९८

आजीवदिट्ठंत [आजीवदृष्टान्त] जी० ३।१७४

आजीवय [आजीवक] ओ० १५८

√आडह [आ+धा]—आडहइ, ओ० ५९

आडहित्ता [आधाय] ओ० ५९

आढय [आढक] ओ० ११३,१३८. रा० ७७२

√आढा [आ+दृ]—आढाइ रा० ६४.—आढाति रा० ७५३

आणंदा [आनन्दा] जी० ३।९१४

आणंदिय [आनन्दित] ओ० २०,२१,५३,५४,५६, ६२,६३,७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १४, १६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७, २७९,२८१,२९०,६५५,६८१,६८३,६९०,६९५. ७००,७०७,७१०,७१३,७१४,७१६,७१८,७२५, ७२६,७७४,७७८. जी० ३।४४३,४४५,४४७, ५५५

आणण [आनन] ओ० ५१,६३,६५

आणत [आनत] जी० २।९२,९६,१४८,१४९; ३।१०८४,१०८६,१०८८

आणत्तिया [आज्ञप्तिका] ओ० ५५ से ६१. रा० ९,१२,१७,४६,७३,११८,६५४,६५५,६८१, ६८२,६९०,६९१,७०६,७१४,७१५,७२४, ७२५. जी० ५५४,५५५

आणपाणपज्जत्ति [आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-पर्याप्ति] रा० २७४,७९७

आणपाणुपज्जत्ति [आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-पर्याप्ति] जी० १।२६

आणय [आनत] ओ० ५१,१९२. जी० ३।१०३८, १०५३,१०६२,१०६६,१०६८,१०७६,११११

√आणव [आ+ज्ञापय्]—आणविज्जइ रा० ७६७. —आणवेइ रा० १३.—आणवेज्जा रा० ७७६

आणा [आज्ञा] ओ० ५६,५७,५९,६१,६८,७६, ७७. रा० १०,१४,१८,७४,२७९,२८२,६५५, ६८१,७०७. जी० ३।३५०,४४५,४४८,५५५, ५६३,६३७

आणापाणु [आनापान, आनप्राण] ओ० २८. जी० ३।८४१

आणापाणुअपज्जत्ति [आनापानापर्याप्ति, आनाप्राणा-पर्याप्ति] जी० १।२७

आणापाणुपज्जत्ति [आनापानपर्याप्ति, आनप्राण-पर्याप्ति] जी० ३।४४०

आणामित [आनामित] जी० ३।५९७

आणामिय [आनामित] ओ० १९ जी० ३।५९६

आणारुइ [आज्ञारुचि] ओ० ४३

आणाविजय]आज्ञाविचय] ओ० ४३

√आणी [आ+नी]—आणेस्सामि रा० ७२०

आणुगामियत्त [आनुगामिकत्व] ओ० ५२. रा० २७५,२७६,६८७. जी० ३।४४१,४४२

आणुपुव्व [आनुपूर्व्य] रा० १७४. जी० ३।२८६

आणुपुव्वी [आनुपूर्वी] जी० १।४८

आतंक [आतङ्क] जी० ३।६२८

आतंब [आताम्र] जी० ३।५९६

आतपत्त [आतपत्र] जी० ३।४१६

आताडिज्जंत [आताड्यमान] रा० ७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आतिय [आदिक] रा० ६३,६५
आतोज्ज [आतोद्य] जी० ३।५८८
आदंसग [आदर्शक] जी० ३।३५५
आदंसमुह [आदर्शमुख] जी० ३।२२६
आदर [आदर] ओ० ६७. रा० १३,६५७
आदरिसफलग [आदर्शफलक] ओ० २७. रा० ८१३
आदि [आदि] ५२,७०. जी० १।४६; २।१३१; ३।२२६,२५०,८६६,८७२,८७५,८७६,८७९, ८८१,९२६,९२७,९३७,९४१,९४८,९४९, ९५२,१०८४,१०८६; ९।१४६
आदिगर [आदिकर] ओ० ५४. रा० ८,२९२. जी० ३।४५७
आदिय [आदिक] रा० ७४,८२,११८. जी० ३.९१७
आदीय [आदिक] जी० ३।२५९,९५०
आदेज्ज [आदेय] जी० ३।५९६,५९७
आदेस [आदेश] जी० १।५८,७३,७८,८१; २।२०, ४८
आधार [आहार] जी० १।१२८
√आधाव [आ+धाव्]—आधावंति जी० ३.४४७
आपडिपुच्छमाण [आप्रतिपृच्छत्] ओ० ६९
आपुच्छणिज्ज [आपृच्छनीय] रा० ६७५
आपूरेंत [आपूर्यमाण] जी० ३।७३१
आपूरेमाण [आपूर्यमाण[1]] रा० ४०,१३२, १३५,२३६. जी० ३।२६५,३०२,३०५,३९८.
आबाह [आबाध] ओ० १९६
आबाहा [आबाधा] जी० ३.६२०,६२५
आभरण [आभरण] ओ० २०,५२,५३,६३. रा० ६९,७०,१५६,१५७,२५८,२७९,२८१, २८६,२९१,२९४,२९६,३००,३०५,३१२, ३५५,६८५,६८७,६८९,६९२,७००,७१६, ७२६,८०२. जी० ३.३२९,४१९,४४७,४५२, ४५७,४५९,४६१,४६२,४६५,४७०,४७७, ५१६,५२०,५४७,७७५,९३६,११२१ से ११२३
आभरणचित्त [आभरणचित्र] जी० ३ ५९५
आभरणविहि [आभरणविधि] ओ० १४६ रा० ८०६
आभा [आभा] ओ० ५१
आभासित [आभाषिक] जी० ३।२१६
आभासिय [आभाषिक] जी० ३।२१९
आभासियदीव [आभाषिकद्वीप] जी० ३।२१९, २२३
आभासिया [आभाषिका] जी० २।१२
आभिओगिय [आभियोगिक] ओ० १५९. रा० ६,१०,१२,१३,१७ से १९,२४,३२,४१,४६, ५४,२७८,२७९,२९०,६५४,६५५. जी० ३।४४४,४४५,४५०,४५३,४५६,५५४,५५५, ६१०
आभिणिबोधियणाणि [आभिनिबोधिकज्ञानिन्] जी० ३।१०४,११०७
आभिणिबोहियणाण [आभिनिबोधिकज्ञान] ओ० ४० रा० ७३९ से ७४१,७४६
आभिणिबोहियणाणविणय [आभिनिबोधिकज्ञान-विनय] ओ० ४०
आभिणिबोहियणाणि [आभिनिबोधिकज्ञानिन्] ओ० २४. जी० १।८७,९६,११६,१३३; ९।१५९,१६०,१६५,१६६.१९८,२०४,२०८
आभिणिबोहियनाणि [आभिनिबोधिकज्ञानिन्] जी० ९।१९७
आभियोग [आभियोग्य] रा० ४७
आभियोग्ग [आभियोग्य] रा १०
आभिसेक्क [आभिषेक्य] ओ० ५५ से ५७,६२ से ६४,६९
आभोएत्ता [आभोग्य] रा० ८१६
अभोएमाण [आभोगयत्] रा० ७
√आमंत [आ+मन्त्रय्]—आमंतेइ ओ० ५५
आमंतेत्ता [आमन्त्र्य] ओ० ५५. रा० ६६८

१—आपूरयन्ति शत्रन्तस्य शाब्दिकं रूपम् [जी० वृत्ति]।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आमरणंतदोस [आमरणान्तदोष] ओ० ४३

आमलकप्पा [आमलकल्पा] रा० १,२,८ से १०, १३,१५,५६

आमलग [आमलक] रा० ७७१ जी १।७२

आमलय [आमलक] रा० ७७०

आमेल [आपीड] ओ० ४६ रा० ६६,७०

आमेलग [आपीडक] रा० १३३ जी० ३।३०३, ५६७

आमेलय [आपीडक] ओ० ५७

आमोट [आमोट] रा० ७७

आमोडिज्जंत [आमोट्यमान] रा० ७७

आमोसहिपत्त [आमर्षौषधिप्राप्त] ओ० २४

आय [आत्मन्] जी० १।५०

आयंक [आतङ्क] ओ० ४३,११७. रा० १२,७५८, ७५६,७६६. जी० ३।११८

आयंत [आचान्त] ओ० २१,५४. रा० २७७, २८८,७६५,८०२ जी० ३।४४३

आयंब [आताम्र] ओ० १६

आयंबिलय [आचाम्लक] ओ० ३५

आयंबिलवद्धमाण [आचाम्लवर्धमान] ओ० २४,३५

आयंस [आदर्श] रा० १४६,२५८,२७६, जी० ३।५६७

आयंसग [आदर्शक] जी० ३ ३२२,४१६,४४५

आयंसघरग [आदर्शगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२६४

आयंसघरय [आदर्शगृहक] जी० ३।२६५

आयंसमंडल [आदर्शमण्डल] रा० २४ जी० ३।२७७

आयंसमुह [आदर्शमुख] जी० ३।२१६,२२६।४

आयंसय [आदर्शक] ओ० १३

आयत [आयत] ओ० १६,४७. रा० १२४. जी० १।५; ३।५७७,५६६,६३६,१०३६

आयपच्चइय [आत्मप्रत्ययिक, °प्रात्ययिक] रा० ७५४,७५६

आयय [आयत] जी० ३.२२,५६७

आयर [आदर] जी० ३।४४६

आयरक्ख [आत्मरक्ष] रा० ७,४४,५६,५८,२८०, २८२,२८६,२६१,६५७,६६४ जी० ३।३४५, ३५०,३५६,४४६,४४८,५५७,५६२,५६३, ६३७,६५६,६८०,७००,१०२५,१०३८

आयरिय [आचार्य] ओ० ४०,४१,१५५. रा० ७७६

आयव [आतप] ओ० ८६

आयवत्त [आतपत्र] ओ० ६४. रा० ५०,५१,२५५

आयवाभा [आतपाभ] जी० ३।१०२६

आयाए [आदाय] रा० ७७४

आयाण [आदान] ओ० १६. जी० ३।५६६

आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिय [आदानभाण्डामत्र-निक्षेपणासमित] ओ० २७,१६४

आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिय [आदानभाण्डामत्र-निक्षेपणासमित] ओ० १५२. रा० ८१३

आयाम [आयाम] ओ० १३,१७०,१६२. रा० ३६,१२४,१२६,१२८,१३७,१७०,१८८,२०६, २११,२१८,२२१,२२२,२२४,२२६,२२७, २३०,२३३,२३८,२४२,२४४,२४६,२५१ से २५३,२६१,२६२,२७२. जी० ३.५१ ८१,८२, ८६,२१७,२२२,२२६,२६०,३०७,३१०,३५१, ३५३,३५५,३५८,३५६,३६१,३६४,३६५, ३६८ से ३७२,३७४,३७६,३७७,३८०,३८१, ३८३,३८५,३८६,३६२,३६५,४००,४०४, ४०६,४०८,४१२ से ४१४,४२२,४२५,४२७, ४३७,५७७,५६७,६३२,६३४,६३६,६४२, ६४४.६४६,६४६,६५२,६५५,६६८,६७१,६७३ से ६७५,६७६,६८३,७३६ ७३७,७५४,७५८, ७६२,७६५,७६८,८३५,८८२,८८४,८८७, ८६१,८६३ से ८६५,८६७,८६६,६०१,६०६, ६०७,६१०,१०१० से१०१४,१०७३,१०७४

आयामसित्थभोइ [आयामसिक्थभोजिन्] ओ० ३५

आयारधर [आचारधर] ओ० ४५

आयारवंत [आकारवत्] ओ० १

आयावणभूमि [आतापनभूमि] ओ० ११६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयावणा [आतापना] ओ० ६४
आयावय [आतापक] ओ० ३६
आयावाय [आत्मवाद] ओ० २६
आयावेमाण [आतापयत्] ओ० ११६
आयाहिण [आदक्षिण] ओ० ४७,५२,६६,७०,७८,८०,८१. रा० ६,१०,१२,५६,५८,६५,७३,७४,११८,१२०,६८७,६९२,६९५,७००,७१६,७१८,७७८
आयिण [आजिन] जी० ३।६३७
आरंभ [आरम्भ] ओ० ९१ से ९३,१६१,१६३
आरंभसमारंभ [आरम्भसमारम्भ] ओ० ९१ से ९३
आरण [आरण] ओ० ५१,१६२. जी० ३।१०३८,१०५४,१०६६,१०६८,१०७६,१०८८,११११
आरबी [आरबी] ओ० ७०. रा० ८०४
आरभड [आरभट] रा० १०८,११६,२८१. जी० ३।४४७
आरभडभसोल [आरभटभसोल] रा० ११०,२८१. जी० ३।४४७
आराम [आराम] ओ० १,३७. रा० १२,६५४,६५५,७१६. जी० ३।५५४
√आराह [आ+राध्]—आराहेहिइ रा० ८१६
आराहग [आराधक] ओ० ८९ से ९५,११४,११७,१५५,१५७ से १६०,१६२,१६७
आराहणा [आराधना] ओ० ७७
आराहय [आराधक] ओ० ७६,७७. रा० ६२
आराहित्ता [आराध्य] ओ० १५४. रा० ८१६
आरिय [आर्य] ओ० ५२,७१. रा० ६६७,६८७. जी० ३।२२९
आरुहण [आरोहण] रा० २९१,२९४,२९६,३००,३०५,३१२,३५५. जी० ३।४५७,४५९,४६१,४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,५२०,५४७,५९४
आरोहग [आरोहक] ओ० ६४
आलंकारिय [आलङ्कारिक] जी० ३।४५०
आलंबण [आलम्बन] ओ० ४३. रा० ६७५
आलंबणभूय [आलम्बनभूत] रा० ६७५
आलय [आलय] रा० ८१४
आलवंत [आलपत्] रा० ७७
आलावग [आलापक] जी० ३।६२; ५।५१,५८
आलिंग [आलिङ्ग] रा० २४,६५,६७,१७१. जी० ३।२१८,२७७,३०९,५७८,५८८,६७०,७५५,८८३
आलिंगक [आलिङ्गक] जी० ३।७८
आलिंगणवट्टिय [आलिङ्गनवर्तिक] रा० २४५. जी० ३।४०७
आलिघरग [आलिगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२९४,८५७
आलिघरय [आलिगृहक] जी० ३।२९५,८५७
√आलिह [आ+लिख्]—आलिहइ रा० २९१. —आलिखति जी० ३।४५७
आलिहित्ता [आलिख्य] रा० २९५. जी० ३।४५७
आलुय [आलुक] जी० १।७३
आलोइय [आलोचित] ओ० ११७.१४०,१५७,१६२,१६४,१६५ रा० ७९६
आलोय [आलोक] ओ० ६३,६४. रा० ५०,६८,२९१,३०६. जी० ३।४५७,४७१,५१६
आलोयणारिह [आलोचनार्ह] ओ० ३९
आवइ [आपत्] रा० ७५१
आवइकाल [आपत्काल] ओ० ११७
आवकहिय [यावत्कथिक] ओ० ३२
आवज्जीकरण [आवर्जीकरण] ओ० १७३
आवड [आवृत्त] रा० २४. जी० ३।२७७
आवडपच्चावडसेढिपसेढिसोत्थियसोवत्थियपूसमाणवद्धमाणगमच्छंडमगरंडाजारामाराफुल्लावलिपउमपत्तसागरतरंगवसंतलतापउमलयभत्तिचित्त [आवृत्तप्रत्यावृत्तश्रेणिप्रश्रेणिस्वस्तिकसौवस्तिकपुष्यमाणवर्धमाणकमत्स्याण्डमकराण्डकजारकमारकफुल्लावलिपद्मपत्रसागरतरङ्गवासन्तीलतापद्मलताभक्तिचित्र] रा० ८१
आवडिय [आपतित] रा० १४
आवण [आपन] ओ० १,५५. रा० २८१. जी० ३।४४७,५९४

आवत्त [आवर्त] रा० ६६. जी० ३।८३८।१०
आवत्तणपेढिया [आवर्तनपीठिका] रा० १३०. जी० ३।३००
आवबहुल [आपबहुल] जी० ३।६,१०,१७,२५, ३०,६३
आवरण [आवरण] ओ० ५७,६४. रा० १७३, ६८१. जी० ३।२८५
आवरणावरणपविभत्ति [आवरणावरणप्रविभक्ति] रा० ८८
आवरित्ता [आवृत्य] रा० ७१६
√आवरिस [आ+वृष्]—आवरिसेज्जा रा० १२
आवरेत्ता [आवृत्य] रा० ७१६
आवरेत्ताणं [आवृत्य] रा० ७१६
आवलिपविभत्ति [आवलिप्रविभक्ति] रा० ८५
आवलियपविट्ठ [आवलिकाप्रविष्ट] जी० ३।७८
आवलियबाहिर [आवलिकाबाह्य] जी०३।७८
आवलिया [आवलिका] ओ० २८ जी० १।१३६, ३।८४१
आवलियापविट्ठ [आवलिकाप्रविष्ट] जी० ३।१०७१
आवलियाबाहिर [आवलिकाबाह्य] जी० ३।१०७१
आवस्सय [आवश्यक] रा० ७२३
आवास [आवास] ओ० १, १६२. रा० ६८४, ६८५, ७००, ७०६. जी० ३।२५७ ७३५ से ७४३, ७४५ से ७४७,७४६ से ७५१, ७७५, ६३७
आवाह [आवाह] जी० ३।६१४
आविद्ध [आविद्ध] ओ० ५२, ६३. रा० ६६, ७०, १३१, १४७, १४८, २८०, ६६४, ६८७ से ६८६, जी० ३।३०१, ४४६
आविल [आविल] जी० ३।७२१
आवीकम्म [आविष्कर्मन्] रा० ८१५
आस [अश्व] ओ० ६६, १०१,१२४. रा० ७२०, ७२३, ७२४, ७२६, ७३१, ७३२. जी० २।८४; ३।६१८, ६३१, १०१५
आसकण्ण [अश्वकर्ण] जी० ३।२१६, २२६
आसग [आस्यक] जी० ३।१०६
आसण [आसन] ओ० १४, १४१. रा० १८५, ६७१, ६७५ ७१४, ७६६. जी० ३।२६७ ५७६, ६८३, ११२८, ११३०
आसणप्पयाण [आसनप्रदान] ओ० ४०
आसणाभिग्गह [आसनाभिग्रह] ओ० ४०
आसत्त [आसक्त] ओ० २. ५५. रा० ३२, २८१ २९१,२९४,२९६,३००,३०५,३१२,३५५. जी० ३।३७२, ४४७, ४५६, ४६१, ४६२, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०
आसधर [अश्वधर] ओ० ६६
आसम [आश्रम] ओ० ६८, ८६ से ६३, ६५ ६६, १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७
आसमुह [अश्वमुख] जी० ३।२१६, २२६
√आसय [आस्]—आसयंति रा० १८५ जी० ३।२१७—आसयह रा० ७५३
आसरह [अश्वरथ] रा० ६८१ से ६८३,६८५।६६० से ६६२, ६६७, ७०६, ७१०, ७१४, ७१६, ७२२,७२४,७२६
आसल [आसल] जी० ३।८१६, ८६०, ६५६
आसव [आश्रव] ओ० ७१,१२०,१६२. रा० ६६८, ७५२ ७८६
आसव [आसव] जी० ३।५८६
आसवोद [आसवोद] जी० ३।२८६
आसवोयग [आसवोदक] रा०१७४
आसा [आशा] ओ० २५, ४६, रा० ६८६
आसाएमाण [आस्वादयत्] रा० ७६५, ८०२
आसाद [आस्वाद] जी० ३।८६०, ८६६, ८७२ ८७८, ६५५, ६६०
आसादणिज्ज [आस्वादनीय] जी० ३।६०२, ८६० ८६६,८७२,८७८,६५५,६६०
आसाय [आस्वाद] जी० ३।६०१ ६०२, ६६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसालिय [आशालिक] जी० १।१०५, ११०, १३३; २।१०५
आसित्त [आसिक्त] ओ० ५५, ६० से ६२
आसिय [आसिक्त] रा० २८१. जी० ३।४४७
आसीत [अशीति] जी० ३।५
आसीविस [आसीविष] जी० १।१०७
√**आह** [ब्रू]—आहंसु जी० १।१०—आहिज्जंति जी० १।१०
आहत [आहत] जी० ३।८४५
आहम्मंत [आहन्यमान] रा० ७७
आहय [आहत] ओ० ६८
√**आहर** [आ+हृ]—आहरेइ ओ० ११८
आहरण [आभरण] ओ० ४६. रा० ६८८
आहाकम्मिय [आधार्कमिक] ओ० १३४
आहार [आहार] ओ० ३३,७३,६२,११७ से ११६. रा० ७३२,७३७,७७२,७६६. जी० १।१४,३३, ५०,५६,६५,८२,८७,६६,१०१,११६,१३३, १३६; ३।६७,१२७,१२६,५६६,६००,६०३, ६३१; ६।६६
आहार [आधार] रा० ६७५
√**आहार** [आ+हारय्]—आहारेइ रा० ७३२—आहारेंति रा० ७०३. जी० १।३३
आहारअपज्जत्ति [आहारापर्याप्ति] जी० १।२७
आहारग [आहारक] जी० ६।३८ से ४०,४६, ५०,५५
आहारगमीसासरीर [आहारकमिश्रकशरीर] ओ० १७६
आहारगसरीर [आहारकशरीर] ओ० १७६ जी० ६।१७८
आहारगसरीरि [आहारकशरीरिन्] जी० ६।१७०, १७३,१८१
आहारत्त [आहारत्व] जी० ३।११००
आहारपज्जत्ति [आहारपर्याप्ति] रा० २७४,७६७ जी० १।२६; ३।४४०
आहारभूय [आधारभूत] रा० ६७५
आहारय [आहारक] जी० ६।३६,४१
आहारसण्णा [आहारसंज्ञा] जी० १।२०,१३२; ३।१२८
आहारित्ता [आहार्य] जी० ३।६०३
आहारेत्तए [आहर्तुम्] ओ० ६३
आहारेमाण [आहरत्] ओ० ३३. रा० ७६५
√**आहाव** [आ+धाव्]—आहावति रा० २८१
आहिय [आख्यात] जी० ३।८३८।३
आहु [आहोतृ] ओ० २
आहुणिज्ज [आहवनीय] ओ० २
आहुणिय [आहुत्य] रा० ६
आहेवच्च [आधिपत्य] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।३५०,३५६,४४८,५६३,६३७,६५६, ७६०,७६३

[इ]

इ [चित्] ओ० ७४।४
इ [इति] जी० ३।६५
√**इ** [इ]—एति जी० ३।१७६—एह रा० ७२३
इइ [इति] रा० २४
इओ [इतस्] ओ० ८८
इंगाल [अङ्गार] रा० ४५. जी० १।७८; ३।८५, ११८
इंगालसोल्लिय [अङ्गारपक्व] ओ० ६४
इंगिय [इङ्गित] ओ० ७०. रा० ८०४
इंद [इन्द्र] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८, ७५५,८४३,८४६,८४७,६३७,१०४८
इंदकील [इन्द्रकील] ओ० १. रा० १३०
इंदखील [इन्द्रकील] जी० ३।३००
इंदगोव [इन्द्रगोप] रा० २७
इंदगोवय [इन्द्रगोपक] जी० ३।२८०
इंदग्गाह [इन्द्रग्रह] जी० ३।६२८
इंदट्ठाण [इन्द्रस्थान] जी० ३।८४६,८४७
इंदधणु [इन्द्रधनुष्] जी० ३।६२६,८४१
इंदभूइ [इन्द्रभूति] ओ० ८२
इंदमह [इन्द्रमह] रा० ६८८,६८६ जी० ३।६१५
इंदाभिसेग [इन्द्राभिषेक] रा० २८२,२८३. जी० ३।४४६,४४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इंदाभिसेय [इन्द्राभिषेक] रा० २७८ से २८१ जी० ३।४४४,४४८,४४९

इंदिय [इन्द्रिय] ओ० ६३. जी० १।१४,२२,८६, ८८,९०,९६,१०१,११९,१२८,१३६; ३।५९२, ६०२,९७६

इंदियपज्जत्ति [इन्द्रियपर्याप्ति] रा० २७४,७९७. जी० १।२६; ३।४४०

इंदियपडिसंलीणया [इन्द्रियप्रतिसंलीनता] ओ० ३७

इंदु [इन्दु] रा० २५५. जी० ३।४१६

इक्कमिक्क [एकैक] जी० ३।१२७

इक्खाग [इक्ष्वाकु] रा० ६८८

इक्खागपरिसा [इक्ष्वाकुपरिषद्] रा० ६१

इक्खुवाड [इक्षुवाट] रा० ७८१,७८४,७८६, ७८७

इगयालीस [एकचत्वारिंशत्] जी० २।७९८

√**इच्छ** [इष्]—इच्छइ रा० ७५१—इच्छसि रा० ७६५—इच्छसी जी० ३।८३८।२६ —इच्छामि रा० ६३—इच्छेज्ज रा० ७५१ —इच्छेज्जा रा० ७५१

इच्छा [इच्छा] ओ० ४६

इच्छापरिमाण [इच्छापरिमाण] ओ० ७७

इच्छिय [इष्ट] ओ० २३,६९. रा० ६९५

इच्छियपडिच्छिय [इष्टप्रतीष्ट] ओ० ६९. रा० ६९५

इट्टावाय [इष्टकापाक] जी० ३।११८

इट्ठ [इष्ट] ओ० १५,६८,११७. रा० ६७२,६८५, ७१०,७५० से ७५३,७७४,७९६. जी० १।१३५; ३।१०९०, १०९९,११२४

इट्ठतर [इष्टतर] जी० ३।१०७८, १०७९

इट्ठतराय [इष्टतरक] रा० २५ से ३१,४५. जी० ३।२७८ से २८४,६०१,६०२,८६०,८६६, ८७२,८७८,९५९,९६१

इड्डुरग [दे०] रा० ७७२

इड्डुरय [दे०] रा० ७७२

इड्डि [ऋद्धि] ओ० ४७,६५,६७,७२,८९ से ९५, ११४,११७,१५५,१५७ से १६०.१६२,१६७. रा० १३,१५ से १७,५५,५६,५८,२८०,२९१, ६५७,७७२,८०३,८०५. जी० ३।४४६,४४८, ४५७,५५७,६०९

इण [एतत्] जी० ३।५

इणं [इदम्] ओ० ७२

इति [इति] रा० ८. जी० ३।११८

इतिहास [इतिहास] ओ० ९७

इत्तरिय [इत्वरिक] ओ० ३२

इत्ति [इति] जी० १।१३९

इत्तो [इतस्] ओ० १९५।१७. रा० २५. जी० ३।२७८

इत्थ [अत्र] जी० ३।२४४

इत्थंठिय [इत्थंस्थित] ओ०७२

इत्थि [स्त्री] जी० २।१०५

इत्थिकहा [स्त्रीकथा] ओ० १०४,१२७

इत्थिया [स्त्री] ओ० ९२. जी० २।११,१५ से १९, ३७,६७ से ७२,७४,१४४,१४६ से १४८,१५१; ३।८८

इत्थिलक्खण [स्त्रीलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

इत्थिवेद [स्त्रीवेद] जी० १।१३६; २।७३,७४; ९।१२६

इत्थिवेदग [स्त्रीवेदक] जी० ९।१३०

इत्थिवेय [स्त्रीवेद] जी० १।२५,१३३

इत्थिवेयग [स्त्रीवेदक] जी० ९।१२१

इत्थिवेयय [स्त्रीवेदक] जी० ९।१२२

इत्थी [स्त्री] ओ० ३७. जी० २।१ से ३,६,१०, १४,२० से ३०,३२ से ३६,३९ से ४९,५४, ५६ से ६६,७०,७६,७८,८०,८३,८५.८९,९४, १०५,१४१ से १५१; ३।१४८,१४९,१६४

इत्थीलिंगसिद्ध [स्त्रीलिङ्गसिद्ध] जी० १।८

इदाणिं [इदानीम्] जी० ३।८४३

इब्भ [इभ्य] ओ० २३,५२,६३. रा० ६८७ से ६८९,६९५,७०४,७५४,७५६,७६२,७६४. जी० ३।६०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इब्भपुत्त [इभ्यपुत्र] रा० ६८८,६८६,६६५
इम [इदम्] ओ० ७. जी० ११२०
इयाणिं [इदानीम्] ओ० ११७. रा० ७५३
इरियासमिय [ईर्यासमित] ओ० २७,१५२,१६४
इव [इव] ओ० २३. रा० ७०. जी० ३।४४८
इसिपरिसा [ऋषिपरिषद्] ओ० ७१. रा० ६१, ७६७
इसिवादिय [ऋषिवादिक] ओ० ४६
इह [इह] ओ० २१. रा० ६८७. जी० ११९
इहं [इह] ओ० २१. रा० ६८७. जी० ३।११६
इहगत [इहगत] रा० ८
इहगय [इहगत] ओ० २१. रा० ७१४
इहभव [इहभव] ओ० ५२. रा० ६८७
इहलोग [इहलोक] ओ० २६

ई

ईयाल [एकचत्वारिंशत्] जी० ३।७३६
ईरियासमिय [ईर्यासमित] रा० ८१३
ईसत्थ [इष्वस्त्र] ओ० १४६. रा० ८०६
ईसर [ईश्वर] ओ० १८,२२,६३,६८. रा० २८२, ६८७,६८८,७०४,७५४,७५६,७६२,७६४. जी० ३।३५०, ४४८,५६३,६०६,६३७,७२३
ईसा [ईषा] जी० ३।२५४
ईसाण [ईशान] ओ० ५१,१६०, १६२. जी० १।५६; २।१६,४७,६६,१४८,१४६; ३।६१६,६२१,१०३८,१०४३,१०४४,१०५७, १०६५,१०६७,१०७१,१०७३,१०७५,१०७७ से १०८३,१०८५,१०८७,१०६०,१०६१, १०६३, १०६७ से १०६६,११०१,११०५, ११०७,११०६ से १११२,१११४,१११५, १११७,१११६,११२१,११२२,११२४,११२८
ईसाणग [ईशानक] जी० ३।१०४३
ईसिं [ईषत्] ओ १३. रा० ४. जी० ३।२६५
ईसिणिया [ईशानिका] ओ० ७०. रा० ८०४
ईसी [ईषत्] ओ० ४७
ईसीपब्भारा [ईषत्प्राग्भारा] ओ० १६१ से १६५
ईहा [ईहा] ओ० ११६,१५६. रा० ७४०
ईहामइ [ईहामति] रा० ६७५
ईहामिअउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्त [ईहामृगवृषभतुरगनरमकरविहगव्यालककिन्नररुरुसरभचमरकुञ्जरवनलतापद्मलताभक्तिचित्र] रा० ८३
ईहामिय [ईहामृग] ओ० १३. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१२६. जी० ३।२८८,३००,३११,३७२

उ

उ [तु] जी० २।१५१
उंबर [उदुम्बर] जी० १।७२
उंबरपुप्फ [उदुम्बरपुष्प] रा० ७५० से ७५३
उक्कंचण [दे०] रा० ६७१
उक्कंचणया [दे०] ओ० ७३
उक्कलियावाय [उत्कलिकावात] जी० १।८१
उक्कस [उत्कर्ष] जी० ५।२८
उक्का [उल्का] रा० ७०,१३३. जी० १।७८; ३।११८,२०३,५६०,११२३
उक्कापात [उल्कापात] जी० ३।६२६
उक्कामुह [उल्कामुख] जी० ३।२१६,२२६
उक्किट्ठ [उत्कृष्ट] ओ० ५२. रा० १०,१२,५६, २७६,६८७,६८८. जी० ३।८६,१७६,१७८, १८०,१८७,४४५,८४२,८४५
उक्किट्ठि [उत्कृष्टि] जी० ६।४४७
उक्किट्ठिया [उत्कृष्टिका] रा० २८१
उक्किरिज्जमाण [उत्कीर्यमाण] रा० ३०. जी० ३।२८३
उक्कुडुयासणिय [उत्कुटुकासनिक] ओ ३६
उक्कोडिय [औत्कोटिक] ओ० १
उक्कोस [उत्कर्ष] ओ० ६४,६५,११४,१५५,१५७, १५६,१६०,१६२,१६७,१८७,१८८,१६५।५. जी० १।१६,५२.५६,६५,७४,७६,८२,८६ से ८८,६०,६४,६६,१०१,१०३, १११,११२,११६, ११६,१२१,१२३ से १२५,१३०,१३३,१३५

से १४०,१४२; २।२० से २२,२४ से ५०, ५३, से ६१,६३,६५ से ६७, ७३,७९,८२ से ८४,८६ से ८८,९० से ९३,९७ १०० से १११, ११३,११४,११६ से १३३,१३९; ३।८६,८९, ९१,१०७,११८ से १२०,१२९।२,१३६,१६१, १६२,१६५,१७६,१७८,१८०,१८२,१८६ से १९२,२१८,६२९,८४४,८४७,८६०,९६९, १०२२,१०२७ से १०३६,१०८३,१०८४, १०८७,१०८९,११११,११३१,११३२,११३४ से ११३७; ४।३ से ११,१६.१७; ५।५,७,८, १० से १६,२१ से २४,२८ से ३०; ६।२,३, ६,८ से ११; ७।३,५.६,१०,१२ से १८; ९।२ से ४,२३ से२६,३१,३३,३४,३६,४०,४१, ४३,४७,४९,५१,५२,५७ से ६०,६८ से ७३, ७७,७८,८०,८३,८५,८९,९०,९२,९३,९६,९७, १०२,१०३,१०५,१०६,११४,११५,११७,११८, १२३ से १२८,१३२,१३४,१३६,१३८,१४२, १४४,१४६,१४९,१५०,१५२,१५३,१६० से १६२,१६४,१६५,१७१ से १७३,१७६ से १७८, १८६ से १९१,१९३,१९४, १९८ से २००, २०२ से २०४,२०६,२०७,२१० से २१४, २१६ से २१८,२२२ से २२५,२२८,२२९, २३४,२३६,२३८,२४१ से २४४,२४६,२५७ से २६०,२६२,२६४,२६९,२७१,२७३,२७७ स २८२

उक्कोसपद [उत्कर्षपद] जी० ३।१९५ से १९७

उक्कोसपय [उत्कर्षपद] जी० ३।१९५

उक्खित्त [उत्क्षिप्त] रा० ११५. जी० ३।४४७

उक्खित्तचरय [उत्क्षिप्तचरक] ओ० ३४

उक्खित्तणिक्खित्तचरय [उत्क्षिप्तनिक्षिप्तचरक ओ० ३४

उक्खित्तय [उत्क्षिप्तक] रा० १७३,२८१. जी० ३।२८५

उक्खु [इक्षु] जी० ३।६२१

उक्खेवण [उत्क्षेपन] ओ० १८०

उग्ग [उग्र] ओ २३,५२. रा० ६८७ से ६८९,६९५

उग्गत [उद्गत] जी० ३।३००,५९५

उग्गतव [उग्रतपस्] ओ० ८२

उग्गपुत्त [उग्रपुत्र] ओ० ५२. रा० ६८७ से ६८९, ६९५

उग्गमणुग्गमणपविभत्ति [उद्गमनोद्गमनप्रविभक्ति] रा० ८६

उग्गय [उद्गत] रा० १७,१८,२०,३२,१२९. जी० ३।२८८,३७२,५९०

√उग्गलच्छाव [दे०]—उग्गलच्छावेमि रा० ७५४

उग्गलच्छाविता [दे०] रा० ७५४

उग्गह [अवग्रह] रा० ७४०,७४१

उग्घोसेमाण [उद्घोषयत्] रा० १३,१५

उच्च [उच्च] जी० ३।३१३

उच्चंतग [उच्चन्तक] रा० २६. जी० ३।२७९

उच्चत्त [उच्चत्व] ओ० १८७. रा० ४०,१२७ से १२९,१३७,१८६,१८९,२०४ से २१२,२२२, २२७,२३१,२३९,२४७,२५१,२५३. जी० ३।१२७,२६१ से २६३,३००,३०७, ३५२ से ३५५,३५९,३६४,३६८ से ३७४, ३७६,३८१,३८६,३९३,४०१,४१२,४१४, ५६६,५९७,६३२,६३४,६४६,६४७,६५२ ६६१, ६६३,६७२ से ६७५,६७९,६८९,७०६,७१३, ७३६,७३७,७५६,७६५,८३९,८८२,८८४, ८८५,८८७,८८८,८९४,८९८,९००,९०७, ९११,९१८,१०६७,१०६९,१०७०

उच्चार [उच्चार] रा० ७९६

उच्चारण [उच्चारण] ओ० १८२

उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिय [उच्चारप्रस्रवणक्ष्वेलसिंघाणजल्लपारिष्ठापनिकीसमित] ओ० २७,१५२,१६४. रा० ८१३

उच्चावय [उच्चावच] ओ० १४०,१५४,१६५, १६६. रा० ७६६,८१६. जी० ३।२३९,९८२

उच्छंग [उत्सङ्ग] ओ० ६४

√उच्छल [उत्+शल्]—उच्छलेंति रा० २८१. जी० ३।४४७

उच्छलंत [उच्छलत्] ओ० ४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्छायणया [उच्छादना] रा० ६७१

उच्छु [इक्षु] ओ० १. जी० ३।८७८,६६१

√उच्छुभ [उत्+क्षिप्]—उच्छुभइ. रा० ७८५

उच्छूढ [उत्क्षिप्त] ओ १६. जी० ३।५६६

उच्छूढसरीर [उत्क्षिप्तशरीर] ओ० ८२. रा० ६८६

उज्जम [उद्यम] ओ० ४६

उज्जल [उज्ज्वल] ओ० ५,८,१६,५७. रा० ३२, ६६,७०,२४६,७६५. जी० ३।११०,१११, ११७,२७४,३७२,४१०,५८६ से ५६१,५६६

उज्जाण [उद्यान] ओ० १,३७. रा० १२,६५४, ६५५,६७०,७०६,७११,७१३,७१६,७१६, ७२६. जी० ३।५५४

उज्जाणपालग [उद्यानपालक] रा० ७०७,७१३,७१४

उज्जाणपालय [उद्यानपालक] रा० ७०६

उज्जाणभूमि [उद्यानभूमि] रा० ७३२,७३७,७४७

उज्जालिय [उज्ज्वालित] जी० ३।५८६

उज्जु [ऋजु] ओ० १६,४७. जी० ३।५६६,५६७

उज्जुमइ [ऋजुमति] ओ० २४. रा० ७४४

उज्जुय [ऋजुक] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७

उज्जुसेढी [ऋजुश्रेणी] ओ० १८२

उज्जोइय [उद्द्योतित] जी० ३।५६८

उज्जोएमाण [उद्द्योतयत्] जी० ३।३०३

उज्जोय [उद्द्योत] ओ० १२. रा० २१, २३,२४, ३२, ३४,३६,१२४,१४५,१५७,२२८,२५७. जी० ३।२६१,२६६,२६६,२७७,३८७,५८६, ५६०,६७२

√उज्जोव [उद्+द्युत]—उज्जोवेइ. रा० ७७२, जी० ३।३२७—उज्जोवेति. रा० १५४. जी० ३।३२७—उज्जोवेति. रा० १५४ जी० ३।७४१

उज्जोविय [उद्द्योतित] ओ० ५१,६३,६५

उज्जोवेमाण [उद्द्योतयत्] ओ० ४७,७२. रा० ७०, १३३. जी० ३।११२१,११२२

उट्ट [उष्ट्र] ओ०१०१,१२४. जी० ३।६१८

उट्टियासमण [उष्ट्रिकाश्रमण] ओ० १५८

उट्टी [उष्ट्री] जी० ३।६१६

√उट्ठा [उत्+स्था]—उट्ठेइ. ओ० ७८. रा०६६५ —उट्ठेंति. ओ० ८१.—उट्ठेति. रा० ६०

उट्ठा [उत्था] ओ० ७८.८०.८१,८३. रा० ६०,६२, ६६५,७००,७१८,७८०

उट्ठिय [उत्थित] ओ० २२. रा० ७७७,७७८, ७८८

उट्ठेत्ता [उत्थाय] ओ० ७८. रा० ६०

उडव [उटज] तापसगृह जी० ३।७८

√उड [दे०]—उडुइज्जइ. रा० ७८५

उडुवइ [उडुपति] ओ० १६

उडुवति [उडुपति] जी० ३।५६६

उड्ढ [उर्ध्व] ओ० ११६.१८२,१६२. रा० १२४, १२७ से १२६,१३७,१८६,१८६,२०४ से २१२, २२२,२२७,२३१,२३६,२४७,२५१,२५३, ७५३. जी० १।४५; ३।२५७,२६१ से २६३, ३००,३०७,३५२ से ३५५,३५६.३६४,३६८ से ३७४,३७६,३८१,३८६,३६३,४०१,४१२, ४१४,५६६,६३२,६३४,६४६,६४७,६६१, ६६३,६७२ से ६७५,६७६,६८६,७०६,७१३, ७३६,७३७,७५६,८३८।१२,८३६,८४२,८४५, ८८२,८८४,८८५,८८७,८८८,८६४,८६८, ६००,६०७,६११,६१८,१०३८,१०६७,१०६६, १०७०,११११

उड्ढंजाणु [उर्ध्वजानु] ओ० ४५.८२

उड्ढवाय [ऊर्ध्ववात] जी० १।८१

उड्ढीमुह [उड्ढीमुख] जी० ३।८४२

उण्णइय [उन्नतिक] ओ० ६ जी० ३।२७५,२८६, ६३६,८५७,८६३

उण्णत [उन्नत] रा० २४५

√उण्णम [उत्+नम्]—उण्णमंति. रा० ७५

उण्णमित्ता [उन्नम्य] रा० ७५

उण्णय [उन्नत] ओ० १,१६. जी० ३।४०७,५६६, ५६७

उण्णयासण [उन्नतासन] रा० १८१,१८३, जी० ३।२६३

√**उण्णाम** [उद्+नामय्]—उण्णामिज्जइ. जी० ३।७२६

उण्ह [उष्ण] ओ० ११७. रा० ७२८,७६६. जी० ३।११८,११६

उत्तप्प [उत्तप्त] रा० ७३२,७३७

उत्तम [उत्तम] ओ० २३,५१. रा० २६२. जी० ३।४५७,५६२,५६६ से ५६८

उत्तमंग [उत्तमाङ्ग] जी० ३।५६६

उत्तर [उत्तर] ओ० २१. रा० १६,४०,४१,४४. १३२,१७०,१७३,२१०,२१२,२३५,२३६, ६५८,६६४,६८५,७६५,८०२. जी० २।४८; ३।५,२२,२७,६३,६६ से ७२,७७,२२६,२२७, २३२,२५७,२६५,२८५,३३६,३४५,३५८, ३७३,३६७,३६८,५५८,५६२,५६६,५६६, ५७७,५६५,५६७,६०१,६६५,६३८,६३६, ६४७,६५७,६६०,६६१,६६५,६६६,६७३, ६८०, ६८२,६८६,६६२,६६५,६६६,७०१, ७११, ७१३,७२२,७३६,७४५,७४७,८१२, ८३६,८८२,८८५,६०२,१००४,१००६,१०१५

उत्तरंग [उत्तरङ्ग] रा० १३०. जी० ३।३००

उत्तरकुरा [उत्तरकुरु] जी० २।१३; ३।५७८, से ५६७,६०५ से ६२८,६३१,६३२,६३६,६६६, ६६८,७०२

उत्तरकुरा [उत्तरकुरा] जी० ३।६१६,६३७

उत्तरकुरु [उत्तरकुरु] जी० २ ३३,६०,७०,७२, ६६,१३७,१३८,१४७,१४६; ३।२१८,२२८, ७६५

उत्तरकुरुद्दह [उत्तरकुरुद्रह] जी० ३।६६६

उत्तरकूलग [उत्तरकूलक] ओ० ६४

उत्तरतर [उत्तरतर] ओ० ७६ से ८१

उत्तरपच्चत्थिम [उत्तरपाश्चात्य] जी० ३।२२५, ६८८,७५३

उत्तरपच्चत्थिमिल्ल [उत्तरपाश्चात्य] जी० ३।२२१, ६६६,६६७,६१८,६२२

उत्तरपासग [उत्तरपार्श्वक] रा० १३०

उत्तरपासय [उत्तरपार्श्वक] जी० ३।३००

उत्तरपुरत्थिम [उत्तरपौरस्त्य] ओ० २. रा० २, १०,१२,१८,४१,५६,६५,२०६,२४६,२५१, २६०,२६२,२६५,२६७,२६६,२७२,२७३, २७६,६५८,६७०,६७८. जी० ३।३३६,३७२, ४०८,४१२,४२१,४२५,४२६,४३१,४३४, ४३७,४३८,४४५,५५८,६३५,६५७,६६८, ६८०,६८३,७५०

उत्तरपुरत्थिमिल्ल [उत्तरपौरस्त्य] जी० ३।२१७, २२२,५५६,६८६,६६८,६१८,६१६.

उत्तरमंदा [उत्तरमन्द्रा, उत्तरमन्दा] रा० १७३. जी० ३।२८५

उत्तरवेउव्विय [उत्तरवैक्रिय] रा० १०,४७. जी० १।६४,६६,१३५,१३६; ३।६१,६३,४४६, १०८७,१०८८,१०६१,११२१,११२२

उत्तरागार [उत्तराकार] रा० १६५

उत्तरासंग [उत्तरासङ्ग] ओ० २१,५४. रा० ८, ७१४

उत्तरासंगकरण [उत्तरासङ्गकरण] ओ० ६६. रा० ७७८

उत्तरिज्ज [उत्तरीय] ओ० ६३

उत्तरित्तए [उत्तरीतुम्] ओ० १२२

उत्तरिल्ल [औदीच्य,औत्तराह] रा० ४८,५६, ५७,२६७,३०२,३०७,३१३ से ३१६,३१८, ३२१ से ३३१,३३६,३४१ ३४६,३७६,३६४, ४३५, ४५३,४६६,५१४,५५६,५७४,६१६, ६३४. जी० ३।३३,३६,३८,२२७,२४०,२४८, २५०,२५६,४६२,४६७,४७२ ४७८ से ४८१, ४८३,४८६ से ४६६,५०१,५०६,५११,५२३, ५२४,५२६,५३०,५३७,५३८,५४४,५४५, ५५१,५५२,६७३,६६७,६६८,६१६

उत्ताणग [उत्तानक] ओ० १

उत्ताणयछत्त [उत्तानकछत्र] ओ० १६४

उत्तालिज्जंत [उत्ताड्यमान] रा० ७७

उत्तासणय [उत्त्रासनक] जी० ३।८३

उत्तिमंग [उत्तमाङ्ग] ओ० १६. जी० ३।५६७

उद [उद] जी० ३।२८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदंक [उदङ्क] जी० ३।५८७
उदक [उदक] रा० २६. जी० ३।८१६
उदकजोणिय [उदकयोनिक] जी० ३।७८७
उदग [उदक] ओ० ६३,११७. रा० १५१,२७६, २८१. जी० ३।४४५,४४७,७२१,७२६,८५४, ८५७,६४६
उदगत्त [उदकत्व] जी० ३।७८७
उदगमच्छ [उदकमत्स्य] जी० ३।६२६,८४१
उदगमाल [उदकमाल] जी० ३।७६२
उदगरस [उदकरस] रा० २३३. जी० ३।२८६, ८१६,८५४,६५६,६५७,६६४
उदगवारग [उदकवारक] जी० ३।११८
उदग्ग [उदग्र] जी० ३।८३६
उदधि [उदधि] जी० ३।१०६,५६७
उदय [उदय] ओ० ३७,११६,११७
उदय [उदक] ओ० ६,१११ से ११३,११७,१३७, १३८. रा० ६,२८०,२८२,२६१,३५१. जी० ३।३२४,४४६,४४८,७२६,८६०,८६६, ८७२,८७८,६४६,६५५,६५७,६६१
उदयपत्त [उदयप्राप्त] ओ० ३७
उदर [उदर] जी० ३।५६६
उदहि [उदधि] ओ० ४८
√उदि [उद्+इ]—उदेंति. जी० ३।१७६
उदीण [उदीचीन] रा० १२४. जी० ३।५७७, १०३६
उदीणवाय [उदीचीनवात] जी० ११८१
√उदीर [उद्+ईरय्]—उदीरइ. रा० ७७१. —उदीरेंति, जी ३।११०
उदीरंत [उदीरयत्] रा० ७७१
उदीरण [उदीरण] ओ० ३७
उदीरिय [उदीरित] रा० १७३,७७१. जी० ३।२८५
उदु [ऋतु] जी० ३।६४१
उद्दंडग [उद्दंडक] ओ० ६४
उद्दवणकर [उद्द्रवणकर] ओ० ४०
उद्दवेत्ता [उद्द्रुत्य] रा० ७६१
उद्दा(ण) [दे०] जी० ३।८७२
उद्दाइत्ता [अवद्राय, अवद्रुत्य] जी० ३।५७५
उद्दाल [अवदाल] रा० २४५. जी० ३।४०७
उद्दाल [उद्दाल] जी० ३।६३१
उद्दालक [उद्दालक] जी० ३।५८२
उद्दिट्ठ [उद्दिष्ट] जी० ३।८३८।२५
उद्दिट्ठा [दे० उद्दिष्टा] ओ० १२०,१६२. रा० ६६८,७५२.७८६. जी० ३।७२३,७२६
उद्देसिय [औद्देशिक] ओ० १३४
उद्धंसणा [उद्धर्षणा] रा० ७६६
उद्धंसित्तए [उद्धर्षितुम्] रा० ७६६
उद्धंमत [उद्धमत्] जी० ३।७३१
उद्धम्ममाण [उद्हन्यमान] ओ० ४६
उद्धायमाण [उद्धावत्] ओ० ४६
उद्धार [उद्धार] जी० ३।६७३
उद्धारसमय [उद्धारसमय] जी० ३।६७३
उद्धारसागरोवम [उद्धारसागरोपम] जी० ३।६७३
उद्धिय [उद्धृत] ओ० १४. रा० ६७१
उद्धुय [उद्धूत] ओ० २,५५,६४. रा० ६,१२३२, ५०,५२.५६,१३२,१३७,२३१,२३६,२४७, २८१. जी० ३।८६,१७६,१७६,१८०,१८२, ३०२,३०७,३७२,३६३,३६८,४४५,४४७, ४५१
उद्धुमंत [उद्ध्मायमान] रा० ७७
उद्धुव्वमाण [उद्धूयमान] ओ० ६५
उद्धूय [उद्धूत] रा० १०,१२,५६,२७६
उन्नइय [उन्नतिक] जी० ३।११८,११६
उन्नय [उन्नत] ओ० १६ जी० ३।५६७,५६८
उपप्पुय [उपप्लुत] जी० ३।११६
उप्पइत्ता [उत्पत्य] ओ० १६२. जी० ३।१०३८
उप्पण्ण [उत्पन्न] ओ० १६६. रा० ७७१
उप्पण्णकोऊहल्ल [उत्पन्नकौतूहल्ल] ओ० ८३
उप्पण्णसंसय [उत्पन्नसंशय] ओ० ८३
उप्पण्णसड्ढ [उत्पन्नश्रद्ध] ओ० ८३
उप्पतित्ता [उत्पत्य] जी० ३।२५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पत्ति [उत्पत्ति] ओ० १८४
उप्पत्तिया [औत्पत्तिकी] रा० ६७५
√उप्पय [उत्+पत्]—उप्पयंति. रा० २८१. जी० ३।४४७
उप्पल [उत्पल] ओ० १२,२२,१५०. रा० २३, १३१,१४७,१४८,१७४,१९७,२७६ से २८१, २८८,२८६,७२३,७७७,७७८,७८८. जी० ३।११८, ११६,२५६,२६६,२८६,२६१, ३०१,४४५, ४४७,४५४,४५५,५६८,६३७, ६५६,६६४,७३८,७४३,७५०,७६३,७६५, ७७५,८४१,६३७
उप्पलगुम्म [उत्पलगुल्म] जी० ३।६८६
उप्पलवेंटिय [उत्पलवृन्तिक] ओ० १५८
उप्पला [उत्पला] जी० ३।६८६
उप्पलुज्जला [उत्पलोज्वला] जी० ३।६८६
उप्पाइत्ता [उत्पाद्य] जी० १।५०
उप्पाइयपव्वय [औत्पातिकपर्वत] ओ० ५७
√उप्पाड [उत्+पादय्]—उप्पाडेंति ओ० १६६
उप्पाडणय [उत्पाटना] ओ० १०३,१२६
उप्पातपव्वतग [उत्पातपर्वतक] जी० ३।६४८
उप्पातपव्वय [उत्पातपर्वत] जी० ३।८५७
उप्पाद [उत्पाद] जी० ३।६१७
उप्पाय [उत्पाद] जी० ३।१२६।१०
उप्पायनिवायपसत्त [उत्पादनिपातप्रसक्त] रा० १११,२८१. जी० ३।४४७
उप्पायपव्वत [उत्पातपर्वत] जी० ३,२६३
उप्पायपव्वय [उत्पातपर्वत] रा० १८१. जी० ३।२६२,८५७
उप्पायपव्वयग [उत्पातपर्वतक] रा० १८०
उप्पि [उपरि] ओ० १६८. रा० २१. जी० ३।८०
उप्पिंजलभूत [उत्पिञ्जलभूत] रा० ७८
√उप्पील [उत्+पीड्]—उप्पीलेति. जी० ३।७६५
उप्पीलिय [उत्पीडित] ओ० ५७. रा० ६६,६६४, ६८३. जी० ३।५६२

उप्फेस [दे०] ओ० ६६
√उब्भाम [उद्+भ्रामय्]—उब्भामेइ. रा० ७२७
उब्भिज्जमाण [उद्भिद्यमान] जी० ३।२८३
उभओ [उभतस्] ओ० ६६,११५. रा० १३१ से १३८,२४५,२५६,२७६. जी० ३।३०१ से ३०७,३१५,३५५,४०७,४१७,६३२,६३६, ७८८ से ७६०,८३६
उभय [उभय] जी० ३।४४५
उभयओ [उभयतस्] जी० ३।८८६
उम्मज्जग [उन्मज्जक] ओ० ६४
उम्माण [उन्मान] ओ० १५,१४३. रा० ६७२, ६७३,८०१
उम्मि [ऊर्मि] रा० ६८७
उम्मिलित [उन्मीलित] जी० ३।३०७
उम्मिलिय [उन्मीलित] ओ० २२. रा० १३७, ७२३,७७७,७७८,७८८
उम्मिसिय [उन्मिषित] जी० ३।११८,११६
उम्मुक्क [उन्मुक्त] ओ० १६५।२० रा० ८०६, ८१०
उयगरस [उदकरस] रा० १७४
उयर [उदर] ओ० १६
उर [उरस्] ओ० ७१. रा० ६१,७६
उरग [उरग] जी० ३।८८
उरगपरिसप्प [उरगपरिसर्प] जी० २।११३
उरत्थ [उरःस्थ] जी० ३।५६३
उरपरिसप्प [उरःपरिसर्प] जी० १।१०४,१०५, १११,१२२ से १२४; २।२४,१२२; ३।१४३, १४४,१६२
उरपरिसप्पी [उरःपरिसर्पिणी] जी० २।७,८,५२
उरब्भ [उरभ्र] रा० २४,२७. जी० ३।२७७,२८०
उरस्स [औरस्य] रा० १२,७५८,७५६. जी० ३।११८
उराल [दे० उदार] रा० ४०,७८,१३२,१७३, ७५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्ल [आर्द्र] रा० ७५३
√**उल्लंघ** [उत्+लङ्घ्]—उल्लंघेज्ज. ओ० १८०
उल्लंघण [उल्लङ्घन] ओ० ४०
√**उल्लाल** [उत्+लालय्]—उल्लालेति. रा० १४
उल्लालिय [उल्लालित] रा० १४
उल्लालेमाण [उल्लालयत्] रा० १३
उल्लिहिय [उल्लिखित] ओ० १५ रा० ६७२
उल्लोइय [दे०] ओ० २,५५. रा० ३२,२८१. जी० ३।३७२,४४७
उल्लोग [उल्लोक] जी० ३।३५५,८८८
उल्लोय [उल्लोक] रा० ३४,६६,१३०,१६४, १८६,२०४ से २०७,२१३,२१६,२६७,२५१, २६०. जी० ३।३००,३०८,३३७,३५६,३५९, ३६४.३६८ से ३७१,३७४,३९९,४१२,४२१, ४२६,६३४,६४८,६७३,९०४
उवइय [उपचित] ओ० १९. जी० ३।५९६
उवउत्त [उपयुक्त] ओ० १८२ से १८४,१९५।११. रा० १५. जी० १।३२,८७,१३२,१३३; ३।१०६,१५४,१११०; ९।३६,३७
उवएस [उपदेश] ओ० ५७. रा० ७४८ से ७५०, ७६५,७६६,७७०,७७३
उवएसरुइ [उपदेशरुचि] ओ० ४३
उवओग [उपयोग] ओ० ४६. जी० १।४,९६, १०१,११९,१२८,१३३.१३६; ३।१२७।४, १६०; ९।६६
उवकरण [उपकरण] ओ० ३३
उवकरणत्त [उपकरणत्व] जी० ३।११२८,११३०
उवकारियलयण [उपकारिकालयन] रा० १८९
√**उवक्खड** [उप+स्कृ]—उवक्खडावेस्संति. रा० ८०२
उवक्खड [उपस्कृत] जी० ३।५९२
उवक्खडावेत्ता [उपस्कृत्य] रा० ७८७
उवग [उपग] जी० ३।८३८।२१
उवगत [उपगत] रा० ७६०. जी० ३।१११.३०३
उवगय [उपगत] ओ० ६३,७४।५,१९५।१३. रा० १२,१३३,६८६,७३२,७३३,७३७,७५८, ७५९,७६१,७६५. जी० ३।११८
उवगरण [उपकरण] ओ० ३३. रा० ७५९,७६१
उवगाइज्जमाण [उपगीयमान] रा० ६८५,७१०, ८०४
उवगारियालयण [उपकारिकालयन] रा० १८८. जी० ३।३६१ से ३६४
उवगिज्जमाण [उपगीयमान] रा० ७७४
उवगूढ [उपगूढ़] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५
उवगूहिज्जमाण [उपगूह्यमान] रा० ८०४
उवचय [उपचय] रा० ७५२,७५३
उवचित [उपचित] जी० ३।२५९
उवचिय [उपचित] ओ० २,१९,५५. रा० २०, ३२,३७,१३०,१७४,२८१. जी० ३।११८ ११९,२८६,२८८,३००,३११,३७२,४४७,५९६
उवच्छइ [उपस्तृत] रा० ७७४
उवजुंजिऊण [उपयुज्य] जी० ३।७७
उवज्झाय [उपाध्याय] ओ० ४०,१५५
उवज्झायवेयावच्च [उपाध्यायवैयावृत्य] ओ० ४१
√**उवट्ठव** [उप+स्थापय्]—उवट्ठवेइ. रा० ७२५ —उवट्ठवेंति. रा० २७९. जी० ३।४४५
उवट्ठवेत्ता [उपस्थाप्य] ओ० ५८. रा० ६८१
उवट्ठाणसाला [उपस्थानशाला] ओ० १८,२०,५३, ५५,५८,६२,६३. रा० ६८३,६८५,७०८, ७५४,७५६,७६२,७६४
उवट्ठाविय [उपस्थापित] ओ० ६२
उवट्ठिय [उपस्थित] ओ० ७६,७७
उवणगरग्गाम [उपनगरग्राम] ओ० १९,२०
उवणच्चिज्जमाण [उपनृत्यमान] रा० ७१०,७७४, ८०४
उवणिग्गय [उपनिर्गत] ओ० ५,८
√**उवणिमंत** [उप+नि+मन्त्रय्]—उवणिमंतिज्जाह. रा० ७०६—उवणिमंतिस्संति. रा० ७०४—उवणिमंतेज्जा. रा० ७७६. —उवणिमंतिहिंति ओ० १४९. रा० ८१०
उवणिविट्ठ [उपनिविष्ट] रा० १३८. जी० ३।२८८

√**उवणी** [उप+नी] —उवणेइ. रा० ६८३ —उवणेंति. रा० २८७. जी० ३।४५० —उवणेहि. रा० ६८० —उवणेहिइ. रा० ८०७ —उवणेहिंति ओ० १४५. रा० ८०५ —उवणेहिति ओ० १४६

उवणीत [उपनीत] जी० ३।८८६

उवणीय [उपनीत] रा० ७२०,७२३. जी० ३।५९२,६०१

उवणीयअवणीयचरय [उपनीतअपनीतरचरक] ओ० ३४

उवणीयचरय [उपनीतचरक] ओ० ३४

उवणेय [उपनेय] रा० ७२०

√**उवदंस** [उप+दर्शय्]—उवदंसिस्सामि. रा० ७७१ —उवदंसेंति. रा० ७९. जी० ३।४४७ —उवदंसेह. रा० ७३

उवदंसित्तए [उपदर्शयितुम्] रा० ६३

उवदंसित्ता [उपदर्श्य] रा० ७३

उवदंसेमाण [उपदर्शयत्] रा० ५६

उवदिट्ठ [उपदिष्ट] ओ० ४६

उवद्दव [उपद्रव] जी० ३।६२४

उवनच्चिज्जमाण [उपनृत्यमान] रा० ६८५

√**उवनिमंत** [उप+नि+मन्त्रय्]—उवनिमंतेंति. रा० ७१३

उवनिविट्ठ [उपनिविष्ट] रा० २०

उवप्पयाण [उपप्रदान] रा० ६७५

उवभोगपरिभोगपरिमाण [उपभोगपरिभोग-परिमाण] ओ० ७७

उवमा [उपमा] ओ० १३,२३,१९५।१६. रा० १५९,७५२,७५४,७५६,७५८,७६०,७६२, ७६४. जी० ३।१२७,२३२

उवमा [दे०] खाद्य-विशेष जी० ३।६०१

उवयार [उपचार] ओ० २,१५,५५. रा० १२,३२, ७०,२८१,२९१,२९३ से २९६,३००,३०५, ३१२,३५४,६७२,८०९,८१०. जी० ३७२, ४४७,४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६, ५२०,५५४,५८०,५९१,५९७

उवयारियालयण [उपकारिकालयन] रा० २०३

उवयारियालेण [उपकारिकालयन] रा० २०१, २०२

उवरि [उपरि] रा० १३०. जी० ३।२६४

उवरिं [उपरि] ओ० १२. रा० ३७. जी० ३।७७

उवरिचर [उपरिचर] जी० ३।११७

उवरिम [उपरितन] ओ० १६०. जी० ३।७१,७२, ३१७, ३४६,३५७

उवरिमगेविज्ज [उपरितनग्रैवेय] जी० २।९६

उवरिमगेवेज्ज [उपरितनग्रैवेय] जी० २।१४८,१४९

उवरिमगेवेज्जग [उपरितनग्रैवेयक] जी० ३।१०५६

उवरिल्ल [उपरितन] ओ० १९२,१९५. जी० ३।६० से ७०,७२,६७४,७२५,७२८,१००३ से १००७,१११९

√**उवलंभ** [उप+लभ्]—उवलभेज्जा. जी० ३।११८—उवलभिस्साम. रा० ७६८

उवलद्ध [उपलब्ध] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८, ७५२,७८९

उवलालिज्जमाण [उपलाल्यमान] रा० ६८५, ७१०,७७४,८०४

√**उवलिप** [उप+लिप्]—उवलिप्पइ. ओ० १५०. रा० ८११—उवलिप्पिहिति. ओ० १५०. ८११

उवलित्त [उपलिप्त] ओ० ५५,६० से ६२. रा० २८१,८०२. जी० ३।४४७

उवलेवण [उपलेपन] रा० ७७२

√**उववज्ज** [उप+पद्]—उववज्जइ. ओ० ८७ —उववज्जंति. ओ० ७३. जी० १।५१ —उववज्जिहिति ओ० १४०—उववज्जिहिसि रा० ७५०

उववण्ण [उपपन्न] ओ० ११७. रा० २७९,७५० से ७५३,७९६. जी० ३।५३,११७,१२९।५, ४३९,४४०,४४५,८३८।२१,८४३,८४६

उववण्णग [उपपन्नक] रा० २७६ से २७८,२८४, २८७,६६६. जी० ३।४४३ से ४४५,८४२, ८४५

उववण्णपुव्व [उपपन्नपूर्व] जी० ३।५३,९७५,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११२८,११३०

उववत्तु [उपपत्तृ] ओ० ७२,८६ से ६५,११४, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७

उववन्नपुव्व [उपपन्नपूर्व] जी० ३।१२७

उववात [उपपात] जी० १।१२८; ३।८८,८४४, ८४७,८५६,८८०,६४६,१०८२

उववातसभा [उपपातसभा] रा० २७४. जी० ३।४३६

उववाय [उपपात] ओ० ८६ से ६५,११४,११७, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० ८१५. जी० १।१४,५१,५६,६५.७६,८२,८७,६६, १०१,११६,१३३,१३६; ३।१२७।३,१२६।६, १६०

उववायसभा [उपपातसभा] रा० २६०,२६२, २६६,२७७,४१४ से ४१६,४३५,४५३,४५४, ७६६. जी० ३।४२१,४२४,४२५,४४३,५२६ से ५३१

उवविणिग्गय [उपविनिर्गत] जी० ३।२७४

√उवविस [उप+विश्]—उवविसइ. रा० ७४८ —उवविसामि. रा० ७४७

उववेत [उपपेत] जी० ३।६०१,६०२,८६०,८६६, ८७२,८७८

उववेय [उपपेत] ओ० १,१५,१४३. रा० ६६,७०, १७३,६७२,६७३,६७५,८०१. जी० ३।२८५, ५८६ से ५६६

उवसंत [उपशान्त] ओ० ६१. रा० ६,१२,२८१. जी० ३।४४७,७६५,८४१

उवसंतया [उपशान्तता] ओ० ११६

उवसंपज्जित्ताणं [उवसंपद्य] ओ० ३७. रा० ६६६. जी० ३।८४३

उवसग्ग [उपसर्ग] ओ० ११७,१५४,१६५,१६६. रा० ७०३,७६६,८१६

उवसम [उपशम] ओ० ७६ से ८१

√उवसम [उप+शम्]—उवसमंति रा० १२ —उवसामंति रा० १२

उवसमित्ता [उपशम्य] रा० १२

उवसामित्ता [उपशाम्य] रा० १२

उवसोभित [उपशोभित] जी० ३।२६५,३०२, ३४६

उवसोभिय [उपशोभित] ओ० ६४. रा० २४,४०, ५१,१२८,१३२,१६५,१७१,२३७. जी० ३।३०६,३५३,३५७,३६०

उवसोभेमाण [उपशोभमान] रा० ४०,१३२, १३५,१६१,२३६,७८२. जी० ३।२६५,३०२, ३०५,३१३,३६८,५८०,५८१

उवसोहिय [उपशोभित] जी० ३।२७७

उवस्सय [उपाश्रय] रा० ७१६

उवहाण [उपधान] ओ० ३०

उवहिविउस्सग्ग [उपधिव्युत्सर्ग] ओ० ४४

√उवागच्छ [उप+आ+गम्]—उवागच्छइ. ओ० २०. रा० ४७. जी० ३।४५७ —उवागच्छंति. ओ० ५२. रा० १०. जी० ३।४४२—उवागच्छति रा० १४. जी० ३।४४३—उवागच्छामि. रा० ७५४

उवागच्छित्ता [उपागम्य] ओ० २०. रा० १०. जी० ३।४४२

उवागय [उपागत] ओ० १६,२०

उवाय [उपाय] ओ० १८२

उवायण [उपायन] रा० ७२०,७२३

√उवालंभ [उप+आ—लभ्]—उवालभइ. रा० ७६७

उवालभित्ता [उपालभ्य] रा० ७६७

उवासगदसाधर [उपासकदशाधर] ओ० ४५

√उवे [उप+इ]—उवेइ ओ० ११८.—उवेंति. ओ० ७४. जी० ३।६०३

उव्वट्टणा [उद्वर्तना] जी० १।६६; ३।१२१,१२७। ५,१५६; ६३१।३

उव्वट्टित्ता [उद्वर्त्य] जी० १।५४

उव्वट्टिय [उद्वृत्त] जी० ३।११८,११६,१२१

उव्वलण [उद्वलन] ओ० ६३

उव्विग्ग [उद्विग्न] ओ० ४६. जी० ३।२१६

उव्विद्ध [उद्विद्ध] ओ० १
उव्वेग [उद्वेग] जी० ३।६२८
उव्वेध [उद्वेध] जी० ३।७३६,७६४,६००,६०१,
६१०,६११
उव्वेह [उद्वेध] रा० २२७,२३१,२३३,२३६,२४७,
२६२. जी० ३।३८६,३६३ ३६५,४०१,४२५,
६३२,६३६,६४२,६५३,६६१,६७२,६७६,
६८३,६८६,७२३,७२६,७८८,७६४,७६५,
८३६,८८२,६१८
उसड्ढ [उत्सृत] रा० १८०
उसड्ढय [उत्सृतक] रा० १८१
उसत्त [उत्सक्त] ओ० २,५५. रा० ३२,२८१,२६१,
२६४,२६६,३००,३०५,३१२,३५५. जी०
३।३७२,४४७,४५६,४६१,४६२,४६५,४७०,
४७७,५१६,५२०
उसभ [ऋषभ, वृषभ] ओ० १३,१६,५१. रा० १७,
१८,२०,३२,३७,१२६,१४१,१६२. जी०
३।२७७,२८८,३०० ३११,३१८,३७२,५६३,
५६५ से ५६७
उसभकंठ [ऋषभकण्ठ] रा० १५५,२५८. जी०
३।३२८
उसभकंठग [ऋषभकण्ठक] जी० ३।४१६
उसभज्झय [ऋषभध्वज] रा० १६२. जी० ३।३३५
उसभनाराय [ऋषभनाराच] जी० १।११६
उसभमंडलपविभत्ति [ऋषभमण्डलप्रविभक्ति] रा०
६१
उसभा [ऋषभा] रा० २२५. जी० ३।३८४,८६६
उसिण [उष्ण] जी० १।५; ३।२२,११२ से ११५,
११६
उसिणभूत [उष्णीभूत] जी० ३।११६
उसिणभूय [उष्णीभूत] जी० ३।११६
उसिणवेदणा [उष्णवेदना] जी० ३।११२,११४,
११८
उसिणवेदणिज्ज [उष्णवेदनीय] जी ३।११८
उसिणोदय [उष्णोदक] जी० १।६५
उसिय [उत्सृत] रा० १३२. जी० ३।२०२
उसीर [उशीर] रा० ३०. जी० ३।२८३
उसु [इषु] रा० ७५६. जी० ३।६३१
उस्सण्ण [दे०] बाहुल्यतः ओ० ८७. जी० ३।६६४
उस्सप्पिणी [उत्सर्पिणी] जी० १।१३६,१४०;
२।८८,१२०; ३।६०,१६५,८४१,१०८५; ५।८,
६,२३,२६; ६।२३,४०,६७,२५७
उस्सप्पिय [उत्सर्पित] जी० ३।५८६
उस्सविय [उच्छ्रित] रा० ७५० से ७५३
उस्सास [उच्छ्वास] ओ० १५४,१६५,१६६. रा०
७७२,८१६. जी० ३।१२८
उस्सासत्त [उच्छ्वासत्व] जी० ३।१०६६
उस्सिय [उच्छ्रित] जी० ३।६६६
उस्सुय [उत्सुक] ओ० ५१
उस्सेध [उत्सेध] जी० ३।६७६,७८६,७६५,८६६
उस्सेह [उत्सेध] ओ० १३,८२. रा० ६,१२,१३०,
२२५,२५४,२७६. जी० ३।३००,३८४,४१५,
४४२,७८६,७६४

ऊ

ऊण [ऊन] रा० १८८. जी० २।५७,६१,७३; ३।५,
३४,३६,४१,४३,४४,५६७; ४।६; ५।७,२८;
७।३,५,६,१०,१२,१५,१७; ६।२ से ४,४०,५१,
१७१,२३४,२३६,२३८,२४३,२६६,२७१,
२७३,२७६,२८१
ऊणग [ऊनक] जी० २।३०,३१,५८ से ६०,१३६;
३।२१८,६२६
ऊणय [ऊनक] ओ० ३३. जी० २।३२ से ३४
ऊणिया [ऊनिका] ओ० १६५।६
ऊरु [ऊरु] ओ० १६. रा० १२,२५४,७५८,७५६.
जी० ३।११८,४१५,५६६ से ५६८
ऊरुजाल [ऊरुजाल] जी० ३।५६३
ऊसड [उत्सृत] जी० ३।२६२
ऊसविय [उच्छ्रित] ओ० ६७
ऊसास [उच्छ्वास] ओ० ११७. रा० ७६६.
३।१२७।३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊसासत्ता [उच्छ्वासता] जी० ३।६७

ऊसित [उच्छ्रित] जी० ३।२१८,३०७,३५५,६३४, ६४२,७५४,७६२,७६८.७७०,७७२.१००८

ऊसितोदग [उच्छ्रितोदक] जी० ३.७८३,७८४

ऊसिय [उच्छ्रित] ओ० ४६,५५,६४,१६२. रा० ५०,५२,५६,१३७,१८६,२०४ से २०६, २०८,२८१,७७४,७८६. जी० ३ ३५६,३६४, ३६८ से ३७१,४४७,५६७,५६८,६५३,६७३, ७५४,७६२,७६६

ऋच्छज्झय [ऋक्षध्वज] रा० १६२. जी० ३३५

(ए)

एइय [एजित] रा० १७३. जी० ३।२८५

एऊणपण्ण [एकोनपञ्चाशत्] जी० ३।८३२

एक [एक] जी० १।७२

एकत्त [एकत्व] जी० ३।११०

एकत्तीस [एकत्रिंशत्] जी० ३।६३४

एकाणउति [एकनवति] जी० ३.८१२

एकावलि [एकावलि] जी० ३।४५१

एकासीइ [एकाशीति] जी० ३।७०६

एकासीति [एकाशीति] जी० ३ ७६४

एकाह [एकाह] जी० ३ १७६,१७८,१८०,१८२

एकूणवीसति [एकोनविंशति] जी० ३।५७७

एकोदग [एकोदक] जी० ३।७६५

एक्क [एक] ओ० ३. रा० ४. जी० २।४८

एक्कतीस [एकत्रिंशत्] ओ० ३३. रा० २०७. जी० ३।६१

एक्कवीस [एकविंशति] जी० ३।७३६

एक्कार [एकादशन्] जी० ३ १००२

एक्कारस [एकादशन्] रा० १७३. जी० ३।२८५

एक्कारसम [एकादश] ओ० १४४. रा० ८०२

एक्कारसमासपरियाय [एकादशमासपर्याय] ओ० २३

एक्कासीत [एकाशीति] जी० ३।६३२

एक्कासीय [एकाशीति] जी० ३.२२६।४

एक्किक्किय [एकैकक] रा० ८२

एक्केक्क [एकैक] जी० ३।६६७

एक्केक्कय [एकैकक] जी० ३।८३८।४

एक्कोणवीसति [एकोनविंशति] जी० ३।५७७

एक्कोदक [एकोदक] जी० ३.७६५

एक्कोदग [एकोदक] जी० ३।७६५

एग [एक] ओ० १६. रा० ३. जी० १।१०

एगइय [एकक] ओ० २३,४५,५२,७८,८८,१४०, १५६,१६५,१६६, रा० १६,१७४,२८१,६८७, ६८६. जी० १।६६,११६; ३।८६,१०४,४४७, ४५५

एगओ [एकतस्] रा० ८४,१७३

एगओखह [एकतःखह] रा० ८४

एगओचक्कवाल [एकतश्चक्रवाल] रा० ८४

एगओवंक [एकतोवक्र] रा० ८४

एगंत [एकान्त] ओ० ११७. रा० ६,१२,१५, ७१३,७६५

एगंतदंड [एकान्तदण्ड] ओ० ८४,८५,८७

एगंतबाल [एकान्तबाल] ओ० ८४,८५,८७

एगंतसुत्त [एकान्तसुप्त] ओ० ८४,८५,८७

एगखुर [एकखुर] जी० १।१०३,१२१; २।६

एगगुण [एकगुण] जी० १।३५,३७,४०

एगग्ग [एकाग्र] रा० १५

एगच्च [एकार्च] ओ० ७२,१६७

एगच्चाओ [एकस्मात्] ओ० १६१

एगजाय [एकजात] ओ० २७. रा० ८१३

एगजीव [एकजीव] जी० १।७२

एगजीविय [एकजीविक] जी० १।७२

एगट्ठ [एकास्थि] जी० ३।७६८

एगट्ठिय [एकास्थिक] जी० १।७०,७१

एगतिय [एकक] रा० १७४,१८५,२८१,२८६, २६०,६८८,६८६. जी० १।१३३; ३।८६, १०८,१३६,१७८.१८०,१८२,२८६,२६७, ४४७,५७५,५७६,७१६,७२०,८०६,८०७, ८५७,१०८०

एगतो [एकतस्] रा० २७६. जी० ३।२८५,४४५

एगत्त [एकत्व] जी० ३।११०,१११५,१११६

एगत्तवियक्क [एकत्ववितर्क] ओ० ४३

एगत्ताणुप्पेहा [एकत्वानुप्रेक्षा] ओ० ४३

एगत्तिभावकरण [एकत्वीभावकरण] ओ० ६९,७०

एगत्तीभावकरण [एकत्वीभावकरण] रा० ७७८

एगदंत [एकदन्त] जी० ३।५९६

एगदिसा [एकदिशा] रा० ६८८

एगपदेसिय [एकप्रादेशिक] जी० ३।७२३,७२६

एगभूय [एकभूत] रा० ११९

एगमेग [एकैक] रा० १२९,१६२ से १६४,१९१. जी० ३।१०९,२६५,३५४,३५५,६३२,६६१, ७२३,७२६,९०१,१०००,१०२३

एगराइया [एकरात्रिकी] ओ० २४

एगसट्ठि [एकषष्टि] जी० ३।११०

एकसाडिय [एकशाटिक] ओ० २१,५४,६९. रा० ८,७१४,७७८

एगसालग [एकशालक] जी० ३।५९४

एगसिद्ध [एकसिद्ध] जी० १।८

एगागार [एकाकार] जी० १।१०९,११६; ३।८ से ११,२१३,९५४

एगाभिमुह [एकाभिमुख] रा० ६८८

एगावलि [एकावलि] ओ० २४,१०८,१३१. रा० ६९,२८५. जी० ३।५९३

एगावलिपविभत्ति [एकावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

एगासीइ [एकाशीति] जी० ३ ७०६

एगाह [एकाह] जी० ३।८६,११८,११९

एगाहच्च [एकाहत्य] रा० ७५१,७६७

एगाहिय [एकाहिक] जी० ३।६२८

एगिंदिय [एकेन्द्रिय] जी० १।५५; २।१०१,१०२, ११०,१११,१२०,१२९,१३६,१३८,१४६,१४९; ३।१३० से १३५,१११५; ४।१ से ३, ५ से ७,१०,११,१६,१९ से २२,२५; ९।२ से ७, १६७,१६९,२२१,२२२,२२८,२३१

एगुणयाल [एकोनचत्वारिंशत्] जी० ३।७९४

एगूणपण्ण [एकोनपञ्चाशत्] रा० ७१. जी० १।८८

एगूणवीस [एकोनविंशति] जी० ३।१०५३

एगूणासीति [एकोनाशीति] जी० ३।२१८

एगूरुइया [एकोरुकिका] जी० २।१२

एगूरुय [एकोरुक] जी० ३।२१९ से २२२,२२७

एगूरुयदीव [एकोरुकद्वीप] जी० ३।२२२,२२७

एगोणचत्तालीस [एकोनचत्वारिंशत्] जी० ३।७९६

एगोणवीस [एकोनविंशति] जी० ३।१०५३

एगोदग [एकोदक] जी० ३।७९५

एगोरुय [एकोरुक] जी० ३।२१६,२१७,२२६

एगोरुयदीव [एकोरुकद्वीप] जी० ३।२१७,२१८

एज्जमाण [एजमान] रा० ४०,१२३,१३२. जी० ३।२६५

√एड [इल्,एड्] —एडेइ. रा० ७६५—एडेंति. रा० १२—एडेइ. रा० ९

एडित्ता [एलित्वा,एडित्वा] ओ० ११७. रा० १२

एडेत्ता [एलित्वा,एडित्वा] रा० ९

एणी [एणी] ओ० १९. जी० ३।५९६

एतारूव [एतद्रूप] जी० ३।२७८ से २८२,२८४, २८५,३८७,४४२,८६०,८६६,८७२,८७८

एत्तो [इतस्] ओ० ३३. रा० २६. जी० ३।८४

एत्थ [अत्र] ओ० १३. रा० ३. जी० ३।७७

एमहज्जुईय [इयन्महद्द्युतिक] रा० ६६६

एमहज्जुतीय [इयन्महद्द्युतिक] जी० ३।५६५

एमहब्बल [इयन्महाबल] रा० ६६६. जी० ३।५६५

एमहाणुभाग [इयन्महानुभाग] रा० ६६६. जी० ३।५६५,९४०

एमहायस [इयन्महायशस्] रा० ६६६. जी० ३।५६५

एमहालत [इयन्महत्] जी० ३।८६,१७६,१७८

एमहालय [इयन्महत्] रा० ७३२,७३७. जी० ३।१८२,१०८०

एमहासोक्ख [इयन्महासौख्य] रा० ६६६. जी० ३।५६५

एमहिड्डिय [इयन्महर्धिक] जी० ३।६३८

एमहिड्डीय [इयन्महर्धिक] रा० ६६६. जी० ३।५६५, ५६८,७०१,७६४

एमेव [एवमेव] जी० ३।२२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एम्महिड्डीय [इयन्महर्धिक] जी० ३।६६४
एय [एतत्] ओ० २१. रा० ६३. जी० १।११
√एय [एज्]—एयइ. रा० ७७१—एयंति. जी० ३।७२६
एयंत [एजमान] रा० ७७१
एयरूव [एतद्रूप] रा० ६३,६५
एयारूव [एतद्रूप] ओ० ३०,६२,१४४,१५८, १५६. रा० ६,१६,२०,२५ से ३१,३७,४५, १३५,१४६,१७३,१७५,१६०,२२८,२४५, २५४,२७०,२७५,२७६,६८८,७३२,७३७, ७३८,७४६,७५१,७६८,७७७,७६१,७६३, ८१६. जी० ३।८४,८५,११८,२६४,२७८ से २८३,२८५,२८७,३०५,३११,३२२,४०७, ४१५,४३५,४४१,५६७,६०१,६०२,६४३,६५४
एरण्णवत [ऐरण्यवत] जी० २।१४५
एरण्णवय [ऐरण्यवत] रा० २७६. जी० २।१३, ३१,५८,७०,७२
एरवत [ऐरवत] जी० २।६६,१३६,१४७,१४६
एरवय [ऐरवत] रा० २७६. जी० २।१४,२८, ५५,७०,७२,११५,१२३; ३।२२६,४४५,७६५
एरावणद्दह [ऐरावणद्रह] जी० ३।६६७
एरिस [ईदृश] ओ० ७६ से ८१
एरिसग [ईदृशक] जी० ३।१०६
एल [एड] जी० ३।६१८
एला [एला] रा० ३०,१६१,२५८,२७६. जी० ३।२८३,३३४,४१६
एलिगा [एडिका] जी० ३।६१६
एलुय [एलुक] रा० १३०. जी० ३।३००
एव [एव] रा० १०
एवइय [एतावत्] जी० ३।१८२,८३८।२,३
एवं [एवम्] ओ० २०. रा० ८. जी० १।१०
एवंभूत [एवंभूत] जी० ३।२८५
एवतिय [एतावत्] जी० ३।१७६,१७८,१८०, ६७२,६७३
एवमेव [एवमेव] रा० ७०३. जी० ३।१७४
एवामेव [एवमेव] ओ० १५०. रा० १२. जी० ३.११८
एसणासमिय [एषणासमित] ओ० २७,१५२,१६४. रा० ८१३
एसणिज्ज [एषणीय] ओ० ३७,१२०,१६२. रा० ६६८,७५२,७७६,७८६
एसुहुम [इयत्सूक्ष्म] जी० ३।६६३,६६७

ओ

ओइण्ण [अवतीर्ण] ओ० ५१
ओगाढ [अवगाढ] रा० ६८४,६८५,७००,७०६. जी० १।३३, ४२,४३,५०; ३।२२
√ओगाह [अव+गाह्]—ओगाहइ. जी० ३।११८—ओगाहति. जी० ३।११६ —ओगाहेंति. ओ० ११७
ओगाहणा [अवगाहना] ओ० १६५।४ से ८. रा० ७६६. जी० १।१४,१६,७४,८६,८८, ६०,६४,१०३,१११,११२,११६,११६,१२१, १२३ से १२५,१३०,१३५; ३।६१,२३६, ४३६,६६६,१०८७,१०८६
ओगाहित्तए [अवगाहितुम्] ओ० ६६
ओगाहित्ता [अवगाह्य] ओ० ११७. जी० ३.७७
ओगाहेत्ता [अवगाह्य] ओ० ११७. रा० २४०
ओगिण्हित्ता [अवगृह्य] ओ० २१. रा० ८
ओग्गह [अवग्रह] ओ० २१,२२,५२. रा० ८,६, ६८६,६८७,६८६,७०६,७११,७१३
ओग्गिण्ह [अव+ग्रह्]—ओग्गिण्हइ. रा० ६८६
ओघ [ओघ] रा० १३,१४
ओचूल [अवचूल] ओ० ५७
ओच्छण्ण [अवच्छन्न] ओ० ६
ओच्छन्न [अवच्छन्न] ओ० ६. जी० ३।२७५
ओट्ठ [ओष्ठ] ओ० १६,४७. रा० २५४. जी० ३।४१५,५६६,५६७,८६०
ओट्ठछिण्णग [ओष्ठछिन्नक] ओ० ६०
√ओणम [अव+नम्]—ओणमंति. रा० ७५
ओणमित्ता [अवनम्य] रा० ७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओणय [अवनत] ओ० ७०
ओत्थय [अवस्तृक] ओ० ६३,६५
ओदण [ओदन] जी० ३।५६२
√ओधार [अव+धारय्]—ओधारेंति. रा० ७१३
√ओभास [अव+भास्]—ओभासइ.
जी० ३।३२७—ओभासेइ. रा० ७७२
—ओभासेंति. रा० १५४. जी० ३।३२७
—ओभासेति. रा० १५४.जी० ३।७४१
ओभासमाण [अवभासमाण] जी० ३।२५६
ओभिज्जमाण [उद्भिद्यमान] रा० ३०
ओमत्त [अवमत्व[रा० ७६२,७६३
√ओमुय [अव+मुच्]—ओमुयइ. ओ० २१.
रा० ७१४
ओमुइत्ता [अवमुच्य] ओ० २१
ओमोदरिया [अवमोदरिका] ओ० ३३
ओमोयरिया [अवमोदरिका] ओ० ३१
ओयंसि [ओजस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६
ओयविय [दे०] ओ० १६,४७. रा० ३७,२४५.
जी० ३।३११,४०७,५९६
ओराल [दे० उदार] ओ० ८२. रा० ३०,१३२,
१३५,१७३, २३६,६८६. जी० १।७५,८३,
१३६; ३।२६५,२८३,२८५,३०२,३०५,
७२६,७८५,७८६,८४१
ओरालिय [औदारिक] ओ० १८२. जी० १।१५,
५६,६४,७४,७६,८२,८५,१०१,११६,१२८,
१३०
ओरालियमीसासरीर [औदारिकमिश्रकशरीर]
ओ० १७६
ओरालियसरीर [औदारिकशरीर] ओ० १७६
ओरालियसरीरि [औदारिकशरीरिन्]
जी० ६।१७०,१७१,१७६,१८१
ओरोह [अवरोध] ओ० १
ओलंबियग [अवलम्बितक] ओ० ६०
ओलित्त [दे० उपलिप्त] ओ० ५२. रा० ६८७ से
६८६

ओवइय [दे०] जी० १।८८
ओवणिहिय [औपनिधिक, औपनिहितिक]
ओ० ३४
ओवम्म [औपम्य] ओ० १६५।१७. जी० ३।१२७।५
√ओवय [अव+पत्]—ओवयंति. रा० २८१.
जी० ३।४४७
ओवयमाण [अवपतत्] रा० ५६
ओवहिय [औपधिक] ओ० १६१,१६३
ओवासंतर [अवकाशान्तर] जी० ३।१३,१६,२१,
२६,२७,३०,३२,६५,६७,१७६,१७८,१८०,
१८२,१०६२ से १०६४
ओविय [दे०] परिकर्मित ओ० ६३. रा० १७,
१८,६६,७०. जी० ३।५६३
√ओवील [अव+पीड्]—ओवीलेति.
जी० ३।७६५
ओस [दे० अवश्याय] जी० १।६५
ओसण्णकारण [अवसन्नकारण] जी० १।५०,६५,
१३६
ओसण्णग [अवसन्नक] ओ० ६०
ओसण्णदोस [उत्सन्नदोष] ओ० ४३
ओसप्पिणी [अवसर्पिणी] जी० १।१३६,१४०;
२।१२०; ३।६०,१६५,८४१,१०८५; ५।८,
६,२३,२६; ६।२३,४०,६७,२५७
√ओसर [अप+सृ]—ओसरति. रा० २६२.
जी० ३।४५७
ओसरित्ता [अपसृत्य] रा० २६२. जी० ३।४५७
ओसह [औषध] ओ० १२०,१६२. रा० ६६८,
७५२,७८६
ओसहि [ओषधि] रा० १५२,२७६,२८०.
जी० १।६६; ३।३२५,४४५,४४६,४४८
ओसारिय [अवसारित] ओ० ५७
ओहबल [ओघबल] ओ० ७१. रा० ६१
ओहय [उपहत, अवहृत] ओ० १४. रा० ६७१,
७६५
ओहस्सर [ओघस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५,
५६८

ओहाडणी [दे० अवघाटनी] रा० १३०,१६०. जी० ३।२६४,३००
ओहि [अवधि] जी० ३।१०७, ११११
ओहि—ओह [ओघ] रा० ६,१२
ओहिणाण [अवधिज्ञान] ओ० ४०. रा० ७३६, ७४३,७४६
ओहिणाणलद्धि [अवधिज्ञानलब्धि] ओ० ११६
ओहिणाणविनय [अवधिज्ञानविनय] ओ० ४०
ओहिणाणि [अवधिज्ञानिन्] ओ० २४. जी० १।११६,१३३; ६।१६१,१६५,१६६, १६७,१६६,२०४,२०८
ओहिदंसणि [अवधिदर्शनिन्] जी० १।२६, ८६; ६।१३१,१३४,१३८,१४०
ओहिनाणि [अवधिज्ञानिन्] जी० १।६६; ६।१५६
ओहिय [औघिक] जी० २।५१; ५।२४,२६.३०
ओहीनाण [अवधिज्ञान] जी० ३।११११

क

क [क] रा० ६५
कइ [कति] ओ० १७३. रा० ७६६,७७६. जी० १।१५,२१ से २३,२६,२७,६४; ३।७६, १६६ से १७१,७४८,८०६
कइसमइय [कतिसामयिक] ओ० १७४
कओ [कुतस्] जी० १।५१; ३।१५५,१०८२
कंक [कङ्क] जी० ३।५६८
कंकड [कङ्कट] ओ० ६४. रा० १७३,६८१. जी० ३।२८५
√**कंख** [काङ्क्ष्]—कंखइ. रा० ७१३—कंखंति. ओ० २०.रा० ७१३
कंखिय [काङ्क्षित] रा० ७७४
कंचण [काञ्चन] ओ० २६,६४. रा० ३२,१५६, २६२. जी० ३।३३२,३७२,४५७,४८७,५८६, ५६३,५६७
कंचणकोसी [काञ्चनकोशी] ओ० ६४
कंचणग [काञ्चनक] जी० ३।६६१,६६२,६६४, ६६६
कंचणमय [काञ्चनमय] जी० ३।६६१
कंचणिया [काञ्चनिका] ओ० ११७
कंचि [किञ्चित्] ओ० ११६,११७. रा० ७६५
कंची [काञ्ची] जी० ३।५६३
कंचुइ [कञ्चुकिन्] रा० ६८८ से ६६०,८०४
कंचुइज्ज [कञ्चुकीय] ओ० ७०
कंचुय [कञ्चुक] रा० ६६,७०
कंटक [कण्टक] जी० ३।६६२
कंटय [कण्टक] ओ० १४. रा० ६७१. जी० ३।८५,६२२
कंठ [कण्ठ] ओ० ७१. रा० ६१,६६,७६
कंठमुरवि [दे० कण्ठमुरवी] ओ० १०८,१३१. रा० २८५
कंठसुत्त [कण्ठसूत्र] जी० ३.५६३
कंठेगुण [कण्ठेगुण] रा० १३१,१४७,१४८,२८०. जी० ३।३०१,४४६
कंठेमालकड [कृतकण्ठेमाल] ओ० ५२. रा० ६८७ से ६८६
कंड [काण्ड] रा० ६६४. जी० ३।६,७,६,१०,१६, १७,२४,२५,६० से ६३,५६२
कंडग [काण्डक] रा० ७५८,७५६
कंडय [काण्डक] रा० ७५८,७५६
कंडु [कण्डु] ओ० ६६
कंडु [कन्दु] जी० ३।७८
कंत [कान्त] ओ० १५,४६,६८,११७ १४३. रा० १७,१८,६७२,६७३,७५० से ७५३, ७७४,७६६,८०१. जी० १।१३५; ३।५६७, ८७२,१०६०,१०६६
कंततराय [कान्ततरक] रा० २५ से ३१,४५. जी० ३।२७८ से २८४,६०१
कंतारभत्त [कान्तारभक्त] ओ० १३४
कंतारभयग [कान्तारभृतक] ओ० ६०
कंति [कान्ति] ओ० २३,६६.७१. रा० ६१
कंद [कन्द] ओ० ६४,१३५. रा० २२८. जी० १।७१; ३।३८७,६४३,६७२
कंदणया [क्रन्दन] ओ० ४३

कंदप्प [कन्दर्प] ओ० ४९
कंदप्पिय [कान्दर्पिक] ओ० ६४,९५
कंदमंत [कन्दवत्] ओ० ५,८,१०. जी० ३।२७४, ३८९,५८१
कंदरा [कन्दरा] रा० ८०४
कंदाहार [कन्दाहार] ओ० ९४
कंदिय [क्रन्दित] ओ० ४६,४९
कंदुसोल्लिय [कन्दुपक्व] ओ० ९४
कंपिय [कम्पित] रा० १७३. जी० ३।२८५
कंपिल्लपुर [काम्पिल्यपुर] ओ० ११५,११८
कंपेमाण [कम्पमान] ओ० ५२
कंबल [कम्बल] ओ० १२०,१६२. रा० २७, ६९८,७५२,७५२,७८९. जी० ३।२८०,५९५
कंबिया [कम्बिका] रा० २७०. जी० ३।४३५
कंबु [कम्बु] ओ० १९. जी० ३।५९६,५९७
कंबोय [कम्बोज] रा० ७२०,७२३
कंस [कांस्य] जी० ३।६०८
कंसताल [कांस्यताल] रा० ७७. जी० ३।५८८
कंसपाई [कांस्यपात्री] ओ० २७ रा० ८१३
कंसलोह [पाय] [कांस्यलोहपात्र] ओ० १०५, १२८
कंससोह [बंधण] [कांस्यलोहबन्धन] ओ० १०६, १२९
ककारखकारगकारघकारङकारपविभत्ति [ककारख-कारगकारघकारङकारप्रविभक्ति] रा० ९५
ककारपविभत्ति [ककारप्रविभक्ति] रा० ९५
कक्करी [कर्करी] जी० ३।५८७
कक्कस [कर्कश] रा० ७९५. जी० ३।११०
कक्कोड [कर्कोट] जी० ३।७५०
कक्कोडग [कर्कोटक] ३।७५०
कक्कोडय [कर्कोटक] जी० ३।७४८ से ७५०
कक्ख [कक्ष] ओ० ९२ जी० ३।५९७
कक्खड [कर्खट] जी० १।५,३९,४०,५०; ३।२२
कच्छ [कक्ष] ओ० ५७. जी० ३ ९३७
कच्छभ [कच्छप] रा० १७४. जी० १।९९,११८; ३।११८,११९,२८६,९६५
कच्छभी [कच्छपी] रा० ७७. जी० ३।५८८
कच्छु [कच्छू] जी० ३।६२८
√कज्ज [कृ]—कज्जंति. ओ० १६१
कज्ज [कार्य] रा० ६७५. जी० ३।२३९,१११५
कज्जल [कज्जल] ओ० १९. रा० २५. जी० ३।२७८,५९५,५९६
कज्जलंगी [कज्जलाङ्गी] ओ० १३
कज्जलप्पभा [कज्जलप्रभा] जी० ३।६८७
कज्जहेउ [कार्यहेतु] ओ० ४०
कट्टु [कृत्वा] ओ० २०. रा० ८. जी० ३।८६
कट्ठ [काष्ठ] रा० ९,१२,७६५
कट्ठसेज्जा [काष्ठशय्या] ओ० १५४,१६५,१६६
कट्ठसोल्लिय [काष्ठपक्व] ओ० ९४
कड [कृत] ओ० ७४,६ रा० १८५,१८७,८१५ जी० ३।२१७,२९७,२९८,३५८
कडंब [कडम्ब] रा० ७७
कडक्ख [कटाक्ष] रा० १३३. जी० ३।३०३
कडग [कटक] ओ २१,४७,५४,६३,७२. रा० ८, ६९,७०,२८५,७१४. जी० ३।४५१,५९३
कडगच्छेज्ज [कटकच्छेद्य] ओ० १४६. रा० ८०६
कडच्छाय [कटच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,७०३. जी० ३।२७३
कडच्छुय [दे०] रा० ७५३
कडय [कटक] ओ० १०८,१३१. रा० ८. जी० ३।४५७
कडाह [कटाह] जी० ३।७८
कडि [कटि] ओ० १९,६४. जी० ३।५९६
कडिय [कटित] ओ० ४. रा० १७०,७०३. जी० ३।२७३
कडिसुत्त [कटिसूत्र] ओ० ५२,६३ १०८,१३१. रा० ६८७,६८९
कडिसुत्तग [कटिसूत्रक] रा० २८५
कडिसुत्तय [कटिसूत्रक] रा० ६८८
कडुच्छुग [दे०] जी० ३।९०८
कडुच्छुय [दे०] रा० २५८,२७९,२८१,२९०,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९२. जी० ३।४१९,४४५,४४७,४५६,४५७,
६७६
कडुय [कटुक] ओ० ४०. रा० ७९५. जी० १।५;
३।२२,११०,७२१,८६०,९५५
कड्डिज्जमाण [कृष्यमान] रा० ५६
कढिण [कठिन] ओ० ४६,९४
कढिय [क्वथित] जी० ३।५९२,६०१
कणइर [कणवीर] जी० ३।५९७
कणइरगुम्म [कणवीरगुल्म] जी० ३।५८०
कणग [कनक] ओ० १९,२३,५०,६३,६४,८२.
रा० २८,३२,६९,७०,१२९,१३०,१३७,१७३,
२१०,२१२,२८५,६८१,६९५. जी० ३।२८१,
२८५,३००,३०७,३५४,३७२,३७३,४५१,
५८९,५९३,५९६,५९७.६४७,७४७,८६९,
८८५,९३६
कणगजाल [कनकजाल] रा० १९१. जी० ३।२६५
कणगजालग [कनकजालक] जी० ३।५९३
कणगत्तायरत्ताभ [कनकत्वगुरक्ताभ]
जी० ३।१०९३
कणगप्पभ [कनकप्रभ] जी० ३।८६९
कणगमय [कनकमय] जी० ३।४१५,६४३,६४४,
८६९
कणगामय [कनकमय] रा० २५४. जी० ३।३५२,
४१५,६३२,६४३,६५४,६५५,७३६
कणगावलि [कनकावलि] ओ० २४,१०८,१३१.
जी० ३।४५१
कणगावलिपविभत्ति [कनकावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
कणिया [क्वणिता] जी० ३।५८८
कण्ण [कर्ण] रा० १५,४०,१३२,१३५,१७३.
जी० ३।२६५,२८५,३०५
कण्णछिण्णग [कर्णछिन्नक] ओ० ९०
कण्णपाउरण [कर्णप्रावरण] जी० ३।२१६
कण्णपीढ [कर्णपीठ] ओ० ४७,७२
कण्णपूर [कर्णपूर] ओ० ५७,१०९,१३२
कण्णवाली [कर्णवाली] जी० ३।५९३
कण्णवेयणा [कर्णवेदना] जी० ३।६२८
कण्णवेहण [कर्णवेधन] रा० ८०३
कण्णिका [कर्णिका] जी० ३।३३२
कण्णिया [कर्णिका] ओ० १७०. रा० १५९.
जी० ३।६४३ से ६४५,६५४ से ६५६
कण्णियार [कर्णिकार] जी० ३।८७२
कण्ह [कृष्ण] ओ० ९६. जी० ३।२७८,३४८
कण्हकंद [कृष्णकन्द] जी० १।७३
कण्हकेसर [कृष्णकेसर] जी० ३।२७८
कण्हपरिव्वाया [कृष्णपरिव्राजक] ओ० ९६
कण्हबंधुजीव [कृष्णबन्धुजीव] जी० ३।२७८
कण्हमत्तिया [कृष्णमृत्तिका] जी० १।५८
कण्हराई [कृष्णराजी, कृष्णराज्ञी] जी० ३।९१९
कण्हलेस [कृष्णलेश्य] जी० ९।१८६,१९३
कण्हलेसा [कृष्णलेश्या] जी० १।१३३; ३।१५०
कण्हलेस्स [कृष्णलेश्य] जी० ९।१८५,१९६
कण्हलेस्सा [कृष्णलेश्या] जी० १।२१
कण्हसप्प [कृष्णसर्प] जी० ३।२७८
कण्हासोय [कृष्णाशोक] जी० ३।२७८
कत [कृत] जी० ३।५९१
कतमाल [कृतमाल] जी० ३।५८२
कतर [कतर] जी० २।६८ से ७२,९५,९६,१३४
से १३८,१४१ से १४९; ३।११३८; ५।५२,
५९; ७।२०; ९।२५३,२८६ से २९१,२९३
कति [कति] रा० ७६७. जी० १।१९,२०,५६,
५९,६२,७४,७९,८२,८५, ९०,९३,१०१,११९,
१२८,१३०,१३४; ३।७७,९८,१०८,१५०,
१५७,१६०,१६५,१६७,१७२ से १७४,२३५
से २३७,२४१,२४२,२४५,२४६,२४९,२५४,
२५५,२५८,२९९.७०३,७०७,७२२,७३३ से
७३५,७४९,७९९,८०९,८१३,८२०,८२४,
८३७,८५१,८५५,९६३ से ९६६,१०१५,
१०१७,१०२३.१०२६,१०४०,१०४१,१०४४,
१०७५,११०१,१११२
कतिक्खुत्तो [कतिकृत्वस्] जी० ३।७३०
कतिविध [कतिविध] जी० ३।६ से ११,३७,३८,
१४७,१६१,१८५,६३१; ५।३७

कतिविह [कतिविध] जी० ३।१८३,६७६,६७७; ५।३८,३६,५३ से ५५

कतो [कुतस्] जी० ३।८८

कत्तिया [कृत्तिका] जी० ३।६३७

कत्थ [कुत्र] ओ० १६५।१

कत्थ [कथ्य] रा० १७३. जी० ३।२८५

कत्थइ [कुत्रचित्] ओ० २८

कत्थुलगुम्म [कस्तुलगुल्म] जी० ३।५८०

कदंब [कदम्ब] जी० ३।५८३

कद्दम [कर्दम] जी० ३।७५१

कद्दमय [कर्दमक] जी० ३।७४८

कद्दमोदय [कर्दमोदक] ओ० १११ से ११३,१३७, १३८

कपिहसिय [कपिहसित] जी० ३।८४१

कप्प [कल्प] ओ० २६,६५,६५,६७,११४,११७, १४०,१५५,१५७ से १५६,१६२,१६०. रा० ७,१२,५६,१२४,२७६,७६६. जी० २।१६,४६,६६,१४८,१४६; ३।७७५, ८४२,८४५,६३७,१०३६,१०५७ से १०५६, १०६२,१०६५,१०६७,१०७१,१०७३,१०७७ से १०८३,१०८५ से १०८७,१०६०,१०६१, १०६३,१०६७ से १०६६,११०१,११०५, ११०७,११०६ से १११२,१११४,१११५, १११७,१११६,११२१,११२२,११२४,११२८

√कप्प [कृप्] —कप्पइ. ओ० ६६.—कप्पंति. ओ० ६३. —कप्पेज्जा. रा० ७७६

कप्पणा [कल्पना] ओ० ५७

कप्परुक्ख [कल्परूक्ष] ओ० ६३

कप्परुक्खग [कल्परूक्षक] रा० २८५

कप्परुक्खय [कल्परूक्षक] रा० ३।४५१

कप्पिय [कल्पित] ओ० ५२,६२,६३. रा० ६८७ से ६८६

कप्पूर [कर्पूर] रा० ३०. जी० ३।२८३

कप्पेमाण [कल्पमान] ओ० ६१ से ६३,१६१,१६३. रा० ६७१,७५२

कप्पोवग [कल्पोपग] ओ० ७२

कब्बड [कर्बट] ओ० ६८,८६ से ६३,६५,६६, १५५,१५८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७

कम [क्रम] जी० ३।७७८,८३८।१४

कमंडलु [कमण्डलु] जी० ३।५६७

कमल [कमल] ओ० २१,२२,५४. रा० ८,१३१, १४७,१४८,१७४,२८०,७१४,७२३,७७७,७७८, ७८८. जी० ३।११८,११६,२८६,३२१,४४६, ४४८,५६७

कमलागर [कमलाकर] ओ० २२. रा० ७७७, ७७८,७८८

कम्म [कर्मन्] ओ० २६,४६,७१ से ७४।५,७६ से ८१,८६,११६,१५६,१६७,१७१,१८२,१८४, १६५।२०. रा० १८५,१८७,७५०,७५१,७७१, ७७२. जी० २।७३,६७,१३६; ३।१२६।६, २१७,२६७,२६८

कम्मंत [दे० कर्मान्त] ओ० १६१,१६३

कम्मंस [कर्मांश] ओ० १७१,१८२

कम्मकर [कर्मकर] ओ० ६४

कम्मग [कर्मक] जी० ६।१७६

कम्मगसरीर [कर्मकशरीर] ओ० १७६

कम्मगसरीरि [कर्मकशरीरिन्] जी० ६।१७०,१७४

कम्मठिति [कर्मस्थिति] जी० २।७३,६७,१३६

कम्मणिसेग [कर्मनिषेक] जी० २।१३६

कम्मणिसेय [कर्मनिषेक] जी० २।७३,६७

कम्मपयडि [कर्मप्रकृति] ओ० १६८

कम्मभूमक [कर्मभूमक] जी० २।८६,१३२

कम्मभूमग [कर्मभूमक] जी० १।१५६; २।१४,२८, २६,७७,८५,६६,१०६,११५,१२३,१३८,१४७, १४६; ३।२१२,२२६,८३६

कम्मभूमय [कर्मभूमज] जी० २।२७

कम्मभूमि [कर्मभूमि] जी० २।१३७

कम्मभूमिग [कर्मभूमिज] जी० २।७०,७२,१३८, १४७,१४६

कम्मभूमिय [कर्मभूमिज] जी० १।१०१

कम्मभूमिया [कर्मभूमिजा] जी० २।११,१४,५५,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७०,७२,१४७,१४९

कम्मय [कर्मक] जी० १।१५,५९,६४,७४,७९,८,२ ५,९३,१०१,११९,१२८,१३०,१३५

कम्मया [कर्मजा] रा० ६७५

कम्मविउस्सग्ग [कर्मव्युत्सर्ग] ओ० ४४

कम्मसरीर [कर्मशरीर] ओ० १७६. जी० ३।१२९।९

कम्मसरीरि [कर्मशरीरिन्] जी० ९।१८१

कम्मार [दे०] जी० ३।११८,११९

कम्मारय [दे०] जी० ३।६१०

कम्हा [कस्मात्] ओ० १७१. रा० ७०३. जी० ३।७२३

कय [कृत] ओ० २,२०,५२,५३,५७,६२,६३,७०, ९२. रा० १५,१३१,१४७,१४८,२८०,६८३, ६८५,६८७ से ६८९,६९८,७००,७१०,७१६, ७२३,७२६,७५१,७५३,७६५,७७४,७९४, ८०२,८०५. जी० ३।३०१,४४६

कय [कच] ओ० ६३. रा० १२,२९१,२९३ से २९६,३००,३०५,३१२,३५५. जी० ३।४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,५२०,५५४

कयंब [कदम्ब] जी० ३।३८८

कयपडिकिरिया [कृतप्रतिक्रिया] ओ० ४०

कयर [कतर] ओ० १८५ से १८८, रा० ६६७. जी० १।१४३; ३।१००७,१०२०,१०२१, १०३७; ४।१९,२२,२५; ५।१९,२०,२६,२७, ३२ से ३६,६०; ७।२२,२३; ९।७,१४,५५, २५० से २५२,२५५,२९२

कयलिघरग [कदलीगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२९४

कयली [कदली] जी० ३।५९७

कयवर [कचवर] जी० ३।६२२

कया [कदा] जी० ३।२७२

कयाइ [कदाचित्] ओ० ११९. रा० ६८०. जी० ३।५९

कयाइं [कदाचित्] रा० ७५४

कयाति [कदाचित्] रा० २००

कयावि [कदापि, कदाचित्] जी० ३।७०२

कर [कर] ओ० १५. जी० ३।५८९,५९७

√कर [कृ]— करावेंति रा० ७७४.— करिस्सइ रा० ७७१.— करिस्संति रा० ८०३ —करिस्सामि रा० ७८७.— करिस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७.—करेइ. ओ० २१. रा० ५६. जी० ३।४६१.—करेंति. ओ० ४७. रा० १०. जी० १।१२७.—करेज्ज. जी० ३।९९७. —करेज्जा. ओ० १८०. रा० १२.—करेति. रा० ८. जी० ३।४४३.—करेमि. रा० ७६४. करेस्संति.रा० ८०२. —करेह.रा० ९.—करेहि. ओ० ५५. रा० ६९५.—करेंहिति. ओ० १४४. —करेहिति ओ० १५४. रा० ८१६. —कारवेंति. रा० १२. कारवेह. रा० ९. कारवेहि. ओ० ५५. —काहिति. ओ० १४४. —कीरइ. ओ० १५४. रा० ७६७

करंडग [करण्डक] ओ० ११७. रा० ७९६

करकंट [करकण्ट] ओ० ९६

करग [करक] जी० ३।५८७

करड [करट] रा० ७७

करडी [करटी] जी० ३।५८८

करण [करण] ओ० १९,२५,४६,६३,१४४,१४५, १६१,१६३. रा० ७६,१७३,६८६,८०२,८०३, ८०५. जी० ३।२८५,५९६,८५४

करणओ [करणतस्] ओ० १४५. रा० ८०६,८०७

करणया [करणता] ओ० १७१

करणिज्ज [करणीय] रा० ११,५९,२७५,२७६. जी० ३।४४१,४४२

करतल [करतल] रा० २४. जी० ३।२७७,४४५, ४४६,४४८,४५८ से ४६२,४६५,४७०,४७७, ५१६,५२०,५५४,५५५

करभरवित्ति [करभरवृत्ति] रा० ६७१,७०३,७१८, ७५०,७५१

करय [करक] जी० १।६५

करयल [करतल] ओ० १५,२०,२१,५३,५४,५६,

६२,११७. रा० ८,१०,१२,१४,१८,४६,७२ ७४,११८,२७६,२७९,२८०,२८२,२९१ से २९६,३००,३०५,३१२,३५५,६५५,६७२, ६८१,६८३,६८९,७०७,७०८,७१३,७१४, ७२३,७६५,७७०,७७१,७९६. जी० ३।४४२ ४५७

करवत [करपत्र] जी० ३।११०

करित्तए [कर्तुम्] ओ० १०३

करिय [कृत्वा] रा० २९२. जी० ३।४५७

करेत्ता [कृत्वा] ओ० २१. रा० ९. जी० ३।४४३

करेमाण [कुर्वाण] ओ० ५२,६४,९४,११९,१५६. रा० ६८७,६८८. जी० ३।४४३,४४५,८४२, ८४५,९१७

करोडिया [करोटिका] ओ० ११७

करोडी [करोटी] जी० ३।५८७

कलंक [कलङ्क] जी० ३।५९८

कलंकलीभाव [कलङ्कलीभाव] ओ० १९५

कलंब [कदम्ब] ओ० ९,१०

कलंबचीरियापत्त [कदम्बचीरिकापत्र] जी० ३।८५

कलंबुय [कदम्बक] जी० ३।८३८।२,१५,८४२

कलकल [कलकल] ओ० ५२. रा० ६८७,६८८. जी० ३।८४२,८४५

कलकलेंत [कलकलायमान] ओ० ४६

कलण [कलन] ओ० ४६

कलमसालि [कलमशालि] जी० ३।५९२

कलस [कलश] ओ० २,१२,६४. रा० २१,४९, २७९,२८०,२९१. जी० ३।२८९,४४५,४४६, ४४८,५८७,५९७

कलसिया [कलशिका] रा० ७७

कलह [कलह] ओ० ४९,७१,११७,१६१,१६३ रा० ७९६. जी० ३।६२७

कलहंस [कलहंस] ओ० ६. जी० ३।२७५

कलहविवेग [कलहविवेक] ओ० ७१

कला [कला] ओ० १४६,१४८,१४९. रा० ८०६, ८०७,८०९,८१०

कलायरिय [कलाचार्य] ओ० १४५ से १४७. रा० ७७६,८०५ से ८०८

कलाव [कलाप] ओ० २,५५. रा० ३२,१३२, २३५,२८१,२९१,२९४,२९६,३००,३०५,३१२, ३५५,६६४. जी० ३।३०२,१७२,३९७,४४७, ४५९,४६१,४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,५२०, ५६३,५९३

कलिंग [कलिङ्ग] जी० ३।५९५

कलिकलुस [कलिकलुष] रा० ७५०,७५१

कलित [कलित] जी० ३।२७२,४४७,४५७,४५९, ४६०,५९४,५९५

कलित्त [कटित्र] ओ० १३

कलिय [कलित] ओ० १,२,१५,४६,५५ से ५७, ६२,६५. रा० १२,१७,१८,२०,३२,५२,५६, १२९,१३७,२३१,२४७,२८१,२९१,२९३ से २९६,३००,३०५,३१२,३५५. जी० ३।२८८, ३००,३०७,३७२,३९३,४५८,४६०,४६२, ४६५,४७०,४७७,५१६,५५०,५५४,५८०, ५९१,५९७

कलुस [कलुष] ओ० ४६

कलेवर [कलेवर] रा० १९०. जी० ३।२६४

कल्ल [कल्य] ओ० २२. रा० ७२३,७७७,७७८, ७८८

कल्लाण [कल्याण] ओ० २,५२,७१,१३९. रा० ९, १०,५८,१८५,१८७,२४०,२७६,६८७,७०४, ७१९,७७६. जी० ३।२१७,२९७,२९८,३५८, ४०२,४४२,५७६,६०२

कल्लाणग [कल्याणक] ओ० ४७,६३,७२. जी० ३।५९५

कल्लोल [कल्लोल] ओ० ४६

कवइय [कवचिक] ओ० ५७

कवड [कपट] रा० ६७१

कवय [कवच] ओ० १९५।२०. रा० ६६४,६८३. जी० ३।५६२

कवल [कवल] ओ० ३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवाड [कपाट] ओ० १,१७४. रा० १३०. जी० ३।३००
कविट्ठ [कपित्थ] जी० १।७२
कवियच्छू [कपिकच्छू] जी० ३।८५
कविल [कपिल] ओ० ६. जी० ३।२७५
कविसीसग [कपिशीर्षक] ओ० १. रा० १२८. जी० ३।३५३
कविसीसय [कपिशीर्षक] रा० १२८. जी० ३।३५३
कविहसिय [कपिहसित] जी० ३।६२६
कवेल्लुयावाय [कवेल्लुकापाक] जी० ३।११८
कवोत [कपोत] जी० ३।५६८
कवोल [कपोल] ओ० १६. रा० २५४. जी० ३।४१५,५९६,५९७
कसाय [कषाय] ओ० ४४,४६. जी० १।५,१४, १६,८६,६६,१०१,११६,१२८,१३६; ३।२२; ६।६६
कसायपडिसंलीणया [कषायप्रतिसंलीनता] ओ० ३६
कसायविउस्सग्ग [कषायव्युत्सर्ग] ओ० ४४
कसायसमुग्घाय [कषायसमुद्घात] जी० १।२३, ८५; ३।१०८,१११२,१११३
कसिण [कृष्ण] ओ० १६,४७. जी० ३।५९६,५९७
कसिण [कृत्स्न] ओ० १५३,१६५,१६६. रा० ८१४
√कह [कथय्]—कहेंति. ओ० ४५—कहेइ. रा० ६६३
कहं [कथम्] ओ० ११८. रा० ७०१. जी० ३।२११
कहकहभूत [कहकहभूत] रा० ७८
कहग [कथक] ओ० १,२
कहगपेच्छा [कथकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५. जी० ३।६१६
कहा [कथा] ओ० २०,४५,५३. रा० ७१३
कहि [क्व] जी० १।१२७
कहिं [क्व, कुत्र] ओ० १४०. रा० १२२. जी० १।५४
काइय [कायिक] ओ० ६६
काउं [कृत्वा] ओ० १३७
काउंबरीय [काकोदुम्बरिका] जी० १।७२
काउलेस [कापोतलेश्य] जी० ६।१६३
काउलेसा [कापोतलेश्या] जी० ६।६८,६६
काउलेस्स [कापोतलेश्य] जी० ६।१८५,१८८,१६६
काउलेस्सा [कापोतलेश्या] जी० १।२१
काऊ [कापोती] जी० ३।७७
काकणिलक्खण [काकिणीलक्षण] ओ० १४६
कागणिलक्खण [काकिणीलक्षण] रा० ८०६
कागणिमंसखावियग [काकिणीमांसखादितक] ओ० ६०
काणण [कानन] रा० ६५४,६५५. जी० ३।५५४
कापिसायण [कापिशायन] जी० ३।८६०
काम [काम] ओ० १५,४३,१४६,१५०,१६८. रा० ६७२,६८५,७१०,७५१,७५३,७७४,७६१, ८११. जी० ३।१७६,११२४
कामकंत [कामकान्त] जी० ३।१७६
कामकूड [कामकूट] जी० ३।१७६
कामगम [कामकम] ओ० ४६,५१
कामगामि [कामकामिन्] जी० ३।५६८,६०६
कामज्झय [कामध्वज] जी० ३।१७६
कामत्थिय [कामार्थिक] ओ० ६८
कामप्पभ [कामप्रभ] जी० ३।१७६
कामरय [कामरजस्] ओ० १५०. रा० ८११
कामरूवधारि [कामरूपधारिन्] ओ० ४६
कामलेस्स [कामलेश्य] जी० ३।१७६
कामवण्ण [कामवर्ण] जी० ३।१७६
कामसिंग [कामशृङ्ग] जी० ३।१७६
कामसिट्ठ [कामशिष्ट] जी० ३।१७६
कामावत्त [कामावर्त्त] जी० ३।१७६
कामुत्तरवडिंसय [कामावतंसक] जी० ३।१७६
काय [काय] ओ० २४. रा० १४६,८१५. जी० ३।११०,१११,१७४; ६।६६
√काय [काचय्]—कायावेमि रा० ७५४
काय [पाय] [काचपात्र] ओ० १०५,१२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काय [वंधण] [काचबन्धन] ओ० १०६,१२९
कायअपरित्त [कायापरीत] जी० ९।७९,८०
कायकिलेस [कायक्लेश] ओ० ३१,३६
कायगुत्त [कायगुप्त] ओ० २७,१५२,१६४. रा० ८१३
कायजोग [काययोग] ओ० ३७, १७५ से १७७, १८०,१८२
कायजोगि [काययोगिन्] जी० १।३१,८७,१३३; ३।१०५,१५२,११०९; ९।११३,११५,११८, १२०
कायट्ठिति [कायस्थिति] जी० ३।११३३; ९।१२२
कायपरित्त [कायपरीत] जी० ९।७६,७७,८३
कायवलिय [कायबलिक] ओ० २४
कायव्व [कर्त्तव्य] रा० ७२,७०४. जी० ३।१२७; ४।६
कायविणय [कायविनय] ओ० ४०
कायसमिय [कायसमित] ओ० १६४
कायापरित्त [कायापरीत] जी० ९।८५
कारंडक [कारण्डक] ओ० ६. जी० ३।२७५
कारण [कारण] रा० १६,६७५,७१९,७२०,७५२, ७५४,७५६,७५८,७६०,७६२,७६४,७६८
कारवाहिय [कारवाहिक, कारबाधित] ओ० ६८
कारवेत्ता [कारयित्वा] ओ० ५५. रा० ९
कारावण [कारण] ओ० १६१,१६३
कारेमाण [कारयत्] ओ० ६८. रा० २८२,७९१. जी० ३।३५०,४४८,५६३,६३७
कारोडिय [कारोटिक] ओ० ६८
काल [काल] ओ० १,१८,२३ से २५,२७,२८,४५, ४७ से ५१,८२,८७,८९ से ९५,११४,११७, १४०,१५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० १,७,६३,६५,१७३,२७४,६६५,६६६, ६६८,६७६,६८५,६८६,७५०,७५१ से ७५३, ७७१,७९६,७९८,८१५. जी० १।५,३४,३५, ५०,५२,९६,१२७,१३७ से १४२; २।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३९,४६,६३,६५, ६६,७३,७९,८६,८८,९२,९७,१०७ से १०९, १११,११३,११४,११६,१२०,१२१,१२५, १२६,१३१ से १३३,१३९,१५०; ३ १२,२२,४५, ८३ ९०,९४,११७ से १२०,१५६,१८६,१९२, १९५ से १९७,२१४,२३८,२४३,२४७,२५०, २५२ से २५६,२५८,४३९,५६४,५६५ ५८६, ५९९,६२९,६३०,७२४,८१९,८३८। १६,१८, २०,८४४,८४७,१०२७,१०४२,१०८५,१०८६, ११३१,११३६,११३७; ४।३,५,८,१६,१७; ५।५,८,९,२१ से २४,२८ से ३०; ७।२; ८।३।४; ९।२,३,१२,२३,२५,२६,३३,४०, ४९,५१,५२,५९ ६९,७१,७३,७८,९७,१६४, १७१,१७८,२०२,२०४,२५७ से २५९
कालओ [कालतस्] ओ० २८. रा० २००. जी० १।३३,१३९,१४०; २।४८,४९,५४,५७ से ६२,८२,८३; ३।२७२; ४।७ से ११; ५।८, ९,१२ से १६,२३,२९; ६।८; ७।९; ९।१०,११, २३,२४,३१,३९ से ४८,५७ ५८,६८,७८,७९, ८९,९०,९६,९७,१०२,१०३,११४,११५,१२२, १३२,१४२,१६० से १६३, १७१,१८६ से १९१,१९३,१९५,१९८ से २०७,२१० से २१२,२१४,२१९,२२२ से २२५,२२७ से २३०,२३३ से २३८,२४० से २४४,२४६, २४९,२५७ से २६३,२६५,२६८ से २७३, २७५ से २८२,२८४,२८५
कालतो [कालतस्] जी० २।८४,११७ से १२०, १२२ से १२४; ३।५९,१९३,१९४,११३३ से ११३५; ५।८,१०,२२; ९।१६,२३,६४,७६,७७
कालधम्म [कालधर्म] रा० ७५३
कालपोर [दे० कालपर्वन्] जी० ३।८७८
कालमास [कालमास] ओ० ८७,८९ से ९५,११४, ११७,१४०,१५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० ७५० से ७५३,७९६. जी० ३।११७, ६३०
कालमिगपट्ट [कालमृगपट्ट] जी० ३।५९५
कालमेह [कालमेघ] ओ० ५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालय [कालक] जी० ३।८१९

कालसंघिय [कालसन्धित] जी० ३।५८६

कालागरु [कालागुरु] रा०, ९,१२,३२,१३२, २३६,२८१,२९२. जी० ३।३०२,३७२;३९८, ४४७,४५७

कालागुरु [कालागुरु] ओ० २,५५

कालाभिग्गहचरय [कालाभिग्रहचरक] ओ० ३४

कालायस [कालायस] ओ० ६४. रा० १७३, ६८१. जी० ३।२८५

कालोद [कालोद] जी० ३।७७५,८१० से ८१२, ८१४,८१६,८१८

कालोभास [कालावभास] जी० ३।८३,९४

कालोय [कालोद] जी० ३।७७०.से ७७३,८००, ८०३ से ८०७,८१३,८१५,८१९ से ८२१, ९५६,९६४,९६५,९६७,९७०

कालोयय [कालोदक] जी० ३।७७२

कावपेच्छा [कावप्रेक्षा] जी० ३।६१६

काविल [कापिल] ओ० ९६

काविसायण [कापिशायन] जी० ३।५८६

कास [काश] जी० ३।६२८

कासित्ता [काशित्वा] जी० ३।६३०

किइकम्म [कितिकर्मन्] ओ० ४०

किं [किम्] रा० ६२. जी० १।२

किंकर [किङ्कर] ओ० ६४. रा० ५१

किंकरभूत [किङ्करभूत] जी० ३।५६२

किंकरभूय [किङ्करभूत] रा० ६६४

किंचि [किञ्चित्] ओ० १६९. रा० ९. जी० ३।८२

किंचूणोमोदरिय [किञ्चिदूनावमोदरिक] ओ० ३३

किंपागफल [किम्पाकफल] ओ० २३

किंपुरिस [किम्पुरुष] ओ० ४९, १२०, १६२. रा० १४१, १७३, १९२, ६९८, ७५२, ७७१, ७८९. जी० ३।२६६, २८५, ३१८

किंपुरिसकंठ [किम्पुरुषकण्ठ] रा० ११५, २५८. जी० ३।३२८

किंपुरिसकंठग [किम्पुरुषकण्ठक] जी० ३।४१९

किंमय [किम्मय] जी० ३।८७, १०८१

किंसुय [किंशुक] ओ० २२. रा० २७,७७७,७७८, ७८८. जी० ३।११८, २८०, ५९०

किच्च [कृत्य] रा० ११, ५९

किच्चा [कृत्वा] ओ० ८७. रा० ६६७, जी० ३।११७

किट्टिया [कृष्टिका] जी० १।७३

किड्डकर [क्रीडाकर] ओ० ६४

किणिय [किणित] रा० ७७

किण्णर [किन्नर] ओ० १३, ४९. रा० ६९८, ७५२, ७७१, ७८९. जी० ३।२६६, २८५, २८८, ३००, ३१८, ३७२

किण्णरकंठ [किन्नरकण्ठ] जी० ३।३२९

किण्णरकंठग [किन्नरकण्ठक] जी० ३।४१९

किण्ण [कथम्] रा० ६६७

किण्ह [कृष्ण] ओ० ४, १२, १३, १९. रा० २२, २४, २५, १२८, १३२, १५३, १६७, १७०, १७८, २३५, ७०३. जी० ३।७८[1], २७३, २७७, २७८, २९०, २९८, ३०२, ३२६, ३५३, ३५८, ३८२, ३९७, ५८५, ५९७, ८३८।१७, १०७५

किण्हकणवीर [कृष्णकणवीर] रा० २५. जी० ३।२७८

किण्हकेसर [कृष्णकेसर] रा० २५

किण्हच्छाय [कृष्णच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३

किण्हबंधुजीव [कृष्णबन्धुजीव] रा० २५

किण्हलेस [कृष्णलेश्य] जी० ३।१०१

किण्हलेस्सा [कृष्णलेश्या] जी० ३।१०१, १०२

किण्हसप्प [कृष्णसर्प] रा० २५

किण्हासोय [कृष्णाशोक] रा० २५

किण्होभास [कृष्णावभास] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३,२९८,३५८,५८५

√कित्त [कीर्तय्]—कित्तति. रा० १८५

कित्तिय [कीर्ति] ओ० २

---

१. अगरु, भल्लातक, अर्जुन (आप्टे)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किन्नर [किन्नर] ओ० १२०,१६२. रा० १७, १८, २०, ३२, ३७, १२९, १४१, १७३,१९२. जी० ३।३११

किन्नरकंठ [किन्नरकण्ठ] रा० १५५, २५८

किमंग [किमङ्ग] ओ० ५२. रा० ६८७

किमि [कृमि] जी० ३।८४

किमिकुंभी [कृमिकुम्भी] रा० ७५६

किमिय [कृमिक] जी० ३।१११

किमिराग [कृमिराग] रा० २७. जी० ३।२८०

किर [किल] जी० ३।१२६।१

किरण [किरण] ओ० १९. जी० ३।५९०,५९६, ५९७

किरिया [क्रिया] ओ० ४०,१२०,१६२. रा० ६९८, ७५२, ७८९. जी० ३।२१०,२११

किलंत [क्लान्त] जी० ३।११८, ११९

किलाम [क्लम] रा० ७२९, ७३१, ७३२

किलेस [क्लेश] ओ० ४६

किव्विसिय [किल्विषिक] ओ० ६८

किसलय [किसलय] ओ० ५, ८. रा० १३६. जी० ३।२७४, ३०६

किसि [कृषि] जी० ३।६०७

किसिय [कृशित] रा० ७६०, ७६१

√कीड [क्रीड्]—कीडंति जी० ३।२९८

कीयगड [क्रीतकृत] ओ० १३४

√कील [क्रीड्]—कीलंति रा० १८५. जी० ३।२१७

कीलग [कीलक] रा० २४. जी० ३।२७७

कीलण [क्रीडन] ओ० ४९

कीलिया [कीलिका] जी० १।११९

कुंकुम [कुङ्कुम] ओ० ११०, १३३. रा० ३०. जी० ३।२८३

कुंचस्सर [क्रोञ्चस्वर] रा० १३५

कुंचिय [कुञ्चित] ओ० १९. जी० ३।५९६,५९६

कुंजर [कुञ्जर] ओ० १, १३, २७. रा० १७, १८, २०, ३२, ३७, १२९, ८१३. जी० ३।११८, ११९, २८८, ३००, ३११, ३७२

कुंडधारपडिमा [कुण्डधारप्रतिमा] रा० २५७ जी० ३।४१८

कुंडल [कुण्डल] ओ० १५, २१, ४७, ४९, ५१, ५४, ६३, ६५, ७२, १०८, १३१. रा० ८, २८५, ६७२, ७१४. जी० ३।४५१, ५९३, ७७५, ९३३

कुंडलभद्द [कुण्डलभद्र] जी० ३।९३३

कुंडलमहाभद्द [कुण्डलमहाभद्र] जी० ३।९३३

कुंडलमहावर [कुण्डलमहावर] जी० ३।९३३

कुंडलवर [कुण्डलवर] जी० ३।९३३

कुंडलवरभद्द [कुण्डलवरभद्र] जी० ३।९३३

कुंडलवरमहाभद्द [कुण्डलवरमहाभद्र] जी० ३।९३३

कुंडलवरोभास [कुण्डलवरावभास] जी० ३।९३३

कुंडलवरोभासमहावर [कुण्डलवरावभासमहावर] जी० ३।९३३

कुंडलवरोभासवर [कुण्डलवरावभासवर] जी० ३।९३३

कुंडिया [कुण्डिका] ओ० ११७

कुंडियालंछणय [कुण्डिकालाञ्छणक] रा० ७६७

कुंत [कुन्त] ओ० ६४. जी० ३।११०

कुंतग्ग [कुन्ताग्र] जी० ३।८५

कुंतग्गाह [कुन्तग्राह] ओ० ६४

कुंथु [कुन्थु] रा० ७७२. जी० ३।१११

कुंद [कुन्द] ओ० १९. रा० २९, ३८, १६०, २२२, २५५, २५६. जी० ३।२८२,३१२,३३३, ३८१, ४१६, ४१७, ५९६, ५९७, ८९४

कुंदगुम्म [कुन्दगुल्म] जी० ३।५८०

कुंदलया [कुन्दलता] ओ० ११. रा० १४५,३।२६८, ५८४

कुंदलयापविभत्ति [कुन्दलताप्रविभक्ति] रा० १०१

कुंदुरुक्क [कुन्दुरुक] ओ० २, ५५. रा० ६, १२, ३२, १३२, २३६,२८१, २९२. जी० ३।३०२, ३७२, ३९८, ४४७, ४५७

कुंभ [कुम्भ] जी० ३।५९७

कुंभारावाय [कुम्भकारापाक] जी० ३।११८

कुंभिक्क [कौम्भिक, कुम्भाग्र] रा० ४०. जी० ३।३१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंभी [कुम्भी] रा० ७५६

कुक्कुइय [कौकुचिक] ओ० ६५

कुक्कुड [कुक्कुट] ओ० १, ३३

कुक्कुडलक्खण [कुक्कुटलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

कुच्छि [कुक्षि] ओ० १६. जी० ३।५६६ से ५६८, ७८८

कुच्छिसूल [कुक्षिशूल] जी० ३।६२८

कुज्जायगुम्म [कुब्जकगुल्म] जी० ३।५८०

कुट्टिज्जंत [कुट्टयमान] रा० ७७

कुट्टिमतल [कुट्टिमतल] ओ० ६३

कुट्ठ [कुष्ठ] जी० ३।६२८

कुडभी [कुडभी] रा० ५२,५६, २३१, २४७. जी० ३।३६३

कुडय [कुटज] ओ० ६,१०. जी० ३।३८८, ५८३

कुडिल [कुटिल] ओ० १, ४६. जी० ३।५६७

कुडुंब [कुटुम्ब] रा० ६७५

कुड्ड [कुड्य] जी० ३।७२४, ७२७

कुणाला [कुणाला] रा० ६७६, ६७७, ६८३, ७०६

कुणिम [दे० कुणप] ओ० ७३. जी० ३।८४

कुतुंब [कुस्तुम्ब] रा० ७७

कुतुंबर [कुस्तुम्बर] रा० ७७

कुत्तियावण [कुत्रिकापण] ओ० २६

कुत्तुंवक [कुस्तुम्बक] जी० ३।७८

कुमार [कुमार] रा० ६७३, ६७४, ७६१ से ७६३

कुमारग्गह [कुमारग्रह] जी० ३।६२८

कुमारसमण [कुमारश्रमण] रा० ६८६, ६८७, ६८६,६६२ से ६६७, ७०० से ७०६, ७११, ७१३,७१४, ७१६ से ७२२,७३१ से ७३३, ७३६ से ७३६ ७४७ से ७८१, ७८७, ७६६

कुमुद [कुमुद] रा० २६, ३१. जी० ३।११८, ११६, २५६, २८२, २८४, ५६७

कुमुदप्पभा [कुमुदप्रभा] जी० ३।६८३

कुमुदा [कुमुदा] जी० ३।६८३,६१५

कुमुय [कुमुद] [कुमुद] ओ० १२,१५०. रा० १७४,१६७,२७६,२८१,२८८,८११. जी० ३।२८२,२८६

कुम्म [कूर्म] ओ० १६,२७,३७. रा० ८११. जी० ३।५६६,५६७

कुरा [कुरु, कुर] जी० ३।५७८ से ५६६,६०५ से ६२८,६३१,६३२,६३६,६६६,६६८,७०२,

कुरु [कुरु] जी० ३।७७५।३

कुरुविंद [कुरुविन्द] ओ० १६. जी० ३।५६६

कुल [कुल] ओ० १४,२३,४०,१४१,१५५. रा० ७६६. जी० ३।१६०

कुलकोडि [कुलकोटि] जी० ३।१६० से १६२, १६५ से १६६,१७१,१७४,६६६,६६८

कुलक्खय [कुलक्षय] जी० ३।६२६,६२८

कुलघररक्खिया [कुलगृहरक्षिता] ओ० ६२

कुलणिस्सिय [कुलनिश्रित] रा० ७७३

कुलरोग [कुलरोग] जी० ३।६२८

कुलव [कुडव] रा० ७७२

कुलवेयावच्च [कुलवैयावृत्य] ओ० ४१

कुलसंपण्ण [कुलसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

कुलिव्वय [कुटीव्रत] ओ० ६६

कुवलय [कुवलय] ओ० १३. जी० ३।५६७

कुस [कुश] ओ० ८,१०. रा० ३७. जी० ३।३११, ३८६,५८१ से ५८३,५८६, से ५६५

कुसग्ग [कुशाग्र] ओ० २३

कुसल [कुशल] ओ० १५,३७,६३,६४,१२० १४८, १४६,१६२. रा० १२,७०,१७३,६७२,६८१, ६६८,७५२,७५८,७५६,७६५,७६६,७७०, ७८६,८०४,८०६,८१०. जी० ३।११८,२८५, ५८८,५६७

कुसुम [कुसुम] ओ० १३,४७,४६. रा० ६,१२,२६ से २८,३१,२२८,२६१,२६३ से २६६,३००, ३०५,३१२,३५५. जी० ३।२७६ से २८१, २८४,३८७,४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७, ५१६,५२०,५५४,५८०,५६०,६७२

√कुसुम [कुसुमय्]—कुसुमंति. जी० ३।५८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुसुमघरग [कुसुमगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२९४,८५७
कुसुमघरय [कुसुमगृहक] जी० ३।८५७
कुसुमदाम [कुसुमदामन्] जी० ३।५९१
कुसुमासव [कुसुमासव] ओ० ६. जी० ३।२७४
कुसुमित [कुसुमित] जी० ३।५८९
कुसुमिय [कुसुमित] ओ० ५,८,१०,११. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४,३९०,५८४, ७०२,८०८,८२९
कुहंड [कूष्माण्ड] ओ० ४९
कुहंडिया [कूष्माण्डी] रा० २८. जी० ३।२८१
कुहणा [कुहणा] जी० १।६९,७२
कुहर [कुहर] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५
कुहिय [कुथित] जी० ३।८४
कूड [कूट] ओ० ६३. रा० १३०, १७१. जी० ३।११९,३००,६८९,६९०,६९२ से ६९८, ७७५,८४५,९३७
कूडागार [कूटाकार] ओ० १९. जी० ३।५९४, ५९६,६०४
कूडागारसाला [कूटाकारशाला] रा० १२३,७५५, ७७२,७८७,७८८
कूडाहच्च [कूटाहत्य] रा० ७५१,७६७
कूणिय [कूणिक] ओ० १४,२०,२१,५३ से ५६, ६२ से ७१,८०. रा० ७७८
कूल [कूल] ओ० ११५. रा० १७४,२७९. जी० ३।२८६,४४५,६३२,६३९,६६८
कूलधम्मग [कूलध्मायक] ओ० ९४
कूवग्गाह [कूपग्राह] ओ० ६४
कूवमह [कूपमह] जी० ३।६१५
कूवय [कूपक] ओ० ४६
केउ [केतु] ओ० ६ से ८,१०,५०. रा० १६२, १६३. जी० ३।२७५,२७६,३३५,३५५
केउकर [केतुकर] ओ० १४. रा० ६७१
केऊर [केयूर] ओ० २१,५४,१०८,१३१. रा० ८,७१४
केकय [केकय] रा० ७०६
केतकी [केतकी] जी० ३।२८३
केतगी [केतकी] रा० ३०
केयइ [कैकय] रा० ६६८, ६६९,६८३,७११
केमहालत [कियन्महत्] जी० ३।१७६,१७८,१८२
केमहालय [कियन्महत्] जी० १।१६; ३।८६ ९१, ९४,१८०,२५९,७९० से ७९२,९६९,१०८०, १०८७,१०८८
केयुय [केतुक] जी० ३।७२३
केयूर [केयूर] रा० २८५. जी० ३।४५१,५९३
केरिसग [कीदृशक] जी० ३।९४,१११९
केरिसय [कीदृशक] रा० १७३. जी० ३।८३ से ८५,९५ से ९७,१०१,११६,११८,११९,१२२, १२३,१२८,२१८,२८३, से २८५,५७९,५९६, ५९७,६०१,६०२,९५५,९५८,९६१,१०७७ से १०७९,१०९३,१०९७ से १०९९,१११४, १११७,११२१ से ११२४
केरिसिय (कीदृशक) जी० ३।११२२
केलास [कैलाश] जी० ३।७४८,७४९,७५२,९२३
केलासा [कैलाशा] जी० ३।७५२
केली [केली] ओ० ४९
केवइ [कियत्] जी० १।४१,१४२
केवइय [कियत्] ओ० ८९ से ९५,११४,११७, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० ६५५, ६६६. जी० १।५२; ३।७७,८१,२५९,७९८, ८०२,८३०,१००४,१०४२,१०६२,१०६७, १०६९; ४।३
केवचिरं [कियच्चिरम्] रा० २०० जी० ४।७
केवच्चिरं [कियच्चिरम्] जी० १।१३९
केवति [कियत्] जी० ३।९०,१९२,१९५ से १९७, ५९९,६२९,११३१,११३६.११३७; ६।१२, ५९
केवतिय [कियत्] रा० ७९८ जी० १।१३७,१३८; २।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३९,४६, ६३,६६,७३,७९,८६,८८,९२,९७,१०७ से

१०६,१११,११३,११४, ११६,१२५,१२६,
१३३,१३६,१५०; ३।५,१२,१४ से २१,३३,
३४,३६,४०,४२,४४,५१,६० से ६३,६६,७७,
८०,८१,८६,१०७,१२०,१५६,१८६,१६२,
२३८,२४३,२४७,२५०,२५६,५६४,५६५,
५७०,७०६,७१४,७३२,७८८,७८६,७६४,
८१२,८१५,८२३,८२७,८३२,८३४,८३५,
८३६,८४४,८४७,८५०,६५३,६५४,६७२,
६७३,१००० से १००६,१०१०,१०२२,१०२७,
१०७३,१०८३,१०८५,११११; ४।५,१६,१७;
५।५,२१,२३,२४,२६,३०; ७।२; ६।२,४,
२५,२६,३३,४६,५२

केवल [केवल] ओ० १५१,१५३,१६०,१६५,
१६६. रा० ८१२,८१४. जी० ३।१०२५

केवलकप्प [केवलकल्प] ओ० १६६. रा० ७.
जी० ३।८६.

केवलणाण [केवलज्ञान] ओ० ४०,१६५।१३. रा०
७३६,७४५,७४६

केवलणाणविणय [केवलज्ञानविनय] ओ० ४०

केवलणाणि [केवलज्ञानिन्] ओ० २४. जी० ६।१६३,
१६५,१६६,१६७,२०१,२०५,२०८

केवलदंसणि [केवलदर्शनिन्] जी० १।२६,८६;
६।१३१,१३५,१३६,१४०

केवलदिट्ठि [केवलदृष्टि] ओ० १६५।१२

केवलनाणि [केवलज्ञानिन्] जी० १।१३३
६।१५६,१६३

केवलपरियाग [केवलपर्याय] ओ० १६५

केवलि [केवलिन्] ओ० ७२,१५४,१७१,१७२.
रा० ७१६,७७१,७७५,८१५,८१६.
जी० १।१२६; ६।३६,४१,४२,४४ से ४८,५०,
५२ से ५४

केवलिपरियाग [केवलिपर्याय] ओ० १५४.
रा० ८१६

केवलिसमुग्घाय [केवलिसमुद्घात] ओ० १६६,
१७४. जी० १।१३३

केस [केश] ओ० १३,४७,६२. रा० २८६.
जी० ३।४५२

केसंतकेसभूमी [केशान्तकेशभूमी] ओ० १६.
रा० २५४. जी० ३।४१५,५६६

केसर [केसर] रा० २५,३७,१७४. जी० ३।११८,
११६,२५६ २७८,२८६,३११,६४३

केसरिदह [केसरिद्रह] जी० ३।४४५

केसरिद्दह [केसरिद्रह] रा० २७६

केसरिया [केसरिका] ओ० ११७

केसलोय [केशलोच] ओ० १५४,१६५,१६६.
रा० ८१६

केसव [केशव] जी० ३।१२६

केसि [केशि] रा० ६८६,६८७,६८६,६६२ से
६६७,७०० से ७०६,७११,७१३,७१४,७१६
से ७२२,७३१ से ७३३,७३६ से ७३६,७४७
से ७८१,७८७,७६६

केसि [केशिन्] रा० १३३. जी० ३।३०३

केसुय [किंशुक] रा० ४५

कोइल [कोकिल] ओ० ६. जी० ३।२७५,५६७

कोउय [कौतुक] ओ० २०,५२,५३,६३,७०.
रा० ६८३,६८५,६८७ से ६८६,६६२,७००,
७१६,७२६,७५१,७५३,७६५,६७४,८०२,
८०५

कोउयकारग [कौतुककारक] ओ० १५६

कोउहल्ल [कौतुहल] जी० ३।६१६

कोऊहल [कौतुहल] ओ० ५२. रा० १५,१६,६८७,
६८६

कोंच [क्रौञ्च] रा० २६. जी० ३।२८२

कोंचणिग्घोस [क्रौञ्चनिर्घोष] ओ० ७१. रा० ६१

कोंचस्सर [क्रौञ्चस्वर] जी० ३।२०५,५६८

कोंचासण [क्रौञ्चासन] रा० १८१,१८३.
जी० ३।२६३

कोंडलग [कोण्डलक] ओ० ६. जी० ३।२७५

कोकंतिय [कोकन्तिक] जी० ३।६२०

कोकासित [दे०] जी० ३।५६६

कोक्कुइय [कौकुचिक] ओ० ६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोट्टण [कुट्टन] ओ० १६१,१६३

कोट्टिज्जमाण [कुट्ट्यमान] रा० ३०

कोट्टिमतल [कुट्टिमतल] रा० १३०,१७३,८०४. जी० ३।२८५,३००

कोट्टिय [कुट्टयित्वा] जी० ३।११८,११६

कोट्टेज्जमाण [कुट्ट्यमान] जी० ३।२८३

कोट्ठ [कोष्ठ] रा० ३०,१६१,२५८,२७६. जी० ३।२३४,२८३,४१६,६३७,१०७८

कोट्ठग [कोष्ठक] रा० ७११. जी० ३।५६४

कोट्ठबुद्धि [कोष्ठबुद्धि] ओ० २४

कोट्ठय [कोष्ठक] रा० ६७८,६८६,६८७,६८६, ६६२,७००,७०६

कोट्ठागार [कोष्ठागार] ओ० १४,२३. रा० ६७१,६६५,७८७,७८८,७६०,७६१

कोट्ठार [कोष्ठागार] रा० ६७४

कोडकोडी [कोटकोटी] जी० ३।७०३,७२२,८०६, ८२०,८३०,८३४,८३७,८३८।३१,८५५, १०००

कोडाकोडि [कोटाकोटि] ओ० १६२. रा० १२४

कोडाकोडी [कोटाकोटी] जी० २।७३,६७,१३६; ३।७०३,८०६,१०३८; ५।२६

कोडि [कोटि] ओ० १,१६२. रा० १२४

कोडिकोडी [कोटिकोटी] जी० ३।१०००

कोडी [कोटी] रा० ६६४. जी० ३।२३२,५६२, ५७७,६५८,८२३,८३२,८३५,८३६,१०३८

कोडीय [कोटीक] रा० २३६. जी० ३।४०१

कोडुंब [कौटुम्ब] जी० ३।२३६

कोडुंबि [कौटुम्बिन्] जी० ३।१२६

कोडुंबिय [कौटुम्बिक] ओ० १,१८,५२,६३. रा० ६८१ से ६८३,६८७.६८८,६६०,६६१, ७०४,७०६,७१४ से ७१६,७५४,७५६,७६२, ७६४. जी० ३।६०६

कोण [दे०कोण] रा० १७३. जी० ३।२८५

कोणिय [कोणिक] ओ० १५,१६,१८,२०,६२

कोत्तिय [कोत्रिक] ओ० ६४

कोद्दालक [कुद्दालक] जी० ३।५८२

कोमल [कोमल] ओ० ५,८,१६,२२,६३ रा० ७२३,७७७,७७८,७८८. जी० ३।२७४, ५६६,५६७

कोमुई [कौमुदी] ओ० १५. रा० ६७२. जी० ३।५६७

कोयासिय [विकसित[1]] ओ० १६

कोरंट [कोरण्ट] ओ० ६३,६४. रा० ५१,२५५

कोरंटक [कोरण्टक] रा० २८. जी० ३।२८१

कोरंटयगुम्म [कोरण्टकगुल्म] जी० ३।५८०

कोरक [कोरक] जी० ३।२७५

कोरव्व [कौरव्य] ओ० २३. रा० ६८८. जी० ३।११७

कोरव्वपरिसा [कौरव्यपरिषद्] रा० ६१

कोरिल्लय [दे०] रा० ७५६

कोरेंट [कोरण्ट] ओ० ६५. रा० ६८३,६६२, ७००,७१६. जी० ३।४१६

कोलसुणग [कोलशुनक] जी० ३।६२०

कोलाहल [कोलाहल] ओ० ४६

कोव [कोप] जी० ३।१२८

कोस [कोश] १४,२३,१७०. रा० १८८,२०७, २०८,२३१,२४७,६७१,६७४,६६५,७६०, ७६१. जी० ३।४३,४४,८२,२६०,३५२ से ३५५,३५६,३६१,३६४ ३६८,३६६,३७२,३७४, ३६३ ३६५,४०१,४०२,४१२,४२५,६३४, ६४२,६४४,६४६,६५३,६५५,६६३,६६८, ६७३,६७४,६७६,६८३,६८५,६६१,७१४, ७३६,७५४,७५६,७६२,७६८ से ७७०,७७२, ८०२,८१५,८३६,१०१२ से १०१४

कोसंब [कोशाम्र] जी० १।७१

कोसंबपल्लवपविभत्ति [कोशाम्रपल्लवप्रविभक्ति] रा० १००

कोसेज्ज [कौशेय] ओ० १३. जी० ३।५६५

कोह [क्रोध] ओ० २८,३७,४४,७१,६१,११७, ११६,१६१,१६३,१६८. रा० ७६६. जी० ३।१२८,५६८,७६५,८४१

---

१. हे० ४।१६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहंगक [कोभङ्गक] ओ० ६
कोहकसाइ [क्रोधकषायिन्] जी० १।१३१;
६।१४८,१४६,१५२,१५५
कोहकसाय [क्रोधकषाय] जी० १।१६
कोहविवेग [क्रोधविवेक] ओ० ७१

ख

ख [ख] रा० ६५
खइय [क्षायिक] रा० ७६१,८१५
खइय [खचित] जी० ३।३७२
खओवसम [क्षयोपशम] ओ० ११६,१५६
खंजण [खञ्जन] ओ० १३. रा० २५.
जी० ३।२७८
खंड [खण्ड] जी० ३।५६२,६०१,८६६
खंडरक्ख [खण्डरक्ष] ओ० १
खंडिय [खण्डिक] ओ० ६८
खंति [क्षान्ति] ओ० २५,४३. रा० ६८६,८१४
खंतिखम [क्षान्तिक्षम[ओ० १६४
खंदग्गह [स्कन्दग्रह] जी० ३ ६२८
खंदमह [स्कन्दमह] रा० ६८८. जी० ३।६१५
खंध [स्कन्ध] ओ० ५,८,१३,१६. रा० ४,१२,
२२७,२२८,७५८,७५६. जी० १।५,७१,७२;
३।२७४,३८६,३८७,५६६,६७२,६७६,७६३
खंधमंत [स्कन्धवत्] ओ० ५,८. जी० ३।२७४
खंधावारमाण [स्कन्धावारमान] ओ० १४६.
रा० ८०६
खंधि [स्कन्धिन्] जी० ३।२७४
खंभ [स्तम्भ] रा० १७ से २०,३२,६६,१२६,
१३०,१३८,१७५,१६०,१६७,२०६,२११,
२७६,२६७,३०२,३२५,३३०,३३५,३४०.
जी० ३।२६४,२६६,२८७,२८८,३००,३७२,
३७४,४६२,४६७,४६०,४६५,५००,५०५,
५६७,६४६,६७३,६७४,७५६,८८४,८८७,
११२८,११३०
खंभपुडन्तर [स्तम्भपुटान्तर] रा० १६७.
जी० ३।२६६
खंभबाहा [स्तम्भबाहु] रा० १६७.
जी० ३।२६६
खंभसीस [स्तम्भशीर्ष] रा० १६७. जी० ३।२६६
खकारपविभत्ति [खकारप्रविभक्ति] रा० ६५
खग्ग [खड्ग] ओ० २७,५१,६६. रा० २४६,६६४,
८१३. जी० ३।५६२
खग्गपाणि [खड्गपाणि] रा० ६६४. जी० ३।५६२
खचित [खचित] जी० ३।४१०
खचिय [खचित] रा० ३२,१६०,२५६,२८५.
जी० ३।३३३,४५१
खज्जूर (सार) [खर्जूरसार] जी० ३।५८६
खज्जूरसार [खर्जूरसार] जी० ३।८६०
खज्जूरिवण [खर्जूरीवन] जी० ३।५८१
खट्टोदय [खट्टोदक] जी० १।६५
खडहडग [दे०] जी० ३।२६२
खण [क्षण] रा० ११६,७५१,७५३
खत्तिय [क्षत्रिय] ओ० १४,२३,५२.
रा० ६७१,६८७
खत्तियपरिव्वाय [क्षत्रियपरिव्राजक] ओ० ६६
खत्तियपरिसा [क्षत्रियपरिषद्] रा० ६१,७६७
खन्न [दे०] जी० ३।७८१,७८२
खम [क्षम] ओ० ५२. रा० २७५,२७६,६८७.
जी० ३।४४१,४४२
खय [क्षय] रा० ७६६
खयर [खदिर] रा० ४५
खर [खर] ओ० १०१,१२४. जी० १।५७,५८;
३।१६ ६१८
खरकंड [खरकाण्ड] जी० ३।६,७,१४,२३,२६
खरपुढवी [खरपृथ्वी] जी० ३।१८५,१६१
खरमुहिवाय [खरमुखीवादक] रा० ७१
खरमुही [खरमुखी] ओ० ६७. रा० १३,७१,७७,
६५७. जी० ३।४४६,५८८
खल [खल] ओ० २८
खलवाड [खलवाट] रा० ७८१,७८५ से ७८७
खलु [खलु] ओ० ५२. रा० ६. जी० १।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**खव** [क्षपय्]—खवेइ ओ० १८२. जी० ३।८३८।१८
खवयंत [क्षपयत्] ओ० १८२
खवेत्ता [क्षपयित्वा] ओ० १६८
खसर [खसर] जी० ३।६२८
खहयर [खेचर] ओ० १५६. जी० १।६८,११३, ११६,११७,१२५; २।२५,६६,७२,७६,८३, ८७,६६,१०४,११३,१३१,१३६,१३८,१४६, १४६; ३.१३७,१४५ से १४७, १६१
खहयरी [खेचरी] जी० २।३,१०,५३,६६,७२, १४४,१४६
√**खा** [खाद्]—खज्जइ. रा० ७८४—खाइ. रा० ७३२
खाइ [दे०] ओ० १६२
खाइम [खाद्य] ओ० ११७,१२०,१४७,१६२. रा० ६६८,७०४,७१६,७५२,७६५,७७६, ७८७ से ७८६,७६४,७६६,८०२,८०८
खाओवसमिय [क्षायोपशमिक] रा० ७४३
खाणु [स्थाणु] जी० ३।६२५,६३१
√**खाम** [क्षमय्]—खामेइ. रा० ७७७
खामित्तए [क्षमयितुम्] रा० ७७७
खाय [खात] ओ० १
खायमाण [खादत्] जी० ३।१११
खार [क्षार] जी० ३।६२७,६५५
खारय [क्षारक] जी० ३।७३१
खारवत्तिय [क्षारवर्तित] ओ० ६०
खारा [खारा] जी० २।६
खारोवय [क्षारोदक] जी० १।६५
खिंखिणिजाल [किङ्किणीजाल] रा० १६१. जी० ३।२६५,३०२
खिंखिणी [किङ्किणी] ओ० ६४. रा० १३२,१७३, ६८१. जी० ३।२८५,५६३
खिंसण [खिसन] ओ० ४६
खिंसणा [खिसना] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ८१६
खिज्जमाण [खिद्यमान] ओ० १३३. जी० ३।३०३
खित्त [क्षिप्त] जी० ३।६८६
खिप्पामेव [क्षिप्रमेव] ओ० ५५. रा० ६. जी० ३।४४४
खिवित्ता [क्षिप्त्वा] जी० ३।६८८
खीण [क्षीण] ओ० १६८
खीर [क्षीर] ओ० ६२,६३,. रा० २६. जी० ३।२८२,७७५
खीरधाई [क्षीरधात्री] रा० ८०४
खीरपूर [क्षीरपूर] रा० २६. जी० ३।२८२
खीरवर [क्षीरवर] जी० ३।८६२,८६३,८६५
खीरासव [क्षीराश्रव] ओ० २४
खीरोद [क्षीरोद] जी० ३।२८६,४४५,८६५,८६६ ८६८,६५६,६६३
खीरोदग [क्षीरोदक] जी० ३।४४५,६६३
खीरोदय [क्षीरोदक] जी० १।६५
खीरोयग [क्षीरोदक] रा० १७४,२७६
खु [क्षुध्] जी० ३।१२७,५६२
खुज्ज [कुब्ज] जी० १।११६
खुज्जा [कुब्जा] ओ० ७०. रा० ८०४
खुड्ड [क्षुद्र] रा० १७४,१७५,१८०. जी० ३।२६६, २८७,२६२,४१०,५७६,६३७,७३८,७४३, ७६३,८५७,८६३,८६६,८७५,८८१
खुड्डखुड्डग [क्षुद्रक्षुद्रक] रा० १८०
खुड्डखुड्डय [क्षुद्रक्षुद्रक] रा० १८१
खुड्डय [क्षुद्रक] रा० २४७. जी० ३।४०६
खुड्डा [क्षुद्रक] रा० २४८,२४६. जी० ७।१७
खुड्डाग [क्षुद्रक] ओ० २४. रा० ३५४. जी० ३।५१६; ७।५,६,१०,१२,१५,१६,१८; ६।२ से ४,४०,५१,१७१,२३६,२३८,२४३,२४४,२४६, २७१,२७३,२७६ से २८२
खुड्डापाताल [क्षुद्रकपाताल] जी० ३।७२६,७२८, ७२६
खुड्डापायाल [क्षुद्रकपाताल] जी० ३।७२६,७२७, ७२६
खुड्डाय [क्षुद्रक] ओ० १७०. जी० ३।८६,२६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खुड्डालिंजर [दे० क्षुद्रकालिञ्जर] जी० ३।७२६
खुड्डिय [क्षुद्रिक] जी० ३।५९३
खुड्डिया [क्षुद्रिका] ओ० २४. रा० १७४,१७५, १८०,७७२. जी० ३।१२४,१२५,२८६,२८७, २९२,५७९,६३७,७३८,७४३,७६३,८५७,८६३, ८६६,८७५,८८१
खुत्तग [दे०] ओ० ९०
खुद्द [क्षुद्र] रा० ६७१
√खुब्भ [क्षुभ्]-- खुब्भंति जी० ३।७२९
खुभियजल [क्षुभितजल] जी० ३।७८३,७८४
खुरपत्त [क्षुरपत्र] जी० ३।८५
खुहा [क्षुधा] ओ० ११७. रा० ७९६. जी० ३।१०९,११८,११९,१२८,१११४
खेड [खेट] ओ० ६८,८९ से ९३,९५,९६,१५५, १५८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७
खेत्त [क्षेत्र] ओ० २८,१९२. जी० १।५०; २।२६ से २९,५४ से ५६,६५,८४,८८,११४,१२३, १३२; ३।१०७, ७४१,७९१,८३८।२५, ११११
खेत्तओ [क्षेत्रतस्] ओ० २८. जी० १।३३,१३९, १४०; २।१२०; ५।८,९,२३.२९; ९।२३, ४०,९७,२५७
खेत्तच्छेद [क्षेत्रछेद] जी० ३।४६,४७
खेत्तच्छेय [क्षेत्रछेद] जी० ३।२१ से २७,४५
खेत्ताभिग्गहचरय [क्षेत्राभिग्रहचरक] ओ० ३४
खेम [क्षेम] ओ० १,१४. रा० ६७१
खेमंकर [क्षेमङ्कर] ओ० १४. रा० ६७१
खेमंधर [क्षेमधर] ओ० १४. रा० ६७१
खेय [खेद] ओ० ६३
खेलूड [दे०] जी० ३।७३
खेलोसहिपत्त [क्ष्वेलौषधिप्राप्त] ओ० २४
खोखुब्भमाण [चोक्षुभ्यमान] ओ० ४६
खोत [क्षोद] जी० ३।९६२
खोतरस [क्षोदरस] जी० ३।९६४
खोतोद [क्षोदोद] जी० ३।९६१
खोतोदग [क्षोदोदक] जी० ३।९४८
खोतोदय [क्षोदोदक] जी० १।६५
खोद [क्षोद] जी ३।९३१,९४९
खोदरस [क्षोदरस] जी० ३।८७८
खोदवर [क्षोदवर] जी० ३।८७४,८७५,८७७,९२७
खोदोद [क्षोदोद] जी० ३।८७७,८७८ ८८०,९२५, ९२८,९३२
खोदोदग [क्षोदोदक] जी० ३।८७५,८८१, ९१०
खोदोय [क्षोदोद] जी० ३।२८६
खोदोयग [क्षोदोदक] रा० १७४
खोमिय [क्षौमित] रा० १७३. जी० ३।२८५
खोम [क्षौम] रा० ३७,२४५ जी० ३।३११ ४०७,५९५
खोय [क्षोद] जी० ३।७७५
खोयरस [क्षोदरस] जी० ३।५८६

ग

ग [ग] रा० ९५
गइ [गति] ओ० १९,२१,२७,४६,५०,५४,८९ से ९५, ११४,११७, १५५, १५७ से १६०, १६२,१६७,१७२. रा० ७५५,७५७,८१३ जी० १।१४; ३।८३८।२२
गइय [गतिक] जी० १।६४,७४,७७,८७,८८, ९६,१०१
गइरइय [गतिरतिक] ओ० ५०
गंगा [गङ्गा] ओ० ११५,११७. रा० २४५,२७९. जी० ३।४०७,४४५,९३७
गंगाकूला [गङ्गाकूलक] ओ० ९४
गंगामट्टिया [गङ्गामृत्तिका] ओ० ११०,१३३
गंगावत्तग [गङ्गावर्त्तक] ओ० १९
गंगावत्तय [गङ्गावर्तक] जी० ३।५९६,५९७
गंठि [ग्रन्थि] ओ० १. रा० २७०. जी० ३।४३५, ८७८,९९३,९९७
गंड [गण्ड] ओ० ४७,६४,७२
गंडमाणिया [गण्डमानिका] रा० ७७२
गंडलेहा [गण्डलेखा] ओ० १५. रा० ६७२. जी० ३।५९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंडीपय [गण्डीपद] जी० १।१०३

गंडोवहाणय [गण्डोपधानक] रा० २४५

गंडोवहाणिया [गन्डोपधानिका] जी० ३।४०७

गंता [गत्वा] ओ० १८२ जी० ३।७८८

गतूंण [गत्वा] ओ० १९५

गंथ [ग्रन्थ] रा० २९२. जी० ३।४५७

गंथिम [ग्रन्थिम] ओ० १०९,१३२. रा० २८५. जी० ३।४५१,५९१

गंध [गन्ध] ओ० २,१५,४७,५१,५५,६३,६७,७२. ९२,१४७,१६१,१६३,१६९,१७०. रा० ९. १२,१३,३०,३२,४५,१३२,१५६,१५७,१७२, १९९,२३६,२५८,२७९ से २८१,२९१,२९२, ३५१,५९४,६५७,६७२,६८५,७१०,७१४, ७५१,७५३,७७१,७७४,७९४,८०२,८०८. जी० १।५,३६,५०,५८,७३,७८,८१; ३।२२, ५८,८४,८७,९५,१२७,२७१,२८३,३०२,३०९, ३२९,३७२,३९८,४१९,४४५ से ४४७,४५१, ४५७,५१६,५४७,५७८,५८६,५९२,५९८,६०१, ६०२,६४५,६४८,६५६,७७५,८६०,८६६, ८७२,८७८,९३७,९७२,९८२,१०७८,१०८१; १०९७,१११७,१११८,११२४

गंधओ [गन्धतस्] जी० १।३७,५०

गंधकासाइ [गन्धकाषायिन्] ओ० ६३. रा० २८५. जी० ३।४५१

गंधंग [गन्धाङ्ग] जी० ३।१७०

गंधजुत्ति [गन्धयुक्ति] ओ० १४६

गंधतो [गन्धतस्] जी० ३।२२

गंधद्धाणि [गन्धघ्राणि] ओ० ७,८,१०. जी० ३।२७६

गंधमंत [गन्धवत्] जी० १।३३, ३६; ३।५९२

गंधमादण [गन्धमादन] जी० ३।६६८

गंधमायण [गन्धमादन] जी० ३।५७७

गंधवट्टि [गन्धवर्ति] ओ० २,५५,६२. रा० ९, १२,३२,१३२,२३६,२८१ जी० ३।३०२, ३७२, ४४७

गंधव्व [गन्धर्व] ओ० ४९,१२०,१४८.१४९. १६२. रा० १४१,१७३,१९२,६८५,६९८, ७५२,७७१,७८९. जी० २।१७; ३।२६६, २८५,३१८,५८८

गंधव्वकंठ [गन्धर्वकण्ठ] रा० १५५,२५८ जी० ३।३२८

गंधव्वकंठग [गन्धर्वकण्ठक] जी० ३।४१९

गंधव्वघरग [गन्धर्वगृहक] रा० १८२,१८३ जी० ३।२९४

गंधव्वणट्ट [गन्धर्वनृत्य] रा० ८०९,८१०

गंधव्वनगर [गन्धर्वनगर] जी० ३।६२८

गंधव्वाणिय [गन्धर्वानीक] रा० ४७,५६

गंधहत्थि [गन्धहस्तिन्] ओ० १४,१९,२१,५४ रा० ८,२९२,६७१. जी० ३।४५७

गंधावति [गन्धापातिन्] जी० ३।७९५

गंधावाति [गन्धापातिन्] रा० २७९. जी० ३।४४५

गंधिय [गन्धिक] ओ० २,५५. रा० ९,१२,२२,३२, १३२,२३६,२८१,२८५. जी० ३।३०२,३७२, ४४७,४५१

गंधीय [गन्धिक] जी० ३।२९०

गंभीर [गम्भीर] ओ० १,५,८,१९,२७,४६,४९, ७१. रा० १३,१४,६१,१७४,२४५,८१३. जी० ३।८३,११८,११९,२७४,२८६,४०७, ५९६,५९७

गकारपविभत्ति [गकारप्रविभक्ति] रा० ९५

गगण [गगन] ओ० २७,६४. रा० ५०,५२,५६, १३७,२३१,२४७,८१३. जी० ३।३०७,३९३

√**गच्छ** [गम्]—गच्छ. रा० ६८०.—गच्छइ. रा० १५—गच्छंति. ओ० १७१. जी० १५४. —गच्छति. रा० १३. जी० ३।४४०—गच्छह रा० ९.—गच्छामि. रा० १९.—गच्छामो. ओ० ५२. रा० ६८७.—गच्छाहि. रा० ६९९. —गच्छिहिति. ओ० १४०

गच्छंत [गच्छत्] ओ० ४०

गच्छित्तए [गन्तुम्] ओ० १००

गज्ज [गद्य] रा० १७३. जी० ३।२८५

√**गज्ज** [गर्ज्]—गज्जंति. रा० २८१.

जी० ३.४४७
गज्जित [गर्जित] जी० ३।६२६
गड्ड [गर्त] जी० ३।६२३,६३१.३
√गढ [ग्रथ्]--गढेज्जा. जी० ३।६६३
गढित्तए [ग्रथयितुम्] जी० ३।६६०
गढिय [ग्रथित] रा० ७५३
गण [गण] ओ० ६,१६,४०,४१,४६,५०,६३,६८, १५५,१६२,१६२. रा० ३२,२०६,२११. जी० ३ ११८,११६,२७५,३७२,५८२,५८६ से ५६६, ६००,६०३ से ६१७,६२०,६२५,६२७, ६२८,६३०,६३६,७४६,११२०
गणग [गणक] ओ० १८. रा० ७५४,७५६,७६२, ७६४
गणणायक [गणनायक] ओ० १८
गणनायक [गणनायक] ओ० ६३. रा० ७५४,७५६, ७६२,७६४
गणविउस्सग्ग [गणव्युत्सर्ग] ओ० ४४
गणिय [गणित] ओ० १४६. रा० ८०६,८०७
गणवेयावच्च [गणवैयावृत्य] ओ० ४१
गणेत्तिया [दे०] ओ० ११७
गत [गत] रा० १२२,२८३,२८६. जी० ३।४४३, ४४७,४४६,४५६,५५७,७४६
गता [गदा] जी० ३।१११०
गति [गति] रा० ८१५. जी० ३।५६७,८४२,८४५
गतिकल्लाण [गतिकल्याण] ओ० ७२
गतिय [गतिक] जी० १।५६,६२,६५,६७,७६,८०, ८२,१०३,१११,११२,११६,११६,१२३,१२८, १३४,१३६
गत्त [गात्र] ओ० ४७,६३. रा० १२,३७,७५८ से ७६१ जी० ३।११८,३११,४०७
गत्तग [गात्रक] रा० २४५
गब्भ [गर्भ] रा० ८००,८०२. जी० ३.५६२
गब्भघर [गर्भगृह] जी० ३।५६४
गब्भघरग [गर्भगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२६४
गब्भत्थ [गर्भस्थ] ओ० १४२,१४४
गब्भवक्कंतिय [गर्भावक्रान्तिक] जी० १।६७,११७, १२५,१२६,१२६; ३।१३८,१४०,१४२,१४५, १४६,२१२,२१५,२२६
गब्भवास [गर्भवास] ओ० १६५
गब्भाहाण [गर्भाधान] रा० ८०३
√गम [गम्]—गमिस्सामो. ओ ६८.—गमिहिति. रा० ७६६.—गम्मंती. ओ० ७४
गम [गम] जी० ३।२१८,६६६,७१३,७४२,७४४, ७४५,६२८,६२६,१०४५,१०४८
गमण [गमन] ओ० ४०,४६,६५,६६,१२२, रा० १७,१८,२८८,६५६,६६७,७७५,७७६, ७८०. जी० ३।४५४,५५६
गमय [गमक] रा० २५१,२६५. जी० ३।७५१
गमित्तए [गन्तुम्] ओ० १००
गय [गज] ओ० १६,४८,५२,५५ से ५७,६२,६४, ६५. रा० २५,१४१,१४८,१६२,६८७ से ६८६. जी० ३।२६६,२७८,३१८,३२१,३५५,४५४, ५८६,५६६,५६७,१०१५
गय [गत] ओ० १५,१६,२१,४६ से ४६,६५,१७२, १७५,१७७,१६५।२२. रा० ८,४७,६८,१२२, १२३,१७३,२७५,२७७,२८१,२८६,२६०, ६५७,६७२,६८७ से ६८६,७१०,७१६,७५३, ७६५,७७४,७६४,८००,८०२,८०६,८१०. जी० ३।२८५,४४१,४५५,५६६,५६७
गयकंठ [गजकण्ठ] रा० १५५,२५८. जी० ३।३२८
गयकंठग [गजकण्ठक] जी० ३।४१६
गयकण्ण [गजकर्ण] जी० ३।२१६,२२३
गयकण्णदीव [गजकर्णद्वीप] जी० ३ २२३
गयकलभ [गजकलभ] रा० २५. जी० ३.२७८
गयजोहि [गजयोधिन्] ओ० १४८,१४६. रा० ८१०,८११
गयदंत [गजदन्त] रा० २६,१३२. जी० ३।२८२, ३०२
गयवइया [गतपतिका] ओ० ६२
गयलक्खण [गतलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

गयवइ [गजपति] ओ० ५१,६३
गयविलंबिय [गजविडम्बित] रा० ६१
गयविलसिय [गजविलसित] रा० ६१
गया [गदा] ओ० १. रा० २४६
गरहणा [गर्हणा] ओ० १५४,१६५,१६६.
रा० ८१६
गरुडज्झय [गरुडध्वज] रा० १६२. जी० ३।३३५
गरुय [गरुक] जी० १।५; ३।२२
गरुयत्त [गरुकत्व] रा० ७६२,७६३
गरुल [गरुड] ओ० १६,४७,४८,१२०,१६२.
रा० ६६८,७५२,७८६. जी० ३।५६६
गरुलवूह [गरुडव्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६
गरुलासण [गरुडासन] रा० १८१,१८३.
जी० ३।२६३
गल [गल] ओ० ५७. जी० ३।५६७
गवक्ख [गवाक्ष] जी० ३।६०४
गवक्खजाल [गवाक्षजाल] रा० १३२,१६१.
जी० ३।२६५,३०२
गवच्छिय [दे० आच्छादनम्] रा० १५३.
जी० ३।३२६
गवल [गवल] ओ० ४७. रा० २५. जी० ३।२७८
गवेलग [गवेलक] ओ० १,१४,१४१.
रा० ६७१,७४४,७६६
गवेसण [गवेषण] ओ० ११७,११६,१५६
गवेसणया [गवेषणा] रा० ७६५,७७४
गवेसि [गवेषिन्] रा० ७७४
गह [ग्रह] ओ० ५०,६३,१६२. रा० १२,७६,१७३,
२६१,२६३ से २६६,३००,३०५,३१२,३५५.
जी० २।१८; ३।२८५,६३१,७०३,८०६,
८३८।३,६,६,२२,२६,३०,८४५,१०२०,१०२१,
१०२६,१०३७,१०३८
गहअवसव्व [ग्रहापसव्य] जी० ३।६२६
गहगज्जित [ग्रहगर्जित] जी० ३।६२६
गहगण [ग्रहगण] रा० १२४. जी० ३।५८६,
८३८।१०,२१,८४१,८४२,१०२०
गहजुद्ध [ग्रहयुद्ध] जी० ३।६२६
गहणया [ग्रहणता] ओ० ५२. रा० ६८७
गहणी [ग्रहणी] जी० ३।५६८
गहदंड [ग्रहदण्ड] जी० ३।६२६
गहमुसल [ग्रहमुसल] जी० ३।६२६
गहविमाण [ग्रहविमान] जी० २।४२; ३।१००६,
१०१२,१०१७,१०३१
गहसंघाडग [ग्रहशृङ्गाटक] जी० ३।६२६
गहाय [गृहीत्वा] रा० १२. जी० ३।११८
गहित [गृहीत] जी० ३।३०३,४५७,४५६,४६१
४६५
गहिय [गृहीत] ओ० ४६,४६,७०,११६,१२०,१६२.
रा० १२,६६,७०,१३३,२६१,२६३ से २६६,
३००,३०५,३१२,३५५.६६४,६८३,६८६,६६८,
७५२,७८६,८०४. जी ३।४५८,४६०,४६२,
५२०,५५४,५६२
√**गा** [गै]—गायंति. रा० ११५. जी० ३।४४७.
—गिज्जइ. रा० ७८३
गाउय [गव्यूत, गव्यूति] ओ० १६५.
जी० १।८८,६०,१०३,१२१,१२४,१३०;
३।१०७,७८८,६१८,१०२२
गाढ [गाढ] रा० ७७४
गात [गात्र] जी० ३।४५१,४५७,६०२,८६०,८६६,
८७२,८७८
गातलट्ठि [गात्रयष्टि] जी० ३।५६७
गाथा [गाथा] जी० ३।८८
गाधा [गाथा] जी० ३।६३१
गाम [ग्राम] ओ १,२८,२६,४६,६८,८६ से ६३,
६५,६६,१५५.१५८ से १६१,१६३,१६८.
रा० ६६७,७८७,७८८. जी० ३।६०६,६३१,
८४१
गामकंटग [ग्रामकण्टक] ओ० १५४,१६५,१६६.
रा० ८१६
गामदाह [ग्रामदाह] जी० ३।६२६
गाममारी [ग्राममारी] जी० ३।६२८
गामरोग [ग्रामरोग] जी० ३।६२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गामाणुगाम [ग्रामानुग्राम] ओ० १६,२०,५२,५३. रा० ६८६,६८७,६८६,७०६,७११,७१३

गाय [गात्र] ओ० १,३६,३७,५२,६३,७०,६४, ११०,१३३. रा० २८५,२६१,६८७ से ६८६. जी० ३।११८

गाय [गो] जी० ३।६३१

गायंत [गायत्] ओ० ६४

गायलट्ठि [गात्रयष्टि] ओ० ७०. रा० २५४. जी० ३।४१५

गावी [गो] जी० ३।६१६

गाह [ग्राह] जी० १।६६,११८; ३।४५७ से ४६२, ४६५,४७०,४७७,५१६,५२०,५५४

√गाह [ग्राह्य्]—गाहेइ. ओ० ५६

गाहा [गाथा] ओ० १४६. रा० ८०६. जी० ३।५, १२,१२७,३५५

गाहावइपरिसा [गृहपतिपरिषद्] रा० ७६७

गाहेत्ता [ग्राहयित्वा] ओ० ५६

√गिज्झ [गृध्]—गिज्झिहिति ओ० १५०. रा० ८११

√गिण्ह [ग्रह्]—गिण्हइ. ओ० १७०.—गिण्हंति. रा० २८१. जी० ३।४४५.—गिण्हति. रा० २८८—गिण्हामो. ओ० ११७

गिण्हित्तए [ग्रहीतुम्] ओ० ११७. जी० ३।६८८

गिण्हित्ता [गृहीत्वा] ओ १७०. रा० २८१. जी० ३।४४५

गिद्ध [गृद्ध] रा० ७५३

गिम्ह [ग्रीष्म] ओ० २६

गिम्हकाल [ग्रीष्मकाल] ओ० ११५

गिरा [गिर्] जी० ३।५६७

गिरि [गिरि] रा० ८०४. जी० ३।५६७,८३६

गिरिपक्खंदोलग [गिरिपक्षान्दोलक] ओ० ६०

गिरिपडियग [गिरिपतितक] ओ० ६०

गिरिमह [गिरिमह] रा० ६८८

गिलाणभत्त [ग्लानभक्त] ओ० १३४

गिलाणवेयावच्च [ग्लानवैयावृत्य] ओ० ४१

√गिलाय [ग्लै]—गिलाएज्जाह. रा० ७२०

गिल्लि [दे०] ओ० १००,१२३. जी० ३।५८१, ५८५,६१०

गिह [गृह] ओ० २०,५३. रा० ६८१,६८३,७०८, ७१०,७१३,७२३,७२६

गिहिधम्म [गृहिधर्म] ओ० ५२,७८,६३. रा० ६८७, ६८६,६६५,६६६.७७५

गिहिलिंगसिद्ध [गृहिलिङ्गसिद्ध] जी० १।८

गीइया [गीतिका] ओ० १४६. रा० ८०६

गीत [गीत] जी० ३।८४२,८४५

गीय [गीत] ओ० ४६.६८,१४६. रा० ७,७८, ८०६. जी० ३.३५०,५६३,१०२३

गीयजस [गीतयशस्] जी० ३।२५६

गीयरइ [गीतरति] ओ० १४८,१४६. रा० १७३, ८०६,८१०

गीयरइप्पिय [गीतरतिप्रिय] ओ० ६५

गीयरति [गीतरति] जी० ३।२८५

गीवा [ग्रीवा] ओ० १६. रा० २६. जी० ३।२७६, ४१५,५६६,५६७

गुंजंत [गुञ्जत्] ओ० ६ रा० ७६,१७३. जी० ३।२७५,२८५

गुंजद्धराग [गुञ्जार्धराग] ओ० २२. रा० २७,७७७ ७७८,७८८. जी० ३।२८०

गुंजा [गुञ्जा] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५

गुंजालिया [गुञ्जालिका] ओ० ६६. रा० १७४, १७५,१८०. जी० ३।२८६

गुंजावाय [गुञ्जावात] जी० १।८१

गुच्छ [गुच्छ] ओ० ६ से ८,१०. जी० १।६६; ३।२७५

गुज्झ [गुह्य] रा० ६७५

गुज्झदेस [गुह्यदेश] जी० ३।५६६

गुड [गुड] जी० ३।५६२

गुण [गुण] ओ० १,१४,१५,२३,२५,६३,६६,१२० १४०,१४३,१५७. रा० ६६,७०,१७३,६७१ ६७३,६८६,६६८,७५२,७८६,८०१.

जी० १।५०; ३।२८५,५९६,५९७
गुणणिप्फण्ण [गुणनिष्पन्न] ओ० १४४
गुणतर [गुणतर] रा० ७१८
गुणभाव [गुणभाव] ओ० १९५।१२
गुणयालीस [एकोनचत्वारिंशत्] रा० १२६
गुणव्वय [गुणव्रत] ओ० ७७. रा० ७८७
गुणसेढिया [गुणश्रेणिका] ओ० १८२
गुणिय [गुणित] जी० ३।८३८।२६
गुत्त [गुप्त] ओ० २७,१५२,१६४. रा० १२३, ६६४,७७५,७७२,८१३. जी० ३।५६२
गुत्तदुवार [गुप्तद्वार] रा० १२३,७५५,७७२
गुत्तपालित [गुप्तपालिक] जी० ३।५६२
गुत्तपालिय [गुप्तपालिक] रा० ६६४
गुत्तबंभयारि [गुप्तब्रह्मचारिन्] ओ० २७,१५२, १६४. रा० ८१३
गुत्ति [गुप्ति] रा० ६८६,८१४
गुत्तिंदिय [गुप्तेन्द्रिय] ओ० २७,३७,१५२,१६४. रा० ८१३
गुप्पमाण [गुप्यत्] ओ० ४६
गुप्फ [गुल्फ] ओ० १६. जी० ३।५९६
गुमगुमंत [गुमगुमायमान] ओ० ६. जी० ३।२७५
गुम्म [गुल्म] ओ० ६ से ८,१०. जी० १।६९; ३।२७५,५८०,६३१
गुरु [गुरु] रा० ६७१
गुल [गुड] ओ० ९२. जी० ३।६०१, ८६६
गुलइय [दे०] ओ० ५,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४
गुलगुलंत [गुलगुलायमान] ओ० ५७
गुलिका [गुलिका] ओ० ४७. रा० २५,२६,२८. जी० ३।२७८,२७९,२८१
गुहा [गुहा] रा० १७३. जी० ३।२८५
गूढ [गूढ] ओ० १६. जी० ३।५९६
गूढदंत [गूढदन्त] जी० ३।२१६
गेज्झ [ग्राह्य] रा० १३३. जी० ३।३०३
√गेण्ह [ग्रह्]—गेण्हइ. रा० ७०८. जी० ३।४५९—गेण्हंति. रा० ७५. जी० ३।४४५
गेण्हित्तए [ग्रहीतुम्] जी० ३।९८९
गेण्हित्ता [गृहीत्वा] रा० ७५. जी० ३।४४५
गेद्धपट्ठग [गृध्रपृष्ठक] ओ० ९०
गेय [गेय] रा० ७६,११५,१७३,२८१. जी० ३।२८५,४४७
गेविज्ज [ग्रैवेय] रा० ६६४,६८३
गेविज्जविमाण [ग्रैवेयविमान] ओ० १९२
गेवेज्ज [ग्रैवेय] ओ० ५७,१६०. रा० ६९,७०. जी० २।९२; ३।५९२,५९३,१०३८,११०३, ११०५,११०७,१११६,१११७,११२०,११२३, ११२४,११२९
गेवेज्जक [ग्रैवेयक] जी० २।१४८,१४९
गेवेज्जक [ग्रैवेयक] ओ० ६३
गेवेज्जविमाण [ग्रैवेयविमान] ओ० १९०. जी० ३।१०६३,१०६६,१०६९,१०७१,१०७३, १०७६
गेवेज्जा [ग्रैवेयक] जी० ३।१०८४,१०८९, १०९२,१०९५,११०३,११०५,११०७, १११६,१११७,११२०,११२३,११२४, ११२९
गेह [गेह] जी० ३।६०५,६३१,८४१
गेहागार [गेहाकार] जी० ३।५९४
गेहायणण [गेहायतन] जी० ३।६०५
गेहाव [य?] **ण** [गेहायतन] जी० ३।८४१
गो [गो] ओ० १,१४,१४१. रा० ६७१,७७४, ७९९. जी० ३।८४
गोकण्ण [गोकर्ण] जी० ३।२१६,२२४
गोकण्णदीव [गोकर्णद्वीप] जी० ३।२२४
गोकलिंजग [गोकिलिञ्जक] रा० १५१. जी० ३।३२४
गोकिलिंज [गोकिलिञ्ज] रा० ७७२
गोक्खीर [गोक्षीर] ओ० १६,१६४ जी० ३।६०१,

८६६,६५६

गोखीर [गोक्षीर] ओ० ४७ रा० १३०. जी० ३।३००,५६६

गोघयवर [गोधृतवर] जी० ३।८७२,६६०

गोच्छिय [गुच्छित] ओ० ५,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४

गोण [गो] ओ० १०१,१२४,१४४. जी० ३।६१८

गोणलक्खण [गोलक्षण] ओ० १४६ रा० ८०६

गोणस [गोनस] जी० १।१०८

गोतमदीव [गौतमद्वीप] जी० ३।७६२

गोतित्थ [गोतीर्थ] जी० ३ ७६०, ७६१,७६३

गोथूम [गोस्तूप] जी० ३।७३४ से ७४०, ७४२, ७४५,७५०

गोथूभा [गोस्तूपा] जी० ३।७३८,६१०,६२१

गोधूम [गोधूम] जी० ३।६२१

गोपुच्छ [गोपुच्छ] रा० १२७. जी० ३।२६१, ३५२,५६७,६३२,६६१,६८६,७३६,८८२

गोपुर [गोपुर] ओ० १. रा० ६५४,६५५. जी० ३।५५४,५६४,६०४

गोप्फ [गुल्फ] जी० ३।४१५

गोमयकीड [गोमयकीट] जी० १।८६; ३।१११

गोमाणसिया [गोपानसिका] रा० १३०,२३६, २५१,२६५. जी० ३।३००,४१२,६०३

गोमाणसी [गोपानसी] जी० ३।३६८,४१२,४२१, ४२६

गोमुह [गोमुख] जी० ३।२१६

गोमुही [गोमुखी] रा० ७७

गोमेज्जमय [गोमेदमय] रा० १३०. जी० ३।३००

गोय [गोत्र] ओ० २०,४४,५२,५३. रा० ६,११, ६८७,७१३. जी० ३।१२८

गोयम [गौतम] ओ० ८३,८६,८८ से ६५,११४, ११७ से १२०,१४०,१४१,१५५,१५७ से १६०,१६२,१६७,१७०,१७१,१७३ से १७६, १७८,१७६,१८४ से १८८,१६२. रा० ६३, ६५,७३,७४,११८,१२१,१२३,१२४,१७३, १६७ से २००,६६५,६६६,६६८,७६७ से ७६६,८१७. जी० १।१५ से ३७,३६ से ४६,५१ से ५६,५६ से ६२,६४,७४,७६,८२,८५ से ८७, ६०,६३ से ६६,१०१,११६,१२७,१२८,१३० से १३४,१३७ से १४३; २।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३६,४६,४८,४६,५४,५७ से ६३,६६,६८ से ७४,७६,८२ से ८४,८६,८८, ६२,६५ से ६८,१०७ से १०६,११३,११४, ११६ से ११६,१२२ से १२६,१३३ से १४०; ३।३ से १२,१४ से २१,२८ से ३५,३७ से ४४,४८ से ६३,६६,७३,७६ से ६८,१०१ से १०४,१०६ से ११०,११२ से ११६,११८ से १२०,१२२ से १२८,१४७,१५० से १६१, १६३,१६७ से १७४,१७६,१७८,१८०,१८२, १८३,१८५ से २०३,२११,२१४,२१७ से २२३, २२७,२३२,२३५ से २३६,२४१ से २४३, २४५ से २४७,२४६,२५०,२५५ से २५६, २६६ से २७२,२७८,२८५,२६६,३००,३५०, ३५१,५६४ से ५६६,५६८ से ५७०,५७२, ५७४ से ५८८,५६६,५६७,५६६ से ६०४, ६२६ से ६३२,६३७ से ६३६,६५६,६६०, ६६४,६६६,६६८,७०० से ७०३,७०५ से ७०८,७१०,७११,७१४ से ७१६,७१८ से ७२३, ७२६,७३० से ७३६,७३८ से ७४३,७४५, ७४६,७४८ से ७५०,७५४,७६० से ७६६, ७६८ से ७७०,७७२,७७६ से ७७८,७८३, ७८४,७८७ से ७६५,७६७ से ८००,८०२, ८०४,८०६,८०८,८०६,८११ से ८१५,८१६, ८२०,८२२ से ८२५,८२७,८२६,८३०,८३२ से ८३६,८३६,८४०,८४२ से ८४७,८४६ से ८५१,८५४,८५७,८६०,८६३,८६६,८६६, ८७२,८७५,८७८,८८१,८८२,६१८,६३६, ६४०,६४४,६५३ से ६६१,६६३ से ६६६,

९६९,९७२ से ९७९,९८२ से ९८७,९८९,
९९९ से १००८,१०१०,१०११,१०१५,
१०१७,१०२० से १०२३,१०२५ से १०२७,
१०३७ से १०४२,१०४४,१०५७,१०५८,
१०६३,१०६५,१०६७,१०६९,१०७१,
१०७३ से १०७५,१०७७ से १०८१,१०८३,
१०८५ से १०८७,१०८९ से १०९३,
१०९५,१०९८,१०९९,११०१,११०५,११०९ से
११२४,११२८ से ११३१,११३४ से ११३८;
४।३,५ से ११,१६,१७,१९,२२,२३,२५;
५।५,८,१०,१२ से १७,१९ से २४,२८ से
३०,३४,३५,३७ से ३९,४१ से ५०,५२ से
५६,५८ से ६०; ६।८; ७।२,९,२०; ९।२,४,
१० से १४,१६,२३ से २६,३१,३३,३९,४१
से ४७,४९,५२,५५,५७,५८,६४,६८,७७,७८,
८९,९०,९६,९७,१०२,१०३,११४,११५,
१२२,१३२,१४२,१६० से १६३,१७१,१८६
से १९१,१९३,१९५,१९८ से २०७,२१० से
२१२,२१४ से २१९,२२२ से २२५,२२७ से
२३०,२३३ से २३८,२४० से २४४,२४६,
२४९ से २५३,२५५,२५७ से २६३,२६५,
२६८ से २७३,२७५ से २८२,२८४ से
२९३

गोयमदीव [गौतमद्वीप] जी० ३।७५४,७५५,७६०,
७६१

गोयरग्ग [गोचराग्र] रा० ७१९

गोर [गौर] ओ० ८२

गोलवट्ट [गोलवृत्त] रा० २४०,२७६,३५१. जी०
३।४०२,४४२,५१६,१०२५

गोलियालिछ [गोलिकालिञ्छ] जी० ३।११८

गोव्वइय [गोव्रतिक] ओ० ९३

गोसीस [गोशीर्ष] ओ० २,५५,६३. रा० ३२,
२७९,२८१,२८५,२९१,२९३ से २९६,३००,
३०५,३१२,३५१,३५५,५९४. जी० ३।३७२,
४४५,४४७,४५१,४५७,४६२,४६५,४७०,४७७,
५१६,५२०,५४७,५५४

गोहा [गोधा] जी० १।११२

गोही [गोधी] जी० २।९

[घ]

घ [घ] रा० ९५

घओद [घृतोद] जी० ३।२८६

घओवय [घृतोदक] जी० १।६५

घओयग [घृतोदक] रा० १७४

घंटय [घण्टाक] जी० ३।२८५

घंटा [घण्टा] ओ० २,१२,५७,६४. रा० १३.१५,
२३,३२,१३५,१७३,२५८,६८?. जी०
३।२९१,३०५,३७२,४१९

घंटाजाल [घण्टाजाल] रा० १३२,१९१. जी०
३।२६५,३०२

घंटापास [घण्टापार्श्व] रा० १३५. जी० ३।३०५

घंटावलि [घण्टावलि] रा० १७,१८,२०

घंटिया [घण्टिका] रा० १७,१८. जी० ३।५९३

घंस [घर्ष] जी० ३।६२३

घंसियग [घर्षितक] ओ० ९०

घकारपविभत्ति [घकारप्रविभक्ति] रा० ९५

√घट्ट [घट्ट्] घट्टइ. रा० ७७१—घट्टंति
जी० ३।७२९

घट्टंत [घट्टयत्] रा० ७७१

घट्टणया [घट्टन] ओ० १०३,१२६

घट्टिज्जंत [घट्टयमान] रा० ७७

घट्टिय [घट्टित] रा० १७३. जी० ३।२८५

घट्ठ [घृष्ट] ओ० १२,१६४. रा० २१,२३,३२,
३४,३६,१२४,१४५,१५७. जी० ३।२६१,
२६६,२६९

घडग [घटक] जी० ३।५८७

घडत्त [घटत्व] जी० ३।२२,२७,७८४,७८७

घण [घन] ओ० १,४,५,८,१३,१९,४७,६८. रा०
७,१२,११४,१३३,१७०,२८१,७०३,७५५,
७५८,७५९,७७२. जी० ३।६७,८०,११८,
२७३,२७४,३००,३०३,३५०,४४७,५६३,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८६,५९६,८४२,८४५,१०२५,११२२
घणदंत [घनदन्त] जी० ३।२१६,२२६
घणदंतद्दीव [घनदन्तद्वीप] जी० ३।२२६।६
घणवात [घनवात] जी० ३।१३,१६,२१,२६,२७, ३७,४७,४६,५०,६४
घणवाय [घनवात] जी० १।८१; ३।३०,३८,४२, १०५८,१०५६
घणोदधि [घनोदधि] जी० ३।१३,२६,३०,३२, ३७ से ४०, ४५,४६,४८,४६,६० से ७२
घणोदहि [घनोदधि] जी० ३।१८,२०,२७,६३, १०५७
घम्मा [घर्मा] जी० ३।३
घय [घृत] जी० ३।५६२,७७५
घयवर [घृतवर] जी० ३।८६८,८६६,८७१
घयोद [घृतोद] जी० ३।८७१,८७२,८७४,६६०, ६६३
घयोदग [घृतोदक] जी० ३।८६६
घर [गृह] ओ० २८,११८,११६,१५४,१६२, १६५,१६६. रा० ६६८,७५२,७८६. जी० ३।५६४
घरग [गृहक] जी० ३।५७६
घरय [गृहक] ओ० ७,८,१०. रा० १८३. जी० ३।५७६,८६३
घरसमुदाणिय [गृहसामुदानिक] ओ० १५८
घरह [गृहक] जी० ३।८६३
घरोलिया [गृहकोकिला] जी० २।६
घाइ [घातिन्] ओ० ८७
घाण [घ्राण] ओ० १७०. रा० ३०,१३२,२३६. जी० ३।२८३,३०२,३६८
घाणिंदिय [घ्राणेन्द्रिय] ओ० ३७. जी० ३।६७६
घातक [घातक] जी० ३।६१२
घाय [घात] रा० ६७१
घास [ग्रास] ओ० ३३
घुण [घुण] रा० ७६१
घुम्मंत [घूर्ण्यमान] ओ० ४६
घोड [घोट] जी० ३।६१८
घोर [घोर] ओ० ४६,८२ रा० ६८६
घोरगुण [घोरगुण] ओ० ८२. रा० ६८६
घोरतवस्सि [घोरतपस्विन्] ओ० ८२. रा० ६८६
घोरबंभचेरवासि [घोरब्रह्मचर्यवासिन्] ओ० ८२. रा० ६८६
घोलंत [घोलयत्] ओ० २१,५४. रा० ८,७१४
घोलियग [घोलितक] ओ० ६०
घोस [घोष] ओ० ६६
घोसण [घोषण] रा० १५
घोसाडिया [कोशातकी] रा० २८. जी० ३।२८१
घोसेयव्व [घोषयितव्य] जी० ३।८८

(ङ)

ङ [ङ] रा० ६५
ङकारपविभत्ति [ङकारप्रविभक्ति] रा० ६५

(च)

च [च] ओ० ७. रा० ७. जी० १।१
चइत्ता [त्यक्त्वा, चित्वा] ओ० २३. रा० ७६६
चइत्ताणं [त्यक्त्वा] ओ० १६५।१
चउ [चतुर्] ओ० १६. रा० ७. जी० १।१६
चउक्क [चतुष्क] ओ० १,५२,५५. रा० ६५४,६८७, ७१२. जी० ३।२२६ ५५४
चउक्कत [चतुष्कक] जी० ३।१४२,१४४
चउक्कय [चतुष्कक] रा० ६५५
चउणउय [चतुर्नवति] जी० ३।८२३
चउत्थ [चतुर्थ] ओ० १७४,१७६. जी० १।१२१
चउत्थग [चतुर्थक] जी० ६।१४६
चउत्थभत्त [चतुर्थभक्त] ओ० ३२
चउत्था [चतुर्थी] जी० ३।२
चउत्थी [चतुर्थी] जी० २।१४८,१४६; ३।४, ६६,८८,६१.१६५,१११९
चउदसपुव्वि [चतुर्दशपूर्विन्] रा० ६८६
चउद्दस [चतुर्दशन्] ओ० १६. जी० २।४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउद्दसी [चतुर्दशी] ओ० १२०
चउद्दसभत्त [चतुर्दशभक्त] ओ० ३२
चउप्पई [चतुष्पदी] जी० ३।५,६
चउप्पद [चतुष्पद] जी० २।११३,१२२; ३।१४२
चउप्पय [चतुष्पद] रा० ६७१,७०३,७१८. जी० १।१०१ से १०३,१२०,१२१; २।१,२३, ५१; ३।८८,१४१,१४२,१६३,७२१
चउप्पाइया [चतुष्पादिका] जी० ३।६
चउब्भाग [चतुर्भाग] जी० ३।२४७,२५०,२५६, १०२७ से १०३५
चउभाग [चतुर्भाग] जी० ३।४० से ४३; ३।२४७
चउमासिय [चातुर्मासिक] ओ० ३२
चउम्मुह [चतुर्मुख] ओ० ५२,५५. रा० ६५४, ६५५,६८७,७१२. जी० ३।५५४
चउरंगुल [चतुरङ्गुल] रा० ५६. जी० ३।५९६, ८३८।१७
चउरंत [चतुरंत] ओ० ४६
चउरंस [चतुरस्र] जी० १।५; ३।२२,७७,७८, ३५२,५९४,५९७,१०७१
चउरकप्प [चतुष्कल्प] जी० ३।५९२
चउरासीइ [चतुरशीति] ओ० ६३. जी० १।१०३
चउरासीति [चतुरशीति] जी० ३।१६
चउरिंदिय [चतुरिन्द्रिय] जी० १।८३,९०; २।१०१,१०३,११२,१२१,१३६,१४६,१४९; ३।१३०,१३६,१६७; ४।१,४,८,१४,१८ से २०,२४,२५; ८।१,३,५; ९।१,३,५,७,१६७, १६९,२२१,२२३,२२९,२३१,२५६,२५९, २६४,२६६
चउविसाण [चतुर्विषाण] रा० १६२. जी० ३।३३५
चउवीस [चतुर्विंशति] ओ० ३३. जी० ३।२३६
चउव्विध [चतुर्विध] जी० ३।१,४४७
चउव्विह [चतुर्विध] ओ० २८,३७,४५,६३,११७. रा० ११४ से ११७, २८१,२८५,२८६,६७५, ७४०,७४६,७९६. जी० १।५,१०,८३,९१, १०३,१०५,११३,१२१,१२५,१३५; २।६, १०,१५,७८; ३।२३०,४५१,४५२,५८८, ११३८; ९।११३,१२१,१३१,१४१,१४७
चउसट्ठि [चतुष्षष्टि] ओ० ९२. जी० ३।९११
चउसट्ठिया [चतुष्षष्टिका] रा० ७७२
चउसालग [चतुःशालक] जी० ३।५९४
चउहा [चतुर्धा] रा० ७६४,७६५
चंकमंत [चंक्रम्यमाण] ओ० ५७
चंगेरी [चङ्गेरी] रा० १५६,२५८,२७९. जी० ३।३२९,३५५,४१६,४४५
चंचल [चञ्चल] ओ० २३,४६,४९
चंड [चण्ड] ओ० ४६. रा० १०,१२,५६,२७९, ६७१,७६५. जी० ३।८६,११०,१७६,१७८, १८०,१८२,४४५
चंडा [चण्डा] जी० ३।२३५,२३९,२४१,१०४०, १०४४
चंद [चन्द्र] ओ० १९,२७,५०,६४ ६८,१७०. रा० २९,७०,१३३,२८२,८०२,८०३,८१३. जी० ११।१८; ३।२५८,२८२,३०३,४४८,५९६, ५९७,७०३,७२२,७६२ से ७६४,७६६,७६८, ७७०,७७२,७७४ से ७७६,७७८,८०९,८२०, ८३०,८३४,८३७,८३८।४,७,१०,१५ से २३, २५ से २७,२९,३२,८४५,८७३,८७६,८७९, ९२६,९३७,९५३,१०१७,१०२०,१०२१, १०२३ से १०२६,११२२
चंदण [चन्दन] ओ० ९,१०,२९,४७,५२,६३, ११०,१३३. रा० ३०,१३१,१४७,१४८, १७३,२५८,२७९,२८०,२८५,२९१,२९३ से २९८,३००,३०५,३१२,३५१,३५५,५९४, ६८७ से ६८९. जी० ३।२८३,२८५,३०१, ४४५,४५१,४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७, ५१६,५२०,५४७,५५४,५८३,८३८।२९
चंदत्थमणपविभत्ति [चन्द्रास्तमनप्रविभक्ति] रा० ८९
चंददीव [चन्द्रद्वीप] जी० ३।७९२,७९३,७९६,

७६८,७७०,७७२,७७४,७७६,७७८
चंदद्दह [चन्द्रद्रह] जी० ३।६६७
चंदद्दीव [चन्द्रद्वीप] जी० ३।७६३
चंदद्ध [चन्द्रार्ध] ओ० १९. रा० ७०,१३३. जी० ३।३०३,५९६,११२२
चंदपडिमा [चन्द्रप्रतिमा] ओ० २४
चंदपरिएस [चन्द्रपरिवेश] जी० ३।८४१
चंदपरिवेस [चन्द्रपरिवेश] जी० ३।६२६
चंदप्पभ [चन्द्रप्रभ] रा० १६०,२९२. जी० ३।३३३,४५७
चंदप्पभा [चन्द्रप्रभा] जी० ३।५८६,७६३,८६०, ९५८,१०२३
चंदप्पह [चन्द्रप्रभ] रा० २५६ जी० ३।४१७
चंदमंडल [चन्द्रमण्डल] रा० २४,५१,१४९. जी० ३।२७७,३२२
चंदमंडलपविभत्ति [चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति] रा० ९०
चंदवडेंसय [चन्द्रावतंसक] जी० ३।१०२४, १०२५
चंदवण्ण [चन्द्रवर्ण] जी० ३।७६३
चंदवण्णाभ [चन्द्रवर्णाभ] जी० ३।७६३,१००८, १०१०,१०१५
चंदविमाण [चन्द्रविमान] जी० २।१८,४०; ३।१००३ से १००६,१०२७
चंदविलासिणी [चन्द्रविलासिनी] रा० १३३. जी० ३।३०३,११२२
चंदसालिया [चन्द्रशालिका] जी० ३।५९४
चंदसूरदंसणग [चन्द्रसूरदर्शनक] रा० ८०२
चंदसूरदंसिणया [चन्द्रसूरदर्शनिका] ओ० १४४
चंदा [चन्द्रा] जी० ३।७६४,७७६,७७८
चंदागमणपविभत्ति [चन्द्रागमनप्रविभक्ति] रा० ८७
चंदागार [चन्द्राकार] रा० १५९. जी० ३।३३२, ७६३
चंदाणणा [चन्द्रानना] रा० ७०,१३३,२२५. जी० ३।३०३,३८४,८९६,११२२
चंदावरणपविभत्ति [चन्द्रावरणप्रविभक्ति] रा० ८८
चंदावलि [चन्द्रावलि] रा० २९
चंदावलिपविभत्ति [चन्द्रावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
चंदिम [चन्द्रमस्] ओ० १६२. रा० १२४. जी० ३।२५७,८४१,८४२,८४५,९९८ से १०००,१०२०,१०२१,१०३८
चन्दुग्गमणपविभत्ति [चन्द्रोद्गमनप्रविभक्ति] रा० ८६
चंपक [चम्पक] जी० ३।२८१
चंपग [चम्पक] रा० २८,८०४. जी० ३।२८१
चंपग [लया] [चम्पकलता] जी० ३।२९८
चंपगलया [चम्पकलता] ओ० ११. रा० १४५. जी० ३।५९४
चंपगलयापविभत्ति [चम्पकलताप्रविभक्ति] रा० १०१
चंपगवडेंसय [चम्पकावतंसक] रा० १२५
चंपगवण [चम्पकवन] रा० १७०. जी० ३।३५८.
चंपय [चम्पक] रा० २८,१८६. जी० ३।२८१, ३५९
चंपा [चम्पक] रा० २८,३०. जी० ३।२८१,२८३
चंपा [चम्पा] ओ० १,२,१४,१९ से २२,५२,५३ ५५,६० से ६२,६७,६८,७०
चंपापविभत्ति [चम्पकप्रविभक्ति] रा० ९३
चकारवग्ग [चकारवर्ग] रा० ९६
चक्क [चक्र] ओ० १६,१९. रा० १५०,१५१ जी० ३।११०,३२३,३२४,५९६,५९७
चक्कग [चक्रक] जी० ३।५९३
चक्कज्झय [चक्रध्वज] रा० १९२. जी० ३।३३५
चक्कद्धचक्कवाल [चक्रार्धचक्रवाल] रा० ८४
चक्कपाणिलेहा [चक्रपाणिरेखा] जी० ३।५९६
चक्कल [दे०] रा० ३७. जी० ३।३११
चक्कलक्खण [चक्रलक्षण] रा० ८०६
चक्कवट्टि [चक्रवर्तिन्] ओ० १९,२१,५४,७१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रा० ८,१५४,२७९,२९२. जी० ३।३२७,४४५,
४५७,५९२,६०२,७९५,८४१,८६६,६५९

चक्कवाग [चक्रवाक] ओ० ६. जी० ३।२७५

चक्कवाल [चक्रवाल] ओ० ७०,१७०. रा० २०१,
८०४. जी० ३।८६,२६०,२७३,३६२,५८६,
७०५,७०६,७३२,७९४,७९५,७९७,७९८,
८११,८१२,८२२,८२३,८३२,८४९,८५०,
८८२,९१८

चक्कवूह [चक्रव्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६

चक्किय [चक्रिक] ओ० ६८

चक्खिदिय [चक्षुरिन्द्रिय] ओ० ३७. जी० ३।९८८

चक्खु [चक्षुष्] रा० ६७५. जी० ३।६३३

चक्खुदंसणि [चक्षुर्दर्शनिन्] जी० १।२९,८६,९०;
९।१३१,१३२,१३६,१४०

चक्खुदय [चक्षुर्दय] ओ० १९,२१,५४. रा० ८,
२९२. जी० ३।४५७

चक्खुप्फास [चक्षुस्स्पर्श] ओ० ६९,७०. रा० ७७८

चक्खुभूय [चक्षुर्भूत] रा० ६७५

चक्खुल्लोयणलेस [चक्षुर्लोकनलेश] रा० १७,१८,
२०,३२,१२९,१३३. जी० ३।२८८,३००,३०३,
३७२

चक्खुहर [चक्षुर्हर] रा० २८५. जी० ३।४५१

चच्चय [चर्चक] रा० २९४,२९६,३००,३०५,
३१२,३५१,३५५,५९४. जी० ३।४५९,४६१,
४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,५४७

चच्चर [चत्वर] ओ० १,५२,५५. रा० ६५४,
६५५,६८७,७१२. जी० ३।५५४

चच्चाग [दे० चर्चाक] रा० १३१,१४७,१४८.
जी० ३।३०१

चच्चाय [दे० चर्चाक] रा० २८०. जी० ३।४४६

चडगर [दे०] रा० ५३,६८३,६९२,७१६

चत्तालीस [चत्वारिंशत्] जी० ३।६६

चतुरासीति [चतुरशीति] जी० ३।८८२

चतुरिंदिय [चतुरिन्द्रिय] जी० २।१३८,१४९;
४।२१

चमर [चमर] ओ० १३,६८. रा० १७,१८,२०,
३२,३७,१२९,२८२. जी० ३.२३४ से २३९,
२४३,२४५,२४७,२५०,२५६,२५८,२८८,
३००,३११,३७२,४४८

चमस [चमस] ओ० १११ से ११३,१३७,१३८

चम्म [चर्मन्] रा० २४,६६४. जी० ३।२७७,५९२,

चम्म [पाय] [चर्मपात्र] ओ० १०५,१२८

चम्म [बंधण] [चर्मबन्धन] ओ० १०६,१२९

चम्मपक्खि [चर्मपक्षिन्] जी० १।११३,११४,१२५

चम्मपक्खी [चर्मपक्षिणी] जी० २।१०

चम्मपाणि [चर्मपाणि] रा० ६६४. जी० ३।५९२

चम्मेट्ठग [चर्मेष्टक] रा० १२, ७५८, ७५९.
जी० ३।११८

चय [चय, च्यव] ओ० १४१. रा० ७९९.
जी० ३।११२७

√**चय** [शक्]—चएइ. ओ० १९५।१६

√**चय** [च्यु]—चयंति. जी० ३।८७

√**चय** [त्यज्]—चयइ. जी० ३।१२९।५

चयंत [त्यजत्] ओ० १९५।३

चयण [च्यवन] जी० ३।१६०

√**चर** [चर्]—चरइ. जी० ३।८३८।२—चरंति.
ओ० ४६. जी० ३।७०३—चरति
जी० ३।१००१—चरिंसु. जी० ३।७०३
—चरिस्संति जी० ३।७०३

चरण [चरण] ओ० १५, २५. रा० ६८६.
जी० ३।५९७

चरमअभिसेयनिबद्ध [चरमाभिषेकनिबद्ध]
रा० ११३

चरमंत [चरमान्त] जी० ३।६६८

चरमकामभोगनिबद्ध [चरमकामभोगनिबद्ध]
रा० ११३

चरमचवणनिबद्ध [चरमच्यवननिबद्ध] रा० ११३

चरमजम्मणनिबद्ध [चरमजन्मनिबद्ध] रा० ११३

चरमजोव्वणनिबद्ध [चरमयौवननिबद्ध] रा० ११३

चरमणाणुप्पायनिबद्ध [चरमज्ञानोत्पादनिबद्ध]
रा० ११३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरमतवचरणनिबद्ध [चरमतपश्चरणनिबद्ध]
रा० ११३
चरमतित्थपवत्तणनिबद्ध [चरमतीर्थप्रवर्तननिबद्ध]
रा० ११३
चरमनिक्खमणनिबद्ध [चरमनिष्क्रमणनिबद्ध]
रा० ११३
चरमनिदाघकाल [चरमनिदाघकाल]
जी० ३।११८, ११६
चरमनिबद्ध [चरमनिबद्ध] रा० ११३
चरमपरिनिव्वाणनिबद्ध [चरमपरिनिर्वाणनिबद्ध]
रा० ११३
चरमपुव्वभवनिबद्ध [चरमपूर्वभवनिबद्ध] रा० ११३
चरमबालभावनिबद्ध [चरमबालभावनिबद्ध]
रा० ११३
चरमसाहरणनिबद्ध [चरमसंहरणनिबद्ध] रा० ११३
चरमाण [चरत्] ओ० १६, २०, ५२, ५३.
रा० ६८६, ६८७, ७०६, ७११, ७१३
चरित्त [चरित्र] रा० ६८६, ८१४
चरित्तविणय [चरित्रविनय] ओ० ४०
चरित्तसंपण्ण [चरित्रसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६
चरिम [चरम] ओ० ११७, १५४, १८२, १६५।३.
रा० ६२, ७६६, ८१६. जी० ६।६३, ६४, ६६
चरिमंत [चरमान्त] जी० ३।३३, ३४, ३७, ३८,
६० से ६८, २१७, २१६ से २२५, २२७, ६३२,
६३६, ६६६, ११११
चरिमभव [चरमभव] ओ० १६५।४
चरिममोहणिज्ज [चरममोहनीय] ओ० ८६
चरिय [चरित] ओ० ४६
चरिया [चरिका] ओ० १, १६०. रा० ६५४,
६५५. जी० ३।५५४, ५६४
चरियालिंगसामण्ण [चर्यालिङ्गसामान्य] ओ० १६०
चरु [चरु] ओ० १११ से ११३, १३७, १३८
√चल [चल्]—चलइ. रा० ७७१—चलंति.
जी० ३।७२६ --चालेइ. रा० ७७१
चलंत [चलत्] ओ० ५, ८, ४६. रा० ७७१
जी० ३।२७४
चलण [चरण] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७
चलणमालिया [चरणमालिका] जी० ३।५६३
चलणी [चलनी] जी० ३।६२३
चलिय [चलित] रा० १७, १८, २०
√चव [च्यु]— चवति जी० ३।८४३
चवण [च्यवन] रा० ८१५. जी० १।१४
चवल [चपल] ओ० २१, ४६, ४६, ५४. रा० ८,
१०, १२ १५, ३२, ५६, १७६, ७१४.
जी० ३।८६, १७६, १७८, १८०, १८२, ४४५
चवलायंत [चालायमान] जी० ३।५६७
चवलिय [चपलित] जी० ३।५८७
चसग [चषक] जी० ३।५८७
चाइ [त्यागिन्] ओ० १६४
चाउक्कोण [चतुष्कोण] रा० १७४. जी० ३।११८,
११६, २८६
चाउग्घंट [चतुर्घण्ट] रा० ६८१ से ६८३, ६८५,
६६० से ६६२, ६६७, ७०६, ७१०, ७१४,
७१६, ७२२, ७२४, ७२६
चाउज्जातग [चतुर्जातक] जी० ३।८७८
चाउयाम [चातुर्याम] रा० ६६३, ७१७, ७७६
चाउज्जामिय [चातुर्यामिक] रा० ६६५, ६६६
चाउत्थगाहिय [चातुर्थकाहिक] जी० ३।६२८
चाउद्दस [चातुर्दश] रा० ७७४
चाउद्दसी [चतुर्दशी] ओ० १६२. रा० ६६८,
७५२, ७८६
चाउब्भाइया [चातुर्भागिका] रा० ७७२
चाउमासिय [चातुर्मासिक] जी० ३।६१७
चाउरंगणी [चतुरङ्गिणी] ओ० ५५ से ५७, ६२,
६५
चाउरंत [चतुरन्त] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८,
१५४, २६२. जी० ३।३२७, ४५७, ६०२, ८६६,
६५६
चाउरक्क [चातुरक्य] जी० ३।६०१, ८६६
चाडुकर [चाटुकर] ओ० ६४
चामर [चामर] ओ० १२, १६, ६३ से ६५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रा० २२,२३,५०,१६०,१६७,१७८,२५६, २७६. जी० ३।२६०,२६१,३३३,३४८,३५५, ३८२,४१७,४१६,४४५,५६७

चामरग्गाह [चामरग्राह] ओ० ६४

चामरधारपडिमा [चामरधारप्रतिभा] रा० २५६. जी० ३।४१७

चार [चार] ओ० ५०,१४६. रा० ८०६. जी० ३।७०३,७२२,८०६,८२०,८३०,८३४, ८३७,८३८।२,१३,२०,२२,८४२,८४५,१००१, १००३ से १००७

चारगबद्धग [चारकबद्धक] ओ० ६०

चारण [चारण] ओ० २४. जी० ३।७६५,८४०, ८४१

चारि [चारिन्] ओ० ५०. जी० ३।५६७

चारु [चारु] ओ० १५,१६,२५,४६. रा० ७०,७६, १३३,१७३,६६४,६७२,८०६,८१०. जी० ३।२८५,३०३,५६२,५८७,५६६,५६७, ११२२

चारुपाणि [चारुपाणि] रा० ६६४. जी० ३।५६२

चालिय [चालित] रा० १७३. जी० ३।२८५

चालेमाण [चालयत्] जी० ३।१११

चाव [चाप] ओ० १६,६४. रा० १७३,६६४, ६८१. जी० ३।२८५,५६२,५६६,५६७

चावग्गाह [चापग्राह] ओ० ६४

चावपाणि [चापपाणि] रा० ६६४. जी० ३।५६२

चास [चाष] रा० २६. जी० ३।२७६

चासपिच्छ [चाषपिच्छ] रा० २६. जी० ३।२७६

चिउर [चिकुर] रा० २८. जी० ३।२८१

चिउरंगराग [चिकुराङ्गराग] जी० ३।२८१

चिउरंगरात [चिकुराङ्गराग] रा० २८

चिंता [चिन्ता] ओ० ४६. जी० ३।६४८,६४६

चिंतिय [चिन्तित] ओ० ७०. रा० ६,२७५,२७६, ६८८,७३२,७३७,७३८,७४६,७६८,७७७, ७६१,७६३,८०४. जी० ३।४४१,४४२

चिंध [चिह्न] ओ० ४७ से ५१. रा० ६६४,६८३. जी० ३।५६२

चिक्खल [दे०] ओ० ४६

चिच्चा [त्यक्त्वा] ओ० २३. रा० ६६५

√चिट्ठ [ष्ठा]—चिट्ठइ. ओ० ३७. रा० १२३. जी० ३।४८.—चिट्ठंति ओ० १८३. रा० ४०. जी० ३।२२.—चिट्ठति. रा० २७६. जी० ३।४८. —चिट्ठह. रा० ७५३.—चिट्ठेज्ज. ओ० १८०

चिट्ठं [दे०] रा० ७२३

चिट्ठित [चेष्टित] रा० १३३

चिट्ठिय [चेष्टित] रा० ७०,८०६,८१०

चित्त [चित्त] ओ० २०,२१,४६,५३,५४,५६,६२, ६३,७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १८,२०, २४,३२,३४,३७,४७,६०,६२,६३,७२,७४, १२६,२७७,२७६,२८१,२६०,६५५,६८१, ६८३,६६०,६६५,७००,७०७,७१०,७१३. ७१४,७१६,७१८,७२५,७२६,७७४,७७८

चित्त [चित्र, चित्त] रा० ६७५,६८०,६८१,६८३ से ६८५,६८६,६६०,६६२,६६३,६६५ से ७१०,७१३,७१४,७१६ से ७३६,७४८

चित्त [चित्र] ओ० १६,४६,५७,६४. रा० ६६, १३०,१३७,१५४,१६०,१७३,२५६,२५८, २७६,२८५,६८१. जी० ३।२८५,३००,३०७, ३२७,३३३,३५५,४१६,४४३,४४५,४४७, ४५१,५५५,५६६

चित्तंग [चित्राङ्ग] जी० ३।५६१

चित्तंगय [चित्राङ्गक] जी० ३।५६१

चित्तंतरलेस [चित्रान्तरलेश्य] जी० ३।८४५

चित्तंतरलेसाग [चित्रान्तरलेश्याक] जी० ३।८३८।२

चित्तघरग [चित्रगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२६४

चित्तपट्ट [चित्रपट्ट] रा० ६६

चित्तरस [चित्ररस] जी० ३।५६२

चित्तल [चित्रल] जी० ३।६२०

चित्तवीणा [चित्रवीणा] रा० ७७

चित्तसाल [चित्रशाल] जी० ३।५६४

चियत्त [दे० प्रीत, सम्मत] ओ० ३३, १६२. रा० ६६८, ७५२, ७८६

चिरट्ठिइय [चिरस्थितिक] ओ० ७२
चिराईय [चिरादिक, चिरातीत] ओ० २. रा० २
चिराहड [चिराहृत] रा० ७७४
चिलाइया [किरातिका] रा० ८०४
चिलाई [किराती] ओ० ७०
चिल्लय [दे०] ओ० ४६. जी० ३।५८६
चिल्ललग [दे०] रा० ६६. जी० ३।६८२
चीणंसुय [चीनांशुक] जी० ३।५६५
चीणपिट्ठ [चीनपृष्ट] रा० २७. जी० ३।२८०
चुण्ण [चूर्ण] रा० १५६, १५७, २५८, २७६, २८१,२६१. जी० ३।३२६, ४१६, ४४७,४५७
चुण्णजुत्ति [चूर्णयुक्ति] ओ० १४६
चुय [च्युत] ओ० ८८
चुलणिसुत [चुलनीसुत] जी० ३।११७
चुलसीत [चतुरसीति] जी० ३।७२८
चुल्लहिमवंत [क्षुल्लहिमवत्] रा० २७६. जी० ३।२१७, २१६ से २२१, ४४५, ७६५, ६३७
चूचुय [चूचुक] रा० २५४. जी० ३।४१५, ५६७
चूडामणि [चूडामणि] रा० २८५. जी० ३।४५१
चूत [चूत] जी० ३।३५६
चूतवण [चूतवन] जी० ३।३५८
चूय [चूत] रा० १८६
चूय (लया) [चूतलता] जी० ३।२६८
चूयलया [चूतलता] ओ० ११. रा० १४५. जी० ३।५८४
चूयलयापविभत्ति [चूतलताप्रविभक्ति] रा० १०१
चूयवडेंसय [चूतावतंसक] रा० १२५
चूयवण [चूतवन] रा० १७०. जी० ३।३५८
चूलामणि [चूडामणि] ओ० ४७, १०८. जी० ३।५९३
चूलिया [चूलिका] जी० ३।८४१
चूलोवणय [चूडोपनय] रा० ८०३
चूलोवणयण [चूडोपनयन] जी० ३।६१४
चेइय [चैत्य] ओ० १ से ३,१६ से २२, ५२, ५३, ६५, ६६, ७०, १३६. रा० २, ८ से १०,१२, १३, १५, ५६, ५८, २४०,२७६, ६७८,६८६, ६८७, ६८६,६६२, ७००, ७०४, ७०६,७११, ७१६, ७७६
चेइयखंभ [चैत्यस्तम्भ] रा० २३६ से २४२,२४४, ३५१. जी० ३।४०१
चेइयथूभ [चैत्यस्तूप] रा० २२२ से २२४, २२६, ३०५,३१६,३४३. जी० ३।३८१,३८२,३८५, ४७०, ४८१, ५०८
चेइयमह [चैत्यमह] रा० ६८८. जी० ३।६१५
चेइयरुक्ख [चैत्यरुक्ष] रा० २२७ से २३०, ३१०, ३१५, ३४८. जी० ३।३८६ से ३८८, ३९१, ३६२, ४१२, ४७५. ४८०, ५१३
चेट्ठिय [चेष्टित] जी० ३।३०३, ५६७
चेड [चेट] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६, ७६२, ७६४
चेडिया [चेटिका] ओ० ७०. रा० ८०४
चेतिय [चैत्य] जी० ३।४०२, ४४२
चेतियखंभ [चैत्यस्तम्भ] जी० ३।४०२ से ४०४, ४०६, ४४२, ५१६, १०२५
चेतियथूभ [चैत्यस्तूप] जी० ३।३८३, ४८१,८६४, ८६५, ८६७
चेतियरुक्ख [चैत्यरुक्ष] जी० ३।८६८, ८६६
चेल (पाय) [चेलपात्र] ओ० १०५, १२८
चेल (बंधण) [चेलबन्धन] ओ० १०६, १२६
चेलुक्खेव [चेलोत्क्षेप] रा० २८१. जी० ३।४४७
चोउट्ठि [चतुष्षष्टि] जी० ३।२१८
चोक्ख [चोक्ष] ओ० २१, ५४, ६८. रा० २७७, २८८, ७६५, ८०२. जी० ३।४४३
चोक्खायार [चोक्षाचार] ओ० ६८
चोत्तीस [चतुस्त्रिंशत्] जी० ३।६६६
चोद्दस [चतुर्दशन्] जी० ३।३६
चोप्पाल [चोप्पाल] रा० २४६ जी० ३।४१०, ५२०,६०४
चोप्पालय [चोप्पालक] रा० ३५५
चोय [दे०] रा० ३०. जी० ३।२८३,३३४,४१६,५८६
चोयग [दे०] रा० १६१,२५८,२७६

चोयाल [चतुश्चत्वारिंशत्] जी० ३.८३०

चोयासव [दे० चोयासव] जी० ३।८६०

चोर [चोर] ओ० ११७ रा० ७५४,७५६,७६२ ७६४,७६६

चोरकहा [चोरकथा] ओ० १०४,१२७

चोवत्तरि [चतुःसप्तति] जी० ३।७३३

(छ)

छ [षष्] रा० १७३ जी० १।४६

छउमत्थ [छद्मस्थ] ओ० १६६,१७०. रा० ७७१. जी० १।१२६; ३।१६३,३।१६७; ६।३६,४२ से ४४,४६,५१

छउमत्थपरियाग [छद्मस्थपर्याय] ओ० १६६

छंद [छन्द] ओ० ६७ रा० ७२०

छकोडीय [षट्कोटीक] जी० ३।४०१

छगल [छगल] ओ० ५१ जी० ३।१०३८

छज्जीवणिया [षट्जीवनिका] ओ० ७४।१

छट्ठ [षष्ठ] ओ० ६७,१४४,१७४,१७६, रा० ८०२

छट्ठंछट्ठ [षष्ठंषष्ठ] ओ० ११६

छट्ठभक्त [षष्ठभक्त] ओ० ३२

छट्ठा [षष्ठी] जी० २।१३५,१३८; ३।२,६१ १११

छट्ठिया[षष्ठिका] जी० ३।१२५

छट्ठी [षष्ठी] जी० २।१४,१४६; ३।४,३६,७१ ७४,७५,७७,८८,११११

छडिय [छटित] रा० १५० जी० ३।३२३

√छड्ड [छर्दय्, मुच्]—छड्डेंति. रा० ७७४—छड्डेस्सामि. रा० ७७३—छड्डेहि रा० ७७४

छड्डियपल्लिया [छर्दिता] ओ० ६२

छड्डेत्तए [छर्दयितुम्] रा० ७७४

छड्डेत्ता [छर्दित्वा] रा० ७७४

छण्ण [छन्न] जी० ३।२७५

छण्णउय [षण्णवति] जी० ३।८२०

छण्णालय [दे० षण्णालक] ओ० ११७

छत्त [छत्र] ओ० २,१६,५२,५७,६३ से ६५, ६७,६६,७०. रा० १५६,१७३,२७६,६८१ से ६८३,६६१,६६२,७००,७१५,७१६,७१६. जी० ३।२६६,२८५,३३२,३५५,४१६,४४५. ५६६,५६७,६०४

छत्तज्झय [छत्रध्वज] रा० १६२. जी० ३।३३५

छत्तधारपडिमा [छत्रधारप्रतिमा] जी० ३।४१६

छत्तधारगपडिमा [छत्रधारकप्रतिमा] रा०२५५

छत्तय [छत्रक] ओ० ११७

छत्तलक्खण [छत्रलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

छत्ताइच्छत्त [छत्रातिछत्र] रा० २०२,२०४, २०५

छत्ताइछत्त [छत्रातिछत्र] ओ० १२. रा० १३७, २२६. जी० ३।२६१,३१४,३५७,३७१,३७५, ४३३

छत्तातिच्छत्त [छत्रातिछत्र] रा० ५२,५६,२०६, २३१,२४७,२४८,२५०,२५६

छत्तातिछत्त [छत्रातिछत्र] रा० २३,१६८,१७६, २०७,२०८,२२०,२२३,२३२,२३४,२६१, जी० ३।३०७,३४६,३५६,३६७ से ३७०, ३७६,३८२,३६१,३६३,३६४,३६६,४०३, ४११,४२०,४२४,४३०,४३६,६६६

छत्तीस [षट्त्रिंशत्] ओ० १६. रा० २४०. जी० ३।७१०

छत्तोव [छत्रौप] ओ० ६,१०. जी० ३।५८३

छत्तोवग [छत्रौपक] जी० ३।३८८

छप्पण्ण [षट्पञ्चाशत्] जी० ३।३००

छप्पन्न [षट्पञ्चाशत्] रा० १३० जी० ३।५६८

छप्पय [षट्पद] ओ० ६. रा० १३६,१७४. जी० ३।११८,११६,२७५,२८६,३०६

छब्भाग [षड्भाग] ओ० १६५

छब्भामरी [षड्भ्रामरी] रा० ७७

छम्मासिय [षाण्मासिक] ओ० ३२

छयाल [षट्चत्वारिंशत्] जी० ३।८१५

छरु [त्सरु] ओ० १६. जी० ३।५६६

छरुप्पवाद [त्सरुप्रवाद] ओ० १४६

छरुप्पवाय [त्सरुप्रवाद] रा० ८०६

छरुह [त्सरुक] जी० ३।३२२

छलंस [षडंस्र] जी० ३।४०१

छलसीत [षडशीति] जी० ३।७३६

छल्ली [दे०] रा० २८. जी० ३।२८१

छवि [छवि] जी० ३।६६,५६८

छविग्गहित [षड्विग्रहिक] जी० ३।४०१

छविच्छेद [छविच्छेद] जी० ३।६२०

छविच्छेय [छविच्छेद] रा० ७६२. जी० ३।६२५

छव्विह [षड्विध] ओ० ३०,३१,३८. जी० १।१०, ११६; ३।१८३,१८५,६३१; ५।१,६०; ६।१५६, १६७,१७०,१८१

छव्वीस [षड्विंशति] जी० ३।१०६६

छाउमत्थिय [छाद्मस्थिक] रा० १४६

छादण [छादन] रा० २७०. जी० ६।२६४,३००, ४३५

छायण [छादन] रा० १३०,१६०

छाया [छाया] ओ० १२,४७,७२,१६४. रा० २१, २३,२४,३२,३४,३६,१२४,१४६,१५६,१७०, २२८,६७०,७०३. जी० ३।२६१,२६६,२६६, २७७,३२२,३३२,३८७,५६८,६०४,६७२

छावट्ठ [षट्षष्टि] जी० ३।१०२२

छावट्ठि [षट्षष्टि] जी० ३।८३८।४

छावत्तर [षट्सप्तति] जी० ३।७०३

√छिंद [छिद्]—छिंद. रा० ६७१.—छिंदंति. रा० २८१. जी० ३।४४७

√छिज्ज [छिद्]—छिज्जइ. रा० ७८४

छिज्जमाण [छिद्यमान] जी० ३।२२ से २५,२७, ४५ से ४७

छिड्ड [छिद्र] रा० ७५४ से ७५७

छिण्णावाय [छिन्नापात] ओ० ११६,११७. रा० ७६५,७७४

छित्त [क्षेत्र] ओ० १

छिद्द [छिद्र] रा० ७६३

छिप्पंत [स्पृश्यमान] रा० ७७

छिरा [शिरा] जी० १।६५,१३५; ३।६२,१०६०

छिरिया [दे०] जी० १।७३

छिवाडी [दे०] रा० २६. जी० ३।२८२

छोइत्ता [क्षुत्वा] जी० ३।६३०

छीरबिरालिया [क्षीरबिडालिका] जी० २१६

छीरविरलिया [क्षीरबिडालिका] जी० १।७३

छुभ [क्षिप्]—छुभइ रा० ७८८.—छुभिस्सामि रा० ७८७

छुहा [क्षुध्] ओ० १६५।१८

छुहिय [क्षुधित] जी० ३।११६

छेत्ता [छित्त्वा] जी० ३।६६१

√छेव [छिद्]—छेदेंति ओ० ११७

छेदारिह [छेदार्ह] ओ० ३६

छेदित्ता [छित्त्वा] ओ० ११७

छेदेत्ता [छित्त्वा] ओ० १६२

छेदोवट्ठावणियचरित्तविणय [छेदोपस्थापनीय चरित्रविनय] ओ० ४०

√छेय [छेदय्]—छेइस्सइ. रा० ८१६

छेय [छेक] ओ० ६३,६४. रा० १२,१७३,६८१, ७५८,७५६,७६५,७६६,७७०. जी० ३।८६, ११८,१७६,१७८,१८०,१८२,२८५,४४५, ५६१

छेयकर [छेदकर] ओ० ४०

छेयारिय [छेकाचार्य] ओ० १,५७

छेवट्ट [सेवार्त्त] जी० १।१७,८६,१०१,११६

छोडिय [छोटित] जी० ३।५६६

ज

ज [यत्] ओ० ३७. रा० ६. जी० १।५

जइ [यदि] ओ० ५७. रा० ७१८. जी० १।५५

जइण [जविन्] ओ० ५७. रा० १२,७५८,७५६. जी० ३ ८६,१७६,१७८,१८०,१८२,४४५

जइपरिसा [यतिपरिषद्] ओ० ७१

जओ [यतस्] रा० ७५४,७५५. जी० १।६६

जंघा [जङ्घा] ओ० १६. रा० २५४. जी० ३।४१५,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६६,५६७

जंत [यन्त्र] ओ० १४ रा० १७,१८, २०,३२, १२६,६७१. जी० ३।२८८,३००,३७२

जंतकम्म [यन्त्रकर्मन्] ओ० ६४. रा० १७३,६८१. जी० ३।२८५

जंतवाडचुल्ली [यन्त्रपाटचुल्ली] जी० ३।११८

जंबुद्दीव [जम्बूद्वीप] ओ० १७०. रा० ७ से १०, १३,१५,५६,१२४,६६८. जी० ३।८६,२१७, २१६ से २२१.२२७ २५६,२६०,२६६. ३००,३५१.४४५,५६६,५६८ से ५७७,६३८, ६६०,६६५,६६६,६६८,७०१ से ७०४,७०८, ७२३,७३६,७४०,७४२,७४५,७५०,७५४, ७६२,७६४ से ७६६,७७५,७६५.६१६ से ६२२, ६५३,१०३६,१०७४,१०८०

जंबुद्दीवग [जम्बूद्वीपक] जी० ३।७०६,७१०, ७६२,७६४ से ७६६,८१४

जंबुद्दीवाहिवति [जम्बूद्वीपाधिपति] जी० ३।७६५

जंबुपेढ [जम्बूपीठ] जी० ३।६६८,६६६

जंबू [जम्बू] जी० १।७१; ३।६६८,६७२,६७३, ६७८ से ६८३,६८८,६८६,६६२ से ७००, ७६५

जंबूणदमय [जाम्बूनदमय] जी० ३।३२३

जंबूणय [जाम्बूनद] रा० १५६,२२८. जी० ३।३३२,३८७,६७२

जंबूणयमय [जाम्बूनदमय] रा० ३७,१५०. जी० ३।३११,४०७,६४३

जंबूणयामय [जाम्बूनदमय] रा० १३५,१८८, २४५. जी० ३।३०५,३६१,६६६,६८६, ८३६

जंबूदीव [जम्बूद्वीप] जी० ३।७००,७५४,१००१, १००७,१०२२

जंबूदीवाहिवति [जम्बूद्वीपाधिपति] जी० ३।७००

जंबूपल्लवपविभत्ति [जम्बूपल्लवप्रविभक्ति] रा० १००

जंबूपेढ [जम्बूपीठ] जी० ३।६६८,६७०

जंबूफल [जम्बूफल] ओ० १३. रा० २५. जी० ३।२७८

जंबूफलकालिया [जम्बूफलकालिया] जी० ३।८६०

जंबूरुक्ख [जम्बूरूक्ष] जी० ३।७०२

जंबूवण [जम्बूवन] जी० ३।७०२

जंबूसंड [जम्बूषण्ड] जी० ३।७०२

जंभाइत्ता [जृम्भयित्वा] जी० ३।६३०

जक्ख [यक्ष] ओ० ४६,१२०,१६२. रा० ६६८, ७५२,७८६. जी० ३।७८०,६४७,६५०

जक्खग्गह [यक्षग्रह] जी० ३।६२८

जक्खपडिमा [यक्षप्रतिमा] रा० २५७. जी० ३।४१८

जक्खमंडलपविभत्ति [यक्षमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०

जक्खमह [यक्षमह] रा० ६८८. जी० ३।६१५

जक्खालित्त [यक्षादीप्त] जी० ३।६२६

जगईपव्वय [जगतीपर्वत] रा० १८१

जगईपव्वयग [जगतीपर्वतक] रा० १८०

जगती [जगती] जी० ३।२६० से २६३,२७३, २६८

जगतीपव्वयग [जगतीपर्वतक] जी० ३।२६२

जघण [जघन] ओ० १५

जच्च [जात्य] ओ० १६,६४. जी० ३।५६६,५६७, ८५४,८७८

जच्चकणग [जात्यकनक] ओ० २७. रा० ८१३

जच्चहिंगुलुय [जात्यहिंगुलुक] जी० ३।५६०

जज्जरिय [जर्जरित] रा० ७६०,७६१

जडि [जटिन्] ओ० ६४

जड्ड [जाड्य] रा० ७३२,७३५,७६५

जण [जन] ओ० १,६,६८,११६. रा० १२३, ७६६

जणइत्ता [जनयित्वा] ओ० ६६

जणउम्मि [जनोर्मि] रा० ६८७,७१२

जणकलकल [जनकलकल] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८,७१२

जणक्खय [जनक्षय] जी० ३।६२८

जणबोल [जनबोल] ओ० ५२. रा० ६८७,७१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जणवय [जनपद] ओ० १४६. रा० ६६८,६६६, ६७१,६७६,६८३,७०६,७११,७१८,७५०, ७७४,७६०,७६१

जणवयकहा [जनपदकथा] ओ० १०४,१२७

जणवयपाल [जनपदपाल] ओ० १४. रा० ६७१

जणवयपिय [जनपदप्रिय] ओ० १४. रा० ६७१

जणवयपुरोहिय [जनपदपुरोहित] ओ० १४ रा० ६७१

जणवाय [जनवाद] ओ० १४६. रा० ८०६

जणवूह [जनव्यूह] ओ० ५२. रा० ६८७,७१२

जणसण्णिवाय [जनसन्निपात] ओ० ५२. रा० ६८७,७१२

जणसद्द [जनशब्द] ओ० ५२. रा० ६८७,६८८, ७१२

जणिय [जनित] ओ० ५१

जणुक्कलिया [जनोत्कलिका] ओ० ५२

जणुम्मि [जनोर्मि] ओ० ५२

जण्णइ [याज्ञिक] ओ० ६४

जण्णु [जानु] रा० १२

जति [यदि] रा० ७५०

जतिपरिसा [यतिपरिषद्] रा० ६१

जतो [यतस्] रा० ७५६

जत्ताभिमुह [यात्राभिमुख] ओ० ५५,५८,६२,७०

जत्तिय [यावत्] जी० ३।७७,१२७

जत्थ [यत्र] रा० ७१६. जी० १।५८

जधा [यथा] जी० ३।६८

जन्न [यज्ञ] जी० ३।६१४

जन्नु [जानु] रा० ६

जप्पभिइ [यत्प्रभृति] रा० ७६०,७६१

जमइत्ता [दे०[1]] ओ० २६

जमग [यमक] जी० ३।६३२,६३३,६३५,६३७ से ६३६

जमगप्पभा [यमकप्रभा] जी० ३।६३७

जमगवण्ण [यमकवर्ण] जी० ३।६३७

जमगवण्णाभ [यमकवर्णाभ] जी० ३।६३७

जमगसमग [दे०] ओ० ६७. रा० १३,६५७ जी० ३।४४६

जमगा [यमका] जी० ३।६३७ से ६३६

जमगागार [यमकाकार] जी० ३।६३७

जमदग्गिपुत्त [जमदग्निपुत्र] जी० ३।११७

जमल [यमल] ओ० १,५७. रा० १२,१७,१८,२०, ३२,१२६,१३३,७५८,७५६. जी० ३।११८,२२८,३००,३०३,३७२,५६७

जमलिय [यमलित] ओ० ५,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४

जम्म [जन्मन्] ओ० १८४

जम्मण [जन्मन्] ओ० ४६. रा० ८०३. जी० २।३० से ३४,५७ से ६१,६६,११६, १२४,१३३; ३।६१७

जम्हा [यस्मात्] रा० ७५०

जय [जय] ओ० २०,५३,६२ से ६४,६८. रा० १२,४६,७२,११८,२७६,२७६,२८२, ६५५,६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७२३. जी० ३।४४२,४४५,४४८

जयंत [जयन्त] ओ० १६२. जी० ३।१८१,२६६, ५६८,७०७,७१२,७६६,८१३,८१४,६४१

जयंती [जयन्ती] जी० ३।६१६,१०२६

जयणा [यतना] ओ० ४६

जया [यदा] ओ० २१. रा० ७०६. ३।७२६

जर [जरा] ओ० ४६,१७२

जर [ज्वर] जी० ३।११८,११६,६२८

जरढ [जरठ] ओ० ५,८. जी० ३।२७४

जरा [जरा] ओ० ७४,१६५,१६५।८,२१. रा० ७६०,७६१

जल [जल] ओ० १,२३,४६,६८,१११ से ११३, १२२,१३७,१३८,१५०. रा० १७४,८११. जी० ३।११८,११६,२८६,६४२,६५३,७५४, ७६२,७६८,७७०,७७२

√जल [ज्वल्]—जलंति. रा० २८१, जी० ३।४४७

---

१. पुनरावर्तनेनातिपरिचितं कृत्वा (वृ०)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलंत [ज्वलत्] ओ० २२,२७. रा० ७२३,७७७, ७७८,७८८,८१३

जलकिड्डा [जलक्रीडा] रा० २७७. जी० ३।४४३

जलचर [जलचर] जी० ३।१२६।१,१६६

जलज [जलज] जी० ३।१७१

जलणपवेसि [ज्वलनप्रवेशिन्] ओ० ६०

जलपवेसि [जलप्रवेशिन्] ओ० ६०

जलमज्जण [जलमज्जन] रा० २७७. जी० ३।४४३

जलय [जलज] ओ० १२. रा० ६,१२,२२. जी० ३।२६०

जलयर [जलचर] ओ० १५६. जी० १।६८,६६, १०१,१०३,११२,११३,११६ से ११६,१२१, १२३,१२५; २।२२,६६,७२,७६,६६,१०४, १०५,११३,१२२,१३६,१३८,१४६,१४६; ३।१३७ से १४०,१४२,१४४

जलयरी [जलचरी] जी० २।३,४,५०,५३,६६, ७२,१४६,१४६

जलरय [जलरजस्] ओ० १५०. रा० ८११

जलरुह [जलरुह] जी० १।६६

जलवासि [जलवासिन्] ओ० ६४

जलसमूह [जलसमूह] ओ० ४६

जलाभिसेय [जलाभिषेक] ओ० ६४. रा० २७७

जलावगाह [जलावगाह] रा० २७७

जलिय [ज्वलित] जी० ३।५६०

जल्ल [दे०] ओ० १, २, ८६,६२. जी० ३।५६८

जल्लपेच्छा ['जल्ल' प्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६

जल्लोसहिपत्त [जल्लौषधिप्राप्त] ओ० २४

जव [यव] ओ० १. जी० ३।५६७, ६२१, ७८८, ८३६

जवण [जवन] रा० १०, १२, ५६, २७६. जी० ३।११८

जवमज्झ [यवमध्य] जी० ३।७८८

जवमज्झा [यवमध्या] ओ० २४

जवलिय [यवलित] जी० ३।२६८

जवाकुसुम [जपाकुसुम] रा० ४५

जस [यशस्] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७

जसंसि [यशस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६

जसोधरा [यशोधरा] जी० ३,६६६

जह [यथा] ओ० ७४. जी० १।७२

जहक्कम [यथाक्रम] रा० १७२

जहण [जघन] जी० ३।५६७

जहण्ण [जघन्य] ओ० १८७, १८८, १६५. जी० १।१६, ५२, ५६, ६५, ७४, ७६, ८२, ८६ से ८८, ६४, ६६, १०१, १०३, १११, ११२, ११६, ११६, १२१, १२३ से १२५, १३०, १३३, १३५ से १४०, १४२; २।२० से २२, २४ से ५०, ५३ से ६१, ६३, ६५ से ६७, ७३, ७६, ८२ से ८४, ८६ से ८८, ६० से ६३, ६७, १०७ से १११, ११३, ११४, ११६ से १३३, १३६; ३।८६, ८६, ६१, १०७, १२०, १५६, १६१, १६२, १६५, १७६, १७८, १८०, १८२, १८६ से १६०, २१८, ६२६, ८४४, ८४७, ६६६, १०२१, १०२७ से १०३६, १०८३, १०८४, १०८७, १०८६, ११११, ११३१, ११३२, ११३४ से ११३७; ४।३, ४,६ से ११, १६, १७; ५।५, ७, ८, १० से १६, २१ से २४, २८ से ३०; ६।२, ३, ६, ८ से ११; ७।३, ५, ६, १०, १२ से १८; ६।२ से ४,२३ से २६, ३१, ३३, ३४, ३६, ४०, ४१, ४३, ४७, ४६, ५१,५२, ५७ से ६०, ६८ से ७३, ७७, ७८, ८०, ८३, ८५,८६,६०,६२,६३,६६, ६७, १०२, १०३, १०५, १०६, ११४, ११५, ११७, ११८,१२३ से १२८, १३२, १३४, १३६, १३८, १४२, १४४, १४६, १४६, १५०, १५२, १५३,१६० से १६२, १६४, १६५, १७१ से १७३, १७६ से १७८, १८६ से १६१, १६३, १६४, १६८ से २००, २०२ से २०४, २०६, २०७, २१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से २१२, २१४, २१६ से २१८, २२२, २२५, २२८, २२६, २३४, २३६, २३८, २४१ से २४४, २४६, २५७ से २६०, २६२, २६४, २६६, २७१, २७३, २७७ से २८२

जहण्णजोगि [जघन्ययोगिन्] ओ० १८२

जहण्णपद [जघन्यपद] जी० ३।१६५ से १६७

जहा [यथा] ओ० ६६. रा० १०. जी० १।४

जहाणामत [यथानामक] जी० ३।६६०

जहाणामय [यथानामक] ओ० १५०,१६४, १८४. रा० १२, २४, २५, २७, २८, ३०, १५४, १७३, ७०३, ७३७, ७५५, ७५८ से ७६१, ७६५, ७७२, ७७४, ८११. जी० ३।८४,११८, ११६,२१८,२८०,२८१,२८३ से २८५,३०६, ३२७, ५७८, ६०१, ६७०, ८८३

जहानामय [यथानामक] रा० २६, २६, ३१, ४५, ६५, १२३, १७१, १७३. जी० ३।८५, ६५, २७७ से २७६, २८२, ६०२, ७५५, ८६०, ८६६, ८७२, ८७८, ६५८, ६५६, ६६१, १०७८, १०७६

जहाभणिय [यथाभणित] रा० ६६६

जहासंभव [यथासम्भव] जी० १।१३६

जहिं [यत्र] जी० ३।११२७

जहिच्छित [यथेप्सित] जी० ३।१११५

जहिच्छिय [यथेप्सित] जी० ३।५६८, ६०६

√जा [या]--जंति. जी० ३।८३८।१

जाइ [जाति] ओ० २३, १६५, १६५।२१

जाइमंडवग [जातिमण्डपक] रा० १८४

जाइमंडवय [जातिमण्डपक] रा० १८५

जाइसंपण्ण [जातिसम्पन्न] ओ० २५

जाइसरण [जातिस्मरण] ओ० १५६, १५७

जाईहिंगुलय [जातिहिङ्गुलक] रा० २७

जाईमंडवग [जातिमण्डपक] जी० ३।२६६

जाईमंडवय [जातिमण्डपक] जी० ३।२६७

जाग [याग] ओ० २

√जागर [जागृ] - जागरिस्संति. रा० ८०२

जागरिया [जागरिका] ओ० १४४. रा० ८०२, ८०३

जाण [यान] ओ० १,७,८,१०,१४,५२,५५,५८, ५६,६२,७०,१००,१२३,१४१. रा० ६७१, ६७५,६८७,७६६. जी० ३।२७६,५८१,५८५, ६१७

√जाण [ज्ञा]—जाणइ. ओ० १६६. रा० ७७१. जी० ३।१६८—जाणंति. रा० ६३. जी० ३।१०७ जाणंती.--ओ० १६५।१२--जाणति, जी० ३।२००—जाणह. रा० ६३--जाणामि. रा० ७४६—जाणासि. रा० ७६७ --जाणि-स्सामो. रा० ७२१—जाणिहिति. रा० ८१५

जाणमाण [जानान, जानत्] रा० ८१५

जाणय [ज्ञ] ओ० १६,२१,५४. रा० ७४७

जाणविमाण [यानविमान] रा० १३,१७ से १६, २४,३२,४५ से ४६,५६,५७,१२०

जाणसाला [यानशाला] ओ० ५६

जाणसालिय [यानशालिक] ओ० ५८,५६

जाणित्ता [ज्ञात्वा] ओ० १४५. रा० ७६४

जाणु [जानु] ओ० १६,२१,५४. रा० २५४,२६२. जी० ३।४१५,४५७,५६६,५६७

जात [जात] रा० ११६,८११

जातरूव [जातरूप] रा० ७६६. जी० ३।७,३८७

जातरूवमय [जातरूपमय] जी० ३।२६४

जाता [जाता] जी० ३।१०४०,१०४४

जाति [जाति] रा० ३०. जी० ३।१६० से १६२, १६६ से १६६,१७१,१७४,२८३,२६७.६६६ ६६८

जातिगुम्म [जातिगुल्म] जी० ३।५८०

जातिपसन्ना [जातिप्रसन्ना] जी० ३।८६०

जातिमंडवग [जातिमण्डपक] जी ३।८५७

जातिमंडवय [जातिमण्डपक] जी० ३।८५७

जातिसंपण्ण [जातिसम्पन्न] रा० ६८६,६८७, ६८६,७३३

जातिहिंगुलय [जातिहिङ्गुलक] जी० ३।२८०

जाय [जात] ओ० २७,१५०. रा० १४,६६८, ७६०,७६१,८०२,८११

जायकम्म [जातकर्मन्] ओ० १४४
जायकोउहल्ल [जातकौतूहल्ल] ओ ८३
जायग [जातक] ओ० १४५. रा० ८०५
जायत्थाम [जातस्थामन्] रा० ८१३
जायरूव [जातरूप] ओ० १४,२७,१४१. रा० १०, १२,१८,६५,१३०,१६५,२२८,२७९,६७१, ८१३. जी० ३।३००,६७२
जायरूव [पाय] [जातरूपपात्र] ओ० १०५, १२८
जायरूव [बंधण] [जातरूपबन्धन] ओ० १०६, १२९
जायरूवमय [जातरूपमय] रा० १३०,१९०. जी० ३।३००
जायसंसय [जातसंशय] ओ० ८३
जायसड्ढ [जातश्रद्ध] ओ० ८३
जाया [जाता] जी० ३।२३५,२३९,२४१
जार [जार] रा० २४. जी० ३।२७७
जारापविभत्ति [जारकप्रविभक्ति] रा० ९४
जारिसय [यादृशक] रा० ७७२
जाल [जाल] ओ० १९,६३,६४. रा० १७,१८. जी० ३।८४,५९६
जालंतर [जालान्तर] रा० १३७. जी० ३।३०७
जालकडग [जालकटक] रा० १३४. जी० ३।३०४
जालकडय [जालकटक] जी० ३।२६२
जालघरग [जालगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२७५,२९४
जालपंजर [जालपञ्जर] रा० १३०. जी० ३।३००
जालवंद [जालवृन्द] जी० ३।५९४
जालहरय [जालगृहक] ओ० ६
जाला [ज्वाला] जी० १।७८; २।९८; ३।८५, ११८, ११९,५८९
जाव [यावत्] ओ० ६०. रा० १ जी० १।३४
जावइय [यावत्] जी० ३।१७६,१७८,१८०,१८२
जावं [यावत्] जी० ३।८४१
जावज्जीव [यावज्जीव] ओ० ११७,१२१,१३६, १६१,१६३

जावतिय [यावत्] जी० ३।९७२,९७३
जावय [जापक] ओ० २१,५४. रा० ८,२९२. जी० ३।४५७
जासुअण [जपासुमनस्] रा० २७
जासुयण [जपासुमनस्] जी० ३।२८०,५९०
जाहिया [जाहिका] जी० २।९
जाहे [यदा] रा० ७७४. जी० ३।८४३
जिइंदिय [जितेन्द्रिय] ओ० २५,४६,१६४
जिण [जिन] ओ० १९,२१,२६,५१,५२,५४,१७२. रा० ८,१६,२२५,२५४, २९२,७७१,८१५, ८१७. जी० १।१; ३।३८४,४१५,४४२,४५७, ८३८।१,८९६,९१७
√जिण [जि]—जिणाहि. ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८
जिणपडिमा [जिनप्रतिमा] रा० २२५,२५४ से २५८,२७६,२९१,३०६ से ३०९,३१७ से ३२०,३४४ से ३४७. जी० ३।३८४,४१५ से ४१९,४४२,४५७,४७१ से ४७४,४८२ से ४८५,५०९ से ५१२,६७६,८९६,९०८
जिणमय [जिनमत] जी० १।१
जिणवर [जिनवर] ओ० ४६. रा० २९२. जी० ३।४५७
जिणसकहा [दे० जिण 'सकहा'] रा० २४०,२७६, ३५१. जी० ३।४०२,४४२,५१६,१०२५
जिणिंद [जिनेन्द्र] रा० ४७
जित [जित] जी० ३।४४८
जितिंदिय [जितेन्द्रिय] रा० ६८६
जिब्भच्छिण्णग [जिह्वाछिन्नक] ओ० ९०
जिब्भिंदिय [जिह्वेन्द्रिय] ओ० ३७
जिमिय [जिमित] रा० ६८५,७६५,८०२
जिय [जित] ओ० ६८. रा० २८२,६८६. जी० ३।४४८
जियकोह [जितक्रोध] ओ० २५. रा० ६८६
जियणिद्द [जितनिद्र] ओ० २५. रा० ६८६
जियपरीसह [जितपरीषह] ओ० २५. रा० ६८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जियभय [जितभय] रा० ८१७
जियमाण [जितमान] ओ० २५. रा० ६८६
जियमाय [जितमाय] ओ० २५. रा० ६८६
जियलोभ [जितलोभ] ओ० २५
जियलोह [जितलोभ] रा० ६८६
जियसत्तु [जितशत्रु] रा० ६७६,६८०,६८३ से ६८५,६६८ से ७००,७०२
जीमूत [जीमूत] जी० ३।२७८
जीमूतय [जीमूतक] रा० २५
जीय [जीत] ओ० ५२. रा० ११,१६,५६,६८७, ६८६
जीव [जीव] ओ० २७,७१ से ७३,७४।४,५,८४ से ८६,१२०,१३७,१३८,१६२,१८५ से १८८. रा० ६६८,७१६,७४८ से ७६४,७६८,७७० से ७७३,७८६,८१३,८१५. जी० १।१०,११, १५ से ३३,५१ से ५४,५६,५६ से ६२,६४, ७४,७६,८२,८५ से ८७,६०,६३ से ६६,१०१, ११६,१२८,१३० से १३४,१४३,२।१,१५१; ३।१,५३,५४,८७,११८,१२६,१२७,१२७।२, ५,१२६।५,६,१५० से १६०,१८३,१६२,२१०, २११,४७५,५७६,७१६,७२०,७२४.७२७, ७८७,८०६,८१८,८२८,८५३,८५६,८८०, ६४६,६७४,६७५,१०८१,११२८,११३०, ११३८;४।१,२५;५।१,६०;६।१,१२;७।१, २३;८।१,५;६।१,७ से ६,१५,१८,२१,२२, २८ से ३०,३६,३८,५६,६२,६३,६६,६७, ७५,८८,६५,१०१,१०६,११२,११३,१२१, १३१,१४१,१४७,१४८,१५६,१५८,१५६, १६७,१७०,१८१,१८२,१८५,१६६,१६७, २०८,२०६,२२०,२२१,२३२,२५५,२५६, २६७,२६३
जीवंजीवग [जीवंजीवक] ओ० ६. जी० ३।२७५
जीवंत [जीवत्] रा० ७५४,७६२,७६३
जीवंतग [जीवत्क] रा० ७६२
जीवघण [जीवघन] ओ० १८३,१८४,१६५।११
जीवदय [जीवदय] ओ० १६,२१,५४. रा० ८
जीवपएसिय [जीवप्रदेशिक] ओ० १६०
जीवा [जीवा] रा० ७५६. जी० ३।५७७,६३१
जीवाजीवाभिगम [जीवाजीवाभिगम] जी १:१,२
जीवाभिगम [जीवाभिगम] जी० १।२,६ से १०; ६।७,८,२६३
जीविय [जीवित] ओ० २३,२५. रा० ६८६,७५० से ७५३,७५६,७६२,७६७
जीविया [जीविका] ओ० १४७. रा० ७१४,७७६, ८०६
जीवोवलंभ [जीवोपलम्भ] रा० ७६८
जीहा [जिह्वा] ओ० १६,४७. रा० २५४. जी० ३।४१५,५६६,५६७
जुइ [द्युति] ओ० ४७,७२,८६ से ६५,११४, ११७,१५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० १३,६५७
√जुंज [युज्]—जुंजइ. ओ० १७५
जुंजमाण [युञ्जान] ओ० १७६,१७८ से १८०
जुग [युग] ओ० १६. जी० ३।५६६,८४१
जुगल [युगल] रा० २३. जी० ३।५६७
जुगव [युगपत्] ओ० १८२
जुगव [युगवत्] रा० १२,७५८,७५६. जी० ३।११८,११६
जुग्ग [युग्य] ओ० १,७,८,१०,१००,१२३. जी० ३।२७६,५८१,५८५,६१७
जुज्झसज्ज [युद्धसज्ज] रा० १७३,६८१
जुण्ण [जीर्ण] रा० ७६०,७६१,७८२
जुण्णय [जीर्णक] रा० ७६१
जुति [द्युति] रा० १३,१२१,६५७. जी० ३।४४६, ४५७
जुत्त [युक्त] ओ० १५,१६,२३,५५,५७,५८,६२, ७०,७१. रा० १७,१८,२०,३२,६१,७०, १२६,२८५,२६२,६६४,६७२,६८१,६८२, ६६०,६६१,७०६, ७१४,७२४,८०६,८१०. जी० ३।२८८,३००,३७२,४५१,४५७,५६२, ५८६,५६२,५६६,५६७,८३८।३२
जुत्तपालित [युक्तपालिक] जी० ३।५६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुत्तपालिय [युक्तपालिक] रा० ६६४
जुत्तय [युक्तक] रा० ७७६
जुत्तामेव [युक्तमेव] रा० ७०६
जुत्ति [युक्ति] ओ० ६७
जुद्ध [युद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६.
जी० ३।६३१
जुद्धजुद्ध [युद्धयुद्ध] रा० ८०६
जुद्धसज्ज [युद्धसज्ज] ओ० ५७,६४. रा० ६८२,
६९१. जी० ३।२८५
जुद्धाइजुद्ध [युद्धातियुद्ध] ओ० १४६
जुम्ह [युष्मत्] रा० ९
जुयल [युगल] ओ० १२,५७. रा० १२,१७,१८,
२०,३२,१२९,१३३,२८५.२९१,७५८,७५९.
जी० ३।११८,२८८,२९१,३००,३०३,३७२,
४५१,४५७,५९७
जुयलग [युगलक] जी० ३।६३०
जुवइ [युवति] ओ० १
जुवराय [युवराज] रा० ६७४. जी० ३।६०९
जुवलिय [युगलित] ओ० ५,८,१०. रा० १४५.
जी० ३।२६८,२७४
जुवाण [युवन्] रा० १२,७५८,७५९. जी० ३।११८
जूय [द्यूत] ओ० १४६. रा० ८०६
जूयय [यूपक] जी० ३।७२३
जूया [यूका] जी० ३।७८९
जूव [यूप] जी० ३।५९७
जूवय [यूपक] जी० ३।६२६
जूवा [यूका] जी० ३।६२४
जूहिया [यूथिका] रा० ३०. जी० ३।२८३
जूहियागुम्म [यूथिकागुल्म] जी० ३।५८०
जूहियामंडवग [यूथिकामण्डपक] रा० १८४.
जी० ३।२९६
जूहियामंडवय [यूथिकामण्डपक] रा० १८५
जेट्ठ [ज्येष्ठ] ओ० ८२. रा० ६७३,६७५
जेट्ठामूल [ज्येष्ठामूल] ओ० ११५
जेणामेव [यत्रैव] रा० ७५४. जी० ३।४४३
जोइ [ज्योतिस्] रा० ७५७,७६५,७७२
जोइभायण [ज्योतिर्भाजन] रा० ७६५
जोइस [ज्योतिस्, ज्यौतिष] ओ० ५०. रा० ५९.
जी० ३।८३८।२
जोइसामयण [ज्यौतिषायण] ओ० ९७
जोइसिणी [ज्यौतिषी] जी० २।७१,७२,१४८
जोइसिय [ज्योतिष्क, ज्यौतिषिक] ओ० ५०,९४.
रा० ११. जी० १।१३५; २।१५,१८,३९ से
४४,७१ ७२,९६; ३।२३०,८३८।२१,९१७
जोईरस [ज्योतीरस] रा० १०,१२,१८,६५,१६५,
२७९
जोईरसमय [ज्योतीरसमय] रा० १३०,१९०
जोएत्ता [योजयित्वा] ओ० ५९
जोग [योग] ओ० ११७. रा० ८१५. जी० १।३४,
९६,१०१,११९,१२८,१३६; ३।१२७,१६०,
७०३,७२२,८०९,८२०,८३०,८३४,८३७,
८३८।१०,३२
जोगनिरोह [योगनिरोध] ओ० १८२
जोगपडिसंलीणया [योगप्रतिसंलीनता] ओ० ३६
जोगि [योगिन्] ओ० ९६
जोग्ग [योग्य] ओ० ६३. रा० ९,१२,४७
जोणि [योनि] ओ० १९५
जोणिप्पमुह [योनिप्रमुख] जी० १।५८,७३,७८,
८१
जोणिया [योनिका] ओ० ७०. रा० ८०४
जोणिसंगह [योनिसंग्रह] जी० ३।१४७
जोणिसूल [योनिशूल] जी० ३।६२८
जोणीपमुह [योनिप्रमुख] जी० ३।१६० से १६२,
१६६ से १६९, १७१, १७४, ९६६, ९६८
जोणीसंगह [योनिसङ्ग्रह] जी० ३।१६०, १६१,
१६३
जोण्ह [ज्यौत्स्न] जी० ३।८३८।१६, २०
जोति [ज्योतिस्] रा० ७६५
जोतिभायण [ज्योतिर्भाजन] रा० ७६५
जोतिरस [ज्योतीरस] जी० ३।७
जोतिरसमय [ज्योतीरसमय] जी० ३।२६४, ३००
जोतिस [ज्योतिस्, ज्यौतिष] जी० ३।८५८,८६१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८६४, ८६७, ८७०, ९२४, ९४२, ९५२, १००१, १००२, १००६

जोतिसराय [ज्योतीराज] जी० ३।२५७, २५८, १०२३ से १०२६

जोतिसविसय [ज्योतिर्विषय] जी० ३।१००६

जोतिसिंद [ज्यौतिरिन्द्र, ज्यौतिषेन्द्र] जी० ३।२५७, २५८, १०२३ से १०२६

जोतिसिणी [ज्यौतिषी] जी० २।१४९

जोतिसिय [ज्योतिष्क, ज्यौतिषिक] जी० २।९५, ९६, १४८, १४९; ३।२५७, ५९०, ७६३, १०२५

जोय [योग] ओ० ६४. रा० ५१, ७९६. जी० ३।७०३; ९।६६

√**जोय** [योजय्]—जोइंसु. जी० ३७०३—जोइस्संति. जी० ३।७०३—जोएइ. ओ० ५९—जोएस्संति. जी० ३।७०३ —जोयंति. ३।७०३

जोयण [योजन] ओ० ७१, १७०, १९२, १९५. रा० ९, १०, १२, १४, १७, १८, ३६, ५२, ५६, ६१, ६५, १२४, १२६ से १२९, १३७, १७०, १८६, १८८, १८९, २०१, २०४ से २१२, २१८, २२१, २२२, २२४, २२६, २२७, २३०, २३१, २३३, २३८ से २४०, २४२, २४४, २४६, २४७, २५१ से २५३, २६१, २६२, २६७, २७२,२७९, ७२७,७५३. जी० १।७४, ८६. १०१, १११, ११९, १२३, १३५; ३।५, १४ से २१, २५ से २७, ३३ से ३६, ३९ से ४३, ४७, ६० से ७२, ७७, ८० से ८२, ८६, १२९।७. २१७, २१९ से २२७, २३२, २५७, २६० से २६३, २७३, २९८, ३००, ३०७, ३१०, ३५१, ३५२, ३५४, ३५५, ३५८, ३५९, ३६१, ३६२, ३६४, ३६५, ३६८ से ३७४, ३७६, ३७७, ३८०, ३८१, ३८३, ३८५, ३८६, ३९२, ३९३, ३९५, ४०० से ४०२, ४०४, ४०६, ४०८, ४१२ से ४१४, ४२२, ४२५, ४२७, ४३७, ४४५, ५६६, ५६८ से ५७०, ५७७, ६३२, ६३४, ६३८, ६३९, ६४२, ६४४,६५३,६५६, ६६०, ६६१, ६६३, ६६६,६६८, ६७१,६७८, ६७९ ६८२, ६८३, ६८६ से ६८९, ७०६, ७१०, ७१४, ७२३ से ७२८, ७३२, ७३६, ७३७, ७३९ से ७४२, ७४५, ७५०, ७५४, ७५६, ७५८, ७६१, ७६२, ७६४ से ७७९, ७८८ से ७९२, ७९४, ७९५, ७९८, ८०२, ८१२ ८१४, ८१५, ८२३, ८२७, ८३२, ८३५, ८३८।२७, २८, ८३९, ८४२, ८४५, ८५०, ८५२, ८८२, ८८४, ८८५, ८८७, ८८८, ८९१, ८९३ से ८९५, ८९७ से ९०१, ९०६, ९०७, ९१०, ९११,९१८, ९४०,९४४, ९६९ से ९७१, १००१ से १००६, १०१० से १०१२, १०३८, १०६५ से १०७०, १०७३, १०७४, १०८७. १०८८

जोयणय [योजनक] जी० ३।२२६, ६६३

जोयणिय [योजनिक] ओ० १९२

जोव्वण [यौवन] ओ० ४७. रा० ६९, ७०. जी० ३।५९७

जोव्वणग [यौवनक] रा० ८०९, ८१०

जोह [योध] ओ० २३, ५२, ५५ से ५७,६२,६५. रा० १७३, ६८१, ६८७,६८८. जी० ३।२८५

झ

झंझा [झञ्झा] रा० ७७

झंझावाय [झञ्झावात] जी० १।८१

झड [दे०] रा० ७८२

झय [ध्वज] ओ० २,१२,५५, ५७, ६५. रा० २२, १६७, १७३, १७८, २०२, २०४ से २०८, २१४, २२०, २२३, २२९, २३२, २३४, २४१, २४८, २५०, २५८, २५९,२६१,२७९, २८१, ६८१, ७१५. जी० ३।२८५, २९०, ३४८, ३५९, ३६७ से ३७१, ३७५, ३७९, ३८२, ३९१, ३९४, ४०३, ४१२,४१९,४२०, ४२४, ४३०, ४३३, ४३६, ४४५,४४७,५८६ ५९७, ६०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झल्लरी [झल्लरी] ओ० ६७. रा० १३,७७,६५७. जी० ३।२८ से ३२, ७८, ४४६, ९१८

झस [झष] ओ० १९. जी० ३।५९६

झाण [ध्यान] ओ० ३८, ४३, ४६

झाणकोट्ठोवगय [ध्यानकोष्ठोपगत] ओ० ४५,८२

झाम [दग्ध] जी० ३।९६

√झाम [दह्] झामिज्जइ रा० ७६७

√झिया [ध्यै]—झियाइ रा० ७६५—झियामि रा० ७६५—झियायसि रा० ७६५

झियायमाण [ध्यायत्] रा० ७६५

झीण [क्षीण] ओ० ११६,११७. रा० ७७४

झीणोदग [क्षीणोदक] ओ० ११७

झुसिय [शुषित] जी० ३।११८,११९

झुसिर [शुषिर] जी० ३।८०,९६,४४७,५८८

झूसणा [जूषणा] ओ० ७७

झूसित्ता [जुषित्वा] ओ० १४०

झूसिय [जुष्ट, शुषित] ओ० ११७

ट

टकारवग्ग [टकारवर्ग] रा० ९७

(ठ)

√ठव [स्थापय्]—ठवेइ रा० ६८१—ठवेई रा० ५६—ठवेंति ओ० ५२. रा० ६८७ —ठवेति ओ० ६९. रा० ६८३

ठवित्ता [स्थापयित्वा] रा० ७९१

ठविय [स्थापित] ओ० १३४

ठवेत्ता [स्थापयित्वा] ओ० ५२. रा० ५६

ठाण [स्थान] ओ० १९,२१,४०,५४,७३,९५, ११७,१५५,१५९. रा० ८,७६,१७३,२९२, ६७५,७१४,७१९,७५१,७५३,७७१,७९६. जी० १।१२४; ३।२८५,४५७,८४३,८४५, ८४६

ठाणट्ठिइय [स्थानास्थितिक] ओ० ३६

ठाणधर [स्थानधर] ओ० ४५

ठाणपद [स्थानपद] जी० ३।२३३,२३४,२४८, २५० से २५२,२५७,१०४५

ठाणपय [स्थानपद] जी० ३।१०४८,१०५६

ठाणप्पय [स्थानपद] जी० ३।७७

ठाणमग्गण [स्थानमार्गण] जी० १।३४,३६,३९

ठिइ [स्थिति] ओ० ८९ से ९५,११४,११७,१४०, १५५,१५७ से १६०, १६२,१६७,१७१. रा० ६६५,६६६. जी० १।१४,५२,५९,९०; २।१५१; ३।१२७।५,१२९।५,१६०,६३१,१०४२

ठिइक्खय [स्थितिक्षय] ओ० १४१ रा० ७९९

ठिइय [स्थितिक] ओ० ७०. जी० १।३३

ठिइवडिया [स्थितिपतिता] ओ० १४४

ठिईय [स्थितिक] जी० ३।७२१

ठिच्चा [स्थित्वा] रा० ७३६

ठित [स्थित] जी० ३।३०३,८४५

ठिति [स्थिति] रा० ७९८,८१५. जी० १।६५, ७४,८२,८७,८८,९६,१०३,१११,११२,११६, ११९,१२०,१२३ से १२५,१२८,१३३,१३६ से १३८; २।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३९,४६,७९ से ८१,८५,१०७ से १०९, १११ से ११४,११६,११८,१५०; ३।१२०, १५६,१६२,१६५,१८६,१९२,२१८,२३८, २४३,२४७,२५०,२५६,२५८,५६४,५६५, ६२९,१०२७,१०४२,१०४४,१०४६,१०४७, १०४९,१०५०,१०५२,१०५३,१०५५,११२६, ११३१; ४।३,५,६; ५।५,७,२१,२८; ६।२,५, ७; ७।२,८; ८।२; ९।२

ठितिपद [स्थितिपद] जी० ३।१९२

ठितिवडिया [स्थितिपतिता] रा० ८०२,८०३

ठितीय [स्थितिक] रा० १८६. जी० ३।३५०, ३५९,६३७,६५९,७००,७२४,७२७,७३८, ७६०,७६३,७९५,८०८,८१९,८२९,८४२, ८४५,८५४,८५७,८६३,८६६,८६९,८७२, ८७५,८७८,८८५,९२३,९२५

ठिय [स्थित] ओ० ४०. रा० १७,१८,१३०,१३३, ७०३. जी० ३।३००

ठियलेस [स्थितलेश्य] ओ० ५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ड)

डंड [दण्ड] रा० ७५१
डज्झंत [दह्यमान] जी० ३।४४७
डमर [डमर] ओ० १४. रा० ६७१.
जी० ३।६२७
डमरकर [डमरकर] ओ० ६४
डिंडिम [डिण्डिम] रा० ७७. जी० ३।५८८
डिंब [डिम्ब] ओ० १४. रा० ६७१. जी०३।६२७

(ढ)

ढंक [दे० ढङ्क] जी० १।११५
ढिंकुण [दे०] जी० ३।६२४

(ण)

ण [न] ओ० ४७. रा० ६. जी० १।८२
णउत [नयुत] जी० ३।८४१
णउत [नवति] जी० ३।१००३
णउति [नवति] जी० ३।१००४
णउय [नवति] जी० ३।२५७
णउल [नकुल] जी० १।११२
णउली [नकुली] जी० २।६
णं [दे०] ओ० १. रा० २. जी० १।१०
णंगूलिय [लाङ्गूलिक] जी० ३।२१६
णंगूलियदीव [लाङ्गूलिकद्वीप] जी० ३।२२४
णंगोलिय [लाङ्गूलिक] जी० ३।२२०
णंगोलियदीव [लाङ्गूलिकद्वीप] जी० ३।२२०
णंदणवण [नन्दनवन] रा० २७६. जी० ३।४४५
णंदा [नन्दक[1]] ओ० ६८
णंदा [नन्दा] रा० २३४,२८८,३१३,३७६,४३५,
४६६,५५६,६१६. जी० ३।३६५. ३६६,४१२,
४२५,४३८,४५४,४७७,४७८,५१५,५२३,
५२६,५३७,५४४,५५१,५५६,६८३,६८५,
६८६,६८८,६०१,६१०,६१४ से ६१६,६१६
णंदिघोस [नन्दिघोष] ओ० ६४. रा० १३५.
जी० ३।२८५, ३०५
णंदिजणण [नन्दिजनन] रा० ७५०
णंदियावत्त [नन्द्यावर्त] ओ० ५१,६४. रा० २१,
४६. जी० ३।२८६,५६४
णंदिरुक्ख [नन्दिरूक्ष] ओ० ६,१०. जी० ३।५८३
णंदिवद्धणा [नन्दिवर्धना] जी० ३।६१४
णंदिसेणा [नन्दिषेणा] जी० ३।६१०
णंदिस्सर [नन्दिस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५
णंदिस्सर [नन्दीश्वर] जी० ३।६४८, ६४६
णंदिस्सरवर [नन्दीश्वरवर] जी० ३।८८० से
८८२,६१८,६२५
णंदिस्सरोद [नन्दीश्वरोद] जी० ३।६२५,६२७
णंदी [नन्दी] जी० ३।७७५
णंदीमुह [नन्दीमुख] ओ० ६
णंदुत्तरा [नन्दोत्तरा] जी० ३।६१४,६१६
णक्ख [नख] ओ० १६. जी० ४१५,५६६
णक्खत्त [नक्षत्र] ओ० ५०,१४५,१६२.
रा० ८०५. जी० ३।७७५,८०६,८२०,८३०,
८३४, ८३७,८४१,८४२,८४५,६३७,१०००,
१००७,१०२०,१०२१,१०३७,१०३८
णक्खत्तविमाण [नक्षत्रविमान] जी० २।४३,
३।१०१३,१०१८,१०३३
णख [नख] जी० ३।५६७
णगर [नगर] ओ० ४६. जी० ३।६०६
णगरगुत्तिय [नगरगुप्तिक] रा० ७५४,७५६,
७६२,७६४
णगरमाण [नगरमान] रा० ८०६
णगररोग [नगररोग] जी० ३।६२८
णगरी [नगरी] ओ० २०,५३. रा० ६७१,६८६,
६६२,७००,७०२,७०६,७०८,७१३,७१६,
७५०
णगभाव [नगभाव] रा० ८१६
णग्गोह [न्यग्रोध] जी० १।७२
णग्गोहपरिमंडल [न्यग्रोधपरिमण्डल]
जी० १।११६

---

[1]. नन्दति—समृद्धौ भवतीति नन्दकः तस्यामन्त्रणमिदम्, इह च दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् (वृ)।

णच्चंत [नृत्यत्] ओ० ६४

णच्चण [नर्तन] ओ० ४६

णट्ट [नाट्य] ओ० १४६,१४८,१४६. जी० ३।६३१,१०२५

णट्टग [नाट्यक] ओ० १,२

णट्टगपेच्छा [नाट्यकप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५

णट्टपेच्छा [नाट्यप्रेक्षा] जी० ३।६१६

णट्टमाल [नृत्तमाल] जी० ३।५८२

णट्टविधि [नाट्यविधि] जी० ३।४४७

णट्टविहि [नाट्यविधि] रा० ७३,८१ से ६५,१०० से १११,११३,११६,२८१. जी० ३।४४७

णट्टसज्ज [नाट्यसज्ज] रा० ७६,१७१

णट्टसाला [नाट्यशाला] रा० ७८१,७८३,७८६, ७८७

णट्टाणिय [नाट्यानीक] रा० ४७,५६

णट्ठ [नष्ट] रा० ६,१२. जी० ३।४४७

णडपेच्छा [नटप्रेक्षा] जी० ३।६१६

णत्तुय [नप्तृक] रा० ७५० से ७५३

णत्थिभाव [नास्तिभाव] ओ० ७१

णदिमह [नदीमह] जी० ३।६१५

णपुंसग [नपुंसक] जी० १।१२८; २।१; ३।१४८, १४६,१६४

णपुंसगवेय [नपुंसकवेद] जी० १।२५,१०१

णपुंसगवेयग [नपुंसकवेदक] जी० १।८६

√णम [नम्]—णमेइ. जी० ३।४५७

√णमंस [नमस्य्]—णमंसइ. ओ० २१—णमंसंति. ओ० ४७. रा० ६८७. जी० ३।४५७ —णमंसति. रा० ८—णमंसह. रा० ६ —णमंसामो. ओ० ५२. रा० १० —णमंसेज्जा. रा० ७७६

णमंसण [नमस्यन] ओ० ५२

णमंसमाण [नमस्यत्] ओ० ४७,५२,६६,८३. रा० ६०,६८७,६६२,७१६

णमंसित्तए [नमस्यितुम्] ओ० १३६

णमंसित्ता [नमस्यित्वा] ओ० २१. रा० ८ जी० ३।४५७

णमिय [नमित] जी० ३।३८७,५६७

णमेत्ता [नमयित्वा] जी० ३।४५७

णमो [नमस्] ओ० २१. रा० ८१७. जी० ३।४५७

णय [नत] रा० २४५,६६४. जी० ३।४०७,५६२

णयण [नयन] ओ० १६,२१,४७,५४. रा० ८. ७१४. जी० ३।३८७,५६७

णयणकीयरासि [नयनकीकाराशि) ओ० १३

णयणुप्पाडियग [उत्पाटितकनयन] ओ० ६०

णयर [नगर] ओ० २८,२६,६८,८६ से ६३,६५, ६६,११५,११८,११६,१५५,१५८ से १६१, १६३,१६८

णयरगुत्तिय [नगरगुप्तिक] ओ० ६०,६१

णयरी [नगरी] ओ० २,१४,२० से २२,५२,५५, ६० से ६२,६७,६८,७०. रा० १०,१३,६८७ से ६८६,७००,७०३,७५०,७५३

णर [नर] ओ० १३,४६. रा० १२६,१७३,६८१, ७५३. जी० ३।२८५,२८८,३११,३१८,३७२

णरक [नरक] जी० ३।७८ से ८१,८४

णरकंठक [नरकण्ठक] जी० ३।३५५।३

णरग [नरक] ओ० ७४।१,३. जी० ३।१२,७७, ८५ से ८७,१२७

णरपवर [नरप्रवर] ओ० १४

णरय [नरक] ओ० ७४. जी० ३।७७,८५,११७ से ११६

णरवइ [नरपति] ओ० १,२३,६३,६५

णरवसभ [नरवृषभ] ओ० ६५

णरसीह [नरसिंह] ओ० ६५

णरिंद [नरेन्द्र] ओ० ६५

णलागणि [नलाग्नि] जी० ३।११८

णलिण [नलिन] रा० २३,१६७,२७६,२८८. जी० ३।११८,११६,२५६,२८६,२६१,८४१

णलिणी [नलिनी] ओ० १. रा० ७७७,७७८, ७८८

णव [नवन्] ओ० १४३. रा० ८०१. जी० १।१०

णव [नव] ओ० १,५,८,७१. रा० ६१. जी० ३,२७४,५६७
णवंग [नवाङ्ग] रा० ८०६,८१०
णवणवमिया [नवनवकिका] ओ० २४
णवणीइयागुम्म [नवनीतिकागुल्म] जी० ३।५८०
णवणीत [नवनीत] जी० २८४,२६७
णवणीय [नवनीत] ओ० १३,६२,६३. रा० ३१, ३७,१८५,२४५. जी० ३।४०७
णवनीय [नवनीत] जी० ३।३११
णवतय [नवत्वक्] रा० ३७
णवमिया [नवमिका] जी० ३।६२१
णवय [नवक] रा० ७५६,७६१
णवरं [दे०] जी० १।५६
णवरि [दे०] जी० १।६६
णवविध [नवविध] जी० ८।१,५; ६।२२१,२३२
णह [नख] ओ० ६२. रा० ८,१०,१२,१४,१८, ४६,७२,७४,११८,१५०,२७६,६५५,६८१, ६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४,७२३. जी० ३।५६७
णाइ [ज्ञाति] ओ० १५०. रा० ७५१,७७४,८०२, ८११
णाइय [नादित] ओ० ६,६७. रा० १३,५६,५८. जी० ३।२७५,२८६,४५७,५५७
णाऊण [ज्ञात्वा] ओ० २३
णाग [नाग] ओ० ६६,१२०,१६२. रा० ६६८, ७५२,७७१,७८६. जी० ३।३३५,५६६,७३३, ८८५,६४४,६४५,६४७
णागग्गह [नागग्रह] जी० ३।६२८
णागदंत [नागदन्त] रा० १३२,२४०. जी० ३।३०२,३१७,४०२
णागदंतग [नागदन्तक] जी० ३।३०२,३१७,३२६, ३६७
णागदंतय [नागदन्तक] रा० १३२,१५३,२३५, २३६. जी० ३।३०२,३२६,३५५
णागदीव [नागद्वीप] जी० ३।६४४,६४५
णागद्दार [नागद्वार] जी० ३।८८५
णागधर [नागधर] ओ० ६६
णागपइ [नागपति] ओ० ४८
णागफड [नागस्फटा] ओ० ४८
णागमह [नागमह] जी० ३।६१५
णागराय [नागराज] जी० ३।७३४ से ७३६, ७४०,७४२,७४५,७४८ से ७५०,७८१,७८२
णागरुक्ख [नागरूक्ष] जी० १।७१
णागलया [नागलता] ओ० ११. जी० ३।५८४
णागलयामंडवग [नागलतामण्डपक] रा० १८४. जी० ३।२६६
णागलयामंडवय [नागलतामण्डपक] रा० १८५
णाडग [नाटक] रा० ६८५
णाण [ज्ञान] ओ० ४६,५४,१५३,१६५,१६६, १८३,१८८,१६५।११. रा० २६२,६८६,७३३, ७३६,७४६,७७१,८१४. जी० ३।१५२,४५७, ६१७
णाणत्त [नानात्व] जी० १।११६; ३।१६१,१६५, २१८
णाणविणय [ज्ञानविनय] ओ० ४०
णाणसंपण्ण [ज्ञानसम्पन्न] ओ० २५
णाणा [नाना] ओ० ५०,६३,७०. रा० १६,२०, ३२,३७,४०,१३०,१३३,१३५,१३६,१३८, १७५,१६०,२४५,८०४. जी० ३।७८,२६४, २६५,२८६ से २८८,३००,३०२,३०५, ३०६,३११,३२२,३७२,४३५,६५४,१०७१, १०६१
णाणावरणिज्ज [ज्ञानावरणीय] ओ० ४४
णाणाविह [नानाविध] ओ० ६ से ८,१०,४६,५५, १०७,१२०. रा० २४,३२,१२८,१३३,१५१, १५२,१७१,२८१. जी० ३।२७५,२७७,३०३, ३२४,३२५,३५३,४४७
णाणि [ज्ञानिन्] जी० १।८७,६६,११६,१३३, १३६; ३।१०४,१५२,११०७,११०८; ६।३०, ३१,३३,३५
णातिय [नादित] रा० २६१

णाभि [नाभि] ओ० १६. जी० ३।४१५,५९६,
५९७

णाम [नामन्] ओ० १४,१५,२०,४४,५२,५३,८२,
१४४,१७१,१९२,१९५।१६. रा० ११,१७,
१८,७९,८१,८३ से ९५,१०० से १११,११३,
२८१,६६६ से ६७२,६७५,६८७,७१३,७५१,
८०२. जी० १।१; ३।३,४,१२८,२१७,२१९
से २२३,२२५,२२७,२६०,३००,३५०,३५१,
४०१,५६६,५६८,५६९,५७७,५८२,५८६ से
५९२,५९५,६३२ ६३८,६३९,७००,७०१,
७०४,७०८,७१०,७११,७३६,७४०,७४२,
७४५,७५०,७५४,७६१,७६२,७६५,७६६,
७६८ से ७७०,७७२,७७५ से ७७८,७९५,
७९६,८००,८१०,८१४,८२१,८२५,८२९,
८४८,८५६,८५९,८६२,८६५,८६८,८७१,
८७४,८७७,८८०,९२५,९२७ से ९३२
९३८ से ९४१,९४३,९४४,९७२,१०३९,
११२०

णामंक [नामाङ्क] ओ० ५०

णामधेज्ज [नामधेय] ओ० १९,२१,५१,५४,
१४४,१९३. जी० ३।३५०,६९९,७०२,७६०,
८३६

णामधेय [नामधेय] ओ० ११७. रा० २९२.
जी० ३।४५७

णामय [नामक] रा० ६६७. जी० ३।७७५

णाय [ज्ञात] ओ० २. रा० ६८८

णाय [ज्ञात, नाग] ओ० २३

णायव्व [ज्ञातव्य] रा० १७२

णाराय [नाराच] जी० ३।११०

णारी [नारी] जी० ३।२८५

णालबद्ध [नालबद्ध] जी० ३।१७४

णालिएरिवण [नालिकेरीवन] जी० ३।५८१

णालियाखेड्ड [नालिकाखेल] ओ० १४६.
रा० ८०६

णासा [नासा] ओ० १६,४७. जी० ३।५९६,५९७

णासिया [नासिका] जी० ३।४१५

णिउण [निपुण] ओ० १५,४९,६३. रा० १२,१७,
१८,७५८,७५९,८०९,८१०. जी० ३।११९,
५८८,५९२,५९७

णिओग [निगोद] जी० ५।३३

णिओत [निगोद] जी० ५।१९

णिओद [निगोद] जी० ५।२८ से ३०,३७,३८,४१
से ४३,५०,५२,५६

णिओदजीव [निगोदजीव] जी० ५।३७,५३,५८ से
६०

णिकरिय [निकरित] ओ० १९

णिकाय [निकाय] ओ० ४६

णिकुरंब [निकुरम्ब] ओ० ४. रा० १७०.
जी० ३।५९६

णिक्कंकड [निष्कङ्कट] जी० ३।२६१,२३६

णिक्कंखिय [निष्काङ्क्षित] ओ० १२०,१६२.
रा० ६९८,७५२,७८९

णिक्खित्तउक्खित्तचरय [निक्षिप्त उत्क्षिप्तचरक]
ओ० ३४

णिक्खित्तचरय [निक्षिप्तचरक] ओ० ३४

णिक्खुड [निष्कुट] रा० १४

णिगर [निकर] रा० १३०. जी० ३।३००,५९०,
५९७

णिगरण [निगरण] जी० ३।५८९

णिगरित [निकरित] जी० ३।५९७

णिगलमालिया [निगडमालिका] जी० ३।५९३

√णिगिण्ह [नि+ग्रह्] —णिगिण्हइ रा० ६९३

णिगोदजीव [निगोदजीव] जी० ५।५६

णिग्गंथ [निर्ग्रन्थ] ओ० २५,३३,७२,७६.
रा० ६९८,७४८ से ७५०,७५२,७८९

णिग्गंथी [निर्ग्रन्थी] ओ० ७६

√**णिग्गच्छ** [निर्+गम्]—णिग्गच्छइ. रा० ६९.
जी० ३।४४३—णिग्गच्छंति. ओ० ५२.
रा० ६८७. जी० ३।४४५

णिग्गच्छित्ता [निर्गत्य] ओ० ५२. रा० ६८७.
जी० ३।४४३

णिग्गय [निर्गत] ओ० ६३. रा० ७५४,७५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिग्गह [निग्रह] ओ० २५
णिग्घात [निर्घात] जी० ३।६२६
णिग्घाय [निर्घात] जी० १।७८
णिग्घायण [निर्घातन] ओ० २६
णिग्घोस [निर्घोष] ओ० ६७. रा० १३.
जी० ३।४४६,४५७
णिघस [निकष] ओ० ८२
णिचय [निचय] ओ० २३. जी० ३।२८४
णिचिय [निचित] रा० १२,७५८,७५९.
जी० ३।५९६
णिच्च [नित्य] ओ० ५,८,१०,११. रा० १४५,
२००. जी० ३।५९,११६,२६८,२७२,२७४,
३५०,६३७,७०२,७२१,७३८,७६०,७६३,
८०८,८१९,८२९,८३३,८३६,८३८।१७,८४०,
८५४,९२३
णिच्चमंडिया [नित्यमण्डिता] जी० ३।६९९
णिच्चालोय [नित्यालोक] जी० ३।१०७७
णिच्चुज्जोय [नित्योद्द्योत] जी० ३।१०७७
णिच्छिड्ड [निश्छिद्र] रा० ७५५,७७२
णिच्छिण्ण [निच्छिन्न] ओ० १९५।२१
णिज्जरण [निर्जरण] ओ० ४६
णिज्जरा [निर्जरा] ओ० ७१,१६९,१७०
√**णिज्जा** [निर्+या]—णिज्जंतु. ओ० ६२.
णिज्जाहिस्सामि. ओ० ५५
णिज्जाणमग्ग [निर्याणमार्ग] ओ० ७२. रा० ५६
णिज्जामय [निर्यामक] ओ० ४६
णिज्जास [निर्यास] जी० ३।५८६
णिज्जुत्त [निर्युक्त] ओ० ४८,४९,६४. रा० १७३,
६८१
णिज्जूह [निर्यूह] जी० ३।५९४
णिज्जोय [नियोग] रा० ५४,६९,७०
णिट्ठुर [निष्ठुर] ओ० ४०
णिडाल [ललाट] ओ० १६. रा० १३३.
जी० ३।५९७,११२२
णिडालपट्टिया [ललाटपट्टिका] रा० २५४.
जी० ३।४१५

णिण्हग [निह्नव] ओ० १६०
√**णिद्दा** [नि+द्रा]—णिद्दाएज्ज. जी० ३।११८
णिद्ध [स्निग्ध] ओ० ४,१३,१६,४७. रा० १७०,
७०३. जी० ३।२२,२७३,५८६,५९६,५९७,
१०९८
णिद्धंत [निर्ध्मात] ओ० १६.४७
णिद्धच्छाय [स्निग्धच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
७०३. जी० ३।२७३
णिद्धोभास [स्निग्धावभास] ओ० ४. रा० १७०,
७०३ जी० ३।२७३
णिधि [निधि] जी० ३।९३७
णिप्पंक [निष्पङ्क] ओ० १६४. जी० ३।२६१,२६६
णिब्भय [निर्भय] ओ० ४६
णिब्भिज्जमाण [निर्भिद्यमान] जी० ३।२८३
णिभ [निभ] ओ० ६४. जी० ३।५९६
णिमग्ग [निमग्न] ओ० १६. जी० ३।५९६
णिमिसिय [निमिषित] जी० ३।११८
णिम्मच्छ [निर्मत्स्य] जी० ३।९६५
णिम्मल [निर्मल] ओ० १६,४७,१८३,१८४,१९४.
जी० ३।२६१,२६६,२६९,३००
णिम्मा [नेमा] रा० १९,१३०
णिम्माय [निर्मात] ओ० ६३
णियइपव्वय [नियतिपर्वत] जी० ३।२९२
√**णियंस** [नि+वस्]—णियंसेइ. जी० ३।४५१
णियंसण [निवसन] ओ० ४९
णियंसेत्ता [निवस्य] जी० ३।४५१
णियग [निजक] ओ० ७०,१५०. रा० १३,७५१,
८०२,८११
णियत्थ [दे०] रा० ६९,७०
णियम [नियम] ओ० ३२. जी० १।५८,५९,७८,
९१,९६,१३३,१३६; ३।१०४,११०७
णियमसा [नियमसात्] ओ० १९५।१०
णियय [नियत] रा० २००. जी० ३।५९,३५०
णियया [नियता] जी० ३।६९९
णियलबद्धग [निगडबद्धग] ओ० ९०
णियाणमयग [निदानमृतक] ओ ९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिरंतर [निरन्तर] ओ० १४. रा० ६७१ जी० ३.२५६,५९७

णिरंतरित [निरन्तरित] जी० ३।३००

णिरय [निरय] ओ० ४६. जी० ३।११६

णिरयावास [निरयावास] जी० ३।१२

णिरयुद्देस [निरयोद्देश] जी० ३।१०८०

णिरवयव [निरवयव] जी० ३.२५०

णिरवकंख [निरवकांक्ष] ओ० ४६

णिरातंक [निरातङ्क] जी० ३।५९८

णिरावरण [निरावरण] रा० ८१४

णिरुवद्दव [निरुपद्रव] ओ० १

णिरुवलेव [निरुपलेप] ओ० १६. जी० ३।५९६

णिरुवहत [निरुपहत] जी० ३।५९२

णिरुवहय [निरुपहत] जी० ३।५९७

णिरोह [निरोध] ओ० ३७

णिल्लेव [निर्लेप] जी० ३।१९५

√णिवाड [नि+पात्] —णिवाडेइ. जी० ३।४५७

णिवाय [निपात] ओ० १७०

णिवाय [निवात] रा० १२३,७५५,७७२

णिवायगंभीर [निवातगम्भीर] रा० १२३,७५५, ७७२

णिवुड्ढि [निवृद्धि] जी० ३।८४१

√णिवेद [नि+वेदय्] —णिवेदेइ. ओ० १६ —णिवेदेंति. ओ० १७ —णिवेदेमि. ओ० २०

णिव्वण [निर्व्रण] ओ० १६. जी० ३।५९७

णिव्वत्त [निर्वृत्त] ओ० १४४. रा० ८०२

√णिव्वत्त [निर्+वर्तय्] —णिव्वत्तेइ. रा० ७७२

णिव्वत्तिय [निर्वर्तित] जी० ३।५९२

णिव्वाघातिम [निर्व्याघातिन्. निर्व्याघातिम] जी० ३।१०२२

णिव्वाघाय [निर्व्याघात] ओ० १५३,१६५,१६६. रा० ८०४,८१४. जी० १।८२

णिव्वाणमग्ग [निर्वाणमार्ग] ओ० ७२. रा० ८१४

णिव्वादित [निर्वाटित] जी० ३।८७८

णिव्वितिगिच्छ [निर्विचिकित्स] रा० ६९८, ७५२,७८९

णिव्वुइकर [निर्वृतिकर] रा० २८८. जी० ३।३०२, ३९८

णिव्वुतिकर [निर्वृतिकर] रा० ४०,१३२. जी० ३।२८३, २८५.३८७

णिव्वुय [निर्वृत] ओ० १

णिव्वेयणी [निर्वेदनी] ओ० ४५

णिसंत [निशान्त] रा० १५

णिसग्गरुइ [निसर्गरुचि] ओ० ४३

णिसढ [निषध] रा० २७९. जी० ३।७९५

णिसण्ण [निषण्ण] ओ० ६३. जी० ३।३८४

णिसम्म [निशम्य] ओ० २१. रा० १६. जी० ३।४४३

णिसह [निषध] जी० ३।४४५

√णिसिर [नि+सृज्] —णिसिरंति. जी० ३।४४५

णिसीइत्ता [निषद्य] ओ० ५४

√णिसीद [नि+षद्] —निसंदति. जी० ३।३५८

णिसीधिया [निषीधिका, नैषेधिकी] जी० ३।३०३. ३०५,३०६,८८६

√णिसीय [नि+षद्] —णिसीएज्ज. ओ० १८० —णिसीयइ. ओ० ५४ —णिसीयंति. रा० ४८. जी० ३।२१७

णिसीहिया [निषीधिका, नैषेधिकी] रा० १३२ से १३४,१३६,१३७. जी० ३।३०१,३०२, ३०४,३०७,३१५,३५५

णिस्संकिय [निःशङ्कित] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८,७५२,७८९

णिस्सा [निश्रा] जी० १।५८, ७३,७८,८१

णिस्सास [निःश्वास] ओ० १५४,१६५,१६६

णिस्सिय [निःसृत] जी० १।७८

णिस्सेयस [निःश्रेयस्] रा० २७५. जी० ३।४४१, ४४२

णिहत [निहत] जी० ३।४४७

णिहय [निहत] रा० ९,१२

णिहि [निधि] जी० ३।७७५,८४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिहुय [निभृत] ओ० ४६

√णीण [णी]—णीणेइ. ओ० ५६

णीणेत्ता [नीत्वा] ओ० ५६

णीरय [नीरजस्] ओ० १६४. रा० २१,२३,३२, ३४,३६,१२४,१४५,१५७. जी० ३।२६१,२६६, २६६

णील [नील] ओ० ४७. रा० २४,२६,१३२,१५३, ६६४. जी० ३।३२६,५६२,५६५,५६६

णीलकणवीर [नीलकणवीर] रा० २६. जी० ३।२७६

णीलग [नीलक] जी० ३।२७६

णीलपाणि [नीलपाणि] रा० ६६४. जी० ३।५६२

णीलबंधुजीव [नीलबन्धुजीव] रा० २६. जी० ३।२७६

णीललेस्स [नीललेश्य] जी० ६।१८७

णीललेस्सा [नीललेश्या] जी० ३।६६

णीलवंत [नीलवत्] रा० २७६. जी० ३।५७७, ६६०

णीलवंतद्दह [नीलवद्द्रह] जी० ३।६५६,६६६

णीलासोग [नीलाशोक] रा० २६

णीलासोय [नीलाशोक] जी० ३।२७६

णीली [नीली] रा० २६. जी० ३।२७६

णीलीगुलिया [नीलीगुलिका] रा० २६. जी० ३।२७६

णीलीभेद [नीलीभेद] रा० २६. जी० ३।२७६

णीलुप्पल [नीलोत्पल] ओ० १३. रा० २६. जी० ३।२७६

णीव [नीप] ओ० ६,१०. जी० ३।५८३

णीसास [निःश्वास] ओ० ११७. जी० ३।४५१

णीहारि [निर्हारिन्] ओ० ७१. रा० ६१

णीहारिम [निर्हारिन्] ओ० ७,८,१०. जी० ३।२७६

णीहु [स्निहु] जी० १।७३

णूमं [नूनम्] ओ० १६६. रा० ७०३. जी० ३।६८३

णेउर [नूपुर] जी० ३।५६३

णेग [नैक] रा० ७२७

णेमि [नेमि] ओ० ६४. रा० १७३,६८१. जी० ३।२८५

णेतव्व [नेतव्य] जी० ३।२१८,६६६,८८६,१०४८

णेयव्व [नेतव्य] जी० १।४०; ३।२६८,६६७,७६१

णेयाउय [नैर्यात्रिक] ओ० ७२

णेरइय [नैरयिक] ओ० ४४,७१,७३,८७. जी० १।६०,१२८; २।११८,१२६,१३४,१३५,१३८, १४४,१४५,१४८; ३।८६ से ६२,६४,६७, १०४,११६,११८ से १२१,११३१ से ११३३, ११३६,११३८; ६।२,५,१०; ७।७,८,१३,१४, २० से २३; ६।१५६,१५८,२०६,२१०, २१६,२२१,२२४,२२६,२२६,२३१ से २३४, २३६,२४१,२४२,२४७,२५० से २५२, २५४,२५५,२६७ से २६६,२७४,२७७,२७८, २८३,२८६ से २८८,२६३

णेरइयत्त [नैरयिकत्व] ओ० ७३. रा० ७५०, ७५१. जी० ३।११७,११३३

णेवच्छ [नेपथ्य] ओ० ४६

णेवत्थ [नेपथ्य] ओ० ७०. रा० ५३,५४,८०४

णेवत्थि [नेपथ्य] ओ० ५७

णेव्वुतिकर [निर्वृतिकर] जी० ३।२६५

णेह [स्नेह] जी० ३।५८६

णो [नो] ओ० ३३. रा० २५. जी० १।२५

णोअपज्जत्तग [नोअपर्याप्तक] जी० ६।६३

णोअपज्जत्तय [नोअपर्याप्तक] जी० ६।६१

णोअपरित्त [नोअपरीत] जी० ६।८२

णोअभवसिद्धिय [नोअभवसिद्धिक] जी० ६।११० से ११२

णोअसंजत [नोअसंयत] जी० ६।१४५

णोअसंजय [नोअसंयत] जी० ६।१४१,१४७

णोअसण्णि [नोअसंज्ञिन्] जी० ६।१०७

णोपज्जत्तग [नोपर्याप्तक] जी० ६।६३

णोपरित्त [नोपरीत] जी० ६।८२,८६,८७

णोभवसिद्धिय [नोभवसिद्धिक] जी० ६।११० से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११२

णोमालिया [नवमालिका] रा०३०. जी० ३।२८३

णोमालियागुम्म [नवमालिकागुल्म] जी० ३।५८०

णोमालियामंडवग [नवमालिकामण्डपक] रा० १८४. जी० ३.२९६

णोमालियामंडवय [नवमालिकामण्डपक] रा० १८५

णोसंजत [नोसंयत] जी० ९।१४५

णोसंजतासंजत [नोसंयतासंयत] जी० ९।१४५

णोसंजय [नोसंयत] जी० ९।१४१,१४७

णोसंजयासंजय [नोसंयतासंयत] जी० ९।१४१, १४७

णोसण्णि [नोसंज्ञिन्] जी० ९।१०७

ण्हाइत्ता [स्नपयित्वा] रा० २९१

ण्हाण [स्नान] ओ० ९१,९३

ण्हाणपीढ [स्नानपीठ] ओ० ६३

ण्हाणमंडव [स्नानमण्डप] ओ० ६३

ण्हाणमल्लिया [स्नानमल्लिका] रा० ३०. जी० ३।२८३

ण्हाय [स्नात] ओ० २०,५२,५३,७०. रा० ६८३, ६८५,६८७ से ६८९,६९२,७००,७१०, ७१६,७२६,७५१,७५३,७६५,७७४,७९४, ८०२,८०५

√ण्हाय [स्नपय्]—ण्हाएइ. रा० २९१

ण्हारु [स्नायु] जी० १।६५,१०५; ३।९२, १०९०

√ण्हाव [स्नपय्]—ण्हावेति. जी० ३।४५७

ण्हावेत्ता [स्नपयित्वा] जी० ३।४५७

त

त [तत्] ओ० १. रा० १. जी० १।१

तइय [तृतीय] ओ० १४४,१७४,१७६,१८२

तउआगर [त्रपुकाकर] रा० ७७४

तउय [त्रपुक] रा० ७५४,७५६,७७४

तउयपाय [त्रपुकपात्र] ओ० १०५,१२८

तउयबंधण [त्रपुकबन्धन] ओ० १०६,१२९

तउयभंड [त्रपुकभाण्ड] रा० ७७४

तउयभारग [त्रपुकभारक] रा० ७६०,७६१, ७७४

तउयभारय [त्रपुकभारक] रा० ७७४

तउयागर [त्रपुकाकर] जी० ३।११८

तए [ततम्] ओ० ५२. रा० ९. जी० ३।४४०

तओ [ततम्] रा० ११,५९,७०,८०२. जी० ३।९८९

√तंडव [ताण्डवय्]—तंडवेति. रा० २८१. जी० ३।४४७

तंत [तान्त] रा० ७६५

तंती [तन्त्री] ओ० ६८. रा० ७,७६,१७३. जी० ३।२८५,३५०,५६३,८४२,८४५, १०२५

तंतुमय [तन्तुमय] जी० ३।५९५

तंदुल [तण्डुल] रा० १५०,२९१. जी० ३।३२३, ४५७,५९२

तंदुलछिण्णग [तण्डुलछिन्नक] ओ० ९०

तंब [ताम्र] ओ० १९,४७. जी० ३।५९६, ५९७

तंबच्छि [ताम्राक्षि] जी० ३।८६०

तंबपाय [ताम्रपात्र] ओ० १०५,१२८

तंबबंधण [ताम्रबन्धन] ओ० १०६,१२९

तंबागर [ताम्राकर] रा० ७७४. जी० ३।११८

तंबिय [ताम्रिक] ओ० १०८,१३१

तंबोलिमंडवग [ताम्बूलीमण्डपक] रा० १८४

तंबोलिमंडवय [ताम्बूलीमण्डपक] रा० १८५

तंबोलीमंडवग [ताम्बूलीमण्डपक] जी० ३।२९६

तंस [त्र्यस्र] जी० १।५; ३।२२,७८,७९,५९४, १०७१,१०७५

तकारवग्ग [तकारवर्ग] रा० ९८

तक्क [तर्क] रा० ८१५

तक्कर [तस्कर] ओ० १

तगर [तगर] रा० ३०,१६१,२५८,२७९. जी० ३,२८३,३३४,४१९

तच्च [तृतीय] रा० १२,६५,७०२,७०३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तच्चसत्तराइंदिया [तृतीयसप्तरात्रिदिवा] ओ० २४

तच्चा [तृतीया] जी० १।१२५; २।१४८,१४९; ३।२,४,६८,७४,९१,१२५,११११

तज्जण [तर्जन] ओ० १६१,१६३

तज्जणा [तर्जना] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ८१६

तज्जायसंसट्ठचरय [तज्जातसंसृष्टचरक] ओ० ३४

तज्जोणिय [तद्योनिक] जी० ३।७२१,९१५

तड [तट] जी० ३।४४५

तडवडा [दे०] रा० २८. जी० ३।२८३

तण [तृण] रा० ९,१२,१७१,१७३,७६७. जी० १।६९; ३।२७७ से २८५,२९८,३६०, ५७८,६२२,६९०

तणवणस्सइकाइय [तृणवनस्पतिकायिक] रा० ७७१

तणु [तनु] ओ० १९. जी० ३।५९६ से ५९८

तणुय [तनुक) रा० १२७. जी० ३।२६१,३५२, ५९५,५९७,६३२,६६१,६८९,७३६,८३९, ८५४,८८२

तणुयतर [तनुकतर] ओ० १९२

तणुयरी [तनुतरी] ओ० १९३

तणुवात [तनुवात] जी० ३।१३,१९,२१,२६, ३७,५०,६५,६७

तणुवाय [तनुवात] जी० १।८१; ३।३०,३८,४४, ४७

तणू [तनू] ओ० १९३

तण्हा [तृष्णा] ओ० ११७,१९५।१८. रा० ७२८, जी० ३।११८,११९

तत [तत] रा० ११४,२८१. जी० ३।४४७,५८८

ततिय [तृतीय] रा० ८०२

ततिया [तृतीया] जी० ३।८८

तते [ततस्] जी० ३।५५५

ततो [ततस्] ओ० १४१. जी० ३।१०२३

तत्त [तप्त] ओ० १९,४७,५०. जी० ३।११८, ५९०,५९६

तत्ततव [तप्ततपस्] ओ० ८२

तत्तिय [तावत्] रा० १३०. जी० ३।३००

तत्तो [ततस्] जी० ३।१२७

तत्थ [तत्र] ओ० १४. रा० ८. जी० १।११

तत्थ [त्रस्त] जी० ३।११६

तत्थगत [तत्रगत] रा० ८

तत्थगय [तत्रगत] ओ० २१,५४. रा० ७१४, ७९६

तदावरणिज्ज [तदावरणीय] ओ० ११९,१५६

तदुभय [तदुभय] ओ० १५५,१६०. जी० ३।१०६०,१०६१

तदुभयारिह [तदुभयार्ह] ओ० ३९

तद्देवसिय [तद्दैवसिक] ओ० १६,१७

तप्पढमया [तत्प्रथमता] ओ० ६४. रा० ६९, २८५. जी० ३।४५०

तप्पभिइ [तत्प्रभृति] रा० ७९०,७९१

तमतमप्पभा [तमस्तमःप्रभा] जी० ३।४१

तमतमा [तमस्तमा] जी० ३।४

तमप्पभा [तमःप्रभा] जी० ३।४१,४३,४४

तमा [तमा] जी० ३।७८,८१,१०२,११५

तमाल [तमाल] ओ० ९,१०. जी० ३।३८८, ५८३

तम्हा [तस्मात्] रा० ७५०

तय [त्वच्] जी० ३।३११

तया [तदा] ओ० २१. रा० २९२

तया [त्वच्] ओ० ६४. रा० ७६१. जी० १।७१

तयामंत]त्वग्वत्[ओ० ५,८. जी० ३।२७४

तयासुह [त्वक्सुख] ओ० ६३

तयाहार [त्वगाहार] ओ० ६४

√तर [तॄ]—तरंति. ओ० ४६

तरंग [तरङ्ग] ओ० १९,४६. रा० २४,८१. जी० ३.२७७,५९६,५९७

तरमिल्लहायण [तरोमल्लिहायन] ओ० ६४

तरुण [तरुण] ओ० ५,८,१९,६४. रा० १२,७५८ से ७६१. जी० ३.११८,११९,२७४,५९६,५९७

तरुणी [तरुणी] रा० ७१०,७७४,८०४

तरुणीपडिकम्म [तरुणीप्रतिकर्मन्] ओ० १४६. रा० ८०६

तरुपक्खंदोलग [तरुपक्षान्दोलक] ओ० ९०

तरुपडियग [तरुपतितक] ओ० ९०

तल [तल] ओ० १३,१९,६३,६४,६८,१९४. रा० ७,१२,५०,५२,५६,७६,७७,१३७,१७३, १७४,२३१,२४८,७५८,७५९,७७४. जी० ३।२८५,२८६,३०७,३५०,३६३,५६३, ५८८,५९६,६०४,८४२,८४५,१०२५

तलभंगय [तलभङ्गक] ओ० ४७. रा० ३।५९३

तलवर [दे०] ओ० १८,५२,६३. रा० ६८७, ६८८,७०४,७५४,७५६,७६२,७६४. जी० ३।६०९

तलाग [तडाग] ओ० १

तलागमह [तडागमह] जी० ३।६१५

तलाय [तडाग] ओ० ९९

तलिण [तलिन] ओ० १६. जी० ३।५९६,५९७

तव [तपस्] ओ० २१ से २४,२६,३०,३८,४५, ४६,५२,८२,११७. रा० ८,९,६८६,६८७, ६८९,७११,७१३,८१४,८१७. जी० ३।९९९

√तव [तप्]—तवंति. रा० २८१. जी० ३।४४७ —तविंसु. जी० ३।७०३—तविस्संति. जी० ३।७०३—तवेंति. जी० ३।८४५

तवणिज्ज [तपनीय] ओ० १६,४७,५०. रा० ४०, १३०,१३२,१३७,१७४,१९१,२८८. जी० ३।२६५,२८६,३००,३०२,३०७,३१३, ३८७,३९७,५९०,५९६,६७२

तवणिज्जमय [तपनीयमय] रा० १३०,१४९, २४५,२५४,२७०. जी० ३।३००,३०५,३०८, ३११,३२२,३३७,३९९,४०७,४१५,४३५, ६४३,९०४

तवणिज्जामय [तपनीयमय] रा० ३७

तवस्सि [तपस्विन्] ओ० २५

तवस्सिवेयावच्च [तपस्विवैयावृत्य] ओ० ४१

तवारिह [तपोर्ह] ओ० ३९

तवोकम्म [तपःकर्मन्] ओ० २४,११९,१२०

तस [त्रस] ओ० ८७. जी० १।११,७५,८३,१३६, १३८,१४० से १४३; ५।१७

तसकाइय [त्रसकायिक] जी० ३।१८३,१९४, १९७; ५।१,४,६,१०,१६,१८ से २०; ९।१८२, १८४

तसकाय [त्रसकाय] जी० ३।१७४

तसिय [त्रासित] जी० ३।११६

तह [तथा] ओ० ६९. रा० १०. जी० १।१४

तहप्पगार [तथाप्रकार] ओ० ४०,१०५,१०६, १२८,१२९,१४१,१६१,१६३. जी० १।६५, ७१ से ७३,७८,८१,८४,८८,८९,१००,१०३, १११,११२,११४ से ११६,११८,१२१

तहा [तथा] ओ० १७७. रा० १०. जी० १।१४

तहारूव [तथारूप] ओ० ५२,१५१. रा० ६६७, ६८७,८१२

तहिं [तत्र] ओ० ८९. रा० १७४. जी० ३।२९६

ताडना [ताडना] रा० ८१६

ताडिज्जंत [ताड्यमान] रा० ७७

ताण [त्राण] ओ० १६,२१,५४

तार [तार] रा० ७६

तारग [तारक] जी० ३।८३८।११

तारग्ग [ताराग्र] जी० ३।८३८।२,२६

तारय [तारक] ओ० १६,२१,५४. रा० ८,२९२, जी० ३।४५७

तारयग्ग [तारकाग्र] जी० ३।८३८।२६

तारा [तारा] ओ० ५०,६३,६८,१९२. रा० २५४,२८२. जी० ३।४१५,४४८, ८३८।१,२१,३०,१०२०,१०३७

तारागण [तारागण] जी० ३।७०३,७२२,८०९, ८२०,८३०,८३४,८३७,८३८।३१,८५५, १०००

तारापिंड [तारापिण्ड] जी० ३।८३८।११

ताराख्व [तारारूप] रा० २०,१२४. जी० ३,२८८,८४१,८४२,८४५,९९८,१००३ से १००६,१०२० से १०२२,१०३७,१०३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तारावलिपविभत्ति [तारावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
ताराविमाण [ताराविमान] जी० ३।१८,४४; ३।१००६,१०१४,१०१६,१०३५
ताल [ताल] ओ० ६,१०,६८. रा० ७,७६,७७, १७३. जी० १।७२; ३।२८५,३५०,३८८, ५६३,५८८,८४२,८४५,१०२५
√**ताल** [ताडय्]—तालेज्जा. रा० ७५५
तालण [ताडन] ओ० १६१,१६३
तालणा [ताडना] ओ० १५४,१६५,१६६
तालायर [तालाचर] ओ० १
तालिज्जंत [ताड्यमान] रा० ७७
तालियंट [तालवृन्त] ओ० ६७
तालु [तालु] ओ० १६,४७. जी० ३।५९६,५९७
तालुय [तालुक] रा० २५४ जी० ३।४१५
ताव [तावत्] ओ० ७६. रा० ७५१. जी० ३।८१
ताव [तापय्]—तावेइ. जी० ३।३२७ —तावेंति. रा० १५४ जी० ३।३२७—तावेति. रा० १५४ जी० ३।७४१
तावइय [तावत्] रा० १२६. जी० ३।३७३
तावं [तावत्] जी० ३।८४१
तावक्खेत्त [तापक्षेत्र] जी० ३।८३८।१४,१५,८४२, ८४५
तावतिय [तावत्] रा० २१०,२१२ जी ३।३००, ३५४,६४७, ८८५
तावस [तापस] ओ० ९४
ताविय [तापयित्वा] जी० ३।११८
ताहे [तदा] जी० ३।८४३
ति [त्रि] ओ० ७७. रा० ७. जी० १।१७
ति [इति] रा० ७०३
तिक्खुत्तो [त्रिस्] ओ० २१,४७,५२,५४,६६,७०,७८, ८०,८१,८३. रा० ८ से १०,१२,से १४,५६,५८, ६५,७३,७४,११८,१२०,२९२,६८७,६९२, ६९५,७००,७१६,७१८,७७८. जी० ३।४५७
तिग [त्रिक] ओ० १,५२
तिगिच्छि [तिगिच्छि] रा० २७६
तिगिच्छिदह [तिगिच्छिद्रह] जी० ३।४४५
तिगुण [त्रिगुण] जी० ३।१५१; ३।१०१० से १०१४
तिगुणिय [त्रिगुणित] जी० ३।८३८।२४
तिघरंतरिय [त्रिगृहान्तरिक] ओ० १५८
तिण [इदम्] रा० ७५१. जी० ३।२७८
तिणिस [तिनिश] ओ० ६४. रा० १७३,६८१
तिण्ण [तीर्ण] ओ० १६,२१,५४. रा० ८,२९२. जी० ३।४५७
तित्त [तृप्त] ओ० १९५।१८,१९. जी० ३।१०९
तित्त [तिक्त] जी० १।५, ५०; ३।२२
तित्थ [तीर्थ] रा० १७४,२७६. जी० ३।२८६, ४४५
तित्थगर [तीर्थंकर] ओ० १६,२१,५२,५४. रा० ८, २९२. जी० ३।४५७
तित्थगरसिद्ध [तीर्थंकरसिद्ध] जी० १।८
तित्थगराभिमुह [तीर्थंकराभिमुख] ओ० २१,५४
तित्थयर [तीर्थंकर] ओ० ६९,७०. रा० ८
तित्थयराभिमुह [तीर्थंकराभिमुख] रा० ८,६८
तित्थसिद्ध [तीर्थसिद्ध] जी० १।८
तित्थाभिसेय [तीर्थाभिषेक] ओ० ९८
तित्थोदग [तीर्थोदक] रा० २७६. जी० ३।४४५
तिदंडय [त्रिदण्डक] ओ० ११७
तिपडोगार [त्रिप्रत्यावतार, त्रिपदावतार] जी० ३।६४७
तिपडोया [त्रिप्रत्यावतार, त्रिपदावतार] जी० ३।६३६ ६३८,६५०
तिप्पणया [तेपन, तेवन] ओ० ४३
तिभाग [त्रिभाग] ओ० १९५।४ से ६,८ जी० ३।३४ से ३६,४०,४१,४४,४६,७२५,७२८, ७२९,८७८
तिमासपरियाय [त्रिमासपर्याय] ओ० २३
तिमिर [तिमिर] जी० ३।५८९
तिय [त्रिक] ओ० ५५. रा० ६५४,६५५,६८७, ७१२. जी० ३।५५४

तियाह [त्र्यह] जी ३।८६,११८,११६

तिरिक्ख [तिर्यच्] जी० १।५१,१२३; २।२५,६४, १२२; ६।१

तिरिक्खजोणि [तिर्यग्योनि] ओ० ७४,१,३ जी० २।२,३,६,१०,२१ से २४,४६,६८,६६, ७२,१४२,१४५,१४६,१४६,१५१

तिरिक्खजोणिणी [तिर्यग्योनिकी] ओ० ७१. जी० ६।१,४,६,१२; ६।२०६,२१२,२१८,२२२

तिरिक्खजोणिय [तिर्यग्योनिक] ओ० ७१,७३, १५६. जी० १।५१,५४,५५,५६,६१,६१,६७, ६८,१०१ से १०३,११६,११७,११६,१२५; २।७५,७६,८२,८३,८८,६६,६६,१०१ से १०५, १०७ से १११,११३,११६,१२२,१२८,१२६, १३४,१३६,१३८,१४२,१४५,१४६,१४६,१५१; ३।१,१२१,१३० से १४७,१५५, १५६,१६१ से १६३,१६६,११३२,११३४,११३७,११३८; ६।३,८,१० से १२; ७।१,५,६,१०,१५,१६,२० से २३; ६।१५६,२०६,२११,२१७,२२०,२२१, २२५,२२६,२३१,२३२,२३५,२३६,२४३, से २४५,२५०,२५१,२५३,२५५,२६७,२७०, २७१,२७६,२८०,२८६,२८७,२८६,२६३

तिरिक्खजोणियत्त [तिर्यग्योनिकत्व] ओ० ७३. जी० ३।११३४

तिरिय [तर्यच्] ओ० ४४,४६. रा० १०,१२,५६, १२६,१३२,२७६. जी० १।४५,७६,८७,६६, १०१,१३६; ३।१२६।२,२५७,३०२,३५१, ४४५,६३८,७०१,७१०,७३६,७४७,७६१,७६४, ७६८,७६६,८१४,८३८।१२,६४०,६४४,१००६, ११११; ६।१५८

तिरियक्खेवण [तिर्यक्क्षेपण] ओ० १८०

तिरियलोय [तिर्यग्लोक] जी० ३।२५६

तिरियवाय [तिर्यग्वात] जी० १।८१

तिरीड [किरीट] ओ० ५१

तिरूव [त्रिरूप] जी० २।१५१

तिल [तिल] जी० १।७२; ३।६२१

तिलकरयण [तिलकरत्न] जी० ३।३०७

तिलग [तिलक] जी० ३।५६३,६३१

तिलगरयण [तिलकरत्न] रा० १३०,१३७. जी० ३।३००

तिलपप्पडिया [तिलपर्पटिका] जी० १।७२।३

तिलय [तिलक] ओ० ६ से ११. रा० ६६,७०. जी० १।७२; ३।३८८ से ३६०,५८३,७७५।२

तिलागणि [तिलाग्नि] जी० ३।११८

तिवइ [त्रिपदी] रा० २८१

तिवत्ति [त्रिपदी] जी० ३।४४७

तिवलि [त्रिवलि] ओ० १५. रा० ६७२. जी० ३।५६७

तिवासपरियाय [त्रिवर्षपर्याय] ओ० २३

तिविध [त्रिविध] जी० २।१०४,१०६,१५१; ३।३८,१४८,१४६,१५३,१६४,२१५,८३६; ५।५७; ६।११२

तिविह [त्रिविध] ओ० ३३,३७,६६,७०,७८. रा० ७६. जी० १।१०,१२,७५,६६,११७, ११६,१२६,१३३,१३६; २।१ से ३,८,११, ७५ से ७७,६६,१५१; ३।३७,७८,१३७, १६१।१०७१; ६।२३,३२,६७,६६,७५,८८, ६५,१०१,१०६,१६४,२०२

तिव्व [तीव्र] ओ० ४,४६,६६. रा० १७०,७०३, ७६५. जी० ३।११०,२७३,६०८,६११

तिव्वच्छाय [तीव्रच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,७०३ जी० ३।२७३

तिव्वोभास [तीव्रावभास] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३

तिसत्तक्खुत्तो [त्रिसप्तकृत्वस्] ओ० १७०. जी० ३।८६

तिसर [त्रिसर] ओ० ५२,६३. रा० ६८७ से ६८६

तिसरय [त्रिसरक] ओ०१०८,१३१

तिसालग [त्रिशालक] जी० ३।५६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिहा [त्रिधा] रा० ७६४,७६५

तिहि [तिथि] ओ० १४५. रा० ८०५

तीर [तीर] रा० १७४. जी० ३।११८,११९,२८६, ९१०

तीस [त्रिंशत्] ओ० १९२. जी० ३।१२

तीसतिविह [त्रिंशद्विध] जी० २।१३

तीसविध [त्रिंशद्विध] जी० ३।२२८

तु [तु] जी० ३।८३८।५

तुंग [तुङ्ग] ओ० १९,४६,४७,६४. रा० ५२,५६, १३७,२३१,२४७. जी० ३।३०७,३९३,५९६, ५९७

तुंड [तुण्ड] जी० ३।१११

तुंबवीणपेच्छा [तुम्बवीणाप्रेक्षा] जी० ३।६१६

तुंबवीणा [तुम्बवीणा] रा० ७७

तुंबवीणिय [तुम्बवीणिक] ओ० १,२

तुंबवीणियपेच्छा [तुम्बवीणिकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५

तुंबा [तुम्बा] जी० ३।२५८

तुच्छतराय [तुच्छतरक] रा० ७६५

तुच्छत्त [तुच्छत्व] रा० ७६२,७६३

तुट्ठ [तुष्ट] ओ० २०,२१,५३,५४,५६,६२,६३, ६८,७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १४,१६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७,२७९, २८१,२९०,६५५,६८१,६८३,६९०,६९५,७००, ७०७,७१०,७१३,७१४,७१६,७१८,७२५,७२६, ७७४,७७८. जी० ३।४४३,४४५,४४७,५५५

तुडिय [त्रुटित] ओ० २१,४७,५४,६३,७२,१०८, १३१. रा० ८,६९,७०,२८५,७१४. जी० ३।४५१,४५७,५९३

तुडिय [तूर्य] ओ० ६७,६८. रा० ७,१३,३२,२०९, २११,६५७. जी० ३।३५०,३७२,४४६,५६३, ६४६,८४२,८४५

तुडिय [दे०] जी० ३।८४१

तुडिय [तुटिक][1] जी० ३।१०२३ से १०२५

१. आह चूर्णिकृत्—'तुटिकमन्तपुरमुपदिश्यते' [वृत्ति पत्र ३८४]।

तुडियंग [दे०] जी० ३।५८८,८४१

तुडिया [त्रुटिता] जी० ३।२५४,२५८

√तुयट्ट [त्वग्+वृत्]— तुयट्टंति. रा० १८५. जी० ३।२१७—तुयट्टह. रा० ७५३. — तुयट्टेज्ज. ओ० १८०

तुयट्टण [त्वग्वर्तन] ओ० ४०

तुरक्क [तुरुष्क] ओ० २,५५

तुरग [तुरग] ओ० १,१३,१९,६४. रा० १७,१८, २०,३२,३७,१२९,१७३,६८१. जी० ३।२८५, २८८,३००,३११,३७२,५९६

तुरय [तुरग] रा० ६८३,६८५,६९२,७०८,७१०, ७१६,७३१

तुरित [त्वरित] जी० ३।८६

तुरिय [तूर्य] जी० ३।४४६

तुरिय [त्वरित] ओ० २१,४६,५४. रा० ८,१०, १२,१५,५६,२७९,७१४. जी० ३।१७६,१७८, १८०,१८२,४४५,९८९

तुरियगति [त्वरितगति] जी० ३।९८९

तुरुक्क [तुरुष्क] रा० ९,१२,३२,१३२,२३६,२८१, २९२. जी० ३।३०२,३७२,३९८,४४७,४५७

√तुल [तोलय्]—तुलेमि. रा० ७६२

तुला [तुला] रा० ७४८ से ७५०,७७३

तुलिय [तुलित] रा० ७६२,७६३

तुलेत्ता [तोलयित्वा] रा० ७६२

तुल्ल [तुल्य] ओ० १९. जी० १।१४३; २।६८ से ७२,९५,९६,१३४ से १३८,१४१ से १४९; ३।७३ से ७५,५९६.९९८,९९९,१०३७,११३८ ४।१९ से २३,२५; ५।१९,२०,२६,२७,३२ से ३६,५२,५९,६८; ७।२०,२२,२३; ९।७,१४, ५५,१६६,१८१,२०८,२५० से २५३,२५५, २८६ से २९३

तुल्लत्त [तुल्यत्व] जी० ३।९९९

तुवर [तूबर] जी० ३।४४५,४४६,४४८

तुसारग्गि [तुषाग्नि] जी० ३।११८

तुसार [तुषार] ओ० १९४. जी० ३।११९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुसारकूड [तुषारकूट] जी० ३।११६
तुसारपडल [तुषारपटल] जी० ३।११६
तुसारपुंज [तुषारपुञ्ज] जी० ३।११६
तुसिणीय [तुष्णीक] रा० ६४,७०१,७६२
तूण [तूण] रा० ७७
तूणइल्ल [तूणावत्] ओ० १,२
तूणइल्लपेच्छा [तूणावत्प्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६
तूयर [तूबर] रा० २७६,२८०
तूल [तूल] ओ० १३. रा० ३७,१८५,२४५. जी० ३।२६७,३११,४०७
तूली [तूली] रा० २४५. जी० ३।४०७
तेइंदिय [त्रीन्द्रिय] जी० १।८३,८८,९०; २।१०१, १०३,११२,१२१,१३६,१३९,१४६,१४९; ३।१३०,१६८; ४।१,४,१३,१८ से २१,२४, २५; ८।१,३,५; ९।१,३,५,६,१६६,२२३,२३?, २५९,२६४,२६६
तेउ [तेजस्] जी० १।१२८,१३३; २।१३०; ५।८; ९।१९४,२५७
तेउकाइय [तेजस्कायिक] जी० ५।६,२९; ९।१८२,१८४,२५६,२६२,२६६
तेउक्काइय [तेजस्कायिक] जी० १।७५,७६,७९, ८०; २।१००,१३६,१३८,१४६,१४९; ५।१,१३, १८,२०; ८।१,५
तेउलेस्स [तेजोलेश्य] जी०९।१८५,१८९,१९६
तेउलेस्सा [तेजोलेश्या] जी० ३।११०१
तेंदिय [त्रीन्द्रिय] जी० ९।१६७,२२१,२२९,२५६
तेंदुय [तिन्दुक] जी० १।७२
तेजससमुग्घाय [तैजससमुद्घात] जी० ३।१११२, १११३
तेणाणुबंधि [स्तेनानुबन्धिन्] ओ० ४३
तेणामेव [तत्रैव] रा० ७५४ जी० ३।४४३
तेणिस [तैनिस] जी० ३।२८५
तेतलि [तेजस्तलिन, तेतलिन्] जी ३।६३१
तेत्तीस [त्रयस्त्रिंशत्] ओ० १६७. जी० १।९६
तेत्तीसम [त्रयस्त्रिंश] रा० १६४
तेमासिय [त्रैमासिक] ओ० ३२
तेमासिया [त्रैमासिकी] ओ० २४
तेय [तेजस्] ओ० २२,४७,५७,६५,७१,७२,१८२. रा० ६१,१३३,७२३,७७७,७७८,७८८,८१३. जी० ३।३०३,५८९,११२२
तेयंसि [तेजस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६
तेयग [तैजस] जी० ९।१७९
तेयगसरीरि [तैजसशरीरिन्] जी० ९।१७०,१७४
तेयय [तैजस] जी० १।१५,५९,६४,७४,७९,८२, ८५,९३,१०१,११९,१२८,१३५
तेया [तैजस] जी० ३।१२९।९; ९।१८१
तेयासमुग्घात [तैजससमुद्घात] जी० ३।१११३
तेयासमुग्घाय [तैजससमुद्घात] जी० ३।१५७
तेयाहिय [त्र्याह्निक] जी० ३।६२८
तेर [त्रयोदशन्] जी० ३।२६६।५
तेरस [त्रयोदशन्] ओ० १५५. रा० १८८. जी० ३।३४
तेरासिय [त्रैराशिक] ओ० १६०
तेल्ल [तैल] ओ० ६३,९२,९३. रा० १६१,२५८, २७९. जी० ३।३३४,४१९,४४५
तेल्लग [तैलक] जी० ३।५८६
तेल्लापूय [तैलापूप] ओ० १७०. जी० २।२६०
तेल्लापूव [तैलापूप] जी० ३।८६
तेवण्ण [त्रिपञ्चाशत्] जी० १।१११
तेवीस [त्रयोविंशति] जी० ३।७३६
तोण [तूण] ओ० ६४. रा० १७३,६८१. जी० ३।२८५
तोमर [तोमर] ओ० ६४. जी० ३।११०
तोमरग्ग [तोमराग्र] जी० ३।८५
तोय [तोय] ओ० २७
तोयपट्ठ [तोयपृष्ठ] ओ० ४६
तोरण [तोरण] ओ० १,२,५५,६४. रा० २० से २३,३२,१३८ से १६१,१७३,१७६,२०२,२३४, २७७,२८१,२८८,३१२,४७३,६४५,६५५,६८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जी० ३।२८५,२८८ से २६१,३१५ से ३३४, ३५५,३६२,३७२,३६६,४२५,५४३,४४७, ४५४,४७७,५३२,५५४,५५६,५७६,५६७, ६०४,६४१,६६६,६८४,८५७,६०१

त्ति [इति] रा० ६

(थ)

थंभ [स्तम्भ] रा० २०

थंभणया [स्तम्भन] ओ० १०३,१२६

थंभिय [स्तम्भित] ओ० २१,४७,५४,६३,७२. रा० ८. जी० ३।४५७

√थक्कार [दे०]—थक्कारेंति. रा० २८१. जी० ३।४४७

थण [स्तन] ओ० १५. जी० ३।५६७

थणिय [स्तनित] ओ० ४८,७१. रा० ६१

थणियकुमार [स्तनितकुमार] जी० २।१६

थणियकुमारी [स्तनितकुमारी] जी० २।३७

थणियसद्द [स्तनितशब्द] जी० ३।८४१

थलचर [स्थलचर] जी० २।१२२

थलज [स्थलज] जी० ३।१७१

थलय [स्थलज] रा० ६,१२

थलयर [स्थलचर] ओ० १५६. जी० १।६७,१०२ से १०४,११२,११७,१२०,१२४; २।६,२३, २४,६६,७२,७६,६६,१०४,११३,१३६,१३८, १४६,१४६; ३।१३७,१४१ से १४४,१६१ से १६३

थलचरी [स्थलचरी] जी० २।३,५,५१,६६,७२, १४६,१४६

थवइय [स्तबकित] ओ० ५,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४

थाम [स्थामन्] ओ० २७

थारुइणिया [थारुकिनिका] ओ० ७०. रा० ८०४

थाल [स्थाल] रा० १५०,२५८,२७६. जी० ३।३२३,३५५,४१६,४४५,५८७,५६७

थालइ [स्थालकिन्] ओ० ६४

थालिपाक [स्थालीपाक] जी० ३।६१४

थालिपाग [स्थालीपाक] जी० ३।६१४

थाली [स्थाली] जी० ३।७८

थावर [स्थावर] जी० १।११,१२,७४,१३७,१३६, १४१,१४३

थावरकाय [स्थावरकाय] जी० ३।१७४

थासग [स्थासक] ओ० ६४

थिबुग [स्तिबुक] जी० १।६४,६५

थिभुग [स्तिबुक] जी० ३।६५६

थिभुय [स्थिबुक] जी० ३।६४३

थिमिओदय [दे० स्तिमितोदक] ओ० १११ से ११३,१३७,१३८

थिमिय [दे० स्तिमित] ओ० १. रा० १,७५, ६६८,६६६,६७६,६७७

थिर [स्थिर] ओ० १६. रा० १२,७५८,७५६. जी० ३।११८,५६६,१०६८

थिल्लि [दे०] ओ० १००,१२३. जी० ३।५८१, ५८५,६१७

थीहु [दे०] जी० १।७३

√थुक्कार [थूत्कारय्]—थुक्कारेंति. रा० २८१. जी० ३।४४७

थूभ [स्तूप] जी० ३।४१२,५६७,६०४

थूभमह [स्तूपमह] रा० ६६८. जी० ३।६१५

थूभाभिमुह [स्तूपाभिमुख] रा० २२५. जी० ३।३८४,८६६

थूभियग्ग [स्तूपिकाग्र] ओ० १६२

थूभियाग [स्तूपिकाक] रा० ३२,१२६,१३०, १३७,२१०,२१२. जी० ३।३००,३०७,३५४, ३७२,३७३,६४७,८८५

थूभियाय [स्तूपिकाक] जी० ३।३००

थूल [स्थूल] ओ० ७७

थूलय [स्थूलक] ओ० ११७,१२१. रा० ७६६

थेज्ज [स्थैर्य] रा० ७५० से ७५३

थेर [स्थविर] ओ० २५,४०,१५१. रा० ६८७, ८१२. जी० १।१; ३।१

थेरवेयावच्च [स्थविरवैयावृत्य] ओ० ४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थोव [स्तोक] ओ० २८,१७१. जी० १।१४३; २।६८ से ७३,६५,६६,१३४ से १३८,१४१ से १४६; ३।५६७.८४१,१०३७,११३८; ४।१६ से २३,२५; ५।१८ से २०,२५ से २७, ३१ से ३६,५२,५६,६०; ६।१२; ७।२०,२२, २३; ८।५; ६।५ से ७,१४,१७,२०,२७ से २६, ३५,३७,५५,६१,६२,६६,७४,८७,६४,१००, १०८,११२,१२०,१३०,१४०,१४७,१५५, १५८,१६६,१६६,१८१,१८४,१६६,२०८, २२०,२३१,२५० से २५३,२५५,२६६,२८६ से २६३

थोवतरक [स्तोकतरक] जी० ३।१०१,११४

थोवतरग [स्तोकतरक] जी० ३।६६,११३

द

दओभास [दकावभास] जी० ३।७३५,७४०,७४१,

दंड [दण्ड] ओ० १२,६४,१७४. रा० १०,१२,१८, २२,५१,६५,१५६,१६०,२५६,२७६,२६२, ६६४,६७५,७५५,७६०,७६१,७६७,७६८, ७७६,७७७. जी० ३।११७,२६०,३३२,३३३, ४१७,४४५,४५७,५६२,५८६

दंडणायक [दण्डनायक] ओ० १८

दंडणायग [दण्डनायक] रा० ७५४,७५६,७६२, ७६४

दंडणीइ [दण्डनीति] रा० ७६७

दंडनायग [दण्डनायक] ओ० ६३

दंडपाणि [दण्डपाणि] रा० ६६४

दंडय [दण्डक] रा० ७५५

दंडलक्खण [दण्डलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

दंडसंपुच्छणी [दे० दण्डसंपुच्छणी, दण्डसम्पुसनी] रा० १२

दंडि [दण्डिन्] ओ० ६४

दंत [दन्त] ओ० १६.२५,४७,६४. रा० २५४, ७६०,७६१. जी० ३।४१५,५६६

दंत [दान्त] ओ० १६४

दंत [पाय] [दन्तपात्र] ओ० १०५,१२८

दंत [बंधण] [दन्तबन्धन] ओ० १०६,१२६

दंतमाल [दन्तमाल] जी० ३।५८२

दंतवेदणा [दन्तवेदना] जी० ३।६२८

दंतुक्खलिय [दन्तोलूखलिक] ओ० ६४

दंस [दंश] ओ० ८६,११७. रा० ७६६. जी० ३।६२४,६३११३

दंसण [दर्शन] ओ० १५,१६ से २१,४६,५१ से ५४,६४,१४३,१५३,१६५,१६६,१८३,१८४. रा० ८,५०,७०,१३३,२६२,६८६,६८७.६८६, ७१३,७३८,७६८,७७१,८१४. जी० १।१४, ६६,१०१,११६,१२८,१३३,१३६; ३।२०३, ४५७,११२२

दंसणविणय [दर्शनविनय] ओ० ४०

दंसणसंपण्ण [दर्शनसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

दंसणोवलंभ [दर्शनोपलम्भ] रा० ७६८

दक्ख [दक्ष] ओ० ६३. रा० १२,७५८,७५६, ७६५,७६६,७७०. जी० ३।११८

दक्खिण [दक्षिण] जी० ३।५६०,५६६,६३६,६७३, ७४०,७४१

दक्खिणकूलग [दक्षिणकूलग] ओ० ६४

दक्खिणपच्चत्थिम [दक्षिणपाश्चात्य] जी० ३।६८७

दक्खिणपुरत्थिम [दक्षिणपौरस्त्य] जी० ३।६८६

दक्खिणिल्ल [दाक्षिणात्य] जी० ३।४८६

दग [दक] रा० १२. जी० ३।७४१

दगएक्कारसम [दकैकादश] ओ० ६३

दगकलसग [दककलशक] रा० १२

दगकुंभग [दककुम्भक] रा० १२

दगतइय [दकतृतीय] ओ० ६३

दगथालग [दकस्थालक] रा० १२

दगधारा [दकधारा] रा० २६३ से २६६,३००, ३०५,३१२.३५१,३५५,५६४. जी० ३।४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१७,५२०,५४७, ५५४

दगपासायग [दकप्रासादक] रा० १८०. जी० ३।२६२

दगपासायय [दकप्रासादक] रा० १८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दगबिइय [दकद्वितीय] ओ० ९३
दगमंचग [दकमञ्चक] रा० १८०. जी० ३।२९२
दगमंचय [दकमञ्चक] रा० १८१
दगमंडय [दकमण्डप] रा० १८१
दगमंडव [दकमण्डप] रा० १८०
दगमंडवग [दकमण्डपक] जी० ३।२९२
दगमट्टिया [दकमृत्तिका] ओ० १४६. रा० ८०६
दगमालग [दकमालक] रा० १८०. जी० ३।२९२
दगमालय [दकमालक] रा० १८१
दगरय [दकरजस्] ओ० १९,४६,४७,१९४. रा० ३८,१६०,२२२,२५६. जी० ३।२८२,३१२, ३३३,३८१,४१७,५७६,५९७,८९४
दगवार [दकवार] जी० ३।११९
दगवारक [दकवारक] जी० ३।५८७
दगवारग [दकवारक] रा० १२
दगसत्तम [दकसप्तम] ओ० ९३
दगसीम [दकसीम] जी० ३।७३५,७४५ से ७४७
दच्चा [दत्वा] रा० ६६७
दड्ढ [दग्ध] ओ० १८४
दढ [दृढ] ओ० १,१४२,१४४. रा० १२,७५८, ७५९,८००,८०२. जी० ३।११८
दढपइण्ण [दृढप्रतिज्ञ] ओ० १४४ से १५०,१५४. रा० ८०२,८०५ से ८११,८१६
दढपतिण्ण [दृढप्रतिज्ञ] रा० ८०४
दढरहा [दृढरथा] जी० ३।२५४
दढाउ [दृढायुष्] जी० ३।११७
दद्दर [दे० दर्दर] ओ० २,५२,५५. रा० ३२,१५९, २७९,२८१,२८५. जी० ३।३३२,३७२,४४५, ४४७,४५१,५९४
दद्दरग [दे० दर्दरक] रा० ७७. जी० ३।५८७
दद्दरय [दे० दर्दरक] रा० २८१. जी० ३।७८, ४४७
दद्दरिगा [दे० दर्दरिका] रा० ७७
दद्दुर [दर्दुर] ओ० ५१. जी० ३।१०३८
दधि [दधि] जी० ३।५९७
दधिघण [दधिघन] रा० १३०. जी० ३।३००
दधिमुह [दधिमुख] जी० ३।९११,९१२
दधिवासुयमंडवग [दधिवासुकामण्डपक] जी० ३।२९६
दप्पण [दर्पण] ओ० १२,१९. रा० २१,४९,२९१. जी० ३।२८९,३४७,५९६
दप्पणय [दर्पणक] ओ० ६४
दप्पणिज्ज [दर्पनीय] ओ० ६३. जी० ३।६०२, ८६०,८६६,८७२,८७८
दब्भसंथारग [दर्भसंस्तारक] रा० ७९६
दमणा [दमनक] रा० ३०. जी० ३।२८२
दमिला [द्रविडा, द्रमिला] रा० ८०४
दमिली [द्रविडा, द्रमिला] ओ० ७०
दयपत्त [दयाप्राप्त] ओ० १४.[1] रा० ६७१
दयरय [दकरजस्] रा० २९
दरिमह [दरीमह] रा० ६८८
दरिय [दृप्त] ओ० ६. जी० ३।२७५
दरिसण [दर्शन] रा० ८०३
दरिसणावरणिज्ज [दर्शनावरणीय] ओ० ४४
दरिसणिज्ज [दर्शनीय] ओ० १,५,७,८,१० से १३ १५,४६,६४,७२,१९४. रा० १७ से २३,३२,३४ ३६ से ३८,५०,१२४,१३०,१३१,१३६,१३७, १४५,१५७,१७४,१७५,२२८,२३१,२३३, २४५,२४७,२४९,६६८,६७०,६७२,६७६, ७००,७०२. जी० ३।८४,२३२,२६१,२६६, २६९,२७४,२७६,२८६ से २८८,२९०,३००, ३०३,३०६,३०७,३११,३८७,३९३,४०७,४१०, ५८१,५८४,५८५,५९६,५९७,६३९,६७२, ८३९,८५७,८६३,११२१,११२२
दरिसणीय [दर्शनीय] रा० १
दरी [दरी] जी० ३।६२३
दल [दल] जी० ३।२८२,५९७
दलइत्ता [दत्वा] ओ० २१. रा० २९३. जी० ३।४५८

---

१. प्राप्तकरुणागुणः [वृ]। दयाप्राप्तः स्वभावतः शुद्धजीवद्रव्यत्वात्।

दलय [दलक] रा० २६
√दलय [दा]—दलइस्संति. ओ० १४७. रा० ८०८—दलइस्सामि. रा० ७८७—दलएज्जा. रा० ७७६—दलयइ. ओ० २१. रा० २६३ जी० ३।५१५—दलयंति. रा० २८१. जी० ३।४४७—दलयति. जी० ३।४५८
दलयित्ता [दत्वा] रा० २६३
दवकर [द्रवकर] ओ० ६४
दवग्गि [दवाग्नि] जी० २।६८; ३।११८,११६
दवग्गिदड्ढग [दवाग्निदग्धक] ओ० ६०
दवप्पिय [द्रवप्रिय] ओ० ४६
दव्व [द्रव्य] ओ० २८,४६,६६,७०. रा० ७७८. जी० १।३३; ३।२२,२३,२७,४५,५०६,५६२; ५।५१
दव्वओ [द्रव्यतस्] ओ० २८. जी० १।३३
दव्वट्ठ [द्रव्यार्थ] जी० ५।५२,५६,६०
दव्वट्ठया [द्रव्यार्थ] रा० १६६. जी० ३।५८,८७, २७१,७२४,७२७,१०८१
दव्वविउसग्ग [द्रव्यव्युत्सर्ग] ओ० ४४
दव्वभिग्गहचरय [द्रव्याभिग्रहचरक] ओ० ३४
दव्वीकर [दर्वीकर] जी० १।१०६,१०७
दव्वोमोदरिया [द्रव्यावमोदरिका] ओ० ३३
दस [दशन्] ओ० ४७. रा० ८. जी० १।७४
दसण [दशन] जी० ३ ५६७
दसणुप्पडियग [उत्पाटितकदशन] ओ० ६०
दसदसमिका [दशदशकिका] ओ० २४
दसद्ध [दशार्ध] रा० ६. जी० ३।४५७
दसमभत्त [दशमभक्त] ओ० ३२
दसविध [दशविध] जी० ६।१,२५६
दसविह [दशविध] ओ० ३६,४१. जी० १।४,१०; २।१६; ३।२३१; ६।८,२६७,२६३
दह [द्रह] रा० २७६. जी० ३।४४५,६३६,६४०, ६६६,७७५,६३७
दहमह [द्रहमह] जी० ३।६१५
दहि [दधि] ओ० ६२,६३
दहिघण [दधिघन] रा० २६. जी० ३।२८२
दहित्ता [दग्ध्वा] जी० ३।५१६
दहिवण्ण [दधिपर्ण] ओ० ६,१०. जी० ३।३८८
दहिवासुयमंडवग [दधिवासुकामंडपक] रा० १८४
दहिवासुयमंडवय [दधिवासुकामण्डपक] रा० १८५
√दा [दा]—दिज्जइ रा० ७८४—देइ रा० ७६६
दाइय [दायिक] ओ० २३. रा० ६६५
दाऊण [दत्वा] रा० २६२. जी० ३।४५७
दाडिम [दाडिम] ओ० ६,१०. जी० १।७२; ३।५६६,५६७
दाण [दान] ओ० २३. रा० ६६५
दाणधम्म [दानधर्म] ओ० ६८
दातु [दातृ] ओ० ११७
दाम [दामन्] रा० २८,३२,४०,५१,६७,१३०, १३२,१३७,१४०,१५८, २३५,२५५,२६५, २८१,२६१,२६४,२६६,३००,३०५,३१२, ३५५,६८३,६६२,७००,७१६. जी० ३।२८१, ३००,३०२,३१३,३३१,३३८,३५५,३५६, ३६७,४१२,६३४,८६२
दामिणि [दामिनी] जी० ३।५६७
दामिल [द्राविड] जी० ३।५६५
दार [द्वार] ओ० १,१६२. रा० १२६ से १३८, १६२ से १६६,२१० से २१२,२१५,२७७, २८३,२८६,२८८,२६१,२६४ से २६६,३०१ से ३०४,३२२ से ३२४,३२७ से ३२६,३३१ से ३३४,३३६,३३७,३३६,३४१,३४२,३५१,३५७, ३६४,३६५,४१४,४१६,४५३,४५४,४७४, ४७७,५१४,५१५,५३४,५३७,५७४,५७५, ५६४,५६७,६३४,६३५,६५४,६५५,६५७. जी० ३।२६६ से ३०७,३१५,३३५,३३६,३४६ से ३५१,३५४ से ३५७,३७३,३७४,४१२,४२१, ४४३,४४५,४४६,४५२,४५४,४५७,४५६ से ४६१,४६३,४६४,४६६,४६८,४६६,४७५, ४७६,४८७ से ४८६,४६१ से ४६४,४६६ से ४६६,५०१,५०२,५०४,५०६,५०७,५१६, ५१७,५२२,५२४ से ५२६,५२८,५३०,५३१, ५३३,५३६,५३८ से ५४०,५४३,५४५ से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५४७,५५०,५५२ से ५५४,५५७,५६३,५६६,५६८ से ५७०,५९४,६४७,६७३,६७४,७०७ से ७११,७१३,७१४,७९९ से ८०२,८१३ से ८१५,८२४ से ८२७,८५१,८५२,८८५ से ८८८,९३९,९४०,९४४,९५५

दारग [दारक] ओ० १४२,१४४ से १४७, रा० ८००,८०२,८०४ से ८१०

दारचेडा [द्वारचेटा] रा० १३०,२९४,२९६,२९८ २९९ जी० ३।३००

दारचेडी [द्वारचेटी] जी० ३।४५६,४६१

दारय [दारक] ओ० १४३,१४४,१४८, से १५० रा० १२,८०१,८०२,८०९,८११ जी० ३।११८,११९

दारुइज्जपव्वय [दारुकीयपर्वत] रा० १८१

दारुइज्जपव्वयग [दारुकीयपर्वतक] रा० १८०

दारुपव्वयग [दारुपर्वतक] जी० ३।२९२

दारुपाय [दारुपात्र] ओ० १०५,१२८

दारुय [दारुक] ओ०६४

दारुयाग [दारुकक] जी० ३।२८५

दारुयाय [दारुकक] रा०१७३,६०१

दालिम [दाडिम] ओ० १९

दास [दास] ओ० १४,१४१. रा० ६७१,७७४, ७९९. जी० ३।६१०,६३१।२

दासी [दासी] ओ० १४,१४१. रा० ६७१,७७४, ७९९

दाह [दाह] रा० ७६५. जी० २।१४०,३।११८, ११९,६२८

दाहिण [दक्षिण] ओ० २१,५४. रा० ८,१९,४०, ४३,४४,६९,१२४,१३२,१७०,१७३,२१०, २१२, २३५,२३६,२९२,६६१,६६४. जी० ३।२१७,२१९ से २२१,२६५,२८५,३४२, ३४५,३५८,३७३,३९७,३९८,४५७,५६२,५६६, ५६७,५९९,५७७,६४७,६६८,६८२,६८९ ६९२,६९५,६९६,७११,८८२,८८५,९०२, १०१५,१०३९

दाहिणपच्चत्थिम [दक्षिणपाश्चात्य] रा० ४३, ६६२. जी० ३।२२४,३४३,५६०,७५२

दाहिणपच्चत्थिमिल्ल [दक्षिणपाश्चात्य] जी० ३।२२०,६९४,६९५,९१८,९२१

दाहिणपुरत्थिम [दक्षिणपौरस्त्य] रा० ४३,६६०. जी० ३।३४१,५६०,७५१

दाहिणपुरत्थिमिल्ल [दक्षिणपौरस्त्य] रा० ५६ जी० ३।२१९,२२३,६९२,६९३,९१८,९२०

दाहिणवाय [दक्षिणवात] जी० १।८१

दाहिणहत्थ [दक्षिणहस्त] ओ० ६९

दाहिणिल्ल [दाक्षिणात्य] रा० ४८,५७,२९४ से ३०५,३०९ से ३१२,३२०,३२१,३२५,३३४, ३३९,३४४,३५७,४१६,४७७,५३७,५९७. जी० ३।३३,३८,२१७,२१९ से २२३,२२५, २३४,२४४,२५०,२५३,४५९ से ४७०,४७४ से ४७७,४८५,४९०,४९५,४९९,५०४,५०९, ५२२,५२८,५३६,५४३,५५०,६३२,६३९, ६६९,६७३,६९३,६९४,९१४

दिट्ठंतिय [दार्ष्टान्तिक] रा० ११७,२८१. जी० ३।४४७

दिट्ठलाभिय [दृष्टलाभिक] ओ० ३४

दिट्ठि [दृष्टि] रा० ७४८ से ७५०,७७३. जी० १ १४,९९,१०१,११९,१२८,१३३,१३६; ३।१२७,१६०

दिट्ठिय [दृष्टिक] रा० ७६५

दिट्ठिवाय [दृष्टिवाद] रा० ७४२

दिणयर [दिनकर] ओ० २२. रा० ७२३,७७७, ७७८,७८८. जी० ३।८३८।१२,१३,२९

दिण्ण [दत्त] ओ० २,१७,५५,१११ से ११३, १३७,१३८. रा० १५,३२,२८१,७८७,७८८. जी० ३ ४४७

दित्त [दृप्त, दीप्त] ओ० १४,१४१. रा० ६७१, ६७५,७९९

दित्त [दीप्त] ओ० ६३,६५ जी० ३।८३८।२९

दित्ततव [दीप्ततपस्] ओ० ८२

दित्ततेय [दीप्ततेजस्] ओ० २७. रा० ८१३

दिन्न [दत्त] जी० ३।३७२

दिप्पंत [दीप्यमान] ओ० ६३. रा० १३३. जी० ३।३०३,५८६,५६०,११२२

दिप्पमाण [दीप्यमान] ओ० ६५. जी० ३।५६१

दिवड्ढ [द्व्यर्ध, द्व्यपार्ध] जी० २।७३; ३।२३८, २४३

दिवस [दिवस] ओ० १४४. रा० ८०२. जी० ३।८३८।१८,८४१

दिव्व [दिव्य] ओ० २,४७,६४,७२. रा० ७,६, १०,१२,१७ से १६,२४,३२,४५ से ५०,५६,५७, ६३,६५,७३,७६,७८ से ६५,१०० से ११३. ११८ से १२०,१२२,१७३,२०६,२११,२७६, २८१,२८५,२६३ से २६६,३००,३०५,३१२, ३५१,३५५,५६४,६६७,७५३,७६७. जी० ३।८६,१७६.१७८,१८०,१८२,२८५, ३५०,३७२,४४५,४४६,४५१,४५७ से ४६२, ४६५,४७०,४७७,५१६,५२०,५४७,५५४, ५६३,६४६,८४२,८४५,१०२४,१०२५,

दिव्वा [दिव्याक] जी० १।१०८

दिसा [दिशा] ओ० ४७,७२,७६ से ८१. रा० २६४,६८८. जी० ३।३६,७५२,७५३, १०१८,१०१६,१०२१

दिसाकुमार [दिशाकुमार] ओ० ४८

दिसादाह [दिशादाह] जी० ३।६२६

दिसापोक्खि [दिशाप्रोक्षिन्] ओ० ६४

दिसासोत्थिय [दिशास्वस्तिक] ओ० १६

दिसासोवत्थिय [दिशासौवस्तिक] रा० १४६. जी० ३।३१६,५६६

दिसासोवत्थियासण [दिशासौवस्तिकासन] रा० १८१.१८३,१८५. जी० ३।२६३,२६५, २६७,८५७

दिसि [दिग्] रा० १६,४४,६१,१२०,१३०,१७५, २०२,२१०,२१२,२२४,२३४,६६४,६६४, ६६७,७१७,७७७,७८७. जी० १।४६,५६, ८२,८७,६६,१०१; ३।३४,३५,२८७,३५८, ३६३,३७३,३८३,३६६,६४७,६६६,६७३, ६७४,६८४,७२३,८८२,८८५,८८८ ८६५, ६१०,६१४ से ६१६,६१६ से ६२२

दिसिव्वय [दिग्व्रत] ओ० ७७

दिसीभाग [दिग्भाग] रा० १०,१२,१८,५६,६५, २७६,६७०. जी० ३।४४५

दिसीभाय [दिग्भाग] ओ० २. रा० २,६७८

दीणारमालिया [दीणारमालिका] जी० ३।५६३

दीव [द्वीप] ओ० १६,२१,४८,५४,१७०. रा० ७, १०,१२,१३,१५,५६,१२४,२७६,६६८. जी० ३।८६,२१७,२१६ से २२३,२२५ से २२७,२५७,२५६,२६०,२६६.३००,३५१, ४४५,५६६,५६८ से ५७७,६३८,६६०,६६८, ७०१ से ७०४,७०८,७११,७१५ से ७१६, ७२३,७३६,७३६,७४०,७४२,७४५,७५०, ७५४,७५५,७६०,७६२,७६४ से ७६६,७६८ से ७८०,७६५ से ८००,८०२ से ८०४,८०६, ८०८ से ८१०,८१४,८१६,८१७,८२१ से ८२५,८२७,८२६ से ८३१,८३८।२३,२६, ८४८,८५१,८५६,८५७,८५६,८६२,८६३, ८६५,८६८,८६६,८७१,८७४,८७५,८७७, ८८० से ८८२,६१८,६२५,६२७ से ६३५, ६३७ से ६४०,६४३,६४५, ६५० से ६५४, ६७२ से ६७५,१००१,१००७,१०२२,१०३६, १०८०,११११

दीव [दीप] रा० ७७२

दीवग [द्वीपक] जी० ३।७७०

दीवचंपग [दीपचम्पक] रा० ७७२

दीवचंपय [दीपचम्पक] रा० ७७२

दीवणिज्ज [दीपनीय] जी० ३।६०२,८६०,८६६, ८७२,८७८

दीवसिहा [दीपशिखा] जी० ३।५८६

दीवायण [द्वीपायन] ओ० ६६

दीविच्चग [द्वीपग] जी० ३।७८०

दीविग [द्वीपिक] जी० ३।६२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीविय [द्वीपिक] रा० २४. जी० ३।८४,२७७
दीविया [दीपिका] जी० ३.५८६
दीविल्लग [द्वीपग] जी० ३।७७५
दीह [दीर्घ] ओ० १४,१६,२८,११६,११७,
१६५।४. रा० १६०,२५६,६७१,७६५,७७४.
जी० ३।३३३,४१७,५६६,५६७
दीहासण [दीर्घासन] रा० १८१,१८३.
जी० ३।२६३
दीहिया [दीर्घिका] ओ० १,६,६६. रा० १७४,
१७५,१८०. जी० ३।२७५,२८६
√दीहीकर [दीर्घी + कृ]—दोहीकरेज्जा.
जी० ३।६६७
दीहीकरित्तए [दीर्घीकर्तुम्] जी० ३।६६४ से ६६७
दु [द्वि] रा० ४७. जी० १।६
दुंदुभिस्सर [दुन्दुभिस्वर] ओ० ७१. रा० ६१
दुंदुहिणिग्घोस [दुन्दुभिनिर्घोष] ओ० ६७.
रा० १३,१३५. जी० ३।४४६,५५७
दुदुहिनिग्घोस [दुन्दुभिनिर्घोष] रा० ६५७.
जी० ३।५५७
दुंदुहिस्सर [दुन्दुभिस्वर] रा० १३५.
जी० ३।३०५
दुंदुही [दुन्दुभी] रा० ७७
दुक्ख [दुःख] ओ० २६,४६,७२,७४।१,४,५,
१५४,१६५,१६६,१७७,१८१,१६५।२१.
रा० ७७१,७६५,८१६. जी० १।१३३;
३।११०; १२६।७,८; ८३८।१३
दुक्खुत्तो [द्विस्] जी० ३।७३०,७३१
दुखुर [द्विखुर] जी० १।१०३
दुगुण [द्विगुण] जी० ३।२५६
दुगुणित [द्विगुणित] जी० ३।५६७
दुगुणिय [द्विगुणित] जी० ३।८३४।२४
दुगुल्ल [दुकूल] रा० ३७,२४५. जी० ३।३११,
४०७,५६५
दुग्ग [दुर्ग] रा० ७६५. जी० ३।११०
दुगंध [दुर्गन्ध] रा० ७५३

दुघण [द्रुघण] रा० १२,७५८,७५६.
जी० ३।११८
दुघरंतरिय [द्विगृहान्तरिक] ओ० १५८
दुच्चिण्ण [दुश्चीर्ण] ओ० ७१
दुट्ठ [दुष्ट] ओ० ४६
दुत [द्रुत] जी० ३।४४७
दुतविलंबित [द्रुतविलम्बित] जी० ३।४४७
दुद्ध [दुग्ध] जी० ३।५६२
दुद्धजाति [दुग्धजाति] जी० ३।५८६
दुद्धरिस [दुर्धर्ष] ओ० २७. रा० ८१३
दुपडोयार [द्विप्रत्यावतार, द्विपदावतार] ओ० ५२.
रा० ६८७
दुपय [द्विपद] रा० ७०३,७१८
दुपाय [द्विपक] जी० ३।११८,११६
दुप्पय [द्विपद] रा० ६७१
दुप्पवेस [दुष्प्रवेश] ओ० १
दुफास [दुःस्पर्श] जी० ३।६८१
दुफासत्त [दुःस्पर्शत्व] जी० ३।६८७
दुब्बल [दुर्बल] ओ० १४. रा० ६७१,७६०,७६१.
जी० ३।११८,११६
दुब्बलय [दुर्बलक] रा० ७६१
दुब्भिक्ख [दुर्भिक्ष] ओ० १४. रा० ६७१
दुब्भिक्खभत्त [दुर्भिक्षभक्त] ओ० १३४
दुब्भिक्खमयग [दुर्भिक्षमृतक] ओ० ६०
दुब्भिगंध [दुर्गन्ध] रा० ६,१२. जी० १।५,३६,
३७,५०; ३।२२,६२२,६७६,६८५
दुब्भिगंधत्त [दुर्गन्धत्व] जी० ३।६८५
दुब्भिसद्द [दुःशब्द] जी० ३।६७७,६८३
दुब्भसद्दत्त [दुःशब्दत्व] जी० ३।६८३
दुब्भूय [दुर्भूत] जी० ३।६२८
दुभागपत्तोमोदरिय [द्विभागप्राप्तावमोदरिक]
ओ० ३३
दुम [द्रुम] रा० १३६. जी० ३।३०६,५८२,५८६
से ५६५,६०४
दुमासपरियाय [द्विमासपर्याय] ओ० २३
दुय [द्रुत] रा० १०२,२८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुयविलंबिय [द्रुतविलम्बित] रा० ९१,१०४,
२८१

दुयाह [द्र्यह] जी० ३।८६,११८,११९,१७६,
१७८,१८०,१८२

दुरंत [दुरन्त] रा० ७७४

दुरभि [दुरभि] जी० ३।८४

दुरस [दूरस] जी० ३।९८०

दुरहियास [दुरध्यास, दुरधिसह] रा० ७९५.
जी० ३।११०,१११,११७

√दुरुह [आ+रुह]—दुरुहइ. रा० ६८५—
दुरुहंति. रा० ४८. —दुरुहति. रा० ४७—
दुरुहेति. रा० ६८३

दुरुहित्ता [आरुह्य] रा० ४७

दुरुहेत्ता [आरुह्य] रा० ६८३

दुरूढ [आरूढ] ओ० ६३,६४. रा० १३,४९

दुरूव [द्रूरूप] जी० ३।९७८,९८४

√दुरूह [आ+रुह]—दुरूहंति. ओ० ७०

दुरूहित्ता [आरुह्य] ओ० ७०

दुरूहित्ताणं [आरुह्य] ओ० १०१

दुल्लभ [दुर्लभ] रा० ७५० से ७५३

दुल्लभबोहिय [दुर्लभबोधिक] रा० ६२

दुव [द्वि] जी० ३।२५१

दुवारवयण [द्वारवदन] रा० ७५५,७७२

दुवालस [द्वादशन्] ओ० ३३. जी० ३।३३

दुवालसंगि [द्वादशाङ्गिन्] ओ० २६

दुवालसविह [द्वादशविध] रा० ५२ ७७,७८.
जी० १।६९

दुवासपरियाय [द्विवर्षपर्याय] ओ० २३

दुविध [द्विविध] जी० ३।१३६,१४०,१४१,१६३,
११२२; ९।१३७

दुविह [द्विविध] ओ० ३२,४०,७४. रा० ७४१ से
७४५. जी० १।२,३,५ से ७,१०,११,१३,१४,
५७,५८,६३,६५ से ६८,७०,७६,८०,८१,८४,
८८,८९,९२,९४,९६,९७,१०० से १०४,
१०६,१११,११४,११६,११८ से १२२,१२६,
१२९,१३३,१३५,१३६,१४३; २ ५,७,१९;
३।७८,७९,८१,८२,९१,९३,१२७।५,१३२ से
१३५,१३८,१३९,१४२ से १४६,२१२,२२९,
९७७ से ९८१,१०२२,१०७१ से १०७४,
१०८७,१०९१,१११०,११२१; ४।२; ५।२ से
४,३७ से ४०,५३ से ५५; ९।८,९,११,
१५,१६,१८,२१,२२,२४,२८ से ३१,३६,
३८,३९,४२,४४,४६,५६,५८,६२,६३,६५,
६६,६८,७६,७९,८१,१२५,१३३,१५१,
१७४

दुव्वण्ण [दुर्वर्ण] जी० ३।५९७

दुहओ [द्वितस्, द्वय] रा० ६९,७०,१३१ से १३८,
२४५,७५५,७७२. जी० ३।३०१ से ३०३,
३०५ से ३०७,३१५,३५५,४०७,५७७

दुहओखहा [द्वितःखहा] रा० ८४

दुहओचक्कवाल [द्वितश्चक्रवाल] रा० ८४

दुहतो [द्वितस्, द्वय] रा० १२३. जी० ३।३०४

दुहा [द्विधा] रा० ७६४,७६५. जी० ३।८३१

दूइज्जंत [द्रूगमाण] ओ० ४६

दूइज्जमाण [द्रूयमाण] ओ० १९,२०,५२,५३.
रा० ६८६,६८७,६८९,७०६,७११,७१३

दूय [दूत] ओ० १८,६३. रा० ७५४,७५६,७६२,
७६४

दूर [दूर] ओ० १९२. रा० १२४.
जी० ३।१०३८

दूरंगइय [दूरंगतिक] ओ० ७२

दूरसत्त [दूरसत्व] जी० ३।९८६

दूराहड [दूराहृत] रा० ७७४

दूरूवत्त [दूरूपत्व] जी० ३।९८४

दूस [दूष्य] ओ० ५९. जी० ३।६०८

दूसरयण [दूष्यरत्न] ओ० ६३

देव [देव] ओ० ४४,४७ से ५१,६८,७१,७३,७४,
८८ से ९५,११४,११७,१२०,१४०,१४१,
१५५,१५७ से १६०,१६२,१६७,१७०,
१९५।१३,१४, रा० ७,९ से १९,२४,३२,४१

से ४४,४६ से ४६,५४ से ६५,६८,६६,७१ से ७४, ११८ से १२०,१२२,१२४,१२६, १८५ से १८७,२४०,२४६,२६६,२६८,२७०, २७४ से २६१,६५४ से ६६७,६६८,७५२,७५३, ७७१,७८६,७६७ से ७६६,८१५. जी० १।५१, ५४,५६,६१,६५,८२,८७,६१,१०१,११६, १२३,१२८,१३५,१३६; २।२,१५ से १६, ३५ से ३७,३६ से ४७,६२,६७,६८,७१,७२, ७५,७८,८१,६० से ६३,६५,६६,१४४,१४५, १४८,१४६,१५१; ३।१,८६,१२७,१२६।२, १७६, १७८,१८०,१८२,१८४,१६४,१६८ से २०६,२१७,२३० से २३४,२३६,२३८,२३६, २४२ से २४४,२४६,२४७,२४६ से २५२, २५५ से २५७,२६७,२६८,३३६ से ३४५, ३५०,३५१,३५८ से ३६०,३७२,४०२,४१०, ४२६,४३२,४३५,४३६ से ४५७,५५४ से ५६५, ५६७,५६८,६३५,६३७,६३८,६५६,६६४, ६६६,६८०,७००,७०१,७१०,७२१,७२४, ७३८,७४१,७४३,७४६,७६०,७६३,७६५, ७७८,७६५,८०८,८१६,८२६,८४०,८४२, ८४३,८४५,८४६,८५४,८५७,८६०,८६३, ८६६,८७२,८७५,८८५,६१७,६२३,६२५, ६२७ से ६३५, ६३८ से ६४०,६४२ से ६४५, ६४७,६५०,६५१,६५४,६८८ से ६६७,६६६, १०१५,१०१७,१०२५,१०२७,१०२६,१०३१, १०३३,१०३५,१०३८,१०३६,१०४१ से १०४४,१०४६,१०४७,१०४६ से १०५६, १०८२,१०८३,१०८५ से १०८७,१०८६ से १०६३,१०६७ से १०६६,११०१,११०५, ११०७,११०६ से १११२,१११४ से १११७, १११६ से ११२४,११३२,११३३,११३७, ११३८; ६।१,५,७,८,१२; ७।१,७,८,१६ से २१,२३; ६।१५६,१५८,२०६,२१३,२१८,२२०, २२१,२२६,२२६,२३१,२३२,२४८,२५४,२६७, २७४,२८३,२८६,२६१,२६३

देवउक्कलिया [देवोत्कलिका] जी० ३।४४७

देवउल [देवकुल] रा० १२

देवकज्ज [देवकार्य] जी० ३।६१७

देवकम्म [देवकर्मन्] जी० ३।१२६।६,८४०

देवकहक्कह [देवकहकह] जी० ३।४४७

देवकहकहग [देवकहकहक] रा० २८१

देवकिब्बिसिय [देवकिल्बिषिक] ओ० १५५

देवकिब्बिसियत्त [देवकिल्बिषिकत्व] ओ० १५५

देवकुमार [देवकुमार] रा० ६६,७१ से ७५,७६ से ८१,८३,११२ से ११८

देवकुमारिया [देवकुमारिका] रा० ८३,११५ से ११८

देवकुमारी [देवकुमारी] रा० ७० से ७५,७६ से ८१,११२ से ११४

देवकुरा [देवकुरु] जी० २।१३; ३।६१६,६३७

देवकुरु [देवकुरु] जी० २।३३,६०,७०,७२,६६, १३७,१३८,१४७,१४६; ३।२२८,७६५

देवकुल [देवकुल] ओ० ३७. रा० ७५३

देवगइ [देवगति] रा० १०,१२,५६,२७६

देवगण [देवगण] रा० ६६८,७५२,७८६. जी० ३।११२०

देवगति [देवगति] जी० ३।८६,१७६,१७८,१८०, १८२,४४५

देवगुत्त [देवगुप्त] ओ० ६६

देवच्छंदग [देवच्छन्दक] जी० ३।६०७

देवच्छंदय [देवच्छन्दक] रा० २५३,२५८,२६१. जी० ३।४१४,४१५,४१६,४५७,६७५,६७६, ६०७,६०८

देवजुइ [देवद्युति] रा० ६३,६५,११६

देवजुति [देवद्युति] रा० ५६,७३,११८,७६७

देवज्जुइ [देवद्युति] रा० ६६७

देवज्जुति [देवद्युति] रा० १२२

देवता [देवता:] जी० ३।७३७

देवत्त [देवत्व] ओ० ७२,७३,८६ से ६५,११४, ११७,१४०,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० ७५२,७५३. जी० ३।११२८,११३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवदीव [देवद्वीप] जी० ३।७७६,७७७
देवदीवग [देवद्वीपक] जी० ३।७७६,७७७
देवदुहदुहग [देवदुहदुहक] रा० २८१. जी० ३।४४७
देवदूस [देवदूष्य] रा० २७४,२८५,२९१,७५६. जी० ३।४३९,४४३,४५१,४५७
देवद्दार [देवद्वार] जी० ३।८८५
देवद्दीवग [देवद्वीपक] जी० ३।७७६,७७७
देवपरिसा [देवपरिषद्] ओ० ७१. रा० ६१
देवभद्द [देवभद्र] जी० ३।९४२.९५१
देवमहाभद्द [देवमहाभद्र] जी० ३।९४२,९५१
देवमहावर [देवमहावर] जी० ३।९५१
देवय [दैवत] ओ० २,५२,१३९. रा० ९,१०,५८, २४०,२७६,६८७,७०४,७१९,७७६. जी० ३।४०२,४४२
देवया [देवता] ओ० १३९
देवरमण [देवरमण] रा० ७८,८०,८२,११२
देवराय [देवराज] जी० ३।९१९ से ९२२,१०३९ से १०४४
देवलोग [देवलोक] ओ० ७४।२,१४१. रा० ७९९. जी० ३।६३०
देवलोय [देवलोक] ओ० ७१,७२,७४।२,८९ से ९३. रा० ७५२,७५३. जी० ३।६३०
देववर [देववर] जी० ३।९५१
देवविमाण [देवविमान] रा० १८७
देवसण्णिवाय [देवसन्निपात] रा० २८१
देवसन्निवाय [देवसन्निपात] जी० ३।४४७
देवसमवाय [देवसमवाय] जी० ३।९१७
देवसमिति [देवसमिति] जी० ३।९१७
देवसमुदय [देवसमुदय] जी० ३।९१७
देवसमुग्ग [देवसमुद्रक] जी० ३।७७८
देवसयणिज्ज [देवशयनीय] रा० २४५,२४६,२६१, ३५३,४१४,७९९. जी० ३।४०७,४०८,४२३, ४३९,४४३,५१९,५२६,६५०,६७३,७५९
देवसोक्ख [देवसौख्य] ओ० ७४।२
देवाणुप्पिय [देवानुप्रिय] २०,२१,५२,५३,५५, ५६,५८,६०,६२,११७,११८,१२०. रा० ९,१०, १३,१४,१७,५८,६३,६५,७२,७३,२७६,२७८, ६५४,६८१,६८७ से ६९०,६९५,७०४,७०६, ७१३,७१४,७१८,७२०,७२३,७५१,७६५, ७६८,७७४,७७५,७७७,८०२. जी० ३।४४२, ४४४,५५४
देवाणुभाग [देवानुभाग] रा० ६६७
देवाणुभाव [देवानुभाव] रा० ५६,६३,६५,७३, ११८,११९,१२२,७९७
देविंद [देवेन्द्र] जी० ३।९१९ से ९२२,१०३९ से १०४४,१०५५
देविड्ढि [देवर्धि] ओ० ७४।२. रा० ५६,६३ ६७, ७३,११८,११९,१२२,६६७ ७९७
देवित्त [देवीत्व] जी० ३।११२८ से ११३०
देवी [देवी] ओ० १५,५५,५८,६२,७०,७१,८१. रा० ५,७,१५ से १७,४८,५४ से ५८,१८५, १८७,२४०,२७६,२८०,२८२,२८९ से २९१. ६५७,६७२,६७३,७५१,७७९,७९१ से ७९४, ७९६. जी० ३।१९८ से २०९,२१७,२३७, २३८,२४३,२४६,२४७,२४९,२५०,२५६,२९७, २९८,३५०,३५८,३६०,४०२,४४२,४४६,४४८, ४५५ से ४५७,५५७,५६३,६३७,६५९,७६०, ७६३,१०२३,१०२५,१०२८,१०३०,१०३२, १०३४,१०३६,१०४१,१०४२,१०४४,११२२, ११२६; ६।१,६,७,१२; ९।२०९,२१४,२१८, २२०
देवुक्कलिया [देवोत्कलिका] रा० २८१
देवुज्जोय [देवोद्द्योत] रा० २८१. जी० ३।४४७
देवोद [देवोद] जी० ३।७७६,७७७,९४३,९४४
देवोदग [देवोदक] जी० ३।७७८,७७९
देस [देश] ओ० १९,१९५।१०. रा० १७४,१८०, १८२,१८४,१८८,१९२ से १९७,७६५,७७४, ८०४. जी० १।४,५; ३।२६६ से २६९,२८६, २९२,२९४,२९६,५७९ से ५९६,६४०,६५९, ६६४,७०२,७२६,८०८,८२९,८५७,८६३, ८६९,८७५,८८१

देसंतर [देशान्तर] ओ० ११६,११७
देसकहा [देशकथा] ओ० १०४,१२७
देसकालण्णया [देशकालज्ञता] ओ० ४०
देसभाग [देशभाग] रा० ३२,३६,३९,६६,१६४, २१८,२६१,२८१,३००,३२१,३३३. जी० ३।२७५,३६५.३७२,४४७,४६०,४६५,५५४, ५९६,७५६,७६२,७८२,८८२,९१३
देसभाय [देशभाग] ओ० २,६,८,१९,५५,१९२. रा० ३,३५.१२५,१८६,२०४,२१७,२२७,२३८, २५२,२९३,२९५,३२६,३३८,३५६,४१५, ४७६,५३६,५९६,७५५,७७२. जी० ३।२६३, ३१०,३१३,३३८,३५६,३५९,३६१,३६४, ३६८,३६९,३७७,३८६,४००,४१३,४२२, ४२७,४५८,४६०,४८६,४९१,४९८,५०३, ५२१,५२७,५३५,५४२,५४९,६३४,६३९, ६४२,६४६,६४९,६६३,६६८,६७१ से ६७३, ६७९,६८५,६९१,७३७,७५८,८३१,८८४, ८९०,८९१,९०६,९११,९१८,१०२३,१०३९
देसावयासिय [देशावकाशिक] ओ० ७७
देसिय [देशित] जी० १।१
देसी [देशी] ओ० ४९,७०. रा० ८०९,८१०
देसीभासा [देशीभाषा] ओ० १४८,१४९
देसूण [देशोन] रा० १२८,२०१. जी० २।२६ से ३४,३७,५४ से ६१,६५,८४,८८,११४.११६, १२३,१२४,१३२; ३।२४७,२५०,२५६,२७३, २९८,३६२,३६९ से ३७१,५७०,६२९,६४६, ६७३,६७४,७०६,७३२,८८२; ९।२३,२६,३३, ४१,६९,७३,७८,१४२,१४४,१४६,१६२,१६४, १६५,१७८,२००,२०२ से २०४
देसोण [देशोन] जी० ३।३५३
देह [देह] रा० ७६०,७६१. जी० ३।५९६
देहधारि [देहधारिन्] ओ० १९
दो [द्वि] ओ० १७०
दोकिरिय [द्वेक्रिय] ओ० १६०
दोच्च [द्वितीय] ओ० ११७. रा० १०,१२,१८, ६५,२७९,७०२,७०३. जी० ३।१२४,४४५
दोच्चा [द्वितीया] जी० १।१२४,२।१३५,१३८, १४८,१४९; ३।२,४,६६,६७,७३,७४,८८,९१, १२५,१६१,११११
दोणमुह [द्रोणमुख] ओ० ६८,८९ से ९३,९५, ९६,१५५ १५८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७
दोभग्ग [दौर्भाग्य] जी० ३।५९७
दोमासिय [द्वैमासिक] ओ० ३२
दोमासिया [द्वैमासिकी] ओ० २४
दोर [दवरक] रा० २७०. जी० ३।४३५
दोवारिय [दौवारिक] ओ० १८. रा० ७५४,७५६, ७६२,७६४
दोस [दोष] ओ० ३७,७१,११७,१६१,१६३. रा० १७३,७९६. जी० ३.२८५,५९८
दोसिणाभा [दे० ज्योत्स्नाभा] जी० ३।१०२३

ध

धंत [ध्मात] रा० २९,७५७. जी० ३।२८२
धंतपुव्व [ध्मातपूर्व] रा० ७५७,७६३
धण [धन] ओ० ५,१४,२३,१४१. रा० ६७१, ६९५,७९९
धणक्खय [धनक्षय] जी० ३।६२८
धणिय [दे०] ओ० ४६. रा० ७७४. जी० ३।५८९
धणु [धनुष्] ओ० १,६४,१७०,१८७,१९५।५. रा० १८८,१८९,२४९,६६४,७५९. जी० १।९४,११२,११६,१२५; ३।८२,९२, २१८,२६०,२६३.३५३,५६२,५९८,६४७, ६४९,६७३ से ६७५,६८३,७०६,७८८, १०१४,१०२२
धणुग्गह [धनुर्ग्रह] जी० ३।६२८
धणुपट्ठ [धनुष्पृष्ठ] जी० ३।५५७,६३१
धणुवेद [धनुर्वेद] ओ० १४६
धणुवेय [धनुर्वेद] रा० ८०६

घण्ण [धान्य] ओ० २३
धन्न [धन्य] ओ० १६४. रा० ६९५
धमावियपुव्व [ध्मापितपूर्व] रा० ७५७,७६३
धम्म [धर्म] ओ० १६,२१,४०,४६,५४,६६,७१,
७२ ७४ से ७७,७६ से ८१,१४२,१४४,१६१,
१६३. रा० ८,१६,६१,६२,२६२,६६३ से
६९५,७००,७१७ से ७२०,७३२,७५२,७७५,
७७६,७८०,८००,८०२. जी० ३।४५७
धम्मकहा [धर्मकथा] ओ० ४२,४३. रा० ७७५
धम्म [झाण] [धर्म्यध्यान] ओ० ४३
धम्मक्खाइ [धर्माख्यायिन्] ओ० १६१,१६३.
रा० ७५२
धम्मचरण [धर्मचरण] जी० २।२६ से २६,५४
से ५७,६५,८४,८८,८६,११४,१२३,१३२
धम्मचिंतग [धर्मचिन्तक] ओ० ६३
धम्मज्झय [धर्मध्वज] ओ० १६
धम्मणायग [धर्मनायक] रा० २६२. जी० ३।४५७
धम्मत्थिकाय [धर्मास्तिकाय] रा० ७७१. जी०
१।४
धम्मदय [धर्मदय] रा० ८,२६२. जी० ३।४५७
धम्मदेसय [धर्मदेशक] रा० ८,२६२. जी० ३।४५७
धम्मनायग [धर्मनायक] रा० ८
धम्मपलज्जण [धर्मप्ररञ्जन] ओ० १६१,१६३.
रा० ७५२
धम्मपलोइ [धर्मप्रलोकिन्] रा० ७५२
धम्मप्पलोइ [धर्मप्रलोकिन्] ओ० १६१,१६३
धम्मसमुदायार [धर्मसमुदाचार] ओ० १६१,१६३
धम्मसारहि [धर्मसारथिन्] रा० ८,२६२. जी०
३।४५७
धम्मसीलसमुयाचार [धर्मशीलसमुदाचार] रा०
७५२
धम्माणुय [धर्मानुग] ओ० १६१,१६३. रा० ७५२
धम्मायरिय [धर्माचार्य] ओ० २१,५४,११७. रा०
७१४,७७६,७९६
धम्मिट्ठ [धर्मिष्ठ] ओ० १६१,१६३. रा० ७५२
धम्मिय [धार्मिक] ओ० ५२,५७,१६१,१६३. रा०
२७०,२८८,६६७,६८७,७५२,७५३. जी०
३।४३५,४५४
धम्मोवदेसग [धर्मोपदेशक] ओ० २१,५४,११७.
रा० ७१४,७९६
√धर [धृ]—धरंति जी० ३।७३३
धर [धर] ओ० ५,८,१६,२१,४७,४६,५४,७२.
रा० ८,२२,१४५,२६२,६६४,७७१. जी०
३।२६८,२७४,२८७,४५७,५६२,५८४,६७२
७०२,८०८,८२६
धरण [धरण] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।२४४
से २४७,२५०,४४८
धरणितल [धरणितल] ओ० २१,५४. रा० ८,
५६,२६२. जी० ३।४५७
धरणियल [धरणितल] जी० ३।४५७,८८२
धरिज्जमाण [ध्रियमाण] ओ० ६३,६५. रा०
६६२,७००,७१६
धरिसणा [धर्षणा] ओ० ४६
धरेज्जमाण [ध्रियमाण] रा० ६८३
धव [धव] ओ० ६,१०. जी० १।७२; ३।३८८
५८३
धवल [धवल] ओ० १६,४६,४७.६३,६४. रा०
२५५,२५६,२८५. जी० ३।३७२,४१६,४१७,
४५१,५६६,५९७
धवलहर [धवलगृह] जी० ३।५९४
धाई [धात्री] रा० ८०४
धाउरत्त [धातुरक्त] ओ० १०७,११७,१३०
धातइसंड [धातकीषण्ड] जी० ३।७११
धायइरुक्ख [धातकीरुक्ष] जी० ३।८०८
धायइवण [धातकीवन] जी० ३।८०८
धायइसंड [धातकीषण्ड] जी० ३।७०८,७१५
से ७२०,७६८,७७०,७७१,७९६ से ८००,
८०२ से ८०४,८०६,८०८,८०९,८३८।२३,२५
धायई [धातकी] जी० ३।७७५,८०८
धायईसंड [धातकीषण्ड] जी० ३।८०९,८३८।२४
धायतिसंड [धातकीषण्ड] जी० ३।७६६

धारग [धारक] ओ० ६७

धारणा [धारणा] रा० ७४०,७४१

धारि [धारिन्] ओ० ४७,५१,७२. जी० ३।५६७, १०१५

धारिणी [धारिणी] ओ० १५. रा० ५

धारित्तए [धारयितुम्] ओ० १०५

धारेमाण [धारयत्] रा० २५५. जी० ३।४१६

धिइ [धृति] ओ० ४६ जी० ३।११८

धिति [धृति] जी० ३।११८,११६

धीर [धीर] ओ० ४६

धुरा [धूर्] ओ० ६४

धुराग [धूर्क] रा० १७३,६८१. जी० ३।२८५

धुव [ध्रुव] रा० २००. जी० ३।५६,२७२,३५०, ७६०

धूमकेतु [धूमकेतु] ओ० ५०

धूमप्पभा [धूमप्रभा] जी ०३।४१,४३,४४,१०१, ११०,११४

धूमवट्टि [धूपवर्ति] जी० ३।४५७

धूमिया [धूमिका] जी० ३।६२६

धूया [दुहितृ] जी० ३।६११

धूलि [धूलि] जी० ३।६२३

धूव [धूप] ओ० २,५५. रा० ६,१२,३२,१३२, २३६,२५८,२७६,२८१,२६०,२६२ से २६७, ३००,३०५,३१२,३५१,३५५,३५६. जी० ३।३०२,३७२,३६८,४१६,४४५,४४८,४५६ से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,५२०,५५४, ६७६,६०८

धूवघडिया [धूपघटिका]रा० २३६. जी०३।३६८, ४१२,६०३

धूवघडी [धूपघटी] रा० १३२. ३।३०२

धूववट्टी [धूपवर्ति] रा० २६२

धोत [धौत] जी० ३.५६६

धोय [धौत] ओ० १६,४७. रा० २६. जी० ३।२८२,५६०

न

न [न] ओ० ४७. रा० २००. जी० ३।२७२

नई [नदी] ओ० ६६. जी० ३।७७५

नईमह [नदीमह] रा० ६८८

नउल [नकुल] रा० ७७

नंगलिय [लाङ्गलिक] ओ० ६८

नंदणवण [नन्दनवन] रा० १७३,६७०. जी० ३।२८५,५६७

नंदा [नन्दक] रा० २८२. जी० ३।४४८

नंदा [नन्दा] रा० २३३,२७३,२८८,३१२,३५०, ६५६. जी ३।५५६

नंदाचंपापविभत्ति [नन्दाचम्पाप्रविभक्ति] रा० ६३

नंदापविभत्ति [नन्दाप्रविभक्ति] रा० ६३

नंदिघोस [नन्दिघोष] रा० ७७,१७३,६८१. जी० ३।५६८

नंदिमुयंग [नन्दिमृदङ्ग] जी ३।७८

नंदियावत्त [नन्द्यावर्त] ओ० १२. रा० २६१

नंदिरुक्ख [नन्दिरूक्ष] जी० ३।३८८ से ३६०

नंदिस्सर [नन्दिस्वर] जी० ३।५६८

नंदी [नन्दी] रा० ७४१,७४३

नंदीमुइंग [नन्दीमृदङ्ग] रा० ७७

नंदीमुह [नन्दीमुख] जी० ३।२७५

नंदीसरवर [नन्दीश्वरवर] रा० ५६

नक्कछिण्णग [नक्रच्छिन्नक] ओ० ६०

नक्ख [नख] २५४

नक्खत्त [नक्षत्र] रा० १२४. जी २।१८; ३।७०३, ७२२,८३०,८३८।३,५,८,११,१३,२२,३०, १००७

नक्खत्तविमाण [नक्षत्रविमान] जी० २।४३; ३।१००६

नखवेदणा [नखवेदना] जी० ३।६२८

नग [नग] जी० ३।५६६

नगर [नगर] ओ० १८. रा० ६६७,७५४,७५६ ७६२,७६४,७७४. जी० ३।५६६

नगरगुण [नगरगुण] ओ० १६५।१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नगरदाह [नगरदाह] जी० ३।६२६
नगरमाण [नगरमान] ओ० १४६
नगरी [नगरी] ओ० १६. रा० ६६६,६७०,६८०, ६८१,६८३,६८५,६८७,६८८,६६६,७००, ७०२ से ७०४,७०६,७०८,७१० से ७१२, ७२६,७५२,७७५,७७६,७८०
नग्गइ [नग्नजित्] ओ० ६६
नग्गभाव [नग्नभाव] ओ० १५४,१६५,१६६
√नच्च [नृत्]—नच्चिज्जइ. रा० ७८३
नच्चंत [नृत्यत्] ओ० ४६
नच्चणसील [नृत्यनशील] ओ० ६५
नट्ट [नाट्य] ओ० ६८. रा० ७,७८,८०६. जी० ३।२८५,३५०
नट्टविधि [नाट्यविधि] रा० ७६
नट्टविहि [नाट्यविधि] रा० ६३,६५,११८,२८१
नट्टसज्ज [नाट्यसज्ज] रा० ६६,७०
नट्ठ [नष्ट] रा० २८१
नड [नट] ओ० १,२
नडपेच्छा [नटप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५
नत्तुय [नप्तृ] रा० ७५०,७५२
√नद [नद्]—नदंति. जी० ३।४४७
नदी [नदी] जी० ३।८४१
नपुंसग [नपुंसक] जी० २।६६ से ११६, १२०, १२१,१२३,१२५ से १२६,१३२ से १३८, १४० से १५०
नपुंसगलिंगसिद्ध [नपुंसकलिङ्गसिद्ध] जी० १।८
नपुंसगवेद [नपुंसकवेद] जी० २।१३६, १४०; ६।१२४,१२८
नपुंसगवेदग [नपुंसकवेदक] जी० ६।१३०
नपुंसगवेय [नपुंसकवेद] जी० १।६६,१३६
नपुंसगवेयग [नपुंसकवेदक] जी० ६।१२१
नपुंसय [नपुंसक] जी० २।११७ से ११६, १२२ से १२४
√नमंस [नमस्य्]—नमंसइ. रा० ७१४—नमंसंति. रा० १०—नमंसति. रा० १२०—नमंसह. रा० ७३—नमंसिज्जाह. रा० ७०६—नमंसिस्संति. रा० ७०४
नमंसण [नमस्यन] रा० ६८७
नमंसणिज्ज [नमस्यनीय] ओ० २
नमंसित्तए [नमस्यितुम्] रा० ६
नमंसित्ता [नमस्यित्वा] ओ० ६६. रा० १०. जी० ३।४७१
नमिय [नमित] रा० २२८. जी० ३।६७२
नमो [नमस्] रा० ८
नय [नय] ओ० २५. रा० ६८६
√नय [नद्]—नयंति. रा० २८१
नयण [नयन] ओ० १,१५,६६. रा० २२८. जी० ३।५६६
नयरी [नगरी] ओ० १,१६,६६. रा० १,२,८, ६,१५,५६,६७७ से ६७६,६८३,६८६ से ६८६,७५०,७५२
नर [नर] ओ० ५,८,६४,६६. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१४१,१७३,१६२. जी० ३।२६६, २७४,३००,५६७
नर (कंता) [नरकान्ता] रा० २७६
नरक [नरक] जी० ३।८६
नरकंठ [नरकण्ठ] रा० १५५,२५८. जी० ३।३२८
नरकंठग [नरकण्ठक] जी० ३।४१६
नरकंता [नरकान्ता] जी० ३।४४५
नरग [नरक] ओ० ७१. जी० ३।८६,१२७
नरपवर [नरप्रवर] रा० ६७१
नरय [नरक] रा० ७५०,७५१. जी० ३।८३, ८७,११६,१२६।२
नरयपाल [नरकपाल] रा० ७५१
नरयावास [नरकावास] जी० ३।७७,१२७
नरवइ [नरपति] ओ० १
नरवसभ [नरवृषभ] जी० ३।१२६।१
नरिंद [नरेन्द्र] ओ० २१,५४
नलवण [नलवन] ओ० २६
नलिण [नलिन] ओ० १२,१५०. रा० १७४, ८११. जी० ३।५६५

नलिणा [नलिना] जी० ३।६८६
नव [नवन्] ओ० ६३. रा० ८०१. जी० २।२०
नव [नव] जी० ३।३११
नवंग [नवाङ्ग] ओ० १४८,१४९
नवणिहिपति [नवनिधिपति] जी० ३।५८९
नवम [नवम] जी० ३।३५६
नवय [नवक] रा० ७५९
नवरं [दे०] जी० १।७७
नवविह [नवविध] जी० १।१०; ९।२५५
नह [नख] जी० ३।३२३
नाइय [नादित] रा० ५५,२८०,६५७.
जी० ३।११८,११९,४४८,८५७,८६३
नाउं [ज्ञातुम्] जी० ३।८३८।२६
नाग [नाग] ओ० १९,६८. रा० १६२,२८२.
जी० ३।२३२,४४८,७३३,७८०,९५०
नागकुमार [नागकुमार] जी० २।३७; ३।२४४,
२४८
नागकुमारराय [नागकुमारराज] जी० ३।२४४
से २४७,२४९,२५०,६५७,६५९,६६०
नागकुमारिंद [नागकुमारेन्द्र] जी० ३।२४४ से
२४७,२४९,२५०,६५७,६५९,६६०
नागदंत [नागदन्त] रा० १३२,२४०
नागदंतग [नागदन्तक] रा० १४०.
जी० ३।३९८
नागदंतय [नागदन्तक] रा० १५३,२३६.
जी० ३।३९७,३९८,४०३
नागपडिमा [नागप्रतिमा] रा० २५७.
जी० ३।४१८
नागमंडलपविभत्ति [नागमण्डलप्रविभक्ति]
रा० ९०
नागमह [नागमह] रा० ६८८
नागरपविभत्ति [नागरप्रविभक्ति] रा० ९२
नागराय [नागराज] जी० ३।७४८,७५०
नागलया [नागलता] रा० १४५. जी० ३।२६८
नागलयापविभत्ति [नागलताप्रविभक्ति] रा० १०१
नाडय [नाटक] रा० ७१०,७७४
नाण [ज्ञान] ओ० १९,२६. रा० ८,६८६,७३८,
७६८. जी० १।१४,१०१; ३।१२७,१६०;
९।६६
नाणत्त [नानात्व] रा० ७६२,७६३
नाणसंपण्ण [ज्ञानसम्पन्न] रा० ६८६
नाणा [नाना] रा० ६९,७०,१३०,१३२,१६०,
१९०,२२८,२५६,२७०,७६८. जी० १।१३६;
३।२६४,२८८,३११,३८७,४०७,४१७,६४३,
६७२
नाणाविह [नानाविध] जी० १।७२; ३।२७७,
३७२
नाणि [ज्ञानिन्] जी० २।३०; ३।१०४
नाणोवलंभ [ज्ञानोपलम्भ] रा० ७६८
नातव्व [ज्ञातव्य] रा० ३।६८८
नादित [नादित] जी० ३।४४६
नाणा [नाना] जी० ३।३३३
नाभि [नाभि] रा० २५४
नाम [नामन्] ओ० १,२. रा० १,२,९,५९,१२४,
२४९,२८१,६६८,६७२,६७३,६७६ से ६७९,
६८६,६८७,६८९,७०३,७०६,७१३,७३२,
७६९. जी० ३।३,४,१२८,३००,४१०,४४७,
५९३,५९४,६३२,६३८,६३९,६६०,६६६,
६६८,७११,७५६,७६४,८१४,८३१,८३८।३,
८५१,९३३,१०५६
नामग [नामक] जी० ३।२४
नामाधिज्ज [नामधेय] रा० ८०३
नामधेज्ज [नामधेय] जी० ३।६९९,९७२
नामधेय [नामधेय] रा० ८,७१४,७९६
नायव्व [ज्ञातव्य] जी० ३।१२९।३
नायाधम्मकहाधर [ज्ञाताधर्मकथाधर] ओ० ४५
नारय [नारद] ओ० ९६
नाराय [नाराच] जी० १।११९
नारायग्ग [नाराचाग्र] जी० ३।८५
नारि [नारी] ओ० ६९
नारिकंता [नारीकान्ता] रा० २७९.
जी० ३।४४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नारी [नारी] रा० १७३

नाल [नाल] जी० ३।६४३

नालिएर [नालिकेर] जी० १।७२

नाली [नाडी] जी० ३।७८

नावा [नौ] जी० ३।७९३

नासा [नासा] रा० २८५. जी० ३।४५१

नासिगा [नासिका] रा० २५४

निउण [निपुण] ओ० ६३. रा० ६९,७०,६७२, ७५९ से ७६१, ८०४. जी० ३।११८

निंदणा [निन्दना] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ८१६

निंब [निम्ब] जी० १।७१

निकर [निकर] ओ० १३

निकुरंब [निकुरम्ब] रा० ७०३. जी० ३।२७३

निकुरुंब [निकुरुम्ब] ओ० १९

निक्कंकड [निष्कङ्कट] ओ० १२,१९४. रा० २१, २३,३२,३४,३६,१२४,१४५,१५७. जी० ३।२६९

निक्कोह [निष्क्रोध] ओ० १६८

निक्खमंत [निष्क्रामत्] जी० ३।८३८।१४

निक्खमण [निष्क्रमण] जी० ३।५९४,६१७

निगम [निगम] ओ० १८,६८,८९ से ९३,९५, ९६,१५५,१५८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७,७५४,७५६,७६२,७६४

√निगिण्ह [नि+ग्रह्]—निगिण्हइ. रा० ६८३

निग्गंथ [निर्ग्रन्थ] ओ० २४,७९ से ८१,१२०, १६२,१६४. रा० ६३,६५,७३,७४,११८, ६९५,६९८,७३८,७५२,७८९

√निग्गच्छ [निर्+गम्]—निग्गच्छइ. ओ० ६७. रा० २७७—निग्गच्छंति. ओ० ७०. रा० ७४ —निग्गच्छति. रा० २८३

निग्गच्छमाण [निर्गच्छत्] ओ० ६८

निग्गच्छित्ता [निर्गत्य] ओ० ६९. रा० २८३

निग्गमण [निर्गमन] जी० ३।८४१

निग्गय [निर्गत] रा० ६,७५४

निग्गह [निग्रह] ओ० ३७. रा० ६८६

निग्गुण [निर्गुण] रा० ६७१

निग्घोस [निर्घोष] जी० ३।४४८,५५७

निघंटु [निघण्टु] ओ० ९७

निघस [निकष] रा० २८. जी० ३।२८१

निचय [निचय] रा० ३१

निचिय [निचित] ओ० १९. रा० १२,७५५,७५८, ७५९,७७२. जी० ३।११८,५९६

निच्च [नित्य] ओ० ४६. रा० १५. जी० ३।३९०, ५८४,८३८।१७

निच्छय [निश्चय] ओ० २५. रा० ६७५,६८६

निच्छोडणा [निश्छोटना] रा० ७७६

निच्छोडित्तए [निश्छोटयितुम्] रा० ७७६

निजुद्ध [नियुद्ध] ओ० १४६. जी० ८०६

निज्जरा [निर्जरा] ओ० १२०,१६२,१६६. रा० ६९८,७५२,७८९

निज्जिय [निर्जित] ओ० १४. रा० ६७१

निज्जीव [निर्जीव] ओ० १४६. रा० ८०६

निज्जुत्त [निर्युक्त] जी० ३।२८५

निट्ठिय [निष्ठित] ओ० १८३,१८४. रा० ७७४

निट्ठुर [निष्ठुर] रा० ७६५. जी० ३।११०

निडाल [ललाट] जी० ३।३०३,५९६

√निद्दा [नि+द्रा]—निद्दाएज्ज. जी० ३।११९

निद्ध [स्निग्ध] जी० १।५,५०; ३।२७५,५९६

निद्धंत [निर्ध्मात] जी० ३।५९०,५९६

निद्धूम [निर्धूम] जी० ३।५९०

निद्धूय [निर्धूत] ओ० ५,८. जी० ३।२७४

निप्पंक [निष्पङ्क] ओ० १२. रा० २१,२३,३२, ३४,३६,१२४,१४५,१५७. जी० ३।२६९

निप्पकंप [निष्प्रकम्प] ओ० ४६

निप्पच्चक्खाण [निष्प्रत्याख्यान] रा० ६७१

निप्फन्न [निष्पन्न] जी० ३।६०२

निबद्ध [निबद्ध] रा० ७७२

निब्भंछणा [निर्भर्त्सना] रा० ७७६

निब्भंछित्तए [निर्भर्त्सितुम्] रा० ७७६

निभ [निभ] रा० ५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निमज्जग [निमग्नक] ओ० ६४
निमित्त [निमित्त] जी० ३।१२६।६
निमिसिय [निमिषित] जी० ३।११६
निमीलिय [निमीलित] जी० ३।१२६।८
निम्मल [निर्मल] ओ० १२,१६,४७. रा० २१, २३,३२,३४,३६,१२४,१३०,१४५,१४६,१५७. जी० ३।३२२,५६६,५६७
निम्माण [निर्माण] ओ० १६८
निम्माय [निर्माय] ओ० १६८
निम्मिय [निर्मित] रा० १७३. जी० ३।२८५
निम्मेर [निर्मेर] रा० ६७१
नियइपव्वय [नियतिपर्वत] रा० १८१
नियइपव्वयग [नियतिपर्वतक] रा० १८०
√**नियंस** [नि+वस्]—नियंसेइ. रा० २६१ —नियंसेति. रा० २८५
नियंसण [निवसन] रा० ६६
नियंसेत्ता [निवस्य] रा० २८५
नियग [निजक] रा० १२०.७७४
नियडि [निकृति] रा० ६७१
नियम [नियम] ओ० २५. रा० ६८६,७२३. जी० १।३०,६५,८७,६६,११६,१३३,१३६; ३।१०४; १२६।३; ८३८।१४,६६६,११०८
नियय [नियत] जी० ३।२७२,७६०
निरंगण [निरङ्गण] ओ० २७. रा० ८१३
निरंतर [निरन्तर] रा० १२.७५५,७७२
निरंतरिय [निरन्तरित] रा० १३०
निरय [निरय] जी० ३।१२६,१२७।२
निरयभव [निरयभव] जी० ३।११६, १२६।५
निरयवेयणिज्ज [निरयवेदनीय] रा० ७५१
निरयाउय [निरयायुष्क] रा० ७५१
निरयावास [निरयावास] जी० ३।१२, ७७,१२७
निरवसेस [निरवशेष] जी० ३।१८४, ४१२,४२६, ७५०
निरालंबण [निरालम्बन] ओ० २७. रा० ८१३
निरालय [निरालय] ओ० २७. रा० ८१३
निरावरण [निरावरण] ओ० १५३,१६५,१६६

√**निरुंभ** [नि+रुध्]—निरुंभइ ओ० १८२
निरुंभित्ता [निरुध्य] ओ० १८२
निरुत्त [निरुक्त] ओ० ६७
निरुवलेव [निरुपलेप] ओ० २७. रा० ८१३. जी० ३।५६८
निरुवसग्ग [निरुपसर्ग] जी० ३।४८८
निरुवहय [निरुपहत] ओ० १६. जी० ३।५६६
निरेयन [निरेजन] ओ० १८३,१८४
निरोदर [निरोदर] जी० ३।५६७
निरोय [निरोग] जी० ३।२७५
निरोयय [निरोगक] ओ० ६
निरोह [निरोध] ओ० ३७
निलाड [ललाट] रा० ७०
निल्लेव [निर्लेप] जी० ३।१६६,१६७
निल्लेवण [निर्लेपन] जी० ३।१६६
निल्लोह [निर्लोभ] ओ० १६८
√**निवाड** [नि+पातय्]—निवाडेइ रा० २६२
निवाडित्ता [निपात्य] रा० २६२
निवाय [निपात] जी० ३।८६
√**निवेद** [नि+वेदय्]—निवेदिज्जासि. ओ० २१
√**निवेय** [नि+वेदय्]—निवेएमो. रा० ७१३
√**निवेस** [नि+वेशय्]—निवेसेइ. ओ० २१. रा० ८
निवेसेत्ता [निवेश्य]—ओ० २१. रा० ८
निव्वण [निर्व्रण] जी० ३।५६६
√**निव्वत्त** [निर्+वर्तय्]—निव्वत्तेज्जासि रा० ७५१
निव्वय [निर्व्रत] रा० ६७१
निव्वाघाइम [निर्व्याघातिन्, निर्व्याघातिम] ओ० ३२. जी० ३।१०२२
निव्वाण [निर्वाण] ओ० १६५।१६
निव्विइय [निर्विकृतिक] ओ० ३५
निव्विण्ण [निर्विण्ण] रा० ७६५
निव्विण्णाण [निर्विज्ञान] रा० ७३२,७३७,७६५
निव्वितिगिच्छ [निर्विचिकित्स] ओ० १२०,१६२
निव्विसय [निर्विषय] रा० ७६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्वुइकर [निर्वृतिकर] रा० १७३. जी० ३।३०५, ६७२

निव्वुतिकर [निर्वृतिकर] रा ३०,१३५

निसण्ण [निषण्ण] ओ० ११७. रा० ७९६. जी० ३।८९६

निसन्न [निषण्ण] रा० २२५

निसम्म [निशम्य] रा० १३

निसामित्तए [निशमितुम्] रा० ७७५

निसिय [निशित] रा० २४९

√निसिर [नि+सृज्]—निसिरंति. रा० १०—निसिरति. रा० ६५—निसिरेइ. रा० ७९४

निसिरित्तए [निसर्ष्टुम्] रा० ७५८

निसीइत्ता [निषद्य] ओ० २१

निसीदण [निषीदन] ओ० ४०

√निसीय [नि+षद्]—निसीयइ. ओ० २१—निसीयंति. रा० ४८—निसीयइ. रा० ७५३

निसीहिया [निषीधिका, नैषेधिकी] रा० १३१, १३५

निस्संसकिय [निःशङ्कित] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८९

निस्सास [निःश्वास] रा० ७९६,८१६

निस्सील [निःशील] रा० ६७१

निस्सेयस [निःश्रेयस] ओ० ५२. रा० २७६,६८७

निहट्टु [निहृत्य] रा० ८

निहय [निहत] ओ० १४. रा० ६७१

नीरय [नीरजस्] ओ० १२,१८३,१८४

नील [नील] ओ० ४,१२. रा० २२,१२८,१७०, ६६४,७०३. जी० १।५,५०; ३।२२,४५, २७३,२९०,१०७५,१०७६

नीलच्छाय [नीलच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, १७३. जी० ३।२७३

नीललेस [नीललेश्य] जी० ९।१९३

नीललेसा [नीललेश्या] जी० ३।९९,१००

नीललेस्स [नीललेश्य] जी० ९।१८५,१९६

नीललेस्सा [नीललेश्या] जी० १।२१

नीलवंत [नीलवत्] जी० ३।४४५,६३२,६५७,६५९ ६६८,७९५

नीलवंतद्दह [नीलवद्द्रह] जी० ३।६३९,६४०,६४२ ६५९ से ६६१,६६६

नीलवंता [नीलवती] जी० ३।६५९

नीलुप्पल [नीलोत्पल] ओ० १३. रा० २६

नीलोभास [नीलावभास] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३

नीव [नीप] जी० ३।३८८

नीसास [निःश्वास] रा० २८५,७७२. जी० ३।५९८

नीहार [नीहार] रा० ७७२

नूणं [नूनम्] जी० ३।९८२

नेम [नेम] रा० १७५,१९०. जी० ३।२६४,२८७, ३००

नेयव्व [नेतव्य] जी० २।१५०; ३।३०९

नेरइय [नैरयिक] रा० ७५१. जी० १।५१,५४, ६१,८२,८७,९२,९६,१०१,११९,१२१,१२३, १२८,१३६; २।९९,१००,१०८,१२७,१३४, १३५,१३९,१४८,१४९; ३।१,२,७७,८८,९३, ९५,९६,९८,१०३,१०६ से ११२,११८,११९, १२१ से १२३,१२८,१२९।४,६,७,८,१५५,१५१ १९२; ६।१,७,१२; ७।१ से ३, १९,२२; ९।२१०,२१३,२२०

नेरइयत्त [नैरयिकत्व] जी० ३।१२७

नेल [नैल] ओ० १९

नेसज्जिय [नैषद्यिक] ओ० ३६

नेहाणुराग [स्नेहानुराग] जी० ३।६१३

नो [नो] रा० ६२. जी० १।२४

नोअपज्जत्तग [नोअपर्याप्तक] जी० ९।८८,९४

नोअपरित्त [नोअपरीत] जी० ९।७५,८६,८७

नोअभवसिद्धिय [नोअभवसिद्धिक] जी० ९।१०९

नोअसण्णि [नोअसंज्ञिन्] जी० १।१३३; ९।१०१, १०४,१०८

नोइंदिय [नोइन्द्रिय] जी० १।१३३

नोपज्जत्त [नोपर्याप्त] जी ९।९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नोपज्जत्तग [नोपर्याप्तक] जी० ९।८८,९४

नोपरित्त [नोपरीत] जी० ९।७५

नोबायर [नोबादर] जी० ९।९५,९८ से १००

नोभवसिद्धिय [नोभवसिद्धिक] जी० ९।१०९

नोसण्णा [नोसंज्ञा] जी० १।१३२

नोसण्णि [नोसंज्ञिन्] जी० १।८६,१३३; ९।१०१, १०४,१०८

नोसुहुम [नोसूक्ष्म] जी० ९।९५,९८ से १००

(प)

पइट्ठा [प्रतिष्ठा] ओ० १९,२१,५४

पइट्ठाण [प्रतिष्ठान] ओ० १६८. रा० १३०, १३१,१४७,१४८,१६०,२८०. जी० ३ २६४, ३०१,३२१

पइट्ठिय [प्रतिष्ठित] ओ० १९५।१,२. जी० ३।१०५७ से १०६४

पइण्णा [प्रतिज्ञा] ओ० १४२,१४४. रा० ७४८ से ७५०,७५२,७५४,७५६,७५८,७६०,७६२, ७६४,७७३,८००,८०२

पइभय [प्रतिभय] ओ० ४६

पइरक्खिया [पतिरक्षिता] ओ० ९२

पइरिक्क [दे०] जी० ३।५९४

पइसेज्जा [पतिशय्या] ओ० ९२

पईव [प्रदीप] रा० ७७२

√ **पउंज** [प्र+युज्]—पउंजइ. रा० ६७१. —पउंजंति ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८

पउंजमाण [प्रयुञ्जान] ओ० ६४

पउंजियव्व [प्रयोक्तव्य] रा० ७७६

पउट्ठ [प्रकोष्ठ] ओ० १९. जी० ३।५९६

पउत [प्रयुत] जी० ३।८४१

पउम [पद्म] ओ० १२,१९,१५०. रा० २३,१३१, १३८,१४७,१४८,१९७,२७९,२८०,२८८, ८११. जी० ३।२५९,२६६,२९१,३०१,४४६, ४५४,५९७,५९८,६४२,६४३,६५२ से ६५४, ६५७,६५८,८२६,८४१,९३७

पउमगंध [पद्मगन्ध] जी० ३।६३१

पउमजाल [पद्मजाल] रा० १९१. जी० ३।२६५

पउमद्दह [पद्मद्रह] जी० ३।४४५

पउमपत्त [पद्मपत्र] रा० २४. जी० ३।२७७

पउमपम्हगोर [पद्मपक्ष्मगौर] ओ० ५१. जी० ३।१०९४

पउमप्पभा [पद्मप्रभा] जी० ३।६८३

पउमरुक्ख [पद्मरूक्ष] जी० ३।८२९

पउमलया [पद्मलता] ओ० ११,१३. रा० १७,१८, २०,३२,३४,३७,१२९,१४५,१८६. जी० ३।२६८,२७७,२८८,३००,३०८,३११,३१८, ३३७,३५९,३७२,३९०,३९९,५८४,९०४

पउमलयापविभत्ति [पद्मलताप्रविभक्ति] रा० १०१

पउमवण [पद्मवन] जी० ३।८२९

पउमवरवेइया [पद्मवरवेदिका] रा० १७४,१८९ से १९८,२००,२०१,२३३,२६३. जी० ३।२१७,२५९,२६४ से २७०,२७२,२७३, ३६२,३९५,६३२,६३९,६६१,६६८,६७८, ६८३,६८९,७०६,७३६,७५४,७६२,७६९, ८५७

पउमवरवेदिया [पद्मवरवेदिका] जी० ३।२१७, २६३,२६९,२८६,२९८,७९८,८१२,८२३, ८३९,८५०,८८२,९११

पउमसंड [पद्मषण्ड] जी० ३।८२९

पउमा [पद्मा] जी० ३।६८३,९२०

पउमासण [पद्मासन] रा० १८१,१८३. जी० ३,२९३,३६९,३७१

पउमुत्तर [पद्मोत्तर] जी० ३।६०१

पउमुप्पल [पद्मोत्पल] रा० ८११

पउर [प्रचुर] ओ० १,१४,४६,७४,१४१. रा० ६७१,७९९

पउसिया[1] [बकुसिका] ओ० ७०

पएस [प्रदेश] ओ० १९५।१०. रा० ४०, १३२, १५४. जी० १।५,३३; ३।३०२,३९८,५७१, ७१५,८०८,८१६

पएसघण [प्रदेशघन] ओ० १९५।३

१. बउसियाहिं [राय० सू० ८०४]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पएसि [प्रदेशिन्] रा० ६७१ से ६७५,६७६ से ६८१,७००,७०२ से ७०४,७०८ से ७१०, ७१८ से ७२०,७२३ से ७२६,७२८ से ७३४, ७३६ से ७३६, ७४६ से ७८२,७८६ से ७६१, ७६३ से ७६६

पओग [प्रयोग] ओ० १४,१४१. रा० ६७१,७६१, ७६६

पओयधर [प्रतोदधर] ओ० ५६

पओयलट्ठि [प्रतोदयष्टि] ओ० ५६

पओहर [पयोधर] रा० १३३. जी० ३।३०३

पंक [पङ्क] ओ० ८६,६२,१५०. रा० ८११. जी० ३.६२३

पंकप्पभा [पङ्कप्रभा] जी० ३।३६,४१,४३,४४, १००,११३

पंकबहुल [पङ्कबहुल] जी० ३।६,६,१६,२५,३०, ६३

पंकरय [पङ्करजस्] ओ० १५०. रा० ८११

पंकोसण्णग [पङ्कावसन्नक] ओ० ६०

पंच [पञ्चन्] ओ० ५०. रा० २४. जी० १।३४

पंचग्गिताव [पञ्चाग्नितापं] ओ० ६४

पंचम [पञ्चम] ओ० ६७,१७४,१७६. जी० ३।३३८

पंचमा [पञ्चमी] जी० १।१२३;२।१४८,१४६; ३।२,३६

पंचमासिय [पाञ्चमासिक] ओ० ३२

पंचमी [पञ्चमी] जी० ३।४,७४,८८,६१,१६२, १११।२

पंचविध [पञ्चविध] जी० २।१०१,१०२; ३।१३०;४।२५;६।१४८

पंचविह [पञ्चविध] ओ० १५,३७,४०,४२,६६, ७०. रा० २७४,२७५,६७२,६८५,७१०, ७३६,७५१,७७४,७७८,७६७. जी० १।५, ६६,११८;२.४,१८;३।१३१,४४०,४४१, ८३८।२१,६७६;४।१;६.१५६,१५८

पंचसयर [पञ्चसप्तति] जी० ३।८३८।३१

पंचणउइ [पञ्चनवति] जी० ३।७१४

पंचणउति [पञ्चनवति] जी० ३।७६८

पंचनउति [पञ्चनवति] जी० ३।७६६

पंचाणउत [पञ्चनवति] जी० ३।३६१

पंचाणउति [पञ्चनवति] जी० ३।७२३

पंचाणुव्वइय [पञ्चानुव्रतिक] ओ० ५२,७८

पंचिंदिय [पञ्चेन्द्रिय] ओ० १५,७३,१४३,१८२. रा० ६७२,६७३,८०१. जी० १।५५;२।१०१, ११३,१२२,१३८,१४६;३।१३०;४।१,४,६, ६,१०,१५,१६,२४,२५;८।५;६।१ से ३,७

पंचेंदिय [पञ्चेन्द्रिय] जी० १।८३,६१,६७,६८, १०१ से १०३,११६,११७,१२५,१३६; २।१०४,१०५,१३६,१३८,१४६,१४६; ३।१३७ से १४७,१६१ से १६३,१६६,१११५; ४।६,१८,२०,२१;६।५,७,१६७,१६६,२२१, २२५,२२६,२३१,२५६,२५६,२६०,२६४, २६६

पंजर [पञ्जर] रा० १३७. जी० ३०७

पंजलिउड [प्राञ्जलिपुट] ओ० ४७,५२. रा० ६०, ६८७,६६२,७१६

पंजलिकड [कृतप्राञ्जलि] ओ० ७०

पंडग [पण्डक] ओ० ३७

पंडगवण [पण्डकवन] रा० १७३,२७६. जी० ३।२८५,४४५

पंडरग [पण्डरक] जी० ३।८६३

पंडिय [पण्डित] ओ० १४८,१४६. रा० ८०६,८१०

पंडु [पाण्डु] ओ० ५,८. रा० ७८२. जी० ३।२७४

पंडुर [पाण्डुर] ओ० १,१६,२२,४७. रा० ७२३, ७७७,७७८,७८८. जी० ३।५६६

पंडुरतल [हम्मिय] [पाण्डुरतलहर्म्य] जी० ३।५६४

पंडुरोग [पाण्डुरोग] जी० ३।६२८

पंत [प्रान्त्य] रा० ७७४

पंताहार [प्रान्त्याहार] ओ० ३५

पंति [पङ्क्ति] ओ० ६६. रा० ७५,२६७,३०२, ३२५,३३०,३३५,३४०. जी० ३।२६७,३१८, ३५५,४६२,४६७,४६०,४६५,५००,५०५,५६४,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८३८।७ से ६

पंथ [पन्थ,पथिन्] रा० ७३७

पंथिय [पान्थिक] रा० ७८७,७८८

पंसुविट्ठि [पांशुवृष्टि] जी० ३।६२६

पकड्ढिज्जमाण [प्रकृष्यमाण] ओ० ६९

√पकर [प्र+कृ]—पकरेंति. ओ० ७३. जी० ३।१२४.—पकरेति. जी० ३।२१०

पकरेत्ता [प्रकृत्य] ओ० ७३

पकरणता [प्रकरण] जी० ३।२१०

पकरणया [प्रकरण] जी० ३।२११

पकाम [प्रकाम] रा० ७३२,७३७

पकामरसभोइ [प्रकामरसभोजित्] ओ० ३३

पकार [प्रकार] जी० २।६८; ३।५९५

पकारवग्ग [पकारवर्ग] रा० ६६

पक्कणी [पक्कणी] ओ० ७०. रा० ८०४

पक्किट्टग [पक्वेष्टक] जी० ३।८४५

पक्कीलित [प्रक्रीडित] जी० ३।६१७

पक्कीलिय [प्रक्रीडित] रा० १७३. जी० ३।२८५

पक्ख [पक्ष] ओ० २८. रा० १३०,१६०,१९७. जी० ३।२६४,२६६,३००,८४१

पक्खंदोलग [पक्ष्यन्दोलक,[1] पक्षान्दोलक[2]] रा० १८०. जी० ३।२९२,८५७

पक्खंदोलय [पक्ष्यन्दोलक, पक्षान्दोलक] रा० १८१. जी० ३।२९३,८५७

पक्खपुडंतर [पक्षपुटान्तर] रा० १९७

पक्खपेरंत [पक्षपर्यन्त] रा० १९७. जी० ३।२६६

पक्खबाहा [पक्षबाहु] रा० १३०,१६०,१९७. जी० ३।२६४,२६६,३००

√पक्खाल [प्र+क्षालय्]—पक्खालेइ. रा० ३५१. —पक्खालेति रा० २८८. जी० ३।४५४

१. यत्र तु पक्षिण आगत्यात्मानमन्दोलयन्ति ते पक्ष्यन्दोलकाः [राय० वृ०]।

२. 'गिरिपक्खंदोलया' गिरिपक्षे—पर्वतपार्श्वे छिन्नटङ्कगिरौ वात्मानमन्दोलयन्ति ये ते तथा [ओ० वृ०]।

पक्खालण [प्रक्षालन] ओ० १११ से ११३,१३७, १३८

पक्खालिय [प्रक्षालित] ओ० ६८

पक्खालेत्ता [प्रक्षाल्य] रा० २८८. जी० ३।४५४

पक्खासण [पक्ष्यासन, पक्षासन] रा० १८१,१८३. जी० ३।२९३

पक्खि [पक्षिन्] रा ६७१,७०३,७१८. जी० १।१०१; ३।८८,१६५,७२१

√पक्खिव [प्र+क्षिप्]—पक्खिवइ. जी० ३।५१६. —पक्खिवेज्जा. जी० ३।१०९

पक्खिव [प्र+क्षेपय्]—पक्खिवावेमि. रा० ७५४

पक्खिवित्ता [प्रक्षिप्य] जी० ३।५१६

पक्खुभित [प्रक्षुभित] जी० ३।८४२,८४५

पक्खुभिय [प्रक्षुभित] ओ० ४६,५२. रा० ६८७

पगइ [प्रकृति] ओ० ७३,९१,११६. रा० १७४, २३३. जी० ३।६२५

पगंठग [प्रकण्ठक] रा० १३७, १४६. जी० ३।३०७, ३५५

पगति [प्रकृति] जी० ३।२८६ ५९८,६२०,७९५, ८१६,८४१,८५४,९५६,९५७,९६४

पगतित्थ [प्रकृतिस्थ] जी० ३।११२१ से ११२३

पगब्भ [प्रगल्भ] जी० ३।५९१

पगाढ [प्रगाढ] रा० ७९५. जी० ३।११०

√पगाय [प्र+गै]—पगाइंसु. रा० ७५

पगार [प्रकार] रा० ८०६,८१०. जी० २।७४, १४०,१५१

पगास [प्रकाश] ओ० १३,१६,२२,४७. रा० १३०, २५५,६७०,७७७,७७८,७८८. जी० ३।३००, ४१६,५८६,५९६,५९७

पगिज्झ [प्रगृह्य] रा० ६६४

पगिज्झिय [प्रगृह्य] ओ० ११६

पगीय [प्रगीत] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५

√पगेण्ह [प्र+ग्रह्]—पगेण्हति रा० २८८

पगेण्हित्ता [प्रगृह्य] रा० २८८

पग्गहित्तु [प्रगृह्य] जी० ३।४५७

पग्गहिय [प्रगृह्य] ओ० ६७. रा० २९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चंकमणग [प्रचंक्रमणक] रा० ८०३

√**पच्चक्ख**, °क्खा [प्रति+आ+ख्या]—पच्चक्खंति ओ० १५७—पच्चक्खामि. रा०७९६ —पच्चक्खामो. ओ० ११७—पच्चक्खाइस्सइ. रा० ८१६

पच्चक्खाण [प्रत्याख्यान] ओ० १२०,१४०,१५७. रा० ६९८,७५२,७८७,७८९

पच्चक्खाय [प्रत्याख्यात] ओ० ८४,८५,८७,८८, ११७,१२१,१३६ रा० ७९६

पच्चक्खित्ता [प्रत्याख्याय] ओ० १५७

पच्चणुब्भवमाण [प्रत्यनुभवत्] रा० १८५,१८७, ७५१. जी० ३।१०९,११८,११९,१२२,१२३, २१७,२९७,२९८,५७९

पच्चणुभवमाण [प्रत्यनुभजत्] ओ० १५. रा० ६७२,६८५,७१०,७७४. जी० ३।११६, ११८,११९,१२८,३५८,१११४,१११७,१११८, ११२४

पच्चत्थिम [पाश्चात्य] रा० ४३,४४,१७०,२३५, २३६,२४४,२४९,६६३,६६४. जी० ३।३००, ३४४,३४५,३९७,३९८,४०६,४१०,५६१, ५६२,५६८,५७७,६३२,६६१,६६६,६६८, ६७३,६८२,६९३,६९४,६९७,६९८,७०८, ७१२,७४२,७४४,७५४,७६१,७६५,७६८, ७६९,७७१ से ७७३,७७६,७७८,८००,८१४, ८२५,८५१,८८२,८८५,९०१,९३९,९४०, ९४४,१०१५

पच्चत्थिमिल्ल [पाश्चात्य] रा० २९६,२९७,३०१, ३०६,३१७,३२२,३२७,३३५,३४०,३४५. जी० ३।३३,२२०,२२१,२२४,२२५,४६१, ४६६,४७१,४८२,४८७,४९२,५००,५०५, ५१०,५७७,६७३,६९५ से ६९७,७६९,७७१, ७७३,७७५,७७७,९१५

पच्चत्थुय [प्रत्यवस्तृत] रा० ३७

√**पच्चप्पिण** [प्रति+अर्पय्]—पच्चप्पिणइ. ओ० ५७—पच्चप्पिणंति. रा० १२. जी० ३।५५५—पच्चप्पिणति. रा० ४६ —पच्चप्पिणह. रा० ९. जी० ३।५५४ —पच्चप्पिणाहि. ओ० ५५. रा० १७ —पच्चप्पिणेज्जा. ओ० १८० —पच्चप्पिणेज्जाह. रा० ७०६

पच्चमाण [पच्यमान] जी० ३।१२९।८

पच्चामित्त [प्रत्यमित्र] ओ० १४. रा० ६७१. जी० ३।६१२

√**पच्चाया** [प्रति+आ+जन्]—पच्चाइस्सइ. रा० ७९७—पच्चायंति. ओ० ७१. जी० ३।५७२—पच्चायाहिति. ओ० १४१.

पच्चावड [प्रत्यावर्त] रा० २४. जी० ३।२७७

√**पच्चुण्णम** [प्रति+उत्+नम्]—पच्चुण्णमइ ओ० २१. रा० २९२—पच्चुण्णमति. जी० ३।४५७

पच्चुण्णमित्ता [प्रत्युन्नम्य] ओ० २१. रा० २९२. जी० ३।४५७

√**पच्चुत्तर** [प्रति+उत्+तॄ]—पच्चुत्तरति. जी० ३।४४३—पच्चुत्तरेइ. रा० ६५६. जी० ३।४५४

पच्चुत्तरित्ता [प्रत्युत्तीर्य] जी० ३।४४३

पच्चुत्तरेत्ता [प्रत्युत्तीर्य] रा० ६५६. जी० ३।४५४

पच्चुत्थत [प्रत्यवस्तृत] जी० ३।३११

√**पच्चुद्धर** [प्रति+उद्+धृ]—पच्चुद्धरिस्सामि जी० ३।११८

पच्चुद्धरित्तए [प्रत्युद्धर्तुम्] जी० ३।११८

√**पच्चुन्नम** [प्रति+उत्+नम्]—पच्चुन्नमइ. रा० ८

पच्चुन्नमित्ता [प्रत्युन्नम्य] रा० ८

पच्चूसकाल [प्रत्यूषकाल] जी० ३।२८५

√**पच्चुवेक्ख** [प्रति+उप+ईक्ष्]—पच्चुवेक्खेइ. ओ० ५९

पच्चुवेक्खमाण [प्रत्युपेक्षमाण] रा० ६७४,६८०, ६९८

पच्चुवेक्खेत्ता [प्रत्युपेक्ष्य] ओ० ५९

पच्चोणिवयंत [प्रत्यवनिपतत्] ओ० ४६

√**पच्चोत्तर** [प्रति+उत्+तॄ]—पच्चोत्तरइ. रा० २७७—पच्चोत्तरति. रा० २८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चोत्तरित्ता [प्रत्युत्तीर्य] रा० २७७

पच्चोयड [दे०] रा० १५४,१७४. जी० ३।२८६, ३२७

√**पच्चोरुभ** [प्रति+अव+रुह्]—पच्चोरुभति. जी० ३।५५६

पच्चोरुभित्ता [प्रत्यवरुह्य] जी० ३।५५६

√**पच्चोरुह** [प्रति+अव+रुह्]—पच्चोरुहइ. ओ० २१. रा० २७७. जी० ३।४४३ —पच्चोरुहंति ओ० ५२. रा० ५७ —पच्चोरुहति रा० ८. जी० ३।४४३

पच्चोरुहित्ता [प्रत्यवरुह्य] ओ० २१. रा० ८. जी० ३।४४३

पच्छय [प्रच्छद] ओ० ५७

पच्छा [पश्चात्] ओ० १६५,१६६,१७७. रा० ५९,६३,६५,२७५,२७६ ७८१ से ७८७, ८०२. जी० ३।४४१,४४२,९८६,१०४८, १११५

पच्छाणुताविय [पश्चादनुतापिक] रा० ७७४, ७७५

पच्छियापिडय [पच्छिकापिटक] रा० ७६१,७७२

पजेमणग [प्रजेमनक] रा० ८०३

पजोग [प्रयोग[रा० ७९४

पज्ज [पद्य] रा० १७३. जी० ३।२८५

पज्जत्त [पर्याप्त] जी० १।५१,५५,६३,६५; ३।१३३,१३४; ४।६,२२,२३,२५; ५।१७,२६, २८ से ३०,३२ से ३६,३९,४०,४३,४६,४९, ५२,५४ से ६०

पज्जत्तग [पर्याप्तक] ओ० १८२. जी० १।१४,५८, ६७,७३,७८,८१,८४,८८,८९,९२,१००,१०१, १११,११२,११६,११८,१२१,१२९,१३५; ३।१३६,१३९,१४०,१४६; ४।२,६,१८,२१ से २३,२५; ५।३,४,७,१८ से २२,२४,२५,२७, ३१,३३,३४,३६,५०; ९।८८,८९.९२,९४

पज्जत्तय [पर्याप्तक] ओ० १५६. जी० १।१०१; ४।११; ५।१२ से १६,२९,५२,६०

पज्जत्ति [पर्याप्ति] रा० २७४,२७५,७९७. जी० १।१४,२६,८६,९६,१०१,११९,१३३, १३६; ३।४४०,४४१

पज्जत्तिभाव [पर्याप्तिभाव] रा० २७४,२७५, ७९७. जी० ३।४४०,४४१

पज्जलिय [प्रज्वलित] रा० ४५

पज्जव [पर्यव] रा० १९९. जी० ३।५८,८७, २७१,७२४,७२७,१०८१

पज्जवसाण [पर्यवसान] ओ० १४६. रा० ८०६, ८०७. जी० १।४६; ३।२५०,२५९,९४८, ९४९

पज्जालिय [प्रज्वालित] जी० ३।५८९

√**पज्जुवास** [परि+उप+आस्]—पज्जुवासइ. ओ० ६९. रा० ६–पज्जुवासंति. ओ० ४७. रा० ६८७.—पज्जुवासति. रा० ६० —पज्जुवासामि. रा० ५८—पज्जुवासामो. रा० १०—पज्जुवासिस्संति. रा० ७०४ —पज्जुवासेइ. रा० ७१९—पज्जुवासेज्जा रा० ७७६

पज्जुवासणया [पर्युपासना] ओ० ४०,५२. रा० ६८७

पज्जुवासणा [पर्युपासना] ओ० ६९

पज्जुवासणिज्ज [पर्युपासनीय] ओ० २. रा० २४०,२७६. जी० ३।४०२,४४२,१०२५

पज्जुवासमाण [पर्युपासीन] ओ० ८३

पज्जुवासित्तए [पर्युपासितुम्] ओ० १३९. रा० ९

पज्जोसवणा [पर्युषणा,पर्युपशमन] जी० ३।६१७

पझंझमाण [पझञ्झमान] रा० ४०,१३२. जी० ३।२६५

पट्ट [पट्ट] रा० ३७,२४५,६६४,६८३. जी० ३।३११

पट्टण [पत्तन] ओ० ६८,८९ से ९३,९५,९६,१५५, १५८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७. जी० ३।५९५

पट्टिया [पट्टिका] रा० १३०,१६०,६६४,६८३. जी० ३।२६४,३००,५६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पट्ठ [प्रष्ठ] जी० ३।११८
पड [पट] ओ० २३,६३
पडंत [पतत्] जी० ३।५६०
पडग [पटक] रा० ७५३
पडबुद्धि [पटबुद्धि] ओ० २४
पडल [पटल] रा० १२,१५४,१७४.
जी० ३।११६,२८६,३२८,३३०,३५५।३
पडलग [पटलक] रा० १२,१५७,२५८,२७६.
जी० ३।४१६,४४५
पडह [पटह] ओ० ६७. रा० १३,७७,६५७.
जी० ३।१७८,४४६,५८८
पडागा [पताका] ओ० ५५,६४. रा० ३२,५०,५२,
५६,१३७,१७३,२३१,२४७,६८१. जी० १।८०,
८२; ३।२८५,३०७,३७२,३६३
पडागाइपडागा [पताकातिपताका] ओ० २,१२,
५५. रा० २३,२८१. जी० ३।२६१
पडागातिपडागा [पताकातिपताका]
जी० ३।४४७
√पडिकप्प [प्रति+कल्पय्]—पडिकप्पेइ.
ओ० ५७—पडिकप्पेहि. ओ० ५५
पडिकप्पिय [प्रतिकल्पित] ओ० ६२
पडिकप्पेत्ता [प्रतिकल्प्य] ओ० ५७
पडिकूल [प्रतिकूल] रा० ७५३,७६७,७६८,७७६,
७७७
पडिक्कंत [प्रतिक्रान्त] ओ० ११७,१४०,१५७,
१६२. रा० ७६६
पडिक्कमणारिह [प्रतिक्रमणार्ह] ओ० ३६
पडिगय [प्रतिगत] ओ० ७६ से ८१. रा० ६१,
१२०,६६४,६६७,७१७,७२२,७७७,७८७
पडिगाहित्तए [प्रतिग्रहीतुम्] ओ० १११
पडिग्गह [प्रतिग्रह] ओ० १२०,१६२. रा० ६६८,
७५२,७८६
पडिग्गाहित्तए [प्रतिग्रहीतुम्] ओ० ११२
पडिचंद [प्रतिचन्द्र] जी० ३।६२६,८४१
पडिचार [प्रतिचार] ओ० १४६. रा० ८०२
√पडिच्छ [प्रति+इष्]—पडिच्छइ. रा० ६८४
—पडिच्छए. ओ० २
पडिच्छण्ण [प्रतिच्छन्न] जी० ३।५८१
पडिच्छमाण [प्रतीच्छत्] ओ० ६६
पडिच्छयण [प्रतिच्छदन] रा० २४५. जी० ३।३११,
४०७
पडिच्छायण [प्रतिच्छादन] रा० ३७
पडिच्छिय [प्रतीष्ट] ओ० ६६. रा० ६६५
पडिजागरमाण [प्रतिजाग्रत्] रा० ७६३
पडिजागरेमाण [प्रतिजाग्रत्] रा० ५६
पडिजाण [प्रतियान] ओ० ६२
पडिण [प्रतीचीन] जी० ३।५७७,१०३६
पडिणिकास [प्रतिनिकाश] रा० १४६. जी०
३।२२२
√पडिणिक्खम [प्रति+निस्+क्रम्]—पडिणि-
क्खमइ. ओ० २०. रा० २८६. जी० ३।४५४.
—पडिणिक्खमंति रा० १२. जी० ३।४४५
पडिणिक्खमित्ता [प्रतिनिष्क्रम्य] ओ० २०. रा०
१२. जी० ३।४४५
√पडिणिक्खिव [प्रति+नि+क्षिप्]—पडिणि-
क्खिवइ. रा० २८८. जी० ३।५१६.—पडिणि-
क्खिवेइ. जी० ३।४५४
पडिणिक्खिवित्ता [प्रतिनिक्षिप्य] रा० २८८. जी०
३।५१६
पडिणिक्खिवेत्ता [प्रतिनिक्षिप्य] जी० ३।४५४
√पडिणियत्त [प्रति+नि+वृत्]—पडिणियत्तइ.
ओ० १७७—पडिणियत्तंति. जी० ३।७४६
पडिणियत्तित्ता [प्रतिनिवृत्य] ओ० १७७
पडिणीय [प्रत्यनीक] ओ० १५५. जी० ३।६१२
पडिदुवार [प्रतिद्वार] ओ० २,५५. रा० ३२,२८१.
जी० ३।३७२,४४७
√पडिनिक्खम [प्रति+निस्+क्रम्]—पडिनिक्ख-
मइ. रा० ७१०.—पडिनिक्खमंति, रा० २७६.
—पडिनिक्खमंति जी० ३।४४६
पडिनिक्खमित्ता [प्रतिनिष्क्रम्य] रा० २७६. जी०
३।४४६
पडिपाद [प्रतिपाद] जी० ३।४०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिपाय [प्रतिपाद] रा० २४५

√पडिपिधा [प्रति+पि+धा]—पडिपिधेइ. जी० ३।५१६

पडिपिधेत्ता [प्रतिपिधाय] जी० ३।५१६

√पडिपुच्छ [प्रति+प्रच्छ्]—पडिपुच्छंति. ओ० ४५

पडिपुच्छण [प्रतिप्रच्छन] ओ० ५२. रा० ६८७

पडिपुच्छणा [प्रतिप्रच्छना] ओ० ४२

पडिपुच्छणिज्ज [प्रतिपृच्छनीय] रा० ६७५

पडिपुण्ण [प्रतिपूर्ण] ओ० १४,१५,१६,६३,७२, १२०,१४३,१५३,१६२,१६५,१६६,१७०. रा० १३१,१४७,१४८,१५०,१५२,२८०,२८६, ६७१ से ६७३,६६८,७५२,७८६,८०१,८१४. जी० ३।३०१,३२३,३२५,४४६,४५२,५६२, ५६६,५६७,६१०

पडिपुण्णचंद [प्रतिपूर्णचन्द्र] जी० ३।८६,२६०

पडिपुन्न [प्रतिपूर्ण] जी० ३।५६६

पडिबंध [प्रतिबन्ध] ओ० २८. रा० ६६५,७७५

पडिबद्ध [प्रतिबद्ध] जी० ३।२२

पडिबोहण [प्रतिबोधन] रा० १५

पडिबोहिय [प्रतिबोधित] ओ० १४८,१४९. रा० ८०६,८१०

पडिमट्ठाइ [प्रतिमास्थायिन्] ओ० ३६

पडिमोयण [प्रतिमोचन] जी० ३।२७६,५८१,५८५

पडियाइक्खिय [प्रत्याख्यात] ओ० ११७

पडिरूव [प्रतिरूप] ओ० ७,१० से १२,१५,७२,१६४. रा० १,२,१६ से २३,३२,३४,३६ से ३८, १२४ से १२८, १३० से १३४,१३६,१३७, १४१,१४५ से १४८,१५० से १५३,१५५ से १५७,१६०,१६१,१७४,१७५,१८० से १८५, १८८,१९२,१९७,२०६,२११,२१८,२२१,२२२, २२४,२२६,२२८,२३०,२३१,२३३,२३८,२४२, २४४ से २४७,२४६,२५३,२५६,२५७,२६१, २७३,६६८ से ६७०,६७२,६७३,६७६,६७७, ७००,७०२,७०३. जी० ३।२३२,२६० से २६३, २६६ से २६९,२७६,२८६ से २९७,३०० से ३०४,३०६ से ३०८,३१० से ३१२,३१८, ३१९,३२३ से ३२६,३२८ से ३३०,३३३, ३३४,३३७,३४७,३४८,३५२,३५३,३५५,३६१, ३६५,३७२,३७७,३८०,३८१,३८३,३८५,३८७, ३९०,३९२,३९३,३९९,४००,४०१,४०४,४०६ से ४०८,४१०,४१३,४१४,४१८,४२२,४२७, ४३७,५८१,५८४,५८५,५९६,५९७,६३२,६३९, ६४४,६४६,६४९,६५५,६६१,६६८,६७१,६७२, ६७५,६८९,७२४,७२७,७३६,७५८,८३९,८५७, ८६३,८८१,८८२,८९१,८९३ से ८९५,८९७, ८९९,९०४,९०६,९०७,९११,९१८,१०३८, १०३९,१०८१,११२१,११२२

पडिरूवग [प्रतिरूपक] रा० १९.२०,१७५ से १७९, २०२,२३४,२६४. जी० ३।२८७,२८८,३६३, ३९६,५७९,६४०,६४१,६६९.६८४

पडिरूवय [प्रतिरूपक] रा० १९,४७,४८,५६,५७, २७७,२८८,३१२,४७३,६५६. जी० ३।४४३, ४५४,४७७,५३२,५५६

√पडिलाभ [प्रति+लाभय्]—पडिलाभिस्संति. रा० ७०४.—पडिलाभेइ. रा० ७१९. —पडिलाभेज्जा. रा० ७७६

पडिलाभेमाण [प्रतिलाभयत्] ओ० १२०,१६०. रा० ६९८,७५२,७८९

√पडिलेह [प्रति+लिख्]—पडिलेहेइ. रा० ७९६

पडिलोम [प्रतिलोम] रा० ७५३,७६७,७६८,७७६, ७७७

पडिवंसग [प्रतिवंशक] रा० १३०. जी० ३।३००

√पडिवज्ज [प्रति+पद्]—पडिवज्जइ. ओ० १८२. रा० ७७५.—पडिवज्जंति. ओ० १५७. —पडिवज्जिस्सामि. रा० ६९५. —पडिवज्जिस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७

पडिवज्जित्ता [प्रतिपद्य] ओ० १५७

पडिवण्ण [प्रतिपन्न] ओ० २४,७८,८२,१८२

पडिवत्ति [प्रतिपत्ति] जी० १।१०; ९।८

पडिविरय [प्रतिविरत] ओ० १६१,१६३

√पडिविसज्ज [प्रति+वि+सर्जय्]

—पडिविसज्जेइ. ओ० ५४. रा० ६८४.

—पडिविसज्जेहिंति. ओ० १४७. रा० ८०८

पडिवूह [प्रतिव्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६

पडिसंखेवेमाण [प्रतिसंक्षिपत्] रा० ५६

पडिसंलीणया [प्रतिसंलीनता] ओ० ३१,३७

पडिसंसाहणया [प्रतिसंसाधना] ओ ४०

√पडिसार [प्रति+सं+हृ]—पडिसाहरइ. ओ० २१. रा० ८

पडिसाहरित्ता [प्रतिसंहृत्य] ओ० २१

पडिसाहरेत्ता [प्रतिसंहृत्य] रा० ८

पडिसाहरेमाण [प्रतिसंहरत्] रा० ५६

√पडिसुण [प्रति+श्रु]—पडिसुणंति. रा० १०. जी० ३।४४५.—पडिसुणिज्जासि. रा० ७५३. —पडिसुणेइ. ओ० ५६. रा० १८.—पडि-सुणेंति ओ० ११७. रा० ७०७. जी० ३।५५५. —पडिसुणेति. रा० १४. पडिसुणेज्जासि. रा० ७५१

पडिसुणित्ता [प्रतिश्रुत्य] रा० १८. जी० ३।४४५

पडिसुणेत्ता [प्रतिश्रुत्य] ओ० ५६. रा० १०. जी० ३।५५५

पडिसुय [प्रतिश्रुत] रा० १४

पडिसूर [प्रतिसूर] जी० ३।६२६,८४१

पडिसेग [प्रतिषेक] रा० २५४

पडिसेविय [प्रतिषेवित] रा० ८१५

पडिसेह [प्रतिषेध] जी० २।९६,१०१

पडिहत [प्रतिहत] जी० ३।७४६

पडिहत्थ [दे०] रा० १७४. जी० ३।३२४,८५७, ८६३,८६६,८७५,८८१,६४८

पडिहय [प्रतिहत] ओ० १६५।१,२

पडीण [प्रतीचीन] रा० १२४. जी० ३।६३६

पडीणवात [प्रतीचीनवात] जी० १।८१

पडीणवाय [प्रतीचीनवात] जी० ३।६२६

पडु [पटु] ओ० ६८. रा० ७,१३,६५७. जी० ३।३५०,४४६,५६३,८४२,८४५,१०२५

पडुच्च [प्रतीत्य] रा० ७६३. जी० १।३४

पडुप्पन्न [प्रत्युत्पन्न] जी० ३।१९५ से १९७

पडुप्पाएमाण [प्रत्युत्पद्यमान] जी० ३।२५९

पडोयार [प्रत्यवतार] ओ० ४३. जी० ३।२१८, २५६,५७८,५९६,५९७

पढम [प्रथम] ओ० ४७,१४४,१७४,१७६,१८२. रा० ८०२. जी० ३।२२६,६८२,६८३,६८८; ७।१,२,४,६,११,१३,१५,१७,२०,२२ २३; ९।१ से ७,२३२,२३३,२३५,२३७,२४१,२४३, २४५,२४७,२५०,२५२,२५३,२५५,२६७,२६८, २७०,२७२,२७५,२७७,२७९,२८१,२८४,२८६, २८८ से २९३

पढमग [प्रथमक] रा० २२८. जी० ३।३८७,६७२

पढमसत्तराइंदिया [प्रथमसप्तरात्रिंदिवा] ओ० २४

पढमसरयकाल [प्रथमशरत्काल] जी० ३।११८,११९

पढमा [प्रथमा] जी० ३।२,३,८८,१११९

पढमिल्लुय [प्रथम] रा० ७६८

पणगजीव [पनकजीव] ओ० १८२

√पणच्च [प्र+नृत्य्]—पणच्चिसु. रा० ७५

पणतीस [पञ्चत्रिंशत्] जी० ३।८०२

पणपण्ण [दे० पञ्चपञ्चाशत्] जी० ६।६

पणपन्न [दे० पञ्चपञ्चाशत्] जी० २।२०

पणमिय [प्रणत] ओ० ५,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४

पणयाल [पञ्चचत्वारिंशत्] जी० ३।२२६।६

पणयालीस [पञ्चचत्वारिंशत्] ओ० १९२. जी० ३।३००

पणयालीसविह [पञ्चचत्वारिंशद्विध] ओ० ४०

पणयासण [प्रणतासन] रा० १८१,१८३. जी० ३।२९३

पणव [पणव] ओ० ६७. रा० १३,७७,६५७. जी० ३।७८,४४६,५८८

पणवण्णिय [पणपन्निक] ओ० ४९

पणवीस [पञ्चविंशति] रा० १२७. जी० ३।९१

पणस [पनस] जी० ३।३८८

पणाम [प्रणाम] रा० ६८,२९१,३०६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जी० ३।४५७,४७१,५१६

पणि [पण्य] जी० ३ ६०७

पणिय [पणित, पण्य] ओ० १. रा० ७७४

पणियगिह [पणित°, पण्यगृह] ओ० ३७

पणियसाला [पणित°, पण्यशाला] ओ० ३७

पणिहाय [प्रणिधाय, प्रणिहाय] जी० ३।७३ से ७५. १२४,१२५,७६५,१०२५

पणीत [प्रणीत] जी० १।१

पणीयरसपरिच्चाय [प्रणीतरसपरित्याग] ओ० ३५

पणुवीस [पञ्चविंशति] जी० ३।२२६।५

पणोल्लिय [प्रणोदित] ओ० ४६

पण्णओ [प्रज्ञातरा] रा० ७५२,७५४,७५६,७५८, ७६०,७६२,७६४

पण्णगद्ध [पन्नगार्ध] जी० ३।३०२

पण्णट्ठ [पञ्चषष्टि] जी० ३।२२२

पण्णट्ठि [पञ्चषष्टि] रा० १६४

पण्णत्त [दे०[1]] ओ० १

पण्णत्त [प्रज्ञप्त] ओ० २. रा० ३. जी० १।१

पण्णत्तर [पञ्चसप्तति] जी० ३।२४६

पण्णत्तरि [पञ्चसप्तति] जी० ३।६६१

पण्णत्ति [प्रज्ञप्ति] रा० ८१७

पण्णरस [पञ्चदशन्] जी० ३।१२

पण्णरसविघ [पञ्चदशविध] जी० ३।२२६

पण्णरसविह [पञ्चदशविध] जी० १।८०; २।१४

√**पण्णव** [प्र+ज्ञापय्] —पण्णवइंसु. जी० १।१. —पण्णवेइ. ओ० ५२. रा० ६८७. —पण्णवेंति जी० ३।२१०.—पण्णवेहैंति. जी० ३।८३८।३

पण्णवणा [प्रज्ञापना] रा० ७७४. जी० १।५,५८, ७२,१००,११०,१११,११६,११८,१२६,१३५; २।८६; ३।१८४,२१४,२३२,२३३

पण्णवणापय [प्रज्ञापनापद] जी० ३।२२०,२३१

पण्णवित्तए [प्रज्ञापयितुम्] रा० ७७४

पण्णवीस [पञ्चविंशति] जी० ३।१२

पण्णवेमाण [प्रज्ञापयत्] ओ० ६८

√पण्णाय [प्र+ज्ञा]—पण्णायति. जी० ३।६९९

पण्णास [पञ्चाशत्] रा० २०६. जी० २।३६

पण्हावागरणदसाधर [प्रश्नव्याकरणदशाधर] ओ० ४५

पतणतणाइत्ता [प्रतनतनाय्य] रा० १२

√पतणतणाय [प्र+तनतनाय्[1]]—पतणतणायंति. रा० १२

पतणु [प्रतनु] ओ० ६१,११६

पतरग [प्रतरक] जी० ३।३०२

√पतव [प्र+तप्]—पतवंति. जी० ३।४४७. —पतवेंति. रा० २८१

पतिट्ठाण [प्रतिष्ठान] रा० १६,१७५. जी० ३ २८७,३००,४४६,४४८

पत्त [पत्र] ओ० ५,६,८,१३,१६,२७,६४. रा० ६, १२,२६,३१,१६१,१७४,२२८,२५८,२७०, २७६,७८२. जी० १।७१,७२; ३।११८,११६, २७४,२७५,२७६,२८३,२८४,२८६,३३४, ३८७,४१६,४३५,४५४,५८१,५८६,५९६, ६२२,६४३,६७२

पत्त [प्राप्त] ओ० ३७,११७,१४०,१५७,१६२, १६५।१६,२२. रा० १,६३,६५,६६७,७६६, ७९७. जी० ३।८६७

पत्तच्छेज्ज [पत्रच्छेद्य] ओ० १४६. रा० ८०६

पत्तट्ठ [दे० प्राप्तार्थ] ओ० ६३. रा० १२,७५८, ७५६,७६५,७६६,७७०

पत्तभार [पत्रभार] ओ० ५,८. जी० ३।२७४

पत्तमंत [पत्रवत्] ओ० ५,८. जी० ३।२७४

पत्तल [पत्रल] ओ० १६,४७. जी० ३।५६६,५६७

पत्तासव [पत्रासव] जी० ३।८६०

पत्ताहार [पत्राहार] ओ० ६४

√पत्तिय [प्रति+इ] —पत्तिएज्जा. रा० ७५०. —पत्तियामि. रा० ६६५

पत्तिय [पत्रित] रा० ७८२

पत्तियमाण [प्रतियत्] जी० १।१

---

१ द्रष्टव्यम्—निशीथभाष्य ४४३५।

१. अनुकरण वचन।

पत्ती [पात्री] जी० ३।५८७
पत्तेग [प्रत्येक] जी० ५।२६
पत्तेगसरीर [प्रत्येकशरीर] जी० ५।३१
पत्तेय [प्रत्येक] ओ० ५०. रा० २०,४८,१३७, १६४,१७०,१७४ से १७६, १८६,२११,२१५, २१७ से २१६,२२१,२२२,२२४,२२६,२२७, २३०,२३१,२३३,२५५,२५६,२८२,६६४. जी० ३।२५६,२८६ से २८८,३०७ से ३१३, ३४५,३५५,३५६,३५८,३५६,३६३,३६८, ३६६,३७२ से ३७८,३८०,३८१,३८३ से ३८६,३६२,३६३,३६५,४१६,४१७,४४८, ५५८ से ५६२,६३२,६३४,६३५,६३७,६४१, ६६१,६६२,६८३ ६८४,७२५,७२७,७२८, ७६२,७६३,८५७,८८२ से ८८५,,८८७ से ८६१,८६३,६०३,६०६,६०८,६१०,६११, ६१३,१०४८; ५।२८, ३०; ६।१७४
पत्तेयजीव [प्रत्येकजीव] जी० १।७१
पत्तेयबुद्धसिद्ध [प्रत्येकबुद्धसिद्ध] जी० १।८
पत्तेयरस [प्रत्येकरस] जी० ३।६६३
पत्तेयसरीर [प्रत्येकशरीर] जी० १।६८,६६,७२; ५।३१,३३ से ३६
पत्तोमोवरिय [प्राप्तावमोदरिक] ओ० ३३
√पत्थ [प्र+अर्थय्]—पत्थंति. ओ० २०—पत्थेइ. रा० ७१३—पत्थेंति. रा० ७१३
पत्थ [प्रस्थ] ओ० १११
पत्थ [पथ्य] जी० ३।८५४,८७८,६५७
पत्थड [प्रस्तट] रा० १३०, १३७. जी० ३।३००, ३०७
पत्थडोवग [प्रस्तटोदक] जी० ३।७८३,७८४
पत्थय [पथ्यक] रा० ७७२
पत्थयण [पथ्यदन] रा० ७७४
पत्थर [प्रस्तर] ओ० ४६
पत्थिज्जमाण [प्रार्थ्यमान] ओ० ६६
पत्थिय [प्रार्थित] ओ० ७०. रा० ६,२७५,२७६, ६८८,७३२,७३७,७३८,७४६,७६८,७७७, ७६१,७६३,८०४. जी० ३।४४१,४४२
पद [पद] रा० ७६,२६२. जी० ३।१८४,४५७ ६३७
पदाहिण [प्रदक्षिण] जी० ३।४४३
पदाहिणावत्तमंडल [प्रदक्षिणावर्तमण्डल] जी० ३।८४२
पदीव [प्रदीप] रा० ७७२
पदेस [प्रदेश] रा० १३५,२३६,७७२. जी० १।४; ३।३०५, ३२७,५७३,५६७,६६८,७१७,७८८, ७८६,८०३,८२८,८२६,८४५,८५३,६४६; ५।५१
पदेसट्ठता [प्रदेशार्थता] जी० ५।५१,५२
पदेसट्ठया [प्रदेशार्थ] जी० ५।५० से ५२,५८ से ६०
पन्नगद्ध [पन्नगार्ध] रा० १३२
पन्नरस [पञ्चदशन्] रा० २०८. जी० ३।३८३। १६
पन्नरसइ [पञ्चदश] जी० ३।८३८।१६
पन्नरसविह [पञ्चदशविध] जी० २।१४
पन्नास [पञ्चाशत्] रा० १२७. जी० २।२०
पप्पडमोयय [पर्पटमोदक] जी० ३।६०१
पप्फुल्ल [प्रफुल्ल] जी० ३।२५६
पब्भट्ठ [प्रभ्रष्ट] रा० १२,२६१,२६३ से २६६, ३००,३०५,३१२,३५५. जी० ३।४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,५२०,५५४
पब्भार [प्राग्भार] ओ० ४६
पभंकरा [प्रभङ्करा] जी० ३।१०२३,१०२६
पभंजण [प्रभञ्जन] जी० ३।७२४
पभा [प्रभा] ओ० ४७,७२. रा० २१,२३,२४, ३२,३४,३६,१२४,१४५,१५४,१५७,२२८,२७३ ७७७,७७८,७८८. जी० ३।२६१,२६६,२६६. ३२७,३८७,६३७,६५६,६७२,७२८,७४३, ७५०,७६३,७६५,१०७७
पभाय [प्रभात] ओ० २२. रा० ७२३,७७७,७७८, ७८८
पभास [प्रभास] रा० २७६. जी० ३।४४५

√**प्रभास** [प्र+भास्]—पभासिंसु. जी० ३।७०३ —पभासिस्संति. जी० ३।७०३—पभासेइ. रा० ७७२. जी० ३।३२७ --पभासेंति. रा० १५४. जी० ३।३२७ --पभासेति. रा० १५४. जी० ३।७४१

पभासेमाण [प्रभासमान] ओ० ४७,७२. जी० ३.११२१

पभिइ [प्रभृति] रा० ७६०,७६१

पभिति [प्रभृति] ओ० ५२,६३. रा० ६८७,६८८, ७०४. जी० ३।८३८।२५

पभु [प्रभु] रा० ७५८ से ७६१. जी० ३।११०, ६८८ से ६६७, १०२३ से १०२५,१११५, १११६

पभूय [प्रभूत] ओ० १,१४,४६,१४१. रा० ६, १२,६७१,७६६. जी० ५८६

√**पमज्ज** [प्र+मृज्]—पमज्जइ. रा० २६१ —पमज्जति. जी० ३।४५७

पमज्जित्ता [प्रमृज्य] रा० २६१. जी० ३।४५७

पमत्त [प्रमत्त] रा० १५

पमद्दण [प्रमर्दन] ओ० २६. रा० १२,७५८.७५६. जी० ३।११८

पमाण [प्रमाण] ओ० १५,१६,३३,१२२,१४३. रा० ६,१२,४०,२०५ से २०८,२२५,२५४, २७६,६७२,६७३,६७५,७४८ से ७५०,७७३, ८०१. जी० ३।३१३,३६८ से ३७१,३८४, ४०६,४१२,४१५,४४२,५६८,५६६,५६६,५६७, ६५२,६६६,६७३,६७६,६७६,६८५,६८६, ६८८,६६१ से ६६८,७३७,७५०,७५३,७६४, ७६५,८००,८८६,८६६,८६८,६१६ से ६२१, ६४१,१०७४

पमाणपत्त [प्रमाणप्राप्त] ओ० ३३

पमाणभूय [प्रमाणभूत] रा० ६७५

पमाय [प्रमाद] ओ० ४६

पमायायरिय [प्रमादाचरित] ओ० १३६

पमुइय [प्रमुदित] ओ० १,१६,४६. रा० १७३. जी० ३।५६६

पमुच्चमाण [प्रमुञ्चत्] जी० ३।११८

पमुदित [प्रमुदित] जी० ३।२८५

पमुह [प्रमुख] ओ० ५५,५८,६२,७०,७१,८१. रा० २४६,७७६

पमोक्ख [प्रमोक्ष] रा० ६६८,७५२,७८६

पम्ह [पक्ष्मन्] ओ० ८२

पम्ह [पद्म] जी० ६।१६४

पम्हल [पक्ष्मल] ओ० ६३. रा० २८५. जी० ३।४५१

पम्हलेस [पद्मलेश्य] जी० ६।१६०

पम्हलेस्स [पद्मलेश्य] जी० ६।१८५,१६६

पम्हलेस्सा [पद्मलेश्या] जी० ३।११०२

पय [पद] ओ० २१,५४. रा० ८,७१४. जी० ३।२३६,२८५

पयंठग [प्रकण्टक] जी० ३।३२२

√**पयच्छ** [प्र+यम्]—पयच्छइ. रा० ७३२

पयण [पचन] ओ० १६१,१६३

पयणु [प्रतनु] जी० ३।५६८,६११,७६५,८४१

पयत [प्रयत] जी० ३।४५७

पयत्त [प्रयत्न] रा० २६२. जी० ३।६०१,८६६

पयबद्ध [पदबद्ध] रा० १७३. जी० ३।२८५

पययदेव [पतगदेव,पतकदेव] ओ० ४६

पयर [प्रतर] रा० ४०,१३२

पयरग [प्रतरक] जी० ३।२६५,३१३,५६३

√**पयला** [प्र+चलाय्]—पयलाएज्ज. जी० ३।११८

पयलिय [प्रचलित] ओ० २१,५४. रा० ८, ७१४

पयसंचार [पदसञ्चार] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५

√**पया** [प्र+जनय्] —पयाहिइ. रा० ८०१ —पयाहिति. ओ० १४३

पयाणुसारि [पदानुसारिन्] ओ० २४

पयार [प्रचार] ओ० ३७

पयावण [पाचन] ओ० १६१,१६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयाहिण [प्रदक्षिण] ओ० ४७,५२,६६,७०,७८, ८०,८१,८३. रा० ६,१०,१२,५६,५८,६५, ७३,७४,११८,१२०,६८७,६६२,६६५,७००, ७१६,७१८,७७८

पयाहिणावत्त [प्रदक्षिणावर्त] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७,८३८।१०,११

पयोधर [पयोधर] जी० ३।५६७

पर [पर] ओ० १५४,१५५,१६० से १६३,१६५, १६६. रा० ८१६

परं [परम्] जी० ३।८३८।२३

परंगमाण [पर्यङ्गन] रा० ८०४

परंपर [परम्पर] जी० १।४३

परंपरगय [परम्परगत] ओ० १६५।२०

परंपरसिद्ध [परम्परसिद्ध] जी० १।७,६

परक्कम [पराक्रम] ओ० ८६ से ६५,११४,११७, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७

परग [परक] जी० ३।५८७

परघर [परगृह] रा० ८१६

परच्छंदाणुवत्तिय [परच्छन्दानुवर्तित] ओ० ४०

परपरिवाइय [परपरिवादिक] ओ० १५८

परपरिवाय [परपरिवाद] ओ० ७१,११७,१६१, १६३

परपरिवायविवेग [परपरिवादविवेक] ओ० ७१

परपुट्ठ [परपुष्ट] रा० २५. जी० ३ २७८

परम [परम] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३,७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १४,१६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७६, २८१, २८८, २६०, ६५५, ६८१,६८३, ६६०, ६६५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३,७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७६५, ७७४,७७८, ८०२. जी० ३।११६, ४४३, ४४५,४४७,४५५

परमकिण्ह [परमकृष्ण] जी० ३।८३, ६४

परमकिण्हलेस्सा [परमकृष्णलेश्या] जी० ३।१०२

परमट्ठ [परमार्थ] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८, ७५२, ७८६

परमण्ण [परमान्न] जी० ३।५६२

परमसीय [परमशीत] जी० ३।११५

परमसुक्कलेस्सा [परमशुक्ललेश्या] जी० ११०४

परमसुक्किल [परमशुक्ल] जी० ३।१०७६, १०६६

परमहंस [परमहंस] ओ० ६६

परमाउ [परमायुष्] ओ० ६८

परमाणु [परमाणु] जी० ७७१. जी० ११५

परलोग [परलोक] ओ० २६, ८६ से ६५, ११४, ११७, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७

परवाइ [परवादिन्] ओ० २६

परवाय [परवाद] ओ० २६

परसु [परशु] रा० ७६५

परस्सर [पराशर] जी० ३।६२०

पराइय [पराजित] ओ० १४. जी० ६७१

√परामुस [परा+मृश्]—परामुसइ. रा० २६४. जी० ३।४६०—परामुसति. रा० २६८. जी० ३।४५७

परामुसित्ता [परामृश्य] रा० २६४. जी० ३।४५७

√परावत्त [परा+वृत्]—परावत्तेइ. रा० ७२६ —परावत्तेहि. रा० ७२८

परासर [पराशर] ओ० ६६

परिकच्छिय [परिकक्षित] रा० ५२

परिकम्म [परिकर्मन्] ओ० ३६

√परिकह [परि+कथय्]—परिकहेइ ओ० ७१. रा० ६१

परिकहेउं [परिकथयितुम्] ओ० १६५।१६

परिकिलंत [परिक्लान्त] रा० ७२८, ७६०,७६१

√परिकिलेस [परि+क्लिश्]—परिकिलेसंति ओ० ८६

परिकिलेस [परिक्लेश] ओ० १६१,१६३

परिकिलेसित्ता [परिक्लिश्य] ओ० ८६

परिक्खित्त [परिक्षिप्त] ओ० १, ५२, ६४, ७०. रा० १७,१८,१३२,१७०,१७४,२३३,६८१, ६८३, ६८७, ६८८, ६६२, ७००, ७१६,८०४. जी० ३।२५६,२८६,३०२,३५८,३६५,६३२, ६६१, ६८३, ७६२, ८५७,८८२,६१०,६११

परिक्खेव [परिक्षेप] ओ० १७०. रा० १२४,१२६, १८८,१८६,२०१. जी० ३।५१,८१,८२,८६, १२७, २१७, २२२, २२६।३ से ६, २६०, २६३, २७३, २६८,३५१, ३६१, ३६२,५७७, ६३२, ६५८, ६६१, ६६८,६८६, ७०६,७३६, ७५४, ७६२, ७६५, ७७०,७६४, ७६५,७६८, ८१२, ८२३, ८३२, ८३५, ८५०,८८२,६११, ६१८, ६५२,१०१० से १०१४,१०७३,१०७४

परिक्खित्त [परिक्षिप्त] रा० ५६, १७३, ६८१. जी० ३।२८५

परिगत [परिगत] जी० ३।२८८, ३००, ३३२

परिगय [परिगत] ओ० २ रा० १७, १८, २०, ३२, १२६, १५६, ७६५. जी० ३।३७२

परिग्गह [परिग्रह] ओ० ७१, ७६, ७७, ११७, १२१, १६१, १६३. रा० ६६, ७१७, ७६६

परिग्गहवेरमण [परिग्रहविरमण] ओ० ७१

परिग्गहसण्णा [परिग्रहसंज्ञा] जी० १।२०; ३।१२८

परिग्गहिय [परिगृहीत] ओ० २०,२१,५३,५४,५६, ६२,६४,११७,१३६. रा० ८,१०,१२,१४,१८, ४६,५१,७२,७४,११८,२७६,२७६ से २८२,२६२, ६५५,६८१,६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४, ७२३,७६०,७६१,७६६. जी० ३।४४२,४४५, ४४६,४४८,४५७,५५५,६३०,७२७

परिघट्टिय [परिघट्टित] रा० १७३. जी० ३।२८५

परिघट्ठ [परिघृष्ट] रा० ५२,५६,२३१,२४७. जी० ३।३६३,४०१

परिचत्त [परित्यक्त] ओ० ६२

परिचुंबिज्जमाण [परिचुम्ब्यमान] रा० ८०४

परिच्छेय [परिच्छेद] ओ० ५७

परिजण [परिजन] ओ० १५०. रा० ७५१,८०२ ८११

√परिजाण [परि+ज्ञा]—परिजाणाइ. रा० ७०१ —परिजाणाति. रा० ७५३

परिजूसिय [परिजुष्ट] ओ० ४३

परिणत [परिणत] जी० १।५; ३।५८७,५६३,५६५, ५६८

√परिणम [परि+णम्]—परिणमइ. ओ० ७१. रा० ७७१—परिणमंति. जी० १।६५

परिणमंत [परिणमत्] रा० ७७१

परिणममाण [परिणमत्] जी० ३।६८२

परिणय [परिणत] ओ० ५,८. रा० १२,७५८,७५६ ८०६,८१०. जी० १।५; ३।२२,११८,२७४,५८६ ५८८ से ५६२,५६४

परिणाम [परिणाम] ओ० ७१,६०,११६,१५६. रा० १३३. जी० ३।१२८,३०३,५८६,५८८,५६२, ६७४,६७६ से ६८२

√परिणाम [परि+णामय्]—परिणामेइ. रा०७३२

√परिणिव्वा [परि+निर्+वा]—परिणिव्वाइ. ओ० १७७—परिणिव्वायंति. ओ० ७२. जी० १।१३३ —परिणिव्वाहिति. ओ० १६६—परिणिव्वाहिति. ओ० १५४

परिणिव्वाण [परिनिर्वाण] ओ० ७१ जी० ३।६१९

परिणिव्वुय [परिनिर्वृत] ओ० ७१

परिताव [परिताप] ओ० ८६

परितावणकर [परितापनकर] ओ० ४०

परितावित्र [परितापित] ओ० ६२

परित्त [परीत] जी० १।२६,६२,६४,६५,७७,७६, ८०,८२,८७,८८,६६,१०१,१०३,११२,११६, ११६,१२१,१२३,१२८,१३४,१३६; ६।७५, ७६,८७

परित्तसंसारिय [परीतसंसारिक] रा० ६४

परिधाव [परि+धाव]—परिधावंति. रा० २८१. जी० ३।४४७

√परिनिव्वा [परि+निर्+वा]—परिनिव्वाहिति. रा०८१६

परिपीलइत्ता [परिपीड्य] जी० १।५०

परिपुण्ण [परिपूर्ण] रा० २४

परिपूत [परिपूत] जी० ३।८७८

परिपूय [परिपूत] ओ० १११ से ११३,१३७,१३८

परिभव [परिभव] ओ० ४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिभवणा [परिभवना] ओ० १५४,१६५,१६६
परिभाइत्ता [परिभाज्य] रा० ६६५
परिभाएमाण [परिभाजयत्] रा०७६५,७८७,७८८, ८०२
परिभायइत्ता [परिभाज्य] ओ० २३
परिभुंजमाण [परिभुञ्जान] ओ० ११६,११७
परिभुंजेमाण [परिभुञ्जान] रा० ७६५,८०२
परिभुज्जमाण [परिभुज्यमान] रा० ३०,१३६,१७४, ८०४. जी० ३।११८,११९,२८३,२८६,३०६
परिभोगत्त [परिभोगत्व] जी० ३।६१८ ६१९,६२१
परिमंडल [परिमण्डल] रा० ९,१२,१४. जी० १।५; ३ २२
परिमंडित [परिमण्डित] जी० ३।३७२
परिमंडिय [परिमण्डित] ओ० १,५७,६४,७०. रा० ३२,५२,५६,१७३,२३१,२४७,६८१,८०४. जी० ३।३६३
परिमद्दण [परिमर्दन] ओ० ६३
परिमाण [परिमाण] जी० ३।१२७।३,२५०,२५८
परिमिय [परिमित] ओ० १५. रा० ६७२
परिमियपिंडवाइय [परिमितपिण्डपातिक] ओ० ३४
√परियट्ट [परि+वृत्] - परियट्टयंति ओ० ४५
परियट्टणा [परिवर्तना] ओ० ४२,४३
परियत्त [परिवर्त] ओ० ४६
परियर [परिकर] रा० ६६,७६५
√परियाइ [परि+आ+दा]—परियाएइ रा० १८—परियायंति रा० १०. जी० ३।४४५
परियाइत्ता [पर्यादाय] रा० १०. जी० ३।४४५
परियाइय [पर्यात्त] रा० ६६४. जी० ३।५६२
परियाग [पर्याय] ओ० ६४,१५५,१५८ से १६०, १६५,१६६
√परियाण [परि+ज्ञा]—परियाणइ रा० ६४
परियाय [पर्याय] ओ० २३,११४,१४०. रा० ८१५
परियारणिड्ढि [परिचारणर्द्धि] जी० ३।१०२५
परियाल [परिवार] ओ० २३,७०,७१. रा० ७७७, ७७८,८०४
परियावणकर [परितापनकर] ओ० १६१,१६३
परिरय [परिरय] ओ० १९२. जी० ३।२१६।१, २,४,५,८३९,९१०
परिलित [परिलीयमान] ओ० ६२. जी० ३।२७५
परिली [दे०] रा० ७७
परिवंदिज्जमाण [परिवन्द्यमान] रा० ८०४
परिवच्छिय [परिवक्षित[1]] ओ० ५७
परिवज्जिय [परिवर्जित] जी० ३।६२२
√परिवड्ढ [परि+वृध्]—परिवड्ढइ. जी० ३।८३८।१८.—परिवड्ढिहसइ. रा० ८०४
√परिवय [परि+वृत्]—परिवयंति. रा० २८१. जी० ३।४४७
√परिवस [परि+वस्]—परिवसइ. ओ० १४. रा० ७०३.—परिवसंति ओ० १८६. रा० १८६. जी० ३।२३२.—परिवसति. जी० ३।२३४
परिवसण [परिवसन] जी० ३।५६८
√परिवह [परि+वह्]—परिवहंति जी० ३।१०१५
परिवहित्तए [परिवोढुम्] रा० ७६०
परिवाइणी [परिवादिनी] जी० ३।५८८
परिवाडी [परिपाटी] रा० १३१ से १३३,१३५, १३६. जी० ३।३०१ से ३०३
परिवायणी [परिवादिनी] रा० ७७
परिवार [परिवार] ओ० ७०. रा० ७,४२,४७, ५६,५८,६१,६७,१६४,१८६,२०४ से २०६, २१६,२४३,२८०. जी० ३।३४०,३५०,३५६, ३६६,३६८,३७८,४०५,४४६,४४८,५५७, ५६३,६३५,६५७,६६३,६७३,६८०,६८५, ७३७,७४०,७४२,७४५,७५०,७६२,७६५, ७६८,७७०,१०००,१०२३,१०५४
परिवाल [परिवार] रा० १३,१२०
परिविद्धंसइत्ता [परिविद्ध्वंस्य] जी० १।५०
परिवुड्ढि [परिवृद्धि] जी० ३।७८८,७८९

१. परिपक्षितं —परिगृहीतं परिवृत्तम् (वृ)।

परिव्वय [परिव्यय] रा० ७७४
परिव्वायग [परिव्राजक] ओ० १०१ से १३३
परिव्वाया [परिव्राजक] ओ० ९६ से ९९,११७
परिसडिय [परिशटित] ओ० ९४. रा० ७६०, ७६१,७८२
परिसप्प [परिसर्प] जी० १।१०२,१०४,१२०, १२२; ३।१४१,१४३
परिसप्पी [परिसर्पी] जी० २।५,७
परिसा [परिषद्] ओ० ४३,७९. रा० ६,७,४३, ५६,५८,६१,२७६ से २८०,२८४,२८७,६६० से ६६२,६६६,६९३,६९४,७१२,७१७,७३२, ७३७,७६६,७६७,७७९. जी० ३।२३५ से २३९, २४१ से २४३,२४५ से २४७,२४९,२५०,२५४ से २५६,२५८,३४१ से ३४३,३५०,३५९,४४२ से ४४६,५५७,५६०,५६३,८४२,८४५,१०४० से १०४२,१०४४,१०४६ से १०५३,१०५५
√**परिसाड** [परि+शाटय्]—परिसाडंति जी० ३।४४५.—पडिसाडेइ रा० १८. —परिसाडेंति रा० १०
परिसाडइत्ता [परिशाट्य] जी० १।५०
परिसाडित्ता [परिशाट्य] रा० १८. जी० ३।४४५
परिसाडेत्ता [परिशाट्य] रा० १०
परिसामंत [परिसामन्त] जी० ३।१२६
परिसेय [परिषेक] जी० ३।४१५
परिसोधित [परिशोधित] जी० ३।८७८
परिस्संत [परिश्रान्त] ओ० ६३. रा० ७६५
परिस्सम [परिश्रम] ओ० ६३
√**परिहा** [परि+धा]—परिहेइ जी० ३।४४३
परिहत्थ [दे०] ओ० ४६. रा० ६९,१५१. जी० ३।११८,११९,२८६
√**परिहा** [परि+हा]—परिहायइ. जी० ३।८३८।१६.—परिहायति. जी० ३।१०७
परिहाणि [परिहाणि] जी० ३।६६८,८३८।१६,२०
परिहायमाण [परिहीयमाण] ओ० १९२. जी० ३।६६८,८८२
परिहारविसुद्धिचरित्तविणय [परिहारविशुद्धिचरित्र-विनय] ओ० ४०
परिहित [परिहित] रा० ६८५,६९२,७००,७१६, ७२६,८०२. जी० ३।११२२
परिहिय [परिहित] ओ० २०,४७,५२,५३,७२. रा० ६८७,६८९
परिहीण [परिहीण] ओ० ७४।६,१८२,१९५।८. रा० १३,१५,१७
परिहेत्ता [परिधाय] जी० ३।४४३
परीसह [परीषह] ओ० ११७,१५४,१६५,१६६
परूढ [प्ररूढ] ओ० ९२
√**परूव** [प्र+रूपय्]—परूवेइ. ओ० ५२. रा० ६८७.—परूवेंति. जी० ३।२१०. —परूवेमि. जी० ३।२११
परूविय [प्ररूपित] जी० १।१
परूवेमाण [प्ररूपयत्] ओ० ६८
पलंब [प्रलम्ब] ओ० ४७,४९,५७,६४,७२. रा० ५१,६९,७०
पलंबमाण [प्रलम्बमान] ओ० २१,५२,५४,६३. रा० ८,४०,१३२,६८७ से ६८९,७१४. जी० ३।२६५
पलाल [पलाल] रा० ७६७
पलिओवम [पल्योपम] ओ० ९४,९५. रा० १८६, २८२,६६५,६६६,७९८. जी० १।१२१,१२५, १३३; २।२०,२१,२५ से २८,३० से ४९,५३ से ५५,५७ से ६१,७३,८३,८४,१३९; ३।१५६, १६५,२१८,२३८,२४३,२४७,२५०,२५६, ३५०,३५९,४४८,५६४,५६५,६२९,६३७, ६५९,७००,७२१,७२४,७२७,७३८,७६१, ७६३,७९५,८०८,८१९,८२९,८४१,८५४, ८५७,८६०,८६३,८६६,८६९,८७२,८७५, ८७८,८८५,९२३,९२५,१०२७ से १०३६, १०४२,१०४४,१०४६,१०४७,१०४९ से १०५३,१०५५,१०८६,११३२,११३५; ६।३, ६,९; ७।५,६,१२; ९।१८७ से १८९,२१२, २१४,२२५,२३८,२७३

पलिच्छन्न [परिच्छन्न] ओ० ६. जी० ३।२७५
पलित्त [प्रदीप्त] जी० ३।५८६
पलिय [पलित] जी० ३।५९७
पलियंक [पर्यङ्क] रा० २२५. जी० ३।३८४
पलिह [परिघ] ओ० १६
√पलीव [प्र+दीपय्]--पलीवेज्जा. रा० ७७२
√पल्लंघ [प्र+लंघ्]--पल्लंघेज्ज. ओ० १८०
पल्लंघण [प्रलङ्घन] ओ० ४०
पल्लग [पल्यक] जी० ३।६११
पल्लत्थमुह [पर्यस्तमुख] रा० ७६५
पल्लव [पल्लव] ओ० ५,८. रा० १३६,२२८.
जी० ३।२७४,३०६,३८७,६७२
पल्लवपविभत्ति [पल्लवप्रविभक्ति] रा० १००
पल्हविया [पह्लाविका] ओ० ७०. रा० ८०४
पल्हायणिज्ज [प्रह्लादनीय] ओ० ६३
पवंच [प्रपञ्च] ओ० १९५
पवंचेमाण [प्रपञ्चयत्] जी० ३।२३९
पवग [प्लवक] ओ० १,२
पवगपेच्छा [प्लवकप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी०
३।६१६
पवण [पवन] ओ० ४८,५७
पवण [प्लवन] रा० १२,७५८,७५९. जी० ३।११८
पवत्त [प्रवृत्त] रा० १८,७८,८०,८२,११२ जी०
३।४४७
√पवत्त [प्र+वर्तय्]—पवत्तेइ. रा० ६७१—
पवत्तेति. रा० ७५०—पवत्तेमि. रा० ७५०.
पवत्तेहि. रा० ७५०
पवत्तय [प्रवर्तक] रा० ६७१
पवत्ताय [प्रवृत्तक] जी० ३।२८५
पवयणणिण्हग [प्रवचननिह्नवक] ओ० १६०
पवर [प्रवर] ओ० २,२०,४७, से ५३,५५ से ५७,
६३से६५,७२. रा० ६,१२,३२,५१,१३०,१३२,
२३६,२८१,२९२,६८५,६८७ ६८६,६९२,
७००,७१६,७२६,८०२. जी० ३।३००,३०२,
३७२,३९८,४४७,४५७,५९७,११२२

पवलाइया [दे०] जी० २।९
पवहण [प्रवहण] ओ० १००,१२३
पवा [प्रपा] ओ० ३७ रा० १२
पवाइय [प्रवादित] ओ० ६७,६८. रा० १३,६५७.
जी० ३।३५०,५६३,१०२५
पवादित [प्रवादित] रा० ८४२,८४५. जी० ३।४४६
पवादिय [प्रवादित] रा० ७
√पवाय [प्र+वादय्]—पवाएंसु. रा० ७५
पवाल [प्रवाल] ओ० ५,८,१६,२३,४७. रा० २७,
२२८.६६५. जी० १।७१.२७४,२८०,३८७,
५९६,६०८,६७२
पवालमंत [प्रवालवत्] ओ० ५,८. जी० ३।२७४
पविइण्ण [प्रविकीर्ण] ओ० १
पविक्खिरमाण [प्रविकिरत्] जी० ३।११८
पविचरित [प्रविचरित] रा० १७४
पविचरिय [प्रविचरित] जी० ३।२८६,६३९
पविट्ठ [प्रविष्ट] ओ० ६४. जी० ३।५५,७८
√पविणी [प्र+वि+नी]—पविणेज्जा. जी०
३।११८।
पवित्तय [पवित्रक] ओ० १०८,११७,१३१
पवित्ति [प्रवृत्ति] ओ० १६,१७
पवित्तिवाउय [प्रवृत्तिव्यापृत, प्रवृत्तिवादुक] ओ०
१६,१७,२०,२१,५३,५४
पवित्थरमाण [प्रविस्तरत्] जी० ३।२५९
पविद्धत्थ [प्रविध्वस्त] जी० ३।११८, ११९
पविमोयण [प्रविमोचन] ओ० ७,८,१०
पवियरित्तए [प्रविचरितुम्] रा० ७३२,७३७
पविरल [प्रविरल] रा० ६,१२,२८१,७६०,७६१.
जी० ३।४४७,५९१
पविराय [दे०प्रस्फुटित] जी० ३।११८,११९
पविलीण [प्रविलीन] जी० ३।११८,११९
√पविस [प्र+विश्]—पविसइ. रा० ७६६.
—पविसामो. रा० ७६५
पविसंत [प्रविशत्] जी० ३।८३८।१४
पवीइय [प्रवीजित] ओ० ६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√पवीणी [प्र+वि+नी]—पवीणेइ ओ० ५६
पवीणेत्ता [प्रविणीय] ओ० ५६
√पवुच्च [प्र+वच्] पवुच्चति जी० ३।८४१
पवेस [प्रवेश] ओ० १५४,१६२,१६५,१६६. रा० १२६,२१०,२१२,६६८,७५२,७८६,८१६. जी० ३।३००,३५४,३७७,५६४,६४३,८८५
पव्वइत्तए [प्रव्रजितुम्] ओ० १२०. रा० ६६५
पव्वइय [प्रव्रजित] ओ० २३,७६,७८,६५,१५५,१५६
पव्वग [पर्वग] जी० १।६६
पव्वत [पर्वत] रा० २७६. जी० ३।४४५,६३२,६३७,६६१,६६२,६६४,६६६,६६८,७३५,से ७४३,७४५,७४६,७५०,७६५,८३१,८३३,८३६ से ८४२,८४५,८६६,८८२,६१० से ६१२,६१४ से ६१६,६१८से६२३
पव्वतग [पर्वतक] जी० ३।८६३,८७५,८८१,६२७
पव्वतय [पर्वतक] जी० ३।८६३
√पव्वय [प्र+व्रज्]—पव्वइस्सति. रा० ८१२. —पव्वइस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७. —पव्वइहिति. ओ० १५१.—पव्वयंति रा० ६६५.
पव्वय [पर्वत] रा० ५६,१२४,२७६,७५५,७५७. जी० ३।२१७,२१६ से २२१,२२७,३००,५६८,५७७,६३२,६३३,६३८,६३६,६६८,७०१,७३६,७३८,७४०,७४२,७४४,७४५,७४७,७४६,७५०,७५४,७६२,७६५,७६६,७७५,८८३,६३७,१००१,१०३६
पव्वयग [पर्वतक] जी० ३।५७६
पव्वयमह [पर्वतमह] जी० ३।६१५
पव्वयराय [पर्वतराज] जी० ३।८४२
पव्वहणा [प्रव्यथना] ओ० १५४,१६५,१६६
पव्वा [पर्वा] जी० ३।२५८
पसंग [प्रसङ्ग] ओ० ४६
पसंत [प्रशान्त] ओ० १४. रा० ६,१२,१५,२८१,६७१. जी० ३।४४७
पसण्णा [प्रसन्ना] जी० ३।८६०
पसत्त [प्रसक्त] रा० १५
पसत्थ [प्रशस्त] ओ० १५,१६,४६,५२,११६,१५६. रा० ३३,१३३ ६७२. जी० १।१; ३।३०३,३७२,५६६ से ५६८
पसत्थकायविणय [प्रशस्तकायविनय] ओ० ४०
पसत्थमणविणय [प्रशस्तमनोविनय] ओ० ४०
पसत्थवइविणय [प्रशस्तवाग्विनय] ओ० ४०
पसत्थु [प्रशास्तृ] ओ० २३. रा० ६८७,६८८
पसन्ना [प्रसन्ना] जी० ३।५८६
√पसर [प्र+सृ]—पसरंति. रा० ७५
पसरिय [प्रसृत] ओ० ४६. जी० ३।५८६
√पसव [प्र+सू]—पसवंति. जी० ३।६३०
पसवित्ता [प्रसूय] जी० ३।६३०
पसाधण [प्रसाधन] रा० १५२. जी० ३।३२५
पसाधणघरग [प्रसाधनगृहक] रा० १८२,१८३
√पसार [प्र+सारय्]—पसारेति. रा० ६६
पसासेमाण [प्रशासयत्] ओ० १४. रा० ६७१,६७६
पसाहणघरग [प्रसाधनगृहक] जी० ३।२६४
पसाहा [प्रशाखा] ओ० ५,८. रा० २२८. जी० ३।२७४,३८७,६७२
पसिढिल [प्रशिथिल] ओ० ५१
पसिण [प्रश्न] ओ० २६. रा० १६,७१६
पसु [पशु] ओ० ३७. रा० ६७१,७०३,७१८. जी० ३।७२१
पसेढि [प्रश्रेणि] रा० २४. जी० ३।२७७
पस्सा [पश्या] रा० ८१७
पस्सवणी [प्रस्रवणी] रा० ८१७
पह [पथ] ओ० ५२,५५. रा० ६५४,६५५,६८७,७१२. जी० ३।५५४,८३८।१५
पहकर [दे०] ओ० १,६. रा० ६८३. जी० ३।२७५
पहगर [दे०] रा० ५३
पहट्ठ [प्रहृष्ट] ओ० १६. जी० ३।५६६
पहरण [प्रहरण] ओ० ५७,६४. रा० १७३,६६४,६८१,६८३. जी० ३।२८५,५६२

पहरणकोस [प्रहरणकोश] रा० २४६,३५५. जी० ३।४१०,५२०

पहरणरयण [प्रहरणरत्न] रा० २४६,३५५. जी० ३।४१०,५२०

पहसित [प्रहसित] जी० ३।३०७,३६४,६३४,६३६, १००८

पहसिय [प्रहसित] रा० १३७,१८३. जी० ३।३५५, ३५६,३६८ से ३७१,५८६,६७३

पहा [प्रभा] ओ० १२,२२. रा० १५४. जी० ३।५८६

पहाण [प्रधान] ओ० २३,२५,१४६. रा० ६८६, ८०६,८०७. जी० ३।५६२,५६७

√पहार [प्र+धारय्]—पहारेज्जा. ओ० ४०. —पहारेत्थ. ६५,२८८. जी० ३।४५४

पहाविय [प्रधावित] ओ० ४६

पहिट्ठ [प्रहृष्ट] ओ० ५१

पहिय [पथिक] रा० ७८७,७८८

पहियकित्ति [प्रथितकीर्ति] ओ० ६५

पहीण [प्रहीण] ओ० ७२

पहु [प्रभु] ओ० ११६. रा० ७६१

पहेलिया [प्रहेलिका] ओ० १४६. रा० ८०६

पाई [पात्री] रा० २५८,२७६

पाईण [प्राचीन] रा० १२४. जी० ३।५७७,६३६, १०३६

पाईणवात [प्राचीनवात] जी० १।८१

पाईणवाय [प्राचीनवात] जी० ३।६२६

पाउ [प्रादुस्] ओ० २२. रा० ७२३,७७७,७७८, ७८८

पाउग्ग [प्रायोग्य] रा० ६६६

√पाउण [प्र+आप्]—पाउणइ. ओ० १८२. —पाउणंति. ओ० ६४—पाउणिहिति. ओ० १४०. रा० ८१६

पाउणित्ता [प्राप्य] ओ० ६४. रा० ८१६

√पाउब्भव [प्रादुस्+भू]—पाउब्भवंति. रा० १६—पाउब्भवह. रा० १३ —पाउब्भवित्था. ओ० ४७

पाउब्भवमाण [प्रादुर्भवत्] रा० १७

पाउब्भूय [प्रादुर्भूत] ओ० ७६ से ८१. रा० ६१, १२०,६६४,६६७,७१७,७२२,७७७,७८७,७६५

पाउया [पादुका] ओ० २१,५४,६४. रा० ५१, ७१४

पाओवगमण [प्रायोपगमन] ओ० ३२

पाओवगय [प्रायोपगत] ओ० ११७

पागडभाव [प्रकटभाव] ओ० २७. रा० ८१३

पागडिय [प्रकटित] ओ० ५०,५१

पागय [प्राकृत] जी० ३।८३८।३

पागसासण [पाकशासन] जी० ३।१०३६

पागार [प्राकार] ओ० १. रा० १२७,१२८,१७०, ६५४,६५५. जी० ३।३५२, ३५३,३५८, ५५४,५६४

√पाड [पातय्]—पाडेइ. रा० ७६५

पाडंतिय [प्रात्यान्तिक] रा० ११७,२८१

पाडलि [पाटलि] ओ० ३०. जी० ३।२८३

पाडिसुय [प्रतिश्रुत] जी० ३।४४७

पाडियक्क [प्रत्येक] ओ० ५५,५८,६२,७०

पाडिहारिय [प्रातिहारिक] ओ० १२०,१६२. रा० ७०४,७०६,७११,७१३,७७६

पाडिहेर [प्रातिहार्य] ओ० २

पाण [पान] ओ० १४,११७,१२०,१४१,१४७, १४६,१५०,१६२. रा० ६७१,६८६,७०४, ७१६,७५२,७६५,७७४,७७६,७८७,७८६, ७६४,७६७,७६६,८०२,८०८,८१०,८११

पाण [प्राण] ओ० ८७,१६१,१६३. जी० ३।१२७, ६७५,१०२८,११३०

पाणक्खय [प्राणक्षय] जी० ३।६२६,६२८

पाणत [प्राणत] जी० ३।१०७६,१०८८

पाणय [प्राणत] ओ० ५१,१६२. जी० ३।१०३८, १०५३,१०६६,१०६८

पाणविहि [पानविधि] ओ० १४६. रा० ८०६

पाणाइवाय [प्राणातिपात] ओ० ७१,७६,७७, ११७,१२१,१६१,१६३. रा० ६६३,७१७, ७६६

पाणाइवायवेरमण [प्राणातिपातविरमण] ओ० ७१
पाणि [पाणि] ओ० १५,१९,३७,६३,६४,१४३. रा० १२,६६४,६७२,६७३,७५८,७५९,८०१. जी० ३।११८,५६२,५९६
पाणिलेहा [पाणिरेखा] ओ० १९. जी० ३।५९६, ५९७
पाणिय [पानीय] ओ० ४६
पाताल [पाताल] जी० ३।७२६,७२८
पाती [पात्री] रा० १५१. जी० ३।३२४,३५५, ४१९,४४५
पाद [पाद] रा० २८१,२८८. जी० ३।३११, ४०७,४१५,४४७,४५४
पादचारविहारि [पादचारविहारिन्] जी० ३।६१७
पादपीढ [पादपीठ] ओ० ६४
पादव [पादप] जी० ३।३०३
पामिच्च [पामृत्य] ओ० १३४
पामोक्ख [प्रमुख, प्रमुख्य] रा० ३५५,७८७,७८८. जी० ३।४१०,५२०
पाय [पात्र] ओ० ३३
पाय [पाद] ओ० १५,३७,५२,६३,६९,९०,१११ से ११३,१३७,१३८,१४३. रा० १२,३७, २४५,६५६,६७२,६७३,७५८,७५९,८०१. जी० ३।११८,५५६
पायए [पातुम्] ओ० ११४,१३५
पायंचणी [पादकाञ्चनी] जी० ३।५८७
पायंत [प्रवृत्त, पादान्त] रा० ११५
पायंताय [प्रवृत्तक, पादान्तक] रा० २८१
पायच्छिण्णग [पादच्छिन्नक] रा० ७५१
पायच्छिण्णय [पादच्छिन्नक] रा० ७६७
पायच्छित्त [प्रायश्चित्त] ओ० २०,३८,३९,५२, ५३,७०. रा० ६८३,६८५,६८७ से ६८९, ६९२,७००,७१६,७२६,७५१,७५३,७६५, ७९४,८०२,८०५
पायछिण्णग [पादछिन्नक] ओ० ९०
पायजाल [पादजाल] जी० ३।५९३
पायतल [पादतल] रा० २५४. जी० ३।४१५
पायत्त [पादात] ओ० ६४
पायत्ताणियाहिवइ [पादातानीकाधिपति, पादात्यनीकाधिपति] रा० १३,१६
पायत्ताणियाहिवति [पादातानीकाधिपति, पादात्यनीकाधिपति] रा० १४
पायत्ताणीय [पादातानीक, पादात्यनीक] ओ० ६४
पायत्ताणीयाहिवइ [पादातानीकाधिपति, पादात्यनीकाधिपति] रा० १५
पायत्ताय [प्रवृत्तक, पादान्तक] रा० १७३
पायपीढ [पादपीठ] ओ० २१,५४. रा० ८,३७, ५१,७१४. जी० ३।३११
पायपुंछण [पादप्रोञ्छन] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८,७५२,७८९
पायबद्ध [पादबद्ध] रा० १७३. जी० ३।२८५
पायरास [प्रातराश] रा० ६८२
पायव [पादप] ओ० ५,८,९,१२,१३. रा० ३,४, १३३,८०४. जी० ३।२७४
पायविहारचार [पादविहारचार] ओ० ५२. रा० ६८७ से ६८९,७००
पायवीढ [पादपीठ] ओ० १९
पायसीस [पादशीर्ष] जी० ३।४०७
पायसीसग [पादशीर्षक] रा० ३७,२४५. जी० ३।३११
पायाल [पाताल] ओ० ४६. जी० ३।७२८, ७३१
पारंचियारिह [पारञ्चिताई] ओ० ३९
पारग [पारग] ओ० ९७
पारगय [पारगत] ओ० १९५।२०
पारगामि [पारगामिन्] ओ० २९
पारब्भमाण [प्रारभमान] ओ० ११७
पारसी [पारसी] ओ० ७०. रा० ८०४
पारावय [पारापत] जी० ३।३८८
पारिजातकवण [पारिजातकवन] जी० ३।५८९
पारिणामिया [पारिणामिकी] रा० ६७५

पारियाय [पारिजात] रा० ४५

पारिहेरग [प्रातिहार्यक] जी० ३।५६३

पारी [दे० पारी] जी० ३।५८७

पारेवय [पारापत] रा० २६. जी० ३।२७६. ५८३

√पाल [पालय्]—पालयाहि. ओ० ६८. जी० ३।४४८—पालेंति. ओ० ६१—पालेहि रा० २८२

पालंब [प्रालम्ब] ओ० २१,५२,५४,६३,१०८, १३१. रा० ८,२८५,६८७ से ६८६,७१४. जी० ३।५६३

पालग [पालक] ओ० ५१

पालित्ता [पालयित्वा] ओ० ६१

पालियाय [पारिजात] रा० २७. जी० ३।२८०

पालेमाण [पालयत्] ओ० ६८. रा० २८२,७६१. जी० ३।३५०,४४८,५६३,६३७

पाव [पाप] ओ० ७१,७६ से ८१,१२०,१६२. रा० ६७१,६६८,७५२,७८६

पाव [प्र+आप्]—पावइ. ओ० १६५।१४ —पाविज्जामि. रा० ७५१—पाविज्जिहिह. रा० ७५१

पावकम्म [पापकर्मन्] ओ० ८४,८५,८७,८८. रा० ७५०,७५१

पावकम्मोवएस [पापकर्मोपदेश] ओ० १३६

पावग [पापक] ओ० ७४।६

पावय [पापक] ओ० ७१

पावयण [प्रवचन] ओ० २५,७२,७६ से ८१, १२०,१६२,१६४. रा० ६६५,६६८,७५२, ७८६

पावसउण [पापशकुन] रा० ७०३

पास [पार्श्व] ओ० १६. रा० १३१ से १३८, २५६,८१७. जी० ३।३५८,४१५,५६६,५६७, ७७५

पास [पाश] रा० ६६४. जी० ३।५६२

पास [दृश्]—पासइ. ओ० ५४. रा० ७१४. जी० ३।११८—पासंति. ओ० ५२. रा० ७६५. जी० ३।१०७—पासति. रा० ७. जी० ३।२००—पाससि. रा० ७७१—पासह. रा० ६३—पासामि. रा० ७६६—पासिज्जा. रा० ७७६. —पासिज्जासि. रा० ७५१. —पासेज्जा. जी० ३।११८

पासंत [पश्यत्] रा० ७६४

पासग [पाशक] ओ० १४६. रा० ८०६

पासग्गाह [पाशग्राह] ओ० ६४

पासणया [दर्शन] रा० ७५० से ७५३

पासतो [पार्श्वतस्] रा० ५५

पासपाणि [पाशपाणि] रा० ६६४

पासमाण [पश्यत्] रा० ८१५

पासवण [प्रस्रवण] रा० ७६६

पाससूल [पार्श्वशूल] जी० ३।६२८

पासाइय [प्रासादीय, प्रासादिक] जी० ३।२८६ से २८८,२६०

पासाईय [प्रासादीय, प्रासादिक] ओ० ७२. रा० २०,३७,१३०,१३३,१३६,२५७. जी० ३।२६६, ३०६,३११,४०७,४१०,५८५,५६६,५६७, ६७२,११२१

पासाण [पाषाण] रा० १७४. जी० ३।२८६

पासाद [प्रासाद] जी० ३।७६२

पासादवडेंसग [प्रासादावतंसक] जी० ३।७६२

पासादीय [प्रासादीय, प्रासादिक] ओ० १,७,८, १० से १३,१५,१६४. रा० १,१६,२१ से २३, ३२,३४,३६,३८,१२४,१३७,१४५,१५७, १७४,१७५,२२८,२३१,२३३,२४५,२४७, २४६,६६८,६७०,६७२,६७६,६७८,७००, ७०२. जी० ३।२३२,२६१,२६६,२७६,३००, ३०३,३०७,३८७,३६३,५८१,५८४,६३६, ८५७,८६३,११२२

पासाय [प्रासाद] रा० १४,७१०,७७४. जी० ३।५६४,६०४

पासायवडिंसय [प्रासादावतंसक] जी० ३।७७०

पासायवडेंसक [प्रासादावतंसक] जी० ३।३६६, ३७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासायवडेंसग [प्रासादावतंसक] रा० १३७,१८६, २०५,२०७,२०८,७७८. जी० ३।३०७ से ३०६, ३१४,३५५,३५६,३६४,३६७,३६६ से ३७३, ६३४,६३६,६८६,६८६,६६२ से ६६८,७६२

पासायवडेंसत [प्रासादावतंसक] रा० २०४

पासायवडेंसय [प्रासादावतंसक] रा० २०४ से २०६. जी० ३।३५६,३६४,३६८ से ३७१, ६६३,६७३,६८५,६८८,७३७

पासावच्चिज्ज [पार्श्वापत्य] रा० ६८६,६८७, ६८६,७०६,७१३,७३३

पासि [पार्श्व] ओ० ६६. जी० ३।३०१ से ३०७, ३१५,३५५,४१७,६३६,७८८ से ७६०,८३६, ८८६

पासित्तए [द्रष्टुम्] रा० ७६५

पासित्ता [दृष्ट्वा] ओ० ५२. रा० ८. जी० ३.११८

पासेत्ता [दृष्ट्वा] रा० ६८८

पाहुड [प्राभृत] रा० ६८०,६८१,६८३,६८४, ६६६,७००,७०२,७०८,७०६

पाहुणगभत्त [प्राघुणकभक्त] ओ० १३४

पाहुणिज्ज [प्राह्वनीय] ओ० २

पि [अपि] रा० १०

पिअदंसण [प्रियदर्शन] ओ० ६३

पिउ [पितृ] ओ० १४. रा० ६७१,७७३

पिंगल [पिङ्गल] ओ० ६३

पिंगलक्ख [पिङ्गलाक्ष] जी० ३।२७५

पिंगलक्खग [पिङ्गलाक्षक] ओ० ६

पिंछि [पिच्छिन्] ओ० ६४

पिंजर [पिञ्जर] जी० ३।८७८

पिंडहलिद्दा [पिण्डहरिद्रा] जी० १।७३

पिंडि [पिण्डि] ओ० ५,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४

पिंडिम [पिण्डिम] ओ० ७,८,१०. जी० ३।२७६

पिंडियग्गसिरय [पिण्डिताग्रशिरस्क] ओ० १६

पिंडियसिर [पिण्डितशिरस्] जी० ३।५६६

पिच्छज्झय [पिच्छध्वज] रा० १६२. जी० ३।३३५

पिच्छणघरग [प्रेक्षणगृहक] रा० १८२,१८३

पिच्छाघरमंडव [प्रेक्षागृहमण्डप] रा० ३२,३३,६६

पिट्टण [पिट्टन] ओ० १६१,१६३

पिट्ठओ [पृष्ठतस्] ओ० ६६. जी० ३,४१६

पिट्ठंतर [पृष्ठान्तर] रा० १२,७५८,७५६. जी० ३।११८,५६८

पिट्ठतो [पृष्ठतस्] रा० २५५,२८६,२६०. जी० ३।४५५,४५६

पिट्ठपयणग [पिष्टपचनक] जी० ३।७८

पिट्ठिकरंडग [पृष्ठिकरण्डक] जी० ३।२१८,५६८

पिडग [पिटक] जी० ३।८३८।४ से ६

पिडय [पिटक] जी० ३।८३८।३,५,६

पिणद्ध [पिनद्ध] ओ० १७,६३. रा० ६६,७०, १३३,६६४,६८३. जी० ३।३०३,५६२

पिणद्धय [पिनद्धक] रा० ७६१

पिणय [पीनक] जी० ३।५८७

√पिणिद्ध [पि+नह्, पि+नि+धा]—पिणिद्धेइ. रा० २८५. जी० ३।४५१.—पिणिद्धेति. रा० २८५. जी० ३।४५१

पिणिद्धत्तए [पिनद्धुम्] ओ० १०८

पिणिद्धेत्ता [पिनह्य] रा० २८५. जी० ३।४५१

पितिपिंडनिवेदण [पितृपिण्डनिवेदन] जी० ३।६१४

पित्तजर [पित्तज्वर] रा० ७६५

पित्तिय [पैत्तिक] ओ० ११७. रा० ७६६

पिधाण [पिधान] रा० १३१,१४७,१४८. जी० ३।४४६

पिबित्तए [पातुम्] ओ० १११

पिय [प्रिय] ओ० १५,२०,५३,६८,११७,१४३. रा० ७१३,७५० से ७५३,७७४,७६६. जी० १।१३५; ३।१०६०,१०६६

पिय [पितृ] ओ० ७१. रा० ६७१. जी० ३।६११

√पिय [पा]—पिज्जइ. रा० ७८४—पियइ. रा० ७३२

पियंगु [प्रियङ्गु] ओ० ६,१०. जी० ३।३८८, ५८३

पियतराय [प्रियतरक] रा० २५ से ३१,४५. जी० ३।२७८ से २८४,६०१
पियदंसण [प्रियदर्शन] रा० ६७२,६७३,८०१. जी० ३।८०८
पियय [प्रियक] ओ० ९,१०
पियर [पितृ] रा० ८०२,८०३,८०४,८०८,८१०
पियरक्खिया [पितृरक्षिता] ओ० ९२
पियाल [प्रियाल] जी० ३।३८८,५८३
पिरली [पिरली] जी० ३।५८८
पिरिपिरिया [पिरिपिरिया] रा० ७१,७७
पिरिपिरियावायग [पिरिपिरियावादक] रा० ७१
पिव [इव] ओ० २७. रा० १७. जी० ३।४५१
पिवासा [पिपासा] ओ० ४६,११७. रा० ७६६. जी० ३।१०९,१२७,१२८,५९२,१११४
पिवासिय [पिपासित] रा० ७६०,७६१,७७४. जी० ३।११८,११९
पिसाय [पिशाच] ओ० ४९. जी० ३।१७,२५२,२५३
पिसायकुमार [पिशाचकुमार] जी० ३।२५३
पिसायकुमारराय [पिशाचकुमारराज] जी० ३।२५२ से २५६
पिसायकुमारिंद [पिशाचकुमारेन्द्र] जी० ३।२५३ से २५६
पिहडग [पिठरक] जी० ३।७८
√पिहा [पि+धा]—पिहावेमि. रा० ७५४. —पिहेइ. रा० ७५५.—पिहेज्जा. रा० ७७२
पिहाण [पिधान] रा० २९०. जी० ३।३०१
पिहाणय [पिधानक] रा० ७५४,७५६
पिहुणमिंजिया [दे० पिहुणमज्जा] रा० २९
पिहुल [पृथुल] ओ० १९. जी० ३।५९६,५९७
पीइगम [प्रीतिगम] ओ० ५१
पीइदाण [प्रीतिदान] ओ० २१,५४,१४७. रा० ७१४,७७६,८०८
पीइमण [प्रीतिमनस्] ओ० २०,२१,५३,५४,५६, ६२,६३,७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १४, १६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७, २७९,२८१,२९०,६५५,६८१,६८३,६९०, ६९५,७००,७०७,७१०,७१३,७१४,७१६, ७१८,७२५,७२६,७७४,७७८. जी० ३।४४३, ४४५,४४७,५५५
पीढ [पीठ] ओ० २७,१२०,१६२. रा० ६९८, ७०४,७०६,७११,७१३,७५२,७७६,७८९
पीढग्गाह [पीठग्राह] ओ० ६४
पीढमद्द [पीठमर्द] ओ० १८. रा० ७५४,७५६, ७६२,७६४
पीण [पीन] ओ० १६. रा० १३३. जी० ३।३०३, ५९६,५९७
√पीण [पीनय्]—पीणंति. जी० ३।४४७. —पीणेंति. रा० २८१
पीणणिज्ज [प्रीणणीय] ओ० ६३
पीत [पीत] जी० ३।५९५
पीतपाणि [पीतपाणि] रा० ६६४
पीय [पीत] रा० ६६४. जी० ३।५९२
पीयकणवीर [पीतकणवीर] रा० २८. जी० ३।२८१
पीयपाणि [पीतपाणि] जी० ३।५९२
पीयबंधुजीव [पीतबन्धुजीव] रा० २८. जी० ३।२८१
पीयासोय [पीताशोक] रा० २८. जी० ३।२८१
पीलियग [पीडितक] ओ० ९०
पीलु [पीलु] जी० १।७१
पीवर [पीवर] ओ० १६. रा० ६९,७०. जी० ३।५९६,५९७
√पीह [स्पृह्]—पीहंति. ओ० २०.—पीहेइ. रा० ७१३.—पीहेंति. रा० ७१३
पुंछणी [पुञ्छणी] रा० १३०,१९०. जी० ३।२९४-३००
पुंज [पुञ्ज] ओ० २,५५. रा० १२,३२,३८,१६०, २२२,२४६,२८१,२९१,२९३ से २९६,३००, ३०५,३१२,३५५. जी० ३।३१२,३३३,३६२, ३८१,४१७,४४७,४५७ से ४६२,४६५,४७०, ४७७,५१६,५२०,५५४,५८०,५९०,५९१,८९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुंडग [पुण्ड्रक] जी० ३।८७८

पुंडरिगिणी [पुण्डरीकिणी] जी० ३।६१५

पुंडरीय [पुण्डरीक] ओ० १२,१६,२१,५४. रा० ८,२७६,२६२. जी० ३।११८,११६,४५७, ५६६,८२६

पुंडरीयद्दह [पुण्डरीकद्रह] जी० ३।४४५

पुक्खर [पुष्कर] ओ० १७०. रा० २४,६५,१७१. जी० ३।२१८,२७७ ३०६,५७८,६७०,७५५, ७७५,८१६,८१७,८२१ से ८२५,८२७,८२६ से ८३१,८४८,८८३

पुक्खरकण्णिया [पुष्करकर्णिका] जी० ३।८६,२६०

पुक्खरगय [पुष्करगत] ओ० १४६. रा० ८०६

पुक्खरणी [पुष्करणी] जी० ३।६०१,६१०,६११, ६१४ से ६१६

पुक्खरत्थिभग [पुष्करस्थिभुक] जी० ३।६५४

पुक्खरत्थिभुय [पुष्करस्थिभुक] जी० ३।६४३,६५४

पुक्खरद्ध [पुष्करार्ध] जी० ३।८३१ से ८३४

पुक्खरपत्त [पुष्करपत्र] ओ० २७. रा० ८१३

पुक्खरवर [पुष्करवर] जी० ३।७७४,७७५

पुक्खरवरग [पुष्करवरग] जी० ३।७७४

पुक्खरिणी [पुष्करिणी] ओ० ६,६६. रा० १७४, १७५,१८०,२३३,२३४,२७३,२८८,३१२,३१३, ३५०,३७६,४३५,४६६,५५६,६१६,६५६. जी० ३।११८,११६,२७५,२८६,३६५,३६६, ४१२,४२५ ४३८,४५४,४७७,५१५,५२३, ५२६,५३७,५४४,५५१,५५६,६८३ से ६८६

पुक्खरोद [पुष्करोद] जी० ३।४४५ ७७५,८२५, ८४८ से ८५१,८५४ से ८५६,८५६,८७६,६४६, ६४६ ६५७,६६२,६६४

पुक्खरोदग [पुष्करोदक] जी० ३।४४५

पुक्खरोदय [पुष्करोदक] रा० २७६

पुग्गलपरियट्ट [पुद्गलपरिवर्त] जी० १।१३६

√**पुच्छ** [प्रच्छ्]—पुच्छइ. रा० ७१६.—पुच्छंति. रा० ७१३.—पुच्छसि. रा० ७३७. —पुच्छिरसामो रा० १६

पुच्छणा [प्रच्छना] ओ० ४३

पुच्छा [पृच्छा] ओ० १६०. जी० १।६१; ३।४, १२,३५,४१,४३,८२,६६ से १०२,११३ से ११५,१२५,१५५,१५६,१६२,१६३,१६६, १६८,१६६,१८७ से १६१,२३३,२३४,२४३, ७२२,७३६; ८२०,८३०,८३४,८३७,६५६,६५७, ६५६,६६०,६६८,६७८,६७६,१०११,१०४१, १०४४,१०४५,१०५२,१०५६,१०६२ से १०६४, १०६६,१०७४,१०८६,१११८,११२६,११३२; ४।६; ५।१७

पुच्छितव्व [प्रष्टव्य] जी० ३।३६,७७

पुच्छिय [पृष्ट] ओ० १२०,१६२. रा० ६६८, ७५२ ७८६

पुच्छियव्व [प्रष्टव्य] जी० ३।२४४

पुट्ठ [स्पृष्ट] ओ० १६५।६,१०. जी० १।४१; ३।२२,५७१,५७३,५७७,७१५,७१७,८०३, ८१६,८२८

पुट्ठ [पुष्ट] जी० ३।५६७

पुट्ठलाभिय [पृष्टलाभिक] ओ० ३४

पुट्ठि [पुष्टि] जी० ३।५६२

पुड [पुट] रा० ३०. जी० ३।२८३,१०७८

पुढवि [पृथिवी] ओ० १८६,१६१ से १६५. जी० १।६२,१२१ से १२५;२।१००,१०८, १३०,१३५,१३८,१४८,१४६;३।१६१,१६२, १६५,१६६,३०३,७७५,६३७,६७४; ५।२०,६३

पुढविकाइय [पृथ्वीकायिक] जी० १।१२,१३,६२, १२८; २।१०२,१११.१३६,१३८,१४६; ३।१३१ से १३५,१८३,१८४,१६४ १६५; ५ १,२,५,८,१८ से २०; ८।५; ६।१८२,१८४, २५६,२५७,२६२,२६३,२६६

पुढविकाल [पृथ्वीकाल] जी० ५।१७,२२,३०; ८।३; ६।७७,८५,६६

पुढविक्काइय [पृथ्वीकायिक] जी० १।६७; २।१३६,१४६; ३।१२६,१३२; ५।१२,२०; ८।१,३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुढविसिलापट्टग [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० १८५. जी० ३।२९७,८५७,८६२

पुढविसिलापट्टय [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० ४

पुढवी [पृथिवी] रा० १२४,१३३,७५५,७५७. जी० २।१२७,१४८,१४९; ३।२ से ९,११ से ३५,३७ से ४०,४२,४४ से ५७,५९ से ६६, ७३ से ८१,८३ से ९८,१०३,१०४,१०६ से ११२,११६,११७,१२०,१२७,१२८; ११।५, १८५ से १९१,२३२,२५७,६००,६०१, १००३,१०३८,१०५७ से १०५९,१०६३, १०६५,१०६६,११११; ५।१७

पुढवीकाइयत्त [पृथ्वीकायिकत्व] जी० ३।१२८

पुढवीक्काइयत्त [पृथ्वीकायिकत्व] जी० ३।११२८, ११३०

पुढवीसिलापट्टग [पृथ्वीशिलापट्टक] जी० ३।५७९

पुढवीसिलापट्टय [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० १३

पुण [पुनर्] ओ० ५२. रा० ७५०. जी० २।१५०

√पुण [पू]—पुणिज्जइ. रा० ७८५

पुणब्भव [पुनर्भव] ओ० १९५

पुणो [पुनर्] ओ० ६३. जी० ३।८३८।१४

पुण्ण [पूर्ण] रा० १७४,२८८,७६३. जी० ३।११८, ११९,२८६,४५४,५८६,७८४,७८७,८७८

पुण्ण [पुन्य] ओ० ७१,१२०,१६०. रा० ६९८, ७५२,७५३,७७४,७८९

पुण्णकलस [पूर्णकलश] ओ० ४८,६४. रा० ५०

पुण्णप्पभ [पूर्णप्रभ] जी० ३।८७८

पुण्णप्पमाण [पूर्णप्रमाण] जी० ३।७८४,७८७

पुण्णभद्द [पूर्णभद्र] ओ० २,३,१९ से २२,५२,५३, ६५,६९,७०

पुण्णमासिणी [पौर्णमासी, पूर्णमासी] ओ० १२०, १६२. रा० ६९८,७५२,७८९. जी० ३।७२३, ७२९

पुण्णरत्ता [पूर्णरक्ता] ओ० ७१. रा० ६१

पुण्णाग [पुन्नाग] जी० १।७१

पुत्त [पुत्र] रा० ६७३,७९१. जी० ३।६११

पुत्ताणुपुत्तिय [पौत्राणुपुत्रिक] रा० ७७६

पुप्फ [पुष्प] ओ० २,६,१९,४७,५५,६७,९२,९४. रा० १२,१३,२६,३२,१५६,१५७,२५८,२७९ से २८१,२९१,२९३ से २९६,३००,३०५, ३१२,३५१,३५५,५९४,६५७,६७०,७७६. जी० १।७१; ३।१७१,२७५,२८२,३२९,३३०, ३७२,४१६,४४५ से ४४८,४५७ से ४६२, ४६५,४७०,४७७,५१६,५२०,५४७,५५४, ५८०,५८१,५८६,५९१,५९६,५९७,६००, ६०२,८३८।२,१५,८४२ ८७२

पुप्फग [पुष्पक] ओ० ५१

पुप्फचंगेरिया [पुष्पचङ्गेरिका] रा० १२

पुप्फछज्जिया [पुष्पछाद्यिका] रा० १२

पुप्फदंत [पुष्पदन्त] जी० ३।८६३

पुप्फमंत [पुष्पवत्] ओ० ५,८. जी० ३।२७४

पुप्फवद्दलय [पुष्पवार्दलक] रा० १२

पुप्फासव [पुष्पासव] जी० ३।८६०

पुप्फाहार [पुष्पाहार] ओ० ९४

पुप्फिय [पुष्पित] रा० ७८२

पुप्फुत्तर [पुष्पोत्तर] जी० ३।६०१

पुप्फोदय [पुष्पोदक] ओ० ६३

पुमत्त [पुंस्त्व] ओ० १४१. रा० ७८९

पुर [पुर] ओ० २३. रा० ६७४,६९५,७९०,७९१

पुरओ [पुरतस्] ओ० १६,६४,६६,७०. रा० २०, १२४,१३६ से १६१,१७६,२११,२२१. जी० ३।३२७,३५६,३७४,३७६,३८०,३८५, ३९२,३९५,४१६,८८७,८८९

पुरओकाउं [पुरस्कृत्य] ओ० २५,१६४

पुरच्छिम [पौरस्त्य] जी० ३।३००

पुरतो [पुरतस्] रा० ४९ से ५६,२१५,२३३, २५७,२५८,२९१,८०२. जी० ३।२८८,३१६ से ३२६,३६३,४५७,६४१,८९३,८९७,८९९, ९०१

पुरत्थाभिमुह [पुरस्तादभिमुख] ओ० २१,५४,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११७. रा० ४७,२७७,२८३,२८६,६५७,७६६, जी० ३।४४३,४४६,४५२,५५७

पुरत्थिम [पौरस्त्य] रा० १६,४२,४४,१२६,१७०, २१०,२१२,२३५,२३६,२४२,६५६. जी० ३।३००,३४०,३४५,३५१,३७३,३९७, ३९८,४०४,४४३,४४६,५५६,५६२,५६८, ५७७,६२२,६४७,६६१,६६६,६६८,६७३, ६८२,६९४,६९७,६९८,७०८,७१०,७३६, ७५६,७६२,७६४,७६६,७६८ से ७७०,७७२, ७७३,७७७,७७६,८००,८२४,८२५,८५१, ८८२,८८५,९०२,९३६,९४४,१०१५, १०१६

पुरत्थिमिल्ल [पौरस्त्य] रा० ४७,५६,२७७, २८३,२८६,२८८,२९१,२९८,३०३,३०८, ३१६,३२४,३२९,३३२ से ३४३ ३४७ से ३५१,३६५,४१४,४५४,४७४,५१५,५३४, ५७५,५९४,६३५,६७६,६५७,६६४. जी० ३।३३ से ३५,३७,२१६,२२२,२२३, २२७,४४३,४४५,४५२,४५४,४५७,४६३, ४६८,४७३,४८४,४८६,४९४ ४९७ से ५०८, ५१२ से ५१६,५२५,५२६,५३१,५३३,५३६, ५४०,५४६,५४७,५५३,५५६,५५७,५७७, ६६८,६७३,६८६,६९२,६९३,७६८,७७०, ७७२,७७४,७७६,७७८,९१०

पुरवर [पुरवर] ओ० १६ जी० ३।५९६

पुरा [पुरा] रा० १८५,१८७. जी० ३।२१७, २९७,२९८,३५८,५७६

पुरिमताल [पुरिमताल] ओ० ११५

पुरिस [पुरुष] ओ० १४,१६,१७,१९,५२,६३,६४, १९५।१८. रा० ८ २८,२९२,६७१,६८१ से ६८३,६८७ से ६९१ ७००,७०६,७१४ से ७१६,७३२,७३५,७३७,७५१,७५३ से ७५६, ७५८ से ७६२,७६४,७६५,७६८,७६९,७७२, ७७४,७७५,७८७,७८८. जी० २।१,७५ से ७८,९० से ९३,९५,९६,९८,१४१ से १५१; ३।१२७।५,१४८,१४९,१६४,४५७

पुरिसक्कार [पुरुषकार] ओ० ८९ से ९५,११४, ११७,१५५ १५७ से १६०,१६२,१६७

पुरिसपुंडरीय [पुरुषपुण्डरीक] ओ० १४. रा० ६७१

पुरिसलक्खण [पुरुषलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

पुरिसलिंगसिद्ध [पुरुषलिङ्गसिद्ध] जी० १।८

पुरिसवग्घ [पुरुषव्याघ्र] ओ० १४. रा० ६७१

पुरिसवर [पुरुषवर] ओ० १४. रा० ६७१

पुरिसवरगंधहत्थि [पुरुषवरगन्धहस्तिन्] ओ० १४, १६,२१,५४. रा० ८,२९२,६७१ जी० ३।४५७

पुरिसवरपुंडरीय [पुरुषवरपुण्डरीक] ओ० १६,२१, ५४. रा० ८,२९२. जी० ३।४५७

पुरिसवेद [पुरुषवेद] जी० १।१३६; २।९७,९८; ९।१२३,१२७

पुरिसवेदग [पुरुषवेदक] जी० ९।१३०

पुरिसवेय [पुरुषवेद] जी० १।२५

पुरिसवेयग [पुरुषवेदक] जी० ९।१२१

पुरिससीह [पुरुषसिंह] ओ० १४, १६, २१, ५४. रा० ८, २९२, ६७१. जी० ३।४५७

पुरिसासीविस [पुरुषाशीविष] ओ० १४. रा० ६७१

पुरिसुत्तम [पुरुषोत्तम] रा० ८

पुरिसोत्तम [पुरुषोत्तम] ओ० १६,२१, ५२, ५४. रा० २९२. जी० ३।४५७

पुरोवग [पुरोपग] ओ० ९, १०

पुलंपुल [दे०] ओ० ४६

पुलग [पुलक] ओ० ८२. रा० १०,१२, १८, ६५, १६५, २७९

पुलय [पुलक] जी० ३।७

पुलाकिमिय [पुलाकृमिक] जी० १।८४

पुलिंदी [पुलिन्दी] ओ० ७०. रा० ८०४

पुलिण [पुलिन] रा० २४५. जी० ३।४०७

पुव्व [पूर्व] ओ० ७२, ११६, १५६, १६७,१८२. रा० ४०, १३२,१७३,६८५,७७२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जी० ३।२६५,२८५,३५८,८४१,८८१,६८८,
६८६

पुव्वंग [पूर्वाङ्ग] जी० ३।८४१

पुव्वकोडि [पूर्वकोटि] जी० १।१०१, ११६,१२३,
१२४; २।२२,२४,२६ से ३४,४८ से ५०, ५३
से ६१,८३,८४,१०६,११३,११४,११६.१२२
से १२४; ३।१६१,१६२,११३५; ६।६; ७।१२;
६।४१,१४२,१४४,१४६,१६२,२००,२०३,
२१२,२२५,२३८,२७३

पुव्वकोडिय [पूर्वकोटिक] ओ० १८८

पुव्वक्कम [पूर्वक्रम] जी० ३।८८०

पुव्वणत्थ [पूर्वन्यस्त] रा० ४८. जी० ३।५५८ से
५६०,५६२

पुव्वपुरिस [पूर्वपुरुष] ओ० २

पुव्वभणित [पूर्वभणित] जी० ३।८८१

पुव्वभव [पूर्वभव] रा० ६६७

पुव्वरत्त [पूर्वरात्र] रा० १७३

पुव्वविदेह [पूर्वविदेह] जी० २।२६,५६,६५,७०,
७२,८५,६६,११५ १२३,१३२,१३७,१३८,
१४७,१४६; ३।४४५,७६५

पुव्वाणुपुव्वी [पूर्वानुपूर्वी] ओ० १६, २०,५२,५३.
रा० ६८६, ६८७,७०६,७११, ७१३

पुव्वाभिमुह [पूर्वाभिमुख] रा० ८

पुव्वावर [पूर्वापर] रा० १६३,१६६. जी० ३।१७४,
३३५,३५५. ३५७,६५८,७२८,७३३,१००६,
१०२३

पुव्वि [पूर्वं] ओ० ११७. रा० ६३, ६५, २७५,
२७६,७८१ से ७८७. जी० २।१५०; ३।४४१,
४४२

पुहत्त [पृथक्त्व] जी० १।१०३, १११,११२,११६,
१२४,१२५; २।४८ से ५०, ५३,५४,५६,८२
से ८४,६२,६३,१२२ से १२५,१२८; ३।११०,
१६७,११२५,११२६,११३५.११३७; ४।१५;
५।१६ २६; ६।६,११; ६।८६,६३,१०२,१०६,
१२३,१२८,२१२,२१७,२२५,२३८,२४४,
२७३,२८०

पुहत्तावियक्क [पृथक्त्ववितर्क] ओ० ४३

पूइकम्म [पूतिकर्मन्] ओ० १३४

पूइत्ताए [पूजयितुम्] ओ० १३६

पूइय [पूजित] ओ० १४. रा० ६७१

पूइय [पूतिक] रा० ६,१२. जी० ३।३२२

पूय [पूत] ओ० ६८

पूयण [पूजन] ओ० ५२. रा० १६,६८७,६८६

पूयणिज्ज [पूजनीय] ओ० २. रा० २४०, २७६.
जी० ३।४०२, ४४२

पूयफलिवण [पूगफलीवन] जी० ३।५८१

पूर [पूरय्]--पूरेइ. ओ० १७४

पूरिम [पूरिम, पूर्य] ओ० १०६,१३२. रा० २८५.
जी० ३।४५१,५६१

पूस [पुष्य] जी० ३।८३८।३२

पूसमाण [पुष्यमाण] जी० ३।२७७

पूसमाणय [पुष्यमानव] ओ० ६८

पूसमाणव [पुष्यमाणव] रा० २४

पेच्च [प्रेत्य] ओ० ८८

पेच्चभव [प्रेत्यभव] ओ० ५२. रा० ६८७

पेच्छणघरग [प्रेक्षणगृहक] जी० ३।२६४

पेच्छणिज्ज [प्रेक्षणीय] ओ० १. जी० ३।५६७

पेच्छाघर [प्रेक्षागृह] जी० ३।५६१,६०४

पेच्छाघरमंडव [प्रेक्षागृहमण्डप] रा० ३४,२१५,
२१६.२२०.२२१,३०० से ३०४,३३१ से
३३५,३३८ से ३४२. जी० ३।३७६ ३७६,
३८०,४१२,४६५ से ४६६,४८६ से ४६०,
५०३ से ५०७,८८६,८६३

पेच्छिज्जमाण [प्रेक्ष्यमाण] ओ० ६६

पेच्छित्तए [प्रेक्षितुम्] ओ० १०२,१२५

पेज्ज [प्रेयस्] ओ० ७१,११७,१६१,१६३.
रा० ७६६

पेज्जबंधण [प्रेयो बंधन] जी० ३।६११

पेज्जविवेग [प्रेयोविवेक] ओ० ७१

पेढ [पीठ] जी० ३।६६८

पेम [प्रेमन्] ओ० १२०,१६२. रा० ६६८,७५२,
७८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेम्म [प्रेमन्] रा० ७५३
पेया [पेया] रा० ७१,७७
पेयावायग [पेयावादक] रा० ७१
पेरंत [पर्यन्त] ओ० १६२. जी० ३।२८५,३००, ५६६,५६८,५६६,७०८,७११,८००,८१४, ८२५,८५१,६३६,६४४
पेलव [पेलव] रा० २८५. जी० ३।४५१
पेस [प्रेष्य] जी० ३।६१०
पेसल [पेशल] जी० ३।८१६,८६०
पेसुण्ण [पैशुन्य] ओ० ७१,११७,१६१,१६३. रा० ७६६
पेसुण्णविवेग [पैशुन्यविवेक] ओ० ७१
पेहुणमिंजा [दे० पेहुणमज्जा] जी० ३।२८२
पोंडरीय [पौण्डरीक] ओ० १५०. रा० २३,२६, १३७,१७४,१६७,२७६,२८८,८११. जी० २।२५६.२८२,२८६,२६१,३०७
पोग्गल [पुद्गल] ओ० १६६,१७०. रा० १०, १२,१८,६५,२७६,७७१. जी० १।५,५०,६५, १३५; ३।५५,५६,८७,६२,६७,१०६,१२७, १२८,१२६।३, १०,४४५,७२४,७२७,७८७, ६७४,६७६,६७७,६८२ से ६८५,६८८ से ६६७,१०८१,१०६०,१०६६
पोग्गलपरियट्ट [पुद्गलपरिवर्त] जी० २।६५,८८, १३२; ५।६,२६; ६।२३,२६,३३,६६,७१, ७३,७८,१४६,१६४,१६५,१७८,२०२,२०४
√**पोच्छल** [प्र+उत्+शल्]—पोच्छलेति. रा० २८१. जी० ३।४४७
पोट्टरोग [दे०] जी० ३।६२८
पोतय [पोतज] जी० ३।१४६
पोत्तिय [पोतिक] ओ० ६४
पोत्तिया [दे०] जी० १।८६
पोत्थयग्गाह [पुस्तकग्राह] ओ० ६४
पोत्थयरयण [पुस्तकरत्न] रा० २७०,२८७,२८८, ५६४. जी० ३।४३५,४५३,४५४,५४७
पोय [पोत] ओ० ४६
पोयय [पोतज] जी० ३।१४७,१६१,१६३,१६४
पोराण [पुराण] ओ० २. रा० ११,५६,१८५, १८७,६७८. जी० १।५०; ३।२१७,२६७,२६८, ३५८,५७६
पोरेकव्व [पुरःकाव्य] ओ० १४६. रा० ८०६
पोरेवच्च [पौरपत्य, पौरोवृत्य] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।३५०,५६३,६३७
पोस [पोष] जी० ३।५६८
पोसह [पौषध] ओ० १२०,१६२. रा० ६७१, ६६८,७५२,७८७,७८६
पोसहसाला [पौषधशाला] रा० ७६६
पोसहोववास [पौषधोपवास] ओ० ७७,१२०,१४०, १५७. रा० ६७१,७५२,७८७,७८६

(फ)

√**फंद** [स्पन्द्]—फंदइ. रा० ७७१.—फंदंति. जी० ३।७२६
फंदंत [स्पन्दमान] रा० ७७१
फंदिय [स्पन्दित] रा० १७३. जी० ३।२८५,५८८
फणस [पनस] ओ० ६,१०. जी० १।७२; ३।५८२
फरसु [परशु] रा० ७६५
फरिस [स्पर्श] ओ० १५,१६१,१६३. रा० २८५, ६७२,६८५,७१०,७५१,७७४. जी० ३।४५१, ५८६,५६२
फरुस [परुष] ओ० ४०,४६. रा० ७६५. जी० ३।८६,११८
फल [फल] ओ० ६,७१,१३५. रा० १५१,२२८, २८१,६७०,८१४. जी० १।७१,७२; ३।१७४, २७४,३२४,३८७,५८६,६००,६०२,६७२
फलग [फलक] ओ० ३७,१२०,१६२,१८०. रा० १६,१५३,१७५,१६०,२३५,२३६,२४०,६६८, ७०४,७०६. जी० ३।२६४,२८७,३२६,३६७, ३६८,४०२,६०२
फलगगाह [फलकग्राह] ओ० ६४
फलमंत [फलवत्] ओ० ५,८. जी० ३।२७४
फलय [फलक] रा० ७११,७१३,७५२,७७६,७८६. जी० ३।३२६,४०२

फलवित्ति [फलवृत्ति] जी० ३।२१७,२६७,२६८,
३५८,५७६

फलविवाग [फलविपाक] ओ० ७४।६. रा० १८५,
१८७

फलहसेज्जा [फलकशय्या] ओ० १५४,१६५,१६६.
रा० ८१६

फलासव [फलासव] जी० ३।८६०

फलाहार [फलाहार] ओ० ६४

फलिय [फलित] रा० ७८२

फलिह [परिघ] ओ० १,१६,१६२. रा० ६६८,
७५२,७८६. जी० ३।५६६

फलिह [स्फटिक] रा० १०,१२,१८,६५,१६५,२७६.
जी० ३।७,४५१,८५४

फलिहरयण [परिघरत्न] रा० २४६,३५५.
जी० ३।४१०,५२०

फलिहा [परिखा] ओ० १

फाणिय [फाणित] ओ० ६३

फालिय [स्फाटिक] ओ० १५४,१७४.
जी० ३।२८६,३२७

फालिय [पाटित, स्फाटित] रा० ७६४,७६५

फालियग [पाटितक, स्फाटितक] ओ० ६०

फालियमय [स्फटिकमय] जी० ३।७४७

फालियामय [स्फटिकमय] ओ० १६. रा० २५४.
जी० ३।४१५,८५७,६११,१००८

फास [स्पर्श] ओ० १३,२७,४७,५१,७२,१६६,
१७०. रा० ३१,३३,३७,४५,६५,१७२,१८५,
१६६,२०३,२३७,२४५,८१३. जी० १।५,३६,
५०,५८,७३,७८,८१; ३।५८,८५,८७,६६,
१२२,१२३,१२७।१,३,२७१,२८४,२६७,३०६,
३११,३३६, ३६४,३७६,३६६,४०७,४१२,
४२१,५०८,६०१,६०२,६४५,६४८,६५६,
६७०,७२४,७२७,७५७,८६०,८६६,८७२,८७८,
६७२,६८१,६८२,१०७६,१०८१,१०६८,
१११७,१११८,११२४,११२५

फासओ [स्पर्शतस्] जी० १।४०,५०

फासतो [स्पर्शतस्] जी० ३।२२

फासमंत [स्पर्शवत्] जी० १।३३,३६

फासिंदिय [स्पर्शेन्द्रिय] ओ० ३७. जी० १।२२;
३।६७६

फासुय [प्रासुक, स्पर्शुक] ओ० ३७,१२०,१६२.
रा० ६६८,७५२,७७६,७८६

फिडिय [स्फिटित] ओ० २३

फुंफुअग्गि [दे०] जी० २।७४

फुटमाण [स्फुटत्] रा० ७१०,७७४

फुट्टिज्जंत [स्फोटयमान] रा० ७७

फुड [स्पृष्ट] ओ० १६६,१७०

फुड [स्फुट] रा० ७७४

फुडिय [स्फुटित] जी० ३।६६

फुल्ल [फुल्ल] ओ० २२. रा० १७४,७२३,७७७,
७७८,७८८. जी० ३।११८,११६,२८६

फुल्लग [फुल्लक] जी० ३।५६३

फुल्लावलि [फुल्लावलि] रा० २४. जी० ३।२७७

√फुस [स्पृश्]—फुसइ. ओ० ७१.—फुसंतु.
ओ० ११७. रा० ७६६

फुसित्ता [स्पृष्ट्वा] ओ० १६६

फुसिय [स्पृष्ट] रा० ६,१२,२८१. जी० ३।४४६

फूमिज्जंत [फूत्क्रियमान] रा० ७७

फेण [फेन] ओ० १६,४६,४७. रा० ३८,१३०,
१६०,२२२,२५६. जी० ३।३००,३१२,३३३,
३८१,४१७,५६६,८६४

फेणक [फेनक] रा० ६६

फोडेमाण [स्फोटयत्] ओ० ५२. रा० ६८८

(ब)

बउसिया [वकुशिका] रा० ८०४

बंध [बन्ध] ओ० ४६,७१,१२०,१६१ से १६३.
रा० ६६८,७५२,७८६

√**बंध** [बन्ध्]—बंधइ. ओ० ८६. रा० ७६५.
—बंधंति. रा० ७७४.—बंधति रा० ७५.
—बंधाहि. रा० ७७४

बंधठिति [बन्धस्थिति] जी० २।७५,६७,१३६,१५१

बंधण [बन्धन] ओ० १३,४६,१७१,१६५।२१.
रा० ७५४,७५६,७६४,७७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधित्तए [बद्धुम्] रा० ७७४

बंधित्ता [बद्ध्वा] रा० ७५

बंधुजीवगगुम्म [बन्धुजीवकगुल्म] जी० ३।५८०

बंभ [ब्रह्मन्] ओ० २५,५१,१६२. रा० ६८६. जी० ३।१०४६,१०६६,१०८८,१०९४,१११०

बंभचेर [ब्रह्मचर्य] जी० ३।६९९

बंभचेरवास [ब्रह्मचर्यवास] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ८१६

बंभण्णय [ब्राह्मण्यक] ओ० ९७

बंभदत्त [ब्रह्मदत्त] जी० ३।११७

बंभलोग [ब्रह्मलोक] जी० ३।१०७६

बंभलोय [ब्रह्मलोक] ओ० ११६,११७,१४०. जी० २।१४८,१४९; ३।१०३८,१०५६,११०२

√बज्झ [बन्ध्]—बज्झंती. ओ० ७४।४

बत्तीस [द्वात्रिंशत्] ओ० ३३. रा० १२४. जी० ३।५

बत्तीसइगुण [द्वात्रिंशद्गुण] जी० २।१५१

बत्तीसइबद्ध [द्वात्रिंशद्बद्ध] रा० ७३,११८

बत्तीसइबद्धय [द्वात्रिंशद्बद्धक] रा० ७१०,७७४

बत्तीसतिबद्ध [द्वात्रिंशद्बद्ध] रा० ६३,६५

बत्तीसिया [द्वात्रिंशिका] रा० ७७२

बद्ध [बद्ध] ओ० ५,८,५७. रा० १३२,२३५,६६४, ६८३,७५४,७५६,७६४,७७१,७७४. जी० ३।२२,१७४,२७४,३०२,३२६,३६७,५६२

बद्धग [बद्धक] रा० ७७

बद्धीसा [बद्धीसा] रा० ७७

बप्फ [बाष्प] जी० ३।५९२

बब्बरिया [बर्बरिका] रा० ८०४

बब्बरी [बर्बरी] ओ० ७०

बरहिण [बर्हिन्] ओ० ६. जी० ३।२७४

बल [बल] ओ० २३,६७,६१,८६ से ६६,११४, ११७,१५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० १२,१३,६१,६५७,६७४,६६५,७५८,७५६, ७८७,७८८,७६०,७६१ जी० ३।११८,४४६, ५८६,५६२

बलदेव [बलदेव] ओ० ७१. जी० ३।७६५,८४१

बलव [बलवत्] ओ० १४. रा० १२,६७१,७५८, ७५६. ३।११८,११६

बलवाउय [बलव्यापृत] ओ० ५५ से६३

बलसंपण्ण [बलसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

बलागा [बलाका] रा० २६

बलाया [बलाका] जी० ३।२८२

बलाभिओग [बलाभियोग] ओ० १०१,१२४

बलाहक [बलाहक] जी० ३।७८५,७८६,८४१

बलाहय [बलाहक] रा० २६. जी० ३।२८२

बलि [बलि] जी० ३।२४० से २४३

बलिकम्म [बलिकर्मन्] ओ० २०,५२,५३,७०. रा० ६८३,६८५,६८७ से ६८६,६६२,७००, ७१०,७१६,७२६,७५१,७५३,७६५,७७४, ७६४,८०२,८०५

बलिपीढ [बलिपीठ] रा० २७२,२७३,६५४. जी० ३।४३७,४३८,५५४,५५६

बलिविसज्जण [बलिविसर्जन] रा० ६५४. जी० ३।५५६

बल्लकी [वल्लकी] रा० ७७

बहली [बहली] ओ० ७०. रा० ८०४

बहुद [बहु] ओ० १२,१७,२३,४७ से ५२. रा० १६,१७,२२,२३,५४,५५,७१ से ७५,७६ से ८१,८३,११२ से ११८,१३२,१५३,१६७,१६८, १७८ से १८०,१८२,१८४,१८५,१८७,१६२ से १६४,१६६,२३५,२३६,२४०,२४६,२८०, २८२, २८६, ६८७ से ६८६,६६५,७०३, ७०४. जी० ३।८७,२१७,३४८,३५८, ३५६, ३६७,३८७,३६८,४०२,४१०,४११,४२०, ४४६,४४८,४५५,४५६,५७६ से ५८३ ५८६ से ५६५,६४०,७०२,७२४,७२६,७२७,७२६, ७८५ से ७८७,८०७,८२६,८४१,८५७,६०२, ६१७,१०२०,१०३६,१०८१

बहि [बहिस्] रा० १३०. जी० ३।३००

बहिया [बहिस्,बहिस्तात्] ओ० २. रा० २. जी० ३।८३८।१

बहु [बहु] ओ० १४,२३,५२,६३,६४,६८,७०,९१, ९२,९४,११४,११७,१४०,१४१,१५४,१५५, १५७ से १६०,१६२,१६५,१६६,१९५. रा० ७, १५,५१,५६,५८,१२४,१७४,१८१,१८३,१९५, २४०,२७६,२८२,२९१,६५७,६७१,६७५, ६८३,६९८,७१८,७५२,७७४,७८७ से ७८९ ७९९,८०३,८०४,८१६. जी० ३।१११,११८, ११९,२५९,२६९,२८६,२९३,२९५,३८८, ३९०,४०२,४४२,४४८,४५७,५५७,५६३, ५६९,५८४ से ५९५,६३७,६५९,७२१,७३८, ७४३,७५०,७६०,७६३,८५७,८६३,८६९, ८७५,९०१,९१७,९६५,१०२५,१०३८

बहुउदग [बहूदक] ओ० ९६

बहुगुणतर [बहुगुणतर] रा० ७१८

बहुजण [बहुजन] ओ० २,१४,५२,११८,१४१. रा० ६७१,६७५,६८७

बहुतरक [बहुतरक] जी० ३।१०१

बहुतरग [बहुतरक] जी० ३।९९,११३,११४

बहुदोस [बहुदोष] ओ० ४३

बहुपडिपुण्ण [बहुप्रतिपूर्ण] ओ० १४३. रा० १५१, १५२,८०१. जी० ३।३२४,३२५

बहुपुरिसपरंपरागय [बहुपुरुषपरम्परागत] रा० ७७३

बहुप्पकार [बहुप्रकार] जी० ३।५९५

बहुप्पगार [बहुप्रकार] जी० ३।५८६ से ५८८, ५९३

बहुप्पसन्न [बहुप्रसन्न] ओ० १११ से ११३, १३७,१३८

बहुबीय [बहुबीज] जी० १।७०,७२

बहुबीयग [बहुबीजक] जी० १।७२

बहुमज्झ [बहुमध्य] ओ० ८,१९२. रा० ३,३२, ३५,३६,३९,६६,१२५,१६४,१८६.१८८,२०४, २१७.२१८,२२७,२३८,२५२,२६१,२९३, २९५,३००.३२१,३२६,३३३,३३८,३५६, ४१५,४७८,५३६,५९६,७३५,७७२. जी० ३।२६३,३१०,३१३,३१८,३३८,३५६,३५९, ३६१,३६४,३६५,३६८,३६९,३७७,३८६, ४००,४१३,४२२,४२७,४६०,४६५,४८८, ४९१,४९८,५०३,५२१,५२७,५३५,५४२,५४९, ५५४,६३४,६३९,६४२,६४६,६४९,६६३, ६६८,६७१ से ६७३,६७९,६८५,६९१,७३७, ७५६,७५८,७६२,८३१,८८२,८८४,८८७, ८९१,९०६,९११,९१३,९१८,१०३९

बहुमय [बहुमत] ओ० ११७. रा० ७५० से ७५३, ७९६

बहुमाण [बहुमान] ओ० १४,४०. रा० ६७१

बहुय [बहुक] ओ० १७१. रा० १९७. जी० १।७२,१४३; २।६८ से ७२,९५,९६, १३४ से १३८,१४१ से १४९; ३।४०२,५७९, १०२५,१०३७,१०३८; ४।१९,२२,२५; ५।१९, २०,२६,२७,३२ से ३६,५२,५९,६०; ७।२०, २२,२३; ९।७,१४,५५,२५० से २५३,२५५, २८६ से २९७

बहुरय [बहुरत] ओ० १६०

बहुल [बहुल] ओ० १,७,८,१०,४६,४९. रा० ६७१. जी० ३।११८,११९,२३९,२७५, २७६

बहुविह [बहुविध] ओ० १९५।१६

बहुसम [बहुसम] रा० २४,३२,३३,३५,६५,६६, १२४,१७१,१८६ से १८८,२०३,२०४,२१७, २३७,२३८,२६१. जी० ३।२१८,२५७,२७७, ३०९,३१०,३३६,३५९ से ३६१,३६४,३६५, ३६८,३६९,३७२,३९९,४००,४२२,४२७, ५८०,६२३,६३३,६३४,६४५,६४६,६४८, ६४९, ६५६,६६२,६६३,६७०,६७१,६७३, ६९०,६९१,७३७,७५५ से ७५८,७६८,८८३, ८८४,८९०,९०५,९०६,९१२,९१३,१००३, १०३८,१०३९

बाण [बाण] रा० ३६. जी० ३।२७९

बाणउति [द्वानवति] जी० ३।८१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाणगुम्म [बाणगुल्म] जी० ३.५८०
बादर [बादर] जी० ३।८४१; ५।२६ से ३१,३५, ५१,५२,५८ से ६०
बादरआउकाइय [बादरअप्कायिक] जी० ५।२८
बादरणिओत [बादरनिगोद] जी० ५।२६
बादरणिओद [बादरनिगोद] जी० ५।२८ से ३०, ४०,४७ से ४६,५२
बादरणिओदजीव [बादरनिगोदजीव] जी० ५।५३. ५५,५८ से ६०
बादरनियोद [बादरनिगोद] जी० ५।४०
बादरतसकाइय [बादरत्रसकायिक] जी० ५।२८ से ३०,३३,३५
बादरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक] जी० १।७८, ७६; ५।२८
बादरपत्तेयवणस्सतिकाइय [बादरप्रत्येकवनस्पति-कायिक] जी० ५।२६
बादरपुढवि [बादरपृथ्वी] जी० ५।२६
बादरपुढविकाइय [बादरपृथ्वीकायिक] जी० १।५८; ३।१३२,१३४; ५।२,३,२८ से ३०
बादरवणस्सइकाइय [बादरवनस्पतिकायिक] जी० ५।३०
बादरवणस्सति [बादरवनस्पति] जी० ५।२६
बादरवणस्सतिकाइय [बादरवनस्पतिकायिक] जी० ५।२८ से ३१
बादरवाउ [बादरवायु] जी० ५।२६
बादरवाउकाइय [बादरवायुकायिक] जी० ५।२८, ३०
बादरवाउक्काइय [बादरवायुकायिक] जी० १।८१
बायर [बादर] जी० १।४४; ३।८४१; ५।२८,२६, ३१ से ३६; ६।६५,६७,६६,१००
बायरआउकाइय [बादरअप्कायिक] जी० ५।२८
बायरआउक्काइय [बादरअप्कायिक] जी० १।६३,६५
बायरकाल [बादरकाल] जी० ६।६६
बायरणिओद [बादरनिगोद] जी० ५।३८
बायरणिओय [बादरनिगोद] जी० ५।३१,३३,३५, ३६
बायरतसकाइय [बादरत्रसकायिक] जी० ५।३१ से ३४,३६
बायरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक] जी० ५।३१,३३,३४
बायरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक] जी० १।७६; ५।३३,३४,३६
बायरपुढवि [बादरपृथ्वी] जी० ५।३१,३३,३५,३६
बायरपुढविकाइय [बादरपृथ्वीकायिक] जी० १।१३,५७,६५,७४; ५।३१,३३,३४,३६
बायरपुढविक्काइय [बादरपृथ्वीकायिक] जी० १।५७,५८,६२
बायरवणस्सइकाइय [बादरवनस्पतिकायिक] जी० १।६६,६८,६६,७२ से ७४; ५।३३,३४, ३६
बायरवणस्सतिकाइय [बादरवनस्पतिकायिक] जी० ५।३१,३३ से ३६
बायरवाउकाइय [बादरवायुकायिक] जी० ५।३४
बायरवाउक्काइय [बादरवायुकायिक] जी० १।८०, ८२
बायाल [द्वाचत्वारिंशत्] जी० ३।१०२२
बायालीस [द्वाचत्वारिंशत्] ओ० १६२. जी० १।११२
बारस [द्वादशन्] ओ० ६०. रा० ४३. जी० १।८६
बारसभत्त [द्वादशभक्त] ओ० ३२
बारसम [द्वादश] रा० ८०२
बारसाह [द्वादशाह] ओ० १४४
बाल [बाल] रा० २७,३१,७५८,७५६. जी० ३।२८०,२८४,६६० से ६६७
बालतवोकम्म [बालतपःकर्मन्] ओ० ७३
बालदिवाकर [बालदिवाकर] रा० २७. जी० ३।२८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बालभाव [बालभाव] रा० ८०९,८१०
बालविहवा [बालविधवा] ओ० ९२
बालिय [बाल] रा० ४५
बावट्ठ [द्वाषष्टि] जी० ३।८३२
बावट्ठि [द्वाषष्टि] रा० २०६. जी० ३।९१
बावण्ण [द्विपञ्चाशत्] जी० ३।६७
बावत्तर [द्वासप्तति] जी० ३।६३२
बावत्तरि [द्वासप्तति] रा० २०९. जी० १।११६
बावन्न [द्विपञ्चाशत्] ओ० १२६
बावीस [द्वाविंशति] ओ० १५४. रा० ८१६.
जी० १।५९

बाहल्ल [बाहल्य] ओ० १९२. रा० ३६,१३७.
१८८,२१८,२२१,२२४,२३०,२३८,२४२,
२४४,२४६,२५२,२६१,२७२. जी० ३।५,१४
से २७,३९ से ४७,५२,७३ से ७५,७७,८०,
१२४,१२५,१२७,२३२,२५७,३०७,३१०,
३५५,३६१,३६५,३७७,३८०,३८३,३८५,
३९२,४००,४०४,४०६,४०८,४१३,४२२,
४२७,४३७,६३४,६४२,६४४,६४९,६५३,
६५५,६६८,६७१,७२४,७२५,७२७,७२८,
७५८,८९१,८९३,८९५,८९७,८९९,९०६,
१००६,१०१० से १०१४,१०६५,१०६६
बाहा [बाहु] ओ० ११९. जी० ३।३५४,४१५
बाहिं [बहिस्] रा० ७७२. जी० ३।७७
बाहिर [बाह्य] ओ० ६. रा० ४३. जी० ३।७८,
२३९,२७५,६४३,६८१,७६८,७६९,७७५,
८३१,८३८।१२,८४५,१०५५
बाहिरग [बाहिरक, बाह्यक] जी० ३।७८४,७८७
बाहिरय [बाहिरक, बाह्यक] ओ० ३०,३१,३७.
जी० ३।६५८,७८२,७८६,७८७,९९० से ९९७
बाहिरिय [बाहिरिक, बाह्यक] रा० ६६२.
जी० ३।२३५ से २३९,२४१ से २४३,२४६,
२४७,२४९,२५०,२५४ से २५६,२५८,३४३,
४४७,५६०,७३३,८४२,१०४० से १०४२,
१०४४,१०४६,१०४७,१०४९ से १०५३

बाहिरिया [बाहिरिका] ओ० १८,२०,५३,५५,
५८,६० से ६३ रा० ६८३,६८५,७०८,७५४,
७५६,७६२,७६४
बाहिरिल्ल [बाह्य] जी० ३।७२३,१००७
बाहु [बाहु] ओ० १९. रा० १२,७५८,७५९.
जी० ३।११८,५९६
बाहुजुद्ध [बाहुयुद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६
बाहुजोहि [बाहुयोधिन्] ओ० १४८,१४९.
रा० ८०९,८१०
बाहुप्पमद्दि [बाहुप्रमर्दिन्] ओ० १४८,१४९.
रा० ८०९,८१०
बिइय [द्वितीय] ओ० ४७,१७६,१८२.
जी० ३।२२६
बिंट [वृन्त] रा० २२८
बिंदिय [द्वीन्द्रिय] ओ० १८२
बिंदु [बिन्दु] ओ० २३
बिंबफल [बिम्बफल] ओ० १९,४७. जी० ३।५९६
बिंहणिज्ज [बृंहणीय] जी० ३।६०२,८६०,८६६,
८७२,८७८
बिब्बोयण [दे०] रा० २४५. जी० ३।४०७
बिलपंतिया [बिलपंक्तिका] रा० १७४,१७५,१८०.
जी० ३।२८६,२८७,२९२,५७९,६३७,७३८,
७४३,७६३,८५७,८६३
बिसालग [द्विशालक] जी० ३।५९४
बीभच्छ [बीभत्स] जी० ३।८४
बीय [बीज] ओ० १३५,१८४
बीय [द्वितीय] ओ० १७४
बीयग [बीयक] जी० ३।२८१
बीयगुम्म [बीजगुल्म] जी० ३।५८०
बीयबुद्धि [बीजबुद्धि] ओ० २४
बीयमंत [बीजवत्] ओ० ५,८. जी० ३।२७४
बीयय [बीयक] रा० २८
बीयसत्तराइंदिया [द्वितीयसप्तरात्रिंदिवा] ओ० २४
बीयाहर [बीजाहर] ओ० ९४
√**बुक्कार** [दे०]—बुक्कारेंति. रा० २८१.
जी० ३।४४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√बुज्झ [दे०] — बुज्झइ. ओ० १७७.—बुज्झंति. ओ० ७२. जी० ३।१३३.—बुज्झिहिंति. ओ० १६६.—बुज्झिहिति. ओ० १५४. रा० ८१२

√बुज्झ [बुध्] —बुज्झिहिति. ओ० १५१

बुज्झिहित्ता [बुद्ध्वा] ओ० १५१

बुद्ध [बुद्ध] ओ० १६,२१,५४.१६५।२०. रा० ८, २९२. जी० ३।४५७

बुद्धबोहियसिद्ध [बुद्धबोधितसिद्ध] जी० १।८

वुड्ढि [वुद्धि] रा० ६७५

बुब्बुय [बुद्बुद] ओ० २३

बुह [बुध] ओ० ५०

√बू [ब्रू]—बूया. रा० ७३२

बूर [बूर] ओ० १३. रा० ७३२. जी० ३।२८४, २९७,३११,४०७

बेइंदिय [द्वीन्द्रिय] जी० १।८३,८४,८७,८८, १२८; २।१०१,१०३,११२,१२१,१३१,१३६, १३८,१४६,१४९; ३।१३०,१३६,१६६; ४।१,४,८,१२,१६,२०,२१,२३,२५; ८।१, ३,५; ९।१,३,५,७,२६४

बेंट [वृन्त] जी० ३।१७४

बेंटट्ठाइ [वृन्तस्थायिन्] रा० ६,१२

बेंदिय [द्वीन्द्रिय] जी० ४।१७; ९।१६७,१६६, २२१,२२३,२६४

बेयाहिय [द्व्याहिक] जी० ३।६२८

बेलंब [वेलम्ब] जी० ३।७२४

वेला [बेला] जी० ३।७२३

बोंड [दे०] जी० ३।५९६

बोंदि [दे०] ओ० ४७,७२,१६५।१,२. रा० ७७२

बोद्धव्व [बोद्धव्य] ओ० १६५।५,६. जी० ३।१२६।१०

बोधव्व [बोद्धव्य] जी० १।६६

बोधिय [बोधित] जी० ३।५९६,५९७

बोल [दे०] ओ० ४६,४९,५२. रा० १५,६८७, ६८८. जी० ३।६२७,८४२,८४५

बोहय [बोधक] ओ० १६,२१,२२,५४. रा० ८, २९२,७०७,७७८,७८८. जी० ३।४५७

बोहि [बोधि] ओ० १५१. रा० ८१२

बोहिदय [बोधिदय] रा० ८,२९२. जी० ३।४५७

बोहिय [बोधित] ओ० १९

भ

भइ [भृति] रा० ७८७,७८८

भइणी [भगिनी] जी० ३।६११

भइय [भक्त्र] ओ० १६५।१५

भइय [भृतिक] रा० १२

भंगुर [भङ्गुर] ओ० १६. जी० ३।५९६,५९७

भंजिज्जमाण [भज्यमान] रा० ३०

भंड [भाण्ड] ओ० ४६,११७. रा० ३०,१५२, २६६,२६८,२८४,४७५,५३५,७७४,७९६. जी० ३।२८३,३२५,४२६,४३२,४५०,५३४, ५४१,११२८,११३०

भंडग [दे०] ओ० ५६

भंडियालिछ [भण्डिकालिञ्छ] जी० ३।११८

भंत [भदन्त] ओ० ६६,७६,८४ से ९५,११४, ११७,११८,१५५,१५७ से १६०,१६२,१६७, १६६ से १७२,१७४,१७५,१७७,१८१,१८४ से १९२. रा० १०,५८,६२,६३,६५,१२१ से १२४,१७३,१९७ से २००,६६५ से ६६७, ६९५,७००,७०२ से ७०४,७१८,७२०,७३६, ७३८,७४७,७४८,७५० से ७५४,७५६,७५८ से ७६१,७६२,७६४ से ७६७,७७०,७७२ से ७७५,७७७,७८२ से ७८५,७८७,७९८,८१७. जी० १।१५ से ३३,४१ से ४६,५१ से ५४, ५६,५६ से ६२,६४,७४,७६,८२,८५ से ८७, ९०,९३ से ९६,१०१,११६,१२७,१२८,१३० से १३४,१३७ से १४३; २।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३९,४६,४८,४९,५४,५७ से ६३,६६,६८ से ७४,७६,८२ से ८४,८६.८८, ९२,९५ से ९८,१०७ से १०६,१११,११३, ११४,११६ से ११९,१२२ से १२६,१३३ से १५०; ३।३ से ६,११ से २०,२४ से ३५,३७

से ३९,४२,४४ से ६६,७३ से ९८,१०३ से ११०,११२,११६,११८ से १२८,१४७,१५० से १६२,१६५,१६७,१६९ से १८३,१८५,१८६, १९२ से २११,२१४,२१७ से २२३,२२७, २३२ से २४२,२४४ से २४६,२४८ से २५६, २६९ से २७२,२८३ से २८५,२९९,३००, ३५०,३५१,५६४ से ५७८,५९६,५९७,५९९ से ६३२,६३७ से ६३९,६५९,६६०,६६४,६६६ से ६६८,७००,७०१,७०३,७०५ से ७११, ७१३ से ७२३,७३० से ७३६,७३८,७४० से ७४३,७४५,७४६,७४८ से ७५०,७५४,७६० से ७६६,७६८ से ७७०,७७२,७७६ से ७७८, ७८१ से ७९५,७९७ से ८००,८०२ से ८०४, ८०८,८०९,८११ से ८१६,८१८ से ८२०, ८२३ से ८२५,८२७,८२९,८३०,८३२ से ८३७,८३९,८४०,८४२ से ८४७,८४९,८५०, ८५४,८५५,८५७,८६०,८६३,८६६,८६९, ८७२,८७५,८७८ से ८८१,९३९,९४०,९४४, ९५३ से ९५५,९५८,९६१,९६३ से ९६६, ९६९,९७२ से ९७७,९८२ से ९८४,९८८ से १००८,१०१०,१०१५,१०१७,१०२० से १०२७,१०३७ से १०४४,१०५४,१०५६, १०५९,१०६२,१०६३,१०६७,१०६९,१०७१, १०७३,१०७५,१०७७ से १०८३,१०८५, १०८७,१०८९ से १०९३,१०९५,१०९७ से १०९९,११०१,११०५,११०७,११०९ से १११२,१११४,१११५,१११७,१११९,११२१, ११२२,११२४,११२८,११३०,११३१,११३३ से ११३८; ४।३,७ से ११,१३,१९,२२,२३, २५; ५।५,८,१०,१२ से १६,१९ से २४,२६ से ३०,३२ से ३५,३७ से ३९,४१ से ५०,५२ से ५६,५८ से ६०; ६।८; ७।२,९,२०; ९।२,७, १० से १४,१६,२३ से २६,३१,३३,३९,४१ से ४८,५२,५५,५७ से ५९,६४,६८,७६ से ७९,८९,९०,९६,९७,१०२,१०३,११४,११५, १२२,१३२,१४२,१६० से १६३,१७१,१८६ से १९३,१९५,१९८ से २०७,२१० से २१२, २१४ से २१९,२२२ से २२५,२२७ से २३०, २३३ से २३८,२४० से २४४,२४६,२४९ से २५३,२५५,२५७ से २६३,२६५,२६८ से २७३,२७५ से २८२,२८४ से २९३

भंतसंभंत [भ्रान्तसंभ्रान्त] रा० १११,२८१. जी० ३।४४७

भंभा [दे० भम्भा] रा० ७७. जी० ३।५८८

भंसेउकाम [भ्रंशयितुकाम] रा० ७२७

भगंदल [भगन्दर] जी० ३।६२८

भगव [भगवत्] ओ० १६,१७,१९ से २५,२७ ४७ से ५५,६२,६९ से ७१,७८ से ८३,११७. रा० ८ से १३,१५,५६,५८ से ६५,६८,७३,७४, ७९,८१,८३,११३,११८,१२०,१२१,६६८, ७१४,७९६,८१४,८१५,८१७

भगवई [भगवती] रा० ८१७

भगवंत [भगवत्] ओ० १९,२१,२३,२६ से ३०, ५१,५२,५४,११७,१५२,१६५,१९५. रा० ८, ९,११,५९,२९२,६८७,७१४,७४६,७९९. जी० ११९; ३।४५७

भगवती [भगवती] रा० ८१७

भग्गइ [भग्नजित्] ओ० ९९

भज्जा [भार्या] जी० ३।६११

भट्टित्त [भर्तृत्व] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।३५०,५९३,६३७

भट्ठ [भ्रष्ट] रा० ९,१२; २८१. जी० ३।४४७

भड [भट] ओ० १.२३,५२. रा० ५३,६८३,६८७, ६८८,६९२,७१६

भणित [भणित] जी० ३।८८१

भणिय [भणित] ओ० १५,४९,१९५।४ से ७. रा० ७०,६७२,८०९,८१०. जी० २।१५०; ३।१२९,४९७,८३८।१,२; ९।१५७

भण्ण [भण्]--भण्णंति. जी० ३।९४६

भति [भति] ओ० १७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भत्त [भक्त] ओ० १४,१७,३२,३३,११७,१४०, १४१,१५४,१५७,१६२,१६५,१६६. रा० ६७१,७७४,७८७,७८८,७९९,८१६

भत्तकहा [भक्तकथा] ओ० १०४,१२७

भत्तपच्चक्खाण [भक्तप्रत्याख्यान] ओ० ३२

भत्तपाणविउस्सग्ग [भक्तपानव्युत्सर्ग] ओ० ४४

भत्ति [भक्ति] ओ० ४०,५२. रा० १६

भत्तिघर [भक्तिगृह] जी० ३।५९४

भत्तिचित्त [भक्तिचित्त] ओ० १३,६३. रा० १७, १८,२०,२४,३२,३४,३७,५१,१२९,१३७, १५९,२९२. जी० ३।२७७,२८८,३००,३०७, ३०८,३११,३३२,३३७,३५९,३७२,३९९, ४५७,५९७,५९३,५९५,९०४

भत्तिपुव्वग [भक्तिपूर्वक] रा० ६३,६५

भद्द [भद्र] ओ० ४७,६८,७२. रा० २८२. जी० ३।४४८

भद्दग [भद्रक] जी० ३।५९८,६२०,६२५,७९५,८४१

भद्दपडिमा [भद्रप्रतिमा] ओ० २४

भद्दमोत्था [भद्रमुस्ता] जी० १।७३

भद्दय [भद्रक] जी० ३।७९५

भद्दया [भद्रता] ओ० ७३,९१,११९

भद्दसालवण [भद्रशालवन] रा० १७३,२७९. जी० ३।२८५,४४५

भद्दा [भद्रक] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८

भद्दा [भद्रा] जी० ३।९१५

भद्दासण [भद्रासन] ओ० १२,६४. रा० २१,४१ से ४४,४८,४९,१८१,१८३,२९१,६५८ से ६६४. जी० ३।२८९,२९३,३३९ से ३४५, ३६८,३७०,५५८ से ५६०,६३५

भमंत [भ्रमत्] ओ० ४६. रा० १७४. जी० ३।११८,११९,२८६

भममाण [भ्राम्यत, भ्रमत्] ओ० ४६

भमर [भ्रमर] ओ० ६,१९. रा० २५. जी० ३।२७५,२७८,५९६

भमरपतंगसार [भ्रमरपतङ्गसार] रा० २५. जी० ३।२७८

भमुया [भ्रू] ओ० ३।५९७

भमुह [भ्रू] ओ० १९. रा० २५४, जी० ३।४१५

भय [भय] ओ० १४,२५,२८,४६. रा० ६७१, ६८६. जी० ३।१२७,१२८

भयंत [भदन्त[1]] ओ० ७२,१६७

भयग [भृतक] जी० ३।६१०

भयणा [भजना] जी० १।१३६; ३।१५२

भयव [भगवत्] रा० १२१

भयसण्णा [भयसंज्ञा] जी० १।२०; ३।१२८

भर [भर] रा० २२८. जी० ३।३८७,३८४,७८७

भरणी [भरणी] जी० ३।१००७

भरत [भरत] जी० २।१३२,३।६७२

भरह [भरत] ओ० ६८. रा० २७९,२८२. जी० २।१४,२८,५५,७०,७२,९६,११५,१२२,१४०, १४९; ३।२२९,४४५,४४७ ७९५

भरिय [भरित] ओ० ४६,५७,६४. रा० १७३, ६८१

√भव [भू]—भवइ. ओ० २८. रा० २००. जी० ३।५९—भवउ. ओ० २०. रा० ७१३. —भवंति. ओ० २०. रा० १२४. जी० ३।७७ —भवति. रा० १२९. जी० ३।२७२—भवह. रा० ७१३—भवाहि. रा० ७५०—भविस्सइ. ओ० ५२. रा० २००—भविस्सति. जी० ३।५९ —भविस्सामि. रा० ७७५ —भवे. रा० २५. जी० ३।८४—भवेज्जासि. रा० ७७४—भुवि. रा० २००. जी० ३।५९

भव [भव] ओ० ४६,१९५।३,७,८

भवंत [भवत्] रा० १५

भवक्खय [भवक्षय] ओ० १४१,१९५।१९. रा० ७९९

भवग्गहण [भवग्रहण] जी० ७।५,६,१०,१२,१५ से १८; ९।२ से ४,४०,५१,१७१,२३६,२३८,

---

१. 'भयंतारो' त्ति भदन्ताः कल्याणिनः भक्तारो वा नैर्ग्रन्थप्रवचनस्य सेवयितारः [वृ० पृ० १५२] 'भयंतारो' त्ति भक्तारः अनुष्ठानविशेषस्य सेवयितारो भयत्रातारो वा [वृ० पृ० २०३]।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४३,२४४,२४६,२७१,२७३,२७६ से २८२
भवण [भवन] ओ० १,१४,६६,१८१ रा० ६७१, ६७५,७६६. जी० ३।२३२ से २३४,२४०, २४४,२४८,५६४,५६७,६०४,६४६ से ६४८, ६५१,६७३,६८२,६८६,६६२ से ६६८,७५६
भवणवइ [भवनपति] रा० ११,५६. जी० २।६५
भवणवति [भवनपति] जी० ३।६१७
भवणवासि [भवनवासिन्] ओ० ४८. जी० १.१३५; २।१५,१६,३६,३७,७१,७२,६१,६५,६६,१४८, १४६; ३।२३० से २३२,१०४२
भवणवासिणी [भवनवासिनी] जी० २।७१,७२, १४८,१४६
भवणावास [भवनावास] जी० ३।२३२
भवत्थ [भवस्थ] ६।४४ से ४८,५२,५३
भवत्थकेवलणाण [भवस्थकेवलज्ञान] रा० ७४५
भवधारणिज्ज [भवधारणीय] जी० १।६४,६६, १३५,१३६; ३।६१,६३,१०८७ से १०८६, १०६१,१०६२,११२१ से ११२३
भवपच्चइय [भवप्रत्ययिक] रा० ७४३
भवसिद्धिय [भवसिद्धिक] रा० ६२. जी० ६।१०६ से १११,११२
भविता [भूत्वा] ओ० २३. रा० ६८७
भसोल [भसोल] रा० १०६,११६,२८१. जी० ३।४४७
भाइल्लग [भागिक] जी० ३।६१०
भाउय [भ्रातृक] रा० ६७५
भाग [भाग] रा० ७८७,७८८. जी० ३।५७७, ६३२,६३६,८३८।१६,१०१० से १०१४
भागि [भागिन्] रा० ८१५
भाजण [भाजन] जी० ३.५८७
भाणितव्व [भणितव्य] जी० २।११२; ३।७४, १२०,१२१,१४४,२२७,५७८,६३१,६५७,६४७
भाणियव्व [भणितव्य] रा० ८०,१६४,२०१, २०४ से २०६,७४२. जी० १।५१,७२,६६, ११८,१२३,१२६,१३५; २।७६,७८,८०,८१, १०५,१०८,१११,११८,१२३; ३।७५,७७, १५६,१६२,२३१,२५०,३५६.३५८,३५६, ३६०,४१२,४६३,६७३,६७६,६८२,७५६, ७६६,७६६,७७५,८००,८०१,८१८,८२८, ६३६,६३६,१०४४,१०५०,११२६,११२७; ८।२; ६।२२६
भामरी [भ्रामरी] रा० ७७
भाय [भ्रातृ] जी० ३।६११
भाय [भाग] रा० ७८८. जी० ३।५७७
√**भाय** [भाज्]—भाएंति. रा० २८१. जी० ३।४४७
भायरक्खिया [भ्रातृरक्षिता] ओ० ६२
भार [भार] रा० ७७४
भारह [भारत] रा० ८ से १०,१३,१५ ५६,६६८
भारुंडपक्खि [भारुण्डपक्षिन्] ओ० २७. रा० ८१३
भाव [भाव] रा० ६३,६५,१३३,७७१,८१५. जी० ३।३०३,७२६
भावओ [भावतस्] ओ० २८. जी० १।३३,३४, ३६,३६
भावविउस्सग्ग [भावव्युत्सर्ग] ओ० ४४
भावाभिग्गहचरय [भावाभिग्रहचरक] ओ० ३४
भावियप्प [भावितात्मन्] ओ० १६६
भावेमाण [भावयत्] ओ० २१ से २४,२६,४५, ५२,८२,१२०,१४०,१५७. रा० ८,६,६८६, ६८७,६८६,६६८,७११,७१३,७५२,७५३, ७८७,७८६,८१४,८१७
भावोमोदरिया [भावावमोदरिका] ओ० ३३
√**भास्** [भाष्]—भासइ. ओ० ५२. रा० ६१ —भासेंति. जी० ३।२१०
भास (य) [भाषक] जी० ६।६६
भासंत [भाषमाण] ओ० ६४. जी० ३।५६१
भासग [भाषक] जी० ३।५६,५६,६१
भासमणपज्जत्ति [भाषामनःपर्याप्ति] रा० २७४, ७६७. जी० ३.४४०
भासय [भाषक] जी० ६।५७
भासरासि [भस्मराशि] रा० १२४
भासा [भाषा] ओ० ७१. रा० ६१,८०६,८१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भासासमिय [भाषासमित] ओ० २७,१५२,१६४. रा० ८१३
भासुर [भासुर] ओ० ४७,७२. रा० ६,१२
भिउब्व [भार्गव] ओ० ९६
भिंग [भृङ्ग] ओ० १९. रा० २६. जी० ३।२७९
भिंगंगय [भृङ्गाङ्गक] जी० ३।५८७
भिंगणिभा [भृङ्गनिभा] जी० ३।६८७
भिंगा [भृङ्गा] जी० ३।६८७
भिंगार [भृङ्गार] ओ० ६४,६७. रा० ५०,१४८, २५८,२७९,२८१,२८८,७५३. जी० ३।४४५, ४५४,५८७
भिंगारक [भृङ्गारक] ओ० ६. जी० ३।२७५, ३२१,३५५,४१९
भिंगि [भृङ्गि] जी० ३।५९५,५९६
भिण्डमाल [भिण्डमाल, भिन्दपाल] जी० ३।११०
भिंडिमाल [भिण्डिमाल, भिन्दिपाल] ओ० ६४
भिंडिमालग्ग [भिण्डिमालग्र, भिन्दिपालाग्र] जी० ३।८५
√भिंद [भिद्]—भिंद. रा० ६७१—भिज्जइ. रा० ७८४
भिंभसारपुत्त [भिम्भसारपुत्र] ओ० १५,१८,२०, २१,५३ से ५६, ६२ से ६४,६६,६७,६९, ७१,८०
भिक्खलाभिय [भिक्षालाभिक] ओ० ३४
भिक्खायरिया [भिक्षाचर्या] ओ० ३१,३४
भिक्खुपडिमा [भिक्षुप्रतिमा] ओ० २४
भिक्खुय [भिक्षुक] रा० ७१८,७८७,७८८
भिगु [भृगु] जी० ३।६२३
भिच्चा [भित्वा] रा० ७५५
भित्ति [भित्ति] रा० १३०. जी० ३।३००
भित्तिगुलिया [भित्तिगुलिका] रा० १३०. जी० ३।३००
भिन्नमुहुत्त [भिन्नमुहूर्त] जी० ३।१२९।२,१०
भिब्भिसमाण [बाभास्यमान] रा० १७,१८,२०, ३२,१२९. जी० ३।२८८, ३००,३७२

भिलुंग [दे० भिलुङ्ग] रा० ७०३
भिस [बिस] रा० २९,१७४. जी० ३।११८,११९, २८२,२८६
भिसंत [भासमान] ओ० ५,८,६४. रा० ५१ जी० ३।२७४
भिसकंद [बिसकन्द] जी० ३।६०१
भिसमाण [भासमाण] रा० १७,१८,२०,३२,१२९. जी० ३।२८८,३००,३७२
भिसिया [वृषिका] ओ० ११७
भीत [भीत] जी० ३।११६
भीम [भीम] ओ० ४६,५७. जी० ३।८३
भुंजमाण [भुञ्जान] ओ० ६८. रा० ७. जी० ३।३५०,५६३,८४२.८४५,१०२४, १०२५
\ भुकुंड [दे०]—भुकुंडेति. रा० २८५. जी० ३।४५१
भुकुंडेत्ता [दे०] जी० ३।४५१
भुजंग [भुजङ्ग] जी० ३।५९७
भुज्जतर [भूयस्तर] ओ० ८९
भुज्जो [भूयस्] ओ० १५९. रा० ७५१
भुत्त [भुक्त] रा० ६८५,७६५,८०२,८१५
भुयग [भुजग] ओ० २,५१
भुयगवइ [भुजगपति] ओ० ४९
भुयगपरिसप्प [भुजगपरिसर्प] जी० २।११३
भुयगपेच्छा [भुजगप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५
भुयगीसर [भुजगेश्वर] ओ० १६. जी० ३।५९६
भुयपरिसप्प [भुजपरिसर्प] जी० १।१०४, ११२. १२२, १२४; २।७,९,२४,५२,१२२; ३।१४३, १४४, १६१,१६२,१६६
भुयमोयग [भुजमोचक] ओ० १६. जी० ३।५९६
भुया [भुजा] ओ० १६,२१,४७,५४,६३,७२. रा० ८,६९,७०. जी० ३।४५७,५९६
भुवा [भ्रूका] जी० ३।५९६
भुसागणि [बुसाग्नि] जी० ३।११८
भूइकम्मिय [भूतिकर्मिक] ओ० १५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूओवघाइय [भूतोपघातिक] ओ० ४०
भूत [भूत] रा० ६,१२, ३२,२८१. जी० ३।३६८, ४४३,७८०,८४२,८४५,६४७,६४६,६५०
भूतक्खय [भूतक्षय] जी० ३।६२६
भूतग्गह [भूतग्रह] जी० ३।६२८
भूतपडिमा [भूतप्रतिमा[जी० ३।४१८
भूतमंडलपविभत्ति [भूतमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०
भूतमह [भूतमह] जी० ३।६१५
भूतवडेंसा [भूतावतंसा] जी० ३।६२१
भूता [भूता] जी० ३।६२१
भूताणंद [भूतानन्द] जी० ३।२५०
भूमि [भूमि] ओ० ५२. रा० ७६६
भूमिगय [भूमिगत] रा० ७६५
भूमिचवेडा [भूमिचपेटा] रा० २८१. जी० ३।४४७
भूमिभाग [भूमिभाग] ओ० १६२. रा० २४, ३२, ३३, ३५, ६५,६६,१२४,१६४,१७१,१८६ से १८८, २०३ से २०६,२०८,२१३,२१६,२१७, २३७,२३८,२५१,२६१. जी० ३।२१८, २५७, २७७,३०६,३१०,३३६,३५६,३५६ से ३६१, ३६४,३६५,३६८ से ३७२,३७४,३६६,४००, ४१२,४२१,४२२,४२७,५८०,६२३,६३३, ६३४,६४५,६४६,६४८,६४६,६५६,६६२, ६६३,६७०,६७१,६७३,६६०,६६१,७३७, ७५५ से ७५८,७६२,७६५,७६८,७७०,८८३, ८८४,८८८ से ८६०,६०५,६०६,६१२,६१३, १००३,१०३८
भूमिभाय [भूमिभाग] जी० ३।४२६
भूमिया [भूमिका] रा० ६७५
भूमिसेज्जा [भूमिशय्या] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ८१६
भूमी [भूमी] जी० ३।६३१
भूय [भूत] ओ० २,४,६,२६,४६,५५,६२. रा० १३२,१७०,२३६,७०३. जी० ३।१२७, २७३,३०२,३७२,४४७,६७५,११२८,११३०
भूयपडिमा [भूतप्रतिमा] रा० २५७
भूयमह [भूतमह] रा० ६८८
भूयवादिय [भूतवादिक] ओ० ४६
भूयाणंद [भूतानन्द] जी० ३।२४६,२५०
भूसण [भूषण] ओ० २१,४७,५४,५७. रा० ६६, ७०. जी० ३।५६३
भूसणधर [भूषणधर] रा० ८,७१४
भूसिय [भूषित] ओ० ६४. रा० ५३, ७५१
भेत्ता [भित्वा] जी० ३।६६१
भेद [भेद] ओ० २६. जी० १।११८,१२१,१२३, १२४,१२६,१३५; २।७६,७८,१०५,१०६; ३।१३५,१४२,१४४,२३१,२७६,२८१,६३६
भेय [भेद] ओ० १. रा० २८,६७५,७६३. जी० १।५८; २।१५१; ३।१२६।६,६५०
भेयकर [भेदकर] ओ० ४०
भेरव [भैरव] ओ० ४६
भेरी [भेरी] ओ० ६७. रा० १३,७७, ६५७,७५५. जी० ३।७८, ४४६
भेरुंड [भेरुण्ड] जी० ३।८७८
भेरुयालवण [भेरुतालवन] जी० ३।५८१
भेसज्ज [भैषज्य] ओ० १२०,१६२ रा० ६६८, ७५२,७८६
भो [भोस्] ओ० ५५. रा० १३. जी० ३।४४४
भोग [भोग] ओ० १६,२३,४३,४६,१४८ से १५०. रा० ६७२,७५१,७५३,७६१,८०६ से ८११. जी० ३।५६६, ११२४
भोग [भोज] ओ० ५२. रा० ६८७,६८८,६६५
भोगत्थिय [भोगार्थिक] ओ० ६८
भोगपुत्त [भोजपुत्र] ओ० ५२. रा० ६८७
भोगभोग [भोग्यभोग] ओ० ६८. रा० ७. जी० ३।३५०,५६३,८४२,८४५,१०२४,१०२५
भोगरय [भोगरजस्] ओ० १५०. रा० ८११
भोच्चा [भुक्त्वा] रा० ६६७
भोजण [भोजन] जी० ३।५६२
भोत्तए [भोक्तुम्] ओ० १३४
भोत्तूण [भुक्त्वा] ओ० १६५।१८
भोम [भूम] रा० १३०. जी० ३।३००
भोम [भौम] रा० १६४. जी० ३।३३६ से ३३८,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४५,३५५,३५६
भोमिज्ज [भौमेय] रा० २७९,२८०
भोमेज्ज [भौमेय] जी० ३।२५१,२५२
भोय [भोग] ओ० १५. रा० ६८५,७१०,७७४
√**भोय** [भोजय्]—भोयावेज्जा. रा० ७७६
भोयण [भोजन] ओ० १३५, १९५।१८.
जी० ३।६०२
भोयणमंडव [भोजनमण्डप] रा० ८०२

म

मइ [मति] ओ० ४६,५७
मइअण्णाणि [मत्यज्ञानिन्] जी० १।३०, ८७,९९;
९।२०२,२०६,२०८
मउ [मृदु] रा० ७६,१७३
मउंदमह [मुकुन्दमह] रा० ६८८
मउड [मुकुट] ओ० २१,४७,४९ से ५१,५४,६३,
६५,७२,१०८,१३१. रा० ८,२८५,७१४.
जी० ३।४५१,५९३
मउय [मृदुक] ओ० १९. रा० २८८.जी० १।५०;
३।२२,२८५,३८७,५९६,५९७,६७२,१०९८
मउल [मुकुल] जी० ३।५९७
मउलि [मुकुलिन्] जी० १।१०६,१०८
मउलि [मौलि] ओ० ४७,७२
मउलिय [मुकुलित] ओ० २१,५४. रा० ७१४
मऊर [मयूर] जी० ३।५९७
मंख [मङ्ख] ओ० १,२
मंखपेच्छा [मङ्खप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५.
जी० ३।६१६
मंगल [मङ्गल] ओ० २,१२,२०,५२,५३,६३,६८,
७०, १३९. रा० ९,१०,४९,५८,१५९,२४०,
२७६,२९१,६८३,६८५,६८७ से ६८९, ६९२,
७००,७०४,७१६,७१९,७२६,७५१,७५३,
७६५,७७६,७९४,८०२,८०५. जी० ३.३३२,
४०२,४४२
मंगलग [मङ्गलक] रा० २१,१६६,१७७,२०२,
२०४ से २०८,२१४,२२०,२२३,२२९,२३२,
२४१,२४८,२५०,२५६,२६१. जी० ३।२८६,
३१४,३४७,३५६,३६७ से ३७१,३७५ ३७६,
३८२,३९१,३९४,४०३,४११,४२०,४२४,
४३० ४३३,४३६ ६३६,६५१,६७७,७०८,
७५६,८८८,८९२,८९४,८९८,९००,९०६,९१३
मंगलय [मङ्गलक] ओ० ६४. जी० ३।३५५,४५७
मंगल्ल [माङ्गल्य] रा० ६८५,६९२,७००,७१६,
७२६,८०२
मंचाइमंच [मञ्चातिमञ्च] ओ० ५५. रा० २८१
मंचातिमंच [मञ्चातिमञ्च] जी० ३।४४७
मंजरि [मञ्जरी] ओ० ५,८,१०. रा० १४५.
जी० ३।२९८,२७४
मंजु [मञ्जु] ओ० ६९. रा० १३५. जी० ३।३०५,
५९८
√**मंड** [मण्ड्]—मंडावेज्जा. रा० ७७६
मंड [मण्ड] जी० ३।८७२,९६०
मंडणधाई [मण्डनधात्री] रा० ८०४
मंडल [मण्डल] ओ० ५०,६४. रा० १४९. जी०
३।३२२,८३८।१० से १२
मंडलग [मण्डलक] रा० २९५. जी० ३।४६०
मंडलपविभत्ति [मण्डलप्रविभक्ति] रा० ९०
मंडलरोग [मण्डलरोग] जी० ३।६२८
मंडलिय [माण्डलिक] जी० ३।१२९।१
मंडलियावाय [माण्डलिकावात] जी० १।८१
मंडव [मण्डप] जी० ३।५९४,८६३
मंडवग [मण्डपक] ओ० ६ से ८,१०. जी०
३।२७५,५९९
मंडवय [मण्डपक] जी० ३।५७९,८६३
मंडित [मण्डित] जी० ३।२८५,३०२,४४७
मंडिय [मण्डित] ओ० २,४७,५५,५६, रा०
२८१. जी० ३ २९५,३१३
मंडियग [मण्डितक] रा० १३२
मंडियाग [मण्डितक] रा० ४०
मंत [मन्त्र] ओ० २५. रा० ६७५,६८६,७९१
मंति [मन्त्रिन्] ओ० १८. रा० ७५४,७५६,७६२,
७६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंथ [मन्थ] ओ० १७४

मंद [मन्द] रा०. ७६,१७३,७५८,७५९. जी० ३।२८५,६०१,८६६

मंदगति [मन्दगति] जी० ३।६८६

मंदर [मन्दर] ओ० १४,२७. रा० १२४,२७६, ६७१,६७६,८१३. जी० ३।१७,११६ से २२१,२२७,३००,४४५,५६६,५६८,५६६. ५७३,६६८,७०१,७३६,७४०,७४२,७४५, ७५०,७५४,७६२,७६५,७६६,७७५,६३७, १००१,१०३६

मंदरगिरि [मन्दरगिरि] रा० १७२. जी० ३।२८५

मंदलेस [मन्दलेश्य] जी० ३।८३८।२६

मंदलेस्स [मंदलेश्य] जी० ३।८४५

मंदाय [मन्द] रा० ४०,११५,१३२,१७३,२८१. जी० ३।२६५,२८५,४४७

मंदायवलेस्स [मन्दातपलेश्य] जी० ३।८४५

मंस [मांस] ओ० ६२,६३ रा० ७०३

मंसल [मांसल] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७

मंससुह [मांससुख] ओ० ६३

मंसु [श्मश्रु] ओ० १६. जी० ३।४१५,५६६

मकरंडक [मकराण्डक] जी० ३।२७७

मगदंतियागुम्म [दे०] जी० ३।५८०

मगर [मकर] ओ० १३,४६. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१२६. जी० १।६६,११८; ३।२८८, ३००,३११,३७२,५६६,५६७

मगरंडग [मकराण्डक] रा० २४

मगरासण [मकरासन] रा० १८१,१८२. जी० ३।२६३

मगरिया [मकरिका] रा० ७७. जी० ३।५६३

मगुंद [मुकुन्द] जी० ३।५८६

मग्ग [मार्ग] ओ० ४६,६५,७२

मग्गण [मार्गण] ओ० ११७,११६,१५६

मग्गतो [पृष्ठतस्] ओ० ५५

मग्गदय [मार्गदय] ओ० १६,२१,५४. रा० ८, २६२. जी० ३।४५७

मघमघेंत [प्रसरत्] ओ० २,५५. रा० ६,१२,३२, १३२,२३६,२८१,२६२. जी० ३।३०२,३७२, ३६८,४४७

मघव [मघवन्] जी० ३।१०६८

मघा [मघा] जी० ३।४

मच्चु [मृत्यु] ओ० ४६

मच्छ [मत्स्य] ओ० १२,४६,६४. रा० २१,४६, १७४,२६१. जी० १।१००; ३।८८,११८, ११६,२८६,२८६,५६७.६६५,६६६,६६८,६६६

मच्छंडक [मत्स्याण्डक] जी० ३।२७७

मच्छंडग [मत्स्याण्डक] रा० ८४

मच्छंडापविभत्ति [मत्स्याण्डकप्रविभक्ति] रा० ६४

मच्छंडामयरंडाजारामारापविभत्ति [मत्स्याण्डकमकराण्डकजारकमारकप्रविभक्ति] रा० ६४

मच्छंडिया [मत्स्यण्डिका] जी० ३।६०१,८६६

मच्छंडी [मत्स्यण्डी] जी० ३।५६२

मच्छग [मत्स्यक] जी० १।६६

मच्छियपत्त [मक्षिकापत्र] ओ० १६२

मच्छी [मत्स्यी] जी० २।४

मज्ज [मद्य] ओ० ६२,६३. जी० ३।५६६

√**मज्ज** [मस्ज्]—मज्जावेज्जा. रा० ७७६

मज्जण [मज्जन] ओ० ६३

मज्जणघर [मज्जनगृह] ओ० ६३

मज्जणघरग [मज्जनगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२६४

मज्जणधाई [मज्जनधात्री] रा० ८०४

मज्जार [मार्जार] जी० ३।८४

मज्जिय [मज्जित] ओ० ६३

मज्झ [मध्य] ओ० १५,१६,६३,६८. रा० १२५, १२७,२४०,२४५,२८२,६७२,७६६. जी० १।४६; ३।५२,५७,८०,२६१,३५२, ५६६,६३२,६६१,६८६.७२३.७२६,७३६,८३६ ८८२

मज्झंमज्झ [मध्यंमध्य] ओ० २०,५२,६७ से ७०. रा० १०,१२,५६,२७६.६८३,६८५,६८७, ६६२,७००,७०६,७०८,७१०,७१६,७२६. जी० ३,४४५,५५७

मज्झगय [मध्यगत] रा० ७३२

मज्झछिण्णक [मध्यछिन्नक] ओ० ९०

मज्झिम [मध्यम] ओ० १९५।६. रा० ४३,६६१.
जी० ३।७७,२३९,६५८,६८१,१०५५

मज्झिमगेविज्ज [मध्यमग्रैवेय] जी० २।९९

मज्झिमगेवेज्जा [मध्यमग्रैवेयक] जी० ३।१०५६,
१११

मज्झिमिय [मध्यमिक] जी० ३।२३५ से २३९,
२४१ से २४३,२४६,२४७,२४९,२५०,२५४
से २५६,२५८,३४२,५६०,१०४० से १०४२,
१०४४,१०४६,१०४७ १०४९ से १०५३,१०५५

मज्झिय [मध्यक] जी० ३।५९७

मज्झिल्ल [मध्यम] जी० ३।७२५,७२८

मट्टिया [मृत्तिका] ओ० ९८. रा० ९,१२,२७९ से
२८१ जी० ३।४४५,४४६,४४८

मट्टियापाय [मृत्तिकापात्र] ओ० १०५,१२८

मट्ठ [मृष्ट] ओ० १२,१९,४७,७२,१६४. रा० २१,
२३,३२,३४,३६,५२,५६,१२४,१४५,१५७,
२३१,२४७. जी० ३।२६१,२६६,२६९,३९३,
४०१,५९६,५९७.

मड [मृत] जी० ३।८४,९५

मडंब [मडम्ब] ओ० ६८,८९ से ९३,९५,९६,१५५,
१५८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७

मड्डुय [दे० मड्डुक] रा० ७७

मण [मनस्] ओ० २४,३७,४०,५७,६९,७०
रा० ३०,४०,१३२,१३५,१७३,२२८,२३६,
७६५,७७८,८१५. जी० ३।२६५,२८३,२८५,
३०२,३०५,३८७,३९८,६७२

मणगुत्त [मनोगुप्त] ओ० २७,१५२,१६४.
रा० ८१३

मणगुलिया [मनोगुलिका] जी० ३।४१२,४१९,४४५

मणजोग [मनोयोग] ओ० ३७,१७५,१७७,१७८,
१८२

मणजोगि [मनोयोगिन्] जी० १।३१,८७,१३३;
३।१०५,१५३,११०९; ९।११३ ११४,११७,
१२०

मणपज्जवणाण [मनःपर्यवज्ञान] ओ० ४०.
रा० ७३९,७४४,७४६

मणपज्जवणाणविणय [मनःपर्यवज्ञानविनय]
ओ० ४०

मणपज्जवणाणि [मनःपर्यवज्ञानिन्] ओ० २४.
जी० १।१३३; ९।१५९,१६२,१६५,१६६,
१९७,२०२,२०४,२०८

मणबलिय [मनोबलिक] ओ० २४

मणविणय [मनोविनय] ओ० ४०

मणसमिय [मनःसमित] ओ० १६४

मणहर [मनोहर] ओ० ७,८,१०. रा० १७,१८,
२०,३० ४०,७८,१३२,१३५,१७३,२३६.
जी० ३।२७६,२८३,२८५,३०२,३०५

मणाभिराम [मनोभिराम] ओ० ६८

मणाम [दे०] ओ० ६८,११७. रा० ७५० से
७५३,७७४,७८६. जी० १।१३५; ३।१०९०,
१०९९

मणामतराय [दे०] रा० २५ से ३१,४५.
जी० ३।२७८ से २८४,६०१,६०२,८६०,
८६६,८७२,८७८,९६०

मणि [मणि] ओ० २३,४७,४९,५२,६३,६४.
रा० १७,१८,२४ से ३३,३७,४०,४५,५१,६५,
६९,७०,१३०,१३२,१३७,१५४,१६०,१७१,
१७३,१७४,२०३,२२८,२३७,२५६,२९२,
६८७ से ६८९,६९५,८०४. जी० ३।२६५,
२७७ से २८६,३००,३०२,३०७,३०९ से
३११,३३३,३३६,३६०,३६४,३७२,३७६,
३८७,३९९,४१२,४१७,४२१,४५७,५७८,
५८७,५८९,५९०,५९३,६०८,६४५,६४८,
६५६,६७०,६७२,६९०,७५७

मणि (पाय) [मणिपात्र] ओ० १०५,१२८

मणि (बंधण) [मणिबन्धन] ओ० १०६,१२९

मणिजाल [मणिजाल] रा० १९१. जी० ३।२६५,
५९३

मणिपेढिया [मणिपीठिका] रा० ३६,३७,६६,६७,२१८,२१९,२२१,२२२,२२४ से २२७,२३०,२३१,२३८,२३९,२४२ से २४७,२५२,२५३,२६१,२६५,२६७,२६९,३००,३०५ से ३११,३१७ से ३२१, ३३८, ३४४ से ३४७,३५२ से ३५४,४१४,४७४,५३४,५९५. जी० ३।३१०,३११,३६५,३६६,३७७.३७८,३८०,३८१,३८३ से ३८६,३९२,३९३,४००,४०१,४०४ से ४०९,४१३,४१४,४२२,४२३,४२७,४२८,४५७,४६५,४७० से ४७४,४८२ से ४८६,५०३,५०९ से ५१२, ५१६ से ५१९,५२६,५३३,५४०,५४८,५५७,६३४,६४९,६५०,६६३,६७१ से ६७५,७५८,७५९,७६५,७६८,७७०,८९१ से ९००,९०६,९०७

मणिमय [मणिमय] रा० १९,२०,३६,३७,१३०,१३५,१३८,१७५,१९०,२१८,२२१,२२४,२२६,२२८,२३०,२३८,२४२,२४४ से २४६,२६१,२७०,२७९,२८०. जी० ३।२६५,२८७,२८८,३००,३०५,३११,३१३,३२२,३५३,३६५,३७७,३८०,३८३,३८५,३९२,४००,४०४,४०६ से ४०८,४१३,४२२,४२७,४३५,४४३,४४५,६४६,६४९,६५४,६७१,७५८,८९१,८९३,८९५,८९७,८९९,९०६

मणियंग [मण्यङ्ग] जी० ३।५९३

मणिलक्खण [मणिलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

मणिवट्टक [मणिवृत्तक] जी० ३।५८७

मणिसिलागा [मणिशलाका] जी० ३।५८६,८६०

मणुई [मनुजी] जी० ३।५९७

मणुण्ण [मनोज्ञ] ओ० ४३,६८,११७. रा० ३०,४०,७८,१३२,१३५,१७३,२३६,७५० से ७५३, ७७४,७९६. जी० १।१३५; ३।२६५,२८३,२८५,३०२,३०५,१०९०,१०९६,१११७

मणुण्णतराय [मनोज्ञतरक] रा० २५ से ३१,४५. जी० ३।२७८ से २८४, ६०१

मणुय [मनुज] ओ० ४४,६८,९०,९१,९३,१६१,१६३,१६८. रा० २८२,८१५. जी० १।८२; ३।८८,१२९,४४८,५५६,५९६,५९८ से ६००,६०३,६०५ से ६२१,६२५,६२७ से ६३१,७९५,८४१,११३७; ९।२५४

मणुयरायवसभ [मनुजराजवृषभ] ओ० ६५

मणुयलोग [मनुजलोक] जी० ३।८३८।१,४ से ९

मणुयलोय [मनुजलोक] जी० ३।८३८।३

मणुस्स [मनुष्य] ओ० ७३,१७०. रा० २७,७३२,७३७,७७१. जी० १।५१,५४,५५,५६,६१,६५,७९,८७,९१,९६,१०१,११६,१२३,१२६,१२९,१३४,१३६; २।२,११,१४,२६ से ३०, ३२ से ३४,५४, ५७ से ६१,६५,६६,६८,७०,७२,७५,७७,८०,८४,८५,८८,९६,१०६,११४,११५,१२३,१२४,१३२ से १३४, १३७,१३८,१४३,१४५,१४७,१४९; ३।१,८४,११८,२१२ से २१५, २१७ से २२५,२२७ से २२९,२८०,५७९,८३६,८३८।१३,८४०,११३२,११३५,११३८; ६।१.४,९,१२; ७।१,६,१२,१७,१८,२०,२३; ९।१५६,१५८,२०९,२१८,२२०,२३१

मणुस्सखेत्त [मनुष्यक्षेत्र] जी० १।१२७; ३।२१४,८३५ से ८३७,८३८।२१

मणुस्सजोणिय [मनुष्ययोनिक] जी० २।९९

मणुस्सत्त [मनुष्यत्व] ओ० ७३

मणुस्सिंद [मनुष्येन्द्र] ओ० १४. रा० ६७१

मणुस्सी [मानुषी] जी० ३।५७९; ६।१।४,९,१२; ९।२०९,२१८,२२०

मणूस [मनुष्य] ओ० १. जी० ३।९९३,९९७; ९।२१२,२२१,२२५,२२९,२३२,२३७,२३८,२४५,२४६,२५०,२५१,२५५,२६७,२७२,२७३,२८१,२८२,२८६,२८७,२९०,२९३

मणूसपरिसा [मनुष्यपरिषद्] ओ० ७८

मणूसी [मानुषी] जी० ९।२१२

मणोगम [मनोगम] ओ० ५१

मणोगय [मनोगत] रा० ९,२७५,२७६,६८८,

७३२,७३७,७३८,७४६,७६८,७७७,७६१,
७९३. जी० ३।४४१,४४२

मणोगुलिया [मनोगुलिका] रा० १५३,२३५,
२५८,२७६. जी० ३।३०६,३५५,३६७,६०२

मणोज्जगुम्म [मनोज्ञगुल्म] जी० ३।५८०

मणोणुकूल [मनोनुकूल] जी० ३।५९४

मणोमाणसिय [मनोमानसिक] रा० ८१५

मणोरम [मनोरम] जी० ३।९३४

मणोरमा [मनोरमा] जी० ३।९२०

मणोरह [मनोरथ] ओ० ६६

मणोसिलक [मनःशिलक] जी० ७४५

मणोसिलग [मनःशिलक] जी० ७४५

मणोसिलय [मनःशिलक] जी० ७३४,७४६

मणोसिला [मनःशिला] रा० १६१,२५८,२७६.
जी० ३।३३४,४१६,७४७

मणोसिलापुढवी [मनःशिलापृथ्वी] जी० ३।१८५,
१८९

मणोहर [मनोहर] रा० ७६,१७३. जी० ३।२६५,
२८५

मति [मति] जी० ३।११८,११६

मतिअण्णाणि [मत्यज्ञानिन्] जी० ३।१०४,११०७,
६।१६७,२०२

मत्त [अमत्र] जी० ३।११२८,११३०

मत्त [मत्त] जी० १,६,२६,५७,६४. रा० १४८,
२८८. जी० ३।११८,११६,२७५,३२१,४५४

मत्तंगय [मत्ताङ्गक] जी० ३।५८६

मत्तगयविलंबिय [मत्तगजविलम्बित] रा० ९१

मत्तगयविलसिय [मत्तगजविलसित] रा० ९१

मत्तहयविलंबिय [मत्तहयविलम्बित] रा० ९१

मत्तहयविलसित [मत्तहयविलसित] रा० ९१

मत्थगसूल [मस्तकशूल] जी० ३।६२८

मत्थय [मस्तक] ओ० ५०,५१,५३,५४,५६,६२,
११७. रा० ८,१०,१२,१४,१८,४६,७२,७४,
११८,२७६,२७९,२८२,२६२,६५५,६८१,
६८३,६८९,७०७,७०८,७१०,७१३,७१४,
७२३,७७४,७९६. जी० ३।४४२,४४५,४४८,
४५७,५५५

मद [मद] जी० ३।८६०

मद्दण [मर्दन] ओ० १६१,१६३

मद्दय [मर्दक] जी० ३।५८९

मद्दल [मर्दल] रा० ७७

मद्दव [मार्दव] ओ० २५,४३. रा० ६८६,८१४.
जी० ३।५९८,७९५,८४१

मधु [मधु] जी० ३।८६०

मधुर [मधुर] जी० ३।२८५

ममत्तभाव [ममत्वभाव] जी० ३।६०८

मम्म [मर्मन्] रा० ७९३

मय [मृत] रा० ७६२. जी० ३।८४

मयणसाला [दे०] ओ० ६. जी० ३।२७५

मयणिज्ज [मदनीय] ओ० ६३. जी० ३।६०२,
८६०,८६६,८७२,८७८

मयपइया [मृतपतिका] ओ० ९२

मयर [मकर] ओ० ४८

मयरंडापविभत्ति [मकराण्डकप्रविभक्ति] रा० ९४

√**मर** [मृ]—मरंति. जी० १।५३

मरगय [मरकत] ओ० १३

मरण [मरण] ओ० २५,४६,७४,१६२ १९५।८,
१२. रा० ६८६

मरीइ [मरीचि] जी० ३।११२२

मरीइया [मरीचिका] रा० २१,२३,२४,३२,३४,
३६,१२४,१४५

मरीचिया [मरीचिका] ओ० १९४

मरीतिकवय [मरीचिकवच] रा० ३२

मरुंडी[1] [मरुण्डी] ओ० ७०

मरुपक्खंदोलग [मरुपक्षान्दोलक] ओ० ९०

मरुपडियग [मरुपतितक] ओ० ९०

मरुया [मरुवक,मरुत्तक] रा० ३०. जी० ३ २८३

मल [मल] ओ० ८६,९२. जी० ३।५९८

√**मल** [मृद्]—मलइज्जइ. रा० ७८५

---

१. मुरंडी (रा० ८०४)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मलय [मलय] ओ० १४. रा० १५६.१७३,२७६, ३८५,६७१,६७६. जी० ३।२८५,३३२,४४५, ४५१

मलिय [मर्दित] ओ० १४. रा० ६७१

मल्ल [माल्य] ओ० ४७,५१,६७,७२,६२,१०६, १३२,१४७,१६१,१६३. रा० १३,१३३,१५६, १५७,२५८,२७६ से २८१,२८५,२८६,२६१, ३५१,५६४,६५७,७००,७१४,७१६,७६४, ८०२,८०८. जी० ३।३०३,३२६,४१६,४४५, ४४६,४५१,४५७,५१६,५४७,५६१

मल्ल [मल्ल] ओ० १,२

मल्लइ [मल्लकि] ओ० ५२ रा० ६८७,६८८

मल्लइपुत्त [मल्लकिपुत्र] रा० ६८७,६८८

मल्लग [दे० मल्लक] जी० ३।५८७

मल्लजुद्ध [मल्लयुद्ध] ओ० ६३

मल्लदाम [माल्यदामन्] ओ० २,५५,६३ से ६५. रा० ३२,५१,१३२,२३५,२५५,२६४,२६६३००, ३०५,३१२,३५५,६८३,६६५. जी० ३।२८२, ३०२,३७२,३६७,४१६,४४७,४५२,४५७,४५६, ४६१,४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,५२०

मल्लपेच्छा [मल्लप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६

मल्लिया [मल्लिका] रा० ३०. जी० ३।२८३

मल्लियागुम्म [मल्लिकागुल्म] जी० ३।५८०

मल्लियामंडवग [मल्लिकामण्डपक] रा० १८४. जी० ३।२६६

मल्लियामंडवय [मल्लिकामण्डपक] रा० १८५

मसग [मशक] ओ० ८६,११७. रा० ७६६. जी० ३।६२४

मसार [मसार] रा० १३

मसारगल्ल [मसारगल्ल] रा० १०,१२,१८,६५, १६५,२७६. जी० ३।७

मसिहार [मसिहार] ओ० ६६

मसी [मसी, मषी] रा० २५,२७०. जी० ३।२७८, ४३५,६०७

मसीगुलिया [मसीगुलिका] रा० २५. जी० ३।२०८

मसूर [मसूर] जी० १।१८

मसूरग [मसूरक] रा० ३७. जी० ३।३११

√मह [मथ्]---महेइ. रा० ७६५

मह [मह] जी० ३।६३१।२

मह [महत्] ओ० ३,७,८,१०,१४,४६,५२,६७ से ६६. रा० ३,४,१२,१३,१५,३२,३५ से ३६,५३,१२३,१४८,१८८,२०४,२३८,२४२ से २४६,२५१ से२५३,२६० से २६२,२६५, २६७,२६६,२७०,२७२,२७३,२८८,६८८, ७६०,७६१,७७४. जी० ३।११०,११८,११६, २७३,२७६,२६८,३३८,३६१,३६४ से ३६६, ४००,४०१,४०४ से ४०८,४१०,४१२ से ४१४, ४२१ से ४२३,४२५ से ४२८,४३१,४३४, ४३५,४३७,४३८,४४६ से ४४६,४५४,६४२, ६४६,६५०,६७१ से ६७५, ६८२,६८३,६८५, ६८६,६६२ से ६६८,७३७,७५६,७५८

महइ [महती] रा० ७३२. जी० ३।७७,२६२, ७२३

महंत [महत्] ओ० १४,४६. रा० ६७१,६७६. जी० ३।१११,१२४,१२५

महंती [महती] रा० ७७

महग्गह [महाग्रह] जी० ३।७०३,७२२,८०६, ८२०,८३०,८३४,८३७,८३८।६,१३, १०००

महग्घ [महार्घ] ओ० २०,५३. रा० २७८,२७६, ६८०,६८१,६८३ से ६८५,६६२,६६६,७००, ७०२,७०८,७०६,७१६,७२६,८०२. जी० ३।४४४,४४५

महच्च [महार्च, महार्च्य] रा० ६६३,६६४,७१७, ७३२,७६६,७७६

महज्जुइतराय [महाद्युतितरक] रा० ७७२

महज्जुइय [महाद्युतिक] ओ० ४७,७२,१७०. रा० १८६,७७२. जी० ३।११६

महज्जुईय [महाद्युतिक] रा० ६६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महज्जुतीय [महाद्युतिक] जी० ३।४६,३५०, ७२१

महण [मथन] जी० ३।५६२

महता [महत्] जी० ३।२०१,२०२,२२१ से २२३

महति [महती] ओ० ७१,७८. रा० ५२,५६,६१, ६६३,६६४,७१७,७७६,७८७. जी० ३।१२, ११७,११३०

महती [महती] जी० ३।५८८

महत्तर [महत्तर] ओ० ७०

महत्तरगत्त [महत्तरकत्व] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।३५०,५६३,६३७

महत्थ [महार्थ] रा० २७८,२७९,६८०,६८१, ६८३,६८४,६९९,७००,७०२,७०८,७०९. जी० ३।४४४,४४५

महद्धण [महाधन] ओ० १०५,१०६,१२८,१२९

महप्पभ [महाप्रभ] जी० ३।८८५

महप्फल [महाफल] ओ० ५२. रा० ६८७

महब्बल [महाबल] ओ० ४७,७१,७२,१७०. रा० ६१,६६६. जी० ३।५६५

महब्भूय [महाभूत] रा० ७५१

महयर [महत्तर] रा० ८०४

महया [महत्] रा० ७,१३१,१३२,१४७ से १५१, १६७,२८० से २८३,६५७,६७१,६७९,६८३, ६८७ से ६८९,६९२,७००,७१२,७१६,७३२, ७३७,७५५,८०३,८०५. जी० ३।३२४,३५०, ४४७,५६३,८४२,८४५,१०२५

महरिह [महार्ह] ओ० ६३. रा० ६९,७०,२७८, २७९,६८०,६८१,६८३,६८४,६९९,७००, ७०२,७०८,७०९. जी० ३।४४४,४४५, ५८९

महल्ल [महत्] ओ० ४६

महल्लिया [महती] ओ० २४

महआसवतर [महास्रवतर] जी० ३।१२६

महाउस्सासतराय [महोच्छ्वासतरक] रा० ७७२

महाकंदिय [महाक्रन्दित] ओ० ४९

महाकम्मतर [महाकर्मतर] जी० ३।१२६

महाकम्मतराय [महाकर्मतरक] रा० ७७२

महाकाय [महाकाय] ओ० ४९

महाकाल [महाकाल] जी० ३।१२,११७,२५२, ७२४

महाकिरियतर [महाक्रियतर] जी० ३।१२६

महाकिरियतराय [महाक्रियतरक] रा० ७७२

महागुम्मिय [महागुल्मिक] जी० ३।१७१

महाघोस [महाघोष] जी० ३।२५०

महाजस [महायशस्] ओ० १७०

महाजाइगुम्म [महाजातिगुल्म] जी० ३।५८०

महाजुद्ध [महायुद्ध] जी० ३।६२७

महाणई [महानदी] ओ० ११७. रा० २७९. जी० ३।४४५,६३९,

महाणगर [महानगर] जी० २।१४०

महाणदी [महानदी] रा० २७९. जी० ३।३००, ५६८,६३२,६६८,७४६,८००,८१४,९३७

महाणरग [महानरक] जी० ३।१२,११७

महाणिरय [महानरक] जी० ३।७७

महाणील [महानील] ओ० ४७

महाणुभाग [महानुभाग] ओ० ४७,७२,१७०. रा० १८६,६६६. जी० ३।८६,९८८ से ९९७, १११९

महाणुभाव [महानुभाव] जी० ३।३५०,७२१

महातराय [महत्तरक] रा० ७७२

महातव [महातपस्] ओ० ८२

महाधायइरुक्ख [महाधातकीरुक्ष] जी० ३।८०८

महानई [महानदी] ओ० ११५,११७. रा० २७९

महानीसासतराय [महानिःश्वासतरक] रा० ७७२

महानीहारतराय [महानीहारतरक] रा० ७७२

महापउम [महापद्म] रा० २७९

महापउमद्दह [महापद्मद्रह] जी० ३।४४५

महापउमरुक्ख [महापद्मरूक्ष] जी० ३।८२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महापट्टण [महापत्तन] ओ० ४६
महापरिग्गहया [महापरिग्रहता] ओ० ७३
महापह [महापथ] ओ० ५२,५५. रा० ६५४, ६५५,६८७,७१२. जी० ३।५५४
महापाताल [महापाताल] जी० ३।७२३,७२९
महापायाल [महापाताल] जी० ३।७२३ से ७२५, ७२९
महापुंडरीय [महापुण्डरीक] ओ० १२. जी० ३।११८,११९
महापुंडरीयद्दह [महापुण्डरीकद्रह] जी० ३।४४५
महापुरिसनिपडण [महापुरुषनिपतन] जी० ३।११७,६२७
महापोंडरीय [महापौण्डरीक] ओ० १५०. रा० २३,१९७,२७९,२८८,८११. जी० ३।२५९,२९१
महाबल [महाबल] रा० १८६. जी० ३।८६, ३५०,७२१,१११९
महाभद्दपडिमा [महाभद्रपतिमा] ओ० २४
महाभरण [महाभरण] रा० ६९,७०
महामइ [महामति] रा० ७६५,७३६,७७०
महामंति [महामन्त्रिन्] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६,७६२,७६४
महामहतराय [महामहत्तरक] रा० ७७२
महामहिम [महामहिमन्] जी० ३।६१५,९१७
महामुह [महामुख] रा० १४८,२८८. जी० ३।३२१,४५४
महामेह [महामेघ] ओ० ४,६३. रा० १७०,७०३. जी० ३।२७३
महायस [महायशस्] ओ० ४७,७२. रा० १८६, ६६६. जी० ३।८६,३५०,७२१,१११९
महारंभ [महारम्भ] जी० ३।१२९
महारंभया [महारम्भता] ओ० ७३
महारव [महारव] ओ० ४६
महारुक्ख [महारुक्ष] जी० ३।१७१
महारोरुय [महारोरुक] जी० ३।१२,११७
महालत [महत्] रा० ५६०
महालय [महत्] ओ० २४,७१,७८. रा० ५२, ६१,६९३,६९४,७६६,७७२,७७९,७८७. जी० ३।१२,७७,११७,७२३,११३०
महालयत्त [महत्त्व] जी० ३।१२७
महालिंजर [महालिञ्जर] जी० ३।७२३
महालिया [महती] रा० ७६६,७७२
महावत्त [महावर्त] ओ० ४६
महावाय [महावात] रा० १२३
महाविजय [महाविजय] जी० ३।६०१
महाविक्त [महावृत] रा० २९२. जी० ३।४५७
महाविदेह [महाविदेह] ओ० १४१. रा० ७९९. जी० २।१४; ३।२२९
महाविमाण [महाविमान] ओ० १६७,१९२. रा० १२६
महावीर [महावीर] ओ० १९ से २५,२७,४५,४७ से ५३,५५,६२,६९ से ७१,७८ से ८३,११७. रा० ८ से १३,१५,५६,५८ से ६५,६८,७३, ७४,७९,८१,८३,११३,११८,१२०,१२१, ६६८,८१७
महावेयणतर [महावेदनतर] जी० ३।१२६
महासंगाम [महासंग्राम[जी० ३।६२७
महासत्थनिपडण [महाशस्त्रनिपतन] जी० ३।६२७
महासन्नाह [महासन्नाह] जी० ३।६२७
महासमुद्द [महासमुद्र] ओ० ५२. रा० ६८७. जी० ३।८४२,८४५
महासवतराय [महास्रवतरक] रा० ७७२
महासुक्क [महाशुक्र] ओ० ५१,१९२. जी० २।९६, १४८,१४९; ३।१०३८,१०५१,१०६१,१०६६, १०६८,१०८६,१०८८
महासोक्ख [महासौख्य] ओ० ४७,७२,१७०. रा० १८६,६६६
महाहारतराय [महाहारतरक] रा० ७७२
महाहिमवंत [महाहिमवत्] रा० २७९. जी० ३।२८५,४४५,७९५
महिंद [महेन्द्र] ओ० १४. रा० ६७१,६७९
महिंदकुंभ [महेन्द्रकुम्भ] रा० १३१,१४७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जी० ३।३०१

महिंदज्झय [महेन्द्रध्वज] रा० ५२,५६,२३१ से २३३,२३६,२४७ से २४६,३११,३१४,३४६, ३५४. जी० ३।३६३ से ३६५,४०१,४०६, ४१०,४१२,४७६,४७६,५१४,५१६,६००,६०१

महिच्छ [महेच्छ] ओ० ४६

महिड्ढिय [महर्द्धिक] ओ० ४७ से ५१,७२,१७०. रा० १८६ जी० ३।२५३,२५७,६५६,७६५, ८०८,८२६,८५७,८६०,८६३,८६६,८६६,८७३, ८७५,८७८,६२५,१०२१

महिड्ढियतराय [महर्द्धिकतरक] रा० ७७२

महिड्ढीय [महर्द्धिक] रा० ६६६. जी० ३।८६, २५६,६३७,६३४,७००,७२१,७२४,७३८, ७४१,७४३,७४६,७६०,७६३,७६५,८१६, ८५४,८५५,६२२,६८८ से ६६७,१०२१, १११६

महिम [महिमन्] जी० ३।६१६

महिय [मथित] रा० ३८,१६०,२२२,२५६. जी० ३।२१२,३३३,३८१,८६४

महिय [महित] ओ० २,५५. रा० २२,२८१. जी० ३।३७२,४४७

महिया [महिका] जी० १।६५; ३।६२६

महिवइवह [महीपतिपथ] ओ० १

महिस [महिष] ओ० १,१४,१६,५१,१०१,१२४, १४१. रा० २७,६७१,७७४,७६६. जी० ३।८४, २८०,५६६,६१८,१०३८

महिसी [महिषी] जी० ३।६१६

महु [मधु] ओ० ६२,६३. जी० ३।५८६,५६२

महुयर [मधुकर] ओ० ५७

महुयरी [मधुकरी] ओ० ६. जी० ३।२७५

महुयासव [मध्वाश्रव] ओ० २४

महुर [मधुर] ओ० ६,७१. रा० १३,१४,१७,१८, २०,६१,७६,१७३. जी० १।५,५०; ३।२२, ११८,११६,२७५,२८६,५६७,६३६,८५७,८६३

महेला [महेला] जी० ३।५६७

महेसक्ख [महेशाख्य] जी० ३।६६,३५०,७२१, १११६

महोरग [महोरग] ओ० १२०,१६२. रा० १४१, १७३,१६२,६६८,७५२,७७१,७८६. जी० १।१०५,१२१; ३।२६६,२८५,३१८,६२५

महोरगकंठ [महोरगकण्ठ] रा० १५५,२५८. जी० ३।३२८

महोरगकंठग [महोरगकण्ठक] जी० ३।४१६

महोरगी [महोरगी] जी० २।८

मा [मा] ओ० ११७. रा० ६६५

माइय [दे०] ओ० ५,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४

माइय [मात्रिक] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७

माइरक्खिया [मातृरक्षिता] ओ० ६२

माइल्लया [मायिता] ओ० ७३

माउ [मातृ] ओ० १४. रा० ६७१

मागध [मागध] जी० ३।४४५

मागह [मागध] ओ० २,१११ से ११३. रा० २७६

मागहपेच्छा [मागधप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६

मागहय [मागधक] ओ० १३७,१३८

मागहिया [मागधिका] ओ० १४६. रा० ८०६

माघवती [माघवती] जी० २।४

माडंबिय [माडम्बिक] ओ० १८,५२,६३. रा० ६८७,६८८,७०४,७५४,७५६,७६२,७६४. जी० ३।६०६

माण [मान] ओ० १५,२८,३७,४४,७१,६१,११७, ११६,१४३,१६१,१६३,१६८. रा० ६७१ से ६७३,७४८ से ७५०,७७३,७६६,८०१,८१६. जी० ३।१२८,४३८,५६८,७६५,८४१

माणकसाइ [मानकषायिन्] जी० ६।१४८,१४६, १५२,१५५

माणकसाय [मानकषाय] जी० १।१६

माणणिज्ज [माननीय] रा० २४०,२७६. जी० ३।४०२,४४२

माणवक [मानवक] जी० ३।४०२,४०४,५१६
मानवग [मानवक] रा० २४४,३५१. जी० ३।४०३,४०६,१०२५
मानवय [मानवक] रा० २३९,२७६,३५१. जी० ३।४०१,४४२,५१६
माणविवेग [मानविवेक] ओ० ७१
माणस [मानस] ओ० ७४. रा० १५
माणसिय [मानसिक] ओ० ६९
माणुस [मानुष] ओ० १९५।१३. रा० ७५१, ७५३. जी० ३।८३८।२
माणुसनग [मानुषनग] जी० ३।८३८।२८,३२
माणुसभाव [मानुषभाव] ओ० ७४।३
माणुसुत्तर [मानुषोत्तर] जी० ३।८३१,८३३. ८३९ से ८४२,८४५
माणुस्स [मानुष्य] ओ० ७४।२. रा० ७५१,७५३. जी० ३।११९
माणुस्सत [मानुष्यक] रा० ७५१
माणुस्सय [मानुष्यक] ओ० १५. रा० ६८५,७१०, ७५३,७७४,७९१
मातंग [मातङ्ग] ओ० २६. जी० ३।११८
माता [मातृ] जी० ३।६११
माता [मात्रा] जी० ३।६६८,८८२
√माय [मा]—माएज्जा ओ० १९५।१५
मायंग [मातङ्ग] जी० ३।११९
माया [मातृ] ओ० ७१,१९२. जी० ३।६३१।२
माया [माया] ओ० २८,३७,४४,७१,९१,११७, ११९,१६१,१६३,१६८. रा० ६७१,७९६. जी० ३।१२८,५९८,७९५,८४१
मायाकसाइ [मायाकषायिन्] जी० ९।१४८,१४९, १५२,१५५
मायाकसाय [मायाकषाय] जी० १।१९
मायामोस [मायामृषा] ओ० ७१,११७,१६१,१६३
मायामोसविवेग [मायामृषाविवेक] ओ० ७१
मायाविवेग [मायाविवेग] ओ० ७१
मार [मार] रा० २४. जी० ३।२७७
मारणंतिय [मारणान्तिक] ओ० ७७. जी० १।८६
मारणंतियसमुग्घात [मारणान्तिकसमुद्घात] जी० ३।१११२,१११३
मारणंतियसमुग्घाय [मारणान्तिकसमुद्घात] जी० १।२३,५३,६०,८२,१०१; ३।१०८,१५८
मारापविभत्ति [मारापक विभक्ति] रा० ९४
मारि [मारि] ओ० १४. रा० ६७१
मालणीय [मालनीय] रा० १२,१८,२०,३२,१२९. जी० ३।२८८,३७२
मालय [दे० मालक] जी० ३।५९४
मालवंत [माल्यवत्] जी० ३।५७७,६६८,६६७
मालवंतद्दह [माल्यवद्द्रह] जी० ३।६६७
मालवंतपरियाग [माल्यवत्पर्याय] रा० २७६. जी० ३।४४
मालवंतपरियाय [माल्यवत्पर्याय] जी० ३।७९५
माला [माला] ओ० ४७,५२,६३,६९,७२. जी० ३।५९१
मालागार [मालाकार] रा० १२
मालिघरग [मालिगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२९४
मालिणीय [मालिनीय] जी० ३।३००
मालुयामंडवग [मालुकामण्डपक] रा० १८४. जी० ३।२९६
मालुयामंडवय [मालुकामण्डपक] रा० १८५
मास [मास] ओ० २८,२९,११५,१४३. रा० ८०१. जी० १।८६; ३।११९,१७६,१७८, १८०,१८२,६३०,८४१,८४४,८४७,१०८०; ४,४,१४
मास [माष] जी० ३।८१९
मासपरियाय [मासपर्याय] ओ० २३
मासल [मांसल] जी० ३।८१९,८६०,९५६
मासिय [मासिक] ओ० ३२
मासिया [मासिकी] ओ० २४,१४०,१५४
माहण [माहन] ओ० ५२,७९ से ८१. रा० ६६७, ६७१,६८७,६८८,७१८,७१९,७८७,७८९

माहणपरिव्वाय [माहनपरिव्राजक] ओ० ९६
माहणपरिसा [माहनपरिषद्] रा० ७६७
माहप्प [माहात्म्य] ओ० ७१. रा० ६१
माहिंद [माहेन्द्र] ओ० ५१,१९२. जी० २।९६, १४८,१४९; ३।१०३८,१०४७,१०५८,१०६६, १०६८,१०७६,१०८८,१०९४,११०२,११११
मिउ [मृदु] रा० ३७,१३३. जी० ३।३०३,३११, ५९२,५९६,५९८,७९५,८४१
मिउमद्दवसंपण्ण [मृदुमार्दवसम्पन्न] ओ० ९१
मिउमद्दवसंपण्णया [मृदुमार्दवसम्पन्नता] ओ० ११९
मिंजा [मज्जा] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८, ७५२,७८९
मिग [मृग] ओ० ५१. रा० २४. जी० ३ १०३८
मिगज्झय [मृगध्वज] रा० १९२. जी० ३।३३५
मिगलुद्धग [मृगलुब्धक] ओ० ९४
मिगलोम [मृगलोम] जी० ३।५९५
मिगवण [मृगवन] रा० ६७०
मिच्छ [म्लेच्छ] ओ० १९५।१६
मिच्छत्त [मिथ्यात्व] ओ० ४६
मिच्छत्तकिरिया [मिथ्यात्वक्रिया] जी० ३।२१०, २११
मिच्छत्ताभिणिवेस [मिथ्यात्वाभिनिवेश] ओ० १५५,१६०
मिच्छदिट्ठि [मिथ्यादृष्टि] ओ० १६०. रा० ६२. जी० ३।१०३,१५१
मिच्छा [मिथ्या] जी० ३।२११
मिच्छादंसणसल्ल [मिथ्यादर्शनशल्य] ओ० ७१, ११७,१६१,१६३. रा० ७९६
मिच्छादंसणसल्लविवेग [मिथ्यादर्शनशल्यविवेग] ओ० ७१
मिच्छादिट्ठि [मिथ्यादृष्टि] जी० १।२८,८६; ३।११०५,११०६; ९।६७,६९
मिणालिया [मृणालिका] जी० ३।२८२
मित [मित] जी० ३।५९६,५९७
मित्त [मित्र] ओ० १५०. रा० ७५१,७७४, ८०२,८११. जी० ३।६१३,६३१
मित्त [मात्र] रा० २५४,८०९,८१०
मित्तपक्ख [मित्रपक्ष] जी० ३।४४८
मिथुण [मिथुन] जी० ३।६३९
मिधुण [मिथुन] जी० ३।३५५
मिय [मृग] रा० ६७१,७०३,७१८
मिय [मित] ओ० १९
मियगंध [मृगगन्ध] जी० ३।६३१
मियवण [मृगवन] रा० ७०६,७११,७१३,७१६, ७२९
मिरिय [मरीचि] रा० १३३. जी० ३।२६१,३०३
मिरीइकवच [मरीचिकवच] जी० ३।३७२
मिरीय [मरीचि] जी० ३।२६६,२६९,२७७
√**मिल** [मिल्]—मिलंति जी० ३।४४५
√**मिलाय** [मिल्]—मिलायंति. रा० २७९
मिलाइत्ता [मिलित्वा] रा० २७९
मिलायमाण [म्लायत्] रा० ७८२
मिलित्ता [मिलित्वा] जी० ३।४४५
मिलेच्छ [म्लेच्छ] जी० ३।२२९
मिसिमिसंत [दे०] ओ० ६३
मिसिमिसेंत [दे०] रा० १७,१८,६९,७०
मिस्स [मिश्र] जी० १।७१।२
मिहुण [मिथुन] ओ० ६. जी० ३।२७५,२८६
मिहुणग [मिथुनक] रा० १७४. जी० ३।३१८
मिहुणय [मिथुनक] जी० ३।११८,११९
मीरिय [मरीचि] ओ० १२
मीसजाय [मिश्रजात] ओ० १३४
मीसय [मिश्रक] ओ० ४६
मीसिय [मिश्रित] ओ० २८
मुइंग [मृदङ्ग] ओ० ६७,६८. रा० ७,१३,२४,७७, ६५७,७१०,७७४. जी० ३।२७७,३५०,४४६, ५९३,५८८,८४२,८४५,१०२५
मुइत्ता [मुक्त्वा] रा० २८८
मुइय [मुदित] ओ० १४. रा० ६७१
मुएत्ता [मुक्त्वा] जी० ३।४५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**मुंच** [मुच्] -मुच्चइ. ओ० १७७. मुच्चंति. ओ० ७२. जी० १।१३३. -- मुच्चंती. ओ० ७४।४. मुच्चिहिति. ओ० १६६. —मुच्चिहिति. ओ० १५४. रा० ६१६.

मुंड [मुण्ड] ओ० २३,५२,७६,७८,१२०. रा० ६८७,६८६,६६५,७३२,७३७,८१२

मुंडभाव [मुण्डभाव] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ८१६

मुंडमाल [मुण्डमाल] जी० ३।५६४

मुंडि [मुण्डिन्] ओ० ६४

मुक्क [मुक्त] ओ० २,२७,५५. रा० १२,३२, २८१. जी० ३।१२६।६,३७२,४४७,५८०, ५६१,५६७

मुक्कतोय [मुक्ततोय] रा० ८१३

मुखछिण्णग [मुखछिन्नक] ओ० ६०

मुगुंद [मुकुन्द] रा० ७७

मुगुंदमह [मुकुन्दमह] जी० ३।६१५

मुगुंसिया [दे०] जी० २।६

मुच्छिज्जंत [मूर्च्छ्यमान] रा० ७७

मुच्छिता [मूर्च्छिता] जी० ३।२८५

मुच्छिय [मूर्च्छित] रा० १५,७५३

मुच्छिया [मूर्च्छिता] रा० १७३

√**मुज्झ** [मुह्]—मुज्झिहिति. ओ० १५०. रा० ८११

मुट्ठि [मुष्टि] रा० १३३. जी० ३।३०३

मुट्ठिजुद्ध [मुष्टियुद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६

मुट्ठिय [मौष्टिक, मुष्टिक] ओ० १,२. रा० १२, ७५८,७५६. जी० ३।११८

मुट्ठियपेच्छा [मौष्टिकप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६

मुणाल [मृणाल] ओ० १६४. रा० १७४. जी० ३।११८,११६,२८६

मुणालिया [मृणालिका] ओ० १६,४७. रा० २६. जी० ३।५६६

मुणिपरिसा [मुनिपरिषद्] ओ० ७१. रा० ६१

मुणिय [ज्ञात्वा] ओ० २३

मुणतव्व [ज्ञातव्य] जी० ३।६३४

मुणेयव्व [ज्ञातव्य] जी० ३।८३८।११,२२

मुत्त [मुक्त] ओ० १६,२१,४६,५४. रा० ८,२६२. जी० ३।४५७

मुत्ता [मुक्ता] रा० २०. जी० ३।२८८

मुत्ताजाल [मुक्ताजाल] रा० १३२,१५६,१६१. जी० ३।२६५,३०२,३२२

मुत्तादाम [मुक्तादामन्] रा० ४०. जी० ३।३१३, ३५५

मुत्तालय [मुक्तालय] ओ० १६३

मुत्तावलि [मुक्तावलि] ओ० १०८,१३१. रा० २८५. जी० ३।४५१,६३६

मुत्तावलिपविभत्ति [मुक्तावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

मुत्ति [मुक्ति] ओ० २५,४३,१६३. रा० ६८६, ८१४

मुत्तिमग्ग [मुक्तिमार्ग] ओ० ७२

मुत्तिसुह [मुक्तिसुख] ओ० १६५।१४

मुद्दा [मुद्रा] ओ० ४७. रा० २८५

मुद्दिया [मुद्रिका] ओ० ६३,१०८,१३१. जी० ३।४५१

मुद्दियामंडवग [मृद्वीकामण्डपक] रा० १८४. जी० ३।२६६

मुद्दियामंडवय [मृद्वीकामण्डपक] रा० १८५

मुद्दियासार [मृद्वीकासार] जी० ३।५८६,८६०

मुद्ध [मूर्धन्] ओ० १६,२१,५४. जी० ३।५६६

मुद्धज [मूर्धज] जी० ३।४१५

मुद्धय [मूर्धज] रा० २५४

मुद्धाण [मूर्धन्] रा० ८,२६२

मुद्धाहिसित्त [मूर्धाभिषिक्त] ओ० १४. रा० ६७१

मुम्मुर [मुर्मुर] जी० १।७८; ३।८५

मुय [मृत] रा० ७६२,७६३

√**मुय** [मुच्]—मुयइ. रा० २८८. मुयति. जी० ३।४५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुयंग [मृदङ्ग] जी० ३।७८
मुयंत [मुञ्चत्] ओ० ७,८,१०. जी० ३।२७६
मुरंडी[1] [मुरण्डी] रा० ८०४
मुरय [मुरज] ओ० ६७. रा० १३,७७,६५७
मुरव [मुरज] जी० ३।७८,४४६
मुरवि [दे०] ओ० १०८,१३१. रा० २८५
मुसंढी [दे०] जी० १।७३
मुसल [मुसल] ओ० १६. जी० ३।११०,५६६
मुसावाय [मृषावाद] ओ० ७१,७६,७७,११७, १२१,१६१,१६३. रा० ६६३,७१७,७६६
मुसावायवेरमण [मृषावादविरमण] ओ० ७१
मुसुंढि [दे०] ओ० १. जी० ३।११०
मुहमंगलिय [मुखमाङ्गलिक] ओ० ६८
मुहमंडव [मुखमण्डप] रा० २११ से २१५,२६५ से २६६,३२६ से ३३०,३३३ से ३३७. जी० ३।३७४ से ३७६,४१२,४२१,४६० से ४६४, ४६१ से ४६५,४६६ से ५०२,८८७ से ८८६
मुहमूल [मुखमूल] जी० ३।७२३,७२६
मुहुत्त [मुहूर्त] ओ० २८,१४५. रा० ७५३,८०५
मुहुत्तंतर [मुहूर्त्तान्तिर] रा० ७६५
मुहुत्ताग [मुहूर्त] रा० ७५१,७५३
मूढ [मूढ] रा० ७३२,७३७,७६५
मूढतराय [मूढतरक] रा० ७६५
मूल [मूल] ओ० ६४,१३५. रा० १२७,२०४, २०५,२०६,२२८. जी० १।७१,७२; ३।२६१, ३५२,३६४,३७२,३८७,६३२,६४३,६५४, ६६१,६७२,६७८,६७६,६८६,७२३,७२६, ७३६,७६२,८३६,८७८,८८२,१००७
मूलमंत [मूलवत्] ओ० ५,८,१०. जी० ३।२७४, ३८६,५८१
मूलय [मूलक] जी० १।७३
मूलारिह [मूलार्ह] ओ० ३६
मूलाहार [मूलाहार] ओ० ६४
मूसग [मूषक] जी० ३।८४

मूसिया [मूषिका] जी० २।६
मेइणी [मेदिनी] जी० ३।५६७
मेंढमुह [मेषमुख] जी० ३।२१६
मेघ [मेघ] रा० १३,१४
मेढि [मेढी[1]] रा० ६७५
मेढिभूय [मेढीभूत] रा० ६७५
मेत्त [मात्र] ओ० ३३,१२२. रा० ६,१२,४०, २०५ से २०८,२२५,२७६
मेत्तय [मात्रक] जी० ३।४४०
मेधावि [मेधाविन्] रा० १२,७५८,७५६
मेरग [मेरक] जी० ३।५८६
मेरय [मेरक] जी० ३।८६०
मेरु [मेरु] जी० ३।८३८।१०,११
मेरुयालवण [मेरुतालवन] जी० ३।५८१
मेलिय [मेलित] जी० ३।५६२
मेहमुह [मेघमुख] जी० ३।२१६
मेहला [मेखला] जी० ३।५६३
मेहस्सर [मेघस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५
मेहावि [मेधाविन्] ओ० ६३. जी० ३।११८
मेहुण [मैथुन] ओ० ७१,७६,७७,११७,१२१, १६१,१६३
मेहुणवत्तिय [मैथुनप्रत्यय] जी० ३।१०२५
मेहुणवेरमण [मैथुनविरमण] ओ० ७१
मेहुणसण्णा [मैथुनसंज्ञा] जी० १।२०; ३।१२८
मोक्ख [मोक्ष] ओ० ७१,१२०,१६२
मोग्गर [मुद्गर] जी० ३।११०
मोग्गरगुम्म [मुद्गरगुल्म] जी० ३।५८०
मोणचरय [मौनचरक] ओ० ३४
मोत्तिय [मौक्तिक] ओ० २३. रा० ६६५. जी० ३।६०८
√मोय [मुच्]—मोएति. रा० ७३१
मोयग [मोचक] ओ० २१,५४. रा० ८,२६२. जी० ३।४५६

१. मरुण्डी [ओ० ७०]

१. आप्टे, पृष्ठ १२८६— मेठिः, मेढी, मेथिः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोयपडिमा ['मोय' प्रतिमा] ओ० २४

मोयय [मोचक] ओ० १९

मोर [मयूर] रा० २६. जी० ३।२७९

मोल्ल [मूल्य] ओ० १०५,१०६

मोसमणजोग [मृषामनोयोग] ओ० १७८

मोसवइजोग [मृषावाग्योग] ओ० १७९

मोसाणुबंधि [मृषानुबन्धिन्] ओ० ४३

मोह [मोह] ओ० ४६. रा० ७७१

√मोह [मोहय्] — मोहंति. जी० ३।२१७

—मोहेंति. रा० १८५

मोहणघर [मोहनगृह] जी० ३।५९४

मोहणघरग [मोहनगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२९४

मोहणिज्ज [मोहनीय] ओ० ८५,८६

मोहणीय [मोहनीय] ओ० ४४

मोहरिय [मौखरिक] ओ० ९५

य

य [च] ओ० ३२. रा० ७. जी० १।२

यज्जुव्वेद [यजुर्वेद] ओ० ९७

या [च] रा० ७०५

र

रइ [रति] ओ० ४९. रा० १५,८०९,८१०

रइय [रचित] ओ० १,२१,४९,५४,६४,१३४, १८२. रा० ८,३२,६६,७६,१३३,७१४. जी० ३।३७२,५९१,५९६,५९७

रइय [रतिद] ओ० १९. जी० ३।५९६,५९७

रइय [रतिक] ओ० ६३,६५

रइल [रजस्वत्] जी० ३।७२१

रउग्घात [रजउद्घात] जी० ३।६२६

रंगंत [रङ्गत्] ओ० ४६

रक्खंत [रक्षत्] ओ० ६४

रक्खस [राक्षस] ओ० ४९,१२०,१६२. रा० ६९८,७५२,७८९

रक्खसमहोरगगंधव्वमंडलपविभत्ति [राक्षसमहोरग-गन्धर्वमण्डलप्रविभक्ति] रा० ९०

√रक्खाव [रक्षापय्]— रक्खावेमि. रा० ७५४

रक्खोवग [रक्षोपग] रा० ६६४

रगसिगा [रगसिका] जी० ३।५८८

रचिय [रचित] जी० ३।३०३

रज्ज [राज्य] ओ० १४,२३. रा० ६७१,६७४, ६७९,७९०,७९१

√रज्ज [रञ्ज्]—रज्जिहिति. ओ० १५०

रज्जधुराचितय [राज्यधूश्चिन्तक] रा० ६७५

रज्जसिरी [राज्यश्री] रा० ७९१

रज्जु [रज्जु] रा० १३५. जी० ३।३०५

रट्ठ [राष्ट्र] ओ० २३. रा० ६७४,७९०,७९१

रण्ण [अरण्य] ओ० २८

रतण [रत्न] जी० ३।३४६

रतणसंचया [रत्नसञ्चया] जी० ३।९२२

रतणुच्चया [रत्नोच्चया] जी० ३।९२२

रति [रति] जी० ३।११८,११९,५९७

रतिकर [रतिकर] रा० ५६. जी० ३।९१८ से ९२२

रतिय [रतिद] जी० ३।५९६,५९७

रतिय [रतिक] जी० ३।८४२,८४५

रत्त [रक्त] ओ० ४७,५१,६९,७१,१०७,१२०, १३०,१६२. रा० २७,७६,१३३,१७३,२२८, ६६४,६९८,७५२,७७७,७७८,७८८,७८९. जी० ३।२८०,२८५,३०३,३८७,५९२,५९५ से ५९७,६७२

रत्तंसुय [रक्तांशुक] रा० ३७,२४५. जी० ३।३११,४०७

रत्तकणवीर [रक्तकणवीर] रा० २७. जी० ३।२८०

रत्तचंदण [रक्तचन्दन] ओ० २,५५. रा० ३२, २८१. जी० ३।३७२,४४७

रत्ततल [रक्ततल] ओ० १६,४७. जी० ३।५९६

रत्तपाणि [रक्तपाणि] रा० ६६४. जी० ३।५९२

रत्तबंधुजीव [रक्तबन्धुजीव] रा० २७ जी० ३।२८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रत्तरयण [रक्तरत्न] ओ० २३

रत्तवई [रक्तवती] रा० २७६

रत्तवती [रक्तवती] जी० ३।४४५

रत्ता [रक्ता] रा० २७६. जी० ३।४४५

रत्तासोग [रक्ताशोक] ओ० २२. रा० २७,७७७, ७७८,७८८. जी० ३।२८०

रत्ति [रात्रि] रा० ४५

रत्तुप्पल [रक्तोत्पल] ओ० १६. रा० २७. जी० ३।२८०,५९६,५९७

रत्था [रथ्या] ओ० ५५. रा० २८१. जी० ३।४४७

रथ [रथ] जी० ३।८६

रद्ध [राद्ध] जी० ३।५९२

रम [रम्]—रमंति. रा० १८५. जी० ३।२१७. —रमिज्जइ. रा० ७८३

रमणिज्ज [रमणीय] ओ० १६,४७,६३,१९२. रा० २४,३३,३५,६५,६६,१२४,१७१,१८६ से १८८,२०३,२०४,२१७,२३७,२३८,२६१, ७८१ से ७८७. जी० ३।२१८,२५७,२७७, ३०६,३१०,३३६,३५६ से ३६१,३६४,३६५, ३६८,३६९,३९९,४००,४२२,४२७,५८०, ५९६,५९७,६२३,६३३,६३४,६४५,६४६, ६४८,६४९,६५६,६६२,६६३,६७०,६७१, ६७३,६९०,६९१,७३७,७५५ से ७५८,७६८, ८८३,८८४,८९०,९०५,९०६,९१२,९१३, १००३,१०३८

रम्म [रम्य] ओ० ४,६. रा० १७०,१७३,६७०, ७०३,८०४. जी० ३।२७३,२७५,२८५,५९१

रम्मगवास [रम्यकवर्ष] रा० २७९. जी० २।१३, ३२,५९,७०,७२,९६,१४७,१४९; ३।२२८, ४४५

रम्मयवास [रम्यकवर्ष] जी० ३।७९५

रय [रजस्] ओ० २३. रा० ९,१२,२८१. जी० ३।४४७,५९८

रय [रय] ओ० ४६

रयण [रत्न] ओ० २३,४७,४९,६३,६४. रा० १०,१२,१७,१८,३२,३७,४०,५१,६५, ६९,७०,१३०,१३२,१३७,१६०,१६५,२२८, २५६,२७९,२८१,२८५,२९२,६९५,७७४. जी० ३।७,२४ ६० से ६३,२६५,३००,३०२. ३०७,३११,३३३,३४६,३५७,३७२,३८७, ४१७,४४५,४४७,४५७,५८७,५८९,५९०, ५९३,६७२,७७५,९३६,९३७

रयणकंड [रत्नकाण्ड] जी० ३।८,१५,२०

रयणकरंडग [रत्नकरण्डक] ओ० २६. रा० १५४, २५८,२७९,७५० से ७५३. जी० ३।३२७, ४१९,४४५

रयणकरंडय [रत्नकरण्डक] रा० १५४. जी० ३।३२७

रयणकरंडा [रत्नकरण्डक] जी० ३।३५५

रयणजाल [रत्नजाल] रा० १९१. जी० ३।२६५

रयणप्पभा [रत्नप्रभा] रा० १२४. जी० १।९२; २।१००,१२७,१३५,१३८,१४८,१४९; ३।३, ५ से ९,१२ से १९,२२ से २६,२९,३०,३३, ३७ से ३९,४२,४४,४५,४७ से ५७,५९ से ६५,७३,७६ से ७८,८०,८१,८३ से ९८,१०३ से ११०,११२,११६,१२० से १२४,१२६ से १२८,२३२,२५७,१००३,१०३८,१०३९, ११११

रयणप्पहा [रत्नप्रभा] ओ० १८९,१९२. जी० १।१०१; २।१३५

रयणभार [रत्नभार] रा० ७७४

रयणभारग [रत्नभारक] रा० ७७४

रयणमय [रत्नमय] जी० ३।७४७

रयणा [रत्ना] जी० ३।६७ से ७२,९२२

रयणागर [रत्नाकर] रा० ७७४

रयणामय [रत्नमय] ओ० १२. रा० २१,२३,३८, १२४,१२५,१२७,१२८,१३१,१३४,१४१, १४५,१४८,१५१,१५२,१५५ से १५७,१६०, १६१,१८० से १८५,१९२,१९७,२२२,२५३, २५६,२५७,२७२. जी० ३।२६२,२६३,२६६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६८,२६६,२८६,२६१ से २६६,३०१,३०४, ३१०,३१२,३१८,३१६,३२४,३२५,३२८ से ३३०,३३३,३३४,३४७,३४८,३८१,४१४, ४१८,४३७,६७५,७५०,७५३,८६३,८६६, ६०७,६१८,१०३८,१०३६,१०८१

रयणावलि [रत्नावलि] ओ० १०८,१३१. रा० २८५. जी० ३।४५१

रयणावलिपविभत्ति [रत्नावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

रयणि [रत्नि] ओ० १६५।६

रयणिकर [रजनिकर] जी० ३।५६७

रयणियर [रजनिकर] ओ० १५. रा० ६७२. जी० ३।८३८।१२,१३

रयणी [रजनी] ओ० २२. रा० ७२३,७७७,७७८, ७८८

रयणी [रत्नी] ओ० १८७,१६५।७. जी० १।१३५; ३।६१,७८८,१०८७ से १०८६

रयत [रजत] जी० ३।७,३००,३३३,४१७

रयत्ताण [रजस्त्राण] रा० ३७,२४५. जी० ३।३११,४०७

रयय [रजत] ओ० १४,१४१. रा० १०,१२,१८, ६५,१३०,१६०,१६५,१७४,२२८,२५५, २५६,२७६,६७१,७६६. जी० ३।२८६,३००, ३८७,४१६,६७२,६७६,७४७

रयय [पाय] [रजतपात्र] ओ० १०५,१२८

रयय [बंधण] [रजतबन्धन] ओ० १०६,१२६

रययामय [रजतमय] रा० ३७,१३०,१३२,१३५, १५३,१७४,१६०,२३६,२४०,२४५,२८८, २६१. जी० ३।२६४,२८६,३००,३०२,३०५, ३११,३२४,३२६,३६८,४०२,४०७,४५४, ४५७,६३६

रल्लग [रल्लक] जी० ३।५६५

रव [रव] ओ० ४६,५२,६७,६८. रा० ७,१३, १५,५५,५६,५८,२८०,२६१,६५७,६८७, ६८८. जी० ३।३५०,४४६,४५७,५५७,५६३, ८४२,८४५,१०२५

रवंत [रवत्] ओ० ४६

रवभूय [रवभूत] ओ० ५२. रा० ६८७,६८८

रवि [रवि] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७,८०६, ८३८।३

रस [रस] ओ० १५,१६१,१६३,१६६,१७०. रा० १७३,१६६,६७२,६८५,७१०,७५१, ७७४. जी० १।५,३८,५८,७३,७८,८१; ३।५८,८७,२७१,२८५,२८६,३८७,५८६,५६२, ६०१,६०२,७२४,७२७,८६०,८६६,८७२, ८७८,६७२,६८०,६८२,१०८१,१११८,११२४

रसओ [रसतस्] जी० १।५०

रसतो [रसतस्] जी० ३।२२

रसपरिच्चाय [रसपरित्याग] ओ० ३१,३५

रसमंत [रसवत्] जी० १।३३

रसविगइ [रसविकृति] ओ० ६३

रसिय [रसित] रा० १३,१४

रसोदय [रसोदक] जी० १।६५

रह [रथ] ओ० १,७,८,१०,५२,५५ से ५७,६२, ६४ से ६६,१००,१२३,१७०. रा० १५१, १७३,६८३,६८५,६८७ से ६८६,६६२,७०८, ७१०,७१६,७२७ से ७२६,७३१,७३२. जी० ३।२६०,२७६,२८५,३२३,५८१,५८५, ५६७,६१७

रहघणघणाइय [रथघनघनायित] रा० २८१. जी० ३।४४७

रहजोहि [रथयोधिन्] ओ० १४८,१४६. रा० ८०६,८१०

रहवाय [रथवात] रा० ७२८

रहस्स [रहस्य] ओ० ६७. रा० ६७५,७६३

रहित [रहित] जी० ३।११२१ से ११२३

रहिय [रहित] ओ० १. जी० ३।५६७

रहोकम्म [रहःकर्मन्] रा० ८१५

राइ [राजि] ओ० १६. रा० ७५४ से ७५७. जी० ३।५६७

राइंदिय [रात्रिदिव] ओ० २४,१४३. रा० ८०१. जी० १।७६,८८; ३।६३०; ४।४,१३; ५।६,१३, २८,२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राइण्ण [राजन्य] ओ० २३,५२. रा० ६८७,६८८

राइय [रात्रिक] ओ० २६

[**एगराइय** (एकरात्रिक) **पंचराइय** (पंचरात्रिक)

राईभोयण [रात्रिभोजन] ओ० ७६

राग [राग] ओ० ३७,४६,५२,५५,७४।६,१०७, १३०,१६८. रा० १६,१३३,२८१,७७१. जी० ३।३०३,४४७,५६५

रातिंदिय [रात्रिंदिव] जी० ३।२१८

राम [राम] ओ० ६६. जी० ३।११७

रामरक्खिया [रामरक्षिता] जी० ३।६१६

रामा [रामा] जी० ३।६१६

राय [राजन्] ओ० १४ से १६,१८,२०,२१,५२ से ५६,६२ से ६८,७०,७१,८०,६६. रा० ५, ६,१५४,६७१ से ६७५,६७६ से ६८१,६८३ से ६८५,६८७,६८८,६६८ से ७००,७०२ से ७०४,७०८ से ७१०,७१८ से ७२०,७२३ से से ७२६,७२८ से ७३४,७३६ से ७३६,७४७ से ७८१,७८८ से ७६१,७६३ से ७६६. जी० ३।१२६,३२७,५६२,६०२,६०६,६३१,७४७, ८६६,६५६

रायंगण [राजाङ्गण] रा० १२,१७३. जी० ३।२८५

रायंतेउर [राजान्तःपुर] रा० १२,१७३

रायककुह [राजककुद] ओ० ६६

रायकज्ज [राजकार्य] रा० ६८०,६६८

रायकहा [राजकथा] ओ० १०४,१२७

रायकिच्च [राजकृत्य] रा० ६८०,६६८

रायकुल [राजकुल] रा० ६७१

रायणीइ [राजनीति] रा० ६८०,६६८

रायधाणी [राजधानी] जी० ३।४४६,७००,७०१

रायमग्ग [राजमार्ग] ओ० १. रा० ६८४,६८५, ७००,७०६

रायरुक्ख [राजवृक्ष] ओ० ६,१०. जी० ३।३८८, ५८३

रायलक्खण [राजलक्षण] रा० ६७१

रायववहार [राजव्यवहार] रा० ६८०,६६८

रायहाणी [राजधानी] रा० २८२,६६७. जी० ३।३५०,३५१,३५४,३५५,३५७,३५८,३६०, ४३६,४४२,४४५,४४७,४४८,५५४,५५५, ५५७,५६३,५६७ से ५६६,६३७,६३८,६५६, ६६०,६६५,६६६,७०१,७१०,७१२,७१३, ७२१,७३८,७३६,७४१,७४४,७४७,७५१ से ७५३,७६०,७६१,७६३ से ७८०,८००,८१४, ६०२,६१६ से ६२२,६४०,६४५

रायारिह [राजार्ह] रा० ६८०,६८१,६८३,६८४, ६६६,७००,७०२,७०८,७०६

रासि [राशि] ओ० १६५।१५. रा० २७,२६,३१. जी० ३।२८०,२८२,२८४,८१६,८३६

राहु [राहु] ओ० ५०

राहुविमाण [राहुविमान] जी० ३।८३८।१७

रिउवेद [ऋग्वेद] ओ० ६७

रिंगिसिया [दे० रिङ्गिसिका] रा० ७७

रिक्ख [ऋक्ष] ओ० ६३. जी० ३।८३८।२६

रिट्ठ [रिष्ट] रा० १०,१२,१८,६५,१६५,२७६. जी० ३।७,८,१५,२४,३०,६२,३४६,४४५

रिट्ठमय [रिष्टमय] जी० ३।४३५

रिट्ठग [रिष्टक] ओ० १३

रिट्ठा [रिष्टा] जी० ३।४

रिट्ठाभ [रिष्टाभ] जी० ३।५८६

रिट्ठामय [रिष्टमय] रा० १६,१३०,१७५,१६०, २२८,२५४,२७०. जी० ३।२६४,२८७,३००, ३८७,४१५,४३५,६४३,६७२

रिद्ध [ऋद्ध] ओ० १. रा० १,६६८,६६६,६७६, ६७७

रिभित [रिभित] जी० ३।४४७

रिभिय [रिभित] रा० ७६,१०६,११६,१७३, २८१. जी० ३।२८५

रियारिय [रितारित] रा० १११,२८१. जी० ३।४४७

रिसि [ऋषि] ओ० ७१

रीतिया (पाय) [रीतिकापात्र] ओ० १०५, १२८
रीतिया(बंधण) [रीतिकाबन्धन] ओ० १०६,१२६
रुइ [रुचि] रा० ७४८ से ७५०,७७३
रुइर [रुचिर] जी० ३।५९६,६७२
रुइल [रुचिर] ओ० ५,८,१९. रा० २२८. जी० ३।२७४,३८७,५९६,५९७
रुंद [दे०] विस्तीर्ण ओ० ४६
रुक्ख [रूक्ष] रा० ७८२. जी० १।६९,७०,७२; ३।५८१,६०३,६०४,६३१.६७९,९३७
रुक्खगेहालय [रूक्षगेहालय] जी० ३।६०३,६०५
रुक्खमह [रूक्षमह] रा० ६८८. जी० ३।६१५
रुक्खमूल [रूक्षमूल] ओ० ८,१०. जी० ३।३८९, ५८१ से ५८३,५८६ से ५९५
रुक्खमूलिय [रूक्षमूलिक] ओ० ९४
रुच्चिज्जमाण [रुच्यमान] जी० ३।२८३
रुद्द [रौद्र] रा० ६७१
रुद्द (झाण) [रौद्रध्यान] ओ० ४३
रुद्दमह [रुद्रमह] रा० ६८८. जी० ३।६१५
रुप्पकूला [रूप्यकूला] रा० २७९. जी० ३।४४५
रुप्पच्छद [रूप्यच्छद] जी० ३।३३२
रुप्पपट्ट [रूप्यपट्ट] रा० २२,२९. जी० ३।२८२, २९०
रुप्पमणिमय [रूप्यमणिमय] रा० २७९,२८०
रुप्पमय [रूप्यमय] रा० १५९,२७९,२८०
रुप्पागर [रूप्याकर] रा० ७७४. जी० ३।११८
रुप्पामणिमय [रूप्यमणिमय] जी० ३।४४५
रुप्पामय [रूप्यमय] जी० ३।४४५,४४६
रुप्पि [रुक्मिन्] रा० २७९. जी० ३।४४५, ७९५
रुयग [रुचक] ओ० ४७. जी० ३।५९६,५९७, ७७५,९४२,९५२
रुयगवर [रुचकवर] जी० ३।९३४
रुयगवरभद्द [रुचकवरभद्र] जी० ३।९३४
रुयगवरमहाभद्द [रुचकवरमहाभद्र] जी० ३।९३४
रुयगवरोभास [रुचकवरावभास] जी० ३।९३४
रुयगवरोभासभद्द [रुचकवरावभासभद्र] जी० ३।९३४
रुयगवरोभासमहाभद्द [रुचकवरावभासमहाभद्र] जी० ३।९३४
रुयगवरोभासमहावर [रुचकवरावभासमहावर] जी० ३।९३४
रुयगवरोभासवर [रुचकवरावभासवर] जी० ३।९३४
रुयय [रुचक] ओ० १९. जी० ३।९३४
रुरु [रुरु] ओ० १३. रा० १७,१८,२०,३२,३७, १२९. जी० ३।२८८,३००,३११,३७२
रुहिर [रुधिर] रा० २७. जी० ३।२८०
रूत [रूत] जी० ३।४०७
रूय [रूत] ओ० १३. रा० ३१,३७,१८५,२४५. जी० ३।२८४,२९७,३११
रूव [रूप] ओ० १५,२३,४७,६३,७२,१४६,१६१, १६३,१९२. रा० १०,४७,५४,६९,७०,७६, १७३,१९०,६७२,६८५,७१०,७५१,७७१, ७७४,८०६,८०९ ८१०. जी० २।१५१; ३।११०,१११,२६४,२८५,५९०,५९४,५९६, ५९७,९८२,१११५,१११७,११२४
रूवग [रूपक] रा० १७,१८,२०,३२,१२९,१३२. जी० ३।२८८,३००,३७२
रूवसंपण्ण [रूपसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६
रूवि [रूपिन्] रा० ७७१. जी० १।३,५
रेणु [रेणु] रा० ९,१२,२८१. जी० ३।४४७
रेयग [रेचक] रा० ७६
रेरिज्जमाण [राराज्यमान] रा० ७८२
रोइयावसाण [रोचितावसान] रा० ११५,१७३, २८१. जी० ३।४४७
रोएमाण [रोचमान] जी० १।१
रोचियावसाण [रोचितावसान] जी० ३।२८५
रोग [रोग] ओ० ४६,११७. रा० ७९६. जी० ३।६२८,६३१

रोम [रोमन्] ओ० ६२. जी० ३।५९७
रोमराइ [रोमराजि] ओ० १६. रा० २५४.
जी० ३।४१५,५९६,५९७
रोमसुह (रोमसुख] ओ० ६३
√**रोय** [रुच्)—रोएज्जा रा० ७५०
रोएमि. रा० ६९५
रोरुय [रोरुक] जी० ३।१२,११७
रोहिणिय [रोहिणिक] जी० १।८८
रोहिणी [रोहिणी] जी० ३।९२१
रोहितंसा [रोहितांशा] जी० ३।४४५
रोहिया [रोहिता] रा० २७६. जी० ३।४४५
रोहियंसा [रोहितांशा] रा० २७६

ल

लउड [लकुट] जी० ३।११०
लउय [लकुच] ओ० ६ से ११. जी० १।७२;
३।५८३
लउल [लकुट] ओ० ६४
लउलग्ग [लकुटाग्र] जी० ३।८५
लउसिया [लाओसिया, लउसिया] ओ० ७०.
रा० ८०४
लंख [लङ्ख] ओ० १,२
लंखपेच्छा [लङ्खप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५.
जी० ३।६१६
लंघण [लङ्घन] रा० १२,७५८,७५९.
जी० ३।११८
लंतक [लान्तक] ओ० ५१,१६२. जी० ३।१०३८,
१०५०,११११
लंतय [लान्तक] ओ० १५५. जी० २।१४८,
१४९; ३।१०६०,१०६६,१०६८,१०७६,
१०८८,१०९५,११०३
लंबंत [लम्बमान] जी० ३।५९१
लंबियग [लम्बितक] ओ० ६०
लंबूसग [लम्बूसक] रा० ४०,१३२,१६१.
जी० ३।२६५,३०२,३१३,३९७
लक्खण [लक्षण] ओ० १४,१५,१६,४३,१४३,
१६५।११. रा० १३३,६७२,६७३,७७४,८०१.
जी० ३।३०३,५९६,५९७
लक्खारसग [लाक्षारसक] रा० २७
लक्खारसय [लाक्षारसक] जी० ३।२८०
लग्ग [लग्न] ओ० २३
लच्छी [लक्ष्मी] ओ० ६५
लज्जा [लज्जा] ओ० २५
लज्जासंपण्ण [लज्जासम्पन्न] ओ० २५.
रा० ६८६
लज्जु [लज्जावत्] ओ० १६४
लट्ठ [लष्ट] ओ० १,१६,६३. रा० ३२,५२,५६,
२३१,२४७. जी० ३।३७२,३९३,४०१,५९६,
५९७
लट्ठदंत [लष्टदन्त] जी० ३।२१६
लट्ठिग्गाह [यष्टिग्राह] ओ० ६४
लडह [दे०] ओ० १६. जी० ३।५९६,५९७
लण्ह [श्लक्ष्ण] ओ० १२,१६४. रा० २१,२३,३२,
३४,३६,१२४,१४५,१५७. जी० ३।२६१,
२६६,२६९
लता [लता] जी० १।६९; ३।१७३,३५५
लत्तिया [दे०] रा० ७७
लद्ध [लब्ध] ओ० २०,४६,५३,१२०,१५४,१६२,
१६५,१६६. रा० ६३,६५,६६७,६९८,७१३,
७५२,७६५,७६६,७७०,७८९,७९७,८१६
लद्धपच्चय [लब्धप्रत्यय] रा० ६७५
√**लभ** [लभ्]—लब्भति. रा० ७७४. —लभइ.
रा० ७१९.—लभेज्ज. रा० ७१९
लय [लय] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५
लया [लता] रा० १३६. जी० ३।३०६,६३१
लयाघरग [लतागृहक] रा० १८२,१८३.
जी० ३।२९४
लयाजुद्ध [लतायुद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६
लयापविभत्ति [लताप्रविभक्ति] रा० १०१
√**लल** [लल्] -ललंति. रा० १८५. जी० ३।२१७
ललिय [ललित] ओ० १५,५७,६३. रा० ७०,७६,
१७३,६७२. जी० ३।२८५,५९७

लव [लव] ओ० २८. जी० ३।८४१

लवइय [दे० लवकित] ओ० ५,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४

लवंग [लवङ्ग] रा० २६,३०. जी० ३ २८२

लवण [लवण] जी० ३।२१७,२१९ से २२७,३००, ५६६,५६८,५६९.५७१, से ५७६,७०४ से ७०८,७१०,७११,७१३ से ७२३,७२६,७२८ से ७३१,७३३,७३६,७३९ से ७४१,७४५,७४७, ७५०,७५४,७६१,७६२,७६५ से ७६९,७७५, ७८१ से ७८६,७८८ से ७९६.८३८।२४,९५७, ९६३,९६६,९६९

लवणग [लवणक] जी० ३।७१०

लवणतोय [लवणतोय] जी० ३।८३८।२३

लवणसिहा [लवणशिखा] जी० ३।७३२

लवणाहिवइ [लवणाधिपति] जी० ३।७२१,७५४, ७५६,७६१

लवणोदय [लवणोदक] जी० १।६५

लवय [लवक] जी० ३।३८८

लहु [लघु] जी० ३।२२

लहुय [लघुक] ओ० ४६. जी० १।५; ३।८७८

लहुयत्त [लघुकत्व] रा० ७६२,७६३

लाइय [दे०] ओ० २,५५. रा० ३२.२८१. जी० ३।३७२,४४७

लाघव [लाघव] ओ० २५. रा० ६८६,८१४

लाघवसंपण्ण [लाघवसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

लाभत्थिय [लाभार्थिक] ओ० ६८

लाला [लाला] रा० १३५,२८५. जी० ३।३०५, ४५१

लावणग [लावणिक] जी० ३।७६६ से ७६९

लावणिग [लावणिक] जी० ३।८३८।२४

लावण्ण [लावण्य] ओ० १५,२३. रा० ६९,७०. जी० ३।५९७

√लास [लासय्]—लासेंति. रा० २८१. जी० ३।४४७

लासग [लासक] ओ० १,२

लासगपेच्छा [लासकप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६

लासिया [ल्हासिका] ओ० ७०. रा० ८०४

लिंद [लिन्द्र] जी० ३।७२१

लिंब [लिम्ब] रा० ३७

लिक्खा [लिक्षा] जी० ३।६२४,७८८

लिच्च [लिच्च] जी० ३।३११

लित्त [लिप्त] रा० १२३,७५५,७७२

लिप्पासण [लिप्यासन] रा० २७०. जी० ३।४३५

लीला [लीला] रा० १७,१८,१३०,१३३. जी० ३।३००,३०३

लुक्ख [रूक्ष] जी० १।५,३९,४०,५०; ३।२२

लुद्धग [लुब्धक] रा० ७७४

√लुय [लू]—लुज्जइ. रा० ७८४

लूसणया [लूषण] ओ० १०३,१२६

लूसमाण [लूषत्] रा० १३३

लूसेमाण [लूषत्] जी० ३।३०३

√लूह [रूक्षय्, मृज्]—लूहेति. रा० २८५. जी० ३।४५१

लूहाहार [रूक्षाहार] ओ० ३४

लूहिय [रूक्षित] ओ० ६३

लूहेत्ता [रूक्षयित्वा] रा० २८५. जी० ३।४५१

लेक्ख [लख्य] रा० २७०. जी० ३।४३५

लेच्छइ [लिच्छवि, लेच्छवि] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८

लेच्छईपुत्त [लिच्छविपुत्र, लेच्छविपुत्र] ओ० ५२. रा० ६८७,६८८

लेच्छतिपुत्त [लिच्छविपुत्र,लेच्छविपुत्र] जी० ३।११७

लेट्ठु [लेष्टु] ओ० २९

लेण [लयन] ओ० १४९,१५०. रा० ८१०,८११. जी० ३।५९४

लेस [लेश्या] रा० ७७१

लेसणया [लेशन] ओ० १०३,१२६

लेसा [लेश्या] ओ० ४७,७२,११९ जी० १।१४ २१,५९,८६,९६,१०१,१२८; ३।९८,९९, १२७।४,१२८,१५०,८४१; ९।६६

लेस्सा [लेश्या] ओ० १५६. जी० १।२१,७६, ११६,१३६,; ३।१०१,१२८,१५०,१६०, ११०१

लेह [लेख] ओ० १४६. रा० ८०६,८०७

लेहणी [लेखनी] रा० २७०. जी० ३।४३५

लोग [लोक] रा० ७५१,७५३,८१५. जी० १।१४०; ३।७६५,८३८।२,९७२; ५।६

लोगंत [लोकान्त] ओ० १९५,१९५।६

लोगट्ठिति [लोकस्थिति] जी० ३।७६५

लोगणाह [लोकनाथ] रा० २९२. जी० ३।४५७

लोगनाली [लोकनाडी, °नाली] जी० ३।११११

लोगनाह [लोकनाथ] रा० ८

लोगपईव [लोकप्रदीप] रा० ८,२९२. जी० ३।४५७

लोगपज्जोयगर [लोकप्रद्योतकर] रा० ८,२९२. जी० ३।४५७

लोगमज्झावसाणिय [लोकमध्यावसानिक] रा० ११७,२८१ जी० ३।४४७

लोगहिय [लोकहित] रा० ८,२९२. जी० ३।४५७

लोगाणुभाव [लोकानुभाव] जी० ३।७६५

लोगुत्तम [लोकोत्तम] रा० ८,२९२. जी० ३।४५७

लोगोवयारविणय [लोकोपचारविनय] ओ० ४०

लोण [लवण] ओ० ९२. जी० ३।७२१

लोद्ध [लोध्र] ओ० ६,१०. जी० १।७२; ३।३८८, ५८३

लोभ [लोभ] ओ० ४६,७१. जी० ३।१२८,५९८, ७९५,८४१

लोभकसाइ [लोभकषायिन्] जी० १।१३१; ९।१४८,१५०,१५५

लोभविवेक [लोभविवेक] ओ० ७१

लोमपक्खि [लोमपक्षिन्] जी० १।११३,११५

लोमहत्थ [लोमहस्त] ओ० २. रा० १५६,१५७, २५८,२७६,२९५ से २९९,३५१. जी० ३।३२९, ३३०,४१६,४६०

लोमहत्थग [लोमहस्तक] रा० २९१,२९४ से २९६,२९८,३००,३०५,३१० से ३१२,३५१ से ३५६,४१४,४७३ से ४७५,५३४,५३५, ५९४,५९५. जी० ३।४४५,४५७,४६० से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,५२०,५३२, ५४७

लोमहत्थय [लोमहस्तक] रा० २९१,२९४ से २९७,३००,३०५,३१० से ३१२,३५२ से ३५६,४१४,४७३ से ४७५,५३४,५३५,५९४ ५९५. जी० ३।४५८

लोमहरिस [लोमहर्ष] जी० ३।८३

लोय [लोक] ओ० ७१,१६९,१७०,१७४. जी० १।१३९; २।१२०,१३१; ३।११८,११९, ८४१; ५।८,२२; ९।२५७

लोयंत [लोकान्त] जी० ३।३३ से ३६, १००२

लोयग्ग [लोकाग्र] ओ० १६८,१९३,१९५।२

लोयग्गथूभिया [लोकाग्रस्तूपिका] ओ० १९३

लोयग्गपडिबुज्झणा [लोकाग्रप्रतिबोधना] ओ० १९३

लोयण [लोचन] जी० ३।५९७

लोल [लोल] ओ० ६. जी० ३।२७५

लोव [लोप] ओ० ११७

लोह [लोभ] ओ० २८,३७,४४,९१,११७,१६१, १६३,१६८. रा० ७९६. जी० ३।१२८

लोहकसाइ [लोभकषायिन्] जी० ९।१५३

लोहकसाय [लोभकषाय] जी० १।१९

लोहया [लोभता] ओ० ११९

लोहारंबरिस [लोहकारम्बरीष] जी० ३।११८

लोहित [लोहित] रा० १२८,१३१. जी० ३।२२, ४५

लोहितक्ख [लोहिताक्ष] जी० ३।७,३००,४१५

लोहितक्खमणि [लोहिताक्षमणि] जी० ३।२८०

लोहितक्खमय [लोहिताक्षमय] रा० १९,१७५, १९०. जी० ३।२६४,२८७,३००

लोहितग [लोहितक] जी० ३।२८०

लोहिय [लोहित] ओ० १२. रा० २२,२४,२७, १५३. जी० १।५०; ३।१११,२९०,३२६, १०७५,१०७६

लोहियक्ख [लोहिताक्ष] रा० १०,१२,१८,६५,

१३०,१६५,२५४,२७६. जी० ३।४१५
लोहियक्खमणि [लोहिताक्षमणि] रा० २७
लोहियक्खमय [लोहिताक्षमय[रा० १३०,२४५ जी० ३।४०७,४७७
लोहितपाणि [लोहितपाणि] रा० ६७१
लोही [लोही] जी० १।७३
लोही [लौही] जी० ३।७८

व

व [इव] ओ० २७
व [च] जी. ३।१२६।६
वइ [वाच्] ओ० ३७,४०
वइकच्छछिण्णग [वैकक्षछिन्नक] ओ० ६०
वइगुत्त [वाग्गुप्त] ओ० १६४
वइजोग [वाग्योग] ओ० ३७
वइजोगि [वाग्योगिन्] जी० १।३१,८७,१३३; ३।१०५,१५३,११०६; ६।११३,११४,११७, १२०
वइर [वज्र] ओ० १२,१६,४८. रा० १०,१२, १७,१८,२०,२२,३२,६५,१२६,१५६,१६०, १६५,२५६,२७६,२८१,२६२,७७४. जी० ३।७,६१ से ६३,२८८,२६०,३००,३३२, ३३३,३४६,३७२,४१७,४५७,५६६
वइरणाभ [वज्रनाभ] जी० ३।३२३
वइरनाभ [वज्रनाभ] रा० १५०
वइरभंड [वज्रभाण्ड] रा० ७७४
वइरभार [वज्रभार] रा० ७७४
वइरभारय [वज्रभारक] रा० ७७४
वइरमज्झा [वज्रमध्या] ओ० २४
वइररिसहणाराय [वज्रऋषभनाराच] ओ० ८२
वइरागर [वज्राकर] रा० ७७४
वइरामय [वज्रमय] रा० १६,३५,३७,३६,४०, ५२,५६,१३०,१३२,१३५,१३७,१५३,१७५, १६०,२१७,२१८,२२८,२३१,२३५,२३६, २४०,२४५,२४७,२४६,२५४,२७०,२७६, ३००,३२१,३३८,३५१. जी० ३।८७,१११, २६१,२६४,२८६,२८७,३००,३०२,३०५, ३०७,३११,३१३,३२२,३२६,३५५,३७७, ३८७,३६३,३६७,३६८,४०१,४०२,४०७, ४१०,४१५,४३५,४४२,४६५,४८६,५०३, ५१६,५६२,६४३,६५४,६७२,६७६,७२४, ७२७,८८१,८६१,६००,६२७,६४८,१०२५
वइरोयणराय [वैरोचनराज] जी० ३।२४० से २४३
वइरोयणिंद [वैरोचनेंद्र] जी० ३।२४० से २४३
वइरोसभणाराय [वज्रऋषभनाराच] ओ० १८५
वइरोसभनाराय [वज्रऋषभनाराच] जी० १।११६
वइविणय [वाग्विनय] ओ० ४०
वइसमिय [वाक्समित] ओ० १६४
वंक [वक्र] ओ० १
वंग [वङ्ग] जी० ३।५६५
वंग [व्यङ्ग] जी० ३।५६७
वंचण [वञ्चन] रा० ६७१
वंचणया [वञ्चनता] ओ० ७३
वंजण [व्यञ्जन] ओ० १५,१४३. रा० ६७२, ६७३,८०१. जी० ३।५६६
√वंद [वन्द्]—वंदइ. ओ० २१.—वंदंति ओ० ४७. रा० १०.—वंदति. रा० ८. जी० ३।४५७.—वंदह. रा० ६.—वंदामि. ओ० २१. रा० ८.—वंदामो. ओ० ५२. रा० १०.—वंदिज्जाह. रा० ७०६. —वंदिस्सति रा० ६०४.—वंदेज्जा. रा० ७७६
वंद [वृन्द] ओ० ७०,७१. रा० ६१,६६२,७१६, ८०४
वंदण [वन्दन] ओ० २,५२. रा० १६,६८७,६८६
वंदणकलस [वंदनकलश] ओ० २,५५. रा० ३२, १३१,१४७,२५८,२८१,२६०. जी० ३।३०१, ३२०,३५५,३७२,४१६,४४७,४५६,८८६
वंदणकाम [वन्दनकाम] ओ० ५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदणघड [वन्दनघट] ओ० २,५५. रा० ३२, २८१. जी० ३।३७२,४४७

वंदणिज्ज [वन्दनीय] ओ० २. रा० २४०,२७६. जी० ३।४०२,४४२

वंदावंदय [वृन्दवृन्दक] रा० ६८८,६८६

वंदित्तए [वन्दितुम्] ओ० १३६. रा० ६

वंदित्ता [वन्दित्वा] ओ० २१. रा० ८. जी० ३।४५७

वंस [वंश] ओ० १४. रा० ७६,७७,१३०,१७३, १६०,६७१. जी० ३।२६४,२८५,३००,५८८

वंसकवेल्लुय [वंशकवेल्लुक] रा० १३०,१६०. जी० ३।२६४,३००

वंसग [वंशक] रा० १३०. जी० ३।३००

वंसा [वंशा] जी० ३।४

वक्कंति [अवक्रांति] जी० १।५१; ३।१२१,१५६, १०८२

वक्कंतिय [अवक्रांतिक] रा० ७६५

√वक्कम [अव+क्रम्]—वक्कमंति. जी० १।५८

वक्ख [वक्ष] जी० ३।५६७

वक्खार [वक्षार, वक्षस्कार] रा० २७६. जी० ३।४४५,५७७,६६८,७७५,६३७

√वग्ग [वल्ग्]—वग्गंति. रा० २८१. जी० ३।४४७

वग्गण [वल्गन] ओ० ६३

वग्गवग्गु [वर्गवर्ग] जी० १६५।१४

वग्गु [वाच्] ओ० ६८. रा० ७६७

वग्गुरा [वागुरा] ओ० ५२. रा० ६८७,६८८, ७००

वग्गुलि [वल्गुलि] जी० १।११४

वग्घ [व्याघ्र] रा० २४. जी० ३।८४,२७७,६२०

वग्घमुह [व्याघ्रमुख] जी० ३।२१६

वग्घारित [दे०] जी० ३।३०३,३६७,४४७,४५६

वग्घारिय [दे०] ओ० २,५५. रा० ३२,१३२, २३५,२८१,२६१,२६४,२६६,३००,३०५, ३१२,३५५. जी० ३।३०२,३७२,४६१,४६२, ४६५,४७०,४७७,५१६,५२०

√वच्च [व्रज्]—वच्चंति. जी० ३।१२६।६

वच्चंसि [वर्चस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६

वच्चग [वच्चक] जी० ३।५८८

वच्चघर [वर्चोगृह] रा० ७५३

वच्छ [वक्षस्] ओ० १६, २१, ४७, ५४, ५७, ६३, ६५, ७२. रा० ८, ६६, ७१४, जी० ३।५६६, ११२१

वज्ज [वर्ज] ओ० २६. जी० १।५१, ५५, ६१, ८७,१०१,११६,१२३,१२८; ३।१५५,६०५; ६।१०

वज्ज [वज्र] जी० ३।५६७

वज्जकंद [वज्रकन्द] जी० १।७३

वज्जरिसभनाराय [वज्रऋषभनाराच] जी० ३।५६८

वज्जित्ता [वर्जयित्वा] जी० ३।७७

वज्जिय [वर्जित] ओ० ४८. रा० ७७४. जी० ३।५६८

वज्जेत्ता [वर्जयित्वा] रा० २४०. जी० ३।४०२

वज्झवत्तिय [वर्ध्रवर्तित] ओ० ६०

वट्ट [वृत्त] ओ० १,२,१६,५५,१७०. रा० १२, ३२,५२,५६,२३१,२८१,२६१,२६४,२६६, ३००,३०५,३१२,३५५,७५८,७५६. जी० १।५; ३।२२,४८ से ५०,७७ से ७६, ८६,२६०,२७४,३५२,३७२,३६३,४०१, ४४७,४५६,४६१,४६२,४६५,४७०,४७७, ५१६,५२०,५६४,५६६,५६७,७०४,७६३, ७६६,८१०,८२१,८३१,८४८,८५६,८५६, ८६२,८६५,८६८,८७१,८७४,८७७,८८०, ६१०,६२५,६२७ से ६३२,६३८,६४३,१०७१, १०७२

√वट्ट [वृत्]—वट्टसि. रा० ७६७.—वट्टिस्सामि. रा० ७६८

वट्टक [वर्तक] जी० ३।५८७

वट्टखेड्ड [वृत्तखेल] ओ० १४६. रा० ८०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वट्टभाव [वृत्तभाव] ओ० ५,८. जी० ३।२७४

वट्टमग्ग [वृत्तमार्ग,वर्त्मगार्ग] ओ० ५६

वट्टमाण [वर्तमान] ओ० ४७. रा० २८१,८१५. जी० ३,४४७

वट्टमाल [वृत्तमाल] जी० ३।५८२

वट्टलोह [पाय] [वृत्तलोहपात्र] ओ० १०५,१२८

वट्टलोह [बंधण] वृत्तलोहबन्धन] ओ० १०६, १२९

वट्टवेतड्ड [वृत्तवैताढ्य] जी० ३।४४५

वट्टवेयड्ड [वृत्तवैताढ्य] रा० २७६. जी० ३।४४५, ७९५

वट्टि [वत्ति] जी० १।७२,३।५८६

वट्टिज्जमाणचरय [वर्त्यमानचरक] ओ० ३४

वट्टित्ता [वतित्वा] रा० ७७६

वट्टिय [वर्तित] ओ० १६,७१. रा० ६१,१३३, २४५,७६८,७७७. जी० ३।१७२,३०३,५९६, ५९७

वडभिया [वडभिका] रा० ८०४

वडभी [वडभी] ओ० ७०

वडिंसग [अवतंसक] ओ० १०

वडिंसय [अवतंसक] ओ० १२. जी० ३।५८४

वडेंसग [अवतंसक] ओ० ५,८,६४. रा० १२५, १४५. जी० ३।२६८,२७४,२८५,७०२,८०८, ८२६,१०३६

वडेंसय [अवतंसक] रा० १२५

वड्ढ [वृध्] —वड्ढइ. जी० ३।७३१.—वड्ढए. जी० ३।८३८।१४.—वड्ढति. जी० ३।७२३

वण [वन] रा० ४५,६५४,६५५,७६५. जी० ३।५५४,५८१

वण (लया) [वनलता] जी० ३।२९८

वणत्थि [वनार्थिन्] रा० ७६५

वणप्फइकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० ३।१९६

वणप्फति [वनस्पति] जी० ३।१२३

वणप्फतिकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० ३।१२६, १९६

वणमाला [वनमाला] ओ० ४७,४८,७२. रा० १३६,२१०,२१२. जी० ३।३०६,३५४, ३७३,५९१,६४७,६७३,८८६,८८८

वणराइ [वनराजि] रा० ६५४,६५५. जी० ३।२७९,५५४,५५५,५८५,६३१

वणराति [वनराजि] रा० २६

वणलया [वनलता] ओ० ११,१३. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१२९,१४५. जी० ३।२८८,३००,३११, ३७२,५८४

वणलयापविभत्ति [वनलताप्रविभक्ति] रा० १०१

वणसंड [वनषण्ड] ओ० ३,४,८. रा० ३,१७०, १७१,१७४,१८२,१८४,१८६,१८९,२०१, २३३,२६३,६५४,६५५,७०३,७८१,७८२, ७८६,७८७. जी० ३।२१७,२५९,२७३,२७७, २८६,२९४,२९६,२९८,३५८,३५९,३६२, ३९५,५५४,६३२,६३९,६६१,६६८,६८१ से ६८३,६८८,६८९,७०६,७३६,७५४,७६२, ७६५,७६८,७९८,८१२,८२३,८३९,८५०, ८५७,८८२,९१०,९११

वणस्सइ [वनस्पति] जी० ८।३

वणस्सइकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० १।१२,६६ से ७४; २।१३८; ३।१३१,१३५; ५।९,१५; ८।१; ९।१८४,२६३

वणस्सइकाइयत्त [वनस्पतिकायिकत्व] जी० ३।१२७

वणस्सइकाल [वनस्पतिकाल] जी० १।१४२; २।६३,६५ से ६७,११७,१२६,१२७,१३०: ४।१२७; ९।११७,१२७,२६४,२७१

वणस्सति [वनस्पति] जी० ५।१७

वणस्सतिकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० २।१०२, १२०,१११,१३६,१३८,१४६,१४९; ३।१३५; ५।१,३,६,१८ से २०; ८।४,५; ९।१८२,२५६, २५८,२६६

वणस्सतिकाल [वनस्पतिकाल] जी० २।८६ से ८८,९० से ९२,११९,१३१,१३३; ३।११३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११३७; ४।७; ५।१७,३०; ६।८,१०; ७।१०, १३ से १५,१७,१८,६।३,४,५८,५६,८०,८३, १०३,१०५,११५,१२४,१२६,१३६,१३८, १७७,१६४,२०७,२११,२१६,२१८,२२२, २२६,२३६,२४१ से २४३,२४६,२६२,२७७ से २७६,२८१,२८२

वणिय [वणिज्] ओ० १

वणोवजीवि [वनीपजीविन्] रा० ७६५

वण्ण [वर्ण] ओ० २,१३,२३,२५,४७,४६ से ५१, ५५,७२,१६६,१७०,१६४. रा० ६,१२,२४ से २६,३२,४५,५२,५६,१२८,१३०,१७१,१६६, २३१,२४७,२८१,२८५,२६१,२६३ से २६६, ३००,३०५,३१२,३५५. जी० १।५,३४,३८,५०, ५८,७३,७८,८१; ३।५८,८३,८७,६४,१२७, २७१,२७७ से २८२,३००,३०६,३५३,३६०, ३७२,३६३,४४७,४५१,४५७ से ४६२,४६५, ४७०,४७७,५१६,५२०,५५४,५७८,५८०, ५८६,५६१,५६२,५६५,५६७,६०१,६०२, ६३७,६४५,६४८,६५६,६५६,७२४,७२७,७३८, ७४३,७६३,८६०,८६६,८७२,८७८,६७२, १०७५,१०७६,१०८१,१०६३ से १०६६

वण्णओ [वर्णतस्] जी० १।३५,५०,६६,१३६

वण्णग [वर्णक] ओ० ६३,१६१,१६३

वण्णल [वर्णक] रा० २४३. जी० ३।२१७

वण्णतो [वर्णतस्] जी० ३।२२,२७,४५

वण्णमंत [वर्णवत्] जी० १।३३,३४

वण्णय [वर्णक] रा० ६६,१५६,१६४,१७०,२०१, २०२,२०४ से २०८,२१६,२३८,२३८,२६१, २६३. जी० ३।२६८,३१५ से ३१७,३२०,३२१, ३३८,३५४,३५५,३५८,३६२,३६२,३६६, ३६८,३७३,३७४,३७८,३६५,३६६,४०१४०६, ४२३,४२५,४२८,६३२ से ६३४,६३६ से ६४१, ६४६,६४७,६५०,६६१,६६८,६७३,६७४, ६७८,६७६,६८३ से ६८५,६८६,७०६,७३६, ७५४,७५६,७५६,७६२,७६८,८१२,८२३,८३६, ८५०,८५७,८८२,८८४,८८५,८८७,६१०, ६११,६३६,१००८

वण्णसंजलणया [वर्णसंज्वलनता] ओ० ४०

वण्णाभ [वर्णाभ] रा १२६. जी० ३।७७,६३७, ६५६,६६४,७३८,७४३,७६३,८१६,८५४, ८७२

वण्णावास [वर्णावास] रा० १६,२०,२५ से २६, ३७,४५,१३५,१४६,१७५,१६०,२२८,२४५, २५४,२३०. जी० ३।२६४,२७८ से २८२, २८७,३०५,३११,३२२,३५६,३८७,४०७, ४१५,४३५,६४३,६५४,८६८

वत्त[1] [वर्त] ओ० १६. जी० ३।५६६

वत्तमंडल [वृत्तमण्डल] ओ० ६४

वत्तव्व [वक्तव्य] ओ० ३३. जी० ६२५,६८२

वत्तव्वता [वक्तव्यता] जी० ३।५६६,८५६,८८६, ६१३,६२५,६२७,६३२,६३४,६३५

वत्तव्वया [वक्तव्यता] रा० ८२,२१५,३२१,७५० से ७५३. जी० ३।३२,२५०,४१२,४३१,४३४, ६७६,६६१,७०१,७१०,७७६,८००,८५६

वत्तिय [प्रत्यय] ओ० ५२. रा० १६,६८७,६८६

वत्थ [वस्त्र] ओ० २०,३३,४७,४६,५१ से ५३,७२, १०७,१२०,१३०,१४७,१४६,१५०,१६२. रा० १५६,१५३,२५८,२७६,२८६,२६१, ६८५,६८७,६८६,६६२,६६८,७००,७१४, ७१६,७१६,७२६,७५२,७८६,७६४,८०२, ८०८,८१०,८११. जी० ३।३२६,४१६,४४७, ४५२,५६५,६७३,७७५,८७८,६३७,११२२

वत्थंत [वस्त्रान्त] रा० ६६

वत्थविहि [वस्त्रविधि] ओ० १४६. रा० ८०६

वत्थव्व [वास्तव्य] रा० २८२. जी० ३।४४२,४४८, ५२७

वत्थव्वग [वास्तव्यक] जी० ३।३५०,४४६,५६३

वत्थि [वस्ति] रा० ७६३. जी० ३।५६७

---

१. वत्रं च सूत्रवलनकम् [ओ० वृ०]।
वर्त—सूत्रवलनकम् [जी० वृ०]।

वत्थु [वस्तु,वास्तु] ओ० १
वत्थुलगुम्म [वास्तुलगुल्म] जी० ३।५८०
वत्थुविज्जा [वास्तुविद्या] ओ० १४६. रा० ८०६
√वद [वद्]—वदह. ओ० ६६. रा० ६६५.
—वदेज्जा. रा० ७५१
वदण [वदन] जी० ३।५९६ से ५९८
वदित्ता [वदित्वा] ओ० ७६
वद्दलियाभत्त [बार्दलिकाभक्त] ओ० १३४
वद्धण [वर्धन] जी० ३।५९२
वद्धणी [वर्धनी] जी० ३।५८७
वद्धमाण [वर्धमान] ओ० ४८,६८
वद्धमाणग [वर्धमानक] ओ० १२,६४. रा० २१,
२४,४६,२६१. जी० ३।२७७,२८६
वद्धमाणा [वर्धमाना] रा० २२५. जी० ३।३८४,
८६६
√वद्धाव [वर्धय्]—वद्धावेइ. ओ० २०. रा० ६८०।
—वद्धावेंति. रा० १२. जी० ३।४४२.
—वद्धावेति. रा० ४६
वद्धावेत्ता [वर्धयित्वा] ओ० २०. रा० १२.
जी० ३।४४२
वप्प [वप्र] रा० १७४. जी० ३।११८,११६,२८६
वप्पिणी [दे०] ओ० १
वम्मिय [वर्मित] रा० ६६४,६८३. जी० ३।५६२
वय [वचस्] ओ० २४. रा० ८१५
वय [वयस्] ओ० ४७
वय [व्रत] ओ० २५,४६
√वय [वद्]—वइस्संति. रा० ८०२.—वएज्जा.
रा० ७५०.—वयइ. ओ० ७१.—वयामि.
रा० ७३४.—वयासि. ओ० २०. रा० ७३४.
जी० ३।४४८.—वयासी. रा० ८.
जी० ३।४४२.—वयाहि. रा० १३
√वय [वच्]—वोच्छं. ओ० १६५।१७.
जी० ३।२२६
वयंस [वयस्य] जी० ३।६१३
वयंसय [वयस्यक] रा० ६७५
वयगुत्त [वचोगुप्त] ओ० २७,१५२. रा० ८१३
वयजोग [वचोयोग] ओ० १७५,१७७,१७६,१८२
वयण [वचन] ओ० ४६,५६,५७,५६,६१,६६.
रा० १०,१४ से १६,१८,७४,२७६,६५५,६८१,
६६६,७०७. जी० ३।४४५,५५५
वयण [वदन] ओ० १५,१६,२१,५४. रा० ६७२.
जी० ३।५६७
वयबलिय [वचोबलिक] ओ० २४
वयरामय [वज्रमय] रा० १७४
वर [वर] ओ० १,२,५,८ से १०,१२ से १४,१६,
२१,४६,४८,४६,५१,५४,५७,५६,६३ से ६५,
६७,१०७,१५३,१६५,१६६,१७२. रा० ३,४,
८,६,१२,१३,२८,३२,४७,५२,५६,६८ से ७०,
७६,१२६,१३१ से १३३,१४७,१४८,१५६,
१६२,१७३,१८५,२१०,२१२,२२८,२३१,२३६,
२४०,२७७,२८०,२८३,२८६,२६१,२६२,३५१,
५६४,६५७,६६४,६७१,६८१,६८३,७१०,
७१४,७६५,७७४,७६४,८०२,८०४,८१४.
जी० ३।२७४,२८१,२८२,२८५,२६७,३०० से
३०३,३२१,३३२,३३५,३५४,३७२,३७३,
३८७,४४३,४४६ से ४४६,४५७,५१६,५४७,
५५७,५६२,५८६,५६१ से ५६३,५६५ से ५६७,
६०४,६४७,६७२,८५७,८६०,८८५
√वर [वरय्]—वरइ. जी० ३।८३८,१६
वरंग [वराङ्ग] जी० ३।३२२
वरदाम [वरदामन्] रा० २७६. जी० ३।४४५
वरपुरिस [वरपुरुष] जी० ३।२८१
वराह [वराह] ओ० १६,५१. रा० २४,२७.
जी० ३।२७७,२८०,५६६,१०३८
वरिसधर [वर्षधर] ओ० ७०. रा० ८०४
वरुण [वरुण] जी० ३।७७५,८५७
वरुणप्पभ [वरुणप्रभ] जी० ३।८५७
वरुणवर [वरुणवर] जी० ३।८५१,८५६,८५७,
८५६
वरुणोद [वरुणोद] जी० ३।२८५,८५६,८६०,
८६२,६५८,६६३

वलक्ख [वलक्ष] जी० ३।३२२,५९३
वलभी [वलभी] जी० ३।६०४,७९३
वलभीघर [वलभीगृह] जी० ३।५९४
वलय [वलय] जी० १।६९; ३।३७ से ४०,४२, ४४ से ५०,५९३,७०४,७९३,७९६,८१०, ८२१,८३१,८४८,८५९,८६२,८६५,८६८, ८७१,८७४,८७७,८८०,९२५
वलयमयग [वलयमृतक] ओ० ९०
वलयामुह [वडवामुख] जी० ३।७२३
वलयावलिपविभत्ति [वलयावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
वलि [वलि] जी० ३।५९७
वलित [वलित] जी० ३।५९६
वलिय [वलित] ओ० १५,१९. रा० १२,६७२, ७५८ से ७६१. जी० ३।५९७
वल्ली [वल्ली] जी० १।६९,३।१७२
ववगत [व्यपगत] जी० ३।५९७,६१०,६१२ से ६१६,६२४,६२७,६२८
ववगय [व्यपगत] ओ० १४,९२. रा० ६७१. जी० ३।६०७,६०९,६२२
√ववरोव [व्यप+रोपय्]—ववरोवएज्जा. रा० ७५१—ववरोविज्जइ. रा० ७६७ —ववरोवेमि. रा० ७५६—ववरोवेहि. रा० ७५१
ववरोवेत्ता [व्यपरोप्य] रा० ७५६
√ववस [वि+अव+सो]—ववसइ. रा० २८८. जी० ३।४५४
ववसइत्ता [व्यवसाय] रा० २८८. जी० ३।४५४
ववसाय [व्यवसाय] ओ० ४६. रा० २८८. जी० ३।४५४
ववसायसभा [व्यवसायसभा] रा० २६९,२७१, २७२,२८६,२८८,५९४,५९६,५९७,६१६, ६३४,६३५. जी० ३।४३४,४३६,४३७,४५२, ४५४,५४७,५४९ से ५५३
ववहार [व्यवहार] रा० ६७५
ववहारग [व्यवहारक] रा० ७६६
ववहारि [व्यवहारिन्] रा० ७६६
वस [वश] ओ० २०,२१,५३,५४,५६,६२,६३, ७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १४,१६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७,२७९, २८१,२९०,६५५,६८१,६८३,६९०,६९५, ७००,७०७,७१०,७१३,७१४,७१६,७१८, ७२५,७२६,७७४,७७८. जी० ३।४४३,४४५, ४४७,५५५
√वस [वस्]—वसाहि. ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८
वसंतलया [वासन्तीलता] रा० २४
वसट्टमयग [वशार्तमृतक] ओ० ९०
वसण [वसन] रा० २६,२८,६९,७०,१३३. जी० ३।२७९,२८१,३०३,११२१ से ११२३
वसणभूत [व्यसनभूत] जी० ३।६२८
वसणुप्पाडियग [उत्पाटितकवृषण] ओ० ९०
वसभ [वृषभ] ओ० २७. रा० ८१३. जी० ३।१०१५
वसमाण [वसत्] रा० ६८३,७०६
वसह [वृषभ] रा० २४
वसहि [वसति] ओ० ३७,११८,११९,१९५. जी० ३।६०३
वसु [वसु] जी० ३।११७
वसुंधरा [वसुन्धरा] ओ० २७. रा० ८१३. जी० ३।९२२
वसुगुत्ता [वसुगुप्ता] जी० ३।९२२
वसुमित्ता [वसुमित्रा] जी० ३।९२२
वसू [वसू] जी० ३।९२२
वह [वध] ओ० ४६,७३,१६१,१६३. रा० ६७१
वहक [वधक] जी० ३।६१२
वहमाणय [वहमानक] ओ ११९ से ११३,१३७, १३८
वा [वा] ओ० ५२. रा० ९. जी० ३।११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाइज्जंत [वाद्यमान] रा० ७७
वाइत्त [वादित्र] रा० ११४,२८१
वाइय [वाद्य] जी० ३।४४७
वाइय [वादित] ओ० ६८,१४६. रा० ७,७८, ८०६. जी० ३।३५०,५६३,१०२५
वाइय [वातिक] ओ० ११७. रा० ७९६
वाइय [वाचिक] ओ० ६६
वाउ [वायु] ओ० ४६. जी० १।१२८,१३३; २।१३०,१३६; ३।३०७,३६३; ५।१७,२०,२४, २५,२७
वाउकाइय [वायुकायिक] जी० २।१३८; ५।१,६, २६,३१,३३,३६; ८।५; ९।१८२,१८४,२५६, २५७,२६२,२६६
वाउकाय [वायुकाय] रा० ७७१. जी० ३।१३५, ७२५,७२८
वाउक्कलिया [वातोत्कलिका] जी० १।८१
वाउक्काइय [वायुकायिक] जी० १।७५,८०,८२; २।१०२,१४६,१४९; ३।१९५; ५।८,१४,२०, ८।१,३
वाउब्भाम [वातोद्भ्राम] जी० १।८१
वाउयाय [वायुकाय] रा० ७७१
वाउवेग [वायुवेग] जी० ३।५९८
वाएत्ता [वाचयित्वा] रा० २८८. जी० ३।४५४
वाकवासि [वल्कवासिन्] ओ० ९४
√वागर [वि+आ+कृ]—वागरेइ. ओ० ६९
वागरण [व्याकरण] ओ० २६,९७. रा० १६, ७१९,७६८
वागरमाण [व्याकुर्वाण] ओ० २६
वागरेयव्व [व्याकर्तव्य] जी० ३।७७
वाघाइम [व्याघातिन् व्याघातिम] ओ० ३२. जी० ३।१०२२
वाघातिम [व्याघातिन्, व्याघातिम] जी० ३।१०२२
वाघाय [व्याघात] जी० २।४९,८२
वाड [वाड, वाट] जी० ३।८७८
वाण [वाण] ओ० १३
वाणपत्थ [वानप्रस्थ] ओ० ९४
वाणमंतर [वानव्यन्तर] ओ० ४९,८९ से ९३. रा० ११,५९. जी० १।१०१,१३५; २।१५, १६,७१,७२,९५,९६,१४८,१४९; ३।२१७, २३०,२५१,२९७,२९८,३५८,४०२,४४६, ४४८,४५५,४५७,६३७,६५९,७६०,८५७,९१७
वाणमंतरी [वानव्यन्तरी] जी० २।३८,७१,७२, १४८,१४९
वाणिज्ज [वाणिज्य] जी० ३।६०७
वात [वात] रा० १७३
वातकरग [वातकरक] जी० ३।३५५,४१९,४४५
√वाद [वादय्]—वादेंति, जी० ३।४४७
वादित [वादित] जी० ३।८४२,८४५
वाबाहा [व्याबाधा] जी० ३।६२०,६२५
वाम [वाम] ओ० २१,४७,५४. रा० ८,७०, १३३,२९२,७६७,७६८,७७६,७७७. जी० ३।४५
वाम [वाम,व्याम[1]] ओ० ५,८ जी० ३।२७४
वामण [वामन] जी० १।११९
वामणिया [वामनिका] रा० ८०४
वामणी [वामनी] ओ० ७०
वामद्दण [व्यामर्दन] ओ० ६३
वामहत्थ [वामहस्त] जी० ३।३०३
वामुत्तग [दे० वामोत्तक,व्यामोत्तक] जी० ३।५९३
वाय [वात] ओ० ४६,६४. रा० ४०,५०,५२,५६, १३२,१३७,२३१,२४७,२८५,७७१. जी० ३।२६१,२८५,४५१,५८०,७२९
√वाय [वाचय्]—वाएति. रा० २८८. जी० ३।४५४. वायंति.—ओ० ४५
√वाय [वादय्]—वाइज्जइ रा० ७८३—वाएंति रा० ११४
वायंत [वादयत्] ओ० ६४
वायकरग [वातकरक] रा० १५३,२५८,२७९. जी० ३।३२६
वायणा [वाचना] ओ० ४२,४३

१. अनेकाभिर्नरव्यामाभिः सुप्रसारिताभिः (ओ०वृ० अनेकैर्नरव्यामैः पुरुषव्यामैः सुप्रसारितैः (जी०वृ०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायमंडलिया [वातमण्डलिका] जी० १।८१
वायाम [व्यायाम] ओ० ६३
वारण [वारण] ओ० १६
वारय [वारक] जी० ३।५९६
वारि [वारि] रा० १३१,१४७,१४८,१८०. जी० ३।३०१,४४६
वारिसेणा [वारिषेणा] रा० २२५. जी० ३।३८४, ८९६
वारुणि [वारुणी] जी० ३।८६०
वारुणिकंत [वारुणिकान्त] जी० ३।८६०
वारुणिवरोदय [वारुणीवरोदक] जी० ३।८५७
वारुणी [वारुणी] जी० ३।५८६
वारुणोद [वारुणोद] जी० ३।२८६
वारुणोदय [वारुणोदक] जी० १।६५
वारुणोयग [वारुणोदक] रा० १७४. जी० १।७४
वाल [व्याल] ओ० ११७. रा० ७९६. जी० ३।३००,६२५,८२२
वाल [बाल] रा० १६०,२५६. जी० ३।३२३, ४१७
वालग [व्यालक] ओ० १३. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१२९. जी० ३।२८८,३००,३११, ३७२
वालग्ग [बालाग्र] जी० ३।७८८,७८९
वालग्गपोतिया [दे० बालाग्रपोतिका] जी० ३।६०४
वालरूवग [व्यालरूपक] रा० १३०
वालरूवय [व्यालरूपक] रा० २९४,२९६ से २९९,३१२,४७३. जी० ३।४५९,४६१,४६२, ४७७,५३२
वालवीइय [वालवीजित] ओ० ६३
वालवीयणय [वालवीजनक] ओ० ६९
वालवीयणी [वालवीजनी] ओ० ६७
वाली [दे०] रा० ७७
वालुयप्पभा [बालुकाप्रभा] जी० ३।३५,४१,४३, ४४,९९,११२
वालुया [बालुका] रा० १३०,१३७,१७४,२४५. जी० ३।२८६,३००,३०७,४०७
वालुयापुढवी [बालुकापृथ्वी] जी० ३।१८५,१८८
वालुयासंथारय [बालुकासंस्तारक] ओ० ११७
वावण्ण [व्यापन्न] जी० ३।८४
वावत्तरि [द्विसप्तति] ओ० १४६
वावी [वापी] ओ० ६,९९. रा० १७४,१७५, १८०. जी० ३।२७५,२८६,२८७,२९२,५७९, ५९७,६६४,८७५,८८१,९४८
वास [वर्ष] ओ० ६८,८९ से ९५,११४,१४०, १४१,१४५,१५४,१५५,१५७ से १६०,१६५, १६६,१८८,१९२. रा० ८ से १०,१२,१३, १५,५६,२७९,२८१,६६८,७९९,८०५,८१६. जी० १।५१,५५,५९,६१,६५,७४,८२,८७,९६, १०१,१०३,१११,११२,११६,११९,१३३, १३६,१३७; २।३५ से ३९,४१,६६,७३,९२, ९३,९६,९७,१०८,११०,१११,११८,१२९, १३९; ३।१५५,१८६ से १९२,४४५,४४७, ७८५,७८६,७९५,८४१,१०२७ से १०३०, १०३८,११३१; ४।३,६,११,१२,१६; ५।५, ६,१०,१२,१४,१५,२८,२९; ६।२,६; ७।३, १३; ९।२,४,२१०,२१४,२२४,२२८,२३४, २४१,२६९,२७७
वास [वास] रा० ३०,६८३,७०६. जी० ३।२८३
√**वास** [वृष्]—वासंति. रा० १२. जी० ३।४४७—वासह. रा० ९
वासंति [वासन्ती] जी० ३।५९७
वासंतिकलया [वासन्तिकलता] जी० ३।५८४
वासंतिमंडवग [वासन्तीमण्डपक] रा० १८४
वासंतिमंडवय [वासन्तीमण्डपक] रा० १८५
वासंतिय [लया] [वासन्तिकलता] जी० ३।२९८
वासंतियलया [वासन्तिकलता] ओ० ११. रा० १४५
वासंतियलयापविभत्ति [वासन्तिकलताप्रविभक्ति] रा० १०१
वासंतियागुम्म [वासन्तिकागुल्म] जी० ३।५८०
वासंतिलया [वासन्तीलता] जी० ३।२७७

वासंतीमंडवग [वासन्तीमण्डपक] जी० ३।२९६
वासधर [वर्षधर] रा० २७९. जी० ३।२१७,२१९ से २२१,२२७,४४५,६३२,६६८,७९५,८४१, ९३७
वासपरियाय [वर्षपर्याय] ओ० २३
वासवद्दलय [वर्षबार्दलक] रा० १२३
वासहर [वर्षधर] रा० २७९. जी० ३।४४५, ७७५,७९५
वासा [वर्षा] रा० ६,१२
वासावास [वर्षावास] ओ० २९
वासिक्क [वार्षिक] रा० १९७. जी० ३।२६६
वासित्ता [वर्षित्वा] रा० २०
वासी [वासी] ओ० २९
वासुदेव [वासुदेव[ओ० ७१. जी० ३।७९५, ८४१
वासेत्ता [वर्षित्वा] रा० २०
वाहण [वाहन] ओ० १४,२३,५२,५९,६९,१४१. रा० ६७१,६७४,६७५,६८७,६९५,७८७,७८८ ७९०,७९१,७९९
वाहणसाला [वाहनशाला] ओ० ५९
वाहणा [उपानह्] ओ० ११७
वाहा [बाहु] जी० ३।५९७
वाहि [व्याधि] ओ० ७४।२. जी० ३।१२८, ५९७
वाहित [व्याहृत] जी० ३।२३९
वि [अपि] ओ० ९७. रा० २७६
विअट्टच्छउम [विवृत्तछद्मन्] जी० ३।४५७
विइय [द्वितीय] ओ० १८२
विउक्कम [वि+उत्+क्रम्]—विउक्कमंति. जी० ३।८७
विउल [विपुल] ओ० १,२,५,८,१४,१६,२३,४६, ५२,५५,६८,१४१,१४७,१४९,१५०. रा० ७, १५,३२,२२८,२७८,२७९,२८१,२९१,२९४, २९६,३००,३०५,३१२,३५५,६७१,६७५, ६८०,६८१,६८३,६८४,६८७,६९५.६९९, ७००,७०२,७०४,७०८,७०९,७१४,७१६, ७६५,७७४,७७६,७८७,७८८,७९९ ८०२, ८०८,८१०,८११. जी० ३।११०,११७,२७४, ३७२,४६१,४६२.४६५,४७०,४७७,५१६, ५२०,५९६
विउलकयवित्ति [विपुलकृतवृत्तिक] ओ० १६
विउलमइ [विपुलमति] ओ० २४. रा० ७४४
√विउव्व [वि+कृ]—विउव्वइ. रा० ३२. —विउव्वंति. रा० १०. जी० ३।११०. —विउव्वति. रा० १९.—विउव्वाहि. रा० १७. —विउव्विसु. जी० ३।१११६.—विउव्विस्संति. जी० ३।१११६
विउव्विणिड्ढिपत्त [विक्रियर्द्धिप्राप्त] ओ० २४
विउव्वणा [विकरण] जी० ३।१२७।४,१२९।२ से ४
विउव्वित्तए [विकर्तुम्] जी० ३।११०
विउव्वित्ता [विकृत्य] रा० १० जी० ३।११०
विउव्विय [विकृत] ओ० ४९
विउव्वेमाण [विकुर्वाण] जी० ३।११०,१११५
विउस्सग्ग [व्युत्सर्ग] ओ० ३८,४३,४४
विउस्सग्गारिह [व्युत्सर्गार्ह] ओ० ३९
विओग [वियोग] ओ० ४६
विओसरणया [व्युत्सर्जन] ओ० ६९,७०. रा० ७७८
विंद [वृन्द] रा० ६८३. जी० ३।५८९
विंहणिज्ज [बृंहणीय] ओ० ६३
विकच्छसुत्तग [वैकक्षसूत्रक] रा० २८५
विकप्प [विकल्प] ओ० ५७. जी० ३।५९४
विकिट्ठ [विकृष्ट] ओ० १. रा० ६८३
विकुस [विकुश] ओ० ८,१०. जी० ३.३८६,५८१ से ५८३, ५८६ से ५९५
विक्कम [विक्रम] ओ० १९,२३. जी० ३।१७६, १७८,१८०,१८२,५९६
विक्किरिज्जमाण [विकीर्यमाण] रा० ३०
विक्खंभ [विष्कम्भ] ओ० १३,१७०,१९२. रा० ३६,१२४,१२६ से १२९,१३७,१७०, १८६,१८८,१८९,२०१,२०४ से २१२,२१८,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२१,२२२,२२४,२२६,२२७,२३०,२३१,
२३३,२३८,२३९,२४२,२४४,२४६,२४७,
२५१ से २५३,२६१,२६२,२७२. जी० ३।५१
८१,८२,८६,१२७,२१७,२२२,२२६,२६० से
२६३,२७३,२९८,३००,३०७,३१०,३५१ से
३५५,३५८,३५९,३६१,३६२,३६४,३६५,
३६८ से ३७४,३७६,३७७,३८०,३८१,३८३,
३८५,३८६,३९२.३९३,३९५,४००,४०१,
४०४,४०६,४०८,४१२ से ४१४,४२२,४२५,
४२७,४३७,५७७,६३२,६३४,६३९,६४२,
६४४,६४६,६४७,६४९,६५३,६५५,६६१,
६६३,६६८,६७१ से ६७५, ६७९,६८३,६८५,
६८९,७०६,७२३,७२६,७३२,७३६,७३७,
७५४,७५६,७५८,७६२,७६५,७६८,७७०,
७९४,७९५,७९८,८१२,८२३,८३२,८३५,
८३९,८५०,८८२,८८४,८८५,८८७,८८८,
८९१,८९३ से ८९५,८९७,८९९ से ९०१,
९०६,९०७,९१०,९११,९१८,९५२,१०१० से
१०१४,१०७३,१०७४

विक्खरिज्जमाण [विकीर्यमाण] जी० ३।२८३

विक्खेवणी [विक्षेपणी] ओ० ४५

विग [वृक] जी० ३।८४,२७७,६२०

विगय [विगत] जी० ३।८४

विगसिय [विकसित] रा० ८,७१४

विगोवइत्ता [विगोप्य] ओ० २३. रा० ६९५

विग्गह [विग्रह] ओ० ५६

विग्गहिय [विगृहीत] जी० ३।५९८

विचरिय [विचरित] जी० ३।११८,११९

विचिक्की [दे०] रा० ७७

विचित्त [विचित्र] ओ० ६,४७,४८,६३,७२.
रा० १७३,२२८,६८१. जी० ३।२७५,२८५,
३८७,५८७,५८९,५९१,६७२

विच्छड्डइत्ता [विच्छर्द्य] ओ० २३

विच्छड्डित्ता [विच्छर्द्य] रा० ६९५

विच्छड्डिय [विच्छर्दित] ओ० १४,१४१. रा०६७१,
७९९

विच्छविय [विच्छिविक] जी० ३।९६

विच्छिण्ण [विस्तीर्ण] ओ० १४,१९. रा० ६७५,
७७४. जी० ३।२६१,३५२.५९६,५९७,६३२,
६३९,६८९,८०२

विच्छिन्न [विस्तीर्ण] रा० ६७१

विच्छिप्पमाण [विस्पृश्यमान] ओ० ९९

विच्छुय [वृश्चिक] जी० ३।८५

विजढ [वित्यक्त] जी० ३।५४,५६

विजढपुव्व [वित्यक्तपूर्व] जी० ३।५४,५६

विजय [विजय] ओ० २०,५३,६२,६४,६८,१९२.
रा० १२,४६,५०,५२,५६,७२,११८,१३७,
२३१,२४७,२७६,२७९,६६५,६८३,६८९,
७०७,७०८.७१३,७२३. जी० ३।१८१,२९९ से
३०७,३१५,३३५,३३६,३३९ से ३५१,३७२,
३९३,४०२,४१०,४२९,४३२,४३५,४३९ से
४५७,५५५ से ५६५,६०१,६३८,६६०,६६५,
७०१,७०७ से ७१०,७१३,७६२,७७५.७९९,
८००,८१३,८१४,८२४,८२५,८५१,८९८,
९१६,९३७,९३९,९४०,९४४

विजयदूस [विजयदूष्य] रा० ३८,३९.
जी० ३।३१२,३१३,३३८,६३४,८९२

विजया [विजया] जी० ३।३५०,३५१,३५४,३५५,
३५७,३५८,३६०,४३९,४४२,४४५ से ४४८,
५५४,५५५,५५७,७०४,७१०,७३९,७४४,९०२

विजाति [विजाति] जी० ३।७८१,७८२

विज्जा [विद्या] ओ० २५. रा० ६८६

विज्जाधर [विद्याधर] जी० ३।७९५

विज्जाहर [विद्याधर] ओ० २४. रा० १७,१८,
२०,३२,१२९. जी० ३।२८८,३००,३७२,७९५,
८४०,८४१

विज्जु [विद्युत्] ओ० ४८,५७. रा० १३३.
जी० १।७८; ३।३०३,५९०,११२२

विज्जुकार [विद्युत्कार] जी० ३।८४१

विज्जुत [विद्युत्] जी० ३।६२६

विज्जुदंत [विद्युद्दन्त] जी० ३।२१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विज्जुप्पभ [विद्युत्प्रभ] जी० ३।७४६
विज्जुप्पभा [विद्युत्प्रभा] जी० ३।७५१
विज्जुमुह [विद्युन्मुख] जी० ३।२१६
विज्जुयंतरिय [विद्युदन्तरिक] ओ० १५८
विज्जुयाइत्ता [विद्युतायित्वा] रा० १२
√**विज्जुयाय** [विद्युताय्]—विज्जुयायंति. रा० १२. जी० ३।४४७
विज्जुयार [विद्युत्कार] जी० ३।४४७
√**विज्झव** [वि+ध्यापय्]—विज्झवेज्जा. रा० ७६५
विज्झाय [विध्यात] रा० ७६५
विट्ठर [विष्टर] जी० ३।५८७
विडंग [विटङ्क] जी० ३।५९४
विडाल [बिडाल] जी० ३।६२०
विडिम [दे० विटप] ओ० ५,८,५१. रा० २२७, २२८. जी० ३।२७४,३८६,३८७,५९८,६७२, ६७४,६७९
विणइय [विनयित] रा० ७२३
विणट्ठ [विनष्ट] जी० ३।८४
विणमिय [विनत] ओ० ५,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४
विणय [विनय] ओ० २,२३,३८,४०,४७,५२,५६, ५७,५९,६१,६९,७०,८३,१३९. रा० १०,१४, १८,६०,७४,२७९,६५५,६७१,६८१,६८७,६९२, ७०७,७१६,७३७,७७७,७७८. जी० ३।४४५, ५५५
विणयओ [विनयतस्] रा० ६६४
विणयतो [विनयतस्] जी० ३।५६२
विणयपडिवत्ति [विनयप्रतिपत्ति] रा० ७७६
विणयसंपण्ण [विनयसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६
विणासण [विनाशन] रा० ९,१२,२८१. जी० ३।४४७
विणिच्छय [विनिश्चय] रा० ६८९
विणिच्छिय [विनिश्चित] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८,७५२,७८९
विणिम्मुयंत [विनिर्मुञ्चत्] रा० ३२,१६२. जी० ३।३७२,४५७
विणिम्मुयमाण [विनिर्मुञ्चत्] जी० ३।११८
विणिवाय [विनिपात] ओ० ४६
विणीत [विनीत] जी० ३।७९५,८४१
विणीय [विनीत] ओ० ९१. रा० ७६५,७६६, ७७०,८०४. जी० ३।५९८,७९५,८४१
विणीयया [विनीतता] ओ० ११९
विण्णय [विज्ञक] रा० ८०९,८१०
√**विण्णव** [वि+ज्ञपय्]—विण्णवेहि. रा० ६९९
विण्णाण [विज्ञान] ओ० २३. रा० ७५८,७५९, ७६५,७६६,७७०
वितण्ह [वितृष्ण] जी० ३।१०९
वितत [वितत] रा० २४,११४,२८१. जी० ३।२७७,४४७,५८८
विततपक्खि [विततपक्षिन्] जी० १।११३; २।१०
वितार [वितार] रा० ७६
वितिक्कंत [व्यतिक्रान्त] रा० ८०१
वितिमिर [वितिमिर] जी० ३।५८९
वित्त [वित्त] ओ० १४,१४१. रा० ६७१,६७५
वित्ति [वृत्ति] ओ० ९१ से ९३,१६१,१६३. रा० ७५२,७७६
वित्थड [विस्तृत] ओ० ७१. रा० ६१. जी० ३।८१,८२;८३८।१५,१०७३,१०७४
वित्थरतो [विस्तरतस्] जी० ३।२५९
वित्थार [विस्तार] जी० ३।७३
वित्थिण्ण [विस्तीर्ण] ओ० १४१. रा० १७,१८, १२४,१२७,७९९. जी० ३।५७७,६६१,७३६, १०३९
विदिण्णविचार [विदत्तविचार] रा० ६७५
विदित [विदित] ओ० २६
विदिसा [विदिशा] जी० ३।९१८
विदिसीवाय [विदिग्वात] जी० १।८१
विदुपरिसा [विद्वत्परिषद्] रा० ६१
विदेस [विदेश] ओ० ७०. रा० ८०४
विदेह [विदेह] ओ० ९६. जी० २।८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विदेहजंबू [विदेहजम्बू] जी० ३।६६६
विधाण [विधान] जी० ३।२५६
विधि [विधि] जी० ३।१६०,२५६,४४७,५८७ से ५८६,५६५,६३४
विपंची [विपञ्ची] रा० ७७. जी० ३।५८८
विपक्क [विपक्व] जी० ३।५६२
विपरिणामाणुप्पेहा [विपरिणामानुप्रेक्षा] ओ० ४३
विपुल [विपुल] रा० ६८६,७६५. जी० ३।४४४, ४४५,४४७,४५६,५६६
विप्पइट्ठ [विप्रकृष्ट] जी० ३।५६१
विप्पओग [विप्रयोग] ओ० ४३
विप्पजहणा [विप्रहाणि] ओ० १८२
विप्पजहित्ता [विप्रहाय] ओ० १८२
विप्पमुक्क [विप्रमुक्त] ओ० १४,२५,२७,३६, १७२,१६५।८. रा० १२,१७३,२६१,२६३ से २६६,३००,३०५,३१२,३५५,६७१,६८६, ८१३. जी० ३।२८५,४५७
विप्परिणामइत्ता [विपरिणमय्य] जी० १।५०
विप्पोसहिपत्त [विप्रुडौषधिप्राप्त] ओ० २४
विप्फालिय [विस्फारित] जी० ३।५६६
विफलीकरण [विफलीकरण] ओ० ३७
विब्भम [विभ्रम] जी० ३।५६४
विभंगणाणि [विभङ्गज्ञानिन्] जी० १।६६; ३।१०४,११०७; ६।१६७,२०३,२०७,२०८
विभत्त [विभक्त] जी० ३।५६७
विभयमाण [विभजमान] जी० ३।८३१
विभत्ति [विभक्ति] जी० ३।५६४
विभाग [विभाग] जी० ३।५६१
विभासा [विभाषा] जी० ३।२२७
विभूइ [विभूति] ओ० ६७. रा० १३,६५७
विभूति [विभूति] जी० ३।४४६
विभूसण [विभूषण] ओ० ४६
विभूसा [विभूषा] ओ० ३६,६७. रा० १३, ६५७. जी० ३।४४६,११२१ से ११२३
विभूसित [विभूषित] जी० ३।४५१
विभूसिय [विभूषित] ओ० ६३,७०. रा० २८५, २८६,८०५. जी० ३।४५२
विमउल [विमुकुल] ओ० १
विमउलिय [विमुकुलित] जी० ३।५६०
विमल [विमल] ओ० १५,१६,४६,४७,५१,६३, ६४,१६४. रा० १२,५१,६६,७०,१३०,१५६, १७४,२८८,२६२,६६४,६७२,६८३. जी० ३।११८,११६,२८६ ३००,३३२,३७२, ४५४,४५७,५६२,५८६,५६६,५६७ ८६६
विमलप्पभ [विमलप्रभ] जी० ३।८६६
विमाण [विमान] ओ० ५१. रा० ७,१२ से १४, १२४ से १२६,१२६,१६२,१६३,१६६,१७०, २७४,२७६,२७६,२८१,२८२,६५४,६५५, ७६६. जी० ३।१७५ से १८२,२५७,८४२, ८४५,१०२४ से १०२६,१०३८,१०३६, १०४३,१०४८,१०५६ से १०५६,१०६५, १०६७,१०७१,१०७३,१०७५ से १०८१, १०६७,११११
विमाणावास [विमानावास] रा० १२४. जी० ३।२५७,१०३८,१०३६,११२८
विमुक्क [विमुक्त] ओ० १६५।६,१८,२१. जी० ३।४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७, ५१६,५२०,५५४,५६७
विम्हावण [विस्मापन] ओ० ११६
वियट्टछउम [विवृत्तछद्मन्] ओ० १६,२१,५४. रा० ८
वियड [विकट] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७
वियडावति [विकटापातिन्] जी० ३।७६५
वियडावाति [विकटापातिन्] रा० २७६. जी० ३।४४५
वियसंत [विकसत्] ओ० ४६
वियसिय [विकसित] ओ० २१,४७,५४. रा० १३७. जी० ३।३०७
वियाणंत [विजानत्] ओ० १६५।१६
वियाणय [विज्ञायक] रा० ८०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वियाणित्ता [विज्ञाय] ओ० १४६. रा० ८१०
वियाणिय [विज्ञात] ओ० ७०
वियालचारि [विकालचारिन्] ओ० १४८,१४६. रा० ८०६,८१०
विरइय [विरचित] ओ० ६,६३. जी० ३।२७५
विरचिय [विरचित] रा० ६६,७०
विरत [विरत] ओ० ४६
विरय [विरत] ओ० १६८
विरल्लिय [विरल्लित] जी० ३।५६१
विरसाहार [विरसाहार] ओ० ३५
विरहित [विरहित] जी० ३।७६१,८४४
विरहिय [विरहित] ओ० ३७. जी० ३।८४७
विराइय [विराजित] ओ० १४,४७,५७,७२. रा० ७०,६७१. जी० ३।५६७,११२१
विरागया [विरागता] ओ० ४६
विरायंत [विराजत्] ओ० २१,५४,५७. रा० ८, ७१४
विरायमाण [विराजमान] ओ० १
विराहय [विराधक] रा० ६२
विरिय [वीर्य] जी० ३।५६२
विरुद्ध [विरुद्ध] ओ० ६३
विरूवरूव [विरूपरूप] रा० ८१६
विलंबिय [विलम्बित] रा० १०३,२८१. जी० ३।४४७
विलवणया [विलपनता] ओ० ४३
विलविय [विलपित] ओ० ४६
विलसिय [विलसित] ओ० १६
विलास [विलास] ओ० १५. रा० ७०,६७२, ८०६,८१०. जी० ३।५६७
विलासित [विलासित] जी० ३ ५६६
विलीण [विलीन] जी० ३।८४
विलेवण [विलेपन] ओ० ६३,१६१,१६३,१७०
विलेवणविहि [विलेपनविधि] ओ० १४६. रा० ८०६
विव [इव] ओ० १६. रा० १३३. जी० ३।१११
विवच्चास [विपर्यास] रा० ७६७,७६८,७७६, ७७७
विवणि [विपणि] ओ० १. जी० ३।६०७
विवर [विवर] रा० ७५४ से ७५७,७६३
विवागविजय [विपाकविचय] ओ० ४३
विवागसुयधर [विपाकश्रुतधर] ओ० ४५
विवाह [विवाह] जी० ३।६३१
विवाहपण्णत्तिधर [व्याख्याप्रज्ञप्तिधर] ओ० ४५
विवित्तसयणासणसेवणया [विविक्तशयनासन-सेवनता] ओ० ३७
विविध [विविध] जी० ३।३०२,३८७,५८८,५६४
विविह [विविध] ओ० १,४६,५१,११७. रा० २०, ४०,१३२,१३७,२२८,७६६. जी० ३।२६५, २८८,३०७,३११,५८६.५८७,५८६ से ५६३, ५६५,६७२
विवेग [विवेक] ओ० ४३,७६ से ८१
विवेगारिह [विवेकार्ह] ओ० ३६
विस [विष] रा० ७६१,७६४,७६५
विसज्जित [विसर्जित] रा० ६८५
विसज्जिय [विसर्जित] ओ० २१. रा० ६८० ६६६,७००,७०२,७१०
विसप्पमाण [विसर्पत्] ओ० २०,२१,५३,५४, ५६,६२,६३ ७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२, से १४.१६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४, २७७,२७६,२८१,२६०,६५५,६८१,६८३, ६६०,६६५,७००,७०७,७१०,७१३,७१४, ७१६,७१८,७२५,७२६,७७४,७७८. जी० ३।४४३,४४५,४४७,५५५,५६७
विसभक्खियग [विषभक्षितक] ओ० ६०
विसम [विषम] ओ० १७१. जी० ३।६२३,७०५, ७६७,८११,८२२,८४६
विसय [विशद] रा० १३३. जी० ३।३०३,५६२, ५६६
विसय [विषय] ओ० २३,३७. रा० १५. जी० ३।६७६,६७७

विसह [विषह] ओ० २७. रा० ८१३
विसाण [विषाण] ओ० २७. रा० ८१३
विसाय [विषाद] ओ० ४६
विसारय [विशारद] ओ० ६७,१४८,१४६. रा० ६७५,८०६,८१०
विसाल [विशाल] ओ० ६४. रा० २२८. जी० ३।३८७,५६७,६७२
विसाला [विशाला] जी० ३।६६६,६६५
विसिट्ठ [विशिष्ट] ओ० १६,६३. रा० ३२,५२ ५६,१८५,२३१,२४७. जी० ३।२६७,३७२, ३६३,५६२,५६६,५६७,६०४,८५७
विसुज्झमाण [विशुध्यमान] ओ० ११६,१५६
विसुद्ध [विशुद्ध] ओ० ८,१०,१४,४६,१८३,१८४. रा० २६२,६७१. जी० ३।३८६,४५७,५८१ से ५८३,५८६ से ५६५
विसुद्धलेस्स [विशुद्धलेश्य] जी० ३।१६६,२०१, २०३ से २०६
विसेस [विशेष] ओ० १६५।१७. रा० ५४,१८८. जी० ३।१२६।५,२१७,२२६।५,३५८,५७६, ८३८।१३
विसेसहीण [विशेषहीन] जी० ३।७३
विसेसाधिय [विशेषाधिक] जी० ३।८२
विसेसाहिय [विशेषाधिक] ओ० १७०,१६२. जी० १।१४३; २।६८ से ७२,६५,६६,१३४ से १३८, १४१ से १४६; ३।७३,७५,८६,१६७,२२२, २६०,३५१,३६१,६३२,६६१,६६८,७३६, ८१२,८३२,८३५,८३६,८८२,१०३७,११३८; ४।१६ से २२,२५; ५।१८ से २०,२५ से २७ ३१ से ३६,५२,५६,६०; ७।२०,२२,२३; ८।५; ६।५,७,१४,५५,१५५,१६६,१६६,१८४, १६६,२०८,२३१,२५० से २५३,२५५,२६६, २८६ से २६३
विस्संत [विश्रान्त] जी० ३।८७२
विस्सुयकित्तिय [विश्रुतकीर्तिक] ओ० २
विहंगिया [विहङ्गिका] रा० ७६१
विहग [विहग] ओ० १३,१६,२७. रा० १७,१८, २०,३२,३७,१२६,८१३. जी० ३।२८८,३००, ३११,३७२,५६६
विहत्थि [विहस्ति] जी० ३।७८८
√विहर [वि+हृ] -विहरइ. ओ० १४. रा० ६. जी० ३।२३६.—विहरंति ओ० २३. रा० १८५. जी० ३।१०६.—विहरति. रा० ७. जी० ३।२३४.—विहरामि. रा०७५२.— विहराहि. ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८ —विहरिस्सइ. रा० ८१५—विहरिस्संति. रा० ८०२.—विहरिस्सामि. रा० ७८७. —विहरेज्जा. ओ० २१
विहरंत [विहरत्] रा० ७७४
विहरमाण [विहरत्] ओ० १६,२०,७६,७७,६२, ६५,११४,१५३,१५८,१५६,१६५. रा० ६८६, ७११,७७४,८१६
विहरित्तए [विहर्तुम्] ओ० ११७. रा० ७६१. जी० ३।१०२४
विहरित्ता [विहृत्य] ओ० १५५
विहव [विभव] रा० ५४
विहस्सति [बृहस्पति] ओ० ५०
विहाड [वि+घटय्]—विहाडेइ. रा० २८८. जी० ३।५१६.—विहाडेंति. ओ० ७४।५. —विहाडेति. जी० ३।४५४
विहाडित्ता [विघट्य] रा० २८६
विहाडेत्ता [विघट्य] रा० ३५१. जी० ३।४५४
विहाण [विधान] रा० ७१,७५. जी० १।५८,७३, ७८,८१
विहाणमग्गण [विधानमार्गण] जी० १।३४,३६, ३६
विहार [विहार] ओ० ३०,६२,६५,११४,११५, १५३,१५८,१५६,१६५. रा० ८१४,८१६
विहि [विधि] ओ० ६३. रा० २८१. जी० ३।४७५. ४७६,५८६,५८८,५६० से ५६५,८३८।१३; ५।३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहिय [विहित] ओ० १५. रा० ६७२
विहुय [विधुत] जी० ३।५८०
विहूण [विहीन] जी० ३।२९८,३६०
वीइक्कंत [व्यतिक्रान्त] ओ० १४३,१४४. रा० ८०२
वीईवइत्ता [व्यतिव्रज्य] ओ० १९२. रा० १२६. जी० ३।६३८
वीईवयमाण [व्यतिव्रजत्] रा० १०,१२,२७६. जी० ३।४४५
वीचि [वीचि] ओ० ४६. जी० ३।२५६
वीचिपट्ट [वीचिपट्ट] जी० ३।५९७
वीजेमाण [वीजयत्] जी० ३।४१७
वीणग्गाह [वीणाग्राह] ओ० ६४
वीणा [वीणा] रा० ७७,१७३. जी० ३।२८५
वीतसोग [वीतशोक] जी० ३।६२७
वीतिवइत्ता [व्यतिव्रज्य] जी० ३।७३६
वीतिवतित्ता [व्यतिव्रज्य] जी० ३।३५१
√**वीतिवय** [वि+अति+व्रज्]—वीतिवइंसु. जी० ३।८४०—वीतिवइस्संति. जी० ३।८४० —वीतिवएज्जा. जी० ३।८६—वीतिवयंति. जी० ३।८४०
वीतिवयमाण [व्यतिव्रजत्] रा० ५६. जी० ३।८६, १७६,१७८,१८०,१८२
वीतीवइत्ता [व्यतिव्रज्य] रा० १२६
वीथि [वीथि] जी० ३।३५५
वीरवलय [वीरवलय] ओ० ६३
वीरासणिय [वीरासनिक] ओ० ३६
वीरिय [वीर्य] ओ० ७१,८९ से ९५,११४,११७, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० ६१. जी० ३।५८६
वीरियलद्धि [वीर्यलब्धि] ओ० ११६
वीवाह [विवाह] जी० ३।६१४
√**वीसंद** [वि+स्यन्द्]—वीसंदति. जी० ३।५८६
वीसंदित [विस्यन्दित] जी० ३।८७२
वीसत्थ [विश्वस्त] ओ० १
वीससा [विस्रसा] जी० ३।५८६ से ५९५
वीसाएमाण [विस्वादयत्] रा० ७६५,८०२
वीसादणिज्ज [विस्वादनीय] जी० ३।६०२,८६०, ८६६,८७२,८७८
वीहि [व्रीहि] जी० ३।६२१
वीहि [वीथि] जी० ३।२६८,३१८
वीहिया [वीथिका] ओ० ५५. रा० २८१. जी० ३।४४७
वीस [विंशति] जी० ३।१३९
वुग्गाहेमाण [व्युद्ग्राहयत्] ओ० १५५,१६०
√**वुच्च** [वच्]—वुच्चइ. ओ० ८९. रा० १२३. जी० ३।२३९—वुच्चंति. जी० ३।५८ —वुच्चति. रा० १२३. जी० ३।२३९
वुड्ढसावग [वृद्धश्रावक] ओ० ९३
वुड्ढि [वृद्धि] जी० ३।७८१,७८२,८४१
वुत्त [उक्त] ओ० ५६. रा० १०,१२,१४,१८, ६०,६३,६४,७४,२७६,६५५,६८१,७०१, ७०३,७०७,७२५,७९२. जी० ३।४४५,५५५
वूप्पाएमाण [व्युत्पादयत्] ओ० १५५,१६०
वूह [व्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६
वेइय [व्येजित] रा० १७३. जी० ३।२८५
वेइयपुडंतर [वेदिकापुटान्तर] रा० १६७
वेइयफलक [वेदिकाफलक] रा० १६७
वेइया [वेदिका] रा० १७,१८,२०,३२,१२६, १६७. जी० ३।३७२,६०४,७२३,७७६,७७७, ७७९,९१०
वेइयावाहा [वेदिकाबाहु] रा० १६७
वेउव्वि [विकारिन्] ओ० ५१
वेउव्विउं [विकर्तुम्] रा० १८
वेउव्विय [वैक्रिय] रा० २७६,२८०. जी० १।८२, ९३,११६,१३५; ३।१२९।४,४४५,८४२
वेउव्वियमीसासरीर [वैक्रियकमिश्रकशरीर] ओ० १७६
वेउव्वियलद्धि [वैक्रियलब्धि] ओ० ११६
वेउव्वियसमुग्घात [वैक्रियसमुद्घात] जी० ३।१११२,१११३

वेउव्वियसमुग्घाय [वैक्रियसमुद्घात] रा० १०,१२, १८,६५,२७९. जी० १।८२; ३।१०८,४४५

वेउव्वियसरीर [वैक्रियशरीर] ओ० १७६. जी० ९।१७०

वेउव्विअसरीरि [वैक्रियशरीरिन्] जी० ९।१७०, १७७,१८१

वेंट [वृन्त] जी० ३।२८७,६७२

वेग [वेग] ओ० ४६,५७

वेच्च [च्युत, व्यूत] रा० ३७,२४५. जी० ३।३११, ४०७

वेजयंत [वैजयन्त] ओ० १६२. जी० ३।१८१, २९९,५६६,५६७,७०७,७११,७९९,८१३, ८२४,९४१

वेजयंती [वैजयन्ती] ओ० ६४. रा० ५०,५२,५६, १३७,२३१,२४७. जी० ३।३०७,३९३,६१६, १०२६

वेडंतिय (पाय) [दे०] ओ० १०५,१२८

वेडंतिय (बंधण) [दे०] ओ० १०६,१२९

वेढ [वेष्ट] रा० ७६७

वेढणग [वेष्टनक] जी० ३।५९३

वेढित्ता [वेष्टित्वा] रा० ७६७

वेढिम [वेष्टिम] ओ० १०९,१३२. रा० २८५. जी० ३।४५१,५९१

वेणतिआ [वैनयिकी] रा० ६७५

वेणु [वेणु] जी० ३।५८८

वेणुदेव [वेणुदेव] जी० ३।२५०

वेणुसलाइआ [वेणुशलाकिकी] रा० १२

वेद [वेद] ओ० ९७. जी० २।१५१

√वेद [वेदय्]—वेदेति. जी० ३।११२

वेदणा [वेदना] जी० ३।१११ से ११५,११७, १२८

वेदणासमुग्घात [वेदनासमुद्घात] जी० ३।१११२. १११३

वेदणासमुग्घाय [वेदनासमुद्घात] जी० ३।१०८, १५७

वेदिया [वेदिका] जी० ३।२६९,२८८,३००,३७२, ७६५,७६९ से ७७५,७७८

वेदियापुडंतर [वेदिकापुटान्तर] जी० ३।२६९

वेदियाबाहा [वेदिकाबाहु] जी० ३।२६९

वेदेमाण [वेदयत्] ओ० ८६. रा० ७५१

वेमाणिणी [वैमानिकी] जी० २।७१,७२,१४८, १४९

वेमाणिय [वैमानिक] ओ० ५०. रा० ७,११,१५ से १७,५५,५६,५८,५९,१८५,१८७,२७६, २८९,२९१,६५७. जी० १।१३५; २।१५,१९, ४५,४६,७१,७२,९५,९६,१४८,१४९; ३।२३०, ९१७,१०३८

वेय [वेद] ओ० २५. रा० ६८६,७७१. जी० १।१४,११९; २।१५१; ९।६६

√वेय [वि+एज्]—वेयइ. रा० ७७१.—वेयंति. जी० ३।७२९

वेयंत [व्येजमान] रा० ७७१

वेयण [वेतन] रा० ७८७,७८८

वेयण [दे० विक्रय] रा० ७७४

वेयणा [वेदना] ओ० १७,४६,७१,७४,१९५. रा० ७५१,७९५. जी० १।८६; ३।७७,११०, १२७।४,५,१२८।१,१२९।७

वेयणासमुग्घाय [वेदनासमुद्घात] जी० १।२३,८२. १३३

वेयणिज्ज [वेदनीय] ओ० ८६,१७१

वेयणीय [वेदनीय] ओ० ४४

वेयड्डिय [वितर्दिक] ओ० २

वेयालिया [वैतालिकी] रा० १७३. जी० ३।२८५

वेयावच्च [वैयावृत्य] ओ० ३८,४१

वेर [वैर] जी० ३।६२७

वेरग्ग [वैराग्य] ओ० ४६,७४।५

वेरमण [विरमण] ओ० ७६,७७,७९ से ८१, १२०,१४०,१५७. रा० ६९३,६९८,७१७, ७५२,७८७,७८९

वेराणुबंध [वैराणुबन्ध] जी० ३।६१२

वेरि [वैरिन्] जी० ३।६१२
वेरिय [वैरिक] जी० ३।६३१
वेरुलिय [वैडूर्य] ओ० ६४. रा० १०,१२,१८, ३२,५१,६५,१५४,१५६,१६०,१६५,१७४, २२८,२५६.२७६,२६२. जी० ३।७,३३२, ३३३,३४६,३७२,३८७,४१७,४५७,६७२
वेरुलियमणि [वैडूर्यमणि] जी० ३।२८६,३२७
वेरुलियमय [वैडूर्यमय] रा० १३०,१५३,२७०. २६२. जी० ३।३२२,४३५
वेरुलियामय [वैडूर्यमय] रा० १६,१३२,१७५, १६०,२३६. जी० ३।२६४,२८७,३००,३०२, ३२६,३६८,४५७,६४३,८७५
वेलंधर [वेलन्धर] जी० ३।७३४ से ७३६,७४०, ७४२,७४५,७४७,७८१,७८२
वेलंब [वेलम्ब] जी० ३।७२४
वेलंबग [विडम्बक] ओ० १,२
वेलंबगपेच्छा [विडम्बकप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६
वेलवासि [वेलावासिन्] ओ० ६४
वेला [वेला] ओ० ४६. जी० ३।७३२
वेलु [वेणु] रा० ७७
वेस [वेष] ओ० १५,४६,५३,७०. रा० ७०, १३३,६७२,८०४. जी० ३।३०३,५६७, ११२२
वेसमण [वैश्रमण] ओ० ६५
वेसमणमह [वैश्रमणमह] रा० ६८८. जी० ३।६१५
वेसाणिय [वैषाणिक] जी० ३।२१६,२२१
वेसाणियदीव [वैषाणिकद्वीप] जी० ३।२२१, २२५
वेसासिय [वैश्वासिक] ओ० ११७. रा० ७५० से ७५३,७६६
वेहाणसिय [वैखानसिक] ओ० ६०
वोच्छिण्णय [व्यवच्छिन्नक] रा० ७५३
वोज्झ [उह्य] रा० २८५. जी० ३।४५१
वोलट्टमाण [व्यपलोटत्] जी० ३।७८४,७८७
वोसट्टमाण [विकसत्] जी० ३।७८४,७८७
\ **वोसिर** [वि + उत् + सृज्]—वोसिरामि. ओ० ११७. रा० ७६६
व्व [इव] ओ० १६. रा० १३७. जी० ३।३०७

स

स [स] ओ० २,१२,१५,१६,३०,५४,६० से ६५, ७०,६७,१७०,१६४. रा० ७,८,२१,२४,३२, ३४,३६,३७,४२,४७,५०,५१,५६,५८,६७, ६६,७६,१२४,१४५,१५७,१६३,१६४,१६६, १७३,१८६,२०४ से २०६,२१६,२४३,२४५, २५५,२५६,२८०,६७२,६८१ से ६८३,६६१, ६६२,७००,७०३,७१४ से ७१६,७७१,८१५. जी० ३।३५,३६,४०,४१,४३,४४,४६,१७४, २६१,२६६,२६६,२७७,२८५,२८८,३००, ३०६,३०७-३११,३३५,३४०,३५०,३५२, ३५५,३५६,३६६,३७२,३७४,३७८,३८७, ३६५,४०५,४०७,४१२,४१६,४२५,४४६ से ४४८,५५७,५६३,५६२,५६६,६५८,६६३, ६७२,६७३,६८५,७२८,७३३,७३७,७४०, ७४२,७४५,७५०,७६२,७६५,७६८,७७०, ८३८।१२,१००६,१०३३,१०५४
स [स्व] ओ० ६४,७१. रा० ६,११,१३,५६,१५४ २८१,६८३,७२३,७२६,७३२,७३७,७४७, ७७४. जी० ३।३२७,३५६
सइ [स्मृति] ओ० ४३
सइंदिय [सेन्द्रिय] जी० ६।१५ से १७,६६
सइय [शतिका] ओ० १८७. जी० ३।६८१
सउण [शकुन] ओ० ६. रा० १७४. जी० ३।११। ११६,२७५,२८६,६३६
सउणरुय [शकुनरुत] ओ० १४६. रा० ८०६,८०
सउणि [शकुनि] जी० ३।५६८
सउणिज्झय [शकुनिध्वज] रा० १६२. जी० ३।३३५

संकंत [सङ्क्रान्त] रा० ७५३
संकड [सङ्कट] ओ० ४६. रा० २८५. जी० ३।४५१
संकप्प [सङ्कल्प] रा० ६.२७५,२७६,६८८,७३२, ७३७,७३८,७४६,७४८ से ७५०,७६५,७६८, ७७३,७७७,७९१,७९३ जी० ३।४४१,४४२
संकम [सङ्क्रम] जी० ३।८३८।१२
संकमण [सङ्क्रमण] जी० ३।८३८।१२
संकला [शृङ्खला] रा० १३५,२७०. जी० ३।३०५,४३५
संकसमाण [सङ्कसत्] जी० ३।११८,११९
संकिट्ठ [सङ्कृष्ट] ओ० १
√संकिलिस्स [सं+क्लिश्]—संकिलिस्संति. ओ० ७४।४
संकु [शङ्कु] रा० २४. जी० ३।२७७
संकुइय [शङ्कुचित] ओ० ६९. जी० ३।८०
संकुचियपसारिय [सङ्कुचितप्रसारित] रा० १११, २८१. जी० ३।४४७
संकुय [सङ्कुच] जी० ३।८३८।१५
संकुल [सङ्कुल] ओ० ४६. रा० १४
संकुसुमिय [सङ्कुसुमित] रा० ४५
संख [शङ्ख] ओ० १९,२३,२७,४७,६७,१९४. रा० १३,२९,३८,७१,७७,१६०,२२२,२५६, ६५७,६९५,८१३. जी० ३।२८२,३१२,३३३, ३८१,४१७,४४६,५९६,५९७,६०८,७३४, ७३५,७४२ से ७४४,८९४
संख [साङ्ख्य] ओ० ९६
संख (पाय) [शङ्खपात्र] ओ० १०५,१२८
संख (बंधण) [शङ्खबन्धन] ओ० १०६,१२९
संखतल [शङ्खतल] रा० १३०. जी० ३।३००
संखधमग [शङ्खध्मायक] ओ० ९४
संखमाल [शङ्खमाल] जी० ३।५८२
संखवाणिय [शङ्खवणिज्] रा० ७३७
संखवाय [शङ्खवादक] रा० ७१
संखाण [सङ्ख्यान] ओ० ९७
संखादत्तिय [सङ्ख्यादत्तिक] ओ० ३४
संखिज्ज [सङ्ख्येय] जी० ४।११
संखित्त [सङ्क्षिप्त] रा० १२३. जी० ३।२६१, ३५२,६३२,६६१,६८९,७३६,८३९,८८२
संखित्तविउलतेयलेस्स [सङ्क्षिप्तविपुलतेजोलेश्य] ओ० ८२. रा० ६८६
संखिय [शाङ्खिक] ओ० ६८
संखियवाय [शङ्खिकावादक] रा० ७१
संखिया [शङ्खिका] रा० ७१,७७. जी० ३।५८८
संखेज्ज [सङ्ख्येय] रा० १०,१२,१८,६५,२७९. जी० १।५८,७३,७८,८१,१०१,१३४; २।९३, १२१,१२९; ३।८१,८२,८९,११०,४४५,८५०, ८५२,८५५,८५८,८६१,८६४,८६७,८७०, ८७६,९२४,९२६,१०७३,१०७४,१०८३, १०८४,१११५; ४।८,१२ से १४,१६; ५।१०, १२ से १५,२९,४१ से ५०,५६,५८; ८।३; ९।३,४,२२३,२२८,२५९
संखेज्जइभाग [सङ्ख्येयतमभाग] जी० १।९४, १२४,१३५
संखेज्जगुण [सङ्ख्येयगुण] जी० २।६९ से ७२, ९५,९६,१३६ से १३८,१४१ से १४९; ३।७३, ७५,१०३७; ४।२२,२५; ५।१९,२०,२६,२७, ३५,३६,५२,५८,६०; ६।१२,९।३७,९४,१३०, १९६,२२०
संखेज्जतिभाग [सङ्ख्येयतमभाग] जी० ३।९१, १०८७
संखेज्जभाग [संख्येयभाग] जी० ३।९१
संखेज्जहा [संख्येयधा] रा० ७६४,७६५
संग [सङ्ग] ओ० १६८
संगत [सङ्गत] जी० ३।५९६,५९७
संगतिय [साङ्गतिक] जी० ३।६१३
संगय [सङ्गत] ओ० १५,१९ रा० ६९,७०,७५. ६७२,८०९,८१० जी० ३।५९७
संगामिय [साङ्ग्रामिक] ओ० ५७
संगेल्लि [दे०] ओ० ६६

संगोवंग [साङ्गोपाङ्ग] ओ० ६७
संघ [सङ्घ] ओ० ४० रा० ३२,२०६,२११ जी० ३७२
संघयण [संहनन] ओ० ८२,१८५ जी० १।१४, १७,८६,९५,१२८,१३५; ३।९२,१२७।३, ५९८,१०९०
संघयणि [संहननिन्] जी० १।९५,१०१,११६, १३०; ३।९२,१०९०
संघरिससमुट्ठिय [संघर्षसमुत्थित] जी० ३।७८
संघवेयावच्च [सङ्घवैयावृत्य] ओ० ४१
संघाइम [सङ्घातिम] ओ० १०९,१३२, रा० २८५ जी० ३।४५१,५९१
संघाड [सङ्घाट] रा० १४१,१९२ जी० ३।२६४ २६६,३१८,३५५
संघाडग [सङ्घाटक] रा० १९०
संघातत्त [सङ्घातत्व] जी० ३।१०९०
संघाय [सङ्घात] ओ० ४७,७२, जी० १।७२।२,३
संघायत्त [सङ्घातत्व] जी० १।१३५; ३।९२
संचय [सञ्चय] ओ० ४६ जी० ३।५९८
√संचाय [सं+शक्]—संचाएइ. रा० ७५१ —संचाएंति. रा० ७७४ —संचाएज्जा. जी० ३।११९ —संचाएति. रा० ७५३ जी० ३।११८ —संचाएमि रा० ६९५
√संचिट्ठ [सं+ष्ठा]—संचिट्ठइ. रा० ७०१ —संचिट्ठति. रा० ६४ जी० ३।७२५
संचिट्ठणा [संस्थान] जी० १।१४१; २।६२,८३, ८५,१५०,१५१; ५।२६; ६।७; ७।८,८।३; ९।३,१९,३६,१५७,१६८,१८३,२६३
संछण्ण [सञ्छन्न] जी० ३।११८,११९,२८६
संछन्न [सञ्छन्न] रा० १७४
संजतासंजत [संयतासंयत] जी० ९।१४४
संजम [संयम] ओ० २१ से २६,४५,४६,५२,८२ रा० ८,९,६८६,६८७,६८९,७११,७१३,८१४, ८१७
संजमासंजम [संयमासंयम] ओ० ७३
संजय [संयत] ओ० ४६ जी० ९।१४१,१४२,१४६ १४७
संजयासंजय [संयतासंयत] जी० ९।१४१,१४६, १४७
संजायकोऊहल्ल [संजातकौतूहल] ओ० ८३
संजायसंसय [सञ्जातसंशय] ओ० ८३
संजायसड्ढ [सञ्जातश्रद्ध] ओ० ८३
संजुत्त [संयुक्त] रा० ७५३,७९५ जी० ३।५९२
संजोग [संयोग] ओ० २८,४६
संझब्भराग [सन्ध्याभ्रराग] रा० २७ जी० ३।२८०
संझा [सन्ध्या] जी० ३।६२६
संझाविराग [सन्ध्याविराग] जी० ३।५८९
संठाण [संस्थान] ओ० ४७,५०,७२,८२,१७०, १८६,१९४,१९५।३,४,८ रा० १२४,१२७, १३२,१८५ जी० १।५,१४,७२,१२८,१३६; ३।२२,४८ से ५०,७८,८६,१२७।१,३,१२९।३, ४,२५७,२६०,२६१,२९७,३०२,३५२,५७७, ५९८,६०४,६३२,६६१,६८९,७०४,७२३, ७२६,७३६,७९६,८१०,८२१,८३१,८३९, ८४१,८४२,८४५,८४८,८५७,८५९,८६२, ८६५,८६८,८७१,८७४,८७७,८८०,८८२, ९११,९१८,९२५,१००८,१०७१,१०९१, १०९२
संठाणओ [संस्थानतस्] जी० ३।२५९
संठाणतो [संस्थानतस्] जी० ३।२२
संठाणविजय [संस्थानविचय] ओ० ४३
संठित [संस्थित] रा० १२४ जी० ३।२८ से ३२, ४८ से ५०,७८ ७९,८६,९३,२६०,२६१, २९७,३०२,३५२,५७७,५९७,६३२,६६१, ७०४,७०५,७२३,७२६,७९७,८१०,८११, ८२१,८२२,८३१,८३९,८४२,८४५,८४८, ८४९,८५७,८५९,८६२,८६५,८६८,८७१, ८७४,८७७,८८०,८८२,९११,९२५,१००८, १०९१,१०९२
संठिति [संस्थिति] जी० ३।८११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठिय [संस्थित] ओ० १,१३,१६,५०,८२,१७०, १६४. रा० ३२,५२,५६,१२७,१३२,१३३, १८५,२३१,२४७. जी० ३।१८,६४,६५,६७, ७४,७७,७६,८६,६६,११०,११६,१३०,१३६; ३।३०,५०,७८,२५७,२५६,२६७,३०३,३०७, ३७२,३६३,४०१,५६४,५६६ से ५६८,६०४, ६८६,७२३,७२६,७३६,७६३,८३८।२,१५, ६१५,६१८,१०७१

संड [षण्ड] ओ० २२. रा० ७७७,७७८,७८८

संडासय [संदंशक] जी० ३।११८,११६

संडेय [षण्डय] ओ० १

संणिखित्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३।४१५

संत [सत्] ओ० २३. रा० ६६५. जी० ३।६०८

संत [श्रान्त] ओ० ६३. रा० ७६५

संताण [सन्तान] ओ० ४६

संति [सत्] जी० १।७२।३

√संथर [सं+स्तृ]—संथरइ. रा० ७६६. —संथरति. ओ० ११७

संथरित्ता [संस्तृत्य] ओ० ११७

संथार [संस्तार] रा० ६६८,७०४,७०६,७५२, ७८६

संथारग [संस्तारक] ओ० ३७,१२०. रा० ७११

संथारय [संस्तारक] ओ० १६२,१८०. रा० ७१३, ७७६

√संथुण [सं+स्तु]—संथुणइ. रा० २६२. जी० ३।४५७

संथुणित्ता [संस्तुत्य] रा० २६२. जी० ३।४५७

संदट्ठ [सन्दष्ट] जी० ३।३२३

संदमाणिया [स्यन्दमानिका] ओ० १,५२,१००, १२३. रा० ६८७ से ६८६. जी० ३।२७६, ५८१,५८५,६१७

संदमाणी [स्यन्दमानी] रा० १७३

संदमाणीया [स्यन्दमानिका] जी० ३।२८५

संदिट्ठ [सन्दिष्ट] रा० १५०

√संदिस [सं+दिश्]—संदिसंतु रा० ७२

संधि [सन्धि] ओ० १६. रा० १६,३७,१३०, १५६,१७५,१६०,२४५,६६४. जी० ३।२६४, २८७,३००,३११,३३२,४०७,५६२,५६६,५६७

संधिवाल [सन्धिपाल] ओ० १८,६३. रा० ७५४, ७५६,७६२,७६४

√संधुक्ख [सं+धुक्ष्]—संधुक्खेइ. रा० ७६५

संनिकास [सन्निकाश] जी० ३।३०३

संनिक्खित्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३।४०२,४१०, ४१८,४१६,४२६,४३२,४३५,४४२

संनिखित्त [सन्निक्षिप्त] रा० २४०,२४६,२५४, २५७,२५८,२६६,२६८,२७६

संनिविट्ठ [सन्निविष्ट] जी० ३।२८५,३७२,३७४, ६४६,६७३,६७४,८८४,८८७

संपउत्त [सम्प्रयुक्त] ओ० १४,२१,४३,६४,१४१. रा० ६७१,७१०,७७४,७६६

संपओग [सम्प्रयोग] ओ० ४३. रा० ६७१

संपक्खाल [सम्प्रक्षाल] ओ० ६४

संपगाढ [सम्प्रगाढ] जी० ३।१२६।७

संपट्ठिय [सम्प्रस्थित] ओ० ६४,११५

संपणाइय [सम्प्रनादित] रा० ३२,२०६,२११. जी० ३।३७२,६४६

संपण्ण [सम्पन्न] जी० ३।५६८

संपत्त [सम्प्राप्त] ओ० २१,५२,५४,११७,१४४. रा० ८,२६२,६८७,६८६,७१३,७१४,७६६, ८०२. जी० ३।४५७

संपत्ति [सम्पत्ति,संप्राप्ति] जी० ३।१११६

संपत्थिय [सम्प्रस्थित] रा० ४६ से ५४,७७४

संपन्न [सम्पन्न] जी० ३।७६५,८४१

√संपमज्ज [सं+प्र+मृज्]—संपमज्जइ. ओ० ५६. —संपमज्जेज्जा. रा० १२

संपमज्जेत्ता [सम्प्रमृज्य] ओ० ५६

संपरिक्खित्त [सम्परिक्षिप्त] ओ० ३,६,११. रा० १२७,२०१,२६३. जी० ३।२१७,२६०,२६२, २६५,३१३,३५२,३६२,३६८ से ३७१,३८८, ३६०,६३६,६५२,६५८,६६८,६७८,६७६, ६८१,६८६,७०४,७०६,७३६,७५४,७६६.

७६८,८१०,८१२,८२१,८२३,८३३,८३६,
८४८,८५०,८५६,८६२,८६५,८६८,८७१,
८७४,८७७,८८०,६२५
संपरिक्खित्ताणं [सम्परिक्षिप्य] जी० ३।४८
संपरिखित्त [सम्परिक्षिप्त] रा० ४०,१८६,१६१
२०५ से २०८
संपरिवुड [सम्परिवृत] ओ० १८,१६,६३,६८,
७०. रा० ७,१३,४७,५६,५८,१२०,२६१,
६५७,६८३,६८६,७११,७५४,७५६ ७६२,
७६४,७७७,७७८,८०४. जी० ३।४५७,५५७,
१०२५
संपललिय [सम्प्रललित] ओ० २३
संपलियंक [सम्पर्यङ्क] ओ० ११७. रा० ७६६.
जी० ३।८६६
संपविट्ठ [सम्प्रविष्ट] रा० ७६५
संपाविउकाम [सम्प्राप्तुकाम] ओ० १६,२१,५४,
११७. रा० ८
संपिंडिय [सम्पिण्डित] ओ० ६. जी० ३।२७५
संपुच्छण [सम्प्रश्न] जी० ३।२३६
संपुड [सम्पुट] जी० ३।७६३
√**संपेह** [सं+प्र+ईक्ष्]—संपेहेइ. रा० ६
संपेहित्ता [सम्प्रेक्ष्य] रा० ६
संपेहेत्ता [सम्प्रेक्ष्य] रा० ६८८
संबंधि [सम्बन्धिन्] जी० १५०. रा० ७५१,८०२
८११
संबद्ध [सम्बद्ध] जी० ३।१११०,१११५
संबाह [सम्बाध] ओ० ८६ से ६३,६५,६६,१५५,
१५८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७
संबाहणा [सम्बाधना] ओ० ६३
संबाहिय [सम्बाधित] ओ० ६३
संबुद्ध [सम्बुद्ध] रा० ७७५
संभम [सम्भ्रम] ओ० ६७. रा० ८,१३,६५७,
७१४. जी० ३।४४६
संभार [सम्भार] जी० ३।५८६
संभिण्ण [सम्भिन्न] जी० ३।१११११२
संभिण्णसोय [सम्भिन्नस्रोतस्] ओ० २४
संभोग [सम्भोग] ओ० ४०
संमज्जण [सम्मार्जन] रा० ७७६
संमज्जिय [सम्मार्जित] रा० २८१,८०२
संमट्ठ [सम्मृष्ट] रा० २०१
संमय [सम्मत] ओ० ११७. रा० ७६६
√**संमुच्छ** [सं+मूर्च्छ्]—संमुच्छंति.
जी० ३।१२७
संमुच्छिम [सम्मूर्च्छिम, सम्मूर्च्छनज] जी० १।६६
से ६८,१०१ से १०५,११२,११६,१२६ से
१२८; ३।१३८,१३६,१४२,१४५ से १४७,
१४६,१६१,१६३,१६४,२१२ से २१४
संमुहागय [सम्मुखागत] जी० ३।२८५
संलद्ध [संलब्ध] रा० ७६८
संलाव [संलाप] ओ० १५. रा० ७०,६७२.
जी० ३।५६७
संलेहणा [संलेखना] ओ० ७७,११७,१४०,१५४
संवच्छर [संवत्सर] जी० १।८७; २।६७;
३।८४१; ४।४
संवच्छरपडिलेहणग [संवत्सरप्रतिलेखनक]
रा० ८०३
संवट्ट [सं+वर्तय्]—संवट्टेइ. ओ० ५६
संवट्टगवाय [संवर्त्तकवात] जी० १।८१
संवट्टयवाय [संवर्त्तकवात] रा० १२
संवट्टेत्ता [संवर्त्य] ओ० ५६
संवड्डिय [संवर्धित] रा० ८११
संवर [संवर] ओ० ४६,७१,१२०,१६२.
रा० ६६८,७५२,७८६
संवाह [संवाह] ओ० ६८
संविक्किण्ण [संविकीर्ण] रा० ३२,२०६,२११.
जी० ३।३७२
संविद्धुणित्ता [संविधूय] ओ० २३
संवुड्ढ [संवृद्ध] ओ० १५०. रा० ८११
संवुत [संवृत] जी० ३।४०७
संवुत्त [संवृत्त] रा० ७७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवुय [संवृत] रा० ३७,२४५. जी० ३।३११
संवेग [संवेग] ओ० ६६
संवेयणी [संवेदनी] ओ० ४५
संवेल्लित [दे०] जी० ३।३०३
संवेल्लिय [दे०] रा० ६६,७०,१७३
संसट्ठचरय [संसृष्टचरक] ओ० ३४
संसत्त [संसक्त] ओ० ३७. जी० ३।८४
संसार [संसार] ओ० २६,४६,१६५
संसारअपरित्त [संसारापरीत] जी० ६।७६
संसारपरित्त [संसारपरीत] जी० ६।७६,७८,८४
संसारविउस्सग्ग [संसारव्युत्सर्ग] ओ० ४४
संसारसमावण्ण [संसारसमापन्न] जी० १।६,१०
संसारसमावण्णग [संसारसमापन्नक] जी० १।१०, ११,१४३; २।१,१५१; ३।१,१८३,११३८; ४।१,२५; ५।१,६०; ६।१,१२; ७।१,२३; ८।१,५; ६।१,७
संसारसमावण्णय [संसारसमापन्नक] जी० १।१०
संसाराणुपेहा [संसारानुप्रेक्षा] ओ० ४३
संसारापरित्त [संसारापरीत] जी० ६।८१,८६
संसुद्ध [संशुद्ध] ओ० ७२
√संसेय [सं+स्विद्]—संसेयंति. जी० ३।७२६
संहत [संहत] जी० ३।५६७
संहरण [संहरण] जी० २।३० से ३४,५७ से ६१, ६६,१३३
संहित[1] [संहित] जी० १।७२।३; ३।५६६,५६७
संहिय [संहित] रा० १७३. जी० ३।५६७
सक [स्वक] ३।७६५,७७०
सकक्कस [सकर्कश] ओ० ४०
सकसाइ [सकषायिन्] जी० ६।२८
सकाइय [सकायिक] जी० ६।१८ से २०
सकिरिय [सक्रिय] ओ० ४०,८४,८५,८७
सक्क [शक्र] जी० ३।६२०,६२१,६३७,१०३६ से १०४२,११११

1. संहितौ– मध्यकायापेक्षया विरलौ

सक्कय [संस्कृत] जी० ३ ५६५
सक्करप्पभा [शर्कराप्रभा] जी० २।१००; ३।४, ११,२०,२१,२७,३१,३२,३४,४०,४३,४४,४६, ६८,१०७
सक्करा [शर्करा] रा० ६,१२. जी० ३।६०१, ६२२
सक्करापुढवी [शर्करापृथ्वी] जी० ३।१८५,१६०
√सक्कार [सत्+कृ]—सक्कारिस्संति रा० ७०४ — सक्कारेइ. ओ० २१. रा० ६८४ —सक्कारेज्जा. रा० ७७६ —सक्कारेमि. रा० ५८ —सक्कारेमो. ओ० ५२. रा० १० —सक्कारेस्संति. रा० ८०२. —सक्कारेहिंति. ओ० १४७
सक्कार [सत्कार] ओ० ४०,५२. रा० १६,६८७, ६८६,८०३,८०५. जी० ३।६०६
सक्कारणिज्ज [सत्कारणीय] ओ० २. रा० २४० २७६. जी० ३।४०२,४४२
सक्कारित्तए [सत्कर्तुम्] ओ० १३६. रा० ६
सक्कारेत्ता [सत्कृत्य] ओ० २१
सक्कुलिकण्ण [शष्कुलिकर्ण] जी० ३।२१६,२२५
सक्कुलिकण्णदीव [शष्कुलिकर्णद्वीप] जी० ३।२२५
सग [स्वक] जी० ३।७६८,७६६,७७२,७७३,७७६ से ६७६,१११
सगड [शकट] ओ० १००,१२३. जी० ३।२७६, ५८१,५८५,६१७,६३१
सगडवूह [शकटव्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६
सगल [सकल] जी० १।७२; ३।५६२
सगल [शकल] जी० ३।५६६
सगेवेज्ज [सग्रैवेय] रा० ७५४,७५६,७६४
सग्ग [स्वर्ग] ओ० ६८
सचित्त [सचित्त] ओ० २८,४६,६६,७०. रा० ७७८
√सचित्तीकर [सचित्तीकृ]—सचित्तीकरेइ. रा० ७७२
सची [शची] जी० ३।६२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सच्च [सत्य] ओ० २,२५,७२,११८. रा० ६८६
सच्चमणजोग [सत्यमनोयोग] ओ० १७८
सच्चवइजोग [सत्यवाग्योग] ओ० १७९
सच्चामोसमणजोग [सत्यमृषामनोयोग] ओ० १७८
सच्चामोसवइजोग [सत्यमृषावाग्योग] ओ० १७९
सच्चोवात [सत्यावपात] ओ० २
सच्छंद [स्वच्छन्द] ओ० ४९
सच्छड [संस्तृत] रा० ७७४
सजोगि [सयोगिन्] ओ० १८१. जी० ९।२१,४६, ४८,५२
सज्ज [सज्ज] ओ० ६४. रा० १७,१८,१७३, ६८१,६८२,६९१. जी० ३।२८५
सज्ज [सद्यस्] जी० ३।८७२
√सज्ज [सस्ज्]—सज्जावेइ रा० ६८०. —सज्जिहिति. ओ० १५०. रा० ८११. —सज्जेइ. रा० ६९९
सज्जावेत्ता [सज्जयित्वा] रा० ६८०
सज्जिय [सज्जित] जी० ३।५९२
सज्जीव [सजीव] ओ० १४६. रा० ८०६
सज्जेत्ता [सज्जित्वा] रा० ६९९
सज्झाय [स्वाध्याय] ओ० ३८,४२
सट्ठाण [स्वस्थान] जी० ६।१६६,२०८
सट्ठि [षष्टि] ओ० १४०. रा० २३१. जी० ३।११८
सट्ठितंत [षष्ठितन्त्र] ओ० ९७
सडंगवि [षडङ्गविद्] ओ० ९७
सड्ढइ [श्राद्धकिन्] ओ० ९४
सण [सन] ओ० १३
सणंकुमार [सनत्कुमार] ओ० ५१,१९०,१९२. जी० २।९६,१४८,१४९; ३।१०३८,१०४५, १०४६,१०५८,१०६६,१०६८,१०८८,१०९४, ११०२,११११,११२९
सणप्फई [सनखपदी] जी० २।६
सणप्फय [सनखपद] जी० १।१०३
सणिचर [शनैश्चर] जी० ३।६३१
सणिच्छर [शनैश्चर] ओ० ५०
सण्णद्ध [सन्नद्ध] ओ० ५७. रा० ६६४,६८३
सण्णय [सन्नत] ओ० १९. जी० ३।५९६,५९७
√सण्णव [संज्ञापय्]—सण्णवेइ. रा० ७६९
सण्णा [संज्ञा] रा० ७४८ से ७५०,७७३. ओ० १।१४,२०,८६,९६,१०१,११९,१२८, १३६; ३।१२८।२
√सण्णाह [सं+नह्]—सण्णाहेहि. ओ० ५५
सण्णाहिय [सन्नद्ध] ओ० ६२
सण्णाहेत्ता [संनह्य] ओ० ५६
सण्णि [संज्ञिन्] ओ० १५६,१८२. रा० १।१४, २४,८६,९६,१०१,११९,१३३,१३६; ९।१०१, १०२,१०५,१०८
सण्णिकास [सन्निकाश] जी० ३।३३३,३८१,४१७, ८९४,११२२
सण्णिखित्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३।१०२५
सण्णिणाय [सन्निनाद] ओ० ६७. रा० १३, ६५७. रा० ३।४४६
सण्णिपंचिंदिय [संज्ञिपञ्चेन्द्रिय] ओ० १५६
सण्णिभ [सन्निभ] रा० १९,४७,६३,६५. जी० ३।५९६
सण्णिमहिय [सन्निमहित] ओ० १
सण्णिवाइय [सन्निपातिक] ओ० ७१,११७. रा० ६१,७९६
सण्णिविट्ठ [सन्निविष्ट] ओ० १. रा० १७,१८, २०. जी० ३।२८८
सण्णिवेस [सन्निवेश] ओ० ६८,८९ से ९३,९५, ९६,१५५,१५८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७
सण्णिवेसदाह [सन्निवेशदाह] जी० ३।६२६
सण्णिसण्ण [सन्निषण्ण] रा० ८,४७,६८,२७७, २८३. जी० ३।४४३,४४९,४५२,५५७,८३९
सण्णिहिय [सन्निहित] ओ० २
सण्ह [श्लक्ष्ण] ओ० १२,१९४. रा० २१ से २३, ३२,३४,३६,३८,१२४,१३०,१३७,१४५,१५७,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७४,२६१. जी० १।५७,५८; ३।२६१,२६२, २६६,२६६,२८६,२६०,३००,३०७,३६५, ४२५,४५७,५६२,६३६,८३६

सण्हपुढवी [श्लक्ष्णपृथ्वी] जी० ३।१८५,१८६

सत [शत] रा० १२६. जी० ३।८२,१७२,१७३, १६७,२२६,२४६,२५५,२५७,२६०,२८५, ३३५,३५३,३५४,३५७,३५८,३६१ ३७२, ४१५,४१६,४४२,५७७,५६८,६३२,६३६, ६४६,६४७,६४६,६५२,६६१,६६६,६६८, ६७३,६७४ ६७६,७०३,७१४,७२४ से ७२६,७२८,७३३,७३६,७५०,७५६,७८८, ७६४,७६५,७६८,८०६,८१२,८१५,८२०, ८२७,८३०,८३२,८३५,८३७,८३६,८४१, ८४५,८८२,८८४,८८७,६०१,६०८,६११, ६१८,६७०,१००० से १००४,१००६,१०१६, १०३०,१०३८,१०४४,११३७; ५।२६; ६।११; ७।१६; ६।८६,१०२,२१७

सतपत्त [शतपत्र] रा० २३. जी० ३।२५६,२६१

सतसहस्स [शतसहस्र] जी० १।५८; ३।२२,२७, ६७ से ७२,८६,१६१,१६७,१६६,१७४,२५७, २६६,६०२,६५८,७०३,७०६,७१४,७२३, ७६४,७६५,७६८,८२३,८३६,६१०,६६६, ६६८,१०३८,१०८७,१०८८,११२८

सताउ [शतायुष्] जी० ३।५८६

सति [स्मृति] जी० ३।११८,११६

सतिय [शतिक] जी० ३।६७३,६७४

सत्त [सप्तन्] ओ० २१. रा० ७. जी० १।६५

सत्त [सत्व] जी० ३।१२७,७२१,६५५,११२८, ११३०

सत्तग्ग [शत्रुग्र] जी० ३।८५

सत्तघरंतरिय [सप्तगृहान्तरिक] ओ० १५८

सत्तट्ठि [सप्तषष्टि] जी० ३।७२२

सत्तणउय [सप्तनवति] जी० ३।२२६

सत्ततीस [सप्तत्रिंशत्] जी० ३।३५१

सत्तपण्ण [सप्तपर्ण] रा० १८६

सत्तम [सप्तम] ओ० १७४,१७६,१८६

सत्तमा [सप्तमी] जी० ३।२,४,७२,७५,७७,६१, १११

सत्तमासिया [सप्तमासिकी] ओ० २४

सत्तमी [सप्तमी] जी० ३।३६,८८,११११।३

सत्तरस [सप्तदशन्] जी० ३।३५६

सत्तरि [सप्तति] जी० ३।२४६

सत्तवण्णवडेंसय [सप्तपर्णावतंसक] रा० १२५

सत्तवण्णवण [सप्तपर्णवन] रा० १७०. जी० ३।५८१

सत्तविध [सप्तविध] जी० २।१००; ३।२; ६।१८२

सत्तविह [सप्तविध] ओ० ४०. जी० १।१०,५८, ६२; ६।१,१२; ६।१८५,१६६

सत्तसत्तमिया [सप्तसप्तकिका] ओ० २४

सत्तसिक्खावइय [सप्तशिक्षाव्रतिक] ओ० ५२,७८

सत्ताणउति [सप्तनवति] जी० ३।१०३८

सत्तावीस [सप्तविंशति] ओ० १७०. रा० १८८. जी० ३।८२

सत्तावीसतिगुण [सप्तविंशतिगुण] जी० २।१५१

सत्तावीसय [सप्तविंशति] जी० २।१५१

सत्ति [शक्ति] ओ० ६४

सत्तिवण्ण [सप्तपर्ण] ओ० ६,१०. जी० ३।३५६, ३८८,५८३

सत्तिवण्णवण [सप्तपर्णवन] जी० ३।३५८

सत्तु [शत्रु] ओ० १४. रा० ६७१

सत्तुपक्ख [शत्रुपक्ष] जी० ३।४४८

सत्थ [शास्त्र] ओ० ६७

सत्थ [शस्त्र] रा० ७६१

सत्थवाह [सार्थवाह] ओ० १८,४६,५२. रा० ६८७,६८८,७०४,७५४,७५६,७६२,७६४. जी० ३।६०६

सत्थोवाडियग [शस्त्रावपाटितक] ओ० ६०

सदारसंतोस [स्वदारसन्तोष] ओ० ७७

सदेस [स्वदेश] ओ० ७०. रा० ८०४

सद्द [शब्द] ओ० ६,१५,६३,६४,६७,६८,१६१,

१६३. रा० १३ से १५,३२,४०,१३२,१३५, १७३,२०६,२११,२८२,६५७,६७२,६८५, ७१०,७३२,७३७,७५१,७५५,७७१,७७४. जी० ३।११८,११६,२६५,२७५,२८५,२८६, २६८,३०५,३६०,३७२,४४६,४४८,५७८, ६३६,६४६,६६०,८५७,८६३,६०५,६७७, ६८२,१११७,१११८,११२४,११२५

√सद्दह [श्रत्+धा]—सद्दहामि. रा० ६६५. —सद्दहाहि. रा० ७५१.—सद्दहेज्जा. रा० ७५०

सद्दहमाण [श्रद्धान] जी० १।१

सद्दाल[1] [दे०] जी० ३।११२२

√सद्दाव [शब्दय्]—सद्दावेइ. ओ० ५८. रा० ६. —सद्दावेंति. ओ० ११७. रा० २७८. जी० ३।४४४. - सद्दावेति. रा० १३. जी० ३।५५४

सद्दावति [शब्दापातिन्] जी० ३।७६५

सद्दावाति [शब्दापातिन्] रा० २७६. जी० ३।४४५

सद्दाविय [शब्दायित, शब्दित] रा० ७२

सद्दावेत्ता [शब्दयित्वा] ओ० ५८. रा० ६. जी० ३।४४४

सद्दिय [शब्दित] ओ० २

सद्दूल [शार्दूल] ओ० १६. जी० ३।५६६

सद्ध [श्राद्ध] जी० ३।६१४

सद्धि [सार्द्धम्] ओ० १५. रा० ७. जी० ३।२३६

सन्नद्ध [सन्नद्ध] जी० ३।५६२

सन्निकास [सन्निकाश] रा० १३३. जी० ३।३१२

सन्निक्खित्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३।४४२

सन्निखित्त [सन्निक्षिप्त] रा० २२५,२७०

सन्निगास [सन्निकाश] रा० ३८,१६० २२२,२५६

सन्निभ [सन्निभ] ओ० १६. जी० ३।५६६

सन्निविट्ठ [सन्निविष्ट] रा० ३२,६६,१३८,२०६, २११. जी० ३.७५६

सन्निवेस [सन्निवेश] जी० ३।६०६,८४१

सन्निवेसमारी [सन्निवेशमारी] जी० ३।६२८

सन्निसन्न [सन्निषण्ण] रा० १७३

१. नूपुर, किंकिणी ।

सपज्जवसित [सपर्यवसित] जी० ६।२४,३१,६८, ६६,८१,१२५,१७४,२०२

सपज्जवसिय [सपर्यवसित] जी० ६।११,१३,१६, २३,२५,२६,३१,३३,३४,५८,६०,६४,६८,६६, ७१,७२,८६,११०,१२५,१३३,१४६,१६४, १६५,१७६,२०२,२०६

सपडिकम्म [सप्रतिकर्मन्] ओ० ३२

सप्पि [सर्पिस्] ओ० ६२,६३

सप्पियासव [सर्पिराश्रव] ओ० २४

सफल [सफल] ओ० ७१

सबरी [शबरी] ओ० ७०. रा० ८०४

सभा [सभा] रा० ७,१२ से १४,२०६,२१०,२३५ से २३७,२५०,२५१,२७६,३५१,३५६,३५७, ३७६,३६४,३६५,६५६,६५७. जी० ३।३७२, ३७३,३६७ से ३६६,४११,४१२,४२६,४४२, ५१६,५२१,५२२,५२४,५२५,५५६,५५७, १०२४,१०२५

सभाव [स्वभाव] जी० ३।५६७

सम [सम] ओ० १६,२६,५६,१७१,१६२. रा० ७०,७५,७६,८०,११२,१३३,१७३ १७४,७७२. जी० ३।५२,११८,११६,२८५,२८६,३०३, ३६२,३८७,५८६, ५६६,५६७,७०५,७२४, ७२७,७३२,७८४,७८७,७६७,८११,८२२, ८४६,६१०,६११,६१८,६६८,११२२

सम [श्रम] रा० ७२६,७३१,७३२

समइक्कंत [समतिक्रान्त] ओ० ४७

समइच्छमाण[1] [समतिक्रामत्] ओ० ६६

समइय [सामयिक] ओ० १७३,१७४,१८२. जी० ६।३,५

समंता [समन्तात्] ओ० ३. रा० ६. जी० ३।४६

समक्खाय [समाख्यात] जी० ३।१६७ से १६६

समग्ग [समग्र] ओ० ६८

समचउरंस [समचतुरस्र] ओ० ८२. जी० २।११६, १३६; ३।५६८,१०६१,१०६२

१. हे० ४।१६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समजोतिभूत [समज्योतिभूत] जी० ३।११८

समज्जिणित्ता [समर्ज्य] रा० ७५०

समज्जुइय [समद्युतिक] जी० ३।१२०

समट्ठ [समर्थ] ओ० ८६ से ९५,११४,११७,१२०, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७,१६६,१७०, १७२,१७७,१८१,१८६ से १९१. रा० २५ से ३१,४५,१७३,७५१,७५३,७५५,७५७,७५६, ७६१,७६३,७७१. जी० ३।८४,८५,११८, १६८ से २०३,२७८ से २८५,६०१,६०२, ६०५ से ६०७,६०६,६१०,६१२ से ६१७, ६२२ से ६२४,६२६,६२८,७८२,७८६,८६०, ८६६,८७२,८७८,६६० से ६६२, ६६४ से ६६६,१०२४

समण [श्रमण] ओ० १९ से २५,२७,३३,४६ से ५३,५५,६२,६६ से ७१,७८ से ८३,६५,११७, १२०,१५५,१५६,१६२,१७०. रा० ८ से १३, १५,५६,५८ से ६५,६८,७३,७४,७६,८१,८३, ११३,११८,१२०,१२१,१३१,१३२, १४७ से १५१, १८५,१८७,६६७,६६८,६७१,६८८, ७१८,७१६,७३६,७४८ से ७५०,७५२,७८७ से ७८६,८१७. जी० १।५६,६२,६५,८२,६६, १२८; २।१४०; ३।१७६,१७८,१८०,१८२, २५६,२६६,२६७,३०१,३०२,३२१ से ३२४, ५८२,५८६ से ५९५,५६८,६००,६०३ से ६०७,६०६ से ६१७,६२०,६२२ से ६२५, ६२७,६२८,६३०,७६५,८४१,६६५,१०५६, ११२०

समणी [श्रमणी] जी० ३।७६५,८४१

√**समणुगच्छ** [सम्+अनु+गम्]—समणुगच्छंति रा० ५५

समणुगम्ममाण [समनुगम्यमान] ओ० ६५. जी० ३।१७४

समणुगाहिज्जमाण [समनुग्राह्यमान] जी० ३।१७४

समणुचिंतिज्जमाण [समनुचिन्त्यमान] जी० ३।१७४

समणुपेहिज्जमाण [समनुप्रेक्ष्यमान] जी० ३।१७४

समणुबद्ध [समनुबद्ध] रा० १४६,६७०. जी० ३।३२२,५६१

समणोवासग [श्रमणोपासक] ओ० १६२

समणोवासय [श्रमणोपासक] ओ० ७७,१२०,१४०, १६२. रा० ६६८,७५२,७८६ से ७६१

समणोवासिया [श्रमणोपासिका] ओ० ७७. रा० ७५२

समण्णागय [समन्वागत] ओ० ४३. रा० १२, ७५८,७५६. जी० ३।११८,२८५

समतल [समतल] ओ० १६. जी० ३।५६६

समताल [समताल] ओ० १४६. रा० ८०६

समतुरंगेमाण [समतुरङ्गायत्] जी० ३।१११

समत्त [समस्त] ओ० ६३. जी० ३।७०१

समत्तगणिपिडग [समस्तगणिपिटक] ओ० २६

समत्थ [समर्थ] ओ० १४८,१४६. रा० १२,७३७, ७५८,७५६,७७०,८०६. जी० ३।११८

समन्नागय [समन्वागत] रा० १७३

समप्पभ [समप्रभ] रा० २८५. जी० ३।४५१

समबल [समबल] जी० ३।११२०

समभिजाणित्ता [समभिज्ञाय] रा० २७६. जी० ३।४४२

√**समभिलोय** [सं+अभि+लोक्]—समभिलोएइ. रा० ७६५—समभिलोएति. रा० ७६५. —समभिलोएमि रा० ७६४

समय [समय] ओ० १,१८,१६,२३ से २५,२७, २८,४५,४७ से ५१,८२,११५,१७३,१७४, १८२,१६५।३. रा० १,७,७६,१७३,२७४, ६६८,६७६,६८५,६८६,७७१. जी० १।६,३३; २।४८,५४ से ५६,६५,८६,८८,८६,११७, १२३,१३२; ३।८६,६०,११८,११६,२१०, २११,२८५,४३६,५८८,५८६,८४१,८४४, ८४७,६७३,१०८३,१०८५,१०८६; ७।१ से ६, ६ से १८, २० से २३; ६।१ से ७, २४, २५,४०,४३,४८ से ५१,५७,६०,११४,११८, १२४,१२५,१२७,१३४,१३८,१४२,१४६, १५०,१५२,१६१,१६२,१७१,१७२,१७६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९९,२००,२०३,२३२ से २३८, २४१ से २४८, २५० से २५३,२५५, २६७ से २७३, २७५ से २८२,२८४ से २९३

समग [समक] जी० ३।२७३,२९८

समयओ [समयतस्] रा० ६६४

समयखेत्त [समयक्षेत्र[रा० २७६. जी० ३।४४५

समयग [समयक] जी० ७।४

समयतो [समयतस्] जी० ३।५६२

समयस [समयशस्] जी० ३।११२०

समयिक [सामयिक] जी० ६।२ से ५

समयिग [सामयिक] जी० ६।६

समरस [समरस] रा० २२८. जी० ३।३८७

समरसीद [समरसोद] जी० ३।२८६

√**समलंकर** [सं+अलं+कृ]—समलंकरेइ. ओ० ५९

समलंकरेत्ता [समलङ्कृत्य] ओ० ५९

समल्लीण [समालीन] ओ० १३. रा० ४

समवायधर [समवायधर] ओ० ४५

समसोक्ख [समसौख्य] जी० ३।११२०

समहिट्ठिज्जमाण [समधिष्ठीयमान] रा० ७५१

समाइण्ण [समाकीर्ण] ओ० ७१. रा० ६१

समाउत्त [समायुक्त] ओ० ६४. रा० ५१

समाउल [समाकुल] रा० १३६. जी० ३।३०६

समाण [सत्] ओ० २०,५२,५६,६३,६४,९८, ११७,१४२,१४४,१५७. रा० १०,१२ से १५, १८,४९,६०,६३,६४.७२,७४,२७४,२७५, २७९,२८३,२८६,६५५,६८१,६८५,७००, ७०१,७०३,७०७,७१०,७१३,७२५,७२८, ७५७.७६५,७७४,७९२,७९७,८००,८०२. जी० ३।११८.११९,४४०,४४१,४४५,४४९, ४५२,५५५,९१७,९८९

समाण [समान] ओ० २३,२६,२९,११७. रा० १३१,१३२,१४७ से १५१,१९७.२८८, ७५० से ७५३,७९६. जी० २।७४,९८,१४०; ३।१११,११८.११९,२६९,३०१,३०२,३२१ से ३२४,४५४

समाणुभाग [समानुभाग] जी० ३।११२०

समादाण [समादान] जी० ३।११७

समामेव [समकमेव] रा० ७५

√**समायर** [समा+चर्]—समायरह. रा० ७५१

समायरित्ता [समाचर्य] रा० ६६७

समायरेत्ता [समाचर्य] रा० ७५१

समारंभ [समारम्भ] ओ० ९१ से ९३,१६१,१६३

समावडिय [समापतित] ओ० ४६

समावण्णग [समापन्नक] जी० ३।८४२,८४५

समास [समास] जी० ३।८३८।१

समासओ [समासतस्] जी० १।५,५८,६५,७३, ८४,८८,८९,९२,१००,१०३,१११,११२,११६, ११८,१२१,१२९,१३५

समासतो [समासतस्] जी० १।७८,८१; ३।२२९

समाहय [समाहत] ओ० ४६. रा० १२,७५८, ७५९. जी० ३।११८

समाहि [समाधि] ओ० ११७,१४०,१५७,१६२. रा० ७९६

समिड्डीय [समर्धिक] जी० ३।११२०

समिता [समिता] जी० ३।२३५.१०४०,१०४४, १०४६

समिद्ध [समृद्ध] ओ० १,१४. रा० १,६६८ से ६७१,६७६,६७७

समिया [समिता] जी० ३।२३९,२४१

समुग्ग [समुद्ग] ओ० ७४।५. रा० १६१,२५८, २७६,३५१. जी० ३।३३४,४१९,४४५,५९६

समुग्गक [समुद्गक] जी० ३।४०२,५१६

समुग्गग [समुद्गक] जी० ३।३००

समुग्गपक्खि [समुद्गपक्षिन्] जी० १।११३,११६

समुग्गय [समुद्गक] ओ० १७०. रा० १३०,२४० २७६,३५१. जी० ३।४०२,४४२,५१६,१०२५

समुग्घात [समुद्घात] जी० ३।१०८,१५७,१११८

समुग्घाय [समुद्घात] ओ० १७१,१७२,१७५, १७७. जी० १।१४,२३,८२,८६,९६,१०१, ११६,१३३,१३६; ३।१२७।४,१६०

समुच्छिण्णकिरिय [समुच्छिन्नक्रिय] ओ० ४३

समुट्ठित [समुत्थित] जी० ३।३०३

समुट्ठिय [समुत्थित] रा० १३३,६७१

समुदय [समुदय] ओ० ६७. रा० १३,४०,१३२, ६५७,८०३,८०५. जी० ३।३०२,४४६,५९१

समुद्द [समुद्र] ओ० १७०. रा० १०,१२,५६, २७९,६८८. जी० ३।८६,२१७,२१९ से २२७, २५९,२६०,३००,३५१,४४५,५६६,५६९, ५७१ से ५७६,६३८,७०४ से ७०८,७१०,७११, ७१३ से ७२३,७२६,७२८ से ७३१,७३३,७३६, ७३९ से ७४१,७४५,७४७,७५०,७५४,७६१, ७६२,७६४ से ७६६,७७२ से ७९६,८००, ८०३,८०४,८०६,८१० से ८१६,८१८ से ८२१, ८३८।२६,८४८ से ८५१,८५४ से ८५६, ७५९,८६०,८६२,८६५,८६६,८६८,८७१, ८७२,८७४,८७७,८७८,८८०,९२५,९२७, से ९३५,९३८,८३९,९४३ से ९४६,९४९ से ९५२,९५५,९५८,९६१,९६३ से ९६६,९६९, ९७२ से ९७५

समुद्दग [समुद्रग] जी० ३।७७५,७७८

समुद्दलिक्खा [समुद्रलिक्षा] जी० १।८४

समुपविट्ठ [समुपविष्ट] जी ३।२८५

√समुप्पज्ज [सं+उत्+पद्]—समुपज्जित्था. रा० ९—समुप्पज्जइ. ओ० १५६—समुप्पज्जति. जी० ३।५९९—समुप्पज्जित्था. रा० ६८८. जी ३।४४१.—समुप्पज्जिहिति. ओ० १५३. रा० ८१४

समुप्पण्ण [समुत्पन्न] ओ० ११९ १५७. रा० २७६,७३८,७४६. जी० ३।४४२

समुप्पण्णकोऊहल्ल [समुत्पन्नकौतूहल] ओ० ८३

समुप्पण्णसंसय [समुत्पन्नसंशय] ओ० ८३

समुप्पण्णसड्ढ [समुत्पन्नश्रद्ध] ओ० ८३

समुप्पन्न[समुत्पन्न] जी० ३।२३९

समुवागत [समुपागत] जी० ३।९१७

समुविट्ठ [समुपविष्ट] रा० १७३

समुस्सिय [समुत्सृत] रा० ५१

समूसिय [समुच्छ्रित] ओ० ६४

समूह [समूह] रा० १२३

समोगाढ [समवगाढ] ओ० १९५।९. जी० ३।८४५

√समोयर [सं+अव+तॄ]—समोयरंति. जी० ३।१७४

समोसढ [समवसृत] ओ० ५२,५३. रा० ६, ६८७,६८९,७१३

√समोसर [सं+अव+सृ] समोसरह. रा० ७००—समोसरिज्जा. ओ० २१—समोसरिस्सामि. रा० ७०३ समोसरिस्सामो. रा० ७०५

समोसरण [समवसरण] रा० ७५,८०,८२,११२, ७४८ से ७५०,७७३

समोसरिउकाम [समवसर्तुकाम] ओ० १९,२०

समोहण [सं+अव+हन्]—समोहणंति, ओ० १७१—समोहणिसु. जी० ३।१११३ —समोहणिस्संति. जी० ३।१११३

समोहणित्ता [समवहत्य] रा० १०. जी० ३।४४५

समोहण्ण [सं+अव+हन्]—समोहण्णइ. रा० १८—समोहण्णंति. रा० १०. जी० ३।४४५

समोहत [समवहत] जी० १।१२८; ३।१५८, २००,२०१,२०६,२०७

समोहतासमोहत [समावहतासमवहत] जी० ३।२०२,२०३,२०८,२०९

समोहय[समवहत]ओ० १६९. जी० १।५३,६०,८७

सम्मं [सम्यक्] ओ० १६२. रा० ६७१,६९८, ७०३,७१८,७२९,७३१,७३२,७३७,७५० से ७५२,७७७,८७८,७८९

सम्मज्जग [सम्मग्नक] ओ० ९४

सम्मज्जित [सम्मार्जित] जी० ३।४४७

सम्मज्जिय [सम्मार्जित] ओ० ५५,६० से ६२. जी० ३।४४७

सम्मट्ठ [सम्मृष्ट] ओ० ५५. जी० ३।४४७

सम्मत्त [सम्यक्त्व] ओ० ४६

सम्मत्तकिरिया [सम्यक्त्वक्रिया] जी० ३।२१० २११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मदिट्ठि [सम्यग्दृष्टि] रा० ६२. जी० १।२८, ८६; ३।१०३,१५१,११०५,११०६; ६।६७, ६८,७१,७४

सम्मय [मम्मत] रा० ७५० से ७५३

सम्माण [सम्मान] ओ० ४०,५२. रा० १६,६८७, ६८९

√**सम्माण** [सं+मानय]—सम्माणिस्संति. रा० ७०४—सम्माणेइ. ओ० २१. ७०९—सम्माणेज्जा. रा० ७७६—सम्माणेति. रा० ६८४ सम्माणेमि. रा० ५८—सम्माणेमो. ओ० ५२. रा० १०—सम्माणेहिंति. ओ० १४७

सम्माणणिज्ज [सम्माननीय] ओ० २. जी० ३।४०२,४४२

सम्माणित्तए [सम्मानयितुम्] ओ० १३९. रा० ९

सम्माणेत्ता [सम्मान्य] ओ० २१

सम्मामिच्छदिट्ठि [सम्यग्मिथ्यादृष्टि] जी० १।२८,८६; ३।११०५,११०६

सम्मामिच्छादिट्ठि [सम्यग्मिथ्यादृष्टि] जी० ३।१०३,१५१; ९।६७,७०,७३,७४

सम्मुइ [सम्मति] जी० ३।२३९

सय [शत] ओ० ६३,६४,६८,७१,११५,११८, ११९,१७०,१९२,१९५।५. रा० १७,१८,३२, ६१,६६,६९ से ७१,१२४,१२७,१२९,१३७, १६२,१७०,१७३,१८६,१८८,२०४ से २०६, २०९,२११,२३३,२५१,२५४,२५८,२६२, २९२,६८१,६८६,७११,७५३. जी० १।९४; २।४१,४८,७३,९२,९७,१२५,१२८; ३।८२, ९१,१२९।६,१७४,२१७ से २२६,२२६।१,३, ६,२२७,२३७,२४६,२४९,२५५,२५७,२६०, २६२,२६३,३५१,३५८,३६१,३७४,४१९, ४५७,६३२,६४७,६४९,६७४ से ६७६,६८३, ७०३,७०६,७२२,७३६,७५४,८०२,८०९, ८२०,८२३,८३०,८३४,८३७,८३८।६,९,३१, ८३९,८८७,९०८,९१८,९६९,१००३,१००५, १०१४,१०१९,१०२२,१०४१,१०५२,१०५३, १०५५,१०६५ से १०७०; ४।१५; ५।१६,२९; ९।९३,१०६,१२३,१२८,१४४

सय [स्वक] ओ० २०,५३. रा० ५४,६७१,६८१, ७१०,७१८,७५०,७७४

√**सय** [शी]—सयंति रा० १८५. जी० ३।२१७

सयंपभा [स्वयंप्रभा] जी० ३।१०७७

सयंबुद्धसिद्ध [स्वयंबुद्धसिद्ध] जी० १।८

सयंभुमहावर [स्वयंभूमहावर] जी० ३।९५१

सयंभुरमण [स्वयंभूरमण] जी० ३।२५९,९४६ से ९५१,९६२,९६४,९६५,९६८

सयंभूवर [स्वयंभूवर] जी० ३।९५१

सयंभूरमण [स्वयंभूरमण] जी० ३।९७१

सयंभूरमणग [स्वयंभूरमणक] जी० ३।७८०

सयंसंबुद्ध [स्वयंसंबुद्ध] रा० ८,२९२. जी० ३।४५७

सयग्घि [शतघ्नि] ओ० १

सयण [शयन] ओ० १४,१४१,१४९,१५०. रा० १८५,६७१,६७५,७९९,८१०,८११. जी० ३।२९७,८५७,११२८,११३०

सयण [स्वजन] ओ० १५०. रा० ७५१,८०२, ८११

सयणविहि [शयनविधि] ओ० १४६. रा० ८०६

सयणिज्ज [शयनीय] रा० २६१,२७७. जी० ३।६५०,६८२

सयपत्त [शतपत्र] ओ० १२,१५०, रा० ८११. जी० ३।११८,११९,२८६

सयपाग [शतपाक] ओ० ६३

सयपोराग [शतपर्वक] जी० ३।१११

सयमेव [स्वयंमेव] रा० ६७४,६८०,६९८,७५४, ७९१

सयराइं [सप्तति] जी० ३।१०००

सयराह [दे०] अकस्मात् ओ० १२२

सयल [शकल] ओ० १९,४७

सयवत्त [शतपत्र] ओ० ४७. रा० १३७,१७४, १९७,२७९,२८८. जी० ३।३०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयसहस्स [शतसहस्र] ओ० १,२१,४६,५४,६८,
९४,९५,१७०,१९२. रा० १४,१७,१८,१२४,
१२६,१७०,१८८. जी० ११७३,७८,८१,१३५;
३।१२,६३ से ६६,७७,८२,१२७,१६०,१६२,
१६६ से १६८,१७१,२३२,२६०,७०९,७१०,
७२२,७२३,७९४,८०२,८०९,८१२,८१५,
८२०,८२३,८२७,८३०,८३२,८३४,८३५,
८३७,८३८।२८,८३९,८४१,८५०,८५२,९४०,
९४४,९६६,१०२७,१०३८,१०३९,१०७४
सयसाहस्सिय [शतसाहस्रिक] रा० ५६
सयसाहस्सी [शतसाहस्री] जी० ३।६५८
सर [शर] ओ० ६४. रा० १७३,६८१,७६५.
जी० ३।२८५
सर [स्वर] ओ० ६,७१. रा० १७,१८,२०,६१.
जी० ३।११८,११९,२७५,२८५,२८६,८५७,
८६३
सर [सरस्] ओ० ९९
सरंधी [दे०] जी० २।९
सरग [सरक] जी० ३।५८७
सरगय [स्वरगत] ओ० १४६. रा० ८०६
सरडी [सरटी] जी० २।९
सरण [शरण] ओ० १९,२१,५४. जी० ३।५९४
सरणदय [शरणदय] ओ० १९,२१,५४. रा० ८,
२९२. जी० ३।४५७
सरतल [सरस्तल] रा० २४. जी० ३।२७७
सरपंतिया [सरःपङ्क्तिका] रा० १७४,१७५,१८०.
जी० ३।२८६
सरभ [शरभ] ओ० १३. रा० १७,१८,२०,३२,
३७,१२९. जी० ३।२८८,३००,३११,३७२
सरमह [सरोमह] रा० ६८८
सरय [शरद्] जी० ३।५९०
सरल [सरल] जी० १।७२
सरलवण [सरलवन] जी० ३।५८१
सरस [सरस]ओ० २,५५,६३.रा० ३२,२७९,२८१,
२८५,२९१,२९३ से २९६,३००,३०५,३१२,
३५१,३५५,५९४. जी० ३।३७२,४४५,४४७,
४५१,४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,
५२०,५४७,५५४
सरसरपंतिया [सरःसरःपङ्क्तिका] रा० १७४,
१७५,१८०. जी० ३।२८६
सरसी [सरसी] रा० १७४,१७५,१८०.
जी० ३।२८६
सरस्सई [सरस्वती] ओ० ७१. रा० ६१
सरागसंजम [सरागसंयम] ओ० ७३
सरासण [शरासन] रा० ६६४,६८३.
जी० ३।५६२
सरि [सदृश्] जी० ३।६६६,७७५
सरिता [सरिता] जी० ३।४४५
सरित्तय [सदृक्त्वच्] रा० ६९,७०
सरिव्वय [सदृग्वयस्] रा० ६९,७०
सरिस [सदृश] ओ० १९,२२,४७. रा० ६९,७०,
२७०,७७७,७७८,७८८. जी० ३।११०,४१२,
५९६ से ५९८,६८२,७०८,७१०,८१४,९२८,
९४९,१११५
सरिसक [सदृशक] जी० ३।६६६
सरिसय [सदृशक] रा० ६९,७०. जी० ३।६६५,
७६२
सरिसव [सर्षप] जी० १।७२
सरिसवविगइ [सर्षपविकृति] ओ० ९३
सरिसिव [शरीसृप] रा० ६७१
सरीर [शरीर] ओ० १५,२०,५२,५३,८२,११७,
१४३. रा० १२२,१२३,६७२,६७३,६८६ से
६८९,६९२,७००,७१६,७२६,७२८,७३२,
७३७,७४८ से ७६४,७७० से ७७३,७९५,
७९६,८०१. जी० १।१४,१६ से १८,५०,
७२।२,३,७४,८६,८८,९०,९४ से ९६,१०१,
१११,११२,११६,११९,१२१,१२३,१२४,
१३०,१३५; ३।९१ से ९३,१२९।४,१०,५९८,
९६९,१०८७,१०८९ से १०९२
सरीरग [शरीरक] रा० ७९५. जी० १।१५,५९,
७४,७७,७९,८०,८२,८५,९०,९३,१०१,१०३,
११९,१२८,१३०,१३५; ३।९४,१३९,१०९०,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०६१,१०६३,१०६७,१०६८
सरीरत्थ [शरीरस्थ] ओ० १७४
सरीरपज्जत्ति [शरीरपर्याप्ति] रा० २७४,७९७. जी० १।२६; ३।४४०
सरीरय [शरीरक] जी० १।६४; ३।१२,६५,६६,
सरीरविउस्सग्ग [शरीरव्युत्सर्ग] ओ० ४४
सरीरि [शरीरिन्] जी० ६।१६
सरीसिव [सरीसृप] जी० ३।८८
सलिल [सलिल] ओ० २७,४६. रा० १७४,२८८. जी० ३।११८,११६,२८६,४५४
सलिला [सलिला] रा० २७६. जी० ३।४४५
सलील [सलील] रा० २५५,२५६. जी० ३।४१६, ४१७
सलेस [सलेश्य] जी० ६।२६
सलोद्द [सलोष्ट्र] रा० ७५४,७५६,७६४
सल्ल [शल्य] ओ० ७२
सल्लई [सल्लकी] जी० ३।८७२
सल्ली [दे०] जी० २।६
सवण [श्रवण] ओ० १६. रा० २५४. जी० ३।४१५,५६६,५६७
सवणया [श्रवणता] ओ० २०,५२,५३. रा० ६८७, ७१३, ७१६,७५० से ७५३
सवियारि [सविचारिन्] ओ० ४३
सविसय [सविषय] जी० १।४७
सविवेस [सविशेष] जी० ३।१०१०,१०१४
सवेदग [सवेदक] जी० ६।२२,२५,२७
सवेदय [सवेदक] जी० ६।२३,२८,३२
सव्व [सर्व] ओ० २७. रा० ६. जी० १।५०
सव्वओ [सर्वतस्] ओ० ३,६,२७,७६,११७. रा० ६,१२,३०,४०,६३,६५,१२७,१३२, १३५,१५४,१७३,१८६,२०१,२०५ से २०७, २३६,२६३,२८१,६७०,८१३. जी० ३।२१७, ३८८,८१२,८२३,८५०
सव्वओभद्द [सर्वतोभद्र] ओ० ५१
सव्वओभद्दपडिमा [सर्वतोभद्रप्रतिमा] ओ० २४
सव्वंग [सर्वाङ्ग] ओ० १५. रा० ६७२,६७३, ८०१. जी० ३।५९६,५९७
सव्वकामगुणिय [सर्वकामगुणित] ओ० १६५।१८
सव्वकाल [सर्वकाल] ओ० १६५।१६
सव्वक्खरसण्णिवाइ [सर्वाक्षरसन्निपातिन्] ओ० २६
सव्वग्ग [सर्वाग्र] रा० २२७. जी० ३।३८६,६४२, ६५३,६७२,६७६,७६४,७६५
सव्वट्ठ [सर्वार्थ] जी० ३।६३४
सव्वट्ठसिद्ध [सर्वार्थसिद्ध] ओ० १६७,१६२. जी० २।७८,८१; ३।१८४,१६२
सव्वट्ठसिद्धग [सर्वार्थसिद्धक] जी० २।८५,६६; ३।२३१
सव्वण्णु [सर्वज्ञ] ओ० १६,२१,५४. रा० ८,२६२. जी० ३।४५७
सव्वतो [सर्वतस्] रा० १२,४५,१६१,२०८,७५५, ७६४,७६५,७७२,७७४. जी० ३।४६,५०, २६०,२६२,२६५,२८३,२८५.३०२,३०५, ३१३,३२७,३५२,३६२,३६८ से ३७१,३६०, ३६८,४४७,५६१,६३६,६५२,६५८,६६८, ६७८,६७६,६८१,६८६,७०४,७०६,७३६, ७४१,७५४,७७०,७७२,७६६,७६८,८१०, ८२१,८३३,८३६,८४५,८४८,८५६,८६२, ८६५,८६८,८७१,८७४,८७७,८८०,६२५
सव्वत्ता [सर्वता] ओ० ७६
सव्वत्थ [सर्वार्थ] ओ० ४०
सव्वत्थ [सर्वत्र] जी० २।८५
सव्वदरिसि [सर्वदर्शिन्] ओ० १६,२१,५४. रा० ८।२६२. जी० ३।४५७
सव्वद्धपिंडिय [सर्वाध्वपिण्डित] ओ० १६५।१४, १५
सव्वद्धा [सर्वाध्व] जी० ३।१६३,१६४
सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा [सर्वप्राणभूतजीव-सत्त्वसुखावहा] ओ० १६३
सव्वभाव [सर्वभाव] ओ० १६५।१२
सव्वभासाणुगामि [सर्वभाषानुगामिन्] ओ० २६

सव्वभासाणुगामिणी [सर्वभाषानुगामिनी] ओ० ७१. रा० ६१
सव्वरतणा [सर्वरत्ना] जी० ३।६२२
सव्वागास [सर्वाकाश] ओ० १६५।१५
सव्विंदिय [सर्वेन्द्रिय] जी० ३।६०२,८६०,८६६, ८७२,८७८
सव्विंदियकायजोगजुंजणया [सर्वेन्द्रियकाययोग-योजनता] ओ० ४०
सव्वोउय [सर्वर्तुक] ओ० ४६. रा० १५६,६७०. जी० ३।३३२
सव्वोसहिपत्त [सर्वौषधिप्राप्त] ओ० २४
सस [शश] रा० २७
ससंभम [ससम्भ्रम] ओ० २१,५४
ससक [शशक] जी० ३।२८०
ससक्खं [ससाक्ष्य, ससाक्षात्] रा० ७५४,७५६, ७६४
ससग [शशक] जी० ३।६२०
ससण [श्वसन] ओ० १६. जी० ३।५६६
ससरीरि [सशरीरिन्] जी० ६।६२
ससि [शशिन्] ओ० १५,१६,४७,६३,१४३. रा० ६७२,६७३,८०१. जी० ३।५६३,५६६, ५६७,८०६,८३८।३,२४,२६,२८,३०,३१, १०००
ससुरकुलरक्खिया [श्वसुरकुलरक्षिता] ओ० ६२
सस्सिरीय [सश्रीक] ओ० ६३. रा० १३६,२२८. जी० ३।३०६,३८७,५६६,६७२
सस्सिरीयरूव [सश्रीकरूप] रा० १७,१८,२०,३२, १२६,१३०,१३७. जी० ३।२८८,३००,३०७, ३७२
सह [सह] जी० ३।६११
सहसंबुद्ध [स्वयंसम्बुद्ध] ओ० १६,२१,५२,५४
सहसा [सहसा] जी० ३।५८६
सहस्स [सहस्र] ओ० १६,६८,६६,८६ से ६३, १७०,१६२. रा० १७,१८,२०,२४,३२,५२, ५६,१२४,१२६,१२६,१५६,१६३,१६६, १८८,२३१,२४७,२७६,२८०,७८७,७८८. जी० १।५८,५६,६५,७३,७४,७८,८१,६४, ६६,१०१,१०३,१११,११२,११६,११६, १२३,१३६,१३७; २।३५ से ३६,६६,१०८, ११०,१११,११८,१२८,१२६,१३६; ३।१४ से २१,२३ से २७,५१,६० से ६३,७७,८० से ८२,६१,११८,१७४,१८६ से १६२,२२६।६, २४२,२४६,२६०,२७७,२८८,३००,३३२, ३३५,३३६,३५१,३५५,३५८,३६१,३७२, ३६३,३६८,४४५,४४६,४४८,५६६,५६८ से ५७०,५७७,५६०,५६८,६३२,६३८,६३६, ६६०,७०३,७०६,७१४,७२२,७२३,७२५, ७२६,७२८,७३२,७३३,७३६,७३६,७४०, ७४२,७४५,७५०,७५४,७६१,७६२,७६४ से ७७६,७८८ से ७६२,७६४,७६५,७६८, ८०२,८०६,८१२,८१४,८१५,८२०,८२३, ८२७,८३०,८३२,८३४,८३५,८३७,८३८।२७, ३१,८३६,८४१,८८२,६११,६१८,६७१, १०००,१०१५.१०१७ से १०१६,१०२२, १०२३,१०२८,१०२६,१०३८,१०५१, १०७३,१०७४,११३१; ४।३,६,६,११,१६; ५।५,६,१०,१२,१४,१५,२८,२६; ६।२, ६,७।३,१३; ८।३; ६।२ से ४,१३२,२१०, २१४,२२४,२२८,२३४,२४१,२६०,२६६, २७७
सहस्सपत्त [सहस्रपत्र] ओ० १२,१५०. रा० २३, १७४,२२३,२७६,२८१,२८८,२८६,८११. जी० ३।११८,११६,२५६,२६६,२८६,२६१, ३१५,४४५,४४७,४५४,४५५,६३६,६३७, ६५१,६५६,६७७,७३८,७४३,७६३,८६४
सहस्सपाग [सहस्रपाक] ओ० ६३
सहस्सभाग [सहस्रभाग] ओ० २
सहस्सरस्सि [सहस्ररश्मि] ओ० २२. रा० ७२३, ७७७,७७८,७८८
सहस्सवत्त [सहस्रपत्र] रा० १६७,२७६
सहस्ससो [सहस्रशस्] जी० ३।१२६।६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहस्सार [महस्रार] ओ० ५१,१५७,१६२. जी० १।११६,१२३; २।६१,६६,१४८,१४६; ३।१०३८,१०५२,१०६१,१०६६,१०६८, १०७६,१०८३,१०८५,१०८८
सहस्सारग [सहस्रारक] जी० ३।११११
सहा [सभा] ओ० ३७. जी० ३।४१२
सहिणग [श्लक्ष्णक] जी० ३।५६५
सहित [सहित] जी० २।१०५; ३।२८५,६२७
सहिय [संहत] ओ० १६
सहिय [सहित] रा० ७५. जी० ३।८३८।२५
सही [सखी] जी० ३।६१३
सहोढ [सहोढ] रा० ७५४,७५६,७६४
साइ [साचि] रा० ६७१
√**साइज्ज** [स्वाद्] — साइज्जामो. ओ० ११७
साइज्जणया [स्वादन] ओ० ३३
साइज्जित्तए [स्वादयितुम्] ओ० ११७
साइम [स्वाद्य] ओ० ११७,१२०,१४७,१६२. रा० ६६८,७०४,७१६,७५२,७६५,७७६, ७८७ से ७८६,७६४,७६६,८०२,८०८
साइरेग [सातिरेक] ओ० २३,१४५,१८८. रा० १७०,२११,२२२,२२७,२५३. जी० २।६३; ३।२५०,३५८,३७४,३७६,३८६, ४१४,६५३,६७५,८८२,८८७,८६४; ६।३४, ८६,६३,१३४,१६०,१६१,१६५
साउ [स्वादु] ओ० ६. जी० ३।२७५
सागर [सागर] ओ० २७,४६,७४।५,६६, १६५।२२. रा० २४,७६५,८१३. जी० ३।२७७,५६६,८३८।२३
सागरनागरपविभत्ति [सागरनागरप्रविभक्ति] रा० ६२
सागरपविभत्ति [सागरप्रविभक्ति] रा० ६२
सागरमह [सागरमह] रा० ६८८,६८६
सागरोवम [सागरोपम] ओ० ११४,११७,१४०, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० २८२. जी० १।६६,१३६,१३८; २।७३,७६,८२, ६३,६७,१०७,१०८,११८,१२५,१२७,१२६, १३६; ३।१६२,१६७,४४८,८४१,१०४६, १०४७,१०४६ से १०५३,१०५५,११३१, ११३७; ४।४,६,१५,१६; ५।६,१०,१६,२८, २६; ६।२,११; ७।३,१६; ८।३; ६।२ से ४, ३१,३४,६८,७२,८६,६३,१०२,१०६,१२३, १२८,१३२,१३४,१६०,१६१,१६५,१७२, १७६,१८६ से १६१,१६३,१६८,१६६,२०३, २०६,२१०,२१७,२२४,२२८,२३४,२४४, २६०,२६६,२८०
सागार [साकार] ओ० १८२,१६५।११. जी० १।३२,८७; ३।१०६,१५४,१११०; ६।३६,३७
साणुक्कोसिया [सानुक्रोशता] ओ० ७३
सातासोक्ख [सातसौख्य] जी० ३।१११७
साति [साचि] जी० १।११६
साति [स्वाति] जी० ३।१००७
सातिरेग [सातिरेक] रा० ८०५. जी० १।७४; २।४३,४४,४७,८२,१२५,१२८; ३।२४७, २५६,३८१,६४२,६७२,६७६,६८६,६०७, १०३४,१०३६,११३७; ४।६,१५; ५।१६, २६; ६।११; ७।१६; ८।३; ६।३,३१,६८,७२, १०२,१०६,१२३,१२८,१३२,१६८,१६६, २०६,२१७,२४४,२६०,२८०
सादीय [सादिक] ओ० १८३,१८४,१६५. जी० ६।२४,२५,३१,३३,३४,८२,११०,१२५, १६३,१६२,१६५,२०१,२०२,२०५,२०६, २१५,२१६,२२७,२३०,२४०,२४६,२६१, २६५,२७६,२८५
साभाविय [स्वाभाविक] रा० २७६,२८०. जी० ३।४४५,४४६
साम [सामन्] रा० ६७५
सामंत [सामन्त] रा० ७५३
सामण्णपरियाग [श्रामण्यपर्याय] ओ० ६५,१५५, १५६,१६०

सामन्नओविणिवाइय [सामान्यतोविनिपातिक] रा० ११७,२८१

सामन्नतोविणिवातिय [सामान्यतोविनिपातिक] जी० ३।४४७

सामलतामंडवग [श्यामलतामण्डपक] जी० ३।८५७

सामलतामंडवय [श्यामलतामण्डपक] जी० ३।८५७

सामलया [श्यामलता] ओ० ११. रा० १४५. जी० ३।२६८,३०८,३७७,३६०,५८४

सामलयापविभत्ति [श्यामलताप्रविभक्ति] रा० १०१

सामलयामंडवग [श्यामलतामण्डपक] जी० ३।२६६

सामलयामंडवय [श्यामलतामण्डपक] जी० ३।२६७

सामलि [शाल्मली] जी० ३।५६६

सामवेद [सामवेद] ओ० ६७

सामाइय [सामायिक] ओ० ७७

सामाइयचरित्तविणय [सामायिकचरित्रविनय] ओ० ४०

सामाणिय [सामानिक] रा० ७,४१,४८,५६ से ५८,२७६ से २८०,२८२,२८४,२८७,२८६, २६१,६५७,६५८,६६६. जी० ३।३३६,३५०, ३५६,४४२ से ४४६,४४८,४५५,४५७,५५७, ५५८,५६३,५६५,६३५,६३७,६५७,६५६,६८०, ७००,७२१,७३८,७६०,७६३,८४३,८४६, १०२५

सामाय [श्यामाक] रा० २६. जी० ३।२७६

सामि [स्वामिन्] ओ० ५६. रा० ६,६८१,७०७, ७२३,७२६,७३१,७३३ से ७३५,७५१,७५३

सामित्त [स्वामित्व] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।३५०,५६३,६३७

सामुग्ग [समुद्ग] ओ० १६

सामुच्छेइय [सामुच्छेदिक] ओ० १६०

सामुद्दग [सामुद्गग] जी० ३।७८०

साय [सात] जी० ३।१२६।६

साया [सात] जी० ३।११८,११६

सार [सार] ओ० १४,२३,४६. रा० ३७,१७३, ६७१,६७६,६६५. जी० ३।२८५,३११,५८६, ६०८

सारइय [शारदिक] जी० ३।२८२,८७२,६६०

सारक्खणाणुबंधि [सारक्षणानुबन्धिन्] ओ० ४३

सारग [सारक, स्मारक[1]] ओ० ६७

सारतिय [शारदिक] रा० २६

सारय [शारद] ओ० २७,७१. रा० ६१. जी० ३।५६२,५६७

सारयसलिल [शारदसलिल] रा० ८१३

सारस [सारस] ओ० ६. जी० ३।२७५

सारहि [सारथि] ओ० ६४. रा० १७३,६७५, ६८०'६८१,६८३ से ६८५,६८८ से ६६०, ६६२,६६३,६६५ से ७१०,७१३,७१४,७१६ से ७३४,७३६,७४८. जी० ३।२८५

सारा [दे०] जी० २।६

सारिज्जंत [सार्यमाण] रा० ७७

सारीर [शारीर] ओ० ७४

साल [शाल] ओ० ६,१०. जी० १।७१; ३।५८३

सालघरग [शालागृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२६४

सालणग [शालनक] जी० ३।५६२

सालभंजिया [शालभञ्जिका] रा० १३३,१३६, २६४,२६६ से २६६,३१२,४७३. जी० ३।३००, ३०३,३१६,३५५,३७२,४५६,४६१,४६२, ४७७,५३२

सालभंजियाग [शालभञ्जिकाक] रा० १७,१८, ३२,१३०

सालमंत [शाखावत्] ओ० ५,८. जी० ३।२७४

सालवण [शालवन] जी० ३।५८१

साला [शाखा] रा० १३३,२२८. जी० ३०३,३८७, ५८०,६२१,६७२ से ६७४

---

१. 'सारय' त्ति अध्यापनद्वारेण प्रवर्त्तकाः स्मारका वा अन्येषां विस्मृतस्य स्मारणात् (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सालि [शालि] ओ० १. रा० १५०. जी० ३।६२१, ६३१

सालिपिट्ठ [शालिपिष्ट] रा० २९. जी० ३।२८२

सालिसय [सदृशक] रा० २४५. जी० ३।४०७

सावएज्ज [स्वापतेय] रा० ६९५. जी० ३।६०८

सावज्ज [सावद्य] ओ० ४०,१३७,१३८

सावज्जजोग [सावद्ययोग] ओ० १६१,१६३

सावतेज्ज [स्वापतेय] ओ० २३

सावत्थी [श्रावस्ती] रा० ६७५,६७७ से ६८० ६८३,६८५ से ६८९,६९२,७००,७०६, ७११

सावय [स्वापद] ओ० ४६. जी ३।६२०

सावय [श्रावक] जी० ३।७९५,८४१

सावाणुग्गहसमत्थ [शापानुग्रहसमर्थ] ओ० २४

साविया [श्राविका] जी० ३।७९५,८४१

सावेंत [श्रावयत्] ओ० ६४

सास [श्वास] जी० ३।६२८

सासंत [शासत्] ओ० ६४

सासत [शाश्वत] जी० ३।५७,५८,८७,७०२, ७६०

सासय [शाश्वत] ओ० १८३,१८४,१९५।१९,२१. रा० १३३,१९८ से २००. जी० ३।५९, १२७।२,२७० से २७२,३०३,३५०,७२१, ७२४,७२६,७६०,१०८१

सासा [स्वाशा,शास्या] ओ० ४६

√साह [कथय्,शास्]—साहिंति. रा० ११ —साहेंति. रा० २८१. जी० ३।४४७ —साहेह. रा० ९

√साह [साध्]—साहेइ रा० ७६५—साहेज्जासि. रा० ७६५.—साहेमि. रा० ७६५

साहट्टु [संहृत्य] ओ० २१

√साहण [स+हन्]—साहणेज्जा. जी० ३।११८

साहम्मियवेयावच्च [साधर्मिकवैयावृत्य] ओ० ४१

साहय [संहत] ओ० १९. जी० ३।५९६,५९७

√साहर [सं+हृ]—साहरति जी० ३।४५७

साहरण [संहरण] जी० २।११६,१२४

साहरणसरीर [साधारणशरीर] जी० १।६८,७३

साहरिज्जमाण [संह्रियमाण] रा० ३०,८०४. जी० ३।२८३

साहरिज्जमाणचरय [संह्रियमाणचरक] ओ० ३४

साहरित्ता [संहृत्य] जी० ३।४५७

साहसिय [साहसिक] ओ० १४८,१४९. रा० ८०९,८१०

साहस्सित [साहस्रिक] जी० ३।८४२

साहस्सिय [साहस्रिक] रा० ५६. जी० ३।८४२, ८४५

साहस्सी [साहस्री] ओ० १९. रा० ७,४१ से ४४, ४८,५६ से ५८,२३५,२३६,२८०,२८२,२८९, २९१,५६८,६५७,६५८,६६० से ६६२,६६४. जी० ३।२३६,२४९,२५५,३३९,३४१ से ३४५,३५०,३९७,३९८,४४६,४४८,४५५, ४५७,५५७,५५८,५६०,५६२,५६३,६३५, ६३७,६५७ से ६५९,६८०,७००,७२१,७३३, ७३८,७६० से ७६३,९०२,९०३,१०२५, १०३८,१०४१,१०४४,१०४६,१०४९ से १०५२

साहस्सीय [साहस्रिक] रा० ६७१

साहा [शाखा] ओ० ५,८. रा० २२८. जी० ३।२७४,३८७,६७२

साहित्ता [कथयित्वा] रा० ९

साहिय [साधिक] ओ० १९५।७

साहिय [सहित] जी० ३।९२५

साहिय [साधित] रा० ७६५

साहु [साधु] ओ० ४६,१६१,१६३

सिंग [शृङ्ग] रा० ७१,७७

सिंगबेर [शृङ्गबेर] जी० १।७३

सिंगभेद [शृङ्गभेद] ओ० १३

सिंगमाल [शृङ्गमाल] जी० ३।५८२

सिंगवाय [शृङ्गवादक] रा० ७१

सिंगार [शृङ्गार] ओ० १५. रा० ७०,७८,१३३, ६७३,८०९,८१०. जी० ३।३०३,५९७,११२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंघाडग [शृङ्गाटक] ओ० १,५२,५५. रा० ६८७, ७१२. जी० ३।५५४,५५५

सिंघाडय [शृङ्गाटक] रा० ६५४,६५५

सिंदुवार [सिन्दुवार] जी० ३।२८२

सिंदुवारगुम्म [सिन्दुवारगुल्म] जी० ३।५८०

सिंधु [सिन्धु] रा० २७६. जी० ३।४४५,५६५ ६३७

सिंभिय [श्लैष्मिक] ओ० ११७. रा० ७६६

सिंह [सिंह] जी० ३.७८१,७८२,१०३८

सिंहली [सिंहली] ओ० ७०. रा० ८०४

सिक्कग [शिक्यक] रा० १३२,१५३,२३६,२४०. जी० ३।३२६,४०२

सिक्कय [शिक्यक] रा० १३२,१४०,७६१. जी० ३।३०२,३२६,३६८,४०२

सिक्खा [शिक्षा] ओ० ७६,७७,९७

सिक्खाव [शिक्षय्]—सिक्खाविहिति ओ० १४६ —सिक्खावेहिइ. रा० ८०६

सिक्खावय [शिक्षाव्रत] ओ० ७७

सिक्खावित्ता [शिक्षयित्वा] ओ० १४६

सिक्खवेत्ता [शिक्षयित्वा] रा० ८०७

सिग्घ [शीघ्र] रा० १०,१२,५६,२७६. जी० ३।८६,१७६,१७८,१८०,१८२,४४५

सिग्घगति [शीघ्रगति] जी० ३।९८९,१०२०

सिग्घगमण [शीघ्रगमन] रा० १७,१८

√**सिज्झ** [सिध्]—सिज्झइ. ओ० १७७—सिज्झई. ओ० १९५।१२—सिज्झंति. ओ० ७२. जी० १।१३३—सिज्झिहिति. ओ० १६६—सिज्झिहिति ओ० १५४ रा० ८१६

सिज्झमाण [सिध्यत्] ओ० १८५

सिढिल [शिथिल] रा० ७६०,७६१

सिणाइत्तए [स्नातुम्] ओ० १११

सिणेह [स्नेह] ओ० १६८. जी० ३।२२

सिता [स्यात्] जी० ३।९०,१०९,११८,११९, १७६,१७८,१८०,१८२.१९५,१९६

सित्त [सिक्त] ओ० ५५. जी० ३।५९२

सित्थ [सिक्थ] जी० ३।५९२

सिद्ध [सिद्ध] ओ० ७१,७४।३,६,१८३,१८४, १८९ से १९२,१९५।१.२,४ से ११,१३,१५, १७,१९ से २१. जी० १।६; ९।९,१०,१२, १४,१९,२९,४४,४५,५४,६२,६६,१५६, १५८,२०९,२१५,२१९ से २२१,२२७,२३० से २३२,२४०,२४९,२६५,२६७,२७५,२७६, २८४ से २८७,२९२.२९३

सिद्धकेवलणाण [सिद्धकेवलज्ञान] रा० ७४५

सिद्धत्थ [सिद्धार्थ] रा० १५६,१५७,२५८,२७९. जी० ३।३२९,४१९,४४५

सिद्धत्थय [सिद्धार्थक] रा० २७९,२८०. जी० ३।४४५,४४६,४४८,५९३

सिद्धवसहि [सिद्धवसति] ओ० ७४।३

सिद्धायतण [सिद्धायतन] रा० २५१,२५२.२५९, २६०,२७६,२८८,२९१,२९३,२९४,३१३, ३३१,३३२. जी० ३।४१२,४१३,४२०,४२१, ४५४,४५७ से ४५९,४७८,४९६,४९७,६७४, ६७६,६७७,६९१ से ६९८,८२५,८८४,९०१ से ९०५,९०९,९१३

सिद्धालय [सिद्धालय] ओ० ७४।६,१९३

सिद्धि [सिद्धि] ओ० ७१,१७२,१९३

सिद्धिगइ [सिद्धिगति] ओ० १९,२१,५४,११७. रा० ८,२९२,७१४,७९६. जी० ३।४५७

सिद्धिमग्ग [सिद्धिमार्ग] ओ० ७२

सिद्धिमहापट्टणाभिमुह [सिद्धिमहापत्तनाभिमुख] ओ० ४६

सिप्प [शिल्प] ओ० ६३. रा० १२,७५८ से ७६१. जी० ३।११८,११९

सिप्पायरिय [शिल्पाचार्य] रा० ७७६

सिप्पि [शिल्पिन्] ओ० १

सिप्पि [शुक्ति] जी० ३।७९३

सिप्पिय [शिल्पिक] जी० ३।५९१

सिबिया [शिबिका] ओ० ५२

सिय [सित] ओ० ४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिय [स्यात्] जी० १।४६,७३,८२; ३।५७,५८, २७०

सियरत्त [सितरक्त] ओ० ४७

सिया [स्यात्] जी० ३।८४,८५,११८,१६७, २७८ से २८५,६०१,६०२,८६०,८६६,८७२ से ८७८,६८२,१०८५,१०८६

सियाल [शृगाल] जी० ३।६२०

सिर [शिरस्] ओ० ५२,७१. रा० ६१,७६,६८७ से ६८६

सिरय [शिरोज] ओ० १६,५१. रा० १३३. जी० ३।३०३,५६६,५६७

सिरय [शिरस्क] ओ० ६३,६५

सिरसावत्त [शिरसावर्त्त] ओ० २०,२१,५३,५४, ५६,६२,११७. रा० ८,१०,१२,१४,१८,४६, ७२,७४,११८,२७६,२७६,२८२,२६२,६५५, ६८१,६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४, ७२३,७६६. जी० ३।४४२,४४५,४४८,४५७, ५५५

सिरिकंता [श्रीकान्ता] जी० ३।६८८

सिरिचंदा [श्रीचन्द्रा] जी० ३।६८८

सिरिणिलया [श्रीनिलया] जी० ३।६८८

सिरिदाम [श्रीदामन्] जी० ३।५६७

सिरिधर [श्रीधर] जी० ३।८५४

सिरिप्पभ [श्रीप्रभ] जी० ३।८५४

सिरिमहिया [श्रीमहिता] जी० ३।६८८

सिरिली [दे० श्रीली] जी० १।७३

सिरिवच्छ [श्रीवत्स] ओ० १२,१६,५१,६४. रा० २१,४६,२५४,२६१. जी० ३।२८६, ३४७,४१५,५६६[1]

सिरी [श्री] रा० ४०,१३२,१३५,२३६,७३२, ७३७,७७४,७८२. जी० ३।२६५,३०२,३०५, ३१३,३६८,५८०,५८१,५६१

सिरीस [शिरीष] ओ० ६,१०. रा० ३१. जी० ३।२८४,३८८,५८३

सिरीसव [सरीसृप] रा० ७१८. जी० ३।७२१

सिरीसिव [सरीसृप] रा० ७०३

सिरोवेदणा [शिरोवेदना] जी० ३।६२८

सिलप्पवालमय [शिलाप्रवालमय] रा० २५४.

सिला [शिला] ओ० १६,२३,४७. रा० २७, ६६५,७५५,७५७. जी० ३।२८०,५६६,६०८

सिलातल [शिलातल] जी० ३।५६६

सिलायल [शिलातल] ओ० १६

सिलिंध [सिलिन्ध्र] ओ० ४७

सिलेस [श्लेष] जी० १।७२।५

सिलोय [श्लोक] ओ० १४६. रा० ८०६

सिव [शिव] ओ० १४,१६,२१,५४. रा० ८, २६२,६७१. जी० ३।४५७

सिवग [शिवक] जी० ३।७४०

सिवमह [शिवमह] रा० ६८८. जी० ३।६१२

सिवय [शिवक] जी० ३।७३४,७४१

सिवा [शिवा] जी० ३।६२०।१,६२२

सिविगा [शिविका] जी० ३।७४१

सिविया [शिविका] ओ० ७,८,१०. रा० ६८७ से ६८६. जी० ३।२८५

सिस्स [शिष्य] जी० ३।६१०

सिस्सिरिली [दे०] जी० १।७३

सिहंडि [शिखण्डिन्] ओ० ६४

सिहर [शिखर] ओ० ५. रा० ५२,५६,१३७, २३१,२४७. जी० ३।२७४,३०७,३७३

सिहरि [शिखरिन्] रा० २७६. जी० ३।२२७, ४४५,७६५

सीउंढी [दे०] जी० १।७३

सीओदा [शीतोदा] जी० ३।५६८,७०८

सीओभास [शीतावभास] ओ० ४. रा० १७०, १७३. जी० ३।२७३

सीओया [शीतोदा] जी० ३।४४५

सीओसिणवेदणा [शीतोष्णवेदना] जी० ३।११२, ११३,११४

---

१. श्रीवृक्षेणाङ्कितं—लाञ्छितं वक्षो येषां ते श्रीवृक्षलाञ्छितवक्षसः (वृ० पत्र २७१)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीत [शीत] जी० ३।२२,११३,११४,११८,
११९
सीतल [शीतल] जी० ३।११८,११९
सीतवेदणा [शीतवेदना] जी० ३।११२ से ११४,
११९
सीता [शीता] रा० २७९. जी० ३।३००,६३२,
६३९,६६८,७४६
सीतीभूय [शीतीभूत] जी० ३।११८
सीतोदय [शीतोदक] जी० १।६२
सीतोदा [शीतोदा] रा० २७९. जी० ३।७४६,
८१४
सीतोसिण [शीतोष्ण] जी० ३।११२,११५
सीधु [सीधु] जी० ३।५८६,८६०
सीमंकर [सीमङ्कर] ओ० १४. रा० ६७१
सीमंतोवणयण [सीमन्तोपनयन] जी० ३।६१४
सीमंधर [सीमन्धर] ओ० १४. रा० ६७१
सीमा [सीमा] ओ० १
सीय [शीत] ओ० ४,८९,११७. रा० १७०,७०३,
७९६. जी० ३।११२,११३,११५,११८,११९,
२७३
सीय [सित] ओ० १९५
सीयच्छाय [शीतच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
७०३. जी० ३।२७३
सीयकूड [शीतकूट] जी० ३।११९
सीयपडल [शीतपटल] जी० ३।११९
सीयपुंज [शीतपुञ्ज] जी० ३।११९
सीयभूय [शीतीभूत] जी० ३।११८,११९
सीयल [शीतल] रा० १५९,१७४,६७०.
जी० ३।२८६,३३२,६०४
सीयवेदणिज्ज [शीतवेदनीय] जी० ३।११९
सीयवेयणिज्ज [शीतवेदनीय] जी० ३।११९
सीया [शीता] जी० ३।४४५,८००
सीया [शिबिका] ओ० १,१००,१२३.
रा० १७३. जी० ३।२७६,५८१,५८५,६१७
सील [शील] ओ० ४६
सीलइ [शीलजित्] ओ० ९६
सीलव्वय [शीलव्रत] ओ० १२०,१४०,१५७.
रा० ६९८,७५२,७८७,७८९
सीवण्णी [श्रीपर्णी] जी० १।७१
सीसगपाय [सीसकपात्र] ओ० १०५,१२८
सीसगबंधण [सीसकबन्धन] ओ० १०६,१२९
सीसगभारग [सीसकभारक] रा० ७६०,७६१
सीसघडी [शीर्षघटी] रा० २५४. जी० ३।४१५
सीसछिण्णग [शीर्षछिन्नक] ओ० ९०
सीसछिण्णय [शीर्षछिन्नक] रा० ७६७
सीसपहेलियंग [शीर्षप्रहेलिकाङ्ग] जी० ३।८४१
सीसपहेलिया [शीर्षप्रहेलिका] जी० ३।८४१
सीसागर [सीसाकर] जी० ३।११८
सीह [शीघ्र] जी० ३।९८९
सीह [सिंह] ओ० १९,२७,४८. रा० २४,३७,
८१३. जी० ३।८४,८८,२७७,३११,५९६,
५९७,६२०,६३१,७८२,१०१५
सीहकण्ण [सिंहकर्ण] जी० ३।२१६
सीहकण्णी [सिंहकर्णी] जी० १।७३
सीहगति [शीघ्रगति] जी० ३।९८९
सीहघोस [सिंहघोष] जी० ३।५९८
सीहज्झय [सिंहध्वज] रा० १९३. जी० ३।३३५
सीहणाय [सिंहनाद] ओ० ५२. रा० ६८७,६८८.
जी० ३।८४२,८४५
सीहणिक्कीलिय [सिंहनिष्क्रीडित] ओ० २४
सीहणिसाइ [सिंहनिषादिन्] जी० ३।८३९
सीहनाद [सिंहनाद] जी० ३।४४७
सीहनाय [सिंहनाद] रा० २८१
सीहनिक्कीलिय [सिंहनिष्क्रीडित] ओ० २४
सीहपुच्छियग [सिंहपुच्छितक] ओ० ९०
सीहमंडलपविभत्ति [सिंहमण्डलप्रविभक्ति]
रा० ९१
सीहमुह [सिंहमुख] जी० ३।२१६
सीहस्सर [सिंहस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५,
५९८
सीहासण [सिंहासन] ओ० १३,१९,२१,५४,६४.
रा० ७,८,३७,३९,४१ से ४४,४७,५१,६७,

६८,१५८,१६४,१८१,१८३,१८६,२०४ से २०७,२१९,२४३,२६५,२६७,२६९,२७७, २७९,२८३,२८६,२८८,३००,३२१,३३८, ३५२,४७४,५३४,५९५,६५७. जी० ३।२९३, ३११,३१२,३३१,३३९,३४५,३५५,३५६, ३५९,३६६,३६८,३७८,४०५,४१९,४२८, ४३१,४३४,४४३,४४५,४४९,४५२,४५४, ४६५,४८६,५०३,५१७,५३३,५४०,५४८, ५५७,६३४,६३५,६६३,६७३,६८५,७३७, ७४०,७४२,७४५,७५०,७६२,७६५,७६८, ७७०,८९२,१०२४ से १०२६

सुअक्खाय [स्वाख्यात] ओ० ७९ से ८१

सुअलंकित [स्वलङ्कृत] जी० ३।३०३

सुअलंकिय [स्वलङ्कृत] रा० १३३

सुइ [शुचि] ओ० १९,५५,६३,९८. रा० ११, २८१. जी० ३।४४७,५९६,५९७

सुइभूय [शुचीभूत] ओ० २१. रा० ७६५,८०२

सुइसमायार [शुचिसमाचार] ओ० ९८

सुईभूय [शुचीभूत] ओ० ५४. रा० २७७

सुउत्तार [सुखोत्तार] रा० १७४. जी० ३।२८६

सुउमाल [सुकुमार] ओ० ६३

सुओयार [सुखावतार] रा० १७४

सुंक [शुल्क] रा० ७२७

सुंदर [सुन्दर] ओ० १५,१६,१४१. रा० ६७३, ८०१. जी० ३।५९६,५९७

सुंदरंगी [सुन्दराङ्गी] ओ० १५. रा० ६७२

सुंसुमार [शुंशुमार, शिशुमार] जी० १।९९,११८

सुंसुमारिया [शिशुमारिका] रा० ७७

सुंसुमारी [शुंशुमार, शिशुमारी] जी० २।४

सुक [शुक] जी० ३।५९७

सुकंत [सुकान्त] जी० ३।८७२

सुकढित [सुक्वथित] जी० ३।८७२

सुकढिय [सुक्वथित] जी० ३।८६६

सुकय [सुकृत] ओ० २,१२,५५,६३ से ६५. रा० ३२,१७३,२८१,६८१,६८७,६८९. जी० ३।२८५,३७२,४४७

सुकुमाल [सुकुमार] ओ० ५,८,१५,१९,६३, १४३. रा० २२८,२८०,६७२,६७३,८०१. जी० ३।३८७,४४६,५९६,५९७,६७२,१०९८

सुक्क [शुक्र] ओ० ५०. जी० ३।११११

सुक्क [शुष्क] रा० २९,७८२ जी० ३।२८२

सुक्क [शुक्ल] जी० ९।१५४

सुक्क (झाण) [शुक्लध्यान] ओ० ४३

सुक्कपक्ख [शुक्लपक्ष] जी० ३।८३८।१८

सुक्कलेस [शुक्ललेश्य] जी० ९।१९१

सुक्कलेसा [शुक्ललेश्या] जी० ३।१५०

सुक्कलेस्स [शुक्ललेश्य] जी० ३।१८५,१९६

सुक्कलेस्सा [शुक्ललेश्या] जी० ३।११०३

सुक्किल [शुक्ल] ओ० १२. रा० २२,२४,२९, १२८,१३२,१५३. जी० १।५,३४,३५,५०, १३६; ३।२२,४५,२७८,२८२,२९०,३०२, ३२६,३५३,३९७,५९५,१०७५,१०७६,१०९५

सुक्किलग [शुक्लक] जी० ३।२८२

सुक्ख [सौख्य] ओ० १९५।२१

सुगंध [सुगन्ध] ओ० २,५५,६३. रा० ६,१२,३२, १३२,२३६,२८१,२८५. जी० ३।३०२,३७२, ४४७,४५१,५९२,५९६

सुगंधि [सुगन्धि] ओ० ७,८,१०. रा० १५९. जी० ३।२७६,३३२

सुगंधिय [सौगन्धिक] ओ० १५०. रा० २७९, ८११. जी० ३।४४५

सुगुज्झदेस [सुगुह्यदेश] ओ० १९

सुगूढ [सुगूढ] जी० ३।५९७

सुघोसा [सुघोषा] रा० ७७. जी० ३।७८,५८८

सुचरिय [सुचरित] रा० ८१४

सुचि [शुचि] जी० ३।५९६

सुचिण्ण [सुचीर्ण] ओ० ७१. रा० १८५,१८७. जी० ३।२१७,२९७,२९८,३५८,५७९

सुजात [सुजात] जी० ३।३८७, ५८६,५९६,५९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुजाय [सुजात] ओ० ५,८,१४,१५,१६,१४३. रा० १७४,२८८,६७१ से ६७३,८०१. जी० ३।११८,११६,२७४,२८६,५६६,५६७, ६७२

सुजाया [सुजाता] जी० ३।६६६।२

सुज्झ [दे०] रा० १७४. जी० ३।२८६

सुट्ठिय [सुस्थित] जी० ३।५६४,७२१,७५४,७५६, ७६०,७६१

सुट्ठिया [सुस्थिता] जी० ३।७६१

√सुण [श्रु]—सुणंतु. रा० १५—सुणह. ओ० १६५।१७—सुणिस्सामो .रा० १६ —सुणेस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७

सुण [श्वन्] जी० ३।८४

सुणग [शुनक] जी० ३।६२०

सुणति [सुनति] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५

सुणिउण [सुनिपुण] रा० ५७

सुणिद्ध [सुस्निग्ध] ओ० १६

सुणिम्मिय [सुनिर्मित] जी० ३।५६७

सुणिसिय [सुनिशित] जी० ३।४१०

सुणेंत [शृण्वत्] रा० ७७४

सुणेत्ता [श्रुत्वा] रा० ६८८

सुण्हा [स्नुषा] जी० ३।६११

सुतिक्खधार [सुतीक्ष्णधार] रा० २४६. जी० ३।४१०

सुत्त [सूत्र] रा० १३२,१५३,२३५. जी० ३।३०२, ३२६,३६७

सुत्त [सुप्त] ओ० १४८,१४६. रा० ८०६,८१०

सुत्तओ [सूत्रतस्] ओ० १४६. रा० ८०६,८०७

सुत्तग [सूत्रक] जी० ३।५६३

सुत्तखेड्डु[1] [सूत्रखेल] ओ० १४६. रा० ८०६

सुत्तरुइ [सूत्ररुचि] ओ० ४३

सुत्ति [शुक्ति] जी० ३।५८७

सुत्थिय [सुस्थित] जी० ३।७६१

सुदंसण [सुदर्शन] जी० ३।८०६

सुदंसणा [सुदर्शना] जी० ३।६६८,६७२,६७३, ६७८ से ६८३,६८८,६८६,६६२ से ७००, ७६५,६१० ६२१

सुदुत्तार [सुदुस्तार] ओ० ४६

सुद्ध [शुद्ध] ओ० २७. रा० ७६,१७३,८१३. जी० ३।२८५,५८८

सुद्धदंत [शुद्धदन्त] जी० ३।२१६

सुद्धदंता [शुद्धदन्ता] जी० २।१२

सुद्धप्पावेस [शुद्धप्रावेश, शुद्धप्रावेश्य, शुद्धात्मवेश] ओ० २०,५३. रा० ६८५,६६२,७००,७१६, ७२६,८०२

सुद्धपुढवी [शुद्धपृथ्वी] जी० ३।१८५,१८७

सुद्धवात [शुद्धवात] जी० ३।६२६

सुद्धवाय [शुद्धवात] जी० १।८१

सुद्धागणि [शुद्धाग्नि] जी० १।७८,८५

सुद्धेसणिय [शुद्धैषणिक] ओ० ३४

सुद्धोदय [शुद्धोदक] ओ० ६३. जी० १।६५

सुधम्मा [सुधर्मा] रा० २६७,६५६.जी० ३।३७२, ३६६,४१२,४२१,४२६,४४२,१०२४,१०२५

सुनिउण [सुनिपुण] रा० १२

सुनिवेसिय [सुनिवेशित] ओ० ६. जी० ३।२७५

सुपइट्ठ [सुप्रतिष्ठ] रा० २५८

सुपइट्ठक [सुप्रतिष्ठक] जी० ३।५६७

सुपइट्ठग [सुप्रतिष्ठक] रा० १५२. जी० ३।५८७

सुपइट्ठिय [सुप्रतिष्ठित] रा० १३३,१७३,२२८, ७५०,७५२,७५८. जी ३।२८५,३०३,६७६

सुपक्क [सुपक्व] जी० ३।५८६,८६०

सुपडियाणंद [सुप्रत्यानन्द] ओ० १६३

सुपण्णत्त [सुप्रज्ञप्त] ओ० ७६ से ८१

सुपण्ह [सुप्रश्न] ओ० ४६

सुपतिट्ठ [सुप्रतिष्ठ] रा० २७६. जी० ३।३५५

सुपतिट्ठक [सुप्रतिष्ठक] जी० ३।४१६,४४५

सुपतिट्ठग [सुप्रतिष्ठक] जी० ३।३२५

सुपतिट्ठित [सुप्रतिष्ठित] जी० ३।२८७,३६३, ४०१

१. सूत्रखेल—सूत्रक्रीडा, अत्र खेलशब्दस्य 'खेड्डु' इत्यादेशः (जंबु. वृत्ति)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुपतिट्ठिय [सुप्रतिष्ठित] रा० ५२,५६,२३१, २४७,७५४,७५६,७६०,७६२,७६४. जी० ३।५९६,६७२
सुपरक्कंत [सुपराक्रान्त] रा० १८५,१८७. जी० ३।२१७,२९७,२९८,३५८,५७६
सुपरिणिट्ठिय [सुपरिनिष्ठित] ओ० ९७
सुपस्सा [सुपश्या] रा० ८१७
सुपिणद्ध [सुपिनद्ध] जी० ३।२८५
सुप्पइट्ठिय [सुप्रतिष्ठित] ओ० १६
सुप्पडियाणंद [सुप्रत्यानन्द] ओ० १६१
सुप्पबुद्धा [सुप्रबुद्धा] जी० ३।६६९
सुप्पभ [सुप्रभ] जी० ३।८७५
सुप्पभा [सुप्रभा] ओ० १९४
सुप्पमाण [सुप्रमाण] ओ० १३,१६. जी० ३।५९६, ५९७
सुप्पसारिय [सुप्रसारित] ओ० ५,८. जी० ३।२७४
सुप्पसूय [सुप्रसूत] ओ० १४. रा० ६७१
सुफास [सुस्पर्श] जी० ३।९८१,९८७
सुबद्ध [सुबद्ध] ओ० १६. रा० १७४. जी० ३।२८६,५९६,५९७
सुबहु [सुबहु] रा० २६६,२६८,७५० से ७५३, ७७४. जी० ३।४३२,५३४,५४१
सुब्भिगंध [सुगन्ध] जी० १।५,३६,३७,५०; ३।९७९,९८५
सुब्भिगंधत्त [सुगन्धत्व] जी० ३।९८५
सुब्भिसद्द [सुशब्द] जी० ३।९७७,९८३
सुब्भिसद्दत्त [सुशब्दत्व] जी० ३।९८३
सुभ [शुभ] ओ० ५१,११६,१५६. रा० १८५, १८७,६७० जी० १।१३४; ३।२१७,२९७, २९८,३५८,५७६,९७२,१०९०,१०९९
सुभग [सुभग] ओ० १२,१५०. रा० २३,१७४, १९७,२७६,२८८,८११. जी० ३।११८,११९, २५६,२८६,२९१
सुभचक्खुकंत [शुभचक्षुःकान्त] जी० ३।९३३
सुभद्द [सुभद्र] जी० ३।९२८
सुभद्दा [सुभद्रा] ओ० ५५,५८,६२,७०,७१,८१. जी० ३।६९९
सुभाविय [सुभावित] ओ० ७९ से ८१
सुभासिय [सुभाषित] ओ० ७९ से ८१
सुभिक्ख [सुभिक्ष] ओ० १,१४. रा० ६७१
सुभूम [सुभूम] जी० ३।११७
सुमज्झ [सुमध्य] रा० १३३. जी० ३।३०३
सुमण [सुमनस्] जी० ३।९२५,९३४
सुमणदाम [सुमनोदामन्] रा० २७६,२८५. जी० ३।४४५,४५१
सुमणभद्द [सुमनोभद्र] जी० ३।९२८
सुमणा [सुमनसी] जी० ३।६९९,९२०
सुमहग्घ [सुमहार्घ्य] ओ० ६३
सुय [शुक] ओ० ६. जी० ३।२७५
सुय [श्रुत] ओ० ५२. रा० १६,६८७,६८९
सुयअण्णाणि [श्रुताज्ञानिन्] जी० १।३०,८७,९६; ३।१०४,११०७; ९।१९७,२०२,२०६,२०८
सुयणाण [श्रुतज्ञान] ओ० ४०. रा० ७३९,७४२, ७४६
सुयणाणविणय [श्रुतज्ञानविनय] ओ० ४०
सुयणाणि [श्रुतज्ञानिन्] ओ० २४. जी० १।८७, ९६,११९,१३३; ३।१०४,११०७; ९।१५९, १६०,१६५,१९६,१९७,१९८,२०४,२०८
सुयदेवया [श्रुतदेवता] रा० ८१७
सुयनाणि [श्रुतज्ञानिन्] जी० १।१३३
सुयपिच्छ [शुकपिच्छ] रा० २६. जी० ३।२७९
सुयमुह [शुकमुख] ओ० २२. रा० ७७७,७७८, ७८८
सुरइ [सुरति] रा० ७६,१७३
सुरइय [सुरचित] ओ० ४९
सुरति [सुरति] जी० ३।२८५
सुरभि [सुरभि] ओ० २,७,८,१०,४६,५५. रा० ३२,१३१,१४७,१४८,१५९,२२८,२८०, २८१,२८५,२९१,३५१,६७०. जी० ३।२२, २७६,३०१,३३२,३७२,३८७,४४६,४४७, ४५१,५९८

सुरभिगंध [सुरभिगन्ध] रा० ६,१२
सुरम्म [सुरम्य] ओ० १,६ से ८,१०,१३. रा० २२,३७,२४५. जी० ३।२७५,२७६, ३११,३८६,४०७,५८१,५८५
सुरवर [सुरवर] रा० ८,६,१२
सुरस [सुरस] जी० ३।६८०,८८६
सुरहि [सुरभि] ओ० ६३. जी० ३।६७२
सुरा [सुरा] जी० ३।५८६
सुरूव [सुरूप] ओ० १५,४७ से ५१,१४३. रा० ५३,६७२,६७३,८०१. जी० ३।२६०, ६७८,६८४
सुरूवग [सुरूपक] जी० ३।५९६
सुरूवत्त [सुरूपत्व] जी० ३।६८४
सुलभबोहिय [सुलभबोधिक] रा० ६२
सुललिय [सुललित] रा० १७३. जी० ३।२८५
सुवण्ण [सुवर्ण] ओ० २३,५२,६३. रा० ४०,१३२, १७४,२८१,६८७ से ६८६. जी० ३।२६५, २८६,३०२,३१३,४४७,६०८,८४०,८८५, ११२२
सुवण्ण [सुपर्ण] ओ० ४८,१२०,१६२. रा० ६६८, ७५२,७८६. जी० ३।२३२
सुवण्णकूला [सुवर्णकूला] रा० २७६. जी० ३।४४५
सुवण्णजुत्ति [सुवर्णयुक्ति] ओ० १४६. रा० ८०६
सुवण्णजूहिया [सुवर्णयूथिका] रा० २८. जी० ३।२८१
सुवण्णद्दार [सुपर्णद्वार] जी० ३।८८५
सुवण्णपाग [सुवर्णपाक] ओ० १४६. रा० ८०६
सुवण्णमणिमय [सुवर्णमणिमय] रा० २७६,२८०. जी० ३।४४५
सुवण्णरुप्पमणिमय [सुवर्णरूप्यमणिमय] रा० २७६, २८०. जी० ३।४४५
सुवण्णरुप्पमय [सुवर्णरूप्यमणिमय] रा० १७५. जी० ३।४०२,६०२
सुवण्णरुप्पामणिमय [सुवर्णरूप्यमणिमय] जी० ३।४४५
सुवण्णरुप्पामय [सुवर्णरूप्यमय] रा० १६,१५३, १६०,२३५,२३६,२४०,२७५,२८०. जी० ३।२६४,२८७,३२६,३६७,३६८,४४५
सुवण्णागर [सुवर्णाकर] रा० ७७४. जी० ३।११८
सुवयण [सुवचन] ओ० ५२. रा० ६६७,६८७
सुवासित [सुवासित] जी० ३।८७८
सुविणीय [सुविनीत] रा० ७६ से ८१
सुविभत्त [सुविभक्त] ओ० १,५,८,१०,१६. रा० ३२,१४५. जी० ३।२६८,२७४,३७२, ५९६,५९७
सुविरइय [सुविरचित] रा० ३७,२४५. जी० ३।४०७,५९६,५९७
सुविरचित [सुविरचित] जी० ३।३११
सुविहि [सुविधि] जी० ३।५९४
सुव्वत्त [सुव्यक्त] ओ० ७१. रा० ६१
सुव्वय [सुव्रत] ओ० १६१,१६३
सुसंपउत्त [सुसम्प्रयुक्त] ओ० ४६,६४. रा० ७६, १७३,६८१. जी० ३।२८५,५८८
सुसंपग्गहित [सुसम्प्रगृहीत] जी० ३।२८५,३०२
सुसंपग्गहिय [सुसम्प्रगृहीत] ओ० ६४. रा० १३२, १७३
सुसंपरिग्गहित [सुसम्परिगृहीत] जी० ३।२८५
सुसंपरिग्गहिय [सुसम्परिगृहीत] रा० १७३,६८१
सुसंपिणद्ध [सुसंपिनद्ध] रा० १७३,६८१
सुसंभास [सुसंभाष] ओ० ४६
सुसंवुय [सुसंवृत] ओ० ६३
सुसंहय [सुसंहत] ओ० १६
सुसक्कय [सुसंस्कृत] जी० ३।५९२
सुसज्ज [सुसज्ज] ओ० ५७. रा० ५३
सुसमाहिय [सुसमाहित] ओ० ३७
सुसवण [सुश्रवण] जी० ३।५९६
सुसव्व [सुपर्व] रा० १५२. जी० ३।३२५
सुसामण्णरय [सुश्रामण्यरत] ओ० २५,१६४
सुसाहत [सुसंहत] जी० ३।५९६
सुसिणिद्ध [सुस्निग्ध] जी० ३।५९७
सुसिर [शुषिर] रा० ११४,२८१

सुसिलिट्ठ [सुश्लिष्ट] ओ० १६,६३,६४. रा० ३२, ५२,५६,२३१,२४७. जी० ३।३७२,३६३,४०१, ५६६

सुसील [सुशील] ओ० १६१,१६३

सुसुइ [सुश्रुति] ओ० ४६

सुस्सर [सुस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५,५६७, ५६८

सुस्सरघोस [सुस्वरघोष] रा० १३५. जी० ३।३०५

सुस्सरणिग्घोस [सुस्वरनिर्घोष] जी० ३।५६८

सुस्सरा [सुस्वरा] रा० १४

सुस्सवण [सुश्रवण] ओ० १६

सुस्सूसणाविणय [सुश्रूषणाविनय] ओ० ४०

सुस्सूसमाण [शुश्रूषमाण] ओ० ४७,५२,६६,८३. रा० ६०,६८७,६६२,७१६

सुह [सुख] ओ० १,२३,२६,५२,१६५।१५,१६, २२. रा० १५,२७५,२७६,६८३,६६७. जी० ३।१२६।१६,४४१,४४२,५६४,६०४, ८३८।१३

सुह [शुभ] ओ० ६ से ८,१०. जी० ३।२७५,२७६

सुहंसुह [सुखंसुख] ओ० १६. रा० ६८६,७११, ८०४. जी० ३।६१७

सुहफास [सुखस्पर्श, शुभस्पर्श] रा० १७,१८,२०, ३२,१२६,१३०,१३७. जी० ३।२८८,३००, ३०७,३७२

सुहम्मा [सुधर्मा] रा० ७,१२ से १४,२०६,२१०, २३५ से २३७,२५०,२५१,२७६,३५१,३५६, ३५७,३७६,३६४,३६५,६५७,७६५,७६४, ८०२. जी० ३।३६७,३६८,४११,४१२,५१६, ५२१ से ५२५,५५६,५५७

सुहलेसा [शुभलेश्या] जी० ३।८३८।२६

सुहलेस्सा [शुभलेश्या] जी० ३।८४५

सुहविहार [सुखविहार] जी० ३।५६४

सुहासण [सुखासन] रा० ७६५,७६४,८०२

सुहि [सुखिन्] ओ० १६५।१६,२२

सुहिय [सुहृद्] जी० ३।६१३

सुहिरण्ण [सुहिरण्य] रा० २८

सुहिरण्णया [सुहिरण्यका] जी० ३।२८१

सुहुम [सूक्ष्म] ओ० ४७,१७०,१८२. रा० १६०, २५६. जी० ३।१३३,३३३,४१७,५६६; ५।२१ से २३,२५ से २७,३४ से ३६,५१,५२, ५७ से ६०; ६।६५,६६,६६,१००

सुहुमआउ [सूक्ष्माप्] जी० ५।२५

सुहुमआउकाइय [सूक्ष्माप्कायिक] जी० ५।२७,३४

सुहुमआउक्काइय [सूक्ष्माप्कायिक] जी० १।६३,६४

सुहुमकाल [सूक्ष्मकाल] जी० ६।६६

सुहुमकिरिय [सूक्ष्मक्रिय] ओ० ४३

सुहुमजिओद [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५।३८,३६,४४ से ४६,५२,६०

सुहुमणिओदजीव [सूक्ष्मनिगोदजीव] जी० ५।५३, ५४,५६,६०

सुहुमणिओय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५।२१,२२,२५, २७,३४,३५

सुहुमणिगोद [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५।४४

सुहुमणिगोदजीव [सूक्ष्मनिगोदजीव] जी० ५।६०

सुहुमणिगोय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५।२६,३६

सुहुमतेउकाइय [सूक्ष्मतेजस्कायिक] जी० ५।२५, २७,३६

सुहुमतेउक्काइय [सूक्ष्मतेजस्कायिक] जी० १।७६, ७७; ५।३४

सुहुमनिओग [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५।२४

सुहुमनिओय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५।३४,३५

सुहुमनिगोद [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५।३४

सुहुमपुढविकाइय [सूक्ष्मपृथ्वीकायिक] जी० १।१३, १४,५६; ३।१३२,१३३, ५।२,३,२४,२५, २७,३४

सुहुमपुढवी [सूक्ष्मपृथ्वी] जी० ५।२७

सुहुमवणस्सइकाइय [सूक्ष्मवनस्पतिकायिक] जी० १।६६,६७; ५।२७,३४,३६

सुहुमवणस्सति [सूक्ष्मवनस्पति] जी० ५।२४

सुहुमवणस्सतिकाइय [सूक्ष्मवनस्पतिकायिक] जी० ५।२५,२७,३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहुमवाउकाइय [सूक्ष्मवायुकायिक] जी० ५।२७, ३४
सुहुमवाउक्काइय [सूक्ष्मवायुकायिक] जी० १।८०
सुहुमसंपरायचरित्तविणय [सूक्ष्मसम्परायचरित्र-विनय] ओ० ४०
सुहुमसरीर [सूक्ष्मशरीर] जी० ३।१२८।६
सुहुय [सुहुत] ओ० २७. रा० ८१३
सुहोत्तार [सुखोत्तार] जी० ३।५६४
सुहोदय [शुभोदक, सुखोदक] ओ० ६३
सुहोयार [सुखावतार] जी० ३।२८६
सूइभूत [सूचीभूत] जी० ३।४४३
सूई [शूची] रा० १६,१३०,१७५,१८०,१६७. जी० ३।२६४,२६६,२८७,३००
सूईकलाव [शूचीकलाप] जी० १।७७,७६
सूईपुडंतर [शूचीपुटान्तर] रा० १६७. जी० ३।२६६
सूईफलय [शूचीफलक[रा० १६७. जी० ३।२६६
सूईभूय [शूचीभूत] रा २८८
सूईमुख [शूचीमुख] रा० १६७
सूईमुह [शूचीमुख] जी० ३।२६६
सूचिकलाव [शूचिकलाप] जी० ३।८५
सूणगलंछणय [सूणालाञ्छणक] रा० ७६७
सूमाल [सुकुमार] रा० २८५. जी० ३।२७४,४५१
सूयगडधर [सूत्रकृतधर] ओ० ४५
सूयपुरिस [सूपपुरुष] जी० ३।५६२,५६७
सूर [सूर] ओ० १६,२२,२७,५०. रा० १३३, ७७७,७७८,७८८,८०३,८१३. जी० २।१८; ३।२५८,३०३,५८६,५६३,५६६,७६५,७६७, ७६६,७७१,७७३,७७५,७७७,७७६,८३८।४, १०,१५,२१,२३,२४,२७,२८,२६,३२,६३७, ६५०,६५३,१०१६,१०२०,१०२१,१०२६, ११२२
सूरकंतमणि [सूरकान्तमणि] जी० १।७८
सूरणकंद [शूरणकन्द] जी० १।७३
सूरत्थमणपविभत्ति [सूरास्तमनप्रविभक्ति] रा० ८६
सूरदीव [सूरद्वीप] जी० ३।७६५,७६६,७७१,७७७
सूरद्दीव [सूरद्वीप] जी० ३।६३७
सूरपरिएस [सूरपरिवेश] जी० ३।८४१
सूरपरिवेस [सूरपरिवेश] जी० ३।६२६
सूरप्पभा [सूरप्रभा] जी० ३।७६५,१०२६
सूरमंडल [सूरमण्डल] रा० २४. जी० ३।२७७, ५६०
सूरमंडलपविभत्ति [सूरमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०
सूरवडेंसय [सूरावतंसक] जी० ३।१०२६
सूरवरोभास [सूरवरावभास] जी० ३।६३८
सूरविमाण [सूरविमान] जी० २।४१; ३।१००३ से १००५,१००६,१०११,१०२६
सूरागमणपविभत्ति [सूरागमनप्रविभक्ति] रा० ८७
सूराभिमुह [सूराभिमुख] ओ० ११६
सूरावरणपविभत्ति [सूरावरणप्रविभक्ति] रा० ८८
सूरावलिपविभत्ति [सूरावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
सूरिय [सूर्य] ओ० १६२. रा० ४५,१२४. जी० ३।१७६,१७८,१८०,१८२,२५७,७०३, ७२२,८०६,८२०,८३०,८३४,८३७,८४१,८४२, ८४५,६८८ से १०००,१०२०,१०३७,१०३८
सूरियकंत [सूर्यकान्त] रा० ६७३,६७४,७६१ से ७६३
सूरियकंता [सूर्यकान्ता] रा० ६७२,६७३,७५१, ७७६,७६१ से ७६४,७६६
सूरियाभ [सूर्याभ] रा० ७,६,१०.१२ से १८,४१ से ४४,४६ से ४६.५५ से ६५,६८,६६,७१ से ७४,११८ से १२०,१२२,१२४.१२६,१२६, १६२,१६३,१६४,१७०,१८७,२४०,२४६,२६६, २६८,२७०,२७४ से २६१,६५४ से ६६७, ७६६ से ७६६
सूरियाभविमाणपइ [सूर्याभविमानपति] रा०
सूरियाभविमाणवासि [सूर्याभविमानवासिन्] रा० ७,१५ से १७,५५,५६,५८,२८०,२८२, २८६,२६१,६५७
सूरिल्लिमंडवग [दे० सूरिल्लिमण्डपक] रा० १८४. जी० ३।२८६

सूरिल्लिमंडवय [दे० सूरिल्लिमण्डपक] रा० १८५
सूरुग्गमणपविभत्ति [सूरोद्गमनप्रविभक्ति] रा० ८६
सूरोवराग [सूरोवराग] जी० ३।६२६,८४१
सूल [शूल] ओ० ६४. जी० ३।११०
सूलग्ग [शूलाग्र] जी० ३।८५
सूलभिण्णग [शूलभिन्नक] ओ० ६०. रा० ७५१
सूलाइग [शूलातिग] रा० ७५१
सूलाइय [शूलातिग] रा० ७६७
सूलाइयग [शूलाचितक, शूलातिग] ओ० ६०
से [दे०] ओ० ३१. रा० १२. जी० १।२
सेउ [सेतु] ओ० १,७,८,१०. जी० ३।२७६
सेउकर [सेतुकर] ओ० १४. रा० ६७१
सेज्जा [शय्या] ओ० ३७,१२०,१६२,१८०. रा० ६६८,७०४,७०६,७११,७१३,७५२,७७६, ७८६
सेट्ठि [दे० श्रेष्ठिन्] ओ० १८,२३,५२,६३. रा० ६८७,६८८,७०४,७५४,७५६,७६२, ७६४. जी० ३।६०६
सेढी [श्रेणी] ओ० १६,४७. रा० २४,७६०,७६१. जी० ३।२७७,५६६,७२३,७२६
सेणा [सेना] ओ० ५५ से ५७,६२,६५
सेणावइ [सेनापति] ओ० १८,२३,५२,६३. रा० ६८७,६८८,७०४,७५४,७५६,७६२,७६४
सेणावच्च [सेनापत्य] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।३५०,४४८,५६३,६३७
सेणावति [सेनापति] जी० ३।६०६
सेत [श्वेत] जी० ३।३००,३५४,४५४,८८५
सेतासोय [श्वेताशोक] जी० ३।२८२
सेधा [दे०] जी० २।६
सेय [श्वेत] ओ० ५१,६५,६७,१६४. रा० १२६, १३०,१६२,१६०,२१०,२१२,२२२,२८८. जी० ३।२६४,३००,३१२,३३५,३७३,३८१, ६४७
सेय [स्वेद] ओ० ८६,६२. जी० ३।५६८
सेय [श्रेयस्] ओ० ११७. रा० ६,२७५,२७६, ७७४,७७७,७८१. जी० ३।४४१,४४२
सेय [सेक] जी० ३।५६२
सेयकणवीर [श्वेतकणवीर] रा० २६. जी० ३।२८२
सेयबंधुजीव [श्वेतबन्धुजीव] रा० २६. जी० ३।२८२
सेयमाल [श्वेतमाल] जी० ३।५८२
सेयविया [श्वेतविका] रा० ६६६ से ६७१,६८१, ६८३,६६६,७००,७०२ से ७०४,७०६,७०८, ७१० से ७१३,७१६,७२६,७५० से ७५३, ७७५,७७६,७८०,७८७,७८८
सेयासोय [श्वेताशोक] रा० २६
सेरियागुम्म [सेरिकागुल्म] जी० ३।५८०
सेल [शैल] ओ० ४६. जी० ३।५६४
सेलपाय [शैलपात्र] ओ० १०५,१२८
सेलबंधण [शैलबन्धन] ओ० १०६,१२६
सेला [शैला] जी० ३।४
सेलु [शेलु] जी० १।७१
सेलेसी [शैलेसी] ओ० १८२
सेवालगुम्म [शैवालगुल्म] जी० ३।५८०
सेवालभक्खि [शैवालभक्षिन्] ओ० ६४
सेस [शेष] ओ० १२०,१६२. रा० २३६,६६८, ७५२,७८६. जी० १।६४,६५,७७,७६,८२, ८८,६०,१०१,१०३,१११,११२,११६,१२१, १२३,१२४; २।३७,८६,१२०; ३।६८ से ७२, १६१,१६५,२१६ से २२६,२४३,२५८,३५५, ६८७,७०६,७११,७४१,७५०,७६२,७६५, ७६६,७६६,७७०,७७२,८३८।२२,८५१, ६१४ से ६१६,६३६,६५०,६६२,११२२; ५।३१,३४; ६।४,६
सेहवेयावच्च [शैक्षवैयावृत्य] ओ० ४१
√**सेहाव** [शिक्षय्]—सेहाविहिति. ओ० १४६. —सेहावेहिइ. रा० ८०६
सेहावित्ता [शिक्षयित्वा] ओ० १४६
सेहावेत्ता [शिक्षयित्वा] रा० ८०७
सोइंदिय [श्रोत्रेन्द्रिय] ओ० ३७. जी० १।१३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोंडियालिछ [शुण्डिकालिञ्छ] जी० ३।११८
सोंडीर [शौण्डीर] ओ० २७. रा० ८१३
सोक्ख [सौख्य] ओ० २३,१६५।१३,१४,१७. जी० ३।११८,११६
सोग [शोक] ओ० ४६. रा० ७६५. जी० ३।१२८
सोगंधिय [सौगन्धिक] ओ० १२. रा० १०,१२, १८,२३,६५,१६५,१७४,१६७,२८८. जी० ३।११८,११६,२५६,२८६,२६१
सोच्चा [श्रुत्वा] ओ० २१. रा० १३. जी० ३।४४३
सोणंद [दे०] त्रिपदिका ओ० १६. जी० ३।५६६
सोणि [श्रोणि] जी० ३।५६७
सोणिय [शोणित] रा० ७०३
सोसुणित्तग [श्रोणिसूत्रक] जी० ३।५६३
सोत [श्रोतस्] जी० ३।७४६
सोतिंदिय [श्रोत्रेन्द्रिय] जी० ३।६७६,६७७
सोत्थि [स्वस्ति] जी० ३।१७७
सोत्थिकूड [स्वस्तिककूट] जी० ३।१७७
सोत्थिय [स्वस्तिक] रा० २१,२४,४६,८१,२६१. जी० ३।२७७,२८६,३१४,३४७,३५५,५६७
सोत्थियकंत [स्वस्तिककान्त] जी० ३।१७७
सोत्थियज्झय [स्वस्तिकध्वज] जी० ३।१७७
सोत्थियपभ [स्वस्तिकप्रभ] जी० ३।१७७
सोत्थियलेस [स्वस्तिकलेश्य] जी० ३।१७७
सोत्थियवण्ण [स्वस्तिकवर्ण] जी० ३।१७७
सोत्थियसिरिवच्छनंदियावत्तवद्धमाणगभद्दासण-कलसमच्छदप्पणमंगलभत्तिचित्त [स्वस्तिक-श्रीवत्सनन्द्यावर्तवर्धमानकभद्रासनकलशमत्स्य-दर्पणमङ्गलभक्तिचित्र] रा० ७६
सोत्थियावत्त [स्वस्तिकावर्त] जी० ३।१७७
सोत्थिसिंग [स्वस्तिशृङ्ग] जी० ३।१७७
सोत्थिसिट्ठ [स्वस्तिशिष्ट] जी० ३।१७७
सोत्थुत्तरवडिंसग [स्वस्त्युत्तरावतंसक] जी० ३।१७७

सोधम्म [सौधर्म] रा० ५६०. जी० २।६६,१४८, १४६; ३।१०३८,१०३६
सोधम्मक [सौधर्मक] जी० २।१४८,१४६
सोधम्मग [सौधर्मक] जी० ३।१०३६
सोधम्मवडेंसग [सौधर्मावतंसक] रा० १२६
सोधम्मवडेंसय [सौधर्मावतंसक] रा० १२५
सोपाण [सोपान] जी० ३।४५४,५६४
सोभ [शोभ] ओ० ६३. जी० ३।७२२,८२०,८३०, ८३४,८३७,८५५
√सोभ [शोभय्]--सोभंति. जी० ३।७०३. सोभिंसु. जी० ३।७०३.—सोभिस्संति. जी० ३।७०३.—सोभेंसु. जी० ३।८०५
सोभंत [शोभमान] ओ० ४६. रा० ६६. जी० ३।३०६,५६७
सोभग्ग [सौभाग्य] ओ० २३
सोभण [शोभन] ओ० १४५. रा० ८०५
सोभमाण [शोभमान] जी० ३।५६१
सोभिय [शोभित] ओ० १
सोभेमाण [शोभमान] जी० ३।५८६
सोम [सौम्य] ओ० १५,१६. रा० ७०,१३३, ६७२ जी० ३।३०३,५६६,५६७,११२२
सोमणस [सौमनस] ओ० ५१. जी० ३।६२५,६३४
सोमणसवण [सौमनसवन] रा० १७३,२७६. जी० ३।२८५,४४५
सोमणसा [सौमनसा] जी० ३।६६६,६२०
सोमणस्सिय [सौमनस्यित, सौमनस्यिक] ओ० २० २१,५३,५४,५६,६२,६३,७८,८०,८१. रा० ८, १०,१२ से १४,१६ से १८,४७,६०,६२,६३, ७२,७४,२७७,२७६,२८१,२६०,६५५,६८१, ६८३,६६०,६६५,७००,७०७,७१०,७१३, ७१४,७१६,७१८,७२५,७२६,७७४,७७८. जी० ३।४४३,४४५,४४७,५५५
सोमलेस [सोमलेश्य] ओ० २७. रा० ८१३
सोमाकार [सौम्याकार] ओ० १५,१४३. रा० ६७२,६७३,८०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमाण [सोपान] रा० ४७,१७५ से १७६,६५६. जी० ३।५५६,६४०,६४१,८५७

सोय [शौच] ओ० २५. रा० ६८६

सोय [श्रोतस्] ओ० १२२

सोयंधिय [सौगन्धिक] जी० ३।७

सोयणया [शोचनता] ओ० ४३

सोयधम्म [शौचधर्म] ओ० ९७

सोल [षोडश] जी० ३।२२६।२

सोलस [षोडशन्] ओ० ३३. रा० ७. जी० ३।१४

सोलसग [षोडशक] जी० ३।५

सोलसभत्त [षोडशभक्त] ओ० ३२

सोलसविध [षोडशविध] जी० ३।७,३५७

सोलसविह [षोडशविध] रा० १६५. जी० ३।३४६

सोलसिया [षोडशिका] रा० ७७२

सोल्लिय [पक्व] ओ० १९४

सोवण्णिय [सौवर्णिक] रा० ३७,२४५,२७९,२८०. जी० ३।३११,४०७,४४५,४४६,४४८

सोवत्थिय [सौवस्तिक] ओ० १२,६४. रा० २४. जी० ३।२७७.५९६

सोवाण [सोपान] रा० १९,२० ४८,५६,५७, २०२,२३४,२६४,२७७,२८८,३१२,४७३. जी० ३।२८७.२८८,३६३.३९६,४४२,४४७, ५३२,५७९,६६९.६८४

सोस [शोष] जी० ३।६२८

सोह [शोभ] ओ० ५२. रा० ६८७ से ६८९

सोहंत [शोभमान] रा० १३६

सोहग्ग [सौभाग्य] ओ० ६९

सोहम्म [सौधर्म] ओ० ५१,९५,१६०,१६२. रा० ७,१२,५६,१२४,२७९,७९६. जी० १।५९; २।१९,४६,१४९; ३।९३७,१०३८,१०५७, १०६५,१०६७,१०७१,१०७३,१०७५,१०७७ से १०८३,१०८५,१०८७,१०९०,१०९१, १०९३,१०९७ से १०९९,११०१,११०५, ११०७,११०९ से १११२,१११४,१११७, १११९,११२१,११२२,११२४,११२८

सोहम्मा [सुधर्मा] जी० ३।३७२

सोहि [शोधि] ओ० २५

सोहिय [शोभित] ओ० ५,६,८,१६४ जी० ३।२७४, २७५

ह

हंत [हन्त] रा० १५

हंता [हन्त] ओ० ८४. रा० १७३. जी० ३।१३

हंस [हंस] ओ० ९६. रा० २९. जी० ३।२८२, ५९७

हंसगब्भ [हंसगर्भ] रा० १०,१२,१८,६५ १६५, २७९. जी० ३।७,२८४

हंसगब्भतूलिया [हंसगर्भतूलिका] रा० ३१

हंसगब्भतूली [हंसगर्भतूली] जी० ३।२८४

हंसगब्भमय [हंसगर्भमय] रा० १३०. जी० ३।३००

हंसस्सर [हंसस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५,५९८

हंसावलिपविभत्ति [हंसावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

हंसासण [हंसासन] रा० १८१,१८३,१८५. जी० ३।२९३,२९५,२९७,८५७

√हक्कार [आ+कारय्]—हक्कारेंति रा० २८१. जी० ३।४४७

हट्ठ [हृष्ट] ओ० २०,२१,५३,५४,५६,६२,६३, ६८,७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १४, १६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७,२७९, २८१,२९०,६५५,६८१,६८३,६९०,६९५,७००, ७०७,७१०,७१३,७१४,७१६,७१८,७२५,७२६, ७७४,७७८. जी० ३,४४३,४४५,४४७,५५५

हडप्पगाह [हडप्पग्राह] ओ० ६४

हडिबद्धग [हडिबद्धक] ओ० ९०

√हण [घातय्]—हण रा० ७६१

हणु [हनु] ओ० १९

हणुया [हनुका] जी० ३।५९६,५९७

हत्थ [हस्त] ओ० २१,५४,६९,१११ से ११३, १३७,१३८. रा० १३३,२८१,२८८ से २९०, ६५६,७१९,७५३,८०४. जी० ३।४४७,४५४ से ४५६,५९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हत्थ [दे०] ओ० ५७

हत्थग [हस्तक] ओ० १२. जी० ३।२६१,३१५, ६३६,६५१,६७७,८६४

हत्थच्छिण्णग [हस्तच्छिन्नक] रा० ७५१

हत्थच्छिण्णय [हस्तच्छिन्नक] रा० ७६७

हत्थछिण्णग [हस्तच्छिन्नक] ओ० ९०

हत्थतल [हस्ततल] रा० २५४. जी० ३।४१५

हत्थमालग [हस्तमालक] जी० ३।५९३

हत्थय [हस्तक] रा० २३,२२३

हत्थाभरण [हस्ताभरण] ओ० ४७,७२

हत्थि [हस्तिन्] ओ० १०१,१२४. रा० ७७२. जी० ३।८४,६१८

हत्थिक्खंध [हस्तिस्कन्ध] ओ० ६५

हत्थिगुलगुलाइय [हस्तिगुलगुलायित] रा० २८१. जी० ३।४४७

हत्थितावस [हस्तितापस] ओ० ९४

हत्थिमुह [हस्तिमुख] जी० ३।२१६

हत्थिरयण [हस्तिरत्न] ओ० ५५ से ५७, ६२ से ६४,६९

हत्थिवाउय [हस्तिव्यापृत] ओ० ५६,५७

हत्थिसोंड [हस्तिशौण्ड] जी० १।८८

हम्मिय [हर्म्य] जी० ३।५९४,६०४

हय [हय] ओ० १९,४८,५१,५२,५५ से ५७,६२, ६५. रा० १४१ से १४४,१९२ से १९५, २८५,६८७ से ६८९. जी० ३।२६६,२६७, ३१८,३५५,४५१,५९६

हयकंठ [हयकण्ठ] रा० १५५,२५८. जी० ३।३२८

हयकंठग [हयकण्ठक] जी० ३।४१९

हयकण्ण [हयकर्ण] जी० ३।२१६,२२२ से २२५, २२६।३

हयकण्णदीव [हयकर्णद्वीप] जी० ३।२२२

हयजोहि [हययोधिन्] ओ० १४८,१४९. रा० ८०९,८१०

हयलक्खण [हयलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

हयविलंबिय [हयविलम्बित] रा० ९१

हयविलसिय [हयविलसित] रा० ९१

हयहेसिय [हयहेसित] रा० २८१. जी० ३।४४७

हरतणुय [हरतनुक] जी० १।६५

हरय [ह्रद] रा० २६२ से २६५,२७३,२७७, ४७३. जी० ३।४२५,४२६,४३८,४४३,५३२

हरि [हरित्] रा० २७९. जी० ३।४४५

हरिओभास [हरितावभास] रा० १७०,७०३. जी० ३।२७३

हरिकंता [हरिकान्ता] रा० २७९. जी० ३।४४५

हरितकाय [हरितकाय] जी० ३।१७४

हरितग [हरितक] जी० ३।३२४

हरिताभ [हरिताभ] जी० ३।८७८

हरिताल [हरिताल] जी० ३।८७८

हरिय [हरित] ओ० ४,५,८,१०३,१२६,१३५. रा० १७०,७०३. जी० १।६९; ३।२७३,२७४

हरिय [भरित] जी० ३।२८५

हरियकाय [हरितकाय] जी० ३।१७४

हरियग [हरितक] रा० १५१,७८२

हरियच्छाय [हरितच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३

हरियाल [हरिताल] रा० २८,१६१,२५८,२७९. जी० ३।२८१,३३४,४१९

हरियालिया [हरितालिका] रा० २८

हरियोभास [हरितावभास] ओ० ४

हरिवास [हरिवर्ष] रा० २७९. जी० २।१३,३२, ५९,७०,७२,९६,१४७,१४९; ३।२२८,४४५, ७९५

हरिवाहण [हरिवाहन] जी० ३।९२३

हरिस [हर्ष] ओ०२०,२१,५३,५४,५६,६२,६३,७८, ८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १४,१६ से १८, ४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७,२७९,२८१, २९०,६६५,६८१,६८३,६९०,६९५,७००,७०७, ७१०,७१३,७१४,७१६,७१८,७२५,७२६,७७४, ७७८. जी० ३।४४३,४४५,४४७,५५५

हरिसय [हर्षक] जी० ३।५९३

हरिसिय [हर्षित] रा० १७३. जी० ३।२८५

हल [हल] ओ० १. जी० ३।११०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हलधर [हलधर] ओ० १३. रा० २६. जी० ३।२७९
हलिद्दा [हरिद्रा] रा० २८. जी० ३।२८१
√**हव** [भू]—हवंति ओ० १८३. जी० ३।१२ —हवेज्ज ओ० १९५।४.—हवेज्जा ओ० १९५।१५
हव्व [अर्वाच्] ओ० ५७
हव्वं [अर्वाच्] ओ० १७०. रा० ७२०. जी० ३।८६
√**हस** [हस्]—हसंति रा० १८५.—हसिज्जइ रा० ७८३
हसंत [हसत्] ओ० ६४
हसिय [हसित] ओ० १५,४९. रा० ७०,६७२, ८०९,८१०. जी० ३।५९७
हस्स [ह्रस्व] ओ० १८२,१९५।४
√**हाय** [हा]—हायइ जी० ३।७२१.—हायति जी० ३।७२३
हायण [हायन] जी० ३।११८,११९
हार [हार] ओ० २१,४७,५२,५४,६३,६५,७२, १०८,१३१,१९४. रा० ८,२९,४०,१३२, २८५,६८७ से ६८९,७१४. जी० ३।२६५, २८२,३०२,५९२,९३५,११२१
हारपुडय (पाय) [हारपुटकपात्र] ओ० १०५, १२८
हारपुडय (बंधण) [हारपुटकबन्धन] ओ० १०६, १२९
हारभद्द [हारभद्र] जी० ३।९३५
हारमहाभद्द [हारमहाभद्र] जी० ३।९३५
हारमहावर [हारमहावर] जी० ३।९३५
हारवर [हारवर] जी० ३।९३५
हारवरभद्द [हारवरभद्र] जी० ३।९३५
हारवरमहाभद्द [हारवरमहाभद्र] जी० ३।९३५
हारवरमहावर [हारवरमहावर] जी० ३।९३५
हारवरोभास [हारवरावभास] जी० ३।९३५
हारवरोभासभद्द [हारवरावभासभद्र] जी० ३।९३५
हारवरोभासमहाभद्द [हारवरावभासमहाभद्र] जी० ३।९३५
हारवरोभासमहावर [हारवरावभासमहावर] जी० ३।९३५
हारवरोभासवर [हारवरावभासवर] जी० ३।९३५
हालिद्द [हारिद्र] ओ० १२. रा० २२,२४,२८, १२८,१३२,१५३. जी० १।५,१३६; ३।२२, ४५,२८१,२९०,३२६,१०७५,१०७६
हालिद्दग [हारिद्रक] जी० ३।२८१
हास [हास] ओ० २८,४९,५१
हास [ह्रस्व] जी० ३।७८१,७८२
हासकर [हासकर] ओ० ६४
हिंगुलय [हिङ्गुलक] रा० १६१,२५८,२८१. जी० ३।३३४,४१९
हिंसप्पयाण [हिंस्रप्रदान] ओ० १३६
हिंसाणुबंधि [हिंसानुबन्धिन्] ओ० ४३
हिट्ठिमग [अधस्तन] जी० ३।५
हित [हित] जी० ३।४४१,४४२
हिम [हिम] रा० २५९. जी० १।६५; ३।११९, ४१६
हिमकूड [हिमकूट] जी० ३।११९
हिमपडल [हिमपटल] जी० ३।११९
हिमपुंज [हिमपुञ्ज] जी० ३।११९
हिमवंत [हिमवत्] ओ० १४. रा० १७३,६७१, ६७९
हियउप्पाडियग [उत्पाटितकहृदय] ओ० ९०
हिय [हित] ओ० ५२. रा० १५,२७५,२७६,६८७
हियय [हृदय] ओ० २०,२१,२७,५३,५४,५६,६२, ६३,६९,७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १४, १६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७, २७९,२८१,२९०,६५५,६८१,६८३,६९०, ६९५,७००,७०७,७१०,७१३,७१४,७१६, ७१८,७२५,७२६ ७५० से ७५३,७७४,७७८, ८१३. जी० ३।४४३,४४५,४४७,५५५
हिययगमणिज्ज [हृदयगमनीय] ओ० ६८
हिययसूल [हृदयशूल] जी० ३।११९,६२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिरण्ण [हिरण्य] ओ० २३. रा० २८१,६९५. जी० ३।४४७,६०८,६३१
हिरण्णजुत्ति [हिरण्ययुक्ति] ओ० १४६. रा० ८०६
हिरण्णपाग [हिरण्यपाक] ओ० १४६. रा० ८०६
हिरण्णवय [हिरण्यवत] जी० ३।२८८
हिरिलि [दे०] जी० १।७३
हिरी [ह्री] रा० ७३२,७३७,७७४
हीण [हीन] ओ० १९५।४. रा० ७७४. जी० ३।७३
हीर [हीर] जी० ३।६२२
हीरय [हीरक] जी० ३।६२२
हीलणा [हीलना] ओ० १५४,१६५,१६६, रा० ८१६
√हु [भू]—हुंति. जी० १।१४
हुंड [हुण्ड] जी० १।८६,९५,१०१,११९; ३।९३, १२९।३,४
हुंबउट्ठ [दे०] ओ० ९४
हुडुक्क [हुडुक्क] ओ० ६७. रा० १३,६५७. जी० ३।४४६
हुडुक्की [हुडुक्की] रा० ७७
हुतवह [हुतवह] जी० ३।५९६
हुयवह [हुतवह] ओ० १९,४७. जी० ३।५९०
हुयासण [हुतासन] ओ० २७. रा० ८१३
हुहुय [हुहुक] जी० ३।८४१
हुहुयमाण [दे० जाज्वल्यमान] जी० ३।११८
हेउ [हेतु] ओ० ११९. रा० १६,७१९,७४८ से ७५०,७७३
हेट्ठा [अधस्] ओ० १३,१८२. रा० ४,२४०. जी० ३।७७,८०,३५६,४०२
हेट्ठि [अधस्] जी० ३।९९८
हेट्ठिम [अधस्तन] जी० ३।७० से ७२,१११।३
हेट्ठिमगेविज्ज [अधस्तनग्रैवेय] जी० २।९९
हेट्ठिमगेवेज्जग [अधस्तनग्रैवेयक] जी० ३।१०५६
हेट्ठिममज्झिमिल्ल [अधस्तनमध्यम] जी० ३।७२९
हेट्ठिल्ल [अधस्तन] जी० ३।६०,६२ से ७१,७२५, ७२८,७२९,१००३,१००४,१००७,११११
हेट्ठिल्लमज्झिल्ल [अधस्तनमध्यम] जी० ३।७२९
हिट्ठिल्लातो [अधस्तनतस्] जी० ३।६९,७२
हेमंतिय [हैमन्तिक] ओ० २९. रा० ४५
हेमजाल [हेमजाल] रा० १३२,१७३,१९१,६८१. जी० ३।२६५,२८५,३०२,५९३
हेमप्प [हेमात्मन्] जी० ३।५९५
हेमवत [हैमवत] जी० २।९६,१४७,१४९; ३।७९५
हेमवय [हैमवत] ओ० ६४. रा० १७३,२७९,६८१. जी० २।१३,३१,५८,७०,७२; ३।२२८,२८५, ४४५
हेरण्णवत [हैरण्यवत] जी० २।९६,१४७; ३।७९५
हेरण्णवय [हैरण्यवत] जी० २।१४९; ३।४४५
हेरु [हेरु] जी० ३।६३१
हेरुयालवण [हेरुतालवन] जी० ३।५८१
√हो [भू]—होइ ओ० १९५।५. रा० १३०. जी० १।१३६—होई. जी० ३।१२९।३ —होउ. ओ० १४४. रा० ७३०—होंति. रा० १३०. जी० १।७२—होति. ओ० १९५।८. जी० ३।१९४—होज्ज. रा० ७५४. जी० ३।५९२.—होज्जा. रा० ७१८,—होत्था ओ० १. रा० १
होत्तिय [होत्रिक] ओ० ९४
होरंभा [होरम्भा] रा० ७७. जी० ३।५८८
√ह्रस्सीकर [ह्रस्वी+कृ]—ह्रस्सीकरेज्ज जी० ३।९९७
ह्रस्सीकरित्तए [ह्रस्वीकर्तुम्] जी० ३।९९४

कुल शब्द ९९३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि-पत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३	१२	बससंडेणं	वणसंडेण
१६	१७	धम्मोप°	धम्मोव°
१७	६	भगवाओ	भगवओ
२७	७	विउसग्गे	विउस्सग्गे
३६	३	विहणि°	विंहणि°
५६	७	तुंबविणिपेच्छा	तुंबविणियपेच्छा
६७	१२	सयमेब	सयमेव
८४	२२	जायमेव	जीयमेव
६३	३	घोसेडिया	घोसाडिया
६३	१२	पोंडरिय°	पोंडरीय°
१०५	२	डिडिमाण	डिंडिमाण
११६	६	रुच्छ°	मुच्छ°
२७३	१५	तुब्बले	दुब्बले
२६७	१	ऊसित्ता	ऊसिता
३१५	११	सुब्भ	सुज्झ
३१५	टि० १३ का अन्तिम		'सुवण्णसुज्झरययवालुयाओ' इति सुवर्ण—पीतकान्तिहेम सुज्झं—रूप्यविशेषः रजतं—प्रतीतं तन्मय्यो वालुका यासु ताः सुवर्णसुज्झ-रजतवालुका (मवृ)
३२०	पं० ११	°विव्वुइ°	°णिव्वुइ°
३७५	टि० १२	३।६८६	३।८६६
३८१	पं० १६	पत्तयं-	पत्तेयं-
४२६	पं० ६	उववेता	उववेता
४५७	पं० ६	बाघाइमे	वाघाइमे
४६५	पं० ६	अणत्तरो°	अणुत्तरो°
४७३	पं० ४	तिरक्खि°	तिरिक्ख°
६७६		पमोकक्ख	पमोक्ख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org